भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49



ओ३म्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

वर्ष १५, अङ्क १ २१ नवम्बर, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

वेद में गौ की महिमा

—पं० धर्मदेव "मनीषी" वेदतीर्थ गुरुकुल कालवा

वेद में गौ को घर की शोभा, कुटुम्ब का आरोग्य, बल और पराक्रम तथा परिवार का धन है, यह स्पष्ट मन्त्रों में बताया है। यथा गौ घर की शोभा है। इस विषय में निम्नलिखित मन्त्रभाग देखिये—

१. गावः भद्रं अक्रन् (अथर्ववेद कांड ४, सू० २१, मन्त्र १)
२. गावः भद्रं गृहं कृणुथ (अथर्व० ४, सू० २१, मन्त्र ६)

"गौवें घर को कल्याण का स्थान बनाती हैं। अर्थात् जिस घर में गौवें रहती हैं, वह घर कल्याण का धाम होता है।" जो पाठक गौ का महत्त्व जानेंगे वे इस बात की सत्यता का अनुभव कर सकते हैं।

२. पुष्टि देनेवाली गौ —

मनुष्य को पुष्टि देनेवाली गौ है। इसलिये हर एक घर में गौ का निवास होना चाहिये। इस विषय में निम्नलिखित मन्त्रभाग देखिये—

१. गावः अस्मे रणयन् (अथर्व० कांड ४, सू० २१, मन्त्र १)
२. गावः यूयं कृशं चित् मेदयथ (अथर्व० कांड ४।२१।६)
३. अश्रीरं चित् सुप्रतीकं कृणुथ (अथर्व० कांड ४।२१।६)

"गौवें हमें रमणीय बनाती हैं। कृश मनुष्य को गौवें पुष्ट बनाती हैं। निस्तेज को सतेज करती हैं।" इसलिये घर में गौ रखनी चाहिये और हर एक को उस गोमाता का दूध पीना चाहिये तथा उसकी उत्तम सेवा करनी चाहिये। हर एक गृहस्थी का यह आवश्यक कर्त्तव्य है।

३. गौ ही धन, बल और अन्न है—

मनुष्य को धन, बल और अन्न गौ ही देती है। सब यश गौ से प्राप्त होता है। यथा—

गावः भगः। गावः इन्द्रः। गावः सोमस्य भक्षः।
इमाः गावः स इन्द्रः (अथर्व० ४।२१।५)

गौवें धन हैं, गौवें ही इन्द्र (बल) की देवता है, गौवें ही (दूध देने के कारण) अन्न हैं। जो गौवें हैं वही इन्द्र है। गौवों को धन कहा जाता है।

४. उत्तम घास और पवित्र जलपान—

यजमान यज्ञ के लिये गौ की रक्षा करता है। इसलिये वह उनकी पालना का बड़ा प्रबन्ध करता है। यह प्रबन्ध किस प्रकार किया जाये, इस विषय में मन्त्र देखने योग्य हैं—

(गावः) सुयवसे रुशन्तीः।
सुप्रपाणे शुद्धा अपः पिबन्तीः॥ अथर्व० ४।२१।७

'गौवें उत्तम घास खावें और उत्तम जलस्थान में शुद्ध जल पीवें' शुद्ध घास खाने और शुद्ध जल पीने से गौ की उत्तम रक्षा होती है। इस प्रकार गौ की रक्षा करें और गौ के दूध से पाठक हृष्ट, बलिष्ठ, यशस्वी, तेजस्वी, प्रतापी और दीर्घायु हों।

अथर्ववेद ४ कांड, सूक्त २१, गौ का अत्यन्त सुन्दर काव्य है। इतना उत्तम वर्णन बहुत ही थोड़े स्थान पर मिलेगा। गौ का महत्त्व इस काव्य में अति उत्तम शब्दों द्वारा बताया है। जो लोग यह काव्य पढ़ेंगे, वे गौ का महत्त्व जान सकते हैं।

वेद के उपदेश करने की शैली निराली है। कहीं आदेश करता है, कहीं निषेध करता है, कहीं प्रार्थना द्वारा कर्त्तव्याकर्त्तव्य का बोध कराता है, कहीं वास्तविक स्थिति आगे रखकर समझाता है। इन मन्त्रों में जो बात कही है वह पहले भी ठीक थी, आज भी सत्य है और कल भी यथार्थ होगी। वेद के उपदेश सामयिक नहीं वरन् सनातन=सदा रहनेवाले, त्रिकालाबाधित हैं। अथर्ववेद ५।२८।३ में कहा है—

त्रयः पोषास्त्रिवृति श्रयन्तामनक्तु एषा पयसा घृतेन।
अन्नस्य भूमा पुरुषस्य भूमा भूमा पशूनां त इह श्रयन्ताम्॥

इस त्रिगुणात्मक जगत् में तीन पुष्टियां बनी रहें—

१) अन्न की बहुतायत, २) पुरुषों की बहुलता तथा ३) पशुओं की बहुतायत। वे इस संसार में बने रहें। पशुपति दूध घी से भरपूर रहें। दूध घी कहां से आये? पशुओं से। पशुओं में गौ का घी दूध सबकी अपेक्षा उत्कृष्ट माना गया है। अत एव वेद में गौ की महिमा बहुत है। यथा—"गावो भगो गाव इन्द्रो मे" (अथर्व० ४।२१।५)—गौवें ही भाग्य और गौयें ही मेरा ऐश्वर्य है। गौयें दुबले को भी मोटा कर देती हैं और शोभाहीन को भी सुन्दर बना देती हैं। मधुर बोलीवाली गायें घर को कल्याणमय बना देती हैं। सभाओं में गौवों की बहुत कीर्ति कही जाती है। गौवों को पालने की रीति का भी थोड़ा-सा संकेत है—"प्रजावतीः सूयवसे रुशन्तीः शुद्धाः अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः" अथर्व० ४।२१।७॥=सन्तान रहित उत्तम चारे के कारण पुष्ट हों, उत्तम जलपान के स्थान में शुद्ध जल का पान करें। आज गोभक्त आर्य इस उपदेश को भूल-सा गया है। अब न अच्छा चारा मिलता है और न गौवों को शुद्ध जल पिलाने की व्यवस्था की जाती है। यह तभी हो सके जब "स्व आ दमे सुदुघा यस्य धेनुः" ऋग्वेद २।३५।७॥=अपने घर में उत्तम दूध देने वाली गौ हो। वेद के कथनानुसार जिसके दूध पीने से दुर्बल भी हृष्ट-पुष्ट हो जाते हैं और हीन सुश्रीक=सुन्दर शोभायमान हो जाते हैं, उस से पूरा लाभ उठाने के लिये उसे घर में पालना अच्छा होता है।

चण्डीगढ़ व हिंदीभाषी क्षेत्रों का हस्तांतरण एक साथ होगा : चिदम्बरम

नई दिल्ली, १७ नवम्बर : गृह राज्यमन्त्री पी० चिदम्बरम ने राज्यसभा में बताया कि पंजाब को चण्डीगढ़ का हस्तांतरण और चण्डीगढ़ के बदले में पंजाब से हरयाणा को हस्तांतरित किये जानेवाले हिंदी भाषी क्षेत्रों का हस्तांतरण साथ-साथ होना है। उन्होंने डा० सरोजिनी महिषी को बताया कि न्यायमूर्ति वेंकटरमैया आयोग द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार चण्डीगढ़ के बदले में पंजाब से हरयाणा को हस्तांतरित किये जानेवाले लगभग ७० हजार एकड़ क्षेत्र को निर्धारित करने का कार्य न्यायमूर्ति श्री डी० ए० देसाई को सौंपा गया है।

(पंजाब केसरी १८-११-८७)

राजस्थान के देवराला ग्राम में—

सतीप्रथा या स्त्री हत्याकांड ?

आलेख—सुखदेव शास्त्री "वानप्रस्थी" महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

गतांक से आगे—

सतीप्रथा का दूसरा प्रमुख कारण—

महाभारत के बाद के विद्वानों ने जहां ऋषि-मुनियों के नाम पर अनेकों कल्पित ग्रंथों की रचना की, वहां उन्होंने वेदशास्त्रों तथा स्मृति आदि ग्रंथों में भी बहुत मिलावट की। ग्रंथों में प्रक्षेप करने से बहुत हो अनर्थ फैला। वेदों में भी मिलावट करने की बड़ी कोशिश की गई, किंतु वेदों के पाठ निश्चित होने के कारण वे उसमें सफल तो न हो सके, किंतु कुछ-कुछ अनर्थ तो उन्होंने कर ही डाला। मुख्य रूप से दो मन्त्र उपस्थित हैं—पहले मन्त्र में तो मूर्तिपूजा के विषय में उन्होंने इस मन्त्र को प्रस्तुत किया—

न तस्य प्रतिमाऽस्ति यस्य नाम महद्यशः

इस मन्त्र में स्पष्ट है कि उस महान् शक्तिशाली परमेश्वर की प्रतिमा नहीं है, किन्तु उन्होंने कोशिश की कि न तस्य को इकट्ठा लिखकर कहना प्रारम्भ किया कि 'नतस्य" भुके हुए की प्रतिमा है। आर्यसमाज के विद्वानों से जब शास्त्रार्थ हुआ और मन्त्र को पाठ की कसौटी पर कसा गया तो न तस्य ही पाठ निश्चित हुआ। सायण महीधर आदि भाष्यकारों ने अनेकों अनर्थ किये। उसके पश्चात् मैक्समूलर आदि विदेशी विद्वानों ने भी वेदों को नीचा दिखाने के उद्देश्य से अनेकों मन्त्रों के अर्थ अन्यथा लिखे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों का भाष्य लिखकर इस दिशा में महान् कार्य किया। दूसरा मन्त्र ऐसा है जिससे मुझे लगता है कि इसी से सतीप्रथा का प्रचार किया गया—ऋग्वेद दशम मण्डल, सूक्त अठारह मन्त्र सात है—

इमा नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं विशन्तु।
अनश्रवोऽनमीवाः सुरत्ना आरोहन्तु जनयो योनिमग्रे॥

मन्त्र के अन्तिम पद से उन्होंने प्रसिद्ध किया कि विधवा अपने पति के साथ अग्नि में बैठे। इस ऋचा के अन्त में अग्रे को अग्ने पढ़कर कुछ तथाकथित पौराणिक विद्वानों ने ऋग्वेद में सतीप्रथा का समर्थन किया है। लेकिन ऋग्वेद की जितनी प्रतियां अब तक उपलब्ध हैं उनमें 'अग्ने' पाठ ही मिलता है। नारी को समानता और जीवन के सारे सुख प्रदान करने की कामना करती हुई यह ऋचा आज भी भारतीय स्त्री-समाज का गौरव बढ़ाती है। मन्त्र का शुद्ध अर्थ इस प्रकार है—

इमाः—ये, अविधवाः—पति से अविरहित, नारीः—स्त्रियां, सुपत्नीः उत्तम पति से युक्त और पति को उत्तम धर्मपत्नी होकर, आंजनेन सर्पिषा—देह पर लगाने योग्य घृतादि गन्धयुक्त पदार्थ से सुशोभित होकर, संविशन्तु—अपने गृह में प्रवेश किया करें वा पतियों का संग किया करें। वे अनश्रवः—आंसुओं से रहित, अनमीवा—रोग से रहित, सुरत्ना—सुन्दर रत्न, आभूषणादि वा रम्यगुणों, व्यवहारों वाली, जनयः—उत्तम सन्तानों को उत्पन्न करने में समर्थ स्त्रियां, अग्रे—प्रथम आदरपूर्वक, योनि आ रोहन्तु—गृह में आवें वा रथ, सेज आदि पर बैठें।

इस प्रकार वेदों में लगभग बीस हजार पांच सौ पचास मन्त्र हैं। उनमें किसी भी मन्त्र में जलकर सती होना कहीं नहीं आया।

राजपूतों में सतीप्रथा—

पुराण प्रोक्त इस निम्न कथा से भी राजपूतों की स्त्रियों में सती होने की भावना जागृत हुई ऐसा लगता है। कथा इस प्रकार है—

राजा दक्ष प्रजापति की बेटी का नाम सती था। राजा दक्ष ने एक यज्ञ किया था और उसमें भाग लेने के लिए उसने सभी राजाओं को निमन्त्रित किया था। लेकिन उसने अपने जामाता शिवजी को निमन्त्रण नहीं भेजा था। सती को जब मालूम हुआ कि मेरे पिता ने य किया है तो बिना निमन्त्रण के वह अपने पिता के यहां चली आई। राजा दक्ष ने अपने यहां आये हुए राजाओं की सभा में महादेव की निंदा की। सती को अपने पिता से इस बात की आशा न थी। वह अपने पति शिवजी के अपमान को सहन न कर सकी और उसने उस अपमान के विरोध में यज्ञकुण्ड में कूदकर जान दे दी। हिन्दू ग्रंथों के अनुसार उस सती ने राजा हिमालय के यहां पार्वती के नाम से जन्म लिया और वह शिवजी को ब्याही गई। इस प्रकार राजपूत स्त्रियों में यह पुराना विश्वास था कि जो स्त्री अपने पति के लिए अपने प्राणों का बलिदान करती है, दूसरे जन्म में उसे वही मनुष्य फिर पति के रूप में मिलता है। स्त्रियों में इस बलिदान की प्रथा की शुरुआत सीथ लोगों से हुई। उसके बाद दूसरे लोगों में उसका प्रचार हुआ। इस कथानक को यदि सचाई की कसौटी पर कसा जाये तो यह खरी नहीं उतरता। सती होने के बाद क्या पता है कि वह उसी पति की पत्नी बनेगी। कोई सती उस पति की पत्नी न बनना चाहे तो सतीप्रथा समाज की कोई अच्छी व्यवस्था नहीं कहा जा सकती। इस प्रथा के साथ न तो धार्मिक दृढ़ता है और न दाम्पत्य प्रेम है। बल्कि प्रचलित प्रथा की एक ऐसी दासता है, जिसे सती होनेवाली स्त्रियों को स्वीकार करना पड़ता था। इस निर्दयी प्रथा का प्रचार केवल राजपूतों ही में न था, बल्कि उस समय की अनेक जातियों में था। यह एक गुलामी की प्रथा थी। ऐसी जातियों में मालिक के मरने पर उसके गुलामों को भी चिता में जलाने की प्रथा थी। उसमें कौन-सा धर्म था। इस प्रकार की प्रथायें उस युग की घृणित गुलामी का परिचय देती थीं जो स्त्रियों में तो क्या, पशुओं में भी कायम नहीं रखी जा सकतीं।

कन्यावध राजपूतों में—

सतीप्रथा से भी अधिक अमानुषिक अत्याचार कन्याओं के मार डालने की भी प्रथा राजपूतों में थी। स्त्रियों के सती होने के सम्बन्ध में अनेकों बातें कही जा सकती हैं। लेकिन कन्याओं के मारे जाने का कारण क्या था? राजपूतों में लड़की के पैदा होने के बाद मार डालने का रिवाज बहुत दिनों से चला आरहा था। कन्याओं के उत्पन्न होते ही उसकी और उसकी माता की उपेक्षा होती थी। जैसे भी हो सकता था उस कन्या को मार डाला जाता था। इस प्रकार का प्रचार आमतौर से राजपूतों में था।

कन्यावध क्यों?

राजपूतों में कन्यावध क्यों किया जाता था? इसे समझने की आवश्यकता है। राजपूतों में कन्याओं के मारने के तरीके अनेक प्रकार के थे। अधिकतर लोग अफीम खिलाकर उसे मारते थे। इस घृणित हत्या का कारण राजपूतों में प्रचलित वैवाहिक प्रणाली के साथ था। राजस्थान के इतिहास में न जाने कितनी घटनायें इस प्रकार की पढ़ने को मिलती हैं कि जिसमें राजपूतों की लड़कियों के विवाहों में भयानक युद्ध हुए, अमानुषिक अत्याचार किये गये और माता-पिता तथा लड़कियों की इच्छाओं के विरुद्ध उनके विवाह हुए। इस प्रकार की घटनाओं के साथ होनेवाले विवाहों में लड़कियों ने विष खाकर अपने प्राणों का अन्त किया। कहीं भीषण मारकाट हुई और हजारों मनुष्यों की जानें गई। इस प्रकार के विवाहों के सम्बन्ध में राजस्थान का इतिहास इन दुर्घटनाओं से भरा हुआ है। राजपूतों में कुछ लोगों ने इन कुप्रथाओं एवं कुरीतियों के सुधार की चेष्टा भी की थी। आमेर के राजा जयसिंह ने एक बार कोशिश की कि राजपूतों में बढ़ती हुई वैवाहिक कुरीतियों को रोका जाये और धन का जो अपव्यय होता है उसके विरुद्ध आंदोलन किया जाये। जयसिंह ने उस समय के वर्तमान राजाओं से प्रस्ताव किया था कि कोई भी अपनी मर्यादा के बाहर विवाहों में धन का दुरुपयोग न करे। साथ ही प्रत्येक राजा अपने सामन्तों को परामर्श दे कि वे अपनी एक वर्ष की आमदनी से अधिक खर्च विवाह में न करें।

(क्रमशः)

मेरी चीन यात्रा—९

भारत चीन सम्बन्ध

—प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

गतांक से आगे—

भारत और चीन दोनों पुराने देश हैं। कौन-सा देश अधिक प्राचीन है यह ऐतिहासिक तथ्यों पर कहना कठिन है। दोनों के बीच में हिमालय पड़ता है। तिब्बत के दोनों ओर भारत और चीन बसते हैं। जब १९६२ में चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया, तब हमारे देश में नारा लगाया जाता था "तुम हो चीन तो हम प्राचीन"। हम भारत को चीन से भी प्राचीन मानते हैं। दोनों की संस्कृति में जहां कुछ भिन्नतायें हैं वहां कुछ समानतायें भी हैं। कन्फ्यूशियस तथा बौद्ध धर्मों का आज भी बहुत व्यापक प्रभाव है, चाहे साम्यवाद का आज वहां बोलबाला है। बौद्धधर्म तो भारत से ही वहां गया है और वह हिन्दू धर्म का अभिन्न अंग है, चाहे आज हम उसे अलग मानने लगे हैं। कन्फ्यूशियस का सम्प्रदाय भी बहुत भिन्न नहीं है। खाने-पीने की आदतों को यदि थोड़ी देर के लिये पीछे डाल दें तो यह कहा जा सकता है कि चीन और भारत की मान्यतायें बहुत हद तक समान हैं। माओत्से तुंग ने उन्हीं मान्यताओं, सन्तों की उक्तियों तथा उपदेशों का सहारा लेकर ही चीन के ग्रामीण जनमानस को अपने साथ लगाया था। आज भी बड़ी संख्या में चीन के लोग जहां कहीं महात्माबुद्ध की प्रतिमा मिल जाये उसको साष्टांग प्रणाम करते हैं तथा पैसे चढ़ाते हैं।

जैसे सभी पड़ोसी देशों के सम्बन्धों में उतार-चढ़ाव आते हैं, ऐसे भारत चीन के सम्बन्धों में भी उतार-चढ़ाव आते रहे हैं। सब मिलाकर दोनों देशों में सम्बन्ध अच्छे ही रहे हैं। भारत की ओर से सदा इन सम्बन्धों को मधुर बनाये रखने के लिये प्रयास चलते रहे हैं। १९६२ में चीन के अकस्मात् आक्रमण के कारण सम्बन्धों में कटुता आना स्वाभाविक था। चीन पश्चिम की अक्साई चिन में सड़क बनाते-बनाते हमारे हजारों किलोमीटर क्षेत्र को दबा बैठा और पूर्व में भी छेड़खानी करता रहता है, ताकि पश्चिम का दबाया हुआ क्षेत्र भारत हमेशा के लिये उसे देना मान ले। भारत यह बात नहीं मान सकता था, इसलिये पाकिस्तान से उसके कब्जे में गिलगिट का क्षेत्र था। उसमें से कुछ क्षेत्र लेकर चीन और पाकिस्तान को मिलानेवाली सड़क बना डाली। पिछले २५ वर्षों से इसीलिये ये चीन और पाकिस्तान के सम्बन्ध घनिष्ठ होते चले गये। १९६२ के बाद भारतीयों का चीन में जाना बन्द होगया और पाकिस्तानियों का आवागमन बढ़ता चला गया। हम को देखकर चीन के लोग यही समझते थे कि ये पाकिस्तान से आये होंगे, इसलिये 'सलाम आलेकम' से ही अभिवादन करते थे। शक्ल-सूरत से पाकिस्तानी और भारतीय एक जैसे हैं ही।

यह तथ्य चीनियों से छिपा हुआ नहीं है कि भारत १९५० से ही चीन को राष्ट्रसंघ का सदस्य बनाये जाने की वकालत करता रहा और १९६२ के आक्रमण के बाद भी भारत अपने पुराने निश्चय पर डटा रहा। पाकिस्तान तो इस मामले में बदलता खिसकता रहा। दूसरे राष्ट्रों के साथ सम्बन्धों का आधार साधारणतया सिद्धांत न होकर अपना राष्ट्रीय स्वार्थ ही होता है। पाकिस्तान के साथ सम्बन्ध बढ़ाने से चीन का स्वार्थ पूरा होता था। चीन और पाकिस्तान सड़क से जुड़ने से भारत पर दबाव डालने की स्थिति में चीन आजाता है और उसी दबाव की ताकत पर भारत को अक्साई चिन की दबाई हुई हजारों किलोमीटर भूमि चीन को सदा-सदा के लिये देने के लिये बाध्य किया जा सकता है। यही चीन आज कर रहा है। मेरी चीन की पार्लिमैंट के अध्यक्ष पेंगझेन से २५ सितम्बर को २५ मिनट तक इसी मामले पर बातचीत हुई। उन्होंने सद्भावना से सीमा समस्या को सुलझाने की बात चाहे बार-बार कही और भारत चीन के पहिले जैसे सम्बन्ध बनाने की भी, परन्तु इन बातों में औपचारिकता अधिक और सार कम होता है। सीमा समस्या का सम्मानजनक हल तो तभी होगा जब भारत की सैनिक शक्ति बराबर की होगी और चीन को भी भारत से सम्बन्ध ठीक करने की मजबूरी होगी। तिब्बत के मामले को लेकर चीन क्या करता है, उसे कुछ स्वायत्तता देता है या कुचल कर उसे अपना फौजी जमाव का केन्द्र बनाता है इस पर भी भारत चीन के सम्बन्धों पर प्रभाव पड़ेगा। चीन के सम्बन्ध अमरीका के साथ कैसे रहेंगे और रूस के साथ कितने सुधरेंगे, इसका भी प्रभाव हमारे सम्बन्धों पर पड़ेगा, परन्तु अब जब आवागमन और व्यापार चीन के साथ बढ़ने लगा है, तब भारतीयों का चीन में आना-जाना बढ़ना चाहिये और सामान्य से अधिक मधुर सम्बन्ध बनाने का प्रयास चलते रहना चाहिये। (क्रमश:)

ज्ञान सप्तक दोहावली

मन कागा ऐसा भया, रहता घात लगाये।
सन्त समागम जब हुआ, मोती चुग-चुग खाये।

कामी क्रोधी लालची, मन तिरिया में जाये।
अब तो मन योगी भया, योग साधना पाये॥

गुरुवर दयानन्द-सा, मिलना कठिन जहान।
शिष्य जिन्हों के जो बने, श्रद्धानन्द महान्॥

गुरु मुझको ऐसे मिले, 'केवल' ओमानन्द।
जिनके गुरुवर कम नहीं, ऋषिवर सर्वानन्द॥

मठ मन्दिर आश्रम बने, जग में बने अनेक।
दीनानगर मठ क्या बना, दयानन्द का एक॥

धन्य मसूदा भाग्य है ऋषिवर ठहरे जाये।
वेदामृत ऐसा दिया, हरषा जन-समुदाय॥

रूपकंवर माता हुई, कोठारी परिवार।
भवन दे दिया दान में, धन्य-धन्य सौ बार॥

संग्रहकर्ता—स्वामी केवलानन्द सरस्वती
महर्षि दयानन्द साधना स्थली, आर्यसमाज मसूदा,
जिला अजमेर

आर्यसमाज होडल का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज होडल का २१वां वार्षिक उत्सव १३-१४-१५ नवम्बर को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। जिसमें आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् संन्यासी उपदेशक सर्वश्री स्वामी प्रेमभिक्षु, स्वामी दर्शनानन्द, सुखदेव शास्त्री, हरिश्चन्द्र शास्त्री, शोभाराम प्रेमी, भजनलाल आर्य, म० खेमसिंह आर्य आदि विद्वान् उपदेशकों ने सतीप्रथा, शराबबन्दी एवं अन्य सामाजिक कुरीतियों से समाज को बचाने का आह्वान किया। होडल शहर एवं क्षेत्र से आये हजारों लोगों ने लाभ उठाया। श्री सीताराम सिंगला और सुभाष कत्याल मन्त्री हरयाणा सरकार ने समाज के विद्यालय के लिए १६०००) दान का वचन दिया। समाज की ओर से सभा को ४०२) का सहयोग दिया गया।

भजनलाल आर्य उपदेशक

शोक समाचार

आर्यसमाज खेड़ी सुलतान, जिला रोहतक के मन्त्री श्री मा० इन्द्रजीतसिंह जी का १ अक्तूबर, ८७ को अचानक स्वर्गवास होगया। जिन्होंने दादा बस्तीराम जी के बाद लगभग २० वर्षों तक इलाके में अपने प्रवचनों के द्वारा अनवरत सेवा की। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके दुःखी परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—सभामन्त्री

राजस्थान का सतीकांड, आर्यसमाज को गम्भीर चुनौती

जयपुर २२ अक्तूबर। आर्यसमाज कृष्णपोल बाजार, जयपुर की सभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के पूर्व उपमन्त्री व आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मन्त्री तथा नगर आर्यसमाज जयपुर के प्रधान श्री भगवतीप्रसाद सिद्धांत भास्कर ने सीकर के ग्राम दिवराला में श्रीमती रूपकंवर के चिता पर जल जाने को एक निर्मम हत्या, घोर अन्धविश्वास, पारिवारिक उत्तरदायित्व से बचने व जाति गौरव प्राप्त करनेवाला एक षड्यन्त्र तथा जघन्य अपराध बताया।

आपने कहा कि पति के शव के साथ जीवित जलने का विधान किसी भी वेदमन्त्र व धर्मशास्त्र में नहीं है, अपितु विधवा विवाह का विधान है। इसी के आधार पर सन् १८२९ में राजा राममोहनराय के प्रयत्न पर भारत के वायसराय लार्ड बेंटिक ने सतीप्रथा के विरोध में कानून बनाया और सन् १८५६ में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के प्रयत्न से विधवा पुनर्विवाह कानून भी बना। राजस्थान में भी ऐसे कानून बने तथा इसका उल्लंघन करनेवालों को न्यायालय द्वारा कठोर कारावास का दण्ड दिया गया।

उन्होंने कहा कि पुरी के शंकराचार्य श्री निरंजनदेव द्वारा उपरोक्त को महायाग कहना, हिन्दूधर्म में हस्तक्षेप बताना, वेदमन्त्र से सती होना सिद्ध करना व शास्त्रार्थ की चुनौती देना उनका अनर्गल प्रलाप है, जबकि लार्ड बेंटिक द्वारा कानून बनाते समय भी अन्धविश्वासी, पोंगापंथियों ने इसे हिन्दूधर्म में हस्तक्षेप बताया और सतीप्रथा के समर्थन में ऋग्वेद मण्डल १०, सूक्त १८, मन्त्र ७ के अन्तिम शब्द 'योनिमग्रे' के स्थान पर मनगढंत 'योनिमग्ने' बताया। तब वेद के विद्वान् वेदपाठियों द्वारा 'अग्रे' शब्द ही प्रमाणित किया गया अर्थात् इन शास्त्रार्थ में सतीप्रथा अवैदिक व अधार्मिक सिद्ध हुई। फिर भी यदि शंकराचार्य शास्त्रार्थ करने का पुनः दुस्साहस करना चाहते हैं तो एकांत स्थान पुरी की गुफा में बैठकर नहीं, राजस्थान की राजधानी जयपुर में अथवा देहली में देश के बुद्धिजीवियों के समक्ष शास्त्रार्थ करलें। आर्यसमाज के नेताओं द्वारा उन्हें यह चुनौती दी जा चुकी है। सभा में सतीकांड के सम्बन्ध में आरम्भ से सरकार द्वारा बर्ती गई उपेक्षा तथा कानून का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही न करने की कड़ी आलोचना की गई तथा सतीप्रथा के विरोधियों व लेखकों को सतीप्रथा समर्थकों द्वारा मार डालने की धमकियों के कारण पंजाब की भांति राजस्थान में भी आतंक के संकट से बचने के लिए सरकार को समय रहते सचेत होने को कहा। आपने हिन्दूधर्म रक्षा समिति पर शीघ्र प्रतिबन्ध लगाने की माग की, जो कि नारी हत्या के इस महापाप व कानूनी जघन्य अपराध को धर्म बताकर धर्मभीरू, अन्धविश्वासी अशिक्षित भोली जनता की धार्मिक भावनाओं को भड़का कर सारे प्रदेश में अशांति व अराजकता उत्पन्न करके कानून व्यवस्था को भग कर रही है। क्योंकि राजस्थान के मुख्य मन्त्री अपने ही मन्त्री मण्डल के कुछ सती समर्थकों के दबाव के कारण उक्त अवस्था सम्भालने में नितांत असमर्थ सिद्ध हुए हैं। अतः राजस्थान में सतीकांड के अपराधियों को दण्डित करने, सम्पूर्ण कानून व्यवस्था व शांति बनाये रखने के लिये तथा पंजाब जैसा संभावित आतंकवाद रोकने के लिये आपने भारत के प्रधानमन्त्री व गृहमन्त्री को पत्र भेजे हैं कि वह राजस्थान में शीघ्र ही राष्ट्रपति शासन नियुक्त करें।

आपने भारत की समस्त प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों व विशेषतः राजस्थान की आर्यसमाजों से अपील की है कि वे सतीकांड के विरोध में तथा इसके समर्थकों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करने के लिये राजस्थान के मुख्यमन्त्री तथा भारत के प्रधानमन्त्री व गृहमन्त्री को प्रस्ताव भेजें तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी के आदेशानुसार सतीप्रथा, अंधविश्वास व सामाजिक कुप्रथाओं के विरोध में प्रचार करें। क्योंकि आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द से उक्त कार्यों की पूर्ति हेतु ही सम्पूर्ण भारत में वैदिकधर्म का प्रचार किया तथा अन्त में राजस्थान में अपने प्राणों की आहुति दी। अतः महर्षि दयानन्द के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि राजस्थान के आर्यजन व आर्यसमाज अपने नगर व ग्राम में असत्य, अधर्म, अन्धविश्वास व अविद्या अन्धकार मिटाने में अग्रसर हों।

—भगवतीप्रसाद सिद्धांत भास्कर
१४३०, पं० शिवदीन मार्ग, कृष्णपोल बाजार, जयपुर

पाखण्डों के उन्मूलन के लिये आर्यसमाज अभियान चलाये

नई दिल्ली २२ अक्तूबर। आज देश में 'रूपकंवर' सतीकांड हो रहे हैं और शंकराचार्य उनका समर्थन कर रहे हैं, परन्तु हम अपनी माताओं, बहिनों व बेटियों को जलने नहीं देंगे। चाहे इसके लिये कितनी कुर्बानियां भी क्यों ना देनी पड़े। यह उद्गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा रामलीला मैदान नई दिल्ली में आयोजित महर्षि दयानन्द सरस्वती के १०४वें निर्वाणोत्सव पर व्यक्त किये।

'भाषा' के सम्पादक डा० वेदप्रताप वैदिक ने कहा कि इस दिन हमें महर्षि के अधूरे कामों को पूरा करने का संकल्प लेना चाहिए। उन्होने आगे कहा कि हिन्दी के समर्थन में एक जन-आंदोलन चलाया जाये।

ससद व पूर्व राज्यमन्त्री श्री डी० पी० यादव ने कहा कि दयानन्द एक युग पुरुष थे। जिनके बताये हुए मार्ग पर चलकर देश वर्तमान सकट से उभर सकता है। इस अवसर पर स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, डा० शिवकुमार शास्त्री, डा० श्रीमती सरोज दीक्षा, स्वामी अग्निवेश, श्री सन्तकुमारसिंह (दक्षिण अफ्रीका), प० चिन्तामणि आदि नेताओं ने भी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सतीप्रथा, बालविवाह, अनमेल विवाह आदि बुराइयों के उन्मूलन के विरुद्ध क्रांतिकारी अभियान चला कर स्वामी जी के कार्य को पूरा करना चाहिये।

स्वामी डा० सत्यप्रकाश सरस्वती ने अध्यक्षीय भाषण में वैदिक साहित्य के प्रकाशन व प्रचार पर बल दिया और आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री को ११००) एव प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

—विमलकांत शर्मा

सत्यार्थप्रकाश में संशोधनार्थ सुझाव आमन्त्रित

आप आर्यजगत् के जाने-माने चिन्तक हैं और दयानन्द सरस्वती जी के ग्रन्थ शुद्ध छपें और सुलभ हों उसमें भी आपको अभिरुचि है। अतः आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि महर्षि की उत्तराधिकारिणी श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर ने अपने साधारण अधिवेशन दिनांक १-११-१९८७ को प्रस्ताव संख्या १४ पारित किया है, वह इस प्रकार है—

प्रस्ताव-१४—सत्यार्थप्रकाश के संशोधन हेतु अब तक हो रहे निर्णयों पर श्री सुधीरकुमार जी गुप्त ने असन्तोष व्यक्त किया। इस सम्बन्ध में कुछ विद्वानों के सभा में आये हुए पत्रों की चर्चा भी हुई। स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती ने प्रस्ताव किया कि लम्बे समय से चले आ रहे इस विवाद का सभा की ओर से निर्णय हो जाना चाहिये। अतः पहला काम सभा की ओर से यह हो कि आर्यजगत् के विद्वानों से परोपकारी पत्रिका के माध्यम एवं पत्रों से सभा द्वारा मुद्रित सत्यार्थप्रकाश में परिवर्तन एवं संशोधन योग्य स्थलों का विवरण आमन्त्रित किया जाये। ३१ दिसम्बर, ८७ तक प्राप्त विवरणों को लेकर सभा के विद्वज्जन अपना अन्तिम निर्णय घोषित करके प्रकाशनार्थ सभा को दे देवें। स्वामी जी के प्रस्ताव का डा० भवानीलाल जी भारतीय ने अनुमोदन किया। प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

उपर्युक्त प्रस्ताव के परिप्रेक्ष्य में निवेदन है कि विद्वज्जन अपने सुझावों को ३१ दिसम्बर, ८७ तक श्रीमती परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री गजानन्द जी आर्य, दयानन्द आश्रम केसरगंज, अजमेर के पते पर भिजवाने का कष्ट करें।

—कर्मचन्द गुप्त का० मन्त्री

तुम्हें प्रणाम

वैदिक पथ के महापथिक तुम—
थे, वेदों के अनुयायी।
वेदों के पावन प्रचार में—
तुमने सारी शक्ति लगायी।

जीवन रहा तुम्हारा पावन—
सत्य-शिवम्-सुन्दर ललाम।
'अमर स्वामी जी' तुम्हें प्रणाम॥

ऋषिवर दयानन्द के सच्चे,
तुम थे अनुगामी-अनुचर।
रहे जूझते अनय-असत्य से,
निर्भय होकर जीवन भर।

तेरी सिंह-गर्जना युग-युग—
गूंजेगी हर नगर-ग्राम।
'अमर स्वामी जी' तुम्हें प्रणाम॥

शास्त्रार्थों का तुमने स्वामी!
नव अभियान चलाया।
महारथी बन शास्त्रार्थ के,
प्रतिपक्षी को सदा हटाया।

'निर्णय के तट पर' हे स्वामिन्!
डटे रहे तुम निडर निकाम।
'अमर स्वामी जी' तुम्हें प्रणाम॥

—राधेश्याम आर्य

जो नहीं चाहते, वहां ठेके नहीं खुलेंगे

करनाल १४ नवम्बर (स)। हरयाणा के पंचायत व विकास मन्त्री हुकमसिंह ने गत सायं यहां कहा कि वे पंचायतें जो अपने गांव में शराब का ठेका नहीं खोलना चाहतीं, वे नवम्बर में प्रस्ताव पारित करके भेज दें। उन्होंने कहा कि सरकार ने ऐसे गांवों में शराब के ठेके बन्द करने का फैसला किया है।

मन्त्री महोदय ने कहा कि पंचायतों को समय से पूर्व ऐसे प्रस्ताव पारित करके भेज देने चाहिये।

(दैनिक ट्रिब्यून १५-११-८७)

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

हरयाणा के पंचायत व विकास मन्त्री श्री हुकमसिंह जी के उपरोक्त वक्तव्य के अनुसार अपने आर्यसमाज के निकट के ग्रामों में जहां शराब के ठेके हैं वहां की ग्राम पंचायतों से सम्पर्क करके शराबबन्दी का प्रस्ताव करवाकर यथाशीघ्र सरकार को भिजवाने की प्रेरणा करें। प्रस्ताव का प्रारूप प्रकाशित किया जा रहा है—

नशाबन्दी प्रस्ताव

माननीय मुख्यमन्त्री जी, हरयाणा सरकार, चण्डीगढ़।

निवेदन है कि हमारे ग्राम ...... जिला ...... ग्राम सभा (पंचायत) ने अपनी बैठक दिनांक ...... में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है—

"यह ग्रामसभा (पंचायत) शराब पीने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिये बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में अनाचार, अशान्ति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की नशाबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में स्थित शराब की दुकान तुरन्त बन्द करदी जाये और भविष्य में कदापि भी यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जावे, ताकि उक्त दुर्व्यसनों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।"

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

धन्यवाद!

ता० ......

विनीत

ग्रामसभा (पंचायत) के सदस्य

प्रतिलिपि सेवा में :—

१. प्रधानमन्त्री, भारत सरकार नई दिल्ली।
२. मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

हस्ताक्षर

आर्यसमाज होडल जि. फरीदाबाद का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री हेतराम गर्ग, उपप्रधान—मुरारीलाल एवं रंगलाल आर्य, मन्त्री—भद्रसेन सचदेव, उपमन्त्री—देवदत्त शर्मा, कोषाध्यक्ष—वेदप्रकाश आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—ओमप्रकाश मित्तल, संरक्षक—ठाकुरदास दीवान, मूलचन्द आर्य।

आर्यसमाज कोसली, रोहतक

प्रधान—सर्वश्री अशोककुमार आर्य, उपप्रधान—दलीपसिंह आर्य, मन्त्री—रायसिंह आर्य, उपमन्त्री—अगणाराम आर्य, प्रचारमन्त्री—विश्वमित्र लूखी, निरीक्षक—डिप्टी भगतराम, सहायक निरीक्षक—चन्द्रसिंह आर्य।

महर्षि दयानन्दमठ चम्बा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती अध्यक्ष वैदिक यतिमण्डल की अध्यक्षता में मठ का वार्षिकोत्सव ६ से ८ नवम्बर तक तथा यतिमण्डल का सम्मेलन सम्पन्न हुआ। यतिमण्डल के सम्मेलन में ३२ यतियों ने भाग लिया। स्वामी सत्यानन्द जी परिव्राजक तथा पं० निरजनदेव जी तीर्थ के प्रवचन हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्रीभगवान् चैतन्य, आर्य युवक परिषद् के १२५ युवक युवतियां, डी० ए० वी० कालेज कांगड़ा के ५० युवक युवतियों का दल आचार्य मनोहरलाल जी एम० ए० एवं श्री तनेजा जी के नेतृत्व में सम्मिलित हुआ। जम्मू, लुधियाना, कांगड़ा, धर्मशाला शिमला के अनेक भाई-बहिन सम्मिलित हुए। मठ की अनन्य भक्त ३ देवियां लन्दन से इस शुभावसर पर पधारी। शोभा-यात्रा का दृश्य अद्भुत और मनोहर था। शोभायात्रा के समापन पर चौगान के मैदान में श्री आशाराम जी आर्य के आकर्षक धनुर्विद्या के खेल हुए, जिनका चम्बा की जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

समापन समारोह के अवसर पर दिल्ली के भी पं० ब्रह्मप्रकाश जी शास्त्री विद्यावाचस्पति का अभिनन्दन मठ का तन, मन, धन से सह-योग करने तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हि० प्र० को वेदप्रचार में सहयोग करने के उपलक्ष्य में श्री स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती ने किया। इसी प्रकार श्री कृष्णलाल जी आर्य का अभिनन्दन मठ की तन, मन, धन से सहयोग करने के उपलक्ष्य में स्वामी जी महाराज ने किया। वैदिक यति मण्डल के अध्यक्ष श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने दोनों महानुभावों को सम्मानस्वरूप शाल समर्पित किये। तालियों की गड़गड़ाहट से पंडाल गूंज उठा। आभार प्रकट करते हुए श्री शास्त्री ने कहा कि स्वामी जी महाराज के हृदय में वैदिकधर्म प्रचार की तड़फ है। वे चाहते हैं कि चम्बा के दोनों गुरुकुलों के ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणियां स्नातक बनकर विश्व में वैदिकनाद गुंजाये। अन्त में शांतिपाठ के पश्चात् उत्सव की कार्यवाही सम्पन्न हुई।

—भगवान् चैतन्य एम० ए०
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश, सुन्दर नगर

कविता

मस्त राही चलता चल, वक्त जैसे ढलता चल।
साथ है भगवान्॥
चलना तेरी जीत है, रुकना दुःख से प्रीत है।
मौत का सामान॥
सोचकर चल हर कदम, हर इरादा कर सबल।
वो इरादा क्या हुआ जो, राह में जाये बदल।
बढ़ चुके तेरे कदम, उनको मत करना थम।
चाहे जाये प्राण॥१
तू अकेला है नहीं सारा जमाना साथ है।
कौन थामेगा नहीं, कर्मरत जो हाथ है।
हाथ ज्यों पारस का कण, छूने से होगा स्वर्ण।
हो भले पाषाण॥२
कितने साथी जिन्दगी के पथ में पीछे छूट गये।
चलने से जो थम गये वो बीच राह में लुट गये।
और जो आगे गये, मिल गये साथी नये।
करने नव-निर्माण॥३
माना है राहें नई और सब राही नए।
जानेवाले पदचिह्नों से अनकही भी कह गए।
भेद इनका खोल सारा जान मंजिल का इशारा।
और लगा अनुमान॥४
कौन जाने किस डगर पै यात्रा होगी खत्म।
कौन राही साथ देगा राह का भी है भ्रम।
पर निरन्तर जो चलेगा दलाल उसको ही मिलेगा।
मंजिलों का ज्ञान॥५

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी
प्रधान आर्यसमाज कंवारी

क्या हमारे धर्माचार्य अपने मठों में करोड़ों की सम्पत्ति संजोये बैठकर समाज तथा देश को बचा सकेंगे

आज हमारे धर्माचार्य जो अपने मठों में करोड़ों की सम्पत्ति पर नाग की भांति कुण्डली मारे बैठे हैं वे वहां बैठकर और फूल मालायें पहन कर अपनी इस सम्पत्ति, देश, समाज तथा मठों की रक्षा कर सकेंगे। यह सम्भव नही दिख रहा। क्योंकि आज हिन्दू समाज और इस देश को समाप्त करने के लिए देश के बाहरी तथा भीतरी शक्तियां और सरकार की गलत नीतियां सक्रिय हो चुकी हैं। हिन्दू समाज में अब जान दिखाई नहीं देती, जिससे कि वह संगठित होकर इन अलगाववादी देशद्रोही शक्तियों से लोहा ले सके। क्योंकि वह भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों, दलों, संगठनों आदि में विभाजित कर दिया गया है। वह अपने निजी हितों के बारे में ही सोचता है, समाज या देश के बारे में नही। आज तो वह अपने अतीत के गौरव और सभ्यता तथा संस्कृति को भी भूल गया है और पश्चिमी सभ्यता का अन्धानुकरण कर रहा है।

आज आवश्यकता है कि हिन्दू समाज को उसके अतीत के गौरव और सभ्यता तथा संस्कृति की याद दिलाकर उसे में वैचारिक क्रांति का सूत्रपात कर उसे पुनः संगठित कर देश तथा समाज की रक्षा के लिए तैयार किया जाये। इस काम को हमारे धर्माचाय भली-भांति कर सकते हैं। देश का बुद्धिजीवी भी इनके साथ मिलकर इस काम में सहयोग दे सकता है। क्योंकि हमारे हिन्दू समाज में धर्माचार्यों के प्रति अपार श्रद्धा आज भी विद्यमान है। इसलिए यदि वे अपने मठों से बाहर निकल कर मैदान में उस सम्पत्ति को धर्मप्रचार के कार्य में लगाकर आदि शंकरा-चार्य, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द तथा स्वामी रामतीर्थ की भांति इस समाज को जगाने के लिए चल पड़े तो कोई कारण नही कि हिन्दू समाज में जागृति न आये। वैसे भी उनके अनुरूप यह धर्माचार्यों का परम दायित्व भी है कि वे हिन्दू समाज में देश तथा समाज को बचाने के लिए मैदान में उतर कर शखनाद करें, ताकि हिन्दू समाज जाग जाये। आज हिन्दू समाज यह भूल गया है कि यदि हिन्दू बचेगा तो ही देश बच सकता है अन्यथा इस बात का इतिहास साक्षी है। जहां हिन्दू कमजोर हुआ, वही भाग इससे अलग होगया है। इसलिए आज देश को बचाने से पहले हिन्दू को बचाना अति आवश्यक होगया है। हमारे धर्माचार्य शायद सोमनाथ के मन्दिर के लूटे जाने की घटना को भूल गये हैं। आज भी श्रीराम जन्म स्थान के लिए सघष हो रहा है, उसका एकमेव यही कारण है कि हिन्दू में वैचारिक जागृति का अभाव और अपने अतीत के गौरव को भूलना ही है।

यदि हमारे धर्माचार्य और बुद्धिजीवी इस काम को लेकर आगे आ जायें तो उनका हर जगह स्वागत होगा और हिन्दू समाज तथा यह देश दोनों ही बच सकेंगे। यदि ऐसा न किया गया तो न शंकराचार्य रहेंगे, न धर्माचार्य, न उनके मठ रहेंगे और न उनकी सम्पत्ति बचेगी। हम अपने मानबिन्दुओं गीता, गायत्री, गंगा, गाय और गोपाल को नहीं बचा सकेंगे और फिर यहां कोई राम श्याम न होकर रहीम करीम स्टीफन या जैकब बन जायेंगे और यह देश तथा हिन्दू समाज सदा के लिए समाप्त हो जायेगा। इसलिए हमारे धर्माचार्यों को अब इस पर गम्भी-रता से सोचने का समय आगया है और यदि वे चाहें और धर्मप्रचार को निकल पड़ें तो अभी कुछ नहीं बिगड़ा है, सब कुछ ठीक हो सकता किन्तु यदि अब विलम्ब हुआ तो फिर केवल पछताना मात्र ही रह जायेगा। अतः हमारे धर्माचार्यों और बुद्धिजीवियों को अपने निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर देश तथा समाज की रक्षा को प्राथमिकता देनी होगी। तभी इस काम में सफलता मिल सकती है। आशा है हमारे धर्माचार्य और बुद्धिजीवी इस पर गम्भीरता से विचार कर धर्मप्रचार के काम में बिना किसी विलम्ब के जुट जायेंगे।

भवदीय—विशम्भरस्वरूप गोयल

गौ तथा भैंस की सर्वोत्तम हरयाणा नसल को बचाना हरयाणावासियों का पुनीत कर्तव्य

सारा देश जानता है कि हरयाणा नसल की गाय बछड़े और बैल देशभर में मशहूर हैं। इसी प्रकार हरयाणा की मुर्रा नसल की भैंस भी देश में सर्वोत्तम है।

जिस भयंकर सूखे का मुकाबला हरयाणा के आधे से ज्यादा जिलों की जनता को करना पड़ रहा है, यह हमारी याद में कभी भी नहीं करना पड़ा। अन्न के भण्डार तो देश में हैं, परन्तु पशुओं के लिये चारे और भूसे के भण्डार नहीं हैं। ज्यों-ज्यों समय बीत रहा है, चारा और भूसा मंहगा तो होता ही जारहा है, उनका मिलना भी कठिन से कठिनतर होता जारहा है।

किसानों को अपनी गाय, बछड़े, बछड़ियां, बैल और भैंसों को बचाने के लाले पड़ रहे हैं। ऐसे भयंकर सूखे और अकाल से पीड़ित किसान सांडों (खागड़ और झोटे) की सुध-बुध ले पायेंगे, यह असम्भव होता जारहा है। हम सब भली प्रकार जानते हैं कि यदि सांडों की पूरी देख-रेख और चराई नहीं हो पाई और वे कमजोर होगये या मर गये तो हरयाणा की गाय और भैंस की नसलों में गिरावट आजायेगी और वह हरयाणा और देश के लिये बहुत बड़ी हानि होगी। चाहिये तो अच्छे बछड़े और कटड़े चुनकर, उनको सांड बनाने के लिये उनको भी अच्छी खुराक दी जाये, परन्तु जो सांड इस समय प्रदेश की मशहूर नसलों की अभिवृद्धि में सेवारत हैं, उनको बचाया ही न जावे, बल्कि उनको पूरी खुराक देकर हृष्ट-पुष्ट रखा जाये।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का ध्यान इधर गया और उसने इस दिशा में अपने कर्त्तव्य का पालन करने का संकल्प लिया है। हमने हरयाणा सरकार और भारत सरकार से भी निवेदन किया है कि वे एक तिहाई सहायता करे। यदि १५ रु० दैनिक व्यय एक सांड पर आता है तो वे ५ रु० दें और हरयाणा की जनता भी एक तिहाई हिस्सा वहन करे।

हमारा अन्दाजा है कि लगभग १००० सांडों की रक्षा का भार हम सबको मिलकर उठाना होगा। ५ रु० प्रति सांड जनता को इकट्ठा करना है। चारा और दाना दोनों का प्रबन्ध करना है।

हरयाणा के लोग जहां भी हों, हरयाणा में या बाहर, उन सब की सेवा में हम पुरजोर अपील करते हैं कि वे इस पवित्र कार्य में दिल खोलकर मदद करें और उदारता से चारा, अन्न या नकद दान दें।

मण्डियों के धर्म-प्रेमी सभी व्यापारी भाइयों से विशेष अपील है कि वे हरयाणा की मशहूर गाय और भैंसों की नसल की रक्षा के लिये दिल खोलकर दान दें।

निवेदक

प्रो० शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	बद्रीप्रसाद आर्य
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धांती भवन, रोहतक

सर्वहितकारी का श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक

अमर हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस २३ दिसम्बर को सारे आर्यजगत् में धूमधाम से मनाया जायेगा। इस अवसर पर सर्वहितकारी का २१ दिसम्बर का अंक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक प्रकाशित होगा जिसमें आर्य विद्वानों के लेख तथा कविताएं प्रकाशित होंगी।

—सम्पादक

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक
२. " फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार
३. " सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत
४. " हरीश एजेन्सीज ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत
५. " भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल
६. " घनश्यामदास सीताराम बिचला बाजार, भिवानी
७. " कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा
८. " कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद
९. " चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/५ जेकमपुरा, गुड़गांव

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज शेखपुरा, करनाल

प्रधान—सर्वश्री रामसिंह, उपप्रधान—जोगराज, मन्त्री—रणधीरसिंह शास्त्री, उपमन्त्री—जोरसिंह, प्रचारमन्त्री—डा० धर्मवीरसिंह, कोषाध्यक्ष—डा० बलवीरसिंह, लेखानिरीक्षक—कंवरभान।

आर्यसमाज विलासपुर, अम्बाला

प्रधान—सर्वश्री जयसिंह वानप्रस्थी, उपप्रधान—रामचन्द्र आर्य, मन्त्री—रुबेलसिंह आर्य, उपमन्त्री—कुलदीप आर्य, कोषाध्यक्ष—लक्ष्मण आर्य, प्रचारमन्त्री—रामचन्द्र आर्य मोहड़ी, संयोजक—सुमेरचन्द आर्य।

आर्यसमाज पृथ्वीपुर जि. अम्बाला

प्रधान—सर्वश्री गुरनामसिंह आर्य, उपप्रधान—हृदयराम आर्य, मन्त्री—फूलसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—नगेन्द्रसिंह आर्य।

आर्यसमाज लोहारू, भिवानी

प्रधान—सर्वश्री मा० अमरसिंह, उपप्रधान—महाशय हरिश्चन्द्र, महाशय शिवलाल, मा० गुगनसिंह, मन्त्री—रोहतासकुमार आर्य, उपमन्त्री—सूरतसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—भरतसिंह शास्त्री, पुस्तकाध्यक्ष—सत्यदेव आर्य, लेखानिरीक्षक—मा० चन्दनसिंह।

आर्यसमाज सीलधा, रोहतक

प्रधान—सर्वश्री पृथ्वीसिंह सरपंच, मन्त्री—रिसालसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—रामफल कटारिया, पुस्तकाध्यक्ष—रामानन्द, प्रचारमन्त्री—प्रह्लादसिंह।

आर्यसमाज नलवा जि. हिसार

प्रधान—सर्वश्री पुष्करलाल आर्य, महामन्त्री—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, उपप्रधान—बेगराज, मांगेराम, मन्त्री—रामेश्वरदास आर्य, कोषाध्यक्ष—धर्नसिंह आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—कृष्णकुमार।

शोक समाचार

श्री बलवीरसिंह जी आर्य ग्राम कासनी को अचानक मृत्यु होगई। वे ५८ वर्ष के थे। आर्यसमाज के कामों में बड़ी रुचि रखते थे।

श्री अमरसिंह जी पुत्र श्री धनीराम आर्य ग्राम कासनी की मृत्यु साधारण रोग होने से होगई। यह बड़े हिम्मत वाले व्यक्ति थे। असाधारण कष्टों को झेलते हुए पता भी नहीं होने देते थे। उपरोक्त दोनों परिवारों को कष्ट तथा अभाव सहने की शक्ति हेतु परमात्मा से प्रार्थना करता हूं।

—दीपचन्द आर्य, ग्राम पो० कासनी, जिला रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 पंजि



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

सह-सम्पादक—डा० सुखबीर

वर्ष १५, अङ्क २ २८ नवम्बर, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा सूखापीड़ित ग्रामों में सांड तथा झोटों की सुरक्षा हेतु आर्थिक सहायता

(कार्यालय संवाददाता द्वारा)

हरयाणा प्रदेश के सूखा पीड़ित ग्रामों में जहां नहर तथा नलकूपों के पानी की कमी है, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से हरयाणा की सर्वोत्तम गाय तथा भैंस की नसल को बचाने के लिए आर्थिक सहायता कार्यक्रम १९ नवम्बर को आरम्भ होगया।

सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी १९ नवम्बर को ११ बजे तहसील झज्जर के ग्राम बरोहड़ में पधारे। इस ग्राम में दो दिन पूर्व सभा के भजनोपदेशक महाशय जयपाल आर्य ने ग्रामों में बढती हुई शराब, मास, दहेज तथा विवाह आदि के अवसरों पर फिजूल खर्च जैसी बुराइयों का प्रभावशाली ढंग से खण्डन किया और वैदिकधर्म के सिद्धांतों पर चलने की प्रेरणा की। ग्रामवासियों ने सभा प्रधान जी का हार्दिक स्वागत किया और अपने ग्राम में कई वर्षों के पश्चात् भजन मण्डली भेजने के लिए धन्यवाद दिया और ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना करने का विश्वास दिलाया।

सभाप्रधान जी ने इस अवसर पर ग्रामवासियो को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यसमाज प्रारम्भकाल से ही समाजसेवा के कार्यों में सब से अग्रणी रहा है। इसी परम्परा को बनाये रखने के लिए सभा ने ३ वर्ष से हरयाणा में शराबबन्दी अभियान चला रखा है। ६० के लगभग ग्रामो में शराबबन्दी प्रस्ताव करवाकर तथा शराब के ठेकों पर धरणे आदि देकर ठेके बन्द करवाये गये हैं। इस वर्ष भयंकर सूखा पड़ जाने से अनेक ग्रामों में जहां नहर तथा नलकूपों के पानी का अभाव है, पशु चारे तथा दाने के लिए तड़प रहे है, परन्तु वहां शराब रूपी जहर पीने के लिए आसानी से मिल जाता है। क्योंकि सरकार की ओर से मुख्य सड़को पर शराब के ठेके खुले हुए है। जिन ग्रामों में शराब के ठेके नही है वहां अवैध रूप से शराब की बोतलें चोरी-छिपे बेची जाती हैं।

प्रो० शेरसिंह ने आगे कहा कि हमने सभा की ओर से सुझाव दिया था कि कम से कम सूखाग्रस्त ग्रामों में शराब की बिक्री पर प्रतिबन्ध लगाया जाये, ताकि अकाल के दिनों में वैसे ही किसान तथा मजदूर आर्थिक संकट में हैं। शराब जैसी व्यर्थ की वस्तुओं पर फिजूल खर्च करना विनाशकारी है। प्रो० साहब ने ग्रामवासियों को परामर्श देते हुए कहा कि वे हरयाणा सरकार के मन्त्री श्री हुकमसिंह के समाचारपत्रों में प्रकाशित वक्तव्य के अनुसार नवम्बर मास तक शराबबन्दी का प्रस्ताव करके सरकार को भेज देवें, ताकि आगामी वर्ष उनके ग्राम में शराब का ठेका न उठाया जाये। सभाप्रधान जी ने सूखा सहायता कार्यक्रम का विवरण बताते हुए कहा कि सभा ने भारत तथा हरयाणा सरकार से मांग की कि हरयाणा की गाय तथा भैंस की सर्वोत्तम नसल को बचाने के लिए सांड तथा झोटों की सुरक्षा हेतु आर्थिक सहायता दी जाये। सभा ने दानियों से अपील कर सूखा सहायता के लिए धनसंग्रह करना आरम्भ किया है और जितनी राशि संग्रह हो रही है उसका वितरण आज से आरम्भ किया जारहा है। समारोह के अन्त में ग्राम पंचायत की मांग पर वहां के तीन सांडों तथा दो झोटों की देख-रेख करने के लिए पांच हजार रुपये ग्राम के सरपंच श्री छत्तरसिंह जी को भेंट करते हुए कहा कि पंचायत की ओर से एक समिति का गठन करके सांडों तथा झोटों के लिए चारे तथा दाने की व्यवस्था करने का उसे कार्यभार सौंप दिया जाये। उपस्थित ग्रामवासियों ने इस कार्य में सभा की ओर से योगदान पर आभार प्रदर्शित किया। बरोहड़ के बाद सभाप्रधान जी ग्राम झाड़ली में एक बजे पधारे। वहां भी सभा की ओर से पं० खेमसिंह की भजनमण्डली पूर्व आर्यसमाज का प्रचार कर रही थी। ग्रामवासियों ने सभाप्रधान जी का स्नेहपूर्वक स्वागत किया। आपने इस समारोह पर बोलते हुए ग्रामवासियों को शराब तथा दहेज जैसी बुराइयों से दूर रहने का आह्वान किया। ग्राम पंचायत की मांग पर यहा भी एक सांड तथा एक झोटे के लिए २ हजार रुपये की धनराशि ग्राम के सरपंच श्री महावीरसिंह जी को भेंट की। इस समारोह में ग्राम मोहन बाड़ी के सरपंच श्री बलबीरसिंह ने भी सभाप्रधान जी से अपने ग्राम में एक सांड तथा एक झोटे के लिए अनुदान देने की मांग की। सभाप्रधान जी ने उन्हें भी तुरन्त दो हजार रुपये भेंट कर दिये। ग्राम झाड़ली में पूर्व ही आर्यसमाज की स्थापना है। मोहन बाड़ी के सरपंच ने भी अपने ग्राम में शीघ्र ही आर्यसमाज की स्थापना करने का विश्वास दिलाया।

वैदिकधर्म दीक्षा

दिनांक १५-११-८७ को आर्यसमाज मन्दिर समालखा में यज्ञ किया गया। मुसलमान नटों ने अपनी इच्छा से वैदिकधर्म ग्रहण किया। यह कारवाई हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति हरयाणा के महामन्त्री सेवानन्द सरस्वती ने शुद्धि संस्कार करवाया और कार्यकर्त्ता प्रधान श्री रामरत्न तथा श्री मांगेराम उपदेशक समिति हजा, डा. बलराज, श्री ऋषिप्रकाश और श्री वेदप्रकाश आदि ने भाग लिया और बिरादरी में इज्जत दिलाई गई तथा प्रीतिभोज उन्ही द्वारा वितरण कराया गया।

पहला नाम	नया नाम
झालु	जिलेसिह
भूनन खान	भूलनराम
किताबो	किताबो
विजेन्द्र	विजेन्द्र

राजस्थान के देवराला ग्राम में—

सतीप्रथा या स्त्री हत्याकांड ?

आलेख—सुखदेव शास्त्री "वानप्रस्थी" महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

गतांक से आगे—

जिन दिनों राजा जयसिंह ने यह प्रस्ताव किया था, राजपूतों की आर्थिक दशा बहुत खराब हो चुकी थी। उनकी आमदनी के रास्ते बिगड़ते जाते थे और खर्चों के नाजायज बोझ उनके सिर पर नये-नये पैदा होते जाते थे। किन्तु राजा जयसिंह को इस कार्य में सफलता न मिली, क्योंकि उन दिनों भट्ट कवियों का प्रभाव राजपूतों पर बहुत बढ़ गया था। राजाओं, सामन्तों और सरदारों को झूठी प्रशंसायें करना उनका काम था। इसके बदले में उनको राजपूतों से सदा बड़ी बड़ी रकमें मिला करती थी। इन कवियों ने उन्हें अपनी झूठी प्रशंसा सुनने का अभ्यासी बना दिया था। इस कारण से राजपूतों में सुधार-कार्य आगे न बढ़ सका।

विवाह में अधिक धन व्यय करने के लिए प्रोत्साहन देना और दान करने की प्रथा का वर्णन करके राजपूतों को अधिक खर्च करने के लिए विवश करना कवियों का काम था। लड़की के विवाह में पिता को किस प्रकार सम्पत्ति लुटानी पड़ती थी, उसका सहज ही कोई अनुमान नहीं लगा सकता।

प्रसिद्ध कवि चण्ड ने लिखा है—"पृथ्वीराज के साथ अपनी लड़की के विवाह में दाहिमा ने अपना पूरा खजाना खाली कर दिया था। धन के इस दुरुपयोग में उसकी प्रशंसा की गई और भविष्य की विपदाओं ने उसे आधारहीन बना दिया था। इस विवाह में लड़की के पिता को आंखें बन्द करके जो कुछ खर्च करना पड़ा था, उसमें एक लाख रुपये उसने राज कवि को दिये थे।"

राजपूतों में कन्या विवाह की समस्या भयानक थी। इस समस्या का समाधान राजपूतों के पास न था। यही कारण था कि राजपूतों में पैदा होते ही कन्याओं के मार डालने की प्रथा भी चलती रही।

राजपूतों में स्त्रियों का जौहर व्रत—

सती होने और जन्म के बाद कन्याओं को मार डालने की प्रथाओं से भी अधिक भयानक तीसरी प्रथा राजपूतों में स्त्रियों के जौहर व्रत की भी थी। इस तीसरी प्रथा का प्रचार जो राजपूतों में था वह प्रथा जौहर प्रथा के नाम से प्रसिद्ध थी। इस तीसरी प्रथा में एक साथ कई-कई हजार राजपूत कन्यायें आग की होली में जलकर राख हो जाती थीं। मेवाड़ के इतिहास में इस जौहर व्रत की घटनाओं का कई बार वर्णन आया है। राजपूतों में स्त्रियों का सम्पूर्ण जीवन बलिदानों से भरा हुआ है। जन्म के बाद वे जीवित ही मार डाली जाती थी। जो बच जाती थी, उनमें अधिकतर लड़कियों को विवाह की दुर्घटनाओं में विष खाकर प्राण देने पड़ जाते थे। जो इससे भी सुरक्षित बच जाती थी, उनको पति के मृत शरीर के साथ सती होना पड़ता था। उनसे भी जो गर्भवती आदि होने के कारण बच जाती थी उनको भी जौहरव्रत की प्रथा के अनुसार हजारों बालाओं को जीवित बलिदान होना पड़ता था। राजपूत स्त्रियों का जीवन ही बलिदानों का जीवन था। किसी भी समय प्राणों को उत्सर्ग करने के लिए उनको तैयार रहना पड़ता था।

ये प्रथायें सुनने और देखने में तो बहुत भयानक लगती हैं किन्तु उस समय के आपत्तिकाल में राजपूत और कर ही क्या सकते थे? किन्तु इन दो प्रथाओं कन्याओं का पैदा होते ही मार डालना और पति की मृत्यु होने पर उसके साथ सती होकर मरना ये दोनों ही आपत्काल की घटना नहीं कही या मानी जा सकती। कन्याओं के विवाह में सुधारक दृष्टिकोण अपनाकर कम खर्च किया जा सकता था। जैसा कि राजा जयसिंह ने इस दिशा में प्रयत्न किया था, उसे मान्यता मिलनी चाहिए थी। आज भी हरयाणा में देखने में आया है कि राजपूत बिरादरी आज भी विवाह के सम्बन्ध में अन्य बिरादरियों से पिछड़ी हुई है। विवाहों में अत्यधिक खर्च करना, लेन-देन में भी फिजूल खर्ची करना, राजपूतों के प्राचीन स्वभाव का परिचय देता है। लड़कियों को पर्दे में रखना, विद्यालयों में शिक्षार्थ न भेजना, अपने आप ही गोबर कूड़ा, पानी आदि लाना, शराब और अफीम का अत्यधिक सेवन करना आदि आज भी इनमें पुराने व्यसन नया रूप धारण करके इनके पिछड़ेपन व सर्वनाश का कारण बने हुए हैं। आज राजपूत वर्ग बहुत ही पिछड़ा हुआ दिखाई देता है। आज कन्याओं का तो वध नहीं होता, किन्तु विवाह में खर्च उतना ही कमर तोड़ करते हैं। कर्ज तले दबे रह रहे हैं। कन्याओं की हत्या तो नहीं हो रही, किन्तु घर के पर्दे के अन्दर बेकार बैठी-बैठी परतन्त्रता भोग रही हैं। न खेत क्यार में जाती, न पशुपालन करती, न पति की सेवा का अवसर प्राप्त कर पाती, सिर्फ घरों में बैठकर विधवाओं के समान खर्चा करती रहती हैं। आज कितना सुन्दर स्वतन्त्रता का प्रभात है, स्वतन्त्रता के सूर्य की किरणों का उन्हें दर्शन भी नहीं हो पाता। राजपूत बिरादरी को नये परिप्रेक्ष्य में पुनर्विचार करना चाहिए। आर्यसमाजी राजपूत तो अब समझ गये हैं।

दूसरी है सतीप्रथा—

उसकी भी आज क्या कभी भी आवश्यकता नहीं रही। पति के साथ सती होने से कहते हैं कि अगले जन्म में सती स्त्री ही उस पति की पत्नी बनेगी, यह मान्यता भी विचार करने पर स्थिर नहीं रहती। किसे कहां जन्म लेना है यह तो उत्पत्तिकर्ता ईश्वर ही जानता है। पति के मरने पर कोई भी स्त्री आज तक भी खुशी से सती नहीं हुई है। ऐसा खोज करने से पता चला है। यदि किसी नालायक पति के मरने पर कोई योग्य पत्नी उसकी अगले जन्म में पत्नी न बनना चाहे तो क्या होगा? यह भी क्या जरूरी है कि वह स्त्री ही बने, पुरुष भी पैदा हो सकती है, फिर क्या होगा? इसमें अनेक प्रश्न खड़े हो जाते हैं। क्या बनना है यह तो ईश्वर ही जान सकता है, यह जलनेवाली क्या जाने? असल में तो उसे अगला जन्म स्त्री का तो क्या, मनुष्य योनि तो उसे मिल ही नहीं सकती। क्योंकि जो मनुष्य का पवित्र जन्म दिया गया था वह तो उसने मिला मिलाया जलाकर खाक कर दिया। जल मरने के बाद फिर मनुष्य जन्म की बाट कैसी? यजुर्वेद के अनुसार तो यह आत्महत्या का मामला है। आत्महत्यारे अगले जन्म में गहरे अंधेरे में जन्म लेते हैं उन्हें मनुष्य का तो जन्म ही नहीं मिलता। जो जैसा करेगा, वैसा ही भरेगा। अतः सतीप्रथा सदैव अनुचित है।

तीसरी है स्त्रियों का जौहर व्रत —

इस जौहर व्रत की प्रथा को तो बलिदान होने की प्रथा कहा जा सकता है। इसकी जितनी प्रशंसा की जाये थोड़ी है। इस जौहर व्रत के विषय में आपने अल्लाउद्दीन तथा राणा भीमसिंह का इतिहास पढ़ा होगा। ऐतिहासिकों ने यह स्वीकार किया है कि अल्लाउद्दीन ने पद्मिनी को पाने के लिए राणा भीमसिंह के ऊपर चढ़ाई की थी। यह घटना सन् १३०३ की है। यहां इस ऐतिहासिक घटना को विस्तार से लिखना सम्भव नहीं है। अभिप्राय इतना ही समझ लीजिये कि अल्लाउद्दीन और राणा भीमसिंह को भयंकर लड़ाई हुई थी। लड़ाई में जाने से पहले राणा भीमसिंह चित्तौड़ में एक ओर युद्ध में जाने की तैयारी कर रहे थे और दूसरी ओर महलों की ओर से जौहर व्रत पालन की व्यवस्था हो रही थी। रानियों और राजपूत कन्याओं ने इस बात को समझ लिया था कि चित्तौड़ पर भयंकर समय आगया है और चित्तौड़ की स्वतन्त्रता के नष्ट होने के समय राजपूत रमणियों को अपने सतीत्व एवं स्वातन्त्र्य की सुरक्षार्थ जौहर व्रत का पालन करना है। चित्तौड़ की पुरानी प्रणाली के अनुसार शत्रु के आक्रमण करने पर जब राज्य की रक्षा का कोई उपाय न रह जाता था तो राजपूत बालायें हजारों की संख्या में जौहर व्रत का पालन करती हुई एक साथ आग की होली में बैठकर अपने प्राणों का बलिदान करती थी, उसी जौहर व्रत की तैयारी इस समय आरम्भ हुई। (क्रमशः)

गौ नसल की रक्षार्थ सहायता

पृष्ठ १ से आगे—

सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह २३ नवम्बर को प्रातः ११ बजे जि० रोहतक के सूखाग्रस्त ग्राम सिवाना पधारे। ग्राम के सरपंच, पंच, नम्बरदारों के अतिरिक्त आर्यसमाज के अधिकारियों ने सभाप्रधान जी का स्वागत करते हुए सूखा के कारण उत्पन्न कठिनाइयों का विवरण सुनाया। प्रधान जी ने सम्बंधित अधिकारियो से इन समस्याओं के समाधान कराने का विश्वास दिलाया और उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को ग्राम में शराब पीने की लानत से मुक्ति पाने का सुझाव दिया। इस संकट काल का मुकाबला फिजूल खर्च बन्द करके ही हो सकता है। अतः पंचायत को चाहिए कि शराब पीने तथा दहेज लेने एवं देनेवालों पर पाबन्दी लगाने के कठोर नियम बनाकर उनका पालन करावे।

सभाप्रधान जी ने ग्राम के ३ सांडों तथा २ झोटों को देख-रेख के लिये सभा की ओर से ग्राम की समिति को ५ हजार की सहायता देते हुए कहा कि सांडों तथा झोटों के लिये चारे तथा दाने की व्यवस्था समिति को करनी चाहिये। वैद्य टेकराम आर्य ने अपनी ओर से १०१) सूखा सहायता के लिये सभाप्रधान जी को भेंट किये।

२३ नवम्बर को दोपहर बाद सभाप्रधान जी जिला भिवानी के सूखाग्रस्थ ग्राम इमलोटा पधारे। वहां पूर्व ही सभा के भजनोपदेशक महाशय जयपाल जी आर्य प्रचार कर रहे थे। प्रो० साहब ने इस अवसर पर उपस्थित नर-नारियों को ग्राम से सामाजिक बुराइया शराब, मांस, दहेजादि समाप्त करने पर बल दिया और सूखा के दिनों विवाहादि की रस्मों पर कम से कम खर्च करने की प्रेरणा की। इस ग्राम में भी सभा की ओर से ४ सांडों तथा २ झोटों के चारा-दाने की व्यवस्था करने के लिये ४ हजार ८०० रुपये का अनुदान देते हुए गौ की नसल की रक्षा करने में सभी ग्रामवासियों से योगदान करने की अपील की।

२३ नवम्बर को दोपहर बाद ३ बजे सूखाग्रस्त ग्राम झांसवा पधारे। इससे पूर्व वहां सभा के उपदेशक पं० अर्जुनदेव जी आर्य ने स्थानीय स्कूल में अध्यापकों तथा ग्राम के सहयोग से हवन-यज्ञ का कार्यक्रम रखा था। ३ अध्यापकों से शराब न पीने का संकल्प करवाया और यहां आर्यसमाज स्थापित करने की प्रेरणा की। सभा के भजनोपदेशक म० जयपाल आर्य ने भी अपने प्रभावशाली भजनों द्वारा आर्यसमाज द्वारा किये जारहे परोपकार के कार्यों का गुणगान किया। सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने पंचायत के अधिकारियों तथा ग्रामवासियों को शराब तथा दहेज आदि सामाजिक बुराइयों से दूर रहने की सलाह दी। उन्होंने सरपंच श्री जयलाल को ग्राम के दो सांडों तथा एक झोटे के लिये चारा-दाना आदि खरीदने हेतु सभा की ओर से तीन हजार रुपये का अनुदान दिया। सभा द्वारा किये जारहे इस महत्त्वपूर्ण योगदान के लिये ग्रामवासियों ने सभाप्रधान जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

२३ नवम्बर की रात्रि को ६ बजे आर्यसमाज कोसली में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें म० जयपाल जी आर्य की मण्डली ने शराब, दहेज तथा सतीप्रथा के विरुद्ध जमकर प्रचार किया। सभाप्रधान जी ने इस समारोह में बोलते हुए शराबबन्दी कार्यक्रम में सभा को सहयोग देने का अनुरोध किया और गौ तथा भैंस की नसल को बचाने हेतु आर्यसमाज तथा पंचायत के अधिकारियों को दो हजार रुपये का अनुदान दिया। श्री अशोककुमार आर्य प्रधान आर्यसमाज कोसली ने अपने समाज की ओर से २०१) सूखा सहायता में दान देते हुए सभा के कार्यों में सहयोग करने का विश्वास दिलाया।

सभाप्रधान जी तथा पं० जयपाल आर्य की मण्डली २४ नवम्बर को प्रातः ६ बजे आर्यसमाज भुरथला पधारे तथा वहां भी प्रचार कार्यक्रम के बाद सूखा सहायता के लिये दो हजार रुपये का अनुदान देते हुए ग्राम में सांड तथा झोटे की देख-रेख करने को कहा।

२४ नवम्बर को प्रातः ११ बजे आर्यसमाज मन्दिर लूखी जिला महेन्द्रगढ़ में भी पं० जयपाल जी की भजनमण्डली का प्रचार हुआ तथा सभाप्रधान जी ने ग्राम में सांड तथा झोटे की सुरक्षा हेतु दो हजार रुपये का अनुदान दिया। दोपहर बाद १ बजे ग्राम कारोली में भी इसी प्रकार सार्वजनिक सभा में ग्राम पंचायत को दो हजार रुपये का अनुदान दिया।

उसी दिन दोपहर बाद ३ बजे बिना किसी पूर्व सूचना के सभा प्रधान जी एवं पं० जयपाल आर्य की मण्डली सूखाग्रस्त ग्राम खोरड़ा पधारे। वहां इससे पूर्व कभी आर्यसमाज का प्रचार नहीं हुआ था। आर्यसमाज का प्रचार सुनकर ग्रामवासी बहुत प्रभावित हुए और आर्यसमाज की स्थापना करने का संकल्प किया। सभाप्रधान जी ने ग्राम पंचायत के सरपंच श्री सूबेसिंह को सांड तथा झोटे का चारा-दाना देने के लिये तीन हजार रुपये भेंट किये। ग्रामवासियों ने सभा द्वारा दी गई इस सहायता के लिये सभाप्रधान जी का हार्दिक धन्यवाद किया।

सूखा सहायतार्थ सभा को प्राप्त दान सूची

गतांक से आगे—

कप्तान छत्तरसिंह ग्राम बरोहड़ जि० रोहतक	१००)
मास्टर छत्तरसिंह ,, ,, ,,	१००)
श्री सुमेरसिंह प्रधान आर्यसमाज स्वरूपगढ़ जि० भिवानी	५००)
मन्त्री आर्यसमाज चरखी दादरी जि० भिवानी	१०१)
श्री केदारनाथ मोदी इन्टरप्राइज मोदीनगर (उ०प्र०)	२५०००)
ला० इन्द्रनारायण जी ए/१६ ग्रीन पार्क नई दिल्ली	२१००)
श्री राजेश्वर जी एच ६६ साउथ एक्टेशन पार्क नई दिल्ली	११००)
वैद्य टेकराम आर्य ग्राम सिवाना जि० रोहतक	१००)
आर्यसमाज कोसली जि० रोहतक	२००)
,, कारोली ,,	१००)
स्त्री आर्यसमाज माडल टाउन करनाल	५००)

इन सभी दानदाताओं का सभा की ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद। आर्यसमाजों के अधिकारियों तथा दानदाताओं से निवेदन है कि गोवंश को रक्षा के लिये अधिक से अधिक दान मनीआर्डर द्वारा भेजकर पुण्य के भागी बने। सभा को जितना-जितना दान प्राप्त होता जायेगा, उसे तुरन्त सूखाग्रस्थ ग्रामों में वितरीत कर दिया जायेगा।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

शोक समाचार

आर्यसमाज कासनी के प्रधान महाशय हेतराम जी हमें छोड़ चले गये। आर्यसमाज कासनी के तीन आर्यपुरुष इसी परिवार में गये। हेतराम जी की आयु ८० वर्ष थी। वे फौजी पेंशनर थे। आर्यसमाज के कामों में बड़ी रुचि रखते थे। उनकी कमी पूर्ति असम्भव है। उन्हें पेशाब की बीमारी ने गुर्दों के आप्रेशन ने कमजोर कर दिया था। बड़ी आयु के कारण कमजोरी सहन न कर सके। भगवान् उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—दीपचन्द आर्य ग्राम कासनी

२—आर्यसमाज सितारपुर तोताहेड़ी के स्तम्भ महाशय जयनारायण यादव का स्वर्गवास दिनांक ४-११-८७ को दिल का दौरा पड़ने से ७५ साल की आयु में होगया। उनको श्रद्धांजलि महाशय रामेश्वरदयाल शर्मा प्रचारक की अध्यक्षता में दी गई। उनके सुपुत्र करतारसिंह यादव को आर्यसमाज का सदस्य बनाया।

—जगमालसिंह प्रचारमन्त्री

महर्षि दयानन्द के भक्त—

स्वामी अच्युतानन्द सरस्वती

लेे०—प्रो० भवानीलाल भारतीय

वेदों के विद्वान् तथा स्वामी दयानन्द से अद्वैत वेदांत पर शास्त्र चर्चा करनेवाले स्वामी अच्युतानन्द का जन्म १८५३ ई० में सरगोधा (पाकिस्तान) जिले के खुशाबनगर में हुआ था। आप जन्मना खत्री थे। शीघ्र ... के कारण आपने १६ वर्ष की आयु में १८६६ ई० में गृह त्याग ... और निरन्तर चार वर्ष तक सच्चे गुरु की खोज में भटकते रहे। ... ने इनके जीवन परिचय में लिखा है कि ... निर्मला ... ने दीक्षित हुए। उस समय इनका नाम साधु दयासिंह था। ... होने के पश्चात् ये संस्कृत पढ़ने लगे। कुछ समय अमृतसर में पढ़कर पुनः काशी चले गये। यहां आपने व्याकरण और वेदान्त का गम्भीर अध्ययन किया। स्मृति साहित्य का विशिष्ट अनुशीलन करने से आपके विचार बदल गये और आपने अनुभव किया कि स्मृतियों में सन्यास आश्रम का ही विधान है। इसके अतिरिक्त अन्य नामों से जो साधु पुकारे जाते हैं वे नाम न तो वैदिक हैं और न स्मार्त। यह सोचकर आपने निर्मला पंथ से संन्यास की दीक्षा ली और अच्युतानन्द गिरि का नाम धारण किया।

कालांतर में अपनी विद्या और तप के बल पर इन्हें मण्डलेश्वर का पद प्राप्त हुआ और ये पांच वर्ष तक इस गद्दी पर आरूढ़ रहे। मण्डलेश्वरकाल में इन्होंने समस्त देश का भ्रमण किया। प्रथम काशी से चलकर कलकत्ता आये और वहां से जगन्नाथपुरी जाकर गोवर्धन मठ में ठहरे। तत्पश्चात् रामेश्वर गये और केरल होते हुए मैसूर राज्यान्तर्गत शृंगेरी मठ में निवास किया। पुनः बम्बई, गुजरात तथा काठियावाड़ का भ्रमण किया। द्वारिका के शारदा मठ में कुछ काल तक रहकर कच्छ राज्य की राजधानी भुज गये। तदनन्तर सिंध प्रांत का भ्रमण किया और हरिद्वार होकर बद्रीनाथ तक की यात्रा की।

स्वामी दयानन्द से स्वामी अच्युतानन्द की भेंट १९३५ वि० में हरिद्वार के कुम्भ के अवसर पर हुई। दोनों में वेदांतविषयक वार्तालाप हुआ। १९२५ ई० में स्वामी दयानन्द की जन्म शताब्दी के अवसर पर आयोजित एक सम्मेलन में स्वामी अच्युतानन्द ने श्री महाराज विषयक अपने संस्मरण सुनाये थे। शताब्दी विवरण के सम्पादक ने इस प्रसंग में लिखा है—"स्वामी अच्युतानन्द जी स्वयं स्वामी दयानन्द से टक्कर लेने वालों में से एक थे, परन्तु अब वे अपनी महन्त की गद्दी का परित्याग किये हुए आर्य संन्यासी हैं। स्वामी जी ने स्वामी दयानन्द से "एकमेवाद्वितीयम् ब्रह्म" पर शास्त्रार्थ किया था, जिस पर महर्षि ने इसकी व्याख्या की थी कि यह वाक्य अद्वैतपरक नहीं है, वरन् "अद्वितीयः पण्डितः" के समान ब्रह्म की अद्वितीयता मात्र का द्योतक है। ब्रह्म के समान इसका कोई महान् शक्तिवाला प्रभु (स्वामी) नहीं है, यही इसका अर्थ है।"

१९३५ वि० से पूर्व भी स्वामी अच्युतानन्द की स्वामी दयानन्द से काशी में १९२७ वि० में भेंट हुई थी। इस प्रथम बार के साक्षात्कार का विवरण स्वामी अच्युतानन्द नें स्वयं आर्यमित्र के जन्म शताब्दी अंक में इस प्रकार लिखा था—"उस समय श्री स्वामी जी महाराज तख्तपोश पर किन्तु नग्न एक भगवा कौपीन धारण किये बैठे थे। आठ-दस बंगाली युवकों को स्वामी जी संस्कृत भाषा में उपदेश कर रहे थे। मैंने ... स्वामी के दर्शन कर, हाथ जोड़कर प्रणाम किया तो पूर्ण ब्रह्मचर्य के प्रभाव से हृष्ट-पुष्ट और महाविद्वान् के मुख से ललित संस्कृत भाषा सुनकर मैं दंग रह गया। विचारने लगा कि एक नंगा साधु प्रसन्न वदन इस प्रकार संस्कृत बोलता हुआ पहले कभी देखा सुना भी नहीं। श्री स्वामी जी के बड़े-बड़े विज्ञापन मैंने देखे, जिनमें लिखा हुआ था—"ए काशी के पण्डितो, आओ मूर्तिपूजा जो वेदविरुद्ध काम है इस विषय में मुझ से शास्त्रार्थ करलो, तुम्हारी धूर्तता से काम नहीं चलेगा।" मैंने श्री स्वामी जी से पूछा कि महाराज मनुष्य का कल्याण कैसे होता है? उन्होंने उत्तर दिया कि परमात्मा के ज्ञान से।

प्रश्न—परमात्मा का ज्ञान कैसे प्राप्त हो?

उत्तर—ज्ञानियों के सत्संग से, झूठी पाषाण पूजा से कभी ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता, अभी तुम बालक हो। संस्कृत विद्या व्याकरण आदि पढ़ो। तुम उस विद्या द्वारा परमात्मा के स्वरूप को जान जाओगे। "तब मैं काशी में व्याकरण, न्यायादि पढ़ता रहा। उस समय स्वामी जी ने काशी में एक संस्कृत विद्या पाठशाला स्थापित की थी, जिसमें काशी के महाविद्वान् पं० शिवकुमार शास्त्री, पं० जवाहरदास उदासी साधु और एक संन्यासी जिनका नाम अभी स्मरण नहीं है, यह तीनों पढ़ाते थे। पाठशाला का सब खर्च श्री स्वामी जी दिया करते थे। उस पाठशाला में मैं भी कई मास तक पढ़ा। पुनः १९३५ वि० के हरिद्वार के कुम्भ में श्री स्वामी जी महाराज के दर्शन हुए। मैंने श्री स्वामी जी से दो बार विवाद भी किया, जो अत्यन्त प्रसन्नता का हेतु था। कई बार और नगरों में भी मैंने स्वामी के दर्शन किये।"

१९३५ वि. के कुम्भ में सम्मिलित होने के पश्चात् स्वामी अच्युतानन्द बद्रीनाथ गये और वहां से लौटकर अनेक स्थानों का भ्रमण करते हुए जोधपुर पहुंचे। जोधपुर राज्य के तत्कालीन प्रधानमन्त्री एवं प्रशासक महाराजा प्रतापसिंह से उनके आत्मीय सम्बन्ध थे। स्वामी अच्युतानन्द को आर्यसमाज की ओर आकृष्ट करने का श्रेय पं० गुरुदत्त को है। प० गुरुदत्त से उनकी भेंट १८८८ ई० में लाहौर में हुई। उस समय स्वामी जी शाह आलमी गेट पर किसी कोठी में ठहरे हुए थे। आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् पं० गुरुदत्त उनसे उपनिषदों का अध्ययन करने लगे। दोनों के बीच विचारों का आदान प्रदान होता रहा। अन्ततः पं० गुरुदत्त के विचारों ने चमत्कार दिखाया और स्वामी अच्युतानन्द अपनी मण्डलेश्वर की गद्दी तथा अद्वैतवाद की विचारधारा त्याग कर स्वामी दयानन्द के दृढ़ अनुयायी एवं त्रैतवाद के पोषक बन गये। इसके पश्चात् वे आजीवन आर्यसमाज का ही प्रचार करते रहे। जब स्वामी अच्युतानन्द प्रथम बार आर्यसमाज में आये तो अधिकारियों ने आपको उच्च स्थान पर बैठने की प्रार्थना की। आपने उत्तर में कहा—"यदि मुझे उच्च स्थान पर ही बैठना होता तो मैं यहां आर्यसमाज मन्दिर में ही क्यों आता। मैं तो मण्डलेश्वर था और शतशः संन्यासी एवं गृहस्थ प्रतिदिन मेरी चरण वन्दना करते थे। उस समय मैं मण्डलेश्वर के उच्च आसन पर बैठता था, किन्तु अब तो मुझे एक साधारण आर्य संन्यासी के रूप में आर्यसमाज मन्दिर में बैठना अभीष्ट है।" स्वामी प्रकाशानंद और स्वामी विशुद्धानन्द को आपने संन्यास की दीक्षा दी। कालांतर में आपने लुधियाना में शांति आश्रम नामक एक भव्य आश्रम की भी स्थापना की। स्वामी अच्युतानन्द ने 'व्याख्यानमाला' शीर्षक संस्कृत सुभाषितों का एक सुन्दर संग्रह तैयार किया था। इसमें ५२ विषयों पर संस्कृत साहित्य की सुन्दर सूक्तियां संगृहीत की गई हैं। आपने चारों वेदों से सौ-सौ मन्त्रों का संग्रह कर चार सुन्दर शतकों की भी रचना की। इनके कई संस्करण प्रकाशित हुए और स्वाध्याय प्रेमियों ने उन्हें अपनाया। स्वामी दयानन्द रचित आर्याभिविनय की शैली पर स्वामी अच्युतानन्द ने साम तथा अथर्ववेद के मन्त्रों का प्रार्थनापरक अर्थ लिखा था, जो पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ। ३० सितम्बर १९४१ ई० को ८८ वर्ष की अवस्था में लुधियाना में इनका निधन हुआ।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री महाशय धर्मपाल, उपप्रधान—सूर्यदेव, सरदारीलाल वर्मा, सत्यानन्द, हरवन्सलाल कोहली, महामन्त्री—डा० शिवकुमार शास्त्री, उपमन्त्री—सुरेन्द्रकुमार हिन्दी, रामसिंह शर्मा, ओम्प्रकाश आर्य, विमलकांत शर्मा, रामशरणदास आर्य, श्रीमती प्रकाश आर्या, कोषाध्यक्ष—ओम्प्रकाश कपूर।

महिला आर्यसमाज बालसमन्द का चुनाव

प्रधाना—श्रीमती चमेलीदेवी आर्या, मन्त्राणी—बहन कलावती आर्या, कोषाध्यक्ष—श्रीमती मायादेवी आर्या।

हैदराबाद सत्याग्रह के सत्याग्रही

जिनकी पेंशन के लिए प्रांतों को भारत सरकार ने लिखा है

१- श्री रामस्वरूप पुत्र नाथनाथ गांव पो० रामराय (जींद) हर०
२- श्री जगन पुत्र इन्द्राज गांव पो० छारा (रोहतक) हर०
३- श्री छोटूराम पुत्र रामानन्द गांव पो० फरमाना (सोनीपत) हर०
४- श्री जोधाराम भाटिया पुत्र हिम्मतलाल म० १९८४ रामपुरा (हिसार) हर०
५- श्री जसवन्तराम पुत्र रैमलदास निकट मोहल्ला खटीक बहादुरगढ़ रोहतक (हर०)
६- श्री जीताराम पुत्र जैराम ग्राम पो० मिरचपुर, तह० हांसी, जि० हिसार (हर०)
७- श्री भगवान्लाल पुत्र शावरातलाल मोहल्ला नियाजी गाजीपुर (उ०प्र०)
८- श्री ज्ञानीराम पुत्र अजबरसिंह गांव पो० भापड़ोदा, जि० रोहतक (हर०)
९- श्री माधोसिंह पुत्र माईधन वर्मा गांव पो० कनीना, जिला महेन्द्रगढ़ (हर०)
१०- श्री महासिंह वर्मा पुत्र जुगलाल ग्राम पो० लाढ़ौत, जिला रोहतक (हर०)
११- श्री परमानन्द आर्यवीर रतनराम आर्य श्रीराम ज्वेलर्स सोनापट्टी भागलपुर बिहार
१२- श्री भरतसिंह पुत्र शीशराम दयानन्दमठ गोहाना रोड, रोहतक (हर०)
१३- श्रीमती गौरादेवी पत्नी मनोहर ग्राम पो० पाकसमा, रोहतक (हर०)
१४- श्री बनवारीलाल पुत्र शादी गांव पो० मिलकपुर, तह० हांसी, जि० हिसार (हर०)
१५- श्रीमती शांतिदेवी पत्नी स्व० जयदेव गांव पो० भापड़ोदा (रोहतक)
१६- श्री रामचन्द्र पुत्र जयलाल गांव पो० धौड़, जिला रोहतक (हर०)
१७- श्री लालचन्द पुत्र छब्बर गांव पो० गोरार, जिला सोनीपत (हर०)
१८- श्री पुष्करराज पुत्र पोकरराज गांव खांडा खेड़ी, तह० हांसी, जि० हिसार (हर०)
१९- श्रीमती रामदुलारी शुक्ला पत्नी श्री गिरधारीशंकर शुक्ला सकीना मंजिल घी मण्डी दौलतगंज उज्जैन (म०प्र०)
२०- श्री तारकीप्रसाद मिश्रा पुत्र सन्तलाल मिश्रा गांव पो० शंकरपुर जिला मुंगेर (बिहार)
२१- श्री भागीरथ ठाकुर पुत्र गुरुप्रसाद ठाकुर मंगल बाजार मुंगेर (बिहार)
२२- श्री जगदीशचन्द्र पुत्र उग्रसेन ३६१/१ विश्वकर्मा कालोनी देहरादून (उ०प्र०)
२३- श्री लालचन्द पुत्र नाथू गांव पो० छारा, जि० रोहतक (हर०)
२४- श्री देवराज पुत्र खशी ग्राम पो० कट्टी कलां, तह० हांसी जि० हिसार (हर०)
२५- श्री खुशीराम पुत्र मूलचन्द ग्राम तह० जींद (हर०)

(सार्वदेशिक साप्ताहिक २२ नवम्बर)

शोक समाचार

दिनांक १५-११-८७ को प्रातः साप्ताहिक सत्संग के बाद आर्यसमाज नारनौल के सदस्यों के सामने यह शोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि डा० विश्वम्भरदयाल जी आर्य मन्त्री आर्यसमाज बाछोद के भतीजे राम-अवतार के निधन पर यह सभा भारी दुःख प्रकट करती है और परम-पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे और परिवारजनों को इस महाकष्ट को सहन करने की शक्ति दे।

—ताराचन्द आर्य, प्रधान आर्यसमाज नारनौल

आज से ११० वर्ष पूर्व—

महर्षि ने सबसे पहले

(कृष्णदत्त हैदराबाद)

—नमक के कर का विरोध किया था। (स० प्र० प्रथम संस्करण पृ० ३८४)

—न्यायालयों में प्रार्थना-पत्रों के लिए स्टंप-ड्यूटी का विरोध किया था। (स० प्र० प्रथम संस्करण पृ० ३८७-३८८)

—अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा को आवश्यक दर्शाया था। (स० प्र०)

—आपात स्थिति में अनिवार्य सैनिक शिक्षा पर बल दिया था। (स.प्र.)

—देश की अखण्डता के लिए हिन्दी को सम्पर्क भाषा बनाने का पक्ष लिया था। (स० प्र०)

—देश की सभी भाषाओं के लिए नागरी लिपि को अपनाने की प्रेरणा दी थी। (दयानन्द वचनामृत पृ० १०-११)

—वेदों का सबसे पहले हिन्दी में भाष्य किया था।

—हिन्दी में सबसे पहले आत्म-चरित्र लिखा था।

—हिन्दी को राजभाषा बनाने के लिए लाखों के हस्ताक्षर से सरकार के पास मेमोरेण्डम भेजने का कार्य आरम्भ किया था। (ऋषि के पत्र)

—गोरक्षा का आंदोलन आरम्भ किया था।

—गोरक्षा के लिए सबसे पहले "गोवंश रक्षिणी सभा" की स्थापना करके उसका संविधान बनाया और एक छोटी पुस्तिका भी लिखी।

—देशी वस्त्रों और देश में बनी वस्तुओं के प्रयोग की प्रेरणा दी थी। (श्रीमद्दयानन्दप्रकाश पृ० १७५)

—औद्योगिक उन्नति और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की प्रेरणा दी थी और शिक्षित युवकों को औद्योगिक उच्च शिक्षा के लिए जर्मनी भेजने की व्यवस्था की थी।

—आ.स. बम्बई का भाषण ३ जून १८८२, श्रीमद्दयानन्द प्रकाश भूमिका

—स्वराज्य को ही पूर्ण सुखदायक घोषित किया था। (स० प्र०)

—साम्प्रदायिकता का विरोध किया था। (स० प्र०)

—जन्म के आधार पर बनी जातियों का विरोध किया था। (स० प्र०)

—किसी भी धर्मावलम्बी को वैदिकधर्म में दीक्षित करने अर्थात् शुद्धि का मार्ग प्रशस्त किया था। (स०प्र०)

—समाज के सभी स्त्री-पुरुषों को वेद पढ़ने का अधिकार दर्शाया था। (स०प्र०)

भारतीय संस्कृति तथा संस्कृतप्रेमियों से निवेदन

भारत सरकार की नवीन शिक्षा-प्रणाली में संस्कृत की पढ़ाई की घोर उपेक्षा की गई है। स्कूलों में १०+२ कक्षाओं के पाठ्यक्रम में संस्कृत की पढ़ाई की व्यवस्था नहीं है। इसी प्रकार कालेजों में भी हिंदी तथा संस्कृत के मुकाबले में अंग्रेजी भाषा की पढ़ाई को अनिवार्य किया गया है। इस प्रकार यदि संस्कृत की पढ़ाई पर बल नहीं दिया गया तो संस्कृत के ज्ञान के अभाव में भारतीय संस्कृति समाप्त हो जायेगी। हमारे सभी प्राचीन धार्मिक ग्रंथ संस्कृत भाषा में हैं।

संस्कृत और संस्कृति की रक्षा तथा प्रचार-प्रसार के सम्बन्ध में गम्भीर विचार-विमर्श के लिये ६ दिसम्बर, १९८७ रविवार के दिन प्रातः ११ बजे दयानन्दमठ, रोहतक में एक विशेष बैठक होगी। सभी संस्कृत-प्रेमी सज्जन ठीक समय पर पधारने की कृपा करें।

भवदीय—ओमानन्द सरस्वती
संस्कृत हिन्दी रक्षा समिति सर्वाधिकारी

गायत्री परिवार के संस्थापक ढोंगी हैं

'युग-निर्माण-योजना' और 'गायत्री-परिवार' के संस्थापक श्रीराम शर्मा के जीवन एवं कृतित्व पर शोध करनेवाले स्वामी प्रज्ञानन्द ने उन्हें झूठा और धोखेबाज बताया। यह समाचार २१-१०-८७ के 'अमर उजाला' समाचारपत्र में पढ़ा था। स्वामी प्रज्ञानन्द जी का यह कथन सत्य है। यहां श्रीराम शर्मा के पाखण्ड का भण्डाफोड़ करने के लिए 'तपोभूमि' नवम्बर, १९८६ के आधार पर कुछ तथ्य प्रस्तुत हैं। श्रीराम शर्मा और उनके अन्य भक्त ध्यानपूर्वक पढ़ें और सत्य-असत्य का निर्णय कर सत्य को स्वीकार करें। यथा—

१—श्रीराम शर्मा आर्यसमाज मथुरा के सदस्य रहे हैं, परन्तु वित्तैषणा और लोकैषणा के व्यामोह में फंसने के कारण वे सत्य सनातन वेदमार्ग को छोड़कर बुद्धिवाद के विपरीत असत्य, ढोंग और गुरुडम फैलाने में लगे हुए हैं।

२—श्रीराम शर्मा बताते हैं कि एक सूक्ष्म शरीरधारी ऋषि उनके गुरु हैं। यही तथाकथित गुरु उन्हें मूर्तरूप में ७०० वर्षों तक निर्देश देते रहे हैं। यह असत्य की चरम सीमा है।

३—श्रीराम शर्मा सन्त कबीर, समर्थ गुरु रामदास और रामकृष्ण परमहंस की आत्माओं को अपनी आत्मा बताते हैं। यह मनगढन्त कोरी कल्पना है।

४—श्रीराम शर्मा वे वेदों में लिखे गायत्री मन्त्र की काल्पनिक मूर्ति बनाकर उसकी हवन, फल-फूल, धूप-दीप आदि से पूजा-अर्चना करनी करवानी आरम्भ करदी है। यह वेदों, उपनिषदों और दर्शनों के विरुद्ध है।

५—आप कपोल-कल्पित गायत्री की मूर्ति के साथ-साथ अपनी और माता भगवती के चित्रों को पूजा भी करवाते हैं। यह दम्भ की पराकाष्ठा नहीं तो और क्या है?

६—वेद-विरुद्ध मूर्ति-पूजा के पाखण्ड के साथ-साथ गुरुडमवाद, अवतारवाद, चमत्कारवाद, सौदेबाजीयुक्त फलपरक भक्तिवाद, पुराणवाद और असत्य के अम्बार—श्रीराम शर्मा के जीवन के अनिवार्य अंग बन गये हैं। इन पाखण्डों के साथ-साथ चलनेवाले समाज-सुधार के कार्य विषमिश्रित अन्न के समान बन गये हैं।

७—इस महान् और पवित्र भारत देश में दुर्भाग्यवश एकमात्र सर्वोत्तम वेदमार्ग के अतिरिक्त वेद-विरुद्ध अनेक छोटे-छोटे मत-सम्प्रदाय अपने-अपने झण्डे गाडकर इस समाज को टुकड़ों में बांटने में लगे हुए हैं। श्रीराम शर्मा ने भी एक नया 'श्रीराम शर्मा पन्थ' चलाकर क्या वेद माता का आंचल पकड़कर उसका हृदय नहीं निकाल लिया है?

८—'अखण्ड ज्योति' पत्रिका में जिन लेखकों के लेख छापे जाते हैं, उनके नाम नहीं दिये जाते हैं। यह धोखेबाजी और लेखकों का शोषण नहीं तो और क्या है?

९—यह सत्य है कि श्रीराम शर्मा न तो संस्कृत व्याकरण के विद्वान् हैं और न ही वेदों, उपनिषदों और दर्शनों के विद्वान् हैं, फिर स्वयं को 'वेद-मूर्ति' कहलवाना आत्म-प्रवञ्चना है।

१०—श्रीराम शर्मा जी ने मूर्तियों की लम्बी पंक्ति में गायत्री-मन्त्र की एक और मूर्ति बनाकर तथा स्वयं को अवतार बताकर वेद-विरोधी कार्य किये हैं।

११—श्रीराम शर्मा जी ने गायत्री-मन्त्र की कपोल-कल्पित मूर्ति बनाकर लोगों के मनमें वेद तथा गायत्री-मन्त्र की महत्ता कम की है तथा मूर्तिपूजकों से इस नई गायत्री देवी की पूजा करवाकर अपार धन प्राप्त किया है। इस कुकर्म से उन्होंने वेद और गायत्री-मन्त्र का अपमान करके महापाप किया है।

१२—जब वेद में गायत्री या अन्य किसी की भी मूर्ति बनाकर पूजने का विधान नहीं है, तब श्रीराम शर्मा जी ने गायत्री-मन्त्र की मूर्ति बनाकर भोले-भाले लोगों को ठगने का यह ढोंग क्यों रचा?

जो नर-नारी गायत्री-परिवार के संस्थापक श्रीराम शर्मा के पाखंड का कच्चा चिट्ठा विस्तार से पढ़ना चाहें वे श्री ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम' द्वारा सम्पादित तथा सत्य प्रकाशन, मथुरा द्वारा प्रकाशित 'तपोभूमि' नवम्बर १९८६ और "गायत्री-परिवार: एक समीक्षा" लेखक रामकृष्ण आर्य; प्रधान, नगर आर्यसमाज कैथूनीपोल, कोटा (राजस्थान) अवश्य पढ़ें। अथवा कुछ दिन धैर्य रखें और मुझ द्वारा लिखी जारही पुस्तक—"गायत्री-परिवार के संस्थापक का भण्डाफोड़" पढ़कर सत्यासत्य का निर्णय करलें।

स्वामी प्रज्ञानन्द जी से निवेदन है कि वेद आर्य पत्र-पत्रिकाओं और समाचारपत्रों में श्रीराम शर्मा के ढोंग, छलकपट और इस वेद-विरोधी पन्थ का विस्तार से भण्डाफोड़ करके लोगों को इनके जाल में फंसने से बचाने का पुण्यकर्म करें। सभी नर-नारियों से निवेदन है सब केवल एक वेद-मार्ग पर चलकर अपना जीवन सफल बनायें।

—डा० वेदप्रकाश एम० ए०, पी-एच० डी०
प्राध्यापक हिन्दी विभाग, मेरठ कालिज, मेरठ
अध्यक्ष वैदिकधर्म रक्षा सभा, मेरठ

बूढ़े बैलों के प्राण बचे

दिनांक १७-११-८७ की रात्रि को खरावड़ गांव में हिन्दू कसाइयों के हाथों २७ बूढ़े लाचार बैल रुकवाकर डी० सी० महोदय चौ. बलवीरसिंह जी मलिक रोहतक के आदेश से मांडोठी गोशाला में प्रवेश करा दिये। कसाई बैल छोड़कर भाग गये। स्मरण रहे कि हरयाणा के पशु मेलों में बूढ़े बैल और बछड़े बेचे और खरीदे जाते हैं, इन पर हरयाणा सरकार ने प्रतिबन्ध लगाना चाहिये। क्योंकि इनको प्रायः गवारिया, चमार, धानक खरीदकर यवन कसाइयों के हाथ बेच देते हैं और वह मेवात क्षेत्र में काटे जाते हैं। हरयाणा प्रांत में गोहत्या पर प्रतिबन्ध है, फिर भी हरयाणा के मेवात क्षेत्र में घोर गोवध हो रहा है। सरकार इस गोवध को रुकवाये।

—डा० रघवीर आर्य गोप्रेमी, गांव खरावड़

नामकरण संस्कार

महाशय मूलचन्द शर्मा उ०प्र० आर्यसमाज सिलारपुर तोताहेड़ी जिला महेन्द्रगढ़ के पौत्र व ब्रह्मदत्त शर्मा के सुपुत्र का नामकरण संस्कार पर दिनांक २-१०-८७ को पं. ताराचन्द वैदिक तोप के भजनोपदेश कराये, जिनका लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

आर्यसमाज शांतिनगर सोनीपत द्वारा श्रद्धांजलि

सोनीपत के प्रमुख आर्यनेता, समाजसेवी, वैदिक-यज्ञ समिति के संचालक श्री सत्यपाल जी आर्य के ३६ वर्षीय नवयुवक सुपुत्र श्री सतीशकुमार आर्य का दिनांक १८-११-८७ को अचानक हृदयगति रुक जाने के कारण परलोक गमन होगया। वह एक साहसी, कर्मठ कार्यकर्त्ता, समाजसेवी, मिलनसार एवं उदार हृदयवाले युवक थे। वह अपने माता-पिता एवं अन्य परिवार के अतिरिक्त पत्नी, एक सुपुत्र एवं सुपुत्री को सदा के लिये बिलखता हुआ छोड़ गये हैं।

आर्यसमाज शांतिनगर सोनीपत के सदस्यों ने अपने दैनिक सत्संग में उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमात्मा से उनकी दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करने तथा उनके परिवार के सदस्यों के लिये इस आघात, कष्ट एवं वियोग को सहन कर सकने की शक्ति देने के लिये प्रार्थना की गई, ताकि वे प्रभु का नाम लेते हुए आर्ययुवक के नाम को अमर रख सकें।

—हरिचन्द स्नेही महामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का
बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

क्र०	पुस्तकों का नाम	मूल्य
१.	दी वेदाज (अंग्रेजीभाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२.	दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज - पं० चमूपति एम०ए०	१-५०
३.	जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)—पं० चमूपति एम०ए०	३-००
४.	निहारिकावाद और उपनिषद्—पं० चमूपति एम०ए०	०-५०
५.	आर्यसमाज की विचारमाला—पं० क्षितीशकुमार वेदालंकार	१-००
६.	निजाम की जेल में—लेखक पं० क्षितीशकुमार ,,	२०-००
७.	ईसाइयों की प्रचार प्रणाली—पं० जगत्कुमार शास्त्री	००-१०
८.	आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण—पं. ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
९.	बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय)	४-५०
१०.	ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
११.	हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१२.	धर्म-प्रवेशिका —डा० रणजीतसिंह	३-००
१३.	धर्म-भूषण ,,	५-००
१४.	पंजाब का आर्यसमाज —प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१५.	आदर्श धातु रूपावली —महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१६.	वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३ ००
१७.	स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
१८.	मूर्तिपूजा —सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१९.	वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
२०.	वेदाविर्भाव ,,	१-००
२१.	वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
२२.	ईसाई पादरियों को आर्यसमाज को चुनौती—स्वा० दर्शनानन्द	०-१०
२३.	गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४.	सत्यार्थप्रकाश ,,	१०-००
२५.	महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२६.	हमारा फाजिल्का —योगेन्द्रपाल	१-००
२७.	बड़ —स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती	१-५०
२८.	वीर हेमू ,,	००-७५
२९.	पीपल ,,	१-५०
३०.	मिर्च ,,	१-५०
३१	श्लीपद वा हाथीपांव की चिकित्सा ,,	०-२०
३२.	बिच्छू विष चिकित्सा ,,	०-५०
३३.	लवण ,,	१-२५
३४.	विदेशों में मैंने क्या देखा ,,	२-५०
३५.	नैरोबी यात्रा ,,	१-५०
३६.	ब्रह्मचर्य साधन ६-११ ,,	१०-००
३७.	,, १-२ ,,	१-००
३८.	,, ३ ,,	१-००
३९.	,, ४ ,,	२-५०
४०.	,, ५ ,,	२-००
४१.	,, ६ ,,	३-००
४२.	,, ७-८ ,,	२-००
४३.	,, ९ ,,	३-००
४४.	,, १० ,,	१-५०
४५.	,, ११ ,,	२-००
४६.	हल्दी ,,	१-५०
४७.	नीम ,,	१-२५
४८.	कर्त्तव्य दर्पण—म० नारायण स्वामी	४-००
४९.	विद्यार्थी जीवन रहस्य—म० नारायण स्वामी	२-५०
५०.	योग रहस्य ,, ,, ,,	४-५०
५१.	आर्यसमाज क्या है ? ,, ,, ,,	२-००
५२.	कथा माला ,, ,, ,,	१-२५
५३.	संस्कारविधि	६-००
५४.	वैदिकधर्म परिचय—पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	३-५०
५५.	वैदिक यज्ञ-पद्धति—सार्वदेशिक	००-६०

प्राप्ति स्थान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, सिद्धांती भवन, रोहतक।

फरीदाबाद में महर्षि दयानन्द श्रद्धांजलि समारोह

नवगठित आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद की ओर से वि० २०४४ सं० २२-१०-८७ को महर्षि दयानन्द श्रद्धांजलि समारोह सैक्टर १० में सोल्लास सफलतापूर्वक मनाया गया। पांच दिन पूर्व निकटवर्ती ग्रामों में डी० ए० वी० स्कूल के वाहनों द्वारा रात्रि को वेदप्रचार सूचना सहित बड़ी धूमधाम से चलता रहा। वेदप्रचार मण्डल जवाहर कालोनी, पं० चुनीलाल, पं० भजनलाल, ब्रह्मप्रकाश वागीश तथा सभा के अन्य अधिकारियों ने भाग लिया।

समारोह की अध्यक्षता पं० शिवकुमार शास्त्री भूतपूर्व संसदसदस्य ने की। मुख्य अतिथि श्री दीवानचन्द आर्य थे। ध्वजारोहण श्री कन्हैयालाल महता ने वैदिक राष्ट्रगान के साथ किया। ब्र० आर्य नरेश, चन्द्रप्रकाश सत्यार्थी, कपिलदेव शास्त्री, स्वामी आदित्यवेश इत्यादि अनेक वक्ताओं ने ओजस्वी वाणी से जनता को सम्बोधित करते हुए महर्षि के विचारों पर चलने के लिए प्रोत्साहन दिया। ग्रामीण क्षेत्रों से अनेक ट्रैक्टर भरकर समारोह में आये तथा सहयोग दिया। सभास्थल खचाखच भरा हुआ था। अन्त में आर्य वीरदल के युवकों ने योगासन, दण्ड बैठक, लाठी प्रदर्शन आदि प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। आरम्भ में यज्ञ की सम्पनता पं० ब्रह्मप्रकाश वागीश, पं० वेदप्रकाश तथा पं० श्यामलाल जी शास्त्री ने कराई। धन्यवाद के पश्चात् शांतिपाठ के साथ वैदिक नारों से आकाश गुंजायमान करते हुए समारोह ईश्वर कृपा से सम्पन्न हुआ।

मन्त्री—बलवीरसिंह आर्य

वेदों का पावनप्रकाश ले, जागो और जगाओ

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना सुलतानपुर, उ०प्र०

उठो ! आर्यजन इस धरती का, तिमिर समस्त मिटाओ।
वेदों का पावन प्रकाश ले, जागो और जगाओ॥

अन्धकार विस्तृत है भू पर, हुआ सत्य का पथ अवरुद्ध।
फैल रहा अज्ञान तिमिर अति, लुप्त हुआ अब ज्ञान विशुद्ध।
वृत्ति दानवी, शक्ति द्विगुणित लेकर होती निर्भय क्रुद्ध।
धर्म हेतु अब पार्थ धरा का, होता नहीं तनिक उद्बुद्ध॥

उठो ! कृष्ण के वंशज वीरो ! ज्ञान पुनः सिखलाओ।
वेदों का पावनप्रकाश ले, जागो और जगाओ॥

ऋषि-मुनियों की वसुन्धरा पर, होता मानवता उपहास।
दानवता के तत्त्व अडिग हो, करते धरती पर अट्टहास।
सत्य-शिवम्-सुन्दरता पूरित, संस्कृति का हो रहा विनाश।
कंस तथा रावण निर्भय हो, मनोनुकूल कर रहे विलास॥

बढ़ो ! राम के वंशज ! निद्रा त्यागो, धनुष उठाओ।
वेदो का पावनप्रकाश ले, जागो और जगाओ॥

आज मानवी वृत्ति धरा पर, रोती और सिसकती।
आर्त निनादों की लहरी है, व्यथा-कथा कटु कहती।
स्वर्गिक सुषमामयी धरणी यह, नरक दुखों का सहती।
गंगा की पावन धारा प्रतिकूल दिशा में बहती॥

शक्तिपुञ्ज तुम ! सत्यप्रणेता ! उठ कर्त्तव्य निभाओ।
वेदो का पावनप्रकाश ले, जागो और जगाओ॥

आर्यसमाज कोसली का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री अशोककुमार आर्य, उपप्रधान—दलीपसिंह आर्य, मन्त्री—रायसिंह आर्य, उपमन्त्री—अंगनाराम आर्य, निरीक्षक—डिप्टी मंगतराम आर्य, उपनिरीक्षक—चन्द्रसिंह आर्य, प्रबन्धक—ज्योतिराजसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—अमीलाल आर्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 पंजि० न० P/RTK 49

दूरभाष ...

ओ३म्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

सह-सम्पादक—डा० सुदर्शन

वर्ष १५, अङ्क ३ ७ दिसम्बर, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

वेदोत्पत्ति में प्रमाण

(पं० धर्मदेव "मनीषी" व्याकरणाचार्य, गुरुकुल कालवा)

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥
(यजुर्वेद अध्याय ३१, मन्त्र ७)

अर्थ—सत् जिसका कभी नाश नहीं होता, जो सदा ज्ञानस्वरूप है, जिसको अज्ञान का लेश भी कभी नहीं होता, आनन्द जो सदा सुखस्वरूप और सबको सुख देनेवाला है, इत्यादि लक्षणों से युक्त पुरुष जो सब जगह में परिपूर्ण हो रहा है, जो सब मनुष्यों को उपासना के योग्य इष्टदेव और सब सामर्थ्य से युक्त है, उसी परब्रह्म से (ऋचः) ऋग्वेद (यजुः) यजुर्वेद (सामानि) सामवेद और (छन्दांसि) इस शब्द से अथर्व भी, ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं। इसलिये सब मनुष्यों को उचित है कि वेदों का ग्रहण करें और वेदोक्तरीति से ही चलें। 'जज्ञिरे' और 'अजायत' इन दोनों क्रियाओं के अधिक होने से वेद अनेक विद्याओं से युक्त है ऐसा जाना जाता है। वैसे ही 'तस्मात्' इन दोनों पदों के अधिक होने से यह निश्चय जानना चाहिये कि ईश्वर से ही वेद उत्पन्न हुए हैं, किसी मनुष्य से नहीं। वेदों में सब मन्त्र गायत्र्यादि छन्दों से युक्त ही हैं फिर 'छन्दांसि' इस पद के कहने से चौथा जो अथर्ववेद है, उसकी उत्पत्ति का प्रकाश होता है। शतपथ आदि ब्राह्मण और वेदमन्त्रों के प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि 'यज्ञ' शब्द से 'विष्णु' का और विष्णु शब्द से सर्वव्यापक जो परमेश्वर है उसी का ग्रहण होता है, क्योंकि सब जगत् की उत्पत्ति करनी परमेश्वर में ही घटती है अन्यत्र नहीं।

यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन् ।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखम् । स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः ॥ (अथर्ववेद कां० १०, सू० ७, मं० २०)

अर्थ—जो सर्वशक्तिमान् परमेश्वर है, उसी से (ऋचः) ऋग्वेद (यजुः) यजुर्वेद (सामानि) सामवेद (अङ्गिरसः) अथर्ववेद, ये चारों उत्पन्न हुए हैं। इसी प्रकार रूपकालङ्कार से वेदों की उत्पत्ति का प्रकाश ईश्वर करता है कि अथर्ववेद मेरे मुख के समतुल्य, सामवेद लोमों के समान, यजुर्वेद हृदय के समान और ऋग्वेद प्राण की नाईं है। (ब्रूहि कतमः स्विदेव सः) कि चारों वेद जिससे उत्पन्न हुए हैं सो कौन-सा देव है, उसको तुम मुझ से कहो? इस प्रश्न का उत्तर है कि—(स्कम्भं तं०) जो सब जगत् का धारणकर्त्ता परमेश्वर है उसका नाम स्कम्भ है, उसी को तुम वेदों का कर्त्ता जानो और यह भी जानो कि उसको छोड़ के मनुष्यों को उपासना करने योग्य दूसरा कोई इष्टदेव नहीं है। क्योंकि ऐसा अभागी कौन मनुष्य है जो वेदों के कर्त्ता सर्वशक्तिमान् परमेश्वर को छोड़ के दूसरे को परमेश्वर मान के उपासना करे।

एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद्यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसः। (शतपथ कां० १४, अ० ५) (ब्रा० ४, कांड १०)

याज्ञवल्क्य महाविद्वान् जो महर्षि हुए हैं, वह अपनी पण्डिता मैत्रेयी स्त्री को उपदेश करते हैं कि हे मैत्रेयी! जो आकाशादि से भी बड़ा सर्वव्यापक परमेश्वर है, उससे ही ऋक् यजुः साम और अथर्व ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं, जैसे मनुष्य के शरीर से श्वास बाहर को आके फिर भीतर को जाती है इसी प्रकार सृष्टि के आदि में ईश्वर वेदों को उत्पन्न करके संसार में प्रकाश करता है और प्रलय में वेद नही रहते, परन्तु उसके ज्ञान के भीतर वे सदा बने रहते हैं, बीजांकुरवत्। जैसे बीज में अंकुर प्रथम ही रहता है, वही वृक्षरूप होके फिर भी बीज के भीतर रहता है, इसी प्रकार से वेद भी ईश्वर के ज्ञान में सब दिन बने रहते हैं, उनका नाश कभी नहीं होता, क्योंकि वह ईश्वर की विद्या है, इससे इनको नित्य ही जानना।

प्रश्न—जो सूक्त और मन्त्रों के ऋषि लिखे जाते हैं, उन्होंने ही वेद रचे हों, ऐसा क्यों नहीं माना जाये?

उत्तर—ऐसा मत कहो, क्योंकि ब्रह्मादि ने भी वेदों को पढ़ा है। सो श्वेताश्वतर आदि उपनिषदों में यह वचन है कि "यो वै ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै०" जिसने ब्रह्मा को उत्पन्न किया और ब्रह्मादि को सृष्टि की आदि में अग्नि आदि के द्वारा वेदों का भी उपदेश किया है। उसी परमेश्वर के शरण को हम लोग प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार ऋषियों ने भी वेदों को पढ़ा है। क्योंकि जब मरीच्यादि ऋषि और व्यासादि मुनियों का जन्म भी नहीं हुआ था उस समय में भी ब्रह्मादि के समीप वेदों का वर्तमान था। इसमें मनु के श्लोकों का भी साक्षी है कि—

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम् ।
दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थमृग्यजुसामलक्षणम् ॥
अ० १, श्लोक २३

अध्यापयामास पितृन् शिशुराङ्गिरस. कविः ॥
अ० २, श्लोक १५१

"अग्नि, वायु, रवि और अङ्गिरा से ब्रह्मा जी ने वेदों को पढ़ा था।" जब ब्रह्मा जी ने वेदों को पढ़ा था तो व्यासादि और हम लोगों की तो कथा क्या ही कहनी है।

प्रश्न—वेदो की उत्पत्ति में कितने वर्ष होगये हैं?

उत्तर—एक वृन्द, छानवे करोड़, आठ लाख, तरेपन हजार, छियास्सी अर्थात् (१, ९६, ०८, ५३, ०८६) वर्ष वेदों की और जगत् की उत्पत्ति में होगये हैं और सतास्सी वां वर्त रहा है।

जब जैन और मुसलमान आदि लोग इस देश के इतिहास और विद्या पुस्तकों का नाश करने लगे, तब आर्य लोगों ने सृष्टि के गणित का इतिहास कण्ठस्थ कर लिया और जो पुस्तक ज्योतिष शास्त्र के बच गये उनमें और उनके अनुसार जो वार्षिक पञ्चांग पत्र बनते जाते हैं इनमें भी मिती से मिती बराबर लिखी चली आती है, इसको अन्यथा कोई नहीं कर सकता। यह वृत्तांत इतिहास का इसलिये है कि पूर्वापर काल का प्रमाण यथावत् सबको विदित रहे और सृष्टि की उत्पत्ति, प्रलय तथा वेदों की उत्पत्ति के वर्षों की गिनती में किसी प्रकार का भ्रम किसी को न हो, सो यह बड़ा उत्तम काम है। इसको सब लोग यथावत् जान लेवें। परन्तु इस उत्तम व्यवहार को लोगों ने टका कमाने के लिए बिगाड़ रखा है, यह शोक की बात है और टके के लोभ ने भी जो इसके पुस्तक व्यवहार को बना रखा, नष्ट न होने दिया, यह बड़े हर्ष की बात है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

राजस्थान के देवराला ग्राम में—

सतीप्रथा या स्त्री हत्याकांड ?

आलेख—सुखदेव शास्त्री "वानप्रस्थी" महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

गतांक से आगे—

राजमहल के बीच में पृथ्वी के नीचे भीषण अन्धेरे में एक लम्बी सुरंग थी, दिन में भी उसमें भीषण अन्धेरा रहता था। इस सुरंग में बहुत-सी लकड़ी पहुंचाकर चित्ता जलाई गई। उसी समय चित्तौड़ की रानियां, राजपूत कन्यायें और सुन्दरी उनकी स्त्रियां अगणित संख्या में बलिदान के लिए तैयार हुई, इतिहास के अनुसार ये १४ हजार थी। सुरंग के भीतर आग की लपटें तेज होने पर वे सभी राजपूत देवियां अपने बीच में पद्मिनी को लेकर सतीत्व की रक्षा और स्वाधीनता के महत्त्व के गीत गाती हुई सुरंग की तरफ चलीं। सुरंग में प्रवेश के लिए सीढ़ियां बनी हुई थी, उन सीढ़ियों से होकर वे सुरंग के भीतर प्रवेश करने के लिए नीचे उतरने लगीं। सीढ़ियों से भीतर जाने पर भयानक आवाज के साथ लोहे का बना हुआ सुरंग का मजबूत दरवाजा बन्द हुआ और कुछ ही क्षणों में हजारों राजपूत बालाओं के शरीर सुरंग की भयंकर आग में जलकर राख के ढेर होगये।

चित्तौड़ की स्वाधीनता की कोई आशा न रही थी। सुरंग का द्वार बन्द होते ही राणा भीमसिंह की सेना युद्ध के लिए चित्तौड़ से निकली। बादशाह अल्लाउद्दीन की विशाल सेना के साथ यह अन्तिम युद्ध था। इसमें चित्तौड़ की सेना की पराजय हुई। अगणित संख्या में सैनिक सरदार मारे गये। युद्ध के कारण चित्तौड़ श्मशान होगया। दूर तक सैनिकों के शरीरों से जमीन पटी पड़ी थी, लाशों के ढेर लग गये, खून की नदियां बह गईं।

चित्तौड़ की रानियों, राजपूत बालाओं और सुन्दर युवतियों के साथ रानी पद्मिनी ने सुरंग की होली में जिस प्रकार अपने प्राणों का बलिदान किया, चित्तौड़ के भीतर पहुंचकर एक बची हुई बूढ़िया से बादशाह को यह सब सुनने को मिला। बादशाह बहुत ही निराश होकर चित्तौड़ का शासन झालौर के सोनगढेवंश के मालदेव नामक एक सरदार को देकर दिल्ली चला गया। यह है जौहरव्रत के बलिदान की कथा।

इस प्रकार व्यक्तिगत रूप से भी अनेक देवियों ने जौहरव्रत का अनुसरण किया। शत्रु के हाथ में पड़ने से बचने के लिए तो यह प्रथा सर्वोत्तम है। इस प्रकार की प्रथा उस समय के हालात के अनुसार सराहनीय है। प्रचण्ड अग्नि परीक्षा है। असहनीय बलिदान है। यह तो होना ही चाहिए था सतीत्व की एवं स्वाधीनता की रक्षा हेतु।

इसलिये स्वाभिमानी राजपूतों ने इस प्रकार की प्रथाओं को अपने यहां प्रचलित कर रखा था। सच बात तो यह है कि जीवन के ऐसे तिरस्कृत अवसरों पर ऐसा कौन स्वाभिमानी मनुष्य हो सकता है जो राजपूत होना और राजपूतों की जौहरव्रत की प्रथाओं का पालन करना पसन्द न करे।

आज स्वतन्त्र भारत के परिप्रेक्ष्य में जब हम इन तीनों प्रथाओं पर विचार करते हैं तो इनकी आज के युग में कोई प्रासंगिकता दिखाई नही देती। आज न तो कन्याओं के वध की जरूरत है और न ही सती होने की तथा जौहरव्रत का तो आज स्वतन्त्र भारत में सवाल ही नहीं उठता। आज तो लड़के और लड़की दोनों ही समान हैं। आवश्यकता है इन दोनों को ही सुशिक्षित करके देश के लिए अच्छे नागरिक प्रदान करना। विधवा हो जाने पर पुनर्विवाह की योजना अथवा नियोग या देवर को "लत्ता" उढ़ाकर उसका पूरा प्रबन्ध कर देना चाहिए। कोई भी देवी बिना पति के न रहे। यदि कोई रहना भी चाहे तो संयमपूर्वक अपने माता-पिता व भाई की देख-रेख में जीवन बिताये। जौहरव्रत की जरूरत तो उस समय पड़ती थी, जब देश खण्डित अवस्था में था, कोई भी किसी की सहायता युद्ध में न करता था। सब अकेले ही मुसलमानों से पीटते थे। आज देश की सेना व शक्ति का कोई अनुमान नहीं लगाया जा सकता। आज किसी द्रोपदी का चीरहरण नहीं हो सकता। देश सर्वथा शक्तिशाली है। कन्या-वध चाहे गर्भपात के रूप में ही क्यों न होता हो, महापाप का कार्य है। सर्वथा निन्दनीय है।

सतीप्रथा के विरुद्ध कानून—

गत पृष्ठों में हम लिख आये हैं कि राजस्थान के राजपूतों के सुधार के लिए राजा जयसिंह ने बहुत प्रयत्न किये, किन्तु वे राजपूतों की अपनी हठी प्रवृत्ति तथा मूर्खता के कारण सफल न हो सके। अतः सुधार की कोई बात सिरे न चढ़ सकी, किन्तु प्रयत्न जारी रहे। इसके पश्चात् १८४४ में राजा सवाई रामसिंह के समय में पहले के राजपूताना राज्यों में तिखाना में सतीप्रथा पर रोक लगाने का कानून बना। तिखाना उस समय जयपुर रियासत में था और अब सीकर जिले में है। राजा रामसिंह एक प्रगतिशील शासक थे। वहां अंग्रेज सरकार के राजनीतिक एजेंट सरजान लुडलो भी थे। इन दोनों के ही विचारों से यह कानून बना। किन्तु लोग बहुत शिक्षित न थे, विशेषकर शेखावाटी राजपूत। इसलिए कानून सफल न रहा। सती की घटनायें होती रहीं। इसके अतिरिक्त लार्ड विलियम बेंटिक और राजा राममोहनराय के प्रयत्नों से १९२९ में सतीप्रथा कानून बन गया था। पर राजपूतों की रिसायतों का पृथक-पृथक रूप में अस्तित्व था। अतः यह आवश्यक था कि वे अपने यहां कानून भी अलग-अलग ही बनाती। अंग्रेज इस सतीप्रथा से बहुत घृणा करते थे, इसलिए वे इसे समूल नष्ट करना चाहते थे, किन्तु वे रियासतों में हस्तक्षेप भी न करना चाहते थे। राजस्थान इतिहास के लेखक कर्नल टाड ने भी १८१९ में राजपूत राजाओं के इसके विरुद्ध मनाने के बड़े प्रयत्न किये। बून्दी के महाराजा को उन्होंने इस बारे में मना लिया था कि उनकी पत्नी उनके बाद सती न होगी। बून्दी रियासत में सतीप्रथा के विरुद्ध कानून १८४७ में बना। कर्नल टाड ने मेवाड़ और उदयपुर के राजाओं को भी समझाया। १८४७ में कर्नल ने अन्य रियासतों को भी इस सम्बन्ध में आदेश भेजे। इस आदेश के अनुसार डूगरपुर, प्रतापगढ, बांसवाड़ा, धौलपुर, भरतपुर, जैसलमेर, टोंक और कोटा रियासतों ने सतीप्रथा के खिलाफ कानून बना दिये। इसी प्रकार १८५२ में जोधपुर में, १८५५ में बीकानेर में, १८५६ में अलवर रियासत में सतीप्रथा के विरुद्ध कानून बने। सबसे बाद में उदयपुर में कानून बना, फिर भी वहां पर कई कारण हुए। इसी कारण अंग्रेजों ने उदयपुर रियासत के दीवान गोपालदास को उनकी भूमि और सम्पत्ति से वंचित कर दिया और इस प्रथा को रोकने के कई दण्डनीय उपाय किये।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी और ये कुप्रथाये—

कम्पनी के काल में बिहार और उड़ीसा में नरबलि देने की प्रथा इन पहाड़ी जातियों में जोरों पर थी। अंग्रेजों के लिए यह असहनीय था। १८३६ में उसे भी बन्द कराया गया। १८३० में बस्तर जिले में नरबलि को बन्द किया गया। विधवाओं को जिन्दा जलाना इसे स्लीमेन ने पूरी तरह से बन्द किया। १७८९ में मद्रास में ब्रुक ने इस कुप्रथा को बन्द किया। १८०५ में जेम्स एलफिस्टन ने इस सतीप्रथा को रोका। १८१३ में वेलेजली ने पहली बार कानून बनाया कि जबरदस्ती किसी महिला को जिन्दा नहीं जलाया जा सकता। इतने कानून बनने पर भी १८१५ में बंगाल में जहां ३७८ सती हुई, वहां १८१८ में उनकी संख्या ८३९ तक होगई। इसके पश्चात् १८२९ में लार्ड विलियम बेंटिक ने राजा राममोहनराय आदि से सहयोग करके सतीप्रथा पर कानून-बनाकर पूरा प्रतिबन्ध लगा दिया। राजा राममोहनराय ने इसमें बड़ी सहायता दी। क्योंकि राजा की एक बहन भी सती होगई थी और उनकी बड़ी भाभी को जबरदस्ती चित्ता में बैठाकर सती कर दिया गया था। राजा ने यह सब अपनी आंसूभरी आंखों से देखा था। उन्होंने इसे बन्द करवाने में अपना सर्वस्व लगा दिया था। इस प्रकार उस समय सतीप्रथा समाप्त होगई थी।

(क्रमशः)

मेरी चीन यात्रा—७

चीन महान् शक्ति के रूप में कैसे उभरा ?

—प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

गतांक से आगे—

आज दोनों महाशक्तियां अमरीका और रूस चीन को अपने साथ मिलाने के लिए संलग्न हैं। पिछले दस वर्षों से अमरीका और चीन के सम्बन्ध काफी गहरे होगये। रूस को डराने के लिये अमरीका चीन के नाम का इस्तेमाल करता रहा और चीन अमरीका के नाम का। रूस ने भी चीन के साथ अपने सम्बन्ध सामान्य करने के लिये कुछ सहूलियत देकर समझौते के लिये हाथ बढ़ाया; अमरीका भी चीन के साथ संबन्ध ठीक रखने के लिये चीन को नई तकनीक और आर्थिक सहायता देता है। इस प्रकार चीन को खुश करने में दोनों ही लगे हुए हैं। यह सब कुछ इसलिये हो रहा है कि चीन दोनों महाशक्तियों का विरोध झेलकर अपने पैरों पर खड़ा होगया। क्रांति के पश्चात् केवल दस वर्ष से कम समय तक ही चीन को रूस ने सब प्रकार की मदद दी। हथियारों की, नई तकनीक की और धन की भी। परन्तु जब रूस के साथ सम्बन्धों में बिगाड़ आने लगा और अमरीका भी विरोधी था तब भी चीन किसी के सामने झुका नहीं और अपने ही साधनों और परिश्रम से अपने देश के विकास के कामों में जुट गया। इससे चीन के उद्योग चाहे आधुनिकता में पिछड़ गये हों, परन्तु अपना काम चलाने के लिये तो उनके पास काफी अन्न तथा अपने ही हथियारों से लैस बड़ी फौज थी।

अपनी आवश्यकतायें पूरी करने के लिये उद्योग धन्धे (छोटे-बड़े तथा कुटीर) चीन ने विकसित किये। इन धन्धों के द्वारा तथा सब प्रकार के ग्रामीण तथा शहरी विकास के कामों को चलाकर अपनी जनता को रोजगार दिया। देश में गरीबी तो रही, परन्तु भुखमरी समाप्त होगई। साथ ही कुपोषण भी बहुत हद तक समाप्त हुआ और आम लोगों का स्वास्थ्य भी सुधरा।

चीन के परिश्रमी लोगों ने अफीम की लत छोड़ दी और देश के विकास के काम में जी-जान से जुट गये। धन की कमी को अपने परिश्रम से पूरा किया। चावल देकर दोगुने गेहूं आस्ट्रेलिया से प्राप्त कर लेते थे। देश स्वावलम्बी होगया। न किसी से सहायता मांगी और बिना ऋण लिये ही अपने बड़े-बड़े प्रोजेक्ट बनाकर खड़े कर दिये। रूस ने पहले दस वर्षों में जो विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में सहायता दी थी, उसी के आधार पर परमाणु बम तथा परमाणु अस्त्र बना डाले। दोनों महाशक्तियों के विरोध के बावजूद चीन महान् राष्ट्र और महाशक्ति के रूप में उभर आया। दोनों महाशक्तियां ही उससे सम्बन्ध बढ़ाने में लग गये। चीन ने पहिले अमरीका का हाथ पकड़ा और रूस को नीचा दिखाने के लिये अमरीका ने धन और आधुनिक तकनीक से चीन की सहायता की। परन्तु अमरीका की इच्छायें तो चीन नहीं कर सकता था, उसकी अपनी मान्यतायें थीं और अपनी महानता का गौरव। इसलिये कुछ सीमाओं के अन्दर रहकर ही वे एक दूसरे का सहयोग कर सकते थे। चीन अमरीका की पूंछ में बन्धने को भला कैसे तैयार हो सकता है और हो भी क्यों? वह तो स्वयं अपनी मेहनत, संयम और अपनी ही व्यवस्था के बल पर महान् शक्ति बना था।

चीन अपनी आबादी को सीमित रखकर नई और आधुनिकतम तकनीक का सहारा लेकर एक समृद्ध राष्ट्र के रूप में अधिक से अधिक विकसित देशों की कतार में खड़ा होना चाहता है। मैंने जब अपनी बातों में आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रो० सोबोर्न की भविष्यवाणी का जिक्र किया कि चीन और भारत २१वीं शताब्दी में शक्ति के केन्द्र बनेंगे, अमरीका और रूस नहीं रहेंगे। तब पेंगमेन ने कहा कि ये दोनों राष्ट्र मित्रता से रहें तो यह सम्भव हो सकता है। चीन की तो यह महत्त्वाकांक्षा है ही कि वह आर्थिक दृष्टि से तथा राजनैतिक दृष्टि से सबसे शक्तिशाली देश बने। अपने आर्थिक विकास में निश्चिन्तता से जुटने के लिये, उसके लिये जरूरी है कि वह रूस के साथ अपनी सीमाओं के विवाद को सुलझा ले और उसके बाद भारत के साथ भी। परन्तु यह काम रूस और भारत के सामने दबकर नहीं, बल्कि ठस्से के साथ अपनी शक्ति का प्रदर्शन करके।

भारत जैसे बड़े देश के द्वारा भी यह सब कुछ हो सकता है। भारत प्राकृतिक संसाधनों में चीन से कम नहीं है और जनसंख्या भी जितनी होनी चाहिये उससे अधिक है। जनसंख्या पर नियन्त्रण करते हुए और अपनी इस जनशक्ति का ठीक-ठीक और पूरा-पूरा उपयोग करके भारत भी आर्थिक और राजनैतिक दृष्टि से महानतम शक्ति बन सकता है और प्रो० सोबोर्न की भविष्यवाणी सही सिद्ध कर सकता है। परन्तु उसके लिये जो संकल्प, संयम परिश्रम और तपस्या करनी पड़ेगी, उसके लिये राष्ट्र के जन-जन को तैयार करना होगा। यह चाह यदि भारत के कर्णधारों और जन-जन में पैदा हो जाये तो राह निकल ही आती है।

भारतीयों में जहां कई कमियां हैं वहां सबसे बड़ी कमी तो यही है कि हम जहां भी दो-चार इकट्ठे होकर बैठते हैं वहां घोर निराशा की बातें करते हैं। अपने आप को, अपनी व्यवस्था को तथा राष्ट्र को बदलने की बात नहीं करते। जो बात हमारा पड़ोसी राष्ट्र हम से भी अधिक समस्याओं में उलझा हुआ पाया, वह हम क्यों नहीं कर सकते? उनको कर सकने के लिये हमारा संकल्प क्यों नहीं जागता और उसके लिये हम सब कुछ कर गुजरने को तैयार क्यों नहीं हो जाते। हम या तो अपने अतीत के गीत गाने में खो जाते हैं या निराशा के गर्त में गिरने लगते हैं। अपने गौरवपूर्ण अतीत से सम्बल प्राप्त करके उससे भी अच्छा भविष्य बनाने में नहीं लगते। भारत के सब कुछ तो हैं, फिर निराशा कैसी। अपने आपको पहचानना, जो कभी पूर्वजों ने अच्छे से अच्छा किया, उस से अच्छा कर दिखाना, बस यही करना है। (क्रमशः)

भजन

लगन दीप दिल में लगादो ना भगवन्।
मैं सोया हूं मुझको जगादो ना भगवन्॥

ये चक्षु दिये हैं भला देखने को,
बुरा देखूं अन्धा बना दो ना भगवन्,
सुनूं ज्ञान तूने कर्ण दे दिये थे,
सुनूं चुगली इनको मिटादो ना भगवन्॥

ये वाणी यूं दी थी मैं सत्य उचारूं,
ये झूठी हो गूंगा बनादो ना भगवन्।
ये बुद्धि यूं दी थी पढ़ूं वेद को मैं,
अणु बम बनाऊं फटादो ना भगवन्॥

दिये हाथ सबकी मैं सेवा बजाऊं,
सताऊं किसी को कटादो ना भगवन्।
ये दो टांग तूने कर्म करता घूमूं,
अड़ाऊं कर्म मैं हटादो ना भगवन्॥

ये सिर यूं दिया तेरे दर पे झुकाऊं,
उठाऊं गर्व से गिरादो ना भगवन्।
ये दिल यूं दिया इसमें तुझको बसाऊं,
रहे गैर इसको जलादो ना भगवन्॥

जो गलती जो करता हूं माफी क्यों मांगू,
तुम दिल खोल मुझको सजादो ना भगवन्।
सब करता है इन्द्र जो इन्द्र ये जाने,
तेरी लौ में लौ को मिला लो ना भगवन्॥

—अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी

सभा के अधिकारियों द्वारा आर्यसमाजों का भ्रमण

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री श्री वेदव्रत जी शास्त्री तथा वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह जी ने सभा की वाहन में ३-४ दिसम्बर को दो दिन हरयाणा की आर्य शिक्षण संस्थाओं तथा आर्यसमाजों का भ्रमण किया।

३ दिसम्बर को प्रातः १० बजे आर्य वरिष्ठ उच्च विद्यालय पानीपत जि० करनाल में विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं आर्य विद्या परिषद् हरयाणा के प्रस्तोता से भेंट करके धार्मिक शिक्षा के प्रसार के सम्बन्ध में विचार-विमर्श किया। सभा के अन्तरंग सदस्य एवं पानीपत आर्यसमाज के प्रधान श्री रामानन्द सिंहल से भी सभा के संगठन को सुदृढ़ करने के लिए वार्ता की। उसके बाद १२ बजे आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल के अधिकारियों से भी सम्पर्क करने का यत्न किया, परन्तु वे मिल नहीं सके।

२ बजे आर्यसमाज लाडवा के मन्त्री डा० जयकिशन जी आर्य से मिले। पिछले दिनों इनको मोटर साइकल की एक दुर्घटना में चोट लग गई थी। उनसे सहानुभूति प्रकट करके आर्यसमाज रादौर के अधिकारियों से ४ बजे सम्पर्क करने का यत्न किया। आर्यसमाज के प्रधान तथा मन्त्री रादौर से बाहर होने के कारण नहीं मिल सके।

३ दिसम्बर को ही दोपहर बाद ५ बजे यमुनानगर पहुंचकर स्थानीय आर्यसमाज यमुनानगर तथा दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय के अधिकारियों से मिलकर उपदेशक महाविद्यालय को सुचारु रूप से चलाने के लिए विचार-विमर्श किया। इस अवसर पर सभा के अन्तरंग सदस्य श्री जयपाल आर्य, श्री रामलाल वैद्य, श्री गेंदाराम आर्य, श्री रवीन्द्र आर्य आदि भी उपस्थित थे। सभी ने सभा को पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। ३ दिसम्बर की रात्रि को श्री जयपाल आर्य के ग्राम नंगला साधान गये। वहां यह जानकर दुःख हुआ कि उनके परिवार में एक नवयुवक की दुर्घटना में मृत्यु होगई। उसकी उसी दिन सगाई होने वाली थी। सारा परिवार शोक में डूबा हुआ था। उनके प्रति शोक संवेदना तथा सहानुभूति प्रकट की।

४ दिसम्बर को दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय के पूर्व आचार्य पं० वागीश्वर जी शास्त्री से सहारनपुर पहुंचकर विचार-विमर्श किया तथा उनसे भी सहयोग करने के लिए सहयोग मांगा। उन्होंने पूर्ववत् सहयोग देना स्वीकार कर लिया। उसी दिन सभा के पूर्वगणक स्वर्गीय श्री नवाबसिंह के ग्राम किशनपुर बराल जि० मेरठ में उनके परिवार से मिलकर कुशलक्षेम पूछी।

४ दिसम्बर को आर्यसमाज सोनीपत के अधिकारियों से सम्पर्क करने के बाद श्री धर्मपाल आर्य ग्राम जूआं जि० सोनीपत की विवाहित नौजवान पुत्री अनीता आर्या की आकस्मिक मृत्यु पर उनके परिवार से सहानुभूति एवं संवेदना प्रकट की। रात्रि को वापिस रोहतक पहुंच गये।

—केदारसिंह आर्य

सूखा सहायतार्थ सभा को प्राप्त दान सूची

गतांक से आगे—

श्री बलदेवकृष्ण आर्य मुलतान ट्रेडर्स करनाल	२५०)
श्री रलियाराम गुप्त एडवोकेट करनाल	१००)
मन्त्री आर्यसमाज रेलवे मार्ग यमुनानगर जि० अम्बाला	१०१)
,, ,, जगाधरी जि० अम्बाला	२५०)
डा० योगेन्द्र गोयल आर्यसमाज मुलाना जि० अम्बाला	१००)

इन सभी दानदाताओं का सभा की ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद। आर्यसमाजों के अधिकारियों तथा दानदाताओं से निवेदन है कि गोवंश की रक्षा के लिये अधिक से अधिक दान मनीआर्डर द्वारा भेजकर पुण्य के भागी बनें। सभा को जितना-जितना दान प्राप्त होता जायेगा, उसे तुरन्त सूखाग्रस्थ ग्रामों में वितरीत कर दिया जायेगा।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

हिन्दू-धर्म और संस्कृति खतरे में है

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्यसमाज ललापुरा, वाराणसी के ५२वें वार्षिकोत्सव के अन्तिम दिन २२ नवम्बर को चेतगंज बिक्रीकर कार्यालय के मैदान में विशाल सभा को सम्बोधित करते हुए बड़े ही खेदपूर्ण स्वर में कहा कि यह एक कड़वी सच्चाई है कि भारत में हिन्दू-धर्म और संस्कृति खतरे में है। काश्मीर में ५ प्रतिशत हिन्दू बचे हैं। रामजन्म भूमि मन्दिर का ताला खुलने के विरोध में विद्रोही मुसलमानों ने काश्मीर के १०० से अधिक मन्दिर तोड़ दिये। कश्मीर के पण्डित भयभीत हैं। नई शिक्षानीति से संस्कृत को निकाला जारहा है और ४० जिले मुस्लिम घोषित किये गये हैं। जहां के लोग हिन्दी नहीं पढ़ सकेंगे। उर्दू भाषा को जबरन देश में लादा जारहा है। खाड़ी के ४८ मुस्लिम देश भारत में पेट्रोडालर के बल पर गरीब हिन्दुओं और हरिजनों को धर्मान्तरण करके राष्ट्रीय एकता को चुनौती दे रहे हैं। तमिलनाडू के मीनाक्षीपुरम् गांव के एक हजार लोगों को मुसलमान बनाकर 'रहमत नगर' बनाया गया, जिसे आर्यसमाज द्वारा पुनः हिन्दू-धर्म में वापस लाकर वहां आर्यसमाज मन्दिर की स्थापना करदी गई है। स्वामी जी ने आगे कहा कि एक हजार वर्ष पहले जब मुसलमान आक्रांता हिन्दुस्तान नहीं आये थे, तब कोई भी मस्जिद देश में नहीं था, लेकिन मन्दिर तो देश में तब से हैं, जब से इस देश का अस्तित्व है। सैयद शाहबुद्दीन को दूसरा जिन्ना बताते हुए स्वामी जी ने कहा कि काशी में आकर उन्होंने क्या नहीं देखा कि काशी विश्वनाथ मन्दिर की एक दीवार से खड़ी मस्जिद मुस्लिम आक्रांताओं ने बनाई है। समूचे देश में एक भी ऐसा उदाहरण नहीं है जहां मस्जिद तोड़कर मन्दिर बनाया गया हो। अतः रामजन्म भूमि जिनकी है उनको मिलनी चाहिए। कट्टरपंथी मुसलमान संकीर्णता छोड़ और रामजन्म भूमि स्थल को हिन्दुओं को सौंप दे।

पंजाब में आतंकवादियों को उन्होंने पाकिस्तान का एजेण्ट बताया और हिन्दुओं के जानमाल की रक्षा की मांग की। उन्होंने कहा कि पंजाब में आतंकवाद भर रहा है और अब समय का तकाजा है कि जैसलमेर से कश्मीर तक ५ मील चौड़ी सुरक्षापट्टी बनाकर भूतपूर्व सैनिकों को वहां बसाया जाये, तभी पाकिस्तानी षड्यन्त्र को नाकाम किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के अन्दर २० मस्जिदों का पूरा खर्चा सरकार देती है, इसे बन्द करना चाहिये। मेरठ दंगे में पूरा हाथ श्रीमती मोहसिना किदवई की थी। उसके इशारे पर मेरठ में हिन्दुओं की करोड़ों की सम्पत्ति नष्ट की गई। सतीप्रथा पर आर्यसमाज का दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए स्वामी जी ने कहा कि वेद के किसी भी मन्त्र में सती को जलाने का विधान नहीं है। शंकराचार्य में दम है तो एक भी मन्त्र प्रस्तुत करें और जहां चाहे आर्यसमाज से शास्त्रार्थ करलें। सतीप्रथा एक जघन्य अपराध है, इसको सख्ती से बन्द करना चाहिये। छुआछूत और दहेज-प्रथा को पूरी तरह समाप्त करने का आह्वान स्वामी जी ने हिन्दुओं से किया और सरकार से यह मांग की कि धारा ४८ के अन्तर्गत पूरे देश में गोहत्या बन्दी का व्यापक कानून बनाया जाये और लागू किया जाये।

आर्यसमाज शांतिनगर सोनीपत का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री वैद्य जयकृष्ण, कार्यकर्त्ता प्रधान—तीर्थदास छाबड़ा, उपप्रधान—खानचन्द मुञ्जाल, शोभराज आर्य, महामन्त्री—हरिचन्द स्नेही, मन्त्री—मा० वेदप्रकाश आर्य, उपमन्त्री—ब्रह्मदत्त नारंग, प्रचार-मन्त्री—किशनचन्द भूटानी, कोषाध्यक्ष—मेहरचन्द बवेजा।

—हरिचन्द स्नेही महामन्त्री

शुद्धि समाचार

दिनांक २५-१०-८७ रविवार को आर्यसमाज मन्दिर समालखा में यज्ञ किया गया और मुसलमान नटों ने स्वेच्छा से हिन्दू-धर्म ग्रहण किया और कपड़ा आदि वितरण किया गया। हिन्दू शुद्धि संरक्षण समिति हरयाणा के महामन्त्री सेवानन्द सरस्वती के प्रयत्नों द्वारा यह कार्यवाही की गई और अन्तरंग की बैठक शामिल थी। श्री मांगेराम उपदेशक का भी सहयोग रहा। शुद्ध हुए व्यक्तियों (मुसलमानों) के नाम हैं—

१. बरकत अली	बिरखाराम
२. जैमया	जमनादेवी
३. मुराद अली	उमरावसिंह
४ रोहतास	रोहतास
५. नवाब	अनूपसिंह
६. गूंगा	जगजीत
७. गूंगा	अमरजीत
८. सैंदा	सावित्री

२—दिनांक २८-१०-८७ को आर्यसमाज मन्दिर समालखा में यज्ञ हवन किया गया और मुसलमान नटों ने स्वेच्छा से वैदिकधर्म ग्रहण किया और कपड़ा आदि वितरण किया गया। हिन्दू शुद्धि संरक्षण समिति हरयाणा के महामन्त्री श्री सेवानन्द सरस्वती के प्रयत्नों द्वारा यह कार्यवाही की गई। इस अवसर पर श्रीमती बहन सच्चिदानन्द प्रिंसिपल डी० ए० वी० स्कूल समालखा, श्री मांगेराम उपदेशक तथा आर्यसमाज अध्यक्ष उपस्थित थे।

१. रहमत उला	रामकला
२. राजकुमार	राजकुमार
३. दया	दयाराम
४. अनिल	अनिलकुमार
५. रसीदो	ज्ञानो

३—आज दिनांक २२-११-८७ को आर्यसमाज मन्दिर समालखा में हिंदू शुद्धि संरक्षण समिति हरयाणा के वार्षिक चुनाव पर जो मुसलमानों की शुद्धि की गई, उसमें निम्न व्यक्तियों ने भाग लिया—

सर्वश्री रामरत्न कार्यकर्त्ता उक्त समिति, जयसिंह आर्य, भरतसिंह आर्य समिति कोषाध्यक्ष, मांगेराम वैद्य, रामेश्वरदयाल, हंसराज कड़वल, ज्ञानचन्द, भल्लेराम, मांगेराम भजनोपदेशक इत्यादि। यह कार्यवाही श्री स्वामी सेवानन्द सरस्वती महामन्त्री हिन्दू शुद्धि संरक्षण समिति हरयाणा के प्रयत्नों द्वारा की गई और इन मुसलमानों ने अपनी स्वेच्छानुसार वैदिक हिन्दू-धर्म ग्रहण किया तथा श्री स्वामी जी द्वारा मद्रास से भेजा हुआ कपड़ा उन्हें वितरण किया गया। इन्हें बिरादरी में सम्मान दिलाकर रोटी बेटी का सम्बन्ध किया गया।

शुद्ध हुए व्यक्तियों का विवरण—

पहला नाम	नया नाम
१. लखमी	लखमीचन्द
२. सुशील	सुशीलकुमार
३. अंगूरी	अंगूरीदेवी
४. पवन	पवनकुमार
५. जयकिशन	जयकिशन
६. सन्तोष	सन्तोषकुमारी
७. राजवीर	राजवीरसिंह
८. श्यामो	श्यामोदेवी
९. हंसराज	हंसराज
१०. सुमन	सुमनबाला

शोक समाचार

श्री गोविन्दराम जी आर्य का स्वर्गवास दिनांक २७-११-८७ वार शुक्रवार को होगया। उनकी स्मृति में हवन एवं श्रद्धांजलि (पगड़ी रस्म) का कार्यक्रम वार रविवार ता० ६-१२-८७ को प्रातः १० बजे सम्पन्न हुआ।

प्रेषक—प्रकाशचन्द यजानन्द आर्य
मु० पो० देवराला-१२५०३६, जि० भिवानी (हर०)

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में ऋषि बोधोत्सव मेला

२६-११-८७ : हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी १५-१६-१७ फरवरी, १९८८ को महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में ऋषि-मेला मनाया जारहा है। इस मेले में हर वर्ष न केवल भारत से अपितु विदेशों से भी हजारों ऋषि-भक्त उपस्थित होकर अपने गुरु महर्षि दयानन्द जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

मेरी समस्त आर्य हिन्दू जाति से प्रार्थना है कि वे इन तिथियों को अभी से अंकित करलें और मेले के अवसर पर टंकारा अवश्य पधारें। टंकारा आनेवाले ऋषि-भक्तों के आवास का तथा भोजन का प्रबन्ध टंकारा ट्रस्ट की ओर से नि:शुल्क किया जाता है।

—रामनाथ सहगल मन्त्री

आर्य वानप्रस्थ आश्रम को भूमिदान

श्री गिरीशचन्द्र धीमान पौत्र श्री मिस्त्री मूलराज जी ने १४११० वर्ग फीट भूमि आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर को दान में देकर भूमि-दान के साथ एक ऐतिहासिक शृंखला को जोड़ दिया है। ज्ञातव्य रहे कि यह रुड़की रोड पर वही स्थान है जहां ऋषिवर दयानन्द जी ने उसी स्थान पर स्थित बगीचे में ८-१० दिन निवास किया था। उक्त भूमि की रजिस्ट्री दिनांक २६-१०-८७ को हुई तथा इसके साथ ही १-११-८७ को विशाल वैदिक यज्ञ का महोत्सव सम्पन्न करते हुए नवभव्य भवन के निर्माण की आधारशिला आश्रम के प्रधान श्री मक्खनलाल जी नागपाल एवं श्री गिरीशचन्द्र जी धीमान के करकमलों द्वारा स्थापित की गई।

भवदीय—महेन्द्रमुनि मन्त्री

शोक समाचार

हैदराबाद के स्वतन्त्रता सेनानी महाशय नेकीराम जी रुदड़वाले की धर्मपत्नी का स्वर्गवास २७-११-८७ को होगया। वे धर्म-परायण स्त्री थी। उनके दो पुत्र तथा एक पुत्री और पौत्र पपौत्रभरा परिवार छोड़कर गई है। उनके पुत्र श्री प्रतापसिंह जी शास्त्री विद्या के प्रेमी और विद्या प्रसार में २४ घण्टे लगे रहते हैं। स्वयं दो विषयों में एम. ए. की है। अनेकों लड़कियों और लड़कों को प्रभाकर कराया है। महाशय नेकीराम जी ने आर्यसमाज के ही कार्य में प्रथम स्थान पर भाग लिया। ऐसे परिवार के सज्जनों को दुःखी देख हृदय दुःखी होता है। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वे धर्मपारायण देवी की आत्मा को शांति दे तथा प्रतापसिंह शास्त्री के इस दुःख में मेरा हृदय दुःखी है। प्रभु उन को यह दुःख सहने की शक्ति प्रदान करे।

—दीपचन्द ग्राम पो० कासनी, जि० रोहतक

बचने की आस नहीं

प्रस्तुतकर्ता—जयपालसिंह सभा भजनोपदेशक

टेक—चार वेद और मनु के ऊपर जिन-जिन का विश्वास नहीं।
आज नही तो कल परसों उसके बचने की आस नहीं॥

बहुत आदमी सोचते होंगे हम युद्ध से रोब जमा देंगे।
छोड़-छोड़कर अस्त्र-शस्त्र हम अपना देश बचा देंगे।
उडन बम्ब परमाणु बम्ब से जग में वियान मचा देंगे।
अपनी ताकत के द्वारा दुनियां को नाच नचा देंगे।
तोड़—याद रहे जिसके हृदय में सत्यार्थप्रकाश नहीं॥१

टैंक भी थे विमान भी थे सबसे ज्यादा बलवानी भी थे।
मगर वेद के प्रतिकूल होकर हारे सब जापानी थे।
हिटलर गोईरिंग कीटल देश जो साईंस में लासानी थे।
उनका पता ना पाया भाई जो बल में अभिमानी थे।
तोड़—अमरीका लन्दन एशिया को आता सुख का सांस नहीं॥२

वेदों के अनुकूल जगत् में जितने दिन तक राज रहा।
संध्या हवन का घर-घर अन्दर दोनों समय रिवाज रहा।
घी के मटके भरे रहे थे कोठे-कुठलों में अनाज रहा।
खाद्य-पदार्थ और टुकड़े का कोई ना मोहताज रहा।
तोड़—बिना यज्ञ के दुनियांभर में किसी जगह प्रकाश नहीं॥३

यदि चाहते हो सुख से रहना पर उपकार करना सीखो।
देश धर्म जाति के लिये हंस-हंसकर मरना सीखो।
अपने को दुःख में देकर दुःख दूजे का हरना सीखो।
यही तरीका ठीक है भाई चल सागर तिरना सीखो।
तोड़—पृथ्वीसिंह बेधड़क कह जीवन की कुछ आस नहीं॥४

उन बलिदानों का क्या होगा ?

मानवता ही यदि भारत में, खो देगी अपना अस्तित्व।
मां ही भूलेगी भारत में प्यारभरा जब शुचिर ममत्व।
अरबों खरबों की लागत के इन निर्माणों का क्या होगा ?

नैतिकता का पतन हो रहा, दनुज तत्त्व बढ़ रहे अभय।
धर्म-कर्म सब व्यर्थ बने हैं बढ़ता द्वेष यहां निर्भय।
मानव डर में तिमिर रहा यदि ज्योतित बल्लो का क्या होगा ?

निर्धनता का तथा विषमता का यदि होगा नित नर्तन।
झूठ-कपट-व्यभिचारों का ही यदि होगा नव अभिनन्दन।
चोरी-डाका-कत्ल न रुकता पुलिस बलों का फिर क्या होगा ?

घूस बढ़ेगी, मिथ्या होगी, जनगण को न न्याय मिलेगा।
कृषक तथा मजदूरों का यदि, शोषण होता यहां रहेगा।
भूखा यदि इन्सान रहा तो भगत सुभाष शिवा राणा के-
उन बलिदानों का क्या होगा ?

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ.प्र.)

(पृष्ठ १ का शेष)

इससे जो अध्यापक विलसन साहब और मोक्षमूलर साहब आदि यूरोपखण्डवासी विद्वानों ने बात कही है कि—वेद मनुष्य के रचे हैं किंतु श्रुति नहीं है, उनकी यह बात ठीक नही है और दूसरी यह है—कोई कहता है (२४००) चौबीस सौ वर्ष वेदों की उत्पत्ति को हुए, कोई (२९००) उन्तीस सौ वर्ष, कोई (३०००) तीन हजार वर्ष और कोई कहता है (३१००) इकत्तीस सौ वर्ष वेदों को उत्पन्न हुए बीते हैं, उनकी यह भी बात झूठी है। क्योंकि उन लोगों ने हम आर्य लोगों की नित्य प्रति की दिनचर्या का लेख और संकल्प पठन विद्या को भी यथावत् न सुना और न विचारा है, नहीं तो इतने ही विचार से यह भ्रम उनको नहीं होता। इससे यह जानना अवश्य चाहिए कि वेदों की उत्पत्ति परमेश्वर से ही हुई है और जितने वर्ष अभी ऊपर गिन आये हैं उतने वर्ष वेदों और जगत् की उत्पत्ति में भी हो चुके हैं।

(ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पर आधारित)

ध्यान योग शिविर

आत्मशुद्धि आश्रम में श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती अध्यक्ष योगधाम ज्वालापुर, हरिद्वार की अध्यक्षता में एवं पूज्य स्वामी प्रेमानन्द जी सरस्वती 'आचार्य संन्यासाश्रम गाजियाबाद की संरक्षता में सोमवार २१ दिसम्बर से वीरवार ३१ दिसम्बर, १९८७ तक 'ध्यान योग शिविर' का आयोजन किया जारहा है, जिसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि आदि अष्टांग योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण महर्षि पातंजलि के आधार पर दिया जायेगा। आप शिविर मध्य शारीरिक रोगों तथा मानसिक अशांति से छुटकारा पाने के लिये विविध यौगिक उपायों से लाभ प्राप्त करके आत्मदर्शन का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। प्रशिक्षण में सहयोगी रहेंगे श्री स्वामी धर्ममुनि जी (दुग्धाहारी) मुख्याधिष्ठाता, आत्मशुद्धि आश्रम।

—आत्मशुद्धि आश्रम (रजि. ट्रस्ट) बहादुरगढ़, रोहतक

गौ तथा भैंस की सर्वोत्तम हरयाणा नसल को बचाना हरयाणावासियों का पुनीत कर्तव्य

सारा देश जानता है कि हरयाणा नसल की गाय बछड़े और बैल देशभर में मशहूर हैं। इसी प्रकार हरयाणा की मुर्रा नसल की भैंस भी देश में सर्वोत्तम है।

जिस भयंकर सूखे का मुकाबला हरयाणा के आधे से ज्यादा जिलों की जनता को करना पड़ रहा है, यह हमारी याद में कभी भी नहीं करना पड़ा। अन्न के भण्डार तो देश में हैं, परन्तु पशुओं के लिये चारे और भूसे के भण्डार नहीं हैं। ज्यों-ज्यों समय बीत रहा है, चारा और भूसा मंहगा तो होता ही जारहा है, उनका मिलना भी कठिन से कठिनतर होता जारहा है।

किसानों को अपनी गाय, बछड़े, बछड़ियां, बल और भैंसों को बचाने के लाले पड़ रहे हैं। ऐसे भयंकर सूखे और अकाल से पीड़ित किसान सांडों (खागड़ और झोटे) की सुध-बुध ले पायेंगे, यह असम्भव होता जारहा है। हम सब भली प्रकार जानते हैं कि यदि सांडों की पूरी देख-रेख और चराई नहीं हो पाई और वे कमजोर होगये या मर गये तो हरयाणा की गाय और भैंस की नसलों में गिरावट आजायेगी और वह हरयाणा और देश के लिये बहुत बड़ी हानि होगी। चाहिये तो अच्छे बछड़े और कटड़े चुनकर, उनको सांड बनाने के लिये उनको भी अच्छी खुराक दी जाये, परन्तु जो सांड इस समय प्रदेश की मशहूर नसलों की अभिवृद्धि में सेवारत हैं, उनको बचाया ही न जाये, बल्कि उनको पूरी खुराक देकर हृष्ट-पुष्ट रखा जाये।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का ध्यान इधर गया और उसने इस दिशा में अपने कर्त्तव्य का पालन करने का संकल्प लिया है। हमने हरयाणा सरकार और भारत सरकार से भी निवेदन किया है कि वे एक तिहाई सहायता करें। यदि १५ रु० दैनिक व्यय एक सांड पर आता है तो वे ५ रु० दें और हरयाणा की जनता भी एक तिहाई हिस्सा वहन करे।

हमारा अन्दाजा है कि लगभग १००० सांडों की रक्षा का भार हम सबको मिलकर उठाना होगा। ५ रु० प्रति सांड जनता को इकट्ठा करना है। चारा और दाना दोनों का प्रबन्ध करना है।

हरयाणा के लोग जहां भी हों, हरयाणा में या बाहर, उन सब की सेवा में हम पुरजोर अपील करते हैं कि वे इस पवित्र कार्य में दिल खोलकर मदद करें और उदारता से चारा, अन्न या नकद दान दें।

मण्डियों के धर्म-प्रेमी सभी व्यापारी भाइयों से विशेष अपील है कि वे हरयाणा की मशहूर गाय और भैंसों की नसल की रक्षा के लिये दिल खोलकर दान दें।

निवेदक

प्रो० शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	बद्रीप्रसाद आर्य
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धांती भवन, रोहतक

सर्वहितकारी का श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक

अमर हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस २३ दिसम्बर को सारे आर्यजगत् में धूमधाम से मानया जायेगा। इस अवसर पर सर्वहितकारी का २१ दिसम्बर का अंक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक प्रकाशित होगा जिसमें आर्य विद्वानों के लेख तथा कविताएं प्रकाशित होंगी।

—सम्पादक

ऋषि-निर्वाण विशेषांक की सफलता

'सर्वहितकारी' का ऋषि-निर्वाण विशेषांक प्राप्त हुआ। वास्तव में विशेषांक काफी सुन्दर एवं आकर्षक था। मुख-पृष्ठ पर ऋषि दयानन्द जी सरस्वती का भव्य चित्र विशेष रूप से शोभनीय रहा। इसमें काफी ठोस एवं महत्वपूर्ण सामग्री पढ़ने को मिली। ऋषि जी के सम्बन्ध में भी कई लेखों के माध्यम से विस्तार से चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त कई जीवनोपयोगी लेख भी पढ़ने को मिले। जिनके पढ़ने से जीवन निर्माण की स्पष्ट प्रेरणा मिलती है। इस अंक में सम्पादकीय लेख का तो अपना अलग ही महत्त्व रहा।

इस पत्र के विशेषांकों की काफी धूम रहती है। यह भी अपनी उसी शान के अनुरूप निकला है। वास्तव में यह पत्र आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार करने तथा ऋषि दयानन्द जी के मिशन को आगे बढ़ाने के लिये कृत-संकल्प है। विशेषांक की सफलता हेतु बधाई।

—रामकुमार आर्य, आर्यसमाज दुल्लागढ़, सोनीपत

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री कृष्णलाल आर्य, महामन्त्री—भगवानदेव चैतन्य, उपप्रधान—कृष्णचन्द्र आर्य, विद्याधर तथा ज्ञानप्रकाश आर्य, उपमन्त्री—रामकृष्ण गौतम तथा रोशनलाल बहल, कोषाध्यक्ष—अरुणेश सूद, संचालक आर्य वीरदल—कृष्णचन्द्र आर्य।

रानी विराट् नगर नेपाल में आर्यसमाज का भव्य समारोह

—ब्र० अखिलेश्वर वैदिक प्रवक्ता, उपाचार्य गुरुकुल कालवा, जींद

१९ नवम्बर, १९८७ से लेकर २१ नवम्बर तक विराट् नगर नेपाल में आर्यसमाज का तृतीय वार्षिकोत्सव बहुत प्रभावशाली ढंग से मनाया गया। सभी दर्शकों एवं कार्यकर्त्ताओं का कथन था कि विराट् नगर में ऐसा उत्सव पहले कभी नहीं हुआ। यह आयोजन पूरे नगरवासियों के लिये आकर्षण का केन्द्र रहा।

इस अवसर पर आयोजित चतुर्वेदशतक यज्ञ के लिये ब्रह्मा के रूप में मुझे सम्मिलित होने का अवसर मिला। अपनी आंखों देखी घटना के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि यहां भारत में आयोजित होनेवाले किसी भी आर्यसमाज के उत्सव में इतनी जनता शायद ही एकत्रित हो पाती होगी, जितनी भारी तादाद में लोग वहां आते थे। विराट् नगर में प्रथमवार १९ नवम्बर को भव्य जलूस निकाला गया, जिससे लोगों पर विशेष प्रभाव पड़ा। प्रतिदिन दोपहर व रात के सम्मेलन में हजारों नर-नारी एकत्रित होते थे। वेद सम्मेलन, सांस्कृतिक सम्मेलन तथा अन्तिम दिन के धर्म-रक्षा सम्मेलन में आर्य विद्वानों के अतिरिक्त स्थानीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के भी भाषण हुए।

इस विशाल आयोजन का सर्वप्रथम श्रेय श्री पीताम्बर शर्मा एम० ए० को जाता है। आप सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से नेपाल में प्रचार के लिये नियुक्त हैं। गतवर्ष भी विराट् नगर में आर्य महासम्मेलन हुआ था, जिसमें सभाप्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती जी का भी आगमन हुआ था। प्रधान जी ने प्रचार की आवश्यकता को देखते हुए सिलीगुडी आर्यसमाज के आग्रह पर आपकी नियुक्ति की है। तब से अब तक पीताम्बर जी जो उल्लेखनीय कार्य कर चुके हैं उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

विराट् नगर में आर्यसमाज को फैलाने के लिये श्री सीताराम जी अग्रवाल नेपाल मोटर कम्पनी ने भामाशाह का रूप धारण किया है। उनका नाम नेपाल आर्यसमाज के साथ सदा अमर रहेगा।

विशेष खुशी की बात यह है कि इस बार आर्यसमाज से प्रभावित होकर एक रामकुमार नामक सज्जन ने आर्यसमाज मन्दिर के लिये भूमि दान की है। आज तक विराट् नगर में आर्यसमाज के पास कोई भवन नहीं है। भविष्य में आर्यजन मुक्तहस्त से योगदान देंगे तो इस जमीन पर विशेष कार्य हो सकता है।

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री सत्यवीर, उपप्रधान—शमशेरसिंह, मन्त्री—धर्मवीरसिंह, उपमन्त्री—दयाराम, कोषाध्यक्ष—राममेहरसिंह, पुस्तकाध्यक्ष—कन्हैयालाल, निरीक्षक—सतपाल।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० न० P/RTK 40

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

हरयाणा में संस्कृत तथा हिन्दी की रक्षा के लिए आंदोलन की तैयारी

(केदारसिंह आर्य कार्यालय संवाददाता)

रोहतक ६ दिसम्बर। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित संस्कृत तथा हिन्दी प्रेमियों की एक बैठक सिद्धांती भवन में श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में हरयाणा के कोने-कोने से आये नेताओं ने भाग लिया। श्री सत्यवीर शास्त्री अध्यक्ष संस्कृत विभाग राजकीय महाविद्यालय भिवानी ने बैठक की कार्यवाही का संचालन करते हुए कहा कि भारत सरकार की नई शिक्षा-नीति लागू होने से संस्कृत की उपेक्षा आरम्भ होगई है। नवोदय विद्यालयों में संस्कृत की पढ़ाई की कोई व्यवस्था नहीं है। इसी प्रकार १०+२ प्रणाली के वरिष्ठ उच्च विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में संस्कृत तथा हिन्दी विषयों में से किसी एक को अनिवार्य विषय घोषित करके परस्पर भाषाओं को चुनने पर विवाद खड़ा कर दिया गया है। परन्तु अंग्रेजी भाषा को विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में अनिवार्य कर दिया गया है। शिक्षा का माध्यम भी अंग्रेजी करके हिन्दी भाषा जो कि राष्ट्र तथा हरयाणा की राजकीय भाषा है, पर कुठाराघात किया गया है। अंग्रेजी माध्यम से पढनेवाले छात्र-छात्रायें योग्यता रखते हुए भी बहुत कम अंक लेकर पिछड़ जाते हैं और परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने पर भी नौकरी आदि प्राप्त करने में सफल नहीं हो पाते।

उन्होंने सुझाव दिया कि छठी कक्षा से संस्कृत अनिवार्य की जाये। स्कूलों में संस्कृत अध्यापकों के पद पूर्ववत् रखे जायें। नवोदय तथा महाविद्यालयों में संस्कृत तथा हिन्दी दोनों अनिवार्य तथा अंग्रेजी को ऐच्छिक विषय घोषित किया जाये। हरयाणा के तीनों विश्वविद्यालयों में पत्र-व्यवहार तथा पाठ्यक्रम हिन्दी भाषा में प्रकाशित होना चाहिए।

श्री महावीरसिंह शास्त्री रोहतक ने त्रिभाषा फार्मूले को समाप्त करने की मांग करते हुए कहा कि माता-पिता तथा विद्यार्थी की पसन्द पर कोई भाषा पढ़ने की सुविधा दी जाये। पब्लिक स्कूलों में प्रथम श्रेणी से अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी पढ़ना आवश्यक किया जाये। श्री रामप्रसाद शास्त्री जुलाना, जिला जींद ने कहा कि प्राचीन समय में संस्कृत भाषा के कारण ही भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। सभी भाषायें संस्कृत की शाखायें हैं। अतः सभी भारतीय भाषाओं के प्रेमियों के सहयोग से संस्कृत की रक्षा के लिए संघर्ष करना चाहिए।

आचार्य सुदर्शनदेव जी अध्यक्ष संस्कृत विभाग राजकीय महाविद्यालय नरवाना ने अंग्रेजी के जाननेवालों को ही विद्वान् कहनेवालों की आलोचना करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द अंग्रेजी नहीं जानते थे, वे संस्कृत तथा हिन्दी के महान् विद्वान् होने के कारण युग-पुरुष तथा महान् सुधारक कहलाये। आपने आर्यसमाज तथा वैदिक संस्कृति के प्रेमियों को सुझाव दिया कि वे यथासम्भव हिन्दी तथा संस्कृत भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करें तथा अपनी सन्तान को गुरुकुलों अथवा आर्य विद्यालयों में पढ़ावें और संस्कृत शिक्षा के शिक्षण शिविरों का आयोजन करें। अपना पत्र-व्यवहार हिन्दी में तथा वेशभूषा भारतीय रखें। हरयाणा देवभूमि रहा है। अतः हमें संस्कृत की रक्षा करके अपनी भारतीय संस्कृति की रक्षा करनी चाहिए। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में संस्कृत के प्रवक्ता डा. यज्ञवीर ने कहा भारत सरकार में जो शिक्षा अधिकारी बैठे हैं वे भारतीय भाषाओं से अनभिज्ञ हैं। वे केवल अंग्रेजी-प्रेमी हैं, क्योंकि अंग्रेजों की गुलामी कर चुके हैं। अतः जो अधिकारी तथा मन्त्री भारतीय भाषा विशेषकर राष्ट्र-भाषा हिन्दी नहीं जानते उन्हें उनके पदों से तुरन्त हटाकर भारतीय संस्कृति की रक्षा करनी चाहिए।

श्री रणवीरसिंह शास्त्री बुवाना (दिल्ली) ने संस्कृत के अध्यापकों से अनुरोध किया कि वे ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों में स्थानांतरण करवाने के लालच में संस्कृत की पढ़ाई समाप्त कराने का यत्न न करें।

आर्य विद्या परिषद् हरयाणा के प्रस्तोता एवं आर्य वरिष्ठ उच्च विद्यालय पानीपत के प्रधानाचार्य श्री लाभसिंह ने मांग की कि संस्कृत में उच्च स्थान प्राप्त करनेवाले छात्रों को छात्र-वृत्तियां दी जावें और संस्कृत विद्यालयों को भी अन्य विद्यालयों के समान ही सरकारी अनुदान दिया जाये।

श्री चन्द्रपाल राणा पाकसमा (रोहतक) ने कहा संस्कृत तथा हिन्दी भाषा की रक्षा के लिए आंदोलन की तैयारी हेतु प्रांतीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर सम्मेलनों का आयोजन करना चाहिए।

डा० रणजीतसिंह नारनौंद, जिला हिसार, ने सुझाव दिया कि हरयाणा में सभी गुरुकुलों तथा संस्कृत पाठशालाओं की पाठविधि समान की जावे और इनका सम्बन्ध आर्य विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर से किया जाये। आर्य विद्यापीठ को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय ने विधिवत् मान्यता दे रखी है। अतः विश्वविद्यालय की डिग्रियां प्राप्त करने में सुविधा रहेगी। आपने संस्कृत तथा हिन्दी की रक्षा के लिए आंदोलन करने में अपना पूर्ण सहयोग करने का वचन दिया।

हिन्दी एवं संस्कृत आर्य महाविद्यालय चरखी दादरी के प्रधानाचार्य श्री ऋषिपाल ने संस्कृत की जाली डिग्रियां देनेवाली दूकानों के विरुद्ध कड़ी से कड़ी कार्यवाही करने की मांग करते हुए बताया कि संस्कृत पढ़े बिना जाली डिग्रियां खरीदकर संस्कृत भाषा को नष्ट करने का प्रयत्न किया जारहा है। अतः हमें भारत सरकार से मांग करनी चाहिए कि इस प्रकार की डिग्रियां देनेवाली संस्थाओं की मान्यता बन्द की जावे।

छाजुराम जाट महाविद्यालय हिसार के प्राध्यापक श्री सत्यवीर विद्यालंकार ने हरयाणा सरकार से मांग करते हुए कहा बी.एड. की भांति ओ० टी० तथा प्रभाकर की ट्रेनिंग पुनः खोली जावे, ताकि संस्कृत तथा हिन्दी के अध्यापकों की मांग पूरी हो सके और इन भाषाओं के सफल छात्रों को रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकें। (शेष पृष्ठ ४ पर)

राजस्थान के देवराला ग्राम में—

सतीप्रथा या स्त्री हत्याकांड ?

आलेख—सुखदेव शास्त्री "वानप्रस्थी" महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

अन्तिम किस्त—

महर्षि दयानन्द और सतीप्रथा—

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में गृहस्थ के विषय में लिखा है। उसमें सतीप्रथा के विषय में महर्षि ने कोई चर्चा नहीं की है। विधवा होने पर पुर्नविवाह या नियोग करने की चर्चा की है। ऐसा लगता है महर्षि के कार्यकाल में १८६३ से लेकर १८८३ तक यह प्रथा समाप्त प्राय-सी होगई थी। महर्षि चतुर्थ समुल्लास के अन्त में स्त्रियों के प्रति यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते यत्र देवता आदि अत्यन्त सम्मानजनक श्लोक लिखकर उसे पूरा किया है। उन्होंने स्त्री शिक्षा का, स्त्रियों के वेद पढने का, विधवा विवाह का जोरदार समर्थन किया। महर्षि से पहले स्त्रियों को जो दर्जा उस समय के साहित्यकारों ने दे रखा था वह बहुत ही शोचनीय था। आद्य शंकराचार्य ने तो उन्हें नरक का द्वार बताया। तुलसीदास ने उसे पीटने की सलाह दी। सूरदास ने भी कोई कसर न छोड़ी। इसी प्रकार मुहम्मद साहब तथा ईसामसीह ने भी उसे पैर की जूती तथा अपनी खेतियां बतलाया। महर्षि दयानन्द जैसा स्त्रियों का इतना बड़ा समर्थक महाभारत के बाद ५००० वर्षों में कोई नहीं हुआ। महर्षि के आदेशानुसार आर्यसमाज ने भी इस दिशा में महान् कार्य किये। स्त्रियों की शिक्षा का प्रबन्ध सबसे पूर्व आर्यसमाज ने ही किया था। आज तो देश की प्रधानमन्त्री तक भी स्त्री बनी हैं। अनेकों राज्यपाल हैं।

जैन सन्त आचार्य तुलसी की सम्मति—

सतीप्रथा के प्रसंग में कई प्रश्न उपस्थित होते हैं। महिला सती होती है, उसे महत्त्व दिया जाता है। किसी पुरुष ने आज तक ऐसा क्यों नहीं किया ? दाम्पत्य सम्बन्ध तो दोनों का होता है। स्त्री के लिए पतिव्रता होना और पति के साथ जलना गौरव की बात है तो पुरुष के लिए पत्नीव्रत का आदर्श कहां चला जाता है। उसके मनमें पत्नी के साथ जल मरने की भावना क्यों नहीं जगती ? पति की मृत्यु के बाद स्त्री विधवा होती है तो क्या पत्नी की मृत्यु के बाद पुरुष विधुर नहीं होता ? स्त्री के लिए पति परमेश्वर है तो पुरुष के लिए पत्नी को परमेश्वर मानने में कौन-सी बाधा है। इन प्रश्नों के सन्दर्भ में तटस्थ चिन्तन किया जाये तो ऐसा प्रतीत होता है कि सतीप्रथा धार्मिक दृष्टि से क्या, मानवीय दृष्टि से भी उचित नहीं है। यह दासता की मानसिकता है। समाज की अस्वस्थ परम्परा है, सरासर आत्म-हत्या है, महिला समाज का शोषण है।

सती की ताजा घटना —

प्रथम जनवरी १९८७ को राजस्थान के सीकर जिले के दिवराला गांव के मानसिंह का विवाह रूपकंवर के साथ हुआ था और विवाह के केवल नौ माह बाद चार सितम्बर को मानसिंह की मृत्यु होगई। उसकी १८ वर्षीया पत्नी रूपकंवर उसके साथ ही चिता में सती होगई। यह घटना समाचारपत्रों में लगातार एक महीने से चर्चा का विषय बनी हुई है। सतीप्रथा के विषय में अनेकों लेख लिखे गये, पिछले कानून दिखाये गये है। सारे देश ने इस घटना की खुली निन्दा की। केवल मात्र पुरी के शङ्कराचार्य ने ही इस घटना का समर्थन किया है। सारी सतीप्रथा की कथा अखबारों में चार सितम्बर से निरन्तर आरही हैं, उनका यहां फिर से लिखना ठीक नहीं। रूपकंवर का सती होना उनके परिवारवालों का ही षड्यन्त्र है, उसे बहकाकर, डराकर, धमकाकर चिता पर बैठाया गया। चिता में से वह कई बार उठकर भागना भी चाहती थी, किन्तु उसे भागने नहीं दिया गया। एक प्रत्यक्षदर्शी के द्वारा बताया गया कि वह बेचारी "पापा पापा" करती रही और अग्नि के अन्दर जलकर राख होगई।

यह सब कार्य बहुत ही जल्दी में किया गया। पुलिस से छिपाया गया। इसके पश्चात् १३वीं तिथि को चून्दड़ी की रस्म पर अदालत के आदेश का भी पालन न किया गया, जिसमें कहा गया था कि चून्दड़ी की रस्म न होने दी जाये, किन्तु सरकार की कमजोरी के कारण वह भी होके रही। अब राजस्थान सरकार ने नया कानून भी सती के विरुद्ध पास किया है। अब सती मन्दिर बनाने की बारी है। सरकार नहीं चाहती कि सती मन्दिर बने, किन्तु राजपूत चाहते हैं कि यहां सती मन्दिर बनकर रहेगा। अब तक २० लाख रुपये सती मन्दिर के लिए एकत्र हो चुके हैं। देखें क्या होगा।

सतीप्रथा के विषय में ये थोड़े से प्रमाण लिखे हैं, जिससे पाठकों को इस प्रथा की जानकारी हो सके। आर्यसमाज राजस्थान का इस कार्य को रोकने में तथा सतीप्रथा के विरुद्ध बोलने का साहस भी अब तक सामने नहीं आया है। इस प्रथा के विरुद्ध जनमत जाग्रत करना आर्यसमाज का मुख्य कार्य है। केन्द्रीय सरकार का भी कर्त्तव्य है कि वह भी सारे देश के लिए एक कानून बनाये, जिससे ये घटनाये न घटें। महिला संगठनों का भी कर्त्तव्य है कि वह भी महिलाओं में सतीप्रथा के विरुद्ध जागृत हों।

ओ सोने वालो जागो अब तो

—बलवन्तसिंह आर्य ठसका, नारायणगढ़, अम्बाला

ओ सोनेवालो जागो अब तो तुमको देश बचाना होगा।
निकल गया जो समय हाथ से पीछे से पछताना होगा।

हम कब से तुम्हें जगा रहे पर तुम नहीं जगने में आरहे।
तुम गर्त में धंसते जारहे अब इससे बाहर आना होगा ॥१

देश में मच रही हाकाकार सुखी नहीं दीखे कोई नर-नार।
निर्दोष जनता को जो मारे उनका खोज मिटाना होगा ॥२

यहां फैला अन्धकार भारी बढ़ती जारही अत्याचारी।
रिश्वतखोरी चोरबजारी सबको जड़ से उड़ाना होगा ॥३

कहीं विधवायें जल रहीं गउवों पर कटारी चल रही।
पर तुम्हारी बुद्धि सो रही अब तो इसे जगाना होगा ॥४

तुम अन्धमतों से निकलो लोगो क्यों इनमें फंस के त्रास भोगो।
सत्य और असत्य जानकर लोगो वेद का डंका बजाना होगा ॥५

जरा सोचो कैसे आजादी आई लाखों वीरों ने फांसी पाई।
उनके मन की मनमें रह गई पूर्ण करके दिखाना होगा ॥६

अब तो चेतो नौजवानों धर्म कर्म कुछ तो पहचानो।
'बलवन्त' देश धर्म और जाति पर तुमको शीश कटाना होगा ॥७

आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री स्वामी जीवनानन्द, उपप्रधान—डा० तुलसीराम, चौ० निहालचन्द गुगनानी, मन्त्री—देसराज आर्य, प्रचारमन्त्री-बलराज चुग, उपमन्त्री – दिवानचन्द, कोषाध्यक्ष-मेघराज आर्य, लेखानिरीक्षक-रामचन्द्र बत्तरा।

—मेघराज कोषाध्यक्ष

आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद मिश्रित क्षेत्र का चुनाव

संरक्षक—सर्वश्री कन्हैयालाल मेहता, प्रधान—लक्ष्मणदास, उप० प्रधान—सत्यप्रकाश अरोड़ा, बृजलाल कत्याल, मन्त्री—बलबीरसिंह आर्य, उपमन्त्री—डा. सत्यदेव आर्य, सोमदेव आर्य, प्रचारमन्त्री—बुद्धराम शास्त्री।

मेरी चीन यात्रा—८

चीन के लोगों की जीवन-शैली

—प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

गतांक से आगे—

चीन और भारत दोनों प्राचीन देश हैं और उनकी सीमायें एक दूसरे से लगती हैं। भारत से जाकर बौद्ध भिक्षुओं ने चीन में अपने सिद्धांतों का प्रचार किया और उसके लिये उनको अनेक कष्ट ही नहीं सहन करने पड़े, बल्कि बहुतों को अपने प्राणों की भी आहुतियां देनी पड़ीं। बौद्धधर्म का चीन में आज भी व्यापक प्रभाव है। भारत और चीन दोनों देशों में ऐसा युग आया, जब लोग अन्धविश्वासों और रूढ़ियों के शिकार होगये। रुयात सेन ने १९०१ में वहां पहिली क्रांति की, जिससे समाज का ढांचा बदला। राजाओं का राज समाप्त होकर गण-राज्य की स्थापना हुई। परन्तु चीन उसके थोड़े वर्षों बाद ही अंग्रेजों के प्रभाव क्षेत्र में आगया। दूसरे महायुद्ध से पहिले ही हालत बिगड़ गई थी, भ्रष्टाचार चरम सीमा पर पहुंच गया था और वहां के सिक्के का अवमूल्यन होगया। आर्थिक दृष्टि से चीन की दशा बड़ी शोचनीय होगई।

१९४९ में माओत्से तुंग के नेतृत्व में दूसरी क्रांति हुई और उसने चीन की काया पलट करदी। १९४९ में चीन भ्रष्टाचार, गरीबी और रूढ़ियों की गहरी जकड़ में था। देहातों में बालविवाह, कई-कई विवाह होते थे, विधवाओं की दशा खराब थी। महिलाओं के साथ बुरा व्यवहार होता था। १९५० में एक कानून बना, जिसमें बालविवाह और बहुविवाह पर कड़ी रोक लगादी और विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया गया। देहात में भारत की तरह ही लड़के के पैदा होने पर खुशी और लड़की के पैदा होने पर शोक मनाया जाता था। लड़कियों के बेचने का काम भी कुछ प्रदेशों में होता था।

माओत्से तुंग ने सामाजिक बुराइयों को मिटाने और महिलाओं को आदर देने के लिए कदम तो उठाये, परन्तु अपने समाज को पश्चिम के प्रभावों से अछूता रखा। यही कारण था कि चीन में १९५० से १९८० तक तलाकों की संख्या मुश्किल से हजारों में पहुंचती थी और वह भी तब सम्भव हो सकता था जब पति और पत्नी दोनों रजामन्द हो जाते थे। १९८० में जब चीन का समाज कुछ खुलने लगा तो नया तलाक कानून बना। अब जब महिलाओं को पूरी आजादी मिली और पश्चिम का प्रभाव बढ़ा, उसका नतीजा यह हुआ कि तलाकों की संख्या एक साल में ५ लाख की संख्या को पार कर गई। पश्चिम में तो अब यह कहना मुश्किल है कि शादियां अधिक होती है या तलाक।

चीन के लोगों का खानपान—

वैसे तो चीन के शाकाहारी भोजन की संसार के सभी शहरों में धूम है, परन्तु हमारे शाकाहार से उनका शाकाहार अलग है। मूंगफली के तेल के साथ सूअर की चर्बी मिलाकर वे सब्जी पकाते हैं। वैसे भी चीन के लोग छोटे-बड़े सभी जानवरों को खाते हैं। कीड़े मकोड़े से लेकर भेड़, बकरी, गौ, घोड़ा, सांप, केचवा सभी कुछ खाते हैं। धार्मिक प्रवृत्ति के लोग जो बौद्धधर्म से प्रभावित हैं वे मांस नहीं भी खाते हैं। जापान में तो ऐसे लोगों की संख्या बहुत है। दूध पीने का तो रिवाज ही वहां नहीं है और न साधारणतया मक्खन और घी खाया जाता है। विदेशी पर्यटक जाने लगे तब इन सब चीजों का प्रबन्ध होटलों में होने लगा है। सोयाबीन से बना हुआ दूध और दही तो दुकानों पर मिलती हैं और लोग बड़े चाव से खाते हैं।

रहन-सहन—

लोगों को वेतन कम मिलता है, परन्तु खाने-पीने की चीजें, रहने के लिये मकान बहुत सस्ते हैं। कपड़े भी सस्ते हैं। सफाई कर्मचारी को वेतन दूसरों से अधिक मिलता है, परन्तु बोनस आदि की सुविधायें नहीं है, जो फैक्टरी में काम करनेवाले को मिलती हैं। आम स्त्री-पुरुष दोनों ही मोटे सस्ते कपड़े की पतलून और बन्द गले का कोट (जैसे माओत्से तुंग पहनते थे) पहनते हैं। शहरों में काम करनेवाले, अधिक पढ़े-लिखे स्त्री-पुरुष पश्चिम के लोगों की तरह महिलायें अलग ढंग के सूट आदि और पुरुष कोट पतलून, टाई वगैरा पहनते हैं।

अनुशासन—

गरीबी तो उस देश में भारत की तरह है, परन्तु भूखमरी और बेरोजगारी नाम के लिये भी शायद न हो। शहरों में और जिसकी औलाद नहीं उसको ग्रामों में बुढ़ापे की पेंशन मिलती है। लोग परिश्रमी हैं और अनुशासन में रहकर काम करते हैं। ईमानदार हैं और स्वाभिमानी, भीख कोई भी नहीं मांगता है, इसलिये थोड़ी भूमि होते हुए भी इतनी बड़ी आबादी का पेट भी अच्छी तरह भर लेते हैं और न कुपोषण का शिकार होते हैं और न बेरोजगारी का, सब प्रकार का काम कर लेते हैं, किसी काम को छोटा नहीं समझते।

खेलों में कमाल—

वहां के नवयुवक और नवयुवतियां खेलों की प्रतियोगिताओं में सबसे आगे निकल जाते हैं। इसके बारे में मालूम करने पर पता लगा कि वहां १० और १२ वर्ष के बीच की आयु में ही होनहार खिलाड़ियों को चुन लेते हैं और उसको अच्छा भोजन, अच्छा प्रशिक्षण देते हैं और संयम से रहने का तथा सब प्रकार के नशों से दूर रहने का समुचित प्रबन्ध रहता है। खेल के संस्थान बहुत अच्छी तरह चलाये जाते हैं।

सबसे बड़ी बात है राष्ट्र को अगली पंक्ति में खड़ा करने की गहरी भावना। यही चीन की प्रगति का मुख्य रहस्य है।

निमन्त्रण-पत्र

श्रीमद्भगवद्गीता गोष्ठी का आयोजन

दिनांक 26 दिसम्बर 1987 समय प्रातः 9 से 1 बजे

स्थान : दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र

अध्यक्ष : प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान

मुख्य वक्ता : डा० भवानीलाल भारतीय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की विद्या सभा की ओर से एवं हरयाणा साहित्य अकादमी के आर्थिक सहयोग से यह आयोजन किया जा रहा है। आप इसमें सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :-

वेदव्रत शास्त्री
मन्त्री:-आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

बीरुराम आर्य
संयोजक-श्रीमद्भगवद्गीता गोष्ठी

(पृष्ठ १ का शेष)

मस्तनाथ आयुर्वेदिक महाविद्यालय अस्थल बोहर के श्री धर्मवीर मलिक ने कहा कि संस्कृत की शिक्षा बिना भारतीय संस्कृति की रक्षा नहीं हो सकती। आयुर्वेद जानने के लिए भी संस्कृत का ज्ञान होना आवश्यक है। आपने सुझाव दिया कि वेदों में कैंसर जैसे असाध्य रोग के उपचार पर अनुसंधान किया जाये। इसमें सफलता मिलने पर संस्कृत पढ़ने में सभी की रुचि बढ़ेगी। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के प्राध्यापक श्री बलवीरसिंह ने आर्ष पाठविधि को विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता देने का तो स्वागत किया, परन्तु महर्षि दयानन्द के नाम से संचालित विश्वविद्यालय में समस्त पत्र-व्यवहार अंग्रेजी में किये जाने की कटु आलोचना की।

राजकीय महाविद्यालय गोहाना, जिला सोनीपत के प्राध्यापक श्री मधुकर विद्यालंकार ने संस्कृत की शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि संसार में संस्कृत भाषा ही एक पूर्ण भाषा है। इसके प्रति हमें आकर्षण उत्पन्न करना चाहिए और अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करने के लिए एक आंदोलन आरम्भ करने का समय आगया है। इसमें छात्र भी हमारा समर्थन करेंगे।

सभा के उपदेशक पं० सुखदेव शास्त्री डी० ए० वी० पब्लिक स्कूलों में अंग्रेजी भाषा तथा वेशभूषा की आलोचना करते हुए कहा कि ये संस्थायें महर्षि दयानन्द के नाम पर धब्बा लगा रही हैं। आपने इनका बहिष्कार करने का सुझाव दिया।

श्रीनारायण शास्त्री ने संस्कृत की पढ़ाई पर बल देते हुए कहा कि यदि संस्कृत समाप्त होगई तो हरयाणा से भारतीय संस्कृति भी समाप्त हो जायेगी।

श्री टेकराम आर्य सन्दोला भिवानी का मत था कि अंग्रेजी की पढ़ाई से हम भारतीय संस्कृति से दूर जारहे हैं। अतः सभी माता-पिताओं को अपने बच्चों को संस्कृत अनिवार्य पढ़ानी चाहिए। पं० हरिश्चन्द्र शास्त्री अहीरवां, जिला फरीदाबाद ने हरयाणा में अंग्रेजी हटाओ तथा संस्कृत बचाने का आंदोलन करने का सुझाव दिया। आपने हरयाणा में उर्दू अकादमी की स्थापना का विरोध करते हुए कहा कि एक हजार उर्दू छात्रों के लिए उर्दू अकादमी सरकारी ग्रांट ले रही है, परन्तु लाखों संस्कृत के छात्रों के लिए संस्कृत अकादमी को स्थापित करने के लिए हरयाणा के शिक्षामन्त्री श्री खुर्शीद अहमद न्यायोचित मांग को ठुकरा रहे हैं।

श्री सुरेशकुमार शास्त्री आचार्य गुरुकुल डिकाडला, जिला करनाल ने संस्कृत रक्षा-आंदोलन चलाने का समर्थन किया। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में अंग्रेजी भाषा के अध्यक्ष डा० तुलसीराम ने अपने प्रभावशाली भाषण में संस्कृत भाषा को अंग्रेजी भाषा से समृद्ध सिद्ध करते हुए बताया कि संस्कृत भाषा देवभाषा है, परन्तु अंग्रेजी भाषा एक अपभ्रंश भाषा है। संस्कृत को मृतभाषा कहनेवाले भूल जाते हैं कि भारतवर्ष में प्रातः सायं दोनों समय संस्कृत में वेदमन्त्रों का संध्या तथा हवन-यज्ञ पर उच्चारण होता है।

श्री कपिलदेव शास्त्री अध्यक्ष हैफेड हरयाणा ने सुझाव दिया कि संस्कृत रक्षा आंदोलन गैर राजनीतिक ढंग से चलाया जाये। हरयाणा में संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की मांग करनी चाहिए। यहां संस्कृत पढ़नेवाले छात्र सारे भारत से अधिक संख्या में हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने स्मरण करवाते हुए कहा कि १९६७ में "अंग्रेजी भाषा हटाओ" आंदोलन चलाये जाने पर शहरों में अंग्रेजी के नामपटों के स्थान पर हिन्दी के नामपट लगने आरम्भ होगये थे। परन्तु अंग्रेजी समर्थक अधिकारियों ने अपने स्वार्थवश किसी न किसी रूप में अंग्रेजी को सरकारी भाषा बनाये रखने का षड्यन्त्र चालू रखा हुआ है। अतः हमें अंग्रेजी के विरुद्ध और संस्कृत एवं हिन्दी के समर्थन में आंदोलन चलाना होगा। चुनाव के समय हिन्दी भाषा में मत मांगे जाते हैं, परन्तु सत्ता मिलने पर अंग्रेजी भाषा तथा वेशभूषा के प्रेमियों से सावधान रहना चाहिए। आपने भारत तथा राजकीय सरकारों से मांग करते हुए कहा कि विधान में संशोधन करके राष्ट्र-भाषा न जाननेवालों को सरकारी नौकरी न दी जाये। कम्प्यूटर तथा गणित के लिए सबसे उपयुक्त भाषा संस्कृत को माना गया है। अतः संस्कृत को राष्ट्रहित के लिए अनिवार्य रूप में पढ़ाया जाना चाहिए।

बैठक के अन्त में अध्यक्षीय भाषण देते हुए श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने संस्कृत प्रेमियों को आह्वान किया कि संस्कृत तथा हिंदी की रक्षा के लिए आज से ही तैयारी आरम्भ कर देनी चाहिए। अंग्रेजी भाषा को सभी बुराइयों की जननी बताते हुए आपने कहा कि अंग्रेजों ने भारतीय संस्कृति नष्ट करने के लिए हम पर अत्यधिक अत्याचार किये थे। अंग्रेजी भाषा के प्रसार तथा प्रचार से हम अपनी भारतीय संस्कृति से दूर जारहे हैं। अतः हमें अंग्रेजी के प्रति घृणा उत्पन्न करनी होगी। हमें सभी धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक दलों के सहयोग से आंदोलन चलाना होगा और संस्कृत तथा भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करना होगा। आपने कहा कि हरयाणा में ३० के लगभग गुरुकुल हैं, जहां संस्कृत के विद्वान् तयार किये जाते हैं, परन्तु सरकार अन्य विद्यालयों के समान आर्थिक सहायता नहीं देती। यदि संस्कृत भाषा को अंग्रेजी भाषा के समान मान्यता दे दी जावे तो स्कूल भी गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली को अपनाने के लिए तैयार हो जावेंगे। अतः हमें अपनी मांग प्रस्तुत करने के लिए सरकार को ज्ञापन देना होगा और यदि सरकार हमारी मांगें न मानेगी तो हिन्दी रक्षा-आंदोलन की भांति आंदोलन आरम्भ कर दिया जायेगा।

विचार-विमर्श के पश्चात् मांग-पत्र तैयार करने के लिए निम्नलिखित विद्वानों पर आधारित एक उप-समिति का गठन किया गया—

१. प्रो० सत्यवीर शास्त्री
२. प्रो० सत्यवीर विद्यालंकार
३. डा० यज्ञवीर दहिया
४. डा० तुलसीराम
५. डा० रणजीतसिंह
६. आचार्य सुदर्शनदेव
७. श्री महावीर शास्त्री
८. श्री वेदव्रत शास्त्री
९. प्रो० मधुकर विद्यालंकार

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

सूखा सहायतार्थ सभा को प्राप्त दान सूची

गतांक से आगे—

श्री दीनानाथ चावला मैसर्ज चावला सोप फैक्ट्री, रोहतक	११००)
विकास निगम बल्लबगढ़ जि० फरीदाबाद द्वारा श्री लक्षमनदास सभा उपप्रधान	१०००)
उत्तम केमिकल उद्योग बल्लबगढ़ जि० फरीदाब ,,	१०००)

इन सभी दानदाताओं का सभा की ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद। आर्यसमाजों के अधिकारियों तथा दानदाताओं से निवेदन है कि गोवंश की रक्षा के लिये अधिक से अधिक दान मनीआर्डर द्वारा भेजकर पुण्य के भागी बनें। सभा को जितना-जितना दान प्राप्त होता जायेगा, उसे तुरन्त सूखाग्रस्त ग्रामों में वितरित कर दिया जायेगा।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

आर्यसमाज नरवाना जि. जींद का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री इन्द्रजीत, उपप्रधान ओंकारप्रकाश, ताराचन्द, मन्त्री—राधाकृष्ण, उपमन्त्री—धर्मपाल, कोषाध्यक्ष—जयदेव।

हरयाणा में अकाल का काला साया

आज भी है, सौ साल पहले भी था

—चतरसिंह

भारत को २१वो सदी में ले जाने की दुहाई देनेवाले नेता चाहे सन् २००० तक सबके लिए रोटी, मकान, स्वास्थ्य आदि प्रदान करने का दावा करते हों, लेकिन देश का श्राम श्रादमी आज भी उन प्राकृतिक विपदाओं से निजात नहीं पा सका है, जिनको वह कई सदियों से झेलता आरहा है।

सरकार आम आदमी को उसकी मुश्किलों से छुटकारा दिलाने में अपने आपको असहाय और अक्षम महसूस कर रही है अथवा अन्य किन्हीं कारणों से वह लोगों की इन समस्याओं से मुक्ति दिलाने को चिन्तित प्रतीत नहीं होती।

आज देश में जहां एक ओर बाढ़ का प्रकोप है, वहां उत्तरी भारत भयंकर सूखे की चपेट में है। हरयाणा भी इससे अछूता नहीं है। लेकिन हरयाणा में सूखा या अकाल पहली बार पड़ा हो, ऐसी बात नहीं है। हरयाणा के लोग तो सदियों से ऐसी प्राकृतिक विपदाओं को झेलने के अभ्यस्त हो चुके हैं। यहां के लोक-साहित्य, लोक-गीतों और कहावतों तक में सूखे और अकाल की भीषण विभीषिका का ऐसा सजीव चित्रण मिलता है कि पढ़नेवाले का दिल झकझोर हो उठता है और आंखें भर आती हैं।

हरयाणा भाषा में अकाल को 'काल' और अकाल से कम भयानक स्थिति को 'करडा' कहा गया है। जब (१) पानी, (२) घास/चारा तथा (३) अनाज की बिल्कुल कमी हो जाये तो उसे 'त्रिकाल' कहा जाता था। इसी तरह अधिक वर्षा को 'आलमगोरी' और क्षेत्रीय वर्षा को 'मूसलाधार' कहा गया है। अंग्रेजी शासनकाल के राजस्व रिकार्डों में ऐसा वर्णन मिलता भी है।

हरयाणा में १७५३-५४ में पड़े सम्वत् १८१० (दस्सा) अकाल का राजस्व रिकार्डों में अधिकारिक व प्रमाणित विवरण मिलता है। यद्यपि मध्यकाल में भी हरयाणा में भयंकर सूखे और अकाल के दृष्टांत मिलते हैं, लेकिन इसका विस्तृत विवरण केवल ब्रिटिश शासनकाल के दौरान ही मिलता है। राजस्व रिकार्डों के अलावा लोकगीतों और कहावतों तक में अकालों और सूखे का वर्णन मिलता है।

एक चीनी कहावत है जिसका अर्थ है कि अकाल और बाढ़ के बाद महामारी आती है, जो बचे-खुचे का सफाया कर देती है। सम्वत्-१८४० (चालीसा 'काल') (सन् १७८३) में हजारों लोग भूख और बीमारी से मर गये। मां-बाप ने अपने कलेजे के टुकड़ों को भी छोड़कर जहां से रोटी मिलने की लालसा थी, उसी तरफ रास्ता नाप लिया। इतना ही नहीं, अनेकों ने अपने बच्चों को मुट्ठीभर अनाज के लिए बेच डाला।

चालीसा काल तीन साल तक जनता की खबर लेता रहा। अनाज के दाम ५ या ४ सेर प्रति रुपया तक होगये।

सम्वत् १८६० 'साठा' (सन् १८०३) का अकाल पड़ना और ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी का हरयाणा में आगमन एक साथ हुआ। इस क्षेत्र में अंग्रेजों के आते ही आर्थिक व्यवस्था चरमराने लगी। उस वर्ष फसल न होने से चारे की भारी कमी होगई। सम्वत् १८६९ (सन् १८१२-१३ का अकाल हरयाणा के बागड़ी क्षेत्र में अधिक जलवा दिखाता रहा। इसी तरह सम्वत् १८७७ (सन् १८१७-१८) में चारे का भारी अभाव होगया और अनाज १२ रुपये प्रति सेर होगया था।

सम्वत् १८८१ (सन् १८२४-२५) में भयानक सूखा पड़ा। अकाल की यह स्थिति थी कि पशुओं के लिए घास भी उपलब्ध नहीं हो सकी। लेकिन सम्वत् १८४० के बाद १८९० (सन् १८३३-३४) में 'नब्बिया' अकाल ऐसा भयंकर रहा कि दाने भी खाने को नसीब न हो सके। लोगों ने वृक्षों के कन्द मूल खाकर गुजारा किया। उस समय की एक कहावत थी—

बनिया भर गए कोठी में। बालक रोवें रोटी पे॥

इस अकाल के बारे में सरजान लारेंस ने लिखा है—'अप्रैल में मीलों तक घास का तिनका भी दिखाई नहीं देता था। सामने पड़े मैदान पशुओं के कंकालों से अटे नजर आते थे।'

सम्वत् १८९४ (सन् १८३७-३८) में कम विनाशकारी अकाल पड़ा। सम्वत् १९०० (सन् १८४३-४४) में सूखे ने बुखारी की बीमारी को ऐसा महामारी रूप प्रदान किया कि खेती करने के लिए आदमी मिलने बन्द होगये। लिहाजा खेती उजड़ कर रह गई। इससे दो वर्ष पहले भी वर्षा कम हुई थी, जिससे यह हालात पैदा हुए थे। सम्वत् १९०८ (सन् १८५१-५२) में भी भारी सूखा पड़ा। इससे पहले वर्ष भी हालात खराब ही रहे थे। चारों ओर अनाज की कमी ने लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने और रोजी-रोटी के साधन खोजने को मजबूर किया। ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासनकाल के दौरान नई राजस्व नीति के कारण भी लोगों को भारी आर्थिक हानि झेलनी पड़ी। सर जे० एम० डोई ने अपनी रपटों में कम्पनी शासनकाल के दौरान हरयाणा की आर्थिक और सामाजिक हालत का चित्रण किया है, जिसमें उसने गांव के गांव तक उजड़ने का जिक्र किया है।

सम्वत् १९१७ (सन् १८६०-६१) में केवल छह इंच औसतन वर्षा हरयाणा में हुई। भयकर अकाल पड़ना ही था। लाखों पशु मर गये। अकेले हिसार जिले में जनवरी, १८६१ तक ३८ हजार पशु मरे थे, भूख के कारण। जो, चना एक रुपया का ४२ सेर मिलता था, वह १२ सेर होगया। ज्वार ३८ सेर से ग्यारह सेर, बाजरा ३२ से १० सेर और आटा २३ सेर से ९ सेर प्रति रुपया बिकने लगा। अकाल और सूखे की हालत यह थी कि सदाबहार नजफगढ झील भी सूख गई, जो कभी नहीं सूखती थी।

लेकिन तब तक ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी से प्रशासन की बागडोर इग्लैंड की रानी के हाथ में आगई थी। ब्रिटिश सरकार ने पहली बार सूखा राहत कार्य शुरू किये। लोक निर्माण के कामों पर 'काम के बदले अनाज' उसी वर्ष शुरू हुआ। सरकार ने लाखों रुपया राहत कार्य पर ही खर्च नही किया, अपितु तकावी ऋण देने के लिए भी लाखों रुपया खर्च किया। रोहतक जिले में पांच लाख लोगों को भोजन तथा चार लाख लोगों के लिए काम की व्यवस्था की गई। हिसार में २८०९९ रुपया राहत कार्य पर खर्च किया और ३८००० रुपये के तकावी ऋण बांटे, सिरसा जिले में १६०६९ रुपये राहत कार्य पर खर्च गये और २२, ९३९ रुपये के तकावी ऋण बांटे गये।

सम्वत् १९१७ में अकाल की विभीषिका के कारण 'सतरहा' के अकाल के बारे में अनेक लोकगीत तात्कालीन साहित्य में मिलते हैं। 'सतरहा' अकाल के सामाजिक व आर्थिक प्रभाव इन चार लाइनों में पूर्णतः स्पष्ट दिखाई देते हैं।

पड़ते 'काल' जुलाहे मारे और बीच में मारे तेली।
उतरते 'काल' बनिए मरे, रुपिया की रह गई धेली।
चना चिरोंजी होगया और गेहूं होगया दाख।
'सतरहा' तो ऐसा पड़ा, 'चालीसा' का बाप॥

इस अकाल के लोगों को अपने सामाजिक बन्धनों को भी तोड़ने के लए मजबूर कर दिया। पहले लोकगीत में रुपया की कीमत केवल धेली भर रह जाने से 'बनिया' जो ग्रामीण क्षेत्र का साहूकार, सूदखोर, मगर एकमात्र धनदाता होता था, की आर्थिक हालात भी खराब होने का विवरण है। अकाल के अन्तिम दौर में बनिया भी प्रभावित होगया था। मगर किसानों को अनाज उधार देकर या बेचकर बनिया तो फिर भी जी गया, लेकिन किसान की हालत तो बहुत ही खराब होगई, जैसा कि इस लोकगीत में कहा गया है—

टूट गई तखड़ी फट गये बाट, जी गए बनिया मर गए जाट।
टूट गई गाड़ी मर गए बैल, बे-मुकलावे ही गई गैल॥

लोगों के घरों में जब बेटी को खाने के लिए रोटी भी देने की क्षमता न रही तो सामाजिक औपचारिकतायें पूरी किये बिना बेटी को ससुराल भेज दिया गया।

उसके बाद सम्वत् १९२५ (पच्चीसा) भी हरयाणा के लोगों पर भारी रहा। पच्चीसा (सन् १८६८-६९) में सूखे ने अनाज और चारे का अकाल पैदा कर दिया। रोहतक जिले के आस-पास तक के क्षेत्रों में ९० हजार पशु मौत के मुह में चले गये। चारे के अभाव का अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि भूसा एक रुपये का ३५ सेर, पाला ३० सेर और ज्वार की पूलियां ३० सेर तक महंगी हो गई थी। लोगों को खाने के लिए एक रुपये का दस सेर अनाज भी जब नसीब न हो सका तो करील फल, जाल, पीलू सींगरी आदि खाकर पेट की आग बुझाने को मजबूर होना पड़ा। पशुओं को कीकर के पत्ते, बेरी की झाड़ियां खिलाकर पेड़ों को ठूठ कर दिया गया।

लेकिन इसके बावजूद अंग्रेजों द्वारा अकाल पीड़ित बीकानेर को हरयाणा से बाजरा 'निर्यात' किया जाता रहा, जैसे अब हरयाणा सरकार ने हरयाणा में अकाल होने के बावजूद बिहार के बाढ़ पीड़ित लोगों को सहायतार्थ २ लाख रुपया भेजा है।

सम्वत् १९३४ (सन् १८७७-७८) में फिर 'चौतीसा' अकाल पड़ा, जिसमें सर्वाधिक पशु हानि हुई। उस वर्ष केवल २ इंच औसत वर्षा हुई और घास तक भी नहीं उग सकी। केवल रोहतक जिले और आसपास में एक लाख ७६ हजार पशु भूख-प्यास के कारण मौत का ग्रास बने।

चौतीसा के बारे में कहा जाता है कि इससे हरयाणा समाज की सभी ३६ जातियों को नुकसान पहुंचाया। भूख के मारे लोगों ने बावली (रोहतक) के बाजारों को लूटा और दुकानों को फूंक दिया। बनियों ने किसानों को उधार देना बन्द कर दिया। किसानों ने अनाज बाहर बिकने के लिए ले जारही बैल-गाड़ियों को लूटना आरम्भ कर दिया। केवल बनिया और कसाई ही इस अकाल से बच सके, जैसा कि एक लोकगीत में कहा गया है—

एक रोटी का बैल बिका और पैसा बिक गया ऊंट।
चौतीसा ने खो दिया भैंस गाय का बूट॥
'चौतीसा' से चौतीस मारे, जीये बैश्य कसाई।
वो मारे ताखड़ी और उसने छुरी चलाई॥

'चौतीसा' के बाद सम्वत् १९४० में भयानक सूखा पड़ा। सम्वत् १९४३ (सन् १८८६-८७) में वर्षा बिल्कुल नहीं हुई। फसल भी पूरी तरह बर्बाद होगई, लेकिन पिछले साल के कोठों-कुठलों में भरे अनाज ने लोगों को भूखा मरने से बचा लिया। पशुओं की भी अधिक हानि नहीं हुई। निरन्तर सूखा व अकाल की विभिषिकाओं को झेलने की आदत ने अलबत्ता लोगों को अन्न भण्डार का सबक जरूर सिखा दिया। इसीलिये आज भी गांवों में अच्छे किसानों के घर में एक साल पुराना अनाज कुठलों में भरा मिल जाता है।

फिर सम्वत् १९५६ (सन् १८९९-१९००) में अकाल पड़ा। 'छप्पना' अकाल में अपना भी अपना न रहा। अगस्त सितम्बर के महीनों में भी गर्म हवायें चलती रहीं, जिसने तलाबों को सुखा दिया। पशुओं को पानी और चारा मिलना कठिन होगया। दुधारू पशुओं की भी कीमतें घट गई। २८ रुपये की भैंस १४ रुपये में बिकने लगी।

'छप्पना' के बारे में कहा जाता है कि उसके आगे और पीछे, जो भयावह स्थिति रही, उसने लोगों को मौत के मुंह में पहुंचा दिया। एक लोक कहावत में कहा गया है कि—

'तिरेपन' में पूंजी गई, 'चव्वन' में गया बीज।
'पचपन' में न्यौता गया, 'छप्पन' में सब चीज॥
'सतावन' के साल में, लगा महीना जेठ।
हैजा की बीमारी हुई, छूटा मुह और पेट॥

सम्वत् १९५३ में बचाया माल खत्म होगया, चव्वन में बीज भी खेतों में नहीं उगा, वह भी समाप्त होगया। सम्वत् १९५५ (पचपन) में किसी ने भी अपने बेटा-बेटी को नहीं ब्याहा, जिससे शादी में शामिल होने का न्यौता और 'छप्पन' में सब कुछ खत्म होगया। अगले साल बीमारी ने सारी कसर पूरी करदी।

बीसवीं सदी में प्रवेश करने के बाद अकालों के भीषण रूप में कमी आई, हालांकि सन् १९०५-६, १९०७-८, १९३८-३९ में भी अकाल पड़े। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् प्रदेश में कोई खास ऐसा काम नहीं हुआ, जिससे की अकाल की विभीषिका को थामा जा सके। अलबत्ता १९६६ में एक अलग प्रांत बनने के बाद सिंचाई सुविधाओं में काफी सुधार होने से अकाल को रोका जा सका। जब तक हिसार, भिवानी के टीबों में पानी नहीं पहुंचा था, कोई भी आदमी अपनी बेटी को उस क्षेत्र में नहीं ब्याहता था। नहरों व नदियों के आस-पास सिंचाईवाले इलाकों में लड़की का विवाह करना अच्छा माना जाता था। यही कारण था कि बागड़ में अनेकों युवक या तो कुंवारे रह जाते थे या दो के बीच एक पत्नी होती थी। एक गीत में एक भाई अपनी बहन को कहता है कि—

मेरे बेबे है,
नदिया पार धरती दे दे है।

तो बहन उसको कहती है—

मेरे भाइयो, नहरों पार धरती बोइयो है॥

'चाही' और 'आबी' जमीनवाले किसान अपने से कम कीमत की जमीनवाले या 'बारानी' जमीनवाले किसान के यहां अपनी बेटी नहीं ब्याहते थे। उस जमाने में वर्षा बहुत कम होती थी। सन् १८५२ से १९०२ जून से सितम्बर के बीच औसतन वर्षा २२.२४ इंच हुई, अक्तूबर से दिसम्बर तक १.०४ इंच और जनवरी से मई तक २.५८ इंच वर्षा हुई। १९०३ से १९१२ तक मानसून सूत्रों में औसतन वर्षा २३.४८ रिकार्ड की गई। वर्षा की कमी के कारण किसानों को नहरों पर निर्भर रहना पड़ता था और 'चाही' नहरी जमीनवाले किसान उत्तम श्रेणी में गिने जाते थे।

उत्तरी भारत में अनावृष्टि के कारण इस वर्ष फिर अकाल पड़ा है। यह 'त्रिकाल' तो नहीं, 'द्विकाल' अवश्य है। पानी और चारे का भारी अभाव होगया है।

१९८७ की सूखा स्थिति ने हालांकि हरयाणा के लोगों को भूखा नहीं मारा है, केवल पेड़-पौधे, सब्जी, पशु मछली मरे हैं। लेकिन लोगों की आर्थिक रीढ़ की हड्डी चटक गई है। यह सीधी तभी होगी, जब वे आर्थिक दिवालियापन की स्थिति से बाहर आ सकेंगे। प्रदेश के ६३५३ गांवों के ८४ लाख लोग सूखे की चपेट में आये बैठे हैं। ६ लाख कृषि मजदूर भी रोटी के लिए कृषि की बजाये अन्य काम ढूढने को मजबूर हैं। महंगाई कमरतोड़ है। दालें और तेल भी महंगा है। चारा एक रुपया किलो से भी महंगा है। हरा चारा मिलता ही नहीं।

हालात तो सर्दियों में देखने लायक होंगे, जब सूखे की काली छाया विकट रूप दिखायेगी। मगर सरकार की नौकरशाही पुराने ढर्रे की तरह अब भी चण्डीगढ में फिल्मोत्सव मनाती है या पैनोरमा-८७ आयोजित करती है ठीक वैसे ही जैसे जब रोम जल रहा था तो नीरो बांसुरी बजा रहा था। हरयाणा राजभवन के प्रांगण में चित्रकला अकाल-पीड़ित जनता के लिए प्रतियोगितायें आयोजित करके 'आर्ट' के नाम पर आज भी हजारों रुपया लुटाया जाता है। कागजी कार्यवाही करने के सिवाय अभी तक भी कुछ ठोस नहीं हो पाया है।

(नवभारत ९-१२-८७ से साभार)

आर्यसमाज सिवारपुर सोनाहेड़ी [महेन्द्रगढ़] का वार्षिक चुनाव

प्रधान—श्री रामेश्वरदयाल शर्मा, उपप्रधान—मूलचन्द शर्मा, मन्त्री—राधेश्याम आर्य एम० ए०, उपमन्त्री—जितेन्द्रकुमार आर्य बी.ए., कोषाध्यक्ष—रामचन्द्र आर्य नम्बरदार, निरीक्षक—उमरावसिंह सरपंच, संरक्षक—रामचन्द्र आर्य, प्रतिनिधि—श्रीराम आर्य अध्यापक।

सर्वहितकारी का श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक

अमर हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस २३ दिसम्बर को सारे आर्यजगत् में धूमधाम से मनाया जायेगा। इस अवसर पर सर्वहितकारी का आगामी अंक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक प्रकाशित होगा जिसमें आर्य विद्वानों के लेख तथा कविताएं प्रकाशित होंगी।

—सम्पादक

हिन्दी के ही आशुलिपिक रखे जाने के आदेश

भारत सरकार के आदेशों के अनुसार हिन्दी भाषी क्षेत्रों में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में लगभग सभी कार्य हिन्दी में होना आवश्यक है। अधिकारियों को अपना बढ़ता हुआ हिन्दी का कार्य निपटाने के लिए अब गृहमन्त्रालय के राजभाषा विभाग ने २० अगस्त, ८७ को यह आदेश दिये हैं कि कुल आशुलिपिकों के पदों का हिन्दी भाषी क्षेत्र में कम से कम ५० प्रतिशत और गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब आदि में २५ प्रतिशत पद हिन्दी जाननेवाले आशुलिपिकों से भरे जायें। यह आदेश भारत सरकार के सभी अधीनस्थ कार्यालयों, निगमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों पर लागू होते हैं और इस प्रकार सन् १९९० तक हिन्दी आशुलिपिकों का यह प्रतिशत प्राप्त करना है। ऐसी स्थिति में अंग्रेजी आशुलिपिकों की भर्ती करना भारत सरकार की राजभाषा नीति और आदेशों का उल्लंघन होगा।

२—केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में अंग्रेजी के आशुलिपिकों तथा टाइपिस्टों की मांग सम्बन्धी जब भी आप विज्ञापन देखें तो सम्बन्धित विज्ञापनों की कतरनों सहित सम्बन्धित विभाग के अध्यक्ष को पत्र भिजवाकर उसकी प्रति संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, लोकनायक भवन, नई दिल्ली को भी भेज दी जाये और एक प्रति संयोजक, राजभाषा कार्य, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, एक्स० वाई०-६८, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली को भी भिजवा दें।

३—जहां तक हिन्दी भाषी राज्य सरकारों के कार्यालयों द्वारा अंग्रेजी के आशुलिपिकों तथा अंग्रेजी के टाइपिस्टों के रखे जाने विषयक विज्ञापन देखें तो सम्बन्धित राज्य के सम्बन्धित विभाग के मन्त्री को १०० प्रतिशत हिन्दी के ही आशुलिपिक तथा टाइपिस्ट रखे जाने के लिए पत्र लिखें और उसकी एक प्रति केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, नई दिल्ली-११००२३ को भेज दें।

—जगन्नाथ
संयोजक राजभाषा कार्य केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्
एक्स० वाई०-६८, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-११००२३

आर्यसमाज शांतिनगर सोनीपत के समाचार

१—श्री तेजभान जी नश्तर सुप्रसिद्ध कवि के सुपुत्र चि० अशोककुमार एवं आयु० नीता सुपुत्री श्री एस० आर० खन्ना (दिल्ली) का शुभ विवाह संस्कार सादे समारोह में श्री हरिश्चन्द्र स्नेही महामन्त्री द्वारा सम्पन्न कराया गया। यह एक आदर्श विवाह है, जिसमें केवल २५ बाराती ही सम्मिलित हुए तथा इस अवसर पर शराब आदि का बिल्कुल भी प्रयोग नहीं किया गया। जनता ने इस आदर्श विवाह की सराहना की है।

२—इस आर्यसमाज द्वारा दीवराला के सतीकांड की कड़ी भर्त्सना की गई तथा सरकार से मांग की गई कि सम्बन्धित अपराधियों को कठोर दण्ड दिया जाये, ताकि भविष्य में इस प्रकार की कुरीतियों को दोहराया ना जाये। इस अवसर पर शंकराचार्य निरंजनदेव के वक्तव्य की भी निन्दा की गई, जिसमें उन्होंने सतीकांड का समर्थन किया है।

३—केन्द्र सरकार से मांग की गई कि श्रीलंका की तरह ही पंजाब में युद्धस्तर पर कार्यवाही करके उग्रवादियों का सफाया किया जाये तथा पकड़े गये उग्रवादियों पर शीघ्र ही देशद्रोह का मुकदमा चलाकर मृत्यु दण्ड दिया जाये, ताकि अन्य उग्रवादी ऐसा दुस्साहस ना कर सकें।

विनीत—किशनचन्द मुटानी
प्रधानमन्त्री आर्यसमाज शांतिनगर, सोनीपत

दूर करो यह बुरी प्रथा

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ.प्र)

स्वच्छ भाल पर है समाज के, एक अमिट कलंक दहेज।
वृत्ति दानवी का परिचायक करो सदा इससे परहेज।

इस दहेज ने मानवता का, सत्यानाश कराया है।
जाने कितनी ललनाओं को पावक भेंट चढ़ाया है।

इस दहेज के कारण जानें, कितनी बहनें हैं अविवाहित।
इस दहेज ने किया हमारा तथा समाज का बड़ा अहित।

लोभ तथा दानवता की है, वृद्धि कर रहा यह दहेज।
कण्टक से आकीर्ण कर रहा सतत सुखों की सुखमय सेज।

मानव छोड़ मनुजता पथ को, दानवता का पथ अपनाता।
दुष्ट दहेज के मोहजाल में फंसकर राक्षस बन जाता।

सभ्य सुसंस्कृत से समाज में, यह दहेज है भीषण रोग।
इसने पैदा किया धरा पर असमय में ही विपुल वियोग।

सच मानो! कन्या ही सबसे, बड़ा हमारा है दहेज।
मूल्यवान् सामान तथा धन से हमको करना परहेज।

इस दहेज से बढ़ी जारही, अब समाज में घोर व्यथा।
नारी का अपमान मत करो दूर करो यह बुरी प्रथा।

आर्य यात्रा

दिसम्बर की छुट्टियों में आर्य परिवारों की प्रेरणा पर आर्य यात्रा का बस द्वारा कार्यक्रम बनाया है। यह बस दिनांक १९-१२-८७ सायं ४ बजे देहली से चलेगी और दिनांक ३१-१२-८७ रात्रि को वापिस आयेगी। यात्री देखेंगे—बम्बई, गोवा, अजन्ता ऐलोरा की गुफायें, इन्दौर, आगरा व मथुरा। मार्ग व्यय केवल ५४५ रुपये, निवास एवं भोजन की व्यवस्था आर्यसमाज में होगी। चलनेवाले आर्य भाई बहिनें हम से सम्पर्क करें।

—रामचन्द्र आर्य प्रबन्धक आर्य यात्रा
४६६ भीमनगर, गुड़गांव

आर्य विद्या मन्दिर हाई स्कूल बल्लबगढ़ (संचालित आर्यसमाज)

आवश्यकता

१—अनुभवी अध्यापक (पोस्ट ग्रेजुएट को प्राथमिकता)

२—निम्न विषयों के लिए प्रशिक्षित स्नातक—हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, हिन्दी, संस्कृत व ड्राइंग।

वेतन—योग्यता एवं अनुभव के आधार पर। आवेदन-पत्र मैनेजर बुद्धिप्रकाश वैदिक विद्यालय बल्लबगढ़ को दिनांक २५-१२-८७ तक भेजें।

—राजेन्द्रप्रसाद गुप्ता मैनेजर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

मेरा कोटि प्रणाम

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ.प्र)

मां की बलिवेदी पर देते, जो हर्षित हो अपने प्राण।
करते हैं संघर्ष निरन्तर, देते दलितों को नव त्राण।
जिनका जीवन दिव्य बना है, त्यागोंसे, बलिदानों से।
मोह नहीं करते हैं किंचित्, कहीं किन्हीं प्रतिदानों से।
ऐसे वीरों का जीवन है, सत्य-शिवम्-सुन्दर ललाम।
कालजयी उन वीर सपूतों को है मेरा कोटि प्रणाम॥

जिनके अन्तर में लहराया करती स्वतन्त्रता ·····लहरें।
शोषित-उत्पीड़ित मानव के, प्रतिपल क्लेश अनेक रहें।
कठिन चुनौती बनकर अरि की, सतत रहा करते कटिबद्ध।
कथनी-करनी का अन्तर तज, जो रहते निर्भय प्रतिबद्ध।
करते जो निःस्वार्थ भाव से, कर्म सभी होकर निष्काम।
कालजयी उन वीर सपूतों को है मेरा कोटि प्रणाम॥

सत्य-धर्म के लिए सतत, जो करते रहते हैं संघर्ष।
उच्चादर्शों से प्रेरित हो, करते मानवता उत्कर्ष।
जिनके गौरव की गाथाओं से मण्डित होता इतिहास।
जिनके सत्कर्मों से होता, सौम्य-मनुजता का विकास।
जिनका उज्ज्वल-सा चरित्र है, पुण्य-वरेण्य तथा अभिराम।
कालजयी उन वीर सपूतों को है मेरा कोटि प्रणाम॥

❋

भारतीय शिक्षा-प्रणाली

अंग्रेज शासनकाल में सन् १८२४ से १८८३ ई० के मध्य महर्षि दयानन्द ने अनेक अपूर्व और अद्वितीय कार्य किये थे। उनमें एक था "भारतीय शिक्षा प्रणाली" का पुनरुद्धार। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में अध्ययन अध्यापन विधि का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है। जिसमें क्या पढ़ना चाहिये और क्या नहीं पढ़ना चाहिये, इसका भी निर्देश है। इस पठन-पाठन-विधि को आर्ष-शिक्षा प्रणाली कहें अथवा भारतीय शिक्षा-प्रणाली, बात एक ही है। पढ़ने पढ़ाने की यह वह भारतीय प्राचीन पद्धति है जिसके अनुसार प्राचीनकाल में हमारे पूर्वजों ने अध्ययन किया था। इसी पद्धति से पढ़े-लिखे भारतीय सम्राटों का ५ हजार वर्ष पूर्व तक सारे संसार पर चक्रवर्ती शासन रहा है। धर्मराज युधिष्ठिर अन्तिम चक्रवर्ती सम्राट् हुए हैं।

भारत की अपनी भाषा थी, अपनी वेश-भूषा थी, खान-पान, रीति-रिवाज थे जो भारतीय सभ्यता और संस्कृति के नाम से जाने जाते हैं। भारतीयों के परस्पर के कलह के कारण विदेशी शासकों ने आकर हमें पराधीन बना दिया। एक हजार वर्ष तक मुसलमान शासकों ने और लगभग दो सौ वर्ष तक अंग्रेजों ने हमारी संस्कृति सभ्यता और शिक्षा को बदलने का प्रयास किया। अनेक प्रकार की सुविधायें और प्रलोभनों से भी वे डेढ प्रतिशत भारतीयों को ही अपने विचारों से प्रभावित कर पाये।

महात्मा मुन्शीराम जी ने भी अनेक विशिष्ट कार्य किये, उनमें से एक महत्त्वपूर्ण कार्य है—"भारतीय शिक्षा-प्रणाली" को क्रियात्मक रूप देना। यद्यपि वे स्वयं विदेशी पद्धति से ही पढ़े थे और कट्टर नास्तिक थे, किन्तु महर्षि दयानन्द के बरेली में भाषण सुनकर वे बदल गये और उनके द्वारा सत्यार्थप्रकाश में लिखी पाठविधि को मूर्तरूप दिया गया गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में गुरुकुल कांगड़ी ही एकमात्र ऐसी शिक्षण संस्था थी जहां संस्कृत और हिन्दी के माध्यम से उच्चतम शिक्षा प्रदान की जाती थी। गुरुकुल के स्नातकों ने देश और विदेश में जो कार्य किये हैं वे सर्वविदित हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात् शनैः-शनैः गुरुकुल का वह रूप बदल गया।

आज भी अंग्रेजों से उधार ली गई अधूरी शिक्षा-पद्धति से शिक्षित डेढ प्रतिशत लोगों का भारतीय प्रजातन्त्र पर कब्जा है और इस कब्जे को बनाये रखने के लिये ये लोग हमारी सभ्यता और संस्कृति को नष्ट करने पर तुले हुए हैं। ये काले अंग्रेज गौरे अंग्रेजों से भी अधिक हानि पहुंचा रहे हैं। नई शिक्षा-प्रणाली में त्रिभाषा कार्मूले में संस्कृत के लिये कोई स्थान नहीं है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाये चालीस वर्ष होगये, किन्तु व्यवहार में आज भी भारत की राष्ट्रभाषा अंग्रेजी ही है। भारत का राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री अंग्रेजी में ही भाषण करने में गौरव समझता है। अपनी राष्ट्रभाषा में भाषण करने में उन्हें लज्जा आती है या हीन भावना से ग्रसित हैं।

जिस प्रकार अंग्रेजों का बहिष्कार किया था, उसी प्रकार अंग्रेजी भाषा और सभ्यता का भी बहिष्कार किया जावे। संस्कृत हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के विद्वानों का सम्मान तथा अंग्रेजी पढ़ने-पढ़ानेवालों का तिरस्कार वा उपेक्षा की जावे।

न पठेदांगलीं भाषां, प्राणैः कण्ठगतैरपि। क्षुधया पीड्यमानोऽपि, मद्यं मांसं तु वर्जयेत्॥

—वेदव्रत शास्त्री

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

—वीरेन्द्रसिंह दहिया, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

पंजाब में जन्म लेनेवाली एक अमर हुतात्मा ने सारे भारतवर्ष में अपना अमिट प्रभाव छोड़ दिया। जिनका बचपन का नाम मुन्शीराम था। इनके पिता जी का नाम नानकचन्द जी, जो पुलिस विभाग में उच्च अधिकारी थे। अपनी माता के बारे में उन्होंने स्वयं लिखा है कि वह सर्वथा अनपढ़ थी। एक बार घटना का वर्णन करते हुए लिखा है कि पिताजी ने उन्हें शोर करने पर झाड़ दिया था तो रोते-रोते घिग्घी बन्ध गई। माता जी ने बाहर आकर अपनी गोद में ले लिया, तो उस समय के आनन्द का वर्णन कवि ही कर सकता है।

मुन्शीराम जी अपने पिताजी के साथ काशी में रह रहा था। काशी के अन्दर विश्वनाथ मन्दिर में दर्शनार्थ प्रतिदिन जाया करते थे। एक दिन उसको भ्रमण में देर होगई। जब वह दर्शनार्थ फाटक पर गया तो पहरेवाले ने यह कहकर रोक दिया कि रीवां रियासत की रानी दर्शन कर रही है, उसके चले जाने पर द्वार खुलेगा। मुन्शीराम जी ने महसूस किया कि क्या भगवान् केवल अमीरों के लिये है।

मुन्शीराम जी अन्धकारमय जीवन में कुसंगति में फंस जाने के कारण मांस, शराब, जुआ, शतरंज, हुक्का, दुराचारादि का सेवन करता था। अंग्रेजी शिक्षा के कारण इन सब बुरी आदतों ने उसे घेर लिया था। मुन्शीराम ने लिखा है कि मैंने उसी विद्यालय से शिक्षा पाई थी, जिसमें हिन्दू युवकों को अपनी संस्कृति का शत्रु बना दिया जाता था। जिन दिनों मुन्शीराम जी घोर अन्धकारमय जीवन बिता रहे थे, उन दिनों वैदिक धर्मोद्धारक शिरोमणि आचार्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती बरेली पधारे। उन्हीं दिनों मुन्शीराम जी के पिताजी बरेली में कोतवाल थे। उनको यह आदेश दिया गया कि वे स्वामी जी के प्रचार में उपद्रव को रोकने का प्रबन्ध करें। नानकचन्द जी पर स्वामी जी का काफी प्रभाव पड़ गया। नानकचन्द जी का विश्वास था कि उनके नास्तिक पुत्र की संशय-निवृत्ति महर्षि के सत्संग में हो जावेगी। उसने अपने पुत्र को आदेश दिया कि वह स्वामी जी के व्याख्यानों में जाया करे। इस पर मुन्शीराम जी ने 'चलूंगा' कह दिया और मन ही मनमें विचार करने लगा कि संस्कृत जाननेवाला साधु बुद्धि की क्या बात करेगा? अगले दिन मुन्शीराम जी व्याख्यानों में गये, पर वहां महर्षि की अद्वितीय मूर्ति का देखकर कुछ श्रद्धा उनके मनमें हुई। जब वहां पादरी स्टाक व अन्य यूरोपियनों को उत्सुकता से बैठा देखा तो उनके मनमें श्रद्धा और भी बढ़ गई। महर्षि दयानंद के सत्संग से मुन्शीराम जी के जीवन में अद्भुत परिवर्तन हुआ। सत्संग के अतिरिक्त उसकी धर्मपत्नी शिवदेवी का भी विशेष महत्त्व है। शिवदेवी सर्वथा अनपढ़ होती हुई भी आर्य संस्कृति की भावनायें उनके अन्दर कूट-कूटकर भरी हुई थी। इसके इलावा श्री पं० गुरुदत्त जी विद्यार्थी के प्रभाव में आकर उसने अपने सारे व्यसन त्याग दिये।

मुन्शीराम को अंग्रेजी उपन्यासों व विदेशी संस्कृति ने नास्तिक बना दिया था। मुन्शीराम जी ने अपने आत्म-चरित में लिखा है कि बालविवाह की कुप्रथा के भयंकर परिणाम अनुभव किये थे।

अपनी धर्मपत्नी से पर्दा उतरवाकर उसको पढ़ाना प्रारम्भ किया। पौराणिक उस समय "स्त्री-शूद्रौ नाधीयाताम्" की रट लगाते हुए कन्याओं को शिक्षा से वंचित रखते थे। ऐसा करते हुए उसने अपनी पुत्री देवकुमारी को ईसाइयों की पाठशाला में प्रविष्ट करा दिया। जब वह पाठशाला से लौटकर आई, तो कचहरी से अपने पिता के आने पर उसने पाठशाला में सीखा हुआ गान—इक बार ईसा-ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल' ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया। ये भजन सुनाने लगी तो मुन्शीराम जी चौकन्ने हुए। उसने उसी समय यह सोच लिया कि आर्यपुत्रियों को ईसाई अपने शास्त्रों की निन्दा करनी सिखाते हैं। उसने अपनी पाठशाला खोलनी चाही। कुछ समय पश्चात् उसने ला० देवराज जी से मिलकर कन्या पाठशाला की स्थापना की, जो बाद में कन्या महाविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध हुई। मुन्शीराम जी जाति-बन्धन में विश्वास नहीं करते थे। उसने अपनी पुत्री अमृतकला तथा सुपुत्रों पं० हरिश्चन्द्र व पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति का विवाह जाति-बन्धन तोड़कर किया। इससे उनके अनेक मित्र नाराज हुए, परन्तु उसने कोई परवाह नहीं की।

स्वामी जी की निर्भयता के सैकड़ों उदाहरण विद्यमान हैं, उनकी कुछ घटनाओं का वर्णन करते हैं—जब सन् १९१८ में गढ़वाल में अकाल पड़ा तो अकाल पीड़ितों की सहायतार्थ स्वामी जी ने भारत सेवा समिति के साथ मिलकर कार्य किया। सद्धर्म प्रचारक में किसी आर्य सेवक ने एक लेख गढ़वालियों की सामाजिक कुप्रथाओं की आलोचना में निकाला। कुछ स्वार्थी तत्त्वों ने स्वामी जी के खिलाफ अनपढ़ जनता को भड़का दिया। स्वामी को काफी धमकी आने लगी। एक दिन अकाल पीड़ितों की एक आवश्यक बैठक होनी थी। सभा के दिन स्वामी जी सैर करके लौट रहे थे। कुछ सज्जन पौड़ी से दूर आपको मिले और वापिस लौटने का निवेदन किया। स्वामी जी के नजदीकी श्री वेंकटेशनारायण व श्रीराम जी आदि के कहने पर भी सभा की शाम को १५ मिनट पहले ही सभापति आसन पर जा बैठे। किसी की विरोध करने की हिम्मत नहीं हुई।

दूसरी घटना – ३० मार्च, १९३० की है। स्वामी श्रद्धानन्द उन दिनों महात्मा गांधी के साथ रौलट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह आंदोलन का दिल्ली में नेतृत्व कर रहे थे। दोपहर के १२ बजे स्वामी जी दिल्ली का चक्कर लगाकर अपने निवास पर लौटे ही थे, तो स्टेशन पर गोली चलने का समाचार मिला, वे तुरन्त स्टेशन पर पहुंच गये और एकत्रित तीन-चार हजार आदमियों को कम्पनी बाग की सभा के स्थान पर ले गये। लगभग १५ हजार की उपस्थिति थी। स्वामी जी भाषण दे रहे थे। चांदनी चौक पर गोली चलने और १०-१२ आदमियों के घायल होने का समाचार मिला। वहां की जनता को शांत किया। सेना ने आकर सभा को घेर लिया। चीफ कमिश्नर भी कुछ सैनिकों के साथ वहां आये। स्वामी जी ने कमिश्नर को कहा कि जनता को उत्तेजित किया तो मैं शांति रक्षा का जिम्मेवार नहीं हूं, अन्यथा शांति भंग होने का दायित्व मेरे ऊपर है। इससे घण्टाघर के गोरखे सिपाही रास्ते से हटकर एक ओर पंक्ति बांधकर खड़े होगये। लोगों ने सोचा कि हमारे लिए रास्ता साफ कर दिया। लेकिन वहां पहुंचते ही बन्दूक दाग दी गई। लोगों में बेचैनी होगई। स्वामी जी के आदेश का पालन करके शांत खड़े रहे। स्वामी जी गोली दागने का कारण पूछने के लिए गोरखों की ओर बढ़े। उसी समय दो किरचें स्वामी जी की छाती पर बड़े घमण्ड में और धृष्टता के साथ यह कहते हुए तान दी कि तुमको छेद देंगे। वे शांति से खड़े रहे और कहा—"मैं खड़ा हूं, गोली मारो" इस पर स्वामी जी तीन मिनट तक किरचें इसी प्रकार तनी रही। जब तक घुड़सवार अंग्रेज आया

और पुलिस के आदमी से पूछा कि क्या गोली चलाने की आज्ञा दी थी। स्वामी जी ने अंग्रेज अफसर से पूछा, क्या आपने गोली चलाने का शब्द सुना था। फिर उसने कहकर टाल दिया कि मैं जांच कर रहा हूँ। इससे स्वामी जी की निर्भयता का ज्वलन्त प्रमाण दिखाई देता है।

स्वामी जी शुद्धि पर विशेष बल देते थे। वे धर्म के विषय में प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्रता होनी चाहिये, यह बल देते थे। १९२६ में करांची की असगरी बेगम नामक एक मुसलमान स्त्री दो बच्चों और भतीजे को साथ ले देहली आर्यसमाज में आई और आर्य-धर्म स्वीकार करने की इच्छा प्रकट की। उसकी इच्छानुसार शुद्धि-संस्कार करके उसका नाम शांतिदेवी रखा। लगभग तीन मास पश्चात् उनका पिता मौलवी ताजमुहम्मद खां उसको खोजते हुए दिल्ली पहुंचे। कुछ दिन पश्चात् उसका पति भी वहां आ पहुंचा। दोनों ने मिलकर शांति को वापिस इस्लाम में आने को कहा, परन्तु उसने मना कर दिया। उन्होंने इस्लामी अंजुमनों के बहकावे में आकर उन पर मुकदमा कर दिया। जून तक मुकदमा चला। ४ जून, १९२६ को सब अभियुक्त निर्दोष प्रमाणित होकर मुक्त कर दिये गये। इनके पश्चात् ईस्लामियों के धमकीभरे पत्र आने लगे, परन्तु नरसिंह कहां डरनेवाला था।

स्वामी जी के एक साथी घनश्यामदास जी का पत्र आने पर उन्हें बनारस जाना पड़ा। वहां से वे बिमार होकर लौटे। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के अधिकारियों के अनुरोध पर ८ दिसम्बर को गुरुकुल गये। स्वामी जी ने अपने आदमियों से कहा कि अब मैं उठ नहीं सकता, अब उठने की आवाज मेरे अन्दर से नहीं आती। वसीयत लिख लो तो अच्छा है। स्वामी जी ने अपने सुपुत्र पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति को बुलाकर कहा कि इस शरीर का कुछ ठिकाना नहीं है, तुम एक काम जरूरी करना। मेरे कमरे में आर्यसमाज की सामग्री पड़ी है, उसे सम्भाल लेना और समय निकाल कर इतिहास जरूर लिख डालना। इतिहास के लिखने में मुझे माफ मत करना, मैंने बड़ी-बड़ी भूलें की हैं।

२३ दिसम्बर, १९२६ को मध्याह्न पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति प्रतिदिन की भांति जब दर्शन करने गये तो उन्होंने सोये हुए पाया। स्वामी जी की निद्रा में बाधा डालना उचित न समझकर वो पं० इन्द्र जी सायंकाल दर्शन का विचार करके वापिस घर चले गये और सेवक को कमरे में बिठा दिया। सेवक धर्मसिंह ने कमोड़ लाकर दिया और शौचादि से निवृत्त होकर स्वामी जी मसनद के सहारे सावधान होकर बैठ गये। इतने में सेवक धर्मसिंह ने सीढ़ियों में से किसी युवक को ऊपर आते देखा। सेवक ने उसे रोकना चाहा, परन्तु उसने स्वामी जी के दर्शन का आग्रह किया। स्वामी जी ने आग्रह सुनकर कहा—कौन है ! अन्दर आने दो। अब्दुल रसीद नामक मुस्लिम युवक ने आते ही स्वामी जी से कहा कि मैं आपसे इस्लाम के मुतल्लिक बातचीत करना चाहता हूं। स्वामी जी ने कहा मैं बिमार हूं, तुम्हारी दुआ से राजी हो जाऊंगा, तब बात करूंगा। उसने पानी मांगा। स्वामी जी ने सेवक को पानी लाने के लिए कहा। ज्यों ही सेवक पानी लेने के लिए बाहर निकला तो उस दुष्ट ने मसनद के सहारे बैठे हुए स्वामी जी पर पिस्तौल की तीन गोलियां दाग दीं। सेवक ने उसे रोकना चाहा, जिससे उसकी टांग में गोली लग गई। हत्यारा भागने की चेष्टा में ही था, परन्तु सेवक ने उसे दबोच लिया। उन तीनों गोलियों ने स्वामी जी को शांत कर दिया। इस प्रकार आर्यसमाज के महान् रक्षक, सुधारक, कर्मयोगी, सच्चे ईश्वरभक्त और आर्यजाति हृदय-सम्राट् संन्यासी का अमर बलिदान २३ दिसम्बर, १९२६ को सायं चार बजे के लगभग हुआ।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के पत्र : दिल की बात

—सत्यकाम विद्यालंकार

२३ दिसम्बर को अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस है। इस अवसर पर हम उनके पुत्र पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति के नाम उनके पत्र प्रकाशित कर रहे हैं।

किसी भी व्यक्ति के सच्चे चरित्र का ज्ञान उसके सार्वजनिक कार्यों, उपदेशों अथवा भाषणों से उतना नहीं हो सकता, जितना उसके व्यक्तिगत वार्तालाप अथवा किसी अत्यन्त निकट व्यक्ति को लिखे गये कुछ ऐसे पत्रों से हो सकता है। यहां हम स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा लिखे गये कुछ ऐसे पत्रों के अंश उद्धृत कर रहे हैं, जो उन्होंने सर्वथा व्यक्तिगत रूप से अपने प्रिय पुत्र पं. इन्द्र जी विद्यावाचस्पति को लिखे थे। इन पत्रों का विषय भिन्न-भिन्न है, किन्तु लेखक एक ही है। इसलिए इनमें उनकी आत्मा का प्रतिबिम्ब मिलता है। उनके गुणों की गहराई की थाह मिलती है।

पं० इन्द्र जी का जीवन लिखते हुए उनकी फाइलों से जो पत्र मुझे अकस्मात् मिले थे, उन्हीं में से कुछ का हवाला देकर स्वामी श्रद्धानन्द जी के सत्यनिष्ठा, त्याग-तपोमय, परम कारुणिक हृदय की एक झलक पाठकों के सम्मुख रखने का यत्न किया गया है।

इन पत्रों में सबसे पुराना पत्र १२ दिसम्बर, सन् १६११ का है। यह पत्र तब का है, जब प्रिंस आफ वेल्स प्रथम बार भारत में आये थे और उनका स्वागत किया गया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी उस समय गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य थे और आर्यसमाज के अन्यतम नेता थे। उन्हीं दिनों लाला लाजपतराय तथा भाई परमानन्द को मांडले जेल ले जाकर बाद में छोड़ा गया था। आर्यसमाज और गुरुकुल पर राजद्रोही होने के सन्देह में ब्रिटिश सरकार दोनों संस्थाओं से बहुत रुष्ट थी।

स्वामी श्रद्धानन्द ने उस समय बहुत बलपूर्वक कहा था कि आर्यसमाज राजनैतिक संस्था नहीं है, इसलिये वह किसी भी राजकीय आंदोलन के पक्ष या विपक्ष में योगदान नहीं करेगी। कुछ गरम-दली राजनैतिक नेता उस समय आर्यसमाज से यह आशा रखते थे कि वह ब्रिटिश राज्य के उच्चतम अभ्यागत प्रतिनिधि प्रिंस आफ वेल्स के स्वागत का बहिष्कार करेगी। किन्तु आर्यसमाज ने वैसा नहीं किया। बल्कि दिल्ली में स्वागत के सभी आयोजनों में भाग लिया एवं अपनी ओर से स्वागत मण्डप बनाकर अभिनन्दन-पत्र भी दिया। इस घटना से स्वामी श्रद्धानन्द जी के कुछ विपक्षी मित्रों ने स्वामी जी पर यह दोषारोपण किया था कि वे हृदय से राजभक्त हैं और विदेशी सरकार को सहयोग दे रहे हैं। वस्तुतः स्वामी जी के हृदय में विदेशी राज्य के प्रति सहानुभूति उत्पन्न होना सम्भव ही नहीं था। यह बात १२ दिसम्बर पत्र का जो इन्द्र जी के नाम लिखे गये उनके पत्र से बिल्कुल स्पष्ट होती है। १६११ के कुछ अंश इस प्रकार हैं—

"प्रिय पुत्र इन्द्र, नमस्ते !

दरबार जाने की तैयारी करके तुम्हें पत्र लिखने लगा हूं। १२ दिसम्बर के लिए तमाशागाह में

मुझे भी जाना पड़ेगा। बहुत से खुशामदियों ने धर्म की मिट्टी पलीद करदी। इसके रोकने का कुछ उपाय सोचना होगा। प्रेस कैम्पवाले मुझ से घबराते ही रहते हैं। जो कुछ अण्ड-बण्ड करना होता है, उसमें मुझ से पूछने का कोई साहस हो नहीं करता।

मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द)

इस पत्र से बिल्कुल स्पष्ट है कि स्वामी जी दरबार में राजभक्त सहयोगी बनकर हाजिर होने वालों को खुशामदी और धर्म की मिट्टी पलीद करनेवाले मानते थे। इस दरबार को भी उन्होंने तमाशागाह नाम देकर अपने दिल की बात कही थी।

उस समय लिखे गये इन पत्रों से स्वामी जी के हृदय में गुरुकुल के प्रति अनन्त प्रेम की भी अभिव्यक्ति होती है। १९१२ के जनवरी महीने में उन्होंने इन्द्र जी को पत्र लिखकर इस बात की जानकारी दी है कि गुरुकुल की सेवा के लिये कितने निःस्वार्थ एवं पूर्णतया समर्पित सेवकों की अपेक्षा है। इस पत्र की कुछ पंक्तियां उद्धृत की जारही हैं।

मेरे प्यारे पुत्र,

कल के पत्र में अपनी हार्दिक इच्छा का एक भाग प्रकाशित कर चुका हूं, किन्तु आज अपना सारा तात्पर्य तुम्हारे सामने रखना चाहता हूं। इस विषय में और किसी से भी न बात कर सकता हूँ और न करूंगा।

मैंने देखा है कि गुरुकुल का काम जितना महान् है, उतना ही महान् बलिदान चाहता है। जिस मनुष्य की कोई भी अन्य सांसारिक या पारमार्थिक कामना हो, उसके लिये गुरुकुल को उन्नत करने का काम बड़ा कठिन काम है। यही कारण है कि न तो विवाहित पुरुष ही यहां पूरी तरह उपयोगी हो सकते हैं और न वे व्यक्ति, जो विवाहित तो नहीं, किन्तु जिनके मनमें किसी भी अन्य लौकिक या पारमार्थिक काम की लगन है। अब प्रश्न यह है कि क्या तुम्हारी भी रुचि विवाह की ओर है? यदि है, तो तुम्हारे प्रेम का बड़ा भाग उधर व्यय हो जायेगा। गुरुकुल का कुलपति बनने के लिये आवश्यक है कि वह व्यक्ति गुरुकुल को ही माता-पिता, भ्राता एवं धर्मपत्नी सबका स्थान दे। यदि कठिन आत्म-समर्पण का भाव दृढ़ता से तुम्हारे अन्दर है तो गुरुकुल बड़ा भाग्यशाली होगा। यदि नहीं, तब भी गुरुकुल तुम्हारे सदाचार तथा उच्च भावों का अभिमान तो कर ही रहा है। मेरे प्यारे पुत्र, अपने मनकी बात मैंने तुम्हारे सामने रख दी, इस पर विचार करके जिस परिणाम पर पहुँचो, मुझे सूचित करदो।

तुम्हारा सदैव सन्तुष्ट पिता

मुन्शीराम

प्रतीत होता है कि इसके उत्तर में पं० इन्द्र जी ने जो पत्र लिखा, उससे स्वामी जी के मनमें यह आशा जाग गई कि शायद उनका पुत्र सम्पूर्ण जीवन अविवाहित रहकर अपनी सेवायें पूर्णतः गुरुकुल को समर्पित कर देगा। इसलिए उन्होंने सम्वत् १९२० के प्रारम्भ में पं० इन्द्र जी को यह पत्र लिखा—

मेरे प्यारे पुत्र,

तुम्हारा पत्र अभी पहुंचा। पत्र पढ़ रहा हूं और बार-बार आनन्द की अश्रुधारा बह रही है। परमात्मा ने इसी जन्म में मुझे कृतकार्य कर दिया। यह मेरा रोम-रोम अनुभव कर रहा है। मेरे प्यारे पुत्र, जिस दिन के लिये मैं रातों जागकर परमेश्वर से प्रार्थना करता रहा और असह्य से असह्य

दुःखों को सहन करता रहा, वह दिन आज मैंने देखा। इससे अधिक लिखने की कुछ शक्ति नहीं है। अभी तो इस आनन्द को ही बार-बार अनुभव करके आनन्दित होने दो।

तुम्हारा मुन्शीराम

स्वामी श्रद्धानन्द जी की हार्दिक इच्छा थी कि उनके पुत्र अपना जीवन गुरुकुल की सेवा में समर्पित करें। इसलिये उन्होंने बहुत बार आग्रहपूर्वक दोनों पुत्रों पर सांसारिक जीवन का परित्याग कर, गुरुकुल-सेवा में ही जीवन व्यतीत करने के लिये कुछ दबाव भी डाला। दुर्भाग्य से स्वामी जी की यह इच्छा पूरी न हुई। दोनों पुत्र गृहस्थ बनकर गुरुकुल से वह सम्बन्ध स्थापित न कर सके, जिससे स्वामी जी को सन्तोष होता।

किन्तु इस असन्तोष को स्वामी जी ने बड़े धैर्य से झेला। स्वामी जी बड़े विशाल हृदय के थे। वे जितने शूरवीर, साहसी व कर्मठ थे, उतने ही क्षमाशील थे। अपने प्रेमपूर्ण व्यवहार में उन्होंने स्वार्थ को कभी महत्त्व नहीं दिया। अपनी इच्छापूर्ति में कहीं आत्म-तुष्टि की छाया भी देखी तो हृदय से प्रायश्चित्त का भाव प्रकट कर दिया। उनकी पवित्रता और विशालता का प्रमाण उनके उस पत्र से मिलता है, जो उन्होंने १९१४ में पं० इन्द्र जी को लिखा। प्रतीत होता है कि स्वामी जी को उस समय अपने जीवन की पिछले २५ वर्षों को त्यागमय घटनाओं का स्मरण हो आया और उन्होंने अनुभव किया कि उन्होंने अपनी सन्तान के सांसारिक भविष्य को भी अपने ऊंचे आदर्शों पर कुर्बान कर दिया। पत्र के कुछ अंश निम्नलिखित हैं—

मेरे प्यारे पुत्र,

तुम्हारा पत्र कल दोपहर को मिला। उस समय से पांच बजे तक हरिश्चन्द्र से बातें करता रहा। फिर रातभर सोया नहीं। विगत २३ वर्षों की सारी घटनायें आंखों के सामने फिर गई। तुम्हारे पत्र ने मेरी आंखें खोल दीं। मैंने उन सब घटनाओं पर विचार किया। तब मैंने पाया कि जो कुछ भी मैं करता रहा, उसमें आत्मतुष्टि की भावना भी थी। धन का त्याग किया, किन्तु लोकैषणा ने मुझे अपने पुत्रों की स्वतन्त्रता में रुकावट डालने की प्रेरणा दी। इस समय भी मुझे प्रतीत होता है कि मेरे अन्दर लोकैषणा का सर्वथा अभाव नहीं हुआ था। यश के प्रति मेरी अभिरुचि किसी न किसी रूप में बनी ही रही है। इसी यश के लोभ में शायद मैंने कई बार तुम्हारे कोमल हृदय पर ठेस लगाई। क्या तुम उसे भूल सकोगे? कुछ क्षणों में तुम पर सन्देह करके जो पाप मैंने किया है, वह भी मैं अनुभव कर रहा हूं। इसके लिये मैं स्वयं को अपराधी मानता हूँ। मुझे उसका प्रायश्चित्त करना ही होगा।

तुम्हारा सदा सन्तुष्ट पिता—मुन्शीराम

इस प्रकार का पत्र लिखने के लिये जितने पवित्र हृदय की आवश्यकता होती है, वह स्वामी श्रद्धानन्द जी जैसे महापुरुष में ही हो सकती है।

इन व्यक्तिगत पत्रों से उनके तपोमय जीवन की भी झलक मिलती है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जीवन को पूर्णतः समाज-सेवा में अर्पित कर चुके थे। उन्होंने अपनी सम्पत्ति का भी दान कर दिया था। सब प्रकार के कष्ट झेलते हुए भिक्षावृत्ति धारण करली थी। गुरुकुल के लिए लाखों रुपये मांग-कर लाते थे, किन्तु गुरुकुल की ही सेवा करते हुए भी सेवा के पुरस्कारस्वरूप एक दमड़ी अपने लिये

नहीं रखते थे। यहां तक कि अपने रहन-सहन और भोजन का व्यय भी गुरुकुल की निधि पर न डालकर 'सद्धर्म-प्रचारक' पर डालते थे। परिणाम यह हुआ कि 'सद्धर्म प्रचारक' का व्यय बढ़ता गया। इस व्यय का भार उनके दोनों पुत्रों पर पड़ा। कहां तो एक सफल समृद्ध पिता के पुत्र होने के नाते उन्हें लाखों रुपयों की सम्पत्ति मिलती और कहां वे जीवन के प्रारम्भ में ही कर्जदार होगये। दूसरों के लिये दर-दर भटकनेवाला स्वयं ऋणी बन गया और इस ऋण को उतारने के लिए उसने कभी भिक्षा नहीं मांगी।

अपने पत्रों में वे हरिश्चन्द्र और इन्द्र दोनों से ऋण उतारने का आग्रह करते रहते थे। इस प्रकार के एक पत्र के कुछ अंश इस प्रकार हैं—

मेरे प्यारे हरिश्चन्द्र,

कल इन्द्र को पत्र लिख चुका हूं। आज मैंने कार्यालय से पता किया, तो ज्ञात हुआ कि 'प्रचारक' के नाम इन्द्र के हिसाब में ३,४६६ ≡)।।। उसके नाम खड़े हैं। मेरे पास कुछ बचे हुए रुपये थे, इसलिए ६१४ =)।।। आज दे दिये। अब ३,३५०) और देने रहे। शायद १००) मैं और दे सकूंगा। क्या तुम २५०) नहीं भेज सकते, जिससे ३०००) ही बाकी रह जायें।

तुम्हारा सन्तुष्ट पिता—मुन्शीराम

(जन-ज्ञान से साभार)

❀

अच्छी नसल के सांड एवं झोटों के लिये आर्थिक सहायता हेतु धन्यवाद

लगभग डेढ माह पहले सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने दिल्ली में श्री जगदीश-राय आर्य पुत्र सेठ खुशीराम के पास पत्र डालकर इस समय गांव के खागड़ एवं झोटों की खसता हालत से अवगत कराया था। साथ में उनकी चारा एवं दाना हेतु आर्थिक सहायता बारे सुझाव दिया था। बाद में कप्तान फूलसिंह आर्य ने भी भयंकर सूखे की स्थिति से अवगत कराया। आर्य जो कंवारी ग्राम के ही निवासी हैं। उन्होंने विचार-विमर्श के बाद, अब दिनांक ६-१२-८७ को पांच हजार रुपये सांड एवं झोटों के लिये चारा एवं दाना हेतु भेज दिये हैं। चारा एवं दाना खरीद लिया गया है। ज्ञातव्य है कि कंवारी ग्राम में सात सांड एवं दो झोटे हैं।

इसके अतिरिक्त आर्यसमाज कंवारी के ६६वां उत्सव हेतु तीन सौ रुपये दान भी दिया है। उपरोक्त सहायता के लिये दानवीर को आर्यसमाज कंवारी की तरफ से बहुत-बहुत धन्यवाद।

गो बचेगी, देश बचेगा।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, प्रधान आर्यसमाज कंवारी, हिसार

२३ दिसम्बर को बलिदान दिवस पर—

वीर सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द

लेखक—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास में सन् १८५६ का बड़ा भारी महत्त्व है। यही वह वर्ष है जिसमें मथुरा नगर में आयोजित किये सर्वखाप पंचायत के अधिवेशन की अध्यक्षता ब्रह्मर्षि विरजानन्द जी ने की थी और जिसमें तत्कालीन सभी क्रांतिकारी नेता उपस्थित थे। जिसमें सर्वसम्मत निर्णय का फैसला देते हुए स्वामी विरजानन्द जी ने कहा था—स्वतन्त्रता महान् सुख है। परतन्त्रता महान् दुःख है। अतः सभी भारतीयों को संगठित होकर फिरंगी अंग्रेज को देश से बाहर निकालना होगा। ऐसा वक्तव्य सर्वखाप पंचायत के पुराने दस्तावेजों में उपलब्ध है। जिसके लेखक हैं—पंचायती भाट मीर मुस्ताक मीर मीरासी। स्वतन्त्रता सेनानियों में स्वतन्त्रता का सर्वप्रथम बीज भी १८५६ में ही बोया गया था। सन् १८५७ में महर्षि दयानन्द ने नेतृत्व किया।

१८५६ में ही भारत की दो महान् विभूतियों ने जन्म लेकर, देश की आजादी के लिए दोनों ने ही आत्म-बलिदान देकर राष्ट्र का नाम ऊंचा किया था। वे हैं—श्री स्वामी श्रद्धानन्द तथा श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा।

राष्ट्र-निर्माण का कार्य करते हुए श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का महाबलिदान २३ दिसम्बर, १९२६ को दिल्ली में हुआ था। श्याम जी ने स्वामी दयानन्द की आज्ञा से १८७७ में विदेशों में जाकर महान् कार्य किये और अन्त में इनका भी महाप्रयाण १९३१ में हुआ। इस समय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर ही हम संक्षिप्त में उनके जीवन का दर्शन-दिग्दर्शन कराना चाहते हैं।

वैदिक संस्कृति के रक्षक—

इसे कौन जानता था कि सन् १८५६ में पंजाब के एक ग्राम तलवन में जन्मा यह बालक जीवन को इतनी गहराइयों में पहुँच जायेगा कि अपने राष्ट्र का नाम ऊंचा कर जायेगा। जीवन का जवानी भाग बहुत ही निकृष्ट था, किन्तु महर्षि दयानन्द का सम्पर्क सत्संग पाकर अकस्मात् ही अंगुलीमाल डाकू व मुगला डाकू के समान इसका जीवन परिवर्तित हो जायेगा। इसे कौन जान सकता था। सब से पहले अपने पिता नानकचन्द की प्रेरणा से महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में जाने से पाश्चात्य दर्शन के दीवाने इस नास्तिक युवक में ईश्वरीय आस्था की प्रथम नई किरण प्रस्फुटित हुई।

महर्षि के सत्संग में मांस, शराब, जूआ और व्यभिचार को आमोद-प्रमोद समझनेवाले इस युवक ने इन सबको ही तिलांजलि दे दी। प्रथम तो वह महर्षि दयानन्द के दर्शनों से इतना प्रभावित हुआ कि वह अपने को गहरे अन्धेरे में समझने लगा। महर्षि के प्रवचनों से इसे विवेक जगा। जब भी किसी

का भाग्योदय होता है तो सभी प्रकार के कार्य अनायास ही अपने आप ही सफल होने लग जाते हैं।

सौभाग्य से शिवदेवी नामक सुशील, सब सद्गुणों की खान नारी पत्नी रूप में प्राप्त हुई, जिसने बिगड़े जीवन में सुधार के लिए शराब का ३०० रुपये का बिल चुकाकर, अपने पति के ऊपर विशेष पतिव्रतधर्म का प्रभाव दिखाकर उसे सुधार के मार्ग पर अग्रसर किया।

उस समय आर्यसमाज के युवादार्शनिक विद्वान् पं० गुरुदत्त जी का सम्पर्क पाकर वैदिक वाङ्मय का स्वाध्याय कर जीवन का कार्यक्रम बदलने लगे। स्वाध्याय करते हुए सत्यार्थप्रकाश ऐसा पढ़ा कि जीवन में भारी परिवर्तन आया। सत्संग का प्रभाव कितना चमत्कारी होता है। मुन्शीराम में आये इस परिवर्तन से शीघ्र ही अनुमान हो सकता है। अपनी आत्मकथा "कल्याण मार्ग का पथिक" में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने महर्षि दयानन्द, अपनी पत्नी शिवदेवी और पं० गुरुदत्त विद्यार्थी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए लिखा है कि—"मेरे अन्धकारमय जीवन में ये तीन प्रकाशस्तम्भ प्रकाशित न होते तो मैं नाली में पड़े कीड़े जैसा ही बना रहता और मेरा यह विलासी जीवन बेकार हो जाता।

सत्संग से प्रभावित यह व्यक्तित्व बाद में कितना प्रभावी और मेधावी सिद्ध हुआ, इसका प्रमाण पत्र ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री रोजेमैक्डानल्ड ने सन् १९१४ में उनके प्रति लिखे इन उद्गारों से प्रकट होता है। रोजेमैक्डानल्ड उस समय प्रधानमन्त्री न थे, वे बाद में प्रधानमन्त्री बने थे। किन्तु वे गुरुकुल देखने के बहाने से आये थे। उस समय गुरुकुल की गतिविधियों से अंग्रेजी सरकार बहुत ही आतंकित और शंकित थी। स्वामी जी के मिलने पर वायसराय ने लिखा—

एक महान् भव्य और शानदार मूर्ति, जिसको देखते ही उसके प्रति आदर का भाव पैदा होता है, हमारे आगे हम से मिलने आती है। आधुनिक चित्रकार ईसामसीह का चित्र तैयार करने के लिए उसको अपने सामने रख सकता है और मध्यकालीन चित्रकार उसको देखकर सेन्ट पीटर का चित्र तैयार कर सकता है। यह मूर्ति बहुत ही प्रभावोत्पादक है।

एक विदेशी प्रशासक द्वारा दिया गया यह प्रमाण-पत्र सिद्ध करता है कि स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने जीवन को वैदिक संस्कृति के ढांचे में ढाल लिया था। वैदिक आदर्शों की प्राप्ति से उनका जीवन अत्यन्त भव्य और आकर्षक बन गया था।

शिक्षा का प्रचार—

वैदिक गरिमा से मण्डित अपने प्रखर व्यक्तित्व को अपने तक ही सीमित न रखकर वैदिक संस्कृति के उद्धार के लिए और भारतीय सभ्यता के स्थायित्व के लिए उसे पश्चिमीय संस्कृति और अंग्रेजी शिक्षा के भयंकर विष से बचाओ, ऐसी घोषणा करके जालन्धर में कन्या महाविद्यालय की स्थापना की और महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट आर्ष शिक्षा-पद्धति का सार्थक प्रयोग करते हुए १९०२ में हरद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की।

गुरुकुल का महत्त्व—

स्वामी श्रद्धानन्द का यह शिक्षा संस्थान देश का सर्वप्रथम राष्ट्रीय शिक्षणालय था, जहां उच्च शिक्षा हिन्दी में दी जाती थी। गुरुकुल ने राष्ट्रभाषा हिन्दी को गौरवमय पद प्रदान कराने में महत्त्व-

पूर्ण भूमिका निभाई है। वैदिक संस्कृति और वेदों की रक्षा के लिये गुरुकुलीय विद्वानों ने जो कीर्तिमान स्थापित किये, वह किसी भी संस्था द्वारा निर्मित न किये गये। गुरुकुल अनेक क्रांतिकारियों का शरण स्थान था। गुरुकुल में स्वदेशी भाषा, स्वदेशी संस्कृति, स्वदेशी परिधान और स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग की शिक्षा-दीक्षा छात्रों को दी जाती थी। अतः गुरुकुल कांगड़ी राष्ट्रीय जागृति का एक प्रकार से गंगोत्री था, जो बढ़ते-बढ़ते गंगा का विस्तृत रूप होगया।

शुद्धि आंदोलन के प्रणेता—

विदेशी आक्रांता मुस्लिम बादशाहों ने भारत को मुसलमान बनाने के लिये कौन-सा ऐसा निर्मम अत्याचार था जो न किया गया। जजिया टैक्स के द्वारा चोटी जनेऊ उतारना, धर्म-शास्त्रों को अग्नि में जलाना, भाषा व शिक्षा में परिवर्तन करना, जिनसे इस्लाम के प्रचार की स्थापना हो, ऐसा कार्य विशेषकर तलवार की नोंक से किया गया।

भारत की एकता, अखण्डता और सुरक्षा को नष्ट करने के लिये सभी मुस्लिम बादशाहों का यह भयंकर षड्यन्त्र था। स्वामी ने इस खतरे को खूब समझा था। इसे समझते हुए उन्होंने महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदत्त शुद्धि के सुदर्शन चक्र को उठाया और चारों दिशाओं में अत्यन्त वेग से चलाया। इसका फल यह निकला कि इस्लाम और ईसाइयत के छक्के छूटने शुरु होगये। आर्यसमाज ने शुद्धि आंदोलन को सफल बनाया। पंजाब के मेघ, रहतिये, राजस्थान व हरयाणा के मेव, ओड़ और मालावार के नव-मुस्लिम इस्लाम छोड़कर वैदिकधम में आने लगे। इस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द और म० हंसराज के महान् प्रयत्नों से आठ लाख मुस्लिम हिन्दू बने। गांधी जी ने मुसलमान नेता मुहम्मद अली, शौकत अली व मौलाना आजाद को सन्तुष्ट करने के लिये शुद्धि आंदोलन का भारी विरोध किया। यदि यह शुद्धि का चक्र चलता रहता तो न कुरान रहता, न कुर्बानी होती, न मुस्लिमलीग होती, न पाकिस्तान होता, सारा झगड़ा ही मिट जाता।

१९२२-२३ में मालाबार में साम्प्रदायिक दंगे हुए। इनके विरुद्ध स्वामी जी ने आवाज उठाई, किन्तु गांधी जी, मोतीलाल नेहरू और आजाद ने कांग्रेस को अपनी रिपोर्ट देते हुए मुसलमानों को राजी करने के लिये स्वामी श्रद्धानन्द इन दंगो का कारण बताया। १९२४ में यह सब कुछ हो रहा था। मुसलमान नेता तब लीग को जरूरी बताते थे, तो स्वामी जी ने भी मुसलमानों की शुद्धि को आवश्यक बतलाया। स्वामी जी ने कांग्रेस से त्याग-पत्र दे दिया और शुद्धि-कार्य जोरों से करने लगे। स्वामी जी को मुसलमानों के धमकी भरे पत्र आने लगे। करांची की असगरी बेगम के शुद्ध होने पर तो बहुत ही दंगे हुए। दंगों के बारे में आर्यसमाज को भी दोषी ठहराया गया। गांधी जी ने भी विरोध किया। असगरी बेगम के पति ने स्वामी जी के विरुद्ध मुकदमा किया, किन्तु स्वामी जी मुकदमे में जीत गये। उसी समय से स्वामी जी की हत्या का षड्यन्त्र शुरु होगया। इसमें बड़े-बड़े मुस्लिम तथा अन्य तथाकथित नेताओं का भी हाथ था। इस प्रकार २३ दिसम्बर, १९२६ को स्वामी जी का बलिदान होगया। अब्दुल रसीद नामक एक जिल्दसाज ने स्वामी जी पर गोलियां चलाई, जिनसे वे बलिदान हुए। स्वामी जी बलिदान के बाद भक्त फूलसिंह ने भी इस कार्य को आगे बढ़ाया।

स्वामी जी का जीवन राष्ट्र के लिये समर्पित जीवन था। १९१९ में चांदनी चौक में विशाल जलूस का नेतृत्व करते हुए गौरों को ललकार कर कहा था—लो सामने खड़ा हूं, गोली मारो। गोरे

भी पीछे हट गये थे। १६२२ में 'गुरु का बाग' आंदोलन में सिखों के लिये जेल में गये। १६१६ में अमृतसर के कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता की।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के समस्त जोवन का सार यह निकलता है कि वे सत्य के प्रति आग्रही थे। राष्ट्र के समर्पित थे। आर्यसमाज के संगठन को आंदोलन द्वारा मजबूत बनाना चाहते थे। के बहुत ही निडर थे, वीर थे, धीर थे, गम्भीर थे। महर्षि के पश्चात् जो उनके मन्तव्यों का प्रचार स्वामी श्रद्धानन्द ने किया है। वह आर्यसमाज के इतिहास की बहुमूल्य धरोहर है। वे खूब समझते थे कि आर्यसमाज एक आंदोलन है, वह न मजहब है, न मत है, न कोई लाला जी की सम्पत्ति है। वह तो आर्यों का एक सुधारक आंदोलन है। यदि वह आंदोलन करता रहेगा तो वह जीवित रहेगा, नहीं तो वह मर जायेगा, समाप्त हो जायेगा। आज उनके बलिदान के पवित्र अवसर पर हमें इस आंदोलन को तेज करने की बात सोचनी होगी। शुद्धि सुदर्शन को मेवात में चलाना होगा। शिक्षा में परिवर्तन करना होगा। महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज के प्रति हमें समर्पित होना पड़ेगा। यही उनके प्रति ठीक श्रद्धांजलि है।

निमन्त्रण-पत्र

श्रीमद्भगवद्गीता गोष्ठी का आयोजन

दिनांक 26 दिसम्बर 1987 समय प्रातः 9 से 1 बजे

स्थान : दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र

अध्यक्ष : प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान

मुख्य वक्ता : डा० भवानीलाल भारतीय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की विद्या सभा की ओर से एवं हरयाणा साहित्य अकादमी के आर्थिक सहयोग से यह आयोजन किया जा रहा है। आप इसमें सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :-

वेदव्रत शास्त्री
मन्त्री:-आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

बीरुराम आर्य
संयोजक:-श्रीमद्भगवद्गीता गोष्ठी

गौ तथा भैंस की सर्वोत्तम हरयाणा नसल को बचाना हरयाणावासियों का पुनीत कर्तव्य

सारा देश जानता है कि हरयाणा नसल की गाय बछड़े और बैल देशभर में मशहूर हैं। इसी प्रकार हरयाणा की मुर्रा नसल की भैंस भी देश में सर्वोत्तम है।

जिस भयंकर सूखे का मुकाबला हरयाणा के आधे से ज्यादा जिलों की जनता को करना पड़ रहा है, वह हमारी याद में कभी भी नहीं करना पड़ा। अन्न के भण्डार तो देश में हैं, परन्तु पशुओं के लिये चारे और भूसे के भण्डार नहीं हैं। ज्यों-ज्यों समय बीत रहा है, चारा और भूसा मंहगा तो होता ही जारहा है, उनका मिलना भी कठिन से कठिनतर होता जारहा है।

किसानों को अपनी गाय, बछड़े, बछड़ियां, बैल और भैंसों को बचाने के लाले पड़ रहे हैं। ऐसे भयंकर सूखे और अकाल से पीड़ित किसान सांडों (खागड़ और झोटे) की सुध-बुध ले पायेंगे, यह असम्भव होता जारहा है। हम सब भली प्रकार जानते है कि यदि सांडों की पूरी देख-रेख और चराई नहीं हो पाई और वे कमजोर होगये या मर गये तो हरयाणा की गाय और भैंस को नसलों में गिरावट आजायेगी और वह हरयाणा और देश के लिये बहुत बड़ी हानि होगी। चाहिये तो अच्छे बछड़े और कटड़े चुनकर, उनको सांड बनाने के लिये उनको भी अच्छी खुराक दी जाये, परन्तु जो सांड इस समय प्रदेश की मशहूर नसलों की अभिवृद्धि में सेवारत है, उनको बचाया ही न जाये, बल्कि उनको पूरी खुराक देकर हृष्ट-पुष्ट रखा जाये।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का ध्यान इधर गया और उसने इस दिशा में अपने कर्त्तव्य का पालन करने का संकल्प लिया है। हमने हरयाणा सरकार और भारत सरकार से भी निवेदन किया है कि वे एक तिहाई सहायता करे। यदि १५ रु० दैनिक व्यय एक सांड पर आता है तो वे ५ रु० दें और हरयाणा की जनता भी एक तिहाई हिस्सा वहन करे।

हमारा अन्दाजा है कि लगभग १००० सांडों की रक्षा का भार हम सबको मिलकर उठाना होगा। ५ रु० प्रति सांड जनता को इकट्ठा करना है। चारा और दाना दोनों का प्रबन्ध करना है।

हरयाणा के लोग जहां भी हों, हरयाणा में या बाहर, उन सब की सेवा में हम पुरजोर अपील करते हैं कि वे इस पवित्र कार्य में दिल खोलकर मदद करें और उदारता से चारा, अन्न या नकद दान दें।

मण्डियों के धर्म-प्रेमी सभी व्यापारी भाइयों से विशेष अपील है कि वे हरयाणा की मशहूर गाय और भैंसों की नसल की रक्षा के लिये दिल खोलकर दान दें।

निवेदक

प्रो० शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	बद्रीप्रसाद आर्य
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धांती भवन, रोहतक

कल्याण मार्ग का पथिक अमर बलिदानी
स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

—ओमप्रकाश वानप्रस्थी, अधिष्ठाता आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल, भटिण्डा

इनका बचपन का नाम मुन्शीराम था। आप नास्तिक विचार के होने के कारण ईश्वर को नहीं मानते थे। एक बार जब महर्षि दयानन्द १९३६ विक्रमी में बरेली आये तो उनके प्रवचन सुनकर आपके ऊपर विशेष प्रभाव पड़ा। महर्षि दयानन्द से शंका समाधान पर आपने कहा कि युक्तियों से तो आपने ईश्वर की हस्ति स्वीकार करादी, परन्तु बुद्धि ने अभी तक स्वीकार नहीं किया कि ईश्वर है। इस पर महर्षि दयानन्द ने कहा कि जब ईश्वर की कृपा होगी तो बुद्धि भी स्वीकार कर लेगी। उसी दिन से जीवन का कांटा बदला और बड़ी मेहनत से अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश प्राप्त करके बड़ी श्रद्धा से पढ़ा, जिससे ज्ञानचक्षु खुले, सचाई का जीवन पर प्रभाव पड़ा। वकील होते हुए झूठा केस लेना बन्द कर दिया। इनका जीवन एक दृष्टि में—

१. महर्षि दयानन्द से भेंट	१९३६ विक्रमी
२. आर्यसमाज में प्रवेश	१८८४ ई०
३. वकालत पास करना	१८८७ ,,
४. धर्म-प्रचार की लगन	१८८८ ,,
५. आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान	१८९२ ,,
६. गुरुकुल खोलने का संकल्प	१८९८ ,,
७. गुरुकुल जारी किया	१९०२ ,,
८. सत्य-धर्म प्रचारक पत्रिका उर्दू से हिन्दी में की, जो पहले १८८९ में उर्दू की जारी की थी	१९०७ ,,
९. पटियाला केस के ८५ आर्यसमाजियों के केस की पैरवी कर, जेल से छुड़ाया।	१९०९ ,,
१०. संन्यास आश्रम में प्रवेश	१९१७ ,,
११. सार्वदेशिक सभा के प्रधान	१९१८ ,,
१२. पंजाब कांग्रेस के प्रधान के रूप में अध्यक्षीय भाषण हिन्दी में दिया।	१९१९ ,,
१३. अमर बलिदान २३ दिसम्बर	१९२६ ,,

मुख्य-मुख्य घटनायें—

१—जामामस्जिद देहली में आज तक किसी गैर मुसलमान को व्याख्यान करने का अवसर केवल स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को प्राप्त हुआ।

२—महात्मा गांधी इनको अपना बड़ा भाई मानते थे।

३—अपनी सारी सम्पत्ति गुरुकुल को दान करदी। अपनी सन्तान के लिये कुछ नहीं रखा।

४—गुरुकुल में अपने दोनों पुत्रों का दाखला करके शुरु किया गया।

५—करांची की असगरी बेगम को शुद्ध करके शांतिदेवी नाम रखा। इस पर स्वामी जी के वारंट गिरफ्तारी। जमानत हुई, विजय हुई।

६—मिस्टर गांधी का नाम महात्मा गांधी करने का श्रेय प्राप्त किया।

७—तुर्की के कमाल बादशाह के विजय दिवस पर, अपने निवास स्थान पर रात्रि को दीपमाला की। परदे के विरुद्ध यह हमारा काम कमाल बादशाह ने करके बड़ा अच्छा काम किया।

८—दिल्ली चांदनी चौक घण्टाघर के पास रोल्ट एक्ट के समय भारी जलूस का नेतृत्व करते समय, अंग्रेज फौज के सामने अपनी कमीज के बटन खोल दिये कि चलाओ गोली।

९—वायसराय चेम्स फोर्ड जब गुरुकुल आये, तुलसी के पत्तों की चाय से सत्कार किया।

१०—जब महात्मा गांधी ने अफ्रीका में सत्याग्रह की सहायता के लिए लिखा तो आपके गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने एक समय अपना खाना बन्द करके उस बचत का पैसा सहायता में भेजा।

११—एक बार महात्मा गांधी ने कहा कि मुसलमानों की शुद्धि न किया करो तो बेधड़क स्वामी जी ने उत्तर दिया—यही कानून मुसलमानों पर भी लागू करादो कि वह किसी हिन्दू को मुसलमान न बनावें। इस पर गांधी जी चुप कर गये।

१२—२३ दिसम्बर, १९२६ को अब्दुल रसीद नामी जनूनी मुसलमान ने नमूनिया के रोगी, बेगुनाह संन्यासी के सीने पर पिस्तौल की तीन गोली मारकर हत्या करदी।

❀

रोहतक में स्वामी श्रद्धानन्द श्रद्धांजलि समारोह

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने देश को अंग्रेजी दासता से मुक्त कराने हेतु शहीदी जलूस का नेतृत्व करते हुए चांदनी चौक दिल्ली में अंग्रेजों की संगीनों के सामने अपनी छाती तान दी थी तथा हिन्दू-धर्म के रक्षार्थ शुद्धि आंदोलन का नेतृत्व करते हुए अपने देश एवं जाति के लिये २३ दिसम्बर, १९२६ को अपने रक्त की अन्तिम बूंद भी समर्पित करदी थी।

अतः उनके ६१वें बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में रोहतक नगर की सभी आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं की ओर से रविवार, दिनांक २० दिसम्बर, १९८७ को चौक माता मन्दिर पाड़ा मोहल्ला में २ से ५ बजे तक एक भव्य श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया जारहा है, जिसमें पं० ओम्प्रकाश जी (जालन्धर वाले), पं० गुलाबसिंह जी राघव दिल्ली, डा० तुलसीराम जी एवं आचार्य बलवीर जी महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक आदि विद्वान् एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

निवेदक—देशराज आर्य, मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा, रोहतक

ये हैं संस्कृत एवं संस्कृति के घातक

लार्ड मैकाले ने हमारी भाषा को समाप्त करके अपनी अंग्रेजी भाषा का प्रसार किया और संस्कृति को नष्ट करके सभी भारतीयों के मन को मोह लिया। ठीक उसी पद्धति को अपनाते हुए हमारे कुछ नेता आज इसी प्रकार से प्रचार कर रहे हैं।

कुछ व्यक्तियों ने अब इस परम्परा को यहां तक बढ़ावा दिया है कि हमारे १६ संस्कारों के मंत्रों को संस्कृत में न बोलकर, केवल मात्र हिन्दी में ही अनुवाद करके वर-वधू से उच्चारण कराया जावे। क्या आपके इस प्रयास से संस्कृत की रक्षा सम्भव है।

वस्तुतः संस्कृत भाषा को देववाणी कहो, शुद्ध और परिमार्जित भाषा कहो, उसके स्थान पर हिन्दी के प्रयोग से संस्कृत की कितनी रक्षा हो सकती है यह तो आप ही अनुभव करेंगे।

हमारे प्राचीन विद्वान् ब्राह्मणों ने चारों वेदों को कण्ठस्थ करके सुरक्षित किया। गीता, महाभारत, रामायण आदि धार्मिक ग्रन्थों की सुरक्षा भी तभी सम्भव है, जब हम संस्कृत भाषा को अपनावेंगे। कुछ तो सरकारी तत्त्व ऐसे हमारे दिल और दिमाग में घुसे हुए हैं जो संस्कृत को नष्ट करने पर तुले हुए हैं। फिर कुछ ऐसे व्यक्ति आगे आरहे हैं जो यह प्रयत्न कर रहे हैं कि मन्त्रों को हिन्दी अनुवाद करके समझाया जाये।

ऐसे असामाजिक तत्त्वों का ध्यान रखना चाहिये कि वेदमन्त्र सदा प्रामाणिक होते हैं। यदि वे यह कहते हैं कि वेदमन्त्र स्पष्ट नहीं होते या वर-वधू समझ नहीं सकते। अतः उनको समझाने के लिये हिन्दी भाषा को अपनावें। यह युक्ति भी उचित नहीं प्रतीत होती।

अनेक बार ऐसा देखा गया है कि विवाह के अवसर पर नाच-गाना तो उचित है। उस समय कहा जाये कि—क्यों समय नष्ट कर रहे हो, तो बुरा मानते हैं। हां, जब विवाह संस्कार का अवसर आता है तो सभी बाराती यही कहते सुने जाते हैं कि पण्डित जी जल्दी करो, क्यों समय बरबाद कर रहे हो ? यही सीधे सच्चे अर्थों में देखा जाये तो विवाह-संस्कार में ३-४ घण्टे का समय लगना चाहिये। तब सब व्याख्या स्वतः स्पष्ट हो जायेगी। सम्पूर्ण विवाह के अवसर पर "विवाह-संस्कार" की ही मान्यता होनी चाहिये।

पाठको ! यदि हमने संस्कृत की यूं ही उपेक्षा करते रहे तो निश्चित है एक दिन संस्कृत के मूल-स्रोत गुरुकुल समाप्त हो जायेंगे। जब गुरुकुल समाप्त हो जायेंगे तो वेद, उपनिषद्, गीता, रामायण को कौन पढ़ेगा।

जब अपने धार्मिक ग्रन्थों को भूल जायेंगे तो निर्भ्रान्त है कि हम अपनी संस्कृति से भी बहुत दूर हो जायेंगे। जब संस्कृति और संस्कृति से दूर होगये तो हम "आर्य" (श्रेष्ठ) भी नहीं बन सकते। फिर तो आप लोग भी साधारण व्यक्तियों की भांति बन जायेंगे।

आप विधर्मियों से कुछ तो शिक्षा ग्रहण करें—मुसलमानों का धार्मिक ग्रन्थ कुरान अरबी-फारसी में है। ईसाइयों का धार्मिक ग्रन्थ बाइबिल है, वे भी अपने धर्म-ग्रन्थों को अपनाते हैं।

आप इस प्रकार हिन्दीकरण न कर, संस्कृत को अपनाइये। पढ़िये, सीखें। अपनी प्राचीन परम्परा को बदलने का दुस्साहस न कीजिये। वैचारिक क्रांति का उद्घोष करनेवाले महर्षि स्वामी दयानन्द ने स्वयं गुजरात प्रांत के होते हुए भी संस्कृत को अपनाया।

संस्कृत तो सभी भाषाओं की जननी है।

बड़े तप और त्याग के पूर्ण संघर्ष के बाद स्वराज्य तो मिला और आशा थी कि अब सुराज बनाना है। अंग्रेज तो चला गया, पर वे अपने पीछे ऐसे मानस-पुत्र छोड़ गया, जो आज भी उस अंग्रेजी सभ्यता का गुणगान करते नहीं थकते। भारतीय जनमानस इतना विकृत हो चुका है कि उसे अपने स्वत्व की रक्षा के लिये कितना ही समझाया जाये, वे उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं।

आइये ! संस्कृत भाषा को अपनायें, इसे पढ़ें, इसे ही अपने जीवन का अंग बनायें, तभी हम अपनी संस्कृति की रक्षा कर सकेंगे। (मधुर लोक से साभार)

❀

हो गये बलिदान श्रद्धानन्द

सपूत भारत माता के महान् श्रद्धानन्द। राष्ट्र-हित में होगये बलिदान श्रद्धानन्द ॥

कितने ही विषयों में फंसा वह मुन्शीराम था, खाना-पीना मौज करना जिसका काम था।
सुधरे ऋषि दयानन्द से पा ज्ञान श्रद्धानन्द, राष्ट्र-हित में होगये बलिदान श्रद्धानन्द ॥१

आतंक से अंग्रेज का था दबदबा छाया, निर्भीक संन्यासी हो था जो उससे टकराया।
संगीन के आगे थे छाती तान श्रद्धानन्द, राष्ट्र-हित में होगया बलिदान श्रद्धानन्द ॥२

वेद के अनुसार शिक्षा का प्रचार हो, नैतिकता धर्म-कर्म का जिससे प्रसार हो।
इससे ही सम्भव मानते उत्थान श्रद्धानन्द, राष्ट्र-हित में होगये बलिदान श्रद्धानन्द ॥३

राष्ट्र-एकता का केवल सूत्र है शुद्धि, देश की आरोग्यता का मन्त्र है शुद्धि।
शुद्धि की राह में दे गये थे प्राण श्रद्धानन्द, राष्ट्र-हित में होगये बलिदान श्रद्धानन्द ॥४

सिद्धांत पर अडिग रहे वे खेले जान पर, सब कुछ न्यौछावर कर दिया निज आनमान पर।
सिद्धांत पालन समझते सम्मान श्रद्धानन्द, राष्ट्र-हित में होगये बलिदान श्रद्धानन्द ॥५

आदेश ऋषि-मुनियों का सब पूरा करना है, वैदिक पवित्र धैर्य के ही पथ पर चलना है।
"पाल" यह ही कर गये आह्वान श्रद्धानन्द, राष्ट्र-हित में होगये बलिदान श्रद्धानन्द ॥६

—धर्मपाल आर्य, नरवाना

२३ दिसम्बर अमरहुतात्मा के बलिदान दिवस पर—

श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने सीने पै खाई, गोलियां !!

स्वामी श्रद्धानन्द के प्रेरणाप्रद जीवन संस्मरण

जो अपने बलिदान से दे गये जन-जन को आनन्द।
वे थे महान् त्यागी तपस्वी स्वामी श्रद्धानन्द॥

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द का नाम भारतवर्ष के इतिहास में सदा ही स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। उनके यश की धवल पताका 'यावच्चन्द्रदिवाकरौ' पर्यन्त आकाश में फहराती रहेगी। उनके पावन कर्मों की मधुर स्मृतियां किस राष्ट्रभक्त के हृदय को विद्रावित नहीं करती होंगी। जिस महान् आत्मा ने भारत को अखण्ड एवं रामराज्य बनाने के स्वप्न न केवल अपने हृदय में संजोये थे, प्रत्युत उन्हें साकार करने में ही अपने समस्त जीवन की आहुति राष्ट्रभृत् यज्ञ में दे दी थी, क्या हम उनके महान् बलिदान दिवस पर उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का सत्यव्रत धारण नहीं करेंगे? क्या हम इतने अभागे एवं मृतप्राय होगये हैं कि उनके द्वारा चलाये जनोपयोगी कार्यों को छिन्न-भिन्न होता देखकर भी अनदेखी करते रहेंगे? आज भारतवासियों को क्या होगया है, वे किस महानिद्रा में बेसुध हुए पड़े हैं। जो अपने गौरवपूर्ण अतीत को भूलकर कलंक पंक से कलंकित करने में ही अपना सौभाग्य समझ बैठे हैं। आर्यो आओ! इस महान् बलिदानी के बलिदान दिवस पर कुछ संकल्प लेवें और अपनी निष्कर्मण्यता, चिरनिद्रा व स्वार्थमयी वृत्तियों को छोड़कर नव-चेतना जगायें और अपनी प्रसुप्त दिव्य-शक्तियों को प्रबुद्ध कर अपने धर्म की अनन्य-निष्ठा एव श्रद्धा से रक्षा करने में तत्पर हो जायें।

१. स्वराज्य को सुराज्य बनाने के स्वप्न-द्रष्टा —

आज हमारा देश स्वतन्त्र अवश्य है, किन्तु जिस देश के युवकों में राष्ट्रीय-भावना ही समाप्त होगई हो और स्वदेश-प्रेम का बीज ही न रहा हो, वह देश स्वतन्त्र व सम्पन्न होता हुआ भी परतन्त्र ही होता है। स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् इस देश ने एक बहुत बड़ी सम्पत्ति नष्ट करदी है. वह है—स्वदेश-भक्ति। इस देश के सरकारी तन्त्र, राजनैतिक क्षेत्र, शिक्षणालय व विश्वविद्यालय, औद्योगिक क्षेत्र आदि सभी क्षेत्रों में जब हम दृष्टिपात करते हैं तो हमें देशभक्ति का सर्वथा ही अभाव दिखाई दे रहा है, जिसके परिणामस्वरूप देश की उन्नति अवरुद्ध होगई है और देश को बाहर-भीतर से खतरा ही खतरा दिखाई दे रहा है। महान् राष्ट्रभक्त स्वामी श्रद्धानन्द ने बहुत ही दूरदर्शिता से इस दशा को भांपा था। कांग्रेस की तुष्टीकरण की नीति के कारण कांग्रेस से पृथक् होकर देशवासियों को एक चेतावनी दी—"स्वराज्य तभी सम्भव हो सकता है, जब हिन्दू इतने अधिक संगठित और शक्तिशाली हो जायें कि नौकरशाही मुस्लिम धर्मोन्माद का मुकाबला कर सके।"

(२९ अप्रेल' १९२६ के 'लिबरेटर' पत्र से)

स्वामी जी के इस उद्घोष को साधारण जनता नहीं समझ सकी, किन्तु देशभक्तों ने उनकी बात की सराहना की। हिमालय सम-विशाल हृदय और देशप्रेम की ज्योति को संजोये हुए वीर सावरकर ने भारतवासियों को चेतावनी देते हुए कहा था—"यदि हिन्दू जाति को ज्ञान और सम्मान से जीवित रहना है तो उसे यही पाठ याद करना होगा और अमल में लाना होगा। हे हिन्दुस्तान के हिन्दुओ ! यदि तुमने उस महान् हुतात्मा के बहुमूल्य आदेश की अवहेलना को तो तुम्हारा नाश निश्चित है।"

स्वामी जी महाराज ने दिल्ली के चांदनी चौक में गोरखों की संगीनों के आगे बड़ी निर्भयता से सीना केवल इसीलिए नहीं ताना था कि देश परतन्त्रता की बेड़ियों से उन्मुक्त हो जाये, प्रत्युत वे स्वराज्य को सुराज्य भी बनाने को बहुत उत्सुक थे, अन्यथा वे कांग्रेस से अलग कभी नहीं होते। कांग्रेस की जिस नीति के कारण वे पृथक् हुए थे, उस तुष्टीकरण की नीति का यह दुष्परिणाम है कि आज प्रशासन देशद्रोहियों को भी कठोर दण्ड इसलिए नहीं दे रहा कि यह वर्ग हमारे से रुष्ट हो जायेगा। जो प्रशासन अपनी प्रजा को न्यायोचित व्यवस्था नहीं दे सकता है, वह क्या राज्य कर सकता है। वह जीता हुआ भी मृतप्राय होता है। दोषी को क्षमा करना किसी रूप में साधु के लिए भूषण हो सकता है, किन्तु राजा के लिए क्षमा करना महादूषण होता है।

२. देश की अखण्डता के सजग प्रहरी—

स्वामी श्रद्धानन्द जी जो कहते थे, उसे करके दिखाते थे। यह उनकी महती विशेषता थी। राष्ट्रभक्ति उनके जीवन में कूट-कूटकर भरी हुई थी। इसीलिए अंग्रेज प्रशासन उनके प्रत्येक कार्य-कलाप पर क्रूर दृष्टि सदा रखता था। इसी परिप्रेक्ष्य में एक बार भारत के वायसराय ने गुरुकुल कांगड़ी को देखने की इच्छा प्रकट की। स्वामी जी ने घूम-घूमकर वायसराय को गुरुकुल का प्रत्येक भाग दिखाया। सब कुछ देखने के पश्चात् वायसराय ने स्वामी जी से पूछा – मैंने सुना है कि गुरुकुल में बम बनाये जाते हैं। स्वामी जी ने हंसकर और बड़ी निर्भीकता से उत्तर दिया—हां, बम बनाये जाते हैं, किन्तु जैसा आपने सुना है, वैसे नहीं। वायसराय ने उनको देखना चाहा। स्वामी जी ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को एक पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया और कहा कि ये हैं गुरुकुल के बम। बम तो कुछ सीमित स्थान पर ही विनाशलीला करते हैं, किन्तु ये वह कार्य करेंगे कि जिससे विदेशी शासन शीघ्र ही नष्ट हो जायेगा और हमारा देश पूर्णतः स्वतन्त्र हो जायेगा। वायसराय यह सुनकर और स्वामी जी की बातों को समझकर चकित होगया।

स्वामी जी बहुत दूरदर्शी थे, जिस रहस्य को महात्मा गांधी भी नहीं समझ सके, जो स्वतन्त्र भारत के लिए एक बड़ा खतरा हो सकता था और हुआ भी। स्वामी जी ने उसे बहुत पहले ही परख लिया था। इसलिए वे कांग्रेस से अलग होकर भी निराश नहीं हुए और भविष्य में होनेवाले विघटन को देखकर दलितोद्धार तथा शुद्धि आंदोलन में लग गये। जिनके पूर्वज राम-कृष्ण के भक्त थे, भारतीय संस्कृति के पुजारी रहे थे, आज उन्हें ईसा-मूसा की भेड़ों में सम्मिलित देखकर उनकी आत्मा रो पड़ती थी। स्वामी जी को यह ज्ञान पहले ही होगया था कि यदि हिन्दू-धर्म से भूले-भटके इन लोगों को शुद्ध नहीं किया गया तो यह देश स्वतन्त्र होकर भी अखण्ड नहीं रह सकता। अतः स्वामी जी पूरी शक्ति से शुद्धि आंदोलन में लग गये। स्वामी की बातों में जादू जैसा प्रभाव होता था, जिसके कारण पर्याप्त संख्या में मुसलमान स्वामी जी के भक्त बन गये थे और उसी का यह परिणाम हुआ कि जिस

दिल्ली की जामामस्जिद से कभी किसी हिन्दू का भाषण नहीं हुआ था, वहां इस निडर संन्यासी का बिना किसी सुरक्षा के भाषण हुआ। जिसमें स्वामी जी ने वेदमन्त्र का पाठ करके, वेद के मानवधर्म का उपदेश दिया, जिसका बड़ा प्रभाव हुआ। परन्तु एक असगरी बेगम को शुद्ध करके जब शांतिदेवी बनाया गया तो इस घटना से मजहब के उन्मादी मुसलमान स्वामी जी से रुष्ट होगये, जिसके कारण एक मदांध अब्दुल रसीद ने २३ दिसम्बर, १९२६ को सायंकाल स्वामी जी के निवास स्थान (श्रद्धानन्द बाजार में) आकर स्वामी जी के शरीर को गोली मारकर छलनी-छलनी कर दिया। स्वामी जी हमारे बीच नहीं रहे, परन्तु उनके चलाये शुद्धि आंदोलन का कार्य स्वामी जी की मृत्यु के बाद मन्द पड़ता गया। यदि आर्यजाति यह भूल न करती तो हमें १९४७ में भारत को खण्ड-खण्ड न देखना पड़ता और अब भी सचेत होकर शुद्धि आंदोलन को तीव्रता देकर चलायें तो हमारा देश भविष्य में होनेवाले विघटन से तथा विघटित करनेवाली शक्तियों से बच सकता है। अन्यथा उत्तरोत्तर विघटन का भूत बढ़ता ही जारहा है, इससे रक्षा का अन्य कोई उपाय नहीं है।

३. भारतीय संस्कृति के अनन्य भक्त—

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जब संन्यास नहीं लिया था, उस समय उनका नाम मुन्शीराम था। एक दिन आपकी बच्ची स्कूल से पढ़कर घर पर आई तो वह गा-गाकर बोल रही थी—

ईशा-ईशा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल।
ईशा मेरा राम रमैय्या, ईशा मेरा कृष्ण कन्हैया॥

बालिका के गाने को सुनकर मुन्शीराम स्तब्ध रह गये और गम्भीरता से विचारने लगे कि इसमें बालिका का क्या दोष है? इसे तो जैसा स्कूल में सिखाया गया है, वैसा ही यह बोल रही है। इसमें हमारा ही दोष है जो अपने बच्चों को ईसाई स्कूलों में भेजकर अपनी संस्कृति व सभ्यता का शत्रु बना रहे हैं। ऐसी शिक्षा दिलाने से भी क्या लाभ, जिससे अपने पूर्वजों के प्रति घृणा पैदा हो जाये और अपनी संस्कृति से बहुत दूर हो जायें। मुन्शीराम जी ने तभी एक दृढ़ता से निर्णय लिया कि लड़कों के गुरुकुलों की भांति लड़कियों के लिए भी गुरुकुल खोलूंगा और कन्या गुरुकुल की स्थापना करके उसमें अपनी बालिका को प्रवेश कराया। ऐसे संस्कृति भक्त महात्मा के बलिदान दिवस पर क्या हमारे मनों में भी कुछ चिन्तनशक्ति जागृत होगी, जो अपने बच्चों को अंग्रेजी सभ्यता की छत्र-छाया में चलनेवाले तथा अराष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत शिक्षणालयों में सहर्ष भेज रहे हैं। क्या वे इस बात को भूल जाते हैं कि ऐसे विद्या केन्द्रों में पढ़कर हमारी भावी सन्तान का जीवनपथ क्या होगा? जिस संस्कृति व सभ्यता को सात सौ वर्ष तलवार के बल से मुस्लिम शासक तथा १५० वर्षों तक कूटनीतिज्ञ अंग्रेज शासक नहीं मिटा सका, आज वही संस्कृति स्वतः ही मिट रही है। क्या हम तथाकथित विदेशी ताकतों के षड्यन्त्रों से सावधान होने की बात भी सोचते हैं? यदि नहीं, तो ऐसे महात्माओं के बलिदान दिवस मनाने से क्या लाभ है?

सच्चे दानवीर—

एक बार मुन्शीराम जी गुरुकुल कांगड़ी को चलाने के लिए किसी सम्पन्न व्यापारी के घर पर चन्दा लेने के लिए गये। घर का स्वामी घर पर ही था, किन्तु दो-तीन बार आवाज देने पर भी घर से बाहर नहीं आया। मुन्शीराम जी विचारने लगे, क्या कारण है कि जो यह सेठ हम से मिलना भी

नहीं चाहता। बहुत सोचने पर ध्यान आया कि अभी मेरे अन्दर कुछ कमी है, अभी मैं सच्चा भिक्षुक नहीं बना हूं। क्योंकि अभी मेरे पास घर का मकान है, जिसका मैं मालिक हूं, फिर मैं भिखारी कैसा? इसी विचार धुन में चन्दा करने का काम बन्द करके गुरुकुल में पहुँच गये। एक सरकारी दस्तावेज मंगाकर घर के मकान को भी गुरुकुल को दान करने की इच्छा प्रकट की, किन्तु फिर ध्यान आया कि तेरे दो लड़के हैं, ऐसा न हो कभी वे बाद में मुकदमा करें, पहले मैं उनसे भी पूछ लेता हूं। क्योंकि पैतृक सम्पत्ति पर तो उनका भी अधिकार है। दोनों बच्चों को बुलाकर बड़े प्रेम से उनको बात समझाई कि देखो बच्चो! अब तुम समझदार होगये हो। मैंने यह दस्तावेज लिखा है, इसके एक-एक अक्षर को पढ़कर इस पर अपने हस्ताक्षर करना। बच्चों ने उस कागज को ध्यान से पढ़ा और अपने पिता की हार्दिक इच्छा में विघात न करते हुए, उस कागज पर हस्ताक्षर कर दिये। तत्पश्चात् स्वामी जी ने गुरुकुल के उत्सव पर यह घोषणा की कि अब मैं सच्चा भिखारी बन गया हूं। मेरे पास अभी तक पैतृक भवन था, उसे मैं आज गुरुकुल को दान दे रहा हूं।

पाठकगण! विचार करें कि इससे बड़ा दान कौन-सा हो सकता है कि जिसने अपने निवास स्थान को भी परोपकारार्थ दान में दे दिया। आज हम परिवार की चिन्ता में ही लगे रहते हैं, समस्त जीवन में उन्हीं के सुख आराम का सामान जुटाने में लगे रहते हैं और उसके बाद यदि कुछ धन बचता दिखाई देता है तो हम दान कर पाते हैं, किन्तु इस सच्चे साधु के जीवन को देखिए कि जिसने अपने बच्चों के निवास के घोंसले को भी छिन्न भिन्न कर सार्वजनिक हित में दान कर दिया।

५. राष्ट्रभक्त सच्चे पारखी नेताओं की श्रद्धांजलि—

संस्कृति में एक लोकोक्ति है—'अहो किमपि चित्राणि चरितानि महात्मनाम्' अर्थात् महापुरुषों के जीवन चरित्र बहुत अनोखे ही होते हैं। उनके जीवन का सही मूल्यांकन महान् पुरुष ही कर पाते हैं। पाठक उन्हीं के शब्दों में पढ़ें और विचार करें—

१. वीरता और बलिदान की मूर्ति—(लोहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल)

स्वामी श्रद्धानन्द जी की याद आते ही १९१९ का दृश्य मेरी आंखों के सामने खड़ा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी में हैं। स्वामी जी छाती खोलकर सामने आते हैं और कहते हैं—'लो चलाओ गोलियां।' उनकी उस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं हो जाता। मैं चाहता हूं कि उस वीर संन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावों को भरता रहे।

२. उनका सत्य ही जीवन था—(कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर)

श्रद्धानन्द जी की भारत को देन उनकी सत्य में अगाध श्रद्धा है। श्रद्धानन्द का यह नाम ही उनकी उस भावना का परिचायक है।...... उनके लिए सत्य और जीवन एक होगये। उनकी मृत्यु उनके निर्भीक अनथक प्रयत्नों के अमर चित्रों को आलोकित करती हुई एक प्रकाश की किरण की तरह हमारे सामने आती है।

३. सच्ची राष्ट्रभक्ति के प्रेरणा-स्रोत—(श्री राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन)

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल की स्थापना कर, हिन्दी को मुख्य स्थान देकर शिक्षा सम्बन्धी दूरदर्शिता और सच्ची राष्ट्रीयता का रास्ता दिखा दिया था। उनकी सात्विक सरलता,

सिद्धांतों में दृढ़ता, देश; मानव, समाज तथा प्राणिमात्र के लिए सच्चा प्रेम और स्वाभाविक निर्भयता आदि गुणों की छाप आज भी मेरे हृदय पर अंकित है और मेरे जीवन की सुरक्षित सम्पत्ति है।

४. स्वामी जी प्रथम सांस्कृतिक पथ-प्रदर्शक थे-(श्री डा. राजेन्द्रप्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति)

क) स्वामी जी के गुणों को भारतवर्ष १९१९ ई० के बाद ही पूरी तरह से जान सका। वे स्पष्ट-वादिता और निर्भीकता के मूर्तिमान स्वरूप थे। (ख) जो लोग काले कानून के विरोधी आंदोलन के समय चांदनी चौक में मौजूद भी थे, उनके हृदय-पटल पर भी स्वामी जी की वह निर्भीकता मूर्ति रूप से चित्रित है। (ग) उनकी शुद्ध तथा उच्च भावना ने ही जामामस्जिद के मिम्बर पर से उनसे उपदेश करवाया और हिन्दू मुस्लिम एकता का मनोरम दृश्य दिखलाया। (घ) भारत के आधुनिक इतिहास में स्वामी जी का स्थान प्रथम सांस्कृतिक पथ-प्रदर्शक का है।

५. हिन्दू-मुस्लिम एकता तथा निर्भीकता के प्रतिमूर्ति-(भारत के प्रधानमन्त्री श्री पं. जवाहरलाल)

क) आर्यसमाज के इस प्रमुख नेता ने देहली की शानदार जामामस्जिद की वेदी पर खड़े होकर हिन्दुओं तथा मुसलमानों के सम्मिलित विशाल जनसमुदाय को हिन्दू-मुस्लिम एकता तथा भारतवर्ष को स्वतन्त्रता का सन्देश दिया था।

ख) स्वामी श्रद्धानन्द में इस प्रकार का निर्भीकतापूर्ण साहस आश्चर्यजनक मात्रा में विद्यमान था। वृद्धावस्था में भी उनकी उन्नत सीधी आकृति तथा संन्यासी वेश में उच्च भव्य-मूर्ति, लम्बा, कद शाहाना शकल——इस सजीव मूर्ति को मैं कैसे भूल सकता हूं।

६. वे वीरों के समान मृत्यु को प्राप्त हुए—(राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी)

क) वे वीर के समान जिये और वीर के समान मरे।

ख) गीता के शब्दों में 'सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम्। धन्य और सौभाग्यशाली वे पुरुष हैं जिनको ऐसी मृत्यु प्राप्त होती है।

ग) स्वामी श्रद्धानन्द एक सुधारक थे। कर्मवीर थे, वाक्शूर नहीं। (सम्पादक)

(दयानन्द सन्देश दिसम्बर, ८७ से साभार)

शोक प्रस्ताव एवं श्रद्धांजलि

दिनांक १०-१२-८७ को अध्यक्ष श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी की अध्यक्षता में आर्यसमाज कंवारी ने शोक सभा की, जिसमें सेठ गोविन्दराम आर्य के निधन पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई व प्रधान जी ने उनके जीवन के क्रियाकलापों का संक्षिप्त विवरण बताया। इसके अलावा ग्राम कंवारी के सैनिक नौजवान श्री अत्तरसिंह सांगवान फौजी का पागल कुत्ते के काटने से आकस्मिक मृत्यु दिनांक ७-१२-८७ को होगई। देहरादून से आज यहां गांव में अन्त्येष्टि संस्कार किया गया। इस २६ वर्षीय होनहार नवयुवक के निधन से सारे गांव में शोक छागया।

आर्यसमाज कंवारी ने शोकसभा में दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि दी गई व परमात्मा से प्रार्थना को गई कि उनकी आत्माओं को शांति दे व शोक-संतप्त परिवार को सहानुभूति एवं साहस दिलाने के लिए घर पर गये। नौजवान अपने पीछे एक छोटी बच्चो को छोड़ गये हैं। —उपमन्त्री इन्द्रसिंह आर्य, आर्यसमाज, कंवारी

स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी दयानन्द ने मृत्यु के समय आर्यसमाज का नेतृत्व किसी व्यक्ति के हाथ में नहीं छोड़ा था। ईश्वर के भरोसे मानो वे चल दिये। १८८३ ई० के बाद स्वयं ही आर्यसमाज में व्यक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ। इन व्यक्तियों में स्वामी श्रद्धानन्द का व्यक्तित्व सर्वशिरोमणि है। १८८३ से १९२६ तक का मुन्शीराम-श्रद्धानन्द का इतिहास ही आर्यसमाज का इतिहास है।

स्वामी श्रद्धानन्द ने इस शती के प्रथम पाद में भारत के इतिहास में मार्मिक भूमिका निभाई। आर्यसमाज में दयानन्द के बाद श्रद्धानन्द-सा दूसरा व्यक्ति देखने में नहीं आरहा।

गुरुकुल के अनगिनत स्नातकों के कुलगुरु महात्मा मुन्शीराम थे, न कि श्रद्धानन्द। मुन्शीराम और श्रद्धानन्द दो अलग-अलग व्यक्तित्व हैं। मुन्शीराम के रूप में वे महात्मा थे, गांधी के अत्यन्त निकट, गुरुकुल प्रणाली के उन्नायक, शिक्षा के क्षेत्र में अनन्य प्रयोगी तथा टैगोर की समकक्षता के शिक्षा शास्त्री।

दूसरा उनका स्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द का रहा। राष्ट्र-उलझनों में फंसे हुए—कभी मालवीय के साथ, कभी महसभा के साथ, कभी उनसे दूर भागते हुए अत्यन्त विवादास्पद व्यक्तित्व, पर उनके सामने एक आलोक था—महर्षि दयानन्द का। उसका उन्हें पुरस्कार मिला २३ दिसम्बर, १९२६ को सायंकाल ४ बजे दिल्ली में अब्दुल रसीद की गोलियों से बलिदान होकर, वे सदा के लिए अमर हो गये।

ऐसे महामानव के चरित्र के विविध रूपों का चित्रण उनके ग्रन्थों, लेखों, सम्पादकीयों में सुरक्षित कर दिया है स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली में। बहुत-बहुत साधुवाद बधाई और स्नेह सहित आशीर्वाद।

—स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

गुरुकुल ढाणा लाडनपुर जि. भिवानी की अपील

सन् १९८९ में जिला भिवानी में प्रथम गुरुकुल ढाणा लाडनपुर की स्थापना की गई। यह भिवानी शहर से पूर्व की ओर ५ किलोमीटर की दूरी पर ढाणा नरसाण रोड पर है। इसमें ऋषियों द्वारा निर्दिष्ट एवं वेदानुकूल विधि द्वारा ही पढ़ाई कराई जाती है। यहां पर बालकों के शारीरिक, चारित्रिक, बौद्धिक एवं आत्मिक विकास की ओर पूर्ण ध्यान दिया जाता है। राष्ट्र को स्वस्थ, योग्य, विद्वान् और सबल नागरिक समर्पित करना ही मुख्य लक्ष्य है। संस्था के शैशव अवस्था में होने के कारण बालकों के आवास, कक्षालयों, भण्डार, स्नानागार, रसोई आदि सभी चीज़ों का अभाव है।

दान गुरुकुल ढाणा लाडनपुर चैरीटी ट्रस्ट के नाम से चेक, बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा भेजा जा सकता है

निवेदक—प्रेमराज प्रधान गुरुकुल ढाणा लाडनपुर चैरीटी ट्रस्ट, जि० भिवानी

जाफना लंका के मोर्चे पर वीरगति को प्राप्त—

जसौर खेड़ी रोहतक का अमर बलिदानी लाँसनायक राजवीरसिंह आर्य

—निहालसिंह आर्य जसौर खेड़ी

यह तो सर्वविदित ही है कि हमारी भारतीय सरकार ने जाफना नगर लंका में वहां के उपद्रवियों तथा तमिलों के मध्य निरन्तर लड़ाई को समाप्त करने के लिये भारत के सुरक्षा विभाग से शांति सेना भेजी हुई है। जहां कई मास के संघर्ष में भारतीय सेना राजपूताना राइफल्स के बहुत वीर सैनिक बलिदान हो चुके हैं। १६-१०-८७ को जाफना शहर के निकट साढे ग्यारह बजे की धुवांधार लड़ाई में ग्राम जसौर खेड़ी, रोहतक का अदम्य वीर लाँसनायक राजवीरसिंह (सुपुत्र श्री रामनारायण सुपुत्र चौधरी कीरताराम) भी शौर्यपूर्वक लड़ता हुआ घायल होकर, वीरगति को प्राप्त होकर अपने वंश, ग्राम, हरयाणा तथा भारत माता का नाम अमर कर गया। यह वीर बालक अपनी दूसरी कक्षा से ही यह गाना गाया करता था—

हम भर्ती होंगे फौज में, मेरा देश रहेगा मौज में।

दशम कक्षा उत्तीर्ण करके, युवक होते ही सेना में भर्ती होगया। यह आर्योचित संस्कारों से सज्जित बड़ा शिष्टाचारी उत्साही युवक था, जो सात वर्ष की सैन्य सेवा से २४ वर्ष की आयु में भरपूर जवानी में लम्बे तगड़े दर्शनीय स्वास्थ्य में वीरगति को भेंट होगया। हम सब परिजन, प्रियजन, बांधवगण तथा स्वदेशवासी इस वीर युवक को दिवंगत आत्मा की सद्गति और स्थिर शांति के लिये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु इस वीर की धर्मपत्नी कमलेश देवी, इसके परिजनों को धीरज सांत्वना दे।

राजपूताना राइफल्स की पांचवीं बटालियन नेपियर्स के सुयोग्य वीर कमांडिंग अधिकारी श्री भगतकुमार खन्ना लेफ्ट. कर्नल महोदय ने राजवीरसिंह की धर्मपत्नी के नाम ग्राम में मार्मिक सहानुभूति पत्र इस प्रकार से भेजा है—

मोहर-वीरभोग्या वसुन्धरा—संवेदना-पत्र—३० अक्तूबर, ८७

१—बहुत ही दुःखी दिल से मैं आपके पति नं० २८७३८७० लांसनायक राजवीरसिंह की मृत्यु की सूचना दे रहा हूं। वह एक बहादुर सैनिक की तरह दुश्मन से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। वह जाफना शहर के निकट लड़ाई में पलटन के अग्रसर था कि दुश्मन ने अचानक मशीनगनों तथा आधुनिक शस्त्रों से पलटन पर हमला कर दिया। लांसनायक राजवीरसिंह दुश्मन के हमले को नकारा करते हुए आगे बढ़ रहा था, लेकिन धुआंधार बम्बारी और गोलियों की बौछार में दिनांक

१६-१०-८७ को साढे ग्यारह बजे घायल हुआ और घटनास्थल पर ही वीरगति को प्राप्त हुआ।

२—उसके शव का जाफना शहर के पास १६-१०-८७ को ७ बजे पूर्ण सैनिक सम्मान के साथ दाह-संस्कार किया गया।

३—लांसनायक राजवीरसिंह एक बहादुर सैनिक था। उसने अद्वितीय साहस और कर्त्तव्य परायणता का बहुत ही शानदार उदाहरण दिया है। उसके उच्च स्तर के महान् बलिदान को पलटन के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा। जो हमेशा चमकता रहेगा।

४—उसका अचानक हमारे बीच में से चला जाना, पलटन के प्रत्येक व्यक्ति के दिल में अत्यन्त दुःख है। यह क्षति पूर्ण नहीं हो सकती। हमारी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उसकी दिवंगत आत्मा को शांति दे और साथ ही आपको इस अपार क्षति के सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

५—हम आपकी हर प्रकार की सहायता करने की कोशिश कर रहे हैं। आप घबराय नहीं।··· मैं आपकी हर सम्भव सहायता करने का भरसक प्रयत्न करूंगा।

भवदीय

श्रीमती कमलेश देवी W/o	भगतकुमार खन्ना
२८७३८७ एन लांसनायक	ले० कर्नल कमान अफसर
राजवीरसिंह गांव जसौर खेड़ी	५ राज. राइफल्स
जिला रोहतक (हरयाणा)	मार्फत ५६ सेना डाक घर

उपरोक्त सहृदय सहानुभूतिशील सदात्मा कर्नल महोदय शिष्टाचार के सुपात्र हैं। वीर राजवीरसिंह की माता का कथन है कि मेरा वीर बेटा लंका में भांग के भाड़े (व्यर्थ) मारा गया। यदि भारत माता की रक्षा में बलिदान देता तो मुझे विशेष गर्व होता। इसकी धर्मपत्नी का कथन है कि मुझे अपने पति का असह्य वियोग संतप्त कर रहा है, परन्तु सन्तोष है कि मेरा पति निर्भय लड़ता स्वर्ग सिधारा। ये वीर वीरांगनायें सहानुभूति, आत्मीयता तथा सुयश के भागी हैं। जब ५-११-८७ को वीर राजवीरसिंह की अस्थियां जसौर खेड़ी पहुंची तो सारे ग्रामवासी शोक विह्वल हो, उसकी माता, पत्नी, परिजनों को धैर्य दे रहे थे, परमात्मा सब की सहायता करता है।

—आर्यसमाज जसौर खेड़ी, रोहतक

शोक समाचार

मेरी पूज्या माता जी श्रीमती रत्नादेवी जी का ६-१२-८७ ई० को स्वर्गवास होगया है। इसके उपलक्ष्य में २०-१२-८७ ई० को १० बजे प्रातःकाल यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। ग्राम पंचायत तथा आर्य सज्जनों ने सभा में उपस्थित होकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

—कु० शांति स्नातिका आचार्यकुल लोवाकलां

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा—

सूखाग्रस्त ग्रामों में सांडों तथा झोटों की सुरक्षा हेतु सहायता वितरित

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से गाय तथा भैंस की सर्वोत्तम नसल की सुरक्षा हेतु साड तथा झोटो के लिए चारे-दाने की व्यवस्था करने के लिए सूखाग्रस्त ग्रामो में जहा नहर तथा नलकूपों के पानी की सुविधा नही है, वहा सहायता अनुदान वितरित की जारही है।

नवम्बर माम में ३२८०० रु० की सहायता दी गई थी। ११-१२ दिसम्बर को तहसील झज्जर के निम्नलिखित सूखाग्रस्त ग्रामो में निम्न प्रकार सहायता सभाप्रधान प्रो० शेरसिह जी ने सभा उपदेशक पं० अर्जुनदेव आर्य एव प० सुखदेव शास्त्री के सहयोग से ग्रामीण जनता की उपस्थिति में सरपचो एवं सामाजिक कार्यकर्त्ताओ की बनी समिति को वितरित किया।

ग्राम याकुबपुर दो हजार, ग्राम कालियावास दो हजार, ग्राम खाचगैलो दो हजार, ग्राम ढाणा तथा ढाणीवास तीन हजार, ग्राम सिकन्दरपुर दो हजार, ग्राम पाटौदा तीन हजार, ग्राम खेडी सुलतान दो हजार, ग्राम रतनथल दो हजार, (कुल १८०००+३२८००=सर्वयोग ५०८०० रु० की राशि अब तक वितरित की जा चुकी है।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

सूखा सहायतार्थ सभा को प्राप्त दान सूची

गतांक से आगे—

कमल मेटल प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली	२१००)
स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती गुरुकुल झज्जर	१०१)
मन्त्री आर्यसमाज सुण्डाना जि० रोहतक	१००)
" " नई कालोनी गुडगाव	२५०)

इन सभी दानदाताओ का सभा की ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद। आर्यसमाजो के अधिकारियो तथा दानदाताओ से निवेदन है कि गोवश की रक्षा के लिये अधिक से अधिक दान मनीआर्डर द्वारा भेजकर पुण्य के भागी बनें। सभा को जितना-जितना दान प्राप्त होता जायेगा, उसे तुरन्त सूखाग्रस्त ग्रामों में वितरित कर दिया जायेगा।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

अंग्रेजी का बन्धन तोड़ो

रचियता—डा० कृष्णलाल, आचार्य, संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

पर्वतराज हिमालय बोलो, घाटी के फूलो तुम बोलो,
खेतो कलखानो तुम बोलो, घर-घर धरती के कण बोलो।
गगा यमुना गोदा बोलो, महानदी कावेरी बोलो,
सतलुज व्यास नर्मदा बोलो, ब्रह्मपुत्र कृष्णा तुम बोलो।
लालकिले के वैभव बोलो, तात्या की सास तुम बोलो,
सूर्य मन्दिर मुदरे बोलो, अजन्ता और अलोरा बोलो।
सागर की लहरो तुम बोलो, हुगली, पुरी, बम्बई बोलो,
मद्रास, रामेश्वरम् बोलो, उठो कुमारी कन्या बोलो।
चला गया अग्रेजी शासन, हम अग्रेजी नही सहेगे।
हम शिक्षा मे अपनी भाषा, मे ही सब कुछ पढा करेगे।
अनिवार्य विदेशी भाषा का बोझ क्यों अपने सिर लाद।
स्वतन्त्र देश के रहनेवाले, निज भाषा मे भाव सजादे।
भाषाओं की जननी संस्कृत, प्रबल सयोजक सूत्र हमारा।
इसको शिक्षा से हटा रहे, लगता सिर घूमा तुम्हारा।
अपनी संस्कृति की रही वाहिका, इतिहास पुरातन बतलाती।
जो भाषा है सारे जग मे, भारत मा का शीश उठाती।
जिसमे ज्ञान-विज्ञान भरा है, जिसमें गहरा वैदिक दर्शन।
जिसे सजोया श्रेष्ठ काव्य से, नैतिकता का निर्मल दर्पण।
सन्त विनोवा गाधी नेहरू, तिलक राजेन्द्रप्रसाद जो भी।
मालवीय अरु राधाकृष्णन्, थके न कर गुणगान कभी।
उस संस्कृत को हटा रहे ये, नेता शिक्षा से नही सोचते।
देश का मूलाधार निकाल, भारत आत्मा कहा खोजते।
है पहचान स्वतन्त्र देश की, उसकी अपनी प्यारी भाषा।
उससे ही उन्नति सम्भव है, वही बनो जन-जन की आशा।
अग्रेजी का ज्ञान अधूरा, अग्रेजी का ज्ञान उधारा।
निज भाषा से सब सम्भव है, यदि हो निश्चय प्रबल हमारा।
बोलो पत्थर, नदिया बोलो, धरती और गगन तुम बोलो।
हटाओ शिक्षा से अग्रेजी, अब तो मुख अपना तुम खोलो।

न्यायालय से अंग्रेजी को, जाना होगा जाना होगा।
ऊंची शिक्षा नौकरियों से, अंग्रेजी को जाना होगा।
अपनी धरती पर सबको ही, वहां की वायु पर अधिकार।
स्वच्छन्द सांस लें साथ विचारें, हो जायें मन से एकाकार।
जन-जन की भाषा में बोलो…मन को दासता नहीं चलेगी।
काले बाबू को गिटपिट की, अंग्रेजी अब नहीं चलेगी।
चालीस वर्ष हुए अभी भी, स्वतन्त्रता रही अधूरी है।
अंग्रेजी को नहीं छोड़ते, ऐसी भी क्या मजबूरी है।
उठकर मेरे युवको बोलो…और दासता नहीं सहेंगे।
अंग्रेजी का रोड़ा अब तो, नहीं सहेंगे ! नहीं सहेंगे।
निकाल अंग्रेजी शासक को, स्वतन्त्र पताका फहराई।
तोड़ो अंग्रेजी के गढ़ को, सुखद हवा देखो फिर आई।
स्वच्छन्द मस्तिष्क से सोचें, रटना नहीं पड़े कुछ भी फिर।
उन्नति के कैसे शिखरों पर, अपनी भाषा से जाता सिर।
अपना देश अरु अपना वेष, अपनी भाषा ही श्रेयस्कर।
आओ करें प्रतिज्ञा भाई, अपने ध्वज के नीचे आकर।
अपने गौरव के लिए सभी, अपनी भाषा अपनायेंगे।
झूठी आभा अंग्रेजी की, उसको हम दूर भगायेंगे।

❀

हरयाणा में आर्यसमाजों की गतिविधियां

आर्यसमाज जगाधरी वर्कशाप जि० अम्बाला	२२ से २५ दिसम्बर
आर्य वरिष्ठ उच्च विद्यालय पानीपत जि० करनाल (स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस)	२३ ,,
आर्यसमाज सोलधा जि० रोहतक	२३ से २५ ,,
,, सब्जी मण्डी नारनौल जि० महेन्द्रगढ़	२६-२७ ,,
,, सिवानी मण्डी जि० सिरसा	२३ से २७ ,,
श्रीमद्भगवद्गीता गोष्ठी दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र	२६ ,,

जो आर्यसमाज अपने यहां वार्षिक उत्सव अथवा प्रचार कार्यक्रम रखना चाहते हैं, उनसे निवेदन है कि सभा से पत्र-व्यवहार करके तिथि नियत करवा लेवें, ताकि प्रबन्ध करने में सुविधा रहे.

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

क्र०	पुस्तकों का नाम	मूल्य
१.	दी वेदाज (अंग्रेजीभाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२.	दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज—पं० चमूपति एम०ए०	१-५०
३.	जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)—पं० चमूपति एम०ए०	३-००
४.	निहारिकावाद और उपनिषद्—पं० चमूपति एम०ए०	०-५०
५.	आर्यसमाज की विचारमाला—पं० क्षितीशकुमार वेदालंकार	१-००
६.	निजाम की जेल में—लेखक पं० क्षितीशकुमार ,,	२०-००
७.	ईसाइयों की प्रचार प्रणाली—पं० जगत्कुमार शास्त्री	००-१०
८.	आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण-पं. ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
९.	बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय)	४-५०
१०.	ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
११.	हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१२.	धर्म-प्रवेशिका —डा० रणजीतसिंह	३-००
१३.	धर्म-भूषण ,,	५-००
१४.	पंजाब का आर्यसमाज —प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१५.	आदर्श धातु रूपावली —महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१६.	वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१७.	स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-०८
१८.	मूर्तिपूजा —सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१९.	वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
२०.	वेदाविर्भाव ,,	१-००
२१.	वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
२२.	ईसाई पादरियों की आर्यसमाज को चुनौती-स्वा० दर्शनानन्द	०-१०
२३.	गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४.	सत्यार्थप्रकाश ,,	१०-००
२५.	महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२६.	हमारा फाजिल्का —योगेन्द्रपाल	१-००

२७	बड़	—स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती	१-५०
२८	वीर हेमू	,,	००-७५
२६	पीपल	,,	१-५०
३०	मिर्च	,,	१-५०
३१	श्लीपद वा हाथीपाव की चिकित्सा	,,	०-२०
३२	बिच्छू विष चिकित्सा	,,	०-५०
३३	लवण	,,	१-२५
३४	विदेशों में मैंने क्या देखा	,,	२-५०
३५	नैरोबी यात्रा	,,	१-५०
३६	ब्रह्मचर्य साधन ६ ११	,,	१०-००
३७	,, १-२	,,	१-००
३८	,, ३	,,	१ ००
३६	,, ४	,,	२-५०
४०	,, ५	,,	२-००
४१	,, ६	,,	३-००
४२.	,, ७ ८	,,	२-००
४३.	,, ६	,,	३-००
४४	,, १०	,,	१-५०
४५.	,, ११	,,	२-००
४६	हल्दी	,,	१-५०
४७	नीम	,,	१-२५
४८	कर्त्तव्य दर्पण—म० नारायण स्वामी		४-००
४६.	विद्यार्थी जीवन रहस्य—म० नारायण स्वामी		२-५०
५०	योग रहस्य	,, ,, ,,	४-५०
५१	आर्यसमाज क्या है ?	,, ,, ,,	२-००
५२	कथा माला	,, ,, ,,	१-२५
५३	संस्कारविधि		६-००
५४	वैदिकधर्म परिचय—प० जगदेवसिंह सिद्धांती		३-५०
५५	वदिक यज्ञ-पद्धति—सार्वदेशिक		००-६०
५६	मृत्यु के पश्चात् जीव की गति—श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती		१-५०

प्राप्ति स्थान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, सिद्धान्ती भवन, रोहतक।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द महाराज का जन्म दिवस

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के सर्वाधिकारी, दयानन्दमठ, दीनानगर एवं दयानन्दमठ रोहतक के संस्थापक, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के स्तम्भ स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्मदिवस ३ जनवरी, १९८८ तदनुसार पौष सुदी पूर्णमासी को दयानन्दमठ, रोहतक में बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा।

इस अवसर पर २७ दिसम्बर से प्रतिदिन यज्ञ एवं वेदकथा का आयोजन किया गया है। ३ जनवरी को छात्र एवं छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता और स्वामी जी विद्वानों द्वारा श्रद्धांजलियां दी जायेंगी।

—महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी, मन्त्री दयानन्दमठ, रोहतक

कुसंग त्याग

सर्पदुर्जनयोर्मध्ये वरं सर्पो न दुर्जनः।
सर्पो दशति कालेन दुर्जनस्तु पदे-पदे॥

सर्प और दुर्जन दोनों में सर्प अच्छा है, क्योंकि सर्प मनुष्य को डसकर एक बार में ही समाप्त कर देता है. परन्तु दुष्ट मनुष्य पद-पद पर सबको दुःख देता रहता है।

तजो रे मन ! अधमजनों का संग।
दूषित बुद्धि विचार बनावे हिय जिनका है तंग॥
ज्ञान-विवेक रहित जीने का उचित न कोई ढंग।
जीवन का शुभ लक्ष्य न कोई करें अकारण जंग॥
सज्जन का अनहित करने को फड़के जिनके अंग।
नरतन में पशुता पाकर हम रह जाते हैं दंग॥
कागा बन कटुवाणी बोले नित उठ करें कुसंग।
पदे-पदे दुःख देते उनसे उत्तम कृष्ण भुजंग॥
पर उन्नति से डाह करें मनमाहिं जो उठी तरंग।
"छाजूराम" शुभ कर्म लिखें जहां करें रंग में भंग॥

रचयिता—कविराज छाजूराम शर्मा शास्त्री, नई दिल्ली

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 83207/73 रजि० न० P.RTK 40

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,०८८



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

सह-सम्पादक—डा० सुदर्शन

वर्ष १५, अङ्क ६ २८ दिसम्बर, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

आर्य विद्या परिषद् हरयाणा द्वारा

धार्मिक शिक्षा की परीक्षाओं में उच्च स्थान प्राप्त करने वाले छात्र तथा छात्राओं को पुरस्कार वितरित

(केदारसिंह आर्य निज संवाददाता द्वारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की विद्या परिषद् द्वारा आर्य विद्यालयों में प्रतिवर्ष वैदिकधर्म शिक्षा की परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है। गतवर्ष सम्पन्न हुई इन परीक्षाओं में जिन छात्र एवं छात्राओं ने प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ स्थान प्राप्त किया था, उन्हें स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान दिवस पर २३ दिसम्बर को आर्य वरिष्ठ उच्च विद्यालय पानीपत में डा. भवानीलाल जो भारतीय द्वारा पुरस्कार वितरित किये गये। पुरस्कार में सभा द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य तथा विशेष उपहार दिये गये।

इस शुभावसर पर आर्य विद्या परिषद् के प्रस्तोता श्री लाभसिंह आर्यसमाज पानीपत के प्रधान श्री रामानन्द, सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत जी शास्त्री एवं सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह जी आदि आर्य नेता उपस्थित थे। सभामन्त्री श्री वेदव्रत जो शास्त्री ने छात्र तथा छात्राओं को सम्बोधित करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा संचालित गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली की विशेषता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली चलाकर एक महान् कार्य आरम्भ किया था। प्रथम श्रेणी से संस्कृत तथा धर्म-शिक्षा अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती थी। गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक वेदों के प्रकांड विद्वान् ही नहीं, अपितु वे अन्य भाषाओं के भी विद्वान हुए हैं। उन्होंने सामाजिक सुधार तथा राजनैतिक क्षेत्र में भी ख्याति प्राप्त की है। श्री शास्त्री जी ने दुःख प्रकट करते हुए कहा कि आज डी० ए० वी० शिक्षण संस्थायें अपने मार्ग से भटक कर आज प्रथम से अंग्रेजी भाषा की पढ़ाई की व्यवस्था करने में गौरव अनुभव करती हैं। हमारे आर्य विद्यालयों में भी आर्य अध्यापकों की कमी होती जारही है, जिसके कारण आर्य विद्यालयों में वैदिकधर्म की शिक्षा की व्यवस्था नहीं रही। आपने हरयाणा के समस्त गुरुकुलों तथा आर्य विद्यालयों, डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों को सुझाव दिया कि वे ऋषि दयानन्द की मान्यताओं के अनुसार गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली को अपनावें। आर्य विद्यालयों में वैदिकधर्म की शिक्षा पर विशेष बल दिया जाये, तभी आर्य विद्यालयों में पढ़नेवाले छात्रों पर वैदिकधर्म का प्रभाव पड़ेगा। आर्य जनता इसी भावना से संस्थाओं को दान देती है। यदि विद्यालयों में नाम दयानन्द का और काम मैकाले का होता रहा तो आर्यजनता द्वारा आर्य संस्थाओं को दिया गया दान तथा सहयोग निष्फल हो जायेगा।

आर्य विद्या परिषद् के प्रस्तोता श्री लाभसिंह ने हरयाणा के आर्य विद्यालयों से पधारे छात्र तथा छात्राओं को परिषद् द्वारा १६ जनवरी, ८८ को होनेवाली परीक्षाओं में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने का अनुरोध किया।

पुरस्कार वितरण कार्यक्रम से पूर्व स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में छात्र-छात्राओं की आधुनिक शिक्षा प्रणाली के गुण दोषों पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डा० भवानीलाल जी भारतीय ने उच्च स्थान प्राप्त करनेवालों को पुरस्कार देते हुए स्वामी श्रद्धानन्द के गुणों को अपने जीवन में ढालने की प्रेरणा की और वैदिकधर्म को सर्वश्रेष्ठ बताते हुए कहा कि हमें पश्चिमी सभ्यता से दूर रहना चाहिए।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जो महाराज ने गुरुकुल कांगड़ी के पश्चात् गुरुकुल कुरुक्षेत्र की स्थापना की थी। यहां प्रतिवर्ष स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। अतः २३ दिसम्बर को दोपहर पश्चात् गुरुकुल के प्रांगण में यह दिवस श्री नेमचन्द जैन की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सभा के उपप्रधान महाशय भरतसिंह जी, पूर्व प्राचार्य एवं सभामन्त्री डा० रणजीतसिंह जी, सभामन्त्री श्री वेदव्रत जी शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह जी के अतिरिक्त नगर के गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

गुरुकुल के आचार्य श्री देवव्रत जी ने गुरुकुल की प्रगति का विवरण सुनाते हुए बताया कि गुरुकुल के छात्र शिक्षा, खेल आदि में प्रथम स्थान प्राप्त कर रहे हैं। यहां की गोशाला का हरयाणा में एक विशेष स्थान है। छात्रों को प्रतिदिन शुद्ध भोजन तथा गौ का दूध दिया जाता है।

गुरुकुल के छात्रों ने आसन व्यायाम तथा योग की क्रियाओं का भव्य प्रदर्शन करके सभी को चकित कर दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर उनके प्रभावशाली गायन तथा भाषण भी हुए।

समारोह के अन्त में गुरुकुल प्रबन्ध समिति के उपप्रधान श्री विश्वबन्धु आर्य एवं मुख्याधिष्ठाता श्री हंसराज जी ने सभी आगन्तुकों का हार्दिक धन्यवाद किया और गुरुकुल के संचालन में सहयोग देने की अपील की।

उलझन

—प्रा० भद्रसेन, डाक० साधु आश्रम, होशियारपुर-१४६०२१

यह एक औद्योगिक और व्यापारिक नगर है। इससे कुछ दूरी पर एक प्रसिद्ध नदी बहती है। इस नदी और नगर के मध्य में राजमार्ग से कुछ हटकर एक सेवाश्रम है। जिसमें एक वाचनालय, पुस्तकालय तथा धर्मार्थ औषधालय है। इससे समीपवर्ती क्षेत्र के लोग धन्वन्तरि जी की सेवाओं का लाभ उठाते हैं। इस आश्रम के संचालक का नाम सर्वप्रिय जी है, जो एक भूतपूर्व इन्जीनियर एवं एक बड़े औद्योगिक केन्द्र के भागीदार थे।

सर्वप्रिय जी की कार्यकुशलता से जहां भागीदार प्रसन्न थे, वहां उनकी लोक सम्पर्क भावना से कर्मचारी भी उन्हें अपना हितैषी समझते थे। वे कर्मचारी की खुशी-गमी में सदा उनके सहभागी बनते थे। भागीदारों और कर्मचारियों के किसी भी रिश्तेदार की मृत्यु होने पर सर्वप्रिय जी उसमें अवश्य ही सम्मिलित होते। इस परिवार के विशाल होने के कारण अकस्मात् मौत की कुछ ऐसी घटनाएं घटी, जिससे इनके मनमें अनेक जिज्ञासायें उभरी। इनके समाधान के लिए बहुत कुछ पढा और समय-समय पर आगे जब ऐसे अवसर आये तो महात्माओं को बुला करके सत्संग रचाये।

सर्वप्रिय जी का प्रथम पौत्र जब विशेषज्ञ बनकर आया तो अपने पुत्र को लोक सम्पर्क का कार्य सौंपकर कुछ सेवाभावियों के साथ मिलकर सेवाश्रम की स्थापना की। दो वर्ष पश्चात् यहां रविवार को सायंकाल सत्संग का कार्यक्रम भी प्रारम्भ होगया। एक दिन सत्संग से पूर्व कालेज के कुछ छात्र आये और संचालक जी से निवेदन किया कि हमारा साथी कमलेश एक योग्य विद्यार्थी है। इसके पिता जी की अकस्मात् मृत्यु हो जाने के कारण यह एकदम बदल गया है और बड़े अजीब-अजीब प्रश्न पूछता है। हम इसके किसी प्रश्न का उत्तर तो क्या दे सकते हैं? हां, इनसे उलटा हमारे मनमें भी अनेक आशंकायें उभर आती है। अतः आप से प्रार्थना है कि इन भावी सत्संगों में इन प्रश्नों पर प्रकाश डालने की कृपा करेंगे।

सर्वप्रिय जी ने उस दिन विद्यार्थियों और सत्संगियों को सम्बोधित करते हुए कहा—जैसे नवजात को पहली सर्दी, गर्मी विशेष अनुभव होती है। ऐसे ही जब किसी युवक के सामने मौत की कोई पहली घटना होती है और वह भी किसी विशेष कारण से। यदि वह विशेष रूप से निकटवर्ती की हो तो उसके प्रभाव से अजीब-अजीब प्रश्न उभरना एक स्वाभाविक बात है। जैसे हर मौसम का अपना प्रभाव होता है, ऐसे ही अपने अड़ोस-पड़ोस की घटनाओं का भी प्रभाव होता है।

इसके बाद अलग-अलग चीजों के उदाहरण दे-देकर समझाया कि जिस दुनियां में हम रहते है, उसमें हजारों चीजे ऐसी हैं जो स्पष्ट बनती हुई दिखाई देती हैं। समय के साथ वे चीजे फिर घिसने लगती हैं और वे जीर्ण होकर या किसी विशेष घटना से एकदम भी बिखर जाती हैं। इसी जन्म-मरण की कहानी को कठ-उपनिषद् के ऋषि ने 'सस्यमिव मर्त्यः पच्यते, सस्यमिवाजायते पुनः' के शब्दों द्वारा खेती की प्रक्रिया के आधार पर समझाने का प्रयास किया है।

मौत को दूर रखने के शक्तिभर अनेक प्रकार के प्रयास करने पर भी अमर आत्मा इस भौतिक शरीर को छोड़कर एक दिन अज्ञात दिशा का राह लेती है। जन्म और मरण की यह कहानी हमारे चारों ओर चल रही है। इस कहानी की मार्मिकता को ही किसी के बिछुड़ जाने पर मर गया, प्राणपखेरू उड़ गये, ठण्डा पड़ गया आदि शब्दो द्वारा संकेतित किया जाता है।

बदली हुई यह स्थिति जब किसी युवक के सामने पहली बार आती है तो इस अवसर पर अनेक जिज्ञासाये उसके मनमें हलचल ला देती हैं। जैसे कि—मौत किसकी होती है? जब आत्मा अमर है तो उस की मौत कैसी तथा मौत के भय से प्रत्येक भयभीत क्यो होता है और उसके लिये शोक क्यों करते हैं? उस आत्मा के साथ हमारे रिश्ते-नाते हैं या इस भौतिक शरीर के साथ? ये प्रश्न हर सोचनेवाले को इस अवसर पर बहुत कुछ सोचने के लिये विवश कर देते हैं। इन प्रश्नों के साथ एक और प्रश्नमाला भी उभर आती है कि इस अमर आत्मा का अपना स्वरूप क्या है? इस विनश्वर देह से उसका सम्बन्ध कैसे होता है? यह इसमें स्वतन्त्र है या परतन्त्र? इस आत्मा की देह में यदि स्वतन्त्र सत्ता है तो इस देह के परिवर्तनों का आत्मा पर प्रभाव होता है या नहीं? शरीर से आत्मा का वियोग किसी निश्चित काल पर होता है या अकाल मृत्यु भी हो सकती है? क्या सभी प्राणियों के शरीर उनके लिये एक जी-जंजाल हैं या यह, एक क्रमशः आगे बढने का अवसर है? इन सभी जिज्ञासाओं का सर्वप्रिय जी ने अनेक सत्संगों में क्रमशः समाधान बताया। हर प्रश्न के उत्तर के समय शास्त्रों के प्रमाणों और दृष्टांतों से चर्चा को स्पष्ट करते हुए उस-उस प्रश्न उत्तर को एक रोचक रूप दिया।

एक दिन आठवीं बेठक में संगीत प्रियजी के भजन के बाद सर्वप्रिय जी ने कहा—आज तक हमने जो चर्चा की हैं, उसका यजुर्वेद के एक मन्त्र 'अश्वत्थे वो निषदनम्। १२।७९' में बहुत ही सुन्दर विश्लेषण मिलता है। इसमें आता है कि हमारा यह संसार अश्वत्थ—अ+श्वत्थ है, अतः चलायमान है। केवल हमारे द्वारा बर्ती जानेवाली भौतिक चीजें ही नही, अपितु हमारा यह प्रिय शरीर भी पीपल के पत्ते की तरह पतनशील है। पता नही कब किधर से हवा का कैसा झोका आये और यह नीचे पड़ा हुआ दिखाई दे। अतः इस सुन्दर मानव चोले को रखने वालो! इसके अनोखेपन को समझो और सोचो। क्या इस अनमोल अवसर को प्राप्त करके हम इसका लाभ उठा रहे हैं या दूसरों को यही कहने का मौका दे रहे हैं कि 'चिड़ियो ने चुग जब खेत लिया, तब पछताये क्या होवत है।'

इस संसार में न जाने आने-जाने का यह क्रम कब से चल रहा है। पर इतिहास बताता है कि कुछ यहां ऐसे भी आये कि हजारों-लाखों साल बीत जाने पर भी हम उनको भूला न सके। उन्होंने अपनी विद्या, प्रज्ञा, साधना या कला से ऐसी अमिट छाप छोड़ी कि समय उनको किसी तरह भी धूलिसात् न कर सका। उनकी यह अमरता हर आनेवाले को एक सन्देश देती है कि हम इस दुनियां में चाहे कितने विवश हों, फिर भी हम इस चोले में आने के अवसर का लाभ उठाकर अपना और अपनों का जीवन कृतार्थ कर सकते हैं। तभी तो हरिवंशराम बच्चन ने कहा है—

अनगिनत राही गये इस, राह से उनका पता क्या।
पर गये कुछ लोग इस पर, छोड़ पैरों की निशानी॥
यह निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है।
खोल इसका अर्थ पंथी, पंथ का अनुमान करले॥

अतः इस अनोखे अवसर को प्राप्त करके हमें जीवन के रहस्यों को समझते हुए एक 'सुसंगत जीवनपथ' को अपनाना चाहिये।

इस तरह पन्द्रह बैठकों में इस 'जन्म-मरण की कहानी' को उपसंहार की ओर ले जाते हुए महात्मा जी ने कहा—मानव चोले में आकर हमें ऐसा प्रयास करना चाहिये कि हम अपनी मंजिल पर पहुंचकर, अपने लक्ष्य में सफल होने की खुशियों को स्पष्ट अनुभव कर सकें। इन्हीं सारी चर्चाओं को 'जन्म-मरण की उलझन' में विस्तार से समझाया गया है। यह रचना प्रकाशित होने पर ही पाठकों के हाथों में पहुंच सकती है, प्रतीक्षा कीजिए। कौन, कब पुस्तक प्रकाशन के लिए आगे आता है।

श्रीमद्भगवद्गीता साहित्यिक गोष्ठी का सफल आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की विद्या सभा की ओर से तथा हरयाणा साहित्य अकादमी के सहयोग से दिनांक २६ दिसम्बर, ८७ को दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र के प्रांगण में श्रीमद्भगवद्गीता पर एक साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम प्रातः ६ बजे यज्ञ की कार्यवाही से प्रारम्भ हुआ। यज्ञ तथा कार्यवाही का सफल संचालन गुरुकुल कुरुक्षेत्र के युवा आचार्य श्री देवव्रत जी शास्त्री ने किया।

इस गोष्ठी की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने की। इस अवसर पर दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र की प्राध्यापिकायें, छात्रायें, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं कुरुक्षेत्र नगर के गणमान्य नर-नारी उपस्थित थे।

डा० रणजीतसिंह जी पूर्व प्रधानाचार्य राजकीय महाविद्यालय दूबलधन, जि० रोहतक ने श्रीमद्भगवद्गीता के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आज से हजारों वर्ष पूर्व कुरुक्षेत्र की इस पवित्र भूमि पर योगिराज श्री कृष्ण ने महाभारतकाल के विख्यात योद्धा श्री अर्जुन को युद्ध के समय जो उपदेश एवं सन्देश दिया था, वह श्रीमद्भगवद्गीता के रूप में एक महान् धार्मिक ग्रंथ बन गया है, जिसे संसार की लगभग सभी भाषाओं में छापा जा चुका है। इसी ऐतिहासिक तथा धार्मिक ग्रंथ पर साहित्यिक गोष्ठी के आयोजन में वैदिक विद्वानों को आमन्त्रित किया गया है, ताकि इसका सन्देश सरल भाषा में सुनकर उपस्थित नर-नारी लाभान्वित हों।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व प्राध्यापक एवं सुप्रसिद्ध उर्दू कवि डा० बालकृष्ण जी मुत्सर ने अपना निबन्ध पढ़ते हुए २-३ प्रश्न उठाये और कहा कि "महाभारत के अनुसार युद्ध के १० दिन पश्चात् गीता का उपदेश श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिया और तभी तक इतिहास के विद्वान् उस स्थान को खोज नहीं सके कि यह उपदेश कुरुक्षेत्र के किस स्थान पर दिया गया था। यह खोज विद्वानों को करनी चाहिये। क्योंकि गीता वेदों का सार है।

श्रीमती डा० वसुन्धरा रिहानी दयानन्द वैदिक अनुसंधानपीठ पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ ने "क्या गीता का कर्मयोग ज्ञान और भक्ति रहित है?" इसी पीठ के शोध सहायक श्री नरसिंह पण्डा ने "गीता में त्रैतवाद", डा० भवानीलाल जी भारतीय अध्यक्ष दयानन्द वैदिक अनुसंधान पीठ पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ ने मुख्य वक्ता के रूप में अपना विद्वत्तापूर्ण निबन्ध १६ पृष्ठों पर आधारित "श्रीमद् भगवद्गीता आलोचनात्मक अध्ययन" पढ़कर सुनाया और उसकी व्याख्या करते हुए बताया कि गीता एक आर्ष ग्रंथ है और यह महाभारत का ही एक महत्त्वपूर्ण अंश है। यह धर्म, अर्थ, काम एवं पुरुषार्थ का विवेचन है। आर्यजाति का शानदार इतिहास है।

गोष्ठी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने कहा कि कुछ विद्वान् गीता के श्लोकों में प्रक्षेप मानते हैं। इस पर मतभेद है। अतः विद्वानों को इस पर शोध करना चाहिए। सभा प्रतिवर्ष किसी न किसी साहित्य विषय पर गोष्ठी का आयोजन करती है। गीता के उपदेश में आर्य और अनार्य की विस्तृत व्याख्या की गई है। इस गोष्ठी में जिन विद्वानों ने गीता के विभिन्न विषयों पर शोधपूर्ण निबन्ध पढ़े हैं, वे सभा के साप्ताहिक-पत्र सर्वहितकारी के विशेषांक में प्रकाशित किये जायेंगे।

गोष्ठी के अन्त में गोष्ठी के संयोजक प्रिंसिपल वीरुराम जी आर्य ने सभी आगन्तुक विद्वानों, अतिथियों का धन्यवाद किया। दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र की प्राचार्या एवं उनके स्टाफ का इस गोष्ठी की व्यवस्था करने एवं श्री धर्मपाल आर्य सुपुत्र श्री हलियाराम आर्य को भोजन की व्यवस्था करने पर आभार प्रकट किया।

—केदारसिंह आर्य

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के जीवन की कुछ घटनायें

गुरुवर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का ११०वां जन्म दिन ३-१-१९८८ ई० को है। उनके जीवन की कुछ घटनायें नीचे लिख रहा हूं—

१—रामा मण्डी (जिला भटिण्डा) में कुछ समय महाशय रोनकसिंह जी के घर ठहर कर आर्य ग्रंथों का स्वाध्याय किया और सरकारी प्राईमरी स्कूल के मुसलमान मास्टर मंजूर अली से अंग्रेजी सीखी।

२ दयानन्द उपदेशक विद्यालय के आचार्य रहे और पं० रुचिराम जी को अरब में वेदप्रचार के लिये भेजा।

३—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान पर कार्य किया।

४—पंजाब आर्य वीरदल के दल नेता बने।

५—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब लाहौर के वेदप्रचार अधिष्ठाता रहे।

६—लोहारू स्टेट के आर्यसमाज के उत्सव के समय नगर कीर्तन में लहूलुहान हुए।

७—मारिशियस में दृष्टि चली गई-भारत आकर हरड़ों के प्रयोग से दृष्टि वापिस आई।

८—आपकी प्रेरणा से स्थूल अक्षरों का सत्यार्थप्रकाश श्री स्वामी वेदानन्द जी द्वारा लिखा गया।

९—हैदराबाद आर्य सत्याग्रह का संचालन करके सफल बनाया।

१०—दयानन्दमठ दीनानगर की स्थापना करके भिक्षा का नियम चलाया।

११—आपके भोजन का भी समय था—समय निकल जाने पर भोजन नहीं करते थे। कई-कई दिन भूखा रहना पड़ा।

१२—सैन्ट्रल जेल लाहौर में आपने जेलवाला बिस्तर लेने से इन्कार कर दिया। जेल अधिकारी ने पूछा कि शहर से किसी व्यक्ति का नाम बताओ। बिस्तर वहां से मंगवा देते हैं। आपने पंजाब के वजीर सर छोटूराम का नाम बताया तो अधिकारी ने कहा कि वह तो वजीर है। किसी और का नाम बताओ। स्वामी जी ने श्री महाशय कृष्ण जी का नाम ले दिया। जेल अधिकारी ने वहां जाना भी स्वीकार न किया कि वह तो 'प्रताप' पत्र में प्रकाशित कर देंगे। फिर श्री विश्म्बरदास जी का नाम बताने पर वहां से बिस्तर मंगाया गया।

(क्रमशः)

—ओम्प्रकाश आर्य वानप्रस्थी
अधिष्ठाता आर्य वानप्रस्थ आश्रम (गुरुकुल)
भटिण्डा (पंजाब)

गउवों खागड़ झोटों एवं पक्षियों को सहायता हेतु दान के लिये धन्यवाद

ग्राम नलवा (हिसार) में दो महीने से सिर्फ गउवों के लिये सेठ शिवराम जिन्दल ने केवल चारे का प्रबन्ध कर रखा है। आवारा गउवों के अतिरिक्त गांव तथा निकट के ग्रामों से सैकड़ों गउवों को चराने आते हैं। इसी ग्राम के श्री चित्रभुज पुत्र सेठ केवलराम ने दो खागड तथा एक झोटे के लिये १५००) चारा व दाने हेतु दान दिये तथा ५००) प्रतिदिन पक्षियों के लिये दाने डालने हेतु दिये। इसी प्रकार एक अन्य तोसरे खागड़ के लिये श्री सेठ दरबारीलाल सहयोग कर रहे हैं। दाने के लिये श्री पुष्करलाल आर्य ने भी ३००) सहयोग बारे दिये हैं। अत आर्यसमाज नलवा उपर्युक्त सभी गौ-भक्तों का धन्यवाद करती है।

गौ बचेगी, देश बचेगा।

अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी

जंगल में मंगल

हरयाणा भारत का छोटा-सा किन्तु ज्ञानवृद्ध प्रांत है। आर्यसमाज का जितना प्रचार इस प्रांत में है, किसी अन्य प्रांत में नहीं है। ऋषिभक्त यह प्रदेश अपने पूज्य महर्षि दयानन्द के दिल के दर्द को कैसे भूला सकता है कि—"प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये"।

इस ऋषि आज्ञा को शिरोधार्य मानकर २५ नवम्बर, १९८७ को श्री आचार्य वेदपाल जी बरहाणा तथा श्री पं० चिरंजीलाल जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, गुरुकुल झज्जर के ब्र० वाचस्पति (प्रताप), ब्र. विश्वमित्र तथा ब्र० मेधाव्रत को लेकर मध्यप्रदेश के उन जंगलों की ओर चले, जहां गरीब एवं भोली जनता निवास करती है। छतरपुर जिले के ग्राम चन्दपुरा, पहरा तथा मनवारा के बीच पहाड़ी नामक स्थान पर पहुंचकर २६ नवम्बर को प्रातः 'यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं योग शिविर' नाम से उत्सव प्रारम्भ किया। अपने प्रांत में वेदप्रचार जैसा पवित्र काम होता हुआ देखकर गुरुकुल होशगाबाद के ब्रह्मचारी कैसे पीछे रह सकते थे। वहां से ब्र० धर्मवीर (मदन) तथा ब्र० सुधीरकुमार तुरन्त आ पहुंचे। आचार्य वेदपाल जी ब्रह्मा, ब्र० विश्वमित्र, मेधाव्रत, धर्मवीर एवं ब्र० सुधीर वेदपाठी तथा पं० चिरंजीलाल भजनोपदेशक का काम करने लगे। ब्र० वाचस्पति (प्रताप) ने योग शिविर सम्भाला। ब्र० सत्यव्रत (चन्दपुरा) तथा उस क्षेत्र के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती ने उत्सव की सब व्यवस्था सम्भाली। स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज (स्वतन्त्रता सेनानी) का भी हमें आशीर्वाद प्राप्त था।

२६ नवम्बर को समीपस्थ ग्रामों से कुछ थोड़े से श्रद्धालु लोग तथा नौजवान आये, परन्तु अगले दिन तो उनकी संख्या कई गुणा बढ़ गई। आचार्य वेदपाल जी के प्रवचन, पं० चिरंजीलाल जी के भजन तथा ब्र० वाचस्पति का शिविर संचालन लोगों को अपनी ओर खींच रहा था। लोग खूब आने लगे तथा दान भी देने लगे। हमने घोषणा की कि हमारा उत्सव २९ नवम्बर तक चलेगा तथा अन्तिम दिन शाम को ३ बजे गुरुकुल झज्जर के मुख्याध्यापक "श्री आचार्य विजयपाल जी" का शक्ति प्रदर्शन होगा। जिसमें लोहे के सरिये गले से मोड़ना, बेल तोड़ना तथा कार रोकना आदि कार्यक्रम होंगे, तो लोग अत्यन्त हर्षित एवं चकित हुए तथा इस बात को चारों तरफ फैला दिया।

लोगों की तीव्र अभीप्सा को देखकर २९ नवम्बर का दिन भी शीघ्र ही आगया। प्रातः यज्ञ हुआ तथा १५-२० नौजवानों ने यज्ञोपवीत लिया। आज हजारों की संख्या में लोग पधारे थे। शाम के ३ बज गये और आचार्य विजयपाल जी भी श्री जीवानन्द जी नैष्ठिक सहित अपने व्यस्त जीवन में से समय निकालकर पहुंच गये। व्यायाम सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। आचार्य विजयपाल जी के भीमकाय बलिष्ठ शरीर को देखकर लोगों की तालियां बज उठी। सारा कार्यक्रम बहुत ही आकर्षक हुआ। लोगों ने खूब दान दिया तथा सम्मानपूर्वक हमें विदाई दी।

भगवान् करे आर्यों की यह प्रचार लगन सदा बनी रहे।

प्रेषक—मेधाव्रत शास्त्री, गुरुकुल झज्जर

बृहद् यज्ञ एवं विराट् ऋषि-मेला

क्रांतिदूत, महान् युग निर्माता, तपःपूत, योगिवर्य, आदित्य ब्रह्मचारी, वेद मर्मज्ञ महर्षि प्रवर देव दयानन्द सरस्वती की जन्मस्थली होने से टंकारा को और गुरुस्थली होने के कारण मथुरा नगरी को जो सौभाग्य प्राप्त है, उससे कम गौरव सुरसरितस्थ फरुखाबाद नगरी का भी नहीं है। क्योंकि इस जनपद को ही महर्षि के पावन पदरज से सर्वाधिक (आठ बार) पवित्र होने का अहोभाग्य प्राप्त हुआ है। सर्वप्रथम इस जनपद में ही जाह्नवी तट पर महर्षि ने शिक्षण संस्था के रूप में करकमलों से एक संस्कृत पाठशाला (गुरुकुल) की संस्थापना की थी। यहीं पर ही महर्षि ने अपनी प्रखरबुद्धि एवं अद्वितीय विद्वत्ता से हलधर ओझा आदि पाखण्डियों को शास्त्रार्थ में पराजित कर धराशायी किया था। अपने अन्तिम समय में महर्षि ने कहा था—"जब तक फरुखाबाद के लोग न आ जायें, तब तक मेरी दाह क्रिया मत करना" हुआ भी ऐसा ही। इस प्रकार इस जनपद के प्रति महर्षि की महती आस्था रही है तथा यह जनपद ही उनका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्यस्थल रहा है।

इसी जनपद फरुखाबाद के अन्तर्गत महर्षि के नाम को सार्थक सिद्ध करते हुए आपके प्रिय महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर के पावन प्रांगण में गतवर्षों की भांति इस वर्ष भी २० से २२ फरवरी, १९८८ को बृहद् यज्ञ एवं विराट् ऋषि-मेला का समायोजन अति हर्षोल्लास के साथ किया जारहा है। जिसमें आर्यजगत् के लब्धप्रतिष्ठ मूर्धन्य विद्वान्, सन्यासी, महोपदेशक एवं उपदेशक पधार रहे हैं।

अतः समस्त धर्मप्रेमी महानुभावों से विनम्र निवेदन है कि आप सपरिवार एवं इष्टमित्रों सहित उपर्युक्त तिथियों में अधिकाधिक संख्या में महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर (फरुखाबाद) अवश्य पधार कर धर्म लाभ प्राप्त करें तथा यज्ञ की सफलता एवं ऋषि लंगर हेतु अपनी सात्विक आहुति भी प्रदान कर पुण्य के भागी बनें।

गुरुकुल पधारनेवाले सभी सज्जनों के लिये आवास एवं भोजन की निःशुल्क व्यवस्था की जाती है।

—आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री कुलपति

रोहतक में स्वामी श्रद्धानन्द दिवस सम्पन्न

आर्य केन्द्रीय सभा, रोहतक के तत्वाधान में २० दिसम्बर, १९८७ रविवार को अपराह्न २ बजे से ५ बजे तक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। जिसमें छात्र-छात्राओं द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी पर गीत एवं भाषण हुए। गीत एवं भाषण बोलनेवाले सभी बच्चों को सभा की ओर से दस रुपये प्रति छात्र पुरस्कार दिये गये। श्री बलदेवसिंह मेहरा प्राध्यापक महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन की प्रमुख घटनाओं को दर्शाते हुए स्वामी जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रो० उत्तमचन्द शरर ने स्वामी जी के शुद्धि आंदोलन एवं राजनैतिक कार्यों पर प्रकाश डाला। डा. तुलसीराम जी ने भी स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी पर प्रकाश डाला। अन्त में सभाप्रधान स्वामी जीवनानन्द जी ने प्रश्नोत्तर के ढंग से स्वामी जी की जीवनी पर प्रकाश डाला तथा सभी आये हुए विद्वानों व सभी नर-नारियों का हार्दिक धन्यवाद किया।

—मेघराज कोषाध्यक्ष आर्य केन्द्रीय सभा, रोहतक

नये साल की

शुभ कामनायें

महर्षि दयानन्द से पूर्व देश की स्थिति

था विश्व अविद्या से अविकृत,
विद्या न किसी को थी प्यारी।
सत्पथ आच्छादित था तुम से,
होगये मनुज स्वेच्छाचारी ॥१
स्वार्थी असत्यवादी क्रोधी,
निर्दय अन्यायी रुजधारी।
छल-कपट द्वेष ईर्ष्या विवाद,
हिंसा निमग्न सब नर-नारी ॥२
बल वीर्य बुद्धि से हीन हुए,
कलुषित हिय जन सब अज्ञानी।
विष बेल विषमता की फैली,
विषयी व्यभिचारी अभिमानी ॥३
भक्षी अभक्ष्य के दुर्व्यसनी,
वैश्यम क्लीब अत्याचारी।
पथ-भ्रष्ट विलासी चोर भीरु,
कायर कलंक युत दुःखकारी ॥४
वेदविहित सद्धर्म नष्ट,
होगया मोक्ष देनेवाला।
बहुपन्थ बनाये पोपों ने,
तज धर्म पेट अपना पाला ॥५
श्रद्धालु अन्धविश्वासी जन,
चल पड़े कुपथ पर अज्ञानी।
रमणी धन छीने पोपों ने,
कर धर्म नाम पर मनमानी ॥६
बहु नव मठ मन्दिर तीर्थ बने,
पोपों ने खीला विस्तारी।
विधवग वेश्यग होगये धूर्त,
भोगी महन्त जन व्यभिचारी ॥७
करी जड़ पूजा पशुबलि कुकर्म,
शुद्धि यज्ञ-कर्म का नाश किया।
मैं धुन मुद्रा अरु मद्यमांस,
तन्त्रादिक धर्म प्रकाश किया ॥८
थे ज्ञान विहीन हुए ब्राह्मण,
गत शौर्य हुए महि अधिकारी।
धनहीन होगये वैश्य हाय,
फिर शूद्र न हो क्यों कुविचारी ॥९
शिशुओं के होने लगे ब्याह,
उत्कर्षित हम कैसे होवें।
यौवन से पहले बूढ़े हों,
रोग-युक्त क्यों नहीं रोवें ॥१०

महर्षि दयानन्द का आविर्भाव

यों काल निशा काले घन ले,
घहराती हम पर छाई थी।
थी शोचनीय स्थिति अवर्ण्य,
जो हमने स्वयं बुलाई थी ॥११
करुणा वरुणालय के हिय में,
यह दशा देख करुणा जागी।
होगई धन्य फिर आर्यजाति,
सारी विपदा डरकर भागी ॥१२
सौराष्ट्र राज्य में टंकारा,
होगया हमें जीवनदायी।
ऋषि दयानन्द के उद्भव से,
जिसने पावन गरिमा पाई ॥१३
ऋषि दयानन्द आनन्दकन्द,
बन चन्द भूमि-नभ पर आये।
सुत जन्म सुनत सब नगरी में,
खुशियों के बादल उमड़ाये ॥१४

ऋषि का जन्मोत्सव

सब साज सजाये गृह गृह ने,
हर द्वार बना बन्दनवारी।
शुभ गीत मनोरम ध्वनित हुए,
अकृत सुवाद्य मंगलकारी ॥१५
शुचि त्रिविध वायु ले नया राग,
कुछ गुन-गुन करती बहती थी।
हो तुम विहीन लह दिव्य ज्योति,
हर दिशा आशा से हंसती थी ॥१६
होगया विमल, उज्ज्वल, शीतल,
कल-कल युत चंचल सरि पानी।
नभ स्वच्छ हुआ पा दिव्य रत्न,
महि ने शृंगार किया धानी ॥१७

रात्रि के समय

शर्वरी शरद् शशि-मुखी सजा,
शशि-प्रभा-वस्त्र अति हर्षायी।
मानो धरि तारक-मुक्तिमाल,
करने ऋषि का स्वागत आयी ॥१८

महर्षि की देन (संक्षिप्त)

लखि दशा देश की ऋषिवर ने,
उत्थान कार्य में ध्यान दिया।
दे दिया ज्ञान अरु स्वाभिमान,
हम सबको जीवन दान किया ॥१९
उद्धार किया वेदों का अरु,
शुचि जीवन पद्धति बतलाई।
करके पाखण्डों का खण्डन,
सद्धर्म ध्वजा पुनि फहराई ॥२०
दे ब्रह्मचर्य का सदुपदेश,
अमरत्व भाव संचार किया।
समदर्शी ! तू युगद्रष्टा था,
तूने सबको सम प्यार दिया ॥२१
हे धर्मराज, हे देवदूत,
तू अद्वितीय महिमा वारो।
कर रहा 'करुण' शतकोटि नमन,
यह तुच्छ भेंट मम स्वीकारो ॥२२

ऋषि में

दोहा—चारु चांदनी चन्द्र सम, सृजी सुदृढ समृद्धि।
जो जग को सुख शांति दे, सरिस ज्योत्स्ना वृद्धि ॥

कवित्त

वैदिक साहित्य रूप मानस के दिव्य हंस,
महापतनकाल आर्यजाति को उबारो है।
छायो तम घोर सब समाज शक्तिहीन भयो,
शोधि शुभ्र सीख सब समाज को संवारो है।
महाप्राण, महादेव, महायोगी अरु स्वच्छन्द,
शरद कैसो चन्द रूप उज्ज्वल तिहारो है।
आइके पुनि हमको दिखाओ सन्मार्ग देव,
'करुण' स्वर समाज एक साथ यह पुकारो है।

रचयिता—उमाशंकर आर्य 'करुण'
ग्राम एवं पत्रालय—चन्दपुरा, वाया हरपालपुर
जिला छतरपुर (म०प्र०)

—श्री भारतभूषण निगम अध्यापक
श्री नेहरू उच्च मा०प्र० विद्यालय पहरा
पोस्ट—पहरा, जिला छतरपुर (म०प्र०)

सतीप्रथा का समर्थन करके श्री वीरेन्द्र सम्पादक प्रताप जालन्धर भटक गये

वीरेन्द्र जी का लेख "औरत जलाई जा सकती है, सती नहीं हो सकती" ६ दिसम्बर को साप्ताहिक सार्वदेशिक में पढ़कर अत्यन्त दुःख हुआ। वीरेन्द्र जी के पिता जी व वीरेन्द्र जी स्वयं सारी उम्र आर्य रहे, अब वृद्ध अवस्था में ना जाने उनकी बुद्धि को क्या होगया है। जिस तरह उन्होंने सतीकांड की हिमायत की है, वह पढ़कर शर्म से सिर झुक जाता है। वे अपने लेख में मानते हैं—

१—१८ वर्षीय रूपकंवर सती हुई। २—वहां के लोग सतीप्रथा के समर्थन के लिये भड़क उठे हैं। ३—सती को अत्यन्त श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है। ४—सतीप्रथा का विरोधी और समर्थक दोनों गलत हैं। ५—इसे वह आत्म बलिदान मानते हैं। ६—जबकि यह प्रमाणित हो चुका कि उसे जलाया गया है, फिर भी वीरेन्द्र जी अपने लेख में रूप-कंवर अत्यन्त श्रद्धा के कारण सती हुई, ऐसा मानते हैं। ७—सती का रिवाज हमारे देश में नया नहीं। ८—सीता और सावित्री से जिसने प्रेरणा ली हो, उसे सती होने से कौन बचा सकता है। ९—उस घटना को केवल कानूनी दृष्टि से नहीं देखना चाहिये, अपितु उस युवा लड़की की भावनाओं का सम्मान करना चाहिये। जिसने इस प्रकार अपने आपको इस प्रकार पति के साथ सती कर दिया। १०—रूपकंवर को किसी ने जलाया नही, स्वयं जली है। ११—उसने वहां से निकलने का प्रयास नही किया आदि-आदि।

वीरेन्द्र जी ने सतीप्रथा की वकालत की है। उनको आर्यसमाज से तुरन्त निकालकर सती महिमा मण्डित के अन्तर्गत मुकदमा चलाना चाहिये या वीरेन्द्र जी शास्त्रार्थ करके सतीप्रथा को सिद्ध करदें। वीरेन्द्र जी आगे लिखते हैं कि सतीकांड पर तो इतना बावेला उठाया जारहा है, जबकि लड़कियां दहेज के लिये जिन्दी जलादी जाती हैं तो कोई शोर क्यों नहीं मचाता? ऐसा लगता है वीरेन्द्र जी को ना आंखों से दिखता है, ना कानों से सुनता है। आज दहेज का लालची, जिससे अपनी बहु जलाई है ना समाज से बच पाया, न कानून से बड़ी भारी आवाज उस के विरुद्ध उठती है। हो सकता है वीरेन्द्र जी जैसे कुछ मन्दबुद्धि आवाज ना भी उठाते हों, फिर दहेज के लिये लड़की जलाना और सतीप्रथा को प्रोत्साहन देना बराबर नहीं है। दहेज के लिये जलाई गई लड़की का कोई मन्दिर नहीं बनाता, पूजा नहीं करता, चुन्दड़ी रस्म पर लाखों लोग इकट्ठे नही होते, बल्कि निन्दा करते हैं, वह रिवाज का रूप नहीं ले सकता। सतीप्रथा को वीरेन्द्र जी जैसे लोगों का प्रथा मानने का पीढ़ी दर पीढ़ी भय है।

—सीताराम आर्य, हिसार

आर्यसमाज जींद शहर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

२६ से २९ नवम्बर, ८७ को आर्यसमाज जींद शहर का वार्षिको-त्सव सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री आचार्य विश्वबन्धु जी शास्त्री एवं श्री कु० महेशचन्द संगीतरत्न तथा श्री चन्द्रभानु जी एवं उनकी मण्डली द्वारा आर्यसमाज को आगे बढ़ने एवं ऋषि दयानन्द सरस्वती के स्वप्नों को पूरा करने के लिए आह्वान किया गया।

इसके अतिरिक्त इस समाज द्वारा संचालित पाठशाला के विद्या-र्थियों का मनोहारी कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर श्री डा० रामभक्त जी लांगायन एस० डी० एम० जींद द्वारा विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

—प्रो० इन्द्रदेव शास्त्री मन्त्री

केन्द्रीय वित्तमन्त्री श्री नारायणदत्त तिवारी से आचार्य वेदभूषण की भेंट

विगत २० अक्तूबर को हैदराबाद में श्री नारायणदत्त तिवारी वित्तमन्त्री भारत सरकार पधारे थे।

इस अवसर का लाभ उठाकर आचार्य वेदभूषण ने माननीय श्री तिवारी जी से भेंट की और उनकी सेवा में एक ज्ञापन दिया कि—यज्ञ पर वैज्ञानिक अनुसंधान के लिये वे भारत सरकार के पर्यावरण विभाग को अपेक्षित धनराशि प्रदान करें। सरकार सूखा सहायता के लिए जितनी अधिक राशि व्यय करती है, उससे बहुत कम व्यय में वर्षा कराई जा सकती है। अतः यज्ञ पर अनुसंधान के लिये व्यय करना आर्थिक दृष्टि से राष्ट्र के लिये अत्यन्त लाभप्रद होगा।

माननीय तिवारी जी ने गम्भीरता से विचार करने का आश्वासन दिया। अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान की ओर से आचार्य वेदभूषण जी यज्ञ पर अनुसंधान कराने के लिये सतत प्रयत्नशील है।

१९८९ वर्ष में हैदराबाद सत्याग्रह अर्धशताब्दी समारोह का सर्वत्र आयोजन हो—

आचार्य वेदभूषण की अपील

अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान के अधिष्ठाता आचार्य वेदभूषण ने एक अपील में पूरे राष्ट्र का ध्यान हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के अर्धशताब्दी समारोह के सार्वजनिक आयोजन के लिये समाज-सेवी संस्थाओं से अपील की है।

सत्याग्रह आंदोलन के इतिहास में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह का स्थान सर्वोपरि है। इस सत्याग्रह आंदोलन में लगभग डेढ दर्जन आर्य-वीरों ने अपना बलिदान दिया था। निजामशाही की जेलों में लगभग २२ हजार सत्याग्रहियों ने भाग लिया था।

उन दिनों हैदराबाद स्टेट एक स्वतन्त्र शासक के रूप में निजाम के अधीन थी। बहुसख्यक प्रजा की स्वतन्त्रता को नष्ट कर अत्याचार एवं उत्पीड़न का साम्राज्य चल रहा था। ऐसे समय आर्यसमाज ने सर्वविध स्वतन्त्रता की मांग लेकर इस सत्याग्रह आंदोलन का नेतृत्व किया।

आचार्य वेदभूषण ने अपनी अपील में कहा है कि सर्वत्र हैदराबाद सत्याग्रह अर्धशताब्दी समारोह समितियां गठित की जायें। इस सत्याग्रह में भाग लेनेवाले सैनिकों का सार्वजनिक सम्मान किया जाये और इस महान् आंदोलन के ऐतिहासिक महत्त्व पर भाषणों के आयोजन किये जायें। सरकार हैदराबाद सत्याग्रह की फिल्म बनाये और उसे देशभर में प्रदर्शित किया जाना चाहिये।

हैदराबाद में सार्वदेशिक स्तर पर अर्धशताब्दी समारोह का सार्व-देशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आयोजन करे।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल का बलिदान दिवस

आर्यसमाज कंवारी की ओर से आर्य विद्या मन्दिर स्कूल में बिस्मिल का बलिदान दिवस दिनांक १९-१२-८७ को बड़े उत्साह से मनाया गया। इस अवसर पर प्रातः ८ बजे श्री रामकुमार शास्त्री (पानीपत) द्वारा हवन किया गया। बाद में एक सभा का आयोजन किया गया। स्कूलो बच्चों के अतिरिक्त आर्यसमाज कंवारी के अधिका-रियों एवं सदस्यों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने काकोरी कांड एवं शहीद बिस्मिल के कार्यों एवं जीवन पर प्रकाश डाला।

—जयवीरसिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज, कंवारी

स्वामी स्वतन्त्रानन्द महाराज का जन्म दिवस

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के सर्वाधिकारी, दयानन्दमठ, दीनानगर एवं दयानन्दमठ रोहतक के संस्थापक, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के स्तम्भ स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्मदिवस ३ जनवरी, १९८८ तदनुसार पौष सुदी पूर्णमासी को दयानन्दमठ, रोहतक में बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा।

इस अवसर पर २७ दिसम्बर से प्रतिदिन यज्ञ एवं वेदकथा का आयोजन किया गया है। ३ जनवरी को छात्र एवं छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता और स्वामी जी को विद्वानों द्वारा श्रद्धांजलियां दी जायंगी।

—महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी, मन्त्री दयानन्दमठ, रोहतक

ऐ भोले मानव

कविराज—छाजूराम शर्मा शास्त्री, नई दिल्ली

ऐ भोले मानव किधर जारहा है।
गहरा है सागर[1] तू जिधर जारहा है॥
चलता है क्यों तू नजर को बचा के, खा जायेंगे तुझे भयंकर ये नाके[2]।
तुझे दीखती है नहीं राह कहां है, भटकता है धक्के तू क्यों खा रहा है॥
अभी तो तुझे मिल रहा खूब मौका, बैठ तू यही है धर्म की वह नौका।
गुजरना है जहां से जगह वह यही है जग जिसके आश्रय चला जारहा है।
तुझे अपनी मंजिल[3] पै अरे पहुचना है, लुटेरों[4] के जंगल में नहीं बहकना है,
ऐ जानेवाले कुपथ में न जा तू, जहां जीव निसदिन लुटा जारहा है।
चलना संभल के कठिन है यह मंजिल, न घबराये तेरा मुश्किल में यह दिल
रही डगमगा तेरे जीवन को नैय्या वृथा 'छाजूराम' क्यों तू दुःख पारहा है

१. संसार रूपी समुद्र। २. विषय भोग। ३. मोक्ष। ४. काम-क्रोध-मद-मोह आदि।

सूखा सहायतार्थ सभा को प्राप्त दान सूची

गतांक से आगे—

श्री नरेश टिम्बर सप्लाई कम्पनी यमुनानगर जि० अम्बाला		११००)
म० सुगमचन्द बंसल नई मण्डी मुजफ्फरनगर (उत्तरप्रदेश)		१०१)
डा० घनश्यामसिंह पटेलनगर	,, ,,	५०)
श्री रिसालसिंह पूर्व प्राचार्य छोटूराम इन्टर कालेज	,,	५०)
,, रामजीलाल बी० डी० ओ० पटेलनगर मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)		२५)
,, इकबालसिंह हलवाई नई मण्डी	,, ,,	२५)
,, रामपालसिंह पटेलनगर	,, ,,	२५)
,, हंसराज हलवाई	,, ,,	२५)
,, वेदप्रकाश बुरेवाले	,, ,,	२५)
,, जयप्रकाश वर्मा	,, ,,	११)
,, सुरेन्द्रकुमार वर्मा	,, ,,	११)
,, कंलाशकुमार सिंहल टेलर मास्टर	,, ,,	११)
,, राजेश जो चन्द्रा मेडीकल स्टोरवाले	,, ,,	११)
,, विश्वम्भर सहाय	,, ,,	२५)
,, अश्विनीकुमार गुप्त	,, ,,	११)
,, मूलनसिंह सर्राफ	,, ,,	११)
,, मुन्नालाल टेलर मास्टर	,, ,,	११)
,, सेवाराम	,, ,,	५)

इन सभी दानदाताओं का सभा की ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद। आर्यसमाजों के अधिकारियों तथा दानदाताओं से निवेदन है कि गोवंश की रक्षा के लिये अधिक से अधिक दान मनीआर्डर द्वारा भेजकर पुण्य के भागी बनें। सभा को जितना-जितना दान प्राप्त होता जायेगा, उसे तुरन्त सूखाग्रस्त ग्रामों में वितरित कर दिया जायेगा।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के स्वतन्त्रता सेनानियों की सेवा में आवश्यक निवेदन

हैदराबाद सत्याग्रह का अर्धशताब्दी समारोह निकट भविष्य में होने जारहा है। इस अवसर पर आगामी वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्यसमाज का लगभग ५०० से भी अधिक पृष्ठों का ऐतिहासिक हैदराबाद आर्य सत्याग्रह विशेषांक बड़ी साज-सज्जा के साथ प्रकाशित हो रहा है। हम प्रत्येक स्वतन्त्रता सेनानी से प्रार्थना करते हैं कि आप अपने सत्याग्रह सम्बन्धी विवरण अथवा संस्मरण संक्षेप में लिख भेजिये। साथ में आप का पासपोर्ट साइज का चित्र जिसके पीछे आपका नाम व पता सुन्दर अक्षरों में लिखकर भिजवा दीजिए।

हमारे पास शोलापुर केन्द्र से जानेवाले लगभग सभी जत्थों के चित्र व सत्याग्रहियों के नामों की सूची है जो इस विशेषांक में प्रकाशित की जायेगी। ये अलभ्य चित्र अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं हैं।

यदि आपके पास अपने सत्याग्रही जत्थे का भी ग्रुप फोटो है तो वह भी हमारे पते पर भेजिये।

आपके संस्मरणों व चित्र को ऐतिहासिक स्वरूप देने का और उन्हें चिरजीवी बनाने का हमारा संकल्प है। अप्रैल, ८८ तक आप उपरोक्त सामग्री निम्न पते पर भिजवाने की कृपा करें। धन्यवाद।

यदि आपके ग्राम का कोई वीर पुरुष इस सत्याग्रह में शहीद हुआ है तो उसका जीवन-चरित्र भी लेख रूप में भेजने की कृपा कीजिये।

मुख्य सम्पादक—आचार्य वेदभूषण
अन्तर्राष्ट्रीय आर्यसमाज ४-५-७५४, सुलतान बाजार,
हैदराबाद-५०००२७

नकेकल में तीसरे वृष्टि महायज्ञ का सफल प्रयोग

हैदराबाद नगर से ११० किलोमीटर की दूरी पर जिला नलगोण्डा के नकेकल ग्राम में श्री बी. एन. रेड्डी ने आचार्य वेदभूषण के आचार्यत्व में वैदिक वृष्टि महायज्ञ का आयोजन कराया। दो दिन तक निरन्तर सूर्योदय से सूर्यास्त तक अखण्ड रूप में यह यज्ञ चलता रहा। तीन सौ किलो शुद्ध गाय के घी से स्वाहाकार किया गया।

परिणामतः सारे नलगोण्डा जिले में व आसपास के क्षेत्र में भारी वर्षा हुई। इब्राहिम पट्टणम का तालाब इतना भर गया कि पिछले आठ वर्षों में भी वह इतना कभी नहीं भरा। यह यज्ञ अन्धविश्वास पर आधारित न होकर वैज्ञानिक आधार पर जल संग्रहण करनेवाली वनौषधियों से बनी विशेष सामग्री से कराया जाता है। इसलिये निश्चित रूप से सफलता मिलती है।

हिन्दी है, वह हिन्दी है

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ.प्र.)

जो भारत के भाग्य-भाल की, चमक रही शुचि-बिन्दी है।
कोटि-कोटि जन-जननी भाषा, हिन्दी है वह, हिन्दी है॥

संस्कृत मां की पावन पुत्री, जिसकी पावन परिभाषा।
आंचल में है रही संजोये, मानवता की अभिलाषा॥

चन्द स्वरों-संग जो गूंजी है, लेकर तूफानी इतिहास।
प्राकृत से अपभ्रंश पालि तक, जिसका क्रमशः हुआ विकास॥

जगनिक की ओजस्वी वाणी से जो हुई विभूषित है।
इधर धरती का जन-जन जिस के, जयगानों से पोषित है॥

है पाथेय बनी जिसकी रज, जिसमें भूषण का गर्जन।
तुलसी की जिसमें आभा है, अमर शहीदों का सर्जन।

अजस्रधार में जिसकी मिलती, सूर काव्य की धारा है।
मनुष्यता से संपोषित जो, वह साहित्य हमारा है॥

दयानन्द से ऋषियों ने है, जिस हिन्दी को दुलराया।
गांधी ने, अरविन्द तिलक ने, जिसको मां का रूप बताया॥

पंत महादेवी दिनकर से, जिसके जाग्रततम प्रहरी।
जिसका जय संगीत सुनाती, गंगा गोदावरी गहरी॥

लगभग चौदह बहनें इसकी, बहुत बड़ा परिवार है।
इसकी रक्षा-हित कोटिक जन, कटि बांधे तैयार है॥

उसी भव्य हिन्दी-भाषा की, चलो उतारें आरती।
कोटि-कोटि जन मिलकर गायें, जय हिन्दी, जय भारती॥

शुद्धि समारोह

दिनांक १२-१२-८७ को आर्यसमाज मन्दिर समालखा में यज्ञ-हवन के बाद मुसलमान नटों ने अपनी स्वेच्छा से वैदिकधर्म (हिन्दू-धर्म) ग्रहण किया। यह कार्यवाही स्वामी सेवानन्द सरस्वती महामन्त्री हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति हरयाणा के प्रयत्नों द्वारा की गई और प्रधान रामरतन आर्य की देख-रेख में किया और श्री भल्लेराम तथा श्री मांगेराम व स्कूल के विद्यार्थियों ने भाग लिया। शुद्ध हुए परिवारों को स्वामी जी ने कपड़ा वितरण किया, जो कि महात्मा प्रेमप्रकाश धुरीवाले ने दान में दिया था। उनके हाथों से प्रीतिभोज दिया गया। बरादरी में इज्जत दिलाई।

१. भल्लु खान—भल्लेराम, २. मानड़ी–मामकौर, ३. काला खां—कृष्ण-लाल, ४. राज—राजवीरसिंह, ५. समेदीन—समेसिंह, ६. बबलु—बल्लु-राम, ७. गीणा—गीता, ८. मुगला—मनुदेव।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 पंजी० नं० P/RTK 39 दूरभाष : ...



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री सहसम्पादक—डा० सुदर्शन

वर्ष १५, अङ्क ७ ७ जनवरी, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ... एक प्रति ६० पैसे

रोहतक में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का ११०वां जन्मोत्सव सम्पन्न

(केदारसिंह आर्य कार्यालय संवाददाता द्वारा)

रोहतक ३ जनवरी, १९८८ को स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का ११०वां जन्मोत्सव दयानन्दमठ, रोहतक में समारोहपूर्वक मनाया गया। इसके उपलक्ष्य में २८ दिसम्बर से प्रातः तथा सायंकाल दयानन्दमठ रोहतक की यज्ञशाला में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महोपदेशक पं० सुखदेव जी शास्त्री के वेद प्रवचन तथा स्वामी देवानन्द, मुरारीलाल बेचैन की भजनमण्डली के मनोहर संगीत हुए।

जन्मोत्सव की कार्यवाही ३ जनवरी को १२ बजे स्वामी रुद्रवेश जी के आर्यसमाज के क्रांतिकारियों पर प्रभावशाली भजन हुए। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी जन्मोत्सव का उद्घाटन करते हुए वैद्य भरतसिंह आर्य (कोषाध्यक्ष दयानन्दमठ, रोहतक) ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला और बताया कि आज से ११० वर्ष पूर्व पंजाब के ग्राम मोही (लुधियाना) में एक सिख जाट परिवार में हुआ था। उनका बचपन का नाम केहरसिंह रखा गया। वे बचपन से ही साधु स्वभाव के थे। अतः साधुओं के सत्संग में आकर घर छोड़ दिया। आपने जब सत्यार्थप्रकाश को पढ़ा तो ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त बन गये और स्वामी स्वतन्त्रानन्द नाम से आर्यसमाज के क्षेत्र में प्रसिद्ध होगये।

१९३८-३९ में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह आरम्भ होगया। निजाम हैदराबाद ने आर्यसमाज के प्रचार पर पाबन्दी लगादी थी। सत्यार्थ-प्रकाश आदि ग्रंथों को पढ़नेवालों को जेलों में बन्द किया जाने लगा। अतः सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान महात्मा नारायण स्वामी जी के नेतृत्व में सत्याग्रह में आर्यसमाज के कार्यकर्ता सम्मिलित होगये। महात्मा नारायण स्वामी जी के गिरफ्तार होने पर सत्याग्रह का संचालक स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को बनाया। आपने इस सत्याग्रह को सफल बनाने के लिये दिन-रात आर्यसमाजों का भ्रमण किया। भारत के कोने-कोने से हैदराबाद सत्याग्रही जाने लगे। इनमें हरयाणा प्रदेश के सबसे अधिक सत्याग्रही जेलों में गये। ग्राम बुटाना के श्री सुनहरासिंह जेल में शहीद होगये। इसी प्रकार आर्यसमाज के अन्य युवकों ने भी बड़े से बड़ी कुर्बानी दी और जेलों में कठोर यातनायें सहन कीं। अन्त में निजाम हैदराबाद ने आर्यसमाज के संगठन तथा शक्ति के सम्मुख हार मानली और सभी सत्याग्रहियों को जेलों से रिहा कर दिया। भारत सरकार ने आज उन सत्याग्रहियों को स्वतन्त्रा सेनानी मान लिया है।

वैद्य भरतसिंह जी ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को लोहपुरुष बताते हुए कहा कि जब लोहारू के नवाब ने आर्यसमाज के उत्सव करने पर पाबन्दी लगाई थी तब स्वामी स्वतन्त्रानन्द अपने आर्यसमाज के वीर सैनिकों के साथ लोहारू पहुँचे थे और वहां ऐतिहासिक जलूस निकाल कर उसकी पाबन्दी को तोड़ दिया। नवाब की पुलिस ने आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं पर लाठियां चलाईं और स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के सिर को फाड़ दिया। अन्य कार्यकर्ताओं को भी चोटें आईं, परन्तु आर्यसमाज के किसी भी कार्यकर्ता ने हिंसा का सहारा नहीं लिया। अन्त में यहां भी नवाब ने हार मानली और आर्यसमाज के प्रचार पर पाबन्दी ही नहीं उठाई, अपितु लोहारू में आर्यसमाज मन्दिर भी अपने खर्च पर बनवा दिया। इसी प्रकार स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने हरयाणा के सैनिकों के परिवारों में आर्यसमाज के अन्य नेताओं श्री जगदेवसिंह सिद्धांती तथा आचार्य भगवान्देव जी के साथ सम्पर्क किया और उन्हें अंग्रेजी सेना के विरुद्ध लड़ने को तैयार किया।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी गोरक्षा आंदोलन की तैयारी में भ्रमण कर रहे थे, परन्तु कैंसर रोग से पीड़ित होने पर बम्बई में उनका स्वर्गवास होगया। इस प्रकार स्वामी स्वतन्त्रानन्द ने सारा जीवन संघर्ष में व्यतीत किया और आर्यसमाज के इतिहास का निर्माण किया। सभा के उप-देशक पं० सुखदेव शास्त्री ने भी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए स्वामी जी को आर्यसमाज का महान् नेता बताया।

इस अवसर पर रोहतक के तथा कालका के विद्यालय के छात्र तथा छात्राओं की भाषण तथा गायन प्रतियोगिता का भी सफल आयोजन किया गया। छोटे-छोटे बच्चों ने आर्यसमाज तथा ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध में प्रभावशाली भाषा में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस जन्मोत्सव के अध्यक्ष डा० रणजीतसिंह ने प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करनेवालों को दयानन्दमठ की ओर से पारितोषिक वितरित किये। आपने अपने अध्यक्षीय भाषण में उपस्थित नर-नारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का हरयाणा की जनता से विशेष लगाव तथा प्यार था। आपने आर्यसमाज के मंच से अपना पहला भाषण आर्यसमाज मन्दिर सिरसा में दिया था। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए आपने हरयाणा के कोने-कोने का भ्रमण किया। स्वामी जी ने विदेशों में भी जाकर ऋषि दयानन्द का सन्देश सुनाकर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का लक्ष्य पूरा करने का प्रयास किया।

उत्सव के अन्त में म० भरतसिंह वानप्रस्थी ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के सम्पर्क की कई घटनाओं का वर्णन किया और दयानन्दमठ रोहतक की स्थापना पर प्रकाश डाला। उन्हीं की प्रेरणा पर स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी तथा स्वामी सोमानन्द जी कई वर्षों तक दयानन्दमठ में रहते हुए आर्यसमाज का प्रचार करते रहे। आपने स्वामी जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि हरयाणावासी स्वामी जी के उपकार को कभी भूला नहीं सकेंगे।

धूम्रपान साथ वाले लोगों के लिए भी खतरनाक

नई दिल्ली, २१ दिसम्बर (वार्ता, भाषा) हृदयरोग विशेषज्ञों ने सरकार से आग्रह किया है कि सरकारी दफ्तर, रेलवे स्टेशन, हवाई अड्डा, स्कूल, कालेज आदि जगहों पर धूम्रपान पर रोक लगादी जाये। यह लोगो के अच्छे स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी है।

भारत और विदेश के लगभग पांच सौ हृदयरोग विशेषज्ञों का तीन दिन का सम्मेलन कल यहां खत्म हुआ। इसके आयोजक हार्ट केयर फाउंडेशन के अध्यक्ष कर्नल डा० के० एल० चोपड़ा थे। उन्होंने संवाददाताओं को बताया कि धूम्रपान करनेवाला न सिर्फ अपने शरीर को नुकसान पहुँचाता है, बल्कि उससे भी ज्यादा खतरा उन लोगों को है जो उसके साथ रहते हैं। इसकी वजह यह है कि धूम्रपान करनेवाला व्यक्ति जो धुवां बाहर फेंकता है उसमें निकोटीन के साथ-साथ शरीर से बाहर निकलनेवाली दूसरी दूषित गैसें भी रहती हैं। डा० चोपड़ा ने बताया कि धूम्रपान करनेवाले पुरुषों की पत्नियों मे फेफड़े का कैंसर होने की यही वजह है।

डा० चोपडा ने कहा कि बीड़ी, सिगरेट, हुक्का, चुरुट आदि सभी हानिकारक है। फर्क सिर्फ उन्नीस-बीस का है। उन्होंने कहा कि यह धारणा भी गलत है कि गांव के लोग शहर में रहनेवालों के मुकाबले अच्छे स्वास्थ्य के होते हैं। दिल्ली के पास एक गांव में किये सर्वेक्षण के आधार पर उन्होंने कहा कि धूम्रपान की लत व्यापक होने की वजह से गांववाले छाती और फेफड़े की कई बीमारियों से ग्रस्त है।

सम्मेलन में दिल की बीमारियों की वजह से रोकथाम के उपाय और चिकित्सा पर विचार हुआ। सुझाव दिया गया कि धूम्रपान पर रोकथाम के अलावा तम्बाकू कम्पनियों को खेलकूद की प्रतियोगिता के प्रायोजक बनने पर भी रोक होनी चाहिये, क्योंकि दर्शकों का ध्यान खेल पर कम प्रायोजक के नाम पर ज्यादा केंद्रित होता है। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर धूम्रपान के खिलाफ प्रचार आंदोलन शुरु किया जाना चाहिए। फिल्मों से भी ऐसे दृश्य काट देने चाहिए जिसमें हीरो को धूम्रपान करते दिखाया गया हो।

डा० कर्नल चोपड़ा ने बताया कि धूम्रपान उच्च रक्तचाप और हृदयरोग की दूसरी बीमारियों को बढ़ावा देता है। इससे काली खांसी, कैंसर और फेफड़े भी खराब हो सकते हैं। अमेरिका में तम्बाकू से जितना राजस्व कमाया जाता है उससे एक सौ गुना इसके खतरे से आगाह करने पर खर्च होता है। उन्होंने इस बात पर दुःख जाहिर किया कि धूम्रपान और इससे होनेवाली घातक बीमारियों के प्रति प्रशासन और जनता सतर्क नही है।

सम्मेलन में कहा गया कि भारत जैसे गरीब देश में लोगों को यह बताना जरूरी है कि दिल की बीमारियों से कैसे बचा जा सकता है। इलाज बहुत महगे होते है और कभी-कभी तो डाक्टर के पहुंचने के पहले ही रोगी दम तोड़ देता है। हाई ब्लड प्रेशर चुपचाप शरीर को खोखला करता है और इसलिये सम्मेलन में कहा गया है कि जैसे स्टेशनों आदि पर वजन की मशीनें लगी होती हैं उसी तरह ब्लड प्रेशर बतानेवाली स्वयंचालित मशीनें भी होनी चाहिये, जिससे कि थोड़े से पैसे से ही लोग अपना ब्लड प्रेशर मालूम कर सकें और अगर वह ज्यादा हो तो डाक्टर के पास हाई ब्लड प्रेशर आसानी से ठीक किया जा सकता है। लेकिन अगर उसकी ओर ध्यान नही दिया गया तो वह फेफड़े, दिल, दिमाग, गुर्दा आदि को नुकसान पहुंचाता है और दिल का दौरा दिमाग में रक्तस्राव और दूसरी बीमारियों की वजह बन जाता है।

यह भी कहा है कि सिगरेट के पैकटों पर वैधानिक चेतावनी देने का कोई अर्थ नहीं है। जबकि बीडी के बण्डलों और तम्बाकू के पैक्टों पर तो कोई चेतावनी भी नही होती। सिफारिशों में धूम्रपान के खिलाफ स्कूल और कालेज में शैक्षणिक कार्यक्रम शुरु किये जाने का भी सुझाव दिया गया है।

सम्मेलन में मत व्यक्त किया गया कि भारत में हाई ब्लड प्रेशर और हृदयरोग सम्बन्धी मामले बढ़ रहे हैं। सम्मेलन में ओपन हार्ट सर्जरी हृदयरोगों का समय रहते पता लगाने आदि के बारे में भी विचार-विमर्श हुआ।

सम्मेलन ने सुझाव दिया है कि शिक्षा संस्थाओं के विद्यार्थी और सरकारी स्वास्थ्य सेवा का लाभ लेनेवालों के ब्लड प्रेशर आदि की नियमित रूप से जांच होनी चाहिए। सन्तुलित आहार, योग, ध्यान, व्यायाम और तनाव रहित जीवन से ब्लड प्रेशर ठीक रखने में सहायता मिलती है। जिन परिवारों में दिल की बीमारी के रोगी हों, उनके दूसरे सदस्यों को अपनी जांच नियमित रूप से करानी चाहिए, क्योंकि उनको ऐसी बीमारियों का खतरा ज्यादा रहता है। कई बार हृदयरोग शरीर में घर कर लेता है, पर इसके चिह्न नही होते। जब पता चलता है तो बहुत देर हो चुकी होती है। इसलिए नियमित जांच जरूरी है। सम्मेलन में 'कलर डॉप्लर इको कार्डियोग्राफी' की तकनीक पर भी विचार हुआ। इस नई विधि से शरीर के अन्दर हो रहे रक्त प्रवाह की तस्वीर सामने आजाती है और इन्जेक्शन आदि के बगैर शरीर में कहां दोष है, यह पता चलता है। इस नई तकनीक में डाक्टरों के प्रशिक्षण के लिये राजधानी में एक संस्थान स्थापित किया गया है।

(जनसत्ता से साभार)

आग्या समाजवाद

कौन कहै ना फर्क मिट्या, जब मूल और ब्याज एक भा होग्ये।
आग्या सही समाजवाद जब प्यार और नाज एक भा होग्ये॥

छोटी और बड़ी चीजां के ठाठ बराबर देख लिये।
बदलो हो तो कोठी और प्लाट बराबर देख लिये।
एक रेट पे बिकते बिस्कुट चाट बराबर देख लिये।
चावल और चणां के बदले आट बराबर देख लिये।
सब्जी में भी फर्क रहा न आलू प्याज एक भा होग्ये।
आग्या सही समाजवाद ·····

जितना रोब पुरुष का घर में उतना रोब लुगाई का।
जितना ब्याह में खर्चा—उतना टीके और सगाई का।
जितने दाम लगें कपड़े के उतना रेट सिलाई का।
जितनी मांगे फीस डाक्टर उतना मोल दवाई का।
बीस रुपये बिल रोगी का कोढ़ और खाज एक भा होग्ये।
आग्या सही समाजवाद······

वर्कर हो चाहे लीडर हो सब जनता नै लूट रहे सै।
चपड़ासी और अफसर सबके तौंद तल नै छूट रहे सैं।
छोटी और बड़ी पार्टी जितनी सबके भांडे फूट रहे सैं।
दुश्मन की ढालां भाई भी आज भाई तैं रूठ रहे सैं।
छै-छै गुणे किराये बढ़ग्ये बस और जहाज एक भा होग्ये।
आग्या सही समाजवाद·····

—ज्ञानीराम शास्त्री

आकाशवाणी रोहतक से सुनिए

आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र से श्री सुखदेव शास्त्री का भाषण दिनांक १४ जनवरी, १९८८ को सायं ७ बजे "संक्रांति पर्व का महत्त्व" पर सुनिये।

पंजाब की राजनीति और हरयाणा

—प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

हरयाणा के अधिकारों के प्रश्न को जब-जब पंजाब की राजनीति से जोड़ा गया, तब-तब हरयाणा के साथ अन्याय हुआ। पंजाब के अकाली नेता जो भी आंदोलन करते रहे, उनको उन्होंने हमेशा सिख पंथ के नाम पर चलाया, मांगों को सदा साम्प्रदायिकता के रंग में रंगा और उनको सिख पंथ की मांगों का नाम देकर विशेष रियायतों के लिये दबाव डाला। तर्क सदा एक ही रहा कि अंग्रेज के शासनकाल में सिखों को आजादी की लड़ाई में शामिल करने के लिये राष्ट्र के नेताओं ने अकालियों से कुछ विशेष सहूलियतें देने के वायदे किये थे।

अकालियों ने भाषा के आधार पर पंजाब के पुनर्गठन की मांग उठाई थी और सिख सूबे की बजाये उसे पंजाबी सूबे की संज्ञा दी थी। हरयाणा ने भाषा के आधार पर ही पंजाब के पुनर्गठन का समर्थन किया था और अकाल तख्त पर बैठकर यह फसला किया था कि फाजिल्का अबोहर के हिन्दी भाषी इलाके हरयाणा में जायेंगे और रावी व्यास के पानी को बटवारे का आधार यही माना गया था कि दोनों नये प्रदेशों को सब स्रोतों से मिलनेवाला कुल पानी उसी अनुपात से मिले, जिस अनुपात से दोनो प्रदेशों को कृषि योग्य भूमि मिलती है। अकाली नेताओं ने १९५६, १९६६ और १९७० में फाजिल्का अबोहर के हिन्दी भाषी इलाके की हरयाणा को दिये जाने की बात मानी थी। आजादी से पहिले के कांग्रेस नेताओं के तथाकथित आश्वासनों की बात तो अकाली आये दिन करते रहते हैं, परन्तु हरयाणा के साथ किये हुए अपने वायदों को वे सदा भुला देते हैं। एक के बाद एक किये हुए अपने आंदोलनों में अपने हस्ताक्षरित फंसलों और अकाल तख्त पर किये हुए वायदों को अकाली बेशर्मी के साथ छोड़ते रहे हैं और भारत सरकार पर हिंसात्मक आंदोलनों के द्वारा दबाव डालकर उन फैसलों को बदलवाने में एडी चोटी का जोर लगाते रहे हैं।

यह बात स्पष्ट है कि पंजाब का भाषा के आधार पर किया गया पुनर्गठन हरयाणा और पंजाब के नेताओं के समझोतों के आधार पर ही हुआ था, इसलिए पंजाब और हरयाणा के बीच क्षेत्रीय तथा रावी व्यास के पानी के बटवारे के प्रश्नों का निर्णय करते समय सबसे अधिक महत्त्व उन समझोतों को ही देना चाहिए। जिन समझोतों पर १४ वर्षों में तीन बार अकालियों की मोहर लगी, उनको खोलना और उन पर पुर्नविचार करना ही पंजाब और हरयाणा के प्रश्नों को उलझाना है। इसीलिए यह एक तथ्य है कि तथाकथित पंजाब समझौते ने हरयाणा पंजाब के प्रश्नों को सुलझाने की बजाये उलझाया। यदि फिर अकालियों से किसी नये समझोते की बात चलेगी तो पहिले ही उलझाया हुआ मामला और उलझेगा। यदि इस मामले को और उलझाया गया तो उससे दोनों प्रदेशों में हिंसा और आपसी घृणा को ही बढ़ावा मिलेगा।

मैं चौ० देवीलाल जी की इस बात से बिल्कुल सहमत नहीं हूँ कि पंजाब में चुनी हुई नई सरकार के बनने पर पंजाब और हरयाणा के मसले पर फिर बातचीत हो सकती है। आखिर समझौते कितनी बार होते रहेंगे और बदलते रहेंगे और हरयाणा से उन्ही बातों पर कितनी बार अपना अधिकार छोड़कर कुर्बानी देने की अपील की जाती रहेगी।

पिछले ३२ वर्षों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि अकाली अपने फैसलों से भागते रहे, प्रश्न खुलते रहे और हर बार हरयाणा को कुछ न कुछ खोना पड़ा। इस बार यदि फिर मामला खुलता है तो हरयाणा कुछ और भी खो सकता है। इसलिए विचार, पुर्नविचार और फिर पुर्नविचार पर पुर्नविचार का सिलसिला अब बन्द होना चाहिए। अकालियों के नेता संत फतहसिंह की अपनी पेशकश पर किये गये श्रीमती इन्दिरा गांधी के १९७० के फैसले पर तुरन्त अमल होना चाहिए। मार्च १९७६ में लोकसभा में घोषित रावी व्यास के पानी के बटवारे के फैसले पर भी अमल करना चाहिए। मैथ्यू आयोग और इराडी ट्रिब्यूनल के फैसलों का सार पुराने फैसलों से बहुत भिन्न नहीं हैं। अकाली उन दोनों फैसलों के सार और भावना को ठुकरा चुके हैं, इसलिए क्षेत्रीय प्रश्न को सदा-सदा के लिए हल करने के लिए जनवरी १९७० के फैसले और रावी व्यास के पानी के प्रश्न के स्थाई हल के लिए मार्च १९७६ के फैसले को तुरन्त लागू कर देना चाहिए। सतलुज यमुना जोड नहर का काम ३१ मार्च, १९८८ तक समाप्त करके आनेवाली गर्मियों में हरयाणा की प्यासी धरती को पानी दे देना चाहिए।

पंजाब में आज जो स्थिति है, उसमें भारत सरकार चाहे तो भी समझौते की बात नहीं चला सकती। बात चलाये तो किसके साथ। अकालियों के सभी गुट और धड़े बेअसर हो चुके हैं। अलगाववादियों के मुकाबले में खड़ा होकर बात करने का दम किसी में नहीं है। तथाकथित एकीकृत अकालीदल तो फतहगढ साहब में अपने बुलाये गये सम्मेलन में भी नहीं टिक सके, वे खालिस्तानियों को मंच सौंपकर या तो मूकदर्शक बनकर बैठे रहे या उठकर चले गये। उग्रवादी और अलगाववादियों ने भी अपनी अन्धाधुन्ध मारधाड और लूटपाट के कारण सिख जनता की सहानुभूति खो दी है। वे तस्करों और विदेशी तत्वों के सहारे हिंसक घटनायें करते चले आ रहे हैं। यही हालत रही तो उनका खेल भी छः महीने या सालभर में दम तोड़ जायेगा। ऐसा हुआ तो पंजाब और देश के लोगों को सुख का सांस लेने को मिलेगा। ऐसा होने पर ही बातचीत का माहौल बन पायेगा। उस समय यदि कोई ऐसा नेतृत्व अकालियों में उभरे जो जिम्मेदारी लेकर बात करने की स्थिति में हो तो उनसे बात करनी चाहिए, परन्तु उनसे बात की जाये सिख पंथ के अपने धार्मिक मसलों पर या अधिक से अधिक उन मसलों पर जिनका सम्बन्ध केवल पंजाब से है। उनको स्पष्ट कह देना पड़ेगा कि जो मसले उनकी सहमति से पहिले हल हो चुके और जिनका सम्बन्ध हरयाणा से भी है, उनके सम्बन्ध में अकालियों का बात करने का आग्रह अनधिकार चेष्टा है और यह उनसे स्पष्ट कह देना पड़ेगा। ऐसा नहीं किया गया तो सुलझे हुए मामले उलझेंगे। बातचीत तो समस्यायें सुलझाने के लिए ही होती हैं, उलझाने के लिए नहीं। अकालियों से समझौते की बात करने का मतलब है समस्याओं को उलझाना। पिछले ३० वर्षों से भी अधिक समय का इतिहास अकालियों की विश्वसनीयता पर बहुत बड़ा प्रश्न-चिह्न लगा चुका है। इस तथ्य की अनदेखी करने से मामले और अधिक उलझेंगे, सुलझने की तो कोई सम्भावना ही नहीं हो सकती।

शोक समाचार

श्री डा० सोमवीरसिंह जी की पूज्या भाभी श्रीमती भगवानीदेवी पत्नी चौ० बलवीरसिंह (रिटौली) खेरड़ी मोड़ का देहावसान दिनांक १९-१२-८७ को प लिया रोग के कारण होगया। श्री बलवीरसिंह आर्य-समाज के कर्मठ कार्यकर्ता हैं और हिन्दी सत्याग्रही रहे हैं। हम शोक सतप्त परिवार के लिये प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह उनको धैर्य प्रदान करे तथा मृत आत्मा की शांति के लिये प्रार्थना क.ते है। २८ दिसम्बर को उनकी स्मृति में यज्ञ किया गया और सभा को ऋषि लगर हेतु १०१) दान दिया गया।

—मन्त्री आर्यसमाज रिटौली कबूलपुर, जि० रोहतक

२—१६-११-८७ को श्री हरिश्चन्द जी आर्य सिवानी निवासी की धर्मपत्नी श्रीमती झावरदेवी का लम्बी बीमारी के बाद निधन होगया। वे ६३ वर्ष की थी। धर्म में अटूट श्रद्धा, ईश्वर विश्वासी, यज्ञप्रेमी, अतिथि-सेवा चाव उनमें कूट-कूटकर भरा हुआ था। आर्य जी ने उनकी स्मृति में आगामी १६-१-८८ तक आर्यसमाज मन्दिर, सिवानी मण्डी में यज्ञशाला बनवाने तथा स्वय उसी यज्ञशाला पर हवन करके वानप्रस्थ लेने का संकल्प किया है। हमारी प्रभु से प्राथना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

३—श्री आर्यमुनि जी योगाचार्य के पिताजी श्री भगवान्‌सिंह जी का २६ दिसम्बर को स्वर्गवास होगया। उनकी आयु ७५ वर्ष के लगभग थी। वे आर्यसमाज के सहयोगी एवं श्रद्धालु थे। उनकी स्मृति में ७ जनवरी को ग्राम नांगल कलां, जिला सोनीपत में यज्ञ एवं वेदोपदेश का कार्यक्रम रखा गया।

—राजकुमार आचार्य एम० ए०

पं. वीरसेन जी का देहावसान

वेदों के प्रकांड विद्वान् श्री प० वीरसेन जी वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य का देहावसान मगलवार २२ दिसम्बर, १९८७ को उनके गृह नगर इन्दौर में होगया।

उन्होंने वेदों पर अनुसंधान कर ३० से भी अधिक पुस्तकें लिखीं, जिनमें प्रमुख है—'वैदिक सम्पदा', यज्ञ महाविज्ञान, सध्या योग रहस्य, याज्ञिक आचार सहिता, वेदकथा आदि। उन्हें अपनी पुस्तकों पर अनेक पुरस्कार एव सम्मान प्राप्त हुए।

आपने याज्ञिक वृष्टि विज्ञान एवं याज्ञिक चिकित्सा विज्ञान के विशेषज्ञ के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की। उन्होंने दिल्ली, अजमेर, जयपुर, पानीपत, खडवा, बिलासपुर, रायपुर आदि अनेक स्थानों पर सफल प्रयोग किये। पं० वीरसेन वेदश्रम जी का जन्म ५ दिसम्बर, १९०८ को देवास में हुआ था। उन्होंनें १९३० में गुरुकुल, वृदांवन, मथुरा से आयुर्वेद शिरामणि की उपाधि प्रतिष्ठित स्नातक के रूप में प्राप्त की। वे म०प्र० केमिस्ट एसो० के सस्थापक, सचिव के पद पर लगातार दस वर्ष तक इस पद पर रहे। वे वेद विश्व परिषद् के भी अध्यक्ष रहे।

२३ दिसम्बर, १९८७ को उनके अन्त्येष्टि संस्कार में भारी सख्या में नागरिकों ने हिस्सा लिया, जिसमें नगर के प्रतिष्ठित नागरिक एवं विभिन्न आर्यसमाजों के पदाधिकारी शामिल थे।

२५ दिसम्बर को ४ बजे उनके सम्मान में श्रद्धानन्द भवन, कोठारी मार्केट में श्रद्धाजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें नगर के गणमान्य नागरिक एवं आर्य प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया तथा वेदमूर्ति जी के क्रांतिकारी एवं समाजसेवा सम्बन्धी कार्य तथा वेदसम्बन्धी उनकी अमूल्य साहित्य-सेवा का स्मरण एवं उल्लेख करते हुए विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की और डा० मधुकर धोलप का यह प्रस्ताव सभी ने स्वीकार किया कि उनकी स्मृति में एक ट्रस्ट बनाया जावे। जो उनके द्वारा रचित, प्रकाशित एव अप्रकाशित ग्रन्थों के प्रकाशन की व्यवस्था करेगा तथा उनके विचारों के आधार पर वेद एवं यज्ञ सम्बन्धी अनुसंधान कार्य करेगा।

आर्यसमाज के पर्वों की सूची

वर्ष १९८८

१. मकर सक्रांति	१४ जनवरी	१९८८	बृहस्पतिवार
२. बसन्त पंचमी	२३ ,,	,,	शनिवार
३. सीताष्टमी	११ फरवरी	,,	बृहस्पतिवार
४. दयानन्दबोध रात्रि	१६ ,,	,,	मगलवार
५. वीर लेखराम तृतीया	२० ,,	,,	शनिवार
६. नव संस्येष्टि (होली)	३ मार्च	,,	बृहस्पतिवार
७. दुलहण्डी	४ ,,	,,	शुक्रवार
८. आर्यसमाज स्थापना दिवस	१९ ,,	,,	शनिवार
९. राम नवमी	२६ ,,	,,	,,
१०. हरि तृतीया	१५ अगस्त	,,	सोमवार
११. श्रावणी उपाकर्म	२७ ,,	,,	शनिवार
१२. श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	३ सितम्बर	,,	,,
१३. विजयदशमी (श्री सिद्धांती जयन्ती)	२० अक्तूबर	,,	बृहस्पतिवार
१४. गुरु विरजानन्द दिवस	२३ ,,	,,	रविवार
१५. महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस	९ नवम्बर	,,	बुधवार
१६. श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	२३ दिसम्बर	,,	शुक्रवार

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि इन पर्वों को उत्साह पूर्वक मनाकर इन्हें आर्यसमाज के प्रचार का साधन बनावें।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

आर्यसमाज की सम्पत्तियों पर सरकारी नियन्त्रण सहन नहीं होगा—वेदव्रत शास्त्री

गत मास समाचारपत्रों में प्रकाशित समाचार में एक संकेत दिया गया था कि हरयाणा सरकार मठों, मन्दिरो तथा डेरों की देखभाल के लिए कानून बनाने पर विचार कर रही है, पर प्रतिक्रिया करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री ने कहा है कि सरकार एकाधिकार प्राप्त डेरो आदि की सम्पत्तियों की आय-व्यय की जांच पड़ताल करके उनकी आय का जनता की भलाई पर खर्च करने का कोई कानून बनाये तो उचित है, परन्तु यदि सरकार ने आर्यसमाज मन्दिरों तथा गुरुकुलों आदि की प्रबन्ध व्यवस्था में अनुचित हस्तक्षेप किया तो उसे सहन नहीं किया जायेगा। क्योंकि आर्यसमाज का ढांचा लोकतन्त्र पर आधारित है और उनकी सम्पत्तियों से होनेवाली आय का प्रयोग धार्मिक तथा परोपकारी कार्यों पर व्यय किया जाता है। आपने स्पष्ट किया कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की सम्पत्ति का दुरुपयोग भी राजनीतिक सहारे पर ही कुछ व्यक्तियों ने किया है।

—केदारसिंह कार्यालयाध्यक्ष

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ हरयाणा सभा का है

दैनिक ट्रिब्यून दिनांक ५ जनवरी, ८८ में प्रकाशित वक्तव्य में स्वामी शक्तिवेश ने गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की सम्पत्ति बताया है। यह उनका वक्तव्य भ्रामक है। वास्तविकता यह है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का १९७५ में राजकीय सीमाओं के अनुसार बटवारा हो चुका है। इसी कारण इन्द्रप्रस्थ गुरुकुल जिला फरीदाबाद में स्थित होने के कारण हरयाणा सभा की सम्पत्ति बन चुका है। श्री वीरेन्द्र को गुरुकुल के संचालन का किसी को अधिकार-पत्र देने का अधिकार ही नहीं है। क्योंकि पंजाब सभा का अधिकार क्षेत्र केवल पंजाब राज्य की वर्तमान सीमाओं तक है।

वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

हैदराबाद सत्याग्रह के सत्याग्रहियों को पेंशन सूची

जिनके नाम भारत सरकार द्वारा प्रांतीय सरकारों में स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन के लिए विचारार्थ भेज दिये गये हैं—

१. श्री परमानन्द पुत्र मंगलाल, निवासी २६६ नगजोरी रोड बुरहानपुर, खानदेश (मध्यप्रदेश)

२. श्री उमाकांत शास्त्री पुत्र गोकुलप्रसाद समलाल, निवासी जमालपुर गोगरी, जिला खगड़िया (बिहार)

३. श्रीमती भागीरथीबाई पत्नी हरिकांत राखेलकर, निवासी गुजोटी तालुका ममेरनांव, जिला उस्मानाबाद

४. श्रीमती चांदकौर पत्नी टेकचन्द, गांव कासण्डा, तहसील गोहाना जिला सोनीपत

५. श्रीमती सोनादेवी पत्नी सुगनचन्द, मकान नं० १८, वार्ड ५, गलि बेना रसिया, पोस्ट पानीपत, जिला रोहतक (हर०)

६. श्री चन्दनलाल पुत्र घूताराम, निवासी सेगौन, तह० कथल जिला कुरुक्षेत्र (हर०)

७. श्री इन्द्रसिंह पुत्र कुड़ाराम ग्राम पो० रधाना, तह० व जिला जींद (हर०)

८. श्री रामचन्द्र स्वामी आर्यानन्द गांव पो० नाहर, तह० कोसली जिला रोहतक (हर०)

९. श्रीमती गार्गीदेवी पत्नी जयपाल आर्य, २३ आर, माडल टाउन सोनीपत (हर०)

१०. श्री शेरसिंह शेरा पुत्र शुभराम गांव पो० खांडा खेड़ी जिला हिसार (हर०)

११. श्री चन्दगीराम पुत्र जीतराम गांव उमरा, तह० हांसी जिला हिसार (हर०)

१२. श्री दीपचन्द पुत्र अमीलाल गांव सीमक, तह० पानीपत जि० करनाल (हर०)

१३. श्री देवमित्र पुत्र ज्ञानीराम गांव पो० बड़ी मकड़ोली जि० रोहतक (हर०)

१४. श्रीमती चुन्नी पत्नी हीरासिंह गांव पो० उमरा, तह० हांसी जि० हिसार

१५. श्रीमती पार्वतीदेवी पत्नी मनफूलसिंह ग्राम पो० भापड़ोदा जि० रोहतक (हर०)

१६. श्री मनफूलसिंह पुत्र आभा गांव पो० सुताना, तह० पानीपत जि० करनाल

१७. श्री मोजीराम पुत्र जमना गांव पो० पखापुर, जि० रोहतक (हर०)

१८. श्री बलदेवसिंह पुत्र हीरासिंह गांव पो० सिदीपुर लोवा तह० बहादुरगढ़, जि० रोहतक

१९. श्रीमती चोरी पत्नी जयसिंह ग्राम पो० सुताना, तह० पानीपत जि० करनाल

२०. श्री हाथीराम पुत्र मेहरचन्द ग्राम छोटा थाना, पो० बड़ा थाना जि० सोनीपत

२१. श्री भीमसिंह पुत्र कन्हैयासिंह ग्राम पो० बूटाना, तह० गोहना जि० सोनीपत

२२. श्री ओम्प्रकाश छत्तरसिंह पुत्र खेमा पो० मिर्चपुर, तह० हांसी जि० हिसार

२३. श्री रामरूप पुत्र सोबत ग्राम पो० छारा, तह० बहादुरगढ़ जि० रोहतक (हर०)

२४. श्री शेखर पुत्र सुधान तह० गांव बहादुरगढ़, जि० रोहतक (हर०)

२५. श्री चरनसिंह पुत्र बख्तावरसिंह ग्राम धूमपट्टी कोडक, जि० कुरुक्षेत्र (हर०)

२६. श्रीमती सुखदेवी पत्नी सिघराम गांव पो० भापड़ोदा जि० रोहतक (हर०)

२७. श्री अनन्तानन्द पुत्र ब्रह्मानन्द वि० आयुर्वेदिक कालेज नागपुर जि० सोनीपत (हर०)

२८. श्री हरिसिंह धींगड़ा पुत्र लाढाराम वैदिक भक्ति आश्रम, आर्यनगर जि० रोहतक (हर०)

२९. श्री रामस्वरूप पुत्र रामनाथ गांव पो० रामराय, जि० जींद (हर०)

३०. श्री जगन पुत्र इन्द्राज ग्राम पो० छारा, जि० जींद (हर०)

३१. श्री छोटूराम पुत्र रामानन्द गांव पो० फरमाना, जि० सोनीपत

३२. श्री जोधराम भाटिया पुत्र हिम्मतलाल भाटिया, १९७४ रामपुरा जि०

३३. श्री जसवन्तराम पुत्र रायमलदास निकट खटीक मोहल्ला, बहादुरगढ़ जि० रोहतक

३४. श्री जीताराम पुत्र जीराम गांव पो० मिर्चपुर, तह० हांसी जि० हिसार

३५. श्री भगवान्लाल पुत्र शबरातलाल मोहल्ला नियाजी जि० गाजीपुर (उ०प्र०)

३६. श्री ज्ञानीराम पुत्र भब्बरसिंह गांव पो० भापड़ोदा जि० रोहतक (हर०)

३७. श्री माधवसिंह मालधन वर्मा पुत्र फूसाराम ग्राम पो० कनीना जि० महेन्द्रगढ़ (हर०)

३८. श्री महासिंह वर्मा पुत्र जुगलाल गांव पो० लाढ़ोत, जि० रोहतक (हर०)

३९. श्री परमानन्द आर्य पुत्र बोरतनराम आर्य, श्रीराम ज्वेलर्स सोनापट्टी भागपुर (बिहार)

४०. श्री भरतसिंह पुत्र शोभराम दयानन्दमठ गोहाना रोड, रोहतक (हर०)

४१. श्रीमती गोरादेवी पत्नी मनोहर गांव पो० पाकसमा, जिला रोहतक

४२. श्री बनवारीलाल पुत्र शादी गांव पो० मिलकपुर, तह० हांसी जि० हिसार (हर०)

४३. श्रीमती शांतिदेवी पत्नी स्व० श्री जयदेव गांव पो० भापड़ोदा जि० रोहतक

४४. श्री रामचन्द्र पुत्र जयलाल गांव पो० धीरो, जि० रोहतक (हर०)

४५. श्री लालचन्द पुत्र भब्बर गांव पो० गोरार, जि० सोनीपत (हर०)

४६. श्री पुष्करराज पुत्र पोकरसिंह गांव पो० खांड़ाखेड़ी, तह० हांसी जि० हिसार

४७. श्रीमती रामदुलारी शुक्ला पत्नी गिरधारीशंकर शुक्ला, सकीना मंजिल घी मण्डी, दौलतगंज, उज्जैन

४८. श्री तरनीप्रसाद मिश्र पुत्र सन्तलाल मिश्रा गांव पो० शंकरपुर जि० मुंगेर (बिहार)

४९. श्री भागीरथ ठाकुर पुत्र श्री गुरुप्रसाद ठाकुर मगज बाजार, मुंगेर (बिहार)

५०. श्री जगदीशचन्द्र पुत्र उग्रसेन ३९१/१ विश्वकर्मा कालोनी देहरादून (उ०प्र०)

५१. श्री लालचन्द पुत्र नत्थु गांव पो० छारा, जि० रोहतक (हर०)

५२. श्री देवराज पुत्र सुरती गांव पो० कहीकलां, तह० हांसी, जि० हिसार

५३. श्री खुशीराम पुत्र मूलचन्द जींद, जि० जींद (हर०)

(सार्वदेशिक साप्ताहिक से साभार)

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह के समाचार

पलवल जि० फरीदाबाद

फरीदाबाद, २७ दिसम्बर (निस)। स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस पलवल में मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा प्रो० शेरसिंह मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व विधायक श्री राजेन्द्रसिंह बीसला ने की।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण ग्रामीण युवकों द्वारा प्रस्तुत व्यायाम प्रदर्शन था। यह कार्यक्रम जयवीर की ओर से प्रस्तुत किया गया। इस प्रदर्शन में महाराष्ट्र का सबसे कठिन व्यायाम मलखम्ब भी प्रस्तुत किया गया।

मुख्य अतिथि प्रो० शेरसिंह ने अपने भाषण में कहा कि जब तक लोगों में 'राष्ट्रीय भावना' नहीं आयेगी, तब तक लोग जाति, भाषा और धर्म के नाम पर लड़ते रहेंगे। उनके अनुसार स्वामी श्रद्धानन्द ने इन्हीं मुद्दों पर लोगों को एक करने के लिए अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया।

श्री राजेन्द्रसिंह बीसला ने कहा कि नैतिक चरित्र में गिरावट आने के कारण आज का नौजवान दिशाहीन होगया है। समाज को कुरीतियों ने उसे जकड़ रखा है। (नवभारत टाइम्स से साभार)

थानेसर जि० कुरुक्षेत्र

२३-१२-८७ को आर्यसमाज थानेसर जिला कुरुक्षेत्र में दयानन्द महिला महाविद्यालय में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर प्रो० उत्तमचन्द शरर का व्याख्यान तथा पं० ज्योतिस्वरूप भजनोपदेशक के भजन एवं महाविद्यालय की छात्राओं के स्वामी श्रद्धानन्द की जीवनी पर संगीत हुए।

—देवदत्त भारती मन्त्री

आर्यसमाज दामला (अम्बाला)

स्वामी श्रद्धानन्द जी बलिदान दिवस बड़ी धूमधाम से आर्यसमाज मन्दिर में मनाया। जिसमें स्वामी सदानन्द जी सरस्वती ने अपने ओजस्वी विचार रखे व पं० हरलाल जी भजनोपदेशक के सुमधुर भजन हुए। सभा का संयोजन पं० सनातन जी शास्त्री ने किया।

नारनौल जि० महेन्द्रगढ़

आर्यसमाज नारनौल में २६-२७ दिसम्बर, १९८७ को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सेकड़ों साधु, संन्यासी, वानप्रस्थी, गुरुकुल खानपुर के ब्रह्मचारी, गुरुकुल दाधिया की कन्या, दयानन्द बाल मन्दिर सैनी हाई स्कूल के छात्र, जिला महेन्द्रगढ़ और जिला अलवर, जिला जयपुर, जिला सीकर, जिला झुन्झनु राजस्थान आर्यसमाज के कार्यकर्ता हजारों की संख्या में नगर कीर्तन में भाग लिया।

स्वामी देवानन्द, पं० बेगराज, पं० मुरारीलाल बेचेन के भजनों ने नगर बाजार गूंजा दिये। उत्सव पर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, पं० सुखदेव शास्त्री महोपदेशक, श्रीमती सुशीला आचार्या कन्या गुरुकुल दाधिया, पं० बालदिवाकरहंस, पं० ओम्प्रकाश जी आचार्य पलवल, पं० विश्वपाल जी वेदालंकार दाधिया, पं० रामकुमार जी भारद्वाज शाहपुर का जनसमूह से स्वागत किया गया। प्रो० रामविलास शर्मा मन्त्री हरयाणा राज्य नें २१००) दान दिये। ३५२) आर्य प्रतिनिधि सभा को दान वेदप्रचार में दिये। आर्यसमाज प्रधान म० ताराचन्द आर्य ने यज्ञशाला निर्माणार्थ अपील की। जिस पर लगभग २४ या २४॥ हजार रुपये यज्ञशाला के लिये दान मिला।

संक्रांति पर्व

आर्यजनो को यह सूचित किया जाता है कि दिनांक १४-१-८८ को आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय कालवा में संक्रांति पर्व बड़े उल्लास से मनाया जारहा है। जिसमें जिलाधीश जींद तथा डा. रामभगत लांगायन एस. डी. एम. जींद पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर लाभ उठावें। —बलदेव आचार्य गुरुकुल महाविद्यालय कालवा

आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई

आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के तत्वाधान में २३ दिसम्बर, ८७ को नप्पू सभागार में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस श्री पं० सत्यकाम जी की अध्यक्षता में मनाया गया। इस अवसर पर नवनिर्वाचित विधायक एव मुबई महानगर पालिका के महापौर श्री रमेशप्रभु जी मुख्य अतिथि थे।

श्रद्धांजलि समारोह के उपरांत बम्बई प्रदेश को विभिन्न आर्यसमाज, महिला समाज एवं आर्य संस्थाओं द्वारा नवनिर्वाचित विधायक एवं मनपा मुबई के महापौर श्री रमेशप्रभु का फूल-मालाओं द्वारा स्वागत किया गया।

महर्षि दयानन्द स्मारक टंकारा

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा में स्मारक न्यास के प्रबन्धक श्री सत्यदेव जी अवकाश प्राप्त अभियन्ता की अध्यक्षता में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर एक सभा का आयोजन किया गया। ब्र० प्रकाशस्वरूप जी भारद्वाज ने अपने ओजस्वी वाणी द्वारा स्वामी जी के जीवन की विशेष घटनाओं का उल्लेख करते हुए बताया कि वे निर्भीक संन्यासी थे जो स्वामी दयानन्द के पश्चात् पहले व्यक्ति हुए।

सोनीपत में पारिवारिक सत्संग योजना

आर्यसमाज शांतिनगर सोनीपत द्वारा विश्व कल्याण की भावना से वेदवाणी के प्रचार एवं प्रसार तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के सन्देश को घर-घर पहुंचाने के लिये पारिवारिक सत्संग योजना का शुभारम्भ किया है। यह सत्संग प्रत्येक रविवार को सायं ३ से ५ बजे तक आयोजित किया जाता है। अब तक निम्न परिवारों सहित सैकड़ों श्रद्धालुजन लाभांवित हो चुके हैं—

सर्वश्री ब्रह्मदत्त नारंग, तीर्थदास छाबड़ा, तीर्थदास मदान, रामलाल मदान, मा० भीमसेन, मूलचन्द, रमेशकुमार, हरिचन्द स्नेही, चन्द्रभान मल्होत्रा, ईश्वरदत्त आर्य, सूरजप्रकाश तनेजा, मा० मनोहरलाल चावला, आशानन्द वधवा, खानचन्द मुंजाल, जवाहरलाल बत्रा, सेवाराम मनचन्दा।

इस अवसर पर विभिन्न विद्वानों द्वारा जनता जनार्दन का मार्ग प्रशस्त किया जाता है। इस अवसर पर विजय पब्लिक स्कूल सोनीपत की कन्याओं ने लगभग पौन घण्टे तक महर्षि दयानन्द का गुणगान किया तो उपस्थित जन-समूह अत्यन्त प्रभावित हुआ। पारिवारिक सत्संग योजना से लाभ उठानेवाले इच्छुक महानुभाव सम्पर्क स्थापित करके कार्यक्रम निश्चित करें।

—हरिचन्द स्नेही महामन्त्री

हांसी नगर में वेदप्रचार की धूम

आर्यसमाज हांसी की ओर से ११ दिसम्बर से १४ दिसम्बर तक सर्वश्री हंसराज जी चोपड़ा, जयकिशनदास आर्य, हंसराज आर्य प्रधान, जगदीश आर्य के यहां पारिवारिक सत्संग हुआ। जिसमें सभा उपदेशक सर्वश्री ठा० दुर्गासिंह तूफान मधुर, हृदयग्राही भजन, समाज पुरोहित भरतलाल शास्त्री, पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी गुरुकुल फतेहाबाद तथा अत्तरसिंह जी क्रांतिकारी का उपदेश हुआ, जिसमें वैदिक परिवार के आदर्श तथा सामाजिक कुरीतियां दहेज, शराब आदि से दूर रहकर चारित्रिक उत्थान पर बल दिया गया। लोगों ने प्रचार की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के जीवन की कुछ घटनायें

गतांक से आगे—

१३—एक बार आप गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार जारहे थे। लुक्सर स्टेशन पर टिकट चेकर ने आपके डिब्बे में आकर आपसे टिकट दिखाने को कहा। आपने अपना टिकट दिखा दिया और पूछा, आपको केवल मेरे से टिकट पूछना क्यों जरूरी प्रतीत हुआ, बाकी यात्रियों से नही पूछा। तो टिकट चेकर ने बड़ा सुन्दर उत्तर दिया कि आपके इन भगवा कपड़ों में मुझे केवल आप टिकटवाले साधु मिले है, वरना सब बिना टिकट मिलते हैं। उन्होंने इस भगवांवेश को बदनाम कर दिया है। आप अपने जीवन में पैदल तो कई बार मलेर कोटला से धूरी, कालांवाली से रामां मण्डी गये, परन्तु बिना टिकट नही गये।

१४—एक बार आपके पिता जी ने आपको साधुओं की मण्डली में देख लिया और आपको कहने लगे कि मैं तो तुम्हे सरदार बनाना चाहता था, तू साधु होगया। आपने अपने पिताजी के चरण छूकर नमस्ते की और कहा कि पिताजी ! मैं साधु बना ही सरदार बनने के लिये हूं। सरदार बन के ही दिखलाऊंगा। पिताजी ने कहा कि बेटा एक बार घर चलो। तो आपने उत्तर दिया कि यदि सभी साधुओं को भोजन का निमन्त्रण दो तो मैं भी इनके साथ जा सकता हू। दूसरी बात यह है कि भोजन करने के बाद हम वहां विश्राम नही करेंगे। भोजन करके तुरन्त वापिस आजायेंगे। पिताजी खुश होगये और भोजन के लिए निमन्त्रण दे दिया। स्वामी जी अपनी मण्डली समेत भोजन के लिये पिता के घर गये और भोजन करके तुरन्त वापिस आगये। यह अपने पिताजी के अन्तिम दर्शन थे।

१५—स्वामी जी प्रायः प्रतिवर्ष रामां मण्डी के क्षेत्र में कुछ गांवों में भी जाते तो सबको नया धार्मिक जीवन प्राप्त होता। बड़ी रात तक श्रद्धालु उनके चरणों में बैठकर बातचीत शंका समाधान द्वारा धर्म लाभ उठाते।

—ओम्प्रकाश आर्य वानप्रस्थी
अधिष्ठाता आर्य वानप्रस्थ आश्रम (गुरुकुल)
भटिण्डा (पंजाब)

आकाशवाणी रोहतक से

(देववाणी कार्यक्रम में)

श्री आचार्य सुदर्शनदेव जी का "वाल्मीकीय रामायण में विज्ञान" विषय पर भाषण सुनिये प्रातः ७-३० बजे। तारीख १३ जनवरी, १९८८

रोहतक में यतिमण्डल की अवाश्यक बैठक

सभी माननीय यतियों की सेवा में निवेदन किया जाता है कि ५-६ मार्च शनिवार रविवार, १९८८ को दयानन्दमठ, रोहतक में वैदिक यतिमण्डल की आवश्यक बैठक होगी। इस बैठक में महत्त्वपूर्ण विचार विमर्श होना है अतः अवश्य पहुंचने की कृपा करें। माननीय अध्यक्ष महोदय की इच्छा है कि सभी यति उपस्थित होकर मण्डल का परिचय दें। भोजन एवं आवास की व्यवस्था दयानन्दमठ, रोहतक की ओर से होगी।

—स्वामी सुमेधानन्द
मन्त्री यतिमण्डल दयानन्दमठ, चम्बा

श्री सुखदेव शास्त्री वानप्रस्थी—
सभा के अवैतनिक महोपदेशक



आर्यसमाज के हरयाणा क्षेत्र में विशेषकर ग्रामों में श्री पं॰ बस्तीराम जी ने आर्यसमाज और वैदिकधर्म का प्रचार ६० वर्ष तक किया। प्रचार के क्षेत्र मे उन्होंने वैदिकधर्म के प्रचार की धूम मचाई। उन्होंने पाखण्ड का खण्डन करके पोपदल में हलचल मचादी थी। उन्होंने देहातों में घूम-घूमकर बहुत प्रचार किया, अनेक आर्यसमाज स्थापित किये। उनके जीवन में ही उनके अनेक गायक शिष्य हुए। उनके शिष्यों में श्री रामपत जी वानप्रस्थी आर्य भजनोपदेशक एक प्रमुख शिष्य थे। श्री रामपत जी वानप्रस्थी ने भी ५५ वर्ष तक आर्यसमाज का प्रचार धूमधड़ाके के साथ गा-बजाकर किया।

उन्होंने अपने एकमात्र पुत्र सुखदेव को गुरुकुल में पढ़ाया। गुरुकुल से स्नातक होकर उन्होंने संस्कृत अध्यापक होते हुए भी आर्यसमाज के प्रचार कार्य में सक्रिय सहयोग दिया। आर्यसमाज के आंदोलनों में भी पूरा सहयोग दिया।

अगस्त १९८५ से श्री सुखदेव शास्त्री सभा में महोपदेशक नियुक्त हुए। जून १९८६ में उन्होंने वानप्रस्थ की दीक्षा ली। अब उन्होंने त्याग भाव से सभा में अवैतनिक रूप से कार्य करने का निश्चय किया है।

श्री सुखदेव शास्त्री वानप्रस्थी आर्यसमाज के अच्छे वक्ता हैं। अब वे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक में अवैतनिक महोपदेशक हैं। वे अब स्थायी रूप से दयानन्दमठ रोहतक में ही निवास करते हैं। जो सज्जन अथवा समाज शास्त्री जी को उत्सव आदि पर प्रचारार्थ बुलाना चाहें, वे स्वयं आकर मिलें अथवा पत्र द्वारा सम्पर्क स्थापित करें।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं॰ जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

मुद्रक व प्रकाशक ... हरयाणा



ओ३म् सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

वर्ष १५, अङ्क ८ १६ जनवरी, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५०) विदेश में ... एक प्रति ६० पैसे

सत्यार्थप्रकाश के प्रश्नोत्तर-२

—डॉ० धर्मदेव "मनीषी" ... गुरुकुल कालवा

प्रश्न—ईश्वर ने उन ऋषियों को ज्ञान दिया होगा और उस ज्ञान से उन लोगों ने वेद बना लिये होगे ?

उत्तर—ज्ञान ज्ञेय के विना नहीं होता। गायत्र्यादि छन्द षड्जादि और उदात्ताऽनुदात्तादि स्वर के ज्ञानपूर्वक गायत्र्यादि छन्दो के निर्माण करने में सर्वज्ञ के बिना किसी का सामर्थ्य नहीं है कि इस प्रकार का सर्वज्ञानयुक्त शास्त्र बना सके। हां, वेद को पढ़ने के पश्चात् व्याकरण निरुक्त और छन्द आदि ग्रन्थ ऋषि-मुनियों ने विद्याओं के प्रकाश के लिए किये हैं। जो परमात्मा वेदों का प्रकाश न करे तो कोई कुछ भी न बना सके। इसलिये वेद परमेश्वरोक्त हैं। इन्हीं के अनुसार सब लोगों को चलना चाहिये और जो कोई किसी से पूछे कि तुम्हारा क्या मत है ? तो यही उत्तर देना है कि हमारा मत वेद अर्थात् जो कुछ वेदों में कहा है, हम उसको मानते हैं। (सप्तम समुल्लास)

प्रश्न—जब ये जीव और प्रकृतिस्थ तत्त्व अनादि और ईश्वर के बनाये नही हैं, तो ईश्वर का अधिकार भी इन पर न होना चाहिये। क्योंकि सब स्वतन्त्र हुए।

उत्तर—जैसे राजा और प्रजा समकाल में होते हैं और राजा के आधीन प्रजा होती है, वैसे ही परमेश्वर सब सृष्टि का बनाने, जीवों के कर्मफलों के देने, सबका यथावत् रक्षक और अनन्त सामर्थ्यवाला है, तो अल्प सामर्थ्य जीव और जड़-पदार्थ उसके आधीन क्यों न हों ? इसलिये जीवकर्म करने में स्वतन्त्र, परन्तु कर्मों के फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र । वैसे ही सर्वशक्तिमान् सृष्टि संहार और पालन सब विश्व का करता है। (अष्टम समुल्लास)

प्रश्न—मुक्ति में परमेश्वर में जीव मिल जाता है, वा पृथक् रहता है ?

उत्तर—पृथक् रहता है। क्योंकि जो मिल जाये, तो मुक्ति का सुख कौन भोगे ? और मुक्ति के जितने साधन हैं, वे सब निष्फल हो जावें। वह मुक्ति तो नहीं, किन्तु जीव का प्रलय जानना चाहिये। जब जीव परमेश्वर की आज्ञा पालन उत्तम कर्म सत्संग योगाभ्यास पूर्वोक्त सब साधन करता है, वही मुक्ति को पाता है।

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन्।
सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चितेति ॥ तैत्तरी० ॥

जो जीवात्मा अपनी बुद्धि और आत्मा में स्थित सत्य-ज्ञान और अनन्त आनन्दस्वरूप परमात्मा को जानता है, वह उस व्यापकरूप ब्रह्म में स्थित होके उस 'विपश्चित्' अनन्तविद्यायुक्त ब्रह्म के साथ सब कामों को प्राप्त होता है। अर्थात् जिस-जिस आनन्द की कामना करता हैं, उस उस आनन्द को प्राप्त होता है। यही 'मुक्ति' कहाती है। (नवम समुल्लास)

प्रश्न—द्विज अपने हाथ से रसोई बनाके खावें, वा शूद्र के हाथ की बनाई खावें ?

उत्तर—शूद्र के हाथ की बनाई खावें। क्योंकि ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य वर्णस्थ स्त्री-पुरुष विद्या पढ़ाने, राज्य पालने और पशुपालन, खेती और व्यापार के काम में तत्पर रहें और शूद्र के पात्र तथा उसके घर का पका हुआ अन्न आपत्काल के विना न खावें। सुनो प्रमाण—

आर्याधिष्ठिता वा शूद्राः संस्कर्तारः स्युः ॥

यह आपस्तम्ब का सूत्र है।

आर्यों के घर में शूद्र अर्थात् मूर्ख स्त्री-पुरुष पाकादि सेवा करें, परन्तु वे शरीर वस्त्र आदि से पवित्र रहें। आर्यों के घर में जब रसोई बनावें, तब मुख बांध के बनावें। क्योंकि उनके मुख से उच्छिष्ट और निकला हुआ श्वास भी अन्न में न पड़े। आठवें दिन क्षौर नखछेदन करावें, (प्रतिदिन) स्नान करके पाक बनाया करें, आर्यों को खिलाके आप खावें। (दशम समुल्लास)

प्रश्न—जो आग्नेयास्त्र आदि विद्या लिखी हैं, वे सत्य हैं वा नही ? और तोप तथा बन्दूक तो उस समय मे थीं वा नही ?

उत्तर—यह बात सच्ची है, ये शस्त्र भी थे। क्योंकि पदार्थविद्या से इन सब बातों का सम्भव है।

प्रश्न—क्या ये देवताओं के मन्त्रों से सिद्ध होते थे ?

उत्तर—नही ! ये सब बाते जिससे अस्त्र-शस्त्रों को सिद्ध करते थे, वे 'मन्त्र' अर्थात् विचार से सिद्ध करते और चलाते थे और जो मन्त्र अर्थात् शब्दमय होता है, उससे कोई द्रव्य उत्पन्न नही होता और जो कोई कहे कि मन्त्र से अग्नि उत्पन्न होता है, तो वह मन्त्र के जप करने वाले के हृदय और जिह्वा को भस्म कर देवे। मारने जाये शत्रु को और मर रहे आप। इसलिये 'मन्त्र' नाम है विचार का। जैसा 'राजमन्त्री' अर्थात् राजकर्मों का विचार करनेवाला कहाता है, वैसा मन्त्र अर्थात् विचार से सब सृष्टि के पदार्थों का प्रथम ज्ञान और पश्चात् क्रिया करने से अनेक प्रकार के पदार्थ और क्रिया कौशल उत्पन्न होते हैं। (एकादश समुल्लास)

प्रश्न—जीव पूर्वोपार्जित कर्म ही से शरीर धारण कर लेता है। ईश्वर का मानना व्यर्थ है।

उत्तर—जो केवल कर्म ही शरीर धारण में निमित्त हो, ईश्वर कारण न हो तो वह जीव बुरा जन्म कि जहां बहुत दुःख हो, उसको धारण कभी न करे, किन्तु सदा अच्छे-अच्छे जन्म धारण किया करे। जो कहो कि कर्म प्रतिबन्धक है तो भी जैसे चोर आपसे आके बन्दीग्रह में नहीं आता और स्वयं फांसी भी नही खाता, किन्तु राजा देता है। इसी प्रकार जीव को शरीर धारण कराने और उसके कर्मानुसार फल देनेवाले परमेश्वर को तुम भी मानो। (द्वादश समुल्लास)

(शेष पृष्ठ ६ पर)

अमृतः असि

—प्रा० भद्रसेन डाक० साधु आश्रम, होशियारपुर-१४६०२१

अमृतनगर से एक मील की दूरी पर बाईपास के समीप एक छोटा-सा उद्यान है, जिसके मध्य में एक प्रांगण और कुछ कमरे हैं। यह स्थान विवेक वाटिका के नाम से प्रसिद्ध है। इसके प्रबन्धक विवेकशील जी हैं, जिन्होंने चार वर्ष पूर्व स्थानीय कालेज से अवकाश प्राप्त किया था। वे इतिहास, समाज शास्त्र और संस्कृत साहित्य में निष्णात हैं। कार्यमुक्त होने से पूर्व ही उन्होंने कुछ सहयोगियों के सहयोग से इस योजना को प्रारम्भ कर दिया था। आश्रम का औषधालय, वाचनालय एवं पुस्तकालय जहां जनता की सेवा में तत्पर हैं, वहां यहां के तीनों निवासी अपने ध्यान, स्वाध्याय और आश्रम के कार्य करते हुए जनता को हर प्रकार का सहयोग देने में तत्पर रहते हैं।

सत्संगी बन्धुओं के अनुरोध पर स्वाध्याय के साथ सत्संग की भी नियमित योजना प्रारम्भ की गई। एक दिन सत्संग से पूर्व श्रुतिशील ने महात्मा जी से पूछा—कुछ दिन पूर्व हमारे पड़ोस में एक नामकरण संस्कार था। उसमें शिशु की नासिका से निकलते हुए वायु का स्पर्श करते हुए पिता दो मन्त्र बोलता है। दूसरे मन्त्र में 'अमृतोऽसि' आता है, इसका उस प्रसंग से क्या अभिप्राय है? तभी स्वाध्यायप्रिय ने कहा—मैं आज एक पत्रिका पढ़ रहा था। उसमें अमृत पर एक लेख था। जिसमें अमृतपान से देवों के अमर होने की चर्चा थी। तब श्रवणप्रिय ने कहा—हां! मन्दिर में एक दिन पण्डित जी ने पुराणों की समुद्र मन्थन वाली कथा सुनाई थी। जिसमें इसी का विस्तृत वर्णन था। इसके बाद सत्संगप्रिय ने विवेक जी से प्रार्थना की कि आगामी सत्संगों में इसी पर चर्चा चलाई जाये तो अच्छा हो। जिससे पता चल सके कि अमृत क्या है? इस जिज्ञासा को ध्यान में रखकर महात्मा जी ने आज का प्रवचन प्रारम्भ करते हुए कहा—

हमारे साहित्य में स्थान-स्थान पर अमृत की चर्चा मिलती है। इसको बार-बार पढ़ने पर भी अनेक जिज्ञासायें बनी रहती हैं और नाना तरह के प्रश्न मनमें उभरते हैं। इनका समाधान खोजने के लिये हमें सर्वप्रथम अमृत शब्द को समझना चाहिए। न+मृत को अमृत कहते हैं और मृत का अर्थ है=मरा हुआ या जो मर जाये, नष्ट हो जाये, टिका न रहे। अतः अमृत का सीधा-सा अर्थ हुआ—जो न मरे, नष्ट न हो, टिका रहे और यही अर्थ अमर का भी है। इसका एक अभिप्राय यह भी निकलता है कि जिसके बिना कोई मर जाये, टिका न रहे, उसको भी अमृत कहते हैं। क्योंकि विष और अमृत परस्पर विरोधी शब्द हैं। मौत के साधन को या किसी की मौत के कारण बननेवाली वस्तु को विष कहते हैं। अतः जीवनदायक वस्तु का नाम भी अमृत है। हर भाषा में किसी के साधन को मूल-वस्तु साध्य के नाम से पुकारा जाता है। इसी भावना को सामने रखकर आप में से कुछ सज्जन पहले अपने विचार रखें। अन्त में उन सब विचारों की अगले सत्संग में मीमांसा करेंगे।

महात्मा जी के निर्देश पर सर्वप्रथम रसप्रिय ने कहा—अमृत शब्द का सरल-सा अर्थ यह हुआ कि जिसके बिना कोई मर जाये। हम प्रायः पढ़ते और सुनते हैं कि गर्मी में सैकड़ों लोग जल के बिना मर जाते हैं। अत एव जल को जीवन और अमृत के नाम से भी याद करते हैं। तभी तो यज्ञ प्रारम्भ करते हुए जल हथेली पर लेकर कहते हैं—अमृतोपस्तरमसि। इसके पश्चात् कुछ और सज्जनों ने क्रमशः कहा—जल की तरह ही भोजन, वस्त्र, भवन आदि भौतिक पदार्थों और सुविधाओं के बिना भी प्रतिवर्ष अनेकों मर जाते हैं। इसीलिये साहित्य में अन्नादि के लिये भी अमृत शब्द का प्रयोग प्रायः मिलता है। ये मृत स्थिति से दूर रखने के कारण ही अमृत कहे जाते हैं।

दूसरे सत्संग को प्रारम्भ करते हुए एक रविवार विवेकशील जी ने कहा—हम प्रायः देखते हैं कि अन्न से बने खाद्यपदार्थों की अपेक्षा दूध से बने पदार्थ और इनकी अपेक्षा भी घी से बने खाद्यपदार्थ तथा स्वयं घी अधिक दिन टिकता है। इनके खाने पर यही बात तज्जन्य रस आदि पर भी लागू होती है। अत एव साहित्य में दूध, घी से 'क्षीरममृतभोजनम्' की उक्ति किसने नहीं सुनी। इसी दृष्टि से गीता की उपमा 'दुग्धं गीतामृतम्' से दी गई है। दूध आदि से कायाकल्प की आयुर्वेद में चर्चा है। घृत एक उत्तम औषधि के रूप में वर्णित है तथा गोघृत को दीर्घ आयु का प्रमुख साधन माना गया है। आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति में स्वर्ण से बल, पुष्टि और दीर्घ आयुदायक जहां अनेक प्रकार की औषधियां तैयार की जाती हैं, वहां भौतिक दृष्टि से भी सोना एक टिकाऊ धातु के रूप में सर्वमान्य है और इसीलिये सारे देशों की मुद्राओं के मानदण्ड का आधार भी माना जाता है। तभी तो साहित्यकार सुवर्ण को अमृत के रूप में चित्रित करते हैं।

भारतीय दर्शनों में रसेश्वर के नाम से एक दर्शन है, जिसमें पारे के विशेष विधिपूर्वक सेवन से दीर्घ जीवन मिलने की चर्चा मिलती है। वेद और वैदिक वाङ्मय में सोम को अनेक स्थानों पर अमृत कहा है तथा इसके पान से अमर होने की चर्चा है। ऐसे ही जो व्यवहार, बातें, तत्त्व वैयक्तिक और सामाजिक जीवन तथा व्यवस्था को बनाये रखते हैं, उनको भी 'सत्ये हि अमृतमाश्रितम्' वेला अमृत गया—आदि साहित्यिक वचनों में अमृत दर्शाया गया है।

तीसरे सत्संग का उपसंहार करते हुए एक दिन विवेक जी ने कहा—अब तक के विवेचन से यह सिद्ध होता है कि अमृत की परिभाषा के अनुसार जो भी किसी के टिकाव का कारण होता है, उसको अमृत कहा जाता है। इस सब की जब हम समीक्षा करते हैं तो पहली बात यह सामने आती है कि जहां इनके न होने पर अनेकों मर जाते हैं, वहां जल आदि को बरतते हुए भी अनेकों मर जाते हैं। अतः ये भौतिक पदार्थ आंशिक रूप से ही अमृत हैं।

महात्मा जी ने चौथे सत्संग का श्रीगणेश करते हुए कहा—पूरी तरह से अमृत तो आत्मा ही है, क्योंकि अमृत की परिभाषा आत्मा पर ही पूरी तरह से लागू होती है। इसीलिये सभी शास्त्रकार स्थान-स्थान पर संकेत करते हैं कि इस अजर-अमर आत्मा को न तो कोई शस्त्र काट सकता है, न ही जल में यह गलता है और न ही किसी प्रकार की आग इसको जला सकती है अर्थात् यह किसी भी ढंग से नष्ट नहीं होती।

महात्मा जी ने आगे समझाया कि आत्मा की सत्ता केवल काल्पनिक नहीं है। प्रत्येक शरीर का व्यवहार और अनुभव जहां इसकी सत्ता को सिद्ध करता है, वहां अनेक दर्शनों में बड़ी सुन्दर युक्तियों से आत्मा का अस्तित्व समझाया गया है। दर्शनों और उपनिषदों में आत्मा के स्वरूप को भी सोदाहरण स्पष्ट किया है।

अमृत की चर्चा का उपसंहार करते हुए विवेकशील जी ने कहा—कि अमृत की पूर्ण परिभाषा परमात्मा पर ही चरितार्थ होती है। पर हमने इस चर्चा को जिस रूप में चलाया है, उस प्रसंग के अनुसार यहां जीवात्मा की ही चर्चा है। यह ठीक है कि अपने स्वभाव से जीव भी अजर-अमर है, पर उसका शरीर से सम्बन्ध अजर-अमर नहीं है। अतः प्रस्तुत प्रसंग में शरीरी आत्मा को अपनी अनुभूति एवं आत्म-ज्ञान कराना ही 'अमृतः असि' वचन और अमृत चर्चा का मूल अभिप्राय है। जिसकी ओर संकेत करते हुए ही महर्षि याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी से कहा था—'आत्मा वारे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यश्च' और इसकी सिद्धि को प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए ही महर्षि मनु ने 'विद्यातपोभ्यां भूतात्मा' का मार्मिक मर्म बताया है। विद्या और तप जिस रहस्य को यहां संकेतित करते हैं, वह ही योगभाष्य एवं सत्यार्थप्रकाश में उद्धृत 'स्वाध्यायाद् योगमासीद्' पद्य में प्रकाशित हुआ है। योग आदि अध्यात्म ग्रन्थों की सूक्तियों की ओर संकेत करते हुए महात्मा जी ने कहा—वस्तुतः मानव जीवन की कृतार्थता इसी में है कि अपने आपको अनुभव किया जाये। यह केवल चर्चा की चीज नहीं है, अपितु अनुभव की बात है, तभी तो उपनिषद् के ऋषि ने कहा था—'नानुध्यायाद् बहून् शब्दान् वाचो विग्लापनं हि तत्'। संक्षेप रूप में संकेतित इस अमृतः असि को प्रिय पाठको! प्रतीक्षा कीजिए कि किसके सहयोग से यह पुस्तक आपके हाथों में आती है। तब यह सूत्र रूप में न रह स्पष्ट रूप में आ जायेगी। अतः जरूरत है किसी प्रकाशक की।

सिख राजनीति पर आतंकवादियों का गलबा

—प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

जब आतंकवादियों ने प्रो० दर्शनसिंह रागी को स्वर्ण मन्दिर तथा अकाल तख्त का कार्यकारी मुख्यग्रन्थी नियुक्त किया और गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी द्वारा नियुक्त ग्रन्थियों को हटाकर स्वर्ण मन्दिर तथा अकाल तख्त का प्रबन्ध प्रो० रागी को सौंप दिया। उसी समय यह स्पष्ट होगया था कि स्वर्ण मन्दिर पर आतंकवादियों का कब्जा हो चुका है। जब प्रो० रागी ने जैनमुनि सुशीलकुमार से बात की और बातों का सिलसिला स० त्रिलोचनसिंह रियासती के माध्यम से चालू रहा, तब आतंकवादियों ने प्रो० रागी का पत्ता काटने का निर्णय ले लिया था। एकीकृत अकाली दल का गठन करके तथा बरनाला को तनखय्या घोषित करके, प्रो० दर्शनसिंह यह समझने लगे थे कि वे ही पंथ के सर्वेसर्वा हो जायगे। यही समझकर उन्होंने मुनि सुशीलकुमार के तथा रियासती के माध्यम से भारत सरकार के प्रतिनिधियों से विचार विनिमय आरम्भ किया। किस कारण वार्ताचीत में गतिरोध उत्पन्न हुआ और कब और कैसे यह बातचीत टूट गई यह अभी रहस्य बना हुआ है, परन्तु यह बात तो सर्वविदित है कि आतंकवादियों ने इस बात को पसन्द नहीं किया और अपनी जान को खतरा समझकर प्रो० रागी स्वर्ण मन्दिर छोड़कर अपने घर चले गये। आतंकवादियों ने पथिक कमेटी के वरिष्ठ सदस्य मनोचहल को मुख्यग्रंथि नियुक्त कर दिया।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अधिकारियों का चुनाव हुआ। चुनाव एक नहीं दो होगये, परन्तु दोनों ही अधिकारी वेग्रमर हैं और आतंकवादियों का ही राज्य है स्वर्ण मन्दिर में। अन्य अनेक गुरुद्वारों पर भी आतंकवादियों का ही वर्चस्व बना हुआ है और उनके सामने पड़ने की किसी को हिम्मत नहीं। एकीकृत अकाली दल के फतहगढ़ सम्मेलन पर आतंकवादियों का आकर कब्जा करना, दल के नेताओं का भाग खड़ा होना और 'खालिस्तान' का प्रस्ताव पास होना, इस बात का प्रमाण है कि अकालियों के सभी धड़े और उनके नेता एक प्रकार से उनके सामने हथियार डाल चुके हैं। बरनाला को तो प्रो० रागी और एकीकृत अकाली दल के नेताओं ने आतंकवादियों के साथ मिलकर तनखैय्या घोषित किया, परन्तु अब आतंकवादियों ने स० प्रकाशसिंह बादल और तोहड़ा को भी तनखैय्या घोषित कर दिया है और प्रो० रागी को दिल्ली सरकार का एजेण्ट। बादल, अमरेन्द्रसिंह और रागी चाहे आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव और भारत की एकता की बात करते हों, परन्तु वे अपनी बुलाई हुई सभा में न तो आतंकवादियों को बोलने से रोक सके और न ही उनके खालिस्तान के प्रस्ताव का विरोध कर सके, वे केवल अपनी जान बचाकर सभा से खिसकनेभर का साहस बटोर सके।

आतंकवादियों का विरोध करनेवाले साम्यवादी नेताओं, जत्थेदार जीवनसिंह उमरानंगल के सुपुत्र, भारतीय जनता पार्टी के नेताओं तथा कांग्रेस के श्री जगतराम और त्रिलोचनसिंह सियासती जैसे वरिष्ठ नेताओं को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा और पुलिस के छोटे-छोटे अधिकारी ही नहीं, बल्कि भारतीय पुलिस सेवा के सुयोग्य युवा अधिकारियों को भी मौत के घाट उतार दिया गया। यह ठीक है कि ग्रामीण सिख जनता की भावनायें अब आतंकवादियों के हक में नहीं है और बहुत सारे आतंकवादी मारे गये हैं या गिरफ्तार कर लिए गये हैं, परन्तु ऐसा लगता है कि आतंकवादियों की गुरेला सेना में नई भर्तियां भी हो रही हैं और पंजाब पुलिस के कुछ लोग उनसे मिले हुए हैं। यदि ऐसा न होता तो सवेरे ८ बजे वे आतंकवादियों की योजनायें बनानेवाले सतनाम बाबा को पुलिस से छीनकर मारुति कार में भगाकर नहीं ले जा सकते थे।

पंजाब की स्थिति सुलझने में अभी काफी समय और लग सकता है। आज जो परिस्थितियां है उनके रहते किसी भी अकाली नेता या नेताओं से बात करना निरर्थक होगा। क्योंकि वे सभी एक-एक करके वे सिख जनता तथा भारत सरकार दोनों के मनों में अपनी विश्वसनीयता खो चुके हैं। वे कोई भी बात करें और किसी निर्णय पर पहुंचें, उनको मनवाना उनके बूते से बाहर है। पंथ के एक से दूसरे धड़े में आने जाने से अकालियों के किसी धड़े में संगठित होकर कार्य करने की क्षमता पैदा नहीं हो सकती वह क्षमता जो संगठन से आती है, वह दाव मारने की इच्छावाले व्यक्ति में नहीं आ सकती। इस प्रकार की आत्मशक्ति की भावना आज किसी अकाली नेता में नहीं है। इसीलिये सिख जनता और भारत सरकार का विश्वास किसी ने भी पर नहीं जम पाता। वैसे भी अकाली नेता अपने निर्णयों पर थोड़ी-सी हलचल होते देखकर हाथ पैर छोड़ते रहे हैं और उन पर कभी भी टिक नहीं पाये। इस परिप्रेक्ष में पंजाब के मसलों को देखा जाये तो यह स्पष्ट हो जाता है कि आज के अकाली नेताओं से बात करना व्यर्थ होगा। समस्यायें सुलझने की बजाये और अधिक उलझ सकते हैं। तथाकथित सन्तबाबों, आनन्दपुर साहब और अलगाववादियों से बात करने का कोई साझा बिन्दु नहीं दिखाई देता और बातों का नतीजा तभी निकल सकता है, जब भारत सरकार मजबूती के आसन पर बैठकर बात करे। अब सरकार को इसका आतंकवादियों के मनोबल को चूर-चूर किये बिना यह सम्भव नहीं होगा।

इस अवस्था को लाने में काफी समय लग सकता है। रावी व्यास के पानी का मामला तो ऐसा है कि नहर जल्दी तैयार करके हरयाणा के सूखाग्रस्त इलाकों को पानी देना हरयाणा और राष्ट्र के लिए बहुत आवश्यक है। इसलिये दिन-रात काम करके सतलुज यमुना लिंक बनाकर तैयार करना अनिवार्य है। यह होने पर ही हरयाणा की प्यासी धरती को पानी मिलेगा। पुराने अकाली नेता जिन्होंने फाजिल्का अबोहर और चण्डीगढ़ का फैसला अपनी पेशकश के आधार पर करवाया था। आज के अकाली नेताओं से अधिक शक्तिशाली और विश्वसपात्र थे, इसलिये भी। क्योंकि उस समय सब अकाली एक थे और उनके एक ही सर्वमान्य नेता सन्त फतहसिंह थे। १९७० के उस फैसले पर भी अमल करना चाहिये। किसी भी मामले को लटकाने से वह उलझ जाता है। उस फैसले पर मोहर मैच्यू आयोग भी लगा चुका है। इसलिये हरयाणा से सम्बन्धित क्षेत्रीय तथा पानी के मामलों को लटकाना बहुत बड़ी भूल होगी और राष्ट्र के लिये भी अत्यन्त हानिकर होगी।

जब पंजाब की स्थिति सुधरे और बातचीत का माहौल बने, तब अकेले पंजाब से सम्बन्धित मामलों को शीघ्र सुलझा लेना चाहिये।

मकर सक्रांति

—देसराज खीरबाट, २६० इन्दिरा कालोनी, रोहतक

सदैव उत्तरायण चल।

सूर्य द्वारा ही संवत्सर का, काल का विभाग होता है। यह काल मानो प्रजापति है। काल ही में तो सब जीते-मरते हैं। सवत्सर के दो भाग है। छ मास तक सूर्य दक्षिण दिशा की तरफ जाता है, इसको दक्षिणायन कहते हैं। छः मास तक वह उत्तर दिशा में रहता है। इस समय को उत्तरायण कहते हैं। जो लोग इष्टापूर्ति (यज्ञ-याग आदि इष्ट हैं कुएं बावडी, अनाथालय आदि बनवाना आपूर्त हैं) को ही अपना कृत्य या लक्ष्य समझते है, यह सब कुछ करके जो फल लाभ की इच्छा करते हैं, वे चन्द्रलोक को जोत लेते हैं। भोग्य पदार्थों की उनके बहुतायत होती है, क्योकि चन्द्र भोग्य पदार्थों का प्रतिनिधि है। इस प्रकार संसार के भोगों में चित्त रखनेवाले बार-बार जन्म-मरण के चक्र में चक्कर लगाते हैं। उनको पुत्र-पौत्रों के लिए इच्छा बनी रहती है। उनका मार्ग दक्षिणायन का मार्ग है, इसे रयिमार्ग भी कहते हैं, यह पितृयाण मार्ग है।

सूर्य जब दक्षिण दिशा में जाता है, तब मनुष्य में भोग की प्रवृत्ति की भावना प्रबल हो जाती है, उस समय संसार में बादल उमड़ने लगते हैं, अंधेरा हो जाता है, वर्षा होने लगती है, परन्तु जब सूर्य उत्तर की तरफ जाता है, तब मनुष्य में त्याग की, निवृत्ति की भावना प्रबल हो जाती है। यह देवयान अर्थात् दिव्यभाव उत्पन्न कर देवता बनने का मार्ग है। उस समय आकाश स्वच्छ हो जाता है। सूर्य का प्रकाश चारों तरफ चमकने लगता है। दक्षिणायन तथा उत्तरायण तो छः-छः मास तक रहते हैं, परन्तु अपने हृदय में उत्तरायण को हर समय बनाये रखना ही मनुष्य का लक्ष्य है। जो इस प्रकार नही करता, उनके जीवन में दक्षिणायन को अवस्था छा जाती है, वे रयिमार्ग पर, प्रवृत्ति मार्ग पर चल देते हैं। उनके हृदय में घर-गृहस्थी बसाकर पुत्र-पौत्र उत्पन्न करने की भावना प्रबल होती है। उनका मार्ग पितृयाण अर्थात् पिता-पितामह बनने का मार्ग है, जो दक्षिणायन को छोड़कर उत्तरायण मार्ग से चलते हैं, जो प्रवृत्ति मार्ग को छोड़कर, निवृत्ति मार्ग का आश्रय लेते हैं, वे तप, ब्रह्मचर्य श्रद्धा और विद्या के सहारे आत्मा को ढूढ लेते हैं। जैसे इष्टापूर्ति के पीछे दौडनेवाले चन्द्रलोक को जीत लेते है, वैसे ही आत्मा को ढूंढनेवाले आदित्य लोक को जीत लेते हैं।

चन्द्रलोक रयि प्रधान है। आदित्य लोक प्राण प्रधान है। चन्द्रलोक दक्षिणायन मार्ग है, आदित्य लोक उत्तरायण मार्ग है। चन्द्रलोक का जीवन सकाम जीवन है, प्रेय मार्ग है। आदित्य लोक का जीवन निष्काम जीवन है, श्रेय मार्ग है। आदित्य लोक उत्तरायण या आत्मा को ढूंढने का मार्ग है। वह मार्ग है, जिधर प्राणशक्ति मनुष्य को खींचती है, चाहे वह उधर चले या न चले। यह अमृत मार्ग है, अभय मार्ग है, यही परम मार्ग है। अन्य मार्ग भटकानेवाले हैं। इस सीधे रास्ते पर जो चल देता है, लौटकर नही आता। अन्य मार्ग पर चलनेवाले भटक जाते हैं। अतः लौट-लौटकर इसी मार्ग पर फिर आते हैं। जो भटक जायेगा, वही तो लौटेगा। यह निरोध मार्ग है। इसी पर चलनेवाला आगे जाकर रुक जाता है। उसे फिर चलने की जरूरत नही रहती। ठीक मार्ग पर चलनेवाले का ही चलना रुक सकता है, जो ठीक मार्ग पर नहीं चला, वह तो चलता ही रहेगा, उसके चलने का विरोध कभी नही होगा। इसलिए हम सदैव उत्तरायण मार्ग पर ही चलें।

यतिमण्डल की बैठक

५-६ मार्च, १९८८ शनिवार और रविवार को दयानन्दमठ, रोहतक में "वैदिक यतिमण्डल" की आवश्यक बैठक होगी। जिसमें महत्त्वपूर्ण विचार-विमर्श किया जायेगा। अतः अवश्य ही पहुंचने की कृपा कीजिये।

खूनी खेल महापाप है

ले०—ओम्प्रकाश दुहन

पिछले दिनों पंजाब में फगवाडा के निकट 'खरगोश पकडो दौड़' तीन दिन तक चलती रही। इस दौड़ में खरगोशों को पकड़ने के लिए शिकारी कुत्तों ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया, जिसमें हर बार एक निरीह और निरपराध खरगोश के पीछे दो मांसाहारी हिंसक कुत्तों को लगा दिया जाता और जो कुत्ता तीव्रगति से दौड़कर पहले खरगोश को पकड़कर उसके चीथड़े कर देता, विजयी माना जाता। इस प्रकार ८० शिकारी कुत्तों ने २५० खरगोशों की जान लेकर लोगों को खूनी खेल दिखाया।

खरगोश एक निरीह एवं निरपराध जीव है। यह ठीक है प्रकृति में दूसरे जीव अर्थात् बाज, उल्लू तथा लोमड़ी आदि जंगलों में इसको अपना भोजन बना लेते हैं। प्रयोगशालाओं में भी इनका प्रयोग किया जाता है। ऐसा करना सम्भवतः अनिवार्य हो सकता है, परन्तु केवल खेल के लिए अहिंसक जीवों को इस प्रकार निर्दयता से हत्या करना अथवा करवाना तो सभ्य संसार को शोभा नही देता। इन हत्याओं से मनोरंजन कैसे हो सकता है। जो लोग इस प्रकार अपना मनोरंजन करना चाहते हैं, उन्हें मानव कहलाने का क्या अधिकार है? और सुना है कि ऐसे कई क्लब देश में इस प्रकार के घृणास्पद और खूनी खेलों का हर वर्ष आयोजन करते हैं। न जाने कैसे सरकार इन खूनी और पापी प्रदर्शनों की खुली छूट देती है। यह हमारी समझ से बाहर है।

हम अहिंसा का प्रचार करते हैं, परन्तु व्यवहार में हिंसा की प्रवृत्ति का प्रदर्शन करते हैं। कुछ अरब देशों में 'ऊंटों की दौड़' में छोटे-छोटे बच्चों की पीठ पर बांध दिया जाता है, ताकि उनके जोर-जोर से चिल्लाने से ऊंट तेजी से दौड़ें और विजयी रहें। ऊंटों की यह दौड़ बड़ी लम्बी और कष्टदायक होती है। सुना है कि कई बच्चे इन दौड़ों में अपने प्राणों से हाथ धो बैठे। दौड़ के आयोजकों और उनमें भाग लेनेवालों को यह भली-भांति पता है कि ऐसा करना अनुचित और कष्टदायक है। इसीलिए वे अपने बच्चों को ऊंटों की पीठ पर नहीं बांधते। इस काम के लिए वे पाकिस्तान से छोटे-छोटे बच्चों को पैसे के लालच में ले आते हैं। पाकिस्तान की संसद में इसके विरोध में तीव्र प्रतिक्रिया हुई है और सरकार ने यह आश्वासन देना पड़ा कि भविष्य में ऐसे कामों के लिए बच्चों को उन देशों में नही भेजा जायेगा।

विश्व में ऐसी संस्थायें और समितियां हैं, जो जानवरों एवं पशुओं आदि को सुरक्षा देने के लिए लोगों में शिक्षा का प्रचार करती हैं, उनके कार्य की प्रशंसा की जानी चाहिए। समझ में नहीं आता, क्यों किसी के प्राणों से खेलकर लोग मनोरंजन करना चाहते हैं। कहीं न कहीं हमारे समाज की शिक्षा में कोई न कोई दोष अवश्य है। वरना मानव स्वभाव से तो हिंसक और निर्दयी नही हो सकता। उसके हृदय में करुणा का स्रोत सदैव रहा है।

गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज सिवानी मण्डी की तरफ से दिनांक २३ से २७ दिसम्बर ८७ तक गायत्री महायज्ञ विधिवत् सम्पन्न हुआ। जिसमें पहले दो दिन ब्र० अखिलेश्वर ने यज्ञ करवाया तथा वेद प्रवचन किया। बाद में वेदप्रकाश आर्य ने यज्ञ करवाया तथा लगातार ७ दिन तक स्वामी जगतमुनि जी के भजन एवं प्रवचन हुए। इसके अतिरिक्त सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने भी शराबबन्दी बारे व आर्यसमाज क्या है? क्या चाहता है? विचार रखे तथा श्री रामसिंह प्रेमी व दीपचन्द जी आर्य के समाज-सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए।

—हनुमान आर्य, सिवानी मण्डी, भिवानी

आर्यसमाजों के उत्सवों के कार्यक्रम

आर्यसमाज ओरंगाबाद मितरोल जिला फरीदाबाद	५ से ७ फरवरी
,, मानपुर जिला फरीदाबाद	१३ से १५ ,,
आर्य केन्द्रीय समारोह तक (ऋषि बोधोत्सव)	१६ ,,
आर्यसमाज मनाना जिला करनाल	१४ से १६ ,,
,, गोहाना जिला सोनीपत	१३ से १५ ,,
,, सालवन जिला करनाल	२६ से २८ ,,

जो आर्यसमाज फरवरी मास में अपने उत्सव अथवा वार्षिक वेद-प्रचार कार्यक्रम रखना चाहते हैं, उनसे निवेदन है कि वे सभा से पत्र व्यवहार अथवा सम्पर्क करके अपनी तिथियां सुरक्षित करवा लेवें।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

आवश्यकता है

सुयोग्य अनुभवी एक M.B B.S. डाक्टर की। निशुल्क या वेतन पर सेवा करे। रहने की पूरी सुविधा। रिटायर्ड को वरीयता।

—मन्त्री आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार)

पूर्णिमा के उपलक्ष्य में हवन

आर्यसमाज नलवा की तरफ से गतमास की भांति दिनांक ३-१-८८ को पूर्णिमा के उपलक्ष्य में हवन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वामी मस्तानानन्द जी के ईश्वरभक्ति के भजन हुवे। श्री ताराचन्द वानप्रस्थ ने सतीप्रथा एवं नारी उत्पीडन के खिलाफ दिल्ली से चम्बू नदी (देवराला) तक पैदल जत्थे का विवरण विस्तार से बताया। सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के जन्म दिवस व उनके कार्यों पर प्रकाश डाला। ज्ञातव्य है कि आर्यसमाज मन्दिर नलवा में हरेक पूर्णिमा का हवन बड़ी श्रद्धा से किया जाता है।

—मन्त्री आर्यसमाज नलवा

बाप शराबी था, सो बेटे ने आत्महत्या करली

पलवल, ४ जनवरी (निस)। कभी-कभी मनुष्य के ऐब उसके स्वयं अथवा पूरे परिवार की तबाही का कारण बन जाते हैं। ऐसी ही एक घटना इस उपमण्डल के गांव 'जनौली' में गत दिवस घटित होगई।

महाविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने वाले १९ वर्षीय छात्र ने आत्महत्या इसलिए करली कि वह अपने शराबी बाप की हरकतों से तंग आ चुका था। मृतक का पिता पलवल ब्लाक में पटवारी के पद पर कार्यरत है। बताया जाता है कि वह शराब का बहुत अधिक मात्रा में सेवन करता है। मदिरा के नशे में वह युवा पुत्र व पुत्री की उपस्थिति में अपनी पत्नी से भी आपत्तिजनक हरकतें करता था। ऐसी बातें मृतक छात्र को असह्य थीं। उसने कई बार अपने पिता से शराब के सेवन का विरोध किया, परन्तु शराबी बाप के कानों पर जू तक नहीं रेंगी।

घटना के दिन छात्र ने देखा कि उस का पिता शराब के नशे में धुत है। वह अपने बेटे के साथ अभद्र व्यवहार करने लगा। अपने पिता का व्यवहार जब उसकी बर्दाश्त से बाहर होगया तो उसने क्रोधित होकर अपने मां-बाप दोनों को आधी रात के समय एक कमरे में बन्द कर दिया। उसने गुस्से में अपने बाप की पिटाई भी की बताते हैं।

छात्र ने अपने मां-बाप को चेतावनी दी कि वह उनकी आंखों के सामने ही आत्महत्या करने जाहरा है। वह अपने बेटे के प्राणों की रक्षा के लिए बहुतेरा चिल्लाये, लेकिन बन्द होने के कारण विवश थे। देखते ही देखते छात्र ने अपने अभिभावकों के सामने बन्द कमरे में अपनी मौत का फन्दा बनाकर अपनी जीवनलीला समाप्त करली।

पता चला है कि उक्त पटवारी ग्राम प्रधान एवं गांव के कुछ प्रभावशाली लोगों के जरिए इस सारे प्रकरण को दबवाने में सफल होगया है। वह इसे मामूली आत्महत्या का मामला मानते हैं। कुछ सामाजिक संगठनों ने ऐसे शराबी व्यक्ति का 'सामाजिक बहिष्कार' करने का निर्णय लिया है।

४२ बूढ़े बैलों के प्राण बचे

दिनांक १८-१२-८७ को प्रातःकाल सांपला में मेव मुसलमान कसाइयों के हाथों से ४८ बूढ़े लाचार बैलों को छुड़वाया गया। गुड़गांव जिले के मेवात क्षेत्र के यह मेव कसाई भागने में सफल हो गये। [illegible] गो-प्रेमी श्री प० गणपतराय जी भारद्वाज (हसनगढ़), दोनों [illegible] के एस० डी० महोदय श्री महेन्द्रलाल जी से मिले। १७ बैल तो सांपला तथा गढ़ी के किसान सेवार्थ ले गये। तीन अति दुर्बल बूढ़े बैल उठ न सके, वह दम तोड़ गये। शेष २८ बैलों को ट्रक यूनियन के तीन ट्रकों में चढ़ाकर डाघल गोशाला में प्रवेश करा दिये। सांपला तथा गढ़ी और ट्रक यूनियन के लोगों ने २३००) की धनराशि इन बैलों के चारे के लिए दान रूप में दिये। वह २३००) डाघल गोशाला में जमा करा दिये।

इस प्रकार एक और यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ में श्री राजकुमार जी भारद्वाज (हसनगढ़) ने इन बैलों की रक्षा तथा [illegible] करानेवालों में श्री कपूरसिंह जी नम्बरदार सांपला, चौ० [illegible] जी गढ़ी (ट्रक यूनियन), डा० राजसिंह जी आर्य कलावड़ तथा [illegible] सुतप्रकाश जी साधु आश्रम सरसाली (जींद) सांपला आदि महानुभावों का अच्छा योगदान रहा। स्मरण रहे कि हरयाणा के पशु मेलों में बूढ़े बैल जितने भी खरीदे जाते हैं, वह मेवात में काटे जाते हैं। इधर-उधर से ले जाई गई गाय भी काटी जाती हैं। गऊवों को इकट्ठा करके ले आने वाले जगह-जगह नगरों में गिरोह हैं। मेवात में प्रतिदिन हजारों गाय तथा इसका वंश काटा जाता है। यह आरोप नहीं, एक सच्चाई है। आश्चर्यजनक खेद की बात यह है कि जब हरयाणा प्रांत में गोहत्या पर प्रतिबन्ध है, फिर यह घोर अनर्थ क्यों हो रहा है। चाहे बन्सीलाल सरकार रही हो या भजनलाल सरकार या देवीलाल सरकार। इन निर्दोष मूक प्राणियों की ओर किसी का ध्यान नहीं गया। जब यह गौ आदि पशु मारे जायगे तो फिर इनको चारा ईश्वर कैसे देगा और फिर मनुष्य इनको मार-मारकर इनका मांस खायेंगे तो सृष्टिकर्त्ता महान् ईश्वर मनुष्यों के लिये अन्न क्यों देगा? सूखा इस बात का प्रमाण है और महर्षि देव दयानन्द जी महाराज के यह शब्द कि गौ आदि पशुओं के विनाश से राजा और प्रजा दोनों का नाश हो जाता है, सत्य साकार रूप हो रहे हैं। मेवात में गोवधी रुकवाने के लिये हरयाणा की आर्य-समाज आगे आयें, इसके नेता इस बात पर विचार करें।

—डा० रणवीर आर्य गोप्रेमी, गांव कलावड़, जिला रोहतक

जींद में गोरक्षा

दिनांक ३-१-८८ को आर्यसमाज जींद शहर में सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों तथा गोशाला के अधिकारियों व अन्य प्रतिष्ठित नागरिकों की सभा हुई। जिसमें उपस्थित सभी सज्जनों ने आपसी सहयोग के आधार पर शहर में धक्के खाती सभी लावारिस गउवों को बांधने की उत्तम व अनुकरणीय व्यवस्था का कार्यभार गोशाला के अधिकारियों ने लिया।

आशा है इसका अनुकरण करते हुए सभी सज्जन यथाशक्ति गउवों के प्राण बचाकर राम और कृष्ण के लाल होने का दावा सत्य सिद्ध करके दिखायेंगे।

—बलदेव आचार्य गुरुकुल कालवा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री डा. धर्मपाल आर्य, उपप्रधान—म. धर्मपाल आर्य, रतनचन्द सूद, प्रो० भारतमित्र शास्त्री, श्रीमती ईश्वरीदेवी धवन, महामन्त्री सूर्यदेव, मन्त्री—मूलचन्द गुप्त, देवव्रत शर्मा, रामशरणदास आर्य, ओम्प्रकाश आर्य, मंगेराम आर्य, श्यामसुन्दर विरमानी, कोषाध्यक्ष—पुरुषोत्तमलाल गुप्त।

मन को सीख

रचयिता—कविराज छाजूराम शर्मा शास्त्री नई दिल्ली

सुन मन [illegible] हमारी।
जो नहीं [illegible] हमारी माने [illegible]

चञ्चलतावश भोगों में फंसकर निज प्रकृति बिगारी।
जो कारण मूरे प्रतिपल तू निस-दिन रहत दुखारी॥

काम-क्रोध-मद-मत्सर से तू सदा रहत अधिकारी।
जस-अपजस का ध्यान न लावे लज्जा सकल बिसारी॥

अपना [illegible] और-और [illegible] से जोड़े यारी।
स्वार्थ के [illegible] मीत जगत् में अनुभव [illegible] विचारी॥

[illegible] जीवन में सदा अमित सुखकारी।
'छाजूराम' सुमर्न [illegible] है [illegible] तुम्हारी॥

आत्मनिर्भर बन

मानव मन कर [illegible] ॥
नजि आत्मा [illegible] हो क्यों यह [illegible] ।

जग में [illegible] अपनी तूने सत्ता नहीं पहिचानी।
करता रहा इसी मे निस दिन अपनी अतिशय हानि॥

हस्त-पाद-मुख-श्रवण-नासिका नैन व रसना रानी।
साधन सकल मिले हैं तुझको सुकृत किये जा प्राणी॥

हवा मिली अरु धूप मिली है मिला अन्न धन पानी।
ज्ञान मिला पशुओं से भी ऊंचा बनता क्यों अज्ञानी॥

तुझे आत्मनिर्भर बन करके आत्मिक शक्ति बढानी।
जीवन की यह सार बात तुझे 'छाजूराम' समझानी॥

(पृष्ठ १ का शेष)

आयत—आरम्भ में ईश्वर ने आकाश और पृथिवी को सृजा और पृथिवी बेडौल और सूनी थी और गहिराव पर अंधियारा था और ईश्वर का आत्मा जल के ऊपर डोलता था।

(तौरेत उत्पत्ति पुस्तक) पर्व १, आयत १,२॥

समीक्षक—आरम्भ किसको कहते हो?

ईसाई—सृष्टि के प्रथमोत्पत्ति को।

समीक्षक—क्या यही सृष्टि प्रथम हुई? इसके पूर्व कभी नहीं हुई थी?

ईसाई—हम नहीं जानते हुई थी वा नहीं, ईश्वर जाने।

समीक्षक—जब नहीं जानते तो इस पुस्तक पर विश्वास क्यों किया? क्योंकि जिससे सन्देह का निवारण नहीं हो सकता और इसी के भरोसे लोगों को उपदेश कर, इस सन्देह के भरे हुए मत में क्यों फंसाते हो? और निःसन्देह सर्वशंका निवारक वेदमत का स्वीकार क्यों नहीं करते? जब तुम ईश्वर की सृष्टि का हाल नहीं जानते तो ईश्वर को कैसे जानते होंगे! (त्रयोदश समुल्लास)

प्रश्न—देखो! हमारा मत कैसा अच्छा है कि जिसमें सब प्रकार का सुख और अन्त में मुक्ति है।

उत्तर—ऐसे ही अपने-अपने मतवाले सब कहते हैं कि—"हमारा ही मत अच्छा है, बाकी सब बुरे। बिना हमारे मत के दूसरे मत में मुक्ति नहीं हो सकती"। अब हम तुम्हारी बात को सच्ची मानें वा उनकी? हम तो यही जानते हैं कि सत्य भाषण, अहिंसा, दया आदि शुभ गुण सब मतों में अच्छे हैं और बाकी वादविवाद, ईर्ष्या-द्वेष, मिथ्याभाषणादि कर्म सब मतों में बुरे हैं। यदि तुमको सत्य मत ग्रहण की इच्छा हो तो वैदिक मत को ग्रहण करो। (चतुर्दश समुल्लास)

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक की सफलता

"सर्वहितकारी का स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक" प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एवं आकर्षक था। प्रथम पृष्ठ पर स्वामी जी का भव्य चित्र विशेष रूप से शोभनीय रहा। इसमें काफी ठोस एवं महत्त्वपूर्ण सामग्री पढ़ने को मिली। स्वामी जी के जीवन के सम्बन्ध में काफी विस्तार से चर्चा की गई है। निःसन्देह स्वामी श्रद्धानन्द जी आर्यसमाज के उन नेताओं में से एक थे, जिन्होंने आजीवन सामाजिक बुराइयों एवं कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष किया। इसके साथ-साथ गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली एवं नारी उत्थान के लिए भी काफी महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

अतः उनकी इस बलिदान पुण्य तिथि पर यह विशेषांक निकालना सचमुच एक प्रशंसनीय कार्य है। विशेषांक की सफलता के लिए बधाई।

—रामकुमार सोनायण जलधर जोशी चौहान, सोनीपत

बहिन शास्त्रीदेवी का निधन

आर्यसमाज के क्रांतिकारी अमर शहीद पं० रामप्रसाद बिस्मिल की बहिन शास्त्रदेवी का २२ दिसम्बर को दिल्ली में स्वर्गवास होगया। वे काफी समय से बीमार थी। आपने अपने भाई श्री बिस्मिल के कार्यों में बहुत सहयोग दिया था। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—सभामन्त्री

हिन्दी, संस्कृत की उपेक्षा का आरोप

मेरठ, ४ जनवरी (वार्ता)। उर्दू, हिन्दी का विवाद समय-समय पर वोट की राजनीति के तहत उठाया जाता है और सरकार नई शिक्षा-नीति के नाम पर संस्कृत और हिन्दी की उपेक्षा कर रही है।

यह विचार पद्मश्री आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन ने व्यक्त करते हुए कहा कि देश के नेताओं को धोखे की नीति छोड़नी चाहिए।

उन्होंने भारतीय माध्यमिक हिन्दी शिक्षक सम्मेलन के पुरस्कार वितरण समारोह में कल कहा कि यदि उर्दू को देवनागरी भाषा में लिखा जाये तो दोनों भाषाओं के बीच कोई विवाद नहीं रहेगा। यह देश का दुर्भाग्य है कि जिन नेताओं के हाथ सत्ता सौंपी गई, उन्होंने इस का सदुपयोग नहीं किया और केवल राजनीतिक स्वार्थों को पूरा करने के लिए गलत नीतियाँ अपनायीं। उन्होंने कहा कि संस्कृत और हिन्दी के साथ भी गलत नीति अपनाई जारही है।

गोरक्षा के लिए पंचायत

पिल्लूखेड़ा मण्डी : दिनांक २२-१२-८७ गोवंश की दुर्गति को देखकर आज यहाँ आस-पास के ३० गाँवों की पंचायत हुई। जिसमें अधिकांश गांवों के जानेमाने जिम्मेवार आदमियों ने अपने-अपने गांवों में घास-फूस खाकर भी अमृत पिलानेवाली गौ माताओं को लावारिस रहकर सर्दी में मरने से बचाने का उत्तरदायित्व लिया। इस प्रकार बहुत-सी गउवों के प्राण बचाकर प्रशंसनीय व अनुकरणीय काम किया। सभी सज्जनों से निवेदन है कि गउवों का मूल्य समझें और उनकी सुरक्षा के लिए पूर्ण प्रयास करें।

—बलदेव आचार्य गुरुकुल, कालवा

नरवाना में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया

आर्यसमाज नरवाना तथा सभी शिक्षण संस्थाओं ने सामूहिक रूप से स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया। इस समारोह की अध्यक्षता हैफेड के चेयरमैन श्री कपिलदेव शास्त्री ने की। इस अवसर पर स्वामी रत्नदेव जी, स्वामी गोरक्षानन्द जी, सभा उपमन्त्री आचार्य सुदर्शनदेव जी, प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी और उमेदसिंह ने अपने विचार रखे। इस मण्डल स्तर पर अनेकों प्रतियोगितायें हुईं तथा शास्त्री जी ने पुरस्कार वितरण किये। ब्र० ओमदर्शन का व्यायाम प्रदर्शन भी हुआ। इस अवसर पर आर्यवीर विजय-पत्र से श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक का विमोचन किया गया।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय खरल का त्रिवार्षिक चुनाव

कुलपति—स्वामी रत्नदेव, प्रधान—चौ० भलेसिंह नैन, उपप्रधान—मा० रायसिंह घोघड़िया, मन्त्री—मा० धर्मपाल खनौरी, उपमन्त्री—प्रा. धर्मदेव विधार्थी, कोषाध्यक्ष—ला० टिकाराम, लेखानिरीक्षक—ला० राधाकृष्ण।

शत-शत तुम्हें प्रणाम

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ.प्र.)

वेद पथिक ! हे दिव्य तपस्वी, सच्चे दयानन्द सेनानी।
त्याग-तपों की दिव्य मूर्ति हे, जय-जय हे बलिदानी॥

विद्या की वह तपस्थली-सा, खोला तुमने था गुरुकुल।
स्वतन्त्रता का मन्त्र फूंक कर, नव-जागृति भर दिया बिपुल।

शुद्धि यज्ञ का सूत्रपात कर, बिछुड़ों को फिर गले मिलाया।
शुद्धि-यज्ञ में तुमने अपने प्राणों की फिर हवन चढ़ाया॥

जातिपाति का, छूआछात का, तुमने घोर विरोध किया।
गलत रूढ़ियों का तुमने हो, निर्भय हो प्रतिरोध किया॥

स्वतन्त्रता के आंदोलन में, कूद पड़े तुम बनकर जेता।
नई दिशा देकर युवकों को, बने जनों के हृदय विजेता॥

तेरी भव्य मूर्ति के सम्मुख नतमस्तक है नगर ग्राम।
बलिदानों के अहे प्रणेता शत-शत तुम्हें प्रणाम॥

आर्यसमाज खटकड़ जि. जींद का चुनाव

प्रधान—श्री बलदेवसिंह आर्य, उपप्रधान—श्री सुरजीतसिंह आर्य, मन्त्री श्री अमरजीतसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—सूरजमल आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—कृष्ण आर्य।

आर्यसमाज दामला जिला अम्बाला का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री सोमनाथ, उपप्रधान—किशोरीलाल, जयपाल, मन्त्री—शेरसिंह, उपमन्त्री-हरपाल, कोषाध्यक्ष-बृजपाल, पुस्तकाध्यक्ष-ईश्वरसिंह, प्रचारमन्त्री—हरलाल आर्य।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज जींद शहर में रविवारीय ३-१-८८ को सत्संग के बाद श्री आचार्य बलदेव जी गुरुकुल कालवा जींद की अध्यक्षता में सभी आर्य सदस्यों द्वारा श्री पृथ्वीसिंह जी सर्राफ के आकस्मित निधन पर शोक व्यक्त किया गया। उनके निधन से आर्यसमाज को बहुत बड़ी क्षति हुई है। वे अत्यन्त लग्नशील एवं कर्मठ व्यक्ति थे। परमेश्वर से उनकी आत्मिक शांति के लिए प्रार्थना की गई तथा उनके वियोग से संतप्त सभी पारिवारिकजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्राप्त हो।

—प्रो० इन्द्रदेव शास्त्री मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 P.R.T.R.



ओ३म् सर्वहितकारी साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

वर्ष १५, अङ्क ९ २१ जनवरी, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ... एक प्रति ६० पैसे

वेदनित्यत्व में प्रश्नोत्तर

—... 'मनीषी' व्याकरणाचार्य, गुरुकुल ...

परमेश्वर ने अपने और अपने किये वेदों के नित्य और स्वतः प्रमाण होने का उपदेश किया है। वह मन्त्र इस प्रकार है—

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥ (यजुर्वेद अध्याय ४०। मन्त्र ८)

यह मन्त्र ईश्वर और उसके किये वेदों का प्रकाश करता है, कि जो परमेश्वर सर्वव्यापक आदि विशेषण युक्त है सो सब जगत् में परिपूर्ण हो रहा है, उसकी व्याप्ति से एक परमाणु भी रहित नहीं है। सो ब्रह्म (शुक्रम्) सब जगत् का करने वाला और अनन्त विद्यादि बल से युक्त है, (अकायम्) जो स्थूल, सूक्ष्म और कारण इन तीनों शरीरों के संयोग से रहित है, अर्थात् वह कभी जन्म नहीं लेता, (अव्रणम्) जिसमें एक परमाणु भी छिद्र नहीं कर सकता, इसी से वह सर्वथा छेद रहित है, (अस्नाविरम्) वह नाड़ियों के बन्धन से अलग है, जैसे वायु और रुधिर नाड़ियों में बन्धा रहता है, ऐसा बन्धन परमेश्वर में नहीं होता, (शुद्धम्) जो अविद्या अज्ञानादि क्लेश और सब दोषों से पृथक् है, (अपापविद्धम्) सो ईश्वर पापयुक्त वा पाप करने वाला कभी नहीं होता, क्योंकि वह स्वभाव से ही धर्मात्मा है, (कविः) जो सबका जानने वाला है, (मनीषी) जो सबका अन्तर्यामी है, और भूत, भविष्यत् तथा वर्तमान इन तीनों कालों के व्यवहारों को यथावत् जानता है, (परिभूः) जो सबके ऊपर विराजमान हो रहा है, (स्वयंभूः) जो कभी उत्पन्न नहीं होता और उसका कारण भी कोई नहीं किन्तु वही सबका कारण, अनादि और अनन्त है, इससे वही सबका माता पिता है, और अपने ही सत्यसामर्थ्य से सदा वर्तमान रहता है, इत्यादि लक्षणों से युक्त जो सच्चिदानन्द स्वरूप परमेश्वर है, (शाश्वतीभ्यः०) उसने सृष्टि की आदि में अपनी प्रजा को जो कि उसके सामर्थ्य में सदा से वर्तमान है, उसके सब सुखों के लिये, (यथार्थ व्यदधात्) सत्यअर्थों का उपदेश किया है। इसी प्रकार जब-जब परमेश्वर सृष्टि को रचता है, तब-तब प्रजा के हित के लिये सृष्टि की आदि में सब विद्याओं से युक्त वेदों का भी उपदेश करता है, और जब-जब सृष्टि का प्रलय होता है तब-तब उसके ज्ञान में सदा बने रहते हैं, इससे उनको सदैव नित्य मानना चाहिये।

प्रश्नः—इस विषय में कितने ही पुरुष ऐसी शंका करते हैं कि वेदों में शब्द, छन्द, पद और वाक्यों के योग होने से नित्य नहीं हो सकते। जैसे बिना बनाने से घड़ा नहीं बनता, इसी प्रकार से वेदों को भी किसी ने बनाया होगा। क्योंकि बनाने के पहिले नहीं थे और प्रलय के अन्त में भी न रहेंगे, इससे वेदों को नित्य मानना ठीक नहीं है।

उत्तरः—ऐसा आपको कहना उचित नहीं, क्योंकि शब्द दो प्रकार का होता है—एक नित्य और दूसरा कार्य। इनमें से जो शब्द अर्थ और सम्बन्ध परमेश्वर के ज्ञान में हैं वे सब नित्य ही होते हैं, और जो हम लोगों की कल्पना से उत्पन्न होते हैं वे कार्य होते हैं। क्योंकि जिसका ज्ञान और क्रिया स्वभाव से सिद्ध और अनादि है उसका सब सामर्थ्य भी नित्य ही होता है। इससे वेद भी उसकी विद्यास्वरूप होने से नित्य ही हैं, क्योंकि ईश्वर की विद्या अनित्य कभी नहीं हो सकती।

प्रश्न—जब सब जगत् के परमाणु अलग अलग होके कारण रूप हो जाते हैं तब जो कार्य रूप सब स्थूल जगत् है उसका अभाव हो जाता है, उस समय वेदों के पुस्तकों का भी अभाव हो जाता है, फिर वेदों को नित्य क्यों मानते हो?

उत्तर—यह बात पुस्तक, पत्र, मसी और अक्षरों की बनावट आदि पक्ष में घटती है, तथा हम लोगों के क्रियापक्ष में भी बन सकती है, वेद पक्ष में नहीं घटती, क्योंकि वेद तो शब्द, अर्थ, और सम्बन्ध स्वरूप ही हैं, मसी कागज, पत्र, पुस्तक और अक्षरों की बनावट रूप नहीं है। यह जो मसी लेखनादि क्रिया है सो मनुष्यों की बनाई है, इससे यह अनित्य है और ईश्वर के ज्ञान में सदा बने रहने से वेदों को हम लोग नित्य मानते हैं। इससे क्या सिद्ध हुआ कि पढ़ना-पढ़ना और पुस्तक के अनित्य होने से वेद अनित्य नहीं हो सकते, क्योंकि वे बीजाङ्कुर न्याय से ईश्वर के ज्ञान में नित्य वर्तमान रहते हैं। सृष्टि की आदि में ईश्वर से वेदों की प्रसिद्धि होती है और प्रलय में जगत् के नहीं रहने से उनकी अप्रसिद्धि होती है, इस कारण से वेद नित्यस्वरूप ही बने रहते हैं।

'सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्॥

(ऋग्वेद मण्डल १०। सूक्त १९०। मन्त्र ३)

जैसे इस कल्प की सृष्टि में शब्द, अक्षर, अर्थ और संबन्ध वेदों में हैं इसी प्रकार से पूर्वकल्प में और आगे भी होंगे, क्योंकि जो ईश्वर की विद्या है सो नित्य एक ही रस बनी रहती है। उनके एक अक्षर का भी विपरीत भाव कभी नहीं होता। सो ऋग्वेद से लेकर चारों वेदों की संहिता अब जिस प्रकार की हैं कि इनमें शब्द, अर्थ, सम्बन्ध, पद और अक्षरों का जिस क्रम से वर्तमान है इसी प्रकार का क्रम सब दिन बना रहता है, क्योंकि ईश्वर का ज्ञान नित्य है, उसकी वृद्धि, क्षय और विपरीतता कभी नहीं होती। इस कारण से वेदों को नित्य स्वरूप ही मानना चाहिये।

(ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के आधार पर)

आर्यकुमार सभा रादौर जि० कुरुक्षेत्र

प्रधान—श्री अनूपकुमार आर्य, मन्त्री—श्री पवनकुमार आर्य, श्री सुनील कुमार आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री अमित कुमार आर्य,

स्वामी नित्यानन्द जी

(चौ० नौनन्दसिंह जी सरस्वती)

—लेखक महेन्द्रसिंह धनखड़ तहसीलदार

अद्भुत परिश्रमी, अत्यन्त उत्साही, सतत उद्यमी, अति कठोर परिश्रमी, यज्ञप्रेमी, निर्भीक, गोसेवक, ऋषिभक्त, निर्लोभी त्यागी, भारतीय प्राचीन शिक्षा संस्कृति सभ्यता के प्रति अडिग आस्थावान् आर्यसमाज के प्रति पूर्णतः समर्पित।

श्री स्वर्गीय स्वामी नित्यानन्द (चौ० नौनन्दसिंह जी आर्य भजनोपदेशक) के तप, त्याग, सेवा और आर्यसमाज के प्रति पूर्णतः समर्पित मन, वचन, कर्म को कौन नहीं जानता। उनका एक-२ श्वास देश, धर्म और आर्यजगत् की उन्नति के लिये अर्पित था। उनका जन्म गांव कलोई तह० झज्जर जि० रोहतक में एक सम्पन्न किसान परिवार चौ० भुण्डाराम के घर में हुआ था। अपने पिता के सबसे बड़े पुत्र थे। उस समय शिक्षा का प्रबन्ध गांव में कहीं भी नहीं था। पर उन्होंने अपने तौर पर हिन्दी सीखी।

एक बार चौधरी ईश्वरसिंह जी, उनके गांव कलोई में प्रचार करने आए थे। रात्री में प्रचार किया और अगले दिन जब वे जा रहे थे तो चौ० नौनन्दसिंह अपने खेत में हल चला रहे थे। चौ० नौनन्दसिंह ने हल को रोक दिया और चौधरी ईश्वरसिंह से कहने लगे महाशय जी मुझे भी बाजा सिखादो। चौधरी ईश्वरसिंह उनकी उंगलियों को देख कर कहने लगे भाई इतनी मोटा-२ उंगली वाले को बाजा नहीं आ सकता। बस इस फटकार ने उनके जीवन को ही पलट दिया। चौ० नौनन्दसिंह बाजा खरीद लाए और स्वयं बाजा बजा कर दिखाया और कहा महाशय जी अब तो अपना शिष्य बनालो। तब चौ० ईश्वरसिंह ने उनको अपना शिष्य बना लिया। चौ० ईश्वरसिंह जी की कथाओं का अपना अलग ही ढंग था, उस ढग को उन्होंने ही जीवित रखा। इसका एक मात्र श्रेय स्वामी जी को ही है।

स्वतन्त्रता संग्राम में भी उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्स लिया। एक बार पं० श्रीराम शर्मा ने १९३९ में घोषणा की कि अमुक तिथि को झज्जर घण्टाघर पर तिरंगा झंडा चढाया जायेगा। अमुक तिथि को दूर-२ से लोग झज्जर में पहुँच गए। भगत फूलसिंह जी भी झज्जर पहुँच गए। झंडा चढाने का काम चौ० नौनन्दसिंह ने अपने ऊपर लिया और झंडा घण्टाघर पर चढा दिया लेकिन चौ० साहब को गिरफ्तार कर लिया। उनके इस साहस को देखकर भगत फूलसिंह जी बहुत प्रभावित हुए। जब चौ० साहब जेल से छुट गए तो भगत जी ने उनसे गुरुकुल भैंसवाल में काम करने के लिए कहा जो चौ० नौनन्दसिंह ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। और 25 वर्ष तक निरन्तर गुरुकुल भैंसवाल और कन्या गुरुकुल खानपुर की सेवा की।

भजन वे सदा निर्भीक होकर गाते थे। चापलूसी के भजन उन्होंने कभी नही गाए। हरयाणा लोक सम्पर्क विभाग वाले उन्हें माकूल धनराशि तथा सुविधा देकर रखने के लिए स्वतन्त्रता के बाद पीछे पड़े रहे पर उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि मैं मन्त्रियों की झूठी उपमा नहीं गाऊंगा। मैं ऋषि दयानन्द का भक्त हूं। उनकी तरह ही सत्य का प्रचार करूंगा।

हैदराबाद सत्याग्रह:—स्वामी नित्यानन्द जी ने हैदराबाद सत्याग्रह को सफल बनाने में तन मन और धन से सहयोग किया। उन्होंने प्रचार करके सत्याग्रह को जन-जन तक पहुँचा दिया। रोहतक में सत्याग्रह भगत फूलसिंह जी की प्रधानता में चलाया जा रहा था। चौ० नौनन्दसिंह रोहतक से 25 आदमियों का जत्था लेकर हैदराबाद पहुँचे थे। जत्थे को रोहतक से रवाना होने से पहले बहिन सुभाषिणी ने तिलक किया और फूलमालाएं डालीं। हैदराबाद में आर्यसमाज ने नवाब के खिलाफ जलूस निकाला तो जलूस के आगे-२ स्वामी स्वतन्त्रानन्द और नित्यानन्द जी झूम-२ कर मस्ती से गाते हुए चल रहे थे। उनको देख कर नवाब घबरा गया और कहने लगा कि ये आदमी आ रहे है या हाथी आ रहे हैं।

लोहारू काण्ड :—लोहारू राज्य के अत्याचारी नवाब का भय इतना भयंकर था कि आर्यसमाज का प्रचार कोई भी करवाने की हिम्मत न रखता था। न ही नम्बरदार, ठौलदार शामलात जगह पर प्लेट फार्म लगाने देते थे। रोटी देनेवाला तो भाई का लाल कोई नहीं था। वह निर्भीक वीर गले में बाजा डाल कर खड़े-खड़े तथा चलते-चलते प्रचार करते थे। थेले में भुन्ने चने चबा कर पानी पी अपनी भूख भगाते थे। लोहारू नवाब के 52 गाँवों में वह वर्षों तक चक्कर लगाकर लोगों को उत्साहित करते रहे। लोहारू राज्य में आर्यसमाज की नींव के पत्थर का काम उन्होंने ही किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने लोहारू में आर्यसमाज का जलूस निकालने की घोषणा कर दी। जलूस का नेतृत्व स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी कर रहे थे। भक्त फूलसिंह जी और चौधरी नौनन्दसिंह भी गुरुकुल भैंसवाल से जलूस में शामिल होने के लिए लोहारू पहुँचे। जलूस जब लोहारू के बाजार से गुजर रहा था तो अचानक नवाब के आदमियों ने जलूस पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी भक्त फूलसिंह जी, चौ० नौनन्दसिंह और जयप्रकाश धुरन्धर आदि को बहुत सख्त चोटें आईं।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन में एक महीने तक फिरोजपुर जेल में रहे और जेल में भी सत्याग्रहियों में उत्साह भरने के लिए गाने गाते थे। चन्दीगढ हरयाणा को दिलाने के लिए 21 दिन तक चन्दीगढ में भूख हड़ताल पर बैठे। गौ रक्षा आन्दोलन में 101 आदमियों का जत्था रोहतक से लेकर तिहाड़ जेल गए। अछूतोद्धार आन्दोलन, शुद्धि आन्दोलन, नशाबन्दी आन्दोलन, कुंडली के बूचड़ खाना बन्द करवाने हेतु आन्दोलनों में इतनी भाग दौड़ की थी जिसकी याद सदा आती रहेगी। वे सदा देशसेवा और आर्यसमाज को प्राथमिकता देते रहते थे।

वह वास्तव में साधु थे। उन का जीवन इतना सादा था कि उसकी तुलना पुराने ऋषियों से की जा सकती है। भोजन करते समय जब कोई मेजबान यह कह देता कि स्वामी जी सब्जी में तो नमक ज्यादा पड गया तो वे हँसकर कह देते थे कि नमक क्या जहर है और अगर कोई कहता कि स्वामी जी सब्जी में तो नमक डाला ही नहीं तो वे झट से कह देते थे कि नमक कोई खुराक है अर्थात् जैसा भी रूखा सूखा भोजन उनको मिलता उसी को खा लेते थे।

उन्होंने अपने ही बल पर कन्या पाठशाला कासनी को उस समय चालू किया जब ग्रामों में लड़कियों को पढाना पाप समझते थे। अनेक गावों में आर्यसमाज मन्दिर बनवाए। मन्दिरों के निर्माण हेतु प्रचार बिना पैसे लिए करते थे। गुरुकुल भैंसवाल, कन्या गुरुकुल खानपुर, गुरुकुल झज्जर, कन्या गुरुकुल नरेला हेतु उन्होंने कठोर परिश्रम करके धन एकत्र करने में समय-समय पर सेवा की। भगत फूलसिंह और स्वामी ओ३मानन्द जी के कामों में तन मन धन से आखिर तक सहयोग देते रहे।

वह लम्बा तड़ंग शरीर, इकहरा गात, चमकता माथा, तेज चाल और सुरीली आवाज आज भी याद आती है। प्राय वे पैदल ही चलते थे, सवारी का लोभ उन्हें नही था। पीठ पर बाजा, कांख में थेला उसी में कपड़े रखते थे। वर्ष में वे 20 गज कपड़े का ही प्रयोग अपने शरीर के लिए बानप्रस्थ लेने से पूर्व ही करने लग थे।

अपने अन्तिम दिनों में, आचार्य विष्णुमित्र जी, कपिलदेव शास्त्री और बहिन सुभाषिणी जी के आग्रह पर वे भैंसवाल गुरुकुल में रहने लग गए। सन्ध्या के वक्त दोनों समय गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को गाना सुनाते थे। मरने तक उनकी दिनचर्या ज्यों कि ज्यों कि त्यों रही। वे प्रतिदिन का कार्य अपनी डायरी में लिखते थे। मरते समय मुन्शी प्रभुदयाल जी को पास बुलाकर कह दिया कि मेरा जो भी पैसा है वह गुरुकुल का है। और तिथि २४-४-७७ को सदा-सदा के लिए इस ससार चले गए।

ऐसे वीर बहुमुखी प्रतिभावाले लोकोपकारी के कार्यों को जी वत चलना ही उनकी यादगार बनाना है।

गुरुकुल झज्जर : प्राचीन शिक्षा का 'आधुनिक' केन्द्र

आधुनिक वातावरण की चहल-पहल, चमक-दमक और आपा-धापी से निर्लिप्त, झज्जर नगर (जिला रोहतक) से दक्षिण में चार किलोमीटर दूरी पर, एकांत-शांत प्रदेश में स्थित 'गुरुकुल झज्जर' वर्षों से हरयाणा का आकर्षक एवं दर्शनीय केन्द्र रहा है। केन्द्रीय सरकार के अनेक मंत्रियों, विभागाध्यक्षों और राज्यपालों के अतिरिक्त विभिन्न विदेशी दूतावासों के अधिकारी तथा विदेशी यात्री इस संस्था को देखने आ चुके हैं। प्राचीन शिक्षा पद्धति पर आधारित इस गुरुकुल को देख कर ऋषि मुनियों की प्राचीन आश्रम पद्धति का दृश्य प्रत्यक्ष हो उठता है।

वृक्षों की छाया तले भूमि पर बैठे पढ रहे छात्र, वही प्राचीन वेशभूषा, वही रहन-सहन, वही खान-पान, लगता है कि जैसे हम प्राचीन काल में लौट आये हैं।

इस युग में गुरुकुल शिक्षा और शिक्षापद्धति की उपयोगिता प्रधानाध्यापक ब्रह्मचारी विजयपाल के पहले से बढ गयी है। हमारा समस्त ज्ञान-विज्ञान, धर्म, दर्शन, इतिहास, कला, संस्कृति-सभ्यता आदि संस्कृत साहित्य में ही सुरक्षित हैं। उसके अध्ययन के बिना इनकी खोज नहीं हो सकती। यहां हिन्दी, अंग्रेजी, गणित तथा इतिहास जैसे कुछ आधुनिक विषय भी पढाये जाते हैं। जहां आधुनिक विद्यालयों, महाविद्यालयों में अमीर मनचाही शिक्षा पा सकते हैं जबकि गरीबों को सामान्य स्थानों पर सामान्य शिक्षा से ही संतोष करना पड़ता है। यह भेदभाव गुरुकुल पद्धति में नहीं है। यहां सभी के लिए निःशुल्क शिक्षा है। अमीर-गरीब, ऊंच-नीच, जात-पात का कोई अंतर नहीं है। सभी छात्रों का रहन-सहन, खान-पान, व्यवहार एवं शिक्षण एक जैसा है। नैतिक, धार्मिक एवं राष्ट्रीय भावनाओं पर इस शिक्षा में विशेष बल दिया जाता है, ताकि छात्र उत्तम नागरिक बन सकें।

छात्रों को अपने सभी कार्य स्वयं करने होते हैं। उन्हें लाठी, तलवार, भाला चलाना तथा यौगिक कलाओं जैसे गले से लोहे का सरिया मोड़ना, कार रोकना आदि की भी शिक्षा दी जाती है। छात्र इनका प्रदर्शन प्रतिवर्ष शिवरात्रि पर होने वाले गुरुकुल के उत्सव पर दिखाते हैं। उत्सव २०, २१ फरवरी का है।

अमेरिका, नेपाल, सूरीनाम, मारीशस के छात्र भी यहां शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं। हरिजन वर्ग के अनेक छात्र संस्कृत के विद्वान् होकर अपने व्यवसाय में लगे हैं। यहां के स्नातकों ने जिनमें अधिकांश प्राध्यापक-अध्यापक हैं, संन्यास, धर्मप्रचार, विदेशों में योग प्रशिक्षण, गुरुकुल संचालन कार्यों के अतिरिक्त भारतीय पुलिस सेवा से लेकर व्यापार तक को उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र बनाया है। इस समय यह गुरुकुल महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक सहित देश के कई विश्वविद्यालयों से मान्यता प्राप्त है।

सन् १९१५ में झज्जर निवासी श्री विश्वम्भरदास ने अपने व्यय और श्रम से इसकी स्थापना की और प्रतिष्ठित आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानंद ने इसकी नींव रखी। इसके बाद कर्मठ संचालकों के अभाव में यह कई बार बीच-बीच में बन्द रहा। सन् १९४२ में इसके खाली भवनों को स्वामी ओमानंद जी (पूर्वनाम-आचार्य भगवान्देव) ने संभाला। उन्होंने इसमें नये-नये विभागों की शुरुआत की। तब से यह निरंतर उन्नति कर रहा है।

पुरातत्त्व संग्रहालय

यहां एक विस्तृत भवन में पुरातत्त्व वस्तुओं का विशाल संग्रहालय है। प्रबंधक श्री विरजानंद देवकरणि के अनुसार ऐतिहासिक दृष्टि से यह अनमोल है। इसमें लाखों की स्वर्ण, रजत और ताम्र मुद्रायें हैं, जिनमें आहत, यौधेय, आग्नेय; कुणिंद, कुषाण, उज्जैन, अयोध्या, हूण, ग्रीक, गुप्त और मुगलों की मुद्रायें उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त प्राचीन मोहरें, शास्त्रास्त्र ताम्रपत्र, ठप्पे, मूर्तियां, बर्तन, ईंट और टैराकोटा भी बड़ी संख्या में संगृहीत है। स्वामी ओमानंद जी ने अथक प्रयास से पुराने खंडहरों पर जा-जाकर और जहां-तहां से वस्तुओं को खरीदकर इन्हें इकट्ठा किया है। प्राचीन संस्कृत साहित्य और ऐतिहासिक ग्रन्थों से समृद्ध एक विशाल पुस्तकालय भी यहां है, जिसमें ४०,००० के लगभग पुस्तकें हैं।

एक बडी गोशाला गुरुकुल का प्रमुख अंग है। गोरक्षा और छात्रों के लिए दुग्ध प्रबंध हेतु इसे प्रारंभ किया गया। इसमें २०० के लगभग छोटी-बडी गायें हैं। यहां की हरयाणवी नस्ल की दुधारू गायें और हृष्टपुष्ट बैल कई बार राष्ट्रीय तथा राज्य पशु प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। उत्तम नस्ल के कारण ही वर्षों तक हरयाणा सरकार इस गोशाला से के बछडे, सांड बनाने के लिए खरीदती रही है।

आयुर्वेदिक औषधियों के प्रचार और शुद्धता के लिए यहां एक फार्मेसी का संचालन भी किया जा रहा है। इसमें विधि अनुसार हस्तश्रम से शुद्ध औषधियों का निर्माण किया जाता है। जले-कटे के लिए 'संजीवनी तैल', सांप काटे के लिए 'सर्पविषामृत' (जिसके विषय में इनका दावा है कि कितना ही जहरीला सांप हो, एक खुराक रोगी के मुख में जानी चाहिए फिर वह मरेगा नहीं) 'जलदामृत', 'श्वासरोग की अंतिम दवा, 'नेत्रज्योति सुर्मा' आदि इस फार्मेसी की चर्चित दवायें हैं। बाढ या महामारी आदि में पीडित जनता में गुरुकुल मुफ्त दवाइयां उपलब्ध कराता है।

गुरुकुल के पास ३६३ बीघे कृषि भूमि है, जिसकी आय से इसका व्यय पूरा किया जाता है। शेष व्यय की पूर्ति चंदासंग्रह, अन्नसंग्रह, दान तथा फार्मेसी की आय से होती है। केन्द्रीय तथा हरयाणा सरकारों द्वारा कभी-कभार कुछ सामान्य अनुदान भी दिये जाते है, जो झोली में डाले गये मुट्ठी पर आटे के समान ही सिद्ध हुए।

—उदयभान पूनिया

जिला हिसार मे अवैध शराब की बिक्री जोरों पर

हमें हरयाणा प्रान्त में लम्बे संघर्ष के बाद चौ० देवीलाल जी की सरकार आने पर बेहद खुशी हुई थी। कुछ रचनात्मक कार्य भी हुवे तथा कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य करने का सरकार ने निर्णय लिया उसके लिए तो चौ० साहब का बार-२ धन्यवाद। लेकिन शराबबन्दी बारे कोई ठोस कदम नहीं उठाया जो इस समय भयंकर अकाल में बहुत ही जरूरी है। इस बारे सरकार के मन्त्री वही भाषा बोल रहे हैं जो कांग्रेस सरकार के मन्त्री बोलते थे पंचायत नहीं चाहेगी वहां ठेका नहीं होगा। इससे कोई हल निकलने वाला नहीं। एक गांव मे ठेका उठाया दूसरे गांव मे रख दिया। इसके अतिरिक्त पहले की अपेक्षा अब नई सरकार में अवैध शराब की बिक्री बढी है। जिला हिसार में कोई विरला ही गांव होगा जहां शराब के ठेकेदार पुलिस की मिलीभगत से दिन धौली अपनी जीप व मोटर साईकिल द्वारा गांव में कुछ भ्रष्ट असामाजिक तत्त्वों द्वारा शराब के कट्टे डालकर गांव की शान्ति भंग करने पर न तुले हों। सरेआम मजदूर किसान का खून चन्द ठेकेदारों द्वारा चूसा जा रहा है। सरकार का कतई इस तरफ ध्यान नहीं। मैंने गांव में गांव में घूमकर देखा है कि हरेक गांव में चार-चार पांच-पांच घरों में शराब की अवैध बिक्री जोरों पर है। लोगों से बात भी की है। लोग कहते हैं शराबियों ने गांव मे उधम मचा रखा है। सज्जन मनुष्यों का तथा महिलाओं का जीना दूभर कर रखा है। यह किसान मजदूर की सरकार का तोफा देहात के गरीब किसानों को मिला है। हमारी सरकार से पुरजोर मांग है कि देहात में जितने ठेके हैं उन्हे तुरन्त बन्द करे। अगर फिलहाल ऐसा नहीं कर सकते तो कम से कम देहात में अवैध शराब की बिक्री पर तुरन्त रोक लगाए। शराब के ठेकों पर लिखे कि एक आदमी चार बोतल ले जा सकता है उस छूट को तुरन्त खत्म करें। तथा ५० रु० सिकोरिटी के लाईसन्स तुरन्त खत्म करे। शराब बन्दी समिति की पुनः यह पुर जोर मांग है। हमें पूर्ण विश्वास है कि चौ० साहब हरयाणा प्रान्त में शराब बन्दी कदम उठाकर यह कहावत चरितार्थ करें कि देशां में देश हरयाणा जहां दूध दही का खाना।

॥ शराब बन्दी लागू करो पानी का प्रबन्ध करो ॥

—अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी

आर्यसमाज इस ओर ध्यान दें

५०० साल पहिले एक सत्य सनातन वैदिक धर्म था। मनु महराज ने काम का बटवारा किया और जीवन यापन के लिए चार वर्ण बनाए। ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र इनकी शिर, भुजाओं, पेट व पांव से तुलना की जिस प्रकार शरीर के हिस्से मिल जुलकर काम करते हैं। एक दूसरे पर जान देते हैं। इसी प्रकार वर्ण व्यवस्था रखी गई थी। एक पिता के चार लडके कोई प्रोफेसर कोई कर्नल फौज कोई उद्योगपति और कोई सेवादार होता है। इसी प्रकार यह समाज शान्ति से चलता रहा। परन्तु जैसे-जैसे समय गुजरता गया स्वार्थता आती गई। ब्राह्मण समाज में अभिमानी होते गए। उनकी देखा देखी क्षत्री भी अपना कर्त्तव्य छोड बैठे। वैश्य ने खेती व्यापार उद्योग की जगह व्यापार को ही चुना निर्बुद्धि अग समाज को सब धिक्कारने लग पड़े। उसे शिक्षा से दूर रखा गया। घृणा करने लग पड़े। शनै शनैः जाति अभिमान छा गया और जन्म, जाति, प्रथा चल पड़ी। प्रेम भाव खत्म हुआ। एक दूसरे के सुख दुःख को भूल गए। अपनी-अपनी सबको पड़ गई। आपसी संगठन टूट गया। बाहर से लुटेरे आते रहे। लूटते रहे फिर हाकम बन गए। तलवार के बल से मुसलम बनाए गए! ७०० साल हम गुलाम रहे। फिर अंग्रेज व्यापारी बनकर आया। हमारी कमजोरी देखकर हाकम बन गया। १९० साल राज्य कर गया। १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में ही अंग्रेज चला गया था। परन्तु मुसलमानों व सिख रियासतों व अन्य ने मदद दी। उसके इनाम में ही पाकिस्तान अंग्रेज जाते-जाते बना गया और सिखों को भडका गया कि तुम भी अपना हक लो। शदियों से हिन्दू, मुसलिम, सिख, ईसाई एक दूसरे के खिलाफ भडक गया है। आज दो पाकिस्तान बनने पर भी १५ करोड़ मुसलमान देश में हैं। वह जुदा होमलैंड जगह-जगह चाहते हैं। ८ करोड़ ईसाई ईसाईसतां के स्वप्न लेते हैं। २ करोड़ सिख पंजाब में खालिस्तान चाहते हैं। इस समय भारत की जनसख्या ८० करोड़ के लगभग है। १५ करोड हरिजन हैं हिन्दू व हरिजन ६० करोड़ के लगभग हैं। यह १५ करोड़ हरिजन अति कमजोर वर्ग है। शिक्षा में पीछे हैं। आर्थिक दशा कमजोर है। यह हमारी ढ़ाल हैं। इनको ईसाई व मुसलमान अपनी भेडे बना रहे हैं और हम सोए पडे हैं। यह हमारे अंग सग हैं। इन में विद्वान् भी हैं, वकील हैं, डाक्टर हैं, विधायक हैं। इनको गले लगाएं। समाज का अंग समझें। इनसे रोटी बेटी का व्यवहार हो। जात-पात कर्म से हो, इस उक्ति को करे "पूजिए विप्र सकल गुण होगा" पर पूजिए न शूद्र सकल गुण प्रवीणा। सरकार कानून द्वारा जात-पात मिटाए। यदि भारत को अखण्ड रहना है, रखना है तो ऐसा करना पड़ेगा। वरना समय कराएगा जब पानी सिर से ऊपर चला जाएगा।

—सुबोधानन्द दीनानगर

ग्राम कंवारी (हिसार) में शराबबन्दी समिति का गठन

ग्राम कंवारी में पुलिस की मिली भगत से अवैध शराब की बिक्री की बढत एवं शराब खोरी से बढती हुई गुण्डागर्दी को रोकने के लिए क्रान्तिकारी जी के प्रयास से दिनांक ६-१०-८७ को श्री ज्ञानीराम सरपंच की अध्यक्षता में चोपाल में पंचायत एवं ग्राम सभा की सामूहिक मीटिंग हुई। जिसमें निम्नलिखित निर्णय शराबबन्दी बारे विचार विमर्श के बाद लिए गए तथा एक शराबबन्दी समिति का गठन किया गया। इस अवसर पर निम्न प्रकार निर्णय किये गये।

१) शराब बेचने वाले एवं शराब निकालने वाले पर १०० रु० दण्ड तथा बताने वाले को २५ रु० इनाम।

२) गलियों में शराब पीए हुवे की हालत में बकवास करता हुआ मिलने पर ५० रु० दण्ड, बताने वाले को ५ रु० इनाम।

३) ठेकेदार को शराब बेचने वाली जीप को गांव में नहीं घुसने दिया जायेगा। तथा श्री सत्यवीरसिंह फौजी की अध्यक्षता में १५ सदस्यों की समिति का गठन किया गया। तथा अन्य ग्रामवासी भी इस आन्दोलन में पूर्ण साथ देंगे।

—जयवीरसिंह मन्त्री
आर्य समाज कंवारी

हिन्दी के व्यवहार का क्षेत्र विस्तृत करने में प्रयत्नशील कार्यकर्त्ताओं को पुरस्कार देने की योजना

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है तथा राष्ट्र के गौरव का प्रतीक है। हिन्दी की सेवा राष्ट्र की सेवा है। यह सेवा अनेक व्यक्ति अनेक प्रकार से कर रहे हैं, कुछ शिक्षक के रूप में, कुछ स्वयं अपना काम हिन्दी में करके। ऐसे भी व्यक्ति हैं जो दूसरों को भी अपना कामकाज हिन्दी में करने की प्रेरणा देते रहे हैं।

इन सभी क्षेत्रों में की जा रही सेवा का अपना-अपना महत्त्व है। यह प्रसन्नता की बात है कि समाज अच्छे शिक्षकों, अच्छे लेखकों आदि को सम्मानित कर रहा है तथा विभिन्न संस्थाओं तथा सरकारी द्वारा उन्हें पुरस्कार दिए जा रहे हैं। परन्तु हिन्दी के उन मूक सेवकों को सम्मानित करने की अभी व्यवस्था नहीं है जो विभिन्न संस्थाओं, संगठनों तथा व्यक्तियों से सम्पर्क करते रहकर इस बात का प्रयत्न करते रहे हैं कि जीवन के सभी क्षेत्रों में अधिकाधिक काम हिन्दी में हों। इन व्यक्तियों के परिश्रम का अनेक क्षेत्रों में अच्छा प्रभाव हुआ है तथा जहां पहले हिन्दी में काम होने की कल्पना ही नहीं की जाती थी, [illegible] हिन्दी में काम होने लगा है और हिन्दी के प्रयोग की मात्रा बढ़ती जा रही है।

हरिबाबू कसल धर्मार्थ ट्रस्ट ने उपर्युक्त प्रकार के हिन्दी सेवियों का सम्मान करने का विचार किया है। उसकी रूपरेखा इस प्रकार है—

१. इस सम्मान द्वारा उन व्यक्तियों की सेवाओं को मान्यता दी जाए जिनकी प्रेरणा से अधिकतम संस्थाओं, संगठनों तथा व्यक्तियों ने अपना अधिकतम काम हिन्दी में करना शुरु किया है।

२. सम्मान में प्रति वर्ष ११०० रु० नकद राशि तथा एक शाल प्रदान किया जाए।

३. देश की विभिन्न संस्थाओं का सहयोग प्राप्त करके तथा समाचार-पत्रों में विज्ञप्ति आदि प्रकाशित करके ऐसे व्यक्तियों के विवरण एकत्रित किए किए जाएं जिन्हें उपर्युक्त सम्मान देने के विषय में विचार किया जा सकता है।

४. विवरण द्वारा निम्नलिखित तथ्य भेजे जाएं.—पिछले वर्ष में तथा उससे पूर्व के दो वर्षों में हिन्दी व्यवहार का क्षेत्र विस्तृत करने तथा उन क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग बढाने के लिए किन-किन से सम्पर्क किया, क्या क्या प्रयत्न किए, उन प्रयत्नों का क्या परिणाम हुआ, क्या उल्लेखनीय प्रगति हुई, कार्य में क्या-क्या बाधाए आई, उनका निराकरण किस प्रकार किया गया, आगे के लिए इस दृष्टि से आप क्या करना चाहेंगे, आदि।

५. इस सम्मान के लिए किसी व्यक्ति को हिन्दी का लेखक, शिक्षक अथवा स्नातक आदि होना आवश्यक नहीं होगा। पात्रता के लिए इस बात का भी भेद नही किया जाएगा कि उसका व्यवसाय क्या है अथवा वह किसी प्रकार का कोई अन्य पुरस्कार ले चुका है।

६. जिस व्यक्ति को इस योजना के अन्तर्गत सम्मानित किया जाएगा, उसे उस वर्ष से आगे के दो वर्षों में पुनः इसी सम्मान के लिए नहीं विचारा जाएगा।

७. सम्मान योग्य व्यक्ति का चयन करने के लिए ट्रस्ट एक निर्णायक समिति का गठन करेगा। यह समिति आवश्यक सूचनाएं प्राप्त करके अपने विवेकानुसार निर्णय करेगी और वह निर्णय सर्वमान्य होगा।

८ कार्य विवरण दीपावली सन् १९६६ से दीपावली सन् १९८७ तक एक वर्ष का गणतन्त्र दिवस १९८८ (२६-१-१९८८) तक भेजना है। जाहिर है कि इस योजना की परिकल्पना के अनुसार सम्मान योग्य व्यक्ति का चयन प्रतिवर्ष करना आसान नहीं होगा, किन्तु यह काम असंभव भी नहीं है। उद्देश्य यही है कि हिन्दी की निस्वार्थ सेवा करने वाले कार्यकर्ताओं के प्रति हम सांकेतिक रूप में अपनी कृतज्ञता प्रकट कर सकें तथा उनका उत्साह बढ़ा सकें, जिससे ऐसे कार्यकर्ताओं की संख्या में वृद्धि हो। पाठकों की दृष्टि में जो ऐसे व्यक्ति हों जो इस योजना के अन्तर्गत सम्मान के पात्र हों उनके विवरण इस पते पर गणतन्त्र दिवस १९८८ (२६-१-१९८८) तक भेजने का कष्ट करें:—

सचिव—रघुनन्दन प्रसाद शर्मा, हरिबाबू कंसल धर्मार्थ ट्रस्ट
ई—९/२३ वसन्त विहार, नई दिल्ली ११००५७

पं० जयपाल आर्य द्वारा ग्रामों में वेद-प्रचार की धूम

आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा की प० जयपाल आर्य की भजन मण्डली ने १७ दिसम्बर ८७ से १४ जनवरी तक निम्नलिखित ग्रामों में वेदप्रचार प्रभावशाली भजनों द्वारा करके धूम मचायी। प्रचार में शराब, दहेज आदि समाजिक बुराइयों का जमकर खण्डन किया।

आर्यसमाज	ग्राम मदाना खुर्द जि. रोहतक वेद प्रचार से प्राप्त धन	३४३
,,	ग्राम मदाना खुर्द जि० रोहतक ,, ,, ,, ,,	१०२
,,	दूबलधन जि० रोहतक ,, ,, ,, ,,	२०५
,,	बिगोवा जि० भिवानी ,, ,, ,, ,,	२७५
,,	मातन हेल जि० रोहतक ,, ,, ,, ,,	१३७
,,	बराणी (तामसपुरा) रोहतक ,, ,, ,, ,,	१२७
,,	माजरा जहाजगढ जि. रोहतक ,, ,, ,, ,,	११३
,,	सिवाना जि० रोहतक ,, ,, ,, ,,	३४४
,,	कासनी जि० रोहतक ,, ,, ,, ,,	२४३
	सर्वहितकारी का शुल्क	५८
	सर्वयोग	२०४७

पं० ईश्वरसिंह तूफान द्वारा सराहनीय वेदप्रचार कार्य

इसी प्रकार सभा के प० ईश्वरसिंह तूफान ने भी निम्नलिखित ग्रामों में १७ दिसम्बर से १७ जनवरी ८८ तक मनोहर भजनों द्वारा प्रचार किया है:

आर्यसमाज	कासण्डी जि० सोनीपत से वेदप्रचारार्थ प्राप्त धन	१७६
,,	कन्या गुरकुल खानपुर जि० सोनीपत ,, ,,	१००
,,	लाडपुर जि० रोहतक ,, ,,	५१
,,	सोलधा जि० रोहतक ,, ,,	२००
,,	नीमाना जि० रोहतक ,, ,,	३१
,,	मातनहेल जि० रोहतक ,, ,,	५१
,,	ढाकला जि० रोहतक ,, ,,	२०२
,,	बिलासपुर चोक जि० गुड़गांव ,, ,,	३००
,,	गुरुकुल कालवा जि० जीन्द ,, ,,	१६०
,,	बुटाना जि० सोनीपत ,, ,,	६३
	सर्वयोग	१३६४

शोक-समाचार

आर्यसभाज बाघपुर तहसील झज्जर जि० रोहतक के वयोवृद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री रणजीतसिंह सुपुत्र श्री सुखलाल जी का ६७ वर्ष की आयु में स्वर्गवास होगया। आप पर आर्यसमाज में प्रचार का बहुत प्रभाव था इसी कारण आज से लगभग ६० वर्ष पूर्व जब प्रो० शेरसिंह जी के पिता चौ० शीशराम ने अपने ग्राम के हरिजनों के लिए कुआं बनवाया था और ग्राम वासियों ने इनका विरोध करके हुक्का पानी बन्द कर दिया था परन्तु उस समय श्री रणजीतसिंह ने हरिजनों को कुएं पर चढ़ाने के कार्य में पूर्ण सहयोग दिया था। आज इस कुएं पर हरिजनों के साथ सभी ग्रामवासी पानी भरते हैं। सम्भवतः इस क्षेत्र में यही ग्राम ऐसा है जहां के कुएं का ३६ जातियां पानी पीती हैं। यह आर्यसमाज के प्रचार का ही प्रभाव है। श्री रणजीतसिंह ने अपनी मृत्यु से पूर्व हरयाणा रक्षावाहिनी के लिए २०० रु प्रदान किये हैं।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—मन्त्री आर्यसमाज

चौ० सर छोटू राम

छोटूराम किसान कालिज, जीन्द की ओर से पुरस्कृत

भगवानदास "मजबूर" M. A.

जन्म भूमि हरयाणा को, जिसने छोटू राम सा लाल दिया।
वीर दिया, बलवीर दिया, और लीडर वा कमाल दिया।
जिस के शुभ कर्मों ने ऊँचा, भारत मा का भाल किया।
छोटा बेशक नाम दिया, पर हृदय बड़ा विशाल दिया।
फूली फूलो सरसो भी अब फूलो नहीं समाई है।
धरती के कण कण पर आज, नई जवानी आई है।
देश को उन्नत करना ही बस जिसका एक निशाना था।
देश की ग्रन्थी सुलझाने में, वह यकनाए ज़माना था।
औरों की पीड़ा को जिसने, अपनी पीड़ा जाना था।
देश-शमा पर जो मिट जाये, वह ऐसा परवाना था।
गैरों के दिल में भी जिसने, अपनी जगह बनाई थी।
बन सच्चा हमदर्द खैरखाह, की जिसने अगवाई थी।
जिसका हर पग उठता था, दुनिया को राह दिखाने को।
नई प्रेरणा दी थी जिसने, आगे को बढ जाने को।
किया था जिसने पथप्रदर्शन, नई क्रान्ति लाने को।
जिसने सच्चा जोश भरा था, देश आज़ाद कराने को।
नए वलवले, नई उमंग, जिसने भरी जवानों में।
नई जागृति कर दी जिसने, पैदा दलित किसानो में।
आज उसी का जन्म दिवस, हम यहां मनाने आये हैं।
उसकी डाली परिपाटी को, लक्ष्य बनाने आये हैं।
उन्नत देशो की सूची में, हम देश ले जाने आये हैं।
यही है श्रद्धा, यही है माला, उस प्रति दिखाने आये है।
कांटों से भरपूर हो रस्ता, फिर भी चलते जायेंगे।
जीवन का बलिदान भी देना पड़े तो न घबरायेंगे।

६५६, किला मोहल्ला, रोहतक।

सामाजिक बुराइयो के उन्मूलन के लिए सर्वखाप पंचायत

हरयाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश तथा राजस्थान में सामाजिक बुराइयों यथा विवाह आदि अवसरों पर फिजूल खर्च शराब, भंगडा, देहज आदि बन्दी एवं आपसी मतभेद समाप्त करने पर विचार करने पर विचार तथा आवश्यक पग उठाने के लिए सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत की विशाल पंचायत गोमठ मन्दिर मैदान गढी (महरोली) नई दिल्ली में होली के पश्चात् ५ मार्च ८८ को प्रातः १० बजे होगी।

मेरा सभी खापों तपां बारहो से निवेदन है कि इस ऐतिहासिक पंचायत में अधिक से अधिक संख्या में अवश्य पहुंच कर सहयोग प्रदान करें।

महत्वपूर्ण कार्य के लिए ग्राम मैदान गढी ने सर्वखाप पंचायत को एक सौ एकड़ भूमि दान में दी है।

स्वा० कर्मपाल अध्यक्ष सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत
गोमठ, मैदान गढी, महरोली (नई दिल्ली)

शोक-समाचार

दिनांक १०-१-८८ को आर्यसमाज के सभासद वयोवृद्ध सदस्य श्री पितम्बरसिंह जो का स्वर्गवास हो गया। जो ७३ वर्ष के थे। श्री पितम्बरसिंह श्री श्रिंगारसिंह प्रधान (आर्यसमाज के) पुत्र थे जिनका सारा परिवार सही मैनो में आर्य हैं। जिन्होंने तमाम उमर आर्य-समाज के सिद्धान्त का पालन किया। बड़ी लगन से आर्यसमाज की सेवा की।

उनकी क्षति आर्यसमाज मालवन की बहुत बड़ी क्षति है। सभी सभासद परम-पिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि उस हुतआत्मा को शान्ति प्रदान करे व उनके परिवार सगे सम्बन्धियों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दे।

ओम्प्रकाश आर्य प्रधान

मुक्तक

('नाज़' सोनीपती)

हर बरस मैं दिमाग़ में अपने।
एक दुनिया नई बसाता हूं॥
याद आती है जब मुझे तेरी।
आप अपने को भूल जाता हूं॥

आरजुएँ जला चुका हूं मैं।
प्यास दिल की बुझा चुका हूं मैं॥
दिल के दाग़ों से रोशनी लेकर।
हर अन्धेरा मिटा चुका हूं मैं॥

खु़दी से दामन छुड़ा लिया मैंने।
यानि खु़द को बचा लिया मैंने॥
खुशी-खुशी से झुका के सिर अपना।
पहाड़ गम का उठा लिया मैंने।

दोस्तों

('नाज़' सोनीपती)

ईश्वर का खौफ खाओ दोस्तो।
क्यो हमें आंखे दिखाओ दोस्तो॥
दोस्ती में दुश्मनी अच्छी नही।
दोस्तों के काम आओ दोस्तो॥

अक्ल के नाखुन उतारो दोस्तो।
स्वार्थ को अब लात मारो दोस्तो॥
कौन कहता है ? बनो 'जयचन्द' तुम।
कौम का जीवन निखारो दोस्तो॥

तुमने जो करना था आखि़र कर दिया।
दामन-ए-उम्मीद अपना भर लिया॥
तुम बुरा मानोगे गर हम सच कहें।
दोस्ती की आड़ में यह क्या किया॥

खुशी की घड़ी एक शुभ रास है।
हमें अपने गम का भी एहसास है।
है आशा निराशा की अद्भुत कला।
दु:खद मास भी अब मधु मास है॥

दृढ़ संकल्प

('नाज़' सोनीपती)

वतन दुश्मनों को दबा कर रहेंगे।
जवानी के जौहर दिखाकर रहेंगे॥
जो दुनिया की बातों में आकर रहेंगे।
यकीनन वे मुह की ही खाकर रहेंगे॥

ऋषि वर का कर्ज़ा चुका कर रहेंगे।
यह कर्त्तव्य अपना निभाकर रहेंगे॥
हर उलझन को खुद आप सुलझाएँगे हम।
जो बिगड़ी हुई है बनाकर रहेंगे॥

छुआछूत का भूत जिन्दा है अब तक।
उसे नीद मीठी सुलाकर रहेंगे॥
ज़माना यदि चाल टेढी चलेगा।
उसे राह पर हम चलाकर रहेंगे॥

बसद 'नाज़' नाज-ओ-अदा से हमेशा।
निगाहों में सबकी समाकर रहेंगे॥

नामकरण संस्कार

करनाल—पूज्य माता जी श्रीमती समाकौर ने अपने पौत्र का नामकरण संस्कार एवं जन्मोत्सव १४ जनवरी अर्थात् सक्रान्ति के पावन-पर्व पर बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न करवाया। प्रात. यज्ञादि कार्यक्रम बहुत उत्साह के साथ पूर्ण हुए। इस शुभ अवसर पर बच्चे के नाना श्री मा० समरसिंह जी, श्री आचार्य सत्यव्रत जी एम. ए., श्री डा० राजकुमार जी एम ए. पीएच. डी. तथा श्री मा० मांगेराम जी आर्य आदि महानुभावों ने बच्चे को शुभ आशीर्वाद दिया। आर्यसमाज मकडौली कलां (रोहतक) तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को इक्यावन-इक्यावन रुपये का शुभदान दिया गया। तथा इस उपलक्ष्य में बच्चे के पिता श्री आचार्य राजेन्द्र कुमार शास्त्री ने मेरे और अपने विद्यालय के अध्यापकों को स्टाफ पार्टी भी दी।

—सोमप्रभा बी० ए०

"आर्यसमाज कंवारी (हिसार) का ६६वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न"

भयंकर सूखे एवं कडकती सर्दी के बावजूद आर्यसमाज कंवारी का ४, ५, ६ दिसम्बर १९८७ को उत्सव विधिवत् सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी मस्तानानन्द जी, वानप्रस्थ श्री ताराचन्द जी, प्रो० ओमकुमार नीरव, बहन राजकुमारी एवं विद्यार्थी श्री सुरेन्द्रसिंह आर्य आदि ने निम्न विषयों पर विचार रखे। राष्ट्ररक्षा, गोरक्षा, नवयुवकों के कर्त्तव्य, नारी शिक्षा, शराब बन्दी, दहेज बन्दी एवं सतीप्रथा के विरोध में विचार रखे। विशेष आकर्षित कार्यक्रम स्वामी ओमानन्द जी द्वारा शराब से कितने घर एवं रजवाडों का नाश हुआ। एवं प्रो० साहब द्वारा अपना पूर्व का इतिहास, क्रान्तिकारियों का आजादी में योगदान एवं महर्षि दयानन्द जी क्या चाहते थे। क्रान्तिकारी जी की प्रेरणा से गांव में पहली बार स्कूल के लड़के व लडकियों का भजनो एवं व्याख्यानो का कार्यक्रम भी सहरानीय रहा। इसके अतिरिक्त पं० चिरञ्जीलाल जी, स्वामी देवानन्द जी एवं पं० मुरारीलाल बेचैन की भजन मण्डलियों के शिक्षाप्रद भजन हुवे। हवन पर तीन अध्यापकों समेत कई नवयुवको एव विद्यार्थियों ने जनेऊ धारण किये तथा जीवन में शराब व बीडी न पीने की प्रतिज्ञा की। सर्दी के बाद भी गांव के अलावा निकट के ग्रामों से भी वेदप्रचार में काफी संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया। पं० बृजलाल जी आर्य ने ऋषि लगर का कार्य बडी श्रद्धा व सफाई से किया। सभी विद्वान् उनकी भूरि-२ प्रशंसा कर रहे थे। अन्तिम दिन प्रधान जी ने सभी विद्वानों एवं ग्राम वासियों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम कुल मिलाकर सफल एवं सहरानीय रहा। सभा को ४५० रु० दान दिया।

—मन्त्री इन्द्रसिंह आर्य, आर्यसमाज, कंवारी

वीरसिंह सरपंच का साहसिक कदम

ग्राम बालावास (हिसार) के सरपंच श्री वीरसिंह बी० ए० ने गत वर्ष धरने के समय २-४-८४ को स्वामी ओमानन्द जी के समक्ष शराब न पीने की प्रतिज्ञा की थी। ज्ञातव्य है कि उससे पहले बहुत ज्यादा शराब पीते थे। लगभग साढे तीन वर्ष के बाद कुसंग में बैठकर पहले पहल लुक-छुप कर अब दिन दिहाडो शराब पीने लग गए। परिवार वाले पहले की तरह तंग व परेशान हो उठे। उनके परिवार के सदस्यों तथा ग्राम वासियों ने दो-चार बार व्यंग के तरीके से मुझे भी कहा कि तेरा सरपंच पुनः शराब पीने लग गया। मैंने सोच विचार कर उसके व गांव के हित को देखते हुवे एक लानत भरा कठोर पत्र लिखा, पत्र में शराब से होने वाली बुराई से अवगत कराया। शराब से नष्ट खानदानों के उदाहरण रखें। साथ में मित्रता के नाते चेतावनी भी दी कि मुझे चाहे कुछ भी करना पड़े आप की शराब छुडाकर ही रहूंगा। एक जनवरी १९८८ को मैं सरपंच के घर गया। उसके पिता तथा अन्य परिवार के सदस्यों से बातचीत की। बाद में सरपंच साहब को बुलाया तथा उस से शराब छोड़ने की प्रार्थना की। सरपंच ने अपनी भूल एवं गलती स्वीकार की तथा आगे जीवन में शराब न पीने की प्रतिज्ञा की। एकदम इस साहसिक कदम से परिवार एवं गांव में खुशी की लहर दौड़ गई।

—अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
प्रधान शराब बन्दी समिति

'पुनः प्रदीप्त कराएं'

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ.प्र.)

धरती के प्रांगण में फैला, आज प्रबल अज्ञान-तिमिर
दानवता की सैन्य वाहिनी, से है गई धरित्री घिर।
दिव्य ज्ञान के ज्योतिर्पथ पर- हम सब कदम बढ़ाएं।
घनीभूत तम के अञ्चल में, सोता है दिनमान।
स्वार्थ-अन्धता बढ़ी चतुर्दिक, बढ़ा क्लेश-अभिमान है।
जनहित में मनुजत्व पुण्य-पथ- आज प्रशस्त कराएं।
काम-क्रोध-मद-लोभ तथा-मत्सर की दूषित छाया-
फैल गई निस्सीम, धरा पर-मानव-मन भरमाया।
धर्म तथा आध्यात्म प्रभा हम—
पुनः प्रदीप्त कराएं॥

शुद्धि समाचार

दिनांक २९-१२-८७ को आर्यसमाज मन्दिर समालखा में एक परिवार मुसलमान नट को उसकी इच्छा के अनुसार वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया और इस अवसर पर हवन पर श्री मांगेराम उपदेशक और श्री कर्णसिंह आदि ने भाग लिया। ये कार्यवाही हिन्दू शुद्धि संरक्षणी समिति हरयाणा के महामन्त्री स्वामी सेवानन्द सरस्वती के द्वारा की गई।

रोटी बेटी का सम्बन्ध और बिरादरी में इज्जत दिलाई गई और कपड़ा भी वितरण किया गया। और उस परिवार को एक कम्बल भी दिया गया जो भगवत भिक्षु वानप्रस्थी मन्त्री आर्यसमाज पानीपत के द्वारा दी गई थी।

पुराना नाम	नया नाम	स्थान	संख्या
लियाकत अली	प्रदीप कुमार	शासनी	८

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 पंजि० सं० P.R.T.K. 45

ओ३म्



सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक — वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

वर्ष १५, अङ्क १० २८ जनवरी, १९८८ वार्षिक शुल्क ३५) आजीवन शुल्क ३५१) विदेश में ... एक प्रति ७० पैसे

साण्डों तथा झोटों की नसल सुरक्षा हेतु—

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा जि० हिसार के ग्रामों में आर्थिक सहायता वितरित

(केदारसिंह आर्य कार्यालय संवाददाता द्वारा)

आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा की ओर से जि० हिसार के ५ सूखा-ग्रस्त बालावास, कंवारी, धमाना, गुजार तथा भोजराज ग्रामों में साण्डों तथा झोटों की नसल को सुरक्षित रखने के लिए दिनांक २१ जनवरी को सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने सभा के उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य के साथ प्रत्येक साण्ड तथा झोटे के लिए चारे दाने की व्यवस्था हेतु एक-एक हजार रु० की आर्थिक सहायता के अनुसार ९ हजार रु० की राशि वितरित की। इससे पूर्व सभा ५१ हजार अन्य ग्रामों में सहायता दे चुकी है।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह २१ जनवरी को सूखाग्रस्त ग्राम बालावास पधारे। वहां ग्राम पंचायत के प्रधान श्री बीरसिंह जी तथा ग्राम के प्रमुख नागरिकों ने स्वागत किया। प्रो० शेरसिंह ने ग्रामवासियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यसमाज हो परोपकारी तथा सामाजिक सुधार के कार्यों में सदा अग्रणी रहा है। आर्यसमाज एक आन्दोलन है जब भी राष्ट्र पर किसी प्रकार का संकट आता है तभी आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता दुखियों और पतितों की सेवा कार्य में जुट जाते हैं। हैदराबाद आर्य सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा आन्दोलन, गोरक्षा आन्दोलन तथा शराबबन्दी आन्दोलन इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। आपने १९८४ में ग्राम बालावास में शराब के ठेके पर सफल धरणों की चर्चा करते हुए कहा कि इसके कारण ग्राम बालावास तथा अन्य ग्रामों की जनता शराब जैसी बुराइयों से बच गये हैं और शराब के ठेके के स्थान पर आर्यसमाज मन्दिर बन जाने पर वैदिक धर्म के प्रचार का एक स्थायी केन्द्र बन गया है। इस प्रकार शराब के ठेकों को धरणों द्वारा हटवाने का कार्यक्रम सारे हरयाणा में चालू हो गया और १०-१२ स्थानों पर शराब के ठेकों को समाप्त किया गया।

सभा के उपदेशकों के प्रयत्नों से ग्रामों में शराब के विरुद्ध निरन्तर प्रचार के प्रभाव के कारण ग्राम पंचायतें शराबबन्दी प्रस्ताव हरयाणा सरकार को भेजती हैं और नियमानुसार प्रस्ताव पहुंचने पर सरकार ऐसे ग्रामों में शराब के ठेके नीलाम नहीं कर सकती।

प्रो० शेरसिंह ने इस वर्ष हरयाणा में भयंकर अकाल पड़ने पर सभा द्वारा किये गये सेवा कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि हरयाणा की संसार में सर्वोत्तम गाय तथा भैंस की नसल की सुरक्षा हेतु साण्डों तथा झोटों के लिए चारे दाने की व्यवस्था का कार्यभार अपने ऊपर लिया है। इस योजना को सफल करने के लिए दानियों से अपील करके सूखा सहायता निधि स्थापित की है। इस निधि से अब तक जिन ग्रामों में अत्यन्त सूखा है और वहां नहर तथा नलकूपों के पानी की कमी के कारण पशुओं का जीवन खतरे में है वहां सभा की ओर से साण्डों तथा झोटों के लिए हरे चारे तथा दाने का प्रबन्ध करने के लिए अब तक ६०००० रु० (साठ हजार रु०) की सहायता वितरित की जा चुकी है। दानियों से जितना और दान प्राप्त हो जावेगा उसका भी वितरण किया जायेगा। ग्राम पंचायतें चारा तथा दाना आदि खरीदकर उसका विवरण सभा को भेज देती है और सभा सारे आय व्यय को चार्टेड अकाउटेण्ट द्वारा आडिट करवाकर प्रकाशित करवाती है।

सभा प्रधान जी ने ग्रामवासियों को आर्यसमाज के कार्यों में सहयोग करने की अपील करते हुए आशा व्यक्त की कि आर्यसमाज का संगठन सुदृढ होने होने पर सामाजिक बुराइयों को दूर किया जा सकता है। ग्राम पंचायत के सरपंच श्री वीरसिंह ने संकट के समय पर सभा द्वारा दी गई दो हजार की आर्थिक सहायता के लिए प्रधान जी का धन्यवाद किया।

बालावास के पश्चात् प्रो० शेरसिंह ग्राम कंवारी में पधारे। यह ग्राम भी अकाल पड़ित है। वर्षा न होने तथा नहर आदि के पानी के अभाव से सारे खेत खाली पड़े हैं। कहीं भी फसल नजर नही आती। ग्राम के लोगों ने पशुओं के लिए झाड़ियां आदि भी काटली हैं। आगामी वर्षा ऋतु के आगमन की आशा पर सभी की नजरें हैं।

सभा के उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य इसी ग्राम के वासी हैं। उनके प्रयत्न से इस ग्राम में पंचायत से नियम बना रखा है कि शराब पीने वालों पर आर्थिक दण्ड से प्राप्त होने वाली राशि का प्रयोग ग्राम सुधार के कार्यों में किया जायेगा। इस प्रकार ९०० रु० जुर्माना प्राप्त राशि ग्राम के साण्डों तथा झोटों के लिए चारे दाने पर व्यय की गई है। ग्राम के एक दानवीर सेठ श्री जगदीश ने दिल्ली से दान भेजा है। सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने ग्राम की चोपाल में पंचायत के अधिकारियों को साण्डों तथा झोटों की सहायता के लिए २ हजार रु० प्रदान किये। ग्राम वासियों की ओर से इस महत्त्व पूर्ण सहयोग पर सभा के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। ग्राम कंवारी के पश्चात् सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ग्राम धमाना पधारे। यह ग्राम भी सूखा ग्रस्त है। ग्राम के सरपंच श्री कर्णसिंह ने सभा प्रधान जी को बताया कि वर्षा न होने से फसल नहीं बोई गई। पीने के पानी की समस्या उग्र रूप धारण कर रही है। गत ६ मास से नहर में पानी नहीं आया। पशुओं का जीवन अन्धकारमय है सभा प्रधान जी ने ग्राम पंचायत को दो हजार की राशि अनुदान में दी। ग्राम वासियों ने सभा के इस सहायता कार्यक्रम की सराहना की।

धमाना के साथ ही गुंजार ग्राम स्थित है। यहां भी एक साण्ड के लिए सभा की ओर से ग्राम के सरपंच श्री रामसिंह को एक हजार की राशि का अनुदान दिया।

धमाना के पश्चात् सभा प्रधान जी सूखा ग्रस्त ग्राम भोजराज पधारे। ग्राम के चौक में एकत्रित ग्राम पंचायत द्वारा बनाई गई एक उप-समिति को सभा की ओर से २ हजार रु० की धनराशि सौंपते हुए सभा प्रधान जी ने ग्राम वासियों को सामजिक बुराइयों से दूर रहने का परामर्श दिया। ग्राम के नम्बरदार श्री दलीपसिंह ने सभा प्रधान जी का धन्यवाद करते हुए विश्वास दिलाया कि हम आर्यसमाज के कार्यों में सदा सहयोग करते रहेंगे।

दस दिवसीय विशेष शिविर सम्पन्न

राजकीय महाविद्यालय दुजाना के दस दिवसीय विशेष शिविर का उद्घाटन २८ दिसम्बर १९८७ को कालेज के प्राचार्य श्री नफेसिंह द्वारा किया गया। प्राचार्य महोदय ने स्वयं-सेवकों द्वारा शिविर के दौरान गांव दुजाना में किए जाने वाले काम का निरीक्षण किया और आशा व्यक्त की कि स्वयं सेवक बड़ी लगन व प्रेम भाव से यूनिट द्वारा अपनाई गई योजना को निर्धारित समय में अवश्य पूरा कर लेंगे। कार्यक्रम अधिकारी श्री प्रकाशवीर दलाल व उनके सहयोगी श्री रणवीरसिंह देशवाल की निगरानी में गोच्छी, दुजाना, डीघल, बिरधाना व बेरिया गांव से आए हुए इकतालीस स्वयं सेवकों एवं पांच स्थानीय युवकों ने जिन गलियों को मिट्टी से भरा वे कीचड़ से भरी हुई थीं—नर-नारी पैदल आने जाने में भी बड़ी भारी दिक्कत अनुभव करते थे—कहीं-कहीं पर चार-चार फुट गहरे गड्ढे थे। गांव दुजाना के सर्वश्री मेहताबसिंह, राजवीर, रामफल, पं० धर्मवीर, रणवीरसिंह व कृष्णसिंह के सहयोग से स्वयं सेवकों ने इस शिविर के दौरान लगभग सौ ट्रोली मिट्टी डालकर सुविधा जनक बनाया-अब इस मार्ग पर, जो मन्दिर वाली गली के नाम से प्रसिद्ध है, रिक्शा, स्कूटर, साईकिल, कार, गन्नों से भरी ट्रोली वाले ट्रैक्टर तथा अन्य भारी वाहन भी आसानी से आ जा सकते हैं। इस मार्ग के ठीक होने से गांव के किसानों को विशेष रूप से बड़ी राहत मिली है—क्योंकि उन्हें अपने गांव के पूर्वी क्षेत्र के खेतों में जाने के लिए अब केवल एक हो किलोमीटर चलना पड़ता है जबकि पहले चार-पांच किलोमीटर का चक्कर काटकर ऊबड़-खाबड़ रास्ते से जाना पड़ता था। शिविर के दौरान स्वयं सेवकों को राष्ट्रीय सेवा योजना से संबंधित विविध विषयों पर जानकारी देने के लिए व शिविर का निरीक्षण करने के लिए पधारने वालों में डा० जगदेवसिंह गवर्नमैन्ट कालिज नाहड़, श्री रामजीवन दलाल व श्री हरिशरण उपाध्याय गवर्नमैन्ट कालिज दुजाना, श्री एस. सी. डागर गवर्नमैन्ट कालिज महेन्द्रगढ़, श्री सूरजभान कादयान सी. टी. आई. रोहतक, कुमारी रंजना पुनियानी, डा० बलदेवसिंह मेहरा एम० डी० यूनिवर्सिटी रोहतक, बालीवाल कोच श्री रामकुमार गुड़गांव तथा यूनिवर्सिटी के कार्यक्रम समन्वयक मेजर एम. आर. भाटिया के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। समापन समारोह ६ जनवरी ८८ को प्राचार्य श्री नफेसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर हरयाणा को-ओप्रेटिव बैंक के चेयरमैन श्री बलवानसिंह सुहाग मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। दोनों महानुभावों ने स्वयं सेवकों द्वारा किए गए काम का गलियों में घूमकर निरीक्षण किया और उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की और उन्हें पुरस्कार भी दिए। इस समारोह में श्री बख्तारसिंह एडवोकेट झज्जर, श्री दयाकिशन गोच्छी, श्रीमती उषारानी दलाल रोहतक व गांव के लगभग तीन सौ नर-नारी व बच्चे उपस्थित थे। स्वयं सेवकों के काम से प्रसन्न होकर दुजाना गांव के श्री कलीराम व श्री रघबीरसिंह पंच ने स्वयं सेवकों को मिठाई खिलाने के लिए एक सौ दो रुपये भी दिए। बाद में सभी स्वयं सेवकों व निमन्त्रित महानुभाव प्रतिभोज में सम्मिलित हुए।

—जगबीरसिंह अहलावत
मनोजकुमार अहलावत

डी. ए. वी. संस्थाओं की ओर से सूखा राहत कार्य

नई दिल्ली:—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी. ए. वी. संस्थाओं की ओर से पिछले तीन महिनों से सूखा राहत ग्रस्त क्षेत्रों में निम्न तीन सूखा राहत केन्द्र चलाये जा रहे हैं।

१- राजस्थान में :—आर्य समाज ब्यावर में सूखा राहत कार्य चल रहा है। पीछे लगभग ५० क्विंटल खाद्य सामग्री राजस्थान के सूखाग्रस्त क्षेत्रों में इस केन्द्र द्वारा बांटी गई। इस केन्द्र के कार्य कर्त्ता श्री ओमप्रकाश भंवर मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं श्री विष्णुदेव जी मंत्री आर्यसमाज ब्यावर हैं।

२- सौराष्ट्र में :—महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में लगभग ८० क्विंटल खाद्य सामग्री एवं काफी मात्रा में कपड़े सौराष्ट्र के सूखा ग्रस्त क्षेत्रों में बांटे गये हैं। उसके कार्यकर्त्ता श्री सत्यदेव जी रिटायर्ड इंजीनियर एवं श्री अरुणकुमार उपाचार्य उपदेशक विद्यालय टंकारा में हैं।

३- उड़ीसा में :—गुरुकुल आश्रम आमसेना, खरियार रोड, कालाहाण्डी में श्री स्वामी धर्मानन्द जी के नेतृत्व में सूखा राहत केन्द्र चल रहा हो इसमें लगभग १५० क्विंटल खाद्य सामग्री और लगभग रु० २५,०००/—(पच्चीस हजार) के नये तथा पुराने वस्त्र बांटे गये हैं।

हमारे उड़ीसा केन्द्र में नवांपाड़ा, सब डिविजन बौडेन, सोनापाड़ा, आमसेना, चमावहेड़ा, सलिदा, झालवाहाल, कोदोमेरी, चुहरी, दर्री नवापारा, माहजतोरा, डुमरडिही, चालमुड़ा नवाडिही, बनका, मुडागांव, गोतमा, डुमरपाली, कल्याणपुर, पटपरपाली आदि गांवों में खाद्य सामग्री तथा कपड़े आदि बांटे जा रहे हैं।

अब तक लगभग दो लाख रु० की खाद्य सामग्री एवं कपड़े आदि उपरोक्त तीनों सूखा राहत केन्द्रों में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं सभा एवं डी. ए. वी. संस्थाओं की ओर से भेजा जा चुका है। ये केन्द्र ३० सितम्बर १९८८ तक चलेंगे जिसमें कि लगभग दस लाख रु० व खाद्य सामग्री की आवश्यकता है।

हमारी समस्त आर्य जनों से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक खाद्य सामग्री तथा नकद राशि "आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के कार्यालय में भिजवाने की कृपा करें। जहां से यह सारा माल उपरोक्त तीनों केन्द्रों में भेजा जाता है और सूखाग्रस्त क्षेत्रों में बांटा जाता है। जो भी आर्य जन खाद्य सामग्री एवं राशि भेजेंगे। उनके नाम "आर्यजगत्" साप्ताहिक समाचार पत्र में प्रकाशित किये जायेंगे।

निवेदक

(प्रो० वेद व्यास)	(दरबारी लाल)	(रामनाथ सहगल)
प्रधान	कार्यकर्त्ता प्रधान	सभा मन्त्री

आर्यसमाजों से निवेदन

आगामी १६ फरवरी १९८८ को ऋषि बोध दिवस है। हम चाहते हैं कि इस कार्यक्रम को दूर दर्शन द्वारा राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत पूरा स्थान दिया जावे। इसके लिए मैंने सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री अजीत पांजा को पत्र लिखा है। प्रतिलिपि संलग्न है। आप भी इसी आधार पर अपने क्षेत्रीय अधिकारियों एवं नेताओं को इस कार्यक्रम को उचित स्थान देने के लिए प्रयत्न करें और अपनी सभा, कार्यसमाजों तथा संभ्रान्त महानुभावों की ओर से ऐसे ही हजारों पत्र केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मन्त्री भारत सरकार को लिखवाकर शिवरात्रि के दि. ऋषि बोध कार्यक्रम को व्यापक रूप से प्रसारित करने की मांग करें।

आगामी १६ फरवरी को आपकी सभा की ओर से तथा नगर की सभी आर्यसमाजों की ओर से मिलकर ऋषि बोध दिवस के उपलक्ष्य में कोई भव्य कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाना चाहिए ताकि दूर दर्शन वाले उसे रिले कर सकें। मैं सभी प्रान्तीय सभाओं को इस विषय में उचित निर्देश दे रहा हूं। इससे पूर्व निर्वाण दिवस समारोह के अवसर पर भी ऐसी ही प्रेरणा की गई थी किन्तु एक दो सभाओं ने ही इस आदेश का पालन किया था। मैं चाहता हूं कि आगामी १६ फरवरी को होने वाले ऋषि बोध दिवस के लिए आप हर प्रकार से प्रयत्न करके दूरदर्शन पर इसे राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित कराने में सहयोग करेंगे। कृपया की गई कार्रवाई से अवगत करावें।

भवदीय
(स्वामी आनन्द बोध सरस्वती)
प्रधान

न्याय बनाम तुष्टीकरण

प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष, हरयाणा रक्षा वाहनी

न्याय पाने का अधिकार प्रत्येक नागरिक का है। हर नागरिक को चाहे वह किसी वर्ग, सम्प्रदाय अथवा क्षेत्र का रहने वाला हो, उसे बिना भेदभाव के न्याय मिलना चाहिये। परन्तु यदि कोई वर्ग, सम्प्रदाय, या क्षेत्र दूसरे नागरिकों से अधिक अधिकार अपने लिये मांगता है तो यह उसकी अनधिकार चेष्टा है, यह मांग असंवैधानिक हो नही अनैतिक भी है और अमानवीय भी। यदि कोई वर्ग, सम्प्रदाय या क्षेत्र उन सुविधाओं से वंचित किया गया है जो दूसरे वर्गों सम्प्रदायों और क्षेत्रों को प्राप्त हैं, तो उस भेदभाव को मिटाने और समान सुविधाओं की मांग करने वाले वर्ग, सम्प्रदाय अथवा क्षेत्र पर साम्प्रदायिकता और क्षेत्रीयता का दोष नही लगाया जा सकता बल्कि उस दोष से दोषी वे सम्प्रदाय और क्षेत्र है जो किसी सम्प्रदाय या क्षेत्र विशेष को समान सुविधाओं से वंचित रखने की धृष्टता करते हैं। न्याय की यह मांग है कि सबको समान सुविधायें प्राप्त हों।

बम्बई प्रदेश के महाराष्ट्र और गुजरात प्रदेशों में विभाजित होने के पश्चात् अकेला पंजाब ही द्विभाषी प्रदेश रह गया था। भाषा के आधार पर उसका पुनर्गठन न करना अन्याय था। जब भाषा के आधार पर सभी प्रदेशों का पुनर्गठन हो गया था, तब भाषा के आधार पर पंजाब का पुनर्गठन रोकना अन्याय था। पुनर्गठन के कारण पंजाबी भाषी राज्य में सिखों का बहुमत हो जाता था इसी कारण से पुनर्गठन को रोकने की पंजाबी क्षेत्र के हिन्दुओं की बात स्पष्ट रूप से साम्प्रदायिक थी। अकाली चाहे कहने को भाषा के आधार पर ही पंजाबी सूबे की मांग करते थे, परन्तु उनके मन में यह बात भी थी कि भारत में एक प्रदेश ऐसा होना चाहिये जिसमें उनका बहुमत हो और उनका बोल-बाला रहे। यही कारण था पंजाबी क्षेत्र में दोनों सम्प्रदायों की टक्कर का।

पंजाबी क्षेत्र के हिन्दू और सिख आपस में लड़ते हुए भी हरयाणा के आर्थिक और राजनैतिक शोषण में एक थे। साम्प्रदायिकता और शोषण से मुक्ति पाने के लिये हरयाणा ने भाषा के आधार पर पंजाब के पुनर्गठन का स्वागत ही नहीं किया बल्कि उसके लिये आन्दोलन भी किया।

दुर्भाग्य की बात यह है कि पंजाब के हिन्दुओं की वोट लेने के लिये चाहे सिख कांग्रेसी नेता महा पंजाब का समर्थन करते रहे हों परन्तु साम्प्रदायिकता के बढते हुए जहर को पंजाब में जनजीवन में से निकालने के लिये उन्होने कोई प्रयास नही किया। पंजाब के जो तथाकथित बुद्धिजीवी नेता आज 'पंजाबियत' की बात कर रहे हैं वे १९६६ से लेकर १९८४ तक यही कहते रहे और लिखते रहे कि पंजाबी सूबा तो सिख सूबा है, वहां सिखाशाही चल रही है। आज विषम परिस्थिति में पड़ जाने से यही लोग केवल 'पंजाबियत' की बात ही नहीं बल्कि अकालियों की गलत मांगों का भी समर्थन करने लगे हैं। अकाली उनकी इस बात को सद्‌भावना न समझकर यदि कायरता और पाखण्ड समझे तो उनको झुठलाया नहीं जा सकता। सुरक्षा के वातावरण में यदि कोई गैर माना जाये और असुरक्षा के वातावरण में भाई कहकर पुकारा जाये तो वह निश्चय ही ऐसा करने वाले को पाखण्डी और कायर ही समझेगा। चन्द तथाकथित बुद्धि-जीवियो के पेंतरे बदलने मात्र से पंजाब की समस्या हल हो जायेगी इसे सुखद स्वप्न तो कहा जा सकता है यह समस्या का हल नहीं है। अकालियों की झूठी खुशामद करके वे समस्या को और अधिक ही उलझा रहे हैं।

पुनर्गठित पंजाब के हिन्दू और सिख दोनो ही साम्प्रदायिकता का जहर पंजाब के जन जीवन में घोलते रहे। आज ऊपर से चाहे कुछ कहें परन्तु मन में वही जहर है। पंजाब का हिन्दू पंजाब में न अल्पसंख्यक बनकर रहना चाहता है और न ही छोटा बनकर, वह बहुसंख्यक और बड़ा भाई ही बनकर रहना चाहता है। इसीलिये जब भजनलाल ने पंजाब की समस्या के हल के लिये कह डाला कि पंजाब हरयाणा और हिमाचल पुनः एक करके बड़ा प्रान्त बना देना चाहिये, तो पंजाब का हिन्दू उछल पड़ा, और 'पंजाबियत' की बात को अविलम्ब भुलाकर यही राग अलापने लगा। इस मनोवृत्ति की प्रतिक्रिया में मनचले और गुमराह युवा अकाली भी अल्पसंख्यक और छोटे भाई के रूप में न रहकर प्रदेश ही नही ऐसा देश बनाने की भी बात करने लगे जिसमें उनका बोलबाला हो। कुछ गुमराह नौजवान आज अपने हित और अहित की बात सोचे बिना ही क्रिया और प्रतिक्रिया की शृंखला में बन्धकर खालिस्तान के नारे खुले आम लगाने लगे हैं। इसी क्रिया और प्रतिक्रिया की शृंखला मे प्रभावित तथाकथित नरम दल के अकाली नेता और सिख जनता गुरुद्वारों और जनसभाओं मे प्रस्तुत खालिस्तान के प्रस्ताव का डटकर विरोध नहीं कर पा रहे हैं। देश के अन्दर और बाहर अनेक गुरुद्वारों पर आज आतंकवादियों का कब्जा है। स्थिति इतनी शोचनीय होगई है कि आज कोई भी अकाली नेता, एक आध सही और अनेक गलत मांगे मनवाये बिना, भारत सरकार से बात करने का साहस ही नही बटोर पा रहा है। परिस्थितियों के दबाव तथा आपस की लड़ाई के कारण, बादल पहिले तो आतंकवादियों के भोग समारोहों मे शामिल होकर श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने लगे और जेल मे एक साथ रहने के बावजूद भी अपनी ही बुलाई हुई सभा में से जान बचाकर भागे, तथा बरनाला पहिले तो आतंकवादियों के हुक्मनामे पर जूते साफ करने पर मजबूर हुए और आज पंजाब समझौते पर मनमाने ढंग से अमल करवाने की बात कहकर राजनैतिक तौर पर जीवित रहने के लिये हाथ पैर मार रहे है। जरूरत इस बात की है कि वे इकट्ठे होकर आतंकवाद का मुकाबला करे और राष्ट्र के जिम्मेदार नेता होने का सबूत दे।

आज हालत यह है कि कोई दिन नही बीतता जिस दिन बेगुनाहों का खून न बहाया जाता हो। सरकार आतंकवाद पर काबू पाने में अपनी सफलता की जब भी बात करती , हत्याओं की संख्या बढ जाती है। हत्या पुराना आतंकवादी करे या नया, हत्याओं से पंजाब की जनता को छुटकारा नही मिल पा रहा। पंजाब की साधारण जनता कब तक आतंकवाद का शिकार बनी रहेगी। इस समस्या का हल जल्दी ही निकलना चाहिये और स्थाई हल निकलना चाहिये।

भारत के संविधान ने सम्प्रदाय निर्पेक्ष राज्य की स्थापना की है, जिसमें सब नागरिकों के समान अधिकार होगे और किसी के साथ भी भेदभाव और अन्याय नहीं होगा। इस संविधान के अनुसार न कोई सम्प्रदाय बहुसंख्यक है और न अल्पसंख्यक। जब संविधान और कानून के सामने सभी सम्प्रदायो के लोग बराबर हैं और हमारा राज्य लोकतान्त्रिक (Democratic) है धर्मतान्त्रिक (theocratie) नहीं तब सम्प्रदाय के आधार पर बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक होने का सवाल ही नहीं उठ सकता। अंग्रेज यह बीमारी हमारे ऊपर लाद गये और हम इसे ढोये चले जा रहे हैं। इस बीमारी को समाप्त करने का रास्ता यही है कि जब कोई साम्प्रदायिक समस्या खडी हो तो न्याय तो सबको देना चाहिये और तुष्टीकरण न तो बहुसंख्यक वर्ग का करे और न अल्पसंख्यक का।

जब सबको नपा तुला और शुद्ध न्याय मिलता है तो उसकी प्रतिक्रिया कोई नही होती। यदि कोई गुमराह करने की कोशिश करे तो उसकी बात नही चल सकती, क्योंकि प्रत्यक्ष और सुस्पष्ट न्याय को न छिपाया जा सकता है न मरोड़ा तरोड़ा जा सकता है। परन्तु तुष्टीकरण की प्रतिक्रिया तो होगी ही, क्योंकि वह न्यायसंगत नही होता, उसमें एक को अपने अधिकार से अधिक और दूसरे को कम मिलता है। तुष्टीकरण के खिलाफ़ रोष होना स्वाभाविक है। इससे सम्प्रदायों के बीच संघर्ष छिड़ जाता है और बढ़ते-बढ़ते वह भयानक रूप धारण कर लेता है। पंजाबी सूबा बनाने के मामले में सिखों के साथ अन्याय किया गया और मन्त्रीमण्डल, सरकारी नौकरियों और विकास के कार्यों में तुष्टीकरण करके दूसरों के साथ अन्याय किया गया। नतीजा यह हुआ कि पंजाबी भाषी क्षेत्र के सिखों में रोष और हिन्दुओं में भी रोष। हरयाणा के साथ पंजाब के तुष्टीकरण के कारण रोष। अलग-अलग कारणों से आज भारत सरकार के खिलाफ़ पंजाब के सिखों और हिन्दुओं में तथा

(शेष पृष्ठ ५ पर)

भर्ती परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम की सुविधा

—जगन्नाथ, संयोजक राजभाषा कार्य, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, एक्स. वाई.-६८, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-११००२३.

पंजाब विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में अपना भाषण देते हुए माननीय राष्ट्रपति ज्ञानी जेलसिंह ने हिन्दी के अपनाने तथा देश भर में राष्ट्रभाषा हिन्दी को सम्मान दिलाने पर जोर दिया जाए और और हिन्दी को उसी प्रकार सम्मान दिया जाए जिस प्रकार जर्मन, चीनी और रूसी अपनी-अपनी भाषाओं को दे रहे हैं। उन्होंने आजादी के इतने वर्ष बाद भी अंग्रेजी का बोलबाला होने पर अपनी अप्रसन्नता व्यक्त की थी इसी प्रकार की भावना अनेक राष्ट्रनेता और राष्ट्र हितैषी अनेक बार प्रकट करते रहे हैं। राष्ट्रपति जी ने अपने उच्चतम पद से हिन्दी के पक्ष में आवाज उठाकर राष्ट्रीय मांग को आवाज दी थी। प्रस्तुत लेख में हिन्दी को वह स्थान न मिल पाने के प्रमुख कारण भर्ती परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम की सुविधा न होने पर विचार किया गया है।

संसदीय संकल्प

भारतीय संविधान के अनुसार हिन्दी को २६ जनवरी, १९६५ से केन्द्रीय सरकार की एकमात्र राजभाषा बन जाना चाहिए था, किन्तु भाषा के विषय को लेकर देश के कुछ स्थानों पर हुए झगड़े के कारण भारत सरकार ने भाषा सबंधी १९६३ के अधिनियम में १९६७ में एक संशोधन किया जिसका उद्देश्य यह था कि अंग्रेजी को केन्द्र सरकार के कामकाज में उसी प्रकार प्रयोग में लाया जाता रहे जिस प्रकार कि यह पहले लाई जाती रही है, साथ ही हिन्दी को केन्द्र सरकार को एक प्रमुख राजभाषा के रूप में लाए जाने की छूट रहे। इस प्रकार केन्द्र सरकार में द्विभाषी स्थिति पैदा हुई उसी समय १९६७ में संसद के दोनों सदनों द्वारा एक संकल्प स्वीकार किया गया, जिसे १८ जनवरी, १९६८ को को गृह मंत्रालय द्वारा राजपत्र में प्रकाशित किया गया। यह संकल्प एक प्रकार से उस समझौते के आधार पर था जिसके अनुसार दोनों भाषाओं को केन्द्र सरकार में चलाने का निश्चय किया गया था। इसके पैरा-४ के अनुसार संघ सेवाओं या पदों के लिए भर्ती करने हेतु आवेदकों के चयन के समय हिन्दी अथवा अंग्रेजी में से किसी एक का ज्ञान अनिवार्य अपेक्षित था। केवल एक ही अपवाद रखा गया था और वह यह कि यदि कुछ विशेष सेवाओं या पदों के लिए दोनों भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है तो उनके लिए आवेदकों को दोनों भाषाओं का जानना अनिवार्य होगा (उदाहरण के लिए अनुवादकों के पद) संकल्प के इस पैरे में यह भी निश्चय किया गया था कि केन्द्र सरकार की अखिल भारतीय उच्चतर सेवाओं संबन्धी परीक्षाओं के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित सभी भाषाओं तथा अंग्रेजी को वैकल्पिक माध्यम के रूप में रखा जाएगा।

अब इसे दुर्भाग्य ही समझिए कि संसद के इस निश्चय को भी पूर्ण रूप से कार्य-रूप नहीं दिया गया। लिपिक श्रेणी से लेकर उच्चतम श्रेणी के लिए ली जाने वाली परीक्षाओं में एक दो अपवादों को छोड़कर, अंग्रेजी भाषा अभी भी अनिवार्य है यही नहीं, अपितु हिन्दी को उसके साथ-साथ भी अनिवार्य नहीं किया गया, उसके विकल्प की बात तो दूर रही। इसका अर्थ यह हुआ कि देश का एक युवक हिन्दी अथवा अपनी मातृभाषा यदि न भी जाने तो भी भारत सरकार की अनेक परीक्षाओं में सफल होकर उच्चपद प्राप्त कर सकता है। किन्तु यदि वह देश की और विदेश की सभी भाषाओं को सीख जाए किन्तु अंग्रेजी न जाने तो भारत सरकार में लिपिक भी नहीं बन सकता। इसका दुष्परिणाम यह हुआ है कि जब रोटी-रोजी के साथ अंग्रेजी जुड़ गई तो स्कूलों और विश्वविद्यालयों में पुनः अंग्रेजी माध्यम कराए जाने की मांग उठने लगी है। गली-गली में अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूलों की दूकानें खुलती जा रही हैं।

कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि स्थिति एकदम निराशाजनक है। देश की अनेक संस्थाओं और राष्ट्रप्रेमियों ने संसद के इस संकल्प को कार्यरूप दिलाए जाने के लिए भागीरथ प्रयत्न किया है। उसका किसी हद तक अच्छा परिणाम भी निकला। संघ लोक सेवा आयोग के कार्यकलापों पर विचारार्थ सरकार ने जो 'कोठारी आयोग' बैठाया था, उसे सैकड़ों ज्ञापन इस प्रार्थना के साथ मिले कि संघ लोक सेवा आयोग की भर्ती परीक्षाओं में हिन्दी तथा देश की अन्य भाषाओं को भी समुचित स्थान दिया जाए। इस आयोग के सामने मैं केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् के महामंत्री के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित हुआ था। पत्रकारों की ओर से श्री जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी और प्रसिद्ध पत्रकार श्री अक्षयकुमार जैन तथा दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से श्री गोपाल प्रसाद व्यास भी आयोग के सामने उपस्थित हुए। इन चारों को कोठारी आयोग के सदस्यों तथा संघ लोक सेवा आयोग के सभी सदस्यों के साथ लगभग ढ़ाई घण्टे बातचीत हुई और वह इस बात से सहमत हुए कि हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं को भी संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में उचित स्थान दिया जाए। इसका परिणाम यह हुआ कि अब पिछले कुछ वर्षों से संघ लोक सेवा आयोग द्वारा भारतीय प्रशासनिक सेवा आदि की उच्चस्तर की लगभग ३० सेवाओं में अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाएं भी अनिवार्य कर दी गई हैं। एकमात्र अपवाद नागालैंड आदि स्थानों के आवेदकों के लिए रखा गया है जिनके लिए अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ कोई भारतीय भाषा लेना जरूरी नहीं है। परीक्षा के अन्य व्यावसायिक प्रश्न पत्रों के उत्तर किसी भी भारतीय भाषा में दिए जाने का विकल्प भी दे दिया गया है। फलस्वरूप अब भारतीय भाषाओं के माध्यम से भारतीय प्रशासनिक सेवाओं आदि की प्रतियोगिताओं में बैठने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत लगभग १५ रहता है, जिसमें हिन्दी माध्यम से परीक्षा देने वालों का लगभग १२ प्रतिशत रहता है।

हाल ही में भारत सरकार के कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के अन्तर्गत कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मण्डल द्वारा जो उच्च स्तर की कृषि वैज्ञानिक अनुसंधान सेवा में भर्ती के लिये प्रतियोगी परीक्षा ली जाती है और जिसमें बैठने की न्यूनतम योग्यता एम. एस.सी. है, उसमें सामान्य ज्ञान और निबन्ध के प्रश्न-पत्रों के अतिरिक्त व्यावसायिक प्रश्न-पत्रों में भी हिन्दी के प्रयोग की सुविधा दे दी गई है। इसी प्रकार साधारण जीवन बीमा निगम ने भी सहायक प्रशासनिक अधिकारियों के वर्ग में नियुक्ति हेतु ली जाने वाली प्रतियोगिता परीक्षा में हिन्दी के वैकल्पिक प्रयोग की सुविधा दे दी है। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा कनिष्ठ इंजीनियरों की भर्ती परीक्षा के सभी प्रश्न-पत्रों में हिन्दी का विकल्प दिया जा चुका है। इसी प्रकार की सुविधा भारतीय मानक संस्थान ने भी अपनी परीक्षाओं में दी हुई है।

हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से बैठने वाले अनेक विद्यार्थी पिछली प्रतियोगिताओं में सफल भी हुए हैं और उनकी नियुक्तियां भी हो गई हैं। जैसे-जैसे मूल रूप से हिन्दी माध्यम से सफल प्रतियोगी अधिकारियों के रूप में नियुक्त होते जा रहे हैं, वे अपना काम काज हिन्दी में करने लगे हैं और कार्यालयों में हिन्दी के पक्ष में अनुकूल वातावरण बनता जा रहा है। अंग्रेजी भाषा के प्रश्नपत्र को छोड़कर लिपिक, सहायक, अनुभाग अधिकारी आदि की अन्य परीक्षाओं के प्रायः सभी प्रश्न-पत्रों में हिन्दी के वैकल्पिक प्रयोग की सुविधा दे दी गई है। उसमें भी काफी अधिक संख्या में परीक्षार्थी हिन्दी के वैकल्पिक प्रयोग की सुविधा का लाभ उठा रहे हैं। किन्तु अंग्रेजी भाषा के एक अनिवार्य प्रश्न-पत्र के होने के कारण, और उसमें हिन्दी भाषा का विकल्प न होने से, अंग्रेजी माध्यम से परीक्षा देने वालों को विशेष सुविधा हो जाती है। इस प्रकार हिन्दी माध्यम से सफल होने वालों का प्रतिशत उतना नहीं हो पाया जितना कि यह अन्यथा होता।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

(शेष पृष्ठ ४ का)

फिर भी हमारा कर्त्तव्य है कि जिन-जिन परीक्षाओं में हिन्दी के प्रयोग की सुविधा दे दी गई है उनकी जानकारी समाचार-पत्रों आदि के माध्यम से भावी परीक्षार्थियों को दें और उन्हें हिन्दी माध्यम से परीक्षा देने वालों को सुविधा के लिए विशेष कक्षाओं का प्रबन्ध करे, परीक्षा उपयोगी साहित्य के सेट मंगाकर पुस्तकालयों में रखे तथा परीक्षा में सहासक पुस्तको को लिखवाकर उनके प्रकाशन की व्यवस्था करें। विशुद्ध व्यापारिक ढंग से काम करने वाले स्कूल इस बारे में पहल नहीं करेंगे।

संसद के उपरोक्त संकल्प के बावजूद भी अभी तक भारत सरकार की अनेक प्रतियोगिताएं ऐसी हैं जिनमें किसी के भी प्रश्न पत्रों में हिन्दी का विकल्प नहीं दिया गया है। भारतीय प्रशासनिक सेवा आदि में हिन्दी के विकल्प की सुविधा हो जाने से हिन्दी के पक्ष में जो नई क्रान्ति की शुरूआत हुई थी, अब वह कुछ रुक सी गई। उदाहरण के लिए भारतीय वन सेवा, भारतीय अर्थसेवा, भारतीय सांख्यिकी सेवा, भारतीय इंजीनियरी सेवा, भारतीय चिकित्सा सेवा, भारतीय भूगर्भ सेवा और तीनों प्रकार की सेनाओं में नियुक्ति हेतु ली जाने वाली अनेक प्रकार की परीक्षाओं के किसी भी प्रश्न-पत्र में हिन्दी के विकल्प की सुविधा नहीं दी गई है। राष्ट्रीयकृत बैंकों की लिपिक तथा अधिकारी श्रेणी परीक्षा में हिन्दी का विकल्प हो गया है किन्तु भारतीय यूनिट ट्रस्ट की परीक्षा में केवल अंग्रेजी माध्यम का प्रयोग ही किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय मिलिटरी सेवा, स्पेशल क्लास रेलवे एप्रेन्टिस सेवा जैसी परीक्षाओं में भी, जिनमें बैठने की योग्यता इन्टर स्तर तक की है, हिन्दी के वैकल्पिक प्रयोग की सुविधा नहीं दी गई है।

यद्यपि बहुत प्रयत्नों के बाद, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा आगामी पढाई जारी रखने के लिए दी जाने वाली जूनियर फैलोशिप परीक्षा में हिन्दी के वैकल्पिक प्रयोग की सुविधा दी गई है, परन्तु इसी प्रकार की सुविधा वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद सी० एस० आई० आर० द्वारा नहीं दी गई है।

उक्त प्रकार की तकनीकी परीक्षाओं में हिन्दी का विकल्प न दिए जाने का एक कारण यह भी बताया जाता है कि हिन्दी में इंजीनियरिंग चिकित्सा आदि विषयों पर पुस्तकें नहीं हैं। लगभग १५ वर्ष पूर्व इस प्रकार की हिन्दी पुस्तकों का कुछ अभाव था भी। किन्तु पिछले कुछ वर्षों से भारत सरकार के प्राय: सभी मंत्रालयों द्वारा अपने-अपने विषयों से संबंधित पुस्तकें मूल रूप से हिन्दी में लिखे जाने के लिए काफी अधिक नकद पुरस्कार दिए जा रहे हैं। फलस्वरूप अब प्राय. सभी विषयों पर संकड़ों पुस्तकें हिन्दी में मूल रूप से लिखी जा चुकी हैं। हिन्दी भाषी राज्यों के विश्वविद्यालयों तथा सरकारी और निजी प्रकाशकों द्वारा भी ऐसे विषयों पर हिन्दी में अनेक पुस्तकें प्रकाशित कराई जा चुकी हैं। इन सभी विषयों पर अब हिन्दी में पत्र-पत्रिकाएं भी प्रकाशित हो चुकी हैं। फिर भी कुछ उप-विषयों के बारे में केवल अंग्रेजी में पुस्तकें उपलब्ध हों और परीक्षार्थी उक्त प्रकार की परीक्षाओं में हिन्दी का विकल्प लेना चाहें तो उन्हें यह सुविधा दी ही जानी चाहिए। हिन्दी माध्यम का विकल्प हो जाने से अनेक लेखक स्वयं हिन्दी में पुस्तकें लिखने के लिए प्रेरित होंगे और प्रकाशक भी उन्हें सहर्ष प्रकाशित करने के लिए तैयार हो जाएंगे। इस अर्थ युग में बिना मांग के कोई भी अपनी पूंजी लगाने के लिए तैयार नहीं होता। एक बार उक्त प्रकार की परीक्षाओं में भी हिन्दी का विकल्प हो जाने पर इन विषयों के बारे में हिन्दी पुस्तकों की मांग बढेगी। परिणामस्वरूप इस समय हिन्दी में पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं का जो थोड़ा बहुत अभाव है वह भी दूर हो जाएगा।

एक बहाना यह भी बनाया जाता है कि जब आई० आई० टी० सरीखे तकनीकी संस्थानों में हिन्दी के माध्यम से पढाई ही नहीं होगी, तो संघ लोक सेवा आयोग द्वारा यदि इन प्रतियोगिताओं में हिन्दी का विकल्प दे भी दिया जाए तो परीक्षार्थी कहां से आएंगे। उधर तकनीकी संस्थान यह तर्क देते हैं कि जब हिन्दी माध्यम के पढे विद्यार्थी को भारतीय इंजीनियरिंग सेवा आदि में हिन्दी माध्यम से बैठने ही नहीं दया जाएगा तो हिन्दी माध्यम से पढ़ने का क्या लाभ ? इस प्रकार एक दुष्चक्र चलता रहता है जिसे तोड़े जाने की आवश्यकता है। यदि अंग्रेजी माध्यम से पढे-लिखे विद्यार्थी उक्त प्रकार की परीक्षाएं हिन्दी माध्यम से देना चाहें तो संघ लोक सेवा आयोग आदि को उसमें एतराज क्यों हो ? प्रतियोगियों को ऐसी परीक्षाओं में मिली-जुली भाषा का प्रयोग करने और अंग्रेजी की शब्दावली का सहारा लेने की छूट दी जा सकती है। जहां चाह वहां राह।

देश के अत्यन्त मेधावी छात्र डाक्टरी और इंजीनियरिंग सेवाओं में नियुक्त होते हैं। उनमें अनेक छात्र भारतीय प्रशासनिक सेवा आदि में भी बैठते हैं। इस प्रकार उनमें से अनेक केवल अंग्रेजी माध्यम से इसलिए पढते हैं कि उसके सहारे वे सभी परीक्षाओं में बैठ सके। अतः सभी राष्ट्र प्रेमी व्यक्तियों और संस्थाओं का यह कर्तव्य है कि समस्या की इस गहराई को समझें और निरन्तर इसके लिए प्रयास करते रहें कि भारत सरकार की सभी परीक्षाओं तथा विभागीय परीक्षाओं में हिन्दी के वैकल्पिक प्रयोग की सुविधा हो जाए जैसा कि संसद के संकल्प के अनुसार अब से कई वर्ष पूर्व हो जाना चाहिए था।

भारत सरकार की पत्रिका "राजभाषा भारती" के जनवरी-मार्च 1987 के अंक से साभार

(शेष पृष्ठ ३ का)

हरयाणा में रोष व्याप्त है। अन्याय और तुष्टीकरण मिलकर न्याय नहीं बन सकते। उल्टा उससे अन्याय के दायरों का विस्तार ही होता है।

पंजाब की समस्या हो चाहे गोरखा लोगों की या मीजोराम नागा क्षेत्रों की या महाराष्ट्र कर्नाटक की सब का हल एक ही है। न्याय सब पक्षों को मिले और तुष्टीकरण किसी का न हो। यदि कोई धमकी या हिंसा के बल पर अन्याय करवाना चाहे तो उसके सामने झुकना नहीं चाहिये, हिंसा को पूरी शक्ति से कुचल देना चाहिये। सुस्पष्ट न्याय देने का भरोसा जन-जन के मन में हो जाये तो हिंसा को कुचलने में कोई कठिनाई नहीं हो सकती, क्योंकि उस पुण्य कार्य मे जनता सब प्रकार का सहयोग निस्संकोच होकर देगी।

पंजाब के भाषा के आधार पर पुनर्गठन की समस्या समय पर न्याय न देने से बिगड़ती चली गई। पंजाब के ही एक वर्ग के लोगो ने उस न्यायसंगत माँग का साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से विरोध किया। क्रिया और प्रतिक्रिया की शृंखला आरम्भ हुई और विद्वेष की भावना बढती गई। उसी का बिगडा हुआ स्वरूप है आतंकवाद। उसको और अधिक बिगाड़ने के लिये भारत विरोधी बाहर की और अन्दर की शक्तियाँ उसकी सहायता के लिये मैदान में आ गई। पंजाब के हिन्दुओं को हृदय से सही माँग (जो संघर्ष के बाद मानी गई) पर फूल चढाने चाहियें और छोटे भाई की तरह बड़े भाई के साथ खुले दिल से मिलकर पंजाब के विकास और उन्नति में सहयोग देना चाहिए। यह सहयोग केवल बुरा समय टालने के लिए नहीं बल्कि दिल से हमेशा के लिए देना चाहिए। भारत सरकार को अकालियों की उन मांगों पर जिनका बुरा प्रभाव पड़ोसी प्रदेशों के अधिकारों पर किसी प्रकार न पडे, खुले दिल से निष्पक्ष होकर विचार करना चाहिए और उन पर सम्बन्धित लोगों से विचार विमर्श के बाद सुस्पष्ट न्याय देना चाहिए। फिर कोई जिद् करे और हिंसा का सहारा लेकर उसे बदलने की बात कहे उसके सामने झुके बिना आवश्यक शक्ति का निस्संकोच होकर इस्तेमाल करे और हिंसा को समाप्त कर दे। सब पक्षों की समझ में यह बात पूरी तरह आ जाये कि न्याय सबको मिलेगा, और पूरा पूरा मिलेगा परन्तु किसी की भी अनुचित बात नहीं मानी जायेगी। तुष्टीकरण की नीति किसी प्रकार के दबाव के कारण नहीं अपनाई जायेगी। न्याय से मामले सुलझते हैं, तुष्टीकरण से उलझते हैं इस तथ्य को सही मानकर ही सब फैसले करने चाहिएं। समस्याओं के समाधान में यही रामबाण औषधि है।

कन्या गुरुकुल खानपुर कलाँ का वार्षिक उत्सव ६, ७ फरवरी को होगा

गौ माता

लेखक—चौ० पृथ्वीसिंह जी बेधड़क

(प्रस्तुनकर्त्ता जयपालसिंह आर्य भजन उपदेशक आर्यप्रतिनिधि सभा हर०)

अजी-अजी गऊ का सब करते थे मान।
आज तलक जितने भी हो गये यहां पर पुरुष महान्॥
गोतम बुद्ध महावीर गौ की सेवा करते रहे।
स्वामी शंकराचार्य इनकी सेवामें बिचरते रहे॥
बहुत बादशाह भी गौ हत्या से डरते रहे।
बाबर और हमायूं कष्ट गउओं का हरते रहे॥
दधीचि दिलीप शिव गौ के हित में मरते रहे।
और टीपू सुल्तान॥

सूरजमल जवाहरसिंह ने गौ हित में तलवार ठाई।
दिल्ली और महरोली बीच खून की नदी बहाई॥
शिवा और प्रताप ने भी गौ हित में करी लड़ाई।
पूज्य गुरुनानक जी ने बहुत ही गौ माता बचाई॥
गुरुगोविन्दसिंह ने बहुत सारे मारे कसाई।
ले कर में कृपान॥

सबसे ज्यादा दयानन्द ने गउओं का उपकार किया।
गोकरुणानिधि पुस्तक लेकर के प्रचार किया॥
करोड़ों तक दसखत करवा के फार्मूला तैयार किया।
जाकर के जिनने पेश मलिका के दरबार किया॥
गांधी जी ने जलसों में बार-बार इजहार किया।
गऊ बिना सब वीरान॥

भारत के सिवा सब ही गउओं का मान करते।
अमरिका इंगलैण्ड फ्रांस चीन और जापान करते॥
इटली और यूनान करते काबुल और ईरान करते।
ईसाई और बोध करते पारसी और पठान करते॥
कहे पृथ्वीसिंह ऐसा क्यों ना यह विधान करते।
राष्ट्रपति प्रधान॥

बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

१.	दी वेदाज (अंग्रेजीभाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२	दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज पं० चमूपति एम०ए०	१-५०
३.	जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)—पं० चमूपति एम०ए०	३-००
४	निहारिकावाद और उपनिषद्—पं० चमूपति एम०ए०	०-५०
५	आर्यसमाज की विचारमाला—पं० क्षितीशकुमार वेदालंकार	१-००
६.	निजाम की जेल में—लेखक पं० क्षितीशकुमार ,,	२०-००
७.	ईसाइयों की प्रचार प्रणाली—पं० जगत्कुमार शास्त्री	००-१०
८.	आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण—पं. ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
९	बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय)	४-५०
१०.	ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
११.	हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१२	धर्म-प्रवेशिका —डा० रणजीतसिंह	३-००
१३	धर्म-भूषण ,,	५-००
१४.	पंजाब का आर्यसमाज —प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१५.	आदर्श धातु रूपावली —महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१६.	वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१७	स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
१८.	मूर्तिपूजा —सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१९.	वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
२०.	वेदाविर्भाव ,,	१-००
२१.	वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
२२	ईसाई पादरियों को आर्यसमाज को चुनौती—स्वा० दर्शनानन्द	०-१०
२३	गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४.	सत्यार्थप्रकाश ,,	१०-००
२५.	महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२६.	हमारा फाजिल्का —योगेन्द्रपाल	१ ००
२७.	बड़ —स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती	१-५०
२८.	वीर हेमू ,,	००-७५
२९.	पीपल ,,	१-५०
३०.	मिर्च ,,	१-५०
३१.	श्लीपद वा हाथीपांव की चिकित्सा ,,	०-२०
३२.	बिच्छू विष चिकित्सा ,,	०-५०
३३.	लवण ,,	१-२५
३४.	विदेशों में मैंने क्या देखा ,,	२-५०
३५.	नैरोबी यात्रा ,,	१-५०
३६.	ब्रह्मचर्य साधन ६-११ ,,	१०-००
३७.	,, १-२ ,,	१-००
३८.	,, ३ ,,	१-००
३९.	,, ४ ,,	२-५०
४०.	,, ५ ,,	२-००
४१.	,, ६ ,,	३-००
४२.	,, ७ ८ ,,	२-००
४३.	,, ९ ,,	३-००
४४.	,, १० ,,	१-५०
४५.	,, ११ ,,	२-००
४६.	हल्दी ,,	१-५०
४७.	नीम ,,	१-२५
४८.	कर्त्तव्य दर्पण—म० नारायण स्वामी	४-००
४९.	विद्यार्थी जीवन रहस्य—म० नारायण स्वामी	२-५०
५०.	योग रहस्य ,, ,, ,,	४-५०
५१.	आर्यसमाज क्या है ? ,, ,, ,,	२-००
५२.	कथा माला ,, ,, ,,	१-२५
५३.	संस्कारविधि	६-००
५४.	वैदिकधर्म परिचय—पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	३-५०
५५.	वैदिक यज्ञ-पद्धति—सार्वदेशिक	००-६०
५६.	मृत्यु के पश्चात् जीव की गति—श्री जगदेवसिंह सिद्धांती	१-५०

प्राप्ति स्थान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दयानन्दमठ, सिद्धांती भवन, रोहतक।

वेद वेदांग पुरस्कार आचार्य श्री प्रियव्रत जी को, वेदोपदेशक पुरस्कार पं० शान्तिप्रकाश जी को

आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा प्रवर्तित वेद वेदांग पुरस्कार १९८८ के लिए आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् अनेक ग्रन्थों के प्रणेता गुरुकुल कांगड़ी के भूतपूर्व आचार्य श्री पं० प्रियव्रत जी का चयन किया गया है। आर्यसमाज मन्दिर सान्ताक्रुज में दिनाक १६-१-८८ को प्रात: १०-३० बजे आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर श्री आचार्य प्रियव्रत जी को एक अभिनन्दन पत्र, रजत ट्राफी, शाल तथा २१००० रु० की थैली भेंट कर सम्मानित किया जाएगा।

इसके अतिरिक्त श्री पं० शान्तिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी को वेदोपदेशक पुरस्कार से ११००० रु० की थैली, रजत ट्राफी शाल तथा अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मानित किया जायेगा।

दोनों विद्वानों ने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज की सेवा में समर्पित किया हुआ है। मान्यवर पं० प्रियव्रत जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन वैदिक वाङ्मय के अनुसंधान तथा प्रचार प्रसार में लगाया तथा अपने अथाह परिश्रम से आर्यजगत् को साहित्य दिया है और आज भी यह कर्मयोगी नई रचना करने में संलग्न है।

आदरणीय पं० शान्तिप्रकाश का जीवन त्याग और तपस्या का जीवन रहा है। अपने वैदिक धर्म की जो सेवा की है वह आर्यजगत् के लिए अनुकरणीय है। आपने ईसाइयों, मुसलमानों तथा सनातनधर्मियों से शास्त्रार्थ करके वैदिक धर्म की मान्यताओं का जो सन्देश दिया और विधर्मियों के दिलों में आर्यसमाज की छाप लगाई है वह अमिट है और अमिट रहेगी। ऐसे विद्वानों को सम्मानित कर आर्यसमाज अपने को गौरवान्वित मानता है।

—विमल स्वरूप सूद (महामन्त्री)

गजल

तोर बानों के हृदय से पार करदो यार तुम।
करलो अपने नाम विजय मेरी,हार करदो यार तुम।
खूब तड़फा लो मुझे, गर मिलता हो तुम को शकून।
उफ ! ना निकलेगी चाहे, संहार करदो यार तुम।
फूलों पर तेरा ही हक है हो मुबारिक गुलिस्तान।
भेंट काटों का मुझे उपहार करदो यार तुम।
मुझको है सहने की आदत,इक सितम ये और सहो।
जान भी लेलो यही उपकार करदो यार तुम।
हैं 'दलाल' किस्मत की बातें दे ना सकोगे मुझ को प्यार।
अपनी नफरत पर मेरा अधिकार करदो यार तुम।

—अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
प्रधान आर्यसमाज कंवारी



सुन्दरगढ़ में विशाल शुद्धि समारोह

२९ दिसम्बर १९८७ को राउरकेला से ७ किलोमीटर दूर ग्रामीण वनाञ्चल में लवालता पंचायत के पचुपड़ा ग्राम में १७५ परिवारों के ७०० से अधिक ईसाई मत स्वीकार किये मुण्डा, उराव, खड़िया जाति के वनवासी बन्धुओं ने पुन: वैदिक धर्म को स्वीकार किया। इस समारोह को देखने दो हजार से भी अधिक ग्रामीण जनता उपस्थित थी। समारोह अतीव उत्साहमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। यज्ञ का संचालन तथा दीक्षा आर्य श्री प० अखिलेश जी आचार्य एवं श्री योगेन्द्र कुमार शास्त्री, आर्यसमाज भुवनेश्वर ने सम्पन्न कराया। श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने दीक्षित बन्धुओं को नवीन वस्त्र देकर उनका स्वागत किया तथा अपने मार्मिक उद्बोधन में उनके पूर्वजों के अपने सनातन धर्म के लिये त्याग तप तथा बलिदान का उल्लेख किया। जिससे सभी में उत्साह भर गया।

इसका आयोजन श्री श्रीमन्त कुमार शास्त्री एवं पाण्डव कुमार शास्त्री के प्रयत्न से हुआ था। जब २० दिसम्बर को श्री स्वामी धर्मानन्द जी पहुंचे तो वनवासी बन्धुओं ने अपनी पारम्परिक स्वागत पद्धति, नृत्य आदि से भव्य स्वागत किया।

मन्त्री
विशिकेसन शास्त्री

सर्वहितकारी में विज्ञापन देकर लाभ उठावें।

पंजाब की आग

कवि० छाजूराम शर्मा शास्त्री, नयी दिल्ली-४४

उग्रवाद की आग में जला प्रान्त पंजाब।
विदा हो गये शान्ति सुख बिगड़ी सारी आब॥
बिगड़ी सारी अब बन्द उद्योग व धन्धे।
चन्द स्वार्थी लोग स्वार्थ में हो गये अन्धे॥
भय व्यापा सर्वत्र सुरक्षित जीवन नाहीं।
कल किसकी है मौत कोई यह समझ न पाहीं॥
कितने अध्यापक डाक्टर-जज लगे ठिकाने।
"छाजूराम" अपने ही अब बन रहे बिगाने॥१॥

साधवा विधवा बन रहीं जिनका लुटा सुहाग।
संकट में जीवन फँसा फूटे उनके भाग॥
फूटे उनके भाग हजारों बेघर होगये।
कितने ही जरदार यहां पर वेजर होगये।
बालक हुए अनाथ छूट गये सभी सहारे।
मात-पिता के बिना भटकते आज विचारे॥
फुटपाथों पर पड़े महलों के रहने वाले।
हाय! देखने पड़े दिवस उनको ये काले॥
पानी तो महंगा है खून सस्ता है प्यारे।
"छाजूराम" तू भी लग जा अब कहीं किनारे॥२॥

आग बुझाने चल पड़े लंका को राजीव।
घर की आग बुझी नहीं मरे हजारों जीव॥
मरे हजारों जीव न अब तक मिली सफलता।
क्योंकि, शिथिल नीति से शासन कभी न चलता।
हंस मर रहे भूखे कौए चुग रहे मोती।
राजनीति हो गयी सिद्ध अब बिल्कुल थोती।
जहां निर्धनों की होती नहीं कहीं सुनाई।
"छाजूराम" उनको वहां उल्टी सजा सुनाई॥३॥

आज आसुरी दल यहां बढता जाता नित्य।
हिंसा का सर्वत्र ही हो रहा ताण्डव नृत्य॥
हो रहा ताण्डव नृत्य लुट रहे बैंक खजानें।
लगी देश में आग उठो अब इसे बुझाने॥
मंडरा रहे विदेशी गिद्ध हैं भारत भू पर।
करना चाहें फिर अधिकार हमारे ऊपर॥
होने पाये फिर न दुबारा भूल पुरानी।
कर नहीं पाये 'छाजूराम' दुश्मन मनमानी॥४॥



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, ... पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

ओ३म्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

वर्ष १५, अङ्क १० ७ फरवरी, १९८८ वार्षिक शुल्क ३५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

गौ आदि नस्ल सुरक्षा हेतु—

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा जि० भिवानी के सूखाग्रस्त ग्रामों में सहायता वितरित

(केदारसिंह आर्य कार्यालय सर्वहितकारी द्वारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से हरयाणा का संसार में सर्वोत्तम गौ नसल सुरक्षा हेतु साण्डों तथा झोटों के लिए चारे दाने की व्यवस्था हेतु जि० भिवानी के ९ सूखा ग्रस्त ग्रामों में २७ जनवरी को ९ हजार की धन राशि सभा उपदेशक पं० अत्तरसिंह आर्य के साथ सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह द्वारा वितरित की गई। इससे पूर्व सभा की ओर से तहसील झज्जर जि० रोहतक, तथा तहसील हांसी जि० हिसार के सूखाग्रस्त ग्रामों में ६० हजार की राशि वितरित की जा चुकी है।

तोशाम जि० भिवानी के जिन ग्रामों में सूखा सहायता राशि बांटी गई है, उनकी सूची निम्न प्रकार है :—

१- ग्राम छपार जोगियान १००० रु० २- ग्राम छपार रांगड़ान १००० रु० ३- ग्राम भारीवास ७५० रु० ४- ग्राम बादल वाला ७५० रु० ५- ग्राम खोवा १००० रु० ६- ग्राम गोरनपुरा खुर्द १००० रु० ७- ग्राम गोरनपुर कलां १००० रु० ८- ग्राम दरियापुर १५०० रु० ९- ग्राम वड़ोला १००० रु० १०- ग्राम नलवा जि० हिसार ५०० रु०

जि० भिवानी के उपायुक्त की घोषणा की सराहना

दैनिक नवभारत टाइम्स नई दिल्ली के २७ जनवरी के अंक में प्रकाशित समाचार के अनुसार जि० भिवानी के उपायुक्त श्री के० के० जालान ने घोषणा की है कि "सरकार ने सार्वजनिक साण्डों का चारा गांव को मुफ्त सप्लाई करने का फैसला किया है। आवारा पशुओं के लिए भी जगह जगह बाड़े बनवाए जा रहे हैं तथा उन्हें भी सरकार द्वारा चारा बांटा जायेगा।" सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने २७ जनवरी को जिला उपायुक्त कार्यालय भिवानी में अतिरिक्त उपायुक्त से मिलकर इस प्रकार सहायता करने की घोषणा की सराहना करते हुए आशा प्रकट की कि हरयाणा सरकार अपने वचन को पूरा करेगी।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने जि० भिवानी के ऊपर लिखित ग्रामों में सभा की ओर से सूखा सहायता वितरित करते हुए ग्रामीणों को परामर्श दिया कि वे अपने अपने ग्रामों के साण्डों तथा झोटों की सुरक्षा के लिए एक समिति का गठन करके इस राशि से दाना आदि खरीद कर देखभाल करें। आपने इन ग्राम वासियों को अपने ग्राम में शराब-बन्दी नियम बनाकर शराब पीने तथा खरीदने वालों पर सार्वजनिक दण्ड करें और उस राशि का उपयोग अपने ग्राम की भलाई के कार्यों में खर्च करें। यदि इसी प्रकार किसान तथा मजदूर शराब का सेवन करते रहेंगे तो वे बर्बाद हो जायेंगे। अपने बच्चों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए शराब तथा दहेज आदि बुराइयों को समाप्त करना होगा।

ग्राम वासियों ने सभा प्रधान जी का संकट के समय सहायता करने पर धन्यवाद किया और विश्वास दिलाया कि वे आर्यसमाज की स्थापना करके सामाजिक बुराइयों को दूर करेंगे।

गुरुकुल कालवा के निकट साँग करवाने का विरोध

ग्राम कालवा जि० जीन्द में १५ वर्ष से गुरुकुल चल रहा है। गुरुकुल के प्रचार प्रभाव से ग्राम में साँग नहीं हुआ था, परन्तु इस वर्ष ४, ५ ग्रामों के असामाजिक तथा शरारती लोगों ने साँग कराने की योजना बनाई। गुरुकुल के आचार्य बलदेव जी तथा उनके सहयोगियों ने गुरुकुल के उत्सव पर पधारे ग्राम वासियों को साँग की बुराइयों को समझाते हुए ग्राम में साँग न कराने की प्रेरणा की और जिला के उपयुक्त, पुलिस अधीक्षक तथा उपमण्डल अधिकारी से साँग पर रोक लगाने की प्रार्थना की। जिला अधिकारियों ने साँग करने पर पाबन्दी लगादी। परन्तु स्थानीय विधायक सरदार सरदूलसिंह को साथ लेकर शराब तथा साँग प्रेमी श्री ओमप्रकाश चौटाला से मिले और ग्राम में साँग पर लगी पाबन्दी को समाप्त करने पर जोर दिया। उनकी इच्छानुसार श्री ओमप्रकाश चौटाला ने जिला अधिकारियों पर दबाव डालकर साँग पर लगी पाबन्दी समाप्त करवा दी। इस निर्णय पर पुनर्विचार करने के लिए गुरुकुल की ओर से स्वामी योगानन्द जी अपने साथियों के साथ श्री ओमप्रकाश चौटाला से मिलने गये। उस समय उनके पास श्री सुखबीरसिंह आर्य तथा श्री बेगराज आर्य भजनोपदेशक आदि उपस्थित थे। उनसे भी इस सामाजिक कार्य में सहयोग करने का अनुरोध किया। परन्तु श्री ओमप्रकाश चौटाला ने यह कहकर उनकी माँग रद्द कर दी कि साँग हरयाणा की संस्कृति है। साँग रुकवाने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जायेगी। श्री ओमप्रकाश द्वारा साँग कराने वालों को प्रोत्साहित करने की कार्यवाही पर आर्यसमाज क्षेत्रों में रोष फैल गया है। इसकी जानकारी प्राप्त करने के लिए सभामन्त्री तथा सभा वेद प्रचाराधिष्ठाता २५ जनवरी को ग्राम जयसिंहपुरा के पश्चात् रात्रि को गुरुकुल कालवा पधारें। वहाँ गुरुकुल के आचार्य श्री बलदेव जी तथा स्वामी योगानन्द जी से मिलकर वस्तु स्थिति की जानकारी ली। भविष्य में गुरुकुल के समीप साँग आदि न हो सके इसके लिए सभा की ओर से ग्रामों में वेदप्रचार कराने का आश्वासन दिया। सभा के उपदेशक पं० अर्जुनदेव आर्य को गुरुकुल कालवा भेजा गया है।

अब भारतीय प्रशासनिक अधिकारी विदेश में प्रशिक्षण लेंगे ?

—डॉ० विद्यासागर

भारत की नौकरशाही में जो स्थान भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई. ए. एस.) का है, वह किसी अन्य सेवा का नहीं हैं। आई. ए. एस. उस इंडियन सिविल सर्विस की उत्तराधिकारी मानी जाती है जिसके बल पर अंग्रेजों ने भारत पर लगभग डेढ सौ वर्ष शासन किया। इन सेवाओं में अन्य सेवाओं की अपेक्षा अधिक मात्रा में वेतनमान एवं अधिकार होने के कारण इनके प्रति श्रद्धा भी है और ईर्ष्या भी। अतः भारत के प्रत्येक शिक्षित युवक में आई. ए. एस. अधिकारी बनने की इच्छा होना स्वाभाविक है।

कुछ समय से आई. ए. एस. सेवा किसी न किसी कारण से समाचारों में विशिष्ट स्थान पाती रही है। पिछली बार डाक्टरों द्वारा की गई हड़ताल का एक मुद्दा आई. ए. एस. अधिकारियों के समान वेतनमान प्राप्त करना भी था। इसके बाद कुछ समाचार पत्रों में प्रकाशित इस समाचार ने तहलका मचा दिया कि नए आई. ए. एस. अधिकारी को विवाह के बाजार में दहेज के रूप में दस से ३० लाख रुपये तक मिलते हैं। इस पर आम आपत्ति यह थी कि जो अधिकारी अपना जीवनकाल ही इस अनियमितता से शुरु करता है वह अपना कार्य ईमानदारी से कैसे कर सकता है।

अब भारत सरकार की इस योजना पर कि आई. ए. एस. अधिकारी प्रशिक्षण के लिए यू. एस. ए. के प्रमुख विश्वविद्यालयों, मुख्यतया हावर्ड में भेजे जायेंगे। संसद व आम जनता में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। इस संबंध में जब ११ नवम्बर, १९८७ को संसद में यह विषय उठाया गया तो कांग्रेस तथा विरोधी दलों के कई सदस्यों ने इस पर आपत्ति की। सरकार के पास कोई उचित उत्तर नहीं था। अंत में लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ के बीच में पड़ने के फलस्वरूप इस विषय पर संसद में विस्तृत चर्चा करने की दलील स्वीकार कर ली गयी।

दरअसल प्रस्तावित प्रशिक्षण व्यवस्था प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की उस प्रायोजना का अंग है जिसमें नौकरशाही के विभिन्न अंगों की कार्यक्षमता सुधारने व बढ़ाने पर विशेष बल दिया गया। वैसे भी ढाई-तीन वर्ष में विभिन्न विभागों के अधिकारियों को किसी न किसी रूप में प्रशिक्षण दिया जाता है। सामान्यतः इस प्रकार के सभी पहलुओं को ध्यान में नहीं रखा गया हो।

सभी प्रभावी प्रशिक्षणों में विशिष्ट परिस्थितयों और संस्कृति की प्रमुख भूमिका रहती है। प्रशिक्षण देने वालों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि उन्हें प्रशिक्षण लेने वालों की आवश्यकताओं और उनके दृष्टिकोण का पूर्ण ज्ञान हो। अतः यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या हावर्ड व यू. एस. ए. के अन्य विश्वविद्यालयों एवं शिक्षा संस्थानों में भारत की आवश्यकताओं का समुचित ज्ञान उपलब्ध है ?

हावर्ड या कोई भी विदेशी विश्वविद्यालय भारत की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता। अपनी शिक्षा एवं प्रशिक्षण के कार्यक्रम तथा शिक्षा की रीति उन्होंने अपनी जीवन मीमांसा और आवश्यकताओं के अनुरूप बनाई हैं अतः इसमें सन्देह है कि भारतीय अधिकारी इनसे वह लाभ उठा सकेंगे जो अपने देश में उपयोगी सिद्ध हो सके। यह भी सत्य है कि भारत से जाने वाले अधिकारी यू० एस० ए० की स्थिति से बिना प्रभावित हुए नहीं रह सकेंगे। वैसे भी वहां की कार्यप्रणाली व आर्थिक सामाजिक नीति भारत से भिन्न है। वहां स्वतन्त्र आर्थिक नीति पर बल दिया जाता है जबकि भारत में सामाजिक संगठन पर। यही बात अन्य क्षेत्रों के बारे में भी है।

अमेरिका के शिक्षा संस्थानों में योग्यता के आधार पर नियुक्तियां की जाती हैं। जबकि भारतीय संस्थानों में निकम्मे समझे जाने वाले नियुक्त किए जाते हैं।

नौकरी में आने के बाद प्रशिक्षणार्थियों में कोई युक्तिसंगत नीति नहीं अपनाई जाती। बहुधा ऐसे व्यक्तियों का चयन किया जाता है जिन्हें उपयुक्त स्थान न मिल रहा हो।

बहुधा ऐसा देखा गया है कि प्रशिक्षण का चयन करते समय इस बात का ध्यान नहीं रखा जाता कि प्रशिक्षण पूरा होने पर उसकी नियुक्ति किस स्थान पर होगी। अतः बहुधा उसे ऐसे स्थान पर काम करना पड़ता है जो उसके लिए उपयुक्त नहीं है।

किसी प्रशिक्षण के लिए अधिकारियों का चयन करते समय उसके ३०-३५ वर्ष के पूरे कार्य को ध्यान में रखा जाना चाहिए न कि आगामी कुछ वर्षों की कालावधि को। परन्तु खेद की बात है कि विशिष्ट पदों की योग्यता की क्षमता को ध्यान में न रखते हुए उसकी पहुंच पर सब कुछ निर्भर करता है। राजनैतिक परिस्थितियों भी इसमें अपनी भूमिका निभाती हैं। इस प्रकार न तो देश को व्यक्ति विशेष की योग्यताओं का लाभ मिल पाता है और न अधिकारी ही संतुष्ट रह पाता है।

इन मूलभूत बातों के अतिरिक्त वह बात भी ध्यान देने योग्य है कि जब हम बहुधा भारत के आन्तरिक मामलों में विदेशी हस्तक्षेप की बात करते हैं तो क्या राष्ट्र के उच्च पदाधिकारियों को विदेशों में प्रशिक्षण के लिए भेजना सुरक्षा की दृष्टि से उचित है? दुर्भाग्य से हमने वही देश चुना है जिस पर हस्तक्षेप का दोषारोपण करते रहे हैं। यह सही है कि भारत के वरिष्ठ अधिकारी देशभक्त हैं और उनसे देश के हितों को हमेशा ध्यान में रखने की अपेक्षा है। फिर भी इस प्रकार की शंका होना तो स्वाभाविक है।

भारत में प्रत्येक विदेशी वस्तु का मोह जिस प्रकार बढ़ रहा है यह प्रशिक्षण उसका ही अंग तो नहीं ? आई० ए० एस० अधिकारियों की यह शिकायत रही है कि तकनीकी शिक्षा वालों के लिए तो विदेश जाने के अनेक अवसर प्राप्त हैं, किन्तु उन्हें इस प्रकार के कोई अवसर नहीं मिलते। कहीं उन्होंने इसी बात को ध्यान में रखते हुए विदेश जाने की योजना तो नहीं बना ली है।

जो भी हो, प्रशिक्षण योजना पर भली-भांति विचार करने की आवश्यकता है ताकि कहीं देश को इसके विपरीत परिणाम न भुगतने पड़ें।

वेद प्रचार के लिये

दिनांक २७-१२-८७ को पं० कृष्णकान्त आर्योपदेशक (भूतपूर्व ईसाई प्रचारक) जी की प्रेरणा के फलस्वरूप डा० बृजमुनि वानप्रस्थी जी की स्वर्गीय धर्मपत्नी की याद में "माता कुन्दन देवी" वेद प्रचार सेवा सत्संग गृह का उद्घाटन समारोह, आर्य वीर दल के पारिवारिक सत्संग के साथ धूम धाम से मनाया गया। आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री उत्तम चन्द शरर जी का प्रवचन एवं स्थानीय धर्मप्रेमियों के मधुर प्रवचन हुए। इस समारोह का विशेष महत्त्वपूर्ण कार्य "ईश्वर विषय पर विचार" रखा गया। जिसमें "प्रजापति ब्रह्मकुमारी मत की ब्रह्मचारिणी कंचन बहन ने अपने मतानुसार ईश्वर ज्ञान को रखा। आर्य पुत्र श्री उत्तम चन्द शरर जी ने जब वेद ज्ञान के आधार पर ईश्वर विषय पर प्रकाश डाला, तब वेद ज्ञान और वैदिक धर्म की सत्यता को सुनकर सैकड़ों की भीड़ ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ वैदिक धर्म की जय होय के साथ वेद ईश्वर विषय सत्यता को स्वीकार किया। अन्त में श्री डा० बृज मुनि वानप्रस्थी जी ने "वेद प्रचार सेवा सत्संग गृह" के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा दहेज प्रथा, सती प्रथा छुआ छूत एवं हीनता की भावनाओं को दूर करना, राष्ट्र प्रेम की भावनाओं को जागृत कराना ही इस प्रचार कार्य का संकल्प है। वेद ज्ञान के बिना मानव का और राष्ट्र का कल्याण नहीं है।

श्री पं० कृष्ण कान्त जी को रोहतक की जनता ने एवं रोहतक के आर्यसमाजों के अधिकारीगण एवं आर्य विद्वानों ने इस कार्य हेतु हृदय से धन्यवाद दिया। छः बजे शाम को पूर्ण हर्षोल्लास के साथ समारोह समापन हुआ।

डा० वैजनाथ कुन्द्रा (डा० बृजमुनि वानप्रस्थी)
कुन्द्रा धर्मार्थ औषधालय
किला रोड रोहतक

रोहतक में कसाईयों से गायों का भरा ट्रक पकड़ा

—(केदारसिंह आर्य द्वारा)

रोहतक २ जनवरी राजपुरा (पंजाब) से मुज्फ्फरनगर के निवासी मुसलमान कसाई एक ट्रक में २१ गाय भरकर ले जा रहे थे। श्री बलजीतसिंह सु० श्री धर्मसिंह नम्बरदार ग्राम सांघी ने अपने फोर व्हीलर से उनका हांसी से पीछा किया और उस ट्रक को ग्राम बहुअकबरपुर जिला रोहतक में पकड़ लिया। इनकी शिकायत सदर थाना रोहतक में की परन्तु पुलिस ने कोई भी कार्यवाही करने से इन्कार कर दिया। विवश होकर वे गौवों से भरे ट्रक को खिडवाली गोशाला में ले गये। वो कसाई ट्रक से उतरकर भाग गये। ट्रक से लाते समय एक गाय मर गई है। कसाइयों ने दूध देने वाली तथा गर्भवती गाय लिखवा कर परमिट बनवाकर रखा है परन्तु उनमें एक एक भी गाय दूध देने वाली तथा गर्भवती नहीं है। इन गायों को वे किसी हत्थे में ले जाने की तैयारी में थे। सांघी तथा खिडवाली की पचायतों ने हरयाणा सरकार से इन कसाइयों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करने का अनुरोध किया है। सभा की ओर से भी पुलिस अधीक्षक रोहतक को पत्र लिखकर सदर थाना पुलिस रोहतक द्वारा कसाइयों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही न करने पर रोष प्रकट किया है। इस सम्बन्ध में श्री रामसेहर एडवोकेट ने भी पुलिस को फोन पर अपराधियों के विरुद्ध कार्यवाही करने को कहा परन्तु कार्यवाही नही की गई।

—वेदव्रत शास्त्री
सभामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में श्री योगेन्द्रपाल सेठ प्रधान तथा श्री ऋषिपालसिंह एडवोकेट मन्त्री घोषित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक दिनांक २४-१-८८ को आयसमाज दीवान हाल में सम्पन्न हुई। जिसमें पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के विवाद तथा विगत हुए निर्वाचन पर गम्भीरतापूर्वक विचार विमर्श किया गया।

पक्ष-विपक्ष की युक्ति सगत बातों को सुनने के उपरान्त सभा ने एक प्रस्ताव पारित कर नवनिर्वाचित अधिकारी श्री योगेन्द्रपालसिंह सेठ प्रधान तथा श्री ऋषिपाल सिंह एडवोकेट मन्त्री की सभा को मान्यता प्रदान करने का निर्णय लिया और श्री वीरेन्द्र जी को आर्यसमाज के किसी भी पद पर निर्वाचित नहीं किया जायेगा और उनको ३ वर्ष के लिये अयोग्य घोषित किया गया है।

—सार्वदेशिक दिनांक ३१ जनवरी ८८ से साभार

दूसरे फेरे के साथ ही थप्पड़

नकोदर, २७ जनवरी (जनसत्ता)। यहां से करीब दस किलोमीटर दूर स्थित गांव में आई एक बारात को बगैर दुल्हन के वापस लौटना पड़ा। बारात की यह हालत दुल्हे की शराब की आदत के कारण हुई।

पता लगा है कि लड़की वालों को लड़के की शराब की आदत की जानकारी नहीं थी। जब लड़की को पता चला कि यह लड़का शराबी है, तो पहले तो उसने शादी के फेरे लेने से इनकार कर दिया। इस पर लड़की के घरवालों ने उस पर बड़ा जोर डाला और शराबी लड़के के साथ शादी के लिए उसे बिठा दिया। लड़का उस समय शराब के नशे में इतना धुत्त था कि फेरे लेने के लिए वह ठीक तरह से खड़ा भी नहीं हो सकता था। पहला फेरा तो जैसे तैसे पूरा हो गया, लेकिन दूसरे फेरे में दुल्हे ने लड़की को छेड़ दिया। इस पर लड़की ने सब लोगों के सामने ही उसे थप्पड़ मार दिया। लड़के की इस हरकत का गाव के लोगों ने उसे बहुत बुरा भला कहा और इस तरह बारात को बिना दुल्हन के वापस लौटना पड़ा।

पता चला है कि यह लड़की कबड्डी को राष्ट्रीय टीम की सदस्य रह चुकी है और आजकल एक कालेज में प्रोफेसर लगी हुई है।

—दैनिक जनसत्ता

रोहतक में दीनबन्धु छोटूराम जयन्ती सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भान्ति बसन्त पचमी पर २३ जनवरी को छोटूराम उद्यान में दीनबन्धु छोटूराम की जयन्ती बड़ी धूमधाम के साथ मनाई गई। मंच का संचालन डा० रणजीतसिंह ने किया। इस अवसर पर हरयाणा के मुख्य मन्त्री श्री देवीलाल जी के अतिरिक्त श्री रघुवीरसिंह मन्त्री, श्री ओमप्रकाश भारद्वाज मन्त्री, श्री हरिचन्द हुडा पूर्व विधायक, श्री बसन्तीदेवी पूर्व विधायका, माता भगवानीदेवी सुपुत्री श्री छोटूराम, श्री वीरेन्द्र जी सासद आदि नेताओं के व्याख्यान तथा श्री मनसाराम एवं श्री सहदेव बेधड़क के भजन हुए। मुख्यमन्त्री ने छोटूराम धर्मशाला के लिए एक लाख का अनुदान तथा दिल्ली रोड जाट कालेज रोहतक के निकट उनकी प्रतिमा लगाने की घोषणा की।

औरतों ने धरना मार कर ठेका बन्द करा दिया

होशियारपुर, २ फरवरी (प्रद्युम्न)। यहां से ३० किलोमीटर दूर मौजा जांगलियाना में औरतों ने ठेका शराब अमली तौर पर बन्द करा दिया है। यहां ठेका शराब गांव के मध्य में है जहां लोग शराब के नशे में चांगरें आदि मारा करते थे जिससे औरत अत्यधिक दुखी थी। अतः औरतों ने फैसला करके ठेके के आगे धरना शुरू कर दिया और ठेका अमली तौर पर बन्द करा दिया। आज तीसरे दिन भी औरतों का धरना जारी था। पुलिस इस मामले में हस्तक्षेप नहीं कर रही है।

—दैनिक पंजाब केसरी जालंधर, ३ फरवरी, १९८८

सूखा सहायता के लिए दान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा चलाए जा रहे साण्डों एवं झोटों के लिए चारा तथा दाने की व्यवस्था करने हेतु सहायता कार्यक्रम में ग्राम सुण्डाना निवासी कप्तान शेरसिंह आर्य की सुपुत्री सरोज धर्मपत्नी श्री सूबेसिंह आर्य ग्राम गान्धरा जि० रोहतक ने श्री कप्तानसिंह आर्य द्वारा २०० रु० दान भेजा है। सभा की ओर से इनका धन्यवाद।

—वेदव्रत शास्त्री
सभामन्त्री

जिला फरीदाबाद में शराब बन्दी आन्दोलन आरम्भ

जिला फरीदाबाद में शराब एवं दहेज बन्दी आन्दोलन आरम्भ हो गया है। आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तरंग सदस्य श्री राजेन्द्र सिंह विसला पूर्व विधायक के निर्देशन में सभा के उपदेशक श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री, श्री भजनलाल आर्य सरपच एवं श्री खेमसिंह, अमीचन्द, प्रेमसिंह की भजन मण्डली ने ग्राम नया गांव, खजुरका, मलिकपुरी, घोडी, चानट, टिकरी, सदरपुर, बढरांव, अग्वोप, हुसनपुर, मण्डकोला, मौसा, खेडी फरीदाबाद में शराब, दहेज एवं गोहत्या बन्दी पर जमकर प्रचार किया। श्री जयवीर आर्य ग्रामों में आर्यवीर दल के शिविर लगाकर आर्यवीरों को प्रशिक्षण दे रहे हैं और ग्राम ग्राम में अखाड़े चालू हो गये हैं।

शराब के ठेके पर धरना तथा रात्रि को ग्राम में शराबबन्दी प्रचार किया गया। इस कार्य में सभा के उपदेशक श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री, श्री भजनलाल आर्य, श्री खेमसिंह की मण्डली के अतिरिक्त श्री शिवराम वाचस्पति, मा० हेतराम, मा० रूपचन्द तथा ग्राम के सरपच एवं पचों ने पूर्ण सहयोग किया। दो दिन तक शराब की एक भी बोतल नहीं बिकने दी। ठेकेदार ने अपनी सहायता के लिए पुलिस को बुलवा लिया अतः उनके पहरे में शराब की बिक्री हो सकी। आर्यसमाज के प्रचार के प्रभाव से एक ट्रक चालक ने शराब पीने की प्रतिज्ञा करते हुए शराब की बोतल को फोड़ दिया।

फरीदाबाद जिला उपायुक्त कार्यालय पर प्रदर्शन

३० जनवरी महात्मा गान्धी के जन्म दिन पर चौ० राजेन्द्रसिंह स्वामी सिंहमुनि एवं सिवराम वाचस्पति के नेतृत्व में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने प्रातः यज्ञ तथा १० से ५ बजे तक फरीदाबाद जिला उपायुक्त के कार्यालय के सामने धरना दिया तथा शराब, दहेज एवं गोहत्या बन्दी के लिए प्रदर्शन किया। इस सम्बन्ध में जिला उपायुक्त को एक ज्ञापन देकर मांग की गई कि शराब के ठेके ग्रामों में बन्द किये जाये। पुलिस शान्तिपूर्ण धरनों में हस्तक्षेप करके ठेकेदारों की मदद न करे। जिन पंचायतों ने शराब बन्दी के प्रस्ताव भेज रखे हैं वहां शराब के ठेकों की नीलामी न की जाये। दहेज देने, लेने तथा इसका दिखावा करने वालों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जाये और मेवात क्षेत्र में दिन प्रति बढ रही गोहत्या करने वालों तथा उनका संरक्षण करने वालों को कठोर दण्ड दिया जाये।

जिला उपायुक्त ने आर्य कार्यकर्त्ताओं को विश्वास दिलाया है कि ज्ञापन को उचित कार्यवाही के लिए सरकार को भेज दिया जायेगा और जिन ग्राम पंचायतों ने शराब बन्दी के प्रस्ताव भेजे हुए हैं, उनमें आगामी वित्तीय वर्ष से शराब के ठेकों की नीलामी नहीं की जायेगी।

जयसिंहपुरा जि० करनाल में शराब बन्दी सम्मेलन का आयोजन

दनिक पंजाब केसरी में छपे एक समाचार के अनुसार जयसिंहपुरा जि० करनाल में ग्राम पंचायत ने शराब की बढ़ती हुई बुराई को समाप्त करने के लिए नियम बनाया था कि शराब खरीदनें तथा बेचने वालों पर आर्थिक जुर्माना किया जायेगा और इसकी सूचना देने वालों को इनाम दिया जायेगा। इस नियम के अनुसार ग्राम में शराब का सेवन करने वालों पर जुर्माना किया गया। परन्तु कुछ समय के बाद शराब पीने वालों ने अपना संगठन बनाकर पंचायत के नियम को तोड़ कर सामूहिक रूप में शराब पी और अपने ग्राम में सांग करवाया।

इस घटना की जानकारी प्राप्त करने हेतु सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत जी शास्त्री, सभा के वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह जी २५ जनवरी को आर्यसमाज ग्राम गोली, सालवान होते हुए ग्राम जयसिंह पुरा गये और वहां ग्राम के सरपंच श्री रघुवीरसिंह वकील तथा अन्य ग्राम के प्रमुख श्री चतरसिंह आदि से सारी जानकारी प्राप्त की। उनकी सारी समस्या सुनकर सभा मन्त्री ने श्री रघुवीर सिंह सरपंच को ग्राम में पुनः शराब बन्दी नियम लागू करने तथा ग्राम में इसके लिए अनुकूल वातावरण बनाने के लिए एक शराब बन्दी सम्मेलन करने की प्रेरणा की और इस कार्य में सभा की ओर से पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। ग्रामवासियों ने सभा मन्त्री जी के सुझाव का स्वागत किया और फरवरी में अपने ग्राम में शराब बन्दी सम्मेलन कराने तथा आर्यसमाज की स्थापना करने का विश्वास दिलाया।

नेताजी सुभाष की प्रतिमा के सामने शराब का ठेका

हिसार में केम्पचौक में स्वतन्त्रता सेनानियों की एक बैठक सम्पन्न हुई जिसमें श्री सुभाषचन्द्र बोस को श्रद्धांजलि देने के पश्चात् एक प्रस्ताव पास करके नेताजी की प्रतिमा के सामनें अंग्रेजी शराब के ठेके को तुरन्त बन्द करने की मांग की। इस सम्बन्ध में जिला उपायुक्त को भी एक ज्ञापन दिया गया।

—अत्तरसिंह आर्य

जिला हिसार के ग्रामों में वेद प्रचार तथा शराब बन्दी अभियान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य ने सभा की भजन मण्डली श्री सीताराम आर्य के साथ जि० हिसार के ग्रामों में ९ से १९ जनवरी तक वेद प्रचार तथा शराब एवं दहेज के विरुद्ध प्रचार कार्य सफलता पूर्वक किया है। प्रत्येक ग्राम में प्रातः यज्ञ तथा रात्रि को भजनों द्वारा प्रचार किया। यज्ञ के अवसर पर युवकों में व्यसन छुड़वाकर भविष्य में शराब तथा दहेज के लेन देन के बहिष्कार करने की प्रतिज्ञाएं करवाई। निम्नलिखित ग्रामो में प्रचार कार्यक्रम आयोजित हुए—

१- आर्यसमाज नलवा जि० हिसार ९ जनवरी प्रातः

२-	,,	धमाना	,,	९ ,,	रात्रि
३-	,,	गुंजार	,,	१० ,,	दोपहर बाद
४-	,,	कंवारी	,,	११ ,,	दोपहरबाद
५-	,,	किनाना	,,	११ ,,	रात्रि
६-	,,	किरोड़ी	,,	१३ ,,	,,

(इस ग्राम में २० वर्ष के पश्चात् आर्यसमाज का प्रचार हुआ)

७-	,,	गोरखपुर	जि० हिसार	१४ ,,	रात्रि
८-	,,	माइयड	,,	१६ ,,	,,

(यहां सभा के भजनोपदेशक श्री जयपाल आर्य के भी भजन हुए)

९-	,,	भौजराज	जि० हिसार	१८ ,,	रात्रि
१०-	,,	बालावास	,,	१९ ,,	दोपहर
११-	,,	खेतों की ढाणी	,,	१९ ,,	रात्रि

गोरक्षा के लिए सराहनीय कार्य

जिला हिसार के प्रसिद्ध ग्राम लाडवा निवासियों नें सूखाग्रस्त क्षेत्रों विशेषकर राजस्थान से आने वाली गायों के लिए एक नई गोशाला की स्थापना की है। सर्दी के बचाव हेतु छप्पर आदि डाल दिये हैं। इनके पालन पोषण के लिए प्रत्येक व्यक्ति ने ४५० प्रति मास के हिसाब से दान देने का वचन दिया है। मकर सक्रान्ति पर २० हजार रु० संग्रह हो गया। ६० मन अनाज भी एकत्रित किया गया। इनकी देखभाल के लिए दो पाली भी नियुक्त कर दिये हैं। पुसान ठोले ने १० हजार रु० चारा के लिए देनें का निश्चय किया है। ग्राम की युवा समिति नें भी ११०० रु० दिये हैं। २२ कार्य कर्त्ताओं पर आधारित एक समिति का गठन किया है जो आगामी वर्षा होने तक इस गोशाला का संचालन करेगी।

शोक सूचना

आचार्य विश्वबन्धु, शास्त्री, भूतपूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का, हृदय गति रुक जाने के कारण मंगलवार दिनांक २६ जनवरी १९८८ को निधन हो गया है।

रविवार, दिनांक ७ फरवरी १९८८ को दोपहर १.०० बजे यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन नारायण भवन, निकट वानप्रस्थ आश्रम आर्यनगर, ज्वालापुर (हरिद्वार) में किया गया।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—सभामन्त्री

शराब मानव-समाज की शत्रु है।

इससे अवश्य बचें।

शराब या नौकरी में से एक

नैरोबी, २२ जनवरी (वार्ता)। केन्या के राष्ट्रपति डेनियल अरप मोई ने देश के शराबियों से कहा है कि वे शराब और अपनी नौकरी में से किसी एक को चुन ले।

राष्ट्रपति ने मदिरापान के खिलाफ अपने राष्ट्रव्यापी अभियान के तहत चेतावनी दी है कि ड्यूटी के दौरान शराब पीने वालों को वह नौकरी से बर्खास्त कर देंगे।

शोक संवेदना प्रस्ताव

१. गुरुकुल के मन्त्री हरिसिंह आर्य प्रभाकर गोपी निवासी के प्रशिक्षित और युवक पुत्र की असामयिक मृत्यु अत्यन्त दु:खद है। युवक धर्म-शील और होनहार था।

२. ८० वर्षीय श्री भगवानसिंह जी आर्य काकडोली निवासी आर्यसमाज लोहारु और कन्या गुरुकुल के सदस्य थे। वे बड़े सरल और ईमानदार सेवक थे।

कन्या गुरुकुल पंचगांव की ओर से परमात्मा से प्रार्थना है कि शोकग्रस्त परिवारों को धैर्यधारण शक्ति प्रदान करे।

—धर्मपाल आर्य (सदस्य गुरुकुल सभा)

यतिमण्डल की बैठक

सभी माननीय यतियों की सेवा में निवेदन किया जाता है कि ५-६ मार्च शनिवार-रविवार, १९८८ को दयानन्दमठ, रोहतक में वैदिक यतिमण्डल की आवश्यक बैठक होगी। इस बैठक में महत्त्वपूर्ण विचार विमर्श होना है अतः अवश्य पहुँचने की कृपा करें। माननीय अध्यक्ष महोदय की इच्छा है कि सभी यति उपस्थित होकर संगठन का परिचय दें। भोजन एवं आवास की व्यवस्था दयानन्दमठ, रोहतक की ओर से होगी।

—स्वामी सुमेधानन्द
मन्त्री यतिमण्डल दयानन्दमठ, चम्बा

टंकारा यात्रियों के लिये आवश्यक सूचना

नई दिल्ली-महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में १५, १६, १७ फरवरी १९८८ को ऋषिबोधोत्सव मनाया जा रहा है, उसमें जो यात्री रेल द्वारा या बस द्वारा टंकारा जायेंगे वे पहले राजकोट पहुँचेंगे। राजकोट स्टेशन पर आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द मार्ग राजकोट की ओर से वहां आर्यसमाज के स्वयं सेवक मिलेंगे। जोकि यात्रियों को आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, राजकोट ले जायेंगे और वहां उनके भोजन तथा ठहरने का प्रबन्ध करेंगे। क्योंकि सभी गाड़ियां रात को १२ बजे या २ बजे के आस पास टंकारा पहुंचती हैं। राजकोट से टंकारा जाने के लिये कोई बस उस समय नही जाती है। इसी तरह जो मिनी बसें या बसें और मेटाडोर आती बार या जाती बार राजकोट ठहरना चाहें, उनके भोजन तथा ठहरने का प्रबन्ध आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, राजकोट की ओर से होगा। यात्रियों से प्रार्थना है कि राजकोट ठहरने वाले यात्री उपरोक्त आर्यसमाज को पहले पत्र द्वारा सूचित करें ताकि प्रबन्ध करने में कोई असुविधा न हो।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री-महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा।

सर्वहितकारी का ऋषिबोध विशेषांक

प्रतिवर्ष की भांति सर्वहितकारी का आगामी १४ फरवरी का अंक ऋषिबोध विशेषांक प्रकाशित होगा। इसमें ऋषि-दयानन्द पर वैदिक विद्वानों के लेख तथा कविताएं प्रकाशित की जायेंगी, जोकि आर्यसमाज के प्रचार के लिए बहुत उपयोगी होंगी।

—सम्पादक

सन्देश गीत

(रचयिता:-विद्या रत्न रहेजा)

जब प्रभु को याद किया, काहे फिर परेशानी है।
दुनिया का किए जा भला, यही जिन्दगानी है॥
जब प्रभु को याद किया.........................

गर तुझको सफल होना, अपने को सुधारे जा।
मन में विश्वास जमा, मंजिल जो तुझे पानी है॥
जब प्रभु को याद किया.........................

गैरों को तू अपना बना, बिछुड़ों को गले लगा।
उस धरती को सब्ज बना, व्यापक जहां वीरानी है॥
जब प्रभु को याद किया.........................

न तू बंधे सदा रहना, विषयों की जंजीरों में।
सयम की डोर पकड़, मुक्ति जो तुझे चाहनी है॥
जब प्रभु को याद किया.........................

वेद-मन्त्र उच्चारण कर, मन से भी विचारा कर।
व्यर्थ जन्म गंवायेगा, जब तक तू अज्ञानी है॥
जब प्रभु को याद किया.........................

हुआ अन्त भले का भला, हुआ अन्त बुरे का बुरा।
मूर्ख नादानों ने, ये बात उलटी जानी है॥
जब प्रभु को याद किया.........................

पढ़े जितना सत्यार्थ-प्रकाश, होवे उतना ज्ञान-विकास।
इसने दूध को दूध कहा, कहा पानी को पानी है॥
जब प्रभु को याद किया.........................

वैदिक रीति अनुसार, चलते रहना तू "रत्न"।
तज दे तू असत्य को, बात सच्ची अपनानी है॥
जब प्रभु को याद किया.........................

—मेरा पता:-विद्या रत्न रहेजा, पुत्र श्री हरिशचन्द्र 'नाज़'
गढ़ी घसीटा, सोनीपत (हरयाणा)-१३१००१

पुरोहित चाहिये

आर्यसमाज नरवाना जि० जीन्द के लिये एक पुरोहित की आवश्यकता है जो सभी वैदिक संस्कारों को कराने में सक्षम हो तथा आर्य वीर दल में रुचि रखता हो। वेतन योग्यता अनुसार यथेष्ट मिलेगा। सम्पर्क करें—

मन्त्री आर्यसमाज नरवाना, जि० जीन्द (हर०)

फरवरी माह में आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज नियाना जि० हिसार	३ ४ ५ फरवरी
,, ,, ओरंगाबाद मितरौल जि० फरीदाबाद	५ ६ ७ ,,
,, ,, मानपुर जि० फरीदाबाद	१३ १४ १५ ,,
,, ,, गोहाना जि० सोनीपत	१३ १४ १५ ,,
,, ,, गोहाना, मण्डी जि० सोनीपत	१४ ,,
,, ,, मनाना जि० करनाल	१४ १५ १६ ,,
,, ,, यमुनानगर रेलवे मार्ग जि० अम्बाला	१३ १४ १५ १६ ,,
आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक	१६ ,,
गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक	२० २१ ,,
आर्यसमाज ककोर जि० मेरठ	२६ २७ ,,
,, ,, सालवन जि० करनाल	२६ २७ २८ ,,
,, ,, पलवल शहर जि० फरीदाबाद	२६ २७ २८ ,,
,, ,, भुगारखा जि० महेन्द्रगढ़	२७ २८ ,,

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

एक सौ साठ ईसाई वैदिक धर्म में

उडीसा का फुलवानी जिला जंगल पहाड़ों से घिरा हुआ है। अतः वहां के आदिवासीयों का बाहर से सम्पर्क कम होने के कारण आज भी अपनी पुरानी परम्परा में दृढ विश्वास है। ये कन्ध जाति के आदिवासी अत्यन्त भोले-भाले एव सरल हैं। इनकी इसी सरलता का लाभ उठाकर ईसाई पादरियों ने अपना जाल सब ओर फैलाया है। अतः उस क्षेत्र में हम गत वर्ष से यत्नशील थे। परन्तु सथानीय लोगों के सहयोग पर इस वर्ष हमें सफलता मिली। आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं द्वारा प्रेरणा देने पर १६० से अधिक ईसाइयों ने समारोह के साथ मकर संक्रान्ति के पवित्र पर्व पर यज्ञ कुण्ड की पवित्र अग्नि में आहुति देकर वैदिक धर्म की दीक्षा ली।

सस्कार श्री प० विशिकेशन शास्त्री एवं सुभाष शास्त्री ने कराया। इस कार्य में श्री नारायण प्रधान व श्री दासरथी प्रधान ने महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया। समारोह का सारा कार्यक्रम श्री स्वामी धर्मानन्द जी प्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की देख रेख मे हुआ।

—विशिकेशन शास्त्री

हिसार के विद्यालयों में नैतिक शिक्षा का धूवांधार प्रचार

जिला हिसार के निम्न विद्यालयों में जिनमें रा० उ० विद्यालय हांसी, सिसर, सातरोड कलां, धिराय, भाटला, गढ़ी, सुल्तानपुर, कंवारी तथा प्राथमिक कन्या पाठशाला कंवारी में पुरोहित पं० भरतलाल शास्त्री, वानप्रस्थी अग्निदेव जी अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी द्वारा नैतिक शिक्षा दी गई तथा श्री धर्मचन्द आर्य (हांसी) के शिक्षाप्रद भजन हुवे। कार्यक्रम काफी सराहनीय एवं प्रेरणाप्रद रहा।

—अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी

शोक समाचार

समाज सेवी एवं जागरूक नागरिक बाबु ओमप्रकाश जी, संरक्षक आर्यसमाज समालखा, प्रधान हरयाणा हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति, प्रधान भारतीय जनता पार्टी समालखा तथा प्रधान ट्रक यूनियन समालखा, उनका निधन १७ जनवरी १९८८ रविवार को अपराह्न साढे तीन बजे हो गया। उनकी शोक सभा २९ जनवरी १९८८ को दोपहर १२ बजे उनके निवास स्थान मै० ओमप्रकाश सचिन कुमार, गुड़ मण्डी, समालखा में हुई और उन्हे श्रद्धांजलियां दी गई। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—सभा मन्त्री

दहेज प्रथा की आड़ में सती प्रथा के समर्थको सावधान

अपने आपको विद्वान् बुद्धिमान् समझने वाले कुछ चालाक लोग दहेज प्रथा की आड़ लेकर सती विरोधी प्रचण्ड आन्दोलन को दबवाने का असफल निकम्मा प्रयास कर रहे हैं। वे अपने लेखों में लिखते है जब हजारों लड़कियां दहेज के लिए जलाई जाती है तब इतना बावेला क्यों नहीं उठाया जाता जितना की आज देवराला सती काण्ड पर उठाया जा रहा है। वे इस काण्ड को किसी तरह वैसा ही साबित करना चाहते हैं जैसे कोई दुःखी लड़की आत्महत्या कर लेती है। उन लोगों के मन में दहेज से दुःखी लड़की आत्महत्या कर लेती है उन लोगों के मन में दहेज से दुःखी लडकियों के प्रति दया है ना बरबरता से जलाई गई रूपकंवर के प्रति सती विरोधी आन्दोलन को तो इस तर्क के द्वारा दबा देना चाहते हैं दहेज के विरुद्ध इनकी जुबान नहीं खुलती।

जो लोग आज सती विरोधी आन्दोलन चला रहे हैं वे ही दहेज विरोधी अभियान भी इसी तरह चलाते रहे हैं और आगे भी चलेगा आज जिस दहेज के लोभी ने अपनी बहू जलाई वह न समाज से बच जाता है न कानून से, उसका घर ही उजड़ गया है पता नहीं इन बुद्धि के अन्धों को यह सब तो दिखाई नहीं देता सती विरोधी आन्दोलन से इनकी नींद हराम क्यों हो गई है झूठे तर्क दे दे कर बड़े-२ लेख दे रहे हैं अपने माता पिता व घर बार छोडकर आई अबला लड़की को दहेज के लिए बन्द कमरे में मिट्टी का तेल छिड़ककर जला देना या जलने के लिए मजबूर कर देना घोर अन्याय है उन दुष्टों को दण्ड मिलना ही चाहिये मिल भी रहा है।

किन्तु क्या आज तक इन लेखको ने ऐसा भी कहीं देखा है दहेज के लिए किसी महिला को हजारों आदमियों को इकट्ठा करके जलाया गया हो और उसकी चुन्दड़ी रस्म हुई हो और उसके मन्दिर बनाकर उस प्रथा को प्रोत्साहन देने के लिये लाखों मूर्ख इकट्ठे हुये हों। क्या आप छुपकर बन्द कमरे में की गई हत्या और लाखों के सामने वह भी एक प्रापर्टी चलाने के लिये की गई हत्या को बराबर मानते हैं?

भगवान् हमारी भोली भाली जनता को इन लेखकों से बचाये।

सीताराम आर्य
बालसमन्द रोड, हिसार

पं० उदयवीर शास्त्री की पत्नी का निधन

आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् एवं वयोवृद्ध दार्शनिक श्री पं० उदयवीर जी शास्त्री की धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती शास्त्री का निधन ३० दिसम्बर रात्रि को नौ बजे हो गया आप की आयु ८२ वर्ष थी।

श्रीमती शास्त्री पिछले साढे छः वर्ष से पक्षाघात से पीड़ित थी और चलने फिरने में असमर्थ थी। मृत्यु से पूर्व उन्हें पक्षाघात का दूसरा आक्रमण हुआ और उनकी चेतना समाप्त हो गई। अचेत अवस्था में ही उनका स्वर्गवास हो गया।

४ जनवरी को शास्त्री जी के अजमेर स्थित निवास स्थान पर शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें दिवंगत आत्मा की शान्ति व सद्गति एवं परिजनों के लिए धैर्य, शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई।

श्रीमती विद्यावती शास्त्री अपने जीवन में अतिथि सत्कार की आदर्श थी अपनें स्वस्थ जीवन में अतिथि उनके घर पर कभी भी आया किसी भी समय रात्रि में चाहे एक बजे आया उसी समय भोजन बनाया उन्हें कार्य करते हुए कभी असुविधा का अनुभव नहीं किया।

विचारों में इतनी दृढ थी जब आपको पक्षाघात हुआ तो इन्हें सलाह दी गई आप कबूतर का मांस उपयोग में लावे तब आपनें कहा क्या इससे मैं अमर हो जाऊँगी? नहीं फिर थोड़े जीवन के लाभ के लिए मैं पाप नहीं करूँगी इस प्रकार आपनें अपना पूरा जीवन परोपकार एवं पति सहायोग में बिताया, आप एक आदर्श नारी थीं।

—धर्मवीर, सदस्य परोपकारिणी सभा

मण्डी डबवाली में मकर संक्रान्ति पर हवन यज्ञ

श्री लाला दीवान चन्द जी भिगला मण्डी डबवाली ने अपने घर पर ओम प्रकाश वानप्रस्थी वठिण्डा द्वारा हवन यज्ञ कराया इस अवसर पर लाला दीवानचन्द जी भिगला ने ११०५/-शहीद परिवार फण्ड में और ११००/- वानप्रस्थ आश्रम में भवन निर्माण सहायतार्थ दान दिए।

श्री वेदप्रकाश जी वठिण्डा के घर पारिवारिक सत्संग

१७ जनवरी रविवार श्री वेदप्रकाश जी ने अपने पुत्र दीपक कुमार के जन्म दिन पर अपने घर पर हवन यज्ञ कराया इस शुभ अवसर पर श्री वेद प्रकाश जी ने १००/- आर्यसमाज वठिण्डा को और १००/- आर्य वानप्रस्थ आश्रम वठिण्डा को दान दिया। स्त्री पुरुषो का चाय एवं सत्कार किया।

ओ३म् प्रकाश वानप्रस्थी

'चौ० छोटूराम का एक पत्र'



उच्च चरित्र के सम्बन्ध में चौ० छोटूराम ने गांव के तमाम अफसरों के पास ८-७-१९३६ को यह पत्र भेजा था—

प्रिय,

आपको यह पत्र मैं सरकारी हैसियत में लिख रहा हूं। यदि आपमें ये दोष न हो, जिनका जिक्र इस पत्र में है, तो बुरा न मानना।

किसान कौम को मैं हृदय से प्यार करता हूं, लेकिन मुझे दुःख है इस समाचार को सुनने से कि गांव के लोग जो उच्च पदों पर हैं उनमें से कुछ शराब पीने, रिश्वत लेने आदि दुर्गुणों में फसते जा रहे हैं। उनके इन गलत कामों से सारी कौम बदनाम हो जायेगी।

मैं यह तो चाहता हूँ कि आप लोग अच्छा खायें, अच्छा पहनें, किन्तु यह कतई नही चाहता कि फैशन और चाट में पैसे बर्बाद करें। मैं आपको यह याद दिलाता हूं कि हम उन लोगों की सन्तानें हैं, जो बेझड़ ज्वार-बाजरे की रोटी दही व प्याज से खाते थे और हमसे अधिक तन्दुरुस्त थे। मनोरंजन भी कोई बुरी चीज नही है। किन्तु जिस मनोरंजन से चरित्र बिगड़ता है उसे मैं पसन्द नही करता हूँ।

शराब पीना एक ऐसा दुर्व्यसन है जिसने बड़ी-बड़ी सल्तनतों व मालिकों को नष्ट कर दिया। कोई भी धर्म शराब पीने के पक्ष में नहीं है न कोई नीति शास्त्र ही शराब पीने को अच्छा मानता। साधारण समझ के लोग भी इसकी निन्दा करते हैं। अनुभवों ने इसके दुष्परिणामों से हमेशा सचेत किया।

चरित्र में जरा सी ढिलाई से जीवन पतन की ओर ढलने लगता है। दुर्व्यसनों में एक बार फंसने पर उनसे निकलना कठिन हो जाता है। भोगों को भोगने से कभी भी तृप्ति नहीं होती है। संयम ही उच्च चरित्र को कायम रखता है।

रिश्वत के सम्बन्ध में क्या हमें यह नहीं दिखता है कि जिनसे रिश्वत ले रहे हैं, उनकी सामर्थ्य तो इतनी भी नही कि भली प्रकार से बाल-बच्चों का पोषण कर सकें। प्रायः ऐसे ही लोगों से रिश्वत ली जाती है। क्या हम हृदयहीन हैं कि यह तथ्य हमारी आंख से भी ओझल हो जाता है।

विशिष्ट पुरुषों एवं अधिकारियों की गोष्ठियों में मैं जब सुनता हूं कि जाट मुलाजिम भी इन दुर्गुणों की ओर बहने लगे हैं तो मेरा सिर शर्म से झुक जाता है। किसी आदमी के चरित्र से पूरी कौम के चरित्र की जांच होती है। उच्च जाति में ये गुण होने आवश्यक हैं। सादा-जीवन उच्च विचार, अच्छा चरित्र, ईमानदारी और पारस्परिक एकता।

आपका 'छोटूराम'

संकलनकर्त्ता.—चौ० कबूलसिंह
मन्त्री सर्वखाप पंचायत
ग्राम व डा० :- शोरम (मुजफ्फरनगर)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

सम्पादकीय

शराब पिओ, सांग कराओ ?

हरयाणा सरकार ने जनहित के अनेक कार्य किये हैं और अभी बहुत कुछ करने के आश्वासन दिये जा रहे हैं। मुख्यमन्त्री हरयाणा को कररहित राज्य बनाना चाहते हैं और स्वर्णयुग लाने के स्वप्न संजोये बैठे हैं। किन्तु व्यवहार में कर घटाने के स्थान पर बढाये गये हैं। सरकार ने जितने कर्जे माफ किये हैं और वृद्धावस्था पेंशन दी है उससे कहीं अधिक टेक्स हरयाणा की जनता को शराब पिलाकर पांच वर्ष की अवधि में वापिस प्राप्त कर लिया जायेगा। ज्ञात हुआ है कि देसी शराब के ठेके ६७३ से बढाकर ७०० और अंग्रेजी शराब के ३३६ से बढाकर ३५० करने का निर्णय लिया है। इसके साथ ही शराब की मात्रा में भी वृद्धि की जायेगी। शहरों में प्राइवेट रेस्टोरेंटों को बीयर बार के लाइसेंस दिये जायेंगे और ग्रामों में शराब के ठेकों के साथ अहाते खोलने की छूट दी जायेगी। इस प्रकार सरकार ने करोड़ों रुपये की आय बढाने के चक्कर में शराब पीने और पिलाने की शहर और गांव में खुली छूट दे दी है। भले ही शराब पीकर जनता निकम्मी कायर और कमजोर तथा चरित्रहीन हो जावे।

शराब सभी बुराइयों की जननी है। शराब अन्दर तो अकल बाहर हो जाती है। इसके नशे में पागल प्राणी कुछ भी कर सकता है।

अभी कुछ दिन पूर्व ग्राम कालवा जिला जींद में कुछ शरारती तत्त्वों ने जोहड़ खुदवाने के नाम पर सांग करवाने की योजना बनाई। स्थानीय समझदार सज्जनों ने जिला अधिकारियों से मिलकर सांग पर प्रतिबन्ध लगवा दिया। इस पर शराबी वा शरारती लोग स्थानीय विधायक को साथ लेकर सांसद ओमप्रकाश चौटाला के पास पहुँचे और उससे दबाव डलवाकर सांग करवाने की स्वीकृति ले ली।

गुरुकुल कालवा, कुरुक्षेत्र और मटिण्डू के अधिकारियों तथा प्रमुख आर्यजनों के साथ स्वामी योगानन्द जी भी ओमप्रकाश चौटाला से मिले तब चौटाला ने कहा सांग हरयाणा की संस्कृति है, सांग होगा, आदमी मरो चाहे बीस और भले ही सारा गांव चरित्रहीन हो जावे।

पाठक इससे वर्तमान सरकार की विचारधारा का अनुमान लगा सकते हैं। शराब को बढावा देना भारतीय संविधान के प्रतिकूल है और महात्मा गान्धी के उन विचारों के भी प्रतिकूल है जो पराधीन भारत में गान्धी जी ने देशवासियों को दिये थे—"अगर भारत का शासन आधे घण्टे के लिये भी मुझे मिल जाये तो सबसे पहला काम शराब बनाने वाली फैक्टरियों और शराब बेचने वाली दुकानों को बिना मुआवजा दिये ही बन्द करवा दूंगा।"

—वेदव्रत शास्त्री

शिवरात्रि की अमर ज्योति

महान् क्रांतिकारी-महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारत में धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक क्रान्ति पैदा करने का महान् कार्य किया।

—लेखक : (डा० शांतिसरूप शर्मा, पत्रकार, कुरुक्षेत्र)

शिवरात्रि की अंधेरी रात में सन् १८३८ ई० गुजरात के एक छोटे नगर टंकारा के शिव मन्दिर में १४ वर्षीय बालक मूलशंकर के मन में सच्चे शिव की खोज की इच्छा जाग उठी। बालक अपने पिता के साथ शिवमन्दिर में रात्रि को पहुंचा। आधी रात के पश्चात् वहां सभी लोग उनके पिता जी सहित सब गहरी नींद में सो गये परन्तु वह जागता रहा क्योंकि उसे बताया गया था कि यदि सारी रात जागा जावे तो भगवान् शिव के दर्शन हो जाते हैं। उसने देखा कि शिवलिंग के ऊपर एक चूहा छलांग लगा रहा है उसके मन में शंका पैदा हो गई कि क्या यही वह सर्वशक्तिमान् भगवान् शिव है जो एक चूहे से अपनी रक्षा नहीं कर रहा है। उसने अपने पिताजी को जगाया परन्तु उसकी शंका निवारण नहीं हो सकी। कई वर्षों तक वह शंका में डूबा रहा।

सन् १८४२ में उसकी बहन और चाचा की मृत्यु हो गई। मूलशंकर के मन में दूसरी शंका पैदा हो गई कि मृत्यु क्या है क्यों आती है क्या उसकी भी मृत्यु होगी दिन रात वह इसी चिन्ता में डूबा रहता था। आपके माता पिता को अपने बेटे की यह अवस्था देख कर चिंता हुई और उन्होंने इस नवयुवक को विवाह के बन्धन में डालने की बात आरम्भ कर दी परन्तु उसने विवाह करने से इन्कार कर दिया।

नवयुवक मूलशंकर सन् १८४६ में २२ वर्ष की आयु में सत्य की खोज करने के लिए अपने टंकारा कस्बा जो गुजरात में स्थित था, घर से भाग खडा हुआ। दिन रात घने खतरनाक जंगलों पहाडों में भूख प्यास की चिन्ता किये बिना सच्चे शिव की खोज में घूमता रहा। नरबदा नदी के किनारे घने जंगल में हिमालय की बर्फ से भरी चोटियों पर कई साधु संन्यासियों के दर्शन किए परन्तु कहीं भी प्रकाश नहीं मिला। संन्यास धारण करके स्वामी दयानन्द बन गये। वह नवयुवक संन्यासी सच्चे गुरु की तलाश में कांटों से भरे जगलों और बर्फ से भरे नदी नालों को पार करता रहा पैर और सारा शरीर जख्मी हो गया फिर वह अपने मिशन की प्राप्ति में आगे बढ़ता रहा, परन्तु सारा पुरुषार्थ बेकार गया।

चौदह वर्ष के पश्चात् सन् १८६० में स्वामी दयानन्द जी मथुरा में प्रज्ञाचक्षु वेदों के प्रकांड विद्वान् स्वामी विरजानन्द की शरण में पहुँच गये। गुरु की आज्ञानुसार अपनी सारी पढ़ी हुई धार्मिक पुस्तकें

जमना नदी में फेंक कर गुरुचरणों में बैठकर तीन साल तक वेदों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया और ज्ञान चक्षु खुल गये। दयानन्द की तीव्र इच्छा थी कि वह विद्या समाप्ति करने के पश्चात् किसी पहाड़ की गुफा में बैठकर योग साधन करके मुक्ति प्राप्त कर लेगा परन्तु गुरु विरजानन्द ने अपने शिष्य स्वामी दयानन्द से कहा ' दयानन्द आज सारे देश में अविद्या का अंधकार फैला हुआ है तू वेदों के ज्ञान का प्रकाश लेकर इन अंधेरों पर छा जा तभी तेरा जीवन सफल होगा " गुरु की आज्ञा पालन करने की स्वामी जी ने प्रतिज्ञा की कि वह देश के कोने-कोने में वेदों के सच्चे ज्ञान का बिगुल बजा कर अपना कर्त्तव्य पूरा करेगा।

महान् तपस्वी महर्षि दयानन्द स्वामी ने एक बड़े चतुर सरजन की भाँति देश को अज्ञानता का आपरेशन किया। कई भूले भटके लोगों ने उसे गालियां दीं, उसका पत्थर बरसाये, उसे मारने के लिए विष दिया गया परन्तु वह हंसता रहा और बड़ी निडरता से आगे बढ़ता चला गया और घोषणा की "तुम मुझे पत्थर दो मैं तुम्हें फूल दूगा, तुम मुझे विष दो मैं तुम्हें जीवन दूगा"। उस युग पुरुष ने वेदों का ज्ञान प्रकाश फैलाने के लिए सारे देश का भ्रमण किया। उसने बड़े-बड़े पाखंडी पंडितों, मोलवीयों और पादरियों से बड़े-बड़े सम्मेलनों में टक्कर ली और सिद्ध किया कि वेद ही सच्चा ज्ञान है। उसे बड़े-बड़े तूफानों से टकराना पड़ा परन्तु प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त की और देश को जीवन प्रदान किया।

संसार में महर्षि दयानन्द पहले महापुरुष थे जिन्होंने राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक तीनों क्षेत्रों में बराबर काम किया और प्रत्येक क्षेत्र में भारी क्रान्ति पैदा की। सारे देश के कोने-कोने में उनके तेज और तर्क की धूम मच गई और कई मत मतान्तरों वाले पाखंडी उनके समक्ष न ठहर सके और मैदान छोड़ कर भाग खड़े हुए।

यह वह समय था जब हिन्दू वेदों के सच्चे ज्ञान को भूल चुके थे। अंग्रेजों ने ईसाई पादरियों की एक सरकारी सेना सारे देश में इसी मत के प्रचार के लिए फैला दी थी। जर्मन के एक संस्कृत के विद्वान् प्रोफैसर मेक्समूलर को लाखों रुपये की रिश्वत देकर वेदों का भाष्य ऐसा कराया कि जिससे हिन्दू को अपने धार्मिक ग्रन्थों से घृणा पैदा हो जावे और वह ईसाई मत ग्रहण कर ले। १६ दिसम्बर १८३८ को भारत के सचिव "ड्यूक आफ आर्गायल" को प्रो० साहब अपने पत्र में लिखते हैं कि भारत के धर्म को नष्ट करने में मैंने पूरा प्रयत्न किया है और वह नष्ट भी हो रहा है। अब तो उसका स्थान ईसाईमत को लेना चाहिए। यदि न हो सका तो यह आप का ही दोष होगा"' तीस वर्ष के पश्चात् प्रो० मेक्समूलर ने महर्षि दयानन्द की ऋग्वेद भाष्य भूमिका और दूसरे उनके ग्रंथों को पढ़कर लिखना पड़ा की"' मानव जाति की जो भी सज्जन अपनी भाषा या यों कहें कि अपने विचारों के ऐतिहासिक विकास में रुचि रखते हैं, जो लोग धार्मिक नक्षत्र विज्ञान की आधारशिला की खोज अपने अध्ययन का विषय बनाना चाहते हैं या वह जानना चाहते हैं कि इस पृथ्वी पर पारिवारिक जीवन सर्वप्रथम किस से प्रारम्भ हुआ और किस प्रकार राजनैतिक जीवन विकसित हुए उसे चाहिए कि वह वैदिक साहित्य का अध्ययन करे। संस्कृत साहित्य ऋग्वेद से आरम्भ होता है और महर्षि दयानन्द लिखित ऋग्वेद भाष्य भूमिका पर समाप्त होता है। महर्षि ने आधुनिक वैज्ञानिक रंग देकर वेदों को अधिक समुज्ज्वल बना दिया। वेद नित्य है"' जनता में अपने धर्म के प्रति जो घृणा पैदा हो

थो और वह ईसाई मत और इस्लाम मत ग्रहण करते थे उनमें महर्षि के वेदों के प्रचार से ब्रेक लग गई।

सामाजिक क्षेत्रों में उन्होंने अछूतों को समानता का दरजा दिलाने, स्त्री शिक्षा, बचपन के विवाह बंद कराने, विधवा विवाह करवाने, हिन्दी को भारत की भाषा बनाने और स्वदेशी के प्रचार जैसे महान् कार्यों को सफल बनाने और प्रचार के लिए उन्हें १४ बार विष पीना पड़ा।

राष्ट्रवादी स्वामी दयानन्द ने राजनैतिक क्षेत्र में कांग्रेस के जन्म से दस वर्ष पूर्व ही 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार' का प्रचार अपने भाषणों और लेखनी द्वारा किया। आपने सत्यार्थप्रकाश में लिखा कि 'विदेशी राज्य अपने राज्य से अच्छा कभी हो ही नहीं सकता। उन्होंने देश में देश भक्ति को जगाया और चरित्र निर्माण पर जोर दिया। अंग्रेज ने आपके पीछे अपनी सी० आई० डी० लगा दी थी। उस समय के गवर्नर जनरल लार्ड नार्थ ब्रुक ने इंगलेंड में भारतमंत्री को लिखा था"' भारत से एक बागी संन्यासी दयानन्द से कभी भी खतरा बन सकता है इसलिए इसके साथ सी० आई० डी० लगा दी गई है" भगवान् दयानन्द सन् १८८३ को अंग्रेजों की सरकार की साजिस का शिकार हो गए और अजमेर में ३० नवम्बर को शरीर त्याग दिया था।

ताऊ कमाल किया तनै

वाह ताऊ, कमाल कर दिया तनै। बोतल लो और ठेके पै ही बैठ के पियो। अर घणे पिसे हों तो होटल में कुर्सी पर जाम टकरा ल्यो। इस सूबे में इसतै अधिक और चाहिए बी के था। बहती होंगी कदे घी, दूध दही की दरिया, इब तो ताऊ ने म्हारे हरियाणे में शराब की दरिया बहा दी। पीण नै पानी चाहे मिलै ना मिलै, दारू जरूर-ऐ-मिल ज्यागी। गांधी बाबा न्यू ए कहंदा-कहंदा मरग्या। शराब के फायदे वो कोनी समझ पाया। सरकार के खजाने भरज्यां अर लोग नशै में आपणे दुःख दर्द नै भूलज्यां, इसी चीज तै आच्छा और के हो था। इब तो ताऊ एक काम और कर दे। अकै सरकारी नलका में पानी की जगां दारू ऐ आण दे। सारे बच्चे अर जनानी, दो चार साल जीवेंगे, इतणे तनै दुआ दिया करेंगे।

—परमेश्वरदास 'परमेश' तोशाम

(२)

पिछले दिनों हरियाणा सरकार ने अपने मंत्रिमंडल की बैठक में आबकारी नीति को उदार करते हुए यह फैसला किया है कि देसी शराब के ठेकों पर अहाता खोलने की अनुमति दी जाएगी और होटलों को भी बार लाइसेंस दिए जाएंगे। इससे तो ऐसा हो लगता है कि हरियाणा सरकार केवल पैसा ही चाहती है क्योंकि उक्त निर्णय से सरकार को तो आमदनी होगी और साथ में हरियाणा वासियों को शराब के प्रति उत्साहित किया गया है। मुख्यमन्त्री देवीलाल के इस फैसले से ऐसे लगता है मानो वह सत्ता में आने के बाद अपनी पिछली सभी बातें भूलते जा रहे हैं।

(जनसत्ता से) —संजय मुटानी, हांसी

टंकारा ग्राम का महत्त्व

प्रस्तुतकर्त्ता—श्री जयपालसिंह बेधड़क आर्य भजनोपदेशक

ऋषि देश की कर गया दूर बुराई।
एक ग्राम देश की कर गया दूर बुराई॥

वैसे तो यह पांच लाख गांव का देश हमारा है।
मगर यह ग्राम है जो भूमण्डल से प्यारा है॥
न ऐसी दिल्ली न बम्बई पूना और सतारा है।
न ही ऐसा कलकत्ता ढाका नहीं भोज की धारा है॥
बीकानेर नहीं गंगानगर नही चूरु दुधवा खारा है।
न हापुड़ न मेरठ बरेली सम्बल ठाकुर द्वारा है॥
नहीं धनौरा चोला खोरजा नहीं ऐसा भटवारा है।
नहीं सकोती नहीं दोराला नहीं ऐलम नहीं सारा है॥
नहीं शिकोपुर गढ़ी माजरा नंगला और लुहारा है।
न ककरोला जसराना सांघी न घिलौड़ जीन्द पिंडारा है॥
नही छतेरा नहीं बसाना नहीं जूआं नही माहरा है।
न रोहतक न सोनीपत गढी भापड़ौदा नहीं छारा है॥
नहीं औचन्दी नहीं नरेला है नहीं नाहरी नही नाहरा है।
जैसा ग्राम गुजरात प्रान्त जिला मोरवी में टंकारा है॥
उसी गांव में जन्म हुआ था दयानन्द का भाई
सन् अठारह सौ चौबीस था सम्वत् अठारह सौ इकासी।१।

मूल नक्षत्र बृहस्पतिवार दिन मूल शकर की सिंह राशि।
अम्बा शंकर नाम पिता का जो थे पुत्र के अभिलाषी॥
उनके पिता के नौकर रहते घर में रहती थी दासी।
गौतम गौत्र औदीच्य ब्राह्मण जो वेदों के अभ्यासी॥
भादु शुदी नौमी को जन्मे ऋषि दयानन्द संन्यासी।
जिसने पाखण्ड किला तोड़ दिया जगन्नाथ क्या काशी॥
१५ साल तक पूर्ण योग की करता फिरता तलासी।
अम्बा शंकर नाम पिता का मां थी यशोदा बाई।२।

सम्वत् १८९४ में टंकारा आई थी शिवरात।
रात जगाने गये मन्दिर में जमा हुई भारी पंचायत ॥
अम्बा शंकर अपने बेटे मूल शंकर को ले गया साथ।
सारी रात जगने वाले को दर्शन देंगे भोले नाथ ॥
लेकिन १० बजने से पहले वहां पर सो गई सर्वजमात।
१४ साल के मूल शंकर जी जोड़े बैठे दोनों हाथ ॥
एक घटना वहां पर घटी जो आजादी को लाई।३।

साढ़े बारह बजे रात के एक चूहा वहां पर आया था।
महादेव के ऊपर बैठा नही जरा घबराया था ॥
सबसे पहले शिवजी पे जो चढ़ावा पदार्थ खाया था।
मल और मूत्र किया शिवजी ने करवट नही हिलाया था ॥
देख नजारा शिव के ऊपर वो बालक चकराया था।
खड़ा हुआ मन्दिर से शंकर चारों तरफ लखाया था ॥
फोरन हाथ पकड़कर अम्बा शंकर जगाया था।
पृथ्वीसिह बेधड़क पिता को ये आवाज लगाई।४।

पाकिस्तान में भी छुआछूत

प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (प्रो० शेरसिह)

मैं यह बात सुनकर काफी चकित हुआ कि पाकिस्तान में भी छुआछूत है। यह मुझे लाहौर के एक धनी व्यापारी श्री रहमान ने बताई। श्री रहमान डी० ए० वी० कालिज जालन्धर के विद्यार्थी रहे, अब उन की आयु ७५ वर्ष के लगभग है। उन्होंने बताया कि सफाई कर्मचारियों और दूसरे तथा कथित छोटी जातियों के लोग, बड़ी जातियों के लोगों के बरतन नही छू सकते, न उनके हाथ का पानी बड़ी जाति के लोग पीते हैं। वे उनके बरतनों में भोजन भी नहीं कर सकते। श्री रहमान एक समाज सुधारक हैं और उसी दृष्टि से वे कह रहे थे। रिश्ते नाते तो सभी बिरादरियों के अपनी बिरादरी में ही होते हैं। हिन्दुओं को इस बीमारी से मुसलमान बनने पर भी लोग बचे नहीं हैं। यह बीमारी काफी हद तक ईसाइयों में भी है। भारतीय ईसाई भी जिस बिरादरी के हैं उसी में शादी विवाह कर सकते हैं। ईसाई और मुसलमान बनने पर भी हिन्दू अपनी जाति साथ लेकर गये और उनमें जाँत-पाँत छुआ-छूत वैसी ही है जैसी हिन्दुओं में।

रहमान साहब को तो मैंने कहा कि उनको भी आर्यसमाज की तरह ही छुआछूत और जाँत-पाँत के विरुद्ध समाज सुधार का आन्दोलन चलाना चाहिये। वे मेरे साथ पूरी तरह सहमत थे।

नोटः—पाकिस्तान की यात्रा (लेखक प्रो० शेरसिह) सर्वहितकारी के आगामी अंक में प्रकाशित की जायेगी। सम्पादक

शराब पिलाने में पंजाब और हरयाणा की सरकारों में होड़

प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा —प्रो० शेरसिंह

भोली जनता को शराब पिलाकर अधिक से अधिक राजस्व बटोरने की राज्य सरकारों में होड़ लगी हुई है। विडम्बना यह है कि चाहे काँग्रेस की सरकार हो या किसी और दल की, महात्मा गान्धी का नाम सभी लेते हैं। महात्मा गान्धी ने कहा था कि यदि भारत का शासन आधा घण्टे के लिये भी उनके हाथ में आ जाये तो वे सब से पहला काम यही करेंगे कि शराब बनाने वाली फैक्टरियों और शराब बेचने वाली दुकानों को बिना कोई मुआवजा दिये ही बंद कर दें।

आदरणीय नेता सी० आर० दास के नवासे श्री सिद्धार्थशंकर राय बड़े गर्व के साथ कह रहे हैं कि आतंकवादियों से लोहा लेकर उन्होंने पंजाब में जो २७६ ठेके नीलाम नहीं हो सके थे और १४३ ठेके बन्द पड़े थे वे नीलाम करवा दिये और खुलवा दिये, तथा आबकारी से मिलने वाले राजस्व में १३ प्रतिशत की वृद्धि करवा दी। आतंकवादी बेगुनाह लोगों की नित्यप्रति जानें ले रहे हैं उसमें तो कमी नहीं हुई, उनमें तो अब फिर से वृद्धि हो रही है। आतंकवादी देश को तोड़ने और बेगुनाहों की दिन धाड़े हत्या करने के जो जघन्य पाप कर रहे हैं, उनके लिये तो भारत के सभी नागरिकों को मिलकर उनकी भर्त्सना करनी चाहिये और उनको सख्ती से कुचलना चाहिये। परन्तु जो पुण्य का काम (शराब और मांस की दुकानें बन्द करवाने का) वे कर रहे थे उसका तो स्वागत करना चाहिये था। "कञ्चन होवे कीच में विष में अमृत होय" तो उन्हें ले लेना चाहिये था। परन्तु पंजाब की पुलिस और प्रशासन के कुछ लोग हत्याओं लूटमार, और अलगाववाद में तो आतंकवादियों का साथ देते हैं, इस पुण्य के कार्य में वे उनका साथ नहीं दे रहे। शराब की दुकानों की संख्या बढ़ाने में पूरी लगन से लगे हुए हैं। यही लगन यदि आतंकवाद को समाप्त करने में दिखाई होती तो पंजाब की हालत सुधर गई होती।

हरयाणा में चौधरी देवीलाल किसान की उन्नति और समृद्धि का राग अलापते नहीं थकते, परन्तु जिस शराब के कारण हरयाणा का किसान सर्वनाश के रास्ते पर आगे बढ़ता जा रहा है, उसका स्वास्थ्य और चलन चौपट होता जा रहा है उससे बचाने की बजाये ठेके बन्द करना तो दूर रहा उल्टा उनकी संख्या बढ़ाने में लगे हैं और देसी शराब के साथ बियर का भी लाईसेन्स देने लगे हैं। १९६२ के कानून के तहत जो पंचायतें सितम्बर के अन्त तक प्रस्ताव पास करके अक्तूबर में सरकार को अपनी प्रार्थना भेज दें कि उनके गाँव में ठेका बन्द कर दिया जाये या नया न खोला जाये, तो सरकार को उस गाँव का ठेका बन्द करना पड़ेगा, और नया ठेका नहीं खोला जा सकेगा। चौ० हुकमसिंह ने (जो देवीलाल जी के मन्त्रीमण्डल के सदस्य हैं) यह घोषणा की थी कि जो पंचायतें दिसम्बर के अन्त तक भी अपेक्षित प्रस्ताव भेज देंगी उनके गाँव में ठेका बन्द कर दिया जायेगा और नया नहीं खोला जायेगा। उनकी इस घोषणा का बहुत स्वागत किया गया था। परन्तु यह सुनकर

बड़ा दुःख हुआ कि हरयाणा सरकार मार्च के पहिले सप्ताह में ही ठेके नीलाम करने लगी है और देसी शराब के ठेकों की संख्या ६७३ से बढ़ाकर ७०० और अंग्रेजी शराब की दुकानों की संख्या ३३६ से बढ़ाकर ३५० करने जा रही है। यदि शराब को दुकानें बन्द करके, उनका घाटा पूरा करने के लिये बसों का किराया बढाने या दूसरे करों में थोडी बहुत बढ़ोतरी करते तो वह सहन किया जा सकता था, और मेरे जैसे लोग तो उनका स्वागत भी कर सकते थे। परन्तु बसों का किराया और दूसरे कर तो बढ़ा ही दिये, शराब से भी ८८ करोड़ का अतिरिक्त राजस्व कमाने के लिये शराब और बियर की गली गली में नदियां बहाई जाने लगी हैं।

चौ० चरणसिंह तो स्वामी दयानन्द और महात्मा गान्धी को अपना गुरु मानते थे और शराब तथा अश्लील नाटक और स्वाँगों आदि पर कड़ी पाबन्दी लगाने के लिये सदा अग्रसर रहे। क्या चौ० चरणसिंह को किसानों का मसीहा मानने वाले चौ० देवीलाल जी, अपने नेता की आंख बन्द होते ही शक्ति हाथ में आने पर शराब की नदियां बहायेंगे, तथा अश्लील नाटकों और स्वाँगों को प्रोत्साहन देंगे? मुझे कई लोगों ने बताया कि पिछले दिनों देवीलाल सरकार के मुखिया ने अश्लील स्वाँगों के प्रदर्शन का सार्वजनिक रूप से समर्थन किया और उन्हें करवाने के लिये अधिकारियों को आदेश दिया।

मेरा उद्देश्य श्री सिद्धार्थशंकर राय को सी० आर० दास और महात्मा गान्धी को याद दिलाना है और चौ० देवीलाल जी को चौ० चरणसिंह और महात्मा गान्धी की। मैं इन दोनों से ही अपने अतीत को याद करने और कामों पर पुनर्विचार करने के बाद सही कदम उठाने की आशा रखता हूं।

महर्षि दयानन्द के प्रति एक श्रद्धांजलि

प्रस्तुति—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

देश पर छाया हुआ बादल था इक जुल्मात का।
हिन्द के दिन पर गुमा होता था काली रात का॥
बालविधवा की प्रथा थी शूद्र सब बेचैन थे।
वेद की तालीम पर कब्जा था ऊंची बात का॥
तेरे आने से जहां में रोशनी इक छागई।
तेरी हस्ती जुल्म के तूफान से टकरा गई॥

तू था वाकिफ़ कौमीयत और हुरियत के राज से,
जाग उठा था जमाना तेरी इक आवाज से॥
पाशबाने कौम था, स्वामी निगहबाने वतन,
हिन्द का इक पेशवा था, और था शाने वतन॥
जब खिजा से धम के असजार मुरझाने लगे।
तूने अपने खून से सींचा गुलिशताने वतन॥

राष्ट्रीय एकता और ऋषि दयानन्द

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष-वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ० प्र०)

बात सन् १९६१ के जनवरी मास की है जबकि मुझे अधिकत्तर महर्षि दयानन्द की शिक्षा-स्थली मथुरा नगरी के विरजानन्द वैदिक साधना आश्रम में रहने का सुयोग प्राप्त हुआ। आश्रम से एक मील की दूरी पर मथुरा-वृन्दावन मार्ग पर भारत के सुप्रसिद्ध उद्योगपति विरला परिवार द्वारा निर्मित "आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ" के संरक्षण में एक विशाल गीता मन्दिर है। सायंकाल भ्रमणार्थ जब जाना होता तो इसी मन्दिर में लगभग एक घण्टा विताया करता। इस मन्दिर का जो मुख्य भाग है और जिसमें योगिराज श्री कृष्णचन्द्र की मूर्ति की स्थापना की गई है, उसके पीछे की ओर पांच महापुरुषों के चित्र बने हैं, जिनमें एक चित्र महर्षि दयानन्द का भी है। चित्र पर लिखा है "जागृति और एकता" जिसका तात्पर्य यह है कि आपने जागृति और एकता के लिये कार्य किया।

चित्र के साथ एकता शब्द को पढ़ते ही ऋषि के एकता के लिये किये गये कार्य मस्तिष्क में क्रमशः एक के बाद एक आने लगे। और एक बार महर्षि के प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास का यह प्रकरण नेत्रों के सम्मुख आकर स्थिर हो गया, जिसमें राष्ट्रीय गठन के लिये ग्राम समाजों से लेकर महाराजसभा तक का वर्णन किया है। प्रकरण क्या है? किसी राष्ट्र की एकता को सुदृढ़ तथा चिरस्थाई बनाने का वास्तविक सूत्र है।

महर्षि लिखते हैं कि "एक-एक ग्राम में एक-एक प्रधान पुरुष को रखे, उन्हीं दश ग्रामों के ऊपर दूसरा, उन्हीं बीस ग्रामों के ऊपर तीसरा, उन्हीं सौ ग्रामों के ऊपर चौथा और उन्हीं सहस्र ग्रामों के ऊपर पांचवां पुरुष रखे।"

इस प्रकार के संगठनों को जिनके अध्यक्ष यह प्रधान पुरुष होंगे, महर्षि ने "राज सभा" की संज्ञा प्रदान की है। अर्थात् यह ग्राम सभा वह हुई, जो ग्राम पर राज्य करे, ग्राम का शासन चलाये। किन्तु इन ग्राम सभाओं की सत्ता को सर्वतन्त्र स्वतन्त्र नहीं रखा अपितु दश ग्रामों के ऊपर भी एक प्रधान पुरुष का विधान किया, जो उन दशों ग्रामों के प्रतिनिधियों की बनी "राज-सभा" का अध्यक्ष होगा। उससे आगे इसी प्रकार बीस ग्रामों की, सौ ग्रामों की तथा सहस्र, दश सहस्र, लक्ष ग्रामों आदि की राज-सभाओं का भी वर्णन किया है तथा सब से अन्त में वर्णन किया है महाराज सभा का।

राष्ट्र की छोटी से छोटी इकाई अर्थात् प्रत्येक ग्राम से लेकर ऊपर तक सबको एक सूत्र में बांधने का इतना सुन्दर विधान है कि जिसमें प्रत्येक ग्राम को अपनी अपनी परिस्थिति के अनुसार स्व-शासन चलाते हुए भी ऊपर के संगठनों के अन्तर्गत रहने से राष्ट्रीय हित में किसी भी प्रकार बाधा पहुंचने की सभावना नहीं रहती।

इन सारी राज सभाओं की जो शिरोमणि अर्थात् सबसे ऊपर की सभा होगी, वह वही होगी, जिसे हम वर्तमान में "लोक-सभा" कहते हैं और उसका प्रधान पुरुष होगा लोकसभा अध्यक्ष। लोकसभा और "लोक सभाध्यक्ष तक" ही महर्षि ने विचार किया हो सो बात भी नहीं। वह तो आगे तक गये और इससे आगे उन्होंने जैसा कि हम ऊपर वर्णन कर आये हैं, "महाराज सभा" का भी निर्देश किया है, जिसे आज-कल की परिभाषा में "राज्य-सभा" कहा जाता है और जिसका कार्य लोकसभा द्वारा पारित विधेयकों पर विचार करना होता है। इस महाराज सभा में विचार के पश्चात् ही विधेयक राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिये जाते हैं। इस सभा का अध्यक्ष उपराष्ट्रपति होता है।

अन्तिम राजसभा अर्थात् लोक सभा तथा महाराज सभा तो वर्तमान काल में भी है, जैसा कि महर्षि मनु महर्षि दयानन्द ने विचार प्रस्तुत किये हैं किन्तु इनसे नीचे की स्थिति सर्वथा विपरीत है। आजकल राष्ट्र की सार्वभौम सत्ता के पश्चात् जो ईकाइयां हैं, उन्हें राज्य नाम दिया है, जिसका परिणाम हमारे सामने राज्य स्तर पर होनेवाले झगड़ों के रूप में आने लगा है। और वह झगड़े हैं अधिकतर सीमा सम्बन्धी, बिहार और बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश तथा मैसूर और महाराष्ट्र आदि के। पंजाब को पंजाबी भाषी प्रदेश कहकर खालिस्तान अथवा सिक्खिस्तान बनाने के लिये तथा बंगाल में गोरखालैण्ड बनाने के आन्दोलन भी इसी के परिणामस्वरूप प्रारम्भ हुए हैं। कारण पर यदि गम्भीरता पूर्वक निष्पक्ष रूपेण विचार करें तो इसी परिणाम पर पहुंचे कि वह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण दिन था, जब भारत के प्रान्तों को राज्य तथा भारत को भारतीय संघ नाम दिया गया।

उपरोक्त नामकरण यह स्पष्ट करने को पर्याप्त है कि भारत एक राष्ट्र नहीं अपितु अनेक राज्यों को मिलकर बनाया हुआ संगठन है जिसे "संयुक्त-राज्य" भी कहा जा सकता है। दुर्भाग्य से जिन लोगों के हाथों में राष्ट्र की बाग-डोर है, उन्होंने इस विषय में अमेरिका का अन्धानुकरण किया है। अन्धानुकरण हम इसलिये कहते हैं कि यदि थोड़ा भी बुद्धि का उपयोग किया जाता तो बात बड़ी स्पष्ट है, कि अमेरिका कोई स्वतन्त्र राष्ट्र नहीं अपितु अनेक राष्ट्रों का समूह है इसलिए उसका नाम "अमेरिकन-यूनियन" ठीक ही है। भारत की स्थिति इसके सर्वदा विपरीत है। भारत अनेक राष्ट्रों का समूह नहीं अपितु एक राष्ट्र है। उत्तरप्रदेश, बिहार, आदि उसके प्रबन्ध और व्यवस्था की दृष्टि से बनाये गये प्रांत हैं, राज्य नहीं। जब राज्य नाम दिये अधिक समय नहीं व्यतीत हुआ था तभी सीमा सम्बन्धी झगड़े आरम्भ हो गये थे। जिन-जिन प्रांतों में यह झगड़े हो रहे हैं उनमें से प्रत्येक प्रांत की जनता दूसरे प्रान्त को विदेश तथा वहां के निवासियों को विदेशी समझने लगी है। अधिक समय बीतने पर जो परिणाम हो सकते हैं उपर्युक्त झगड़ों को दृष्टिगत रखते हुए उनका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। यह असम्भव नहीं कि कुछ समय पश्चात् यह प्रश्न उग्र हो उठे कि प्रत्येक राज्य की स्वतन्त्र सत्ता है, परिस्थितियों वश उस समय एक संघ के रूप में एकत्र हुए थे किन्तु अब पृथक् होना चाहते हैं। पहले तो सीमाई झगड़े थे और अब विघटन की प्रवृत्ति प्रबल हो चुकी है, जिसका प्रमाण खालिस्तान की मांग उसके लिये विद्रोह है।

इस प्रान्तीयता के नाम पर होने वाले झगड़ों तथा उनसे होने वाली भयंकर हानियों से बचने व भावी विघटन की विनाशकारी, प्रवृत्ति को रोकने का एक मात्र उपाय है स्वामी दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट पथ का अनुसरण और वह यह कि समस्त प्रांतों को जिन्हें राज्य का नाम दे रखा है समाप्त कर दिया जाये। इससे प्रथम लाभ तो यह होगा, कि प्रत्येक प्रांतीय सरकार पर होने वाला व्यय

बच जायेगा तथा दूसरा यह कि प्रांतीयता की भावना मिटकर केवल मात्र एक भावना राष्ट्रीयता की रह जायेगी।

इस समय कोई बिहारी है तो कोई बंगाली, कोई पंजाबी है तो कोई मद्रासी और कोई महाराष्ट्रीय है तो कोई गुजराती। भारतीय कोई दृष्टिगोचर नहीं होता। इन प्रांतों के समाप्त होने पर न कोई बिहारी होगा न बंगाली, न पंजाबी होगा न मद्रासी, न महाराष्ट्रीय होगा, न गुजराती अपितु केवल भारतीय होंगे। वही संघीयता का वास्तविक रूप होगा, संघ नाम देने से नहीं। नाम के मूल में तो विघटन की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देने वाला मन्त्र निहित है।

आवश्यकता इस बात की है कि भारत का पुनर्गठन किया जाये। जिलों और उनसे निचले स्तर के गठन को तो छुआ न जाय अर्थात् उन्हें तो ज्यों का त्यों रखा जाये। जिलों से ऊपर प्रति दश जिलों को मिलाकर एक क्षेत्र या कमिश्नरी बनायी जाये, जिसका अधिकारी क्षेत्राधिकारी या कमिश्नर रहे। सारे भारत को पाँच भागों में व्यवस्था की दृष्टि से विभक्त किया जाये और इन भागों के नाम भाषा तथा जातीयता नहीं अपितु दिशाओं के नाम पर उत्तरी भारत, दक्षिणी भारत; पूर्वी भारत, पश्चिमी भारत तथा मध्य भारत रखे जायें। इनमें से प्रत्येक भाग का अधिकारी प्रधान क्षेत्राधिकारी अथवा चीफ कमिश्नर हो। इन सभी चीफ कमिश्नरों का सीधा सम्बन्ध राष्ट्रीय सरकार से हो। इस प्रकार सारा राष्ट्र व्यवस्थित रूपेण एकसूत्र में, एक ही राष्ट्रीय सरकार द्वारा शासित होगा।

दूसरा सूत्र राष्ट्रीय एकता के लिये ऋषि दयानन्द से जो हमें प्राप्त है, वह है भाषायी। भारत मां के उस सच्चे सपूत ने एक शताब्दी पूर्व ही यह जान लिया था कि किसी राष्ट्र की एकता को सुदृढ करने के लिये भाषायी एकता परमावश्यक है। यही कारण है कि जन्म के गुजराती तथा संस्कृत के महान् पंडित होते हुए भी उन्होंने अपने भाषणों का माध्यम हिन्दी भाषा को बनाया तथा अपने समस्त ग्रन्थ भी वेदाङ्ग प्रकाश (संस्कृत व्याकरण) को छोड़कर देवनागरी लिपि में लिखो जाने वाली हिन्दी भाषा में ही लिखे। यदि वह चाहते तो भाषण के माध्यम स्वरूप संस्कृत का प्रयोग कर सकते थे तथा लेखन के लिये संस्कृत या गुजराती भाषा का। परन्तु महर्षि यह भली-भांति जानते थे कि एक तो हिन्दी भारत में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली तथा लिखी जाती है। दूसरे हिन्दी की लिपि तथा वर्णमाला पूर्णतया वैज्ञानिक है।

यद्यपि भारत के संविधान में भारत की चौदह भाषायें स्वीकृत हैं तथापि भारत का हित इसी में है कि संविधान द्वारा स्वीकृत इन सभी भाषाओं की एक मात्र लिपि देवनागरी हो। इसमें भाषायी उन्माद का मूलोच्छेदन होगा, भारत के प्रत्येक क्षेत्र की जनता एक-दूसरे को समझेगी तथा पारस्परिक निकटता को स्थापना हो सकेगी।

आर्यसमाज का, जो सदैव से राष्ट्र-हित के कार्यों में अग्रणी रहा है, यह अनिवार्य कर्त्तव्य हो जाता है कि वह एतद्विषयक प्रचार में पूरी शक्ति के साथ जुट जाये, जिससे जनमत जागृत हो। एक समय था जब विदेशी साम्राज्य भारत पर छाया था, तब आर्यसमाज ने निःस्वार्थ भाव से राष्ट्रीय जागरण के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। यदि यह कह दिया जाय तो अतिशयोक्ति न होगी कि आर्यसमाज की सारी शक्ति स्वाधीनता के मन्त्र का प्रचार करने में लगी हुयी थी। यह

एक ऐसा सत्य है कि जिसे भारतीय नेताओं ने ही नहीं अपितु भारत से बाहर विदेशी विद्वानों तथा स्वयं ब्रिटिश साम्राज्य ने भी स्वीकार किया।

अच्छा हो कि स्वामी दयानन्द के इन दोनों सूत्रों के प्रचार में आर्यजन दृढ़ता पूर्वक जुट जायें तथा ऋषिवर दयानन्द के बोध दिवस शिवरात्रि के महान् पर्व को अपने लिये जैसा कि इसे नाम दिया गया है "बोध रात्रि" ही समझें। और उस दिन को, जब तक उपर्युक्त कार्यक्रम पूर्ण न हो जाये संकल्प दिवस के रूप में मनाया करें।

दयानन्द देश हितकारी

वेदानन्द वैदिक वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट

—(जि० गाजियाबाद उ. प्र.)

पाखण्ड पोप पाप का जब बोलबाला था
चहुं ओर अविद्या ने यहां डेरा डाला था।
कहता न कोई सत्य और न सुनने वाला था
गिरते हुए भारत को न कोई उठाने वाला था॥ १॥

हो रहा था एक ओर सतियों का क्रन्दन
विधवा अनाथ शूद्रों का था कहीं-रुदन।
देख दशा देश की न सह सके ऋषिवर
कष्टों को करने दूर सबके आये दयानन्द॥ २॥

बिगड़ी दशा देश की थी जिसने सुधारी
प्राचीन गौरव पद पर की प्रतिष्ठित नारी।
स्वतन्त्रता का सबसे पहले नाद बजाया
है धन्य दयानन्द तुम्हें देशहितकारी॥ ३॥

३००० गौओं के प्राण बचे

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर (फरुखाबाद) के महामन्त्री सहित शिष्ट मण्डल, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (शमसाबाद) मेला-रामनगरिया (ढाईघाट) के सन्त-महन्तों एवं क्षेत्रीय ग्राम वासियों ने संगठित होकर १४ जनवरी १९८८ को राजस्थान से बरेली बूचड़ खाने की ओर ले जाने वाले कसाइयों से लगभग ३००० तीन हजार गौओं को मुक्त कराकर क्षेत्र के गोभक्त लोगों को सौंप दिया। विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि इस बूचड़ खाने में इस माह अब तक लगभग २०,००० बीस हजार निर्दोष गौओं पर दुधारा चलाया जा चुका है। इस शिष्ट मण्डल ने अपने सत्य सनातन वैदिक धर्मी होने का परिचय देते हुए सच्ची गोभक्ति प्रदर्शित कर क्षेत्र में एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

—(हमारे विशेष संवाददाता द्वारा)

संस्कृत भाषा का पुनरुद्धार

महर्षि दयानन्द का महान् संकल्प

संस्कृत के विरोध में सबसे बड़ा तर्क यह दिया जाता है कि यह एक अप्रचलित भाषा है और इसका आज कुछ भी महत्त्व नहीं है। इसी कारण ही भाषा सूत्र और नयी शिक्षा नीति में संस्कृत की सर्वथा उपेक्षा की गयी है। पर यह धारणा संस्कृत के महत्त्व को न समझने के कारण है। दयानन्द का मत था कि संस्कृत का महत्त्व अनेक दृष्टियों से है, विशेष रूप से इसमें विद्यमान आध्यात्मिक विद्या से सुख लाभ लेने के लिए इसका अध्ययन आवश्यक है। स्वामी विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त दयानन्द सर्वप्रथम आगरा पहुँचे। वहां सुन्दरलाल उनके शिष्य बने। एक दिन आदित्यवार के दिन सुन्दरलाल जी ने स्वामी जी से निवेदन किया कि संस्कृत भाषा तो मृत मानी जाती है, कहीं व्यवहार में नहीं आती तो आपने इस पर इतना परिश्रम क्यों किया ? स्वामी जी ने उत्तर दिया—इससे अपना परलोक सुधारेंगे। स्पष्टतः दयानन्द' का 'संकेत संस्कृत में विद्यमान अध्यात्म-विद्या की ओर था।

किन्तु दयानन्द संस्कृत का महत्त्व केवल उसमें विद्यमान अध्यात्मविद्या के हो कारण नहीं मानते थे। उनके मत में अनेक भौतिक विद्वानों की दृष्टि से भी संस्कृत का महत्त्व किसी भाषा से कम नहीं है। विशेष रूप से प्राचीन भारत के ज्ञान के किसी भी क्षेत्र का अध्ययन करने के लिए संस्कृत का अध्ययन आवश्यक है। इसके लिए दयानन्द ने दाराशिकोह का उदाहरण दिया है। दाराशिकोह का यह निश्चय था कि जैसी पूरी विद्या संस्कृत में है वैसी किसी भाषा में नहीं है। वे उपनिषदों के भाषान्तर में लिखते हैं कि मैंने अरबी आदि बहुत-सी भाषा पढ़ी परन्तु मेरे मन का सन्देह छूटकर आनन्द न हुआ, जब संस्कृत पढ़ी और सुनी तब निःसन्देह मुझको बड़ा आनन्द हुआ है। (सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास, पृ० २७६)

इसके अतिरिक्त भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से संस्कृत का महत्त्व संसार की प्रत्येक भाषा के लिए है। अलीगढ़ में मुसलमानों से बातचीत के समय दयानन्द ने कहा कि संस्कृत भाषा एक स्वाभाविक और ईश्वर प्रदत्त भाषा है। इसके स्वरों को लीजिए, इनकी ध्वनि सब देशों में पाई जाती है। सब प्रचलित भाषाओं में इसी की अक्षरमाला नैसर्गिक है। छोटा-सा बच्चा भी अ, इ, उ का उच्चारण बिना सिखाए करने लग जाता है। क्, ख् आदि व्यंजनों का उच्चारण भी ऐसा ही सुगम और स्वाभाविक है। जो भाषा स्वाभाविक ध्वनि के अक्षरों से बनी है वही भाषा स्वाभाविक और आदिम होनी चाहिए। ईश्वरीय आदेश उसी भाषा में होने उचित हैं।

६ सितम्बर १८७२ को आगरा से आरा के तत्कालीन मजिस्ट्रेट जिला मि० एच० डबल्यू० अलेक्जैण्डर से स्वामी जी का मिलना हुआ। स्वामी जी ने उनसे संस्कृत में सम्भाषण किया, जिसे रजनी बाबू अनुवाद करके समझाते जाते थे। मजिस्ट्रेट स्वामी जी के कथन को बहुत ध्यान से सुनता था। उसने स्वामी जी से संस्कृत बोलने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि भारतवर्ष में द्राविड़ प्रभृति अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। तब मैं किस भाषा में बोलूं ? इसके अतिरिक्त संस्कृत सारे हिन्दुओं की भाषा है, और समस्त भाषाओं का मूल है। अतः संस्कृत बोलना ही अच्छा है।

संस्कृत का प्रचार

दयानन्द ने संस्कृत भाषा के उक्त महत्त्व के कारण उसका प्रचार व प्रसार करना अपना एक कर्त्तव्य निश्चित किया था। दयानन्द संस्कृत की कितनी आवश्यकता अनुभव करते थे, यह उनके एक विज्ञापन से पता चलता है। दयानन्द ने लिखा आर्यावर्त देश का राजा इगरेज़ बहादुर से यह मेरा विज्ञापन है कि संस्कृत विद्या की ऋषि-मुनियों की रीति से प्रवृत्ति करायें। इससे राजा और प्रजा को अनन्त सुख-लाभ होगा, और जितने आर्यावर्तवासी सज्जन लोग हैं, उनसे भी मेरा यह कहना है कि इससे इस सनातन संस्कृत विद्या का उद्धार अवश्य करें। व इससे अत्यन्त आनन्द होगा, और जो यह संस्कृत विद्या लुप्त हो जाएगी तो सब मनुष्यों को बहुत हानि होगी। इसमें कुछ सन्देह नहीं।

दयानन्द जहां भी जाते वहीं संस्कृत का प्रचार करते और स्वयं लोगों को संस्कृत सिखाते। आगरा में दयानन्द ने संस्कृत के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यदि कोई अन्य पुरुष भी स्वकल्याण करना चाहे तो सहायता देने के लिए उद्यत हूं। उन्हीं की प्रेरणा से पं० सुन्दरलाल जी और बालमुकन्द जी ने अष्टाध्यायी का अध्ययन आरम्भ किया था। लाहौर में उन्होंने संस्कृत के महत्त्व पर प्रकाश डाला तो प्रायः सभी सभासद् संस्कृत पढ़ने गए थे। स्वामी जी के पास भी बहुत से लोग अध्ययन करने आया करते थे। उनके सारगभित उपदेशों को सुनकर अनेक लोगों के हृदय में संस्कृत-भाषा सीखने के लिए उत्साह उत्पन्न हुआ। दयानन्द को जब भी अवसर मिला उन्होंने स्वयं अनेक लोगों को संस्कृत पढ़ानी आरम्भ कर दी।

महर्षि दयानन्द ने जहां कुछ व्यक्तियों को संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा दी, वहाँ पाठशाला आदि खोलकर भी संस्कृत का विकास किया। सन् १८७८ में अपने एक विज्ञापन में उन्होंने लिखा कि जैसा आर्यावर्तवासी आर्य लोग आर्यसमाजों के सभासद् करते और कराना चाहते हैं कि संस्कृत विद्या के जानने वाले स्वदेशियों की बढ़ती के अभिलाषी, परोपकारक निष्कपट हो के सबको सत्यविद्या देने की इच्छा युक्त, धार्मिक विद्वानों की उपदेशक मण्डली और वेदादि सत्य शास्त्रों के पढ़ने के लिए पाठशाला चाहते हैं।

१६ मार्च १८७६ की दीनापुर (दानापुर) के आर्यसमाज के मन्त्री को लिखा कि मुझे यह सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आप आर्यसंस्कृत पाठशाला खोलने का यत्न कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द के ही प्रयत्नों से फरुखाबाद में पाठशाला आरम्भ हुई थी, उसमें भी दयानन्द संस्कृत की शिक्षा पर ही विशेष बल देना चाहते थे। २३ मई १८८१ को सेठ निर्भयराम जी को एक पत्र में उन्होंने लिखा—आप लोगों की पाठशाला में आर्यभाषा संस्कृत का प्रचार बहुत कम और अन्य

भाषा अंग्रेजी व उर्दू, फारसी अधिक पढ़ाई जाती है। इससे वह अभोष्ट जिसके लिए यह शाला खोली गई है सिद्ध होता नहीं दीखता। वरन् आपका यह हजारों मुद्रा व व्यय संस्कृत की ओर से निष्फल होता भासता है। हमने कभी परीक्षा के कागज़ात वा आज तक की परीक्षा का फल कुछ नहीं देखा। आप लोग देखते हैं कि बहुत काल से आर्यावर्त में संस्कृत का अभाव हो रहा है। वरन् संस्कृत रूपी मातृभाषा को जगह अंग्रेजी लोगों की मातृभाषा हो चली है। अंग्रेजी का प्रचार तो जगह-जगह सम्राट् की ओर से जिनकी यह मातृभाषा है, भली प्रकार हो रहा है। अब इसकी वृद्धि में हम तुम को इतनी आवश्यकता नहीं दीखती और न सम्राट् के समान कुछ कर सकते हैं। हां, हमारी अति प्राचीन मातृभाषा संस्कृत जिसका सहायक वर्तमान में कोई नहीं है। यही व्यवस्था देखकर संस्कृत के प्रचारार्थ आप लोगों ने यह पाठशाला स्थापित की है। तो यह भी उचित कर्त्तव्य अवश्य है कि सदैव पूर्व इष्ट की सिद्धि पर दृष्टि रखी जावे।

१२ मई १८८१ को लाला कालीचरण जी रामचरणजी को लिखा—इस (फरुखाबाद की) पाठशाला में अधिक करके संस्कृत की उन्नति पर ध्यान रहना चाहिए। कुछ दिनों के बाद उन्होंने फरुखाबाद पाठशाला के लिए दुर्गाप्रसाद जी को फिर लिखा—जहां तक बन सके पाठशाला के उद्देश्य पर कि संस्कृत की उन्नति होनी चाहिए, सो इस पर अच्छी प्रकार ध्यान रहे। १७ जून १८८१ को दुर्गाप्रसाद जी को फिर लिखा—पाठशाला में संस्कृत का काम ठीक-ठाक होना चाहिए जैसे मिशन स्कूलों में लड़के अपनी अन्य स्वार्थ सिद्धि के लिए बाइबिल सुन लेते हैं, और कुछ ध्यान नहीं देते वैसे जो संस्कृत सुन लिया तो क्या लाभ होगा? इस पाठशाला में मुख्य संस्कृत जो मातृभाषा है, उसको ही वृद्धि देनी चाहिए। फारसी का होना कुछ आवश्यक नहीं। केवल संस्कृत और अंग्रेजी दो ही का पठन-पाठन होना अवश्य है।

दिसम्बर १८८२ को बाबू दुर्गाप्रसादजी को पत्र लिखकर पूछा कि पाठशाला में संस्कृत पढ़ के कितने विद्यार्थी समर्थ हुए, अथवा अंग्रेजी फारसी में ही व्यर्थ बन जाता है, सो लिखो, जो व्यर्थ ही हो तो क्यों पाठशाला रखी जाए। २५ अप्रेल १८८३ को लिखा—इससे विदित होता है कि तुम्हारी पाठशाला में अलिफ़, बे, और कैट, रैट का भरमार है। जो कि आर्यसमाजों को विशेष कर्त्तव्य नहीं।

इन सब पत्रों से महर्षि की संस्कृत प्रचार की ललक सूचित होती है। कलकत्ता में प्रसन्न कुमार ठाकुर ने मूला जोड़ में एक संस्कृत कालिज स्थापित किया था। स्वामी जी ने वहां जाकर प्रस्ताव किया कि केवल इसका नाम ही संस्कृत न हो, प्रत्युत इसमें संस्कृत की शिक्षा भी होनी चाहिए।

उन्होंने भारतीय ही नहीं वरन् विदेशियों को भी संस्कृत सीखने की प्रेरणा दी। २६ मार्च १८७९ के एक पत्र में उन्होंने लिखा—अमरीका वालों से अति प्रेम से हमारा नमस्कार कहना और उनसे कुशलता पूछना कि लाहौर आदि के समाज में आप लोगों के लिए तैयारी कर चुके हैं। वहां कब तक जायेंगे और उन्होंने संस्कृत पढ़ना आरम्भ किया है या नहीं? ३० जून १८७९ को श्याम जी कृष्ण वर्मा को आक्सफोर्ड में दयानन्द ने पत्र लिखा और पूछा—संस्कृत विद्या का वहां कैसा प्रचार है? और आर्यसमाजों के बाबत वे लोग क्या कहते हैं? ८ अक्तूबर १८८० को एच० पी० मैडम बलैवत्स्की को उन्होंने लिखा प्रथम संस्कृत पढ़ने, शिक्षा लेवे, सुसायटी को आर्यसमाज की शाखा करार देने आदि के लिए लिखा था, और वे चिट्ठियां छप के सर्वत्र प्रसिद्ध भी हैं और जो मैंने वहां पत्र भेजे थे उनकी नकल भी मेरे पास उपस्थित है।

दयानन्द की निश्चित मान्यता थी कि भारत विश्व को संस्कृत और संस्कृत में निहित ज्ञान के रूप में बहुत कुछ दे सकता है। सत्यार्थप्रकाश में वे लिखते हैं कि जितनी विद्या भूगोल में फैली है वह सब आर्यावर्त देश से मिस्र वालों, उनसे यूनानी, उनसे रोम और उनसे यूरोप देश में, उनसे अमेरिका आदि देशों में फैली है। अब तक जितना प्रचार संस्कृत विद्या का आर्यावर्त देश में है उतना किसी अन्य देश में नहीं। जो लोग कहते हैं कि जर्मनी देश में संस्कृत विद्या का बहुत प्रचार है और जितनी संस्कृत मोक्षमूलर साहब पढ़े हैं उतनी कोई नहीं पढ़ा। यह बात मात्र कहने की है, क्योंकि यस्मिन्-देशे द्रुमो नास्ति तत्र एरण्डोपि द्रुमायते–अर्थात् जिस देश में कोई वृक्ष नहीं होता उस देश में एरण्ड ही को बड़ा वृक्ष मान लेते हैं। वैसे ही यूरोप देश में संस्कृत विद्या का प्रचार न होने से जर्मन लोगों और मोक्षमूलर साहब ने थोड़ा-सा पढ़ा, वही उस देश के लिए अधिक है। परन्तु आर्यावर्त देश की ओर देखें तो उनकी बहुत न्यून गणना है, क्योंकि मैंने जर्मनी देश निवासी एक प्रिन्सिपल के पत्र से जाना कि जर्मनी देश में संस्कृत चिट्ठी का अर्थ करनेवाले भी बहुत कम है। (सत्यार्थप्रकाश, एकादश समुल्लास, पृ० २७५-२७६)। आदि लिखकर दयानन्द ने वस्तुतः उन लोगों को सावधान करने की कोशिश की जिन्होंने सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान का ठेकेदार पश्चिम को मान लिया था और यहां तक कि संस्कृत में भी अपने को जर्मनी से पिछड़ा हुआ मानने लगे थे। आज भी यह दुर्भाग्य की बात है कि किसी विदेशी विश्वविद्यालय से प्राप्त संस्कृत उपाधि को भारतीय विश्वविद्यालय की तुलना में अधिक महत्त्व दिया जाता है। किसी विदेशी विद्वान् द्वारा संस्कृत विषय पर विदेशी भाषा में लिखी पुस्तक को अधिक महत्त्व दिया जाता है। दयानन्द ने इस कुवृत्ति से बचने के लिए आज से सौ वर्ष पूर्व ही सावधान किया था। वे लिखते हैं कि मोक्षमूलर साहब के संस्कृत साहित्य और थोड़ी-सी वेद की व्यवस्था देखकर मुझको विदित होता है कि मोक्षमूलर साहब ने इधर-उधर आर्यावर्तीय लोगों द्वारा की हुई टीका देखकर कुछ-कुछ यथा तथा लिखा है। जैसे कि युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परितस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि, इस मन्त्र का अर्थ थोड़ा किया है, इससे तो सायणाचार्य ने सूर्य अर्थ किया है सो अच्छा है। परन्तु इसका ठीक अर्थ परमात्मा है, सो मेरी बनाई ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में देख लीजिए। उसमें इस मन्त्र का अर्थ यथार्थ किया है, इतने से जान लीजिए कि जर्मनी देश और मोक्षमूलर साहब में संस्कृत विद्या का कितना पाण्डित्य है। (सत्यार्थप्रकाश, एकादश समुल्लास, पृ० २७६) वस्तुतः पश्चिमी ज्ञान की ओर अंध भक्ति यहां तक कि संस्कृत व वैदिक ज्ञान के विषय में भी उन्हीं को प्रमाण मानने की गलत प्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए दयानन्द को ये सब स्पष्ट बातें लिखनी पड़ी थीं।

संस्कृत का स्वरूप (सरल संस्कृत का प्रयोग)

दयानन्द का मत था कि प्रयोग में अत्यन्त सरल संस्कृत आनी चाहिए। संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित होते हुए भी जन-सामान्य तक अपने विचार पहुँचाने के लिए वे स्वयं अत्यन्त सरल संस्कृत का प्रयोग किया करते थे। यह उल्लेखनीय है कि सन् १८७२ से पहले वे संस्कृत में ही भाषण किया करते थे। पर उनकी संस्कृत समझने में किसी को कठिनाई नहीं होती थी।

सन् १८७२ में कलकत्ता में श्री केशव चन्द्र सेन ने अपने आवास पर स्वामी जी का व्याख्यान कराना निश्चित किया। अंग्रेजी और बंगला में विज्ञापन बांटे गये। नियत समय पर सहस्रों नर-नारी एकत्रित हो गए। उस समय कलकत्ते के गणमान्य सज्जन प्रायः सभी वहां उपस्थित थे।

यद्यपि व्याख्यान संस्कृत भाषा में था परन्तु दयानन्द की कथन शैली इतनी सरल थी कि उनका कथन सर्वसाधारण को समझ में आ जाता था।

सन् १८७४ में भरुच में वकील जेठालाल जी ने कहा—आपकी संस्कृत अति सुगम होती है। पण्डितों जैसी जटिल भाषा मैंने आपसे नहीं सुनी। दूसरे, जब आप पण्डितों से शास्त्रार्थ करते हैं तब भी उनका मुख आप केवल युक्तियों और प्रमाणों से ही बन्द करते हैं। पण्डित लोग एक-एक शब्द पर ही सारा-सारा दिन बिता देते हैं। वैसा आप भी क्यों नहीं करते हैं ? दयानन्द ने उत्तर दिया—मैं सुगम संस्कृत इसलिए बोलता हूँ कि सुनने वालों को समझने में सुगमता हो। मेरा उद्देश्य जनता को समझाना है, न कि अपना पाण्डित्य छांटना परन्तु यह भी निश्चय रखिए कि सुगम भाषा बोलने की रीति किसी भाषा के अल्पज्ञान से नहीं प्राप्त हुआ करती। सच तो यह है कि भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लेने पर ही व्यक्ति सरल भाषा बोल सकता है।

अहमदाबाद में तो एक शास्त्री ने यहां तक कह दिया—महात्मा जी, केवल भवति, वचति मात्र से काम न चलेगा। आज आपका दक्षिणी पण्डितों से पाला पड़ा है। कोई शास्त्रीय महत्त्व दिखाना होगा। प्रतिपक्षियों की प्रबल प्रेरणा पर अपनी प्रकृति के प्रतिकूल होते हुए भी दयानन्द ने अप्रसिद्ध शब्दपूर्ण समास-बहुल व अनेकार्थ-बोधक ऐसी जटिल संस्कृत बोलनी आरम्भ की कि प्रतिवादी देखते रह गए। वे दयानन्द के धाराप्रवाह संस्कृत के वाक्यों को समझ ही न सके। इस प्रकार स्पष्ट है कि कठिन संस्कृत बोल सकने पर भी दयानन्द सरल संस्कृत का ही व्यवहार जनसामान्य के लिए आवश्यक समझते थे।

१५ दिसम्बर १८७३ को दयानन्द कलकत्ता गये। उनकी संस्कृत के सम्बन्ध में पताका पत्रिका के सम्पादक ने लिखा था—हमने जब पहले पहल स्वामी जी की वक्तृता सुनी तो हमने एक नवीन बात देखी कि संस्कृत भाषा में ऐसी सरल और मधुर वक्तृता हो सकती है। वह ऐसी सरलतम संस्कृत में व्याख्यान देने लगे कि संस्कृत से जो महामूर्ख हैं वह भी उनके व्याख्यान को समझने लगा। इसी प्रकार धर्मतत्व ने मार्च के अंक में दयानन्द सरस्वती शीर्षक देकर इस प्रकार लिखा था—यह एक दिग्गज पण्डित है। यह हिन्दू शास्त्र विशारद हैं। संस्कृत भाषा इनके आयताधीन हो विशेषकर इनकी संस्कृत भाषा इतनी प्राञ्जल, श्रुतिमधुर और सरल है कि संस्कृत से अनभिज्ञ पुरुष भी उसे अनायास बहुत कुछ समझ सकते हैं।

दयानन्द ने २० अगस्त १८७६ को वेदभाष्य बनाना आरम्भ किया। तब उनके एक विज्ञापन से यह भी प्रकट होता है कि वे सरल भाषा के पक्ष में थे। उस विज्ञापन में उन्होंने लिखा—यह भाष्य संस्कृत और आर्यभाषा जो कि काशी प्रयाग आदि मध्यदेश की है, इन दोनों भाषाओं में बनाया जाता है। इसमें संस्कृत भाषा भी सुगम रीति की लिखी जाती है और वैसी आर्यभाषा भी सुगम लिखी जाती है। संस्कृत ऐसी सरल है कि जिससे साधारण संस्कृत को पढ़ने वाला भी वेदों का अर्थ समझ ले। तथा भाषा को पढ़ने वाला भी सहज में समझ लेगा इससे दयानन्द का सरल भाषा रखने का उद्देश्य और अधिक प्रकट हो जाता है।

स्वामी जी ने अपने परमशिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा ने वह चिट्ठी प्रो० मोनियर विलियम्स को दिखाई जिसकी सरल, सुबोध और ललित संस्कृत को देखकर वह इतने मोहित हुए कि उन्होंने

उसका अंग्रेजी अनुवाद एथिनियम नाम के पत्र के २३ अक्तूबर सन् १८८० के अंक में प्रकाशित कराया और उस चिट्ठी को आदर्श मानते हुए लिखा कि संस्कृत भाषा अभी तक आर्यावर्त के पत्र व्यवहार और दैनिक बोलचाल की भाषा है। आर्यावर्त भर में शिक्षित मनुष्यों के बीच में यही भाषा विचार-विनिमय का माध्यम है। आर्यावर्त में लगभग २०० भाषाएं बोली जाती हैं। यदि यह माध्यम न होता तो एक प्रान्त के मनुष्य से बातचीत करने में अत्यन्त कठिनता होती। ऐसी दशा में जो लोग यह कहते हैं कि संस्कृत भाषा अप्रयुक्त और अवनत दशा में है, वह भूल करते हैं।

महर्षि दयानन्द के संस्कृत संबंधी विचारों को जानने के बाद हम यह कह सकते हैं कि हमें विशेषतः उनके अनुयायियों को राष्ट्र में संस्कृत भाषा के प्रचार और प्रसार को अपना एक मुख्य कार्य समझना चाहिए। आर्यसमाज को इसके लिए अनेक रचनात्मक आन्दोलन चलाने होंगे। इस समय देश में जितने भी संस्कृत की उच्च उपाधि प्राप्त नवयुवक और नवयुवतियां हैं उनके लिए कार्य की एक सशक्त योजना बनानी होगी, साथ ही भारत सरकार की नयी शिक्षा नीति में संस्कृत को स्थान दिलाने के लिए हमें कुछ आन्दोलन भी चलाने होंगे।

—डा० प्रशान्त वेदालंकार
७/२, रूप नगर,
दिल्ली-११०००७

अमर शहीद धर्मवीर हकीकत

हकीकत तो हकीकत है, हकीकत ने था दर्शाया
न विचलित कर सका उसको, तनिक भी मौत का साया ॥
न मुल्ला और काज़ी की, डरा उसको सकी धमकी
प्रलोभन मालोधन का भी, नहीं कुछ काम में आया ॥
कहा कलमा पढ़ो फौरन, शरण इस्लाम की आओ
नहीं तो तेग से जाएगा, तेरा शीश कटवाया ॥
दहाड़ा शेर की भान्ति, डराते क्या हो तुम मुझको।
मिटादे जो मेरी हस्ती, नहीं खंजर वह बन पाया ॥
धर्म प्यारा मुझे सबसे, नहीं कुछ और है बढ़कर
न सौदा हो सके इसका, नहीं जा सकता बिकवाया ॥
न चिन्ता उसने की घर की, नजर की और न सरकी
धर्म के वास्ते जालिम, हकूमत से वह टकराया ॥
है दरजा सब से ऊंचा "पाल" बलिदानी हकीकत का
हकीकत ने हकीकी रास्ता, हम सब को दिखलाया ॥

—धर्मपाल आर्य
नरवाना

ओ३म्

भारतवर्ष में उन्नति कैसे हो सकती है ?

१८८४ में बलिया के ददरी मेले में भारतेंदु हरिश्चन्द्र का एक भाषण

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारतेंदु के साथ ही आधुनिक हिन्दी गद्य और पत्रकारिता और साहित्य के माध्यम से भारतेन्दु ने स्वाधीनता और स्वदेशीपन की चेतना फैलाने में क्रांतिकारी भूमिका निभाई। भारतेंदु की विचारधारा के सिलसिले में राजभक्ति और देशभक्ति के द्वंद्व की चर्चा अक्सर की गई है। असल में इसे तत्कालीन समय के अन्तर-विरोध के रूप में देखने की जरूरत है। एक ओर अगर वे विक्टोरिया की तारीफ करते हैं तो दूसरी ओर गरीबी और गुलामी की जिंदगी ढोते भारत की दुर्दशा उन्हें परेशान करती है, इससे मुक्ति पाने के लिए वे अपने जीने और रचने में लगातार सक्रिय दिखाई पड़ते हैं। अपनी मृत्यु से कुछ पहले ददरी (बलिया) के मेले में दिया गया उनका भाषण ऐतिहासिक महत्त्व का है। भाषण नवम्बर सन् १८८४ में दिया गया था जो बाद में ३ दिसम्बर १८८४ की नवोदिता हरिश्चन्द्र चंद्रिका में छपा।

आज बड़े ही आनन्द का दिन है कि इस छोटे से नगर बलिया में हम इतने मनुष्यों को बड़े उत्साह से एक स्थान पर देखते हैं। इस अभागे देश में जो कुछ हो जाए बहुत कुछ है। बनारस ऐसे बड़े शहरों में जब कुछ नहीं होता तो यह हम क्यों न कहेंगे कि बलिया में जो कुछ हमने देखा वह बहुत ही प्रशंसा के योग्य है। इस उत्साह का मूल कारण जो हमने खोजा तो प्रगट हो गया कि इस देश के भाग्य में आजकल यहां सारा समाज ही ऐसा एकत्र है। जहां राबर्ट्स साहब बहादुर ऐसे कलेक्टर हों वहां क्यों न ऐसा समाज हो। जिस देश और काल में ईश्वर ने अकबर को उत्पन्न किया था उसी में अबुलफजल, बीरबल, टोडरमल को भी उत्पन्न किया। यहाँ राबर्ट्स साहब अकबर है तो मुन्शी चतुर्भुज सहाय, मुन्शी बिहारीलाल साहब आदि अबुलफजल और टोडरमल हैं। हमारे हिन्दुस्तानी लोग तो रेल की गाड़ी हैं। यद्यपि फर्स्ट क्लास, सेकेंड क्लास आदि गाड़ी बहुत अच्छी-अच्छी और बड़े-बड़े महसूल की इस ट्रेन में लगी हैं पर बिना इंजन ये सब नहीं चल सकती, वैसे ही हिन्दुस्तानी लोगों को कोई चलानेवाला हो तो ये क्या नहीं कर सकते। इनसे इतना कह दीजिए "का चुप साधि रहा बलवाना", फिर देखिए हनुमान जी को अपना-अपना बल कैसा याद

आ जाता है। सो बल कौन दिलावै। या हिंदुस्तानी राजे-महाराजे नवाब रईस या हाकिम। राजे-महाराजों को अपनी पूजा भोजन झूठी गप से छुट्टी नहीं। हाकिमों को कुछ तो सरकारी काम घेरे रहता है, कुछ बॉल, घुड़दौड़, थिएटर, अखबार में समय गया। कुछ बचा तो भी उनको क्या गरज है कि हम गरीब गंदे काले आदमियों से मिलकर अपना अनमोल समय खोवें। बस यही मसल हुई 'तुम्हें गैरों से कब फुरसत हम अपने गम से कब खाली। चलो बस हो चुका मिलना न हम खाली न तुम खाली।' तीन मेंढक एक के ऊपर एक बैठे थे। ऊपरवाले ने कहा, 'जौक शौक,' बीचवाला बोला, 'गुम सुम', सबके नीचे वाला पुकारा 'गए हम।' सो हिंदुस्तान की साधारण प्रजा की दशा यही है, गए हम।

पहले भी जब आर्य लोग हिंदुस्तान में आकर बसे थे, राजा और ब्राह्मणों ही के जिम्मे यह काम था कि देश में नाना प्रकार की विद्या और नीति फैलावें और अब भी वे लोग चाहें तो हिंदुस्तान प्रतिदिन कौन कहे प्रतिछिन बढ़े। पर इन्हीं लोगों को सारे संसार के निकम्मेपन ने घेर रखा है। 'बोद्धारो मत्सरग्रस्ता प्रभवः स्मरदूषिताः।' हम नहीं समझते कि इनको लाज भी क्यों नहीं आती कि उस समय में जब इनके पुरुषों के पास कोई भी सामान नहीं था, तब उन लोगों ने जंगल में पत्ते और मिट्टी की कुटियों में बैठ करके बांस की नलियों से जो ताराग्रह आदि वेध करके उनकी गति लिखी है वह ऐसी ठीक है कि सोलह लाख रुपए के लागत रुपए की विलायत में जो दूरबीनें बनी हैं उनसे उन ग्रहों को वेध करने में भी वही गति ठीक आती है। और जब आज इस काल में हम लोगों को अंग्रेजी विद्या की और जगत् की उन्नति की कृपा से लाखों पुस्तकें और हजारों यंत्र तैयार हैं तब हम लोग निरी चुंगी की कतवार फेंकने की गाड़ी बन रहे हैं। यह समय ऐसा है कि यदि तुरकी ताजी सब सरपट्ट दौड़े जाते हैं। सबके जी में यही है पाला हमीं पहले छू लें। उस समय हिन्दू कठियावाड़ी खाली खाली खड़े-खड़े टाप से मिट्टी खोदते हैं। इनको औरों को जाने दीजिए, जापानी टट्टुओं को हांफते हुए दौड़ते देखकर भी लाज नहीं आती। यह समय ऐसा है कि जो पीछे रह जाएगा फिर कोटि उपाय किए भी आगे न बढ़ सकेगा। इस लूट में, इस बरसात में भी जिसके सिर पर कमबख्ती का छाता और आंखों में मूर्खता की पट्टी बन्धी रहे उन पर ईश्वर का कोप ही कहना चाहिए।

मुझको मेरे मित्रों ने कहा था कि तुम इस विषय पर कुछ कहो कि हिन्दुस्तान की कैसे उन्नति हो सकती है। भला इस विषय पर मैं और क्या कहूं। भागवत में एक श्लोक है।

'नृदेहमाद्यं सुलभं सुदुर्लभं प्लवं सुकल्पं गुरुकर्णधारम्।
मयाऽनुकूलेन नभःस्वतेरितु पुमान् भवाब्धि न तरेत् स आत्महा।'

भगवान् कहते हैं कि पहले मनुष्य जन्म ही बड़ा दुर्लभ है, सो मिला और उस पर गुरु की कृपा और मेरी अनुकूलता। इतना सामान पाकर भी जो मनुष्य इस संसार सागर के पार न जाए उसको आत्महत्यारा कहना चाहिए। वही दिशा इस समय हिन्दुस्तान की है। अंग्रेजों के राज्य में सब प्रकार का सामान पाकर, अवसर पाकर भी हम लोग जो इस समय पर उन्नति न करें तो हमारा केवल अभाग्य और परमेश्वर का कोप ही है। सास के अनुमोदन से एकांत रात में सूने रंगमहल में जाकर भी बहुत दिन से जिस प्राण से प्यारे परदेसी पति से मिलकर छाती ठंडी करने की इच्छा थी, उसका लाज से मुंह भी न देखे और बोले भी न तो उसका अभाग्य ही है। वह तो कल फिर

परदेश चला जाएगा। वैसे ही अंग्रेजों के राज्य में भी हम कुएं के मेंढक, काठ के उल्लू, पिंजड़े के गंगाराम ही रहें तो हमारी कमबख्त कमबख्ती फिर कमबख्ती है।

बहुत लोग यह कहेंगे कि हमको पेट के धन्धे के मारे छुट्टी ही नहीं रहती बाबा, हम क्या उन्नति करें? तुम्हारा पेट भरा है तुमको दूर की सूझती है। यह कहना उनकी बहुत भूल है। इंग्लेंड का पेट भी कभी यों ही खाली था। उनने एक हाथ से अपना पेट भरा, दूसरे हाथ से उन्नति की राह के कांटों को साफ किया। क्या इंग्लेंड में किसान खेतवाले गाड़ीवान मजदूर कोचवान आदि नहीं हैं? किसी देश में भी सभी पेट भरे हुए नहीं होते। किन्तु वे लोग जहां खेत जोतते बोते हैं वहीं उसके साथ यह भी सोचते हैं कि ऐसा और कौन नई कला या मसाला बनावें जिसमें इस खेतो से आगे से दूना अन्न उपजे। विलायत में गाड़ी के कोचवान भी अखबार पढ़ते हैं। जब मालिक उतरकर किसी दोस्त के यहां गया उसी समय कोचवान ने गद्दी के नीचे से अखबार निकाला। यहां उतनी देर कोचवान हुक्का पीएगा या गप्प करेगा। सो गप्प भी निकम्मी। वहां के लोग गप्प ही में देश के प्रबन्ध छांटते हैं। सिद्धान्त यह कि वहां के लोगों का यह सिद्धांत है कि एक छिन भी व्यर्थ न जाए। उसके बदले यहां के लोगों को निकम्मापन हो उतना ही बड़ा अमीर समझा जाता है। आलस यहां इतनी बढ़ गई कि मलूकदास ने दोहा ही बना डाला 'अजगर करे न चाकरी, पंछो करे न काम। दास मलूका कहि गए, सबके दाता राम।' चारों ओर आंख उठाकर देखिए तो बिना काम करने वालों की ही चारों ओर बढ़ती है। रोजगार कहीं कुछ भी नहीं है। अमीरों की मुसाहवी, दलाली या अमीरों के नौजवान लड़कों को खराब करना या किसी की जमा मार लेना, इनके सिवा बतलाइए और कौन रोजगार है जिससे कुछ रुपया मिले। चारों ओर दरिद्रता की आग लगी है। किसी ने बहुत ठीक कहा है कि दरिद्र कुटुम्ब इसी तरह अपनी इज्जत को बचाता फिरता है जैसे लाजवती कुल की बहू फटे कपड़ों में अपने अंग को छिपाए जाती है। वही दशा हिन्दुस्तान की है।

मुर्दुमसमारी की रिपोर्ट देखने से स्पष्ट होता है कि मनुष्य दिन-दिन यहां बढ़ते जाते हैं और रुपया दिन-दिन कमती होता जाता है। तो अब बिना ऐसा उपाए किए काम नहीं चलेगा कि रुपया भी बढे और वह रुपया बिना बुद्धि न बढ़ेगा। भाइयो राजा महाराजों का मुंह मत देखो, मत यह आशा रखो कि पंडित जी कथा में कोई ऐसा उपाय भी बतलावेंगे कि देश का रुपया और बुद्धि बढ़े। तुम आप ही कमर कसो, आलस छोड़ो। कब तक अपने को जंगली हूस मूर्ख बोदे डरपोकने पुकरवाओगे। दौड़ो इस घोड़दौड़ में जो पीछे पड़े तो फिर कहीं ठिकाना नहीं है। 'फिर कब राम जनकपुर एहे।' अबकी जो पीछे पड़े तो फिर रसातल ही पहुँचोगे।

जब पृथ्वीराज को कैद करके गोरी ले गए तो शहाबुद्दीन के भाई गियासुद्दीन से किसी ने कहा कि वह शब्दभेदी बाण बहुत मारता है। एक दिन सभा नियत हुई और सात लोहे के तवे बाण से फोड़ने को रखे गए। पृथ्वीराज को लोगों ने पहले ही से अन्धा कर दिया था। संकेत यह हुआ कि जब गियासुद्दीन 'हूं' करे तब वह तवों पर बाण मारे। चंद कवि भी उसके साथ कैदी था। यह सामान देखकर उसने यह दोहा पढ़ा।

'अबकी चढ़ी कमान, को जाने फिर कब चढ़े।
जिनी चुक्के चोहान, इक्के मारय इक्क सर।''

उसका सकेत समझकर जब गियासुद्दीन ने हूं किया तो पृथ्वीराज ने उसी को बाण से मार दिया। वही बात अब है। अबकी चढ़ी इस समय मैं सरकार का राज्य पाकर और उन्नति का इतना समय भी, तुम लोग अपने को न सुधारो तो तुम्हीं रहो और वह सुधारना भी ऐसा होना चाहिए कि सब बात में उन्नति हो। धर्म में, घर के काम में, बाहर के काम में, रोजगार में, शिष्टाचार में, चाल चलन में, शरीर के बल में, मन के बल में, समाज में, बालक में, युवा में, वृद्ध में, स्त्री में, पुरुष में, अमीर में, गरीब में, भारतवर्ष की सब अवस्था, सब जाति, सब देश में उन्नति करो। सब ऐसी बातों को छोड़ो जो तुम्हारे इस पथ में कंटक हों, चाहे तुम्हें लोग निकम्मा कहें या नंगा कहें, क्रस्तान कहें या भ्रष्ट कहें। तुम केवल अपने देश को दीनदशा को देखो और उनकी बात मत सुनो।

अपमानं पुरस्कृत्य मानं कृत्वा तु पृष्ठतः।
स्वकार्यं साधयेत् धीमान् कार्यध्वंसो हि मूर्खता॥

जो लोग अपने को देशहितैषी लगाते हों वह अपने सुख हो होम करके, अपने धन और मान का बलिदान करके कमर कस के उठो। देखादेखी थोड़े दिन में मब हो जाएगा। अपनी खराबियों के मूल कारणों को खोजो। कोई धर्म की आड़ में, कोई देश की चाल को आड़ में, कोई सुख की आड़ में छिपे हैं। उन चारों को वहां-२ से पकड़-२ कर लाओ। उनको बाध-बांध कर कैद करो। हम इससे बढ़कर क्या कहें कि जैसे तुम्हारे घर में कोई पुरुष व्यभिचार करने आवै तो जिस क्रोध से उसको पकड़कर मारोगे और जहां तक तुम्हारे में शक्ति होगी उसका सत्यानाश करोगे। उसी तरह इस समय जो-जो बातें तुम्हारे उन्नति पथ में कांटा हों उनको जड़ खोदकर फेंक दो। कुछ मत डरो। जब तक सौ दो सौ मनुष्य बदनाम न होंगे, जात से बाहर न निकाले जाएगे, कैद न होंगे वरंच जान से न मारे जाएंगे तब तक कोई देश भो न सुधरेगा।

अब यह प्रश्न होगा कि भाई हम तो जानते ही नहीं कि उन्नति और सुधारना किस चिड़िया का नाम है। किसको अच्छा समझे? क्या लें, क्या छोड़े? तो कुछ बातें जो इस शोघ्रता में मेरे ध्यान में आती हैं उनको मैं कहता हूं सुनो—

सब उन्नतियों का मूल धर्म है। इससे सबसे पहले धर्म की उन्नति करनी उचित है। देखो, अंग्रेजों की धर्मनीति और राजनीति परस्पर मिली है, इससे उनकी दिन-दिन कैसी उन्नति है। उनको जाने दो, अपने ही यहां देखो! तुम्हारे यहां धर्म की आड़ में नाना प्रकार की नीति, समाज-गठन, वैद्यक आदि भरे हुए हैं। दो एक मिसाल सुनो। यही तुम्हारा बलिया का मेला और यहाँ स्नान क्यों बनाया गया? जिसमें जो लोग कभी आपस में नही मिलते, दस-दस पांच-पांच कोस से वे लोग साल में एक जगह एकत्र होकर आपस में मिलें। एक-दूसरे का दुःख-सुख जानें। गृहस्थी के काम की वह चीजें जो गांव मे नहीं मिलती, यहां से ले जाएं। एकादशी का व्रत क्यों रखा है? जिसमें महीने में दो-एक उपवास से शरीर शुद्ध हो जाए। गंगाजी नहाने जाते हो तो पहिले पानी सिर पर चढ़ा कर तब पैर डालने का विधान क्यों है? जिसमें तलुए से गर्मी सिर में चढ़कर विकार न उत्पन्न करे। दीवाली इसी हेतु है कि इसी बहाने साल भर में एक बेर तो सफाई हो जाए। यही तिहवार ही तुम्हारी मानो म्युनिसिपालिटी है। ऐसे ही सब पर्व सब तीर्थ व्रत आदि में कोई हिकमत है। उन लोगों ने धर्मनीति और समाजनीति को दूध पानी की भांति मिला दिया है।

खराबी जो बीच में भई है वह यह है कि उन लोगों ने ये धर्म क्यों मानने लिखे थे, इसका लोगों ने मतलब नहीं समझा और इन बातों को वास्तविक धर्म मान लिया। भाइयो, वास्तविक धर्म तो केवल परमेश्वर के चरण कमल का भजन है। ये सब तो समाज धर्म हैं जो देशकाल के अनुसार शोधे और बदले जा सकते हैं। दूसरी ख़राबी यह हुई कि उन्हीं महात्मा बुद्धिमान् ऋषियों के वंश के लोगों ने अपने बाप-दादों का मतलब न समझकर बहुत से नए-नए धर्म बनाकर शास्त्र में धर दिए। बस सभी तिथि व्रत और सभी स्थान तीर्थ हो गए। सो इन बातों को अब एक बार आंख खोलकर देख और समझ लीजिए कि फलानी बात इन बुद्धिमान् ऋषियो ने क्यों बनाई और उनमें देश और काल के जो अनुकूल और उपकारी हो उसको ग्रहण कीजिए, बहुत सी बातें जो समाज विरुद्ध मानी हैं किन्तु धर्मशास्त्रों में जिनका विधान है, उनको चलाइए। जैसे जहाज का सफर, विधवा विवाह आदि। लड़कों का छोटेपन ही में ब्याह करके उनका बल, वीर्य, आयुष्य सब मत घटाइए। आप उनके मां बाप हैं या उनके शत्रु हैं। वीर्य उनके शरीर में पुष्ट होने दीजिए, विद्या कुछ पढ लेने दीजिए, नोन तेल, लकड़ी की फिक्र करने की बुद्धि सीख लेने दीजिए, तब उनका पैर काठ में डालिए। कुलीन प्रथा बहुविवाह को दूर कीजिए। लड़कियों को भी पढाइए किन्तु उस चाल से नहीं जैसे आजकल पढ़ाई जाती हैं जिससे उपकार के बदले बुराई होती है। ऐसी चाल से उनको शिक्षा दीजिए कि वह अपना देश और कुलधर्म सीखें, पति की भक्ति करें और लड़कों को सहज में शिक्षा दें। वैष्णव, शक्ति इत्यादि नाना प्रकार के मत के लोग आपस का वैर छोड़ दें। यह समय इन झगड़ों का नहीं। हिन्दू जैन मुसलमान सब आपस में मिलिए। जाति में कोई चाहे ऊंच हो चाहे नीचा हो सबका आदर कीजिए, जो जिस योग्य हो उसको वैसा मानिए, छोटी जाति के लोगों को तिरस्कार करके जी मत तोड़िए। सब लोग आपस में मिलिए।

मुसलमान भाइयों को भी उचित है कि इस हिन्दुस्तान में बस कर वे लोग हिन्दुओं को नीचा समझना छोड़ दें। ठीक भाइयों की भांति हिन्दुओं से बरताव करें। ऐसी बात, जो हिन्दुओं का जी दुखाने वाली हो न करें। घर में आग लगे तब जिठानी द्योरानी को आपस में डाह छोड़कर एक साथ वह बुझानी चाहिए। जो बात हिन्दुओं को नहीं मयस्सर है वह धर्म के प्रभाव से मुसलमानों को सहज प्राप्त है। उनमें जाति नहीं, खाने-पीने में चौका चूल्हा नहीं, विलायत जाने में रोकटोक नहीं। फिर भी बड़े ही सोच की बात है, मुसलमानों ने अभी तक अपनी दशा कुछ नहीं सुधारी। अभी तक बहुतों को यही ज्ञान है कि दिल्ली लखनऊ की बादशाहत कायम है। यारो! वे दिन गये। अब आलस हठधर्मी यह सब छोड़ो। चलो हिन्दुओं के साथ तुम भी दौड़ो। एक-एक दो होंगे। पुरानी बातें दूर करो। मीरहसन की मसनवी और इन्दरसभा पढ़ाकर छोटेपन से ही लड़कों का सत्यानाश मत करो। होश सभाला नहीं की पट्टी पार ली, चुस्त कपड़ा पहना और गजल गुनगुनाए। 'शोके तिफ्ली से मुझे गुल की जो दीदार का था। न किया हमनें गुलिस्तां का सबक याद कभी।' भला सोचो कि इस हालत में बड़े होने पर वे लड़के क्यों न बिगड़ेंगे। अपने लड़कों को ऐसी किताबें छूने भी मत दो। अच्छी से अच्छी उनको तालीम दो। पिनशिन और वजीफा या नौकरी का भरोसा छोड़ो। लड़कों को रोजगार सिखलाओ। विलायत भेजो। छोटेपन से मेहनत करने की आदत दिलाओ। सौ सौ महलों के लाड़ प्यार दुनिया से बेखबर रहने की राह मत दिखलाओ।

भाई हिन्दुओ ! तुम भी मतमतांतर का आग्रह छोड़ो । आपस में प्रेम बढ़ाओ । इस महामंत्र का जाप करो। जो हिन्दुस्तान में रहे, चाहे किसी रंग किसी जाति का क्यों न हो वह हिन्दू । हिन्दू की सहायता करो। बंगाली, मराठा, पंजाबी, मद्रासी, वैदिक, जैन, ब्रह्मो, मुसलमान सब एक का हाथ एक पकड़ो। कारीगरी जिसमें तुम्हारे यहां बढ़े, तुम्हारा रुपया तुम्हारे ही देश में रहे वह करो। देखो जैसे हजार धारा होकर गंगा समुद्र में मिली है वैसे ही तुम्हारी लक्ष्मी हजार तरह से इंग्लेंड, फरांसीस, जर्मनी, अमेरिका को जाती है। दी आसलाई ऐसी तुच्छ वस्तु भी वही से आती है। जरा अपने ही को देखो। तुम जिस मारकीन की धोती पहने हो वह अमेरिका की बनी है। जिस लंकिलाट का तुम्हारा अंगा है वह इंग्लेंड का है। फरांसीस की बनी कंघी से तुम सिर झारते हो और वह जर्मनी की बनी चरबी की बत्ती तुम्हारे सामने बल रही है। वह यह तो वही मसाल हुई कि एक बेफिकरे मंगनी का कपड़ा पहनकर किसी महफिल में गए। कपड़े की पहचान कर एक ने कहा, अंगा फलाने का है। दूसरा बोला, 'अजी टोपी भी फलाने की है।' तो उन्होंने हंसकर जवाब दिया कि घर की तो मूछे हैं। हाय अफसोस तुम ऐसे होगए कि अपने निज के काम का वस्तु भी नहीं बना सकते। भाइयो, अब तो नींद से चौंको, अपने देश की सब प्रकार उन्नति करो। जिसमें तुम्हारी भलाई हो वैसी ही किताब पढो, वैसे ही खेल खेलो, वैसी ही बातचीत करो। परदेशी वस्तु और परदेशी भाषा का भरोसा मत रखो। अपने देश में अपनी भाषा में उन्नति करो।

(जनसता १७-१-८८ से)

फरवरी माह में आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज गोहाना जि० सोनीपत	१३ १४ १५	,,
,, ,, गोहान, मण्डी जि० सोनीपत	१४	,,
,, ,, मनाना जि० करनाल	१४ १५ १६	,,
,, ,, यमुनानगर रेलवे मार्ग जि० अम्बाला	१३ १४ १५ १६	,,
आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक	१६	,,
गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक	२० २१	,,
आर्यसमाज ककोर जि० मेरठ	२६ २७	,,
,, ,, सालवन जि० करनाल	२६ २७ २८	,,
,, ,, पलवल शहर जि० फरीदाबाद	२६ २७ २८	,,
,, ,, भुंगारखा जि० महेन्द्रगढ	२७ २८	,,

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

पूर्ण नशाबन्दी की मांग करने के लिए

मार्च में शराब के ठेकों की नीलामी के अवसर पर प्रदर्शनों के आयोजन को सफल करने के लिए आर्य नेताओं की अपील

हरयाणा प्रदेश में शराब की भयंकर लानत दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। शायद ही ऐसा कोई भाग्यशाली परिवार बचा होगा जिस घर में शराब न पहुंची हो। हरयाणा जो पहले दूध-दही के खाने के नाम से प्रसिद्ध था, आज वहाँ शराब की प्यालियों की भरमार है और हरयाणा की वैदिक संस्कृति नष्ट होने जा रही है। इसके प्रचार एवं प्रसार से किसान मजदूर बर्बाद होने लगे हैं। शराब के ठेकेदार तथा इस विभाग के अधिकारी, कर्मचारी तथा पुलीस के भ्रष्ट अधिकारी मालामाल हो रहे हैं। यही कारण है कि जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं हैं, वहाँ भी चोरी छिपे अवैध रूप से शराब बिक रही है। ग्रामीण युवक शराब की बीमारी में फंस कर अपना तथा अपने परिवार का भविष्य अन्धकारमय बना रहे हैं। शिक्षा अधूरी रहने से बेरोजगारी बढ़ रही है। हरयाणा सरकार अपनी आमदनी बढाने के लिए शराब के ठेकों की संख्या में वृद्धि कर रही है, उसे हरयाणा की संस्कृति तथा शराब के सेवन के कारण बढ़ रहे भ्रष्टाचार की चिन्ता नहीं है। शराबी पियक्कड़ों से बहू-बेटियों की इज्जत भी खतरे में है।

अतः हम हरयाणा के शुभचिन्तक नर नारियों से अपील करते हैं कि देवभूमि हरयाणा की बर्बादी को बचाने तथा गुजरात राज्य को भांति हरयाणा में भी पूर्ण नशाबन्दी की माँग करने के लिए मार्च के प्रथम सप्ताह में जब सरकार ठेकों की निलामी करेगी, उस समय हरयाणा के मुख्यालयों पर प्रबल प्रदर्शनों के आयोजन में तन-मन तथा धन से सहयोग प्रदान करे। निवेदक

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	बद्रीप्रसाद आर्य
प्रधान	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा,		दयानन्द मठ रोहतक

आवश्यक सूचना

गुरुकुल झज्जर रोहतक के सभी स्नातक बन्धुओं को सूचित किया जाता है कि गुरुकुल के उत्सव के शुभावसर पर स्नातक मण्डल की अत्यावश्यक बैठक दिनाङ्क २१-२-१९८८ रविवार प्रातः ८ बजे गुरुकुल में होगी।

सभी स्नातक महानुभाव समय पर गुरुकुल भूमि पहुंच कर कृतार्थ करें।

रणवीरसिंह शास्त्री
मन्त्री
स्नातक मण्डल गुरुकुल झज्जर

शिवरात्रि

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

दिव्य शिव की रात्रि है, आयी जगाने के लिए।
भूमिमण्डल के गहन तम को भगाने के लिए॥

थी यही शिवरात्रि जिसने,
ऋषि दयानन्द को जगाया।
मूल शंकर के हृदय में,
ज्ञान की वीणा बजाया।
भूमि पर फैले तिमिर को,
था इसी ने तो भगाया।
नवल युग में जागरण का,
गीत स्वर्णिम सा सुनाया।
वेद का स्वर फिर धरा को, नव, सुनाने के लिए।
दिव्य शिव की रात्रि है, आयी जगाने के लिए॥

मिट गया था ऋषि दयानन्द—
के प्रयत्नों से अनय।
भाग्य जागे मातृ-भू के,
होगए जन-जन अभय।
दनुजता की वृत्तियों का—
होगया था पूर्ण क्षय।
सत्य की लहरी पताका—
सब दिशाओं में मधुरमय।
सत्य का संगीत फिर से, नव, गुजाने के लिए।
दिव्य शिव की रात्रि है, आयी जगाने के लिए॥

दे रही है बोध की यह,
रात्रि फिर से नव संदेश।
शांति-सुख से व समृद्धि—
से पूर्ण हो प्यारा स्वदेश।
हो मनुजता का सुशोभित—
मनुज तत्त्वों से सुवेश।
वेद का निकले प्रखर सा—
व्योम में दिनकर-दिनेश।
ज्योति नूतन फिर धरा पर, नव, जलाने के लिए।
दिव्य शिव की रात्रि है, आयी जगाने के लिए॥

खैर कैसे हो अंगूर के बेटा जो है

जितेंद्र बजाज

हरयाणा सरकार भी शराब के धंधे से पैसा कमा लेने के लोभ से बच नहीं पाई। नई आबकारी नीति यह सोचकर बनाई गई है कि पीने-पिलाने से होने वाली आमदनी से राज्य की आर्थिक हालत ठीक की जाए। गांव के ठेकों के साथ ही अहाते खुल जाएंगे। शहरों के शौकीन भी अब चाय-पानी की दुकानों पर बैठकर अंग्रेजी शराब पी सकेंगे। अमीरजादों के लिए तो सुविधा पर्यटन विभाग के महंगे रेस्तराओं में पहले ही थी। जो लोग इन ऊंचे सरकारी शराबखानों में जाने की औकात नहीं रखते थे अब उन्हें भी बाजार में पीने का आनन्द लेने का मौका मिल जाएगा। बढ़ी हुई खपत, देसी शराब की कीमतों में को गई बढ़ोत्तरी और नए अहातों व शराबखानों से मिलने वाले शुल्क की बदौलत सरकार को साल भर में २८ करोड़ रुपए को फालतू आमदनी होगी। सरकार ने किसानों के जो कर्ज माफ किए हैं। उनका बड़ा हिस्सा तो लगता है कि इस तरह के पीने-पिलाने से दो-तीन साल में वापस वसूल हो जाएगा।

हरयाणा में शराब पहले ही कोई कम नहीं बह रही थी। हरयाणा के एक करोड़ देहातियों के लिए देसी शराब की लगभग पांच करोड़ बोतलें तो पहले ही बिकती थीं। इस तरह हरयाणा के हर मर्द के हिस्से लगभग दस बोतलें सालाना आ रही थी। अब सरकार ने देसी शराब में २५ लाख प्रूफ लीटर अल्कोहल और खपाने का फैसला किया है। इससे लगभग पचहत्तर लाख बोतल शराब और बनेगी, और हर छोटे-बडे देहाती मर्द को साल में डेढ़-दो बोतल और मिलने लगेगी। अंग्रेजी शराब इससे अलग बिकती है। उसकी कुल खपत पर तो कोई नियंत्रण ही नहीं है। बीयर को देहात में लोकप्रिय बनाने के बारे में सरकार इतनी तत्पर है कि जहां अंग्रेजी शराब की दुकानें नहीं हैं उन गांवों में देसी के ठेकेदारों को बीयर बेचने की छूट दी जा चुकी है। सरकारी ठर्रे और अंग्रेजी शराब व बीयर के अलावा अवैध शराब का धन्धा भी हरयाणा में चलता ही होगा और इस माध्यम से भी काफी मात्रा में शराब हरयाणवी किसानों को मिलती होगी। जहां पहले ही शराब का इतना बोलबाला है वहां कुछ और शराब लोगों तक पहुंचा पाने की सरकारी नीति का औचित्य समझ पाना मुश्किल है

चौधरी देवीलाल किसानों के मुख्यमंत्री है। उनका दावा है कि खुद किसान होने के नाते वे किसानों की जरूरतों को उनके कहे बिना ही भाप लेते हैं। किसानों को आकर उनसे कुछ मांगने की जरूरत नहीं पड़ती। वे खुद ही जान जाते हैं कि किसानों को क्या-क्या चाहिए। कुछ हद तक देवीलाल का यह दावा सही भी है। कर्ज माफी, खेती के लिऐ ज्यादा से ज्यादा बिजली देने, खेतों

की मेड़ों पर लगे सरकारी वृक्षों से होने वाली आमदनी में से किसानों को कुछ हिस्सा देने और ऐसे ही कई और मामलों में देवीलाल ने बिना किसी दबाव के किसानों के हित में फैसले लिए हैं। इसमें कोई शक नहीं कि किसानों की बात हमेशा उनके दिमाग में रहती है और वे राजधानी में बैठे हुए भी किसानों की समस्याएं सुलझाने के बारे में सोचते रहते हैं।

लेकिन *भारत की राजधानियों के माहौल में किसानों* की कोई जगह नहीं है। आधुनिकता व विकास की धुन में राजधानियों में बैठे लोग शहरी औद्योगिक संस्कृति को किसानों की खेती पर हावी करने के तरीके ढूंढते रहते हैं। ऐसे माहौल में आर्थिक मजबूरी और राजनैतिक-प्रशासनिक सहूलियत के नाम पर किसान विरोधी फैसले सहज ही होते चले जाते हैं। चौधरी देवीलाल भी राजधानियों के इन कुतर्कों से बच नहीं पाए हैं। दिल से किसानों के हितैषी होने के बावजूद वे कई बार ऐसे फैसले होने देते हैं जो किसानों के हक में नहीं होते।

खरीफ धान की बिक्री के मौसम में उन्होंने हरयाणा के किसानों को बोनस की सुविधा न देने का फैसला कर लिया था। उनके पड़ौस में पंजाब की अफसरशाही सरकार अपने किसानों को मण्डी में लाए गए हर क्विंटल धान पर सत्रह रुपए दे रही थी, देवीलाल के अपने मन्त्री हरयाणा में इतना ही बोनस देने का खुलेआम एलान कर चुके थे। लेकिन मुख्यमन्त्री देवीलाल को बताया गया था कि हरयाणा की आर्थिक हालत मंदी है और बोनस न देने से बारह करोड़ रुपए बच जाएंगे। इस आर्थिक कुतर्क में फंसकर चौधरी देवीलाल ने सरकारी खजाने की हालत सुधारने के लिए किसानों से बारह करोड़ छीन लिया था। अब खजाने के लिए अट्ठाइस करोड़ कमाने के चक्कर में उन्होंने गांवों-कस्बों में शराबखाने खोलने और किसानों को पचहत्तर-अस्सी लाख बोतल और शराब पिलाने का फैसला कर लिया है। सरकार के इस अट्ठाइस करोड़ के लिए किसानों को कुल कितना पैसा खराब करना पड़ेगा और देहातों व कस्बों का माहौल कितना खराब होगा इसकी परवाह किसानों के हितैषी और अपने को लोकलाज के संरक्षक मानने वाले देवीलाल को भी नहीं रही।

लेकिन शराब का धन्धा सिर्फ खजाने की हालत सुधारने के लिए नहीं किया जाता। हर सरकार के इर्द-गिर्द घूमने वाले सत्ता के दलालों को खुश रखने में भी यह धंधा खूब काम आता है। इस धन्धे में कमाई ही कमाई है। पच्चीस हजार रुपए सालाना का नाममात्र शुल्क देकर जिस ठेकेदार को गांव के बीचोंबीच अहाता खोलने की छूट मिल रही हो वह इस सुविधा के लिए निश्चित शुल्क का कई गुना खुशी से दे जाएगा। इस तरह परमिट देने वालों की भी पौबारह रहेगी और परमिट लेने वालों की भी। नुकसान तो बस बेचारे किसान और उसके परिवार का ही होगा।

परमिट लाइसेंस देकर अपने राजनैतिक कारकुनों को खुश रखने की कोशिश करना किसी सरकार के लिए नई बात नहीं है। भारत में सत्ता पाने वाले ज्यादातर नेताओं की नेतागिरी जनता पर नहीं बल्कि सत्ता के दलालों पर चलती है, इसलिए सत्ता के दलालों को आर्थिक लाभ पहुंचाने के लिए परमिटों-लाइसेंसों की बंदरबांट करने की एक मजबूत परम्परा बन चुकी है। नई बात यह है कि चौधरी देवीलाल भी इस परम्परा को तोड़ने में सफल नहीं हो पाए हैं।

देवीलाल किन्हीं दलालों की मार्फत सत्ता में नहीं आए थे। उल्टे उन्होंने हरयाणा के किसानों के साथ मिलकर बरसों तक सत्ता के भ्रष्ट दलालों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। और इस लड़ाई

की एवज में हरयाण के लोगों ने उन्हें अपना नेता मानकर राजगद्दी पर बैठा दिया था। उस गद्दी के लिए वे हरयाणा की जनता के अलावा और किसी के ऋणी नहीं हैं। उनके और यहां तक कि उनकी सहयोगी पार्टी भाजपा तक के विधायक उन्हीं के नाम पर जीतकर आए हैं। इसलिए देवीलाल को हरयाणा की जनता, और खासतौर पर हरयाणा के किसानों के अलावा किसी और को खुश करने की जरूरत नहीं थी। देवीलाल अपनी इस ताकत से परिचित हैं। इसलिए अपने राज के पहले दौर में उन्होंने न किसी विधायक को चेयरमैनी दी थी, न अपने कारकुनों के लाभ के लिए परमिटों-लाइसेंसों का कोई आडम्बर रचा था।

पिछले महीने से लगता है कि हालात बदल गए हैं। सभी मंत्रियों से इस्तीफे लेकर मंत्रिमंडल को दोबारा गठित करने के बाद देवीलाल की हरयाणा के निर्विवाद नेता वाली छवि टूट गई है। अब सत्ता के सभी सूत्र देवीलाल के हाथ में नहीं दिखाई देते। इनमें से कुछ सूत्र तो लगता है कि दूसरों के हाथ में हैं, वे दूसरे चाहे देवीलाल के अपने बेटे ही क्यों न हों। सर्वशक्तिमान् देवीलाल की छवि के टूटते ही सत्ता के दलाल सरगर्म हो गए हैं और कांग्रेसी मुख्यमंत्रियों की तरह देवीलाल को भी अपने विधायकों को चेयरमैनियां बांटनी पड़ रही हैं व बाकियों के लिए लाइसेंसों-परमिटों का इंतजाम करना पड़ रहा है। पिछले हफ्ते हुई मंत्रिमंडल की बैठक में अहातों व शराबखानों के अलावा टेंपुओं व तिपहिया गाड़ियों के लिए नए परमिट देने की योजना पर भी विचार हुआ था। दलालों को खुश रखने के सभी पुराने रास्ते लगता है अब नई सरकार को भी नापने पड़ेंगे।

सभी मंत्रियों व सरकारी निगमों के अध्यक्षों से इस्तीफे लेने वाले किस्से की शुरुआत देवीलाल के बेटों की सत्ता में दखलंदाजी को कम करने के इरादे से हुई थी। लेकिन आखिर में हुआ बस यह कि ओमप्रकाश चौटाला के अपने आदमी समझे जाने वाले और बाह्य विकास शुल्क घोटाले से संबंधित विभाग के कर्ताधर्ता मंत्री को पदोन्नत करके गृहमंत्री बना दिया गया। कराधान व आबकारी जैसा कमाऊ महकमा भी उन्हीं मंत्री को सौंप दिया गया। और जिस मुख्य संसदीय सचिव पर विकास शुल्क घोटाले की खबर बाहर निकालने का शक था उसे मंत्रिमंडल से बाहर कर दिया गया। बेटों को अनुशासित करने के लिए शुरु की गई कार्रवाई का यह हश्र होने से लोगों को ऐसा लगना स्वाभाविक ही था कि परिस्थितियां पूरी तरह देवीलाल के हाथ में नहीं हैं और उनकी अपनी इच्छा चाहे कुछ भी हो, होगा वही जो उनके बड़े बेटे ओमप्रकाश चौटाला को मंजूर होगा। इस तरह की हवा फैलने के बाद सत्ता के दलालों का सत्ता के टुकड़ों में अपना हिस्सा माँगने लगना बहुत देर तक टल नहीं सकता था। देवीलाल अगर हरयाणा की जनता पर निर्भर न होकर अपने आसपास के कुछ गिने-चुने लोगों पर निर्भर दिखाई देते हैं तो वे लोग इस निर्भरता की कीमत क्यों नहीं वसूलेंगे। परमिट-लाइसेंस के धंधे की शुरुआत शायद उसी वसूली का हिस्सा है।

यह मानना भी शायद सही नहीं होगा कि परिस्थितियां देवीलाल के बस में नहीं रही हैं और वे अपने बेटे की इच्छा के मुताबिक चलने को मजबूर हैं। किसानों में अभी भी उनकी धाक है। असल में किसान एक बार किसी को अपना नेता मान लेते हैं तो वे फिर जल्दी से उसका साथ नहीं छोड़ते। किसानों में अपनी इस पैठ के बल पर देवीलाल जब चाहें अपने विधायकों को अनुशासित कर सकते हैं और वे जब चाहें अपने बेटों को रास्ता दिखा सकते हैं। फिर भी अगर ओमप्रकाश चौटाला शक्तिशाली बने दिख रहे है तो इसका मतलब सिर्फ यही है कि देवीलाल खुद उनके शक्तिशाली होने का

भ्रम खड़ा करना चाहते हैं। लगता है, चौधरी देवीलाल अपना उत्तराधिकारी बता देना चाहते हैं और वे चौटाला को इसी रूप में पेश करना चाहते हैं। लेकिन इस प्रक्रिया में उनको छवि तो बिगड़ ही रही है सत्ता के गलियारों में वे अपना रोब भी खोते जा रहे हैं। आप अगर अपना उत्तराधिकारी पक्का करने की हड़बड़ी में दिख रहे हों तो सत्ता वाले लोग आपको बहुत गंभीरता से तो नहीं ले सकते।

फिर ओमप्रकाश चौटाला देवीलाल के उत्तराधिकारी हो भी नहीं सकते। देवीलाल को किसानों की राजनीति का मुख्य निर्णायक बनाने और किसानी राजनीति को आगे बढ़ाने का जनादेश मिला है। हरयाणा में यह काम इस समय सिर्फ चौधरी देवीलाल कर सकते हैं। वे किसानों की मानसिकता को गहराई से समझते हैं और राजधानियों की शहरी राजनीति से उन्हें सहज दुराव है। उनसे यह उम्मीद की जा सकती है कि वे कभी राजनीति में ऐसा परिवर्तन कर देंगे जिससे हरयाणा में किसानों का बोलबाला हो जाए। ओमप्रकाश चौटाला से ऐसी कोई उम्मीद नहीं रखी जा सकती। वे शहरों की जोड़तोड़ वाली राजनीति में पगे हैं। उस राजनीति के वे शायद बहुत अच्छे खिलाड़ी साबित हो सकते हैं। लेकिन इस राजनीति को बदल कर किसानों को आगे लाने का काम वे नहीं कर सकते। अगर उनमें ऐसी कोई संभावना होती तो हरयाणा के किसानों ने उन्हें अब तक देवीलाल का सहज उत्तराधिकारी मान लिया होता। उसके लिए इतनी उठा-पटक की जरूरत ही न पड़ती। आखिर किसान तो बेटे में बाप का अक्स देखना ही चाहते हैं। लेकिन ओमप्रकाश तो मुख्यमंत्री बन कर भी देवीलाल नहीं बन पाएंगे।

चौ० देवीलाल को हरयाणा की राजनीति और उसके माध्यम से देश की राजनीति का रुख किसानों की ओर मोड़ने का एक ऐतिहासिक मौका मिला है। देवीलाल में ऐसा करने का माद्दा भी है। लेकिन लगता है कि अपने बेटे को अपना उत्तराधिकारी बनाने के पारिवारिक दबाव में वे अपने महान् जनादेश को भुलाते जा रहे है। आम राजनीतिकों की तरह किसानों को शराब पिला कर खजाने के लिए पैसा जुटाने और अपने कारकुनों को खुश करने की कोशिश करना तो उस जनादेश का अपमान ही है जो हरयाणा के किसानों ने उन्हें सौंपा है। —(९ फरवरी जनसत्ता से)

सूखा सहायता के लिए प्राप्त दान सूची

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा सूखा ग्रस्त ग्रामों में साण्डों तथा झोटों के लिए चारे दाने की व्यवस्था करने के लिए दिये जा रहे अनुदान निधि में निम्नलिखित दान राशि प्राप्त हुई है—

श्री राजपालसिंह जी प्रधानाचार्य डी० ए० वी० इण्टर कालेज मुज्जफरनगर (उ० प्र०) द्वारा ११५१ रु०

आर्य वरिष्ठ उच्च माध्यमिक विद्यालय पानीपत के स्टाफ तथा छात्रों द्वारा ११११ रु०

दानदाताओं का सभा की ओर से हार्दिक धन्यवाद। आशा है अन्य दानी भी इस सूची में अपना नाम अंकित करवाकर पुण्य के भागी बनेंगे। —वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री

यतिमण्डल की बैठक

सभी माननीय यतियों की सेवा में निवेदन किया जाता है कि ५–६ मार्च शनिवार–रविवार, १९८८ को दयानन्दमठ, रोहतक में वैदिक यतिमण्डल की आवश्यक बैठक होगी। इस बैठक में महत्त्वपूर्ण विचार विमर्श होना है अतः अवश्य पहुँचने की कृपा करें। माननीय अध्यक्ष महोदय की इच्छा है कि सभी यति उपस्थित होकर संगठन का परिचय दें। भोजन एवं आवास की व्यवस्था दयानन्दमठ, रोहतक की ओर से होगी।

—स्वामी सुमेधानन्द
मन्त्री यतिमण्डल दयानन्दमठ, चम्बा

बोध शिवरात्रि व्रत

छोड़ा गुजरात को, पिता व मात को, व्रतधारी।
निकला बन करके शिव का पुजारी॥
सच्चे शंकर के दर्शन का प्यासा, घूम फिरकर जगत् को तलाशा॥
लाखों संकट पड़े, सत्य पथ पर अड़े, ब्रह्मचारी।
निकला बन करके शिव का पुजारी॥१॥
फँसे पाखण्ड में सभी प्राणी-भूल बैठे थे वेदों की वाणी॥
छोड़ भगवान् को, पूजें पाषण को, नर व नारी।
निकला बन करके शिव का पुजारी॥२॥
गुरु आज्ञा ऋषि ने निभाई-जग में वेदों की बन्सी बजाई।
वेद प्रचार में, बीती संसार में, उम्र सारी॥
निकला बन करके शिव का पुजारी॥३॥
वेद सन्देश घर-घर सुनाया-ढोंग, पाखण्ड जग से मिटाया॥
सत्य पथ पर चला-किया जग का भला, दयाधारी।
निकला बन करके शिव का पुजारी॥४॥

रचियता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

कन्या गुरुकुल खानपुर में सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह का भाषण

कन्या गुरुकुल खानपुर कलां जि० सोनीपत के वार्षिक उत्सव पर ७ फरवरी को सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित करते हुए गुरुकुल के संस्थापक भक्त फूलसिंह को श्रद्धांजलि दी तथा उन्हें महान् समाज सुधारक तथा आदर्श नेता बताया।

आपने गुरुकुल की छात्राओं को परामर्श दिया कि वे गुरुकुल की भावना के अनुसार वैदिक संस्कृति को अपनावें। शिक्षा प्राप्त करने के बाद मानव विकास के लिए समय लगावे तथा भक्त जी की भान्ति परोपकार के कार्यों में भाग लेवें। यही शिक्षा का सच्चा उद्देश्य है।

सभा मंच पर उपस्थित हरयाणा के वरिष्ठ मन्त्री श्री वीरेन्द्रसिंह को हरयाणा में शराबबन्दी लागू करने का सुझाव दिया। उत्सव में श्री कुलवीरसिंह उपाध्यक्ष हरयाणा विधान सभा, श्री धर्मपाल सांसद, श्री ओम्प्रकाश सांसद, श्री किशनसिंह विधायक, श्री कितार्बसिंह पूर्व विधायक तथा श्री कपिलदेव शास्त्री के व्याख्यान, श्री चिरञ्जीलाल एवं श्री खेमसिंह की मण्डली के भजन हुए।

गुरुकुल का वार्षिक महोत्सव

गुरुकुल झज्जर का ७३वां वार्षिक महोत्सव २० तथा २१ फरवरी १९८८ शनिवार, रविवार को होगा। आर्यजगत् के उच्चकोटि के संन्यासी विद्वान् तथा भजनोपदेशकों के अतिरिक्त हरयाणा के उपमुख्यमन्त्री श्री बनारसीदास गुप्त, चौ० वीरेन्द्रसिंह बिजली सिंचाई मन्त्री, श्री रघुवीरसिंह कादयान सहकारिता मन्त्री, श्री ओम्प्रकाश भारद्वाज भी पधार रहे हैं।

—वेदव्रत शास्त्री मन्त्री

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 पंजी० नं० P.RTK 49



सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—[illegible]

[illegible] फरवरी, [illegible] विदेश में [illegible] प्रति [illegible]

रोहतक में ऋषिबोध दिवस धूमधाम से मनाया गया।

(केदारसिंह आर्य द्वारा)

प्रतिवर्ष की भान्ति आर्यसमाज के संस्थापक एवं वेदों के उद्धारक स्वामी दयानन्द सरस्वती का बोध-दिवस हरयाणा के कोने-कोने में बडी धूमधाम से मनाया गया। सभा कार्यालय में प्राप्त सूचना के अनुसार महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में १२ फरवरी को स्वामी जी (मूलशंकर) के जन्मदिन पर प्रात: ८ से ९ बजे तक विश्वविद्यालय छात्रावास के साथ बनी भव्य यज्ञशाला में विश्वविद्यालय के कर्मचारियों तथा छात्र-छात्राओं ने श्रद्धापूर्वक यज्ञ किया। उसके पश्चात् महर्षि दयानन्द के एक विशेष समारोह में उपकुलपति जी तथा डा० तुलसीराम जी आदि विद्वानों ने ऋषि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला।

१६ फरवरी को प्रात: १० बजे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय सिद्धान्तीभवन, दयानन्दमठ, रोहतक में यज्ञ [illegible] पश्चात् ऋषि दयानन्द के जीवन तथा उन द्वारा किये [illegible] समाज सुधार के कार्यों पर विद्यालयों के छात्र तथा छात्राओं के भाषण तथा गायन प्रतियोगिता का आयोजन आर्य विद्या परिषद् हरयाणा के प्रस्तोता प्रिंसिपल लाभसिंह जी के संयोजन में हुआ। भाषण प्रतियोगिता में श्री जितेन्द्र आर्य राजकीय विद्यालय गान्धीनगर रोहतक प्रथम, श्री प्रदीप कुमार सन्दीप माडल स्कूल रोहतक एवं कुमारी सुनीता आर्या राजकीय कन्या उच्च विद्यालय रोहतक द्वितीय तथा श्री अरुण त्यागी आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत तृतीय रहे। इसी प्रकार गायन प्रतियोगिता में श्री पाल भारतीय विद्यालय की छात्राएं (कु० विजया राजे आर्या आदि) एवं श्री रवीन्द्रकुमार आर्य उच्च विद्यालय रोहतक प्रथम, श्री सत्येन्द्र आर्य उच्च विद्यालय रोहतक द्वितीय तथा श्री अरुण त्यागी आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत तृतीय स्थान पर रहे।

प्रथम को २०० रु०, द्वितीय को १०० रु० तथा तृतीय को ५० रु० सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी ने पारितोषिक वितरित किये। इसके अतिरिक्त सभी प्रतियोगियों को सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य भी भेंट किया गया। इसके पश्चात् आर्यजगत् के त्यागी तपस्वी संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने ऋषिबोध दिवस पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कहा कि आज के दिन ऋषि के जन्म स्थान टंकारा गुजरात) में भारत भर के नर-नारी भारी संख्या में पहुंचकर उन्हें श्रद्धाञ्जलि दे रहे हैं। उन्होंने बताया कि मैंने ऋषि दयानन्द के दर्शन करने वाले १०० से अधिक पूर्वजों से जानकारी प्राप्त की है कि ऋषि जी ६ फूट ९ इंच के लम्बे कद के सुन्दर शरीर वाले महापुरुष थे। उनसे प्रभावित होकर स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द: स्वामी आत्मानन्द, महात्मा हंसराज, पं० लेखराम, पं० बस्तीराम, महात्मा भक्त फूलसिंह, श्री जगदेव सिद्धांती आदि अनेक विद्वानों ने उनके सिद्धान्तों के प्रचार के लिए अपने जीवन लगा दिए। आज भी अनेक शिष्य प्रचार कार्य में लगे हैं। हमें भी उनके बताए हुए मार्ग पर चलकर आर्यसमाज के कार्यों को आगे बढ़ाना चाहिए। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

अध्यक्षीय पद से भाषण करते हुए सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने ऋषिबोध दिवस का महत्व बताते हुए कहा कि मूलशंकर से पूर्व भी शिवजी की मूर्ति पर मिठाई खाते हुए चूहे को अनेक बार देखा था, परन्तु मूलशंकर के मन में सच्चे शिव की खोज करने की भावना तथा लगन थी। अत: उन्होंने अपने पूर्वजों एवं मन्दिर के पुजारी से शंका समाधान किया परन्तु सन्तुष्टि न होने पर सत्य की खोज के लिए गुरु विरजानन्द की कुटिया में गये और उनसे वेदों की शिक्षा ग्रहण करके सत्य के प्रचारार्थ सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों की रचना की तथा अनेक कष्ट सहन करके जीवनभर वैदिक धर्म और वैदिक संस्कृति का प्रचार करते रहे।

हरयाणा की जनता वैदिक संस्कृति के निकट होने के कारण आर्य-समाज से प्रभावित है। परन्तु आज की सरकार हरयाणा की संस्कृति को समाप्त करने के लिए ग्राम-ग्राम में शराब के ठेके खोलकर अपनी आमदनी बढ़ा रही है। शराब से सर्वनाश होता है, इसकी चिन्ता नहीं है। अत: हरयाणा के आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं से अपील करते हुए प्रो० शेरसिंह ने आह्वान किया कि मार्च में जब सरकार की ओर से शराब के ठेकों की नीलामी होगी तब पूरी शक्ति के साथ विरोध प्रदर्शन किये जाये।

१६ फरवरी को ही रात्रि में छोटूराम पार्क रोहतक के सभागार में आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक के वरिष्ठ उपप्रधान डा० तुलसीराम अध्यक्ष अंग्रेजी विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की अध्यक्षता में एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया। महात्मा दयानन्द जी ने इसका उद्घाटन करते हुए ऋषि दयानन्द के दिखाये हुए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। प्रो० सत्यपाल बेदार, प्रो० प्रतापसिंह राणा गन्नोरी, श्री हरिश्चन्द्र नाज सोनीपती, श्री रामजीदास भाटिया, श्री भगवान्दास वर्क तथा श्री हरवशलाल पवन ने ऋषि के महान् कार्यों पर प्रभावशाली कविताएं सुनाई।

१६ फरवरी के दोनों कार्यक्रमों को सफल करने के लिए सभामंत्री श्री वेदव्रत जी, वेद प्रचाराधिष्ठाता श्री रघुवीर सिंह जी, पं० अर्जुनदेव आर्य, पाल भारती विद्यालय रोहतक के संचालक मा० दीपचन्द आर्य, केन्द्रीय सभा रोहतक के मन्त्री श्री देशराज आर्य तथा कोषाध्यक्ष श्री मेघराज आर्य ने बहुत परिश्रम किया। रोहतक में ऋषिबोध दिवस समारोह में संक्षिप्त कार्यवाही आकाशवाणी केन्द्र रोहतक से १७ फरवरी को रात्रि साढ़े आठ बजे हरयाणा दर्शन कार्यक्रम में प्रसारित की गई।

दयानन्दमठ के समारोह में हैदराबाद आर्य सत्याग्रही पेन्शन प्राप्तकर्त्ता श्री दयाचन्द आर्य खरावड़ जि० रोहतक ने १०१ रु० प्रिंसिपल दलीपसिंह आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा १०१ रुपये, श्रीमती सुरक्षादेवी रोहतक ने ११ रु०, कुमारी सुनीता शर्मा ने ११ रु० तथा उसके पिता श्री रामदेव ने ५ रु० सभा को दान दिया।

ग्यारह करोड़ उड़ जाते हैं धुआं बनकर

—बाबूलाल वर्मा

भारत में हर साल लगभग ८५ अरब सिगरेट बनाए जाते हैं। एक अदद सिगरेट का दाम औसतन अगर पचास पैसे मान लिया जाए तो मोटे तौर पर साढ़े बयालीस अरब रुपये का मूल्य होता है। इस हिसाब से एक दिन में ग्यारह करोड़ बारह लाख और बत्तीस हजार रुपए के सिगरेट धुआं बना कर उड़ा दिए जाते हैं। वैसे तो भारत में बनने वाली महगी सिगरेट भी बनाई जाती हैं। लेकिन घटिया सिगरेट कम से कम पच्चीस पैसे में मिलती है। पिछले साल सात दिसम्बर छियासी को औद्योगिक विकास राज्यमंत्री अरुणाचलम ने लोकसभा को बताया कि १९८४ में चौरासी अरब ९९ करोड़ सत्तर लाख सिगरेटें बनाई गईं। यह संख्या अगले साल घट कर अस्सी अरब अड़सठ करोड़ दस लाख हो गई। और १९८६ में ६७ करोड़ ५० लाख तक गिर गई। उनका कहना था कि धूम्रपान के विरुद्ध सरकारी प्रचार से यह गिरावट आई है। लेकिन यह गलत है। सिनेमा जगत् में शायद ही ऐसी कोई फिल्म बनी हो, जिसमें सिने कलाकारों को धुएं के छल्ले उड़ा कर न दिखाया जाता हो। शराब के सिलसिले में कुछ वृत्त चित्र जरूर बने हैं। लेकिन सरकार यह नहीं बता पाती कि इससे पियक्कड़ों पर कितना असर पड़ा है। शराबबंदी के सिलसिले में जनता शासन में कानून बना था। तब उत्तर प्रदेश सरकार इस सिलसिले में एक मासिक पत्रिका की दो लाख प्रतियां बेचती थी लेकिन अक्तूबर ८६ से पैसे के अभाव का बहाना करके यह भी बंद कर दी गई। सिगरेटों के प्रचार तो सिनेमा घर में होते ही हैं, पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहते हैं। पिछले बजट के समय सरकार ने पच्चीस पैसे मूल्य वाली सिगरेट का दाम बढ़ाकर पैंतीस पैसे कर दिया और यह दावा किया था कि इससे 'चेन स्मोकरों' पर असर पड़ेगा। और बाद में यह भी दावा किया गया कि उत्पादन घटने का यह भी एक कारण है।

दरअसल बात दूसरी है। पिछले बजट के समय सरकार ने कुछ लोकप्रिय ब्रांड की सिगरेटों की लम्बाई के आधार पर उत्पादन शुल्क लगा दिया। नतीजा यह हुआ कि कुछ कम्पनियों ने इन सिगरेटों को बनाना ही बन्द कर दिया और पिछले स्टाक को दबा दिया। कानून में छह माह के बाद पुराने माल को बेचना जुर्म है। लेकिन थोक विक्रेताओं को इस बात की भनक पहले ही लग गई कि ८२ मिमी लम्बाई की सिगरेटों पर कर लगने वाला है इसलिए एक नकली अभाव पैदा कर दिया गया और भारी मुनाफे पर 'रहतिया' माल को बाद में बेचना शुरु कर दिया। उत्पादन शुल्क तो पुरानी दर से ही दिया गया था लेकिन परचून दुकानदारों को सिगरेट ऊंचे दाम में दिए गए।

वित्त राज्यमन्त्री बीके गढ़वी ने पिछले साल दिसम्बर में लोकसभा में बताया कि देश की चार सिगरेट निर्माता कम्पनियों ने १९८० से अब तक सोलह सौ करोड़ रुपए का उत्पादन शुल्क नहीं दिया। कोई भी ऐसी कम्पनी नहीं थी, जिसने पांच सौ करोड़ रुपए से कम उत्पादन शुल्क नहीं दिया। कोई भी ऐसी कम्पनी नहीं थी, जिसने पांच सौ करोड़ रुपए से कम उत्पादन शुल्क को न दबाया हो। हैरानी की बात है कि सरकार पिछले सात सालों में इन सिगरेट कम्पनियों से सोलह अरब रुपए का कर वसूल नहीं कर पाई। नोटिसें जारी की गईं, पैसा नहीं मिला। बहुत से मामले तो अभी भी अदालतों में लटके हैं। समाजवाद का दम भरने वाली सरकार एक ओर तो 'गांव, गरीब और किसान' द्वारा पांच सौ रुपए से ज्यादा बकाया रखने पर चौदह दिन के लिए हवालात में बन्द करती है। हवालात का 'खाने का खर्चा' भी वसूल करती है उसके घर, बैल, फसल को भी नीलाम किया जाता है लेकिन कर चोर पूंजीपतियों से घबराती है।

अप्रैल ८७ से ही विश्व स्वास्थ्य संगठन ने धूम्रपान के विरुद्ध अभियान शुरु किया। शुरुआत इस संगठन ने अपने कार्यालयों से की। जेनेवा स्थित अपने मुख्य कार्यालय के परिसर में धूम्रपान पर तो पाबंदी लगाई ही है, वाशिंगटन, मनीला आदि क्षेत्रीय कार्यालयों में भी सिगरेट पीना मना है। अब विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा संचालित स्कूलों और अस्पतालों पर भी यह पाबंदी लागू होने वाली है। पश्चिमी देशों में बेल्जियम में पिछले साल से ही सार्वजनिक स्थानों जैसे स्टेशन, स्कूल, अस्पताल आदि में धूम्रपान की मनाही कर दी है। जेनेवा के स्वास्थ्य मन्त्री के अनुसार यह प्रतिबन्ध खेल के मैदानों, सांस्कृतिक केन्द्रों और सार्वजनिक शौचालयों पर लागू हो रहा है। अमेरिका जैसे औद्योगिक सभ्यता के पुजारी देश में भी अब धूम्रपान को प्रोत्साहित नहीं किया जा रहा है। वहां की सवारी गाड़ी में आमतौर पर सिगरेट पीना मना है, लेकिन तलबगारों के लिए एक अलग कक्ष बना दिया गया है। एक संस्था द्वारा कराए गए सर्वेक्षण के अनुसार २२ करोड़ की आबादी वाले अमेरिका में सिगरेट के शौकीन सिर्फ २२ प्रतिशत रह गए हैं, इससे वे लोग चौंक गए हैं, जो सिगरेट पीना अपना जन्म सिद्ध अधिकार मानते हैं।

सत्तर करोड़ की आबादी वाले हमारे देश में ४२ अरब रुपए की बरबादी कोई मामूली बात नहीं है। सभी लोगों पर बराबर बांटा जाए तो यह इकसठ रुपए प्रति व्यक्ति पड़ता है। इस कुव्यसन को रोकने या कम करने के लिए सरकार गम्भीरतापूर्वक क्यों नहीं सोचती? भारत में यह बीमारी अंग्रेजों की लगाई हुई है। आदिकाल में तो यहां तम्बाकू भी नहीं था। लेकिन सिगरेट के रूप में इसका चलन ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने शुरु किया। हीरे-जवाहरात और जड़ी-बूटियों के बदले वे हमें अपने ही जैसा श्वेतांग सिगरेट देने लगे। इसे भारी उद्योग का रूप भी विदेशी कम्पनियों ने ही दिया। सरकारी आश्रय में यह कम्पनियाँ हमारे देश में पनपीं। नतीजा यह हुआ है कि आज दुनिया भर में भारत में सबसे ज्यादा सिगरेटों का उत्पादन होता है। हमारे पड़ोसी चीन ने भी इस बुरे व्यसन से छुटकारा पाने के लिए अभियान शुरु कर दिया है। आदत छुड़ाने के लिए उन्होंने कुछ चूसने वाले पदार्थों का प्रचार शुरु कर दिया है। भारत में धूम्रपान को कम करने के लिए शुरुआत के तौर पर हमें सो सार्वजनिक स्थानों पर बीड़ी-सिगरेट पीने पर पतिबंध लगाना होगा। न सिर्फ यह प्रतिबंध बसों और रेलगाड़ियों पर ही लागू हो, बल्कि रेलवे स्टेशनों और सभी सरकारी दफ्तरों में भी यदि सिगरेट पीने पर पाबंदी लगे तो इस बुरी आदत पर कुछ हद तक काबू पाया जा सकता है। जब देश भुखमरी और सूखे से परेशान हो सामान्य सुविधाएं जुटाने के लिए सरकार के पास पैसा न हो तो धूम्रपान जैसे व्यर्थ के व्यसन पर अरबों रुपए खर्च करना सामाजिक अपराध है। जरूरत इस बात की भी है कि सिगरेट के बुरे परिणामों के बारे में एक प्रचार अभियान शुरु किया जाए और पत्र-पत्रिकाओं तथा सिनेमाघरों में धूम्रपान के प्रचारक विज्ञापनों पर रोक लगे।

(जनसत्ता १७ फरवरी)

श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता

गोहाना, १४ फरवरी (अयाची)। इस उपमण्डल के गांव भैंसवाल कलां के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में विद्यालय स्तर की संस्कृत श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता का आयोजन भाषा सेवक संगठन हरयाणा के तत्वावधान में किया गया।

इसमें जिला सोनीपत के सतरह विभिन्न विद्यालयों के ६३ विद्यार्थियों ने भाग लिया। यहां १००,७५ तथा पचास रुपए के नकद पुरस्कार प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रहने वाले विद्यार्थियों को दिए गए, वहां प्रत्येक विद्यार्थी को भी प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए। छह ऐसे संस्कृत के विद्वानों को भी पुरस्कृत किया गया, जिन्होंने उचित लय से श्लोकोच्चारण कर आदर्श प्रस्तुत किया। इस प्रतियोगिता में सेंट पाल कान्वेंट स्कूल की छात्रा सोमा तथा गुरुकुल भैंसवाल के छात्र कृष्ण गोपाल को सौ रुपये का प्रथम, रेणु तथा सुनील रा. क. उ. वि. फरमाणा को ७५ रुपए का दूसरा और रा. क. उ. वि. गोहाना की छात्रा भावना, रा. क. उ. वि. सिसाना की छात्रा अन्नू तथा गुरुकुल भैंसवाल के विद्यार्थी हर्षवर्धन को पचास रुपए का तीसरा पुरस्कार मिला।

लाहौर में पंजाब विधानसभा की स्वर्णजयन्ती

मेरी पाकिस्तान यात्रा

प्रो० शेरसिंह प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

पंजाब में १९३७ से पहले विधान परिषद् थी। १९३५ के भारत सरकार के कानून (*Govt. of India Act. 1935*) के आधीन प्रान्तीय विधान सभाये बनीं। पंजाब की विधान सभा १९३७ में बनी। पश्चिमी पंजाब की सरकार और विधानसभा ने १ और २ फरवरी १९८८ को अपनी स्वर्णजयन्ती मनाई। इस अवसर पर उन्होंने पुराने विधायकों को तो बुलाया ही, पाकिस्तान की दूसरी विधानसभाओं के अधिकारियों तथा मुख्यमन्त्रियों को भी बुलाया। इंग्लैंड, तुर्की, मलेशिया, ईरान, मौरिशस, तथा भारत से भी विधायकों को बुलाया। मैं १९४६ में पंजाब विधानसभा का सदस्य बन गया था, इसलिए मैं भी उस समारोह में सम्मिलित हुआ। इस समारोह में "विधानसभाओं की कार्यविधि तथा परम्परायें", "विकासशील देशों में लोकतन्त्र का स्थायित्व" तथा "विधायकों के कर्त्तव्य" आदि विषयों पर भाषण हुए। सभी देशों से आए हुए प्रतिनिधि बोले तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति जियाउलहक, प्रधानमन्त्री जुनेजो, पंजाब तथा अन्य देशों के मुख्यमन्त्री, विधानसभा अध्यक्ष तथा विरोधीदल के नेता आदि भी बोले। भारत के प्रतिनिधि के रूप में मैं भी बोला। प्रतिनिधियों को आपस में मिलने और परिचय प्राप्त करने के लिए मुख्यमन्त्री, राज्यपाल तथा विधानसभा अध्यक्ष की ओर से भोज दिए गए और लाहौर में मेयर की ओर से भी एक स्वागत समारोह का आयोजन किया गया।

चार-पांच दिनों में पाकिस्तान के राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, मुख्यमन्त्रियों, विधानसभा अध्यक्षों तथा विधायकों से मिलने का अवसर तो मिला ही, विदेशी प्रतिनिधियों तथा कुछ आम नागरिकों से भी मिलने और विचार विनियम करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। समय निकाल कर कुछ जगह घूमकर पुराने और नये लाहौर को भी देखा। रेडियो, टेलीवीज़न भी प्रश्नों द्वारा कुछ विषयों पर मेरी प्रतिक्रियाएं जानने के लिए मिले। उर्दू दैनिक जंग के प्रतिनिधि ने भी मुलाकात की। प्रेस, रेडियो तथा टेलीविजन के इलावा अलग से भी मिलने वालों ने पुराने और नये लाहौर में कितना अन्तर दिखाई दिया, भारत साईचिन पर क्यों अड़ा हुआ है, परमाणु पनडुब्बी आदि नये हथियार लेकर भारत पाकिस्तान को चुनौती क्यों दे रहा है, पंजाब की क्या स्थिति है, कश्मीर के प्रश्न का हल क्यों नहीं किया जा रहा, स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर जो विचार लोकतन्त्र के सम्बन्ध में व्यक्त किये गये उन पर क्या प्रतिक्रिया है आदि प्रश्न किये जाते रहे।

पहले दिन ज़ियाउलहक़ ने और अगले दिन जुनेजो ने लोकतन्त्र में अपनी गहरी निष्ठा दिखाते हुए कहा कि पाकिस्तान में वे लोकतन्त्र को इतना स्थायित्व प्रदान कर देना चाहते हैं कि उसे कभी कोई हिला न सके और फिर कभी भी तानाशाही पाकिस्तान में न आ सके। परन्तु वह लोकतन्त्र इस्लामी लोकतन्त्र होगा, जो कुरान और हदीस पर आधारित होगा, पश्चिम का दिया हुआ लोकतन्त्र पाकिस्तान के लिए उपयुक्त नहीं है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान का मतलब है "लाइलाइल अल्लाह" उन्होंने अपनी बात के समर्थन में जिन्नाह के वक्तव्यों का हवाला भी दिया। मेरे साथ बैठे सरदार श्योकतहयात खां ने कहा कि यह जिन्नाह का हवाला गलत दे रहे हैं, जिन्नाह तो पाकिस्तान में धर्म निर्पेक्ष राज्य के पक्षधर थे। उन्होंने इसे एक राजनैतिक स्टंट कहा। मैंने अलग से कुछ मन्त्रियों और विधायकों से भी पूछा उन्होंने भी श्योकतहयात खां की बात का समर्थन किया। तुर्की के प्रतिनिधियों से भी मेरी बात हुई और उन्होंने बताया कि उनके देश में ९९% मुसलमान हैं, फिरभी वहां धर्मनिर्पेक्ष राज्य है। उसमें इस्लाम और मज़हब का कोई दखल नहीं। मौलिक अधिकारों का हनन और जानी मानी प्रक्रियाओं और मान्यताओं की खुली अवहेलनाओं को लोगों के गले में उतारने के लिए ही वे कुरान और हदीस का सहारा लेना चाहते हैं और अपनी मनमानी पर मोहर लगवाना चाहता हैं। परन्तु ऐसा लगा कि उनकी बहुत सी बातें लोगो के गले के नीचे नहीं उतरती। मैंने भी दूरदर्शन की मुलाकात में यही कहा कि इस्लाम का मुलम्मा चढी हुई जमहूरियत का क्या स्वरूप होगा यह कोई नहीं जान सका।

परमाणु पनडुब्बियो की खरीद के बारे में 'जंग' के प्रतिनिधि तथा अन्य लोगों ने प्रश्न पूछे। मैंने स्पष्ट कहा कि हथियारों की दौड़ तो अमेरिका से मिलकर पाकिस्तान ने ही आरम्भ की है। भारत तो विकासशील देशों में इस दौड़ को हानिकारक मानता है और विकास में बड़ी भारी रुकावट। पाकिस्तान एक ओर युद्ध न करने की बात करता है और दूसरी ओर नये से नये हैलीकोप्टर, लडाकू हवाई जहाज, रडार, पनडुब्बियां, प्रक्षेपास्त्र आदि लेने में लगा हुआ है। भारत तो निरस्त्रीकरण और मित्रता में विश्वास रखता है। पाकिस्तान का भी इसी में भला है। साइचिन के बारे में भी प्रश्न किये गये कि भारत वहां क्यों लड रहा है, उस पर मैंने कहा कि वह इलाका तो भारत का है, पाकिस्तान छेड़छाड करता है तो जवाब तो देना ही होगा। कश्मीर के प्रश्न के हल के लिए भी सवाल किये गये। मैंने कहा कि सभी मामलों का हल शिमला समझौते के अनुसार आपस में बातचीत करके हो सकता है, बयानबाज़ी से नहीं हो सकता।

पंजाब समस्या के बारे में भी सवाल पूछे। मैंने कहा कि सिखों को कोई शिकायत नहीं हो सकती, न उनसे कोई वर्ग अधिक खुशहाल है और न ही किसी जगह उनका प्रतिनिधित्व कम है, बल्कि बहुत अधिक है। विदेशी शक्तियों और भारत विरोधी तत्वों ने आतंकवाद को जन्म दिया है। यह पूछने पर कि क्या पाकिस्तान को भी दोषी मानते हैं, मैंने कहा यह बात तो आम है कि पाकिस्तान आतंकवादियों को प्रशिक्षण और साधन दे रहा है।

४० वर्ष पुराने लाहौर से नया लाहौर दस गुना हो गया है। पाकिस्तान में आमतौर पर और पंजाब में खासतौर पर अरब देशों में काम करने वाले १६ लाख पाकिस्तानियों द्वारा कमाए हुए धन से खुशहाली आई है। अमेरीका आदि से भी मदद आ रही है। खाने-पीने की चीजें आमतौर पर सस्ती हैं (चीनी को छोड़कर) और मजदूरी महगी है। आयातित (*Imported*) कीमती कार ही सड़कों पर नजर आती हैं। सूजूकी के पुर्जे जोड़कर कार बनाने का काम कराची में शुरु हुआ है, इसलिए वह भी नजर आती है। पुरानी बस्तियां तो कम बदली है, परन्तु बहुत सी नई बस्तियां बस गई हैं। शहरों का विस्तार जैसे भारत में हुआ, वैसे ही पाकिस्तान में भी हुआ है, परन्तु उद्योग भारत के मुकाबले में बहुत कम हैं। बातों से पता चला कि लोग या तो अमीर हैं या फिर गरीब, मध्यम श्रेणी के लोग बहुत ही कम है। गरीब सन्तुष्ट नहीं है। रिश्वत की शिकायत तो आम है, लोगों की धारणा यह थी कि भारत से वहां रिश्वत अधिक है।

हिन्दुओं की संख्या पंजाब में तो दो लाख के लगभग है और उनका एक सदस्य पंजाब की प्रान्तीय विधानसभा में है। सिन्ध विधानसभा में ६ (छः) हिन्दू सदस्य हैं और राष्ट्रीय विधानसभा (*National Assembly*) में चार हिन्दू सदस्य हैं। अहमदिया तो इस्लाम से अलग एक अल्पसंख्यक वर्ग बन गया है। शिया सुन्नी के भी काफी मतभेद और झगड़े हैं। मुहाजिरों और पाकिस्तान के मूल निवासियों में भी झगड़े हैं। कराची में तो उनके फिसाद होते ही रहते हैं। हरयाणा से गये हुए मुहाजिर भी पंजाबियों से घुलमिल नहीं पाये, वे उनपर भरोसा भी नहीं करते। वास्तव में पंजाबियों से दूसरे लोग सन्तुष्ट नहीं हैं और पाकिस्तान की सरकार को पंजाबियों की सरकार मानते हैं। कुछ लोगों ने यहां तक भी कहा कि भारत का बंटवारा ठीक नहीं था, हम अपने घरों को छोड़कर खुश नहीं हैं। हरयाणा से गये हुए लोगों के अतिरिक्त और भी कुछ लोगों ने यही बात कही। मैंने उनसे कहा कि अब फिर से एक देश बनना निकट भविष्य में तो असम्भव है। परन्तु

यदि हम प्यार से भाई-भाई की तरह रह सकें तो भी सब आनन्द से रह सकते हैं। अलग-अलग हो गये तो क्या है, आखिर तो भाई-भाई हैं, एक ही खून है। कुछ लोगों ने अपने पूर्वजों का इतिहास भी जानने की कोशिश की और अपने पूर्वजों के बनाये हुए चित्तौड़गढ़ के किले को देखने की तीव्र इच्छा प्रकट की। हथियारों की दौड़ और साम्राज्यवादी शक्तियों की दोनों देशों को लड़ाने की साजिश को भी लोग दिल से नापसन्द करते हैं। बात बातों में कुछ महानुभावों ने यह भी कहा कि समय है जब दोनों देशों के दूरदर्शी नेता बैठकर तनाव और परस्पर अविश्वास की भावना को दूर करें और दोनों देशों में ऐसा जनमत बनायें कि दोनों ही सरकारों को भी उस पर फूल चढ़ाने पड़ें। लोगों ने मुझे यहां तक भी कहा कि पाकिस्तान का न अमीर लड़ाई चाहता है और न गरीब। भारत बड़ा देश है शक्तिशाली है वह पहल करे। मैंने बताया कि भारत तो दोस्ती और सहयोग का प्रस्ताव कर चुका है। ऊपर से इस क्षेत्र में शान्ति की बात करते हुए कुछ विदेशी शक्तियां हमको लड़ाना चाहती हैं, और वही हथियारों की होड़ शुरु करवा देती हैं और फिर क्रिया और प्रतिक्रिया का दुश्चक्र शुरु हो जाता है, जिसे एक नहीं, दोनों मिलकर ही तोड़ सकते हैं।

मैं तो जुलाई १९४७ के बाद अब लाहौर में गया था, पाकिस्तान बनने के बाद पहली बार मैं जुलाई के अन्तिम सप्ताह में गया उस दिन शाहआलमी दरवाजे के पास आग की लपटें उठ रही थी। मैं बच-बच के पीपल्स (विधायक होस्टल) में पहुंचा था और डा० गोपीचन्द भार्गव (जो बटवारा कमेटी के सदस्य थे) मुझे उसी दिन रात को स्टेशन पर छोड़कर गये थे, क्योंकि वहां रहना खतरे से खाली नहीं था। सरदार श्योकतहयात खां तो आज भी यही कह रहे हैं कि हिन्दू-सिख अपने आप पंजाब छोड़कर इसलिए गए थे कि पाकिस्तान आर्थिक दृष्टि से दीवालिया होकर दम तोड़ जाए। परन्तु यह एक सत्य है कि न तो पाकिस्तान की सरकार और न ही मुस्लिम जनता हिन्दुओं और सिखों के मन में यह भरोसा पैदा कर सकी, कि यदि वे अपने घरों में ही बैठे रहें तो सुरक्षित रहेंगे और निर्भय होकर अपना कारोबार चला सकेंगे। यह भी सत्य है कि बीच में ऐसे लोग भी थे जो अपने पड़ोसी की सुरक्षा और दुःख में उसका साथ देने के लिए आगे बढ़े। ऐसे उदाहरण भी हैं कि कुछ लोगों ने पड़ोसी को रक्षा की और उन परिवारों को गाड़ी तक सुरक्षित छोड़ आये। एक सज्जन ने मुझे बताया कि स्टेशनों पर पानी नहीं मिलता था और बच्चे पानी के लिए बिलख रहे थे तो वे सज्जन जो उस समय जवान थे पानी की बाल्टी लेकर पहुंचे, लेकिन अविश्वास इतना था कि उन्होंने डर के मारे वह पानी पीने से इन्कार कर दिया, कि यह लड़का जहर मिला कर ले आया हो। यह बात उन्होंने बड़े दुःखी हृदय से सुनाई। बंटवारे के समय तो लोगों की मानसिकता ही ऐसी बना दी गई थी, और घृणा का ऐसा वातावरण बन गया था, कि उसमें वही हुआ जो होना था, और उस समय का शासक अंग्रेज भी चाहता था। मैं यह नहीं कहता कि आज साम्प्रदायिक भावना है ही नहीं, आज अपने ही दीन के लोगों से भी घृणा का वातावरण देखने को मिलता है। परन्तु क्योंकि आज पाकिस्तान में हिन्दू मुसलमान का टकराव नहीं है, हिन्दू हैं ही उंगलियों पर गिनने लायक। इसलिए उससे घृणा की भावना पैदा होने का और टकराव का अवसर ही नहीं आता। अब तो हिन्दू भारत से मेहमान बनकर जाता है और उसे मेहमान वाला ही सलूक मिलता है। हम जितने दिन ठहरे, चार भोज तो सरकारी थे, वहां शाकाहारी भोजन का मेज अलग रहता था। चार बार हमने घरों में भोजन किया और सब जगह उस दिन उन्होंने पूरे परिवार के लिए केवल शाकाहारी भोजन ही बनाया।

पांच दिनों में जो स्वागत सत्कार मिला, उसको हम मीठी याद ही लेकर आए हैं। मेरे साथ मेरी धर्मपत्नी श्रीमती प्रभावशोभा भी गई थीं, वे तो १९७८ में भी हो आई थी और अपने नानाजी के घर जहां उनका बचपन बीता वहां भी होकर आई थी। उस घर में जो सज्जन आजकल रह रहे हैं वे वास्तव में देवता स्वरूप ही हैं।

हमने नया पुराना शहर को घूमकर देखा, हम गुरुदत्त भवन में भी गये, उसका चित्र भी लेकर आये हैं, वहां बालि-काओं का सरकारी हाई स्कूल चल रहा है जिसमें २५०० छात्राएं पढ़ती हैं। वहां आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालय के साथ एक आर्य विद्यालय भी चलता था। जहां शिक्षा संस्थाएं थी, वहां आज भी शिक्षा संस्थाएं ही चल रही हैं।

पाकिस्तान में आज न तो कहने को फौजी शासन है और न ही आपातकालीन स्थिति (*Emergency*), परन्तु पूर्णरूप से लोकतन्त्र स्थापित हो गया है, ऐसा भी नहीं लगा। हमारी भेंट जब राष्ट्रपति से हुई तो उन्होंने औपचारिकता के लिए हमसे इस्लामाबाद आने और उनके साथ ही ठहरने को कहा। प्रधानमन्त्री ने भी भोज के समय ढूंढकर हमें बुलवाया। पंजाब के मुख्यमन्त्री और विधानसभा अध्यक्ष ने भी बहुत ध्यान रखा। राष्ट्रपति द्वारा पंजाब विधानसभा का निशान भी भेंट करवाया और स्वयं भी छोटी-छोटी भेंटें दी। इन सब की मीठी याद तो रहेगी ही। पंजाब के मुख्यमन्त्री और विधानसभा अध्यक्ष की सब लोग ही प्रशंसा कर रहे थे। सभी प्रदेशों से आये हुए विधायक, विधानसभा अध्यक्ष मुख्यमन्त्री आदि बड़े प्यार से स्वयं पहल करके मिलते रहे और सिन्ध के विधानसभा अध्यक्ष ने तो इसी प्रकार के महोत्सव में आने का अगाऊ निमन्त्रण भी दिया। हरयाणा के मूल निवासी विधायकों ने तो फिर पाकिस्तान आने और घूमकर रु. हरयाणा से आये लोगों से मिलने को कहा। उन्होंने जो भोजन खिलाया, खीर और मीठे चावल बनवाये उनमें चावल कम और मेवे अधिक थे। ऐसे वातावरण में एक बार भावविभोर होना स्वाभाविक है।

कुछ बातों की मैं प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता:—

(१) पाकिस्तान में शराब सर्वथा बन्द है और शराब पीने या बनाने वाले को कड़ी सजा दी जाती है। इसी कारण लोगों का स्वास्थ्य आमतौर पर बहुत अच्छा है।

(२) विधायकों ने ही नहीं बल्कि साधारण नागरिकों ने भी यह बताया कि कालिजों और विश्वविद्यालयों में प्रवेश नम्बरों से ही होता है, अपवाद कोई नहीं होता। परीक्षाओं में नकल करने की परिपाटी जो चल पड़ी थी अब बिल्कुल बन्द हो गई है।

(३) विधायकों को अपने क्षेत्र में छोटी-छोटी योजनायें चलाने के लिए २० लाख रुपए मिलते हैं, तथा राष्ट्रीय विधानसभा के प्रत्येक सदस्य को ५० लाख रुपए अपने क्षेत्र में योजनायें चलाने के लिए मिलते हैं। इससे विकास के कामों में क्षेत्रों में भेदभाव कम हो जाता है।

कुल मिलाकर पाकिस्तान की पांच दिन की यात्रा बहुत अच्छी रही। स्वर्णजयन्ती के समारोह के कारण एक ही जगह पाकिस्तान के सभी प्रदेशों के शासकों और विधायकों से मिलने का अवसर मिला। यदि वैसे ही घूमने के लिए जाते तो यह सबकुछ सम्भव नहीं हो सकता था। बहुत अच्छा हो यदि दोनों देशों का भाईचारा बहाल हो जाये, हथियारों की दौड़ खत्म हो जाए, व्यापार और सांस्कृतिक सम्बन्ध तेजी से बढ़ें, लोगों का आना-जाना भी अधिक हो। अफ़गानिस्तान का मामला सुलझाने से शायद अमरीका पाकिस्तान को थोड़े हथियार दे और उससे इस क्षेत्र में और भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव समाप्त होने में मदद मिले। जनता की यह इच्छा स्पष्ट रूप से देखने को मिली, पाकिस्तान के शासक भी अपना रुख बदलें तो उसमें भारत और पाकिस्तान दोनों का भला है।

प्रि० दलीपसिंह को पितृशोक

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा के प्रिंसिपल श्री दलीप सिंह जी के पिताजी श्री नियादरसिंह जी का उनके ग्राम डिगाना जिला जीन्द में दिनांक ४ फरवरी को निधन हो गया। वे ७० वर्ष के लगभग के थे और कुछ समय से बीमार थे।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके वियोग में दुःखी परिवार जनों को दुःख सहने की शक्ति प्रदान करें।

—सभामन्त्री

ऋषिवर दयानन्द का गुणगान

सुनायें तुम्हें उस ऋषिवर की गाथा
विश्व जिसके चरणों में शीश झुकाता । टेक

बहाया था गंगा में नंगा ही बेटा
उस दर्दनाक घटना को ऋषिजी ने देखा
उसी के लिए रहा ईंट रोड़े खाता ।.........१

निहारी ऋषिवर ने देश की गुलामी
आजादी का वह बन गया हामी
छठा समुल्लास जसको यादे दिलाता.........२

छुआछात देश में चली थी बीमारी
कर्म के बना दिए सब अधिकारी
विद्या पढ़कर शूद्र भी पंडित कहलाता......३

पापियों ने गउओं पर छुरियां चलाई
सेवाहित में ऋषि ने छाती अड़ाई
गौ-करुणा को पढ लो भ्राता.........४

कुप्रथा से नारी जिन्दा जलाई
पुनर्विवाह की प्रथा ऋषि ने चलाई
विधवा भी कहलाई जग में बच्चों की माता ५

ईश्वर को तज के पूजा बने पत्थर पुजारी
युक्तियों के बाण ले के गरजा ब्रह्मचारी
वेद रूपी नैय्या में रहा सबको बिठाता.........६

ब्रह्मचर्य पालन का पाठ पढ़ाया
प्रभु भक्ति का रास्ता दिखाया
योग साधना से नर मुक्ति को पाता.........७

शिक्षा का केन्द्र गुरुकुल बनाया
प्रकाश जिसका चहुं ओर छाया
जगतगुरु विश्व में आज भारत कहलाता...८

चरित्रहीनता के जब बादल थे छाये
प्राण उनके हटाने में ऋषि ने गंवाये
दोबारा से हमको दे दो वही ऋषिवर विधाता...९

ऋषि के उपकार हम कैसे गिनायें
उस योगी का कर्ज हम कैसे चुकायें
आज 'दयाचन्द' भी कैसे कविता बनाता...१०

—दयाचन्द आर्य, मु० पो० कवी, करनाल

स्वामी दयानन्द सरस्वती की अनमोल सूक्तियां

संकलनकर्ता :—वेदमित्र हापुड़ वाले, ७२-बी, गोविन्द नगर, अम्बाला छावनी ।

१. संगठन :— जिस संगठन में अधर्म से धर्म, असत्य से सत्य सब सदस्यों के देखते हुए मारा जाता है, वहाँ सब मृतक के समान हैं, मानो उनमें कोई नहीं जीता ।

२. उन्नति :—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए ।

३. भलाई:—जो मनुष्य जगत् की जितनी भलाई करेगा, उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा ।

४. प्रेम :—परमात्मा प्रार्थना का नहीं, प्रेम का भूखा है ।

५. सत्य :—जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना 'सत्य' कहाता है ।

६. अनिवार्य धर्म :—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए । अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए ।

७. अर्थ :—अर्थ वह है जो कि धर्म ही से प्राप्त किया जाये और जो अधर्म से सिद्ध होता है, उसको अनर्थ कहते हैं ।

८. काम :—काम वह है कि जो धर्म और अर्थ से प्राप्त किया जाये ।

९. व्यवहार :—सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए ।

१०. मनुष्य और पशु :—जैसे पशु बलवान् होकर निर्बलों को दुःख देता और मार भी डालते हैं जब मनुष्य शरीर पाकर वैसा ही करते हैं तो वे मनुष्य स्वभावयुक्त नहीं, किन्तु पशुवत् हैं ।

जो बलवान् होकर निर्बलों की रक्षा करता है वही मनुष्य कहलाता है और जो स्वार्थवश होकर परहानिमात्र करता है वह जानो पशुओं का भी बड़ा भाई है ।

आर्यसमाज कंवारी (हिसार) का वार्षिक चुनाव १९८८ का

प्रधान—श्री अतर सिंह आर्य क्रान्तिकारी, उपप्रधान—श्री भरत सिंह आर्य एवं श्री ज्ञानीराम सरपंच, मन्त्री—जयवीरसिंह आर्य, उपमन्त्री—श्री इन्द्रसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री महेन्द्रसिंह आर्य, लेखानिरीक्षक—डा० ओमप्रकाश आर्य, प्रचारमन्त्री—श्री ओमप्रकाश आर्य, संगठन मन्त्री—श्री रणजीतसिंह आर्य ।

पूर्ण नशाबन्दी की मांग करने के लिए मार्च में शराब के ठेकों की नीलामी के अवसर पर प्रदर्शनों के आयोजन को सफल करने के लिए आर्य नेताओं की अपील

हरयाणा प्रदेश में शराब की भयंकर लानत दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है । शायद हो ऐसा कोई भाग्यशाली परिवार बचा होगा जिस घर में शराब न पहुंची हो । हरयाणा जो पहले दूध-दही के खाने के नाम से प्रसिद्ध था, आज वहां शराब की प्यालियों की भरमार है और हरयाणा की वैदिक संस्कृति नष्ट होने जा रही है । इसके प्रचार एवं प्रसार से किसान मजदूर बर्बाद होने लगे हैं । शराब के ठेकेदार तथा इस विभाग के अधिकारी, कर्मचारी तथा पुलिस के भ्रष्ट अधिकारी मालामाल हो रहे हैं । यही कारण है कि जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं हैं, वहाँ भी चोरी छिपे अवैध रूप से शराब बिक रही है । ग्रामीण युवक शराब की बीमारी में फंस कर अपना तथा अपने परिवार का भविष्य अन्धकारमय बना रहे हैं । शिक्षा अधूरी रहने से बेरोजगारी बढ़ रही है । हरयाणा सरकार अपनी आमदनी बढाने के लिए शराब के ठेकों की संख्या में वृद्धि कर रही है, उसे हरयाणा की संस्कृति तथा शराब के सेवन के कारण बढ़ रहे भ्रष्टाचार की चिन्ता नहीं है । शराबी पियक्कड़ों से बहू-बेटियों की इज्जत भी खतरे में है ।

अतः हम हरयाणा के शुभचिन्तक नर नारियों से अपील करते हैं कि देवभूमि हरयाणा की बर्बादी को बचाने तथा गुजरात राज्य की भांति हरयाणा में भी पूर्ण नशाबन्दी की मांग करने के लिए मार्च के प्रथम सप्ताह में जब सरकार ठेकों की नीलामी करेगी, उस समय हरयाणा के मुख्यालयों पर प्रबल प्रदर्शनों के आयोजन में तन-मन तथा धन से सहयोग प्रदान करें ।

निवेदक :

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री
प्रधान	प्रधान	मन्त्री
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा	
		बद्रीप्रसाद आर्य
		कोषाध्यक्ष

हैदराबाद सत्याग्रह के सत्याग्रही

भारत सरकार द्वारा निम्न सत्याग्रहियों के सम्बन्ध में प्रान्तीय सरकारों को पेशन देने की सिफारिश की गई है।

(१) श्री राजाराम पुत्र श्री कलासिंह मकान नं० १३६ वार्ड ४ मोहल्ला बियानघट्टी पानीपत (करनाल) हरयाणा।

(२) श्री पोलूराम पुत्र श्री कान्हाराम खाण्डाखेडी तहसील हांसी जिला हिसार (हरियाणा)।

(३) श्रीमती ज्ञानोदेवी पत्नी श्री रामचन्द्र पो० सिराई तहसील हांसी (हिसार) हरियाणा।

(४) श्रीमती भगवान देवी पत्नी श्री बाङूराम, पो० बुडाना तहसील हांसी (हिसार) हरियाणा।

(५) श्री थानसिंह पुत्र श्री रामरिछपाल ग्राम पोस्ट छारा जि. रोहतक (हरियाणा)।

(६) श्री भरतसिंह पुत्र श्री गोकुल पो० कासण्डा तहसील गोहाना जिला सोनीपत (हरयाणा)।

(७) श्री मानसिंह पुत्र श्री मुगलसिंह ग्राम पो० सुताना तहसील हांसी जिला हिसार (हरयाणा)।

(८) श्री हरिसिंह पुत्र श्री दीवानचन्द मकान नं० ७८४ वार्ड ७, प्रेम-बस्ती न्यू रविदास भवन पानीपत करनाल हरयाणा।

(९) श्री कपिलदेव पुत्र श्री बदलूराम ग्राम पो० घड़वाल तहसील गोहाना जिला सोनीपत (हरयाणा)

(१०) श्री जयसिंह पुत्र श्री जयराम ग्राम पो० सुताना तहसील पानीपत जिला करनाल (हरयाणा)।

(११) श्री लालचन्द पुत्र श्री मूलचन्द ग्राम पो० भापड़ोदा जिला रोहतक (हरयाणा)

(१२) श्री जयदेव पुत्र श्री झम्मनदास ग्राम गन्नौर जिला सोनीपत (हर.)

(१३) श्री शीशराम पुत्र श्री मोहीराम ग्रा. पो० मिरचपुर जिला हिसार

(१४) श्री स्वरूपसिंह पुत्र श्री रतनसिंह ग्राम पो० मिलकपुर तहसील हांसी (हिसार) हरयाणा।

(१५) श्री नफासिंह पुत्र श्री हरफूल सिंह ग्राम पो० पाकसमा जिला रोहतक हरयाणा।

(१६) ईश्वरचन्द्र पुत्र श्री फताचन्द द्वारा श्रीमती लीलावती आर्य पो. एच. एस. १ ग्राम पो० टोकरा तहसील पटौदी जिला गुड़गांव (हरयाणा)।

(१७) श्री हंसराज पुत्र मुंशीराम मकान नं० ३८४/९ चांदना गेट कैथल जिला कुरुक्षेत्र (हरयाणा)।

(१८) श्री मंगतराम पुत्र श्री मसान्या ग्रा. पो. बालयाना जिला रोहतक (हरयाणा)।

(१९) श्री देवताराम पुत्र श्री लच्छीराम द्वारा श्री बनारसीदास हलवाई निकट अग्रवाल धर्मशाला कैथल जिला कुरुक्षेत्र (हरयाणा)।

(२०) श्री सत्यदेव वर्मा पुत्र श्री धर्मवीर ६५१ माडलटाउन यमुनानगर अम्बाला (हरयाणा)।

(२१) श्री मुंशीराम पुत्र श्री भियाराम ग्राम पो० मिरचपुर जिला हिसार (हरयाणा)।

(२२) श्री दयाराम पुत्र श्री रामचन्द मकान ३१०/३१ कोठ मण्डी जि.

(२३) श्री करतार कृष्ण शास्त्री पुत्र श्री रघुदयाल राममन्दिर विजय-नगर गाजियाबाद।

(२४) श्री हरचन्द पुत्र तोताराम ग्राम पो० उमरा तहसील हांसी (हिसार) हरयाणा।

(२५) श्री देशराम प्रेम पुत्र दरबारीराम २८४ गढ़ी मोहल्ला रोहतक (हरयाणा)।

(२६) श्री तेजपालसिंह पुत्र श्री कृष्णसहाय कौलाती बल्लभगढ़ (फरीदाबाद) हरयाणा।

(२७) श्री [illegible] पुत्र श्री अविलाल ग्राम पो० मिरचपुर तहसील हांसी जिला हिसार (हरयाणा)।

(२८) श्री सा[illegible] गुप्ता पुत्र श्री रामफल गुप्ता पुरानी अदालत रोड आरा [illegible] पुर (बिहार)।

(२९) श्री वेदप्रकाश पुत्र श्री रामचन्द ४३०/१३ पंजाबी मोहल्ला अम्बाला छावनी।

(३०) श्री रामचन्द्र पालीवाल निवास जी० टी० रोड पानीपत जिला करनाल हरयाणा।

—सार्वदेशिक साप्ताहिक १४ फरवरी १९८८

विद्या परिषद् तथा अन्तरंग बैठक सूचना

आर्य विद्या परिषद् हरयाणा की कार्य समिति की बैठक २८ फरवरी रविवार को दोपहर पश्चात् २ बजे तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग बैठक उसी दिन २ बजे सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक में होगी।

—सभामन्त्री

आर्यो ! देव दयानन्द की सेना का सहयोग करो !

देश में अन्धविश्वास के सहारे सतीप्रथा, सहेज, गर्भ परीक्षण द्वारा निरन्तर गिरती नारी स्थिति, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता, जातीयता के नाम पर देश को तोड़ने का षड्यन्त्र, गोहत्या, बढ़ता भ्रष्टाचार व सूखे की मार हम सबके लिए खुली चुनौती है। अतः धार्मिक पाखण्ड, अज्ञान और अन्याय के विरुद्ध नैतिक मूल्यों की पुनःस्थापना एवं नारी मुक्ति हेतु संघर्ष करने के लिए आर्यसमाज के भव्य इतिहास के अनुरूप एक वृहद् योजना बनाई गई है, जिसके अन्तर्गत पांच हजार वैदिक धर्मी राष्ट्रप्रेमी नवयुवकों को देव दयानन्द की सेना में भरती करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु जिलेवार एव राज्य स्तर पर १३ विशाल प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन, सत्यार्थ प्रकाश व वैदिक समाज निर्माण विषयक साहित्य का सर्जन, दीवारों पर नारे लिखना, राज्य भर में पद यात्रायों तथा सम्मेलनों के द्वारा जनजागृति कर आर्य वीरदल के माध्यम से नये खून को आर्यसमाज में ल॰ े का प्रयास विचाराधीन है। यह सब आपके सक्रिय सहयोग से ही सम्भव होगा। अतः आप अपनी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सहज ही समझ सकते हैं।

इसलिए आज ही अपने आर्यसमाज, आर्य शिक्षण संस्थान या जिस भी संस्था से आप सम्बन्धित है उसकी अन्तरंग सभा में विचार कर सहयोग की भूमिका निर्धारित करें। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्देशानुसार अपनी अन्तरंग में शाखा अधिष्ठाता पद का चुनाव करें। वार्षिक बजट में दल हेतु अधिकतम सहायता राशि निश्चित करें व अपने विद्यालय या समाज में शाखा लगाने का प्रयास करें। आपकी मांग पर तुरन्त आर्य वीरदल हरयाणा सुयोग्य शिक्षक देगा। आशा है उपर्युक्त सम्बन्ध में विचार कर आप अपने सुझाव व सहयोग की सूचना आर्य वीर दल के अधिष्ठाता प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी को आर्यसमाज नरवाना के पते पर सूचित करेंगे।

स्वामी ओमानन्द	प्रो० शेरसिंह	प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी
प्रधान	प्रधान	अधिष्ठाता
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा	आर्य वीरदल हरयाणा

आर्यसमाज औरंगाबाद मितरौल जि० फरीदाबाद का उत्सव

आर्यसमाज औरंगाबाद—मितरौल (फरीदाबाद) का ३६वां वार्षिकोत्सव ५, ६, ७ फरवरी को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। वार्षिक उत्सव में हजारों नर-नारियों ने महर्षि देव दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित वैदिक मान्यताओं के आधार पर धार्मिक व सामाजिक जन चेतना के विचारों को सुनकर लाभ उठाया। वार्षिकोत्सव के अवसर पर श्री सुखदेव जी शास्त्री, श्री चन्द्रसैन जी वैदिक मिशनरी, श्री पं० शोभाराम प्रेमी, श्री स्वामी दयानन्द जी, पं० भजनलाल आर्य आदि के अतिरिक्त श्री मुरारीलाल बेचैन भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने सम्बोधित किया। सम्मेलन की सफलता के लिए श्री किशोरसिंह जी, बहालसिंह जी भारद्वाज, श्री डालचन्द प्रभाकर व श्री वीरेन्द्रसिंह आर्य ने विशेष पुरुषार्थ किया।

—शिवराम विद्यावाचस्पति
औरंगाबाद

श्री अभेसिंह आर्य को बधाई

बड़े हर्ष का विषय है कि आर्य-समाज रामनगर, जीन्द के उत्साही अधिकारी तथा जीन्द के प्रसिद्ध आर्यसमाजी चौ० अभयसिंह जी आर्य नगरपालिका जीन्द के चेयरमैन निर्वाचित हुए हैं। समस्त आर्य जनता को इससे विशेष हर्ष हुआ है। वे नगर को बहुमूल्य सेवा कर पायें, यह हमारी शुभकामनाये हैं।

बधाई।

—ओम कुमार आर्य
आर्यसमाज रामनगर,
जीन्द।

"बादल जी! गरजो नहीं, कुछ बरसो।"

श्री प्रकाशसिंह बादल भूतपूर्व मुख्यमन्त्री पंजाब के दैनिक वक्तव्यों को पढकर हैरानी होती है। एक तरफ वे पंजाब समस्या के समाधान की बातें करते हैं दूसरी तरफ हिन्दू सिक्खों को लड़ाने की बातें करते हैं। बाबरी मस्जिद एवम् राम जन्म भूमि की बुझती हुई घृणा की आग पर अपने वक्तव्यों से तेल डालकर भड़काने का काम करते हैं। क्या यही आपकी मानवता आपको सिखाती है? याद रखो हिन्दू-सिक्ख एक ही मां की सन्तान हैं जो कभी भी अलग नहीं हो सकती। यदि आपमें सच्ची मानवता है तो निज स्वार्थों को छोड़कर प्राणिमात्र के कल्याण में लग जाइये। लोगों में घृणा के नहीं बल्कि प्रेम, सौहार्द, स्नेह, मानवता, देशप्रेम, अहिंसा एवम् अन्य सद्‌गुणों के बीज बोकर और सच्चे बादल बनकर बरसें ताकि प्राणिमात्र का कल्याण हो सके।

:ज़रो लालो गुहर के दफीने हैं यहां लाखों।
निकालो चीर कर सीना जमीं का इन खजानों को॥
कुछ ऐसे कारनामें छोड़ जाओ यादगार अपनी।
कि झूमें लोग सुन-सुनकर तुम्हारे दास्तानों को॥

—हरिचन्द स्नेही, महामन्त्री आर्यसमाज शान्तिनगर, सोनीपत

हरयाणा सरकार की नीति–शराब बन्दी या वृद्धि

विगत दिवस हरयाणा की गांधीवादी सरकार ने हरयाणा में शराब के ठेकों में वृद्धि एवम् उनके समीप अहाते खोलने के निर्णय को पारित कर दिया है। इस फैसले से जन-साधारण में काफी रोष है। क्या इस फैसले से गांधीजी के सपने साकार होंगे जो देश से शराब निर्मूल समाप्त करना चाहते थे। आर्यसमाज शान्तिनगर सोनीपत (हरयाणा) के समस्त पदाधिकारी एवम् सदस्यगण श्री प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान से अनुरोध करते हैं कि वे श्री देवीलाल, मुख्यमन्त्री हरयाणा सरकार पर नैतिक दबाव डालकर इस निर्णय को बदलवाने के लिए जोर दें तथा पिछले वर्ष की तुलना में इन ठेकों की संख्या में कमी करवायें और धीरे-धीरे गांधीजी के सपनों को साकार करके भारत का भावी उज्ज्वल भविष्य बनायें। धन्यवाद। —हरिचन्द 'स्नेही'

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४) रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१२



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री सह-सम्पादक—डा० [illegible]

वर्ष १५, अङ्क १४ २८ फरवरी, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

वेद के विषय

पं० धर्मदेव 'मतीपी' व्याकरणाचार्य, (गुरुकुल कालवा)

वेदों में अवयवरूप विषय तो अनेक हैं, परन्तु उनमें से चार मुख्य हैं—(१) एक विज्ञान अर्थात् सब पदार्थों को यथार्थ जानना, (२) दूसरा कर्म, (३) तीसरा उपासना, (४) चौथा ज्ञान है। 'विज्ञान' उसको कहते हैं कि जो कर्म उपासना और ज्ञान इन तीनों से यथावत् उपयोग लेना और परमेश्वर से लेके तृणपर्यन्त पदार्थों का साक्षाद्बोध होना, उनसे यथावत् उपयोग का करना, इससे यह विषय इन चारों में भी प्रधान है, क्योंकि इसी में वेदों का मुख्य तात्पर्य है। सो भी दो प्रकार का है—एक तो परमेश्वर का यथावत् ज्ञान और उसकी आज्ञा का बराबर पालन करना, और दूसरा यह है कि उसके रचे हुये सब पदार्थों के गुणों को यथावत् विचार के उनसे कार्य सिद्ध करना अर्थात् ईश्वर ने कौन-कौन पदार्थ किस प्रयोजन के लिए रचे हैं। और इन दोनों में से भी ईश्वर का जो प्रतिपादन सो ही प्रधान है।

दूसरा कर्मकाण्ड विषय है सो सब क्रियाप्रधान ही होता है। जिसके बिना विद्याभ्यास और ज्ञान पूर्ण नहीं हो सकते। क्योंकि मन का योग बाहर की क्रिया और भीतर के व्यवहार में सदा रहता है। वह अनेक प्रकार का है परन्तु उसके दो भेद मुख्य हैं—एक पुरुषार्थ, दूसरा लोक-व्यवहार। अर्थात् पहिले से परमार्थ और दूसरे से लोक व्यवहार की सिद्धि करनी होती है। प्रथम जो परम पुरुषार्थ रूप कहा उसमें परमेश्वर की 'स्तुति' अर्थात् उसके सर्वशक्तिमत्त्वादि गुणों का कीर्त्तन उपदेश और श्रवण करना, 'प्रार्थना' अर्थात् ईश्वर के स्वरूप में मग्न होके उसकी सत्यभाषणादि आज्ञा का यथावत् पालन करना। सो उपासना वेद और पातञ्जल योगशास्त्र की रीति से करनी चाहिए। [illegible] धर्म का स्वरूप न्यायाचरण है। 'न्यायाचरण' उसको कहते हैं जो पक्षपात को छोड़ के सब प्रकार से सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करना इसी धर्म का ज्ञान और अनुष्ठान यथावत् करना है सो ही कर्मकाण्ड का प्रधान भाग है। और दूसरा यह है कि जिससे पूर्वोक्त अर्थ काम और उनकी सिद्धि करने वाले साधनों की प्राप्ति होती है। सो इस भेद को इस प्रकार से जानना कि जब मोक्ष अर्थात् सब दुःखों से छूट के केवल परमेश्वर की ही प्राप्ति के लिए धर्म से युक्त सब कर्मों का यथावत् करना यही निष्काम मार्ग कहाता है, क्योंकि इसमें संसार के भोगों की कामना नहीं की जाती। इसी कारण से इसका फल अक्षय है। और जिसमें संसार के भोगों की इच्छा धर्मयुक्त काम किये जाते हैं, उसको सकाम कहते हैं इस हेतु से इसका फल नाशवान् होता है, क्योंकि सब कर्मों करके इन्द्रिय भोगों को प्राप्त होके जन्म-मरण से नहीं छूट सकता। अग्निहोत्र से लेके अश्वमेध पर्यन्त जो कर्मकाण्ड है उसमें चार प्रकार के द्रव्यों का होम करना होता है—एक सुगन्धगुणयुक्त, कस्तूरी केशरादि हैं, दूसरा मिष्टगुणयुक्त जो कि गुड़ और सहत आदि कहाते हैं, तीसरा पुष्टिकारकगुणयुक्त, जो घृत, दुग्ध और अन्न आदि हैं, और चौथा रोगनाशकगुणयुक्त जो कि सोमलतादि औषधि आदि हैं। इन चारों का परस्पर शोधन, संस्कार और यथायोग्य मिलाके अग्नि में युक्तिपूर्वक जो होम किया जाता है वह वायु और वृष्टिजल की शुद्धि करने वाला होता है। इससे सब जगत् को सुख होता है। और जिसको भोजन, छादन, विमानादि यान, कलाकुशलता, यन्त्र और सामाजिक नियम होने के लिए करते हैं, वह अधिकांश से कर्त्ता को ही सुख देने वाला होता है।

केवल परमेश्वर ही कर्म उपासना और ज्ञानकाण्ड में सबका इष्टदेव स्तुति, प्रार्थना, पूजा और उपासना करने योग्य है। क्योंकि गुण वे कहाते हैं जिनसे कर्मकाण्डादि में उपकार लेना होता है। परन्तु सर्वत्र कर्मकाण्ड में भी इष्टभोग प्राप्ति के लिए परमेश्वर का त्याग नहीं होता, क्योंकि कार्य कारण सम्बन्ध से ईश्वर ही सर्वत्र स्तुति, प्रार्थना, उपासना से पूजा करने योग्य होता है। इसमें निरुक्त का भी प्रमाण है—

"माहाभाग्याद्देवताया एक आत्मा बहुधा स्तूयते। एकस्यात्मनोऽन्ये देवाः प्रत्यङ्गानि भवन्ति। कर्मजन्मान आत्मजन्मान आत्मैवैषां रथो भवत्यात्माश्व आत्मायुधमात्मेषव आत्मा सर्वं देवस्य देवस्य॥"

(निरुक्त अ० ७। खं० ४)

अर्थात् व्यवहार के देवताओं की उपासना कभी नहीं करनी चाहिए, किन्तु एक परमेश्वर ही की करनी उचित है इसका निश्चय वेदों में अनेक प्रकार से किया है कि एक अद्वितीय परमेश्वर के ही प्रकाश, धारण उत्पादन करने से वे सब व्यवहार के देव प्रकाशित हो रहे हैं। इनका जन्म, कर्म और ईश्वर के सामर्थ्य से होता है। और इनका रथ अर्थात् जो रमण का स्थान अश्व अर्थात् शीघ्र सुख प्राप्ति का कारण, आयुद्ध अर्थात् सब शत्रुओं के नाश करने का हेतु, और इषु अर्थात् जो बाण के समान सब दुष्टगणों का छेदन करने वाला शस्त्र है, सो एक परमेश्वर ही है। क्योंकि परमेश्वर ने जिस जिसमें जितना दिव्यगुण रखा है उतना-उतना ही उन द्रव्यों में देवपन है, अधिक नहीं। इससे क्या सिद्ध हुआ कि केवल परमेश्वर ही उन सबका उत्पादन, धारण और मुक्ति का देने वाला है।

'छन्द' और 'मन्त्र' ये दोनों शब्द एकार्थवाची अर्थात् संहिता भाग के नाम हैं, वैसे ही 'निगम' और 'श्रुति' भी वेदों के नाम हैं। भेद होने का कारण केवल अर्थ ही है। वेदों का नाम 'छन्द' इसलिए रक्खा है कि वे स्वतन्त्र प्रमाण और सत्यविद्याओं से परिपूर्ण हैं। तथा उनका 'मन्त्र' नाम इसलिए है कि उनसे सत्यविद्याओं का ज्ञान होता है। और 'श्रुति' इसलिए कहते हैं कि उनके पढ़ने, अभ्यास करने और सुनने से सब सत्यविद्याओं को मनुष्य लोग जान सकते हैं। ऐसे ही जिस करके सब पदार्थों का यथार्थ ज्ञान हो उसको 'निगम' कहते हैं। इससे यह चारों शब्द पर्याय अर्थात् एक अर्थ के वाची हैं, ऐसा ही जानना चाहिए। वैसे ही अष्टाध्यायी व्याकरण में भी छन्द, मन्त्र और निगम ये तीनों नाम वेदों ही के हैं। इसलिए जो लोग इनमें भेद मानते हैं उनका वचन प्रमाण करने के योग्य नहीं।

("ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका" पर आधारित)

उत्तरी भारत का सामाजिक न्यायालय : सर्वखाप पंचायत

—ओमप्रकाश पत्रकार, फरमाणा, (सोनीपत)

आज देश बड़ी विकट, विषम तथा विकराल परिस्थितियों से गुजर रहा है। आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक ढांचें का शक्ति सन्तुलन ही नहीं गया है बल्कि ढह गया है। चौतरफा अशान्ति, निराशा और अनिश्चितता का वातावरण व्याप्त है। कर्त्तव्यनिष्ठा, न्यायप्रियता और सत्यता का दायरा सिकुड़ कर बिल्कुल तंग होता जा रहा है। धार्मिक आस्थाएं और सामाजिक मान्यताएं प्राय: लोप हो चली हैं। सद्विचार और सदाचार नामक शब्द अब केवल शब्दकोष के पन्नों से ही पढ़े जा सकते हैं, आचरण में इनका कहीं नामोनिशान दिखाई नही देता। लोग गर्व और गौरव से जीने की बजाय हीन, हेय और हेरानकुन परिस्थिति में दिन काट रहे हैं। सामाजिक मर्यादाएं और न्याय की श्रृंखलाएं टूट ही नहीं रही हैं बल्कि चूर-चूर हो गयी हैं। शराबखोरी तथा अन्य नशों से मदहोश मस्तिष्कों से व्यभिचार पनप रहा है। दुराचार, अशान्ति और अराजकता दनदना रही है तथा न्याय व सामाजिक मान्यताएं असमंजस्य में फंस कर दोराहे पर खड़ी हैं समाज में सामाजिक मौलिकताओं और मान्यताओं की गिरावट से प्रत्येक अमीर व गरीब, हर खास व आम और यहां तक कि हर तबके का प्रत्येक व्यक्ति दु:खी है। घूसखोरी, शराबखोरी, व्यभिचार से पनपा भ्रष्टाचार, दहेज-प्रथा, मुकद्‌मेबाज़ी, कत्लोगारत, ससुराल से छोड़ी लड़कियों के कारनामों ने समाज को जर्जर कर दिया है। सामाजिक कुरीतियों, रूढिवाद और धर्मान्धता के विरुद्ध सरकार समय-समय पर कानून तो बनाती है परन्तु वह अमल व प्रयोग में न लाया जाकर सरकारी दस्तावेज़ के तौर पर न्यायालयों की अलमारियों में बन्द हो कर रह जाता है। दहेजप्रथा, सतीप्रथा, बालविवाह प्रथा, तलाक, अस्पृश्यता आदि अनेक सरकारी कानूनों की सरेआम धज्जियां तथा खिल्लियां उड़ रही हैं। सरकारी शासन व प्रशासन ने सामाजिक आस्थाओं से बिल्कुल मुंह मोड़ लिया है।

सरकार की सामाजिक समस्याओं के प्रति उदासीनता और उपेक्षावृत्ति को देखते हुए सामाजिक संगठनों की अनिवार्यता एवम् उपयोगिता को हम नज़रअन्दाज नहीं कर सकते। इतिहास साक्षी है कि सामाजिक संगठनों और समाज सुधारकों ने समय-समय पर समाज से कुरीति, भुखमरी, अन्याय और अभाव को मिटाने के लिए बेजोड़ भूमिका निभाई है। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, आर्थिक विषमता, सामाजिक कुरीति से उथल-पुथल और ऊबड़-खाबड़ कुमार्ग को समतल बनाने, सरकार द्वारा बिगाड़ी गई या बिगाड़ी हुई परिस्थिति में सुधार लाकर सरकार का कार्यभार हल्का करने में, हमारे देश के सामाजिक संगठन और समाज सुधारक, हमेशा अग्रणीय रहे हैं। सामाजिक संगठनों और समाज सुधारकों ने जिस दौर को चाहा उस दौर को बदल डाला और वे जिस दौर को चाहेंगे उसी दौर को बदल डालेंगे। मानवीय मूल्यों का आकलन केवल सामाजिक तौरतरीके से ही सम्भव हो सकता है। सरकारी अदालतों में कई-कई सालों तक हजारों रुपये और समय बरबाद करने पर भी न्याय नहीं मिलता क्योंकि अदालतों के न्याय का आधार गवाहों की गवाही पर आधारित है। अदालतों में जजों की अपनी सूजबूझ, निष्पक्ष राय, मानवीय एवं नैतिक आधार, धर्म कर्म तथा रहम आदि का नगण्य स्थान है। वास्तविकता को जानते हुए भी, झूठी सच्ची गवाही के बिना किसी मुकद्‌मे का फैसला नहीं दे सकते। अदालतें देशकाल और सामाजिक वातावरण की कोई परवाह नहीं करती। उन्हें तो केवल अपने घिसे-पिटे कायदे कानूनों की रोशनी में निर्णय देने पर विवश होना पड़ता है। इस प्रकार के फैसले न्याय संगत, तर्क-संगत और निष्पक्ष न होकर सामाजिक अन्याय को बढ़ावा देने में मददगार साबित होते हैं। गवाह न मिलने या अपूर्णगवाही के कारण चोर, डाकू, कातिल साफ बच जाते हैं और फिर वे समाज में बेखटके बेधड़क होकर भ्रष्ट और घिनौने अत्याचार करते हैं तथा भ्रष्ट तौरतरीकों की परिपाटी डाल कर भ्रष्टाचार को पनपाने तथा बढ़ावा देने व अन्यों को प्रोत्साहित करने की भूमिका अदा करते हैं इस प्रकार सरकारी कानून और सरकारी अदालतों द्वारा उनके कर्त्तव्य को औपचारिक प्रक्रिया मात्र से जाने या अनजाने ढंग से, सामाजिक भ्रष्टाचार दूर करने या बढ़ावा देने का, देखा या अनदेखा खेल खेला जा रहा है। जबकि दूसरी और मानवीय आधारों पर सामाजिक संगठन, पंचायतें समाज सेवक व समाज सुधारकों को समाज में एक निराली, अनोखी और अद्‌भुत पैठ हैं, एक अलग भूमिका है। समाज की किसी भी समस्या पर यदि हम मानवीय तौरतरीकों से विचार करें, सद्‌भावना और भाई-चारे का संदेश दें, विशुद्ध पंचायती ढंग अपनाएं, इन्सान के मर्म और उसकी आत्मा छूएं, धार्मिक कार्यकलापों का सहारा लें तो निश्चिततौर पर हमें समस्या का समाधान खोजने तथा उसे स्थाईरूप देने में दिक्कत पेश नहीं आएगी।

उदाहरण स्वरूप सर्वखाप पंचायत, जो उत्तरी भारत का डेढ़ हजार साल पुराना पंचायती सामाजिक संगठन है, ने पिछले पांच सालों में सैकड़ों नहीं हजारों ऐसे अद्‌भुत और प्रभावशाली निर्णय ले कर यह सिद्ध कर दिया है कि सरकारी अदालतों से, सर्वखाप पंचायत, कहीं अधिक न्यायसंगत, स्थाई और बढ़िया निर्णय ले सकती है। जहां सरकार का दहेज विरोधी कानून बेअसर हो जाता है, जहां सरकार के बालविवाह, तलाक और अस्पृश्यता के कानून धरे रह जाते हैं वहां सर्वखाप पंचायत मैदान में आकर, उन्हें क्रियान्वित रूप देकर समाज में लागू करवाती है। दहेजलोभियों द्वारा दस-दस वर्ष से अपने घर बैठी विवाहित लड़कियों को सर्वखाप पंचायत ने अपने प्रभावशाली पंच फैसलों द्वारा दहेज के लालचियों को पंचायत से सरेआम दण्डित कर अबलाओं को उनकी ससुराल भिजवाया। बीस-बीस साल पुरानी कत्लोगारत की पुरानी दुश्मनी, जिसके माध्यम से दर्जनों कत्ल हो चुके थे, सर्वखाप पंचायत ने उसे दोस्ती और भाई-चारे में बदल दिया। इसी प्रकार लाखों रुपयों की भूमि के झगड़ों को, जिसका फैसला झूठी गवाहियों के आधार पर उच्चतम न्यायालय से हो चुका था, सर्वखाप पंचायत नें सच्चाई को उजागर कर उसे भाई-चारे तथा पंचायती न्याय का रूप देकर उजड़े हुए लोगों को फिर से बसाया।

सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत :—

"सर्व" का अर्थ है व्यापक या अधिक। "सर्व जातीय" का अर्थ है, जहां बहुत सारी बिरादरियां बिना किसी भेदभाव के, धर्म व मज़हब से ऊपर उठकर अपने देशकाल और रीति-रिवाज अनुसार एक साथ रहती और सोचती हों और जिनका कार्यकलाप तथा समस्याएं एक जैसी हों उन्हें "सर्वजातीय" नाम से लक्षित किया जाता है। "खाप" संस्कृत का शब्द है। ख+आप=खाप, "ख" का अर्थ आकाश या व्यापक और 'आप' का अर्थ, जल, पवित्र और शांतिदायक पदार्थ। "पंचायत" : जहां पांच या पांच से अधिक निष्पक्ष, सत्यावादी, व्यावहारिक, न्यायप्रिय, घटित समस्या से परिचित व्यक्तियों के समूह को पंचायत कहते हैं।

अत: "सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत" का शाब्दिक अर्थ है कि जो संगठन सबका सामूहिक, आकाश की भांति व्यापक, जल की भांति पवित्र तथा शांतिदायक हो और जो सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक समस्याओं अथवा कुरीति एवम् बुराइयों को निष्पक्ष, सत्यप्रिय, व्यावहारिक और न्यायसंगत तौरतरीकों से ईश्वर को सर्वव्यापक मानकर उचित ढंग से सुलझाए तथा अपना फैसला देकर लागू करे, उस सर्वोच्च सामाजिक संगठन को समाज में, "सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत" कहते हैं।

जन्म —

ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर प्राचीनकाल में चक्रवर्ती महाराज शिव के पुत्र गणेश ने गणों की स्थापना की थी। इसलिए उनका नाम

(शेषांश पृष्ठ ५ पर)

सार्वदेशिक सभा का निर्णय

अन्तरंग सभा : दिनांक २८ जनवरी १९८८ समय : प्रातः १०-३० बजे से स्थान : आर्यसमाज मन्दिर दीवानहाल दिल्ली

एजेण्डा का विषय सं० १४ (निश्चय संख्या १४) :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशों को नहीं मानने और उन आदेशों का उल्लंघन करने, तथा अनुशासन भंग करने के अपराध में २२ जन १९८६ की अन्तरंग सभा की बैठक में पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र जी के विरुद्ध निम्न कार्यवाही करने का निर्णय लिया गया था—

"श्री वीरेन्द्र जी को अनुशासन भंग करने के आरोप में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पद से पृथक् करते हुए आगामी ३ वर्षों के लिए आर्यसमाज के किसी भी पद के लिए चुनाव के अयोग्य घोषित किया गया था। निश्चय के क्रियान्वयन का अधिकार सभा प्रधान जी को दिया गया था।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने पंजाब की विशेष परिस्थितियों को दृष्टिगत करते हुए श्री वीरेन्द्र जी के प्रति उदारता का व्यवहार करते हुए अन्तरंग सभा के निर्णय को कार्यान्वित नहीं किया और श्री वीरेन्द्र जी को अपने व्यवहार को सुधारने के लिए पर्याप्त समय दिया।

श्री सभा प्रधान जी द्वारा प्रदत्त इस पर्याप्त समय का श्री वीरेन्द्र जी ने दुरुपयोग तथा निरन्तर सभा के आदेशों का उल्लंघन किया। साथ ही दिनांक २६-९-८६ को श्री वीरेन्द्र जी की लिखित सहमति के आधार पर सभा के वरिष्ठ उपप्रधान को विवाद के प्रत्येक पहलू पर विचार करने हेतु अपना निर्णय देने के लिए नियुक्त किया गया। श्री वीरेन्द्र जी ने इनके निर्णय को अक्षरशः पालन करने का लिखित रूप से आश्वासन भी दिया।

वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने यथोचित रूप से विवाद के विषय में सभी सम्बन्धित पक्षों को श्री वीरेन्द्र जी के साथ अपने पक्ष को रखने के लिए पूर्ण समय भी प्रदान किया। फिर दिनांक ३०-९-१९८६ को अपना निर्णय (एवार्ड) दिया। श्री वीरेन्द्र जी अपने आश्वासन का पालन न करते हुए नित्य नए रूप से सभा के आदेशों व अनुशासन को न मानकर सदा अनुशासन भंग करते रहे और अदालत की कानूनी कार्यवाहियों में उलझाये रहे। एक वर्ष के लम्बे समय तक निरीक्षण के उपरान्त भी जब श्री वीरेन्द्र जी अपने अनुचित कार्यों से बाज नहीं आये तो अन्तरंग सभा के निर्णय के पश्चात् सभा प्रधान जी ने २४-९-१९८७ को निम्न आशय का पत्र श्री वीरेन्द्र जी को भेजा।

"सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा दि० २० सितम्बर १९८७ को आर्यसमाज मन्दिर दीवानहाल दिल्ली में पारित प्रस्ताव के अनुसार सभा प्रधान को यह अधिकार दिया गया है कि वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के त्रिशासन सम्बन्धी आदेशों के उल्लंघन करने के जिम्मेदार व्यक्तियों को उचित दण्ड देने की व्यवस्था करे।

इस प्रस्ताव पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने के अनन्तर मैंने आपको निम्नलिखित तथ्यों पर दोषी पाया है।

१. आपने संयुक्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विभाजन सम्बन्धी २६-२७ अप्रैल १९७५ के मूल प्रस्तावों तथा सार्वदेशिक सभा द्वारा त्रिशासन के निर्णयों की खुली अवहेलना की है।

२. श्रीरामचन्द्रराव वन्देमातरम् द्वारा दिये गए फैसले (एवार्ड) के विरुद्ध कार्य किया है, जबकि इस निर्णय को मानने के लिए आपने लिखित आश्वासन दे रखा था। इतना ही नहीं आपने उस फैसले को निष्प्रभावी बनाने के लिए प्रयत्न किये और उसे मानने से इंकार भी किया है। तथा आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मन्त्री डा० धर्मपाल जी को अपने ३ सितम्बर १९८७ के पत्र में स्पष्ट रूप से प्रकट किया है।

३. आपने न्यायालय में मुकद्दमे दायर करने भी बन्द नहीं किये।

४. आपने बराबर अनुशासनहीनता पूर्ण कार्य करके आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन की अवहेलना की है।

५. पंजाब सभा के त्रिशासन सम्बन्धी प्रस्ताव पर सार्वदेशिक सभा १० जुलाई, १९७५ को दिए गए आदेश और पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव द्वारा दिए गए निर्णय के विरुद्ध आपने आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अनुमति के बिना स्वेच्छाचारिता करते हुए हरिद्वार में हरिराम इण्टर कालेज तथा शंकर आश्रम की जमीनें बेचने का कार्यक्रम प्रारम्भ कर रखा है, जबकि त्रिशासन के निश्चय के अनुसार पंजाब, हरयाणा और दिल्ली की राजकीय सीमा से बाहर जो भी सम्पत्ति तथा संस्थाएं हैं, उन पर तीनों प्रतिनिधि सभाओं का समान अधिकार है।

६. सार्वदेशिक सभा के विगत २२ जून, १९८६ के प्रस्ताव तथा २० सितम्बर १९८७ के प्रस्ताव की छाया में तथा उपरोक्त तथ्यों को देखते हुए आपको आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पद से हटाने के अतिरिक्त मेरे पास और कोई विकल्प नहीं रहा। साथ ही आप आर्यसमाज से सम्बन्धित किसी भी संस्था के चुनावी पद के लिए अयोग्य घोषित किए जाते हैं।

अतः सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा तथा सभा के विधान द्वारा प्रदत्त अधिकार से आपको आज २४ सितम्बर, १९८७ से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (जिसका कार्यालय गुरुदत्त भवन, कृष्णपुरा चौक जालन्धर है) के प्रधान पद से मुक्त किया जाता है और आपके स्थान पर सभा के वरिष्ठ उपप्रधान सभा के आगामी चुनाव तक कार्यभार सभालेंगे। आपने बार-बार हमारे अनुरोध की अवहेलना की है, अतः विवश होकर पांच वर्षों के पश्चात् उपरोक्त निर्णय लेना पड़ा।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान

किन्तु उपरोक्त आदेश पत्र का भी श्री वीरेन्द्र जी ने उल्लंघन किया।

अतः यह अन्तरंग सभा प्रधान जी के उक्त पत्र की सम्पुष्टि करते हुए यह आदेश देती है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की साधारण सभा दिनांक ४ अक्तूबर १९८७ में श्री वीरेन्द्र जी द्वारा सार्वदेशिक के सभा के विरुद्ध प्रधान पद के लिए खड़ा होना अवैध कार्य था। ऐसी अवस्था में श्री योगेन्द्रपाल सेठ ही प्रधान पद के लिए एकमात्र प्रत्याशी थे। और प्रधान निर्वाचित हुए। अतः प्रधान के रूप में उनका निर्वाचन वैध है और उनके द्वारा बनी पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा को मान्यता दी जाती है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

हरयाणा में आर्यसमाजों के उत्सवों की बहार

आर्यसमाज	अलाहर जि० कुरुक्षेत्र	३, ४, ५ मार्च
,,	मन्धार जि० कुरुक्षेत्र	४, ५, ६ ,,
,,	पाढा जि० करनाल	४, ५, ६ ,,
,,	कन्या गुरुकुल लोवाकलां जि० रोहतक	४, ५, ६ ,,
,,	वैदिक आश्रम मराडा जि० गुड़गांव	१२, १३ ,,
,,	गुरुकुल भैंसवालकलां जि० रोहतक	१२, १३ ,,
,,	कन्या गुरुकुल नरेला	१२, १३ ,,
,,	गुरुकुल डिकाडला जि० करनाल	११, १२, १३ ,,
,,	उर्वरक कालोनी पानीपत जि० करनाल	१३ ,,
,,	मुवाना जि० जीन्द	१८ से २० ,,
मेला प्रचार	सूर्य ग्रहण कुरुक्षेत्र	१६, १७, १८ ,,
आर्यसमाज	बहुअकबरपुर जि० रोहतक	१७ से १८ ,,
,,	आहूलाना त० गोहाना जि० रोहतक	२१, २२, २३ ,,
,,	कन्या गुरुकुल मोरमाजरा जि० करनाल	२५, २६, २७ ,,
,,	फतेहपुर जि० कुरुक्षेत्र	२६, २७ ,,
,,	कौल जि० कुरुक्षेत्र	२५, २६, २७ ,,
,,	गोहाना मण्डी जि० सोनीपत	२५, २६: २७ ,,
,,	वालसमन्द जि० हिसार	२५, २६, २७ ,,
,,	घरोण्डा शहर जि० करनाल	१, २, ३ अप्रैल
,,	गुरुकुल कुरुक्षेत्र	१, २, ३ ,,
,,	नारायणगढ़ जि० अम्बाला	८, ९, १० ,,
,,	माडल टाउन सोनीपत	८, ९, १० ,,
,,	नरवाना जि० जीन्द	८, ९, १० ,,
,,	नई कालोनी गुड़गांव	८, ९, १० ,,
,,	नरेला	२३, २४ ,,
,,	लोहारु जि० भिवानी	३० अप्रैल १ मई

आर्यसमाजों से निवेदन है कि जिन्होंने अपने उत्सव अभी तक नही रखे हैं वे अप्रैल के तीसरे तथा चौथे सप्ताह में रख कर अपनी तिथियां सुरक्षित करवा लेवें, ताकि सभा की ओर से उपदेशकों तथा भजन मण्डलियों की व्यवस्था करने में सुविधा रहे।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

दिल्ली में सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत का विराट् अधिवेशन

५ मार्च को गोमठ मन्दिर मैदान गढी (निकट महरौली) नई दिल्ली में एक विशाल सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत के अधिवेशन का आयोजन किया गया है। स्मरण रहे लाखों वर्षों से भारत का धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक संचालन गणों, खापों, पालों परगनों से हो रहा है। दिल्ली, हरयाणा, राजस्थान एवं उत्तरप्रदेश की सभी बिरादरियों की सभी खाप, पाल, बाहरे, तपे व खापों को मिलाकर सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत के नाम का सामाजिक सगठन है।

इस अधिवेशन में चारों प्रान्तों की सभी खापें निम्न मुद्दों पर विचार करेंगी :—

(१) सभी बिरादरियों में विवाह शादियों में खर्चे कम करना। (२) विवाहित छोड़ी हुई लड़कियों को पंचायती फैसले द्वारा उनकी ससुराल भिजवाना। (३) ग्रामों में आपसी मुकदमेबाजी को पंचायती फैसलों से निपटाना। (४) द्वेष की आग से कत्लोगारत व नरसंहार को पंचायती फैसले द्वारा रोकना। (५) चारों प्रान्तों के नवयुवकों में पंचायती चरित्र एवं सामाजिक बहुमुखी विकास के लिए भावना उत्पन्न करना। (६) दानी गांव मैदान गढी द्वारा गोमठ मन्दिर को दान दिए गए विशाल भूखण्ड पर धार्मिक सामाजिक अर्थात् पंचायती कार्यों की ठोस योजना तैयार करना। (७) देश में बढ़ती हुई शराबखोरी को समाप्त करना। (८) पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति तथा विशाल दंगल। सभी खापों (पालों) तपों, बाहरों, व परगनों के मुखिया एवं तपेदारों से प्रार्थना है कि ५ मार्च को होने वाली विराट् पंचायत की चिट्ठी लिखकर भेज देवे तथा भारी संख्या में अपनी खापों से गोमठ मन्दिर मैदान गढो नई दिल्ली में पहुंचे।

मार्ग—हरयाणा की ओर से आने वाले बहादुरगढ़ से नजफगढ, महरौली, छत्तरपुर सतबड़ो से गोमठ मन्दिर। बस अड्डे तथा रेलवे स्टेशन से महरौली पहुँचकर बस नं० ५१६ व ५२३ से ग्राम सतबड़ी उतरें। मोरीगेट से ५०१ बस द्वारा साकेत एवं वहां से ५०१ बस द्वारा मैदान गढी पहुंचे। भोजन तथा निवास की व्यवस्था प्रबन्ध समिति की ओर से होगी।

निवेदक :— स्वामी कर्मपाल प्रधान सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत
गोमठ मन्दिर मैदान गढी, नई दिल्ली-३०

होली का त्यौहार मनाएं

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, सुलतानपुर (उ० प्र०)

पूर्ण समापन हो बसुधा पर,
विस्तृत सब अन्याय-अनय का।
फहराए नभमण्डल में ध्वज,
मानवता की दिव्य विजय का।

प्रेम—दया—ममता—समता के,
भाव हृदय में हों जाग्रत।
नवजीवन से आह्लादित हों,
तत्व सभी जो क्षत-विक्षत।

जाति-पांति के भेद मिटें सब,
छूत-छात का पूर्ण समापन।
जन जन में जागे निश्चय ही,
प्यार भरा अतुलित अपनापन।

उग्रवाद — आतंकवाद का,
भय न हमें होवे किंचित्।
अभय बनें सब भूमि निवासी,
प्रेमामृत से हों अभिसिंचित।

सद्भावों के भाव उदित हों,
हर्षित हो धरती का जन-मन।
सौम्य—सरसता—समरसता से,
आप्लावित हो मानव-अभिमन।

निर्धनता—भुखमरी—घृणा का,
दानव निर्भय आज जलाएं।
सद्व्यवहार सुजाग्रत करके,
होली का त्यौहार मनाएं।

(शेषांश पृष्ठ २ का)

गणेश पड़ गया। काफी लम्बे समय तक सामाजिक क्रियाकलापों में गण चलते रहे। तत्पश्चात् महाभारत के समय में योगिराज श्री कृष्ण जी महाराज ने इन गणों को संगठित कर गणराज्य की स्थापना की और इन गणों के मुखियाओं को लेकर उस समय की विभिन्न सामाजिक व राजनीतिक समस्याओं को सुलझाते रहे। बाद में इस न्याय प्रणाली का श्रीगणेश सर्वखाप पंचायत के रूप में महाराजा हर्षवर्धन ने वर्ष सात सौ एक में किया था। उस वर्ष इलाहबाद में कुम्भ का पर्व था उसी में उन्होंने इस संगठन एवं संस्था के गठन की घोषणा की। तब से लेकर अब तक यह संगठन एवं संस्था समाज से प्रत्येक प्रकार की कुरीतियां मिटाने, सामाजिक एवं धार्मिक समस्यायें सुलझाने, न्यायोचित ढग से पंच फैसला करने, शोषण के विरुद्ध लड़ने तथा आर्थिक गुलामी से मनुष्य मात्र को मुक्ति दिलाने में संघर्षरत रही है।

संगठनात्मक ढांचा :—

इस संस्था का गठन गांव की ईकाई से लेकर इसके पूरे कार्यक्षेत्र तक होता है। 'सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत' की शृंखला गांव में परिवार, ठोला, पाना (पट्टी) अथवा पूरे गांव के बाद तपे, बारहे, थाम्बे, खाप (पाल) और फिर सर्वखाप तक व्याप्त है। गांव में परिवार की लगमात के कुछ कुनबों को मिलाकर ठोला, कई ठोलों को मिलाकर पाना (पट्टी) कई पानों (पट्टियों) को मिलाकर गांव, कई गांवों को मिलाकर तपा (बारहा, थाम्बा) कई तपों को मिलाकर खाप और सब खापों को मिलाकर सर्वखाप होती है। सर्वखाप के नियम, कार्यवाही तथा मान्यताओं के आधार पर गांव में परिवार से लेकर सर्वखाप की उच्चतम इकाई तक समस्याओं तथा झगड़ों के निपटारे का वही क्रम चलता है जो सरकारी अदालतों का निर्धारित है। यानि जैसे निचली साधारण अदालत से लेकर देश के उच्चतम न्यायालय तक। इसी प्रकार कोई समस्या या झगड़ा गांव में परिवार के बड़े, बूढ़ों से न निपटे तो उसे भाई चारे के ठोले, पाने गांव, तपा, खाप तथा सर्वखाप तक पहुंचाया जाता है। जिस प्रकार सरकार के उच्चतम न्यायालय के बाद कोई अपील नहो होती और उसका निर्णय अन्तिम होता है इसी प्रकार सर्वखाप पंचायत के इस सामाजिक न्यायालय का निर्णय भी अन्तिम और सर्वमान्य होता है। सर्वखाप पचायत का फैसला न्याय संगत, सत्य पर आधारित और सर्वोपरि माना जाता है।

कार्यक्षेत्र—

हांलाकि शिवजी के पुत्र गणेश से श्रीकृष्ण महाराज और तत्पश्चात् महाराजा हर्षवर्धन ने इस संस्था के सार्वभौम व्यापकता की कामना की थी परन्तु अब तक इस संस्था का कार्यक्षेत्र हरयाणा, दिल्ली पश्चिमी उत्तर प्रदेश, दक्षिणी राजस्थान और मध्य प्रदेश का दक्षिणी-पश्चिमी क्षेत्र रहा है। क्योंकि भारत के अन्य भागों की अपेक्षा यह भू-भाग अधिक शिक्षित, जागरूक, जुझारू, संगठित, कृषि के आधार पर अधिक उपजाऊ तथा संस्कृति के आधार पर इसके रीति-रिवाज, बोलचाल, रहन-सहन, पहनावा रंग रूप, विवाह-शादियों के रस्मो-रिवाज, भाषा आदि सभी बातों में अधिक समन्वय है।

इस संस्था ने अपने सामाजिक कार्य-कलापों के अतिरिक्त देश की आज़ादी की जंग में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सन् १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम से लेकर सन् १९४७ तक यह संस्था बराबर आज़ादी की जद्दोजहद में जूझती रही। सर्वखाप के हजारों योद्धाओं के बलिदान तथा जेलयातनायें सहने की कहानियों से भारत का इतिहास भरा पड़ा है। हालांकि इस संगठन ने कभी राजनैतिक पार्टी का रूप धारण नहीं किया परन्तु फिर भी यह संस्था राजनैतिक घटनाओं एवं परिस्थितियों का मूल्यांकन कर, समय-समय पर सरकार को, सामाजिक तथा धार्मिक मान्यताओं के आधार पर, सामाजिक समस्याओं के निराकरण हेतु, सहयोग प्रदान करती रही है। देश की वर्तमान बिगड़ी हुई सामाजिक परिस्थिति को मद्दे नज़र रखते हुए तो सर्वखाप पंचायत की महत्ता, अनिवार्यता तथा उपयोगिता और भी अधिक बढ़ गई है।

पंचायती न्याय सभा बनाम सरकारी न्यायालय—

यदि हम अपने देश की सरकारी अदालतों के निर्णयों तथा सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत के फैसलों की सार्थकता, न्यायप्रियता, सत्यता और निष्पक्षता पर नजर डालें तो हम इन दोनो सरकारी तथा सामाजिक अदालतों के निर्णयों में रात-दिन का अन्तर देख सकते हैं। सरकारी अदालतो की प्रक्रिया इतनी जटिल, देरपा, महगा और निरर्थक है जिससे जनसाधारण ऊब ही नहो जाता बल्कि निराश, हताश, निढाल और बेहाल हो जाता है। एक लम्बे समय तक वादी न्याय की टोह में अदालतों की खाक छानता रहता है। हर पन्द्रह बीस दिन के बाद पेशी पर पेशी साल दर साल और कई केसों में तो पन्द्रह और बीस साल तक मुकद्दमा चलता रहता है। पीढियां गुजर जाती हैं परन्तु न्याय उपलब्ध नहीं होता। वादी झूठे-सच्चे गवाह बनाने और प्रतिवादी उन्हें तोड़ने में, दोनों बराबर उलझे रहते हैं। सालो लम्बा समय नष्ट होने तथा हजारों रुपयों की बरबादी के बाद भी निष्पक्ष न्याय की आशा संदिग्ध बनो रहती है। इन्सान के जीवन का मूल्यवान समय अदालतों की भेंट चढ जाता है। इनके अतिरिक्त सरकारी अदालतों का सबसे बड़ा आश्चर्य यह है कि उनके निर्णयों का सारा आधार गवाहों की गवाही पर टिका हुआ है। वादी को अपने केस की सत्यता सिद्ध करने के लिए अदालत में गवाह जुटाने पड़ते हैं चाहे वे घटनास्थल पर हाज़िर थे या नहीं। यदि गवाही ठीक न दी गई हो तो केस चाहे कितना सच्चा क्यों न हो उसे खारिज होते देर नहीं लगती। जजों की निष्पक्षता और न्यायप्रियता कानूनी पेचीदगियों के दायरे में घिरी रहती है। जजों को मुकद्मे के रिकार्ड के का पाबन्द है, अपना निर्णय देना पड़ता है। देश की न्यायपालिका जिस फरसूदा कानून के घेरे में बन्द है उससे न्याय को आशा कम और निराशा अधिक है।

जबकि दूसरी तरफ हम सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत की न्याय प्रक्रिया पर नज़र डाले तो हमें न्याय की मंजिल करीब नजर आयेगी। सरकारी अदालतों की अपेक्षा यदि पंचायत के न्याय को सस्ता, सरल, उचित, न्यायसंगत, स्थाई और निष्पक्ष कहें तो गलत न होगा। जहां सरकारी अदालतो का न्याय महंगा और देरपा है वहां पंचायत अपनो एक दो बैठकों में ही निर्णय दे देती है। जहा तक खर्च का सवाल है वह पूर्णरूपेण नि:शुल्क है। इसके अतिरिक्त अदालतों की तरह पंचायत में कोई झूठा गवाह पेश नहीं हो सकता। क्योंकि भरी पंचायत में लोगो को सच और झूठ का परीक्षण करते देर नहीं लगती। मामले की तह तक पहुंचकर दूध और पानी छानती है। पंचायत का फैसला, अदालत की बन्द कोठरी की अपेक्षा खुलेआम होता है। समाज की मान्यताओं से बन्धे हुए प्रत्येक सामाजिक प्राणी को समाज की लोक लाज और मर्यादाओं की पाबन्दी का लिहाज करना पड़ता है। यही कारण है कि पंच फैसलों का समाज में आदर और सम्मान है। लोग पंचायत के निर्णय को सामाजिक वरदान मानकर स्वीकार करते हैं। अपराधी व दोषी को जब भरी पंचायत में दण्डित किया जाता है और वह हाथ जोड़कर निर्णय स्वीकार करता है तो फिर वह उसका पाबन्द भी रहता है। इस तरह पंचायत का निर्णय स्थायी होता है। दोषी अपना सामाजिक बहिष्कार और मुंह काला करने तक दण्डों को पंचायत में सिर झुकाकर और हाथ जोड़कर स्वीकार कर लेता है।

अब सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत के प्रधान स्वामी कर्मपाल ने, पंचायत के केन्द्रीय कार्यालय गौमठ मन्दिर मैदान गढ़ी, नई दिल्ली में दिनांक ५ मार्च १९८८ को सर्वखाप पंचायत बुलाई है ताकि दहेज और दहेज के नाम पर पनपी कुरीतियो को पूरी तरह समाप्त किया जा सके, दहेज या किसी भी झगड़े के कारण विवाहित छोड़ी हुई लड़कियों को सम्मान पूर्वक उनकी ससुराल भिजवाया जा सके, नवयुवकों में नैतिक कर्त्तव्य की भावना उत्पन्न कर उन्हें पचायती चरित्र में ढाला जा सके और पंचायत के फैसलों को समाज में पूरी दृढता से लागू किया जा सके। स्वामी कर्मपाल के कथनानुसार उस दिन चारो प्रान्तों के लाखों पंच ऐतिहासिक फैसले लेकर उन्हें समाज में कड़ाई से लागू करने का संकल्प लेंगे।

हरयाणा के आर्यसमाजों में ऋषिबोधोत्सव के समाचार

सभा कार्यालय में प्राप्त समाचारों के अनुसार निम्नलिखित आर्यसमाजों में ऋषि दयानन्द बोधोत्सव धूम-धाम से मनाये गए :—

१. गोविन्दनगर एवं महर्षि दयानन्द मार्ग अम्बाला छावनी

वैदिक प्रचार मण्डल ७२ गोविन्दनगर अम्बाला छावनी की ओर से ऋषिबोधोत्सव उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्य श्री देवव्रत जी, डा० विक्रमकुमार 'विवेकी', डा० ओ० पी० विद्यार्थी आदि ने ऋषि जीवनी पर प्रकाश डाला। इसी दिन आर्यसमाज स्वामी दयानन्द मार्ग में भी ऋषिबोध दिवस पर हरयाणा की मन्त्री सुषमा स्वराज ने स्वामी दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित की। नगरपालिका के अध्यक्ष श्री सतीशकुमार मित्तल, श्रीमती विजय गुप्ता सदस्य नगरपालिका, डा० जयदेव ने भी ऋषिबोध दिवस पर अपने विचार रखे। —वेदमित्र हापुड़वाले

२. जवाहर नगर पलवल शहर जि० फरीदाबाद

१६ फरवरी को आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल जि० फरीदाबाद में नगर की तीनों आर्यसमाजों की ओर से श्री मोहनलाल खण्ड शिक्षा अधिकारी पलवल की अध्यक्षता में ऋषि बोधोत्सव उत्साहपूर्वक मनाया गया। श्री जयप्रकाश आर्य, श्री गोविन्दराम, श्री गुरुदत्त, श्री वीरभानु श्री भगवानदास, श्री धनपत आर्य तथा श्री लक्ष्मीचन्द आर्य ने स्वामी जी के जीवन पर रोशनी डाली। —आनन्दस्वरूप, मन्त्री

३. कालका जिला अम्बाला

१४ से १६ फरवरी को आर्यसमाज कालका जि० अम्बाला में ऋषि बोधोत्सव धूमधाम से मनाया गया। श्री कृष्णकान्त आर्य पूर्व ईसाई प्रचारक ने तीनों दिन ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज पर अपने विचार प्रस्तुत किए। —क्षेमचन्द आर्य, प्रचारमन्त्री

४. सिरसा

१६ फरवरी को आर्यसमाज मन्दिर में ऋषिबोध दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर नगर के विद्यालयों के छात्र एव छात्राओं के भाषण तथा गायन प्रतियोगिता हुई। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्तकर्त्ताओं को डा० रणधीरसिंह सांगवान प्रधान आर्यसमाज ने पुरस्कार वितरित किये। —सत्यपाल आर्य मन्त्री

५. रेलवे मार्ग यमुनानगर जिला अम्बाला

१३ से १६ फरवरी तक सभा की भजन मण्डली श्री सीताराम आर्य ने ऋषि बोधोत्सव पर भजनों द्वारा ऋषि जीवन पर प्रकाश डाला। ३०० रुपये वेद प्रचारार्थ सभा को प्राप्त हुए।

६. अर्जुननगर गुड़गांव

१६ फरवरी को नगर के सभी आर्यसमाजों की ओर से ऋषिबोध दिवस धूमधाम से मनाया गया।

७. गोहाना शहर तथा गोहाना मण्डी जि० सोनीपत

१४ फरवरी को आर्यसमाज गोहाना मण्डी तथा १४ से १६ फरवरी तक प० चिरञ्जीलाल की भजन मण्डली ने ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज पर मनोहर भजन सुनाये।

८. महर्षि दयानन्द वैदिकधाम मार्केट कुरुक्षेत्र

आर्यसमाज थानेसर की ओर से १६ फरवरी को महर्षि दयानन्द वैदिकधाम मार्केट कुरुक्षेत्र में ऋषिबोध दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर पं० विद्याभूषण आर्य भजनोपदेशक ने अपने प्रभावशाली भजनों द्वारा ऋषि गाथा सुनाई।

९. फरीदाबाद

आर्यसमाज सेक्टर -७ ए० में समस्त फरीदाबाद क्षेत्र की ओर से पर्व धूम-धाम तथा सोल्लास मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा पं० श्री ब्रह्मप्रकाश वागीश विद्यावाचस्पति थे। समारोह के मुख्य अतिथि प्रधानाचार्य श्री आर्य वीर भल्ला डी०ए०वी० विद्यालय सेक्टर -१४ फरीदाबाद थे। अध्यक्षता श्री भीमसेन जी वेदालंकार बल्लबगढ़ ने की। मुख्य वक्ता श्री महेश विद्यालंकार दिल्ली तथा पं० ब्रह्मप्रकाश शर्मा वागीश आदि थे। अनेक छात्र-छात्राओं ने प्रभावशाली कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

अन्त में प्रीति भोज ऋषिलंगर का विशाल आयोजन हुआ जिसमें लगभग दो हजार लोगों ने भाग लिया तथा दिल खोलकर दान दिया।

प्रवेश की सूचना

१. दर्शन एवं योगप्रशिक्षण-शिविर (तीन वर्ष की नवीन योजना) में भाग लेने वाले ब्रह्मचारियों के लिए चैत्र शु० १-२०४५ (१८-३-८८) को प्रवेश प्रारम्भ है। प्रवेशार्थी की योग्यता पूर्व प्रकाशित विज्ञप्ति के अनुसार होनी चाहिए।

२. प्रारम्भिक प्रवेश करने के पश्चात् तीन मास तक प्रवेशार्थी की सब प्रकार से परीक्षा की जावेगी। पुनः सुयोग्य सिद्ध होने पर ही, उसको स्थायी प्रवेश दिया जावेगा, अन्यथा नहीं।

३. हमने पूर्व प्रकाशित सूचना में मीमांसावादर्शन के सम्पूर्ण अध्यापन के पश्चात् नवीन ब्रह्मचारियों को प्रवेश देने का निर्णय किया था परन्तु अब अनेक बाधाओं के कारण उसे परिवर्तित करके चैत्र शु० १-२०४५ कर दिया है।

स्वामी सत्यपति
दर्शन एवं योगप्रशिक्षणशिविर आर्यवन विकास फाम
रोजड पो०. सागपुर
जिला साबरकांठा (गुजरात) ३८३३०७

५७ परिवारों के २२९ ईसाई वैदिक धर्म में

२ फरवरी को गुरुकुल आमसेना के महोत्सव पर १५ परिवारों के ४१ ईसाई तथा १० फरवरी को ग्राम टुंगीवन्दली (सम्बलपुर) में ४२ परिवारों को १८० ईसाइयों ने पुनः वैदिक धर्म में प्रवेश किया। इस अवसर पर महात्मा प्रेमप्रकाश जी घुरी, श्री स्वामी ओमानन्द जी हरिद्वार, वानप्रस्थी देवशर्मा जी दयानन्द मठ दीनानगर आदि अनेक साधु संन्यासी इन्हें आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित थे। संस्कार समारोह अत्यन्त उल्लासमय वातावरण में श्री पं० विशिकेशन शास्त्री ने कराया। ग्राम टुंगीवन्दली में कुछ ईसाई प्रचारकों ने बहुत बाधा डालने की चेष्टा की। परन्तु ग्रामवासियों के प्रयत्नों से उनका षड्यन्त्र असफल हो गया। ध्यान रहे इस समारोह का आयोजन ठीक चर्च के सामने उत्साही ग्रामवासियों ने किया था।

ध्यान रहे गत कई वर्ष से शुद्धि का यह आन्दोलन श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती प्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रयत्न और पुरुषार्थ से चल रहा है। इस महत् कार्य में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी उपमन्त्री पृथ्वीराजजी शास्त्री, श्री महात्मा प्रेम प्रकाश घुरी आदि का पूर्ण आशीर्वाद एवं सहयोग मिला रहा है।

वामदेव आर्य मुख्याध्यापक
गुरुकुल आश्रम, आमसेना खरियार रोड, कालाहाण्डी,

अबला जीवन हाय तुम्हारी

—ओमप्रकाश दुहन

कानपुर में तीन बहनों द्वारा सामूहिक आत्महत्या करने का समाचार पिछले दिनों अखबारों में छपा था। तीनों बहनें शिक्षित और वयस्क थीं। बड़ी ने एम० ए० करने के पश्चात् आशुलिपि और टंकण का प्रशिक्षण कर रखा था। मंझली एम० ए० की पढ़ाई कर रही थी। छोटी बहन अभी बी० ए० (अन्तिम) की छात्रा थी। उनका अभागा पिता किसी बीमा कम्पनी में विकास अधिकारी है। परिवार में तीनों मृतक बहनों के अतिरिक्त दो छोटी बहनें, एक छोटा भाई और माता-पिता हैं। भाई सबसे छोटा है। क्योंकि भाई सबसे छोटा है, स्यात् इसी लिए परिवार बड़ा हो गया। दुर्घटना के समय मां-बाप किसी सम्बन्धी के यहां विवाह पर गए हुए थे। तीनों छोटे बच्चों को मृतक बहनों के अनुरोध पर अपने साथ ले गए थे। ऐसा लगता है कि तीनों ने यह घातक निर्णय पहले ही ले लिया था। अपने कमरे में तीनों एकसाथ साड़ियों से फन्दा लगाकर पंखों से लटक गईं। पढ़ी-लिखी होने पर भी उन्होंने इस कदम का कोई कारण किसी पत्र में लिखकर बताया नहीं नहीं। दो पंक्तियों का एक नोट था जिसमें उनका पोस्टमार्टम न करने का अनुरोध था।

यह साधारण आत्महत्या की दुर्घटना नहीं है। फन्दे से लटकते शव समाज में व्याप्त विकृतियों का मुंह-बोलते चित्र हैं। सबसे बड़ी लड़की शिक्षित एवं प्रशिक्षित थी। आयु २६ वर्ष। आयु विवाह योग्य परन्तु अविवाहित। रोजगार की तलाश, परन्तु बेरोजगार। आजकल विवाह के लिए धन चाहिए। धन सबके पास होता नहीं। उनके पिता के पास भी न होगा। करोड़ों पिताओं के पास कहां है इतना धन कि वे अगलों की मांगें पूरी कर सकें। वरना तीनों बहनें मानसिकरूप से स्वस्थ और संवेदनशील थी। तभी अपने माता-पिता की चिन्ताओं का समाधान करने के लिए अपने अमूल्य जीवन का उत्सर्ग कर दिया। यह आवेश अथवा आक्रोशजन्य हताशा के कारण की गई आत्महत्या का मामला नहीं है। तीनों बहनों ने सोच-समझकर योजनाबद्ध ढग से विवश होकर ऐसा किया है। कोई लम्बा-चौड़ा पत्र नहीं लिखा। दो पंक्तियों का आवेदन था। वे भली-भांति जानती होंगी कि इस पर भी कोई ध्यान न देगा। क्योंकि सबसे बड़ी बहिन ने रोजगार के लिए सैंकड़ों आवेदन सरकारी तथा गैरसरकारी संस्थाओं और संगठनो को दिए होंगे। परन्तु जब उन बड़े-बड़े पत्रों पर किसी ने कभी ध्यान नहीं दिया, जिनमें शैक्षिक योग्यता और पारिवारिक परिवेश के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक लिखा होगा, तब अन्तिम दो पंक्तियों की कौन परवाह करेगा। उनका अनुमान सही था। उनके शवों का पोस्टमार्टम हुआ। क्योंकि कानून ऐसा है। हम तो कानून के रक्षक हैं। कानून किसके लिए है, इससे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है। हमें किसी की भावनाओं, यातनाओं तथा वेदनाओं से कोई मतलब नहीं है। संसार दुःखों से भरा पड़ा है। किस-किस के दुःख दूर करें। दूसरों के शव से हमें क्या लेना-देना। हम तो अपनी ही लाश अपने कंधों पर ढोए जा रहे है और जा कहां रहे हैं ? हमें दिशा ज्ञान नहीं है। केवल कदम-ताल कर रहे हैं।

अब प्रश्न है इन हत्याओं के लिए दोषी कौन ? इस प्रश्न का कानूनी उत्तर तो सीधा और सरल है क्योंकि यह एक आत्महत्या का मामला है, इसलिए किसी और को दोषी नहीं ठहराया जा सकता और न ही आगे किसी जांच की आवश्यकता शेष रह गई है। परन्तु यह एक सामयिक यक्ष प्रश्न है। ऐसी दुर्घटनाओं को देख-सुनकर भी हम समझते हैं कि हमारी बेटियां सुख से जी लेंगी। है कोई आधुनिक युधिष्ठिर जो प्रश्नों का उत्तर देकर इन निरीह एवं निर्दोष कन्याओं को पुनर्जीवित कर सके ?

ऋषिबोध विशेषांक की सफलता

सर्वहितकारी का 'ऋषिबोध विशेषांक' प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एवं आकर्षक बन पाया है। ऋषि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में काफी ठोस एवं महत्त्वपूर्ण सामग्री पढ़ने को मिली। शिव रात्रि के पवित्र दिवस पर आपने यह विशेषांक निकालकर एक अविस्मरणीय कार्य किया है।

विशेषांक की सफलता के लिए बधाई।

—रामकुमार सौरायण
जलधर जोशी चौहान
सोनीपत

पूर्ण नशाबन्दी की मांग करने के लिए मार्च में शराब के ठेकों की नीलामी के अवसर पर प्रदर्शनों के आयोजन को सफल करने के लिए आर्य नेताओं की अपील

हरयाणा प्रदेश में शराब की भयंकर खानत दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। शायद ही ऐसा कोई भाग्यशाली परिवार बचा होगा जिस घर में शराब न पहुंची हो। हरयाणा जो पहले दूध-दही के खाने के नाम से प्रसिद्ध था, आज वहां शराब की प्यालियों की भरमार है और हरयाणा की वैदिक संस्कृति नष्ट होने जा रही है। इसके प्रचार एवं प्रसार से किसान मजदूर बर्बाद होने लगे हैं। शराब के ठेकेदार तथा इस विभाग के अधिकारी, कर्मचारी तथा पुलीस के भ्रष्टअधिकारी मालामाल हो रहे हैं। यही कारण है कि जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं हैं, वहां भी चोरी छिपे अवैध रूप से शराब बिक रही है। ग्रामीण युवक शराब की बीमारी में फंस कर अपना तथा अपने परिवार का भविष्य अन्धकारमय बना रहे हैं। शिक्षा अधूरी रहने से बेरोजगारी बढ़ रही है। हरयाणा सरकार अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए शराब के ठेकों की संख्या में वृद्धि कर रही है, उसे हरयाणा की संस्कृति तथा शराब के सेवन के कारण बढ़ रहे भ्रष्टाचार की चिन्ता नहीं है। शराबी पियक्कड़ों से बहू-बेटियों की इज्जत भी खतरे में है।

अतः हम हरयाणा के शुभचिन्तक नर नारियों से अपील करते हैं कि देवभूमि हरयाणा की बर्बादी को बचाने तथा गुजरात राज्य की भांति हरयाणा में भी पूर्ण नशाबन्दी की मांग करने के लिए मार्च के प्रथम सप्ताह में जब सरकार ठेकों की निलामी करेगी, उस समय हरयाणा के मुख्यालयों पर प्रबल प्रदर्शनों के आयोजन में तन-मन तथा धन से सहयोग प्रदान करें।

निवेदक :

ओमानन्द सरस्वती	प्रो॰ शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री
प्रधान	प्रधान	मन्त्री
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा	बद्रीप्रसाद आर्य
		कोषाध्यक्ष

वार्षिक उत्सव

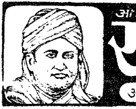
आर्यसमाज नरेला दिल्ली ४० का वार्षिकोत्सव २३, २४ अप्रैल १९८८ तदनुसार शनिवार, रविवार को आर्यसमाज मन्दिर में उत्साह पूर्वक मनाया जायेगा।

इस शुभ अवसर पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, आर्यसमाज सम्मेलन, संस्कृत सम्मेलन आदि में बड़े-बड़े साधु संन्यासियों तथा राजनेताओं के सम्मिलित होने की आशा है।

—मन्त्री आर्यसमाज नरेला

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४)
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री सह-सम्पादक—डा० प्रसवीर

वर्ष १५, अङ्क १५ ७ मार्च १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा का निश्चय

हरयाणा में शराब के ठेकों में वृद्धि करने के विरोध में ८ मार्च को जिला मुख्यालयों पर प्रदर्शन होंगे

(कार्यालय संवाददाता द्वारा)

रोहतक २८ फरवरी—आर्य प्रतिनिधि हरयाणा की अन्तरंग बैठक सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ में सम्पन्न हुई। इस बैठक में हरयाणा के कोने-कोने से पधारे आर्य नेताओं ने भाग लिया।

इस वर्ष हरयाणा में शराब के ठेकों की संख्या में वृद्धि किये जाने तथा शराब पीने के लिए अहाता बनवाने की सुविधा देने की सरकार की नीति पर चिन्ता प्रकट की गई क्योंकि शराब बिकने की अधिक सुविधा से शराब का प्रचार तथा प्रसार अधिक होगा और इसका सेवन करने से भ्रष्टाचार में भी वृद्धि होगी। किसान और मजदूरों की खून पसीने की कमाई शराब में नष्ट होगी और शराबियों के कारण बहू-बेटियों की इज्जत खतरे में पड़ जायेगी। इस प्रकार हरयाणा की वैदिक संस्कृति में विकृति होगी। सरकार को केवल अपनी आमदनी बढ़ाने की चिन्ता है परन्तु मानव विकास तथा चरित्र निर्माण के लिए सरकार कोई योजना नहीं बना रही। शराब से होने वाली आमदनी से जनता का विकास नहीं होगा अपितु अन्त में विनाश होगा।

अत: सभा ने हरयाणा के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं से अनुरोध किया है कि वे सरकार की शराब को बढ़ावा देने की नीति का विरोध करने के लिए ८ मार्च मंगलवार को प्रात: ११ बजे अपने-अपने जिलाधीश के कार्यालय के सामने प्रदर्शन करें और इस प्रदर्शन में अधिक से अधिक संख्या में नर-नारियों को सम्मिलित करके शराब जैसी सामाजिक बुराई को समाप्त करावें। इस समाज सुधार के कार्य में उन सभी धार्मिक तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं का सहयोग प्राप्त करें जो हरयाणा में शराब पर पाबन्दी लगवाना चाहते हैं। प्रदर्शन के पश्चात् जिलाधीश को ज्ञापन देकर मांग करें कि जिन पंचायतों ने शराब बन्दी के प्रस्ताव भेजे हुए हैं, उन ग्रामों में शराब के ठेके तुरन्त रद्द किये जायें और हरयाणा की संस्कृति की रक्षा के लिए पूर्ण नशाबन्दी लागू की जाये।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने अपने प्रस्ताव में सरकार को चेतावनी दी है कि यदि हरयाणा सरकार के कानून के अनुसार जिन पंचायतों ने शराब बन्दी के प्रस्ताव भेजे हुए हैं, उनमें शराब के ठेके नीलाम किये गए तो उन ग्रामों में धरणे आदि देकर ठेके बन्द करवाने के लिए संघर्ष किया जायेगा।

सभा ने आर्यसमाजों के अधिकारियों को यह भी निर्देश दिया है कि आर्यसमाज के जो सभासद शराब का सेवन करने लग गए हैं, उनकी सदस्यता समाप्त की जाये।

जिला हिसार में शराब बन्दी प्रचार अभियान पैदल यात्रा

दिन प्रतिदिन बढ़ रहे शराब के प्रचलन को देखते हुए दिनांक ९ फरवरी से १८ फरवरी १९८८ तक शराब बन्दी समिति हिसार की ओर से समिति प्रधान एवं सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी के नेतृत्व में ११ आर्य विद्वानों एवं कार्यकर्त्ताओं का काफला ग्राम लाडवा, सुल्तानपुर, उमरा, ढण्डेरी, रामायण, देपल, हांसी, दयालसिंह कालोनी, सैनीपुरा, ढाणीपाल, सिसाय, गंगन खेडी, जमावड़ी, कुम्भा, थुराना, पाली, माजरा, नारनौंद तक पहुंचा जिसमें प्रत्येक गांव में ओ३म् का झण्डा हाथ में लेकर गलियों में शराब विरोधी नारे लगाते हुवे दोपहर एवं रात्रि को सार्वजनिक स्थानों पर सभाओं का आयोजन किया। आर्य विद्वानों तथा भजनोपदेशकों के द्वारा शराब की बुराइयों को ऐतिहासिक प्रमाण देकर रोचक ढंग से समझाया गया एवं सरकार की शराब बढ़ावा नीति की कटु आलोचना की गई। लोगों से सामूहिक हाथ उठाकर शराब न पीने की प्रतिज्ञा करवाई गई। इस अभियान के दौरान काफी नर-नारियों ने जनेऊ धारण किए तथा शराब के साथ २ धूम्रपान न करने का व्रत लिया। प्रचार सुनकर बीड़ी के बण्डल तक तोड़े गए। गांव में शराब की अवैध शराब बिक्री को रोकने के लिए शराब बन्दी समिति का संगठन करने के लिए नवयुवकों को प्रेरित किया।

उपर्युक्त सभी गांवों में निम्न विद्वानों ने सभाओं को सम्बोधित किया सर्व श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, पं० भरतलाल शास्त्री, चौ० प्रतापसिंह आर्य, श्री संग्राम सिंह आर्य, भगत रामेश्वर दास आर्य, प्रो० ओमकुमार आर्य तथा पं० जयपाल सिंह आर्य की भजन पार्टी के सभी जगह शिक्षाप्रद भजन हुवे। अन्त में १८-२-८८ को रात्रि में नारनौंद में एक विशेष शराब बन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। अन्य विद्वानों के अतिरिक्त पं० सुल्तानसिंह की भजन पार्टी ने भी भाग लिया।

इस पैदल यात्रा में महात्मा अग्निदेव जी, वानप्रस्थ हरिसिंह जी, श्री जुवाहरसिंह आर्य, श्री धर्मचन्द आर्य, श्री दयालदास आर्य जयरामदास आर्य, सूबेसिंह आर्य, ब्र० राजेन्द्रसिंह जैन, ब्र० कुलबीर सिंह आर्य का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम बहुत ही प्रेरणाप्रद एवं सराहनीय रहा।

—इन्द्रसिंह आर्य उपमन्त्री
आर्यसमाज कवारी जि० हिसार

शराब कितनी अच्छी कितनी खराब

मदिरा मनुष्य द्वारा अब तक ज्ञात विषयों में सबसे भयानक विष है और इसकी पुष्टि विशेषज्ञों द्वारा की जा चुकी है। यही कारण है कि इसे एक सामाजिक बुराई के रूप में देखा गया और इसके प्रचलन एवं उपयोग को रोकने के प्रयत्न किए गए। देश के अधिकांश राज्यों ने मद्यनिषेध में पहल की है तथा पूर्ण नशाबन्दी के प्रति उत्साह दिखाया है। मद्यनिषेध कार्यक्रम वास्तव में एक सामाजिक कार्यक्रम है जिसे सफल बनाने में कानून और व्यवस्था इतनी कारगर नहीं हो सकती जितनी कि व्यक्ति के त्याग और जन सहयोग की भावना। पूर्ण नशाबन्दी के बाद भी कई राज्यों में देशी शराब का प्रचलन है। यह इस बात का प्रमाण है कि कानून द्वारा इसका पूर्ण निषेध सम्भव नहीं है। जब तक व्यक्ति या समाज इसे बुराई समझकर इसके विरुद्ध आन्दोलन नहीं करता तब तक इसका पूर्ण निषेध अति कठिन है। अतः समाज में हमें शराब के विरुद्ध आन्दोलन करके लोगों को इसके द्वारा किए जाने वाले विनाश से परिचित करना है। शराब द्वारा किये जाने वाले विनाश से परिचित होने के बाद ही लोगों के मन में इसके त्याग की भावना उत्पन्न हो सकती है।

मद्यपान : एक सामाजिक बुराई

आज मदिरा पान के सम्बन्ध में पुरानी और नयी दो प्रकार की विचारधाराएं प्रचलित हैं। पुरानी विचारधारा के अनुसार यह एक सामाजिक बुराई है। नवीन विचारधारा इसके विपरीत है। नयी विचारधारा मद्यपान को सभ्य जीवन का सूचक, प्रतिष्ठा और सम्पन्नता का प्रतीक मानती है। तथाकथित इन सभ्य कहे जाने वाले लोगों की विचारधारा समाज के कुछ वर्गों तक ही जीवन के लिए अभिशाप है। शराब का विष जहरीले सांप के विष से भी भयानक है क्योंकि सांप के विष से तो मनुष्य कुछ ही घण्टों में बिना किसी तकलीफ के मौत का शिकार हो जाता है, किन्तु शराब का विष व्यक्ति को तडपा-तड़पा कर मारता है। मद्यपान से होने वाली सम्भावित हानियां कई रूपों में प्रकट हो सकती हैं जैसे:—

1. मद्यपान के कारण जिगर खराब हो जाता है और पेट बाहर निकल आता है।
2. स्वास्थ्य के लिए आवश्यक प्रोटीन नष्ट हो जाते हैं।
3. मनुष्य के मस्तिष्क में विकार उत्पन्न हो जाते हैं।
4. शराबी न तो अपने परिवार के प्रति अपने दायित्वों को निभा सकता है और न ही वह अपने रोजगार तथा आय प्राप्ति के लिए आवश्यक कार्य कर सकता है।
5. शराबी की विवेक शक्ति नष्ट हो जाती है।
6. मां-बाप द्वारा मद्यसेवन करने से सन्तान को जन्म से पूर्व तथा जन्म के बाद हानि पहुँचती हैं।
7. गर्भवती स्त्री द्वारा मद्यपान करने से सन्तान के स्वरूप और विकास में बाधा उत्पन्न होती है।
8. मद्यपान से आर्थिक हानि तथा जीवन स्तर में गिरावट आती है।
9. शराबी की समाज में प्रतिष्ठा समाप्त हो जाती है तथा समाज के लोग उसे शंक की दृष्टि से देखने लगते हैं।

मद्यपान की उपरोक्त सभी बुराइयों पर गहराई से सोचें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुचेंगे कि मद्यपान से होने वाली हानियां केवल व्यक्ति तक ही सीमित नहीं हैं वरन इसके दुष्प्रभावों से सारा समाज प्रभावित होता है। इतिहास प्रमाण है कि सुरा के कारण कई राष्ट्रों और साम्राज्यों का पतन हुआ है। अतः एक स्वस्थ राष्ट्र एवं समाज के निर्माण के लिए मद्यनिषेध अनिवार्य है।

मद्यपान क्यों ?

मद्यपान के दुष्परिणामों से हम सब परिचित हैं किन्तु फिर भी मद्यपान प्रचलित है। यह एक विचारणीय तथ्य है कि इतने दोषों के बावजूद व्यक्ति इसके चंगुल से निकलना नहीं चाहता। इसके वैयक्तिक, सामाजिक और आर्थिक कारण हैं।

वैयक्तिक या सामाजिक दृष्टि से मद्यपान निम्नांकित कारणों से किया जाता है मद्यपान जब व्यक्ति की आदत बन जाती है तो मद्यपान करना पड़ता है। कुछ परिवारों में शराब शान-शौकत मौज-मस्ती, सम्मान और प्रतिष्ठा का विषय मानी जाने लगी। कठोर परिश्रम करने वाले लोग अपनी थकान मिटाने के लिए मदिरा पान करते हैं। सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक दुःख-दर्द को भुलाने के लिए भी शराब का उपयोग किया जाता है। इसके साथ ही त्योहारों, उत्सवों व समारोहों में मदिरा का उपयोग किया जाता है।

समाज में कुछ जातियां या वर्ग मदिरापान को अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानते हैं। समाज में कुछ लोग अपने हित साधन एवं दूसरों को प्रसन्न करने की दृष्टि भी मद्यपान करते हैं।

मद्यपान के पीछे कतिपय आर्थिक कारण भी हैं। शराब राजस्व प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। शराब बनाने वाली फैक्ट्रियों में लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। शराब के निर्यात से सरकार को विदेशी विनिमय की उपलब्धि होती है। शराब का उपयोग कई अल्कोहल आधारित उद्योगों में भी होता है।

उपरोक्त कारणों से मद्यनिषेध के बावजूद गैर कानूनी तौर पर शराब बनाने एवं उसके उपयोग करने व चोरी छिपे बेचने की घटनाएं सामने आती हैं। यद्यपि मद्यनिषेध से सरकार को आर्थिक हानि उठानी पड़ेगी, किन्तु एक अच्छे और स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए मद्यनिषेध प्रयत्न सराहनीय ही कहे जायेंगे।

मद्यनिषेध का प्रयास

कुछ लोगों द्वारा समाज में निषेध के प्रयत्न होते रहे हैं। यह अलग बात है कि ये प्रयत्न पूर्ण मद्यनिषेध के लिए अपर्याप्त रहे हैं। सर्वप्रथम ताराचन्द समिति (1964) के द्वारा यह तथ्य उद्घाटित किया गया कि देश में प्रति एक रुपये में से 60 पैसे मद्यपान पर खर्च होता है। फलस्वरूप व्यक्ति के पास खर्च योग्य आय कम बचती है तथा उसका जीवन स्तर ऊपर नहीं उठ पाता है। तत्पश्चात् अहमदाबाद अध्ययन (1973-74) द्वारा यह तथ्य सामने आया कि सामान्यतः समाज और विशेषतः युवा पीढ़ी अपने जीवन में मद्यनिषेध को पसन्द नहीं करती है।

कुछ लोगों ने मद्यनिषेध की सवैधानिकता को भी ललकारा है तथा यह तर्क प्रस्तुत किए कि मद्यनिषेध की कार्यवाही मूल अधिकारों का हनन है किन्तु समाज सुधार एवं मद्यपान के दोषों से बचने के लिए केन्द्रीय सरकार ने मद्यनिषेध हेतु राज्य सरकारों को कुछ निर्देश दिये तथा अपनी बहुमुख योजना प्रस्तुत की जिसमें मुख्यरूप से शुष्क दिनों की व्यवस्था, सार्वजनिक स्थानों पर तत्काल मद्यनिषेध, विज्ञापनों की समाप्ति, नये लाइसेन्स न देना, मोटरगाड़ी अधिनियम 1977 को कड़ाई से लागू करने तथा सरकारी कर्मचारियों के लिए मद्यनिषेध सम्बन्धी अनेक कदम उठाये गए। कई राज्य सरकारों ने इन कदमों का स्वागत किया तथा अपने राज्य में पूर्ण नशाबन्दी की घोषणा कर सराहनीय साहस का परिचय दिया है। इस प्रकार अब तक देश में 22 में से 16 राज्यों ने मद्यनिषेध कार्यक्रम को लागू कर दिया है। मद्यनिषेध कार्यक्रम की सफलता के लिए नौवीं केन्द्रीय मद्यनिषेध समिति ने एक नौ सूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किया है जो इस प्रकार है :

* संविधान में संशोधन कर मद्यनिषेध कार्यक्रम को समवर्ती सूची में शामिल किया जाना चाहिए।
* सातवें वित्त आयोग द्वारा मद्यनिषेध को लागू करने सम्बन्धी वित्तीय प्रभावों को ध्यान में रखना चाहिए।
* व्यक्तियों को शराब के बुरे प्रभावों से अवगत कराना चाहिये।
* मदिरापान के अपराध में धन्धे से निष्कासित लोगों के लिए किसी वैकल्पिक धन्धे की व्यवस्था की जानी चाहिए।
* आदिवासी क्षेत्रों को वांछित-प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

(शेषांश पृष्ठ ७ पर)

७ मार्च को बलिदान दिवस पर विशेष—

जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता !

धर्मवीर पं० लेखराम आर्य मुसाफिर

ले० : सुखदेव शास्त्री वानप्रस्थी महोपदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

आर्यसमाज के क्षेत्र में महर्षि दयानन्द से जीवन सुधार की प्रेरणा पाकर हजारों लोगों ने अपने जीवन को देशधर्म की बलिवेदी पर न्योछावर कर दिया। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित सत्यसिद्धान्तों का तन-मन-धन समर्पित करके प्रचार किया। ऐसे धर्म प्रचारकों में अग्रगण्य थे धर्मवीर पं० लेखराम आर्य मुसाफिर।

वंश, जन्म, शिक्षा

लेखराम का जन्म ८ चैत्र सं० १९१५ वि० को शुक्रवार के दिन ग्राम सय्यदपुर, जिला जेहलम पंजाब में चकवाल को तहसील प्रसिद्ध है उसमें यह ग्राम स्थित था, आजकल यह पाकिस्तान में है।

यद्यपि पं० लेखराम का जन्म सय्यदपुर में हुआ, तथापि उनका वंश पहले रावलपिण्डी पोठोहार का निवासी था। रावलपिण्डी जिला पोठोहार का गढ़ है, उसके कहूटा नामी ग्राम में लेखराम के पुरुषा रहा करते थे। लेखराम के दादा महता नारायणसिंह के पिता पहले पहल पोठोहार से अपने ससुराल ग्राम सय्यदपुर में आ बसे थे। उनके दो पुत्र थे जिनमें एक नारायणसिंह थे। नारायणसिंह के दो पुत्र हुए। बड़े का नाम तारासिंह, छोटे का नाम गण्डाराम, जो पेशावर पुलिस में इन्स्पैक्टर थे। तारासिंह के घर एक पुत्री तथा तीन पुत्र हुए। बड़े का नाम लेखराम, दूसरे का तोताराम, तीसरे का बालकराम था। लड़की का नाम मायावन्ती था। लेखराम ब्राह्मण परिवार से थे।

छः वर्ष को आयु में लेखराम को देहाती मदरसे में उर्दू फारसी पढ़ने के लिए भेजा गया। पंजाब में उस समय फारसी भाषा का राज्य था। खालसा पन्थ के राजशासन से पहले लाहौर मुसलमान राज प्रतिनिधियों का गढ़ था। न्यायालयों में सब काम फारसी में ही होता था। देवनागरी भाषा हिन्दी का बिल्कुल भी प्रचलन न था। ऐसे समय में एक ब्राह्मण कुलोत्पन्न बालक के लिए भी देवनागरी-लिपि सिखाने और संस्कृत भाषा पढ़ाने का विचार किस के दिल में उत्पन्न हो सकता था? किन्तु फिर भी मालूम होता है कि लेखराम के हृदय में अपने धर्म के दृढ़संस्कार बाल्यकाल से ही स्थिर हो चुके थे। अपने धर्म की कथाएं उन्होंने कहां से सुनी और उन पर दृढ़ कैसे हुए, इसका कुछ पता नहीं लगता। किन्तु यह स्पष्ट है कि लेखराम के चित्त पर धर्म घटनाओं का प्रभाव बहुत शीघ्र पड़ा करता था। चौदह वर्ष की आयु तक लेखराम अपने चाचा के पास पेशावर में पढ़ते रहे। उसके बाद अपने ग्राम में आ गए। उस समय के उनके शिक्षक तुलसीदास ने लेखराम के बारे में जो विचार प्रकट किए हैं उनसे यह प्रमाणित होता है कि लेखराम पढ़ने लिखने में व चाल-चलन में पवित्र प्रकृति के छात्र थे। इस प्रकार माध्यमिक शिक्षा तक होने के बाद लेखराम को चाचा गण्डाराम ने पंजाब पुलिस में १७ वर्ष की आयु में ही भरती करवा दिया था। २१ दिसम्बर १८७५ में लेखराम पंजाब पुलिस में भरती किए गए थे। पुलिस में होने के बाद लेखराम में कुछ विचित्र परिवर्तन होने आरम्भ हो गए थे। पुलिस के एक सिक्ख सिपाही के सत्संग से उन्हें परमात्मा की उपासना का अभ्यास हो गया था। प्रातःकाल चार बजे उठकर स्नान शौचादि से निवृत्त होकर समाधि लगा बैठ जाते, और दिन में गुरुमुखी में लिखी गीता का पाठ करते थे। लेखराम की इस आरम्भिक ईश्वर प्रेम की अवस्था पर पुलिस की नौकरी भी कुछ बाधक न बन सकी। सम्वत् १९२७ में उन्हें कुछ वैराग्य सा हो गया था। जिससे पुलिस की नौकरी तथा सांसारिक ऐश्वर्य से वैराग्य हो गया था। वे नवीन वेदान्त के विचार में आ गए थे। अद्वैत में विश्वास रखते हुए भी उन्होंने उपासना को कभी न छोड़ा। गीता पढ़ने का नतीजा यह हुआ कि कृष्ण की भक्ति में इतना प्रेम बढ़ा कि पुलिस की नौकरी छोड़कर वृन्दावन जाने के लिए तैयार हो गए। इस समय लेखराम की आयु २१ वर्ष की थी। माता-पिता ने विवाह करने की बात की तो लेखराम ने इन्कार कर दिया। नौकरी छोड़कर देशान्तर में जाकर संस्कृत पढ़ने की सोची।

आर्यसमाज में प्रवेश

इन्हीं दिनों जब गीता की पुस्तक काशी से मंगाकर पढ रहे थे तो लेखराम को मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी की पुस्तकों को देखने की इच्छा हुई। अलखधारी के सब ग्रन्थ मंगवा लिए। अलखधारी की पुस्तकें पढ़कर लेखराम का जीवन बदल गया। पंजाब में उन दिनों अलखधारी के लेखों ने वैदिकधर्म को पुनर्जीवित करने के लिए वही काम किया जो ईसाई मत की स्थापना से पहले यहुन्ना के व्याख्यानों ने किया था। अलखधारी की पुस्तकें नौजवानों में कुरीतियों के विरुद्ध आन्दोलन करने की प्रेरणा देती थीं। अलखधारी महर्षि दयानन्द से प्रेरणा पाते थे। अपने लेखों की पुष्टि में महर्षि दयानन्द के व्याख्यानों व लेखों का प्रमाण देते थे। उस समय के पंजाबी अलखधारी को अपना नेता मानते थे। अलखधारी के सब शिष्य ऋषि दयानन्द की शरण में आए और आर्यसमाज के उत्साही कार्यकर्त्ता बने। उन्हीं युवकों में लेखराम भी थे।

अलखधारी के लेखों से लेखराम को ऋषि दयानन्द का पता लगा। उन्होंने अद्वैत मत को त्याग दिया। ऋषि के ग्रन्थों को पढ़ा। सम्वत् १९३७ में पेशावर में आर्यसमाज की स्थापना कर दी। आर्यसमाज की स्थापना तो कर दी, लेकिन वैदिक धर्म का ज्ञान उन्हें बहुत कम था, उन्होंने मन में ठान लिया कि महर्षि दयानन्द से मिलकर संशय निवृत्ति करनी चाहिए। ऐसा निश्चय करके साढ़े चार वर्षों की पुलिस की नौकरी से एक महीने की छुट्टी लेकर १७ मई १८८० को अजमेर में महर्षि दयानन्द के प्रथम व अन्तिम दर्शन किए। सब शंकाओं का निवारण किया। आशीर्वाद प्राप्त किया। महर्षि ने अष्टाध्यायी दी और २५ वर्ष तक ब्रह्मचारी रहने का आदेश दिया। इस मिलन से लेखराम का विश्वास वैदिक धर्म में दृढ़ हो गया।

ऋषि दयानन्द के दर्शन से लेखराम पर आर्यसमाज का इतना रंग चढ़ गया कि दिनरात धर्मप्रचार की धुन रहने लगी। २४ जुलाई १८८४ में पुलिस से त्यागपत्र दे दिया। ३० सितम्बर १८८४ को त्यागपत्र स्वीकार हुआ, नौकरी से मुक्ति पाकर पुलिस का सिपाही लेखराम से पण्डित लेखराम बन गया। पुलिस में रहते हुए उन्होंने कभी भी शराब मांस का सेवन नहीं किया था। सन्ध्या भी करते थे। अब सारा समय आर्यसमाज को देने लगे। अपना स्वाध्याय बढ़ाया। आर्यसमाज में प्रवेश होते ही शास्त्रार्थ तथा लेख लिखने का अभ्यास हो गया था। ईसाइयों व मुसलमानों से शास्त्रार्थ करने लगे।

महर्षि का पत्र

१८८२ ई० जब पण्डित लेखराम अभी पेशावर में ही थे ऋषि दयानन्द की ओर से उन्हें दो पत्र मिले। एक के साथ गोरक्षा विषयक प्रार्थना पत्र प्रजा के हस्ताक्षर करवाने के लिए था, जो महर्षि ने महारानी विक्टोरिया को भेजना था, दूसरे पत्र में पंजाब में हिन्दी प्रचार के लिए शिक्षा कमीशन को स्मरण-पत्र भेजने की प्रेरणा दी गई थी। दोनों कार्य लेखराम ने बड़े उत्साह से कराए।

३० अक्तूबर १८८३ को महर्षि दयानन्द के धर्म तथा देश के लिए दिए गए बलिदान ने और भी उन्हें अधीर कर दिया। सारे संसार को वैदिक धर्म के झण्डे के नीचे लाने का कर्त्तव्य भी अपना ही समझकर धर्मवीर का पद प्राप्त करने की ओर पग बढ़ाया। कोई आर्यजाति में

ईसाई वा मुसलमानी मत की ओर झुके तो उसे बचाने का काम लेख राम ही करते थे। जन्म से ईसाई मुसलमान को भी वैदिक धर्मी बनाने का कर्त्तव्य भी बतलाते थे। वैदिकधर्म पर आक्षेपों का उत्तर भी लेखराम ही देते थे।

कादिया के मिर्जा गुलाम अहमद

इस मिर्जा ने पहले-पहल पैगम्बर बनने का दावा किया था, और उसने यह भी कहा था कि जो कोई भी एक वर्ष तक मेरे पास रहेगा उसे दैवी चमत्कार दिखा देगा। इस के साथ यदि ऐसा ना दिखा सके यो २०० रु० मासिक के हिसाब से २४०० रु० देंगे। ऐसे इश्तिहार मिर्जा ने निकाले थे। ये विज्ञापन पं० लेखराम ने अमृतसर में पढ़े, अतः उन्होंने ३ अप्रैल १८७५ को मिर्जा के नाम पत्र लिखा, जिसमें उनकी शर्तों को स्वीकार कर लिया, और प्रतिज्ञा की कि जिस समय मिर्जा चौबीस सौ रुपये सरकारी खजाने में जमा कराएंगे, लेखराम स्वयं कादियां पहुंच जायेंगे, पत्र पाकर मिर्जा अड़चने डालता रहा। जिस चाल-बाज मिर्जा से मिलने से भी लोग डरते थे, उसी का सीधा मुकाबला करने के लिए लेखराम कादिया गुरुदासपुर पहुंच गए। लेखराम ने उस के इस्लामी कोठे पर जाकर उसकी पुस्तकों का मुंह-तोड़ उत्तर देकर उसकी नाक में दम कर दिया। दो मास तक कादियां रहे। कई बार कई आदमियों के साथ उसके घर गए। उसे बिल्कुल निरुत्तर कर दिया। अपने खुले व्याख्यानों में भी मिर्जा तथा उसकी किताबों की कलाई खोली। उसकी इस्लामी तथा इलहामी चाल-बाजियों का भी भण्डाफोड़ किया। जिससे मिर्जा की आमदनी में बड़ी बाधा पड़ी। इसके साथ ही कादियां में आर्यसमाज की स्थापना भी कर दी, मिर्जा के जाल में फंसे बहुत से हिन्दु आर्यसमाज में लौटे जब मिर्जा ने विष्णुदास नायक हिन्दु को मुसलमान बनाने की बात कही तो लेखराम ने उसे समझाया, वह आर्यसमाज में आ गया। मिर्जा की सब पुस्तकों का उत्तर दिया, जिनका पूरा विवरण उनकी पुस्तक "कुलियात आर्य मुसाफिर" में मिलता है। वह पुस्तक पढ़नी चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में उपदेशक बनकर प्रचार करते रहे। महर्षि के जीवन की खोज करके उसे बृहत्‌रूप में लिखा। सभा में रहते हुए सात रुपये वेतन लेते थे। सारे देश में घूमकर वैदिक धर्म के प्रचार की धूम मचा दी। मुसलमान बनने वालों को भाग कर बचाया। हजारों हिन्दुओं को समझाया। ३७ वर्ष की आयु में विवाह करवाया। एक पुत्र पैदा हुआ, वह भी बीमारी से मर गया, जब वह बीमार था तो उन्हें पत्र मिला कि हजारों हिन्दु मुसलमान बनने वाले हैं, पुत्र को बीमार छोड़कर वहां पहुंचे। इनकी पत्नी लक्ष्मी देवी भी बहुत ही आर्य विचारधारा की थी।

लेखराम का जीवन चरित्र तो अलग से पुस्तक में ही पढ़ा जा सकता है, यहां इतना अवकाश नहीं, जो लिखा जा सके।

मुसलमानों ने लेखराम की लिखी पुस्तकों पर मुकद्दमे चलाये, मुसलमान सभी मुकद्दमों में हारे। अन्त में मिर्जा के षड्यन्त्र से—तथा अन्य मुसलमानों की सलाह से एक मुसलमान बूचड़ को मारने के लिए तैयार किया गया। वह लाहौर में पण्डित जी से मिला और शुद्ध होने की बात की, शुद्धि के बहाने से उसने लेखराम के घर पर ही मौका पाकर ऋषि जीवन का अन्तिम बलिदान लिखते हुए लेखराम पर छुरे से घातक प्रहार किया। अन्तड़ियां पेट से बाहर निकल आईं, एक हाथ से हत्यारे को पकड़ लिया, पर कितनी देर तक पकड़ते, उनकी माता और पत्नी को घायल कर हत्यारा छुड़ाकर भाग गया। अस्पताल में प्रविष्ट कराए गए, रात को एक बजे आर्यों को अन्तिम वसीयत—आर्यसमाज से लेख का काम बन्द नहीं होना चाहिए देकर धर्म पर बलिदान हो गए। यह छः मार्च १८९७ का वर्ष था।

ऐसे धर्म वीर, आर्यमुसाफिर पं० लेखराम को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। उनसे प्रेरणा पाकर आज भी शुद्धि चक्र चलाने की पहले से अधिक आवश्यकता है। आर्यसमाज के प्रचार की जोर-शोर से करने की आवश्यकता है। लेख व मत-मतान्तर के खण्डन की आज पहले से भी ज्यादा जरूरत है।

धर्मवीर पण्डित लेखराम आर्यमुसाफिर को आर्यजगत्‌ की श्रद्धाञ्जलि।

आर्यसमाज माजरा दूबलधन में वेद प्रचार

आर्यसमाज माजरा दूबलधन जि० रोहतक में २४ से २८ फरवरी तक वार्षिक वेद प्रचार सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द जी के वेद प्रवचन, श्री विजयपाल के व्यायाम प्रदर्शन तथा पं० ईश्वरसिंह तूफान तथा पं० खेमसिंह की भजन मण्डली के प्रभावशाली भजन हुए। सभा को ४५१/- दिए गए।

—राम नारायण आर्य

भूल सुधार

सर्वहितकारी में २८ जनवरी के अंक में प्रिंसिपल दलीपसिंह आर्य स्कूल सिरसा के पिता श्री फूलसिंह जी के स्थान पर न्यादरसिंह नाम भूलवश छप गया। श्री न्यादरसिंह जी प्रि० दलीपसिंह जी के दादा जी का नाम है।

—व्यवस्थापक

चौ० देवीलाल मुख्यमन्त्री हरयाणा को सेवा में पूर्ण शराबबन्दी के लिए ८ मार्च को दिया गया ज्ञापन

श्रीमान् जी,

हरयाणा सरकार ने सन् १९६२ में कानून बनाया था कि जो ग्राम पंचायतें सितम्बर मास तक अपने ग्राम में शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए प्रस्ताव भेज देगी, उन ग्रामों में आगामी वर्ष में ठेकों की नीलामी नहीं करवाई जावेगी। आपके एक मन्त्री श्री हुकमसिंह जी ने तो पिछले दिनों यह भी घोषणा कर दी थी कि जो पंचायतें दिसम्बर मास तक भी शराबबन्दी के प्रस्ताव सरकार को भेज देंगी उन ग्रामों में भी ठेकों की नीलामी नहीं होगी।

अत: आपसे हमारा अनुरोध है कि उपरोक्त कानून के अनुसार जिन पंचायतों ने प्रस्ताव भेज रखे हैं, उन ग्रामों में शराब के ठेके न उठवाये जायें। जिन ग्रामों की जनता शराब नहीं पीना चाहती उनमें शराब के ठेके उठवाकर तथा शराब पीने के लिए अहाते बनवाकर उनकी इच्छा के विरुद्ध शराब पिलाना जनहित के विरुद्ध है।

हम यह भी मांग करते हैं कि गुजरात प्रदेश की भांति हरयाणा में भी पूर्ण नशाबन्दी लागू करके शराब जैसी सामाजिक बुराई को समाप्त किया जाये। स्मरण रहे शराब हटेगी तो हरयाणा बचेगा।

निवेदक

हरयाणा की आर्य जनता

नशाबन्दी आवश्यक

हमारे देश में दिन प्रतिदिन नशे का प्रकोप बढता जा रहा है। और इस नशे की जिम्मेदारी सरकार की है। एक तरफ तो नशा बन्द करो के पोस्टर छापे जाते हैं टी. वी. पर भी नशे सम्बन्धी झलकियां दिखाई जाती हैं। दूसरी, जगह-जगह पर शराब की दुकानें खोली जा रही हैं। ठेके खुल रहे हैं तथा जगह-जगह शराब की छोटी बड़ी फैक्ट्री लगाई जा रही हैं। क्या यह सब कमी हमारी सरकार की नही है? लाखों लोग शराब के नशे में गन्दी नालियों में पड़े दिखाई देते हैं। दिखाई तो सरकार को सब कुछ देता है मगर बन्द नहीं करा सकती क्योंकि सरकार कहती है कि नशे से हमारी आय बढती है। जब आय बढ़ती है तो हमें क्या बुरा है। दिनोंदिन हजारों लाखों जीवन बरबाद हो रहे हैं, हजारों लाखों माता बहनों की इस कारण बलि चढ़ रही है। एक ओर नशेड़ी कपड़े गिरवी रखकर अपनी नशे की हवस पूरी करते हैं तो हजारों लाखों महिलाये परेशान होकर आत्महत्या कर लेती हैं। हमारे बच्चों पर कपड़ा है या नही, हमारी बीबी की आंखों में आंसू है या खुशी, बस वह नशे में धुत्त रहकर ही ऐशो आराम करता है, और जब नशा उतर जाता है तो तब देखता है कि मैं बहुत गलत कर रहा हूं लेकिन फिर भी अपनी हरकतों से बाज नहीं आते हैं। इसलिए नशे का असर बढ़ता-बढ़ता बच्चों पर पड़ जाता है। बड़े होकर बच्चे भी उसी लाइन पर लग जाते हैं। तो देश में सबसे बड़ी कमी यही गरीबी का कारण है। मेरा कहने का मतलब है कि नशे पर सरकार को प्रतिबन्ध लगा देना चाहिए।

चौ० सत्यपालसिंह सैनी,
गांव कमालपुर,
डा० शाहपुर,
जि० मु० नगर

शराब हटाओ देश बचाओ

हरयाणा में शराबबन्दी के लिए जिला मुख्यालयों पर

८ मार्च को प्रदर्शन

सभा का पिछले ४ वर्षों से शराबबन्दी के लिये आन्दोलन चल रहा है। अनेक जगह धरने दिये गये और वे सभी जनता के सहयोग से सफल रहे। हरयाणा के देहात में इन चार वर्षों में बड़ी भारी चेतना देखने को मिल रही है। ग्रामीण जनता किसान और मजदूर को अपना सर्वनाश स्पष्ट दिखाई देने लगा है और अब वे इस दुर्व्यसन से छुटकारा पाने के लिए तड़प रहे हैं।

देश का यह सब से बड़ा दुर्भाग्य है कि एक दो प्रदेशों को छोड़कर राज्य सरकारें अधिक से अधिक शराब बेचने में होड़ लगाए हुए है। सरकार ने शराब पिलाने की सुविधा के लिए ग्रामों में अहाते खुलवा दिये हैं इस कारण शराबी तत्त्व ग्राम का वातावरण खराब करेंगे। विडम्बना यह है कि वे सभी किसान और मजदूर की भलाई और कल्याण की थोथी बातें करते हुए नहीं थकते। हरयाणा की वर्तमान सरकार पिछली सरकारों से ड्योढ़ी शराब पिलाने के लिये एड़ी चोटी का जोर लगा रहो है अब नाजायज शराब के झूठे सच्चे बहाने लेकर १९६२ के कानून को भी ताक पर रख देना चाह रही है। कानून साफ है उसकी बहाने बनाकर अवहेलना सहन नहीं की जायेगी। आवश्यक हुआ तो सर्वनाश से बचने के लिए पंचायतें और जनता अदालतों के दरवाजे भी खटखटायेगी तथा जगह-जगह धरने देकर शराब की बिक्री को रोकने में पीछे नहीं हटेगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने यह निश्चय किया है कि जनता की यह आवाज पहुँचाने के लिये ८ मार्च १९८८ मंगलवार को अधिक से अधिक जिला मुख्यालयों पर प्रदर्शन करेंगी।

हरयाणा की जनता से आम तौर पर और आर्यसमाजी भाई बहनों से खास तौर पर हम अपील करते हैं कि भारी संख्या में प्रदर्शनों में शामिल होकर अपने और अपने परिवारों, महिलाओं और बच्चों तथा पवित्र हरयाणा प्रदेश के कल्याण के लिए भी प्रबल आवाज उठायें।

निवेदक:—

स्वामी ओमानन्द सरस्वती
प्रधान
परोपकारिणी सभा

प्रो० शेरसिंह
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

आर्यसमाज मुकलान (हिसार) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

६, ७ फरवरी को आर्यसमाज मुकलान का १४वां वार्षिकोत्सव विधिवत् सम्पन्न हुआ जिसमें पं० रणवीर शास्त्री, सभा उपदेशक श्री अंतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने वेद क्या है, धर्म क्या है, नवयुवकों के कर्त्तव्य, आर्यसमाज क्या चाहता है, शराब एव सांग से होने वाली बुराइयों पर प्रकाश डाला। क्रान्तिकारी ने हरयाणा सरकार की शराब एवं सांग को बढ़ावा देने वाली नीति की कटु आलोचना की तथा सरकार से मांग की इस भयंकर सूखा हालत में देहात में शराब के ठेके बन्द किये जावें। इस उत्सव पर हरयाणा के गृह एवं आबकारी कराधान मन्त्री प्रो० सम्पतसिंह तथा डा० हरस्वरूपसिंह कुलपति कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने भी पधार कर अपने विचार रखे। प्रधान श्री बदलूराम जी ने मन्त्री जी को सत्यार्थप्रकाश भेंट किया। इसके अतिरिक्त श्री पं० श्यामवीर राघव, स्वामी रुद्रवेश जी, पं० रामनिवास जी तथा ब्रह्मचारिणी बहन कलावती जी आर्या के क्रान्तिकारी समाज सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए। कन्या गुरुकुल गणियार की छात्राओं का व्यायाम प्रदर्शन सराहनीय रहा। इस उत्सव पर गांव एवं गुवांड से काफी संख्या में नर-नारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। गांव के नवयुवकों का विशेष सहयोग रहा।

सोहना (गुडंगाँव) में महर्षि बोधरात्रि एवं शिवरात्रि पर्व सोत्साह सम्पन्न

आर्यसमाज सोहना जिला गुड़गांव के द्वारा १२ फरवरी से १६ फरवरी तक बोधरात्रि सोत्साह मनाई गई।

इस अवसर पर स्थानीय आर्यसमाज के सदस्यों तथा सभी आर्यसमाज की सदस्याओं द्वारा प्रातः नगर कीर्त्तन किया गया। जिसमें देहात के लोग बड़ी संख्या में शामिल थे। १६ फरवरी को विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। दिन में आर्यसमाज मेवात मण्डल के भजनोपदेशक श्री मंगलदेव जी के सुन्दर गीत भजन होते रहे। आर्य स्कूल के छात्र-छात्राओं का भी कार्यक्रम बहुत उपदेशप्रद रहा। प्रातः सायं यज्ञ वेदप्रवचन तथा शिवरात्रि को श्री सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा के वेदप्रवचन तथा शिवशंकर महादेव व मूल शंकर महर्षि दयानन्द के तुलनात्मक व्याख्यानों की धूम मच गई। जनता ने बड़े ध्यानपूर्वक सुना, आर्यसाज सोहना के द्वारा आयोजित इस समारोह की जनता के द्वारा बड़ी प्रशंसा की गई।

आर्यसमाज मन्दिर सोहना गन्धक के गर्म चश्मों के ऊपर ही बना हुआ है। अतः सनातनी जन भी उपस्थित रहे। कुण्ड रक्षा कमेटी के प्रधान भी समारोह में उपस्थित थे।

मेघराज प्रधान आर्यसमाज सोहना

शराब ने हवालात की सैर कराई

नीलोखेड़ी, २ मार्च (चांद)। शराब की लत कभी-कभी हवालात की सैर भी करा देती है यह कहावत हरयाणा राज्य परिवहन के रिवाड़ी डिपो के बस चालक ओमप्रकाश पर पूरी तरह खरी उतरी।

घटना इस प्रकार बताई जाती है कि हरयाणा राज्य परिवहन रिवाड़ी डिपो की बस एच.एन एम १२२ चंडीगढ़ जा रही थी। करनाल में इसी बस में हरयाणा विधान सभा जुण्डला क्षेत्र के विधायक श्री रिसालसिंह अपने साथी बडौता के सरपंच जयपाल के साथ सवार हुए।

बताया जाता है कि बस चालक शराब पिये था और बस को ठीक ढग से नहीं चला रहा था। जब विधायक ने अनुरोध किया कि कृपया बस को ठीक चलाइये तो चालक ने विधायक के साथ अभद्र व्यवहार किया।

बस जब थाना बुटाना के पास पहुंची तो विधायक के साथ सरपंच ने पुलिस को सूचित कर दिया। बताया जाता है कि डाक्टरी परीक्षण करवाने पर चालक को शराबी पाया और हवालात भेज दिया गया। क्षेत्र में आम चर्चा है कि चालक परिचालक तभी सुधरेंगे जब विधायक बसों में सफर करेंगे। (दैनिक विश्व मानव)

सर्वहितकारी के स्वामित्व आदि का विवरण

फार्म ४ (नियम ८ देखिए)

१. प्रकाशन स्थान — सिद्धांती भवन दयानन्द मठ, रोहतक
२. प्रकाशन अवधि — साप्ताहिक
३ मुद्रक का नाम — वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ? — है
पता — आचार्य प्रि. प्रेस दयानन्द मठ, रोहतक
४. प्रकाशक का नाम — वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ? — है
पता — आचार्य प्रि. प्रेस दयानन्द मठ, रोहतक
५. सम्पादक का नाम — वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ? — है
पता — आचार्य प्रि. प्रेस दयानन्द मठ, रोहतक
६. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के सांझीदार या हिस्सेदार हों। — आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक इसका समस्त आर्य व्यय वहन करती है।

मैं वेदव्रत शास्त्री एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एव विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गए विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
वेदव्रत शास्त्री

डा० मंगलसेन द्वारा हरयाणा की आबकारी नीति की आलोचना

पानीपत २ मार्च (निस) हरयाणा भाजपा का अध्यक्ष फिर से निर्वाचित होने के बाद डा० मंगलसेन ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि गांधीवादी सिद्धान्तों के विपरीत राज्य सरकार ने आबकारी नीति में संशोधन करके ठेके के साथ शराब पीने के लिए अहातों तथा बार लाइसेंस देने की नीति शुरु की है। इस नयी नीति को वापस लेने की मांग करते हुए उन्होंने कहा कि इससे सरकार को कानून व्यवस्था की विकट स्थिति का सामना करना पड़ेगा।

(दैनिक ट्रिब्यून ३ मार्च ८८)

शोक समाचार

श्री म० रामरिच्छपाल जी चान्दवास निवासी जिला भिवानी का ८५ वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया है। आपने लोहारु क्षेत्र में तथा बाढ़ड़ा क्षेत्र में बहुत लग्न से आर्यसमाज का कार्य किया। दिन में पढ़ाते रात्रि में आसपास के ग्रामों में जाकर प्रचार करते। आपने अनेक व्यक्ति तैयार किये। लोहारु में आर्यसमाज का प्रचार कर नवाब से टक्कर ली थी। सेवानिवृत्त होने के पश्चात् केवल आर्यसमाज का कार्य करते रहे। पिछले दिनों अचानक उनका स्वर्गवास हो गया है। हमारी प्रभु से प्रार्थना है उन्हें सद्गति प्रदान करे।

भरतसिंह शास्त्री

शोक प्रस्ताव

दिनांक ७-२-८८ को सप्ताहिक सत्संग के बाद प्रिंसिपल दलीपसिंह (आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय) जी के पिता के स्वर्गवास होने पर शोक प्रस्ताव पास किया तथा ईश्वर से प्रार्थना की गई कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा दुखी परिवार को सान्त्वना प्रदान करे। यह पुराने आर्यसमाजी तथा कर्मठ कार्यकर्त्ता थे।

—सत्यपाल मन्त्री आर्यसमाज सिरसा

(शेषांश पृष्ठ २ का)

- मद्यपान से उत्पन्न दोषों को अच्छी तरह से दूर किया जाना चाहिए।
- मनोरंजन के लिए वैकल्पिक पेय पदार्थों का निर्माण किया जाना चाहिए जो हानिकारक न हों।
- पेयों में प्रयुक्त अल्कोहल की मात्रा में वृद्धि नहीं होनी चाहिए।
- चुंगी तथा मद्यनिषेध सम्बन्धी कार्यों का विभाग एक ही मंत्रालय के अधीन होना चाहिए।

मद्यनिषेध का भविष्य

देश में मद्यनिषेध अभियान का भविष्य यहां की जनता के त्याग और जन-सहयोग पर निर्भर करता है। मद्यनिषेध एक सामाजिक कार्यक्रम है जिसे समाज के लोग ही एकजुट होकर सफल बना सकते हैं। कानून और व्यवस्था तो मद्यनिषेध कार्यक्रम को केवल सैद्धान्तिक जामा पहना सकते हैं, असली जामा पहनाने का दायित्व अन्ततः समाज के लोगों पर ही है। आज मद्यनिषेध की सफलता को शंका की दृष्टि से देखा जाता है। क्यों ? मद्यनिषेध की कानूनी व्यवस्था के बावजूद मद्यनिषेध घोषित राज्यों में हाथ की बनी शराब का प्रयोग होता है।

मद्यनिषेध कार्यक्रम को यदि सफल बनाना चाहते है तो इसकी शुरुआत ऊपर से होनी चाहिए तत्पश्चात् दूसरे लोगों से इसके त्याग और सहयोग की अपेक्षा करनी चाहिए। मद्यपान के दुर्गुणों का रेडियो, टेलिविजन तथा चलचित्रों के माध्यम से प्रदर्शन एवं प्रचार किया जाना चाहिए। कठोर शारीरिक श्रम करने वाले श्रमिकों के लिए मयखानों को होटलों एवं रेस्टोरेण्टों में बदला जाना चाहिए जहां बैठकर वे अपनी थकान मिटा सकें। भारत जैसे देश में नशाबन्दी कार्यक्रम में धर्म बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है। पश्चिमी देशों में अपनाई गई 'अल्कोहल एनोनिमस' जैसी संस्थाएं भारत में भी स्थापित की जानी चाहिएं जिनमें शराबी के मन में ईश्वर के प्रति आस्था जगायी जाय जिसके फलस्वरूप शराब की लत को छोड़ने में अपने आपको समर्थ समझने लग जाता है। इन्हीं उपायों के साथ यदि शराबी के प्रति घृणा के भाव को त्यागकर उसे प्रेमपूर्वक सही राह दिखाया जाए तो मद्यनिषेध अभियान का स्वप्न साकार हो सकता है। (कैसा हो सरपंच से साभार)

वर्ष १९८८ को शराब विरोधी वर्ष घोषित किया जाए

वर्ष १९८८ को शराब विरोधी वर्ष के रूप में जिला आर्य युवक परिषद् एवं आर्यसमाजों की ओर से मनाने का निश्चय किया गया है, जिसके प्रथम चरण में शराब विरोधी सम्मेलन सगड़कोला व जिला उपायुक्त कार्यालय के समक्ष धरना दिया जा चुका है। श्री शिवराम विद्यावाचस्पति ने कहा है कि बड़ा ही दुःखद आश्चर्य होता है कि वर्तमान सरकार ने उस लोकोक्ति को चरितार्थ कर दिया है जिसमें कहा गया था कि रोग बढ़ता ही गया, ज्यों-ज्यों दवा की, आर्यसमाज ने शराबबन्दी का आन्दोलन प्रदेश भर में चलाकर जन कल्याणकारी कार्यक्रम अपने हाथ में लिया था, परन्तु राज्य सरकार ने २५० और नये शराब के ठेके खोलने का निर्णय लेकर जन-मानस के साथ खिलवाड़ करने का दुःसाहस किया है। श्री शिवराम विद्यावाचस्पति ने बताया कि आगामी १३ अप्रैल बैशाखी के दिन आर्य समाज व आर्य युवक परिषद् फरीदाबाद की ओर से एक जनता पंचायत का आयोजन शराब के ठेके बन्द कराने के लिए अग्रवाल धर्मशाला पलवल में किया जा रहा है। उन्होंने आर्यसमाज के सभी गुटों को एक बैनर तले एकनिष्ठ होने की भी अपील की है। श्री विद्यावाचस्पति ने कहा कि शराब बन्दी कराने के लिए वह पूरा समय लगाकर जन जागरण करेंगे।

कन्या गुरुकुल खरल का उत्सव सम्पन्न

कन्या गुरुकुल खरल (जीन्द) का वार्षिकोत्सव १२-१३-१४ फरवरी को सम्पन्न हुआ। प्रो० धर्मदेव विद्यार्थी के प्रयासों से प० सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार ने विद्यालय भवन का शिलान्यास करके एक लाख रुपये का दान दिया। चौ० वीरेन्द्रसिंह विद्युत एवं सिंचाई मन्त्री हरयाणा ने १५०००/- रुपये अनुदान में दिये तथा पंचायत खरल की ओर से एक कमरा यानि ४० हजार रुपये का दान दिया। इसके अतिरिक्त छात्राओं और अध्यापिकाओं ने १५०००/- रुपये का दान दिया। शेष क्षेत्रीय जनता ने लगभग १४ हजार इकट्ठे किये। कुल मिलकर २ लाख ग्यारह हजार रुपये का दान प्राप्त हुआ। आर्य वीर दल हरयाणा और गुरुकुल की छात्राओं ने प्रदर्शन दिखाया। छात्राओं ने बन्दूकों का भी प्रदर्शन दिखाया।

—ओमस्वरूपार्य
सहायक मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल और संस्कृत विद्यालय राष्ट्रीय जीवनधारा के प्राण हैं

श्रीमद दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ, गदपुरी (पलवल) के ५१ वें वार्षिकोत्सव पर विशाल जनसभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा—गुरुकुल और संस्कृत विद्यालय राष्ट्रीय जीवनधारा के प्राण हैं। यही हमारी संस्कृति और परम्पराओं को पुनर्जीवित रखने का आधार रहे हैं। स्वामी जी ने हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्रीदेवीलाल से अपील की कि उनकी सरकार गुरुकुलों और संस्कृत विद्यालयों को अधिक से अधिक अनुदान देकर इनके कठिन कार्य को सुगम बनाने में सहायता करे।

स्वामी जी ने भारत सरकार द्वारा नई शिक्षा नीति में संस्कृत की उपेक्षा पर गहरा दुःख प्रकट किया और कहा कि सार्वदेशिक सभा शीघ्र ही अखिल भारतीय स्तर पर संस्कृत प्रेमियों का एक सम्मेलन बुलाने का कार्यक्रम बना रही है। इससे पूर्व १० मार्च को लखनऊ में संस्कृत विद्वानों की एक गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

हरयाणा के आवास एवं डेयरी विकास राज्यमन्त्री श्री सुभाषचन्द्र कत्याल से अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा—आर्यसमाज केवल एक संस्था नहीं अपितु एक आंदोलन है, जिसने समाज से अंधविश्वास, अज्ञानता, आडम्बर और छुआछूत जैसी कुरीतियों को दूर करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे संकीर्णता, क्षेत्रीय वाद तथा जातिवाद की भावनाओं से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता, अखण्डता तथा प्रगति के लिए मिलकर कार्य करें।

श्री कत्याल ने इस अवसर पर गुरुकुल की सहायतार्थ ११ हजार रुपये देने की घोषणा की। समारोह में क्षेत्र के हजारों नर-नारियों ने भाग लिया।

होली

होली सो होली उमे, दिल से देओ भुलाय।
पुन: परस्पर प्रेम से, मिलिये मन हरसाय॥
मिलिये मन हरषाय, ईर्ष्या, द्वेष बिसारो।
जीवन का सुख पूर्ण इसी में, सतगुण धारो॥
गाओ खुशी के गीत, मलो माथे पर रोली।
सारे दुर्व्यसनों की आज, जला दो होली॥

होली का त्यौहार यह, करिये कुछ परमार्थ।
तन मन धन अर्पण करो देश राष्ट्र रक्षार्थ॥
देश राष्ट्र रक्षार्थ, संगठन सुदृढ़ बनाओ।
यज्ञादि शुभकर्म करो त्यौहार मनाओ॥
भेदभाव छल कपट त्याग दो मारो गोली।
कहै स्वरूपानन्द, सहर्ष मनाओ होली॥

शुभाकांक्षी स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४) रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/72 पंजि० नं० PRTK 30

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

वर्ष १५, अङ्क १६ २४ मार्च १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

रोहतक में शराबबन्दी के लिए आर्य कार्यकर्त्ताओं का विशाल प्रदर्शन

रोहतक ८ मार्च : आज आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में जिला रोहतक के आर्य कार्यकर्त्ताओं ने जिनमें गुरुकुलों के ब्रह्मचारी तथा ग्रामों से आई हुई महिलायें भी सम्मिलित थीं, हरयाणा सरकार की शराब की नई नीति बिक्री सुगम करने तथा शराब पिलाने के अहाते खुलवाने के विरुद्ध विशाल प्रदर्शन किया। इसका नेतृत्व परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने किया। वर्षा होने के बावजूद दयानन्दमठ रोहतक से जलूस प्रारम्भ हुआ, जो मुख्य मार्गों से "शराब के ठेके बन्द करो, शराब पीना महापाप है, शराब हटेगी, देश बचेगा, शराब से हुई आमदनी विकास नही, विनाश करेगी" आदि नारे लगाता हुआ जिलाधीश के निवास पर पहुचा। जहां ग्राम निदाना की महिलाओं ने अपने ग्राम से शराब का ठेका बन्द करने के लिए श्री जयपाल आर्य के संयोजन में धरणा दे रखा था। सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह ने जिला रोहतक के प्रमुख आर्यनेताओं के हस्ताक्षरों से युक्त एक ज्ञापन जिलाधीश द्वारा हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री देवीलाल को दिया। जिसमें हरयाणा सरकार से माग की गई है कि सन् १९६२ के कानून के अनुसार उन ग्रामो मे शराब के ठेको को नीलामी न की जाये जिन पंचायतो ने सितम्बर मास तक शराबबन्दी के प्रस्ताव भेज रखे है। यदि सरकार ने इस कानून की अवहेलना करके ग्रामीण जनता की इच्छाओ के विरुद्ध ठेकों की नीलामी की तो उन्हें रद्द करवाने के लिए धरणे दिये जायेंगे। ज्ञापन में सुझाव दिया गया है कि शराब जैसी सामाजिक बुराई को समाप्त करने के लिए गुजरात राज्य की भांति हरयाणा राज्य में भी पूर्ण शराबबन्दी लागू की जाये।

जिलाधीश महोदय ने सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह को विश्वास दिलाया कि इस ज्ञापन को अपनी सिफारिश के साथ हरयाणा सरकार को भेज दूंगा और जिन पचायतों ने सितम्बर तक अपने प्रस्ताव सरकार को भेज रखे हैं उन ग्रामों में ११ मार्च को होनेवाली नीलामी में ठेकों की नीलामी नही की जायेगी।

ज्ञापन देने के पश्चात् आर्य कार्यकर्त्ताओं का जलूस आकाशवाणी कार्यालय पर पहुंचा और वहां सांग की गन्दी रागनियों के प्रसारण के विरुद्ध नारे लगाये। जलूस की समाप्ति पर दयानन्दमठ के पास गोहाना मार्ग पर स्थित मांस की दूकानों के विरुद्ध भी नारे लगाये। शांतिपूर्वक निकाले गये इस प्रदर्शन की सर्वत्र सराहना की गई।

फरीदाबाद में भी प्रदर्शन तथा धरणा

इसी प्रकार जिला फरीदाबाद के मुख्यालय पर भी ८ मार्च को सभा के अन्तरंग सदस्य चौ० राजेन्द्रसिंह जी के नेतृत्व में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने धरणा दिया, जो कि सायंकाल तक जारी रहा।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

हिसार में शराब के ठेकों की नीलामी पर भारी प्रदर्शन सम्पन्न

दिनांक २९-२-८८ को जिला हिसार के शराब के ठेकों की नीलामी लघु सचिवालय हिसार में हुई। इस समय सभा उपदेशक एवं शराबबंदी समिति जिला हिसार के अध्यक्ष श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी के नेतृत्व में १२६ नर-नारियों ने भारी प्रदर्शन किया। ग्राम कवारी, नलवा, बालावास, बालसमन्द, सिमाय, गगन खेड़ी, बड़सी, सिसर, शेखपुरा, सोरखी, लाडवा, ढाणीपाल, दड़ौली, सातरोड़ कलां, सातरोड खास, भटूकला, शाहपुर सिवानी मण्डी, आर्यनगर, आर्यसमाज हांसी, स्त्री आर्यसमाज हिसार, गुरुकुल आर्यनगर, गुरुकुल मताना (फतेहाबाद) तथा सर्वोदय संस्था हिसार के कार्यकर्त्ताओं एव आर्यबन्धुओं तथा महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। शराब पीना पाप है, शराब पीना छोड़ दो, बाप शराब पीता है बच्चे भूखे मरते हैं, शराब के ठेके बन्द करो, जो सरकार शराब को बढ़ावा दे, वह सरकार नीकम्मी है, आदि नारे बड़े जोश के साथ लगाये गये। प्रदर्शन में ३५ महिलायें थी, जिन्होंने सरकार एवं सरकार के अधिकारियों के खिलाफ स्यापे पाये, बाद में एक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें क्रांतिकारी जी, पं० भरतलाल शास्त्री, श्री दिवानसिंह आर्य, प. मन्नलाल जी, श्री महेन्द्रसिंह उत्साही, श्री संग्रामसिंह आर्य, डा. रामनाथ जी, श्री धर्मचन्द आर्य, श्री चुन्नीलाल, श्री हनुमान आर्य, श्री हरलाल साहू, स्वामी प्रकाशानन्द जी, महात्मा अग्निदेव जी, बहन राजकुमारी आर्या, बहन विद्यावती आर्या, श्रीमती चन्द्रकला आर्या, श्रीमती लजावन्ती आर्या आदि ने शराबबन्दी एव शराब से होनेवाली हानि बारे अपने विचार रखे।

सरकार से पुरजोर मांग की गई कि हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करे। बाद में क्रांतिकारी जी के नेतृत्व में उपायुक्त महोदय हिसार को शराबबन्दी बारे सैंकडो हस्ताक्षरो से युक्त एक ज्ञापन दिया। एक बार तो पण्डाल में शराबबन्दी नारों से खलबली मच गई। बाद मे पुलिस ने स्थिति को सम्भाला। कार्यक्रम काफी उत्साहजनक एवं प्रेरणाप्रद रहा। इस कार्यक्रम में आर्यसमाज हांसी के अधिकारियो, स्त्री आर्यसमाज हिसार की महिलाओ के अतिरिक्त श्रीमती सुनेहरा आर्या एव श्रीमती हरदेई के नेतृत्व में महिला आर्यसमाज कवारी, श्रीमती केलावती आर्या नलवा, श्रीमती मायादेवी आर्या हिसार का विशेष सहयोग रहा। गतवर्ष की भांति इस बार भी प्रदर्शन सफल रहा। कोर्ट व शहर के हजारों लोगों ने मुक्तकण्ठ से इस शराबबन्दी प्रदर्शन की प्रशंसा की।

—हवलदार रणजीतसिंह आर्य
संगठन मन्त्री आर्यसमाज कवारी

जन-विरोधी आबकारी नीति आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से

—ओमप्रकाश दुहन

संसार के सभी धर्म, धर्माचार्य, साधु-संत तथा समाज-सुधारक सदैव से मद्यपान का घोर निषेध करते आये हैं। यद्यपि इसका सेवन आदिकाल से ही होता हुआ माना जाता है, परन्तु यह बात निश्चित है कि सुरापान केवल अनार्य, दैत्य, दानव तथा राक्षसों द्वारा ही होता था, आर्य और सत्पुरुष इसको हेय और निन्द्य मानते थे। इसका कारण यही रहा है कि शराब के सेवन से केवल शारीरिक तथा आर्थिक हानि ही नहीं होती, इससे मानव का नैतिक और चारित्रिक पतन हो जाता है। यही कारण है जो इस देश में मद्यपान का सदैव विरोध किया जाता है। विशेषत: हरयाणा में इसका प्रखर और निरन्तर विरोध होता रहा है। गतवर्ष मार्च में प्रत्येक जिला मुख्यालयों पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने ठेकों की नीलामी के समय उग्र एवं प्रभावशाली प्रदर्शन किये थे। इस वर्ष हमें आशा थी कि नई सरकार नशाबन्दी को और आगे नहीं बढ़ायेगी तो कम से कम पीछे तो नही ले जायेगी। किसानों और गरीबों के समर्थक तथा महात्मा गांधी और चौ० चरणसिंह के अनुयायी होने का दावा करनेवाले लोगों से अपेक्षा रखी गई थी कि गरीब का जीवन स्तर ऊंचा उठाने के लिए नशाबन्दी की आवश्यकता को देखते हुए वे नशाबन्दी कार्यक्रम पर कुठाराघात नहीं करेंगे। आखिर नशाबन्दी को हमारे संविधान में बिना कारण इतना महत्त्व नही दिया जा सकता था। संविधान के निर्देशात्मक सिद्धांतों में धारा ४७ में राज्य पर जनसाधारण के जीवन स्तर, स्वास्थ्य और पोषण को सुधारने की जिम्मेदारी डाली गई है और उसके लिए मद्यनिषेध को लागू करने का सरकार को आदेश दिया गया है। नशाबन्दी सम्बन्धी इन सिद्धांतों की वे उपेक्षा नहीं करेंगे, यह आशा रखना उचित ही था, किन्तु वह आशा मृग-मरीचिका ही सिद्ध हुई।

सब जगह शराब के समर्थन में यह दुहाई दी जारही है कि नशाबन्दी का कोई लाभ नही। सरकार का पैसा जाता है, मगर पीना बन्द नहीं होता। पीनेवाले अवैध शराब पीते हैं। जहरीली शराब पीकर मरते हैं, जैसे नरवाना में मरे थे। अत: शराब की दूकानें छूट से खोली जानी चाहिये, ताकि आसानी से अच्छी शराब मिल सके। यह तर्क सर्वथा थोथा है, यह सब जानते हैं। मगर तो भी वही बात बार-बार दोहराई जाती है। यह सभी जानते हैं कि नरवाना और डबवाली में जो जहरीली शराब के कारण मृत्यु हुई थी, वह भी जहरीली शराब सरकारी ठेकों से ही खरीदी गई थी। अखबारों में अनेक लेख छपते रहे हैं कि बड़े-बड़े लोगों के संरक्षण में अवैध शराब हरयाणा में बनती है। हरयाणा से वह दिल्ली तथा उत्तरप्रदेश और कई जगह दूर-दूर तक जाती है। पुलिसवाले अपना हफ्ता लेकर चुप रहते हैं।

शराब के ठेकेदार पहले तो चुनाव के लिए पैसा देकर राजनीति वालों को काबू कर लिया करते थे, अब स्वयं कुछ विधायक अथवा उन के सम्बन्धी अथवा मित्र सहयोगी इत्यादि इस धन्धे से कमाने लगे हैं। इस अवस्था में अवैध बन्द हो ही कैसे सकती है। अवैध शराब ठेकों पर बिकती है, वैध शराब की छाया में पनपती है, इसमें आज शंका की कोई जगह नहीं रह गई है। यदि अवैध शराब को बन्द करना है तो वैध शराब के ठेके बन्द करने होंगे, यह आबकारी विभाग के ईमानदार लोग व्यक्तिगत बातचीत में स्वीकार करते हैं। वैध शराब के साथ अवैध शराब मिलाकर लाभ कमाया जाता है, जिसके कई हिस्सेदार होते हैं। सब जानते हैं कि अवैध शराब बनानेवाले गरीब लोग होते हैं, किन्तु उनके पीछे पैसा देनेवाले और अवैध शराब उठानेवाले बड़े व्यापारी होते हैं। हरयाणा में अवैध शराब के बारे शोरगुल हुआ तो देहली के अवैध शराब बनानेवालों को पुलिस ने कुछ समय चुप बैठने को कहा। ऐसा देहली के अखबारों में उस समय छपा था। जहां नशाबन्दी नहीं है, वहां अवैध शराब का धन्धा ज्यादा जोर से चलता है, यह साफ देखने में आता है। फिर भी अवैध शराब को नशाबन्दी से जोड़ने का प्रयास जान-बूझकर नशाबन्दी के विरोधी और शराब के ठेकेदार करते हैं।

गांधी जी ने कहा था—"यदि मुझे एक घण्टे के लिए भी सारे हिन्दुस्तान का सर्वेसर्वा नियुक्त कर दिया जाये तो सर्वप्रथम काम मैं यह करूंगा कि शराब की सभी दूकानों को बिना मुआवजा दिये बन्द कर दूंगा। मेरे मन में दारु का सवाल बढ़ती हुई सामाजिक बुराइयों को रोकने का सवाल है और राज्य को अवसर मिला है तो जो कुछ भी सम्भव हो वह इलाज इस बीमारी का करना है। ध्येय स्पष्ट है। हम मजदूर वर्ग को और हरिजनों को इस व्यसन के बन्धन से मुक्त करना चाहते हैं। राज्य की ओर से दारुबन्दी के महान् सुधार की समाप्ति नही है, बल्कि उसका अनिवार्य आरम्भ है" उन्होंने आगे कहा—"मैं भारत का गरीब होना पसन्द करूंगा, लेकिन मैं यह बर्दास्त नहीं करूंगा कि हमारे हजारों लोग शराबी हों। अगर भारत में शराबबन्दी जारी करने के लिए लोगों को शिक्षा देना बन्द करना पड़े तो कोई परवाह नहीं। मैं यह कीमत चुकाकर भी शराबखोरी बन्द करूंगा।' (यंग इण्डिया १५-९-२७) उपर्युक्त महत्त्वपूर्ण उद्गारों के अतिरिक्त गांधी जी ने इस प्रश्न के सबसे अधिक विवादास्पद आर्थिक पहलू पर जो विचार प्रकट किये हैं, वे हमारे वर्तमान शासकों के लिए विशेष ध्यान देने योग्य हैं।

हम देखते हैं कि मन्त्री लोग शराबबन्दी का कायक्रम पूरे बनियेपन की भावना से बनाते हैं। उससे होनेवाले घाटे का उन्हें ध्यान रहता है। मुझे आश्चर्य होता है कि अगर सभी शराबी और अफीमची एकाएक शराब और अफीम का परित्याग करदें तो मन्त्री क्या करेंगे। शायद यह उत्तर दिया जावे कि उस हालत में कुछ न कुछ प्रबन्ध तो करेंगे ही। लेकिन स्वेच्छापूर्वक वे ऐसा क्यों नहीं कर डालते। अच्छा तो किसी काम के स्वेच्छापूर्वक करने में ही है, मजबूर होकर करने में नहीं। यह याद रखना चाहिए कि भूकम्प के कारण प्रांत को सालाना आमदनी से अधिक नुकसान हो जाने पर भी बिहार सरकार का काम ठप नहीं होगया था और जब अकालों तथा बाढ़ों से लोगों की तबाही और बरबादी होने के कारण सरकारी आमदनी में कमी पड़ती है, तब हिन्दुस्तान भर की सरकारें क्या करती हैं।"

यह ठीक है कि हरयाणा आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहा है। अकाल का सामना करना पड़ रहा है और कई समस्यायें हैं। जहां अभाव, अशिक्षा, अन्नाभाव आदि विकट समस्याय मुह बाये खड़ी हैं। इस विपन्नता की स्थिति में यहां मद्यपान का बोझ अनर्थकारी सिद्ध होगा। इसका आर्थिक बोझ तो असहनीय होगा। इसलिए शराब के ठेके से राजस्व की वृद्धि का अर्थशास्त्र गलत है। यहां पर वाणिज्य-नीति के उस सिद्धांत का ही हत्या होती है जिसके अनुसार यह माना जाता है कि राष्ट्रीय सम्पत्ति का हनन न हो और ऐसे खर्च बिल्कुल न किये जायें जिससे जनता के स्वास्थ्य, सम्पत्ति और नैतिकता पर किसी प्रकार की आंच आवे। शराब एक अनुत्पादक वस्तु है और यह वास्तव में घातक है, इसलिए आबकारी राजस्व पाप की कमाई है जो राष्ट्र के लिए अत्यन्त हानिकारक है। यह सच है कि शराब बिक्री से हरयाणा को १२ करोड़ रुपये की आमदनी होगी, परन्तु इससे जनता के लगभग ६० करोड़ रुपये स्वाह हो जायेंगे। फिर शराब पिलानेवाली सरकार जनता की, जनता के लिए और जनता के द्वारा किस प्रकार हुई ? इस बात का प्रमाण है कि जिन राज्यों ने शराबबन्दी लागू की, उनकी आर्थिक स्थिति बहुत सुधर गई है। शराबबन्दी से जनता की क्रयशक्ति बढ़ती है और फिर वह उसे दूसरे खर्च या बचत में लगाती है, जिससे अन्ततोगत्वा राज्य को ही लाभ होता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में नशाबन्दी के समय इसका राष्ट्रीय उत्पादन १००% बढ़ गया था। इसी प्रकार उस अवधि में गृह-निर्माण कार्य लोकप्रियता के शिखर पर पहुंच गया। दूध एवं दूध के अन्य पेयों की मात्रायें प्रति व्यक्ति २९२ पौंड बढ़ी। फल एवं सब्जियों के रस की बिक्री से ९० खरब डालर का नया उद्योग विकसित

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर—

दयानन्द के स्वप्नों को

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

उठो ! उठो ! हे आर्य सपूतो, मां ने तुम्हें पुकारा है,
किसको आज चुनौती आयी, यह किसने ललकारा है,
बढ़े चलो ! हे दयानन्द के अनुपम वीर सिपाही,
पावन वेदिकधर्म हमारा, प्राणों से भी प्यारा है।

दयानन्द के स्वप्नों को साकार तुम्हें ही करना,
आतप-दुःख-पीड़ा जन-जन की, आज तुम्हें ही हरना,
बढ़े चलो ! हे दयानन्द के अनुपम वीर सिपाही-
वसुन्धरा के कण-कण में नवशक्ति तुम्हें ही भरना।

बढ़ो सपूतो ! पावन वैदिकधर्म की रक्षा करनी है,
गो-गंगा की, गायत्री को तुम्हें सुरक्षा करनी है,
बढ़े चलो ! हे दयानन्द के अनुपम वीर सिपाही-
भारत मां के स्वाभिमान की, तुम्हें सुरक्षा करनी है।

सत्यधर्म का लोप हो रहा, बढ़ता अति पाखण्ड,
दुराचार की आंधी भू पर, चलती आज प्रचण्ड,
बढ़े चलो ! हे दयानन्द के अनुपम वीर सिपाही-
सबक सिखाना दुराचारियों को, देना है दण्ड।

भारत की धरती पर प्रतिदिन, अनाचार बढ़ते जाते,
ठग विद्या से धर्म भीरुओं के हैं भाग्य गढ़े जाते,
बढ़े चलो ! हे दयानन्द के अनुपम वीर सिपाही-
शोषित उत्पीड़ित जन तुमको, कातर स्वर से आज बुलाते।

मूर्ति पूजना बन्द नहीं है, बढ़ता जाता क्रन्दन,
दानवता के तत्त्वों का होता है अब अभिनन्दन,
बढ़े चलो ! हे दयानन्द के अनुपम वीर सिपाही-
नव्य-चेतना, नव-जागृति का, मुखर करो स्पन्दन।

बढ़ती है अज्ञान-अविद्या, तिमिराश्रित है देश,
दबी हुई है पशु प्रवृत्तियों से यह भूमि विशेष,
बढ़े चलो ! हे दयानन्द के अनुपम वीर सिपाही-
हुआ प्रकम्पित आर्तनिनादों से है आज स्वदेश।

शपथ तुम्हें है सत्यधर्म की, आगे बढ़ना सत्वर,
वैदिक-पथ पर चलते रहना, निर्भय बाहे निरन्तर,
बढ़े चलो ! हे दयानन्द के अनुपम वीर सिपाही-
आर्य बनाओ जगती तल के, सारे नर-नारी।

पूरे ग्राम द्वारा शराब न पीने का निर्णय

महेन्द्रगढ़, १० मार्च (निस)। निकटवर्ती गांव जाजड़ियावास के निवासियों ने एक बैठक का आयोजन करके शराब न पीने का निर्णय किया है।

गांव के लोगों द्वारा पारित एक प्रस्ताव में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि जाजड़ियावास गांव का कोई भी आदमी शराब का सेवन करेगा तो उस पर दण्ड के रूप में ५५१ रुपये जुर्माना किया जायेगा। एक अन्य प्रस्ताव में यह निर्णय लिया गया कि जो व्यक्ति शराब बेचता हुआ पकड़ा जायेगा, उससे ११०० रुपये जुर्माने के रूप में वसूल किये जायेंगे।

गांव के लोगों ने विवाह के मौके पर औरत की वेशभूषा पहनकर नाचनेवालों पर भी प्रतिबन्ध लगाया है।

भूल-सुधार

यतिमण्डल की बैठक स्वामी सर्वानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई थी। पृ० ७ में भूल से स्वामी सेवानन्द छप गया।

अंग्रेज गये न गई अंग्रेजी

—कविराज छाजूराम शर्मा शास्त्री नई दिल्ली-४८

हिन्दू कहाइ के हिन्दी तजें, पढ़ते अब तो सब ही अंग्रेजी।
अपने ही देश में और स्वराज में, हिन्दी पे थोपि रहे अंग्रेजी।
मानस दास बने फिरते, जो सगर्व पढ़े व लिखे अंग्रेजी।
'छाजूराम' इस भारत से, अंग्रेज तो गये न गई अंग्रेजी॥

भारत ही एक देश है जग में ऐसा जिसकी नहीं कोई है राष्ट्रभाषा।
अफसोस है वर्ष चालीस में भी बनी आज भी इगलिश के हैं दासा।
सभी देशभक्तों के मन में इसी से छायी हुई घोर है अब निराशा।
'छाजूराम' हिन्दी बने राष्ट्रभाषा तभी होगी भारत की उन्नति की आशा।

बचाना है जो संस्कृति सभ्यता को तो संस्कृत की रक्षा करनी पड़ेगी।
भारत का गौरव बचेगा इसी से प्रशक्ति मिल करके हरनी पड़ेगी।
फिरका परस्ती से उठ करके ऊंचा सुख-शान्ति की नींव बनानी पड़ेगी।
अवसर जो चूके तो जैसी है करनी 'छाजूराम' वैसी हो भरनी पड़ेगी।

सच बोलना भी पाप है

सच बोलना भी पाप है झूठों के राज में।
सच को ही मिलती फांसी झूठों के राज में।
सच बोलना है अच्छा यह मानते सभी हैं।
व्यवहार में तो झूठ है हर काम-काज में।
अभिमान ईर्ष्या में नेता फंसे पड़े हैं।
अधिकार झूठ का है तख्तो व ताज में।
कुर्सी टिकी है झूठ पर सच का तो नाम है।

सच का है काम क्या वहां शासक समाज में।
अब तो है राष्ट्रभक्त वह शासन की दृष्टि में।
आवाज जो मिलाये उसकी आवाज में।
ऐसी स्वतन्त्रता का है लाभ 'छाजूराम' क्या।
अपने हुए पराये अपने ही राज में।
सच बोलकर छुरा और गोली जो खाना चाहो।
स्वागत है आओ आपका इस आर्यसमाज में॥

आर्यसमाज मार्ग दिखाये

पांच हजार साल के बाद महर्षि दयानन्द पिछली शताब्दी में एक चौमुखी क्रांतिकारी सुधारक बनकर आये। उन्होंने देश के पतन को अपनी पैनी दृष्टि से देखा और उसका उपचार बताया। १८७५ में अपना उत्तरदाई आर्यसमाज क्रांतिकारी संस्था को बनाया। महर्षि ने विदेशी राज्य को अवनति का कारण बताया और इसको उखाड़ फेंकने का गुप्त रूप से १८५५ से १८६० तक भरसक प्रयत्न किया। विफल रहने पर धार्मिक क्रांति चलाई। वेदों की ओर मुड़े, गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली चलाई, जन्म जाति की जगह गुण, कर्म, स्वभाव से जाति बताई, सती-प्रथा, बालविवाह बन्द किया, विधवा विवाह चलाया, शुद्धि का सुदर्शन चक्कर चलाया, हरिजन उद्धार किया, नारी-शिक्षा व नारी उत्थान पर बल दिया, समानता पर बल दिया, अन्धविश्वास मिटाया, आपसी भाईचारा बढ़ाया, मूर्ति-पूजा, मृतक श्राद्ध छुड़ाया, १५-८-१९४७ को देश आजाद कराया, यह आर्यसमाज को विचारक क्रांति के कारण हुआ। शिक्षा का जाल फैलाया, मुस्लिम व ईसाई बनने पर रोक लगी, धर्म का असली स्वरूप बताया। अब ४० साल के बाद देश फिर विघटन की ओर जारहा है। सदाचार मिटता जारहा है, पाश्चात्य सभ्यता हमें बिगाड़ रही है। अतः आर्यसमाज अपने कर्त्तव्य को पहचाने और मार्गदर्शक बने। आर्यसमाज के नियम सार्वभौम हैं। यही एक संस्था है जो सबका भला चाहती है।

—सुबोधानन्द, दीनानगर

कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण पर वेदप्रचार शिविर का आयोजन

हरयाणा के ऐतिहासिक नगर कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण मेले के अवसर पर लाखों नरनारी धार्मिक भावना से यात्रा करते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से इस अवसर पर १६ से १८ मार्च तक वेदप्रचार तथा यज्ञ का आयोजन किया गया है, जिसमें आर्य विद्वानों के वेदोपदेश तथा भजनमण्डलियों के समाज-सुधार के प्रभावशाली संगीत होंगे। आर्य वीरदल हरयाणा के स्वयं सेवक भी योग तथा व्यायाम प्रदर्शन करेंगे।

यह कार्यक्रम सभा के महर्षि दयानन्द वैदिकधाम रेलवे मार्ग पर आयोजित किया गया है। आर्यसमाजों के अधिकारियों तथा धर्मप्रेमी दानियों से निवेदन है कि वेदप्रचार के इस शुभ कार्य में तन-मन तथा धन का सहयोग देकर यश के भागी बनें।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

कुरुक्षेत्र मेले पर सेवा शिविर

सूर्य ग्रहण मेले के अवसर पर १६ से १८ मार्च तक आर्य वीरदल हरयाणा सेवा शिविर लगायेगा। जिसमें सेवा-कार्य के इच्छुक आर्यवीर समस्त हरयाणा से पहुंचेंगे। अतः किसी भी प्रकार की सहायता के इच्छुक महानुभाव महर्षि दयानन्द वैदिकधाम कुरुक्षेत्र के पते पर सम्पर्क करें।

—धर्मदेव विद्यार्थी अधिष्ठाता आर्य वीरदल हरयाणा

सिरसा में शराबबन्दी प्रदर्शन द्वारा ज्ञापन दिया

आर्यसमाज सिरसा के प्रधान डा० रणधीरसिंह जी के नेतृत्व में जिला सिरसा के आर्यसमाज के अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं ने जिनमें सर्वश्री स्वामी रामानन्द जी सरस्वती, सत्यपाल आर्य मन्त्री आर्यसमाज सिरसा, बलदेव आर्य उपप्रधान आर्यसमाज, प्रिंसिपल नित्यानन्द जी वेदप्रचाराधिष्ठाता, दलीपसिंह प्रिंसिपल आर्य मैकेण्ड्री स्कूल सिरसा तथा उनके स्टाफ ने ८ मार्च को सिरसा में शराबबन्दी के लिए भारी प्रदर्शन किया तथा सरकार की शराब की नीति के विरुद्ध नारे लगाये।

प्रदर्शन के बाद आर्यसमाज का एक शिष्टमण्डल जिलाधीश सिरसा से मिला तथा उन्हें हरयाणा में पूर्ण नशाबन्दी लागू करने के लिए ज्ञापन दिया। जिलाधीश महोदय ने उन्हें विश्वास दिलाया कि इस ज्ञापन को अपनी टिप्पणी के साथ उचित कार्यवाही हेतु मुख्यमन्त्री को भेज दिया जायेगा।

पं० मुरारीलाल बेचैन द्वारा वेदप्रचार कार्यक्रम

सभा की भजनमण्डली स्वामी देवानन्द जी, पं० मुरारीलाल बेचैन ने ५ से ७ फरवरी आर्यसमाज ओरंगाबाद मितरौल, जिला फरीदाबाद, १० से १२ फरवरी आर्यसमाज गजाधरपुर, जिला बस्ती। १३ से १९ फरवरी तक आर्यसमाज खलीलाबाद शहर, जिला बस्ती। २० से २२ फरवरी आर्यसमाज मगहर, जिला बस्ती। २३-२४ फरवरी आर्यसमाज रिठवाखोरा, जिला गोरखपुर। २५ से २९ फरवरी आर्यसमाज विवस्वत वेद मन्दिर शिवपुर, जिला गोरखपुर तथा ३-४ मार्च आर्यसमाज फिरोजाबाद, जिला आगरा में वेदप्रचार करके २२५०) सभा के लिए प्राप्त किये।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

मूले जाटों के साथ रिश्ते-नाते आरम्भ

हरयाणा प्रदेश के कुछ ग्रामों में मुसलमान शासकों के दबाव में जाटों का धर्म परिवर्तन कर दिया गया था। भारत विभाजन के पश्चात् जो मूले जाट यहां रह गये उन्हें आर्यसमाज ने पुनः वैदिकधर्म में प्रविष्ट कर लिया और खान-पान, पहरान पूर्ववत् होगया, परन्तु उनके साथ रिश्ते-नाते जोड़ने में रुकावट आगई। आर्यसमाज के निरन्तर प्रचार प्रभाव के कारण अब उनके साथ रिश्ते आरम्भ होगये हैं। प्राप्त समाचारों के अनुसार १) ९ जुलाई, ८७ को श्री टेकराम आर्य ग्राम कुराड़ जिला सोनीपत के सुपुत्र श्री वेदपाल आर्य का विवाह फरमाणा, जि० सोनीपत निवासी श्री भागमल मूलेजाट की सुपुत्री जगमती के साथ। २) श्री समेरसिंह आर्य ग्राम छोटी मकड़ौली, जिला रोहतक की पोती सरोज का १० जुलाई, ८७ को श्री मुखतारसिंह मूले जाट ग्राम फरमाणा, जि० सोनीपत के सुपुत्र श्री राजवीर के साथ विवाह संस्कार सम्पन्न हो चुके हैं। इसी प्रकार श्री कटारसिंह मूले जाट ग्राम मोजनगर, जिला सोनीपत की पौती की श्री सुमेरसिंह आर्य ग्राम छोटी मकड़ौली जिला रोहतक के सुपुत्र श्री नरेन्द्रपाल के साथ एवं मा० मुखतारसिंह मूले जाट ग्राम फरमाणा, जिला सोनीपत की सुपुत्री की ग्राम पाथरी, जि० करनाल निवासी श्री मनफूलसिंह के भाई के सुपुत्र श्री वजीरसिंह के साथ सगाई हुई है।

आशा है इस प्रकार के रिश्ते-नाते अन्य स्थानों में भी होने पर रुकावटें दूर हो जायेंगी।

आर्यसमाज मिर्जापुर बाछोद का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज मिर्जापुर बाच्छोद जिला महेन्द्रगढ़ का उत्सव २७-२८ फरवरी को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पं० खेमसिंह तथा पं० शोभाराम प्रेमी के प्रभावशाली भजन हुए। यहां कुछ समय पूर्व सांग करवाया गया था। श्री प्रेमी जी ने सांग से होनेवाली बुराइयों से जनता को अवगत करवाया तथा भविष्य में ग्राम में सांग न करवाने की प्रतिज्ञा दिलवाई। अनेक युवकों को यज्ञोपवीत भी यज्ञ पर दिये गये।

—विश्वम्भरदयाल आर्य मन्त्री आर्यसमाज

ठेका खुला तो विरोध होगा

करनाल, १० मार्च (विजय शर्मा)। स्थानीय जुण्डला गेट चौक में एक शराब का ठेका खोले जाने के कथित प्रयासों के कारण यहां के नागरिकों में रोष व्याप्त है।

नगर पालिका पार्षद पवनप्रकाश गोयल के अनुसार यदि इस चौक पर शराब का ठेका खोला गया तो यहां के निवासी उसके सामने धरना देने पर मजबूर होंगे।

इस तरह की आवासीय कालोनियों के निकट ठेका नीलाम किये जाने की आलोचना करते हुए उन्होंने कहा कि उक्त ठेकेदार द्वारा इस चौक में शराब का ठेका खोलने के प्रयास किये जारहे हैं, जबकि यहां का माहौल पहले ही बहुत खराब है। उल्लेखनीय है कि इस चौक के निकट ही तीन मन्दिर तथा एक पाठशाला है। श्री गोयल के अनुसार किसी भी धार्मिक स्थल या पाठशाला के निकट ठेका खोलने का यह प्रयास कानून की सरेआम धज्जियां उड़ाना है, क्योंकि धार्मिक स्थल या पाठशाला के निकट की सौ मीटर की परिधि में शराब का ठेका नहीं खोला जा सकता।

इस वार्ड के नागरिकों का एक प्रतिनिधि दल उपायुक्त भोरिया से मिलकर उन्हें अपनी इस समस्या से अवगत करायेगा और उन्हें हस्ताक्षर युक्त एक ज्ञापन दिया जायेगा। (विश्वमानव से)

हैदराबाद आर्य स्वतन्त्रता सेनानी समिति दिल्ली के प्रस्ताव

आर्यजगत् को यह ज्ञात हुआ है कि नागपुर के उच्च न्यायालय के गांधी इरविन समझोते के अन्तर्गत किये निर्णय के अनुसार हैदराबाद के सन् १९३८-३९ के आर्य सत्याग्रहियों के निजाम सरकार व आर्यनेताओं के साथ हुए समझोते को आधार मानकर केन्द्रीय सरकार ने चार-चार मास का कारावास भुगतनेवालो को केन्द्रीय पेंशन देने का आदेश किया। तदनुसार केन्द्र सरकार ने वर्तमान महाराष्ट्र के निवासी एवं भूतपूर्व निजाम रियासत के सत्याग्रहियों को केन्द्रीय पेंशन स्वीकार करदी है।

अतः यह आर्य सम्मेलन भारत सरकार से यह मांग करता है कि भारत के अन्य प्रांतों से सम्बन्धित हैदराबाद के इस प्रकार के सभी सत्याग्रहियों को शीघ्र केन्द्रीय पेंशन दी जाये।

यह आर्य सम्मेलन मांग करता है कि हैदराबाद का अन्य स्थानों के जिन आर्यसमाजियों ने सत्याग्रह किया, परन्तु कोई निजाम समझोते के कारण सजा पूरी न होने पर छोड़ दिया, इस प्रकार के सभी सत्याग्रहियों को भी केन्द्रीय और प्रांतीयों सम्मान पेंशन दी जाये।

यह आर्य सम्मेलन केन्द्र राज्य सरकार तथा प्रांतीय सरकारों से यह मांग करता है कि सन् १९३८-३९ के आर्य सत्याग्रह में जिन व्यक्तियों ने भूमिगत रहकर अथवा रियासत से बाहर रहकर भी उस आर्य सत्याग्रह के उद्देश्य के लिए यातनायें भुगती हैं उनको अथवा उनकी विधवाओं को केन्द्र और राज्य सरकारें समुचित रूप से सम्मान और पेंशन भी प्रदान करें।

यह आर्य सम्मेलन भारत एवं राज्य सरकारों से यह मांग करता है कि हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के स्वतन्त्रता सेनानी और उनकी विधवा पत्नी यदि जीवित न भी हों तो शासन उनके निकटतम सम्बन्धी को ताम्रपत्र देवें और अन्य सुविधायें भी देवें।

—ब्रह्मदत्त स्नातक

शुद्धि समाचार

१—ग्राम नीमचना जि० बुलन्द शहर के आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव पर श्री जयप्रकाश आर्य पूर्व इमाम की देख-रेख में ५ मुसलमान भाई स्वेच्छा से शुद्ध हुए।

—स्वामी सोमानन्द सरस्वती

२—आर्यसमाज मडवा (भागलपुर) के वार्षिक उत्सव १८ फरवरी, ८८ को ११ मुसलमान भाइयों को उनकी इच्छानुसार वैदिकधर्म में प्रविष्ट किया गया। मौलाना करीमुद्दीन ने अपना नाम कर्मवीर घोषित करते हुए बताया कि मैंने सत्यार्थप्रकाश पढने के पश्चात् वैदिकधर्म ग्रहण किया है।

—गोविन्दसिंह (भागलपुर) बिहार

३—ग्राम गुड्डहाल जि० रायगढ़ (म०प्र०) में १११ ईसाइयों ने स्वेच्छा से वैदिकधर्म ग्रहण करते हुए १९-२-८८ को यज्ञ में आहुतियां देते हुए भविष्य में शराब तथा मांस का सेवन न करने का संकल्प किया।

४—ग्राम रंजपुरी जि० अम्बिकापुर में ७-२-८८ को ४५ ईसाई परिवारों ने वैदिकधर्म में स्वेच्छा से प्रवेश किया।

५—ग्राम खरकटा जि० रामगढ़ (म०प्र०) में १२१ ईसाइयों ने स्वेच्छा से वैदिकधर्म में प्रवेश किया।

—स्वामी सेवानन्द
महामन्त्री हरयाणा शुद्धि सभा

होलिका पर्व

३ मार्च को आर्यसमाज नलवा की ओर से होलिका पर्व पर आर्यसमाज मंदिर में हवन किया गया। इस अवसर पर स्वामी मस्तानानन्द जी व सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने होलिका के महत्त्व पर विस्तार से विचार रखे। क्रांतिकारी जी ने प्रेम से रहने तथा महिलाओं को अभद्र ढंग से पर पुरुषों के साथ फाग नहीं खेलने पर बल दिया। सायकाल खेतों की ढाणी में भी होलिका पर्व के उपलक्ष्य में क्रांतिकारी जी ने हवन किया।

—पं० रामेश्वर आर्य
उपमन्त्री आर्यसमाज नलवा

श्री वीरेन्द्र जी पूर्वप्रधान पंजाब सभा पर आरोप

पांचवां आरोप—

श्री वीरेन्द्र जी पर पांचवां आरोप भी सही है। जब संयुक्त पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा का विभाजन होगया, त्रिशाखन होगया, भइयो-भाइयों में सार्वदेशिक पिता ने बटवारा करा दिया, तो क्यों फिर हरिद्वार मे "शरद आश्रम" की भूमि ४२ लाख में अकेले बड़े भाई ने बेच दी? क्यों [illegible] इण्टर कालेज की भूमि, कई लाख की, अकेले बिना दूसरे भाइयों की अनुमति से बेची? और फिर उन लोगो को बेची जो वैदिक सिद्धान्तों के विपरीत मठाधीश है और आर्यसमाज के कार्यों के उल्ट प्रचार करने [illegible] फैलानेवाले हैं। भूमि की आवश्यकता स्कूलों, कालिजों [illegible] है। सम्पत्ति चाहे पंजाब सभा के नाम है, पर वह है तो [illegible] की [illegible]% व हरयाणा की ३५% सांझी। यह स्पष्ट 'बेईमानी' नहीं [illegible] है?

[illegible] कहकर कि सात लाख उसको दिया, दो लाख इसको दिया, कुछ [illegible] और को दिया इत्यादि। इसी में तो सारा घपला है। वीरेन्द्र जी [illegible] बेचनेवाले कौन है? सांझी सम्पत्ति सांझी है, जिसमें सबका अधिकार है अनुपात के अनुसार। सम्पत्ति आर्यजगत् की है। पंजाब अथवा किसी प्रांत अथवा किसी व्यक्ति की नहीं है। आधी से अधिक तो पाकिस्तान में चली गई। शेष अनुपात अनुसार दिल्ली व हरयाणा सभाओं को विभाजन के १३-१४ वर्ष पूरे हो जाने के पश्चात् भी क्यों नहीं दी आज तक भी? न्याय भी और नैतिकता भी किसी वस्तु का नाम है कि नहीं? यह श्लोक व मन्त्र स्टेजों से बोलने हेतु ही बोले जाते हैं या इनका अपने आप पर भी कुछ आज तक असर हुआ।

"ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंचिज्जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥"
यजुर्वेद/ईशोपनिषद्

अर्थ—"ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, उसके द्वारा जो तुझे प्राप्त है, उसी का ही तू सन्तोषपूर्वक एवं त्यागपूर्वक उपभोग कर, तू लोभ न कर, लालच न कर, यह धन तेरा नहीं…… इत्यादि"। वेदों में यदि अपने धन हेतु ऐसा उपदेश है तो आर्यसमाज के धन पर क्या यह उपदेश लागू नहीं होते? वह आर्यों का धन है।

चालाकी से अपने दुष्कृत्यों को छुपाने के लिए पंजाब सभा रूपी गाय को आगे खड़ा करके अब और अधिक बच नहीं सकते। देर है पर अन्धेर नहीं। पंजाब के योग्य कर्मठ आर्य अब इस अनधिकार चेष्टा को और सहन नहीं करेंगे, घड़ा भर चुका है।

"अनुव्रत पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः। अथर्ववेद"

अर्थ—पुत्र पिता के अनुकूल व्रती होकर, माता के साथ एक मन वाला होवे, अनुशासन में रहे इत्यादि। तभी घर स्वर्ग समान बन सकता है।

[illegible] में अनुशासन का होना अति आवश्यक है। यह वेदोपदेश हमारे लिये ही तो है। नहीं तो दूसरों के यह चार्ज कि 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' वाली बात आर्यों पर चोट करती है।

क्या यह अनुशासनहीनता नहीं कि लाखों रुपये की सभा की रसीदे 'फिक्स्ड डिपोजिट' जो त्रिशाखन होने से पहले (संयुक्त पंजाब सभा का विधिवत् विभाजन १९७५ में हुआ) की अभी भी श्री वीरेन्द्र की व्यक्तिगत हिरासत में है, जो दिल्ली सभा व हरयाणा सभा में बट जानी चाहिए थी अनुपातानुसार। पर वह आज तक लाखों का और सूद-ब्याज हो चुका होगा। न तो बांटी गई है और आज तक न ही पंजाब सभा के आफीशियल आय-व्यय विवरण में ही कभी दिखाई गई है। क्या यह सरासर अपराध नहीं है? धोखाधड़ी नही है। लोग तो यह भी कहते हैं कि इस धन पर निजी लाभ हेतु उनका अनुचित उपयोग किया जारहा है। इसलिए इतनी दुर्दशा होने पर भी प्रधानपद (बोगस) न छोड़ने को, मुकद्मों का अनुचित सहारा लिया जारहा है और कथित झूठे प्रस्ताव पारित कर 'मां आर्यसमाज' के गौरव को नष्ट करने के कुचक्र चला रखे हैं। *क्या साथी आर्यों को सांप सूंघ गया है या उनमें कोई स्वाभिमान नहीं रहा अथवा "आर्य" शब्द का अर्थ नहीं पता।*

—ऋषिपालसिंह महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ऋषि बोधोत्सव पर वैदिक सुधार मण्डल की स्थापना

१६ फरवरी को शिवरात्रि के पर्व पर ग्राम शेखपुरा, तहसील हांसी में नवनिर्मित विद्यालय के भवन में बड़ी धूमधाम से यज्ञ पं० भरतलाल, शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज हांसी के ब्रह्मत्व में हुआ। जिसमें गांव के सभी नर-नारियों ने भाग लिया तथा कई व्यक्तियों के द्वारा आहुति डालकर शराब को तिलांजलि दी गई। तत्पश्चात् वैदिक सुधार मण्डल का संगठन किया गया, जिसमें सर्वसम्मति से मा० प्रतापसिंह आर्य प्रधान, श्री ओमप्रकाश आर्य मन्त्री तथा श्री गोपीचन्द आर्य को प्रचार-मन्त्री चुना गया।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

महात्मा हंसराज दिवस

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, डी ए. वी. संस्थाओं एवं समस्त आर्य संस्थाओं की ओर से सम्मिलित रूप से हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी महात्मा हंसराज दिवस रविवार १७ अप्रैल, ८८ को प्रातः ९ बजे से १ बजे तक तालकटोरा गार्डन, इन्डोर स्टेडियम (नजदीक बिरला मन्दिर) नई दिल्ली में बड़े समारोहपूर्वक मनाया जायेगा।

मेरी दिल्ली व दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्रों की समस्त आर्यसमाजों, स्त्री आर्यसमाजों एवं शिक्षण संस्थाओं से एवं अन्य समस्त आर्य संस्थाओं से प्रार्थना है कि उस दिन अपनी आर्यसमाज का साप्ताहिक सत्संग स्थगित कर अधिकाधिक संख्या में उपर्युक्त लिखित कार्यक्रम में अवश्य सम्मिलित हों।

आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र से

श्री सुखदेव शास्त्री महोपदेशक का भाषण रात्रि ७.४५ मिनट पर। तारीख १६ मार्च, ८८। विषय—आज के सन्दर्भ में गीता का सन्देश।

पं० लेखराम स्मृति दिवस

आर्यसमाज दयानन्द मार्ग रेलवे रोड, शकूरबस्ती, दिल्ली में अमर शहीद श्री पं० लेखराम स्मृति दिवस ६ मार्च, ८८ को आर्यसमाज मन्दिर भवन में बड़े समारोह के साथ मनाया गया।

—भारतभूषण मन्त्री आर्यसमाज दयानन्द मार्ग

बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

१.	दी वेदाज (अंग्रेजीभाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२.	दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज पं० चमूपति एम०ए०	१-५०
३.	जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)—पं० चमूपति एम०ए०	३-००
४.	निहारिकावाद और उपनिषद्—पं० चमूपति एम०ए०	०-५०
५.	आर्यसमाज की विचारमाला—पं० क्षितीशकुमार वेदालंकार	१-००
६.	निजाम की जेल में—लेखक पं० क्षितीशकुमार ,,	२०-००
७.	आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी स्मारिका	२०-००
८.	आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण—पं. ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
९.	बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय)	४ ५०
१०.	ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
११.	हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१२	धर्म-प्रवेशिका —डा० रणजीतसिंह	३-००
१३.	धर्म-भूषण ,,	५-००
१४.	पंजाब का आर्यसमाज —प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१५.	आदर्श धातु रूपावली —महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१६.	वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१७.	स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
१८.	मूर्तिपूजा —सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१९.	वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
२०.	वेदाविर्भाव ,,	१-००
२१.	वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
२२.	ईसाई पादरियों को आर्यसमाज को चुनौती—स्वा० दर्शनानन्द	०-१०
२३	गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४.	सत्यार्थप्रकाश ,,	१०-००
२५.	महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२६.	हमारा फाजिल्का —योगेन्द्रपाल	१ ००
२७.	बड़ —स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती	१-५०
२८.	वीर हेमू ,,	००-७५
२९.	पीपल ,,	१-५०
३०.	मिर्च ,,	१-५०
३१	श्लीपद वा हाथीपांव की चिकित्सा ,,	०-२०
३२.	बिच्छू विष चिकित्सा ,,	०-५०
३३.	लवण ,,	१-२५
३४.	विदेशों में मैंने क्या देखा ,,	२-५०
३५.	नेरोबी यात्रा ,,	१-५०
३६.	ब्रह्मचर्य साधन ६-११ ,,	१०-००
३७.	,, १-२ ,,	१-००
३८.	,, ३ ,,	१-००
३९.	,, ४ ,,	२-५०
४०.	,, ५ ,,	२-००
४१.	,, ६ ,,	३-००
४२.	,, ७ ८ ,,	२-००
४३.	,, ९ ,,	३-००
४४.	,, १० ,,	१-५०
४५.	,, ११ ,,	२-००
४६.	हल्दी ,,	१-५०
४७.	नीम ,,	१-२५
४८.	कर्त्तव्य दर्पण—म० नारायण स्वामी	४-००
४९.	विद्यार्थी जीवन रहस्य—म० नारायण स्वामी	२-५०
५०.	योग रहस्य ,, ,, ,,	४-५०
५१.	आर्यसमाज क्या है ? ,, ,, ,,	२-००
५२.	कथा माला ,, ,, ,,	१-२५
५३.	संस्कारविधि	६-००
५४.	वैदिकधर्म परिचय—पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	३-५०
५५.	वैदिक यज्ञ-पद्धति—सार्वदेशिक	००-६०
५६.	मृत्यु के पश्चात् जीव की गति—श्री जगदेवसिंह सिद्धांती	१-५०

प्राप्ति स्थान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दयानन्दमठ, सिद्धांती भवन, रोहतक।

वैदिक यतिमण्डल की बैठक में महत्त्वपूर्ण निर्णय

सार्वदेशिक सभाप्रधान स्वामी आनन्दबोध जी ने त्याग-पत्र दिया

हरयाणा प्रदेश के ऐतिहासिक तथा धार्मिक स्थान दयानन्दमठ, रोहतक की यज्ञशाला में वैदिक यतिमण्डल की बैठक ५ तथा ६ मार्च को श्री स्वामी सेवानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। भारत-भर के प्रमुख सन्यासियों ने जिनमें स्वामी ओमानन्द, स्वामी दीक्षानन्द, स्वामी विद्यानन्द, स्वामी जगदीश्वरानन्द, स्वामी आनन्दबोध तथा महात्मा दयानन्द, स्वामी प्रेमानन्द, स्वामी धर्ममुनि, स्वामी सुमेधानन्द, स्वामी योगानन्द आदि विशेष उल्लेखनीय हैं, उपस्थित थे। इस बैठक में आर्यसमाज के सभी संन्यासियों तथा वानप्रस्थियों को संगठित होकर वैदिकधर्म का प्रचार करने तथा शराब जैसी सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के कार्य में जुट जाने का कार्यक्रम बनाया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये संयोजकों की नियुक्ति करने का अधिकार स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को दिया गया।

इस बैठक में महत्त्वपूर्ण तथा ऐतिहासिक निर्णय के अनुसार आर्य-समाज के आपसी विवाद समाप्त करने तथा आर्यसमाज के संगठन को और अधिक सुदृढ़ करने के लिए स्वामी सर्वानन्द जी के आदेश पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध ने प्रधान पद से सहर्ष त्याग-पत्र दे दिया और श्री स्वामी सर्वानन्द जी को, जो उनके गुरुजी भी हैं, विश्वास दिलाया कि मुझे आर्यसमाज का जो भी कार्य करने का निर्देश दिया जायेगा, उसे तन-मन तथा धन से सफल करने का पूरा यत्न करूंगा। स्वामी आनन्दबोध जी के इस त्याग तथा सद्भावनापूर्ण पग का सभी आर्य नर-नारियों ने स्वागत किया।

स्वामी सर्वानन्द जी ने भी स्वामी आनन्दबोध जी द्वारा प्रस्तुत आदर्श की प्रशंसा करते हुए आशा व्यक्त की कि आर्यसमाज के अन्य नेता भी इनका अनुसरण करेंगे और आपसी विवाद समाप्त करने में सहयोग देंगे।

—केदारसिंह आर्य

आर्यसमाज मन्दिर के निकट शराब का ठेका हटाने का प्रस्ताव

दिनांक २८ फरवरी, ८८ रविवार को प्रातः साप्ताहिक यज्ञोपरांत श्री बनारसीदास तायल जी की अध्यक्षता में आर्यसमाज तिगडाना की आर्यसमाज मन्दिर में विशेष बैठक सम्पन्न हुई। इसमें नीचे लिखे प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये—

१—हरयाणा प्रदेश जो पूर्वकाल से "दूध दही का खाना" नाम से विख्यात रहा है। शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति और हरयाणा सरकार द्वारा राज्य में शराब के अधिक ठेके, साथ में अहाते खोलने पर आर्य-समाज तिगड़ाना गहरी चिन्ता व्यक्त करता है। मद्यपान से तो मानव का पतन ही पतन है। जैसा कि महाभारतकाल में यादवों का सर्वनाश होगया था। अतः आर्यसमाज तिगड़ाना हरयाणा के मुख्यमन्त्री महोदय श्री देवीलाल से विनम्र निवेदन करता है कि अपने राज्य में पूर्ण नशा-बन्दी कर मानव निर्माण में योगदान करने की कृपा करें। हरयाणा की जनता इस महादानव से पीछा छुड़ाने पर युगों-युगों तक आपका यशोगान करेगी।

२—आर्यसमाज मन्दिर तिगड़ाना एवं जींद मार्ग पर गाव के बस अड्डे के निकट शराब का ठेका खुला है। वहां पर शराबी शराब पीकर अनर्गल बकवास और अश्लील हरकतें करते हैं। इस प्रकार महिलाओं की इज्जत का खतरा बना रहता है। अतः आर्यसमाज तिगड़ाना हर-याणा सरकार से निवेदन करता है कि शराब का ठेका यहां से तुरन्त हटाया जाये और नये साल १९८८-८९ में तिगड़ाना गांव में शराब का ठेका न खोला जाये।

— विजयपालसिंह मन्त्री आर्यसमाज तिगड़ाना

भूल सुधार

सर्वहितकारी दिनांक २१ फरवरी, ८८ के पृष्ठ ६ पर हैदराबाद आर्य सत्यग्रहियों की सूची की संख्या ३ में श्रीमती ज्ञानोदेवी धर्मपत्नी श्री रामचन्द ग्राम सिसाये, तहसील हांसी, जिला हिसार संख्या ४ में श्रीमती भगवान्देवी धर्मपत्नी श्री बारूराम ग्राम बुडाना, तहसील हांसी जिला हिसार तथा संख्या ७ में श्री मानसिंह आर्य सुपुत्र श्री मुगलाराम ग्राम बुडाना, तहसील हांसी, जिला हिसार पढ़ना चाहिए। उक्त अंक में कुछ अशुद्धियां छपी थी।

—व्यवस्थापक

(पृष्ठ २ का शेष)

होगया। आर्थिक लाभ से सामाजिक लाभ अधिक ही देखा गया है।

हरयाणा में अभी शराब पीनेवालों की संख्या इतनी अधिक नहीं है, परन्तु थोडे होने पर भी वे शोर अधिक करते हैं। शराब न पीनेवालों को वाचाल बनाना होगा। उन्हें शराब विरोधी बनाने की आवश्यकता है। सत्य की विजय अवश्य होगी। किन्तु उस सत्य को जन-जन तक ले जाना होगा। जनशक्ति दारु के विरोध में खडी हो जायेगी तो सरकार नशाबन्दी की उपेक्षा नहीं कर सकेगी। हमें हर सम्भव तरीके से अहिंसक तरीकों से जनशक्ति का प्रदर्शन करके सरकारी उदार आबकारी नीति को नशाबन्दी की दिशा में मोड़ना होगा।

आर्यसमाज मुकलान (हिसार) का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री बबलुराम आर्य, उपप्रधान—करतारसिंह आर्य, मन्त्री—सुबेसिंह आर्य, उपमन्त्री—लक्ष्मीचन्द आर्य, कोषाध्यक्ष—मूलचन्द आर्य, प्रचारमन्त्री—जयसिंह आर्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४) रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 सृष्टि संवत १,९६,०८,५३,०८९



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री सह-सम्पादक—डा० यशवीर

वर्ष १५, अङ्क १७ २१ मार्च १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

सत्यार्थप्रकाश और स्वामी श्रद्धानन्द

लेखक—यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास चन्द्रनगर, मुरादाबाद-२४४०३२

आर्यसमाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को भूली-भटकी मानवता को सीधी-सच्ची निष्कंटक राह दर्शाने में जो भूमिका रही है, उसकी कोई उपमा नहीं दी जा सकती। वेद के गूढ़ रहस्यों एवं मान्य सिद्धांतों को प्रथम बार जन भाषा के माध्यम से जनसाधारण तक पहुंचाने का यह पवित्र प्रयास था। कितने पतितों को उभार कर इसने महामानव बना दिया, इसकी गणना भी कठिन है। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज अपने यौवनकाल में मुन्शीराम के रूप में एक नास्तिक नवयुवक थे। नास्तिक भी ऐसे जिसे अपनी नास्तिकता पर अभिमान था। बरेली में जब महर्षि पधारे तो उनके पिता जो वहां नगर कोतवाल थे, उन्हें महर्षि का व्याख्यान सुनने के लिए लिवा ले गये। मुन्शीराम चले तो गये, किन्तु मनमें यही सोचते रहे कि केवल संस्कृत जाननेवाला कोई साधु भला युक्तियुक्त बात क्या करेगा, परन्तु जब महर्षि का प्रवचन सुना तो दंग रह गये। उन्होंने महर्षि से ईश्वर विषयक कई शंकायें कीं, जिनका युक्तियुक्त उत्तर पाकर वे निरुत्तर होगये। अगले दिन फिर कुछ शकायें कीं, तब भी वही हाल हुआ। तब मुन्शीराम ने कहा कि महाराज आप युक्तियों से मेरा मुंह तो बन्द कर देते हैं, किन्तु ईश्वर में मेरी श्रद्धा नही जगा पाये। महर्षि का इस पर यह उत्तर था कि आपने प्रश्न किये, मैंने समाधान कर दिये। यह युक्ति की बात थी, पर मैंने कब प्रतिज्ञा की थी कि आपका ईश्वर पर विश्वास जगा दूंगा।

कालांतर में मुन्शीराम जी लाहौर वकालत की पढ़ाई करने के लिए गये। वहां से आर्यसमाज मन्दिर भी गये और ब्राह्मसमाज में भी। उनका झुकाव ब्राह्मसमाज की ओर अधिक था, किन्तु पुनर्जन्म के प्रश्न पर वे ब्राह्मसमाज से मतभेद रखते थे। ब्राह्मसमाजियों से की गई अपनी शंकाओं के सम्बन्ध में श्री स्वामी जी अपनी आत्मकथा (कल्याण मार्ग का पथिक) में लिखते हैं कि—ब्राह्मसमाजी उत्तरों से मेरी तसल्ली न हुई, उल्टा पुनर्जन्म एवं कर्म-फल के सिद्धांत पर निश्चय और भी दृढ़ होगया। तब पादरी स्काट के साथ आचार्य दयानन्द के शास्त्रार्थ का स्मरण आया। मैं सीधा बच्छोवाली के आर्यसमाज मन्दिर की ओर सत्यार्थप्रकाश खरीदने के विचार से चल दिया। विक्रय पुस्तक भण्डार बन्द था। चपरासी ने कहा कि लाला केशवराम पुस्तकाध्यक्ष के आने पर पुस्तक मिल सकेगी। मैंने उनके घर का पता लिया और दो घण्टों की आवारागर्दी के पीछे उनका घर ढूंढ निकाला। केशवराम जी घर न थे। बड़े तारघर गये थे, क्योंकि वह तार बाबू (सिगनलर) का काम करके ही आजीविका प्राप्त करते थे। मैं तारघर का पता लगाकर वहां पहुंचा। उस समय वह छुट्टी में जलपान के लिए घर गये थे। मैं फिर उनके घर लौटा तो वह तारघर लौट गये थे। पूछने से पता लगा कि वह डेढ़ घण्टे में ड्यूटी से लौटेंगे। मैंने वह डेढ़ घण्टा पास की गली के अन्दर मटरगश्ती में बिताया। एक सज्जन बाबू केशवराम जी के घर में जाते दिखाई दिये। मैंने उन्हें जा घेरा। "महाशय जी! मुझे सत्यार्थप्रकाश खरीदना है।" उत्तर मिला "निवृत्त होकर कुछ खालूं, फिर आपके साथ समाज मन्दिर चलूंगा।" मैंने अपना सारे दिन का इतिहास सुनाकर बाहर ठहरने की इच्छा प्रकट की। केशव जी का मुख सहानुभूति से चमक उठा और उन्होने कहा—"महाशय जी चलिये पहले आप को पुस्तक दे दूं। जब तक आपका काम न करलूं, मुझे इत्मीनान न होगा।" समाज मन्दिर में पहुंचने पर सत्यार्थप्रकाश मेरे हाथ में रखा गया। मैंने मूल्य दिया और इस प्रकार आह्लादपूर्वक लौटा, मानो बड़ा कोष हाथ लग गया है।"

उपरोक्त विवरण यह बताने के लिए पर्याप्त है कि स्वामी जी के मनमें कितनी उथल-पुथल थी और सत्यार्थप्रकाश को खरीदने में वे कितने व्याकुल थे। स्वामी जी आर्यसमाज मन्दिर से सत्यार्थप्रकाश लाते ही भोजन आदि से निवृत्त होकर उसे पढ़ने बैठ गये और फिर पढ़ते ही गये। ज्यों-ज्यों सत्यार्थप्रकाश पढ़ते गये, शंकाओं की निवृत्ति होने लगी और अन्ततः नास्तिकता का दर्द सारा जाता रहा। सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन का उन पर जो प्रभाव पड़ा, उसे हम उन्हीं के शब्दों में उद्धृत कर रहे हैं। अपनी इसी आत्मकथा में स्वामी जी लिखते हैं कि—संवत् १९४१ का माघ मास और आदित्यवार का दिन है। नास्तिकपन के गढ़े से मैं निकल चुका हूं। धर्म-विषयक गहरे आंदोलन के पश्चात् सत्यार्थप्रकाश का पाठ दिन-रात आरम्भ कर चुका हूं। अनारकली के पास रहमत खां के अहाते में एक तीन कमरोंवाली कोठी के बांई ओर के कमरे में मैं प्रातः ६ बजे कुर्सी पर बैठा था। सत्यार्थप्रकाश का आठवां समुल्लास सामने खुला पड़ा है, किन्तु मैं हाथ पर सिर रख किसी गम्भीर विचार में निमग्न हूं। इतने में कमरे का द्वार खुला और मेरे मित्र सुन्दरदास जी ने अन्दर प्रवेश किया। उनके पैर की आहट ने मुझे विचार निद्रा से जगा दिया।——उन्होंने पूछा—"किस चिन्ता में हैं, कहिये कुछ निश्चय न हुआ?" मेरी ओर से उत्तर मिला—"पुनर्जन्म के सिद्धांत ने फैसला कर दिया। आज मैं सच्चे विश्वास से आर्यसमाज का सभासद् बन सकता हूं।"

पाठकवृन्द! यह है सत्यार्थप्रकाश का जादू। महर्षि के साथ वार्तालाप से नास्तिकता की जड़े उखड़ चुकी थीं और उनके विचारपुंज सत्यार्थप्रकाश ने उसे समूल नष्ट कर दिया। सत्य है—

ऋषिराज तेज तेरा चहुं ओर छारहा है।
तेरे बताये पथ पर संसार आरहा है॥

(शेष पृष्ठ ५ पर)

नारी उत्थान में स्वामी दयानन्द का योगदान

—डा० रामनाथ वेदालंकार वेद मन्दिर ज्वालापुर (हरिद्वार)

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जहां अपने समय में भारत में प्रचलित विविध कुरीतियों, अन्धविश्वासों तथा मिथ्या धारणाओं के उन्मूलन का बीड़ा उठाया वहां स्त्री-जाति को दयनीय स्थिति से उभार कर उसे समाज में उचित स्थान दिलाने का भी भरसक प्रयास किया। उस समय स्त्रियों की दशा बड़ी शोचनीय थी। स्त्री-शिक्षा का प्रसार नाम को भी नहीं था, स्त्रियों को शिक्षित करना सर्वथा अनावश्यक समझा जाता था। घरों में भी उनका सम्मान नहीं होता था, अपितु वे ताड़न को ही अधिकारी समझी जाती थीं। बालविवाह प्रचलित थे, जिसके परिणामस्वरूप अनेक स्त्रियां बाल-विधवा हो जाती थीं। विधवाओं का मांगलिक उत्सवों में भाग लेना अच्छा नहीं समझा जाता था। विधवायें या तो सती हो जाती थीं या जीवनभर कष्ट भोगती रहती थीं और समाज से अपमानित होती रहती थीं। नारियों को वेद पढ़ने के अधिकार से भी वंचित रखा गया था। वे बाहर नहीं निकलती थीं, घर में भी उन्हें पर्दे में रहना पड़ता था। नारी के विदुषी और अध्यापिका बनने की बात कोई स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था। स्वामी जी ने नारी के विषय में प्रचलित इन हीन विचारों को परिवर्तित करने के लिए और समाज में नारियों को उच्च स्थान दिलाने के लिए अपनी लेखनी और वाणी को प्रवृत्त किया।

वैधव्य के अभिशाप और सतीप्रथा से विह्वल

स्वामी दयानन्द ने जब देखा कि छोटी-छोटी बालिकाओं के विवाह हो जाते हैं, तब देश के अधःपतन को देखकर उनका हृदय नारी-जाति के प्रति दयार्द्र हो उठा। उपदेश मंजरी के १२वें प्रवचन में वे कहते हैं—

"यदि इस समय हम लोगों में बालविवाह प्रचलित न होता तो विधवाओं की संख्या कभी इतनी न होती और न इतने गर्भपात और इतनी भ्रूण हत्यायें न होती।"

उस समय विधवा विवाह का भी प्रचलन नहीं था, अत. नारी के लिए वैधव्य का कष्ट दुस्सह हो जाता था। उक्त प्रवचन में ही विधवा विवाह के सम्बन्ध में स्वामी जी कहते हैं—"विधवा विवाह से जो लोग विरोध करते हैं उनकी पुष्टि करके विधवा विवाह का खण्डन करने की मेरी इच्छा नहीं है। पर यह अवश्य कहूँगा कि ईश्वर के समीप स्त्री पुरुष दोनों बराबर हैं। क्योंकि वह न्यायकारी है, उसमें पक्षपात का लेश नहीं है। जब पुरुषों को पुनर्विवाह करने की आज्ञा दी जावे तो स्त्रियों को दूसरे विवाह से क्यों रोका जावे।...... वाह रे! तुम्हारा सामाजिक प्रबन्ध। इस अन्ध-परम्परा को देखकर तो मानना पड़ता है कि इससे विधवा विवाह सब प्रकार अच्छा है।"

उक्त प्रसंग में ही सतीप्रथा को वेदविरुद्ध बताते हुए कहते हैं—वेद बाह्य रीतियों को हमें परम्परा की पदवी कभी नहीं देनी चाहिए। सदुपदेशपूर्ण वेदों और आर्षग्रंथों में जिस सच्ची परम्परा का विधान किया गया है, उसका पालन करना चाहिए।......सती होने के लिए वेद की आज्ञा नहीं है।"

स्त्री-शिक्षा पर बल

स्वामी जी ने स्त्री-शिक्षा पर बहुत बल दिया है। प्राचीनकाल में स्त्रियां शिक्षित होती थीं। इस ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए उपदेश-मंजरी के तृतीय प्रवचन में वे कहते हैं—

"पूर्वकाल में आर्य लोगों में स्त्रियां उत्कृष्ट रीति से पढ़ती थीं। आर्य लोगों के इतिहास की ओर देखो—स्त्रियां आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर रहती थीं और साधारण स्त्रियों के भी उपनयन और गुरुगृह में वास इत्यादि संस्कार होते थे। गार्गी, सुलभा, मैत्रेयी, कात्यायनी आदि बड़ी-बड़ी सुशिक्षित स्त्रियां होकर बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों की शंकाओं का समाधान करती थीं।"

स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश में लड़के-लड़की सबके लिए शिक्षा का विधान करते हुए लिखा है—"सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म, स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना माता-पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है।" (समु० ३)। स्वामी जी लड़के-लड़कियों सबकी शिक्षा को अनिवार्य बताते हैं तथा जो माता-पिता उन्हें शिक्षा से वंचित रखना चाहें, उन्हें राजदण्ड मिलना चाहिए, ऐसा कहते हैं—"इसमें राज नियम और जाति नियम होना चाहिए कि पांचवें और आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़के और लड़कियों को घर में न रख सके। पाठशाला में अवश्य भेज देवे, जो न भेजे वह दण्डनीय हो। (समु. ३)। ऋग्भाष्य ६।४४।१८ के भावार्थ में लिखते हैं कि राजा ऐसा यत्न करे कि जिससे सब बालक और कन्यायें ब्रह्मचर्य से विद्यायुक्त होकर समृद्धि को प्राप्त हो। सत्य, न्याय और धर्म का निरन्तर सेवन करें। यजु० १०।७ के भाष्य में लिखा है कि राजा को प्रयत्नपूर्वक अपने राज्य में सब स्त्रियों को विदुषी बनाना चाहिए।

वेदाध्ययन और यज्ञ में अधिकार

स्वामी दयानन्द ने प्रमाणपूर्वक बताया कि यज्ञ करने-कराने और वेदों के अध्ययन-अध्यापन करने का अधिकार नारी को भी वैसा ही है, जैसा पुरुष को। उन्होंने इस ओर ध्यान आकृष्ट किया कि प्राचीनकाल में यज्ञों में यजमानों के साथ यजमान पत्नी भी बैठती थी तथा मन्त्रोच्चारण भी करती थी। वेद के अनुसार कन्याओं का भी उपनयन संस्कार होना चाहिए, परन्तु मध्यकाल में स्त्रियों का उपनयन का अधिकार समाप्त कर दिया गया। अनुपनीत व्यक्ति पढ़ने का अधिकारी नहीं होता। अतः नारियां वेदाध्ययन से वंचित करदी गईं। यथा भागवत पुराण में लिखा है कि स्त्री को, शूद्र को और ब्राह्मणत्व का ढोंग करने वाले को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है—"स्त्रीशूद्रद्विजबन्धूनां त्रयी न श्रुतिगोचरा" (भा० पु० १।४।२५) दयानन्द ने इसका सप्रमाण खण्डन किया।

स०प्र० तृतीय समु० में क्या स्त्री लोग भी वेदों को पढ़ें? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए वे लिखते हैं—"अवश्य, देखो श्रौतसूत्रादि में 'इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्' अर्थात् स्त्री यज्ञ में इस मन्त्र को पढ़ें। जो वेदादि शास्त्रों को न पढी होवे तो यज्ञ में स्वर सहित मन्त्रों का उच्चारण और संस्कृत भाषण कैसे कर सके? भारतवर्ष की स्त्रियों में भूषणरूप गार्गी आदि वेदादि शास्त्रों को पढ़के पूर्ण विदुषी हुई थीं, यह शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट लिखा है।"

ऋग्० १।१६४।४१ के भाष्य में लिखते हैं—"जो स्त्रियां समस्त सांगोपांग वेदों को पढ़के पढ़ाती हैं, वे सब मनुष्यों की उन्नति करती हैं।"

नारियां अध्यापन करें

स्वामी जी का विचार था कि नारियों को विदुषी बनकर गुरुकुल और पाठशालाओं में कन्याओं को शिक्षित करना चाहिए। कन्या पाठशालाओं में पुरुष अध्यापक रखने का वे निषेध करते हैं। जो वहां अध्यापिका और अध्यापक पुरुष वा भृत्य, अनुचर होवें। कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें' (तृतीय समु.)

ऋग्भाष्य २।४१।१६ के भावार्थ में वे लिखते हैं—"जितनी कुमारी हैं वे विदुषियों से विद्या अध्ययन करें और वे कुमारी ब्रह्मचारिणी विदुषियों से ऐसी प्रार्थना करें कि आप हम सबको विद्या और सुशिक्षा से युक्त करें।" ऋग्भाष्य २।४१।१७ के भाष्य में लिखते हैं—'सब विद्वान् जन अपनी-अपनी विदुषी स्त्रियों के प्रति ऐसा उपदेश देवें कि तुम्हें सब की कन्याओं को पढ़ाना चाहिए और सब स्त्रियों को सुशिक्षित करना चाहिए।' यजु० २०।८५ के भाष्य में लिखते हैं—"जो स्त्रियों के बीच में विदुषी स्त्री हो, वह सब स्त्रियों को सदा सुशिक्षा करे, जिससे स्त्रियों में विद्या की वृद्धि हो। यजु० ३७।४ के भाष्य में लिखा है—'जब तक स्त्रियां विदुषी नहीं होतीं, तब तक उत्तम शिक्षा भी नहीं बढ़ती है।'

(शेष पृष्ठ ६ पर)

पंजाब का नेतृत्व खड़ाकुओं के हाथ में

देखिये क्या होता है ?

—प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

वैसे तो २ वर्ष पूर्व ही गुरुद्वारों पर आतंकवादियों का कब्जा हो गया था। उन्होंने ही अकाल तख्त का मुख्यग्रन्थी १९८६ के सरबत खालसा में नियुक्त कर दिया था, परन्तु भाई जसबीरसिंह रोड़े के जेल में होने के कारण प्रो० दर्शनसिंह को कार्यकारी मुख्यग्रन्थी बना दिया था। स० सुरजीतसिंह बरनाला को उन्होंने तन्खैय्या घोषित कर दिया था। उसके बाद उन्होंने अनेक गुरुद्वारों पर भी कब्जा कर लिया और बड़े चार गुरुद्वारों के ग्रन्थी भी नियुक्त कर दिये थे। प्रो० रागी ने बरनाला को हटाकर अकालियों को इकट्ठे कराये हुए एकीकृत अकाली दल में शामिल करने का प्रयास किया और नीचे-नीचे समझौते के लिए बातें भी की। मुनि सुशीलकुमार के माध्यम से शायद कुछ बातें हुई भी और उनमें काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका [illegible] रियासती की भी रही। प्रो. दर्शनसिंह रागी एकीकृत अकाली दल की ओर से बातें करते रहे और ऐसा दिखाते रहे, जैसे वे सभी गर्म और नर्म अकालियों को इकट्ठा कर सकेंगे और बातचीत द्वारा संविधान के अन्तर्गत ही फैसला करवा सकेंगे। जब आतंकवादियों ने उनकी कोई बात नहीं सुनी और बात आगे न बढ़ सकी, तब कुछ नेताओं को ऐसा अनुभव होने लगा कि शायद बादल अधिक प्रभावशाली व्यक्ति होने के नाते बात को आगे बढ़ा सकते हैं और सभी गुटों के अकालियों के प्रतिनिधि के तौर पर कोई सर्वमान्य हल पेश कर सकें, परन्तु आतंकवादी तो पहिले ही बादल को भी तन्खैय्या घोषित कर चुके थे। इसलिए जिन आशाओं से उनको जेल से बाहर लाया गया था, वे बहुत जल्दी ही निराशा में बदलने लगीं। बादल नेतृत्व देने में तो पूरी तरह असफल रहे ही, उनकी तो सबसे बड़ी चिन्ता यह रही कि किसी तरह उनका प्रवेश स्वर्ण मन्दिर में हो जाये और उनकी सजा माफ करदी जाये।

बादल की एकीकृत अकाली दल की बुलाई गई सभाओं में से भी आतंकवादियों ने उनको छोड़कर भागने के लिए मजबूर कर दिया। वे आतंकवादियों की वकालत भी करने लगे और जिस काम के लिए उनको जेल से रिहा किया गया था, उसमें पूर्णरूप से नाकारा समझ लिए गये। उनकी शर्तों को आंशिक रूप में मान लिए जाने पर भी उनसे बात करना व्यर्थ समझा गया। मुनि सुशीलकुमार जो कुछ शर्तें मानकर बात आगे बढ़ाने की बात करना चाहते हैं, उन्होंने भी आतंकवादियों से ही सम्पर्क साध लिया। उधर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी की विशेष बैठक में, विशेष आमन्त्रित के रूप में जाकर उन्होंने आतंकवादियों के सामने गु. प्र. कमेटी के घुटने टिकवा दिये। प्रो. रागी का त्याग-पत्र स्वीकार करके भाई जसबीरसिंह की अकाल तख्त के मुख्यग्रंथी के रूप में नियुक्ति को मान्यता दे दी और बड़ी धूमधाम से उनका अभिषेक कर दिया गया।

अब भाई जसबीरसिंह ने कह दिया कि सरकार से बात करने का अधिकार केवल आतंकवादियों को है। इसका अर्थ यह हुआ कि अकाल तख्त जो पंथ का सर्वोपरि है, उसकी ओर से यह आदेश होगया कि पंथ के प्रतिनिधि केवल आतंकवादी रह गये हैं। यदि सभी आतंकवादी संगठन यह तय कर लेवें कि वे हिंसा का रास्ता छोड़कर संविधान के अन्तर्गत ही बात करेंगे, तब तो उनसे बात हो सकती है। यदि उससे एक स्थाई हल पंजाब की समस्या का निकल आये तो कोई हर्ज नहीं। यदि नवयुवक जिम्मेदारी सम्भाल कर अपने प्रदेश और देश के हित को प्राथमिकता देकर शासन चलायें तो अच्छा ही होगा। क्योंकि अन्ततोगत्वा उनको आज नहीं तो कल शासन की बागडोर सम्भालनी ही है, परन्तु जो बहकी-बहकी बातें भाई जसबीरसिंह कर रहे हैं, 'पूर्ण आजादी' की बातें करते हैं तथा जो खालिस्तान की मांग करते रहे, उनसे ही बातें करने को कहते हैं, उससे तो गतिरोध टूटने की बजाये और पक्का हो जायेगा। उस अवस्था में भारत सरकार को दूसरे ही तरीके अपनाने होंगे।

वास्तविकता तो यह है कि न तो कोई अकाली नेताओं में किसी का ऐसा व्यक्तित्व है कि सिख जनता उसके साथ खड़ी हो सके और यदि सिख जनता का साथ देने को तैयार हो भी जायें तो कोई नेता ऐसा नहीं जो अपनी जान जोखम में डाल सके और आतंकवादियों की धमकियों के सामने टिक सके। डर के मारे सब नेता आतंकवादियों की हां में हां मिलाने में ही अपनी खैर समझने लगे हैं। बरनाला को तो खड़कुओं ने बिरादरी से निकाल रखा है। बादल ने हां में हां मिलाकर बिरादरी में शामिल किये जाने के लिए अर्जदाश्त की हुई है। निजी बातों में वे बेकसूर लोगों के मारे जाने की निंदा भी कर देते हैं और संविधान के अन्तर्गत फैसला करने की बात कहते हैं, परन्तु जनता में वही बोलते हैं जिससे उग्रवादी उनसे नाराज न हों और उनकी जान बख्श दें और उनकी सजा समाप्त करके उन्हें पंथ में ले लेवें।

पंजाब के सभी राजनीतिक दलों को यह समझ लेना चाहिए कि यदि यही चलता रहा तो पंजाब में उनका अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। लोकतन्त्र तो इन परिस्थितियों में दम तोड़ जायेगा। आज पंजाब में कोई एक दल इतना मजबूत नहीं रह गया है जो आतंक का मुकाबला कर सके और पंजाब की भयभीत तथा त्रस्त जनता का विश्वास प्राप्त कर सके। यदि पंजाब में लोकतन्त्र को बहाल करना है और राजनैतिक दलों को अपना अस्तित्व भी बनाये रखना है तो उन सबको लूटमार तथा हत्याओं के दौर को समाप्त करना होगा। यदि इसकी कोई सम्भावना बची है तो एक ही है कि सभी दल (अकाली, कांग्रेस, कम्यूनिस्ट, जनता पार्टी, भारतीय जनता पार्टी आदि) एकजुट होकर प्रदेश में सुरक्षा, शांति तथा सद्भावना का वातावरण पैदा करें। आतंकवादियों को अलग-थलग करने के लिए सभी दल एकजुट होकर लगें और प्रशासन का हाथ बटायें। यही शांति की स्थापना का एकमात्र रास्ता है। यह सब हो जाने के पश्चात् सब दल चुनावों की तैयारी करें और फिर चुनाव करवाने के बाद पंजाब में प्रजातान्त्रिक सरकार बने।

यह भी बात चलती है कि पंजाब में आपात स्थिति की घोषणा करदी जाये और फिर पूरी तरह समाज विरोधी तत्त्वों तथा आतंकवादियों का सफाया किया जाये। यह भी एक विकल्प है और सब रास्ते बन्द हो जायें तो इसे जरूर लागू करना चाहिए, परन्तु आपात स्थिति का भ्रष्ट तथा स्वार्थी तत्त्वों द्वारा दुरुपयोग अवश्य होता है और यदि उसकी पूरी रोकथाम किये बिना इसे लागू किया गया तो उसके नतीजे उल्टे हो सकते हैं।

इसलिये पहिला काम तो यही करना चाहिए कि पंजाब के राज्यपाल या भारत सरकार पंजाब के सभी राजनैतिक दलों की एक बन्द कमरे में बैठक बुलायें और उनसे अपील करें कि वे एकजुट होकर आतंकवाद को अलग-थलग करके उसका अन्त करें। आतंकवादी सभी दलों के नेताओं और कार्यकर्ताओं की हत्या कर चुके हैं और सब दल बेअसर होकर रह गये हैं। दोबारा असरदार होने के लिए उन सबको मिलकर पहिले आतंकवाद को समाप्त करना होगा। हालात काबू से बाहर हो जाने के बाद भी अभी यह सम्भावना है कि सब दल मिलकर इस भस्मासुर को मार सकते हैं। अलग-अलग तो इन सब दलों को उग्रवादियों ने पछाड़ दिया है। समय रहते यदि यह कदम उठा लिया गया तो पंजाब तथा लोकतन्त्र दोनों बचाये जा सकते हैं। यह उपचार जल्दी नहीं किया गया तो बड़ा आप्रेशन अनिवार्य हो जायेगा, परन्तु सब हथियार आजमाने के बाद ही उस हथियार का प्रयोग करना चाहिए। ऐसा लगता है कि कुछ विरोधी दलों के रवैये से सब दल मिलकर आतंकवादियों को अलग-थलग करने के लिए कुछ करेंगे, सम्भव नहीं है। उस अवस्था में सरकार के पास आपातकालीन स्थिति की घोषणा करने और पूरी ताकत से आतंकवाद को कुचलने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। जब तक यह लेख छपेगा, तब तक शायद सरकार दोनों सदनों से संविधान संशोधन विधेयक के द्वारा यह शक्ति ले लेगी।

हरयाणा में शराबबन्दी प्रदर्शन



रोहतक में शराबबन्दी प्रदर्शन में सभा के उपदेशक श्री अर्जुनदेव आर्य, कार्यालयाध्यक्ष श्री केदारसिंह आर्य, सभाप्रधान प्रो. शेरसिंह जी, स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारी आदि दिखाई दे रहे हैं।



जिलाधीश की कोठी पर शराबबन्दी धरणों में गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारी, सभाप्रधान प्रो. शेरसिंह जी, सभा उपदेशक पं. जयपाल आर्य तथा ग्राम निदाना जि. रोहतक की महिलायें, उनके साथ श्री जयपाल आर्य साहित्य प्रचारक दिखाई दे रहे हैं।



शराबबन्दी प्रदर्शन हिसार का दृश्य—इसमें सभा के उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य के साथ जिला हिसार के आर्य कार्यकर्त्ता तथा ग्राम से आई महिलायें भी शराब के विरुद्ध नारे लगा रही हैं।

सूर्यग्रहण मेले पर वेदप्रचार

हरयाणा के ऐतिहासिक तथा धार्मिक स्थान कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण के अवसर पर भारत के कोने-२ से लाखों नरनारियों ने यहां के सरोवरों में स्नान किया। इस अवसर पर आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से १६ से १८ मार्च तक तक सभा द्वारा निर्मित्त महर्षि दयानन्द धाम में चतुर्वेद शतक महायज्ञ तथा वेदप्रचार एवं ऋषि लंगर का आयोजन किया। इसकी तैयारी के लिए सभा उपप्रधान महाशय भरतसिंह जी वानप्रस्थ ने १० मार्च को कुरुक्षेत्र पहुंचकर सभा के सम्पत्ति निरीक्षक श्री भगवानसिंह जी के सहयोग से कार्य प्रारम्भ कर दिया था। १५ मार्च को सभामन्त्री श्री वेदव्रत जी शास्त्री तथा वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह जी भी कुरुक्षेत्र में पहुंचे और गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्य देवव्रत जी तथा अन्य सहयोगियों के सहयोग से यज्ञ, वेदप्रचार तथा ऋषिलंगर की व्यवस्था की। १६ मार्च को प्रातः ७·३० बजे वैदिक धाम की यज्ञशाला (जो कि निर्माणधीन है) में गुरुकुल के अध्यापक श्री तुलसीराम जी ने यज्ञ आरम्भ किया। इस अवसर पर म० भरतसिंह जी, श्री वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री आदि उपस्थित थे। सभा की भजन-मण्डली पं० चिरन्जीलाल जी तथा पं० विद्याभूषण जी, श्री रास्वरूप निडर ने अपने प्रभावशाली भजनों द्वारा वेद की महिमा तथा शराब, मांस एवं दहेज आदि सामाजिक बुराइयों पर प्रकाश डाला। दोपहर पश्चात् पं० चिरन्जीलाल जी की मण्डली ने मेला कुरुक्षेत्र के मुख्य प्रसारण केन्द्र से भी ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज द्वारा किये गये परोपकार के गीत सुनाये। इस प्रसारण केन्द्र की आवाज (ध्वनि) विस्तारक द्वारा सारे मेले में सुनाई जाती थी। यह कार्यक्रम १८ मार्च तक चलता रहा। १६ मार्च की सायं को आर्य वीरदल हरयाणा के स्वयंसेवक भी यहां सेवा कार्य हेतु पहुंच गये। उन्होंने १७ मार्च को प्रातः प्रभात फेरी निकाली और आर्य स्कूल से ब्रह्म सरोवर तक आर्य जयघोष करते गये और वैदिक धाम में आकर सेवा कार्य में जुट गये।

मेले पर अन्य सम्प्रदायों की ओर से भी प्रचार शिविर लगा रखे थे; परन्तु हरयाणा लोक-सम्पर्क विभाग तथा उत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र पटियाला की ओर से संस्कृति के नाम पर गन्दे राग तथा रागनियों का भद्दा आयोजन किया गया था जिसे मां-बाप, पिता-पुत्र तथा भाई-बहिन एक साथ बैठकर नहीं सुन सकते। सरकारी खर्च पर सांग का प्रबन्ध करके हरयाणा की वैदिक संस्कृति को समाप्त करने का यत्न किया जा रहा था। आकाशवाणी रोहतक की ओर से १८ मार्च को जो आंखों देखा हाल प्रसारित किया गया उसमें भी कुरुक्षेत्र की वास्तविक वैदिक सभ्यता के स्थान पर पौराणिक गप्पों का उल्लेख किया गया।

—केदारसिंह आर्य

(पृष्ठ १ का शेष)

स्वामी जी सत्यार्थप्रकाश पर की गई शंकाओं एवं आपत्तियों के निराकरण में भी सदैव तत्पर रहते थे। पौराणिक पण्डित कालूराम ने आदिम सत्यार्थप्रकाश के आधार पर आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द और सत्यार्थप्रकाश पर अनर्गल प्रलाप किये थे। इस पर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने 'आदिम सत्यार्थप्रकाश और आर्यसमाज के सिद्धांत' लिखकर उसका मुंह तोड़ उत्तर दिया था। स्मरण रहे कि श्री स्वामी जी इसी प्रथम सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर ही आर्यसमाज में प्रविष्ट हुए थे। स्वामी जी सत्यार्थप्रकाश को स्मृतियों के तुल्य मान्यता दिया करते थे। उनका कथन है कि—"स्वामी दयानन्द इस समय के वैदिक आचार्य थे। उनके सत्यार्थप्रकाश का भी उतना ही मूल्य है, जितना पूर्व स्मृतियों का।" संशोधित सत्यार्थप्रकाश के विषय में स्वामी जी का मत है कि—'संशोधित सत्यार्थप्रकाश एक दार्शनिक ग्रन्थ है। वह एक धर्म के आचार्य का पूरा मत दर्शाता और स्मृति ग्रंथ है।' स्वामी जी महाराज ने आदिम सत्यार्थप्रकाश के कुछ प्रेरक प्रसंग 'आदिम सत्यार्थप्रकाश के चुने रत्न' शीर्षक से अपनी पुस्तक 'आदिम सत्यार्थप्रकाश और आर्यसमाज के सिद्धांत' में प्रकाशित किये थे।

स्वामी जी सत्यार्थप्रकाश के विषय में लिखते हैं कि—"यह ग्रन्थ ऋषि का लिखवाया हुआ है, लिखा हुआ नहीं है और लिखवाया भी पुस्तक के रूप से नहीं प्रत्युत व्याख्यानों की रीति से है। हमारी तरह जिन सज्जनों ने आचार्य दयानन्द के धर्मोपदेश सुने हैं, वे साक्षी देंगे कि संशोधित दूसरा सत्यार्थप्रकाश पढ़कर जहां उन्हें एक दार्शनिक आचार्य की रचना का भान होता है, वहां आदिम सत्यार्थप्रकाश को पढ़ते समय ऐसा प्रतीत होता है कि मानो वे वर्तमान समय के सबसे बड़े मूर्तिभंजक का सिंहनाद स्पष्ट सुन रहे हैं। वास्तव में यह ग्रंथ व्याख्यानों का ज्यों-त्यों उल्लेख है जो "सत्यपूतं वदेद् वाचं" की मनूक्ति के अनुसार अवधूत दयानन्द ने वज्र की न्याईं जनता के अन्दर फेंक दिये थे।" स्वामी जी आगे लिखते हैं कि—'स्वामी शंकराचार्य के वेदांतभाष्य के पश्चात् यदि किसी ग्रन्थ ने भारतवर्ष में भौंचालवत् हलचल डाल दी तो वह यही ग्रन्थ है। शंकर स्वामी को दोमुखी लड़ाई लड़नी पड़ी। स्वामी दयानन्द को चौमुखी ही नहीं, बहुमुखा युद्ध करना पड़ा। इसीलिए स्वामी दयानन्द और उनके मिशन के शत्रु भी अधिक संख्या में थे। ये सब कुछ होते हुए भी मेरी सम्मति में आदिम सत्यार्थप्रकाश की उपयोगिता को विरोधी कम न कर सके।'

इस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द जी महर्षि दयानन्द के सत्संग और उनके ज्ञानपुंज सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय से नास्तिक से आस्तिक और फिर मुन्शीराम से महात्मा मुन्शीराम और बाद में स्वामी श्रद्धानन्द बन गये। ऐसे अमर बलिदानी को शत-शत प्रणाम।

शराबबन्दी के लिए ज्ञापन दिया

कुरुक्षेत्र के आर्यसमाजों, गुरुकुल कुरुक्षेत्र तथा अन्य धार्मिक संस्थाओं ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्देश पर ८ मार्च को जिलाधीश को हरयाणा में पूर्ण नशाबन्दी के लिए ज्ञापन दिया।

—भगवानसिंह आर्य

इसी प्रकार यमुनानगर जिला अम्बाला ८ मार्च को यमुनानगर के उप-मण्डल अधिकारी को हरयाणा में पूर्ण नशाबन्दी लागू करने के लिए यमुनानगर के आर्य कार्यकर्त्ताओं ने ज्ञापन दिया।

—ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री

आर्यसमाज जसराणा (सोनीपत)

आर्यसमाज जसराणा में होली के आधुनिक रूप को सुधारने हेतु विशेष यज्ञ के साथ-साथ आर्य मर्यादानुसार सायं को प्रीति हेतु विशेष बैठक हुई। यज्ञ के पुरोहित श्री जितेन्द्रदेव जी व श्री सुखबीर जी ने यज्ञ किया। म० दयानन्द विद्यापीठ के ब्रह्मचारियों ने मन्त्रोच्चारण किया। श्री जितेन्द्रदेव ने यज्ञ के लाभ तथा आधुनिक शोध का वर्णन किया। अध्यक्षीय भाषण में श्री मांगेराम जी ने पाखण्डों को खत्म करने पर बल दिया तथा वि० २०४५ हेतु चुनाव के लिए २७ मार्च का दिन रखा गया।

—मन्त्री आर्यसमाज जसराणा
सोनीपत

(पृष्ठ २ का शेष)

यजु० ६।१४ के भाष्य में लिखते हैं–"गुरु और गुरुपत्नी को चाहिए कि वेद और उपवेद तथा वेद के अंग और उपांगों की शिक्षा से देह, इन्द्रिय, अन्तःकरण और मन की शुद्धि, शरीर की पुष्टि तथा प्राण की सन्तुष्टि देकर समस्त कुमार और कुमारियों को अच्छे गुणों में प्रवृत्त करावें।"

राजनीति में स्त्रियों का स्थान

जिस प्रकार स्वामी जी स्त्रियों को शिक्षा व अधिकार देते हैं, उसी प्रकार वे राजनीतिक क्षेत्र में काम करने के लिए भी स्त्रियों को अनुमति प्रदान करते हैं। उनके अनुसार स्त्रियां विभिन्न राजकार्यों में, युद्ध में, न्याय व्यवस्था में पुरुषों के समान ही भाग लेने की अधिकारिणी हैं। यजु० १३।१६ के भाष्य में वे लिखते हैं जैसी राजनीति-विद्या राजा पढ़ा हो वैसी ही उसकी नारी भी पढ़ी होनी चाहिए। ऋ० ६।७५।१५ के भाष्य में लिखा है कि रानी को धनुर्वेद जाननेवाली तथा शस्त्रास्त्र चलाने में कुशल होना चाहिए। यजु० १७।४५ के भाष्य में निर्देश देते हैं कि सभापति आदि को चाहिए कि जैसे युद्ध-विद्या से पुरुषों को शिक्षित करें, वैसे स्त्रियों को भी करें। जैसे वीर पुरुष युद्ध करें, वैसे स्त्रियां भी करें। ऋ० ६।७५।१३ के भाष्य में कहते हैं कि राजा के अभाव में रानी सेनापतित्व का कार्यभार सम्भाले। यजु० १३।१७ के भाष्य में राजपुरुषों को प्रेरित करते हैं कि जिस-जिस कार्य में वे स्वयं प्रवृत्त हों, उस-उस कार्य में अपनी स्त्रियों को भी प्रवृत्त करें। जो-जो राजपुरुष पुरुषों का न्याय करें, उन-उनकी स्त्रियां, स्त्रियों का न्याय किया करें।

जो समाज स्त्रियों को अबला, निर्बुद्धि और किसी भी उत्तर-दायित्वपूर्ण कार्य को करने में अक्षम माने बैठा था, उसके सम्मुख दयानन्द के ये विचार बड़े ही क्रांतिकारी थे। इन्हीं विचारों का परिणाम है कि आज नारियां प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ी हुई हैं और सफलतापूर्वक कार्य कर रही हैं।

माता का महत्त्व

स्वामी जी स०प्र० के द्वितीय समुल्लास में 'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद' इस वचन को उद्धृत करते हुए लिखते हैं—"जब उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे, तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य, वह सन्तान बड़ा भाग्यवान्, जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है, उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों से प्रेम और उनका हित चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता। धन्य वह माता है जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक शालीनता का उपदेश करती है।" ऋग्भाष्य १।४८।१६ में भी ऐसा ही विचार प्रकट करते हैं—"माता की शिक्षा से ही सन्तान उत्तम होती हैं और प्रकार से नहीं"।

इसी प्रकार सन्तान के योग्य, शिक्षित, सदाचारी और उत्साही होने में स्वामी जी माता का विशेष योगदान मानते थे। इसी कारण नारी की शिक्षा आदि पर बल देते थे।

नारी का सम्मान

स्वामी जी इसके प्रबल पक्षपाती थे कि नारियों का घर में और समाज में अत्यन्त सम्मान होना चाहिए। चतुर्थ समुल्लास में वे मनुस्मृति के "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" (मनु० ३।५६) श्लोक का स्मरण कराते हुए कहते हैं कि जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है उसमें पुरुष विद्वान् होकर देव संज्ञा प्राप्त करके आनन्द से क्रीड़ा करते हैं और जिस घर में स्त्रियों का सत्कार नहीं होता, वहां सब क्रियायें निष्फल हो जाती हैं। स्वामी जी के मत में घर में पति-पत्नी दोनों का समान स्थान है। अत एव वे लिखते हैं कि स्त्री के लिए, पति और पुरुष के लिए स्वपत्नी पूजनीय है (स०प्र० समु० ११)। ऋग्भाष्य १।५०।२ में लिखते हैं कि जैसे नक्षत्र चन्द्रमा के साथ और प्राण शरीर के साथ बरतते हैं, वैसे विवाह करके स्त्री-पुरुष आपस में बरतें। यजु० ६।३४ के भाष्य में प्रेरणा करते हैं कि पुरुष-जन अपनी स्त्रियों को निरन्तर प्रसन्न रखें।

संस्कारविधि के विवाह प्रकरण में वधू के प्रति घरवालों का कैसा व्यवहार होना चाहिए, इस विषय में लिखते हैं—"अपने घर वाले पति, सासु, श्वसुर, ननन्द, देवर, देवराणी, ज्येष्ठ, जेठाणी आदि कुटुम्ब के मनुष्य वधू की पूजा अर्थात् सत्कार करें। सदा प्रीतिपूर्वक परस्पर वर्तें और मधुरवाणी, वस्त्र, आभूषण आदि से सदा प्रसन्न और सन्तुष्ट वधू को रखें।"

इस प्रकार नारी के विषय में दयानन्द के समस्त विचार उसे एक गरिमामय पद पर प्रतिष्ठित करनेवाले हैं। इन विचारों का प्रभाव शनैः शनैः समाज पर पड़ा है और इनसे नारी-जाति के उत्थान में बड़ी सहायता मिलती है। दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने भी उनके विचारों से अनुप्राणित होकर नारी को समाज में उत्कृष्ट स्थान दिलाने के लिए सराहनीय प्रयास किया है।

आज राजस्थान के दिवराला ग्राम में घटित सतीकांड के समर्थकों की ओर से आर्यसमाज को मानो एक चुनौती है कि वह मैदान में उतरें और नारी की सम्मान रक्षा करें।

नव विक्रमी सम्वत् २०४५ की शुभकामनायें

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
विक्रमी सं० २०४५
१९ मार्च शनिवार
१९८८



सृष्टि सम्वत्
१९६०८५३०८९
दयानन्दाब्द
१६४

इसी दिन ११३ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी।

वैदिक आश्रम का उत्सव

वैदिक आश्रम गुनेड़ संचालक स्वामी प्रज्ञानन्द जी का वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम से होली के पावन-पर्व पर मनाया गया। लगभग पांच किलो घी का यज्ञ भी रचाया गया। गुरुकुल झज्जर के द्वारा व्यायाम प्रदर्शन भी करवाया गया। सबको इच्छानुसार भोजन भी खिलाया गया। अन्त में परस्पर हार्दिक धन्यवाद मनाया गया।

आर्यसमाज औरंगाबाद मीतरोल (फरीदाबाद) का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री बहालसिंह भारद्वाज, उपप्रधान—लेखराम आर्य, महामन्त्री—डालचन्द प्रभाकर, उपमन्त्री—वीरेन्द्रसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—मा. नत्थीराम, प्रचारमन्त्री—सोहनलाल आर्य।

गोरक्षा के लिए सराहनीय कार्य

जिला हिसार के ग्राम कोहली निवासियों ने राजस्थान से आई आवारा गउवों के लिए एक नई गऊशाला की स्थापना की है। पं० हनुमान जी ने कुछ सज्जन आदमियो के सहयोग से मकर सक्रांति के दिन गांव में १५ हजार रुपये इकट्ठे किये। इनकी देखभाल के लिए ३०० रुपये मासिक के हिसाब से दो पाली रखे गये।

इसी प्रकार एक सेठ ने राजस्थान की सीमा पर लगते ग्राम बालसमन्द में भी गउवों के लिए एक नई गऊशाला बनवाई। ग्राम नलवा में भी सेठ स्योराम जिन्दल ने तीन महीने से गउवों के लिए चारे को व्यवस्था कर रखी है। गांव व गुवांड को तथा आवारा गउवें लगभग ८०० प्रतिदिन दोनों समय चरने आती हैं। जि. भिवानी में भी देवराला एवं माहु को-ढाणी में भी गउवों के लिए चारे के गोदाम खोल रखे हैं। वहां भी सैकड़ों गउवें प्रतिदिन चरती हैं। उपरोक्त सभी जगह आगामी वर्षा तक गोरक्षा का कार्य जारी रहेगा।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भांति गोशाला बाबा फूलू साध उचाना खुर्द (जींद) हरयाणा का उत्सव २५ जनवरी से ३१ जनवरी, ८८ तक सम्पन्न हुआ। जिसमें सैकड़ों साधुओं ने भाग लिया। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी अग्निदेव जी भीष्म (हिसार) और पुरोहित पं० धर्मदेव जी 'मनीषी' गुरुकुल कालवा थे। यथावसर उत्सव में आचार्य सुदर्शनदेव, आचार्य बलदेव, आचार्य जीवानन्द, स्वामी जगतमुनि, स्वामी रतिनाथ, स्वामी योगानन्द, स्वामी धर्मानन्द, स्वामी हीरानन्द, स्वामी प्रकाशानन्द, स्वामी निर्मलानन्द, स्वामी सूरत, वानप्रस्थी देवकरण, वानप्रस्थी राममुनि, श्री धर्मपाल आदि महात्माओं और विद्वानों के प्रवचन तथा भजन हुए।

उत्तर भारत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० सहदेव जी बेधड़क की भजनमण्डली का प्रचार तीन दिन तक धूमधाम से हुआ। इस इलाके के स्थानीय उपदेशकों ने भी इस यज्ञ में भाग लिया। अन्तिम दिन जींद जिले के जिलाधीश आदि अधिकारियों ने पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ाई और सहयोग प्रदान किया। ३१ जनवरी को उत्सव की जनसंख्या पन्द्रह-बीस हजार थी।

प्रबन्धक—स्वामी गोरक्षानन्द, अध्यक्ष गोशाला

संस्कारों से ही मानव निर्माण सम्भव

गिदड़बाहा मानव जीवन में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। संस्कृत व्यक्ति ही अपने कर्त्तव्यों को ठीक प्रकार पहचान सकता है तथा परिवार नगर व देश की उन्नति के लिए भरपूर कार्य करता है। इसीलिए भारत के ऋषियों ने मानव जीवन में संस्कारों को महत्त्वपूर्ण स्थान देते हुए इन्हें सर्वोपरि आवश्यक जीवन नियम माना। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक संस्कारों के महत्त्व का वर्णन करते हुए सोलह संस्कारों की परम्परा स्थापित की।

यह शब्द महाशय ओम्प्रकाश आर्य वानप्रस्थी, वैदिक वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा वाला ने स्थानीय श्री अशोक आर्य 'पत्रकार' के नवजात पुत्र के नामकरण संस्कार समारोह के अवसर पर कहे। इस अवसर पर बच्चे का नाम सत्यवीर रखा गया। आर्यसमाज को एक दरी व २०० रुपये दान दिया गया।

आर्यसमाज बालसमन्द (हिसार) का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री दिवानसिंह आर्य, उपप्रधान—भगतसिंह बिजला, मन्त्री—माईलाल आर्य, उपमन्त्री-पृथ्वीसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष-श्रीकृष्ण आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—सुमिलदत्त आर्य।

आर्यसमाज रामनगर गुड़गांव का वार्षिक चनाव

प्रधान—सर्वश्री ओम्प्रकाश मनचन्दा, उपप्रधान—बख्शाराम, जसूराम विरमानी, मन्त्री—जवाहरलाल, उपमन्त्री—ओम्प्रकाश नासा, कोषाध्यक्ष—शांतिलाल बजाज, पुस्तकाध्यक्ष—जयराज वर्मा, लेखा-निरीक्षक—ताराचन्द।

भारतीय समाजोत्थान समिति नलवा का चुनाव

सरक्षक—सर्वश्री मा० रामचन्द्र आर्य, बौद्धिकाध्यक्ष—रविकुमार जैन, प्रधान—जसवन्तसिंह, उपप्रधान—राजेशकुमार, रणसिंह, राधेश्याम, रमेशकुमार, प्रचारमन्त्री—कृष्णकुमार, शोभाराम, लेखासचिव—सतपालसिंह, उप लेखासचिव—लायकराम, विशेष प्रतिनिधि—रोहताशकुमार, सुरेशकुमार, ताराचन्द, प्रह्लादराय, सत्यनारायण, मुखराम, रोशनलाल।

ग्राम छानीबड़ी श्रीगंगानगर में गोशाला की विधिवत् स्थापना

गत तीन माह पहले ग्राम छानीबड़ी में स्वामी ईशानन्द जी सरस्वती की प्रेरणा से भयंकर अकाल में गउवों की दुर्दशा देखकर स्थायीतौर पर विधिवत् गोशाला की स्थापना की गई। सेठ रामनिवास गोयल की अध्यक्षता में एक गोरक्षा समिति बनाई गई। १०० सदस्य ५०० रुपये प्रतिवर्ष देनेवाले बनाये गये। अब तक कुल एक लाख रुपया इकट्ठा हो चुका है। गोशाला में कुल १३० गउवें हैं। ४ नौकर ४०० रुपये प्रति महीने पर गउवों की देखभाल एवं सेवा के लिए रखे हुए हैं। समय-समय पर कई आर्यबन्धु भी गोमाता की सेवा करते रहते हैं।

इसी प्रकार ग्राम दबौली (हिसार) में भी भयंकर सूखे इलाके से आई आवारा गउवों को मध्य नजर रखते हुए एक अस्थायी गोशाला खोलकर बहुत ही अच्छा कार्य किया है। इस गोशाला में ५०-६० गउवें हैं। श्री संग्रामसिह आर्य की प्रधानता में एक गोरक्षा समिति का गठन किया है। गांव के कई नवयुवक गांव से चारा एवं दाना इकट्ठा करके गउवों की सेवा निस्वार्थ भाव से कर रहे हैं। अतः उपर्युक्त ग्रामों की तरह आज इस भयंकर सूखे में गोमाता की रक्षा करना हम सबका पुनीत कर्त्तव्य है।

—अत्तरसिह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

गजल

सत्य की राहें हमें दिखला गए।
बात पौराणिक सभी झुठला गए।

दूर भ्रम अज्ञान कर डाले सभी,
ज्ञान गंगा में हमें नहला गए।

जी रहे थे जाहिलों-सी जिन्दगी,
शान से जीना हमें सिखला गए।

झूठ के ऊंचे महीधर थे खड़े,
सत्यरूपी तेज से पिघला गए।

अपनी भाषा संस्कृति से प्यार था,
संस्कृत पढ़ना हमें सिखला गए।

शास्त्रार्थ में हरा डाले सभी,
मूर्धन्य पण्डित ऋषि कहला गए।
मूर्तिपूजा का खुल खण्डन किया,
पत्थरों में देवता झुठला गए।
छा रहा था ढोंग का कोहरा घना,
'सत्यार्थप्रकाश' से उजला गए।
काट डाली दासता की बेड़ियां,
भारत मां के जख्म सहला गए।

—ब्रज प्रेमी 'बंजारा' C/o श्री चिरंजीलाल यादव
मोहल्ला ढोडापुर हेली मण्डी, जि० गुडगांव-१२३५०४

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४)
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49 फोन ४८१२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

दव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

१५ चैत्र २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्क १८ २८ मार्च १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

होम के लाभ

—पं० धर्मदेव 'मनीषी' व्याकरणाचार्य, गुरुकुल कांगड़ी

प्रश्न—जो यज्ञ से वायु और वृष्टि जल की शुद्धि करना मात्र ही प्रयोजन है तो इसकी सिद्धि अतर और पुष्पादि के घरों में रखने से भी हो सकती है, फिर इतना बड़ा परिश्रम यज्ञ में क्यों करना ?

उत्तर—यह कार्य अन्य किसी प्रकार से सिद्ध नहीं हो सकता। क्योंकि अतर और पुष्पादि का सुगन्ध तो उसी दुर्गन्ध वायु में मिलके रहता है, उसको छेदन करके बाहर नहीं निकाल सकता और न वह ऊपर चढ़ सकता है, क्योंकि उसमें हल्कापन नहीं होता। उसके उसी अवकाश में रहने से बाहर की शुद्ध वायु उस ठिकाने में आ भी नहीं सकती, क्योंकि खाली जगह के बिना दूसरे का प्रवेश नहीं हो सकता। फिर सुगन्ध और दुर्गन्धयुक्त वायु के वहीं रहने से रोगनाशादि फल भी नहीं होते और जब अग्नि उस वायु को वहां से हलका करके निकाल देता है तब वहां शुद्ध वायु भी प्रवेश कर सकती है। इसी कारण यह फल यज्ञ से ही हो सकता है, अन्य प्रकार से नहीं। क्योंकि जो होम के परमाणु युक्त शुद्ध वायु है, सो पूर्वस्थित दुर्गन्ध वायु को निकाल के उस देशस्थ वायु को शुद्ध करके रोगों का नाश करनेवाला होता और मनुष्यादि सृष्टि को उत्तम सुख को प्राप्त करता है। जो वायु सुगन्ध्यादि द्रव्य के परमाणुओं से युक्त होम द्वारा आकाश में चढ़के वृष्टि जल को शुद्ध कर देता और उससे वृष्टि भी अधिक होती है। क्योंकि होम करके नीचे गर्मी अधिक होने से जल भी ऊपर अधिक चढ़ता है। शुद्ध जल और वायु के द्वारा अन्नादि ओषधि भी अत्यन्त शुद्ध होती है। ऐसे प्रतिदिन सुगन्ध के अधिक होने से जगत् में नित्यप्रति अधिक-अधिक सुख बढ़ता है। यह [illegible] अग्नि में होम करने के बिना दूसरे प्रकार से होना असम्भव है। इससे होम का करना अवश्य है और भी सुगन्ध के नाश नहीं होने में कारण है कि किसी पुरुष ने दूर देश में सुगन्ध चीजों का अग्नि में होम किया हो, उस सुगन्ध से युक्त जो वायु हो, सो होम के स्थान से दूर देश में स्थित हुए मनुष्य के नाक इन्द्रिय के साथ संयुक्त होने से उसको यह ज्ञान होता है कि यहां सुगन्ध वायु है। इससे जाना जाता है कि द्रव्य के अलग होने में भी द्रव्य का गुण द्रव्य के साथ ही बना रहता है और वह वायु के साथ सुगन्ध और दुर्गन्धयुक्त सूक्ष्म होके जाता आता है, परन्तु जब वह द्रव्य दूर चला जाता है, तब उसके नाक इन्द्रिय से संयोग भी छूट जाता है, फिर बालबुद्धि मनुष्यों को ऐसा भ्रम होता है कि वह सुगन्धित द्रव्य नहीं रहा, परन्तु यह उनको अवश्य जानना चाहिए कि वह सुगन्ध द्रव्य आकाश में वायु के साथ बना ही रहता है। इससे अन्य भी होम करने के बहुत से उत्तम फल हैं, उनको बुद्धिमान् लोग विचार से जान लेंगे।

प्रश्न—होम करने का जो प्रयोजन है सो तो केवल होम से ही सिद्ध होता है, फिर वहां वेदमन्त्रों के पढ़ने का क्या काम है ?

उत्तर—उनके पढ़ने का प्रयोजन कुछ और ही है।

प्रश्न—वह क्या है ?

उत्तर—जैसे हाथ में होम करते, आंख से देखते और त्वचा से स्पर्श करते हैं, वैसे ही वाणी से वेदमन्त्रों को भी पढ़ते हैं। क्योंकि उनके पढ़ने से वेदों की रक्षा, ईश्वर की प्रार्थना और उपासना होती है तथा होम से जो-जो फल होते हैं, उनका स्मरण भी होता है। वेदमन्त्रों के बारम्बार पाठ करने से वे कण्ठस्थ भी रहते हैं और ईश्वर का होना भी विदित होता है कि कोई नास्तिक न हो जाये, क्योंकि ईश्वर की प्रार्थना पूर्वक ही सब कर्मों का आरम्भ करना होता है। सो वेदमन्त्रो के उच्चारण से यज्ञ में तो उसकी प्रार्थना सर्वत्र होती है। इसलिए सब उत्तम कर्म वेदमन्त्रों से ही करना उचित है।

प्रश्न—यज्ञ में वेदमन्त्रों को छोड़के दूसरे का पाठ करें तो क्या दोष है ?

उत्तर—अन्य के पाठ में यह प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता। ईश्वर के वचन से जो सत्य प्रयोजन सिद्ध होता है, सो अन्य के वचन से कभी नहीं हो सकता। क्योंकि जैसा ईश्वर का वचन सर्वथा भ्रांति-रहित सत्य होता है, वैसा अन्य का नहीं और जो कोई वेदों के अनुकूल अर्थात् आत्मा की शुद्धि, आप्त पुरुषों के ग्रन्थों का बोध और उनकी शिक्षा से वेदों को यथावत् जानके कहता है, उसका भी वचन सत्य ही होता है और जो केवल अपनी बुद्धि से कहता है वह ठीक-ठीक नहीं हो सकता। इससे यह निश्चय है कि जहां-जहां सत्य दीखता और सुनने में आता है, वहां-वहां वेदों में से ही फैला है और जो-जो मिथ्या है, सो-सो वेद से नहीं, किन्तु जीवों ही की कल्पना से प्रसिद्ध हुआ है, क्योंकि जो ईश्वरोक्त ग्रन्थ से सत्य प्रयोजन सिद्ध होता है, सो दूसरे से कभी नहीं हो सकता।

प्रश्न—क्या यज्ञ करने के लिए पृथिवी खोद के वेदिरचन, प्रणीता, प्रोक्षणी और चमसादि पात्रों का स्थापन, दर्भ का रखना, यज्ञशाला का बनाना और ऋत्विजों का करना, यह सब करना ही चाहिए ?

उत्तर—करना तो चाहिए, परन्तु जो-जो युक्ति सिद्ध हैं, सो-सो ही करने योग्य हैं। क्योंकि जैसे वेदि बनाके, उसमें होम करने से वह द्रव्य शीघ्र भिन्न-भिन्न परमाणुरूप होके, वायु और अग्नि के साथ आकाश में फैल जाता है, ऐसे ही वेदि में भी अग्नि तेज होने और होम का साकल्य इधर-उधर बिखरने से रोकने के लिए वेदि अवश्य रचनी चाहिए और वेदि के त्रिकोण, चतुष्कोण, गोल तथा श्येनपक्षी आदि के तुल्य बनाने के दृष्टांत से रेखागणित विद्या भी जानी जाती है कि जिससे त्रिभुज आदि रेखाओं का भी मनुष्य को यथावत् बोध हो तथा उसमें जो ईंटों की संख्या की है, उससे गणित विद्या भी समझी जाती है। इस प्रकार से कि जब इतनी लम्बी, चौड़ी और गहरी वेदि हो तो उसमें इतनी बड़ी ईंटें इतनी लगेंगी इत्यादि, वेदि के बनाने में बहुत प्रयोजन हैं तथा सुवर्ण, चांदी वा काष्ठ के पात्र इस कारण से बनाते हैं कि उनमें जो घृतादि पदार्थ रखे जाते हैं वे बिगड़ते नहीं और कुश इसलिए रखते हैं कि जिससे यज्ञशाला का मार्जन हो और चिवंटी आदि कोई जन्तु वेदि

(शेष पृष्ठ ७ पर)

साम्प्रदायिक दंगे और राष्ट्रीय एकता

—रमेशचन्द आर्य २/२५ नगला मोहर हरिओ३म् नगर, अलीगढ़

पिछले लगभग ७० वर्ष से महात्मा गांधी और उनकी कांग्रेस लगातार प्रयत्नशील है कि देश के अन्दर साम्प्रदायिक दंगे न हों और राष्ट्र में पूर्ण एकता स्थापित हो, परन्तु ऐसा नहीं हो पारहा। मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की। विचारणीय है कि गलती कहां पर है? क्या राष्ट्रीय एकता की अवधारणा ही गलत है, अथवा रोग के निदान और चिकित्सा में ही कहीं गलती है। निष्कर्ष यही निकलता है कि निदान और चिकित्सा ही मूलतः गलत हैं। इस रोग के निवारण के लिए संविधान निर्माताओं ने योरूप से सेकुलेरिज्म का सिद्धांत ग्रहण तो ठीक ही किया, किन्तु देश के दुर्भाग्य से राष्ट्र के कर्णधार कुछ चारित्रिक दुर्बलता के कारण न तो इसे इसके मूल, शुद्ध और वास्तविक अर्थ में ग्रहण ही कर सके और न साहस बटोर कर इसे सार्थक रूप में प्रयोग ही कर सके। इन्होंने सेकुलर का गलत अर्थ 'धर्मनिरपेक्ष' करके न केवल 'धर्म' के साथ घोर अनर्थ और अन्याय ही कर डाला, अपितु असत्य मार्ग ग्रहण कर लक्ष्य प्राप्त न कर सके। राष्ट्रीयएकता स्वप्न मात्र बनकर रह गई।

जहां अर्थ का अनर्थ होता है, वहां मनुष्य सन्मार्ग से असन्मार्ग की ओर भटक जाता है, मतिभ्रम होकर उचित और अनुचित का विवेक खो बैठता है। सुख का ह्रास और दुःख की वृद्धि होने लगती है। जितना अनर्थ और अन्याय आज इस 'धर्म' शब्द के साथ हो रहा है, शायद ही कभी किसी दूसरे शब्द के साथ हुआ हो। यह निर्विवाद सत्य है कि 'धर्म' वैदिक भाषा का शब्द है और इसका समानार्थक पर्याय शब्द अन्य किसी भाषा में नहीं है। मोटे रूप में 'धर्म' शब्द का अर्थ है—नैसर्गिक ईश्वरीय विधान। अर्थात् ईश्वरीय आज्ञाओं का जानना और उनका पालन करना। दैनिक जीवन में नित्य देखा जाता है कि एक छोटी-सी संस्था और संगठन भी अपने पूर्व निश्चित नियम उपनियमों द्वारा संचालित होते हैं। हमारे छोटे से भारत राष्ट्र के २६ जनवरी सन् १९५० ई० को जनतन्त्र घोषित होने से पूर्व ही उसके संचालन के लिए संविधान तैयार था। जब अल्पज्ञ मानव के छोटे से राष्ट्र के लिए यह व्यवस्था है तो उस सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् परमात्मा ने इस विशाल ब्रह्मांड के संचालन के लिए क्या आरम्भ में ही कोई विधान न दिया होगा? और क्यों कि परमात्मा निर्विकार, निर्भ्रम एक रस, समदर्शी और पूर्ण ज्ञानी है, अतः उसकी व्यवस्था, विधान, नियम क्रम में कहीं कोई परिवर्तन की सम्भावना अथवा आवश्यकता नहीं हो सकती। यह भी निर्विवाद और प्रत्यक्ष सत्य है कि मनुष्य इतना अल्पज्ञ और अशक्त है कि किसी दूसरे के सिखाये बिना वह खाना-पीना, बैठना-उठना, चलना-फिरना, बोलना चालना तक भी नहीं कर सकता। हां इतना तो है कि बीजरूप में किसी भी ज्ञान को प्राप्त कर वृक्षरूप में उसका विस्तार तो कर सकता है, परन्तु यह बीजरूप ज्ञान उसे अवश्य ही किसी दूसरे से प्राप्त करना होगा। सृष्टि के आरम्भ में उसे यह ज्ञान देनेवाला परमात्मा के सिवाय और कोई नहीं था, बाद में तो वंश परम्परा से एक से दूसरे को ज्ञान प्राप्त होता आरहा है। यह सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा द्वारा मनुष्य को दिया हुआ ज्ञान ही ईश्वरीय संविधान है। इसका जानना और पालन करना ही 'धर्म' है। यह भी निर्विरोध, सर्वमान्य और निश्चित तथ्य है कि संसार में ज्ञान का आदि स्रोत 'वेद' के सिवाय और कोई दूसरा नहीं है। वेद का सारा कथन ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभावानुकूल निर्भ्रम पक्षपात रहित एवं सृष्टि नियम क्रमानुसार वैज्ञानिक कसौटी पर पूर्णतः खरा उतरनेवाला है। अतः 'वेद' और केवल 'वेद' ही एकमात्र 'धर्मग्रंथ' और उसकी आज्ञाओं का पालन ही एकमात्र 'धर्म' है। इसके विपरीत सब 'अधर्म' है और जहां कहीं जो कुछ इसके अनुसार हो, केवल वही और उतना ही 'धर्म' कहा जा सकता है।

ईश्वर एक है। उसकी रचना, सृष्टि, आकाश, वायु, अग्नि, जल, सूर्य, चन्द्र, औषध, वनस्पति, पशु, कीट, पतंग, मनुष्य आदि सर्वत्र समान रूप से एक ही नियम व्यवस्था में आबद्ध हैं, अतः उसका विधान अर्थात् धर्म भी सबके लिए एक ही है, अनेक कदापि नहीं हो सकते। तब फिर प्रश्न होता है कि ये इतने सारे मत, पंथ, दीन, मजहब, फेथ, रिलीजन आदि क्या हैं? यह तो प्रत्यक्ष ही है कि इन सबके संस्थापक और प्रवर्तक भिन्न-भिन्न समय में भिन्न-भिन्न मनुष्य ही हुए हैं। अतः यह सब 'धर्म' नहीं हैं और बड़ी ईमानदारी से ये अपने को 'धर्म' कहते भी नहीं हैं। ईसाई और उनकी शाखायें फेथ और रिलीजन कहाती हैं, मुस्लिम और उनकी शाखायें दीन और मजहब कही जाती हैं और वैदिकधर्म की विकृति से उत्पन्न हैं—बौद्धमत, जैनमत, शैव सम्प्रदाय, वैष्णव सम्प्रदाय, नानक पंथ, कबीर पंथ आदि-आदि। इन सब में थोड़ी-थोड़ी ईश्वरीय सत्यधर्म की मान्यताओं को लेकर बहुत सारा इनके प्रवर्तकों का अपना सम्मिश्रण है, जो कि अनेक प्रकार की असंगत, असम्भव, अनर्गल, अमानवीय बुद्धि विरुद्ध और अवैज्ञानिक मान्यताओं से भरे पड़े हैं। यही इनमें भेद है जिसके प्रति स्वार्थपूर्ण और अन्धी श्रद्धा सारे द्वेष और कलह का कारण बनी रहती हैं। इसलिए ये सब 'धर्म' न होकर 'अधर्म' की श्रेणी में गिने जाने योग्य हैं। क्योंकि ये मनुष्य को मनुष्य से मिलाने के बजाय लड़ाते हैं।

इन में से कुछ मुख्य ऐसे हैं कि जिनका संसार के देशों में बहुत विस्तार है। इनके मुख्यालय भी विदेशों में ही हैं और उनके प्रवर्तक भी विदेशी ही रहे। ये छद्म रूप में कुछ आध्यात्मिक आधार लिए ठीक वैसे ही विदेश आधारित राजनीतिक संगठन है, जैसे आर्थिक आधार लिए हुए कम्युनिष्ट। भारत राष्ट्र में इन सबकी निष्ठा और भक्ति नाम मात्र, पाखण्डपूर्ण और नश्वर दो पर है। जिस प्रकार अपनी नीति निर्धारण और संचालन के लिए कम्युनिष्ट रूस और चीन की ओर देखते हैं, ठीक उसी प्रकार ये भी अरब, योरूप और अमरीका से बन्धे रहते हैं। एक तरह से ये संगठन उनकी एजेन्सी का काम करते हैं और देश की राजनीति में विदेशी हस्तक्षेप को आमन्त्रित करते हैं। जो देश में अलगाववाद और विखण्डन का मुख्य कारण बनी रहती है। इतना ही नहीं, इस झूठे सेकुलरिज्म के नाम पर जातपात, भाषावाद और मजहब के नाम पर कुकुरमुत्ते की तरह राजनीतिक पार्टियों की बाढ़-सी आगई है। देश और संविधान के प्रति निष्ठा और भक्ति तो नाम मात्र को रह गई है। वास्तविक निष्ठा तो पार्टी और उसके नेता के प्रति है, देश चाहे नरक में जाये। एक समय ऐसा भी आया कि एक पार्टी ने उद्घोष लगाया—इन्दिरा भारत है और भारत इन्दिरा है। आज भी चाहे जितना सच्चरित्र और देशभक्त व्यक्ति क्यों न हो, यदि वह अन्ध नेताभक्त नहीं तो देशद्रोही जयचन्द और मीरजाफर हो जाता है।

अब यह जानना भी आवश्यक है कि वास्तव में यह सेकुलरिज्म है क्या? इसका वास्तविक अर्थ क्या है? एक समय ऐसा था कि योरूप में सारी राज्य व्यवस्था पर पोप हावी था। सत्यखोजी और सत्यवक्ता वैज्ञानिकों को इनके अन्धविश्वास के विरोधी होने के कारण जिन्दा जला तक दिया गया। अतः कदम-कदम पर राजनीतिक और भौतिक उन्नति में बाधा से बचने के लिए योरूप के प्रबुद्ध महानुभावों ने सेकुलरिज्म को अपनाया था, जिसका वास्तविक अर्थ है—स्वाभाविक, संसारी, लौकिक, ईश्वरीय, मतमतांतर के प्रपंच रहित। और उन्होंने पोप को इटली के वैटीकन नामक नगर में सीमित करके रख दिया। किन्तु हमारे मान्य कर्णधारों ने इसके रूप, अर्थ और प्रयोग को पूरी तरह उलटा कर दिया। उन्होंने इसे धर्म और ईश्वर की निरपेक्षता एवं मत, मजहब, पंथ और रिलीजन की सापेक्षता के अर्थ में प्रयोग करना ही ठीक समझा। अर्थात् धर्म और ईश्वर को तिलांजलि देकर सत्य और न्याय को देश निकाला दे डाला तथा निकृष्ट राजनीतिक स्वार्थवश सारे राष्ट्रीय एवं राजनीतिक क्रियाकलाप और निर्णय मत, मजहब, रिलीजन, जातपात, भाषा, गुरु और सम्प्रदाय के आधार पर होने लगे। ईश्वरीय संविधान का तो आदेश है—मनुर्भव। अर्थात् तू केवल मनुष्य बन।

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ द्वारा आयोजित वेद-गोष्ठी

(निज संवाददाता)

२० मार्च, १९८८ को कांकड़वाड़ी आर्यसमाज बम्बई में अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ द्वारा वेद-गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का विषय था—"वेद में पुरुषार्थ प्रेरक यथार्थवाद"।

वेदपीठ के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने संस्था का परिचय कराते हुए उसके उद्देश्यों की विस्तार से चर्चा की। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य भारत और भारत के बाहर दूसरे देशों में वेद और वैदिकधर्म तथा संस्कृति का प्रचार और प्रसार करना है। विदेशी भाषाओं की अच्छी जानकारी रखनेवाले विभिन्न देशों के विद्वानों को वेद तथा वैदिकधर्म और सिद्धांतों का शिक्षण और प्रशिक्षण देकर विदेशों में उन्हीं देशों की भाषाओं के माध्यम से वेद का सन्देश पहुंचाना है।

पश्चिमी देशों के लोग अपने एकांगी भौतिक जीवन दर्शन से अशांत और त्रस्त हैं और वे मानवीय सम्बन्धों तथा एक दूसरे के लिए त्याग और सेवा के माध्यम से अपने जीवन में सुख और शांति प्राप्त करना चाहते हैं। महर्षि ने आर्यसमाज का उद्देश्य भी संसार का उपकार करना बताया था। वेदों के पुरुषार्थ प्रेरक यथार्थवाद का सन्देश संसार के कोने-कोने में फैलाकर ही दयानन्द के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' लक्ष्य की ओर हम मानव समाज को ले जा सकेंगे। वेद जगत् में जो कुछ दिखाई दे रहा है और जो कुछ हो रहा है उसे 'माया' और 'भ्रम' नहीं मानता उसके अस्तित्व को स्वीकार करता है। उसमें पलायनवाद के लिए कोई स्थान नहीं। जीवन के तथ्यों को मानकर, समस्याओं की चुनौतियों को स्वीकार करके अपने पुरुषार्थ से उन पर विजय प्राप्त करता है और जीवन को सुखी और सार्थक बनाता है। परोपकार तथा परस्पर उपकार और सेवा के चप्पुओं से भवसागर को पार करता है। प्रो० शेरसिंह ने यह भी सूचना दी कि वेदपीठ के तत्त्वावधान में अगली वेद-गोष्ठी चण्डीगढ़ में होगी। जिसके संयोजक डा० भवानीलाल भारतीय होंगे। उससे अगली गोष्ठी दीपावली के अवसर पर अजमेर में होगी।

संगोष्ठी की अध्यक्षता स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज ने की। डा० सोमदेव शास्त्री (बम्बई), श्री डा० थिटे (पुणे विश्वविद्यालय), डा० भवानीलाल भारतीय (चण्डीगढ़), डा. ब्रह्ममित्र अवस्थी (गंगानाथ झा शोध संस्थान इलाहाबाद), डा० वागीश शर्मा (आचार्य आर्य गुरुकुल एटा), डा० एस. के. लाल (पुणे विश्वविद्यालय), श्री जयपाल विद्यालंकार (हंसराज महाविद्यालय दिल्ली), पं० सत्यकाम विद्यालंकार (बम्बई) ने अपने लिखित भाषण पढ़े। आचार्य रुद्रमित्र शास्त्री (बम्बई) तथा पं० क्षितीश वेदालंकार (सम्पादक आर्यजगत्) ने भी खुलकर अपने विचार दिये। स्वामी सत्यप्रकाश जी का अध्यक्षीय भाषण बहुत मार्मिक था, उन्होंने उसे अंग्रेजी में लेखबद्ध भी कर दिया था। डा० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार ने भी अपने विचार लिखकर भेजे थे। ये सभी भाषण जनता की जानकारी और अध्ययन के लिए पुस्तिका के रूप में छपवा दिये जायेंगे। वेदपीठ की अपनी एक पत्रिका का पहिला अंक प्रकाशित कर लिया है। इस पत्रिका के लेख दो भाषाओं में छपेंगे, संस्कृत तथा अंग्रेजी। बहुत ऊंचे स्तर के विद्वत्तापूर्ण लेख ही इस पत्रिका में छपेंगे। पत्रिका के आजीवन ग्राहकों को एक हजार रुपये (१०००) देने होंगे। बम्बई में गोष्ठी समाप्त होने पर लगभग दस आजीवन ग्राहक बन गये। जितनी प्रतियां वहां उपलब्ध थीं, वे २५) मूल्य देकर सभी खरीद लीं।

इस संगोष्ठी में भाषण के पश्चात् प्रश्न पूछने का भी अवसर दिया गया था। कांकड़वाड़ी आर्यसमाज का हाल खचाखच भरा था। यह अपने ढंग का पहिला प्रयास था। सभी आर्य सज्जनों ने यह अनुभव किया और कहा कि वेद सम्मेलनों की बजाये वेद गोष्ठियों का आयोजन बहुत लाभकारी होता है।

वेदपीठ की ओर से प्रो० शेरसिंह ने कांकड़वाड़ी आर्यसमाज गोष्ठी के संयोजक कैप्टन देवरत्न आर्य तथा गोष्ठी में भाग लेने के लिए कई प्रदेशों से आये हुए विद्वानों तथा बम्बई के सभी उपस्थित बहनों और भाइयों का धन्यवाद किया।

इस गोष्ठी पर जो व्यय हुआ तथा आतिथ्य आदि का भार कांकड़वाड़ी आर्यसमाज तथा कैप्टन देवरत्न आदि बम्बई की आर्यसमाजों के अधिकारियों और सदस्यों ने बड़े प्रेम से वहन किया। वेदपीठ पर बहुत थोड़ा ही व्ययभार रहा। ऐसी गोष्ठियों के लिए वेदपीठ ने जो व्यय की सीमा रखी थी, उसके अन्दर ही गोष्ठी का कार्य सम्पन्न होगया। आशा है देश के सभी भागों में अलग-अलग विषयों पर होनेवाली वेद-गोष्ठियों को वहां-वहां की सभाओं और आर्यसमाजों की ओर से बम्बई की तरह ही सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

चोरी और सीना जोरी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मुख्य कार्यालय रोहतक में वीरेन्द्रसिंह पुत्र श्री दरबारीलाल रोहणा निवासी अस्थायी लिपिक (क्लर्क) के रूप में कार्य कर रहा था। यह सभा के पुस्तक-विक्रय विभाग, पुस्तकालय और स्टोर की देखभाल करता था। सभा कर्मचारियों, अधिकारियों तथा अभ्यागतों से अशिष्ट व्यवहार करता था। इसे समझा कर ठीक व्यवहार करने के अनेक अवसर दिये गये।

वीरेन्द्रसिंह लिपिक और अमरसिंह सेवक ने मिलकर सभा के भंडार से चोरी करके गेहूं की बोरियां बेचीं। पता लगने पर पूछताछ एव जांच से चोरी सिद्ध होगई और अमरसिंह सेवक ने चोरी स्वीकार करते हुए स्टोरकीपर वीरेन्द्रसिंह का भी सांझा बतलाया और चोरी से प्राप्त रुपयों को मिल-जुलकर दोनों ने खाया-पिया।

अमरसिंह सेवक को तो तत्काल ही सेवामुक्त कर दिया था किन्तु वीरेन्द्रसिंह को स्टोर सम्भलवाने तक रखा। इस अवधि में इस ने जो अशिष्टता, अभद्रता एवं दुर्व्यवहार किया, वह यहां लिखने योग्य नहीं। सामान को सम्भालने पर विक्रय विभाग की पुस्तके कम पाई गईं। कुछ फाइलों में से भी आवश्यक कागजात लुप्त पाये गये। सभा के वरिष्ठ अधिकारियों से विचार-विमर्श के पश्चात् सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री ने वीरेन्द्रसिंह को ५ मार्च को सभा की सेवा से पृथक् कर दिया है।

इसके पश्चात् सभामन्त्री पद का दुरुपयोग करने के सम्बन्ध में इस ने १२ मार्च को एक पत्र साइक्लोस्टाइल करवाकर सभी प्रमुख संस्थाओं तथा व्यक्तियों के पास डाक द्वारा भेजा है और उस पर पिछली तिथि १४-२-१९८८ दिखाई है।

इस पत्र में लिखे सभी आरोप मिथ्या और मनघड़न्त तथा निराधार हैं। स्मारिका अथवा सर्वहितकारी में सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री ने कोई भी निजी विज्ञापन बिना शुल्क दिये नहीं छपवाया है। सभा की गाड़ी बेचने दोबारा खरीदने तथा १० हजार रुपये सभा से देने की कहानी भी मिथ्या है।

इसी प्रकार सर्वहितकारी के कागज, सभा कार्यालय कर्मचारियों से अपने घर पर कार्य करवाना, निजी प्रयोग के लिए १० हजार रुपये निकलवाना आदि बातें भी बदनाम करने और बदले की भावना से लिखी गई हैं। इसके विपरीत सभामन्त्री के पुत्र और पत्नी समय-समय पर सभा के कार्यों में सहयोग देते रहे हैं और आवश्यकता पड़ने पर सभामन्त्री ने अनेक बार सभा के लिए दो-तीन और चार हजार रुपये तक दिये हैं।

सभामन्त्री सभा कार्यार्थ गाड़ी के द्वारा जब कभी, जहां कहीं भी गया है, अकेला नहीं गया। इसके साथ सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता बाबू रघुवीरसिंह जी, सभा कार्यालयाध्यक्ष श्री केदारसिंह जी, सभा कोषाध्यक्ष मा० बद्रीप्रसाद जी आदि गये हैं।

सर्वहितकारी के पाठकों, विशेषतया सभा से सम्बद्ध आर्यजनों से मेरा नम्र-निवेदन है कि सभा की सेवा से मुक्त किये गये वीरेन्द्रसिंह के द्वारा प्रेषित पत्र को पढ़कर भ्रांति में न पड़ें। यह तो चोरी और सीना जोरी वाली बात है।

—म० भरतसिंह
सभा वरिष्ठ उपप्रधान

२४ मार्च, १९८८ ई०

जिला फरीदाबाद की आर्यजनता की ओर से ज्ञापन

श्रीमान् मुख्यमन्त्री, हरयाणा, चण्डीगढ़।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्णय व आदेशानुसार आज ८ मार्च, १९८८ को जिला मुख्यालय पर जिला फरीदाबाद की समस्त आर्य-समाजों के प्रतिनिधि व आर्यजन हरयाणा सरकार की वर्ष १९८८-८९ आबकारी नीति का विरोध प्रकट करते हैं तथा प्रदर्शन करते हुए निम्न महत्त्वपूर्ण विचारणीय विषय पर अपने विरोध को मुख्यमन्त्री हरयाणा को उपायुक्त फरीदाबाद महोदय के माध्यम से भेजते हैं।

हरयाणा सरकार ने वर्ष १९८८-८९ की आबकारी नीति की घोषणा की है। देशी शराब की दूकानों की संख्या ६७३ से बढ़ाकर ७०० की गई है तथा शराब का कोटा १६० लाख प्रूफ लीटर से बढ़ाकर १८५ लाख प्रूफ लीटर कर दिया गया है। इस प्रकार से अंग्रेजी शराब की दूकानों की संख्या ३३६ से बढ़ाकर ३५० करदी गई है तथा प्राईवेट रेस्टोरेंटस् को भी बार के लाईसेंस देने का फैसला किया है। देशी शराब पिलाने के लिए अहाते खोलि जाने का प्रबन्ध किया गया है। उपरोक्त आबकारी नीति सरकार ने अपने आर्थिक संकट के दबाव की वजह से बनाई है जो हरयाणा प्रदेश की जनता व यहां की प्राचीन संस्कृति के विरुद्ध है। इस नीति से प्रदेश के गरीब किसान, मजदूर व ग्रामीण जनता के हितों पर कुठाराघात लगेगा।

सारे देश में कहावत है कि 'देशों में देश हरयाणा, जित दूध दही का खाना' लेकिन प्रदेश की सरकार ने इस कहावत के बिल्कुल विरुद्ध आबकारी नीति अपनाकर अपने खोखलेपन, दिवालियेपन व दिशाहीन तथा हरयाणा की जनता के हितों के विरुद्ध होने का ठोस प्रमाण दिया है। इस नीति से प्रदेश की जनता और अधिक शराब पीने के लिए आकर्षित व लालायित होगी। शराब की आदत से पहले ही प्रदेश की जनता के चरित्र व नैतिक मूल्यों का तेजी से पतन करने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। विशेषकर ग्रामीण बेरोजगार नवयुवकों को शराब ने पहले ही तबाह किया हुआ है। अब सरकार ने अधिक बार व अहातों की छूट देकर सामूहिक रूप से शराब का सेवन करने के रास्ते पर चलने के लिए जनता को आमन्त्रित किया है। प्रायः यह अनुभव किया जाता है कि सायंकाल में विशेषकर जो बसें ग्रामीण मार्गों पर चलती हैं, उनमें ग्रामीण जनता शराब पीकर चलती है, न बसों की टिकट लेते हैं। जनता जनार्दन से अभद्र व्यवहार करते हैं। शहरों में शराब के नशे में अन्धे होकर लोग मर्यादा से बाहर जाकर सड़कों पर गुण्डागर्दी करते हुए देखने को मिलते हैं। विवाह-शादी जैसे पवित्र व शुभ अवसर पर शराब पीकर लोग नगा नाच करते हुए भद्देपन का प्रदर्शन करते हैं। इससे समाज में पतन व भ्रष्टाचार को अधिक बढ़ावा मिलेगा। शराबी मनुष्य अपना विवेक व चिंतन खो बैठता है, जो समाज में भविष्य के लिए आत्मघाती व भयकर दुष्परिणाम पैदा करेगा। आर्यसमाज ने सदैव ही अपने पवित्र व गरिमामय मंच से शराब के बढ़ते इस्तेमाल का विरोध किया है। एक बार फिर आर्यसमाज अपना दायित्व समझते हुए सरकार की इस नीति का विरोध करता है तथा सरकार को चेतावनी देता है कि प्रदेश में पूर्ण नशाबन्दी की घोषणा की जाये तथा खुलेआम बार व अहातों का लाईसेंस किसी को भी न दिया जाये।

—राजेन्द्रसिंह बीसला भूतपूर्व विधायक
अन्तरंग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

आर्यसमाज मन्धार जि० कुरुक्षेत्र का प्रस्ताव

विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि पानीपत के मुसलमान कसाइयों ने मोटा मांस जिसमें गाय बछड़े का मांस शामिल है, प्रशासन से बेचने की अनुमति मांगी है। हम आर्यसमाज मन्धार की तरफ से मांग करते हैं कि कसाइयों को इसकी अनुमति न दी जाये। अगर कसाइयों को इस की अनुमति दी गई तो हम इसके विरुद्ध जबरदस्त आंदोलन करने पर विवश होंगे, जिसकी जिम्मेदारी प्रशासन पर होगी।

—मानसिंह आर्य प्रधान

विद्वदभिनन्दन समारोह

समस्त वेदभक्त आर्यपुरुषों को यह जानकर अतीव प्रसन्नता होगी कि आर्ष-साहित्य प्रचार ट्रस्ट के अन्तर्गत स्व० श्री दीपचन्द जी आर्य की पुण्य स्मृति में एक "विद्वदभिनन्दन योजना" बनाई गई है। जिसके लिए एक स्थायी निधि बनाई है। जिसके ब्याज से प्रतिवर्ष किसी ऋषि भक्त विद्वान् को 'आर्यरत्न' की उपाधि, स्वर्णपदक, नकद राशि एवं शाल इत्यादि से सम्मानित किया जायेगा। जिस विद्वान् ने अपना जीवन वैदिक सत्य सिद्धांतों की खोज करने, प्रचार करने अथवा शास्त्रार्थादि के द्वारा संरक्षण करने में समर्पित किया हो और आर्य विद्वानों द्वारा प्रस्तावित विद्वानों के नाम पर ट्रस्ट की समिति विचार करके अन्तिम निर्णय कर एक विद्वान् का प्रतिवर्ष सम्मान किया करेगी।

यह समारोह 'ऋषिबोधोत्सव' पर किया जाना था, वह किन्हीं अपरिहार्य कारणों से स्थगित करना पड़ा। इस वर्ष ट्रस्ट की समिति के निर्णयानुसार यह सम्मान पुरस्कार श्री पं विशुद्धानन्द जी मिश्र (बदायू) को आर्यसमाज नया बांस (दिल्ली) के वार्षिकोत्सव पर ३ अप्रैल, १९८८ रविवार को दिया जायेगा।

आपने अपना जीवन संस्कृत-भाषा के अध्यापन, प्रसारण, संरक्षण तथा वैदिकवाङ्मय के अध्यापन में ही समर्पित किया हुआ है और पौराणिक साधु करपात्री द्वारा महर्षि के ग्रन्थ-विरोध में लिखे "वेदार्थ परिजात" पुस्तक का सप्रमाण उत्तर "वेदार्थ कल्पद्रुम" लिखकर बहुत ही विद्वत्ता के साथ दिया है, जिसकी समस्त आर्य विद्वानों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। हम ऐसे आर्य विद्वान् का जहां सम्मान कर रहे हैं, वहां उनके उत्तम स्वास्थ्य तथा चिरजीवन की कामना करते हैं।

—धर्मपाल आर्य, मन्त्री आर्ष-साहित्य प्रचार ट्रस्ट
४५५, खारी बावली, दिल्ली-११०००६

विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र, हरयाणा

प्रवेश सूचना

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में ७ से ९ वर्ष के बालकों के प्रथम से तृतीय श्रेणी में प्रवेश १ अप्रैल से ३० अप्रैल तक। आधुनिकतम निःशुल्क आवास, शिक्षा, स्वानुशासनात्मक सुरुचिपूर्ण वातावरण में शारीरिक बौद्धिक विकास हेतु प्रति १३ बालकों पर एक अध्यापक। हरयाणा शिक्षा बोर्ड का पाठ्यक्रम। धर्म-शिक्षा विशेष।

देशी घी, दूध, फलों से पुष्ट स्वास्थ्यवर्धक भोजन। भोजन शुल्क मात्र १५० रुपये मासिक। अधिक जानकारी हेतु ५ रुपये भेजकर विवरण पत्रिका मंगवायें। इसके लिए गुरुकुल कार्यालय से सम्पर्क करें।

दूरभाष : ४८ —प्रधान गुरुकुल कुरुक्षेत्र

सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह का कार्यक्रम

सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह ने आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा आयोजित आर्यसमाज स्थापना दिवस १९ मार्च को आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह की अध्यक्षता की। सभाप्रधान जी ने २४ मई को नेपाल की राजधानी काठमण्डू के लिए प्रस्थान किया। जहां २४ से २७ मार्च तक विश्व हिन्दू सम्मेलन का आयोजन किया गया है। सभाप्रधान जी ग्राम निदाणा जि० रोहतक में शराब के ठेके के विरुद्ध चल रहे धरणे में ३० मार्च को कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करेंगे तथा उसी दिन ग्राम कथूरा जि० सोनीपत में शराबबन्दी पंचायत में भी सम्मिलित होंगे।

१ अप्रैल को सभाप्रधान जी वर्धा के लिए प्रस्थान करेंगे। जहां ३-४ अप्रैल को वर्धा (सेवा ग्राम) में गुजरात विद्यापीठ के कुलपति श्री रामलाल पारिख ने देश के जाने-माने शिक्षा शास्त्रियों का एक सम्मेलन बुलाया है। तीन दिन तक बुनियादी शिक्षा (नई तालीम) जिसका प्रारूप १९३७ में महात्मा गांधी की प्रेरणा पर डा. जाकिर हुसैन ने तैयार किया था, की समस्याओं पर यह सम्मेलन गहराई से विचार करेगा। इस सम्मेलन में प्रो० शेरसिंह को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया है और वे वहां से ६ अप्रैल को दिल्ली लौट आयेंगे।

ईसाइयत के कुचक्र से सावधान

सभी धर्मप्रेमी आर्य (हिन्दू) भाई-बहनों को सूचित किया जाता है कि धर्म-निरपेक्षता की आड़ में ईसाइयत के एजेंट यहां-वहां धन का प्रलोभन देकर, सेवा का ढोंग रचाकर शिक्षा देने, चिकित्सा करवाने आदि के सब्ज बाग दिखाकर हमारे भोले-भाले और खासकर गरीब परिवारों का धर्मांतरण करते फिर रहे हैं। ऋषि-मुनियों, राम कृष्ण आदि युग-निर्माता महामानवों की संतान को अपने धर्म से विमुख करके, वेद, गीता, रामायण आदि हमारी धार्मिक ऐतिहासिक पुस्तकों के प्रति अनास्था पैदा करके ये विधर्मी प्रचारक इस देश की एकता, अखण्डता, साम्प्रदायिक सद्भाव और अमन-शांति तक को खतरा पहुंचाकर अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। हम इनसे पूछना चाहते हैं कि—

क) कुमारी मरियम का पुत्र यीशु मसीह अवैध सन्तान तो हो सकता है, ईश्वर का पुत्र कैसे हुआ ?

ख) ईसाइयों का खुदा आदम को एक चुटकी धूल से बनाता है और फिर हव्वा अर्थात् आदम की पत्नी को आदम की पसली से बनाता है। इसे खुदा का सृष्टि-विज्ञान कहें या किसी बाजीगर का तमाशा ?

ग) अदन के बाग में लगे 'ज्ञान के वृक्ष' का फल खाने से आदम और हव्वा को खुदा ने क्यों मना कर रखा था ? क्या ईश्वर अपनी सन्तान को ज्ञान से दूर रखकर मूर्ख बनाये रखना चाहता है ?

घ) यीशु मसीह शांति और प्रेम के दूत कैसे हुए, जब वे खुद फरमाते हैं कि "मत समझो कि मैं पृथ्वी पर मेल-मिलाप करने को (आया हूं) परन्तु खड्ग चलवाने को आया हूं। मैं मनुष्य को उसके पिता से, बेटी को उसकी मां से और बहू को उसकी सास से अलग करने आया हूं ?

च) जो खुदा अपने अनुयायियों से गाय, भेड़, बकरी आदि की बलि मांगता है, वह जीवों का हितैषी है या उनका वैरी ?

छ) कोढ़, विकलांगता आदि को चमत्कार से ठीक करने के मनघड़न्त किस्से सुनानेवाले ईसाई लोग हस्पताल, डाक्टरी सेवा केन्द्र आदि क्यों खोले बैठे हैं ? इन्हें बन्द क्यों नहीं कर देते ?

और ज्यादा जानकारी के लिए स्थानीय आर्यसमाजों या आर्य वीरदल या सत्य सनातन वैदिकधर्म की प्रचारक संस्थाओं से सम्पर्क करें। याद रखें धर्मान्तरण आगे चलकर राष्ट्रांतरण का कारण बन सकता है।

निवेदक

आर्यसमाज रामनगर, जींद — आर्य वीरदल जींद

आर्यसमाज मन्दिर, करोल बाग, नई दिल्ली-५ का

५६वां वार्षिक महोत्सव

१७ अप्रैल रविवार से ८ मई रविवार, १९८८ तक बड़ी धूमधाम से मनाया जाना निश्चित हुआ है। आर्यसमाज द्वारा जनता की सेवा के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम चलाये जारहे हैं—

१. दैनिक सत्संग	४. वाचनालय	७. रोगी सेवा
२. साप्ताहिक सत्संग	५. पुस्तकालय	८. अतिथि सत्कार
३. पारिवारिक सत्संग	६. निर्धन सहायता	९. वैदिक संस्कार
१०. आयुर्वेदीय चिकित्सा	११. योग शिविरों का आयोजन	

१७ से २४ अप्रैल, १९८८ तक योग शिविर आर्यसमाज मन्दिर में प्रातः ५-३० से ७-३० तक दैनिक संध्या-यज्ञ के साथ ही सम्पन्न होगा। २४ अप्रैल से ३० अप्रैल तक अजमल खां पार्क में कथा, १ मई से ८ मई तक यज्ञ-प्रवचन वार्षिक उत्सव।

ग्राम निदाणा जि० रोहतक में शराब के ठेके पर धरणा

जिला रोहतक के प्रसिद्ध ग्राम निदाणा में दिनांक २१ मार्च से शराब के ठेके पर ग्रामीण महिलाओं तथा आर्य कार्यकर्त्ताओं ने धरणा आरम्भ कर दिया है। ग्राम की पचायत ने अपने ग्राम से ठेका बन्द कराने के लिए प्रस्ताव हरयाणा सरकार को भेज दिया था और ठेके नीलाम होने से पूर्व ८ मार्च को जिलाधीश रोहतक की कोठी पर प्रदर्शन करते हुए ठेका नीलाम न करने का अनुरोध किया था। महिलाओं के एक शिष्टमण्डल ने मुख्यमन्त्री चौ० देवीलाल जी से भेंट करके भी ग्राम से शराब का ठेका बन्द करने की मांग की थी, परन्तु इसके बावजूद भी इस ग्राम में ठेके की नीलामी करदी। इससे ग्रामीण जनता विशेषकर महिलाओं में रोष की लहर फैल गई। आर्यसमाज के उत्साही कार्यकर्त्ता श्री जयपाल आर्य ने अपने पुरुषार्थ तथा परिश्रम से धरणे की तैयारी के लिए महिलाओं के संगठन को सुदृढ़ किया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह तथा मन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री ने ग्राम की जनता से सम्पर्क करके ठेके पर धरणा देने की प्रेरणा की। फलस्वरूप २१ मार्च को दोपहर बाद सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री ने ठेके के सामने धरणे का उद्घाटन किया।

सभा की ओर से पं० ईश्वरसिंह तूफान तथा म० जयपालसिंह आर्य की भजनमण्डलियों ने ग्राम में शराबबन्दी प्रचार करके जागृति उत्पन्न की। महिलायें दिन तथा रात्रि को धरणे पर बैठती हैं और शराब खरीदनेवालों को समझा-बुझाकर वापिस भेज देती हैं। वे शराब के विरुद्ध नारे लगाती हैं तथा गीत गाकर प्रचार कर रही हैं। इस प्रकार शराब का ठेका आर्यसमाज का प्रचार केन्द्र बन गया है।

—केदारसिंह आर्य

योग प्रशिक्षण शिविर तथा उत्सव कार्यक्रम

आर्य वन विकास फार्म में ज्येष्ठ कृष्णा ५, से ज्येष्ठ कृष्णा १४, २०४५ तदनुसार ६ मई से १५ मई, १९८८ प्रातःकाल तक १० दिन के योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जारहा है, जिसमें मातायें भी भाग ले सकेंगी। १५ मई मध्याह्न से उत्सव का कार्यक्रम प्रारम्भ होगा। जो १६ मई मध्याह्न तक चलेगा।

शिविरार्थियों को योग-दर्शन के सूत्रों का अध्यापन तथा क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ-साथ यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक-वैराग्य, अभ्यास, जपविधि, ईश्वर समर्पण, स्वस्वामि-सम्बन्ध (ममत्व) को हटाने जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला जायेगा।

धनजीभाई पटेल (प्रधान आर्यवन विकास फार्म) — स्वामी सत्यपति (शिविराध्यक्ष)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का ८८वां वार्षिकोत्सव एवं दीक्षांत समारोह

(दिनांक १० अप्रैल से १६ अप्रैल, १९८८ तक)

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा पुण्य सलिला पावनी भागीरथी के पुण्य तट पर संस्थापित एवं राष्ट्रीय महत्त्व की संस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी उपर्युक्त तिथियों में हो रहा है। इसमें यजुर्वेद पारायण यज्ञ, संस्कृत एवं संस्कृति रक्षा सम्मेलन, वेद सम्मेलन, कवि सम्मेलन, गुरुकुल एवं नई शिक्षा-नीति तथा व्यायाम सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया है।

निवेदक

डा० निरूपण विद्यालंकार आचार्य — अर्जुनदेव मुख्याधिष्ठाता

आर्यसमाज भाऊअकबरपुर (रोहतक) में महर्षि दयानन्द वैदिक पुस्तकालय का निर्माण

(निज संवाददाता द्वारा)

आर्यसमाज भाऊ अकबरपुर (रोहतक) का वार्षिक उत्सव १७ से २० मार्च, ८८ तक बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। इस शुभावसर पर नशाबन्दी सम्मेलन, हिन्दी रक्षा सम्मेलन, स्त्री-शिक्षा एवं दहेज व सतीप्रथा विरोधी सम्मेलन तथा राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। स्वामी राममुनि, स्वामी रुद्रवेश, म० खेमचन्द, सहदेव बेधड़क, वीरेन्द्र वीर द्वारा शराब तथा समाज में फैली कुरीतियों का व्याख्यान तथा भजनों द्वारा जोरदार खण्डन किया गया। आर्यसमाज और उसके संस्थापक महर्षि दयानन्द द्वारा इन कुरीतियों के उन्मूलन में उनके बहुमूल्य योगदान पर प्रकाश डाला। कपिलदेव शास्त्री पत्रकार ने देश को आजादी तथा हरयाणा के निर्माण में आर्यसमाज की भूमिका का बड़े मार्मिक शब्दों में उल्लेख किया। विशेषकर हिन्दी रक्षा आंदोलन में आर्यसमाज तथा ग्राम भाऊ अकबरपुर की आहुति जिसके फलस्वरूप हरयाणा अस्तित्व में आया था। १५ अगस्त, १९५७ को जब भारत के प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरु द्वारा स्वतन्त्रता दिवस पर लाल किले पर झण्डा लहराया जारहा था, उस समय कैरोंशाही ग्राम भाऊअकबरपुर के हिन्दी प्रेमियों पर अत्याचार का दमन-चक्र चला रही थी का वर्णन बड़े दर्दभरे शब्दों में किया।

चौ० कबूलसिंह सोरो जिला मुजफ्फरनगर एवं स्वामी कर्मपाल ने शराब व दूसरी समाज विरोधी कुरीतियों को समाप्त करने में सर्वखाप पचायत की भूमिका पर प्रभावशाली ढंग से प्रकाश डाला। म० राजेन्द्र-देव ओरंगाबाद निवासी की सुपुत्री ब्र० कामजीत एवं ब्र० सुमेधा कन्या गुरुकुल नरेला की स्नातिकाओं ने अपने ओजस्वी भाषण में नारी-जाति में फैली अज्ञानता एवं कुरीतियों पर बड़े सुन्दर ढंग से प्रकाश डाला और उनको छोड़ने की प्रेरणा दी। जिससे गांव की स्त्रियों पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। म० खेमचन्द एवं सहदेव बेधड़क ने पाकिस्तान युद्ध में विरांगना मनजीतकौर और उसके भाई शार्मसिंह की कुर्बानी तथा अहमदशाह अब्दाली के साथ महाराजा सूरजमल, माता किशोरी रानी और जवाहरसिंह जी दिल्ली के लाल किले पर लड़ाई का दिल को दहला देनेवाली गाथा सुनकर जनता में जोश हिलोरे लेने लगा। हजारों की संख्या में गांव के नरनारी रात्रि के १ बजे तक खुले आकाश और ठण्ड में मन्त्र-मुग्ध होकर सुनते रहे। ग्रामवासियों का जोश देखने को बनता था। इस वातावरण में जब महर्षि दयानन्द वैदिक पुस्तकालय के निर्माण हेतु धन की अपील की गई तो दानी महानुभावों ने रुपयों की बौछार लगादी और एक दूसरे से बढ़-चढ़कर दान दिया। जब उत्सव के प्रधान ठेकेदार धर्मपाल ने कपिलदेव शास्त्री की अपील पर अपने पिता चौ० मांगेराम की स्मृति में दानराशि ६१५१ से बढ़ाकर ११ हजार रुपये की घोषणा की तो तालियों की गड़गड़ाहट से सभा गूंज उठी। वैदिक पुस्तकालय के निर्माण हेतु ६० हजार रु० से ऊपर की धनराशि दान रूप में प्राप्त हुई। ग्राम के सभी दानी महानुभावों का योगदान अनुकरणीय रहा है। विशेषकर आर्यसमाज के प्रधान चौ० प्रतापसिंह व मन्त्री जगदेवसिंह का प्रयत्न बड़ा सराहनीय रहा है और साथ में इस सारे आयोजन में श्री रघुवीरसिंह जी वेदप्रचाराधिष्ठाता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, मा० मोहरसिंह आर्य व भूपसिंह आर्य द्वारा मार्गदर्शन, जिसके फलस्वरूप यह महान् कार्य बड़ी सफलता और शक्ति के साथ सम्पन्न हुआ। सभा की ओर से श्री केदारसिंह कार्यालयाध्यक्ष विशेष रूप से सम्मिलित हुए।

इस दहेज की बोली में

प्रेषक—मत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

लाखों घर बरबाद होगये इस दहेज की बोली में।
अर्थी चढी हजारों कन्या बैठ न पाई डोली में॥

कितनों ही ने अपनी कन्या के पीले हाथ कराने में,
कहां-कहां तक मस्तक टेके आती शर्म बताने में,
जिस पर बीते वही जानता शब्द नहीं ये कहने में,
कितनों ने बेचे मकान हैं अब तक अपने रहने के,
कितनी कन्या राख होगई इस दहेज की बोली में,
लाखों घर बरबाद होगये इस दहेज की होली में।

रहन पड़े हैं घर दूकान और गहने, खेत छुड़ा नहीं पाये,
रहन-सहन गिर गया किसको अपनी कथा सुनायें,
लड़केवाले रेट बढाते जाते धन की आशा में,
हार गये नेता समझ कर मानवता की भाषा में,
आग लगे ऐसे दहेज को दानवता की होली में,
अर्थी चढ़ी हजारों कन्या बैठ न पाई डोली में।

यही हमारा मनुज रूप है यही अहिंसा प्यारी है,
लड़कीवालों की गर्दन पर चलती आज कटारी है,
भीख मांगना लाचारी है इसमें क्या लाचारी है,
सब कुछ तुम्हारे पास सेठजी फिर भी शर्म उतारी है,
धन लोलुप लड़केवालों ने कभी न छोड़ी बोली में,
लाखों घर बरबाद होगये इस दहेज की होली में।

अब भी चेतो लड़केवालो अपने पुत्रों की शादी में,
तुमको भी ऐसा दुःख होगा अपनी कन्या की शादी में,
समझो यह हराम का पैसा तुम्हें नरक ले जायेगा,
अब भी सोचो सम्भलो लालची लोगो पाप गले लग जायेगा,
घर के घर नीलाम हो रहे इस दहेज की बोली में,
लाखों घर बरबाद होगये इस दहेज की होली में।

॥ दुल्हन ही दहेज है ॥

आर्यसमाज अकालगढ़ जि० जींद का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री सूरजमल, मन्त्री—जोरासिंह, कोषाध्यक्ष—मद्रासीलाल, पुस्तकाध्यक्ष—अजीतसिंह।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित—

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर, यमुनानगर में १ मई से प्रवेश प्रारम्भ

आप सभी आर्य सज्जनों को यह जानकर अति हर्ष होगा कि स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती की पूज्य भूमि (वैदिक साधन आश्रम यमुनानगर) में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सफल प्रयत्नों के द्वारा पुन: त्यागी, तपस्वी, सदाचारी, कर्मनिष्ठ प्रचारक प्रबुद्ध शिक्षा शास्त्री तैयार करने के लिए सिद्धांत प्रवेशिका, भूषण विशारद, शिरोमणि शास्त्री की मान्यता प्राप्त उपाधि का प्रवेश १ मई से प्रारम्भ होकर, अध्यापन १ जुलाई को प्रारम्भ हो जावेगा। प्रवेशार्थी अभी से ही पत्र व्यवहार करके अपना स्थान सुरक्षित करालें। इस महाविद्यालय की विशेषता यह होगी कि आर्ष साहित्य पठन-पाठन के साथ भोजन आवास व्यवस्था सर्वथा निशुल्क रहेगी। प्रवेशार्थी की योग्यता संस्कृत के साथ दसवीं प्राज्ञ, प्रथमा वा इसके समकक्ष होनी चाहिए। १६ वर्ष से अधिक आयु के अविवाहित छात्र ही प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे। प्रवेशार्थी ऋतु अनुकूल वस्त्र व बर्तन साथ लावें।

अन्य विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क व पत्र-व्यवहार निम्न पते पर करें—

प्रबन्धक—श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री
श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर,
यमुनानगर (हर०)

(पृष्ठ १ का शेष)

की ओर अग्नि में न गिरने पावे। ऐसे ही यज्ञशाला बनाने का यह प्रयोजन है कि जिससे अग्नि की ज्वाला में वायु अस्तव्यस्त न लगे और वेदि में कोई पक्षी किंवा उनकी बीट भी न गिरे। इसी प्रकार ऋत्विजों के बिना यज्ञ का काम कभी नहीं हो सकता, इत्यादि प्रयोजन के लिए यह सब विधान यज्ञ में अवश्य करना चाहिये। इससे भिन्न द्रव्य की शुद्धि और संस्कार आदि भी अवश्य करने चाहियें, परन्तु इस प्रकार से प्रणीतापात्र रखने से पुण्य और इस प्रकार रखने से पाप होता है, इत्यादि कल्पना मिथ्या ही है, किन्तु जिस प्रकार करने यज्ञ का कार्य अच्छा बने, वही करना अवश्य है अन्य नहीं। (ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पर आधारित)



आर्यसमाज स्थापना दिवस संवत् २०४५ चैत्र शुक्ला प्रतिपदा शुक्रवार (तदनुसार १८ मार्च, १९८८) नववर्ष शुभारम्भ पर

मंगल कामनायें

ओ३म् अनुव्रतः पितुः पुत्रो माता भवतु सम्मनाः
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम् ॥
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारयुत स्वसा
सम्यञ्चः स व्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ॥
(अथर्व० ३।३०।२-३)

पितु के अनुवर्ती पुत्र बनें,
नित सुमति बढ़े घर में भारी।
जननी-पद-कमल शुभाशिष् लें,
सत् मानस हों आज्ञाकारी ॥

मधु मधुर प्रीति-रस घोल सती,
पत्नी बोले वाणी प्यारी।
पति शांत स्वभाव विनोदी बन,
विलसै सुख सम्पत व्रतधारी ॥

भाई बहिनों में प्रीति पगै,
कटु कलह कुमति का काम न हो।
सानन्द यज्ञमय जीवन हो,
विष-वमन व्यसन का नाम न हो ॥

शोक-समाचार

नारनौल निवासी डा० मूलचन्द जी उपप्रधान आर्यसमाज के दवाखाने के सेवक श्री हरिराम पुरुषार्थी का ८ मार्च को निधन होगया। आपने अपनी मृत्यु से कुछ दिन पूर्व आर्यसमाज को ८५०) दान दिया था। आर्यसमाज के अधिकारियों ने एक शोक-प्रस्ताव द्वारा उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए उनके गुणों का गुणगान किया और ईश्वर से उनकी सद्गति प्रदान करने के लिए प्रार्थना की।

—म० ताराचन्द आर्य

आजादी के बाद भी

इन्स्टीट्यूशन ऑफ इन्जिनियर्स ८ गोखले रोड कलकत्ता द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी का अपमान—

ए०एम०आई०ई० की परीक्षाओं में अंग्रेजी माध्यम की बाध्यता—

स्वतन्त्रता के ४० वर्षों बाद भी इंस्टीट्यूशन आफ इन्जिनियर्स द्वारा ए. एम. आई. ई. की परीक्षायें अंग्रेजी माध्यम में ही ली जाती हैं। जब कि इस परीक्षा में बैठनेवाले छात्र हिन्दी माध्यम में शिक्षित होते हैं। ये छात्र इण्टर, बी. एस. सी, एवं डिप्लोमा स्तर तक हिन्दी माध्यम में पढ़ते हैं और जब ए. एम. आई. ई. की परीक्षाओं में बैठने के योग्य होते हैं तो संस्थान अंग्रेजी माध्यम में ही परीक्षायें देने के लिए बाध्य करता है। क्या यह हिन्दी प्रेमी छात्रों के साथ भेदभाव और राष्ट्रभाषा हिन्दी का अपमान नहीं है ? आज हिन्दी प्रेमी छात्रों को भी हिन्दी माध्यम से ए. एम. आई. ई. की परीक्षायें देने की अनुमति क्यों नहीं दी जारही है ?

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा कराये अब तक अन्तिम अखिल भारतीय सर्वेक्षण के अनुसार देश में केवल ७.५% छात्र ही अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा पारहे हैं और हिन्दी माध्यम में पढ़ने वाले छात्र ६६% हैं। इसका अर्थ है कि ए. एम. आई. ई. की परीक्षायें केवल अंग्रेजी पढ़े वर्ग के लिए संविधान की भावना के विपरीत आरक्षित हैं अर्थात् देश की ६६% प्रतिभा अंग्रेजी न जानने के कारण बर्बाद हो रही है, उसे ए. एम. आई. ई. की परीक्षाओं में बैठने का अधिकार नहीं है।

जब सबसे महत्त्वपूर्ण सिविल सेवा परीक्षा हिन्दी माध्यम से हो सकती है। आई. आई. टी. में एम. टेक. की परीक्षा हिन्दी में हो सकती है। रुड़की विश्वविद्यालय में इंजिनियरिंग की परीक्षायें हिन्दी माध्यम से दी जा सकती हैं। एम. ई. व एम. डी. के शोध ग्रन्थ हिन्दी में लिखे जा सकते हैं, फिर ए. एम. आई. ई. की परीक्षा में ऐसी क्या विशेषता है ?

संस्थान द्वारा अंग्रेजी जैसी अवैज्ञानिक, भेदमूलक, दमनकारी, गुलामी की प्रतीक विदेशी भाषा को हम छात्रों पर जबरदस्ती लादना—ऐसा करने का साहस तो विदेशी शासन भी न कर सका ···—यह २% अंग्रेजीदां लोगों का हम पर अपनी विशिष्टता लादने का षड्यन्त्र है।

आइये एकजुट होकर संस्थान के अधिकारियों को बतायें कि अंग्रेजी उन अंग्रेजों की भाषा है, जिन्होंने हमारी आजादी के दीवानों को फांसी पर लटकाया था और मांग करें कि—

ए. एम आई. ई. की परीक्षाओं में तत्काल हिन्दी माध्यम की भी व्यवस्था की जाये। इस विषय में भारत सरकार के शिक्षा विभाग के मन्त्री तथा प्रधानमन्त्री को भी पत्र भेजे जायें।

निवेदक—विनोदकुमार गौतम (ए.एम.आई. ई. छात्र)
कस्बा—पहासू (बुलन्दशहर)-२०२३९६

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रैस, (फोन : २८७४) रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

१५ चैत्र २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्क १९ ७ अप्रैल, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

निदाणा तथा कथूरा में शराब के ठेकों पर धरणा
ग्रामीण जनता ने ठेका बन्द कराने के लिए क… कस ली

(केदारसिंह आर्य द्वारा)

ग्राम निदाणा जि० रोहतक एवं कथूरा जि० सोनीपत में शराब के ठेकों पर ग्रामीणों द्वारा धरणा गतसप्ताह से [illegible] ग्रामों को ग्राम सभाओं के निमन्त्रण पत्र आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, वरिष्ठ उपप्रधान महाशय भरतसिंह जी तथा [illegible] के उपदेशक ब्रह्मचारी महेन्द्रसिंह जी रोहतक से [illegible] मार्च को दोपहर बाद २ बजे ग्राम निदाणा के धरणे पर पधारे। वहाँ गतसप्ताह से सभा के उपदेशक पं० अर्जुनदेव आर्य, पं. चन्दरूप आर्य एवं [illegible] पं० ईश्वरसिंह तूफान तथा पं० नोरंगलाल की भजनमण्डलियों के साथ ग्राम में शराबबन्दी का प्रचार कर रहे थे। ठेके के सामने ग्रामीण महिलायें जिन की संख्या सौ से तीन सौ तक रहती है, धरणे पर बैठी हैं और शराब खरीदनेवालों को शांतिपूर्ण ढंग से रोकने का यत्न करती हैं। वे शराब के विरुद्ध गीत गाती हैं तथा नारे भी लगाती हैं। सभा अधिकारियों के धरणे पर पधारने पर महिलाओं ने उनका स्वागत किया और अपनी



ग्राम निदाणा की महिलायें तथा आर्य कार्यकर्ता धरणे पर

दु:खभरी कहानी सुनाते हुए बताया कि शराबियों से तंग आकर ग्राम की कम से कम दस महिलाओं ने आत्म-हत्या करली है। उनके शराबी पति अथवा लड़कों ने शराब के निरन्तर सेवन से घर बर्बाद कर दिये हैं। उनके उत्पात से ग्राम में बहु-बेटियों की इज्जत खतरे [illegible] रहती है। उन्होंने अपने निश्चय पर जोर देते हुए कहा कि जब तक ग्राम में शराब का ठेका रहेगा, हम भी यहीं धरणे पर बैठी रहेंगी। यदि ग्राम के पुरुषों ने धरणे में सहयोग न दिया तो भी हम पीछे नहीं हटेंगी।

सभा के उपप्रधान महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी ने धरणे पर बैठी महिलाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि शराबी पति अथवा पुत्र आदि नशे में बेहोश होकर सबसे अधिक अत्याचार महिलाओं पर ही करते हैं। शराबियों के कारण बहु-बेटियों को अपनी इज्जत बचानी कठिन हो जाती है। शराब सभी बुराइयों की जड़ है। अत: आर्यसमाज इस बुराई को समाप्त करने के लिए मैदान में उतर आया है। इस कार्य में महिलाओं का योगदान सराहनीय है। दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर के व्यवस्थापक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री ने अपने भाषण में ग्रामीण जनता से शराब के ठेके को बन्द करवाने के लिए एकजुट होने का आह्वान किया और नवयुवकों को भी इस संघर्ष में कूदने की प्रेरणा की। उन्होंने सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह की शराबबन्दी आंदोलन में भूमिका की चर्चा करते हुए कहा कि इन्होंने दलगत राजनीति से ऊपर उठकर हरयाणा में श्री भजनलाल तथा श्री बन्सीलाल के कांग्रेसी शासन काल में भी शराब की सरकारी नीति का विरोध करते हुए ठेकों पर धरणे आरम्भ करवाये थे। इस महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिए आज भी इस सामाजिक बुराई को समाप्त कराने के लिए पूरी शक्ति लगा रहे हैं।

प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान ने धरणे पर बैठी महिलाओं की प्रशंसा करते हुए कहा कि शराबबन्दी आंदोलन का श्रीगणेश महिलाओं ने ही किया है। बालावास जि० हिसार, नाहरी, रिढाणा जि० सोनीपत, झाड़सा जि० गुडगांव, सांघी, मांडोठी जि० रोहतक आदि के शराब के ठेकों के धरणों पर इन्होंने अपने साहस तथा वीरता का परिचय दिया है, वह इस आंदोलन में सदा स्मरण रहेगा। इनके संघटन के कारण शराब का ठेकेदार १५ दिन से अधिक नहीं ठहरता। आपने निदाणा ग्राम के पुरुषों को झंझोड़ते हुए कहा कि महिलायें तो धरणे पर बैठी हैं और पुरुष बैठकों में बैठे तास आदि खेल रहे हैं। यह चौबीसी के वीर पुरुषों को शोभा नहीं देता। ग्रामों से शराब की बुरी लानत न हटी तो किसान तथा मजदूर इसके कारण बर्बाद हो जायेंगे। आपने स्मरण करवाया कि हमने श्री देवीलाल के साथ मिलकर हरयाणा बनवाया था, परन्तु दु:ख की बात है कि श्री देवीलाल के मुख्यमन्त्री काल में भी वही हरयाणा शराब के कारण नष्ट हो रहा है। उन्होंने श्री भजनलाल तथा बन्सीलाल के काल से शराब के ठेकों में ड्योढ़ी संख्या में वृद्धि करदी है। शराब से होनेवाली आमदनी से हरयाणा का विकास नहीं, अपितु

(शेष पृष्ठ ५ पर)

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा शराबबन्दी आंदोलन के बढ़ते कदम

स्वाधीनता की दूसरी लड़ाई का बिगुल बज गया

शोषण की दुनियां में व्यापार और राजनीति का चोली-दामन का साथ है। भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी व्यापार करने आई थी और वह व्यापार बदल गया ब्रिटिश साम्राज्य में। ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ आजादी की लम्बी लड़ाई लड़कर भारत ने बहुमूल्य स्वाधीनता पाई, लेकिन हमारा दुर्भाग्य कि स्वाधीन भारत का राज्य बदल गया व्यापार में। वही कांग्रेस जो गांधी के नेतृत्व में शराब की दूकानों पर 'पिकेटिंग' करती थी, 'अनर्थ शास्त्र' को 'अर्थ शास्त्र' मान बैठी और शराब की ठेकेदारी करने-कराने लगी। राज्य सरकारें एक-एक करके जनकल्याण के रास्ते से हटकर गरीब जनता के इस शोषण और सर्वनाश के रास्ते पर चल पड़ी और आज गुजरात को छोड़कर सब प्रदेशों में शराब सरकारों के संरक्षण में बिक रही है। सब अलग-अलग राजनीतिक दल इस गुनाह में समान रूप में शामिल हैं। तमिलनाडु में केवल देहात से ही देशी शराब के ठेके उठाये गये हैं। शहरों में शराब ज्यों की त्यों बनी हुई है। गुजरात व तमिलनाडु की सरकारें अपने ढंग से शराबबन्दी किये हुए हैं। जनता के जीवन से शराब के सर्वभक्षी दैत्य को मार भगाने की चेष्टा ईमानदारी से कोई भी नही करना चाहता। इस जहर के हक में इतना अधिक प्रचार हुआ है और चुनावों से लेकर पारिवारिक शादी-विवाह की दावतों और त्यौहारों पर भारी मात्रा में शराब का खुलकर प्रयोग करने की ऐसी कुप्रथा चल पड़ी है कि बिना शराब के मानो ये सारे उत्सव ही बेमाने हों। शराब को जो प्रोत्साहन और संरक्षण समाज में मिल रहा है उससे तो यह कि शराब से मुक्ति पाने के लिए यह लड़ाई गरीब जनता को अपने बलबूते पर अकेले लड़नी होगी। राजनैतिक सत्ताधारी छोटे से लेकर बड़े तक, सरकारी अधिकारी और अन्धा-धुन्ध पैसा लुटाने के [illegible]ित रखनेवाला वह उद्योगपति जो या तो शराब बनाता है या शराब पिलाकर अपना काम निकालता है, समाज में इन तीनों शक्तिशाली वर्गों ने गरीब किसान व मजदूर को बर्बाद करने के लिए जो मजबूत किलेबन्दी की है उसको तोड़ना अंग्रेजी हकूमत के खिलाफ लड़ी लड़ाई से भी ज्यादा मुश्किल है। भारत की गरीब जनता की हालत चक्रव्यूह में फंसे अभिमन्यु के समान है, जिसे ग्यारह महारथियों ने घेरकर मार डाला था। लेकिन हम अगर जनतन्त्र की ताकत को पहचान ले तो हमे अपनी शराबबन्दी की लड़ाई में विजय अवश्य मिलेगी। ये हमारे बच्चों के भविष्य की लड़ाई है। हमारी मां-बहनों की इज्जत की लड़ाई है। हमें हर बलिदान देकर इस 'शराब' के 'राक्षस' से अपने जीवन की रक्षा करनी है। 'धनी व्यक्ति शराब का ठेकेदार तुम से लूटे गये धन से तुम्हें पिटवायेगा, सत्ता पर हावी लोग पुलिस के डण्डे भी इस्तेमाल करेंगे। लेकिन अगर हम अपने भाई, पिता, पुत्र को शराब पीने से रोकने में सफल हो जाते हैं तो यह 'शराब' की राक्षसी हमें कैसे निगल जायेगी ? समय ऐसा आगया कि या तो अब 'शराब' नहीं या हम नहीं।

यदि शराब के इस दुर्ग को हम नहीं तोड़ सके तो भारत की आमजनता के पल्ले स्वाधीनता प्राप्ति के लाभ का एक बूंद भी पड़नेवाला नहीं है। उसके पसीने की एक-एक बूंद शराब के कारखानों में शराब बनकर निकलेगा। जिससे उसका, उसकी सन्तान का तथा परिवार का सुख पूंजीपति के मुह का ग्रास बनकर रह जायेगा। शराब बनाने और पिलानेवालों के महल तो ऊंचे से ऊंचे उठते जायेंगे और पीनेवाले गरीब किसान, मजदूर, दस्तकार तथा छोटे-छोटे धन्धे करनेवाले लोगों की न तो झोंपड़ियां ही बच पायेंगी और न बच पायेगी उनकी बहु-बेटियों को इज्जत। आज शराब के दुर्ग को भेदने और तोड़ने के बगैर गरीब भारतीय को कोई गति नहीं है। वह आजाद स्वाधीन होते हुए भी पराधीन हो चुका है। हम पहले ही कह चुके हैं कि—

यह दुर्ग तोड़ना उतना ही कठिन है जितना कठिन अंग्रेजी साम्राज्य का उखाड़ना था। जैसा स्वतन्त्रता सेनानियों ने देश की स्वाधीनता के लिए बलिदान दिये थे। इस स्वाधीनता को लड़ाई में भी लाठियां, गोलियां खानी पड़ सकती हैं, बलिदान देने पड़ेंगे, तपस्या करनी पड़ेगी। स्वाधीन भारत में स्वाधीनता की यह दूसरी लड़ाई होगी। यह लड़ाई हरयाणा में आरम्भ हो चुकी है और छोटे-बड़े रूप में कई दूसरे प्रदेशों में भी चल रही है। हरयाणा में महिलाओं और पुरुषों ने स्वाधीनता की लड़ाई की तरह अनेक बुराइयों की जड़ शराब के खिलाफ जहाद छेड़ दिया है। महिलायें लाठियां खा चुकी हैं, पुरुष भी कुछ जगह पुलिस ने हिरासत में रखे हैं। विश्वास होने लगा है कि हरयाणा की जनता ने अंगड़ाई ले ली है और अब वह हरयाणा प्रदेश में शराब का बहिष्कार करके ही दम लेगी।

पूर्ण शराबबन्दी लागू कराने के लिए हमारा संकल्प

स्वाधीनता की इस दूसरी लड़ाई को लड़ने के लिए वीर सेनानी हजारों की संख्या में पूरे संकल्प के साथ मैदान में उतरें। हमारी यह लड़ाई पूर्ण रूप से प्रेम से ओतप्रोत और अहिंसात्मक होगी और इस व्रत को लेकर ही हमारे सत्याग्रही इस सेना में भरती होंगे। हमारी लड़ाई 'शराब' से होगी 'शराबी' से नहीं। हम शराब के शिकार रोगियों के हृदय को बदलेंगे, जरूरत होगी तो उसका इलाज भी करवायेंगे, उसके उजड़े हुए घर को बसाने में सहायक होंगे।

हम शराबबन्दी के इच्छुक महानुभावों से निवेदन करते हैं कि जिन ग्रामों में शराब के ठेके खुले हुए हैं, वहां पंचायतों का आयोजन करके धरणे देने की तैयारी करें। सभा की ओर से यथासम्भव मार्ग-दर्शन तथा सहयोग दिया जायेगा।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती
प्रधान परोपकारिणी सभा

प्रो० शेरसिंह
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित—

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर यमुनानगर में १ मई से प्रवेश प्रारम्भ

आप सभी आर्य सज्जनों को यह जानकर अति हर्ष होगा कि स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती की पुण्य भूमि (वैदिक साधन आश्रम यमुनानगर) में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सफल प्रयत्नों के द्वारा पुनः त्यागी, तपस्वी, सदाचारी, कर्मनिष्ठ प्रचारक प्रबुद्ध शिक्षा शास्त्री तैयार करने के लिए सिद्धांत प्रवेशिका, भूषण, विशारद, शिरोमणि एवं शास्त्री की मान्यता प्राप्त उपाधि का प्रवेश १ मई से प्रारम्भ होकर, अध्यापन १ जुलाई को प्रारम्भ हो जावेगा। प्रवेशार्थी अभी से ही पत्र व्यवहार करके अपना स्थान सुरक्षित कराले। इस महाविद्यालय की विशेषता यह होगी कि आर्ष साहित्य पठन-पाठन के साथ भोजन आवास व्यवस्था सर्वथा निशुल्क रहेगी। प्रवेशार्थी की योग्यता संस्कृत के साथ दसवीं, प्राज्ञ, प्रथमा वा इसके समकक्ष होनी चाहिए। १६ वर्ष से अधिक आयु के अविवाहित छात्र ही प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे। प्रवेशार्थी ऋतु अनुकूल वस्त्र व बर्तन साथ लावें।

अन्य विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क व पत्र-व्यवहार निम्न पते पर करें—

प्रबन्धक—श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री
श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर,
यमुनानगर (हर०)

बल्लबगढ़ में आर्यसमाज स्थापना दिवस सम्पन्न

वेदप्रचार मण्डल देहात द्वारा बल्लबगढ़ जि० फरीदाबाद में २० मार्च को आर्यसमाज स्थापना दिवस श्री देवमुनि वानप्रस्थी की अध्यक्षता में मनाया गया। ग्रामों में आर्यसमाज के कार्य प्रसार के लिए सभा के उपप्रधान श्री लक्ष्मणदास आर्य द्वारा इस शुभावसर पर आर्य वीरदल जि० फरीदाबाद के सेनापति श्री जयवीर आर्य को एक राजदूत मोटर साइकल भेंट की गई। सभा की ओर से महाशय खेमसिंह की भजनमण्डली तथा श्री ईश्वरसिंह आर्य, श्री ओमवीर बेधड़क के प्रभावशाली भजन हुए।

श्री जयवीर आर्य ने व्यायाम प्रदर्शन के कार्यक्रम में उपस्थित जनता को बहुत प्रभावित किया। प्रातःकाल ९ से ११ बजे तक यज्ञ पर ११ ग्रामीण भाइयों ने शराब न पीने की प्रतिज्ञा की। वेदप्रचार मण्डल के संरक्षक श्री राजेन्द्रसिंह पूर्व विधायक ने आर्य कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि अब समय आगया है कि हम सभी को मिलकर ग्रामों में ऋषि दयानन्द के सिद्धांतों का प्रचार करके शराब, दहेज आदि सामाजिक बुराइयों को समाप्त करना होगा। ग्रामों में वैदिक साहित्य का प्रचार करने के लिए चलते-फिरते वैदिक पुस्तकालय द्वारा वेद का सन्देश घर-घर जाकर दिया जायेगा। इस कार्य हेतु सभा ने एक लाउडस्पीकर खरीद कर वेदप्रचार मण्डल को दिया है।

डा० भवानीलाल भारतीय के प्रवचन

आर्यसमाज हिसार के साप्ताहिक अधिवेशन (दिनांक १३-३-८६) में डा० भवानीलाल भारतीय का स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रभावशाली प्रवचन हुआ। इससे पूर्व निरन्तर दो दिनों तक डा० भारतीय ने दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के छात्रों के समक्ष स्वामी जी के जीवन के सम्बन्ध में ओजपूर्ण चर्चा की तथा शंका समाधान किया।

—ब्र० विरजानन्द

(पृष्ठ १ का शेष)

विनाश होगा। भ्रष्टाचार अधिक बढ़ेगा और हरयाणा की वैदिक संस्कृति समाप्त हो जायेगी। यदि हरयाणा को बचाना है तो शराब हटानी पड़ेगी। अतः सभी को मिलकर इस संघर्ष में सहयोग करना चाहिए। आपने महिलाओं को विश्वास दिलाया कि आर्यसमाज सदा की भांति आपत्तिकाल में उनकी सहायता तथा मार्ग-दर्शन करता रहेगा। निदाणा की ग्रामीण जनता की ओर से श्री जयपाल आर्य, श्री दयानन्द तथा पं० श्रीदत्त आदि ने सभाप्रधान जी का ग्राम में पधारने पर धन्यवाद किया और बताया कि ग्राम की पंचायत ने शराब पीनेवालों पर १०० रु. दण्ड देने तथा ठेका समाप्त कराने का दृढ़ निश्चय किया है। सफलता मिलने तक धरणा भी चालू रहेगा।

ग्राम कथूरा के शराब के ठेके पर धरणा आरम्भ

सभा के अधिकारी उसी दिन दोपहर बाद जि० सोनीपत के ग्राम कथूरा में पधारे। वहां की चौपाल में ग्रामवासियों की एक शराबबन्दी हेतु पंचायत हो रही थी। ग्राम के सभी ठोलों के मुखिया तथा नवयुवक भारी संख्या में उपस्थित थे। सभी ने सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह जी आदि आर्यनेताओं के पधारने पर अति प्रसन्नता व्यक्त की। ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री ने पंचायत के आयोजकों का धन्यवाद करते हुए कहा कि यदि इसी प्रकार अन्य ग्रामों में भी जागृति आजाये तो वह दिन दूर नहीं जब पवित्र हरयाणा के किसी ग्राम में शराब के ठेके नजर नहीं आवेंगे। ग्राम के नवयुवकों को इस कार्य हेतु संघर्ष में कूद जाना चाहिए, ताकि आने वाली नसलें इनके योगदान का अनुशरण कर सकें।

सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह ने इस अवसर पर पंचायत में उपस्थित बुजुर्गों और नवयुवकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि शराब बन्द करवाने के लिए स्वाधीनता संग्राम की भांति बड़े से बड़ा बलिदान करने का समय आगया है। क्योंकि शराब के सेवन करने से गरीब किसान मजदूर दीवालिया होता जारहा है। सरकार शराब पिलाकर ग्रामीण जनता को बेहोश रखना चाहती है, ताकि वह आपस में लड़ती रहे और उसकी कुर्सी बची रहे। पाकिस्तान जैसे देश में शराब पर पाबन्दी का उल्लेख करते हुए आपने कहा कि भारत को भी अपनी सुरक्षा तथा अखण्डता की रक्षा के लिए अपनी नीति बदलनी होगी। आपने ग्रामवासियों को सभा की ओर से विश्वास दिलाया कि आर्यसमाज से शराब के ठेके को रद्द करवाने के लिए प्रत्येक प्रकार की सहायता दी जावेगी।

ग्राम की ओर से नवयुवक संघटन के प्रधान श्री महावीरसिंह तथा पंचायत की ओर से मा० केहरीसिंह एवं श्री हरिसिंह पूर्व मुख्याध्यापक ने सभा अधिकारियों को बताया कि हम किसी भी मूल्य पर ग्राम में शराब के ठेके को चलने नहीं देंगे। ग्राम सभा की ओर से हरयाणा के मुख्यमन्त्री को ११०० से अधिक नर-नारियों के हस्ताक्षर करवाकर भेज चुके हैं। १२ मार्च को जब सोनीपत में ठेके की नीलामी हो रही थी तो १५० की संख्या में ग्रामवासियों ने प्रदर्शन किया था। इसके बावजूद भी सरकार ने ठेके की नीलामी करके हमारी भावनाओं को कुचला है। सरकार की जबरदस्ती की नीति का डटकर विरोध करेंगे। ठेकेदार को शराब की बोतल नहीं बेचने देंगे। इस संघर्ष में जब तक पुरुष जीवित हैं, तब तक महिलाओं को धरणे पर बैठने की आवश्यकता नहीं होगी। हम प्रतिदिन १०० पुरुष धरणे पर बैठकर ठेकेदार के ग्राम में पैर न जमने देंगे।

उसी दिन रात्रि को शराब के ठेके के सामने सभा की ओर से श्री तोरणलाल की भजनमण्डली ने शराब के विरुद्ध प्रचार किया तथा सभा के उपदेशक प० अर्जुनदेव ने ग्रामवासियों को इसी प्रकार संगठित होकर कार्य में जुटे रहने की प्रेरणा की। सभा के इस शराबबन्दी आंदोलन को सफल करने के लिए प्रि० गुगनसिंह तथा अन्य आर्यनेता दोनों ग्रामों से सम्पर्क बनाये हुए हैं।

जिला हिसार में वेदप्रचार की धूम

दिनांक २२-३-८८ को खेतो की ढाणी में दोपहर एवं रात्रि को स्वामी जगतमुनि व महाशय झाबेराम जी द्वारा वेदप्रचार किया गया। आर्यसमाज मन्दिर नलवा में हवन किया गया। दोपहर को गांव के बीच में उपर्युक्त विद्वानों ने भजनों द्वारा प्रचार किया। सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने भी शराबबन्दी एवं सरदार भगतसिंह आदि क्रांतिकारियों के बलिदान दिवस पर विचार रखे। उन्होंने बताया की शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि उनके बताये रास्ते पर चलकर राष्ट्र रक्षा करे। रात्रि को ग्राम कंवारी में वेदप्रचार किया गया। भजनों के अतिरिक्त स्वामी जगतमुनि जी ने क्रांतिकारियों का इतिहास रखा। महाशय झाबेराम जी ने भी महिलाओं एवं समाज सुधार के भजन बड़ी मस्ती से गाये, जिससे सभा में बैठे गांव के नरनारी लट्टू होगये। क्रांतिकारी जी ने माता-पिता की जिम्मेवारी व विद्यार्थियों के कर्त्तव्य पर विचार रखे।। प्रातःकाल श्री ज्ञानीराम सरपंच के घर पारावारिक हवन किया गया। हवन पर प्रतिष्ठित मनुष्यों ने भाग लिया। दो ने जनेऊ धारण किये। उपर्युक्त सभी जगह कार्यक्रम बहुत ही रोचक एवं सराहनीय रहा।

—वजीरसिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज कंवारी

कन्या गुरुकुल का उत्सव

आप सबको सूचित किया जाता है कि कन्या गुरुकुल जसात का वार्षिक उत्सव २८-२९ मई को होगा। यज्ञ ५ दिन पूर्व प्रारम्भ हो जाएगा। कृपया अवश्य ही दर्शन दीजिए।

—आचार्या सुमित्रार्या
कन्या गुरुकुल जसात, त० पटौदी, जि० गुडगावां

चौ० पृथ्वीसिंह जी बेधड़क का भजन

टेक—चार वेद और मनु के ऊपर जिन-जिनका विश्वास नहीं।
आज नही तो कल परसों उसके बचने की आस नहीं।।

बहुत आदमी सोचते होंगे हम युद्ध से रोब जमा देंगे,
छोड़-छोडकर अस्त्र शस्त्र हम अपना देश बचा देंगे,
उदन बम्ब परमाणु बम्ब से जग में विघन मचा देंगे,
अपनी ताकत के द्वारा दुनियां को नाच नचा देंगे,
याद रहे जिसके हृदय में सत्यार्थप्रकाश नहीं।१

टैंक भी थे विमान भी थे सबसे ज्यादा बलवान् भी थे,
मगर वेद के प्रतिकूल होकर हारे सब जापानी थे,
हिटलर गोइरिंग कीटल हंस जो साईंस में लासानी थे,
उनका पता ना पाया भाई जो बल में अभिमानी थे,
अमरीका लन्दन एशिया को आता सुख का सांस नहीं।२

वेदों के अनुकूल जगत् में जितने दिन तक राज रहा,
संध्या हवन का घर-घर अन्दर दोनों समय रिवाज रहा,
घी के मटके भरे रहे थे कोठे कुठलों में अनाज रहा,
खाद्य पदार्थ और टुकड़े का कोई ना मोहताज रहा,
बिना यज्ञ के दुनियाभर में किसी जगह प्रकाश नहीं।३

यदि चाहते हो सुख से रहना उपकार करना सीखो,
देश धर्म जाति के लिए हंस-हसकर मरना सीखो,
अपने को दुःख में देकर दुःख दूजे का हरना सीखो,
यही तरीका ठीक है भाई भवसागर तिरना सीखो,
पृथ्वीसिंह बेधड़क कह जीवन की कुछ आस नहीं।

—जयपालसिंह आर्य सभा भजनोपदेशक

आर्यसमाज दयानन्द मार्ग, रेलवे रोड दिल्ली में पुनर्विवाह संस्कार

एक तलाक शुदा ब्राह्मण कन्या पुष्पादेवी शर्मा दसवीं श्रेणी उत्तीर्ण का पुनर्विवाह श्री रमेशचन्द्र सलूजा (अरोड़ा) बी०ए० प्रज्ञाचक्षु निवासी भगवानदास नगर, दिल्ली-२६ के साथ आर्यसमाज मन्दिर में पचासों व्यक्तियों की उपस्थिति में वैदिकरीति के साथ यह अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न हुआ।

यह पुनर्विवाह अन्तर्जातीय श्री अशोककुमार अरोड़ा बी०ए०एल० एल०बी० (विधुर) के साथ श्रीमती प्रेमलता एम०ए०एम०एड० अध्यापिका के साथ वैदिकरीति के साथ आर्यसमाज मन्दिर भवन में सम्पन्न हुआ।

इस आर्यसमाज में जनता के लिए एक निःशुल्क दैनिक वैदिक वाचनालय भी खोल रखा है। इस वाचनालय में धार्मिक साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक और दैनिक हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी भाषा के समाचार पत्र भी आते हैं।

—डा० भारतभूषण मन्त्री

विश्व हिन्दू महासम्मेलन (काठमाण्डू)

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

२४ मार्च से २८ मार्च तक काठमांडू (नेपाल) में विश्व हिन्दू महासम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में २० देशों से हिन्दू प्रतिनिधि बनकर आये। इसमें हिन्दुओं के काफी जाने-माने धर्माचार्य और साधु आये। विश्व हिन्दू सघ नेपाल के लोग तो सारा प्रबन्ध ही कर रहे थे। विश्व हिन्दू परिषद्, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद् के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

आर्यसमाज के प्रतिनिधि के रूप में सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा दो उपप्रधान भी निमन्त्रित किये गये। अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ के अध्यक्ष के नाते मैं भी वहां पर गया। वेदपीठ के संरक्षक श्री मोहनलाल मोहित (मोरिशस) का यह आग्रह था। बौद्ध, जैन तथा सिखों के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए। महासम्मेलन का यह मन्तव्य था कि बौद्ध, जैन तथा सिख सब हिन्दू हैं। वे विशाल हिन्दूसमाज और हिन्दूधर्म के अंग हैं। चारों की अलग-अलग प्रार्थनायें होती थी, उनको उन्होंने वैदिक बौद्ध, जैन तथा सिख के नाम से याद किया। हिन्दूधर्म की चार शाखायें मानी गईं। भारत के संविधान के अनुच्छेद २५ के अनुसार बौद्ध, जैन और सिख हिन्दू समाज का अंग माने गये हैं। इस अनुच्छेद को लेकर अकालियों ने १९८४ में बहुत हल्ला किया। अपने आपको हिन्दुओं से अलग बताया, 'पर्सनल ला' भी अलग मानने का आग्रह किया और अनुच्छेद २५ को जलाया, जेल भी गये। थोड़े दिन के पश्चात् किन्हीं कारणों से उन्होंने अपनी मांग एक प्रकार से छोड़ दी। मैं उसके कारणों की व्याख्या नहीं करूंगा, परन्तु अकाली नेताओं ने इस मांग को छोड़ने में ही अपना हित समझा। अलग कौम की बात आज भी आतंकवादी ही नहीं, उदारवादी अकाली भी करते रहते हैं जैन सम्प्रदाय के भाइयों में भी अलगपन की बात उठती रही है और बौद्ध भी कभी-कभी अलगपन की बात करते हैं।

महासम्मेलन का यह प्रयास है कि अलगपन की बात समाप्त हो और तीनों सम्प्रदाय अपने आपको हिन्दुओं का ही अंग मानकर सद्भावना के साथ मिलकर काम करें, अत्यन्त सराहनीय है। चाहे बौद्ध तथा सिख सम्प्रदाय के छोटे और स्थानीय नेता ही इस महासम्मेलन में शामिल हुए, परन्तु एकता की ओर यह एक ठोस कदम है।

वैदिक और हिन्दू नामों का जिन अर्थों में उपयोग किया गया, उसमें आवश्यक परिवर्तन और संशोधन करना बहुत जरूरी है, क्योंकि वे अर्थ तथ्यों और मान्यताओं के प्रतिकूल हैं। वेदों को अपौरुषेय और सभी सत्य विद्याओं का पुस्तक माननेवाले लोग उसे एक सम्प्रदाय का ग्रन्थ नहीं मान सकते और न ही उस पर आधारित मानव संस्कृति और मानवधर्म को एक सम्प्रदाय मान सकते हैं। महासम्मेलन के आयोजकों के सामने एक समस्या थी और वह यह कि वे बौद्ध, जैन तथा सिख सम्प्रदायों की तरह बाकी हिन्दुओं को किस नाम से पुकारें। यदि हिन्दू के नाम से पुकारते हैं तो चारों को मिलाकर क्या नाम दें। यदि यह कहें कि चारों को मिलाकर हिन्दूधर्म और हिन्दूसमाज बनता है तो उसकी एक शाखा को कोई अलग नाम देना पड़ेगा। उन्होंने अधिक बार इसे वैदिकधर्म के नाम से पुकारा तो कभी सनातन धर्म के नाम से। यदि वैदिकधर्म को हिन्दूधर्म की एक शाखा बनायें तो वह हमारी मान्यताओं और तथ्यों के विरुद्ध पड़ता है। क्योंकि वेद में किसी पंथ या सम्प्रदाय के लिए कोई स्थान नहीं है, वह तो मानवमात्र के कल्याण के लिए दिया हुआ ईश्वरीय ज्ञान है। उसमें कहीं संकीर्णता तो है ही नहीं। आर्यसमाजियों ने न तो बोलने की उत्सुकता दिखाई और न ही उनसे आग्रह किया गया।

नेपाल क्योंकि हमारा मित्र देश है और सांस्कृतिक रूप से भारत से जुड़ा हुआ है। वहां होनेवाले समारोह में विवादास्पद मुद्दे उठाना न तो वांछनीय हो था और न ही दोनों देशों के हित में। इसलिए उस वातावरण में ठीक बात कहने से भी विवाद उत्पन्न होने की सम्भावना हो, वहां चुप रहना ही अच्छा था।

इस आयोजन को करनेवाले महानुभावों पर महाराजा साहब नेपाल का वरद हस्त था। वास्तव में महासम्मेलन का अधिकतर भार नेपाल सरकार ने ही उठाया था। सम्मेलन का उद्घाटन महाराजा साहब ने किया और समापन महारानी साहिबा ने। बीच में रामनवमी भी मना ली गई और युवराज का उपनयन संस्कार भी होगया। उद्घाटन समारोह में अपने-अपने देशों के झण्डे लेकर महिलाओं ने मार्च किया और सब सम्प्रदायों तथा छात्र-छात्राओं की झांकियां भी निकलीं।

ऐसे सम्मेलनों में जैसे होता है, वक्ताओं ने एक से एक बढ़कर महाराजा साहब को उपाधियों से अलंकृत करना आरम्भ कर दिया। किसी ने ७० करोड हिन्दुओं का सम्राट्, किसी ने एकमात्र हिन्दू राष्ट्र का नरेश और ७० करोड़ हिन्दुओं का हृदय सम्राट् और किसी ने धर्मसम्राट् की उपाधि भी दे डाली। शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी ने धर्मसम्राट् की उपाधि दिये जाने पर टिप्पणी करते हुए कहा कि वे धर्मरक्षक या धर्म-सेवक तो हो सकते हैं, धर्मसम्राट् नहीं हो सकते। हिन्दुओं की एकता के लिए यह महासम्मेलन क्योंकि महाराजा साहब की छत्रछाया में हुआ, इसलिए भावनाओं में बहकर लोगों ने उपाधियों की झड़ी लगादी।

महासम्मेलन स्थल से बाहर आने पर एक दिन एक नवयुवक ने हमें देखकर अपनी गाड़ी रोक ली और हमको हिमालय होटल में जहां हम ठहरे थे छोड आया। उस नवयुवक ने कहा कि उसने केवल शिष्टाचार के नाते यह नहीं किया, उसके मनमें कुछ प्रश्न उठे। उनके समाधान के लिए ही गाड़ी रोकी और रास्ते में बात करने की सोची। उस नवयुवक ने प्रश्न किया कि आप भारत के प्रतिनिधि अपने देश में तो प्रजातन्त्र की बात करते हैं और बात-बात पर प्रजातन्त्र की दुहाई देकर थोड़े-से प्रतिबन्ध को भी प्रजातन्त्र के खून के नाम से याद करते हो और यहां आकर आप लोगों ने नेपाल के महाराजा को हमारा सम्राट् ही नहीं, बाईस देशों में बसे हुए ७० करोड़ हिन्दुओं का सम्राट् कहा है। मैंने उनसे कहा कि कुछ लोग भावविभोर होकर ऐसा कह रहे हैं और यहां आकर हम लोग प्रजातन्त्र के खून की बात इसलिए भी नहीं कह सकते, क्योंकि हम दोनों पड़ोसी देशों के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को सुदृढ़ करना चाहेंगे, बिगाड़ना नहीं। उसने कहा कि आप यहां आलोचना न करें और उनके लिए आदर के शब्द जरूर कहें, परन्तु सारे हिन्दुओं का सम्राट् कहकर आप यह स्पष्ट कर देते हैं कि आपके देश के इन प्रतिनिधियों का प्रजातन्त्र में विश्वास नहीं है। वे तो अपने विरोधी पर वार करने के लिए इसको हथियार के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। मैं उसकी बात से सहमत था। उसने यह भी कहा कि एक परिवार के शासन पर जनता द्वारा चुने जाने के बाद भी आपके देश के लोग उंगली ही नहीं उठाते, कड़ी आलोचना करते हैं। फिर यहां आकर एक ही परिवार के तानाशाही शासन को, जिसको जनता ने कभी नहीं चुना, रामराज्य की संज्ञा क्यों दे डालते हैं। क्या यहां की जनता हिन्दू नहीं, केवल महाराजा ही हिन्दू है क्या ? उस युवक ने ये सब इसलिए कहा कि शंकराचार्य ने अपने भाषण में यह कह दिया था कि नेपाल की जनता में कोई दुःखी नहीं है, यहां सुख का साम्राज्य है, ऐसा प्रजाप्रेमी राजा संसार को हिन्दूमात्र का सम्राट् है। वह युवक भारत में शिक्षा प्राप्त करता रहा है और आधा घण्टा वह जो हम से बातें करता रहा, उसकी बातें तर्क-संगत थीं।

भारतवासियों की एक बहुत बुरी आदत बन चुकी है कि वे जन सभाओं में या उत्सवों में जब किसी अग्रणी व्यक्ति का स्वागत करने लगते हैं तो झूठी प्रशंसा में जमीन आसमान एक कर देते हैं और हर प्रबुद्ध व्यक्ति को कोफ्त होने लगती है और यदि वहां परस्पर प्रशंसा का दौर चल पड़े तो सारा खेल कृत्रिम और बेमायने लगने लगता है। प्रबुद्ध व्यक्ति यह सोचने लगता है कि लाखों लोगों को उन्होंने इसी काम के लिए एकत्रित किया था क्या ?

नेपाल नरेश ने इस आयोजन का सारा भार सम्भाला तो उनके मन में हिन्दुओं के सभी सम्प्रदायों को मिलाकर हिन्दू एकता की भावना

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सतीप्रथा पर—

शंकराचार्य की चुनौती स्वीकार

पुरी के पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य श्री निरञ्जनदेव तीर्थ के कई वक्तव्य दैनिक समाचारपत्रों में प्रकाशित हो रहे हैं कि प्रचलित सतीप्रथा वेद-शास्त्रों से सम्मत है। उन्होंने आर्यसमाज की वैदिक मान्यता का खण्डन करते हुए आर्यसमाज को शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दी है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा श्री निरञ्जनदेव जी तीर्थ की शास्त्रार्थ की चुनौती को सहर्ष स्वीकार करती है और जब वे चाहें, तभी हम शास्त्रार्थ के लिए उद्यत हैं। शास्त्रार्थ उनकी इच्छानुसार वेदों के आधार पर संस्कृत भाषा में ही होगा। उन्हें दयानन्दमठ रोहतक में सादर निमन्त्रित करते हैं।

म० भरतसिंह उपप्रधान	वेदव्रत शास्त्री मन्त्री
रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता	सुदर्शनदेव आचार्य उपमन्त्री

आर्यसमाज नई मण्डी मुजफ्फनगर का प्रस्ताव

अत्यन्त खेद के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि रामकथा वाचक मुरारी बापू ने शुक्रताल (मुजफ्फनगर) में दिनांक १०-३-८८ के प्रवचन में युग प्रवर्तक राष्ट्र-निर्माता, समस्त हिन्दू जाति के सुधारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती पर से छिपकर मूर्ति-पूजा करने का मिथ्या तथा अभद्र आरोप लगाया है। हम मुरारी बापू से आग्रह करते हैं कि वे अपने झूठे वक्तव्य को या तो सप्रमाण सिद्ध करें, नहीं तो अपने शब्दों को सखेद क्षमा-याचना सहित वापिस लेवें।

सम्पूर्ण आर्यजगत् उनके इस अल्प-बुद्धि से मिथ्या प्रवचन की कड़े शब्दों में निन्दा करता है।

—ओ० पी० मित्तल

आचार्य सुदर्शनदेव जी को मातृ-शोक

आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री पं० सुदर्शनदेव आचार्य की माता श्रीमती रजकादेवी का स्वर्गवास ८० वर्ष की आयु में दिनांक २४-३-८८ को होगया। सभा के तत्त्वावधान में दिनांक २५-३-८८ को उनका अन्त्येष्टि संस्कार वदिकरीति से किया गया। दिवंगत आत्मा को परमात्मा सद्गति प्रदान करे।

—वेदव्रत शास्त्री

वैद्य श्री प्रह्लाददत्त जी को श्रद्धांजलि

आर्यसमाज के कर्मठ नेता, महान् स्वतन्त्रता सेनानी, दानवीर वैद्य प्रह्लाददत्त जी के निधन से आर्यजगत् में एक अपूरणीय क्षति हुई है। वे धार्मिक संस्थाओं में सदा दान करते रहते थे। कुछ मास पूर्व कन्या गुरुकुल नरेला के लिए उन्होने दस हजार रुपये फिक्स डिपोजिट में जमा करवाये, जिसका ब्याज दान के रूप में कन्या गुरुकुल को सदा मिलता रहेगा।

दिवगत नेता के लिए आर्यसमाज कन्या गुरुकुल नरेला, दिल्ली में आचार्या सुशीला जी की अध्यक्षता में ३० मार्च बुधवार सायंकाल ४ बजे शोक सभा में श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

शोक सन्तप्त परिवार को ईश्वर दुःख सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करे।

—वैद्य कर्मवीर मन्त्री

(पृष्ठ ३ का शेष)

जरूर रही होगी, परन्तु उसके साथ-साथ यह दिखाने की भी कि उनका आदेश नेपाल देश से बाहर भी चलता है और इसलिए भी कि नेपाल शांति क्षेत्र घोषित कराने के लिए मदान तैयार किया जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र से जुड़े सभी राष्ट्रों को गम्भीरता से सोचना चाहिये कि नेपाल को शांति क्षेत्र घोषित करने में क्या हानि-लाभ हो सकते हैं। जहां सभी राष्ट्रों को अपना निर्णय करने में स्वतन्त्रता है, वहां प्रत्येक राष्ट्र को अपना हित साधने में दूसरे राष्ट्रों का सहयोग और सद्भावना ग्रहण करने का भी पूरा अधिकार है। हिन्दू एकता के उद्देश्य को आगे बढ़ाते हुए यदि नेपाल राष्ट्र का हित भी सधे तो इसमें कोई बुराई नहीं है। मैंने उस नवयुवक को यह भी कहा और उसने भी मेरी बात को सुना और बहुत हद तक माना भी। ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में चिन्तन और कथन सन्तुलित रहें, तभी अच्छा रहता है, उसके ठोस परिणाम भी निकलते हैं। चिन्तन और कथन भावना रहित हों, यह हम नहीं कहना चाहते। भावना सहित होने से वे अधिक प्रभावशाली होते हैं, परन्तु केवल भावना ही भावना हो और ठोस भाव न हो तो सारा प्रयास व्यर्थ हो जाता है। मेरा भाव यही है कि अच्छे और ठोस परिणामों के लिए सन्तुलित ढंग से सब कार्य करना लाभदायक होता है।

मैंने जो ऊपर लिखा उसका यह अर्थ कदापि नहीं निकालना चाहिए कि सम्मेलन अपने उद्देश्य में सफल नहीं रहा। मैं यह मानता हूं कि चाहे इस महासम्मेलन में हिन्दुओं के सभी सम्प्रदायों के शीर्षस्थ नेता न आये हों, परन्तु हिन्दू एकता की मधुर गूंज २० से अधिक देशों के प्रतिनिधियों के साथ थोड़ी-थोड़ी हो सही सब महाद्वीपों के देशों और द्वीपों में गई है। इस दिशा में यह एक ठोस कदम था और इस उद्देश्य को प्राप्ति के लिए सब कमियों को दूर करके और आगे बढ़ना चाहिए और पूरी सद्भावना के साथ इस दिशा में एक के बाद एक ठोस कदम उठने चाहियें। इस सम्मेलन की एक उपलब्धि यह भी रही कि जो शंकराचार्य पिछले दिनों में छुआछूत और जन्म के आधार पर जातपात को हिन्दू धर्म का अभिन्न अंग मानते थे और उसे वेदानुकूल भी कहते थे, उन्होंने खुलकर छुआछूत और जातपात को हिन्दूधर्म से निकालने की अपील की। कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य हरिजनों की बस्ती में जाकर मिले, आशीर्वाद दिया और नाथ सम्प्रदाय के महन्त तो हरिजनों से गले लगाकर मिले। स्वामी दयानन्द का नाम तो किसी ने नहीं लिया, परन्तु दयानन्द का जादू सिर चढ़कर बोल रहा था। हिन्दू एकता और मानव एकता तो दयानन्द के मन्तव्यों से ही सम्भव है। उनका उल्लेख न करना कृतघ्नता तो है ही। यह दकियानूसी सामन्तों महन्तों का षड्यन्त्र भी है। यह मैं इसलिए कहता हूं, क्योंकि महर्षि दयानन्द तो सामन्तों महन्तों के पाखण्ड और लूट के घोर विरोधी थे।

मेरी तथाकथित धर्माचार्यों तथा शंकराचार्यों से यह करबद्ध प्रार्थना है कि वे हर गलत बात और घृणित प्रथा को बिना वेद के पढ़े और समझे वेदानुकूल न कहा करें। उन धर्माचार्यों के गलत फतवों के कारण ही भारत को दास बनानेवाले विदेशी लोगों को वेदों के लिए अपमानजनक बातें कहने का अवसर मिला है। निष्पक्ष तथा प्रखरबुद्धि सभी विदेशी विद्वानों को भी वेद के ज्ञान और मानव कल्याण की भावना से ओतप्रोत मान्यताओं और जीवन-दर्शन के सामने नतमस्तक होना पड़ा। दो शंकराचार्यों ने तो काठमाण्डू में अपनी गलती का सुधार कर लिया, उनको शत-शत प्रणाम। परन्तु पुरी के शंकराचार्य तो अभी भी 'सतीप्रथा' को वेदानुकूल बताकर हठ लगाये बैठे हैं। शंकराचार्य की गद्दी की परम्परा ऊंची रही है और गम्भीर विद्वान् और प्रभुभक्त संवेदनशील व्यक्ति इस गद्दी को सुसज्जित करते रहे हैं। अविद्वान् हठी और विषमता से दूषित बुद्धि के लोगों की गद्दी यह नहीं है। हम यह आशा करेंगे कि पुरी के शंकराचार्य भी स्वामी स्वरूपानन्द जी तथा स्वामी जयेन्द्र सरस्वती की भांति अपनी गलती का सुधार करेंगे।

दिल्ली में आर्यसमाज स्थापना समारोह

नई दिल्ली : आर्यसमाज कोई मत, मजहब या सम्प्रदाय नहीं है, बल्कि यह एक सत्य सनातन वैदिकधर्म है, जिसने न केवल देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। अपितु राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को सुदृढ़ करने के लिए भी सदैव आगे बढ़कर आह्वान किया है। यह उद्गार स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा मावलंकर हाल, नई दिल्ली में १९ मार्च को आयोजित ११३वें आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर व्यक्त किये। स्वामी आनन्दबोध ने पंजाब व देश की स्थिति का जिक्र करते हुए आर्यसमाज को चौकन्ना रहने की सलाह दी और वेदप्रचार पर बल दिया।

इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि दिल्ली के महापौर श्री महेन्द्रसिंह साथी ने कहा कि आज हम आर्यसमाज के झण्डे के नीचे आकर ही विदेशी शक्तियों के इशारे पर देश को तोड़नेवाली ताकतों से लोहा ले सकते हैं, क्योंकि यह केवल आर्यसमाज ही है जो देश की एकता व अखण्डता को बचा सकता है। श्री साथी ने आगे कहा कि आर्यसमाज ने स्वाधीनता आंदोलन को भी नई दिशा प्रदान की थी।

सांसद श्री रामचन्द्र विकल ने कहा कि विश्व इतिहास में महर्षि दयानन्द सरस्वती एक ऐसे महामानव हुए हैं जिन्होंने मानवमात्र के कल्याण एवं मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए आज से ११२ वर्ष पहले चैत्र शुक्ला प्रतिपदा सन् १८७५ को आर्यसमाज की स्थापना की थी। उन्होंने आगे कहा कि आज सारी दुनिया बारूद के ढेर पर खड़ी है और वैदिक मार्ग पर चलकर सच्ची शांति स्थापित की जा सकती है।

पूर्व केन्द्रीय मन्त्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज खालिस्तान की मांग के पीछे विदेशी शक्तियां काम कर रही हैं और आर्यजनों को सजग रहकर कार्य करना है। उन्होंने आगे कहा कि स्वामी दयानन्द ने पूरे विश्व के मानवसमाज की समस्याओं के हल के लिए आर्यसमाज बनाया था और वह सभी मनुष्यों को आर्यसमाज के माध्यम से एक मंच पर लाना चाहते थे। संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य लक्ष्य है। यह उन्होंने आर्यसमाज के नियमों में प्रतिपादित किया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि—कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का स्वप्न पूरा करने के लिए हमें दयानन्द के मार्ग पर ही चलना होगा।

दैनिक मिलाप संदेश के सम्पादक एवं महात्मा आनन्द स्वामी के पौत्र श्री नवीन सूरी ने कहा कि आर्य अर्थात् श्रेष्ठ होना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और भारत में रहनेवाला प्रत्येक नागरिक आर्य है। उन्होंने आगे कहा कि वेद हमें सच्ची मानवता की शिक्षा देते हैं और आज मानवसमाज को पुनः वेदों की शरण में जाकर ही लोक व परलोक का सुधार करना होगा।

स्वामी अग्निवेश ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्यसमाज ने कुरीतियों के उन्मूलन के लिए आगे बढ़कर काम किया है और आज सतीप्रथा जैसी कुरीति को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए काम करना है।

समारोह की अध्यक्षता पूर्व सांसद एवं गुरुकुल घरौंडा के आचार्य स्वामी रामेश्वरानन्द ने की। उन्होंने आर्यसमाज के गौरवशाली इतिहास एवं गतिविधियों पर प्रकाश डाला। डा० महावीर मीमांसक ने कहा कि आत्मा, ईश्वर, धर्म, जीवन, मृत्यु आदि गूढ़ तत्त्वों को स्वामी दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थप्रकाश के माध्यम से ही सरलता से समझा जा सकता है और आर्यसमाज को चाहिए कि भारत के गांवों में अपना प्रचार-कार्य तेजी से करे। इस अवसर पर श्री रामनाथ सहगल, डा० प्रशांत वेदालंकार, पूर्व महानगर पार्षद, श्रीमती शकुन्तला आर्य आदि ने भी आर्यसमाज के उज्ज्वल अतीत एवं भावी योजना पर प्रकाश डाला। सभा महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने कुशलता से मंच संचालन किया।

—विमलकांत शर्मा

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

दो सौ रुपये मासिक की छात्र-वृत्तियां

एकांत, शांत गंगातट पर स्थित स्वामी केवलानन्द निगमाश्रम गंज, दारानगर, जिला बिजनौर में स्वाध्याय प्रेमी, कर्मठ आर्यसमाजी कार्यकर्त्ताओं के लिए दो वर्ष का तथा वैदिक विद्वान् बनकर धर्मप्रचार में जीवन लगाने के इच्छुक आर्ययुवकों के लिए पांच वर्ष का शिक्षण पाठ्यक्रम प्रारम्भ हो रहा है।

दो वर्ष के पाठ्यक्रम में वैदिक कर्मकांड, अष्टांग योग साधना, आयुर्वेद तथा वैदिक सिद्धांतों का ज्ञान प्रामाणिक विद्वानों के सानिध्य में कराया जायेगा। इस प्रशिक्षण में गृहस्थ की जिम्मेदारी से निवृत्त वानप्रस्थ आर्य उपदेशक बनने के इच्छुक व्यक्तियों को ही अवसर प्रदान किया जायेगा।

पांच वर्ष के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में दसवी कक्षा उत्तीण अथवा तत्समकक्ष योग्यतावाले आर्ययुवकों को अष्टाध्यायी महाभाष्य, दर्शन, उपनिषद् तथा वैदिक साहित्य का अध्ययन, अन्य सम्प्रदायो का तुलनात्मक अध्ययन, संस्कृत, अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं का ज्ञान कराके प्रवचन एवं शास्त्रार्थ की योग्यता पैदा करके देश-विदेश में वैदिकधर्म के प्रचारार्थ भेजा जायेगा।

इस वर्ष चालीस लोगों को दो सौ रुपये मासिक छात्र-वृत्तिया दी जायेंगी। अपना खर्च स्वयं वहन करके अन्य व्यक्ति भी प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे।

किसी आर्य संन्यासी विद्वान्, आर्य भजनोपदेशक अथवा आर्यसमाज के अधिकारी की संस्तुति के साथ १५ अप्रैल, ८८ तक अधिष्ठाता स्वामी केवलानन्द निगमाश्रम गंज, दारानगर, जिला बिजनौर, उ०प्र० के पते पर आवेदन करें।

निवेदक—स्वामी इन्द्रवेश

आर्यसमाज आहूलाना जि० सोनीपत का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज आहूलाना तहसील गोहाना जि० सोनीपत का वार्षिक उत्सव २१ से २३ मार्च तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रातः यज्ञ, वेद प्रवचन तथा दोपहर बाद एवं रात्रि को ब्र० अखिलेश्वर जी के भाषण और पं० जयपाल आर्य, पं० शोभाराम प्रेमी के मनोहर भजन हुए। शराब तथा दहेजादि सामाजिक बुराइयों का खण्डन किया। यज्ञ पर अनेक युवकों ने यज्ञोपवीत धारण करके बुराइयों से दूर रहने की प्रतिज्ञा की। इस उत्सव को सफल करने के लिए आर्यसमाज के प्रधान श्री दीवानसिंह, श्री सत्यदेव मन्त्री तथा श्री जगदीशचन्द्र ने अपने साथियों के सहयोग से दिन-रात परिश्रम किया। सभा को वेदप्रचारादि के लिए ३६०) प्रदान किये।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४) रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK

दूरभाष संख्या १६६,८०,१३,०८६



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

२५ चैत्र २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्क २० १४ अप्रैल, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

आर्यसमाज का भावी कार्यक्रम

आर्यसमाज के भावी कार्यक्रम विषयक, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गठित उपसमिति की कई बैठकों के पश्चात् समिति के संयोजक आचार्य दत्तात्रेय आर्य ने जो रिपोर्ट सार्वदेशिक सभा को प्रस्तुत की थी, उस पर १९ सितम्बर, १९८७ को सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्यों, प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान और मन्त्रियों तथा समिति के संयोजक व सदस्यों एवं अन्य विद्वानों के सम्मेलन में विचारार्थ रखा गया और सम्मेलन द्वारा स्वीकृत निर्णयों पर सार्वदेशिक सभा को २० सितम्बर, ८७ की बैठक में विचार करके भावी कार्यक्रम समिति के केवल चार बिन्दुओं पर अन्तरंग सभा ने अपना निर्णय निम्न प्रकार दिया—

बिन्दु (क)—आर्यसमाज के किसी भी सदस्य व अधिकारी द्वारा जाति सूचक शब्दों का अपने नाम के आगे प्रयोग न करने के प्रस्ताव पर निर्णय हुआ कि सार्वदेशिक सभा पहले से ही इस विषय में उचित प्रेरणा करती रही है।

बिन्दु (ख)—आर्यसमाज में सदस्यों की दो श्रेणियां होती हैं। सभासद् तथा आर्य सभासद्। साधारण सभासदों को उपरोक्त सिद्धांत सम्बन्धी नियमों के अन्तर्गत प्रवेश दिया जाये। आर्य सभासद् बन जाने के उपरांत वे समाज द्वारा संचालित कार्यक्रमों में से किसी एक या अधिक में नियमित रूप से कार्य करते रहने पर सक्रिय सदस्य समझे जायेंगे।

इस बिन्दु पर गम्भीरता से विचार-विमर्श के उपरांत निश्चय हुआ कि आर्यसमाज के नियम सशक्त और सार्वभौम हैं। शब्दों की व्याख्या का प्रश्न नहीं है, बल्कि उन्हें जीवन में धारण करने और आचरण करने की बात आवश्यक है। इसलिए आर्यसमाज के नियमों में वर्णित सदाचार के नियमों का पूर्णतः पालन करनेवालों को ही दो वर्ष पश्चात् आर्य सभासद् घोषित किया जाये और उन [illegible] शपथ पत्र भरवाया जाये, जिसका प्रारूप निम्न प्रकार है—

प्रतिज्ञा-पत्र (आर्य सभासद्)

मैं ईश्वर के प्रतीक स्वरूप किसी मूर्तिपूजा या जड़ वस्तु अथवा व्यक्ति की पूजा नहीं करूंगा, ना ही मृतक श्राद्ध या स्थान विशेष को तीर्थ मानूंगा तथा किसी अवैदिक या पौराणिक विधि विधान को नहीं मानूंगा अर्थात् वेद विरुद्ध आचरण नहीं करूंगा। मैं जन्मगत जाति-पाति या छुआछूत को नहीं मानूंगा। मैं किसी भी सम्प्रदाय विशेष या जाति संगठन का सदस्य या अधिकारी नहीं बनूंगा तथा आर्यसमाज के नियमोपनियमों में वर्णित सदाचार के नियमों का पूर्णतः पालन करूंगा।

यदि मैं इसके विपरीत आचरण करूं तो मेरी आर्य सभासदी समाप्त करदी जावे।

ह० आर्य सभासद्

(नोट : प्रतिज्ञापत्र का यह प्रारूप आर्यसमाज के प्रवेश-पत्र (फार्म) के दूसरी ओर मुद्रित किया जावे अथवा अलग से प्रकाशित करा लिए जावें)।

बिन्दु (ग)—आर्यसमाज के पदाधिकारी सक्रिय सदस्यों में से ही निर्वाचित हो सकेंगे।

निश्चय हुआ कि सक्रिय सदस्यता का कोई औचित्य नहीं है, आर्य सभासद् बनते समय प्रतिज्ञा-पत्र द्वारा इसकी पूर्ति हो जाती है।

बिन्दु (घ)—किसी राजनैतिक दल का पदाधिकारी तथा उसका सांसद या विधानसभा में निर्वाचित व्यक्ति आर्यसमाज, आर्य प्रतिनिधि सभा या सार्वदेशिक सभा का पदाधिकारी नहीं हो सकेगा।

इस विषय पर गम्भीरता से विचारोपरांत निर्णय हुआ—आर्यसमाज के किसी भी सदस्य को जो किसी राजनीतिक पार्टी का निर्वाचित प्रतिनिधि अथवा पदाधिकारी हो तो आर्यसमाज का पदाधिकारी बनने पर यदि वह राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्यसमाज अथवा सम्बन्धित संस्था को प्रभावित करना चाहता हो वा कर रहा हो तो ऐसे पदाधिकारी को पद से अन्तरंग सभा द्वारा पृथक् कर दिया जावे।

नोट : आर्यसमाज के भावी कार्यक्रम विषयक सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा २०-९-८७ द्वारा स्वीकृत तथा २४-१-८८ की अन्तरंग द्वारा पुष्ट उपरोक्त निर्णय तत्काल समूचे आर्यजगत् पर लागू समझे जायेंगे।

—आनन्दबोध सरस्वती प्रधान

आर्यसमाज के उत्सवों का कार्यक्रम

आर्यसमाज नई कालोनी गुड़गांव	२२ से २४ अप्रैल
„ पिंजोर जि० अम्बाला	२२ से २४ „
„ नरेला (दिल्ली)	२३-२४ „
„ लोहारु जि० भिवानी	३० से १ मई
„ खेल बाजार पानीपत जि० करनाल	२९-३० से १ „
„ नारंग जि० सिरमोर (हिमाचल)	२९-३० से १ „
„ कनीना जि० महेन्द्रगढ़	२१-२२ „
„ ठोल जि० कुरुक्षेत्र	२० से २२ „
„ बादस जि० गुड़गांव	२८ से ३० „
श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर यमुनानगर जि० अम्बाला	२८-२९ „

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

सन् १९१९ को खूनी बैशाखी जब अमृतसर के जलियांवाला बाग की पवित्र धरती शहीदों के खून से लाल होगई

—स्वतन्त्रता सेनानी डा० शांतिस्वरूप शर्मा पत्रकार, कुरुक्षेत्र

आज से ६९ वर्ष पहले १३ अप्रैल सन् १९१९ को बैशाखी के दिन सायं ४ बजे हजारों देशभगत इकट्ठे होकर अंग्रेजी शासकों के विश्वास-घात के विरोध में प्रोटेस्ट कर रहे थे, क्योंकि अंग्रेजों ने पहले महायुद्ध के समय भारत को स्वतन्त्र करने का वचन दिया था, जिसके बदले रोलट एक्ट का काला कानून देकर विश्वासघात किया था। इस जनसभा की अध्यक्षता डा० सईफुदीन किचलु जिन्हें पहले ही बन्दी बना लिया गया था की फोटो जो कुर्सी पर रखी गई थी, कर रहो थी।

पंजाब के राज्यपाल ने रोल्ट एक्ट को लागू करने के लिए अमृतसर शहर को फोजी कमांडर जनरल डायर को सौंप दिया था। सारे देश में अंग्रेजों के विरुद्ध प्रदर्शन हो रहे थे। इनको सख्ती से दबाने के लिए रोलट एक्ट का सहारा लिया गया था। जनरल डायर को जब जलियां वाले बाग में जनसभा का पता लगा तो वह क्रोध से लाल होगया और उसने उसके आदेश न माननेवालों को सबक सिखाने का निर्णय किया। जनरल डायर सेना की एक टुकड़ी जिसमें गोरे और भारतीय सैनिक भी थे, तोपों सहित जनसभा के स्थान पर पहुंचा और तोप जलियांवाला बाग के दरवाजे पर खड़ी करदी। जलियांवाला बाग तीन ओर से बड़ी बड़ी ईमारतों से घिरा हुआ था।

जनरल डायर ने जनसभा में सम्मिलित हुए लोगों को बिना वार्निंग दिये तोप के गोले छोड़ने आरम्भ कर दिये। आन की आन में हजारों लोग गोलियों का शिकार होगये और वहां स्थित कुआं भी भागते हुए सैंकड़ों लोगों की लाशों से अंट गया। उसके पास १५९९ गोले थे जो समाप्त होगये। इस जनसभा के स्थान के किनारे एक मकान के ऊपर बैठी एक महिला अपने बच्चे को लिये वक्ताओं के भाषण सुन रही थी। डायर की नजर उस बच्चे पर पड़ी और उस जालिम ने उस बच्चे पर भी गोली दाग दी और वह नन्हा शहीद अपने बलिदान के खून के धब्बे दीवारों पर छोड़ गया। कितनी ही बहनों के सुहाग लुट गये। कितने ही माताओं के बच्चे मारे गये। औरतों को बाजारों में घसीटा गया। सारे अमृतसर शहर में कर्फ्यू था इसलिए जनसभा में जख्मी एक-एक बूंद पानी को तड़प कर प्राण छोड़ गये। किसी को भी बाग में आने की आज्ञा नहीं दी गई।

डायर के सैनिकों ने शहर का पानी, बिजली सब बन्द कर दिया। विद्यार्थियों को अंग्रेजी झण्डे को झुक कर सलाम करने का दिन में तीन बार आदेश दिया गया। लोगों को पेट के बल रेंगने का भी आदेश दिया गया। प्रत्येक को कहना पड़ता था कि "मैंने अपराध किया है, जिससे मैं भविष्य में कोई अपराध नहीं करूंगा, मुझे क्षमा किया जाये।"

पहले महायुद्ध में अंग्रेज घबराया हुआ था, इसलिए उसने भारत-वासियों और महात्मा गांधी की सहायता लेने के लिए अगस्त सन् १९१७ में घोषणा करदी थी "कि अंग्रेजी सरकार भारत में स्वतन्त्र राज स्था-पित युद्ध जीतने के पश्चात् कर देगी। इस घोषणा का भारत में स्वागत किया गया और अंग्रेजों को सब प्रकार को युद्ध में सहायता दी गई।

नवम्बर सन् १९१८ में युद्ध समाप्त हुआ और अंग्रेज जीत गये। महात्मा गांधी और दूसरे नेताओं ने अंग्रेजों को उनकी घोषणा याद दिलाई, परन्तु अंग्रेजों ने कहा कि वह भारत को अभी स्वतन्त्रता के योग्य नहीं समझते हैं।

३० मार्च को महात्मा गांधी ने अंग्रेजों के विश्वासघात के विरुद्ध हड़ताल और प्रोटेस्ट जनसभा करने की अपील की। अंग्रेजों ने इसको दबाने के लिए रौलट एक्ट लगा दिया, जिसका अर्थ था कि सरकार किसी को भी चाहे बन्दी बनाकर नजरबन्द कर सकती है। पंजाब के राज्यपाल ने सारे पंजाब को सेना को सौंप दिया। कांग्रेस के दो बड़े नेता डा० सईफुदीन किचलु और डा० सत्यपाल दोनों को बन्दी बनाकर नजरबन्द कर दिया। सारे अमृतसर शहर में क्रोध की अग्नि प्रचण्ड हो गई। इस तानाशाही के विरुद्ध सारे देश में प्रदर्शन हुए। दोनों नेताओं के बन्दी बनाये जाने के विरुद्ध एक बड़ा जलूस निकालकर विरोध किया गया। गोली चलाई गई, जिससे एक देशभक्त मर गया। क्रोध में जलूस ने एक अंग्रेज को पकड़ कर मार दिया। अंग्रेजी सरकार ने अमृतसर को सेना को सौंप दिया, जिससे जनरल डायर ने जलियांवाला बाग में खून की होली खेली।

सारे देश में जलियांवाला बाग दिवस मनाया गया। अंग्रेजी सरकार ने लोगों की आंखों में धूल डालने के लिए इस हत्याकांड की जांच करने के लिए हण्टर कमेटी बनाई, जिसके सामने जनरल डायर ने बताया था कि उसके पास केवल उतने ही गोले थे, जिनका प्रयोग किया गया था। यदि और गोले होते तो मैं उन्हें भी चलाता।

जनरल डायर को रिटायर्ड करके लन्दन भेज दिया गया। एक भारतीय नवयुवक ऊधमसिंह, जिसने यह कांड देखा था, ने इस खून का बदला लेने की प्रतिज्ञा की। वह पूरे १९ वर्षों तक जनरल डायर की ताक में रहा। सन् १९४० में जब यह राक्षसवृत्ति जनरल लन्दन में एक सभा में भारत के विरुद्ध भाषण देकर बाहर आरहा था तो उस बहादुर सरदार ऊधमसिंह ने गोली मारकर जनरल डायर की हत्या करदी और रिवाल्वर एक ओर रखकर घोषणा करदी कि उसने जलियांवाला बाग के हत्याकांड का बदला ले लिया। सरदार ऊधमसिंह को मृत्यु दण्ड मिला। ऊधमसिंह ने फांसी पर लटकने से पहले कहा कि मैंने भारत के अपमान का बदला ले लिया है, जिसका मुझे गर्व है।

बुनियादी शिक्षा (नई तालीम) का मूल्यांकन
वर्धा में शिक्षा शास्त्रियों का सम्मेलन

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाण

१९३७ में महात्मा गांधी ने शिक्षा के सम्बन्ध में अपने मन्तव्यों तथा दर्शन को एक सम्मेलन में भारत के बच्चों के शिक्षण के लिए खुलकर रखा। वे दक्षिण अफ्रीका के अपने आश्रम में शिक्षा के सम्बन्ध में चिन्तन और प्रयोग करने लगे थे। जैसे पश्चिम के देशों में रूसो, पेस्टालोट्सी तथा ड्यूई आदि ने शिक्षा को नई दिशा दी और किताबी शिक्षा के साथ-साथ हाथ से काम करने और कुछ हुनर सीखने के लिए भी विद्यालयों में शिक्षा का अंग बनाया। गांधी जी भी समझते थे कि मैकाले द्वारा जो शिक्षा-नीति गुलाम भारत के लिए बनाई गई थी, वह निरर्थक ही नहीं, हानिकारक भी थी। जो कुछ विद्यार्थी किताबों में से कुछ घोटकर परीक्षा पास करते थे उसे और कुछ कहें, शिक्षा नहीं कह सकते थे। बच्चों का उस पढ़ाई को पढ़कर शहरी रहन-सहन को अपनाना और अपने ग्रामीण जीवन और माता-पिता से कट जाना न उनके लिये काम का था और न देश के किसी काम का। उससे थोड़े से पढ़े-लिखे और भारी संख्या में अनपढ़ लोगों के बीच में एक दीवार खड़ी हो जाती थी, क्योंकि तालीम अंग्रेजी के माध्यम से दी जाती थी। गांधी जी मानते थे कि बच्चों के मस्तिष्क में कुछ किताबी ज्ञान भर देना और कोई हुनर या काम करना न सिखाना उनके विकास में बाधक था। अंग्रेजी के द्वारा जितना ज्ञान अनेक विषयों का दस वर्ष में हो पाता है अपनी मातृ-भाषा के द्वारा पढ़ने से उतना ही नहीं, उससे कुछ अधिक ७ वर्ष में बच्चे को मिल सकेगा। इसलिए उन्होंने भारत के हर बच्चे को अपनी नई तालीम की योजना के आधीन ७ वर्ष तक शिक्षा देने की सिफारिश की। बाद में उसे १९४५ में ८ वर्ष तक बढ़ाया गया और हमारे संविधान में सब बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य तालीम ६ वर्ष की आयु से १४ वर्ष की आयु तक देने का प्रावधान किया। नई तालीम में सभी विषय किसी उत्पादक काम के माध्यम से पढ़ाने का विचार था, ताकि अपनी ८ वर्ष की तालीम के बाद बच्चा अपने काम धन्धों में लग सके। प्रशिक्षित होकर औजारों के इस्तेमाल को सीखकर अपने पैरों पर खड़ा हो सके।

१९३७ में जब ७ प्रदेशों में गांधी जी के अनुयाइयों की सरकारें बनी तो नई तालीम का उन प्रांतों में परीक्षण शुरु हुआ। दूसरा युद्ध आरम्भ होने पर जब इन सरकारों ने अंग्रेजों की सरकार से असहयोग किया और मन्त्रीमण्डल से त्याग-पत्र देकर बाहर आगये। नई तालीम को उन दिनों में झटका लगा। १९४६ में जब फिर सरकारें बनीं और १९४७ में देश स्वतन्त्र होगया तो यह प्रयोग सभी प्रांतों में आरम्भ होगया। नई तालीम के विद्यालय सभी प्रांतों में बने और सब प्रदेशों ने इस तालीम का विस्तार करने का संकल्प लिया। परन्तु साधारण पुराने ढर्रे के विद्यालयों को नाम बदलकर बुनियादी शिक्षा के स्कूल बना दिये, परन्तु उनके लिए न साधन दिये और न ही नई तालीम के प्रशिक्षित शिक्षक दिये, केवल बोर्ड बदल दिये। इस प्रकार बहुत से प्रदेशों में नाम के लिए बुनियादी तालीम रह गई, विद्यालय और शिक्षण उसी पुराने ढर्रे के बने रहे।

आज गांव के विद्यालयों की यह दशा है कि उनमें ४० प्रतिशत विद्यालयों के या तो भवन हैं ही नहीं और अगर हैं तो गन्दे। ४० प्रतिशत विद्यालयों में श्यामपट (ब्लैक बोर्ड) भी नहीं है। ६० प्रतिशत विद्यालयों में पीने के पानी का भी प्रबन्ध नहीं है और ३५ प्रतिशत स्कूलों में केवल एक शिक्षक है जो ५ कक्षाओं को पढ़ाता है। ग्रामीण स्कूलों पर जो व्यय होता है, उसका ९० प्रतिशत से लेकर ९८ प्रतिशत तक केवल शिक्षकों के वेतन पर व्यय होता है। दूसरे कामों के लिए पैसा बचता ही नहीं। वैसे तो देश में ग्रामों में पढ़नेवाले बच्चों की संख्या ८० प्रतिशत है, पर व्यय उन पर ४० प्रतिशत ही होता है। इस हिसाब से शहरी लोगों की शिक्षा पर प्रति विद्यार्थी गांव के प्रति विद्यार्थी पर होने वाले व्यय से ६ गुणा है। सरकारी तालीम के अतिरिक्त शहरों में धनी परिवारों के बच्चों के लिए अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूल भी बने हैं। अभी भी सरकारी कामकाज अंग्रेजी में अधिक चलता है, इसलिए बड़ी नौकरियों में डाक्टरी और इंजीनियरी आदि ऊंची शिक्षा में उन्हीं लोगों के बच्चे चुन लिए जाते हैं। लाख दो लाख परिवार ही ७० करोड़ निर्धन लोगों पर शासन करते हैं।

मैकाले की शिक्षा-पद्धति जो आज देश में चल रही है, वह बड़ी संख्या में केवल कलम घिसनेवाले अंग्रेजी और वह भी गलत-सलत लिखने-पढ़नेवाले परावलम्बी, साहसहीन, कमजोर और निराशा में डूबे हुए नवयुवक पैदा करती है। चाहे देश स्वतन्त्र हो गया, परन्तु यहां का शिक्षित नवयुवक दास मनोवृत्ति से छुटकारा नहीं पा सका। वह अपनी जीवनशैली से अनभिज्ञ तथा विमुख पश्चिम की जीवनशैली की नकल के प्रयास में त्रिशंकु की तरह लटक रहा है। स्वतन्त्रता के पश्चात् मानसिक दासता बढ़ी है। अंग्रेजी और अंग्रेजियत दिन प्रतिदिन भारतीयों के जीवन पर बुरी तरह छाये जारही है। अपनी जीवनशैली की अच्छाइयां सब छोड़ दीं। अन्धविश्वास, रूढ़ियों और अकर्मण्यता, विषमता हर प्रकार के शोषण को पकड़े रहे। दूसरों की भी अच्छाइयां तो ली नहीं, बुराइयां पकड़ ली। आज यह दुर्भाग्य है कि हमने अपनी बुराइयां छोड़ी नहीं और दूसरों की बुराइयों को भी ग्रहण कर लिया। अपने मूल्य तो बिगाड़े ही। जो लोग इस शिक्षा के कुप्रभावों से निरक्षर होने के कारण बचे रह गये थे, उनमें कुछ मानवीय मूल्य बच गये थे। अब इस नई शिक्षा के रंग में रंगे उनको भी बिगाड़ने में लगे हैं। गांधी जी के नामलेवाओं के हाथों ही लोगों का खान-पान, रहन-सहन, संयम, चरित्र सब नष्ट-भ्रष्ट किया जारहा है। सरकारें होड़ लगा-लगाकर शराब और नशीली चीजों को बढावा देकर राजस्व कमाने में सलग्न हैं। इनकी चर्चा अब अरण्यरोदन बनकर रह गया है।

क्या करें ?

सब कुछ बिगड़ने की राह पर जाता दीख रहा है, परन्तु मरुभूमि में कुछ हरियल टापू भी हैं, वही आशा के केन्द्र हैं। ३-४-५ अप्रैल को वर्धा में हुए बुनियादी शिक्षा के सम्मेलन में ऐसे निष्ठावान् कार्यकर्त्ता गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, केरल, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान आदि प्रदेशों से आये थे, जो अपनी-अपनी जगह नई तालीम का दीपक जलाकर शिक्षा जगत् को राष्ट्र और राष्ट्र के मानव को कल्याण की राह दिखा रहे हैं। बुनियादी विद्यालयों में शिक्षा पानेवाले विद्यार्थियों में राष्ट्र-प्रेम, सेवा-भाव पढ़ते पढ़ते कोई हुनर सीखकर उसके द्वारा उत्पादन के आधार पर स्वावलम्बन तथा परीक्षाओं में भी अंग्रेजी राज्य से चली आरही शिक्षा प्रणाली के विद्यालयों से अधिक अंक प्राप्त करते रहे हैं। परीक्षाफल जहां बुनियादी शिक्षा के विद्यालयों का ८० प्रतिशत, वहां दूसरे विद्यालयों का केवल ४५ प्रतिशत। विद्यार्थियों ने अपने हाथों से काम करके ५० रु० प्रतिमास और उससे अधिक कमाये। मध्यप्रदेश के बुनियादी तालीम के विद्यालयों का भी यही चित्र है। श्री रामलाल भाई पारिख, मनु भाई पचोली आदि ने गुजरात में चल रहे बुनियादी तालीम के कार्यक्रम की विस्तार से जानकारी दी। इसी प्रकार दूसरे प्रदेशों के कार्यकर्त्ताओं ने भी। बिहार के श्री द्वारिकासिंह ने भी ५० वर्ष के अपने अनुभव बताये। डा० श्री माली भी उपस्थित थे। उन्होंने ही नई तालीम को बहुत प्रोत्साहन दिया था और मार्गदर्शन भी। मानव संसाधन मन्त्रालय के सचिव श्री बोरडिया जी तथा महाराष्ट्र, गोवा सरकारों के शिक्षा अधिकारी भी सम्मिलित हुए थे। आचार्यकुल के अध्यक्ष बाल भाई तथा अन्य शिक्षाजगत् के जाने-माने विद्वान् भी पधारे थे। तीन समितियों ने बुनियादी शिक्षा के सभी स्तरों के कार्यक्रमों, जिस में ग्राम विद्यापीठ भी आ जाते हैं, उनके बारे में अपने ठोस सुझाव रखे

और उनके आधार पर प्रस्ताव पारित किये गये।

१९६८ में जो राष्ट्रीय शिक्षा-नीति बनाई गई और अब १९८६ में जो शिक्षा-नीति बनी, उन पर भी खुलकर चर्चा हुई। इन नीतियों में कार्यानुभव पर बल दिया। नई तालीम की शब्दावली और पद्धति को वैसे का वैसा स्वीकार नहीं किया गया है। समाज के लिए उपयोगी और उत्पादक कार्यों के द्वारा कार्यानुभव हो। शिक्षा आयोगों की भी ऐसी ही सिफारिशें थीं। नीतियों के मसौदे में तो बातें आगईं, परन्तु अमल में कुछ नहीं हुआ, इसलिए प्राथमिक शिक्षा की आज भी जो दुर्दशा है उस का चित्रण मैं ऊपर कर चुका हूं। अब मानव संसाधन विकास मन्त्रालय ने 'आप्रेशन ब्लैक बोर्ड' के नाम से ग्रामीण विद्यालयों में सुधार करने के लिए ब्लैक बोर्डों, पीने का पानी, विद्यालय भवनों के सुधार और निर्माण, एक शिक्षक के विद्यालयों में एक शिक्षक और देने आदि के फैसले किये हैं, परन्तु यह तो पत्ते और डालियों पर ध्यान देने जैसा ही है। जड़ को सींचे बिना इनमें जीवन और हरियाली नहीं आ सकेगी। १९६८ की शिक्षा-नीति में घर के पास के विद्यालयों की योजना थी। मान्यता यह थी कि किसी वर्ग के लिए भी विशेष विद्यालय नहीं होंगे। सब छात्र अपने घर के पासवाले स्कूल में जायेंगे, फिर चाहे वे अमीरों के, बड़े अधिकारियों आदि के बच्चे हों और चाहे गरीब व छोटे कर्मचारियों के बच्चे हों। ऐसा करने पर ही शिक्षा के अधिकारियों को इन विद्यालयों का स्तर ऊंचा रखने में दिलचस्पी होगी, क्योंकि उनके बच्चे भी इन्हीं विद्यालयों में पढ़ेंगे, परन्तु निहित स्वार्थों के दबाव से यह योजना कागजों में ही पड़ी-पड़ी सड़ गई।

१९६८ में शिक्षा-नीति में ऊंची से ऊंची शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाओं को ही होना था। आवश्यक साहित्य के निर्माण और प्रकाशन के लिए सभी भाषाओं को करोड़ों रुपये दिये गये थे, परन्तु उसमें भी बहुत थोड़ी प्रगति हुई। १९८६ की शिक्षा-नीति में नवोदय विद्यालय हर जिले में बनाने का फैसला है। कुछ बन भी चुके हैं, परन्तु उनमें ग्राम और शहरों से चुने हुए बच्चों को लेकर उनको पब्लिक स्कूलों के बराबर शिक्षा देने का निश्चय है। जिसमें अंग्रेजी का वर्चस्व किसी हालत में भी भारतीय भाषाओं से कम नहीं होगा, बल्कि अधिक ही होगा। ग्रामों के विद्यालयों में छोटी-मोटी सुविधायें तो देने के लिए कुछ व्यय किया जायेगा, परन्तु उनमें समाज उपयोगी, उत्पादक काम को शिक्षा के लिए साधन तथा शिक्षक देने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया जारहा। बुनियादी तालीम के लिए केन्द्रीय परिषद् या बोर्ड बनाने का तो निर्णय भारत सरकार ने किया है, परन्तु ग्रामीण और शहर की गरीब बस्तियों के स्कूलों को नई तालीम के ढांचे में ढालने का कोई निर्णय नहीं है। कुछ विद्यालयों में नई तालीम की पद्धति चलानेवाले चलाते रहें, परन्तु सरकार इस पद्धति को अच्छा मानते हुए भी उसे अपनाने के लिए तैयार नहीं है।

शिक्षा में क्रांति लाये बिना, शिक्षा राष्ट्र के विकास का कारगर साधन नहीं बन सकती है। स्वस्थ शरीर, विकसित मस्तिष्क, परिश्रम और हाथ से काम करने की गरिमा, संयम और सेवा की भावना से सिंचित संवेदनशील हृदय के द्वारा ही राष्ट्र और मानव का विकास सम्भव है। महात्मा गांधी की कल्पना यही थी कि नई तालीम के द्वारा वे ऐसे भारतीय नागरिकों का निर्माण कर सकेंगे। जो समाज और राष्ट्र के लिए समर्पित हों और जो उपयोगी हुनर सीखकर स्वावलम्बी होने के साथ-साथ मानवीय मूल्यों की रक्षा करते हुए अपने राष्ट्र का ही नहीं, सारे मानव समाज का विकास करने का बहुत बड़ा साधन बन सकेंगे।

अच्छे से अच्छे शब्दों में नीतियों के प्रारूप तैयार किये जा सकते हैं, परन्तु उन नीतियों पर अमल किये बिना तो वे दिवास्वप्न ही रह जायेंगे। उनसे न राष्ट्र का विकास सम्भव है और न मानवरूपी बहुमूल्य संसाधन का, जिसके बिना विकास सम्भव नहीं है। शिक्षा के सम्बन्ध में आचार्यों, शिक्षकों, शिक्षा-शास्त्रियों तथा प्रशासकों को इस प्रकार के सम्मेलन बहुत उपयोगी हैं, परन्तु इनके प्रस्ताव और सुझाव भी अलमारियों में ही रखे रह जायें तो उनकी उपयोगिता कम हो जाती है। राष्ट्र के सभी बुद्धिजीवी लोगों और छात्र-छात्राओं के अभिभावकों को शिक्षा में क्रांति लाने के लिए आंदोलन करना चाहिए, जिससे हमारे नवयुवक निराशा तथा बुराइयों का शिकार न बन सकें। वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें और राष्ट्र तथा मानव समाज के वास्तविक विकास के साधन बन सकें।

प्रचलित तालीमी ढांचे में किताबों के आधार पर परीक्षा होती है और नई तालीम में जीवन की परीक्षा होती है। जीवन की परीक्षा में कौन खरा उतरता है, इसी से अच्छी और बुरी शिक्षा-पद्धति की जांच होती है। यह स्पष्ट है कि प्रचलित पद्धति जीवन की परीक्षा में पूरी तरह असफल है। नई तालीम के द्वारा ही शिक्षित नवयुवक की अपने जीवन की समस्याओं, समाज की और राष्ट्र की समस्याओं से सफलता से लड़ा जा सकता है और उन पर विजय पाई जा सकती है। शिक्षा में यह क्रांति लाये बिना न व्यक्ति का विकास हो सकता है, न समाज से विषमता मिट सकती है और न ही राष्ट्र का विकास हो सकता है।

आर्यसमाज उमरा (हिसार) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक १९-२०-२१ मार्च, ८८ को सभा उपदेशक श्री बलवन्तसिंह आर्य क्रांतिकारी की लगन एवं प्रेरणा से आर्यसमाज उमरा का उत्सव विधिवत् सम्पन्न हुआ। जिसमें स्वामी रत्नदेव जी, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी जगतमुनि जी, प्रो० ओमकुमार आर्य, पं० भरतलाल शास्त्री, चौ० प्रतापसिंह आर्य तथा क्रांतिकारी आदि विद्वानों ने आर्यसमाज का इतिहास, स्वतन्त्रता में आर्यसमाज का योगदान, आर्यसमाज क्या है, आर्यसमाज क्या चाहता है, वर्तमान हालात, शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन, नारी-शिक्षा, गोरक्षा, राष्ट्र-रक्षा, सतीपूजा, सुखी गृहस्थ एवं चरित्र निर्माण तथा शराबबन्दी बारे विचार रखे। दिनांक २१-३-८८ को दोपहर बाद २ बजे अचानक सभामन्त्री श्री आचार्य वेदव्रत शास्त्री एवं सभा कार्यालयाध्यक्ष श्री केदारसिंह आर्य सभा वाहन लेकर उत्सव पर पधारे। क्रांतिकारी जी ने गांव उमरा एवं जिला हिसार की तरफ से मन्त्री जी का स्वागत किया। मन्त्री जी ने सत्संग से लाभ एवं शराबबन्दी पर विचार रखे। लोगों ने शराबबन्दी बारे पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। पं० ईश्वरसिंह ने मन्त्री जी को सस्ते रेट पर वैदिक साहित्य की पुस्तकें ग्राम उमरा में पहुँचाने हेतु आग्रह किया। मन्त्री जी ने सहर्ष स्वीकार किया।

इसके अतिरिक्त पं० ईश्वरसिंह तूफान, पं० चन्द्रभान एवं महाशय झाबेराम जी के शिक्षाप्रद भजन हुए। ज्ञातव्य है कि गांव उमरा में पुराना आर्यसमाज है। पहले यहां बहुत उत्सव हुआ करते थे। लेकिन अब काफी शिथिलता आई थी। यह उत्सव लगभग २५ वर्ष बाद हुआ है। गांव में शराबखोरी, सांग व पाखण्ड की इन वर्षों में बढ़ोतरी हुई है। इस उत्सव में आर्य विद्वानों के व्याख्यानों का अच्छा प्रभाव रहा। जिसका प्रत्यक्ष असर हवन पर देखा गया। अध्यापकों समेत कई नवयुवकों व स्कूली बच्चों ने जनेऊ धारण किये तथा शराब एवं धूम्रपान न पीने की प्रतिज्ञा की। प्रचार में काफी संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया। स्टेज का संचालन क्रांतिकारी जी ने बड़ी कुशलता से किया। ऋषि-लंगर का कार्यभार श्री प्रतापसिंह आर्य के परिवार ने सम्भाला। अन्य बुजुर्ग आर्यों का सहयोग सराहनीय रहा। उत्सव का कार्यक्रम प्रभावशाली एवं सराहनीय रहा।

—बलवन्तसिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज, उमरा

आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं महात्मा हंसराज जन्मोत्सव

आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक के तत्वाधान में आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं म० हंसराज जन्मोत्सव रविवार दिनांक १७ अप्रैल, १९८८ को सायं ३ बजे से ६-३० बजे तक आयनगर (वैदिक भक्ति साधन आश्रम के सामने मैदान में) सोत्साह मनाया जारहा है।

जिसमें निम्नलिखित विद्वान् वक्ता, कवि एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं—

पं० पृथ्वीराज शास्त्री (दिल्ली)
प्रो० रामविचार जी प्राध्यापक दयानन्द कालिज हिसार
पं० वेदव्यास जी भजनोपदेशक नई दिल्ली

निवेदक—देशराज आर्य मन्त्री

बोतल

बोतल कहती तू तले देख ऊंची दृष्टि नहीं कर सकता।
बो सदा विषैले बीज अरे, पर आकृष्टि नहीं कर सकता।।
तल का अभिप्राय रसातल है, गिर जाये धरातल से नीचे।
बोतल पी-पीकर गिरे तले न उठे जमाने ने खीचे।
ना काम हुए सत्कर्म, शर्म से दया धर्म ने दग् मीचे।
गए सूख बगीचे सीचे सिचाये, आगे से होगये पीछे।
फंस गया कालिमा कीच में जो उज्ज्वल सृष्टि नहीं कर सकता।१।

बोतल के पानी में घुल-घुलकर कितने कुल के कुल बह गये।
बोतल से कन्थ ऋषि मुनि सन्त सद्ग्रन्थ सभी बचन कह गये।
हर ठौर दौर अब शराब का बेनकाब से नेता रह गये।
परमार्थ की लि ओट, चोट बन गारत भारत को दह गये।
इस तरह का नेता, जनता में सुख की वृष्टि नहीं कर सकता।।२

बोतल देवी की चढ़े भेंट, फिर देवीलाल करे तो क्या?
हरयाणा मालामाल हुआ, उसको कंगाल करे तो क्या?
भरमार से ठेकेदारों को ही, सुरा निहाल करे तो क्या?
ये लोकतन्त्र में मन्त्र उन्नति का बेहाल करे तो क्या?
खादी में प्रतिवादी बनकर, नहीं इसकी पुष्टि कर सकता।।३

स्मेक अफीम हीरोइन सुलफा, सबसे खतरनाक बोतल।
सरकार का अत्याचार, कार में फिरती भरे पाक-बोतल।
ये शर्मनाक कैसा विधान, बलिदान भी किये खाक बोतल।
जनता के साथ मजाक कवि 'व्याकुल' क्या इतफाक बोतल।
विकराल व्याल विषधर कराल, नेता नहीं तुष्टि कर सकता।।४
बोतल कहती तू तले देख ऊंची दृष्टि नहीं कर सकता।।

रचयिता—प्रकाशवीर व्याकुल
२५/१ रेलवे कालोनी किशनगंज, दिल्ली-७

तृतीय दर्शन शिक्षण शिविर

दिनांक ३० मई से २५ जून तक

स्थान—संस्कृत सेवा संस्थान, हरिसिंह कालोनी, सुनारिया मोड़, रोहतक

स्वाध्यायप्रेमी आर्यजनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि दिनांक ३० मई से २५ जून, ८८ तक गतवर्ष की भांति वर्षिपक दर्शन शिक्षण शिविर का आयोजन किया जारहा है।

योग्यता—प्रवेशार्थी की योग्यता शास्त्री, आचार्य, एम० ए०, स्वाध्यायशील दर्शन शास्त्रों के समझने में सक्षम।

प्रवेश शुल्क—प्रवेश शुल्क २५) रु० तथा नियमित उपस्थिति अनिवार्य है।

दर्शन—अपना वैशेषिक दर्शन तथा लेखनी व संचिका साथ लावें।

भोजन—भोजन तथा आवास का प्रबन्ध प्रवेशार्थी को स्वयं करना होगा।

समय—प्रातः ६ बजे से ८ बजे तक।

परीक्षा—अन्तिम सप्ताह में लिखित परीक्षा होगी। उत्तीर्ण छात्रों को प्रमाण-पत्र दिये जायेंगे।

दिनांक २५ जून को प्रमाण-पत्र वितरण समारोह होगा।

नोट—प्रवेशार्थी विशेष परिचय के लिए उपरिलिखित पते पर सम्पर्क करें—

संयोजक	प्रबन्धक	प्रशिक्षक
सुखदेव शास्त्री वानप्रस्थी	योगानन्द सरस्वती	सुदर्शनदेव आचार्य

आर्यसमाज घरौंडा का उत्सव सम्पन्न

१-२-३ अप्रैल को आर्यसमाज घरौंडा का वार्षिक उत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पूज्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रो० ओमकुमार, हरिश्चन्द्र शास्त्री, पं० जयप्रकाश (पूर्व इमाम), म. खेमसिंह, पं० विद्याभूषण, म० खेमचन्द, पं० ज्योतिस्वरूप आदि उपदेशकों ने गोरक्षा, सतीप्रथा, शराब से हानि एवं देश में बढ़ते उग्रवाद की घोर भर्त्सना करते हुए चिन्ता व्यक्त की। २८ मार्च से ही नगर के पांच मोहल्लों में हरिश्चन्द्र शास्त्री, म० खेमसिंह, पं० ज्योतिस्वरूप ने वेद-प्रचार किया, जिसका व्यापक प्रभाव पड़ा। सभा को ११००) वेद-प्रचारार्थ दान दिया।

—सुभाषचन्द्र आर्य मन्त्री

महाशय मुकन्दलाल आर्य का देहांत

यमुनानगर: आर्यसमाज रेलवे मार्ग, यमुनानगर के प्रधान श्री महाशय मुकन्दलाल का देहान्त दिनांक २४ मार्च को होगया। वे यमुनानगर के कर्मठ व योग्य आर्यनेताओं में अग्रगण्य थे तथा अनेक वर्षों तक आर्यसमाज के प्रधान रहे। हिन्दी रक्षा आंदोलन व गोरक्षा आंदोलन में वे सक्रिय भाग लेते रहे और सत्याग्रहों में जेल यात्रायें भी कर चुके थे। उनकी शव-यात्रा में नगर के अनेक प्रतिष्ठित नागरिक व आर्य कार्यकर्त्ता सम्मिलित हुए।

महाशय जी की इच्छा व वैदिक मान्यतानुसार उनकी अस्थियों का विसर्जन यमुनानगर में ही किया गया। दिनांक २८-३-८८ को उनके निवास स्थान पर एक विशाल यज्ञ व श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ। जिसमें महाशय जी को आर्यसमाज के प्रति सेवाओं व वैदिकधर्म के प्रति उनकी निष्ठा दृढ़ता को स्मरण करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्रद्धांजलि अर्पित करनेवालों में ब्र० सत्यप्रिय, पं० भूदेव शास्त्री, पं० प्रकाशचन्द शास्त्री, जगन्नाथ कपूर, खरायतीलाल मल्होत्रा, कृष्णचन्द आर्य व इन्द्रजीतदेव के नाम उल्लेखनीय हैं। मृत्यु के समय महाशय मुकन्दलाल की आयु ९२ वर्ष की थी। महाशय जी के सुपुत्रों ने अनेक वैदिक संस्थाओं को दान भी दिया। महाशय जी के पश्चात् आर्यसमाज रेलवे मार्ग यमुनानगर ने श्री रवीन्द्र आर्य को अपना नया प्रधान निर्वाचित किया।

प्रेषक—इन्द्रजीत 'देव' कृते मन्त्री

आर्यसमाज मन्दिर भाऊ अकबरपुर (रोहतक) में महर्षि दयानन्द वैदिक पुस्तकालय की उपायुक्त द्वारा आधार-शीला

८ अप्रैल, १९८८ को प्रातः ११.१५ बजे आर्यसमाज मन्दिर भाऊ अकबरपुर (रोहतक) में महर्षि दयानन्द वैदिक पुस्तकालय की आधार-शीला चौ० बलबीरसिंह मलिक उपायुक्त रोहतक के करकमलों द्वारा रखी गई। ग्रामवासियों की ओर से उपायुक्त महोदय का हार्दिक स्वागत किया गया। इस शुभ अवसर पर उपायुक्त महोदय ने आर्यसमाज के कामों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उपायुक्त महोदय ने याद दिलाया कि जब वह अपने ग्राम में स्कूल में पढ़ते थे तो उस समय आर्यसमाज का बड़ा प्रचार था, मगर अब इस काम में कुछ कमजोरी आगई है। उन्हें यह देखकर खुशी हुई कि आर्यसमाज भाऊ अकबरपुर सराहनीय कार्य कर रहा है। उपायुक्त महोदय ने स्त्री-शिक्षा पर खास जोर दिया और आर्यसमाज के अधिकारियों का आह्वान किया कि केवल भवन और पुस्तकालय बनाकर न बैठ जावें, बल्कि महर्षि दयानन्द के कार्य को आगे बढ़ावें और अच्छी पुस्तकों द्वारा अच्छा प्रचार व प्रसार करें। ग्रामवासियों से दिल खोलकर दान देने की अपील की और अपनी ओर से इस काम में पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया। पं० जयपाल आर्य के प्रभावशाली भजन हुए। आर्यसमाज भाऊ अकबरपुर की ओर से सभा को १२५) दान दिया।

—जगदेवसिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज भाऊ अकबरपुर

आर्यसमाज बालसमन्द (हिसार) का ५८वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक २५-२६-२७ मार्च, ८८ को आर्यसमाज बालसमन्द का उत्सव बड़े हर्ष व उल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ। जिसमें स्वामी जगतमुनि, पं० सत्यप्रिय, प्रो० रामविचार, प्रो० ओमकुमार, वानप्रस्थ आनन्दमुनि, पं० प्रभुदयाल, श्रीमती दयावन्ती आर्या पूर्व विधायक, हंसराज (राज०), सीताराम आर्य, श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी आदि विद्वानों ने वेद क्या है, धर्म क्या है, मनुष्य के कर्त्तव्य, राष्ट्र-रक्षा, गोरक्षा, नारी-शिक्षा, महर्षि दयानन्द जी के जीवन व कार्य तथा शराबबन्दी बारे विस्तार से विचार रखे। प्रो० ओमकुमार जी का क्रांतिकारियों का इतिहास एवं भारत के गौरव पर व्याख्यान विशेष आकर्षक रहा। क्रांतिकारी जी ने भी शराबबन्दी बारे विचार रखे तथा सरकार की शराब बढ़ावा नीति की कटु आलोचना की। ज्ञातव्य है कि गांव में अंग्रेजी व देशी शराब के ठेके हैं। संगठित होकर उनके खिलाफ आंदोलन चलाने के लिये प्रेरणा दी, साथ में पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

आर्यसमाज बालसमन्द ने अपनी गत परम्परा के अनुसार समाज-सेवी, त्याग मूर्ति, स्वतन्त्रता सेनानी भगत रामेश्वरदास लाडवा निवासी का अभिनन्दन किया और 'पौराणिक पोलप्रकाश पुस्तक' भेंट की। आर्यसमाज के प्रतिष्ठित सदस्यों ने माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। इसके अतिरिक्त पं. आशाराम, पं० जयपालसिंह व महाशय भाबेराम जी के शराबबन्दी व समाज-सुधार के क्रांतिकारी भजन हुए। प्रातःकाल प्रतिदिन हवन किया गया। २०-२५ नवयुवकों ने जनेऊ धारण किये तथा शराब व धूम्रपान न करने का व्रत लिया। दीवानसिंह आर्य, रामजीलाल आर्य, भगवानाराम आर्य, श्रीकृष्ण आर्य, पं. सुनीलदत्त आर्य आदि का विशेष सहयोग रहा। महिला आर्यसमाज का भी सराहनीय सहयोग रहा। हजारों नर-नारियों ने उत्सव में बड़ी श्रद्धा से भाग लिया। इस बार लोगों ने विद्वानों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम कुल मिलाकर प्रेरणादायक रहा।

—माईलाल आर्य
मन्त्री आर्यसमाज बालसमन्द

आर्यसमाज उमरा (हिसार) का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री भरतसिंह आर्य, उपप्रधान—वीरसिंह आर्य, मन्त्री—बलवन्तसिंह आर्य, उपमन्त्री—सोहनलाल आर्य, कोषाध्यक्ष—कुन्दनलाल आर्य, प्रचारमन्त्री—सरदाराराम आर्य, संगठनमन्त्री—लालचन्द आर्य।

हरयाणा में शराबबन्दी आंदोलन की गतिविधियां

निदाणा में शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन

ग्राम निदाणा जि० रोहतक में महिलाओं के धरणे से घबराकर शराब के ठेकेदार ने ३१ मार्च की रात्रि को ठेके से अपना सामान उठा लिया और दूकान खाली करदी, परन्तु विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि अब ठेकेदार ग्राम में किसी अन्य स्थान पर ठेका खोलने का प्रयत्न कर रहा है। उधर ग्राम की पंचायत तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने निश्चय किया है कि किसी भी स्थान पर ठेका नहीं खुलने देंगे। इस उद्देश्य के लिए १७ अप्रैल को ग्राम में शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

कथूरा में ठेके पर शराबबन्दी धरणा जारी

ग्राम कथूरा जि० सोनीपत में शराब का ठेका पुन: चालू न करवाने के लिए ग्रामीण नर-नारियों द्वारा धरणा जारी है। शराब के ठेकेदार ने पुलिस तथा सरकारी अधिकारियों के सहारे से ट्रक में शराब की बोतलें भरकर ठेका चालू रखने का यत्न किया, परन्तु ग्राम के संगठन के सामने वह सफल नहीं हो सका।

—केदारसिंह आर्य

मण्डकौला जि० फरीदाबाद का शराब का ठेका बन्द

ग्राम मण्डकौला जि० फरीदाबाद में कई वर्षों से ठेका चल रहा था। ग्राम पंचायत तथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता इसे हटवाने के लिए आरम्भ से ही संघर्ष कर रहे थे, परन्तु ठेकेदार सरकारी अधिकारियों की मिलीभगत से ठेका चालू रखने में सफल होता रहा। गतवर्ष ग्राम की पंचायत ने पुन: एक प्रस्ताव करके ठेका बन्द करने का सरकार से अनुरोध किया। सभा के नवयुवक उपदेशक श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री तथा अन्य आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता सम्बन्धित अधिकारियों से मिले, परन्तु ठेका नहीं हटाया गया। २७ जनवरी को शराब के ठेके के सामने सांकेतिक धरणा दिया। जिसमें श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री, श्री भजनलाल आर्य, म० खेमसिंह आर्य भजनोपदेशक, श्री शिवराम विद्यावाचस्पति आदि आर्य कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया और ८ मार्च को सभा के अन्तरंग सदस्य श्री राजेन्द्रसिंह जी के नेतृत्व में उपायुक्त फरीदाबाद को शराबबन्दी के लिए हरयाणा सरकार को ज्ञापन देकर चेतावनी दी कि जिन ग्रामों ने शराबबन्दी के प्रस्ताव कर रखे हैं उनमें यदि ठेके चालू रहे तो उन्हें हटाने के लिए संघर्ष किया जायेगा और वैशाखी पर इसकी रूप-रेखा तैयार करने हेतु क्षेत्र की पंचायत करने का निर्णय किया।

अन्तत: सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के संघर्ष के आगे सरकार तथा शराब के ठेकेदार को झुकना पड़ा और ठेका बन्द कर दिया। इस प्रकार अब तहसील हथीन तथा होडल के देहात में कोई शराब का ठेका नहीं रहा। तहसील पलवल तथा फरीदाबाद के अन्य ग्रामों में भी ठेका हटाने के लिए आर्यजनता सक्रिय है।

घतीर में शराब का ठेका समाप्त

हरयाणा सरकार की आबकारी नीति के तहत सैंकड़ों ग्रामों में नये शराब के ठेके खोलने का निर्णय किया गया। हरयाणा की आर्य जनता ने अनेक ग्रामों में सरकार की मानवता विरोधी नीति को चुनौती दी। ऐसे ही जिला फरीदाबाद, त० पलवल के ग्राम घतीर में यहां के सरपंच चौ० राधेलाल आर्य एक ईमानदार चरित्रवान् व्यक्ति हैं। जब उनको इस नीति का पता चला तो ग्रामीण एवं क्षेत्रीय लोगों के सहयोग से जब चौ० देवीलाल ९ मार्च की रैली के लिए ७ मार्च को घतीर पधारे तो आबकारी नीति का जबरदस्त विरोध किया। परन्तु आश्वासन के बावजूद इसका कोई लाभ नहीं हुआ। ८ मार्च को ठेके की नीलामी हो गई, परन्तु लोगों ने हिम्मत नहीं हारी। किसी भी कीमत पर ठेकेदार को ग्राम में न घुसने देने का फैसला किया।

अन्तत: सरकार को अपना निर्णय बदलना पड़ा। नीलामी रद्द की गई। ग्रामीण जनता के इस साहसपूर्ण कार्य की सर्वत्र प्रशंसा हो रही है।

—हरिश्चन्द्र शास्त्री

ठेका खोले जाने का विरोध

भिवानी, ४ अप्रैल (ईश्वर धामू)। स्थानीय कृष्णा कालोनी में देशी शराब का ठेका खोले जाने को लेकर कालोनीवासियों में भारी तनाव है। कालोनी निवासियों ने एक पत्र लिखकर मुख्यमन्त्री से यह ठेका रद्द किये जाने की मांग की है। इस बारे में एक प्रतिनिधि मण्डल जिले के अधिकारियों से भी मिला है।

मच के प्रवक्ता रामीकांत कामरेड ने बताया कि ठेके के प्रस्तावित क्षेत्र के १०० गज की दूरी पर धर्मशाला, मन्दिर, आर्यसमाज भवन तथा वह चौक पड़ता है जहां सायं को महिलाये हो खरीदारी करती हैं। इस प्रकार यहां ठेका खोले जाने का अर्थ लोगों की धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ करना तथा सार्वजनिक वातावरण को दूषित करना होगा।



जि० हिसार में शराबबन्दी प्रचार यात्रा का जत्था जिसमें सभा के उपदेशक श्री अत्तरसिंह तथा श्री जयपाल की भजनमण्डली के साथ आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता दिखाई दे रहे हैं।

भंडेरी बस स्टैंड पर शराब भी बिकती है

गोहाना, ५ अप्रैल (नि.स.)। कई ग्रामवासियों ने शिकायत की है कि गांव भण्डेरी के बस अड्डे पर एक दुकानदार सरेआम देशी व अंग्रेजी शराब की बिक्री कर रहा है। यद्यपि वह दुकानदार विश्वसनीय व्यक्तियों को ही शराब बेचता है, किन्तु विदित हुआ है कि अवयस्क बच्चे भी यहां से शराब प्राप्त कर लेने में सफल हो जाते हैं। इस गैर कानूनी बिक्री का समस्त गांव व निकटवर्ती मित्रों पर सीधा प्रभाव पड़ रहा है।

शंकराचार्य का शास्त्रार्थ का आह्वान स्वीकार

दिनांक २९-३-८८ के विश्वमानव हिन्दी दैनिक पत्र में आपका ग्राम पुराना (मेरठ) में दिया एक वक्तव्य प्रकाशित हुआ है। जिससे विदित हुआ कि आप वेदों की संख्या चार की अपेक्षा ११३१ मानते हैं तथा प्रचलित सतीप्रथा को वेदसम्मत सिद्ध करने हेतु शास्त्रार्थ के लिए भी तैयार हैं। अत: आर्यसमाज नरवाना (जींद) इस विषय में आपसे शास्त्रार्थ करने के लिए तैयार है। कृपया सूचित करें कि आप शास्त्रार्थ के लिए कब पधार सकते हैं जिससे शास्त्रार्थ का सब प्रबन्ध किया जा सके।

—राधाकृष्ण आर्य
मन्त्री आर्यसमाज नरवाना (जींद)

अधिकारियों ने कुरुक्षेत्र के पास शराब का ठेका सील किया

कुरुक्षेत्र, ६ अप्रैल (जनसत्ता)। हरयाणा विधानसभा में राज्य के आबकारी व कराधान मन्त्री सम्पतसिंह की इस घोषणा के बाद कि किसी भी धार्मिक या पूजा की जगह के सौ गज की दूरी तक शराब का ठेका नहीं खोला जाएगा, प्राचीन नगर थानेसर के पासवाले बाहरी गांव से शराब का ठेका उठाने की प्रक्रिया शुरु होगई है। कल जिला आबकारी व कराधान विभाग के अधिकारियों ने इस गांव में शराब के ठेके को सील कर दिया।

इससे पहले इस ठेके को यहां से उठवाने का मामला काफी तूल पकड़ गया था। ठेके के दरवाजे पर महिलायें रात-दिन धरने पर बैठी थीं। ठेके से कुछ दूरी पर पूर्व राज्यमन्त्री देवेन्द्र शर्मा भी अपने कुछ साथियों के साथ धरना दिये हुए थे। यह शराब का ठेका यहां के नाभिकमल मन्दिर से करीब २५ गज की ही दूरी पर है।

लोगों ने चालू वित्त वर्ष की नीलामी से पहले भी यहां से ठेका उठाए जाने की पुरजोर मांग की थी। लेकिन लोगों के विरोध के बावजूद इसकी दुबारा नीलामी करदी गई, जिससे इलाके में स्थिति तनावपूर्ण होगई। प्रशासन को यहां किसी अप्रिय घटना से निपटने के लिए पुलिस तैनात करनी पड़ी। प्रशासन ने धरने पर बैठी महिलाओं को आश्वासन भी दिया था कि १५ दिन के बाद इसे यहां से उठा लेंगे, लेकिन महिलायें एक दिन भी यहां ठेका नहीं चलने देने की मांग पर अडिग रहीं।

महिलाओं का कहना था कि इस ठेके के कारण उनकी जिन्दगी नरक बन गई है। शाम होते ही शराबियों के झुण्ड सड़क पर जमा हो जाते हैं, जिससे किसी शरीफ आदमी का सड़क से गुजरना मुश्किल हो जाता है। उधर प्रशासन को यह लालच था कि इस ठेके से इलाके में सबसे ज्यादा आबकारी राजस्व मिलता है।

सरकारी सूत्रों के मुताबिक इस ठेके के ठेकेदार ने नई नीलामी की निश्चित हुई धनराशि में ठेका दूसरी जगह ले जाने से इन्कार कर दिया। इसलिए नीलामी रद्द करके व दूसरी जगह तय करने के बाद इसकी फिर से नीलामी की जाएगी।

जी.सी. अग्रवाल महर्षि दयानन्द वि. वि. के कुलपति

चण्डीगढ़, २९ मार्च (वार्ता) : भारत के भूतपूर्व सर्वेयर जनरल ... जनरल जी. सी. अग्रवाल को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक का कुलपति नियुक्त किया गया है। हरयाणा के राज्यपाल श्री बरारी ने जो विश्वविद्यालय के कुलाधिपति हैं, श्री पी. पी. कैप्रिहान की जगह श्री अग्रवाल की नियुक्ति का आदेश जारी किया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४) रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 K 49 [illegible]



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

१५ चैत्र २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्क २१ २१ अप्रैल, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

जनशक्ति के सामने सरकार तथा ठेकेदार को झुकना पड़ा

निदाणा, कथूरा, मदीना में शराब के ठेके बन्द कर दिये गये

(केदारसिंह आर्य कार्यालय संवाददाता द्वारा)

हरयाणा सरकार ने ग्राम निदाणा जि० रोहतक, ग्राम कथूरा जि० सोनीपत में वहां की जनता की इच्छा के विरुद्ध शराब के ठेके खोलकर राजस्व की आमदनी के लालच में बहुमत की आवाज को दबाने का प्रयास किया था। सत्ता तथा शराब के नशे में चूर होकर शराबबन्दी के प्रस्तावों को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया था, परन्तु आर्यसमाज द्वारा चलाई गई शराबबन्दी आंदोलन की लहर ने जन-जागृति उत्पन्न करदी है। इसके परिणामस्वरूप महम चौबीसी के ग्राम निदाणा तथा जि० सोनीपत के ग्राम कथूरा आदि में लम्बे जन-संघर्ष के बाद शराब के ठेकेदार तथा सरकार को झुकना पड़ा और ठेके बन्द करने पर विवश होना पड़ा।

निदाणा में महिलाओं द्वारा सफल धरणा

निदाणा में गत कई वर्षों से शराब का ठेका चल रहा था। यह जि० रोहतक का एक बड़ा ग्राम है। शराब के प्रचार तथा प्रसार से ग्राम का वातावरण इतना दूषित होगया था कि शराबियों की अनुचित गतिविधियों के कारण ७-८ महिलाओं ने आत्म-हत्या करनी पड़ी। शराब के ठेके से थोड़ी दूरी पर लड़कों का स्कूल स्थित था। अतः छात्रों को भी शराब की बुरी आदत ने अपनी लपेट में ले लिया। छात्र अपने माता पिता से स्कूल की फीस देने तथा पुस्तकें खरीदने के नाम पर पैसे ले जाते थे और ठेके पर बोतल खरीद कर पिकनिकें मनाने लग गये थे। शराबियों के उत्पात से ग्राम की बहु-बेटियों को अपनी इज्जत बचानी कठिन होगई। इस प्रकार गरीब किसान मजदूर बर्बाद होने लग गये। प्रायः पुरुष दिन में तास खेलकर और रात्रि में शराब पीकर अपनी खून-पसीने की कमाई को शराब के ठेकेदार को लुटाने लग गये। इस भयंकर तथा नाशकारी स्थिति को देखकर ग्रामीण महिलाओं ने ग्राम से शराब के ठेके को बन्द करने का बीड़ा उठाया और ८ मार्च को श्री मालूराम तथा श्री जयपाल आदि के साथ रोहतक में जिलाधीश की कोठी पर शराबबन्दी प्रदर्शन में शामिल हुईं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह के नेतृत्व में शराबबन्दी के लिए ज्ञापन दिया। ग्राम पंचायत ने भी हरयाणा के मुख्यमन्त्री को ग्राम से ठेके को बन्द करने की फरयाद की, परन्तु ठेका बन्द नहीं किया गया। इस पर महिलाओं ने ठेके पर धरणे की तैयारी आरम्भ करदी। इनके मार्गदर्शन तथा शराबबन्दी प्रचार हेतु सभा की ओर से सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री बलबीरसिंह, सभा उपदेशक पं० अर्जुनदेव, पं० चन्द्ररूप, पं० ईश्वरसिंह तूफान ग्राम में गये और २१ मार्च को सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री ने विधिवत् ठेके के सामने धरणे का उद्घाटन किया। इस प्रकार महिलाओं ने दिन-रात धरणे पर बैठकर शराब खरीदनेवालों को समझा-बुझाकर वापस भेजना आरम्भ कर दिया। ग्राम के आर्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं के निमन्त्रण पर प्रो० शेरसिंह जी सभाप्रधान, महाशय भरतसिंह जी सभाउपप्रधान, सभा के भजनोपदेशक म० नौरंगलाल जी २६ मार्च को धरणे पर पधारे और इस महत्त्वपूर्ण कार्य में योगदान करने पर महिलाओं को प्रोत्साहित किया। इस प्रकार धरणे पर महिलाओं की संख्या बढ़ती चली गई।

ग्राम पंचायत की ओर से शराब पीने और खरीदनेवालों पर जुर्माना करने का प्रस्ताव पास किया गया। इस कारण ठेके पर शराब की बिक्री बन्द होगई और ठेकेदार ने ३१ मार्च की रात को ठेका बन्द कर दिया, परन्तु उसने अपना ठेका किसी दूसरे स्थान पर रखने के लिए सरकार के सहयोग से हाथ-पांव मारने आरम्भ कर दिये। उसके षड्यन्त्र को देखकर महिलाओं ने अपना धरणा चालू रखा। उनका साहस बढ़ाने के लिए स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ११ अप्रैल को धरणे पर पधारे और रात्रि को आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क करके १७ अप्रैल को शराबबन्दी सम्मेलन करने की प्रेरणा की। १६ अप्रैल की रात्रि को सभा की ओर से पं० जयपाल आर्य की मण्डली ने ग्राम में शराबबन्दी प्रचार किया। १७ अप्रैल को स्कूल के प्रांगण में यज्ञ का भी आयोजन किया। इसमें वेदप्रचार मण्डल हांसी की ओर से श्री भरतलाल शास्त्री, श्री प्रतापसिंह आर्य तथा बहन शांतिदेवी आदि ने भाग लिया।

निदाणा में आर्यसमाज की स्थापना

सभा की परम्परा के अनुसार जिन ग्रामों में शराब के ठेके बन्द करवाये जाते हैं, वहां आर्यसमाज की स्थापना की जाती है, ताकि भविष्य में यहां शराब का ठेका चालू न हो सके। स्वामी ओमानन्द जी की प्रेरणा तथा पं० जयपाल आर्य की भजनमण्डली के प्रचार प्रभाव स्वरूप यहां भी आर्यसमाज की स्थापना होगई है। श्री प्रतापसिंह नम्बरदार प्रधान, वैद्य श्रीदत्त भारद्वाज मन्त्री तथा श्री उग्रसैन जी कोषाध्यक्ष चुने गये हैं। आर्यसमाज के प्रचार में ग्राम के अधिकारियों ने ठेके को बन्द करवाने के कार्य में अमूल्य योगदान के लिए ग्राम की महिलाओं के अतिरिक्त सर्वश्री मालूराम, मुन्शीराम, लजेराम, नन्दलाल, शिवलाल, बलदेव, सुलतान, उदयराम, बलबीरसिंह, दयानन्द, सूबेदार ईश्वरसिंह, महेन्द्रसिंह, रामसिंह, निहालसिंह, धूपराम, रणपत, प्रो० महासिंह, बदलुराम नम्बरदार, प्रि० गुगनसिंह, सूबेदार रणधीरसिंह प्रधान वेद प्रचार मण्डल चौबीसी तथा स्वामी प्रेमानन्द आदि का हार्दिक धन्यवाद किया।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

कीर्तिशेष आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

—डा० भवानीलाल भारतीय

संस्कृत तथा वैदिक साहित्य के प्रकांड विद्वान् आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री का जन्म उत्तरप्रदेश के जौनपुर नगर में सन् १६१७ में हुआ। आपका अध्ययन क्रम वाराणसी, प्रयाग तथा लाहौर जैसे विद्या केन्द्रों में चलता रहा। आपने शास्त्री, आचार्य आदि परीक्षायें ससम्मान उत्तीर्ण कीं तथा स्वदेश को स्वाधीन कराये जाने हेतु संचालित कांग्रेस के आंदोलन में भी भाग लिया। तत्पश्चात् आपका कार्यक्षेत्र लाहौर रहा। यहां आपने डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति के द्वारा संचलित दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के प्रधानाचार्य के पद पर कार्य किया। देश विभाजन के पश्चात् आप वाराणसेय राजकीय संस्कृत कालेज के अन्तर्गत सरस्वती भवन शोध संस्थान के पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर कार्य करते रहे। पुन: महाराष्ट्र के नासिक स्थान को केन्द्र बनाकर स्वतन्त्र रूप से वैदिकधर्म प्रचार के पुनीत कृत्य में संलग्न रहे।

पर्याप्त समय तक शास्त्री जी कन्या गुरुकुल पोरबन्दर के आचार्य पद को सुशोभित करते रहे। १६६३ ई० से आप सार्वदेशिक सभान्तर्गत अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष थे। आप लेखनी और वाणी के माध्यम से वैदिक सिद्धांतों का प्रतिपादन करने में समर्थ एक शक्तिशाली लेखक और ओजस्वी वक्ता थे। अभी गतवर्ष साथ रहने का अवसर मिला। आचार्य जी का व्याख्यान कौशल, असाधारण वैदुष्य तथा सूझ-बूझ की प्रशंसा इन्दौर के प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति की जबान पर थी। यहां शास्त्री जी के द्वारा रचित ग्रन्थों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जारहा है—

१. आर्य सिद्धांत सागर—इस महाग्रंथ की रचना आपने ठाकुर अमरसिंह जी आर्य पथिक (सम्प्रति अमर स्वामी सरस्वती) के सहलेखन में की। यह ग्रंथ आर्य प्रादेशिक सभा लाहौर द्वारा प्रकाशित हुआ। इस में ईश्वर, जीव, प्रकृति तथा शतशः सैद्धांतिक तथा दार्शनिक विषयों वेद तथा आर्ष वाङ्मय के सहस्रों प्रमाण आर्य सिद्धांत की पुष्टि के लिए एकत्रित किये गये। यह ग्रंथ शास्त्रार्थकर्त्ताओं के लिए अतीव उपयोगी है, क्योंकि उन्हें प्रत्येक विषय पर सहस्रों प्रमाण एक ही स्थान पर मिल जाते हैं।

२. वैदिक ज्योति—वेद विषयक उच्चकोटि के लेखों का संग्रह है। इस पर आपको दयानन्द पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

३. शिक्षण तरंगिणी—इसमें शिक्षा विषयक उच्चकोटि के निबन्ध संकलित किये गये हैं। पुराकालीन गणित पर आपके शोध-निबन्ध अत्यन्त गवेषणापूर्ण हैं।

४. वैदिक इतिहास विमर्श—पाश्चात्य विद्वानों ने वेदों में अनित्य इतिहास मानते हुए जो आक्षेप किये हैं, उनके समाधानार्थ यह ग्रंथ लिखा गया। इसमें आर्थर एन्थनी मैकडानल के वैदिक इन्डेक्स जैसे ग्रंथों का विस्तृत खण्डन किया गया है तथा वैदिक नित्य इतिहास का प्रतिपादन हुआ है। यह ग्रंथ आर्य साहित्य मण्डल अजमेर से प्रकाशित हुआ।

५. दयानन्द सिद्धांत प्रकाश—गाजियाबाद निवासी पं० रामचन्द्र वक्ता रचित दयानन्द रहस्य का खण्डन इस ग्रंथ में किया गया है। यह पुस्तक सार्वदेशिक सभा के तत्कालीन प्रधान स्वामी ध्रुवानन्द जी की प्रेरणा से लिखी जाकर १६६२ ई० में प्रकाशित हुई।

६. कर्म मीमांसा—कर्म विषयक गूढ़ विषय का मार्मिक विवेचन इस ग्रंथ की विशेषता है।

७. वैदिक विज्ञान विमर्श—सुप्रसिद्ध पौराणिक विद्वान् महामहोपाध्याय पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी ने बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के तत्वावधान में कतिपय व्याख्यान दिये थे, जो वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति शीर्षक पुस्तक के अन्तर्गत प्रकाशित हुए। चतुर्वेदी जी ने वैदिक विज्ञान के अन्तर्गत मृतक श्राद्ध, रासलीला, मूर्तिपूजा, अवतारवाद आदि पौराणिक मन्तव्यों को लिया और उन्हें वेदों के मत्थे मढ़ दिया। महामहोपाध्याय पं० मधुसूदन ओझा के शिष्य चतुर्वेदी जी का यह अद्भुत वैदिक विज्ञान था। इसी पुस्तक में महर्षि दयानन्द के वेद विषयक मन्तव्यों की व्यंग्यात्मक भाषा में आलोचना भी की गई थी। आचार्य जी ने वैदिक विज्ञान विमर्श लिखकर चतुर्वेदी जी की पुस्तक के आक्षेप योग्य स्थलों की समीक्षा की। पुस्तक २०२० वि० में प्रकाशित हुई।

८. सामवेद भाष्य—उपासना प्रधान सामवेद का यह सुबोध भाष्य आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर से छपा।

६. वैदिक युग और आदि मानव—भारतीय विद्या भवन बम्बई से प्रकाशित 'वैदिक एज' के खण्डन में यह पुस्तक लिखी गई। इसे सार्वदेशिक सभा ने १६६४ ई० में प्रकाशित किया।

१०. तत्वार्थादर्श—जैन विद्वानों ने आर्यसमाज के आस्तिकवाद तथा ईश्वरवाद का खण्डन करते हुए अनेक ग्रंथ लिखे हैं। पं० अजीतकुमार शास्त्री ने सत्यार्थप्रकाश के द्वादश समुल्लास का खण्डन करते हुए सत्यार्थदर्पण लिखा, जो चम्पावती जैन ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ। आचार्य जी ने जैन विद्वानों के इन आक्षेपों का खण्डन करते हुए जैनधर्म तथा जैनकर्म सिद्धांत का नैयायिक तर्कपूर्ण शैली में खण्डन किया है। इस पुस्तक में प्रयुक्त न्याय-शास्त्र प्रतिपादित शैली का स्वारस्य वे लोग ही अनुभव कर सकते हैं जो दार्शनिक विषयों के ऊहापोह वाले ग्रंथों के अध्ययन और अभ्यास में व्युत्पन्न हों।

आचार्य जी का लेखन अंग्रेजी भाषा के माध्यम से भी हुआ है। आपकी निम्न अंग्रेजी कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं—

१. कल्ट एण्ड क्रीड आफ आर्यसमाज—इसमें आर्यसमाज का विस्तृत परिचय तथा उसके सिद्धांतों एवं मन्तव्यों की मार्मिक व्याख्या अंकित है। पुस्तक की लोकप्रियता इसी बात से विदित होती है कि इसके दो संस्करण अल्प अवधि में ही छप चुके हैं।

२. Vedic Castesystem—इसमें गुण कर्मानुसार वैदिक वर्णव्यवस्था का प्रतिपादन किया गया है। यह पुस्तक आज के प्रगतिशील युग में जन्मगत जातपात का प्रतिपादन करनेवाले पुरी के शंकराचार्य जी के लिए नेत्रांजन का कार्य करती है।

आर्यसमाज नारायणगढ़ का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज नारायणगढ़ जि० अम्बाला का वार्षिक उत्सव ८ से १० अप्रैल तक समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री व्यवस्थापक दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर, पं० कृष्णकांत आर्योपदेशक पूर्व ईसाई प्रचारक के प्रवचन एवं सभा की प्रभावशाली पं० मुरारीलाल बेचैन, स्वामी देवानन्द जी के भजन हुए। १३ अप्रैल को यज्ञ की समाप्ति पर ऋषिलंगर का भी आयोजन किया गया।

—रामनिरंजन मन्त्री

आर्यसमाज कृष्णपोल बाजार जयपुर का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री डा० ओमशरण विजय, मन्त्री—शिवकुमार कुर्मी पाटीदार, पुस्तकालयाध्यक्ष—गुरुमुखदास, कोषाध्यक्ष—सूरजनारायण गुप्त, अधिष्ठाता—योगेन्द्र योगी।

महान् क्रांतिकारी शहीदे आजम सरदार भगतसिंह

लेखक—डा० शांतिस्वरूप शर्मा, पत्रकार कुरुक्षेत्र

क्या भारतवर्ष में कोई भी नवयुवक ऐसा नहीं है जो लाला लाजपतराय जी की हत्या का बदला ले सके। वह अंग्रेज गोरा लाहौर में क्या इसी भांति सीना ताने घूमता रहेगा। यदि नौजवानों का लहू ठण्डा पड़ गया तो मैं देश की स्त्रियों के दल को संगठित करूंगी। नौजवान चूड़ियां पहनकर घर में बैठ जायें। देश की रक्षा अब अबलायें करेंगी। लालाजी की हत्या का दण्ड स्त्रियां ही देंगी। यह सिंह गर्जना क्रांतिकारी देशबंधु चितरंजनदास की धर्मपत्नी श्रीमती बसन्तीदेवी ने कलकत्ता में एक जनसमूह को सम्बोधित करते हुए पंजाब केसरी लाला लाजपतराय के बलिदान के तीन दिन बाद २० नवम्बर, १६२८ को की।

इस सिंह गर्जना का आशातीत प्रभाव हुआ। सरदार भगतसिंह व उनके साथियों के दिलों में तो पहले ही से लाला जी के खून का बदला लेने की आग सुलग रही थी। सरदार भगतसिंह पहले ही पंजाब केसरी की चिता की राख हाथ में लेकर प्रतिज्ञा कर चुका था कि वह खून का बदला इस हालत में खून से ही लेगा। क्रांतिकारी नारी बसन्तीदेवी की ललकार ने तो मानो इस धधकती आग पर घी का काम किया।

सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद व बी० के० दत्त को यह काम सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी द्वारा सौंपा गया। इन नवयुवकों ने लालाजी की हत्या के केवल एक महीने बाद ही १७ दिसम्बर, १६२८ को सहायक पुलिस अधीक्षक सांडर्स को पिस्तौल से भून दिया। अगले ही दिन लाहौर की दिवारों पर लाल रंग के पोस्टर देखे गये, जिनमें लिखा था—'लालाजी के खून का बदला ले लिया गया है।' ये तीनों आजादी के परवाने भाग निकले व अंग्रेजी सरकार इनको भरसक प्रयत्न करने पर भी गिरफ्तार न कर सकी।

देहली में हुई क्रांतिकारियों की एक बैठक में निर्णय लिया गया कि जनता को जगाने के लिए खून की आहुति दी जाये तथा संसद यानि केन्द्रीय असम्बली में बम फेंककर गिरफ्तारी दी जाये। सरदार भगतसिंह व बी० के० दत्त दोनों ने इस कार्य के लिए नाम पेश किया। ८ अप्रैल, १६२६ को जब पब्लिक सुरक्षा बिल पर बहस हो रही थी, तब सरदार भगतसिंह व बी० के० दत्त ने एक बम फेंका, जिससे सब ओर धुआं ही धुआं होगया। एक जबरदस्त धमाका हुआ। ये दोनों भागे नहीं, बल्कि गैलरी में खड़े हंस रहे थे। उन्होने कुछ पोस्टर हाल में फेंके तथा अपनी गिरफ्तारी दी। उन्होंने घोषणा की कि हमने यह बम किसी को नुकसान पहुँचाने के लिए नहीं फेंका, बल्कि अंग्रेजी सरकार के बहरे कानों तक अपनी आवाज पहुंचाने के लिए फेंका है।

लाहौर कत्ल केस के नाम पर हाईकोर्ट के एक ट्रब्यूनल के समक्ष पूरे एक वर्ष तक जनता की आंखों में धूल झोंकने के लिए गवाहों का ड्रामा रचा जाता रहा। २५६ गवाहों को अदालत में पेश किया गया। ७ अक्तूबर, १६३० को इस केस का फैसला सुनाया, जिसके अनुसार सरदार भगतसिंह, राजगुरु व सुखदेव तीनों नवयुवकों को मृत्यु दण्ड की सजा सुनाई गई।

कुछ रिश्तेदारों व दोस्तों ने इन तीनों से प्रार्थना की कि वे वायसराय से रहम की अपील करें। इन बहादुरों नें अगले दिन अपील देने को कह दिया। अगले दिन मिलने आये लोगों को इन्होंने अपनी अपील की एक नकल सौंप दी। इसमें वायसराय से अपील की गई थी—"हम शाही कैदी हैं, इसलिए हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमें फांसी पर लटकाने की बजाय शाही कैदियों की भांति सेना की गोली से उड़ा देने का हुक्म दें।

इन नवयुवकों को २४ मार्च, १६३१ को फांसी देनी थी, परन्तु अंग्रेजी सरकार जनता के रोष से इतनी घबराई हुई थी कि जब इन बहादुरों को २३ मार्च, १६३१ को फांसी की कोठरी से शाम को ७ बजे निकाला गया व फांसी देने के लिए ले जाया जारहा था तो इन लोगों ने "इन्कलाब जिन्दाबाद" के नारे लगाये व खुशी-खुशी उन्होंने आगे कदम बढ़ाये, जैसे वे अपने किसी मित्र से मिलने जारहे हों। उस समय जो मजिस्ट्रेट उन्हें फांसी दिलाने आया था, उसको इन बहादुरों ने सम्बोधित करते हुए कहा था—"मिस्टर मजिस्ट्रेट, तुम्हारा सौभाग्य है कि तुम्हें हमें फांसी दिलाने का आर्डर मिला। आओ आज हम तुम्हें दिखलायें कि स्वतन्त्रता पर बलिदान होनेवाले क्रांतिकारी किस प्रकार अपने आदर्श के लिए मौत से बगलगीर होते हैं।" यह कहकर इन तीनों मित्रों ने फांसी का फन्दा जलाद से लेकर स्वयं अपने गले में डाला और इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा लगाकर शहीद होगये।

अंग्रेजी सरकार ने जेल की पिछली दीवार तोड़कर रातों-रात इन की लाशों के टुकड़े करके ट्रक द्वारा सतलुज नदी के तट पर मिट्टी का तेल डालकर जला डाला और रात को ही अधजली लाशें सतलुज नदी में बहा दी। सारे देश में रातों-रात फांसी की खबर आग की भांति फैल गई। सारे भारत में बड़े-बड़े जलूस निकाले गये व इन शहीदों को श्रद्धांजलियां भेंट की गई। कराची में नौजवानों ने, जहां कांग्रेस का सैशन हो रहा था एक बड़ा जलूस निकाला। जिसमें भगतसिंह की अर्थी उठाई हुई थी। जिसमें नारा था—"देखो किस शान से जाता है जनाजा हिन्द के सरदार का।" नौजवानों ने गांधी जी का रेल का डिब्बा घेर लिया व काले फूल उन्हें भेंट किये गये। जिस पर गांधी जी ने माथे पर हाथ मारकर कहा था—"यह धब्बा हमेशा मेरे माथे पर रहेगा कि मैं भगतसिंह को न बचा सका।"

इन शहीदों के महान् बलिदानों की बदोलत आज देश स्वतन्त्र है। हम उन अमर शहीदों को श्रद्धांजलि भेंट करते हैं।

एक नेत्रहीन स्वामी हरिश्चन्द्र जी की तपस्या रंग लाई

जिला सिरसा में नाथुसरी चोपटा एक स्थान है। सन् १६६४ में खुश्क एवं बियावान जंगल पड़ा हुआ था। अब स्वामी जी ने अपने पुरुषार्थ व तपस्या से यहां जंगल में मंगल कर दिया। स्वामी जी ने दान द्वारा धन इकट्ठा करके एक शानदार शिव मन्दिर, अन्ध महाविद्यालय, धर्मशाला, हस्पताल, आई० टी० आई, राजकीय उच्च विद्यालय, पांचवी तक माडल स्कूल, दो सरकारी बैंक पटियाला, कोप्रोटिव बैंक को भी मकान किराये पर दे रखे हैं। चारों तरफ रोड पर लोगों ने अपनी-अपनी दूकानें खोल रखी है। सारे इलाके में स्वामी जी के प्रति लोगों में अगाध श्रद्धा है। सन् १६८२ में सरकार ने शराब का ठेका खोला था। स्वामी जी ने इलाके के १८ लोगों के साथ भूख हड़ताल करदी। भूख हड़ताल ६ दिन तक चली। आखिर सरकार ने ठेका बन्द करना पड़ा।

बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि इस वर्ष भी सरकार ने चोपटे पर मन्दिर के पास ठेका खोल दिया। स्वामी जी इसे बन्द करवाने के लिए प्रयासरत हैं। उनका कहना है कि सरकार झूठे आश्वासन देती है। जब तक यह पाप का अड्डा यहां से नहीं उठेगा, मैं चैन से नहीं बैठूंगा। स्वामी जी नें बताया कि मैं इलाके के मुखिया लोगों को साथ लेकर १०-४-८८ को मुख्यमन्त्री जी से मिला था। मुख्यमन्त्री जी ने चोपटे से शराब का ठेका बन्द करवाने का आश्वासन दिया। अगर समय रहते ठेका नहीं उठाया तो सैकड़ों माताओं के साथ धरणा देंगे। इलाके के लोगों में काफी रोष है। नेत्रहीन स्वामी की तपस्या अवश्य रंग लायेगी। हमने भी आर्यसमाज की तरफ से धरणे में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

—अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

डा० भवानीलाल भारतीय षष्टिपूर्ति स्मारिका

आर्यसमाज के प्रसिद्ध साहित्यकार, शोध विद्वान् तथा सुपरिचित लेखक डा० भवानीलाल भारतीय जून १९८८ ई० में अपने जीवन के ६० वर्ष पूरे कर रहे हैं। इस अवसर पर डा० भवानीलाल भारतीय षष्टिपूर्ति स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। वे ऋषि जीवनी साहित्य के अनथक अध्येता तथा प्रामाणिक कृतिकार हैं। ऋषि दयानन्द, आर्यसमाज तथा आर्य साहित्यकारों से सम्बन्धित लगभग ४ दर्जन ग्रन्थों का उन्होंने लेखन और सम्पादन किया है। आर्यसमाज के पत्र-पत्रिकाओं में वे निरन्तर लिखते रहते हैं और अभी भी उनकी लेखनी अजस्र गति से प्रवाहित हो रही है। आर्यसमाज के लेखकों, सम्पादकों, पाठकों, गवेषकों तथा आर्य महानुभावों से निवेदन है कि वे इस स्मारिका के लिए लेख, सन्देश, शुभकामनायें तथा सहयोग प्रेषित कर, श्री भारतीय का अभिनन्दन करें।

पत्र-व्यवहार का पता
आर्यसमाज अमेठी, पिन०-२२७४०५
(उ०प्र०)

निवेदक
डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री
सम्पादक-स्मारिका

गुरुकुल आमसेना के ब्रह्मचारियों का ब्रह्मचर्य नैष्ठिक व्रत

किसी देश, धर्म और जाति की उन्नति के लिए बलिदान आवश्यक है। विदेशों से हजारों नवयुवक, युवतियां पादरी और सिस्टर बनकर अपनी सुख सुविधाओं का बलिदान करके हो लाखों लोगों को ईसाई बनाने में समर्थ हुए हैं।

हमें भी अपने वैदिकधर्म एवं आर्यजाति की रक्षा के लिए अपना जीवन अर्पण करना चाहिए। इस पवित्र भावना को लेकर रामनवमी के पवित्र-पर्व पर अत्यन्त उत्साह एवं भावपूर्ण वातावरण में गुरुकुल के चार उत्साही नवयुवक ब्र० कुन्जदेव, ब्र० दयासागर, ब्र० हलधर, ब्र० मोहनकुमार ने अपने पूज्य गुरुदेव स्वामी धर्मानन्द जी के द्वारा नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर अपना जीवन वैदिकधर्म एवं आर्यजाति की रक्षा के लिए अर्पण करने का संकल्प लिया। इस पावन अवसर पर गुरुकुल के अध्यापकों एवं प्रबन्धकर्त्ता समिति के सदस्यों व गणमान्य नागरिकों ने चारों को हार्दिक आशीर्वाद दिया। गुरुकुल के प्रबन्धक आचार्य वामदेव जी ने नव-दीक्षित बन्धुओं का रौप्यमाला द्वारा स्वागत कर उत्साहित किया। —वीरेन्द्रकुमार आर्य प्रधान

ग्राम ढ़ींगसरा (हिसार) में वेदप्रचार

दिनांक २८-२९ मार्च, ८८ को श्री हेतराम जाखड़ की लग्न एवं प्रयास से ५५ वर्ष के बाद आर्यसमाज का प्रचार हुआ। प्रचार के अभाव में पाखण्ड एवं शराबखोरी इस गांव में चरम सीमा पर है। पहले यह गांव क्रांतिकारियों का भी गढ़ रहा है। पं० लेखराम जी, जो भगतसिंह के साथी थे, इसी गांव के हैं। इस अवसर पर स्वामी जगतमुनि, श्री संग्रामसिंह आर्य एवं मैंने भी शराबबन्दी, नारी उत्थान, गोरक्षा, आर्यसमाज क्या चाहता है आदि पर विचार रखे। पं० जयपालसिंह जी की भजनमण्डली व झाबेराम के शिक्षाप्रद भजन हुए। ज्ञातव्य है कि १५-२० घरों में अवैध शराब की बिक्री जोरों पर है। गांव में १० जगह चौक में तथा नुकड़ पर खोखे रखकर दिन-धोली शराब बेची जाती है। ठेकेदार चौटाला का रिश्तेदार है। अतः कोई पूछनेवाला नहीं। इस क्षेत्र में १०-१२ गांवों में इसी तरह शराब का अवैध धन्धा जोरों पर है। उपर्युक्त सभी विद्वानों ने सरकार की शराब बढ़ावा नीति की कटु आलोचना की तथा लोगों से संगठित होकर इन खोखों को उखाड़ फेंकने के लिए प्रेरणा दी। श्री हेतराम आर्य, सोमवीर आर्य, बलवीर आर्य के घर पारावारिक हवन किया गया। परिवारों में हवन के प्रति बड़ी श्रद्धा पाई गई। गांव के लोग प्रचार से काफी प्रभावित हुए। लोगों ने विद्वानों को पुनः समय निकालकर वेदप्रचार बारे निमन्त्रण दिया।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

जिला सिरसा में शराबबन्दी एवं वेदप्रचार अभियान पैदल-यात्रा

दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे शराब के प्रचलन को देखते हुए दिनांक ९ से १७ अप्रैल, ८८ तक शराबबन्दी समिति हिसार की ओर से समिति प्रधान एवं सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी के नेतृत्व में ७ आर्य विद्वानों एवं कार्यकर्त्ताओं का काफला जिला सिरसा के ग्राम चारवाला, रामपुरिया बगड़िया, कागदाना, नाथुसरी, लुदेसर, गुड़ियाखेड़ा, बकरियावाली, हरनियावाली तक पहुंचा। जिसमें प्रत्येक गांव में रात्रि को सार्वजनिक स्थानों पर सभाओं का आयोजन तथा प्रातःकाल हवन किया गया। आर्य विद्वानों तथा भजनोपदेशकों के द्वारा शराब एवं जूआ से होनेवाले नुकसान को इतिहास के प्रमाण देकर रोचक ढंग से समझाया गया एवं सरकार की शराब बढ़ावा एवं अहाते खोलने की नीति की कटु आलोचना की गई। हवन पर कई नवयुवकों एवं बुजुर्गों ने शराब व धूम्रपान न करने की प्रतिज्ञा की तथा जनेऊ धारण किये। गांव कागदाना, नाथुसरी चोपटा, बकरियावाली में खुले शराब के ठेकों के खिलाफ संघर्ष करने तथा अवैध शराब की बिक्री को रोकने बारे नवयुवकों को प्रेरित किया।

उपर्युक्त गांव में निम्न विद्वानों ने सभाओं को सम्बोधित किया—सर्वश्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, महात्मा अग्निदेव जी, महाशय अमीलाल जी व मैंने तथा पं० नौरंगलाल जी की भजनमण्डली के समाज सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए। गुड़ियाखेड़ा एवं हरनियांवाली में किन्हीं कारणों से प्रचार-कार्य नहीं हो सका। ज्ञातव्य है कि इलाका पंदावार का है, लेकिन पाखण्ड, शराबखोरी, जुआ एवं दहेज की बीमारी चरम सीमा पर है। लोग अविद्यावश उपर्युक्त बुराइयों से तबाह हो रहे हैं।

इस कार्यक्रम में सर्वश्री कृपालसिंह आर्य, फूलसिंह आर्य, दुलाराम आर्य, रणवीर सरपंच, धनपत बेनिवाल, मामनराम वानप्रस्थी, बालाराम स्वतन्त्रता सेनानी का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम बहुत ही प्रेरणाप्रद एवं सराहनीय रहा।

—संग्रामसिंह आर्य दड़ोली निवासी

ऋषिलंगर हेतु दान की अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के दयानन्दमठ, रोहतक में ऋषिलंगर निरन्तर चालू है। जिसमें आर्यसमाज के प्रचारकों, कार्यकर्त्ताओं तथा यात्रियों के लिए दोनों समय के भोजन की व्यवस्था है।

अतः अन्नदाताओं से निवेदन है कि इस शुभ कार्य के लिए अधिक से अधिक अन्न अथवा धन का दान देकर यज्ञ के भागी बनें। दान-संग्रह हेतु सभा के प्रचारक म० जयपाल आर्य आपके पास आरहे हैं।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

चौबीसी वेदप्रचार मण्डल जि० रोहतक का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री रणधीरसिंह लाखन माजरा, मन्त्री—रत्नप्रकाश महम, कोषाध्यक्ष—धूपसिंह सारण फरमाणा।

शोक समाचार

तहसील नारनौल के प्रतिष्ठित आर्य भजनोपदेशक म० बुद्धिचर के बड़े पुत्र जिसकी आयु २३ वर्ष थी, बुखार दस्त होकर दिनांक ३-४-८८ को उनका शरीर पूरा होगया। दिवंगत आत्मा को परमात्मा सद्गति प्रदान करे।

—ताराचन्द आर्य, प्रधान आ०स० नारनौल

जब जो पुत्र पिता के सामने बोतल पी लेता है, तब उस परिवार का भविष्य क्या होगा ?

—मा० दीपचन्द आर्य

पुरानी कहावत में परिवर्तन होगया है। आज से ३० वर्ष पूर्व हम सुना करते थे कि "देशां में देश हरयाणा, जित दूध दही का खाणा" परन्तु आज इसके विपरीत होगया है—"देशां में देश हरयाणा, जित शराब मांस का खाणा"। आज से ३० वर्ष पूर्व ग्राम में ऐसा कोई-कोई व्यक्ति मिलता था जो शराब पीता था, परन्तु आज कोई-कोई ऐसा परिवार मिलेगा, जिस घर में कोई भी शराब न पीता हो।

आज हरयाणा में तलाश करने पर ऐसा कोई ग्राम मिलेगा, जिसमें शराब की बिक्री न होती हो। नगरों तथा बड़े-बड़े ग्रामों में सरकार द्वारा स्वीकृत ठेके हैं। शराब के ठेकेदार चोरी-छिपे ठेकों के निकट के ग्रामों में बोतलें अपने एजेण्टों तक पहुंचा देते हैं। रही-सही कसर भूतपूर्व सैनिक अपने कोटे से बोतल ग्रामों में ब्लैक से बेचकर कर देते हैं। विवाह शादियों तथा गमी के अवसरों पर शराब का खुलकर प्रयोग होने लगा है। पुत्र अपने पिता के सामने शराब की बोतल खोलकर पीने लग जाता है। पिता को साहस नहीं होता कि वह अपने पुत्र को ऐसा करने से रोक देवे। क्योंकि उसे डर होता है कि नशे में धूत होकर, उस पर हो बार न कर दे। इस अवस्था में जब पिता ही अपने शराबी पुत्र पर नियन्त्रण नहीं कर पाता तो परिवार के शेष सदस्यों पर क्या बीतती होगी। शराब में बेहोश होकर वह पहले अपनी धर्मपत्नी को पीटता है। उसके गहणे छीनकर बेचना तथा उसकी शराब खरीदना आरम्भ कर देता है। इस प्रकार सम्पन्न होते हुए भी घर कंगाल बनने लगता है। हर समय घर में कलह रहता है। किसी पुत्र के चेहरे पर फीकापन तथा उसके पिता के चेहरे पर यदि लाली हो तो अनुमान लगाया जा सकता है कि इस परिवार की भावी सन्तान का भविष्य कैसा रहेगा। शराबी पुत्र के शरीर की शक्ति कम होने लगती है। घर के कार्यों में उसका मन नहीं लगता। अतः परिवार की आर्थिक अवस्था भी कमजोर होनी आरम्भ हो जाती है।

सम्पन्न परिवारों की होनेवाली इस भयंकर अवस्था को समाप्त करने के लिए आवश्यक होगया है कि परिवार के भविष्य को उज्ज्वल बनाने हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित शराबबन्दी आंदोलन में प्रत्येक नर-नारी को तन, मन तथा धन से सहयोग करना चाहिए। यह आंदोलन राजनैतिक नहीं, अपितु सामाजिक तथा धार्मिक है। इस आंदोलन की सफलता से ही धनी, सम्पन्न तथा निर्धन परिवारों का भविष्य धूमिल होने से बच सकता है। हरयाणा प्रदेश भी तभी दूध दही का खाणा बनेगा, तब यहां से शराब की बहनेवाली नदियां बन्द होंगी।

आर्य विद्या मन्दिर कंवारी (हिसार) का समारोह सम्पन्न

दिनांक ३१-३-८८ सायंकाल आर्य विद्या मन्दिर में स्कूल की तरफ से एक समारोह का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता श्री ज्ञानीराम सरपंच ने की। ग्राम कंवारी एवं भोजराज के प्राइवेट स्कूलों के बच्चों ने कविता, भजन तथा अनपढ़ माता-पिता व अनपढ़ औलाद की हालत एवं शराबियों का नाटक पेश किया। इनके अतिरिक्त मा० सत्यपाल मरहेठा (नारनौंद), आर्यसमाज कंवारी के प्रधान श्री मुख्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, प्रो० जयपालसिंह जी ने माता-पिता, अध्यापक की जिम्मेवारी, विद्यार्थी के कर्त्तव्य, नैतिक शिक्षा एवं शराब से होने वाले नुकसान पर विचार रखे। सरपंच साहब ने परीक्षा में आये प्रथम, द्वितीय छात्रों को इनाम वितरित किये। सभा का संचालन इन्द्रसिंह आर्य ने किया। कार्यक्रम बहुत ही रोचक एवं प्रेरणाप्रद रहा।

—जयवीरसिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज, कंवारी

(पृष्ठ १ का शेष)

कथूरा, भंडेरी, मदीना के शराब के ठेके बन्द

ग्राम कथूरा जिला सोनीपत में भी गतवर्ष से शराब का ठेका चल रहा था। ग्राम की पंचायत भंग होने के कारण ग्रामसभा ने ग्राम के हजारों नर-नारियों के हस्ताक्षर तथा अंगूठे करवाकर शराब का ठेका बन्द करवाने हेतु हरयाणा सरकार को प्रस्ताव भेजा गया। स्थानीय विधायक तथा मन्त्री श्री कृपाराम पूनिया से भेंट करके आगामी वर्ष से ठेके की नीलामी न करवाने का अनुरोध किया। उनके विश्वास दिलाने पर भी १२ मार्च को सोनीपत के आबकारी कराधान अधिकारियों ने इस वर्ष के लिए भी ठेके की नीलामी ५ लाख २ हजार रुपये में करवा दी। इसका सैकड़ों ग्रामीणों ने जिलाधीश कार्यालय पर विरोध में प्रदर्शन किया तथा ठेकेदार को वहीं चेतावनी देते हुए कहा कि ग्राम की इच्छा के विरुद्ध किसी भी अवस्था में नये वर्ष से ठेका नहीं खोलने देंगे। इसकी तैयारी के लिए २६ मार्च को ग्राम की चौपाल में एक पंचायत का आयोजन किया गया। जिसमें सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह को भी मार्ग दर्शन हेतु आमन्त्रित किया गया। ग्राम के प्रमुख पंचायतियों तथा जनवादी युवा क्रांतिकारी मोर्चे के कार्यकर्त्ताओं ने सभाप्रधान जी को विश्वास दिलाया कि हम ठेका समाप्त कराने के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने के लिए तैयार हैं। उसी दिन रात्रि को शराब के ठेके के सामने पं० नौरंगलाल आर्य की भजनमण्डली के शराबबन्दी भजन तथा सभा उपदेशक पं० अर्जुनदेव आर्य का व्याख्यान हुआ। शराब के ठेकेदार पुलिस का सहारा लेकर जबरदस्ती ग्राम में शराब का खोखा टेकने का प्रयत्न किया, परन्तु ग्राम के संगठन के कारण उसे सफल नहीं होने दिया। जब भी ठेकेदार शराब की बोतलें ट्रक में लादकर ग्राम में लाता तभी ग्राम के नर-नारी लाठी तथा जेलियां लेकर खड़े हो जाते। ठेकेदार ने लालच देकर एक किसान को खोखा अपनी भूमि में रखने के लिए तैयार किया, परन्तु उसे वहां भी सफलता नहीं मिल सकी।

इसके बाद ठेकेदार ने पुलिस की सहायता से रात्रि को ग्राम भंडेरी तथा मदीना निकट आहूलाना के पास शराब का खोखा सड़क पर रख दिया। इसी सड़क से ग्राम की लड़कियां पढ़ने के लिए स्कूल में जाती थीं। ग्राम मदीना के नर-नारियों ने इसका विरोध किया और इस शराब के ठेके को उठवाने के लिए सरकारी अधिकारियों से मिले तथा प्रस्ताव भेजे, परन्तु ठेकेदार ने खोखा नहीं उठाया। गठवाला गोत्र के ग्राम मदीना, आहूलाना तथा छिछड़ाना आदि ५ ग्रामों की पंचायत में इस ठेके को बन्द करवाने का प्रस्ताव करते हुए सरकार को चेतावनी दी गई कि १७ अप्रैल तक ठेका बन्द नहीं किया गया तो ग्रामीण जनता इस मार्ग से यातायात बन्द कर देगी और शराब के (जहर) खोखे को जला दिया जायेगा। पंचायत में कुछ आर्यसमाज के बुजुर्गों ने यह भी घोषणा करते हुए कहा कि जब तक ठेका बन्द नहीं होगा, हम धरणे पर से नहीं उठेंगे। सभा के उपदेशक पं० अर्जुनदेव आर्य भी १५ अप्रैल को आर्यसमाज की ओर से सहयोग करने के लिए कथूरा तथा भंडेरी धरणों पर गये।

सरकार को जब जनजागृति तथा शक्ति प्रदर्शन का आभास हुआ तो विवश होकर १६ अप्रैल की सायं को ही भंडेरी से शराब का खोखा उठवाकर उसका सामान वापस गोहाना भिजवा दिया और इसी प्रकार १७ अप्रैल को श्री कृपाराम पूनिया ने जिलाधीश, उपमण्डल अधिकारी तथा गोहाना के तहसीलदार के साथ कथूरा में धरणे पर उपस्थित होकर ठेका बन्द करने की घोषणा की। इस प्रकार जनशक्ति के सामने सरकार को झुकना पड़ा।

आर्यसमाज मतलौढ़ा जि० हिसार का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री फतेहसिंह, मन्त्री—वीरभानु, कोषाध्यक्ष—दयानन्द शास्त्री, प्रचारमन्त्री—सत्यवीर शास्त्री।

ठेका अवैध शराब का : संरक्षण थानेदार का

कोसली, १६ अप्रैल (निस)। रोहतक जिले के दक्षिणी छोर पर बसे इस ऐतिहासिक कस्बे में अंग्रेजी शराब के अधिकृत ठेके को न चलने देने का मामला थानाध्यक्ष ने अपनी प्रतिष्ठा का सवाल बना लिया है। लेकिन इसी थानाध्यक्ष के संरक्षण में अंग्रेजी शराब का अवैध ठेका सरे-आम चल रहा है।

पता चला है कि शराब के ठेकेदार और थानाध्यक्ष में "महीना" बन्धने पर विवाद होगया। थानाध्यक्ष प्रतिमास १३०० रुपये की मांग कर रहा है, जिसमें उसके घर के खर्च सहित नीचे वाले स्टाफ का भी खर्च शामिल है, लेकिन ठेकेदार ने इस धन्धे में नया होने के कारण यह महीना राशि बांधने से इन्कार कर दिया। परिणाम वही हुआ जो एक पुलिस दरोगा से बिगाड़कर होता है।

दरोगा ने पहले तो कोसली में अंग्रेजी शराब बेचने की छूट उन लोगों को दे दी जो ३१ मार्च, ८८ तक यहां का ठेका लिए हुए थे। कायदे से ये ठेकेदार ३१ मार्च के बाद शराब नहीं बेच सकते, लेकिन दरोगा का संरक्षण प्राप्त होने पर तो कायदे-कानून का निर्णय उनके हाथ में आ जाता है।

दूसरा काम दरोगा ने नये ठेकेदार को मुख्य स्थान पर दुकान न लेने देने का किया। मजबूरन इन ठेकेदारों को अब एक ऐसी गली में अपनी दूकान बनानी पड़ी, जहां मुश्किल से ग्राहक पहुंच पाता है। ठेकेदार को आबकारी विभाग को प्रतिदिन तीन हजार रुपये टैक्स के रूप में देने पड़ते हैं, चाहे उसकी बिक्री हो या न हो। ठेकेदार ने इस सारी घटना की जानकारी वरिष्ठ आबकारी अधिकारियों को दे दी है।

इधर पुलिस अधिकारियों का कहना है कि अवैध शराब बेचने या शराब की समानांतर दूकान खोलने के विरुद्ध आबकारी विभाग कार्रवाई करने में सक्षम है। अगर कोई थानेदार किसी ठेके पर जाकर चैकिंग करे तो यह अवैध कार्रवाई मानी जायेगी। इन अधिकारियों के अनुसार पुलिस तो तभी कार्रवाई कर सकती है, जब शराबियों के कारण शांति भंग होने का खतरा उत्पन्न होगया हो।

यह भी चर्चा है कि इस थानाध्यक्ष को प्रदेश के एक मन्त्री का संरक्षण प्राप्त है। (दैनिक ट्रिब्यून से साभार)

दहेज लोभी : शादी होना मुश्किल हुआ

कुरुक्षेत्र, ४ अप्रैल (निस)। दहेज के लालच के कारण कुरुक्षेत्र जिले की पुण्डरी विधानसभाई क्षेत्र के ग्राम सियोली के एक ब्राह्मण परिवार के लड़के की अब शादी नहीं हो सकेगी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार तीन दिन पहले थानेसर के एक ब्राह्मण कपड़ा विक्रेता ने अपनी लड़की की शादी की बात सियोली ग्राम के एक ब्राह्मण परिवार में तय करदी थी। आगामी १६ अप्रैल की सगाई निश्चित थी। शादी तय करते समय लड़के के पिता ने सामर्थ्य के अनुसार दहेज देने के लिए लड़कीवाले को राजी कर लिया था, मगर इस रविवार को लड़के का बाप एक रिश्तेदार के साथ लड़कीवालों के यहां आया और सगाई पर ४० हजार रुपया नगद देने की मांग की, ताकि लड़के को कपड़े का व्यापार कराया जाये।

इस पर लड़कीवालों ने न केवल लड़के के पिता को बुरा भला कहा, बल्कि शादी करने से भी इंकार कर दिया। इतना ही नहीं लडकी के पिता ने इस घटना की खबर सारी बिरादरी में भिजवा दी, जिस से अब सियोली गांव के उस ब्राह्मण को अपने लड़के के लिए बहू ढूंढ पाना मुश्किल हो रहा है।

सती के मसले पर दो शंकराचार्यों में असहमति

होशंगाबाद, १७ अप्रैल (भाषा)। वेदों में सती का समर्थन है या नहीं इस विषय के दो प्रमुख हिंदू धर्माचार्यों के मत समान नहीं हैं। पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ के सतीप्रथा सम्बन्धी विचारों से कांची कामकोटि के शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती सहमत नहीं हैं।

अस्थायी तौर पर पद छोड़ने से देशभर में चर्चित कांची कामकोटि के शंकराचार्य जयेंद्र सरस्वती ने कल यहां संवाददाताओं से कहा कि सतीप्रथा वेद सम्मत नहीं है। यह प्रथा प्राचीनकाल से देश में सदाचार और शीलरक्षण पर आधारित है। इसे वेदों के अनुरूप ठहराना उचित नहीं है।

(जनसत्ता से साभार)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित—

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर यमुनानगर में १ मई से प्रवेश प्रारम्भ

आप सभी आर्य सज्जनों को यह जानकर अति हर्ष होगा कि स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती की पुण्य भूमि (वैदिक साधन आश्रम यमुनानगर) में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सफल प्रयत्नों के द्वारा पुन: त्यागी, तपस्वी, सदाचारी, कर्मनिष्ठ प्रचारक तैयार करने के लिए सिद्धांत शिरोमणि एवं शास्त्री की मान्यता प्राप्त उपाधि का प्रवेश १ मई से प्रारम्भ होकर, अध्यापन १ जुलाई से प्रारम्भ हो जावेगा। प्रवेशार्थी अभी से ही पत्र-व्यवहार करके अपना स्थान सुरक्षित करालें। इस महाविद्यालय की विशेषता यह होगी कि आर्ष साहित्य पठन-पाठन के साथ भोजन आवास व्यवस्था सर्वथा निशुल्क रहेगी। प्रवेशार्थी की योग्यता संस्कृत के साथ दसवीं, प्राज्ञ, प्रथमा वा इसके समकक्ष होनी चाहिए। १६ वर्ष से अधिक आयु के अविवाहित छात्र ही प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे। प्रवेशार्थी ऋतु अनुकूल वस्त्र व बर्तन साथ लावें।

अन्य विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क व पत्र-व्यवहार निम्न पते पर करें—

प्रबन्धक—श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री
श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर,
यमुनानगर (हर०)

आर्यसमाज के उत्सवों का कार्यक्रम

आर्यसमाज नई कालोनी गुडगांव	२२ से २४ अप्रैल
„ पिंजोर जि० अम्बाला	२२ से २४ „
„ नरेला (दिल्ली)	२३-२४ „
„ लोहारु जि० भिवानी	३० से १ मई
„ खेल बाजार पानीपत जि० करनाल	२९-३० से १ „
„ नारंग जि० सिरमोर (हिमाचल)	२९-३० से १ „
„ सोनीपत नगर	६ से ८ „
„ कुंजपुरा जि० महेन्द्रगढ़	१४-१५ „
आर्य वीरदल रोहतक	२० से २२ „
आर्यसमाज कनीना जि० महेन्द्रगढ़	२१-२२ „
„ ठोल जि० कुरुक्षेत्र	२० से २२ „
„ भादस जि० गुडगांव	२८ से ३० „
श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर यमुनानगर जि० अम्बाला	२८-२९ „

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

रोहतक में भाषण प्रतियोगिता

प्रत्येक राष्ट्र एवं जाति का उत्थान उसके बच्चों एवं युवक-युवतियों के बौद्धिक, नैतिक एवं चारित्रिक निर्माण पर निर्भर करता है। इसी भावना के दृष्टिगत एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन रविवार दिनांक १५ मई, १९८८ को सायं ४ बजे से महता भवन (स्व० देवराज सेठी के मकान के सामने) किला रोड, रोहतक में किया जारहा है। प्रतियोगी १० मई तक आर्य वीरदल रोहतक कार्यालय से सम्पर्क करें।

संयोजक—आर्य वीरदल, रोहतक

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

वेद-प्रचार

दिनांक ६-४-८८ को कंवारी (हिसार) में पं० नोरंगलाल जी की भजनमण्डली द्वारा वेदप्रचार किया गया। प्रातःकाल आर्यसमाज मन्दिर नलवा में हवन किया गया। रात्रि को गांव के चौक में पं. जी के समाज सुधार के भजन हुए। सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने भी शराबबन्दी एवं नारी जाति का आदर करो पर विस्तार से विचार रखे। प्रातःकाल यज्ञ किया गया। बाद में दोपहर व रात्रि को खेतो की ढाणी में वेदप्रचार किया। पंडित जी ने भगतसिंह का इतिहास रखा। प्रातःकाल हवन किया गया। निकट की ढाणियों मे काफी संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर महात्मा अग्निदेव जी ने भी 'बलवान् सन्तान कैसे बनें' पर विचार रखे।

—इन्द्रसिंह आर्य उपमन्त्री आर्यसमाज कंवारी

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक
२. " फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार
३. " सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत
४. " हरीश एजेन्सीज ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत
५. " भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल
६. " घनश्यामदास सीताराम बिचला बाजार, भिवानी
७. " कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा
८. " कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद
९. " चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/५ जेकमपुरा, गुड़गांव

आर्यसमाज जेल रोड प्रेमनगर, रोहतक का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

रोहतक १३ अप्रैल : स्थानीय आर्यसमाज प्रेमनगर जेल रोड का चतुर्थ वार्षिक उत्सव प्रेमनगर स्थित आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में १२-१३ अप्रैल को मनाया गया। जिसमें आतंकवाद विरोधी सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, युवक सम्मेलन, नारी मुक्ति सम्मेलन तथा व्यायाम सम्मेलनों का आयोजन किया गया।

विभिन्न सम्मेलनों में भारतीय व्यायामो तथा योग को बढ़ाना, शराब, अश्लील साहित्य, नृत्य, दहेज, सतीप्रथा, शिक्षा प्रणाली तथा नशीले पदार्थों के विरोध में प्रस्ताव पारित किये गये।

केन्द्र सरकार से पंजाब को सेना के सुपुर्द करने पर जोर दिया गया।

सम्मेलन में श्री जयपाल व पुरोहित प्रकाशमुनि जी भजनोपदेशक, श्री राममेहर अधिवक्ता, आचार्य बलवीरसिंह जी महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक, श्री कृष्णकांत जी वैदिक प्रचारक तथा स्वामी धर्मानंद जी पानीपत ने सम्बोधित किया। व्यायाम सम्मेलन में श्री ब्र. ओमदर्शन ने योग शक्ति द्वारा हाथ की नाड़ी रोकना, नाक से हवा भरकर बलैडर फाड़ना, नुकिले सरिये आंख व गर्दन से मोड़ना आदि का सफल प्रदर्शन किया गया।

मन्दिर में सार्वजनिक वाचनालय का उद्घाटन रोहतक नगर पालिकाध्यक्ष श्री सुन्दरलाल सेठी ने किया तथा मन्दिर तक मार्ग को पक्का कराना तथा मन्दिर में पानी देने की घोषणा के साथ ही प्रेमनगर की सफाई, पानी, सड़क व रोशनी की समस्याओं का कालोनी में निरीक्षण किया तथा उन्हें सुधारने की घोषणा की। मन्दिर में सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ श्री विद्याव्रत शास्त्री तथा श्री प्रकाशमुनि के ब्रह्मत्व और पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

—महावीरसिंह शास्त्री मन्त्री

पं० विशुद्धानन्द मिश्र का अभिनन्दन

स्वर्गीय श्री दीपचन्द आर्य जी की पुण्य स्मृति में नई दिल्ली ३ अप्रैल, ८८ को संस्कृत के प्रचारक-प्रसारक 'वेदार्थ कल्पद्रुम' के सुप्रसिद्ध मनीषी लेखक पं० विशुद्धानन्द मिश्र को आज आर्यसमाज नया बांस के वार्षिकोत्सव पर स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के प्रधान पं. राजवीर शास्त्री व मन्त्री श्री धर्मपाल आर्य द्वारा 'आर्यरत्न' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर २१ हजार रुपये, एक शाल एवं अभिनन्दन-पत्र भेंट किया गया। समारोह में श्री पं० अभिविनय भारती, श्री शिवराज शास्त्री, प्रो० सुरेन्द्रकुमार, प्रो० रत्नसिंह, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री रामनाथ सहगल और अनेकों आर्यसमाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए।

—धर्मपाल आर्य मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४)
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि० नं० 23207/73   पंजि० सं० P/RTK 49



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री   १७ वैशाख २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्क २३   ७ मई, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश मे ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

जरूरी है शराब के विरुद्ध आंदोलन

आज पूरे विश्व में मादक पदार्थों के बढ़ते उपयोग एवं उसकी तस्करी पर चिन्ता व्यक्त की जारही है। इन मादक पदार्थों से मुक्ति पाने एवं जनता को जागरूक करने के लिए राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मेलन एवं गोष्ठियां आयोजित की जारही हैं। मादक पदार्थ लेने वाले नशेड़ियों की आदत छुड़ाने के लिए अनेक सरकारों ने अपने-अपने देश में नशामुक्ति केन्द्रों की स्थापना तक की है। इन नशामुक्ति केन्द्रो पर हर साल करोड़ों रुपये खर्च किये जारहे हैं। पर इसके उपयोग एवं तस्करी में कोई कमी नजर नही आरही है। अब इसकी तस्करी में राजनयिकों एवं सेना के उच्च अधिकारियों के नाम भी शामिल होने लगे हैं। मादक पदार्थों की तस्करी को लेकर कई सरकारो के बीच तो आपसी सम्बन्ध भी बिगड़ने लगे हैं। तात्पर्य यह है कि मादक पदार्थों के उपयोग एवं तस्करी से हर जगह हाय-तोबा मची हुई है। पर इसके विपरीत शराबखोरी जिसके चलते पूरे विश्व को भारी नुकसान हो रहा है, के प्रति एक-दो को छोड़कर लगता है किसी देश को चिन्ता नही है। किसी देश में शराबखोरी के खिलाफ न कोई अभियान चलाया जारहा है, न इसकी लत छुड़ाने के लिए अस्पताल या शराबमुक्ति केन्द्रो की स्थापना की जारही है।

हालांकि यह सर्वविदित है कि शराबखोरी का स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। हृदय रोग, कैंसर एवं मानसिक विकार के बाद शराबखोरी का चौथा स्थान है, जिसके चलते बड़ी संख्या में लोग मौत के शिकार होते हैं। यह भी साबित हो चुका है कि शराबियों की पैदा होने वाली सन्तानों पर भी इसका प्रतिकूल असर पड़ता है। शराबखोरी के कारण बड़े पैमाने पर दुर्घटनायें होती हैं। चोरी, हत्या एवं दूसरे तरह के सामाजिक एवं आर्थिक अपराधों को बढ़ावा मिलता है। यही नही आज के इस मशीनीयुग में शराबखोरी के चलते उत्पादन विशेषरूप से औद्योगिक उत्पादन की भारी क्षति हो रही है। आंकड़े बताते हैं कि इस शराबखोरी के चलते विकसित देश अमरीका में ४५०० से १२००० करोड़, कनाडा में ७६० करोड तथा ब्रिटेन में १५० करोड डालर मूल्य की सालाना आर्थिक क्षति होती है। पर शराबखोरी घटने की बजाय, बढ़ती जारही है। पहले जहां शराबखोरी सम्पन्न वर्गों तक ही सीमित थी, वह आज हर वर्ग के लिए फैशन बन गई है। जहां पहले मुख्यतया बुजुर्ग लोग, राजे-महाराजे और उच्च पदस्थ अधिकारी इसका सेवन करते थे, वहीं अब इसका उपयोग समाज के हर तबके में, हर आयु वर्ग के लोगों में होने लगा है। पश्चिम के औद्योगिक रूप से विकसित देशो में तो महिलायें एवं बच्चे भी शराबखोरी के शिकार होने लगे हैं।

वैसे शराब पहले भी लोग पीते थे। पर उसकी एक सीमा होती थी, एक आयु होती थी। उदाहरण के तौर पर यदि हम प्राचीन रोम एवं ग्रीस पर नजर डालें तो पता चलेगा कि वहां २५ वर्ष की आयु से पूर्व शराब पीने की सख्त मनाही थी। भारत एवं चीन जैसे एशियाई देशों में भी कम आयु में शराब पीने की मनाही थी। ऐसा न करनेवालो को कड़ा दण्ड देने की व्यवस्था थी। मध्यकाल में फ्रांस के राजा फ्रांकोइस प्रथम ने एक आदेश जारी किया था, जिसमें अधिक शराब पीनेवाले को पहले चौबीस घण्टे तक रोटी-पानी से वंचित रखने की व्यवस्था थी। यदि वह दूसरी बार अधिक शराब पीये हुए पकडा जाता था तो उसके कान काट लिए जाते थे। यदि तीसरी बार पकडा जाता था तो उसका देश निकाला कर दिया जाता था। पर जैसे-जैसे समय बीतता गया या यो कहा गया कि औद्योगीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई तो शराबखोरी के प्रति नजरिया भी बदलता गया। फिर भी इसके खिलाफ कुछ कदम उठाये जाते रहे। १८वी शताब्दी में इंग्लैंड की संसद ने शराब के ऊपर भारी टैक्स लगाया। १८०२ में जर्मनी में शराबखोरी के खिलाफ कानून बनाया गया और कैद तक की सजा की व्यवस्था की गई। पर कुल मिलाकर शराबखोरी में वृद्धि होती ही गई। अमरीकी महिलाओं ने तो इस वृद्धि के खिलाफ अभियान-सा छेड़ दिया। १८७४ के बाद तो उन्होंने शराबखोरो एवं मदिराघरो के खिलाफ प्रदर्शन तक किये। यही नहीं कई जगहों पर उन्होने इन पर धावे भी बोले। इस तरह शराब के उत्पादन एवं उसकी बिक्री पर रोक लगाने के लिए अमरीकी सरकार को कानून बनाना पडा। लेकिन इस रोक का नतीजा हुआ कि शराब का गैर-कानूनी उत्पादन एवं व्यापार भूमिगत रूप से तेजी से बढ़ने लगा और फायदे की जगह हानि अधिक होने लगी। परिणाम हुआ कि १९३२ में इस कानून को रद्द कर दिया गया। कहने का तात्पर्य यह कि औद्योगीकरण के साथ ही शराब विकसित समाज का अंग बनता गया। आज शराबखोरी की बीमारी विकासशील एवं अविकसित देशो में भी उसी रफ्तार में फैल रही है और शराब के उत्पादन एवं उपयोग में बेतहाशा वृद्धि होती जारही है।

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम कार्यालय के अनुसार पिछले दो दशको के दौरान विश्व मे शुद्ध शराब की खपत में ५० प्रतिशत, वाइन की खपत में २० प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसी तरह बीयर की बढ़ती मांग के कारण उसके उत्पादन में १२० प्रतिशत की वृद्धि हुई है। प्राप्त आंकड़ो के अनुसार प्रतिवर्ष प्रति व्यक्ति सबसे अधिक शराब की खपत फ्रांस में होती है। हालांकि पहले की तुलना में यह खपत कम है, क्योंकि १८६५-१९०५ के दौरान प्रति व्यक्ति शराब की खपत १६.२ से बढ़कर २१.२ लीटर होगई थी। फिर वहां इस समय प्रतिवर्ष प्रति व्यक्ति शुद्ध शराब की खपत १८ लीटर है। फ्रांस में लगभग ५० लाख व्यक्ति ऐसे हैं, जो बहुत अधिक शराब पीते हैं। वहां शराबखोरी के आदी ४० हजार व्यक्तियो की हर साल मौत हो जाती है।

अमरीकी मनोवैज्ञानिक एस कोविंग्टन के अनुसार अमरीका में

(शेष पृष्ठ ५ पर)

ईश-उपनिषत्-सार (२)

(पं० धर्मदेव 'मनीषी' व्याकरणाचार्य, गुरुकुल कालवा)

गतांक से आगे—

अन्यदेवाहुर्विद्यया अन्यदाहुरविद्यया।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद् विचचक्षिरे ॥१०
विद्यां चाविद्यां च यस्तद् वेदोभयँ सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ॥११

आर्य विद्वान् कहते हैं कि "विद्या से शम, दम, तितिक्षा आदि अमूल्य फल मिलता है और कर्म से स्त्री, पुत्र, ऐश्वर्य आदि लाभ होता है, हम विद्वान् आचार्यों के ऐसे ही स्तुत्य, मंगलमय उपदेश सुनते चले आते हैं, जिन्होंने हमारे लिए सदैव वेद का व्याख्यान किया है।" जो सकल वेदवेत्ताओं में श्रेष्ठ पुरुष होता है, वह ज्ञान और कर्म दोनों साथ-साथ एक ही मनुष्य से सेवनीय एवं अनुष्ठेय है, ऐसा जानता है। अत एव वह ज्ञानवान् जन सत्कर्म द्वारा जन्म-मरण प्रवाह को पारकर सद्विद्या से अमृतपद मोक्षपद को प्राप्त करता है। जो बुद्धिमानों में अग्रगण्य कर्मयोगी मनुष्य ज्ञान में सुकर्म और सुकर्म में ज्ञानयोग देखता है अर्थात् दोनों को एक साथ उपासनीय मानता है, वह इसी जन्म में ही कल्याण-पद पा लेता है। जैसे दोनों चक्रों से युक्त रथ पर चढ़कर जाता हुआ नरेन्द्र लक्ष्यस्थल पर पहुंच जाता है।

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽसंभूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ संभूत्याँ रताः ॥१२

जो जड़ोपासक मूर्खजन कारण शरीररूप, पराधीन, असंभूति नामक जड़ प्रकृति की उपासना करते हैं, वे मंगलमय मोक्षपद को छोड़कर आपत्तियों के धाम, अन्धकारपूर्ण योनियों में प्रवेश करते हैं। जो विषय-विलासीजन मूढ़जन मूलप्रकृति में आसक्त स्त्री-पुरुषों से भी अधिक भयंकर तामस योनि पाते हैं।

अन्यदेवाहुः संभवादन्यदाहुरसंभवात्।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद् विचचक्षिरे ॥१३

वे आचार्यप्रवर ऋषि निश्चयपूर्वक संभूति और असंभूति के फल अलग-अलग बतलाते हैं तथा कहते हैं कि "हम उन मनीषी मुनियों के ऐसे ही हितकारक वचन सुनते हैं, जिन्होंने हम लोगों के समक्ष व्याख्यान दिये हैं।

संभूतिं च विनाशं च यस्तद् वेदोभयँसह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा संभूत्याममृतमश्नुते ॥१४

जो श्रेष्ठ विद्वान् इस संसार में संभूतिनामक कार्य और विनाशनामक कारणरूप दो प्रकार के जगत् को तथा स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण तीन प्रकार के शरीरों को एक ही समय में, एक ही व्यक्ति से उपासनीय=सेवनीय जानता है, वह उन उपर्युक्त द्विविध जगत् और त्रिविध शरीरों के ज्ञान एवं संरक्षण द्वारा मृत्यु को तर जाता है और अमृतपद पा लेता है। इस उपासक व्यक्ति के वे तीनों शरीर अच्छी प्रकार उन्नत और विकसित होकर सुखदायक बनते हैं, यह प्राणवान् जन कारण देह से स्वमृत्यु को लांघ जाता है और स्थूल एवं सूक्ष्म देहों से मुक्त हो जाता है।

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥१५

सचमुच! अद्भुत सुवर्णमय पात्र=प्राकृतिक चमकीली चीजों से=भोग्यपदार्थों से सत्य का मुख=प्रभु का स्वरूप ढका हुआ है। हे पूजनीय पोषक प्रभो! तू अपने सत्य स्वरूप के प्रदर्शनार्थ उस भौतिक आवरण को खोल दे। चांदी, सोना, मोती और रत्नों के चमकदार तेज से मानव का मन लुब्ध एवं चंचल बन जाता है, इसीलिये संसार में मूढ़ मनुष्य प्रायः ब्रह्म भगवान् ओ३म् का सच्चा स्वरूप जान नहीं पाता।

पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह॥
तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि ॥१६

हे प्रकाशरूप, उत्तम पोषक, न्यायकारी प्रजापालक अनुपम प्रभु परमात्मन्! ऋषे! तू क्लेशकारक तेजोमय किरणों को मुझ पर से हटा दे और सुखदायक श्रेष्ठ किरणों को मुझ पर फैला दे। हे विभो! तेरे उस मंगलकारी तेजोमय स्वरूप का—जो कि हृदय में अतिशय दीप्त रूप में विराजमान है—मैं दर्शन करूं। हे सच्चिदानन्द ओ३म् ईश्वर! समाधि दशा में मैं अमर नर आत्मा त्वत्सदृश सच्चिदानन्द बन जाऊं।

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तँ शरीरम्।
ओ३म् क्रतो स्मर क्लिबे स्मर कृतँ स्मर ॥१७

यह जीवात्मा अपार्थिव एवं अमर है। यही सदा एक शरीर से दूसरे शरीर में जाता है। शरीर भस्म=राखरूप में परिणित हो जाता है। केवल शुभ और अशुभ कर्म आत्मा के साथ जाते हैं। इसलिए हे कर्मशील जीवात्मन्। तू अन्त समय में सामर्थ्य लाभ के लिए केवल ओ३म् भगवान् का स्मरण कर। ऐसा परम-पिता महेश्वर कथित वेद भगवान् उपदेश दे रहे हैं।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥१८

हे ज्ञानप्रकाशक, शुभ मार्ग में ले जानेवाले सर्वज्ञ देव! वरणीय राजन्! तू हमको अभ्युदय=सांसारिक परमोन्नति तथा मोक्ष=आनन्द प्राप्ति के लिए कल्याण मार्ग से ले जा। तू सर्वजन के हृदय में विराजमान है, अतः हमारे सब कर्म और मतियों को जानता है। इसलिए हे आनन्दकन्द ईश्वर! कृपया तू हमारी अन्तःकरण भूमि में पैदा हुए पापरूपी कांटों को शीघ्र उखाड़ डाल। हे मुनियों के आनन्द दाता वन्दनीय प्रभो! प्रेम से हम तेरी ही स्तुति एवं प्रणति करते रहें।

हे सकल संसारवासी नर-नारीगण! यह ईश का सन्देश आपको कह रहा है कि—'तुम सब स्त्री-पुरुष ब्रह्मानन्दरूपी फल देनेवाली सकल विद्यारूपी अरण्यों से पवित्रित, मनोहर एवं प्रशांत वेदरूपी निर्मल गंगा के तट पर शीघ्र आकर त्रिविध तापजन्य शोक से अपनी आत्मा को सम्यक्तया मुक्त करो।

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

घांघलान जिला रोहतक: प्रधान—सर्वश्री जगदेवसिंह, मन्त्री—कर्णसिंह, कोषाध्यक्ष—मलूकसिंह।

अटायल जिला रोहतक: प्रधान—सर्वश्री दीपचन्द, मन्त्री—बलजीतसिंह, कोषाध्यक्ष—टेकराम।

मथाबांस जिला रोहतक: प्रधान—सर्वश्री बलवन्तसिंह, मन्त्री—रामकुमार, कोषाध्यक्ष—लक्ष्मणसिंह।

गढ़ी कुण्डल जिला सोनीपत: प्रधान—सर्वश्री ओम्प्रकाश, मन्त्री—शीशराम, कोषाध्यक्ष—बलराजसिंह।

पाकस्मा जिला रोहतक: प्रधान—सर्वश्री सूरजमल, मन्त्री—देवव्रत, कोषाध्यक्ष—किताबकौर।

सापड़ौदा जिला रोहतक: प्रधान—सर्वश्री ज्ञानचन्द, मन्त्री—हरिकृष्ण शास्त्री, कोषाध्यक्ष—रणधीरसिंह।

सासोट जिला रोहतक: प्रधान—सर्वश्री रिसालसिंह, मन्त्री—रतीराम, कोषाध्यक्ष—सुलतानसिंह।

सिहोटी जिला सोनीपत: प्रधान—सर्वश्री रणधीरसिंह, मन्त्री—कंवलसिंह, कोषाध्यक्ष—प्रेमसिंह।

खड़की जिला रोहतक: प्रधान—सर्वश्री ओम्प्रकाश, मन्त्री—उमेदसिंह, कोषाध्यक्ष—महेन्द्रसिंह।

नौकोठी जिला रोहतक: प्रधान—सर्वश्री वेद इन्द्रसिंह, मन्त्री—रणधीरसिंह, कोषाध्यक्ष—धर्मसिंह।

हरयाणा में शराबबन्दी आंदोलन की गतिविधियां—

चोपटा में शराब ठेका हटाने के लिए महिलायें भी धरने पर

सिरसा जिला में चोपटा नाथुसरी नामक स्थान है। वहां पर सरकार ने बजरंग शिव मन्दिर व अनेक शिक्षण संस्थाओं के बीच में शराब का ठेका खोल दिया है। ज्ञातव्य है कि नेत्रहीन स्वामी हरिश्चन्द्र जी ने १९८२ में ६ दिन की भूख हड़ताल करके ठेका बन्द करवाया था। इस बार भी स्वामी जी ने अनेक प्रयत्न किये। तीन बार मुख्यमन्त्री जी से मिलने पर भी ठेका नहीं उठा। अब स्वामी जी ने इलाके में घूमकर १ मई से सैंकड़ों नर-नारियों के साथ धरना दे दिया है। स्वामी जी का कहना है कि जब तक यह पाप का अड्डा यहां से नहीं उठेगा, तब तक धरणा जारी रहेगा। गत १२ अप्रैल को सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी व संग्रामसिंह आर्य स्वामी जी से मिले व ठेका हटाने बारे बातचीत की। स्वामी जी ने हमारा सहयोग मांगा। क्रांतिकारी जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। उन्हीं दिनों निकट के गांव नाथुसरी, लुदेसर आदि में सभा की तरफ से शराबबन्दी प्रचार किया और ग्रामीणों को स्वामी जी के इस शराबबन्दी आंदोलन में पूर्ण सहयोग देने की प्रेरणा की। इस समय भी सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी धरणे को सफल करने के लिए योगदान करने बारे पहुंच रहे हैं।

कुरुक्षेत्र के एक मन्दिर में शराब के दो ठेके

लाडवा, २ मई (वार्ता) : यहां से बीस किलोमीटर दूर कुरुक्षेत्र के एक मन्दिर परिसर में शराब के दो ठेके खुले हैं। यह मन्दिर कुरुक्षेत्र में राजा हर्षवर्धन के किले के साथ बना है। यह स्थान कुरुक्षेत्र नगर पालिका की सीमा से बाहर माना जाता है, जबकि हर्ष का किला इससे बहुत दूर तक फैला होने के बावजूद नगर पालिका की सीमा में माना जाता है। सूत्रों से पता चला कि ये ठेके कुछ अधिकारियों की मिलीभगत से खोले गये हैं और ये पंचायत ने बाकायदा एक प्रस्ताव पारित करके, सार्वजनिक रूप से बोली पर दिये हैं। जबकि भारतीय कानून के अनुसार मन्दिर परिसर से २०० गज की दूरी तक किसी भी दिशा में शराब अथवा मीट की दूकानें खोलना वर्जित व अपराध है। मगर अधिकारियों ने कानून की धज्जियां उड़ाते हुए, मन्दिर की दो दूकानें, शराब के ठेकेदारों को किराये पर दिलवा दीं। उल्लेखनीय है कि बोली के समय ठेका खोलने का स्थान पहले ही निश्चित कर दिया जाता है।

इससे पूर्व कुरुक्षेत्र में दो स्थानों पर खुले ठेके महिलाओं ने प्रदर्शन, धरने तथा आंदोलन करके बन्द करवाये थे। अब यह मामला धार्मिक और श्रद्धालु लोगों के लिए सिरदर्द बना हुआ है। इस ठेके के विरुद्ध म[illegible]ला वर्ग में पुनः रोष पाया जारहा है। इनमें से एक ठेका हंसराज एण्ड कम्पनी और दूसरा मनोचा एण्ड कम्पनी ने लिया है। एक ठेका अंग्रेजी व दूसरा देसी शराब का है।

मनोचा एंड कम्पनी एक तरफ तो कस्बा इन्द्री में मन्दिर के विस्तार के लिए सहयोग कर रही है और दूसरी तरफ कुरुक्षेत्र में मन्दिर परिसर में शराब का ठेका खोलकर धर्म के विरुद्ध कार्य कर रही है। पता चला है कि कुरुक्षेत्र के ठेकों में यह सबसे महंगी बोली पर छूटा है।

आर्यसमाज पिञ्जौर का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज पिञ्जौर जि० अम्बाला का वार्षिक उत्सव २१ से २४ अप्रैल को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस शुभावसर पर श्री ब्र० रामप्रकाश जी ने शांति यज्ञ करवाया। रात्रि को सभा की पं० मुरारीलाल बेचैन की भजनमण्डली के मनोहर भजन तथा ब्र. रामप्रकाश के प्रवचन हुए। श्रोताओं के लिए ऋषिलंगर का भी आयोजन किया गया। सभा को ५०५) वेदप्रचारार्थ दिया गया। —मन्त्री

ठेके को अस्वीकृत करने की मांग

शाहबाद मारकण्डा, ३ मई (निस)। कुरुक्षेत्र जिला विश्व हिन्दू परिषद् ने कुरुक्षेत्र जिले के बाहरी ग्राम के शिवालय में शराब का ठेका खोलने की स्वीकृति प्रदान करने पर रोष प्रकट किया है।

यहां प्रेस को जारी एक बयान में इसे निन्दनीय कहा गया है। इसमें आगे सरकार से मांग की गई है कि वह इसमें हस्तक्षेप कर उक्त स्वीकृति को निरस्त करे।

शराब से नहाता गढ़वाल

गढ़वाल : आज कच्ची शराब की चपेट में आकर बर्बादी के कगार पर खड़ा है। वह अपनी उस छवि को खो रहा है, जिसके लिए वह प्रसिद्ध है। सम्पूर्ण गढ़वाल में शराब का अवैध धन्धा चरम सीमा पर है। जहां के लोग कुछ समय पहले तक शराब के नाम से परिचित नहीं थे। वही लोग आज पानी की तरह इसका सेवन कर रहे हैं। उनके पारिवारिक और सामाजिक जीवन नष्ट हो रहे हैं। इसी शराब ने यहां नारी का जीना दूभर कर दिया है। क्योंकि शराबी पति नशे में उस पर शारीरिक व मानसिक दोनों तरह के अत्याचार करता है।

—बचनसिंह रावत, सेवानगर, नई दिल्ली

हमें शराब नहीं, पानी चाहिये

गांव नलवा, भोजराज, उमरा, रतेरा, खानक जि० हिसार जहां नहर सुन्दर ब्रांच की टेल है। इन टेलों से १४ गांव जुड़े हुए हैं। गत सितम्बर मास से गांव की एक सूखाराहत संघर्ष समिति बनी हुई है। समिति के माध्यम से समय-समय पर अन्य सामूहिक समस्याओं के अतिरिक्त टेलों पर पानी न पहुंचने की बात को नहर अधिकारियों, विधायक मन्त्रियों एवं मुख्यमन्त्री सहित कई बार लिखित में रजिस्ट्री द्वारा व प्रत्यक्ष कई गांव की पंचायतें मिल चुकी हैं। लेकिन आज तक लगभग ११ महीने होगये हमें झूठे आश्वासनों के अतिरिक्त कुछ भी हाथ नहीं लगा।

कितनी बड़ी विडम्बना है कि उसी नहर पर १० किलोमीटर पीछे चोर हमारे हक का पानी मोगे फोड़कर अवैध पाईप डालकर सरेआम खारहे हैं और रो रहे हैं। टेलों के किसान इतने दिन से रो रहे हैं। कोई पूछनेवाला नहीं। आज तक मुख्यमन्त्री समेत किसी भी मन्त्री के कान पर जूं तक नहीं रेंगी है। समिति की मांग है कि जब भी नहर में पानी आये, हमारे हक का पानी टेलों पर पहुंचे। लोगों में रोष बढ़ता जारहा है। आशा निराशा में बदलती जारही है।

दूसरी ओर हरयाणा सरकार पानी की जगह शराब की नदियां बहा रही है। इस वर्ष शराब के ठेकों की बढ़ोतरी, अहाते खोलकर एवं अवैध शराब की बिक्री जोरों पर चलाकर पिछली सभी सरकारों का रिकार्ड तोड़ दिया है। हम हरयाणा सरकार से पूछना चाहते हैं, क्या हम खेती शराब से करेंगे? हमें शराब नहीं, पानी चाहिये। इस समय मुख्यमन्त्री चौ. देवीलाल जी का नारा भ्रष्टाचार बन्द, पानी का प्रबन्ध उल्टा हो रहा है। क्योंकि सरकार की शराब बढ़ावा नीति से भ्रष्टाचार कई गुणा बढ़ा है। वैसे भी शराब सब पापों की जड़ है। हिसार व सिरसा जिला के अनेक देहातों में अवैध शराब की बिक्री जोरों पर है, जिससे हरेक गांव का वातावरण बिगड़ चुका है। महिलाओं व सज्जन पुरुषों का जीना दूभर हो रहा है। सायंकालीन बसों में भी प्रायः शराबियों का ही बोलबाला रहता है। अतः अगर समय रहते सरकार नहीं चेती तो इसके गम्भीर परिणाम होंगे। शराब से चारों तरफ का वातावरण पूर्णतया दूषित हो चुका है। हम पुनः एक बार और हरयाणा सरकार से मांग करते हैं कि अवैध शराब की बिक्री पर तुरन्त रोक लगायें तथा टेलों पर हमारे हक का पानी पहुंचायें।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी

आर्य वीरदल हरयाणा की गतिविधियां

आर्य वीरदल हरयाणा की बैठक एक मई को करनाल में श्री उमेदसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में निर्णय किया गया कि हरयाणा में हिन्दी रक्षा आंदोलन को गतिशील बनाने के लिए हरयाणा के नगरों तथा ग्रामों में सार्वजनिक स्थानों की दीवारों पर नारे लिखवाने का कार्यभार आर्य वीरदल के मण्डलपतियों को सौंपा है।

विद्यालयों के अवकाश के दिनों में शिक्षण शिविरों का कार्यक्रम निम्न प्रकार बनाया गया है—

आर्यसमाज भांडवा जि० भिवानी	१६ से २१ मई
राजकीय विद्यालय नीमड़ीवाली जि० भिवानी	२२ से २६ ,,
डी० ए० वी० उच्च विद्यालय गुड़गांव	२२ से २६ ,,
दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर जि० अम्बाला	२३ से २६ ,,
डी० ए० वी० उच्च विद्यालय करनाल	३० से ५ जून
आर्यसमाज केहड़ी मदनपुर जि० रोहतक	३० से ५ ,,
दयानन्द उच्च विद्यालय पलवल जि० फरीदाबाद	६ से १२ ,,
आर्यसमाज नीलोखेड़ी जि० करनाल	६ से १२ ,,
,, जींद शहर	६ से १२ ,,
,, नरवाना जि० जींद	१२ से १६ ,,

छात्रों से निवेदन है कि अपने निकट के शिविरों में सम्मिलित होकर आर्यसमाज तथा चरित्र-निर्माण का शिक्षण प्राप्त करें।

—वेदप्रकाश आर्य मन्त्री

आर्यसमाज नई कालोनी गुड़गांव का आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

आर्यसमाज नई कालोनी गुड़गांव का २२ से २४ अप्रैल तक वार्षिक उत्सव के रूप में स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता में आर्य महासम्मेलन समारोहपूर्वक मनाया गया। १९ अप्रैल से सामवेद पारायण यज्ञ आरम्भ हुआ। पं. सत्यानन्द वेदवागीश के वेद प्रवचन तथा पं. चिरंजीलाल जी की भजनमण्डली के भजन प्रातः से रात्रि तक होते रहे। आर्य सम्मेलन में स्वामी ओमानन्द जी के अतिरिक्त हरयाणा के मन्त्री श्री सुभाष कत्याल ने भी सम्बोधन किया। श्री स्वामी ओमानन्द जी द्वारा २२ अप्रैल को ध्वजारोहण के पश्चात् नगर में शोभा-यात्रा निकाली गई। जिसमें नगर के सभी आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ता तथा आर्य विद्या मन्दिर की छात्रायें सम्मिलित थीं।

नारी रक्षा-सम्मेलन कु० प्रतिभा एम० ए० पी एच० डी० की अध्यक्षता में हुआ। इसमें श्री वेदप्रकाश जी, आचार्य रामप्रसाद जी, पं० सुखदेव शास्त्री आदि विद्वानों के व्याख्यान हुए और शराब, मांस, दहेज आदि प्रथा का विरोध किया गया। २३ अप्रैल को सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। सभाप्रधान जी ने सभा द्वारा चलाये जारहे शराबबन्दी अभियान का विस्तारपूर्वक विवरण सुनाया और जनता से इस बुराई को समाप्त करने का अनुरोध किया। प्रो० शेरसिंह जी ने इस अवसर पर एक शाकाहारी प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया। २४ अप्रैल को प्रातः सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई तथा आचार्य रामप्रसाद जी की अध्यक्षता में वेदप्रचार सम्मेलन हुआ। २४ अप्रैल की रात्रि को राष्ट्र रक्षा सम्मेलन सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी की अध्यक्षता में किया गया। जिसमें अनेक विद्वानों ने राष्ट्ररक्षा हेतु अपने विचार रखे। ब्र० ओमदर्शन ने अपने योगासन दिखाकर तथा शक्ति प्रदर्शन करके जनता को आर्यसमाज की ओर प्रभावित किया। इस उत्सव पर पं० चिरंजीलाल जी की भजनमण्डली के साथ श्री मंगलदेव आर्य तथा श्री मामचन्द आर्य के भी प्रभावशाली भजन हुए। आर्यसमाज की ओर से इस शुभावसर पर सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह जी को २१००) का चैक वेदप्रचारार्थ भेंट किया गया।

—श्यामलाल आर्य मन्त्री

आर्यसमाज लोहारु का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

३० अप्रैल से १ मई तक आर्यसमाज लोहारु जि० भिवानी का ४४वां वार्षिक उत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द सरस्वती आचार्य गुरुकुल झज्जर, वानप्रस्थी रामभुनि, हरिश्चन्द्र शास्त्री एवं भजनलाल आर्य, जयपाल आर्य, सभा उपदेशक धर्मवीर जी धर्मी, कन्या गुरुकुल पंचगांव की ब्रह्मचारिणियां सुमित्रा, उर्मिला, अनिता आदि सभी उपदेशकों द्वारा राष्ट्ररक्षा, गोरक्षा, शराबबन्दी, प्राचीन इतिहास एवं सैद्धांतिक विषयों पर खुलकर चर्चा हुई। ग्रामीण क्षेत्र से आये आर्य विशेष रूप से प्रभावित हुए। यज्ञ पर २५ नौजवानों ने यज्ञोपवीत लिया एवं शराब, बीड़ी आदि छोड़ने का व्रत लिया। सभा को वेदप्रचारार्थ ४७४) दान दिया।

—मन्त्री आर्यसमाज

दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर का उत्सव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय आदीपुर यमुनानगर, जि० अम्बाला का वार्षिक उत्सव २८-२९ मई को मनाया जारहा है। इस अवसर पर २३ मई से यजुर्वेद पारायण यज्ञ आचार्य सत्यप्रिय जी की देख-रेख में आरम्भ होगा। आर्य युवकों को आर्यसमाज में दीक्षित करने के लिए शिक्षण शिविर भी लगाया जारहा है। उत्सव पर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, प्रो० शेरसिंह जी, डा० रामप्रकाश, श्री बनारसीदास गुप्त उपमुख्यमन्त्री हरयाणा, कमला वर्मा मन्त्री हरयाणा आदि नेताओं के अतिरिक्त पं० विद्याभूषण, पं० ईश्वरसिंह तूफान, श्री जयपाल आर्य आदि की भजन मण्डलियां आदि भी पहुंच रहे हैं। उपदेशक तथा पुरोहित बनाने के लिए मैट्रिक पास छात्रों का प्रवेश आरम्भ होगया है। शिक्षा तथा भोजनादि की व्यवस्था निःशुल्क होगी। अतः इच्छुक छात्र अपना आवेदन-पत्र भेजकर अपना स्थान सुरक्षित करवा लेवें।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

तृतीय दर्शन शिक्षण शिविर

स्वाध्याय प्रेमी आर्यबन्धुओं को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि संस्कृत सेवा संस्थान हरिसिंह कालोनी, रोहतक के तत्त्वावधान में दिनांक ३० मई से २९ जून, ८८ तक वैशेषिक दर्शन शिक्षण शिविर का आयोजन किया जारहा है। स्वाध्याय प्रेमी आर्यबन्धु तथा आर्यसमाज अपना एक प्रतिनिधि भेजकर लाभ उठावें।

१. प्रवेश शुल्क २५) रु० है। २. पाठ का समय प्रातः ६ से ८ बजे तक। ३. पाठ में नियमित उपस्थिति अनिवार्य है। ४. आवास तथा भोजन का प्रबन्ध स्वयं करना होगा। ५. संस्थान की ओर से शिक्षार्थी को प्रमाण-पत्र भी दिया जायेगा। ६. शिविर में प्रवेश के लिए २५ मई तक अपना आवेदन-पत्र अवश्य भेज देवें। ७. अपना वैशेषिक दर्शन कापी, लेखनी आदि साथ लावें।

स्वामी योगानन्द सरस्वती	सुखदेव शास्त्री	सुदर्शनदेव आचार्य
प्रबन्धक	संयोजक	प्रशिक्षक

ठेका शराब

—श्रीभगवान्, छारा, रोहतक

हमारे गांव छारा, जिला रोहतक में ठेकेवाले नाजायजतौर पर खुलेआम शराब बेचते हैं। जिससे हमारे मौहल्ले का माहौल इतना बिगड़ है कि मौहल्ले की बहू-बेटियों से छेड़छाड़ होती है। उन्हें आने जाने व पानी भरने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ा है। इस ओर गांव की पंचायत तथा पुलिस की उदासीनता के कारण कोई ध्यान नहीं दिया जारहा। (दैनिक ट्रिब्यून ६-५-८८)

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में दयानन्दपीठ समाप्त करने का संकेत—

आर्यसमाज में गम्भीर प्रतिक्रिया

नई दिल्ली २२ अप्रैल। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अन्तर्गत विगत १२ वर्षों से चलते आरहे दयानन्द शोध पीठ और उस पर नियुक्त दयानन्द प्रोफेसर के पद को समाप्त किया जारहा है। इस पद पर कार्य करते हुए डा० श्रीनिवास शास्त्री और डा० कपिलदेव शास्त्री जैसे विद्वानों ने वैदिक साहित्य और ऋषि दयानन्द के वेद विषयक दृष्टिकोण पर अनेक ग्रन्थों की रचना की थी और यह ग्रन्थ विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित भी किये गये थे। साथ ही अनेक शोध छात्रों ने भी यहां शोध कार्य को सम्पन्न किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने बताया कि डा० कपिलदेव शास्त्री के अवकाश ग्रहण करने के बाद इस पद पर किसी नये विद्वान् की नियुक्ति करने पर आनाकानी की जारही है।

स्वामी जी ने कहा कि इस समाचार से समूचे आर्यजगत् में उत्तेजना फैलना स्वाभाविक है। उन्होंने कहा कि हरयाणा प्रांत आर्यसमाज के कार्यकलापों का गढ़ माना जाता है। यदि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संचालकों ने इस प्रकार की गलती की तो देशभर में इसकी जोरदार प्रतिक्रिया होगी।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौधरी देवीलाल जो विश्वविद्यालय के कुलपति भी हैं तथा हरयाणा के शिक्षा मन्त्री को पत्र लिखकर अवगत कराया है कि एक ओर तो भारत सरकार देश के सभी विश्वविद्यालयों में शंकर विद्यापीठ स्थापित करने की घोषणा कर रही है और दूसरी ओर हरयाणा सरकार द्वारा महर्षि दयानन्द विद्यापीठ को समाप्त करने का दुष्प्रयास हो रहा है। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज के जागरूक प्रहरी देवीलाल सरकार की इस मूर्खतापूर्ण गलती का देशव्यापी विरोध करेंगे।

इस विषय में आर्यसमाज का एक शिष्टमण्डल जल्दी ही चौ० देवीलाल से मिलेगा और उसके पश्चात् अन्तिम निर्णय करेगा।

—सच्चिदानन्द शास्त्री महामन्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

शराबियों की संख्या १.२० करोड़ है। इसमें आधी संख्या महिलाओं की है। इनमें बहुत-सी महिलायें तो ऐसी हैं जो गर्भावस्था के दौरान भी शराब पीती हैं। सान फ्रांसिस्को, केलीफोर्निया स्थित शराबखोरी पर बनी राष्ट्रीय परिषद् ने एक रिपोर्ट तैयार की है, जिसमें कहा गया है कि अमरीका के अन्दर नौ वर्ष की आयु के ३० प्रतिशत बच्चे शराब पीते हैं। रिपोर्ट के अनुसार किशोरों के बीच शराबखोरी विनाशकारी स्थिति में पहुंच गई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि १० से ११ वर्ष की आयु के एक लाख बच्चे सप्ताह में एक बार शराब अवश्य पीते हैं।

इस स्थिति को देखते हुए यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि शराबखोरी की समस्या कितना विकराल रूप धारण करती जा रही है। पर सोवियत संघ को छोड़कर विश्व के किसी देश ने अब तक इसके खिलाफ कोई अभियान शुरु नहीं किया है। हालांकि यदा-कदा अन्तर्राष्ट्रीय या राष्ट्रीय सेमिनारों में बढ़ती शराबखोरी पर चिन्ता अवश्य व्यक्त की जाती है, पर इससे छुटकारा पाने के लिए दुनिया के किसी और देश ने न तो अब तक कोई ठोस रास्ता चुन पाया है और न तो कोई कार्रवाई ही शुरु की है।

—श्याम नगीना

डा. भवानीलाल भारतीय की दयानन्द शोध पीठ में तीन वर्ष के लिए पुनः नियुक्ति

चण्डीगढ ४ अप्रैल। विगत साढ़े सात वर्षों से पंजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोध पीठ के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर कार्यरत आर्यसमाज के यशस्वी विद्वान् डा० भवानीलाल भारतीय अपने जीवन के ६० वर्ष तथा एक आदर्श शिक्षक जीवन की ३० वर्षीय कार्यावधि को पूरा कर औपचारिक रूप से ३० अप्रैल को अवकाश ग्रहण कर रहे हैं। किन्तु उनकी योग्यता एवं शोध प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय ने आगामी तीन वर्षों के लिए उनके कार्यकाल में वृद्धि कर प्रोफेसर पद पर ही उनकी पुनः नियुक्ति की है। इस प्रकार वे १९९१ पर्यन्त दयानन्द शोध पीठ के अन्तर्गत कार्य कर सकेंगे।

साथ ही पंजाब विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० आर० पी० बाम्बा ने उन्हें होशियारपुर स्थित विश्वेश्वरानन्द विश्वबन्धु संस्कृत तथा प्राच्य विद्या संस्थान का आनदरी निदेशक भी नियुक्त किया है, जिसका कार्यभार उन्होंने गत १७ मार्च को सम्भाल लिया। स्मरण रहे कि उपर्युक्त शोध संस्थान प्राच्य विद्या विषयक अध्ययन एवं शोध का एक विश्व विख्यात केन्द्र है, जहां विश्वविद्यालय की एम० ए०, पी-एच० डी० आदि उपाधियों के पठन-पाठन के अतिरिक्त उच्चतर वैदिक शोध की व्यवस्था है तथा इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सहस्रों पांडुलिपियों तथा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों से सुसज्जित विश्वेश्वरानन्द पुस्तकालय भी विद्यमान है।

आर्यसमाज के उत्सवों का कार्यक्रम

आर्यसमाज कुंअपुरा जि० महेन्द्रगढ़	१४-१५ मई
आर्य वीरदल रोहतक	२० से २२ ,,
आर्यसमाज कनीना जि० महेन्द्रगढ़	२१-२२ ,,
,, ठोल जि० कुरुक्षेत्र	२० से २२ ,,
,, भादस जि० गुड़गांव	२८ से ३० ,,
श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर यमुनानगर जि० अम्बाला	२८-२९ ,,
आर्यसमाज रोहुणा जि० सोनीपत	२८ से ३० ,,
,, भांडवा जि० भिवानी	२८ से ३० ,,
,, केहड़ी मदनपुर जि. रोहतक (शिक्षण शिविर)	३१ से ५ जून

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

वैदिक वृद्ध संन्यास आश्रम यमुनानगर

वैदिक वृद्ध संन्यास आश्रम, धर्मपुरा कालोनी, अशोक नगर, रेलवे वर्कशाप रोड, यमुनानगर में प्रथम वेदप्रचार समारोह २० से २२ मई; ८८ (७ से ९ ज्येष्ठ, २०४५) तक धूमधाम से मनाया जारहा है।

शोक समाचार

आर्यसमाज बूबका के प्रधान श्री कालूराम आर्य के सुपुत्र श्री ओम्प्रकाश आर्य का हृदयगति रुक जाने से दिनांक १९-४-८८ को देहांत होगया है जो केवल २८ वर्ष के नवयुवक थे। भगवान् से प्रार्थना है कि संतप्त माता-पिता एव समस्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति एवं सामर्थ्य दे और दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

आर्यसमाज गोहाना शहर का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री राजेन्द्रलाल, उपप्रधान—बलदेवराज, खेमचन्द; मन्त्री—रामकिशन, उपमन्त्री—डा० अशोककुमार, कोषाध्यक्ष—मदनमोहन, लेखानिरीक्षक—मा० निहालचन्द, वेदप्रचार अधिष्ठाता—रामप्रकाश आर्य।

उपेक्षित जनजाति उत्थान हेतु आर्यसमाज सक्रिय

(निज संवाददाता)

देहरादून, २२ अप्रैल। निकटस्थ ग्राम मोथरोवाला की बंगाली बस्ती में बसे 'कंजर' जनजाति के लगभग एक सौ लोग पिछड़ी दशा में और उपेक्षित तथा प्रताड़ित सामाजिक अवस्था में पड़े रहे हैं। आर्यसमाज ने इनके नैतिक तथा सामाजिक उत्थान का कार्यक्रम हाथ में लिया है। इससे उक्त गांव के लोगों ने अब वहां पर आर्यसमाज की स्थापना भी करदी है। रविवार दिनांक १७ अप्रैल को इस नव-स्थापित आर्यसमाज के सत्संग में क्षेत्र के विधायक श्री किशोरीलाल सकलानी तथा खण्ड विकास अधिकारी श्री भवानी को भी आमन्त्रित किया गया, ताकि उनसे मार्गदर्शन प्राप्त किया जाये कि सरकार की योजनाओं के अन्तर्गत इन दलित लोगों की कैसे सहायता की जा सकती है।

यज्ञ की समाप्ति पर जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री देवदत्त बाली का प्रेरक प्रवचन हुआ। श्री बाली ने अपने भाषण के अन्त में कहा कि ये पिछड़े बन्धु अब आर्यसमाज से संयुक्त हो गये हैं। अतः अब ये पिछड़े नहीं रहेंगे। उन्होंने कहा कि यह इनकी समस्याओं के अन्त का शीगणेश है। क्योंकि अब आर्यसमाज ही नहीं, अपितु प्रशासन तथा विधायक महोदय भी इनकी समस्याओं को जान गये हैं।

श्री बाली ने बताया कि विदेशी मिशनों के एजेन्ट पादरी इस क्षेत्र के गरीब लोगों को बहकाकर इनके बच्चों को निःशुल्क पालन, पोषण, शिक्षण आदि का लोभ दिखाकर ले जाते हैं और फिर इन अवयस्क बच्चों का गैर कानूनी धर्मान्तरण कर लिया जाता है। आपने कहा कि यह धर्म-प्रचार नहीं है, बल्कि अहिन्दुओं की संख्या-वृद्धि करके इस देश में उनके लिए अलग क्षेत्र की मांग की भूमि तैयार करना है।

(दैनिक वीर अर्जुन)

आर्यकुमारों एवं युवकों में अच्छे संस्कार डाले जायें

गुडगावां: दिनांक १०-४-८८ रविवार को आर्यसमाज मन्दिर सोहना में माननीय श्री रामचन्द्र जी संरक्षक आर्य वीरदल गुडगावां मण्डल की अध्यक्षता में बैठक हुई। जिसमें गुडगावां के कार्यकर्ता फिरोजपुर झिरका, तावड़ू, सोहना तथा हथीन के प्रतिनिधि उपस्थित हुए। निम्नलिखित मुख्य निर्णय लिए गये—

१—जिला गुडगावां की प्रत्येक आर्यसमाज में आर्यवीरों तथा आर्यकुमारों की प्रातःकाल दैनिक शारीरिक शाखा, दैनिक सध्या शाखा और साप्ताहिक या पाक्षिक बौद्धिक शाखा सेवा-निवृत्त महानुभाव सज्जन पुरुषों तथा अध्यापकों के सहयोग से प्रारम्भ की जाये।

२—आर्यसमाज सोहना में जिला गुडगावां के अध्यापकों तथा बुद्धिजीवियों का बौद्धिक प्रशिक्षण शिविर लगाने को आर्यसमाज सोहना के अधिकारियों से प्रार्थना की गई। प्रशिक्षण के पश्चात् ये सज्जन आर्य वीरदल तथा आर्यकुमार सभा की बौद्धिक शाखायें लगायेंगे।

आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका तथा आर्य वीरदल गुडगावां भी ग्रीष्म अवकाश में शिविर लगाने का शीघ्र निर्णय लेते हुए इसे क्रियात्मिक रूप देंगे, ऐसी उनसे प्रार्थना की गई वा आशा की जाती है।

श्री ओम्प्रकाश आर्य मण्डलपति ने जि० गुडगावां की समस्त आर्यसमाजों के आर्य सदस्यों से प्रार्थना की है कि हमारे घरों वा दूकानों के नामपट हिन्दी में हों और शुभ विवाह के निमन्त्रण-पत्र भी हिन्दी भाषा में छपवाये जायें।

—जगदीशचन्द्र आर्य
मन्त्री आर्य वीरदल, गुडगांव मण्डल

गोच्छी जि० रोहतक का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री राममेहरसिंह, मन्त्री—कुलदीपसिंह, कोषाध्यक्ष—विशालसिंह।

कलावड़ जि० रोहतक का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री सज्जनसिंह, मन्त्री—दयाचन्द, कोषाध्यक्ष—राजसिंह।

कन्या गुरुकुल नरेला में उपराज्यपाल महोदय का शुभागमन

कन्या गुरुकुल की कार्यकारिणी समिति के निमन्त्रण पर महामहिम उपराज्यपाल श्री हरिकिशनलाल कपूर महोदय गुरुकुल के निरीक्षण हेतु दिनांक २१-४-८८ को कुलभूमि में अपने विभागीय अधिकारियों सहित प्रातःकाल पधारे। मुख्य द्वार पर गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने मस्तक पर तिलक एवं पुष्पवर्षा से आपका स्वागत मंगल अभिनन्दन किया। कार्यकारिणी के सदस्यों की अगवानी में कन्याओं द्वारा वेदमन्त्र गायन संस्कृत के स्वागत गीत एवं संस्कृत भाषण द्वारा माननीय अतिथि महोदय का अभिनन्दन किया। पश्चात् गुरुकुल के अधिकारीगण आर्यसमाज के सदस्यगण, नरेला एवं देहात के प्रतिनिधिगण ने माल्यार्पण द्वारा श्री उपराज्यपाल का स्वागत किया।

पश्चात् चौ० हीरासिंह जी, अध्यक्ष महोदय एवं पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने संस्था का परिचय, विद्यालय, छात्रावास, गोशाला, प्रथम कक्षा से लेकर आचार्य एम. ए. पर्यन्त उच्च शिक्षा के विकास में उत्पन्न समस्याओं की ओर उपराज्यपाल महोदय का ध्यान आकृष्ट किया।

उत्तर में माननीय कपूर साहब ने अपने सारगर्भित भाषण में संस्कृत साहित्य के विशाल ग्रन्थों, वेदों, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता में निहित उच्चकोटि के ज्ञान की प्रशंसा करते हुए संस्कृत को विश्व भाषाओं की जननी कहा। कन्याओं की शिक्षा की प्रशंसा की। भूमि सम्बन्धी व अन्य कठिनाइयों को दूर करवाने का वचन दिया। कन्याओं के कार्यक्रम, दिनचर्या एवं शिक्षा प्रणाली से प्रसन्न होकर आर्थिक सहायता के रूप में एक लाख रुपये का अनुदान देने की घोषणा की।

अन्त में ब्रह्मचारिणियों को विद्या अध्ययन के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता, अखण्डता एवं सुरक्षा के प्रति सदा सजग रहने की प्रेरणा तथा आशीर्वाद दिया।

—वैद्य कर्मवीर आर्य महामन्त्री

अपनी कन्याओं को गुरुकुल में प्रविष्ट कीजिये

कन्या गुरुकुल विद्यापीठ पंचगांव जिला भिवानी में रमणीक स्थान पर शुद्ध जलवायु के वातावरण में स्थित है।

गुरुकुल में आर्ष पाठविधि से पढ़ाई होती है। जिसकी परीक्षायें महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक लेता है।

गुरुकुल में योग्य अध्यापिकाओं के निरीक्षण में छात्रावास में रहती हुई कन्यायें सदाचार आदि की शिक्षा प्राप्त करती हैं।

गुरुकुल में ५०) रु० प्रवेश के समय लिए जाते हैं। इसके बाद ५०) रु० मासिक भोजन व्यय के लिए जाते हैं।

अतः जो सज्जन अपनी कन्याओं को सह-शिक्षा से बचाकर योग्य सदाचारिणी शिक्षित बनाना चाहते हैं, वे अपनी कन्याओं को गुरुकुल में प्रविष्ट करा सकते हैं।

यदि अविवाहित कन्यायें कम से कम दस कन्यायें प्रविष्ट हो जावें, तो प्रभाकर की कक्षा प्रारम्भ की जा सकती है। इसके लिए गुरुकुल से सम्पर्क करें।

—भरतसिंह शास्त्री
अधिष्ठाता वैदिक शिक्षा समिति कन्या गुरुकुल विद्यापीठ
पंचगांव (भिवानी), डा. गोपी बाढड़ा

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

शुद्धि समाचार

आज दिनांक २७-३-८८ को आर्यसमाज श्रद्धानन्द रोड न्यू कालोनी पलवल (फरीदाबाद) के उत्सव के शुभ अवसर पर मोहम्मद यूसुफखां की शुद्धि पं० जयप्रकाश जी आर्य (भूतपूर्व इमाम त्रेतिया) के द्वारा हुई। शुद्धि के पश्चात् मोहम्मद यूसुफखां का नाम कृष्णलील रखा गया एवं स्वामी जीवानन्द जी महाराज एवं अन्य सदस्यगणों ने उन्हें सम्मानित किया। श्री कृष्णलील ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि मेवात के क्षेत्र में दूसरे मेव भाइयों को भी अपने सद्धर्म में लाने का प्रयास करूंगा एवं अपना पूरा जीवन सत्यार्थप्रकाश के प्रचार में लगाऊंगा।

—अजीतकुमार आर्य
मन्त्री आर्यसमाज २७/८ न्यू कालोनी
पलवल-१२११०२ (फरीदाबाद)

छुट्टियों का सदुपयोग करो

१५ मई से ग्रीष्मकालीन अवकाश प्रारम्भ होनेवाला है। इस दो माह के लम्बे अवकाश में विद्यालयों में पढ़नेवाले छात्र अनियमितता के शिकार होकर व्यर्थ समय गंवा देते हैं। अतः माता-पिता को इस काल में विशेष सावधान रहना चाहिए तथा विद्यार्थियों के लिए रुचिकर तथा लाभकारी कार्य की खोज कर विद्यार्थी को उसमें लगाने की प्रेरणा करनी चाहिए। अन्यथा यह स्वतन्त्रता उच्छृंखलता में बदल कर घातक सिद्ध होती है। इस अवस्था में थोड़ी लापरवाही भी जानलेवा सिद्ध होती है। सावधान! कहीं आप तो इस लापरवाही के शिकार नहीं। आओ! मिलकर अपने बेटे को छुट्टियों का सदुपयोग करना सिखायें।

इस अवसर पर एक समयबद्ध कार्यक्रम Time Table बनाकर विद्यार्थी को अवश्य दें। जिसमें उसकी रुचियों का प्रमुख ध्यान रखा जाये। इन्हें राष्ट्रोपयोगी बनाने के लिए आर्यसमाज आर्य वीरदल द्वारा लगाये शिविरों में भेज दें। आर्य वीरदल प्रत्येक जिले में दस-दस दिन के प्रशिक्षण शिविर लगा रहा है। इन शिविरों से चुने हुए प्रतिभाशाली छात्रों का प्रांतीय शिविर नरवाना में तथा राष्ट्रीय स्तर पर झज्जर में शिविर लगाया जायेगा। इन शिविरों के माध्यम से जाति, रंगभेद, सम्प्रदाय आदि से ऊपर उठकर युवकों को आस्तिकता, धार्मिकता, ब्रह्मचर्य, आत्मरक्षा एवं भारतीय संस्कृति की शिक्षा व भारतीय व्यायाम का प्रशिक्षण दिया जाता है तथा बिखरी युवाशक्ति को संगठित कर समाजोन्मुखी बनाने का प्रयास किया जाता है। अतः छुट्टियों के समय के सदुपयोग का यह एक सुनहरा अवसर है। प्रत्येक बुद्धिमान् व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह इस अवसर का लाभ उठाये।

आज ही अपने निकट के आर्यसमाज या शिक्षण संस्था से सम्पर्क कर ऐसे प्रशिक्षण शिविर में स्थान सुरक्षित करा लेवें। यदि युवक अपने मित्र सहपाठियों सहित इनमें भाग लें तो शिविरकाल अधिक रुचिकर बन सकता है। अधिक जानकारी के लिए आप हमें अविलम्ब लिखकर परामर्श कर सकते हैं। —धर्मदेव विद्यार्थी आर्यसमाज नरवाना (जींद)

धूम्रपान यौन क्षमता घटाता है!

जयपुर, ६ अप्रैल (वार्ता)। एक दिन में दस से ज्यादा सिगरेट पीने से पुरुष की यौन क्षमता कम हो जाती है।

यह तथ्य राजकीय चिकित्सालय सांगानेरी गेट के यौन रोग विशेषज्ञ डा० वीरेन्द्रसिंह के नेतृत्व में 'धूम्रपान का वैवाहिक जीवन पर प्रभाव' विषय पर किये गये सर्वेक्षण से सामने आया है।

सर्वेक्षण के दौरान कुछ दम्पतियों के सिगरेट पीने के कारण निःसंतान होने का पता चला। जिन व्यक्तियों ने धूम्रपान से मुक्ति ले ली उन्होंने बताया कि इसके बाद उनके यौन सम्बन्ध और मधुर हो गये।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४)
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० 23207/73 अंक १०१२ दूरभाष ...



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री २४ वैशाख २०४५ वि०

वर्ष १५, अंक २४ १४ मई, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश मे ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

प्रभु–स्तवन

ले० स्वामी सत्यमुनि परिव्राजक, प्र० मन्त्र वैदिक सस्थान नजीबाबाद (उ० प्र०)

अग्निमीडे पुरोहित यज्ञस्य देव ऋत्विजम् ।
होतार रत्नधातमम् ॥ ऋ० १।१।१ ॥

(अग्निमीडे) अग्निम् ईडे, अग्निम्=अग्नि को ईडे=स्तुतता हू । अग्नि की स्तुति करता हूं । 'अग्नि कस्मात् ?' कस्मात् कारणात् अग्नि ? किस कारण से अग्नि कहलाता है । अग्रणीर्भवति, अग्रणी भवति, अग्रणी होता है । अग्रणी होने से, अग्रणी होने के कारण से, आगे रहनेवाला, आगे चलनेवाला होने से, मार्गदर्शक होने से अग्नि कहलाता है । जो आगे रहे, आगे आगे चले, अन्यो का मार्गदर्शन करे, अन्यो को मार्ग दिखाये, उसे अग्नि कहते हैं ।

वेद कहता है अथवा यह कहिये कि वेद के शब्दो में वैदिक साधक कहता है (अग्निम्—ईडे) अग्नि की स्तुति करता हू । सचमुच वही स्तुत्य है, स्तुति करने, प्रशसा करने के योग्य होता है, जो अग्रणी होता है, आगे-आगे रहता है तथा मार्गदर्शन करता है । जो आगे-आगे न रहे, अग्रणी न हो, जिसमें आगे चलने की योग्यता न हो, जो अनुकरणीय न हो, अपितु केवल अनुकरण करना ही जानता हो । जो मार्गदर्शक न हो, अन्यो का मार्गदर्शन न कर सके, वह स्तुत्य, प्रशसनीय नही हो सकता, उसकी प्रशसा नहीं की जाती । समस्त ससार उन्ही के गुणगान करता है जो पिछड़े नही, अन्यो का आश्रय न चाहें अपितु आगे बढें तथा ससार का मार्गदर्शन करें ।

परमपिता परमात्मा एक ऐसी ही शक्ति है जो सदा अग्रणी ही रहता है—कभी पीछे नही । वह कभी किसी का अनुकरण नही करता, बल्कि सदैव अनुकरणीय ही रहता है । आप जहा जाइये, वह आपसे पहले वहा उपस्थित है । उसे किसी से कुछ सीखने की आवश्यकता नही अपितु वह सारे ससार को सिखानेवाला है । आदि सृष्टि में ही उसने सारे ससार को ज्ञान दिया । जब मानव प्रथम बार उत्पन्न हुआ, उस समय उसे अन्य कोई ज्ञान देनेवाला था भी नही—उस परमपिता परमात्मा के अतिरिक्त । वही तो है सारे ससार का एकमात्र गुरु "सर्वेषामपि गुरु कालेनानवच्छेदात्" जो काल अर्थात् मृत्यु से भी नही छेदा जाता अथवा जो काल अर्थात् समय से भी नही छेदा, काटा (बाटा) जाता, समय भी जिसका बटवारा नहीं कर पाता, वही तो है पूर्वकालिक अर्थात् आदि सृष्टि के मानवो का भी गुरु । अत वही स्तुत्य है, उसी की स्तुति करनी चाहिये । वेद का यह वाक्य कितना सार्थक है ? प्रत्येक को उसी प्रभु की स्तुति करनी चाहिए ।

(यज्ञस्य) वह यज्ञ का 'यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म' समस्त श्रेष्ठतम कर्मों का, उत्तम कर्मों का (पुरोहितम्) पुरोहित है, उत्तम कर्मों का करानेवाला है । उस परमपिता परमेश्वर से सदैव सत्कर्मों की ही प्रेरणा मिलती है—दुष्कर्मों की नहीं । जब मानव किसी दुष्कर्म करने के लिए उद्यत होता है, तब वह परमपिता उसे हतोत्साहित करता है । मन के अन्दर से ही उसे भयभीत करता है, मनमें भय, लज्जा तथा शका का संचार करता है । जब मानव शुभ कर्म करने के लिए समुद्यत होता है, तब उसके मनमें प्रसन्नता तथा उत्साह का सचार होता है । यह प्रसन्नता तथा उत्साह का सचार परमात्मा की प्रेरणा से होता है । सत्य तो यह है कि यह प्रसन्नता तथा उत्साह ही प्रभु की प्रेरणा है । वह प्रभु मार्गदर्शन कर रहा होता है, वह कह रहा होता कि इस कार्य को कर डालो । यह देरी करने का कार्य नही है, शुभस्य शीघ्रम्, शुभ कार्य में देरी न करो, इसे शीघ्र कर डालो । इस प्रकार की प्रेरणा देनेवाला होने से वह 'यज्ञस्य पुरोहितम्' यज्ञ का पुरोहित है, शुभ कर्मों का करानेवाला है ।

पुरोहित का एक अर्थ है परहित साधक । जिससे परहित सिद्ध न हो, वह पुरोहित ही क्या ? किसी से शुभ कर्म कराना उसका हित ही तो करना है । दुष्कर्म कराना तो अहित करना है । अत दुष्कर्मों की ओर प्रवृत्त करनेवाला कभी पुरोहित नहीं हो सकता । शुभ कर्मों की ओर प्रेरित करनेवाले की ही पुरोहित सज्ञा होती है ।

(देव) वह भगवान् देव है । "यो दीव्यति क्रीडति स देव' जो अपने स्वरूप में आनन्द से आप ही क्रीडा करे, वह देव है । (महर्षि दयानन्द) । भगवान् अपने स्वरूप में आप ही क्रीडा करते हैं । उन्हें कभी दुख नही व्यापता, वह हैं ही आनन्दमय, अत आनन्द से क्रीडा करते हैं एतदर्थ उनका नाम देव है ।

(ऋत्विजम्) वह ऋत्विज है, उसमें ऋषित्व है । वह मन्त्रद्रष्टा है, वह समस्त विचारो का जाननेवाला है । ससार का कोई भी मन्त्र, कोई भी विचार कोई भी रहस्य उससे छिपा नही है । वह साक्षात्कृतधर्मा है, उसने धर्म का साक्षात् किया हुआ है । वह धर्म अधर्म के विषय में अन्धकार में नही है, वह जानता है धर्म क्या है और अधर्म क्या ? जाने भी क्यो नही ? सर्वज्ञ जो ठहरा । सर्वज्ञ से कोई रहस्य छिपा रह ही नही सकता । वह तो (सर्व) सभी कुछ (ज्ञ) जाननेवाला है । रहस्य तो जीव से ही छिपे रह सकते हैं । कारण कि यह ठहरा अल्पज्ञ (अल्प) थोडे (ज्ञ) ज्ञानवाला । यह सत्य है कि जीव भी मनुष्य शरीर में आकर ऋषित्व को प्राप्त कर लेता है । किन्तु उसका ऋषित्व सीमित ही होता है । क्योंकि इसकी शक्ति ही सीमित है, अल्प है । असीम शक्तिवाला तो वह प्रभु ही है । अत वही सर्वांगपूर्ण रूपेण ऋषि है ।

(होतारम्) आहुति दाता, आहुति देनेवाला है । उसकी आहुतिया निरन्तर लग रही हैं । इस ससार यज्ञ का सचालक, परिचालक है वह । उसी की कृपा की आहुतियो से यह ससार यज्ञ चल रहा है । यज्ञ में आहुतिया न लगे तो ससार यज्ञ समाप्त हो जाये । यह यज्ञ निरन्तर चलता रहे, इसके लिए आवश्यक है कि निरन्तर आहुतिया लगती रहें । निरन्तर आहुतिया नही लगेगी तो निरन्तर यज्ञ नही चल सकता । ससार यज्ञ निरन्तर चल रहा है तो केवल इसीलिए कि वह प्रभु इस यज्ञ में निरन्तर आहुतिया डाल रहा है ।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

पानीपत हत्याकांड

—प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

नौ महीने के अन्दर हरयाणा में आतंकवादियों द्वारा चार हत्याकांड हो चुके हैं और पांचवां लालडू कांड भी हरयाणा से अधिक जुड़ा हुआ है। जो सूचनायें मिली हैं, उनसे तो यही निष्कर्ष निकला है कि पानीपत में कांड होने की सूचना तो पहिले ही थी और पुलिस कुछ नाकों पर लगी हुई थी, परन्तु जितना चौकन्ना पुलिस को होना चाहिए था, उतनी चौकन्नी पुलिस थी नहीं। कारण यही जान पड़ता है कि पुलिस सूचना को केवल चलती खबर और आम धमकी समझती रही।

यह समझ लेना चाहिए कि आतंकवादी अपनी दहशत उत्तर भारत के पंजाब से लगते सभी प्रांतों में फैलाना चाहते हैं और दंगे भड़काना चाहते हैं। साम्प्रदायिक तथा देशविरोधी शक्तियां इस काम में लगी हुई हैं और इन शक्तियों के पास हथियारों और आर्थिक साधनों की कमी नहीं है। यदि उत्तर भारत में साम्प्रदायिक दगे भड़काने में राष्ट्र-विरोधी तत्व सफल हो जायें तो उनके पौहबाराह हैं। उत्तर भारत के सुरक्षाबल और वहां की सरकारें जो आज कर रही हैं, वह उन्हें पिछले वर्ष से ही करना चाहिए था, जब इस क्षेत्र में आतंकवादी सक्रिय हो गये थे।

ऐसा लगता है कि निहत्थे और बेकसूर गरीब लोगों के मारे जाने को सरकारें आकस्मिक घटनाओं (Accident) से अधिक महत्त्व नहीं देती हैं। यह मानते हुए भी कि पाकिस्तान, अमरीका तथा अन्य भारत विरोधी शक्तियां इन घटनाओं के पीछे हैं और ये शक्तियां भारत को अस्थिर करने में लगी हुई हैं। जो कदम उठाये जारहे हैं, वे हर तरह से असन्तोषजनक हैं। इन कांडों से राजनैतिक लाभ उठाने की मनोवृत्ति बहुत निन्दनीय है। दल तो अलग-अलग हो सकते हैं, परन्तु देश तो एक है और सबका है, उसकी स्थिरता और सुरक्षा के साथ खिलवाड़ करना जघन्य पाप है। एक दूसरे की नुकताचीनी करके ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेना नादानी तो है ही। जिस धरती ने हमें पालापोसा उसके साथ भी कृतघ्नता है।

इस समय भारत सरकार और राज्य सरकारों को दिल से मिलकर काम करने की जरूरत है और आतंकवाद और पृथक्तावाद की लानत को हमेशा के लिए समाप्त कर देना है। समय चाहे लगे, परन्तु हमारे सम्मिलित प्रयासों की दिशा यही होनी चाहिए।

पानीपत हत्याकांड के घायलों को फलादि वितरित

मैडीकल कालेज हस्पताल रोहतक में पानीपत में उग्रवादियों द्वारा हत्याकांड के ६ घायल सर्वश्री धर्मपाल, श्रीचन्द, श्रीमती शांति, लालचन्द, प्रकाश तथा सुमिल यहां उपचाराधीन हैं। सभाप्रधान प्रो. शेरसिंह जी के निर्देशानुसार सभा उपप्रधान म० भरतसिंह वानप्रस्थी तथा कार्यालय के कर्मचारी सर्वश्री केदारसिंह आर्य, सत्यवान एवं अशोककुमार इनकी देखभाल करनें ११ मई को मैडीकल में गये तथा उन्हें फल और बिस्कुट वितरित किये और सभा की ओर से भोजनादि की व्यवस्था करने की पेशकश की। सभी घायलों का उपचार सहानुभूतिपूर्वक किया जारहा है। इसी प्रकार आर्यसमाज पानीपत के अधिकारी पानीपत के हस्पताल में दाखिल घायलों की देखभाल कर रहे हैं।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

मधु की हत्या के विरोध में विशाल प्रदर्शन एवं स्यापे

दिनांक ७-५-८८ को नरवाना, कैथल, जींद आदि से हजारों नर-नारियों ने हिसार पहुंचकर विशाल जलूस निकाल कर प्रदर्शन किया। इसमें हिसार की सामाजिक संस्थायें भी शामिल हुई। ज्ञातव्य है कि नरवाना की मधु का विवाह अरुणकुमार गोयल ग्रीन पार्क हिसार से हुआ था। दिनांक २८-४-८८ को तथाकथित ढंग से मधु की हत्या करदी गई। भुथरा धर्मशाला से जलूस चलकर मेन बाजारों से होता हुआ ग्रीन पार्क पहुंचा। वहां महिलाओं ने स्यापा घाला तथा भारी भीड़ में से कुछेक ने उसकी कोठी पर पथराव भी किया। पुलिस ने काफी धैर्य से काम लेते हुए उत्तेजित भीड़ को शांत किया। लोग नारे लगा रहे थे तथा मांग कर रहे थे कि हत्यारों को गिरफ्तार करो, गोली मारो फांसी दो। तुलसीराम गोयल व अरुणकुमार का सामाजिक बहिष्कार करो, नारी जाति करे पुकार बन्द करो ये अत्याचार, दहेज लेना पाप है, दहेज के लालची कुत्तो डूब मरो, नारी अब अबला नहीं सबला है। हत्या की सर्वत्र निन्दा की जारही थी।

बाद में लघु सचिवालय में पहुंचकर डी० सी० साहब को ज्ञा. ने दिया। महिलाओं समेत कई वक्ताओं ने वहां शोक सभा में भाषण दिये। आर्य वीरदल एवं कन्या गुरुकुल की कन्याओं का विशेष योगदान रहा। वैसे कई अन्य महिला संगठनों ने भी खासा सहयोग दिया। मधु का परिवार एवं प्रो० धर्मदेव विद्यार्थी प्रधान आर्य वीरदल हरयाणा वास्तव में धन्यवाद के पात्र हैं कि जिन्होंने अथक प्रयास करके पहली बार कई हजार की संख्या में नर-नारियों को इकट्ठा करके एक ऐतिहासिक प्रदर्शन किया। हम आर्यसमाज कंवारी की तरफ से भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि मधु की आत्मा को शांति मिले और दोषियों को दण्ड मिले।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी
प्रधान आर्यसमाज कंवारी, हिसार

आर्यसमाज के उत्सवों का कार्यक्रम

आर्य वीरदल रोहतक	२० से २२ मई
आर्यसमाज कनीना जि० महेन्द्रगढ़	२१-२२ ,,
,, ठोल जि० कुरुक्षेत्र	२० से २२ ,,
,, फरल जि० कुरुक्षेत्र	२७ से २९ ,,
,, सादस जि० गुडगांव	२८ से ३० ,,
श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर यमुनानगर जि० अम्बाला	२८-२९ ,,
आर्यसमाज रोहणा जि० सोनीपत	२८ से ३० ,,
,, सांडवा जि० भिवानी	२८ से ३० ,,
,, केहड़ी मदनपुर जि. रोहतक (शिक्षण शिविर)	३१ से ५ जून
,, नाहरी जि० सोनीपत	३ से ५ ,,
,, खेड़ी सुलतान जि० रोहतक	३ से ५ ,,

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

आकाशवाणी रोहतक से

२३ मई, १९८८ को प्रातः ७-३० बजे आकाशवाणी रोहतक से आचार्य दयानन्द जी शास्त्री एम० ए०, प्राध्यापक दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार की हिन्दी वार्ता "क्षमा बड़न को चाहिए" प्रसारित होगी।

पंजाब की समस्या बन्द गली में ?

—प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

लोगों की यह धारणा बनती जारही है कि पंजाब की समस्या बन्द गली (Blind alley) में फंस गई है। चाहे पंजाब के कांग्रेसी विधायक हों या संसद सदस्य और चाहे अकाली दल के सदस्य हों, सबके मुंह से एक ही बात निकलती है कि पंजाब की समस्या ऐसे मोड़ पर पहुँच गई है, जहां से आगे जाने का कोई रास्ता नहीं सूझता, आगे रास्ता बन्द है। जैसे चल रहा है, ऐसे ही चलता रहे तो पलायन की गति तेज होती जायेगी, सरकार से भरोसा उठता जायेगा और आतंकवादियों का सिक्का जमता जायेगा। आज उनका हुकुमनामा यदि अमृतसर गुरुदास पुर तक सीमित है तो यह बढ़ते-बढ़ते पंजाब के दूसरे जिलों में भी चलने लगेगा। सरकारें तो जनता के भरोसे तथा उनकी साख पर ही चलती हैं। एक लाख की आबादी के थाने में १५ या २० ही तो सिपाही हवलदार थानेदार होते हैं, वे हर गली मोहल्ले या घर में तो हर समय उपस्थित हो नहीं सकते। उनके दबदबे, भय और भरोसे से ही पूरे थाने में शांति और व्यवस्था रहती है। यदि साख, भय, भरोसा और दबदबा न रहे तो कानून और व्यवस्था ढह जाते हैं।

समझौता

यदि मारकाट, लूटपाट और आतंक को समाप्त करना है तो उस का एक रास्ता है, आंदोलन करनेवालों से समझौता। १९४७ के बाद का अकालियों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि वे हर बार जो भी समझौता करते हैं, उसे अन्तिम कहते हैं, परन्तु प्रथम तो वे उस पर अमल नहीं होने देते। यदि अमल होवे भी लगे तो उस समझौते से मुकर जाते हैं। फिर आंदोलन खड़ा कर देते हैं और समझौते से कहीं बढ़-चढ़कर मांग शुरू कर देते हैं और फिर समझौता कर लेते हैं। कुछ समय के बाद उससे भी मुकर जाते हैं और मांगें और बढ़ा-चढ़ाकर करने लग जाते हैं। जाहिर है कि समझौते किसी न किसी कीमत पर किये जाते हैं। एक बार तो देश के हित को देखते हुए वह फरीक कीमत देने के लिए तैयार हो जाता है, परन्तु नित नई कीमत देने के लिए तो वह तैयार नहीं हो सकता। दुर्भाग्य यह रहा कि हर आंदोलन को शांत करने के लिए सरकार समझौते की बात करने लगती है और समझौता तो कुछ न कुछ देकर ही होता है, सरकार देने के लिए तैयार हो जाती है और जिसको समझौते की कीमत चुकानी पड़ती है, उससे देशहित के लिए त्याग करने को कहा जाता है, जबकि आंदोलन करनेवालों को अपने उचित अधिकारों तक सीमित रहने को भी कहने की हिम्मत नहीं होती। इस रास्ते पर चलते-चलते बन्द गली तो कभी न कभी आ ही जायेगी।

संक्षिप्त इतिहास

१९४९-५० में मा० तारासिंह और ज्ञानी करतारसिंह ने मजहबी, रामदासिये, सिकलीगर आदि को अनुसूचित जातियों की सूचि में डलवाते समय सरदार पटेल के सामने स्पष्ट कहा था कि यह उनकी अन्तिम मांग है। संविधान के जिस अनुच्छेद २५ के तहत यह सम्भव हो पाया। अब उस अनुच्छेद को ही जलाने पर उनके उत्तराधिकारी तुल गये। अक्तूबर १९५६ में ज्ञानी करतारसिंह ने लिखित रूप से फाजिल्का अबोहर के इलाके को हिन्दी-भाषी माना और कन्दूखेड़ा गांव को भी। १९७० में सन्त फतहसिंह ने चण्डीगढ़ के बदले हरयाणा को फाजिल्का अबोहर देने की पेशकश मेरे द्वारा प्रधानमन्त्री को की। उसी पेशकश के आधार पर प्रधानमन्त्री का २९ जनवरी, १९७० का फैसला हुआ। सन्त फतहसिंह ने चण्डीगढ़ की मांग को अकालियों की अन्तिम मांग कहा था। सन्त फतहसिंह ने हरयाणा से रियायत नहीं की थी। वास्तविकता तो यह थी कि शाह कमीशन ने १९६६ में चण्डीगढ़ हरयाणा को दिया था। भारत सरकार ने चण्डीगढ़ को दोनों प्रदेशों पंजाब और हरयाणा की सम्मिलित राजधानी बना दिया। सन्त ने चण्डीगढ़ केवल पंजाब को देने के लिए जलन की धमकी दी। धमकी नहीं चली तो मेरे पास पेशकश भेज दी। इन नेताओं के उत्तराधिकारी उनसे भी मुकर गये। ज्ञानी जैलसिंह ने १९७६ में और प्रकाशसिंह बादल ने १९७८ में सतलुज यमुना लिंक नहर बनाने के लिए हरयाणा सरकार से एक-एक करोड़ रुपये लिये और आज बादल साहब कहते हैं कि जितनी नहर बनी है, उसमें भी मिट्टी भरदो।

१९८५ में लोंगोवाल राजीव समझौता हुआ (हरयाणा की पूछताछ के बिना), उस पर अमल होने का समय आया तो लोंगोवाल के विरोधी ही नहीं, स्वय बरनाला साहब मुकर गये। इस समझौते के अनुसार क्षेत्रीय समस्या के समाधान के लिए दो आयोगों का गठन किया जाना था, एक चण्डीगढ़ के बदले हरयाणा को दिये जानेवाले इलाकों की पहचान के लिए और दूसरा पजाब और हरयाणा की सीमाओं के साथ लगते हुए पंजाबी और हिन्दी भाषी गांव के हस्तांतरण के द्वारा सीमा समायोजन के लिए। मैथ्यू कमीशन ने १९६१ और १९८१ की जनगणनाओं के विवाद को हल करने के लिए नई गिनती करवाई और यह रिपोर्ट दी कि १९६१ की जनसंख्या के आंकड़े करीब-करीब सही हैं और फाजिल्का अबोहर के गांव हिन्दी भाषी हैं। कन्दूखेड़ा पर पंजाब समझौते को बिना पढ़े और समझे ही पंजाब की अकाली सरकार ने कटक तोल दिया और उस गांव को पंजाबी भाषी मनवा लिया। उन्होंने यह नहीं समझा कि समझौते में साफ लिखा है कि हरयाणा को सीमा समायोजन में मिलनेवाले गांव से बिल्कुल अलग इलाका चण्डीगढ़ के बदले देना होगा। यदि कन्दूखेड़ा हिन्दी भाषी होता तो फाजिल्का अबोहर के गांव हरयाणा की सीमा से जुड़े हुए होने के कारण सीमा समायोजन सम्बन्धी आयोग को हरयाणा को वैसे ही देने पड़ते। चण्डीगढ़ के बदले क्योंकि अलग इलाका देना था, इसलिये कन्दूखेड़ा का पंजाबी भाषी होना हरयाणा के हक में पड़ता है, उल्टा नहीं। कन्दूखेड़ा गांव ने तो फाजिल्का अबोहर के हिन्दी भाषी गांवों को सीमा समायोजनवाले आयोग द्वारा हरयाणा को दिये जानेवाले ग्रामों से अलग कर दिया। मैंने यह बात न्यायमूर्ति वेंकटरमैया और न्यायमूर्ति देसाई तथा प्रधान मन्त्री को लिखकर भेजी। साम्यवादी नेता जगजीतसिंह आनन्द को भी मैंने उसकी प्रति दी और वे भी लाजवाब होगये और माना कि मैथ्यू कमीशन द्वारा हिन्दी भाषी ग्रामों की पहचान के बाद फाजिल्का अबोहर के गांव तथाकथित पंजाब समझौते के तहत अविलम्ब हरयाणा को मिलने चाहियें थे।

रावी ब्यास का पानी

अकालियों ने १९७६ और १९८१ के पानी के फैसलों को नहीं माना और यह आग्रह किया कि उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों के द्वारा इसका नये सिरे से फंसला होना चाहिये। समझौते में ऐसे पंचाट (ट्रिब्यूनल) की व्यवस्था की गई। उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों का इराडी ट्रिब्यूनल बन गया। जिस ट्रिब्यूनल के बनवाने का आग्रह अकालियों ने किया और पंजाब समझौते में यह भी लिखवाया कि आयोग और ट्रिब्यूनल जो फैसला करेंगे, वह अन्तिम होगा और दोनों पक्षों को मानना पड़ेगा। अकाली आयोगों और ट्रिब्यूनल के फैसलों से भी मुकर गये। अकालियों का यह इतिहास रहा है कि वे पहिले समझौता करते हैं, उसको अन्तिम फैसला मानते हैं और फिर अमल होने लगे तो मुकर जाते हैं और फिर नये समझौते की बात चलाते हैं। मेरा निजी अनुभव यह है कि अकालियों के लिखित और हस्ताक्षरित समझौतों, जबानी समझौतों और अकाल तख्त पर भी किये हुए समझौतों की कोई कीमत नहीं है। वे हमेशा मुकरते रहें हैं और आगे भी यही होनेवाला है, फिर उनसे समझौता करने से क्या लाभ ?

आजकल समाचारपत्रों में यह बात गश्त लगा रही है कि यदि संविधान की धारा ३७० पंजाब पर जम्मू कश्मीर की तरह लागू करदी जाये तो आतंकवादी और अकाली उसको 'सम्पूर्ण आजादी' मान लेंगे। जम्मू कश्मीर में यह धारा लगाकर ही राष्ट्र पछता रहा है और उससे

(शेष पृष्ठ ४ पर)

शाकाहारी ही भोजन उत्तम है

मांसाहार का रिवाज आजकल बहुत बढ़ता जारहा है। मांस को बहुत ताकतवाला खाद्य माना जाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मांस में उत्तम श्रेणी के प्रोटीन होते हैं। लेकिन इसमें लौह तत्त्व भी प्रचुर मात्रा में होते हैं और लवण एवं विटामिन्स भी, लेकिन गुणों की अपेक्षा दोष ज्यादा होते हैं।

जहां मांस को ताकत का स्रोत माना जाता है, वहीं इसमें जहरीले पदार्थ का भण्डार होता है। वैसे भी मांस में ऐसा कोई खास तत्त्व नहीं होता जो शाकाहार में उपलब्ध न हो। कुछ परीक्षणों से यह पुष्टि हुई है कि मांस से पेट में सड़न पैदा होती है। मांसाहारियों में शाकाहारियों की अपेक्षा शारीरिक सहनशक्ति तथा रोगों से जूझने की ताकत ज्यादा होती है।

डा० जे० एच० के० लौग ने मांसाहार के विषय में खोज की और यह निष्कर्ष निकाला कि मनुष्य की रुचि मांस के प्रति नार्मल होती है और उन्होने सिद्ध कर दिया है कि मांस से हाई ब्लड प्रेशर, गुर्दे की बीमारी अपेन्डिसाइटीज, कैंसर, पेट के जख्म, आंत्रशोथ, पित्ताशय की पत्थरी, कुष्ठ रोग आदि रोग अधिक होते हैं।

वैसे १९वीं सदी के अन्त तक स्वास्थ्य शास्त्रियों की धारणा थी कि बेहतर स्वास्थ्य के लिए मांस नितांत आवश्यक है। इसी मान्यता के विपक्ष में इटली के आहार-विशेषज्ञों ने (२०वीं सदी) मनुष्य के आहार से मांस का बहिष्कार करने की राय दी है। इसी सन्दर्भ में जोहन्स हार्पकिंस इंस्टीच्यूट के प्रो० ई० बी० मैक्कालम ने कहा कि मांसाहारी यदि मांस खाना छोड़ दें तो कुछ समय में उसका स्वास्थ्य बेहतर हो जायेगा।

पश्चिम जर्मनी के हेजेलवर्ग स्थित कैंसर अनुसंधान केन्द्र में किये गये अध्ययन के निष्कर्ष के आधार पर बताया गया है कि शाकाहारी व्यक्तियों की तुलना में मांस का भोजन करनेवाले व्यक्तियों के दिल के दौरे तथा रक्त परिसंचरण सम्बन्धी घातक रोग हो रहा है। केन्द्र ने अपने अध्ययन में यह भी पाया है कि साग-पात खानेवाले लोगों को कैंसर होने के खतरे भी कम होते हैं।

उक्त केन्द्र ने पांच वर्षों तक लगभग दो हजार शाकाहारियों पर परीक्षण किया। उन्होंने पाया कि एक-तिहायी भाग मृत्यु दर में कमी हुई। जो शाकाहारी व्यक्ति अपने भोजन में मक्खन; दूध, पनीर आदि भोजन के साथ ले तो उसे अन्य पदार्थों की आवश्यकता नहीं है। उसका भोजन पूर्ण है और उन्हें कुपोषण की किसी समस्या का सामना नहीं करना पड़ता।

इस प्रकार दोनों तथ्यों पर निरक्षण करने से स्पष्ट हो जाता है कि मांस से ज्यादा विटामिन्स युक्त शाकाहारी भोजन है।

—मो० मकबूल कुरैशी

आर्यसमाज नारग का वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज नारग हिमाचल प्रदेश का वार्षिक उत्सव दिनांक २९-अप्रैल से १ मई, ८८ तक बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर महिला आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश की अध्यक्षा श्रीमती चांदरानी जी ने वैदिक सिद्धांतों को आकर्षक एवं रोचक प्रकार से प्रस्तुत किया। जिसका विशेष प्रभाव महिलाओं पर पड़ा। उनके साथ स्त्री आर्यसमाज सोलन की अध्यक्षा श्रीमती कृष्णा जी भी उपस्थित थी, उनका उपदेश बड़ा प्रभावशाली था। इसके अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजनमण्डली पं० चिरंजीलाल तथा उनके साथियों की थी। जिनके मनोरम भजनोपदेश से स्थानीय जनता पर विशेष प्रभाव पड़ा। हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक श्री हरिश्चन्द्र जी का प्रचार बड़ा आकर्षक रहा। स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती, स्थानीय भजनोपदेक ठा० जोगेन्द्रसिंह ने भी वेदप्रचार द्वारा वैदिकधर्म की अच्छी छाप डाली।

—विद्यादत्त आर्य मन्त्री

(पृष्ठ ३ का शेष)

पीछा छुड़वाने का रास्ता नहीं सूझता। कश्मीरवाले बेकार की नई समस्यायें नहीं उठाते, इसलिए यह मांग उठती है और दब जाती है, परन्तु तर्क के लिए यदि इसको मानलें तो इसको मनवाकर अकालियों को मुकरने में कितनी देर लगती है। अगले ही दिन इससे बढ़कर दूसरी मांग तैयार। वैसे कहने में यह बात बड़ी अटपटी और अहंकार भरी मालूम होती है, परन्तु जो समझौते पर टिकते ही न हों, उनसे समझौते की बात करने से क्या लाभ ?

क्या करना चाहिये ?

करना यही चाहिये कि जो बात न्यायसंगत है, उसे तुरन्त मान लेना चाहिए, परन्तु किसी दूसरे वर्ग या प्रदेश की कीमत पर कोई बात नहीं माननी चाहिए। जब देश में भाषा के आधार पर सब प्रांत बनाये गये और पंजाबी को राष्ट्र की १५ भाषाओं में एक मान लिया, फिर पंजाबी भाषा का प्रांत न बनाना अन्याय था, वह बन गया। जैसे और प्रदेश, वैसा पंजाब प्रदेश। दूसरे प्रदेशों से अन्याय किये बिना पंजाब के साथ पूरा न्याय करना चाहिए, परन्तु यदि कुछ लोग विशेष अधिकारों की मांग करें या देश से अलग होने की बात करें तो उनके साथ यथा-योग्य व्यवहार करना चाहिए। कानून तोड़नेवाले को कानून तोड़ने के लिए जो दण्ड निर्धारित है, वह मिले और देशद्रोह करनेवालों को, देशद्रोहियों के लिए निर्धारित सजा देनी चाहिए। श्रीलंका और पंजाब की समस्याओं में बहुत कम अन्तर है। दोनों ही जगह अलगाव की बात चल रही है और दोनों ही जगह विदेशों से हथियार आरहे हैं। दोनों जगह एक ढंग से गुरेला लड़ाई चल रही है। जिस प्रकार श्रीलंका में शांति स्थापना के लिए भारतीय सेना राष्ट्र के उत्तरदायित्व को निभाने में जी-जान से लगी हुई है, उसी प्रकार हमारी सेना पंजाब में भी शांति स्थापना का उत्तरदायित्व सम्भाले और सरकार उनको यह उत्तरदायित्व सम्भलवाये। गुरेला ढंग की लड़ाई का मुकाबला सुरक्षाबलों के बूते से बाहर है। श्रीलंका में तो भारत और भारत की सेना को यह पता नहीं था कि मामला इतना बढ़ जायेगा, इसलिये पहिले से विस्तृत योजना नहीं बनाई जा सकी। समस्या जैसा रूप धारण करती गई, वैसे-वैसे कदम सेना को उठाने पड़े और सैनिकों को काफी बलिदान देने पड़े। पंजाब की समस्या की तो आज पूरी जानकारी देश को है, इसलिए एक विस्तृत योजना तैयार करके थोड़े से थोड़े समय में और कम से कम लोगों की जान लेकर और देकर पंजाब में शांति की स्थापना करनी चाहिए। इस समस्या को बन्द गली से निकालने का और कोई उपाय नहीं सूझता। पंजाब और पंजाब से बाहर के बहुत लोगों से बात करने पर यह राय बनी है। यह राय मेरी नहीं, जिनसे भी बात हुई, उनकी सर्वसम्मत राय है।

धूम्रपान से हर वर्ष २५ लाख मौतें

नई दिल्ली, ६ अप्रैल : विश्व स्वास्थ्य संगठन की ताजा रिपोर्ट के अनुसार विश्व में धूम्रपान और तम्बाकू सेवन से सम्बद्ध बीमारियों के कारण प्रतिवर्ष २५ लाख से अधिक लोगों की मौत होती है। यह संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती जारही है। भारत में धूम्रपान से मरनेवालों की संख्या ८ लाख से अधिक है।

संगठन ने इसी बात को ध्यान में रखते हुए अपनी स्थापना की ४०वीं वर्षगांठ के दिन अर्थात् ७ अप्रैल को सभी देशों से तम्बाकू निषेध दिवस के रूप में मनाने की अपील की है। रिपोर्ट के अनुसार संगठन ने पिछले कुछ वर्षों में विकासशील देशों में धूम्रपान की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ने पर चिन्ता व्यक्त की है और उन देशों में धूम्रपान उन्मूलन प्रचार पर विशेष बल देने की सलाह दी है। विकसित देशों में धूम्रपान की दर विकासशील देशों की तुलना में अधिक है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में विकसित देशों में धूम्रपान उन्मूलन प्रचार के कारण कमी आई है, जब कि इसके विपरीत विकासशील देशों में धूम्रपान की प्रवृत्ति में काफी तेजी आई है।

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

रामपुर कुण्डल जिला सोनीपत : प्रधान-सर्वश्री राजेराम, मन्त्री-इन्द्रसिंह, कोषाध्यक्ष--रामसरूप।

खुर्मपुर जिला सोनीपत : प्रधान—सर्वश्री केहरसिंह, मन्त्री—लालसिंह, कोषाध्यक्ष--भलेराम।

माइना जिला रोहतक : प्रधान—सर्वश्री बलवानसिंह, मन्त्री—मुन्शीराम, कोषाध्यक्ष—बसन्तकुमार।

ढाकला जिला रोहतक : प्रधान—सर्वश्री निहालसिंह, मन्त्री—ब्रह्मदेव, कोषाध्यक्ष—नहपालसिंह।

सिवाना जिला रोहतक : प्रधान-सर्वश्री धूपसिंह, मन्त्री-शुभराम, कोषाध्यक्ष—टेकराम।

जहाजगढ़ माजरा जि० रोहतक : प्रधान-सर्वश्री उमेदसिंह, मन्त्री-महेन्द्रसिंह, कोषाध्यक्ष—हुश्यारसिंह।

मातनहेल जिला रोहतक : प्रधान-सर्वश्री धर्मपाल, मन्त्री-बलदेव, कोषाध्यक्ष--राजपाल।

बिगोवा जिला भिवानी : प्रधान—सर्वश्री मुखत्यारसिंह, मन्त्री-धर्मसिंह, कोषाध्यक्ष—कश्मीरसिंह।

मिसकपुर जिला रोहतक : प्रधान—सर्वश्री मनफूल, मन्त्री—हुश्यारसिंह, कोषाध्यक्ष—फतेसिंह।

दूबलधन जिला रोहतक : प्रधान—सर्वश्री फतेहसिंह, मन्त्री—[illegible]तसिंह, कोषाध्यक्ष—प्रेमसिंह।

इमलोटा जि० भिवानी : प्रधान-सर्वश्री दयाराम, मन्त्री-चेतराम, कोषाध्यक्ष—बसतीराम।

शुद्धि समाचार

आज दिनांक २४-३-८८ को जमुई आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव के शुभ अवसर पर नाथनगर मदरसे के मौलाना साजिदअली सत्यार्थप्रकाश एवं पं० जयप्रकाश (भूतपूर्व इमाम) के प्रभाव में आकर सनातन वैदिक धर्म को स्वेच्छा से स्वीकार किया और शपथ ली कि अपनी पूरी आयु वैदिकधर्म, सत्यार्थप्रकाश और आर्यसमाज के प्रचार व प्रसार में लगाऊंगा। इस शुद्धि का स्थानीयतौर पर बड़ा जबरदस्त प्रभाव पड़ा। जनता ने आर्यसमाज के जयकार के नारे लगाये। शुद्धि के पश्चात् साजिदअली का नाम सुरेशकुमार, जेबुन निसा का नाम नर्मदा आर्य एवं उनके सातों बच्चों का भी संस्कार किया गया।

—रामजीवन साहु आर्य, प्रधान आर्यसमाज जमुई

शराब फैक्ट्री में प्रदूषण के विरुद्ध धरना

हिसार, २२ अप्रैल (निस)। भारत की जनवादी नौजवान सभा (डी० वाई० एफ० आई०) हिसार तहसील ने जिला सचिवालय उपायुक्त कार्यालय के सामने एक दिन का धरना दिया। धरना शराब के कारखाने को आबादी से दूर ले जाने की मांग को लेकर था।

नौजवान सभा के तहसील सचिव श्री रमेशकुमार ने लिखित बयान में कहा कि इस फैक्ट्री से हिसार शहर के निवासियों को एक विशेष प्रकार की दुर्गन्धता का सामना करना पड़ रहा है। इस दुर्गन्ध की वजह से माडयड़ कैंट हिसार, सातरोड खुर्द, कलां, मिर्जापुर इलाके के लोगों में भी काफी रोष है, क्योंकि दुर्गन्ध कई बार इतनी तेज होती है कि सांस लेना भी मुश्किल हो जाता है।

श्री रमेशकुमार ने आरोप लगाया कि इस बारे में जिला प्रशासन व प्रदूषण विभाग की लापरवाही स्पष्ट है। प्रशासन के लोग फैक्ट्री के प्रदूषण से पूर्ण वाकिफ हैं, मगर पर्यावरण को दूषित होने से रोकने के कानून को लागू करवाने के लिए अधिकारियों द्वारा इस फैक्ट्री के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की गई है।

वैशाखी पूर्णिमा पर यज्ञ सम्पन्न

दिनांक १-५-८८ को आर्यसमाज नलवा जि० हिसार की ओर से गतमास की भांति पूर्णिमा यज्ञ का आयोजन किया गया। प्रातःकाल मन्दिर में हवन किया गया। बुद्ध पूर्णिमा होने पर स्वामी मस्तानानन्द जी, सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने पंच महायज्ञ, व्रत क्या है तथा महात्माबुद्ध के जीवन पर प्रकाश डाला। साथ में प्रेम से रहने, मानवमात्र की भलाई करने तथा बुद्ध की अमरवाणी का भी उल्लेख किया।

तुम सिंह के सामने जाते समय भयभीत न होना,
वह पराक्रम की परीक्षा है।
तुम तलवार के नीचे सर झुकाने से भयभीत न होना,
वह बलिदान की कसौटी है।
तुम पर्वत शिखर से पाताल में कूद पड़ना,
वह तप की साधना है।
तुम बढ़ती हुई ज्वालाओं से विचलित न होना,
वह स्वर्ण परीक्षा है।
पर शराब से सदा भयभीत रहना क्योंकि,
वह पाप और अनाचार की जननी है।

इसके अतिरिक्त पं. दीपचन्द आर्य की भजनमण्डली के क्रांतिकारी समाज-सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए। यज्ञ पर स्कूली बच्चों के समेत काफी पुरुषों ने भाग लिया।

—पं० रामेश्वर आर्य, उपमन्त्री आर्यसमाज नलवा, हिसार

गुरुकुल विद्यालय बठिण्डा का समाचार

आज दिनांक १३-४-८८ को वैशाखी के दिन श्री कृष्णकुमार जी मन्त्री गुरुकुल बठिण्डा ने अपनी ओर से गुरुकुल में सपत्नी सपरिवार यजमान बनकर श्री ओम्प्रकाश जी वानप्रस्थी से यज्ञ कराया। गुरुकुल के सभी विद्यार्थियों एव आर्य वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा निवासियों को भोजन खिलाया। श्री राजेन्द्रकुमार जी (सुपुत्र श्री कृष्णकुमार जी) मंत्री आर्यसमाज बठिण्डा ने गुरुकुल के सभी श्रेणियों के विद्यार्थियों को सिले-सिलाये वस्त्र देकर उत्साह बढ़ाया। इस वर्ष गुरुकुल का परीक्षा परिणाम भी अच्छा रहा। गुरुकुल में धर्म-शिक्षा की ओर भी ध्यान दिया जाता है। प्रति शनिवार को गुरुकुल के विद्यार्थी हवन, यज्ञ, संध्या सम्मिलित रूप में करते हैं।

—ओम्प्रकाश वानप्रस्थी

१२५ परिवारों के ५०० से अधिक ईसाई वैदिकधर्म में

फुलवानी जिले के ग्राम रामपल्ली एवं ग्रारकड़ी में २३-२४ अप्रैल को दो विशाल यज्ञ एवं शुद्धि समारोह श्री पृथ्वीराज शास्त्री उपमन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की अध्यक्षता में श्री पं० विशिकेशन शास्त्री ने करवाया। इनमें १२५ परिवारों के ५०० से अधिक ईसाइयों ने अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति के साथ वैदिकधर्म में प्रवेश लिया। इस आयोजन में श्री नारायण प्रधान, श्री दासरथी प्रधान, श्री प्रांतसेन नायक आदि स्थानीय लोगों ने अच्छा सहयोग किया। उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी से ये लोग बहुत समय से प्रार्थना कर रहे थे, परन्तु मार्ग न होने से पहले जाना सम्भव नहीं हुआ। ध्यान रहे यह क्षेत्र वन पर्वत एवं दुर्गम घाटियों से ढका हुआ है, फिर भी इस दीक्षा समारोह को देखने के लिए हजारों लोग उपस्थित थे। उन्होंने बाहर से आये विद्वानों का अपनी परम्परागत रीति-रिवाजों से अत्यन्त उत्साह के साथ स्वागत सत्कार किया।

—वामदेव आर्य मुख्याध्यापक, गुरुकुल आश्रम आमसेना खरियार रोड, कालाहांडी

सफलता का रहस्य

—प्रा० भद्रसेन, डाक० साधु आश्रम, होशियारपुर-१४६०२१

जब कोई किसी भी क्षेत्र में मेहनत करता है तो सभी की इच्छा और प्रयास यही होता है कि वह जल्दी से जल्दी सफल हो। क्योंकि सफल होने पर ही वह अपने आपको सन्तुष्ट, सुखी मानता है। कोई कैसे सफल होता है, इसका रहस्य सफल शब्द में भरा हुआ है। सफल शब्द का अर्थ है—फल सहित अर्थात् जो फल से जुड़ा हुआ होता है उस को सफल कहा जाता है।

किसी पौधे, वृक्ष, लता पर कैसे फल आता है? यह कृषि-विज्ञान का विषय है। कृषि का व्यवस्थित, कर्मबद्ध ज्ञान ही कृषि-विज्ञान कहलाता है। कृषि शब्द कृष् (विलेखने) धातु से बनता है। जिसका मोटा सा अर्थ है—खोदना। क्योंकि खेतों में खोदकर, हल चलाकर खेत को तैयार किया जाता है। खोदने के पश्चात् ही खानों से खनिज, धातु निकलते हैं। यह ठीक है कि खेती में खोदना एक मुख्य बात है। पर विलेखन—वि+लेखन के यौगिकपन की ओर भी हमारा ध्यान आकर्षित करता है। जैसे लिखते समय एक लेखक अपने मनमें बिखरे अस्त व्यस्त विचारों को एक व्यवस्थित रूप देता है अर्थात् अपने कच्चे विचारों को पक्का रूप देता है। ऐसे ही कच्चे रूप को पक्का रूप देना ही विलेखन है और यही कृषि, खेती का भी अभिप्राय है।

खेती में हल चलाकर खेत को तैयार किया जाता है, संवारा जाता है और अन्त में फसल का पकना भी पक्के रूप की याद दिलाता है। ऐसे ही खानों से खनिज, धातु निकाल कर उनके कच्चे रूप को उद्योगों=कारखानों के माध्यम से पक्का रूप देते हैं। अतः इस प्रक्रिया की समानता के कारण उद्योग भी खेती की तरह कृषि शब्द से लिए जा सकते हैं।

कृषि में जैसे मिट्टी की जांच, खेत की तैयारी, संस्कृत बीज का बोना, सिचाई, सम्भाल आदि बातें आती हैं। ऐसे ही जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी जांच, तैयारी, सम्भाल आदि की सारी प्रक्रिया की अपेक्षा होती है और वहां कला, साधना के द्वारा कच्चे रूप को पक्का रूप देकर सफलता प्राप्त की जाती है।

कृषि के लिए एग्रीकल्चर शब्द का आजकल बहुत प्रयोग होता है। कल्चर संस्कृति के लिए भी प्रयुक्त होता है। इसके तुलनात्मक अध्ययन के लिए 'आर्यसमाज' लेखक कृत पढ़िए। वस्तुतः कृषि और संस्कृति में बहुत ही तालमेल है। अत एव शास्त्रों में अनेक स्थलों पर मानव जीवन को समझाने के लिए कृषि एवं कृषिजन्य या सम्बद्ध पदार्थों को दृष्टांत रूप में दर्शाया जाता है। अतः जिस किसी क्षेत्र में भी हम सफल होना चाहते हैं, वहां उस क्षेत्र की व्यवस्थित प्रक्रिया को अपनाकर सफल हो सकते हैं और तभी हम कह सकते हैं—

हम होंगे कामयाब एक दिन।
ऐसा है विश्वास, पूरा है विश्वास॥

रोहतक में आदर्श विवाह संस्कार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमन्त्री आचार्य सुदर्शनदेव जी की प्रेरणा से मिस्त्री दरयावसिंह आर्य निकट शूगर मिल्ज रोहतक निवासी ने दिनांक ८ मई, ८८ को अपने तीन सुपुत्रों सर्वश्री सुशील, सीताराम एवं सुबोध के विवाह संस्कार सौ० मनीता, सुनीता सुपुत्री श्री श्रीमसिंह सैनी, ग्राम कान्ही जि० सोनीपत तथा सौ० सरोज सुपुत्री श्री राजेन्द्रसिंह सैनी गुडगांव निवासी के साथ श्री सुखदेव शास्त्री तथा आचार्य सुदर्शनदेव ने वैदिकरीति के साथ सम्पन्न करवाया। विवाह के अवसर पर किसी प्रकार की फिजूलखर्ची तथा दिखावा नहीं किया। तीनों बारातों में केवल ५ व्यक्ति गये तथा लेन-देन की रस्में एक-एक रुपये की की गई। शराब तथा नाच आदि से परहेज रखा गया। इस शुभावसर पर मिस्त्री दरयावसिंह जी ने सभा को २०२) वेदप्रचारार्थ दान दिये। इस आदर्श विवाह की सर्वत्र सराहना की जारही है।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

आर्यसमाज कुंजपुरा जि० महेन्द्रगढ़ का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री वैद्य रोहिताश आर्य, मन्त्री—डा० राधेश्याम आर्य, कोषाध्यक्ष—सूबेसिंह आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—रामोतार आर्य।

शोक सहानुभूति सन्देश

१—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के माननीय उपमन्त्री श्री पं० सुदर्शनदेव आचार्य की पूज्या माताजी के निधन की सूचना पाकर हमारे हृदय में शोक उत्पन्न हुआ है। मेरे अनुमान से वे पर्याप्त वृद्धा होगई थीं। परमपिता परमात्मा उनकी दिवंगतात्मा को स्थिर शांति दे। पं० सुदर्शनदेव जी आर्ष गुरुकुल झज्जर, जो भारत में सुविख्यात आर्य विद्या केन्द्र है के सुयोग्य प्रशंसनीय स्नातक है और अपने सतत स्वाध्याय से वेदादि दर्शन शास्त्रों के अच्छे विद्वान् हैं। इस समय हम सबकी संवेदना सहानुभूति आपके साथ है। प्रभु आपको धैर्य प्रदान करे।

२—हरयाणा के नारनौल क्षेत्र के प्रतिष्ठित आर्य भजनीक श्री बुद्धिधर जी के २३ वर्षीय बड़े सुपुत्र की आकस्मिक असामयिक दुःखद मृत्यु को जानकर तो हृदय को विशेष आघात पहुंचा है। क्योंकि उसके युवावस्था में चले जाने से तत्परिवार को बहुत सन्तापो दुःख पहुंचा है, परन्तु परमात्मा की व्यवस्था में ऐसा ही अटल था। परमात्मा उसे भी शांति दे और श्री बुद्धिधर जी के परिवार तथा बन्धुबान्धवों को सांत्वना और धैर्य देवे।

— निहालसिंह आर्य
अध्यापक राज० उच्च विद्यालय नांगलोई, दिल्ली-४१

३—दिनांक २८-४-८८ को आर्यसमाज गन्नौर शहर के उपप्रधान श्री आत्मदेव बबवा का देहांत होगया है। उन्होंने गत २५ वर्षों से तन, मन, धन से उपरोक्त संस्था की निःस्वार्थ सेवा की।

दिनांक १-५-८८ को आर्यसमाज गन्नौर शहर के 'जतोई' हाल में शोकसभा में शहर निवासियों तथा आर्यसमाज की ओर से दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। अन्त में महात्मा प्रेमभिक्षु जी ने दिवंगत आत्मा को शांति व सद्गति हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई।

४—दिनांक १-५-८८ को आर्य आदर्श विद्यालय गन्नौर शहर की एक ३६ वर्षीया अध्यापिका श्रीमती विद्यावती पहूजा का अकस्मात् निधन होगया।

दिनांक ४-५-८८ को आर्यसमाज गन्नौर शहर के 'जतोई' हाल में आर्य महानुभावों ने दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

—प्रेमनाथ आहूजा प्रचारमन्त्री आर्यसमाज गन्नौर शहर

आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर

स्थान—आर्यसमाज मन्दिर नरेला, दिल्ली-४०

दिनांक—६-६-८८ सोमवार से १२-६-८८ रविवार तक

जो सज्जन या नवयुवक अपने बच्चों, इष्ट मित्रों तथा स्वयं को भारतीय संस्कृति सभ्यता के रंग में अथवा यूं कहें कि प्राचीन आश्रम वाले जीवन के रंग में अपने आपको रंगना चाहते हैं तो वे उपरोक्त स्थान तथा समय के अनुसार अपना नाम मन्त्री आर्यसमाज नरेला को २९-५-८८ तक १५) रु० प्रवेश शुल्क सहित भेज दें, जिससे व्यवस्था सुचारु रूप से की जा सके।

आशा है कि भारतीय सभ्यता के प्रेमीजन इस शुभ अवसर का लाभ उठायेंगे तथा समर्थ दानी महानुभाव इस शिविर के लिए अन्न, सब्जी, घी आदि आवश्यक सामग्री जुटाकर यश और पुण्य कमायेंगे।

संयोजक

चौ० लायकराम प्रधान मा० पूर्णसिंह आर्य मन्त्री
आर्यसमाज नरेला, दिल्ली

मिर्जापुर खेड़ी में आर्यसमाज की स्थापना

७-८ मई को ग्राम मिर्जापुर खेड़ी जि० सोनीपत में वेदप्रचार बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पं० बनारसीदास जी ने श्री हवासिंह के घर पर हवन कराया व नौजवान युवकों को यज्ञोपवीत दिये। नवयुवकों ने पं० जयपाल आर्य द्वारा किये गये प्रचार से प्रभावित होकर शराब व धूम्रपान जैसी बुरी आदतों को छोड़ने की प्रेरणा ली। भजनों में हवन करने और कराने की महिमा का विशेष रूप से वर्णन किया गया। ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना की गई और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बन्ध किया गया। आर्यसमाज ने सभा को वेदप्रचारार्थ ३३५) दान दिया।

—सत्यवान आर्य सभा लिपिक

सूखा सहायता हेतु—

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को प्राप्त दान सूची

स्टाफ जिन्दल इन्डस्ट्रीज हिसार	५१००)
पंकज बंसल हरयाणा ट्यूब हिसार	५१००
श्री रामप्रताप मोहल्ला गूजरान पडाव हिसार	२०००
श्री दीपचन्द राजलीवाले हिसार	१०००
श्री रघुवीरचन्द ,, ,,	१०००
श्री अशोककुमार ,, ,,	१०००
श्री द्वारकादास ,, ,,	१०००
श्री रामेश्वरदास भगत ,,	१०००
श्री नन्दकिशोर ,,	१०००
श्री रमेश ,,	१०००
श्री विश्वम्भरदयाल ,,	१०००
श्री आत्माराम ,,	१०००
ला० त्रिलोकचन्द ,,	१०००
ला० शिवधनराय ,,	१०००

सभी दानदाताओं का सभा की ओर से हार्दिक धन्यवाद।

—बद्रीप्रसाद आर्य सभा कोषाध्यक्ष

(पृष्ठ १ का शेष)

आहुतियों का क्रम लगा हुआ है, अत्यन्त सुन्दर क्रम। दिन के पश्चात् रात्रि आती है तो रात्रि के पश्चात् दिन। वर्षा होती है तो भूमि शस्यश्यामला हो जाती है। भूमि शुष्क हो जाती तो पुनः वर्षा हो जाती है। वनस्पतियां फल-फूल रही हैं। पतझड़ होता है, वनस्पतियों के पत्ते झड़ जाते हैं, नवपल्लव आने लगते हैं तथा वह निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होते रहते हैं। एक सीमा पर पहुंच कर पुनः पतझड़ को प्राप्त होते हैं तथा पुनः नवपल्लव निकल आते हैं।

असंख्यों प्राणी इस संसार में प्रतिक्षण जन्मते और मरते रहते हैं। इधर मृत्यु होती तो उधर जन्म होता है। "बाप मरा, घर बेटा हुआ। इसका घाटा उसमें गया" वाली लोकोक्ति चरितार्थ हो रही है। जब तक यह क्रम इस संसार का चल रहा है, तभी तक यह यज्ञ चल रहा है, जिस दिन यह क्रम अवरुद्ध हुआ, उसी दिन यह यज्ञ समाप्त हो जायेगा। यह क्रम संचालित उसी प्रभु के द्वारा हो रहा है। वही इस यज्ञ में निरन्तर आहुतियां डाल रहा है। इसीलिए वेद उसे होता कहता है।

(रत्नधातमम्) रत्नों का धारण करनेवाला है। संसार में जितने भी रत्न (बहुमूल्य पदार्थ) हैं, वह सब उसी प्रभु ने धारण किये हुए हैं। अब भी धारण कर रहा है, सृष्टि से पहले भी धारण कर रहा था। समस्त बहुमूल्य पदार्थ उसी के उदरस्थ तो थे, उसी के गर्भ में तो थे। वह हिरण्यगर्भ ही इन हिरण्यमय पदार्थों को धारण किये हुए था। भौतिक पदार्थ ही नहीं, समस्त पदार्थ विद्या भी, सारा ज्ञान-विज्ञान भी उसी प्रभु के पास था। उसी प्रभु से तो संसार को यह ज्ञान-विज्ञान मिला है। अतः वह प्रभु समस्त ज्ञान-विज्ञान आदि तथा मूल्यवान् हिरण्यमय पदार्थरूपी रत्नों को धारण करनेवाला 'रत्नधातमम्' है।

आत्मकल्याण चाहनेवाले समस्तजनों को चाहिए कि वह उस प्रकाशस्वरूप तथा ज्ञानस्वरूप प्रभु की स्तुति करें। वही दिव्यस्वरूप इस संसार यज्ञ का पुरोहित है, वह ऋत्विज धारण किये हुए है, ऋषि है। होता, आहुति प्रदाता और रत्नों को धारण करनेवाला है।

संरक्षक तथा अध्यापकों की आवश्यकता

गुरुकुल आर्यनगर हिसार (हरयाणा) में ऐसे २ संस्कृत अध्यापकों की आवश्यकता है जो विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी के पाठ्यक्रमानुसार नौवीं तथा दसवीं कक्षाओं को पढ़ाने में समर्थ हों।

एक ऐसे विज्ञानाध्यापक की भी आवश्यकता है जो नौवीं तथा दसवीं कक्षाओं को विज्ञान एवं गणित दक्षतापूर्वक पढ़ा सके। इसके अतिरिक्त छात्र संरक्षण कार्य में हर प्रकार से दक्ष एक योग्य संरक्षक की भी आवश्यकता है।

वेतनादि का निर्णय गुरुकुल नियमानुसार साक्षात्कार के समय ही किया जायेगा। प्रार्थी महानुभाव निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें अथवा मिलें। गुरुकुल हिसार शहर से ५ किलोमीटर की दूरी पर बालसमन्द रोड के निकट एक नहर के किनारे स्थित है।

—आचार्य गुरुकुल आर्यनगर
पो० आर्यनगर, जिला हिसार (हरयाणा)-१२५००१

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४) रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73   रजि० न० P/RTK



ओ३म् कृण्वन्तो...

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

३१ वैशाख २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्क २५   २१ मई, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

देवता का प्रयोग

(पं० धर्मदेव 'मनीषी' व्याकरणाचार्य, गुरुकुल कालवा)

प्रश्न—यज्ञ में देवता शब्द से किसका ग्रहण होता है ?

उत्तर—जो-जो वेद में कहे हैं, उन्हीं का ग्रहण होता है। इसमें यह यजुर्वेद का प्रमाण है—

अग्निर्देवता, वातो देवता, सूर्यो देवता, चन्द्रमा देवता वसवो देवता, रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता, मरुतो देवता, विश्वेदेवा देवता, बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता, वरुणो देवता ॥ यजुर्वेद १४।२०।

कर्मकांड अर्थात् यज्ञ क्रिया में मुख्य करके देवता शब्द से वेदमन्त्रों का ही ग्रहण करते हैं। क्योंकि जो गायत्र्यादि छन्द हैं, वे ही देवता कहाते हैं और इन वेदमन्त्रों से ही सब विद्याओं का प्रकाश भी होता है। इसमें यह कारण है कि जिन-जिन मन्त्रों में अग्नि आदि शब्द हैं, उन-उन मन्त्रों का, उन-उन शब्दों के अर्थों का अग्नि आदि देवता नामों से ग्रहण होता है। मन्त्रों का देवता नाम इसलिए है कि उन्हीं से सब अर्थों का यथावत् प्रकाश होता है।

"कर्मसम्पत्तिर्मन्त्रो वेदे ॥" निरुक्त अध्याय १, खण्ड २।

"अथातो दैवतम्। तद्यानि नामानि प्राधान्यस्तुतीनां देवतानां तद्दैवतमित्याचक्षते। सैषा देवतोपपरीक्षा। यत्काम······॥" निरुक्त अ. ७, खण्ड १।

वेदमन्त्रों करके अग्निहोत्र से लेके अश्वमेधपर्यन्त सब यज्ञों की शिल्पविद्या और उनके साधनों की सम्पत्ति अर्थात् प्राप्ति होती और कर्मकांड को लेके मोक्षपर्यन्त सुख मिलता है, इसी हेतु से उनका नाम देवता है। दैवत उनको कहते हैं कि जिनके गुणों का कथन किया जाये अर्थात् जो-जो संज्ञा जिन-जिन मन्त्रों से जिस-जिस अर्थ की होती है, उन उन मन्त्रों का नाम वही देवता होता है। जैसे "अग्निं दूतं०" इस मन्त्र में अग्नि शब्द चिह्न है, यहां इसी मन्त्र को अग्निदेवता जानना चाहिये। ऐसे ही जहां-जहां मन्त्रों में जिस-जिस शब्द का लेख है, वहां-वहां उस मन्त्र को ही देवता समझना होता है। इसी प्रकार सर्वत्र समझ लेना चाहिये। सो देवता शब्द से, जिस-जिस गुण से, जो-जो अर्थ लिये जाते हैं सो-सो निरुक्त और ब्राह्मण ग्रन्थों में अच्छी प्रकार लिखा है। इसमें यह कारण है कि ईश्वर ने जिस-जिस अर्थ को जिस-जिस नाम से वेदों में उपदेश किया है, उस-उस नामवाले मन्त्रों से उन्हीं अर्थों को जानना होता है। सो वे मन्त्र तीन प्रकार के हैं। उनमें से कई एक परोक्ष अर्थात् अप्रत्यक्ष अर्थ के कई एक प्रत्यक्ष अर्थात् प्रसिद्ध अर्थ के और कई एक आध्यात्मिक अर्थात् जीव, परमेश्वर और सब पदार्थों के कार्य कारण के प्रतिपादन करनेवाले हैं। इससे क्या आया कि त्रिकालस्थ जितने पदार्थ और विद्या हैं, उनके विधान करनेवाले मन्त्र ही हैं। इसी कारण से इन का नाम देवता है।

जिन-जिन मन्त्रों में सामान्य अर्थात् जहां-जहां किसी विशेष अर्थ का नाम प्रसिद्ध नहीं दीख पड़ता, वहां-वहां यज्ञ आदि को देवता जानना होता है "अग्निमीळे······" इस मन्त्र के भाष्य में जो तीन प्रकार का यज्ञ लिखा है अर्थात् एक तो अग्निहोत्र से लेके अश्वमेध पर्यन्त, दूसरा प्रकृति से लेके पृथिवी पर्यन्त जगत् का रचन रूप तथा शिल्पविद्या और तीसरा सत्संग आदि जो विज्ञान और योग रूप यज्ञ है, ये ही उन मन्त्रों के देवता जानना चाहिये तथा जिनसे यह यज्ञ सिद्ध होता है, वे भी उन यज्ञों के देवता हैं और जो इनसे भिन्न मन्त्र हैं उनका प्राजापत्य अर्थात् परमेश्वर ही देवता है तथा जो मन्त्र मनुष्यों का प्रतिपादन करते हैं, उन के मनुष्य देवता हैं। इसमें बहुत प्रकार के विकल्प हैं कि कहीं पूर्वोक्त देवता कहाते हैं, कहीं वेदादि कर्म, कहीं माता, कही पिता, कहीं विद्वान्, कहीं अतिथि और कहीं आचार्य देवता कहाते हैं, परन्तु इसमें इतना भेद है कि यज्ञ में मन्त्र और परमेश्वर को ही देव मानते हैं।

जो-जो गायत्र्यादि छन्दों से युक्त वेदों के मन्त्र, उन्हीं में ईश्वर की आज्ञा, यज्ञ और उनके अङ्ग अर्थात् साधन, प्रजापति जो परमेश्वर, नर जो मनुष्य, काम, विद्वान्, अतिथि, माता, पिता और आचार्य ये अपने-अपने दिव्य गुणों से ही देवता कहाते हैं, परन्तु यज्ञ में तो वेदों के मन्त्र और ईश्वर को ही देवता माना है।

देवो दानाद्वा, दीपनाद्वा, द्योतनाद्वा द्युस्थानो भवतीति वा ॥ निरुक्त अ० ७, खण्ड १५।

दान देने से देव नाम पड़ता है और दान कहते हैं अपनी चीज दूसरे के अर्थ दे देना। दीपन कहते हैं प्रकाश करने को। द्योतन कहते हैं सत्योपदेश को। इनमें से दान का दाता मुख्य ईश्वर ही है कि जिसने जगत् को सब पदार्थ दे रखे हैं तथा विद्वान् मनुष्य भी विद्यादि पदार्थों के देनेवाले होने से देव कहाते हैं। (दीपन) अर्थात् सब मूर्तिमान् द्रव्यों का प्रकाश करने से सूर्यादि लोकों का नाम भी देव है। (द्योतन) तथा माता, पिता, आचार्य और अतिथि भी पालन विद्या और सत्योपदेशादि करने से देव कहाते हैं। वैसे ही सूर्यादि लोकों का भी जो प्रकाश करने वाला है, सो ही ईश्वर सब मनुष्यों को उपासना करने के योग्य इष्टदेव है, अन्य कोई नहीं। इसमें कठोपनिषद् का भी प्रमाण है कि—

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥

(कठ० वल्ली ५, मं० १५)

सूर्य, चन्द्रमा, तारे, बिजली और अग्नि ये सब परमेश्वर में प्रकाश नहीं कर सकते, किन्तु इन सबका प्रकाश करनेवाला एक वही है। क्योंकि परमेश्वर के प्रकाश से ही सूर्य आदि सब जगत् प्रकाशित हो रहा है। इसमें यह जानना चाहिए कि ईश्वर से भिन्न कोई पदार्थ स्वतन्त्र प्रकाश करनेवाला नहीं है, इससे एक परमेश्वर ही मुख्य देव है।

(ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पर आधारित)

आर्यसमाज : एक रचनात्मक योजना

--आचार्य वेदभूषण, अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद-५०००२७

आशा और निराशा के झूले में झूलते विचारों में हम निर्णय नहीं कर पाते कि आर्यसमाज का भविष्य उज्ज्वल है या अन्धकारपूर्ण। हमें भविष्य के बारे में चिन्ता न कर आर्यसमाज के वर्तमान की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। यदि हम वर्तमान के प्रति जागरूक हैं तो निश्चित ही हमारा भविष्य भी उज्ज्वल होगा।

आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति का सारा दोष यदि हम आर्यसमाज के नेतृत्व वर्ग पर ही डाल दें तो यह न्याय नहीं होगा। आर्यसमाज के नेतृत्व पर हम यह आरोप लगा सकते हैं कि वह आर्यसमाज को दिशा प्रदान करने में असमर्थ रहा है, किन्तु हम अपने नेताओं पर यह आरोप नहीं लगा सकते कि—ये किसी दुर्भावना के वशीभूत आर्यसमाज को धोखा दे रहे हैं। इस प्रकार का चिन्तन भी अपने आपको धोखा देने के समान ही होगा।

आइए आरोप, प्रत्यारोप और ईर्ष्या, द्वेष व दलबन्दी से ऊपर उठकर हम आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति और उसके भविष्य को उज्ज्वल बनाने के उद्देश्य से विचार करें और इस पावन संस्था को अपना रचनात्मक योगदान प्रदान करें।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत की जनता में जो रोग था उसे अपनी सूक्ष्म दृष्टि से देखा और उसे ठीक-ठीक समझ लिया। भारत की पराधीनता कोई मूलरोग या कोई मौलिक समस्या नहीं थी। पराधीनता तो उस रोग का उपलक्षण या प्रतिक्रिया मात्र थी।

भारत की मौलिक समस्या थी कि उसकी जनता में शिक्षा का अभाव था। ज्ञान के अभाव में भारत की जनता में आत्महीनता की भावना घर कर गई थी। कभी सारे संसार का पथप्रदर्शन करनेवाली भारतीय जनता किस प्रकार से पददलित हो रही थी और कैसे-कैसे अन्धविश्वासों में फंसकर पथभ्रष्ट हो रही थी। इस सारी स्थिति का महर्षि ने गहराई से अध्ययन किया और सोई हुई भारतीय जनता के नवनिर्माण व जागरण की योजना आर्यसमाज के रूप में प्रस्तुत की।

यद्यपि महर्षि का उद्देश्य केवल भारत की उन्नति या हिन्दू समाज की ही उन्नति नहीं था। पर उन्होंने भारत की जनता को विश्व समाज की सर्वाधिक ह्रासोन्मुख पददलित इकाई के रूप में देखा और ऐसी योजना प्रस्तुत की कि जिसमें प्रत्येक की उन्नति का भाव अन्तर्निहित था।

१८५७ की रजवाड़ों की स्वतन्त्रता की योजना के आंदोलन को महर्षि दयानन्द ने प्रत्यक्षदर्शी बन देखा था। वे इस बात को जान चुके थे कि जब तक एक स्वस्थ समाज का एक स्वस्थ संगठन नहीं बनेगा, तब तक राजनीतिक उद्देश्य भी सफल नहीं हो सकते। इस तथ्य को जानकर महर्षि ने कांग्रेस हिन्दू महासभा या आर० एस० एस० जैसा कोई संगठन न बनाया। उन्होंने एक स्वस्थ सशक्त मानव समाज के नवनिर्माण व नवजागरण के उद्देश्य से आर्यसमाज की स्थापना की।

यथासम्भव देश के महत्त्वपूर्ण भागों में घूम-घूमकर महर्षि दयानंद ने लोगों में आत्मविश्वास और वैदिक संस्कृति के प्रति स्वस्थ धारणा को उत्पन्न करने का अथक प्रयत्न किया। जिसका परिणाम हुआ कि भारत के जनमानस में आत्मविश्वास और अपनी सांस्कृतिक सुरक्षा की भावना जगी। यही वह मूल आधार था, जिस पर स्वतन्त्रता आंदोलन का भवन खड़ा हो सका।

सन् १८७५ में महर्षि ने आर्यसमाज का बीज बोया और सन् १९४७ में भारत ही स्वतन्त्र नहीं हुआ, अपितु सारे विश्व में स्वतन्त्रता की भावना जाग गई। केवल ७२ वर्ष में ही महर्षि की दूरदर्शितापूर्ण सूझ-बूझ ने भारत की सांस्कृतिक चेतना को कुछ ऐसा जागृत कर दिया कि जिन्हें लोग शृगाल शावक समझ रहे थे, वे सिंहपुत्र बन गये।

डा० पट्टाभि सीतारामय्या जो भारतीय कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष व स्वतन्त्रता सेनानी रहे। उनके द्वारा भारतीय कांग्रेस का जो प्रामाणिक इतिहास लिखा गया। उसमें डा० पट्टाभि सीतारामय्या ने स्वीकार किया कि—महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस द्वारा जो अहिंसक सत्याग्रह का स्वतन्त्रता आंदोलन चला, उस सत्याग्रह में जिन वीर स्वतन्त्रता सैनिकों ने भाग लिया, उनमें प्रति सौ सत्याग्रहियों में नब्बे सत्याग्रही आर्यसमाजी होते थे।

भारत की स्वतन्त्रता के लिए दो प्रकार के आंदोलन चले। एक आंदोलन अहिंसक सत्याग्रह के रूप में चला तो दूसरा ओर क्रांतिकारियों की वह वीरताभरी कार्यवाहियां थीं जो गोरे अंग्रेजों के हृदय को दहलाती रहीं। इन क्रांतिकारियों का प्रामाणिक इतिहास यदि लिखा जायेगा तो पता चलेगा कि प्रति सौ क्रांतिकारियों में निन्यानवे क्रांतिकारी आर्यसमाजी थे। सरदार भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खां, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरु और अन्य दर्जनों वीर पुरुष जिन्होंने फांसी के फन्दों को फूल-माला के समान अपनी गर्दन में पहनते हुए चेहरों पर मुस्कानें बिखेर कर उन्हें गले से लगाया।

सचाई और ईमानदारी सौ रास्तों से फूटकर सत्य को प्रकाशित करती है। अतः अत्यन्त ईमानदारी और पूरी सचाई के साथ स्वतन्त्रता आंदोलन के जनक रूप में किसी महान् शक्ति ने पत्थर की नींव का कार्य किया है तो वे थे एकमात्र महर्षि दयानन्द सरस्वती।

अशफाक जो साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो एक मुस्लिम युवक था। पर उसने भी स्वतन्त्रता के लिए मर-मिटने की जो भावना पाई, वह था आर्यसमाज शाहजहांपुर। जहां वह रामप्रसाद बिस्मिल के साथ रहकर क्रांतिकारी बन गया।

किन्तु स्वार्थियों के टोलों ने मिलकर आर्यसमाज के प्रवाह को रोकने का षड्यन्त्र कर रखा है। स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रकाशयुक्त यश पर पर्दा डालने का जो तोड़ यत्न किया जारहा है। आर्यसमाज के प्रवाह को रोकने के लिए अनेक छद्मवेषी भी हमारे भीतर घुस आये हैं। पर बात घबराने की नहीं है। हम सब आर्यबन्धुओं को एक ही अमोघ अस्त्र को सदा अपने साथ रखना चाहिए और वह अस्त्र है सच्चाई का, सत्य का। हमारी वाणी में और हमारे आचरण में सत्य हो। आर्य न जन्म से कोई होता है, न आर्यसमाज का सदस्यता फार्म भरने से या चन्दा देने से ही नहीं होता। आर्य होता है तो सत्य पर आधारित मोठे गुण, कर्म और स्वभाव से होता है। इसलिए निराशा से सर्वथा दूर हटकर हम कहना चाहेंगे कि—

जमाने के चतुर नेता, भले मानें, नहीं मानें।
कटोरा दुग्ध का पीकर, भले मजनू कसं ताने।
पर सचाई बोलती युग की, चोर हजारों झूठ के पर्दे।
गर कोई जनक है इस तूफानी जमाने का।
तो केवल वह दयानन्द था, दयानन्द था दयानन्द था॥

डालकर पर्दा सचाई पर, भगे गोरे यहां से फिर।
कहीं चिंगारी लन्दन में, न आए उस दयानन्द की।
मिटादेगी जहां से ही जो कल्चर झूठ पर चलती।
अन्धेरे में ठगी सम्भव, उजाले में नहीं चलती।
युग दीप रोशन कौन था वह? दयानन्द था दयानन्द था॥

सचाई जग चुकी जग में, अन्धेरे को सिमटना है।
अभी तो यह फटी पो है दुपहरी को उभरना है।
निशाचर भाग जायेंगे, जब धधके सत्य की ज्वाला।
सचाई जीत जाएगी मु (मुख) होगा झूठ का काला।
कौन जो सत्य को गया फहरा दयानन्द था दयानन्द था॥

(क्रमशः)

आप और शराब

—डा० अनिलकुमार जैन

अरे-रे-रे साहब ! शीर्षक पढ़कर लड़खड़ाने लगे, झूमने लगे। लड़खड़ाइये मत। शराब जितनी नशीली है, उतनी जहरीली भी है। इसके साथ अनगिनत शारीरिक, मानसिक व सामाजिक बुराइयां जुड़ी हुई हैं। इसलिए साहब अगर आप सम्भल गये हैं तो मैं शराब के बारे में कुछ बताऊं।

शराब का इतिहास बहुत पुराना है। पढ़ने में आता है कि यादवों की पूरी नसल का ह्रास होने की केवल एक वजह थी—शराब। जितना पुराना इतिहास इन्सान की बेवफाई, मतलबपरस्ती, फरेब, दगाबाजी, धोखाधड़ी, कामक्रोध व हिंसा का है। शायद उतना ही पुराना इतिहास शराब का है। ये देखा गया है कि हर पांच अपराधों में से चार अपराध शराब पीने के बाद होते हैं। हर तीन सड़क दुर्घटनाओं में से दो में ड्राइवर ने शराब पी रखी होती है।

आजकल की युवा व आधुनिक पीढ़ी शराब पीना शान की बात समझती है। तरह-तरह की काकटेल पार्टियों में शराब पानी की तरह बहाई जाती है। जो शराब नहीं पीता, उसका मजाक उड़ाया जाता है। उसे पिछड़ा हुआ समझा जाता है। शादी ब्याह जैसे पवित्र अवसरों पर शराब अति आवश्यक मानी जारही है, मानो शराब नहीं पीयेंगे तो शादी सफल नहीं होगी।

हमारे कई भाई सस्ती, घटिया व जहरीली शराब पीकर यमराज के मेहमान बन जाते हैं। नित्य प्रतिदिन अखबारों में यह पढ़ने में आता है कि जहरीली शराब पीने से इतने आदमी अन्धे होगये, इतने मृत्यु के मुख में चले गये। फिर भी लोगों का शराब पीना जारी है। मैं ऐसे लोगों की हिम्मत की दाद देता हूं, जो मौत से खेलने की हिम्मत रखते हैं। चाहे ये ही आदमी घर में चोर आजाने पर औरत के आंचल में छुप जाते होंगे। देश-रक्षा के समय पलंग के नीचे घुस जाते होंगे। पर इससे क्या, आखिरकार ये लोग भी तो मौत से खेलते हैं। क्या इनको भी परमवीर चक्र नहीं मिलना चाहिए ? जरूर मिलना चाहिए इनको जहालत पर, मूर्खता पर व शराब की गुलामी पर। मुझे सबसे अधिक दुःख इस बात का है कि लोग जानते हैं कि शराब बुरी चीज है, फिर भी पीते हैं। अपनी आंख पर पट्टी बांधकर व अक्ल पर ताले लगाकर। अगर इनको कोई समझाये तो उससे झगड़ा करेंगे और कहेंगे "तेरी जेब से पीता हूं। तेरे बाप की पीता हूं" इत्यादि। ठीक है भई "विनाश काले विपरीत बुद्धिः।"

मेरे जैसे और कितने लेखकों ने शराब की बुराइयों की तरफ शराबियों का ध्यान खींचा होगा, पर उनके कानों पर जूं भी नहीं रेंगे तो वे लोग यह नहीं सोचते कि हमारा क्या स्वार्थ हो सकता है उनको सन्मार्ग पर लाने का। आप शराब छोड़ देंगे तो हमें कोई राजपाट तो मिल नहीं जायेगा। यह तो इन्सानियत का फर्ज है कि आपको मौत के कुयें में गिरने से रोकें। आप इन्सान हैं कोई गधा तो हैं नहीं जो अपना भला-बुरा न समझे।

कई लोग कहते हैं कि साहब दोस्तों ने जबरदस्ती पिलादी। भई वाह ! क्या बात है। आपकी अपनी आत्मा निर्बल है और दोस्तों का बहाना लगा दिया। क्या कोई दोस्त आपको जबर्दस्ती तेजाब पिला सकता है ? संखिया खिला सकता है ? नहीं साहब, दोस्तों द्वारा जबर्दस्ती पिलाया जाना सिर्फ अपनी आत्मा की निर्बलता का ढिंढोरा पीटना मात्र है।

कई लोग यह कहते हैं, साहब हम तो कभी-कभी पीते हैं। क्या कहने ! कभी-कभी आप तेजाब क्यों नहीं पी लेते ? आग में हाथ क्यों नहीं डाल देते ? तेजाब पीने व आग में हाथ डालने का दुष्परिणाम तो तुरन्त पता चल जाता है और शराब का पता नहीं चलता, क्योंकि यह एक धीमा जहर है, जो धीरे-धीरे आदमी को खोखला करता है। इसलिए शराब कभी-कभी पीयें या रोज पीयें, जहर तो जहर है।

इन्सान जब शराब पीता है तो शराब थोड़ी देर में अमाशय से खून में पहुंच जाती है। खून से फेफड़ों के रास्ते श्वास द्वारा बाहर निकल जाती है। ८०% के लगभग श्वास द्वारा बाहर निकल जाती है, बाकी २०% पेशाब द्वारा बाहर निकल जाती है।

शराब मानव शरीर पर निम्नांकित प्रभाव डालती है—

१—आमाशय में तेजाब ज्यादा बनाती है, जिसकी वजह से भूख अधिक लगती है। आपने ये देखा होगा कि शराबी खाना अधिक खाता है। पर भूख बढ़ाने के साथ-साथ तेजाब व शराब मिलकर आमाशय को जला देते हैं व सूजन पैदा कर देते हैं। जिसकी वजह से आदमी का दिल मिचलाता है व उल्टियां होती हैं। ठीक वक्त पर इसका परहेज व इलाज न किया जाये तो पेट का कैंसर भी हो सकता है।

२—आमाशय से शराब खून में जाती है। खून में जाने से शराब सारे शरीर में खून का दौरा बढ़ा देती है, जिससे सारे शरीर में गर्मी महसूस होती है। खून का दौरा बढ़ने से हृदय की धड़कन व रक्तचाप बढ़ जाता है और आदमी शराब पीता रहे तो उच्च रक्तचाप का मरीज बन जाता है।

३—खून से शराब फेफड़ों में पहुंचती है, जिसकी वजह से फेफड़ों में सूजन पैदा हो जाती है। बाद में फेफड़ों की सूजन की वजह से टी० बी० व कैंसर भी हो सकता है। फेफड़ों से शराब श्वास के रास्ते बाहर निकलती है, जिसकी वजह से शराबी के श्वास में शराब की बदबू आती है।

४—खून से शराब जिगर व पैन्क्रियास में पहुंचती है और वहां सूजन पैदा करती है। जिगर में सूजन आने से आदमी की पाचनशक्ति कमजोर हो जाती है। पीलिया हो जाता है और अगर आदमी शराब पीता रहे तो जिगर जलकर बेकार हो जाता है। जिसकी वजह से आदमी की मौत भी हो सकती है। पैन्क्रियास में सूजन आने से पथरी व मधुमेह हो सकता है।

५ कुछ हिस्सा शराब का गुर्दों में पहुंचकर सूजन पैदा कर देता है, जिसकी वजह से गुर्दे खराब भी हो सकते हैं। शराब पीने से पेशाब अधिक आता है।

६—शराब से आदमी की मर्दाना शक्ति भी कम हो जाती है।

अन्त में मैं क्या कहूं। आप खुद ही समझदार हैं। जब भी आप शराब पीयें, अपना बीमा अवश्य करालें और अपने क्रियाकर्म का सामान तैयार रखें। क्या जाने कब यमराज की कृपादृष्टि आप पर हो जाये।

(दैनिक विश्वमानव से साभार)

कुरुक्षेत्र नगर से मांस व शराब की दूकानें हटेंगी

कुरुक्षेत्र, १४ मई। इस महाभारत कालीन शहर की पवित्रता बहाल करने के लिए सभी मांस तथा शराब की दूकानें नगर की सीमा से बाहर स्थानांतरित की जायेंगी। यह कार्य इस वर्ष सितम्बर में होने वाले सूर्य ग्रहण मेले से पहले पूरा कर लिया जायेगा। सूर्य ग्रहण सवेरे ७ बजकर ४ मिनट पर शुरु होगा।

उपायुक्त श्री राजकुमार वर्मा ने बताया कि शहर से मांस एवं शराब की दूकानें बाहर ले जाने का फैसला सूर्य ग्रहण मेले की तैयारी के लिए हुई पहली बैठक में लिया गया। यह फैसला राज्य सरकार को विचारार्थ भेजा जारहा है। उपायुक्त ने बताया कि जिला प्रशासन ने मेला प्रबन्धों के लिए राज्य सरकार से ६० लाख रुपये मांगे हैं।

शराब पीना सामाजिक अभिशाप है।

आर्यसमाज मन्दिर की दिवार तोड़ी

दिनाक २५-४-८८ को कुछ दुष्ट प्रकृति के व्यक्तियो ने आर्यसमाज मन्दिर प्रेमनगर जेल रोड, रोहतक में निर्माणाधीन स्नान घर तथा शोचालय की छत के स्तर तक सीमेंट में बनाई गई ताजा दिवारों को तोड गिराया है।

अपने आपको आर्य बतानेवाले ये अनार्य व्यक्ति हैं—धनपतराय, खजानसिंह तथा रविदत्त। तीनो प्रेमनगर, रोहतक में रहते हैं। मूलतः ये क्रमशः भगवतीपुर, गोच्छी तथा मातनहेल के निवासी हैं।

ये तीन वर्ष पूर्व चौधर की भूख में आर्यसमाज प्रेमनगर के सदस्य बने थे, लेकिन चौथे महीने ही इनके कुकृत्यो की दुर्गन्ध प्रेमनगर मे फैलने लगी। फलत वर्षभर बाद किसी प्रकार भी ठीक न रहने पर इन्हें समाज से विधिवत् निकाल दिया गया था। इन्होने समाज का पुराना रिकार्ड तथा रसीद बुकें भी अभी तक समाज को नही लौटाई हैं। अन्य भी फर्जी रसीदें छपवाकर मौका मिलते ही आर्यसमाज प्रेमनगर के नाम से दूर-दूर तक चन्दा करते रहते हैं तथा उसका दुरुपयोग करते हैं। ऐसे व्यक्तियों की जितनी निन्दा की जाये, कम है।

सभी आर्य भाई-बहनों व संस्थाओं से निवेदन है कि इनके विरुद्ध निन्दा प्रस्ताव पारित कर उचित कार्यवाही हेतु एस० पी० व डी० सी० रोहतक को भेजें। रपट दर्ज कराने पर भी पुलिस ने अभी तक इनके विरुद्ध कोई कार्यवाही नही की है।

—रामप्रकाश सांगवान
प्रधान आर्यसमाज प्रेमनगर जेल रोड, रोहतक

शराबबन्दी के लिए ग्रामसभा का प्रस्ताव

आर्यसमाज भालोट जि० रोहतक के कार्यकर्त्ताओं ने अपने ग्राम से शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए हरयाणा सरकार को ग्राम के नर-नारियों से हस्ताक्षर तथा अंगूठे करवाकर ग्रामसभा के नाम से ज्ञापन देकर माग की है कि शराब के कारण ग्राम में गुण्डगर्दी तथा भ्रष्टाचार बढ रहा है। ठेकेदार गरीब किसान तथा मजदूर की कमाई से माला-माल हो रहा है और उन्हें शराब पिलाकर बर्बाद कर रहा है। यदि शीघ्र ठेका बन्द नही किया गया तो ठेके पर धरना दिया जायेगा।

कृष्णा कालोनी भिवानी तथा फरल आर्यसमाज मन्दिरों के समीप से ठेके दूर हटाये गये

अप्रैल मास के आरम्भ में कृष्णा कालोनी भिवानी तथा फरल जि० कुरुक्षेत्र के आर्यसमाज मन्दिरों के समीप शराब के ठेके खोले जाने पर स्थानीय आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ ने उन्हें हटवाने के लिए कड़ा सघर्ष किया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से भी वहां उपदेशक तथा पत्र आदि भेजकर पूरा सहयोग किया गया। अन्ततः आबकारी एव कराधान विभाग ने विवश होकर दोनो स्थानों से खोखे हटाकर अन्य स्थान पर स्थापित कर दिये। आर्यसमाज फरल की ओर से २७ से २९ मई को वार्षिक उत्सव के अवसर पर शराबबन्दी सम्मेलन रखा गया है। जिसमें आर्यसमाज के नेता तथा भजनोपदेशक पहुंच रहे हैं।

आकाशवाणी रोहतक से

दिनांक १-६-८८ को ठीक ५ ३० बजे युवा संसार कार्यक्रम में आकाशवाणी रोहतक केन्द्र से ब्र० ओमदर्शन योगार्थी से भेंटवार्ता "योग और युवा" विषय पर सुनकर लाभ उठाइये।

गोशाला जींद शहर की उल्लेखनीय उपलब्धियां

जींद शहर की गोशाला का शुभारम्भ सन् १८९४ को हुआ। यह हरयाणा प्रांत की पुरानी गोशालाओं में से एक है। इसमें ६०० गउवों से ज्यादा के रहने का पूरा प्रबन्ध है। गतवर्ष भयंकर सूखे के कारण गोशाला के प्रबन्धको ने विशेष रूप से सक्रिय काम किया। आस-पास के इलाके की भूखी बिमार गउवो को अपने यहा रखकर, उनको चारे द्वारा सर्दी गर्मी से बचाव किया। उनकी पूरी सुरक्षा की व्यवस्था की गई। इस समय गोशाला मे १२०० से ज्यादा गउवें हैं। इनके रखाव के लिए लाखो रुपये की लागत से बरक बनवाई। तुडी और हरे चारे का प्रबन्ध किया। इसके इलावा शहर में इधर-उधर भटकती गउवो के लिए नागरिकों को गोशाला के अधिकारियों ने प्रेरित करके उनके चारे का प्रबन्ध किया।

इस समय गोशाला की देख-रेख के लिए ५० कर्मचारी काम करते हैं। सब गउवो का पानी का इन्तजाम इनकी बरको में ही है। उनके चारे के लिए हर रोज १२ बुग्गी आती हैं। गोशाला के पास ६५ एकड़ भूमि है। ११ ट्यूबवैल, तीन ट्रैक्टर, दो बैलगाड़ी और दो झोटा बुग्गी हैं। गोशाला का बजट लगभग ८ लाख का होता है। गोशाला के खर्चे की पूर्ति दूकानो और क्वाटर्ज के किराये आदि से होती है। अब कमेटी ने दो लाख की लागत से नई बरकें बनवाने का निर्णय लिया है। गोशाला का सारा स्थान पक्का है। जो बाकी है उसे पक्का किया जा रहा है। गोशाला से दूध उचित दाम पर शहर के नागरिकों को वितरित किया जाता है।

गोशाला के प्रबन्धक व सारे सदस्य लगनशील, मेहनती और ईमानदार है। वे आपस के तालमेल से गोशाला के सुचारु संचालन में हर समय प्रयत्नशील रहते हैं। जिला जींद की यह सबसे बड़ी गोशाला है। सरकार का गोशाला को पूरा सहयोग मिलता रहता है। इस साल सूखे से निपटने के लिए हरयाणा सरकार ने आर्थिक अनुदान दिया। हम सभी सदस्य हरयाणा सरकार के हृदय से आभारी हैं।

—छबीलदास आर्य, उपप्रधान गोशाला एवं
संरक्षक आर्यसमाज जींद शहर

चौपटा नाथुसरी का ठेका केवल ५०० गज दूर हटा, धरना समाप्त

जिला सिरसा में चौपटा नाथुसरी नाम का एक स्थान है। वहां एक शिव मन्दिर एवं अनेक शिक्षण संस्थाये हैं। इस स्थान को जंगल में मंगल करने का सारा श्रेय एक नेत्रहीन स्वामी हरिश्चन्द्र जी को है। सरकार ने वहा शराब का ठेका खोल दिया था। गत अप्रैल मास से स्वामी जी इस पाप के अड्डे को यहा से हटाने के लिए प्रयासरत थे। तीन बार मुख्यमन्त्री जी से मिले, लेकिन झूठा ही आश्वासन मिला। ठेकेदार को एक राजनैतिक का विशेष सहयोग मिल रहा था।

ठेकेदार व्यंग के तरीके से कहने लग गया था कि यह ठेका अंगद का पांव है इस स्थान से हट नहीं सकता। उपर्युक्त बातों से दुःखी होकर स्वामी जी २४ अप्रैल को भूमिगत होगये। बाद में इलाके के लोग इकट्ठे हुए तथा स्वामी जी की टोह आरम्भ की। ३० अप्रैल को स्वामी जी सिरसा एक मन्दिर में मिले। सैकड़ों लोग वहा गये और इस ठेके को उठाने बारे पूरा साथ देने का आश्वासन दिया। १ मई को स्वामी जी ने सैकड़ों महिलाओं व पुरुषों के साथ धरना आरम्भ कर दिया। चौपटे पर सारे दूकानदारों ने हड़ताल करदी, राजनैतिक गतिविधि तेज हुई। रणजीतसिंह विधायक के हस्तक्षेप से ठेका वहां से हटाकर ५०० गज दूर भट्टू रोड पर रख दिया। कुछ स्वार्थी लोगों ने स्वामी जी से कहा—ठेका चौपटा मन्दिर के पास से उठ गया, हमारी जीत होगई है धरना समाप्त करवा दिया।

—बलबीरसिंह आर्य क्रांतिकारी, सभा उपदेशक

शराब कुलघातिनी है, शराब हटेगी तो देश बचेगा

हरयाणा में स्वाधीनता की दूसरी लड़ाई का बिगुल बज गया। इस लड़ाई का मुख्य उद्देश्य मादक पदार्थों से मुक्ति दिलाना है। हिन्दी आंदोलन को तरह देश के सभी प्रांतों की प्रतिनिधि सभाओं को तन, मन, धन से मदद करनी चाहिये। नशाबन्दी आंदोलन चलानेवाली सभी संस्थाओं ने तन, मन, धन के साथ अपने कार्यकर्त्ताओं सहित जुट जाना चाहिए।

शराब के ठेकों को हम सिर पर उठा रहे हैं और इस बोझ को ढोये जारहे हैं। फौजी कानटीनों ने भी सेवा-निवृत्त फौजियों की मदद के बहाने यह बोझ हम पर डाल दिया है। अब ठेकेदारों के एजेण्ट तथा फौजियों ने घर-घर में दूकान चला रखी है। इस बोझ को हमने सिर से तुरन्त फेंक देना चाहिये।

हरयाणा के युवकों को इस लड़ाई में अपना चरित्र बचाने के लिए भाग लेना चाहिए। उन्हें श्रद्धा माता की शक्ति ले, शराब को खत्म करनेवाली फौज तैयार करनी होगी। परमात्मा को साक्षी मानकर कुल घातिनी का नाश करने के फार्म भरने का आंदोलन चला, लाखों योद्धा भर्ती करने होंगे। आर्य वीरदल चरित्र का निर्माण करनेवाली संस्थायें 'गुरुकुल' इस आंदोलन को चलायें।

सरकार जो गरीबी मिटाने तथा विकास के नाम पर योजनायें बना रही है, पर इन योजनाओं का लाभ कुछ नहीं हुआ है। सरकार को चरित्र-निर्माण की योजना बनानी चाहिये। स्वयं सरकार के कर्णधार तथा उनके राजपाट के चलानेवाले कर्मचारी चरित्रवान् हों। चरित्र के बिना देश का विकास नहीं होगा। योजनाओं पर लगा धन भ्रष्ट कर्मचारी खा जाते हैं। आठवीं योजना का मुख्य भाग धन नशाबन्दी में लगा देना चाहिए। इस योजना से महाराणा जैसे योद्धा, भामाशाह जैसे धनी, झांसी की रानी जैसी वीराङ्गना और बेलाग कर्मचारी पैदा होंगे। एक ही वर्ष में देश की काया पलट देंगे।

श्रद्धा से सब लग जावें, अपने देश को बचाने का यही एक मुख्य मार्ग है। शराब रहेगी तो देश कदापि उन्नति नहीं कर सकता। चाहे दशरथ का बेटा राम भी भारत की गद्दी सम्भाल ले। इन भोगी कर्णधारों से कुछ नहीं होना। आशा है देश की सब आर्यसमाज तथा अन्य नशाबन्दीवाली जमायतें शीघ्र लगकर देश को बचा लेगी। 'शराब हटेगी तो देश बचेगा' प्रो० शेरसिंह का नारा सार्थक करना होगा।

—दीपचन्द ग्राम पो० कासनी, जि० रोहतक

शिमला में आर्य महासम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश की ओर से आर्यसमाज लोअर बाजार शिमला में १० से १२ जून तक एक "आर्य महासम्मेलन" का आयोजन किया जारहा है। जिसमें अनेक गणमान्य नेता, महात्मा, विद्वान् और संगीतज्ञ पधार रहे हैं। इस अवसर पर कार्यकर्त्ता सम्मेलन, महिला सम्मेलन, संगीत सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, वेद सम्मेलन तथा राष्ट्रीय एकता सम्मेलन भी आयोजित किये जायेंगे। इसके अतिरिक्त ११-६-८८ को एक भव्य शोभा-यात्रा भी निकाली जायेगी। बाहर से आनेवाले यात्रियों के ठहरने और भोजन आदि की निःशुल्क व्यवस्था आर्यसमाज लोअर बाजार शिमला की ओर से की गई है। कृपया अपना अपना बिस्तर अवश्य साथ लायें। इस महासम्मेलन में अधिक से अधिक संख्या में पधार कर पुण्य के भागी बनें।

—भगवद्देव 'चैतन्य'
महामन्त्री आ० प्र० सभा आर्यसमाज सुन्दरनगर, हि.प्र.

भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल जसात जि० गुडगांव का द्वितीय वार्षिक महोत्सव

गुरुकुल का उत्सव जेठ शुक्ला १२-१३ तदनुसार २८-२९ मई, ८८ शनिवार, रविवार को अति समारोहपूर्वक मनाया जारहा है।

इस शुभ अवसर पर स्वामी ध्यानानन्द, स्वामी विजयानन्द गुरुकुल चित्तौड़गढ़, श्री जीवानन्द नैष्ठिक प्रस्तोता गुरुकुल झज्जर एवं अधिष्ठाता गुरुकुल जसात, आचार्य हरिदेव गुरुकुल गौतमनगर, आचार्या बहिन सरोजिनी कन्या गुरुकुल पद्मिनी चित्तौड़गढ़, कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री लीलाधर वानप्रस्थी आर्यसमाज रेवाड़ी, श्री पारब्रह्म परमार्थी रेवाड़ी, श्री रामचन्द्र आर्य रेवाड़ी, श्री धर्मपाल भजनोपदेशक व श्री श्यामवीर राघव इत्यादि साधु, सन्त, विद्वान्, उपदेशक महानुभाव पधार रहे हैं। मुख्य अतिथि श्री गुरुबक्शसिंह जी आई० ए० एस० उपायुक्त गुडगांव होंगे।

इस अवसर पर स्कूल से पांचवीं से आठवीं तक की नवीन छात्राओं का प्रवेश प्रारम्भ है। अतः धर्मप्रेमी सज्जन अपनी कन्याओं को प्रवेश कराकर लाभ उठावें।

—आचार्या बहन सुमित्रा

पानीपत में कवि सम्मेलन

आर्यसमाज खेल बाजार पानीपत के वार्षिकोत्सव पर प्रो० शरर की अध्यक्षता में एक शानदार कवि सम्मेलन हुआ। जिसमें सर्वश्री बेदार देहलवी, मुनव्वर सरहदी, सागर देहलवी, नाज़ सोनीपती, हरनामदास रोहतकी, नम्दा पानीपती, कंवल पानीपती, बेकरार आजाद इत्यादि ने भाग लिया। उत्सव में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक तथा स्वामी आनन्दबोध जी पधारे। कथा का कार्यक्रम भी रोचक रहा। हवन के बाद हरयाणा के राजकवि जैमिनि सरशार की पुण्य तिथि पर महावीर कालोनी, सोनीपत में कवि गोष्ठी हुई।

बात बनाया न करो

—नाज़ सोनीपती

अश्क पलकों की मुण्डेरों पे सजाया न करो।
यों खुलेआम दिलो राज बताया न करो॥

आसमां वालो ! गरीब को सताया न करो।
बिजलियां अम्न के खिरमन पे गिराया न करो॥

काम नेकी के करो और भूला दो उनको।
कोई एहसान किया है तो जताया न करो॥

गालियां खाके जमानें से जमानेभर की।
चुप रहो अपनी जबां 'नाज़' हिलाया न करो॥

आसमां सिर पे उठाओ न बनाओ बातें।
बात हक हो तो कहो शोर मचाया न करो॥

बात भी ऐसी कहो जिससे कोई बात बनें।
वरना खामोश रहो बात बनाया न करो॥

सुनके कुछ शेर मेरे 'नाज़' सुखनवर बोले।
फुसफुसे शेर तो महफिल में सुनाया न करो॥

सफल दाम्पत्य की एक योजना

—प्रा० भद्रसेन डाक० साधु आश्रम, होशियारपुर-१४६०२१

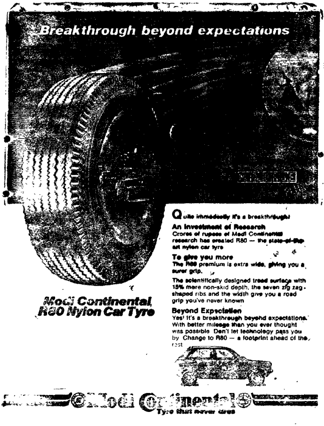
हम जिस धर्म और परम्परा को मानते हैं, उसमें विवाह की बहुत बड़ी महिमा है। तभी बाजे-गाजे और खुशियों के साथ हम इसको रचाते हैं। विवाह एक धार्मिक और सामाजिक सम्बन्ध है। यह केवल दो जीवनों का मेल ही नहीं, अपितु इनके साथ दो परिवारों का भी मेल है, जो कि सम्बन्धों की एक लम्बी श्रृंखला से जुड़े होते हैं।

विवाह का अर्थ है पहले की अपेक्षा अपने जीवन को विशेष ढंग से चलाना। विवाह से दो जीवनों और परिवारों में अपनापन आता है। जहां जितना गहरा आपस में अपनापन होता है, वहां उतनी ही आपस में सहानुभूति, सद्भावना, सहयोग और विश्वास होता है। अतः अपने विवाह को सफल बनाने के लिए जरूरत है कि हम एक दूसरे को समझने और विश्वास में लेने का प्रयास करें, जिससे अपनापन गहरे से गहरा है। इन्हीं सारी भावनाओं को समझाने के लिए ही यह प्राचीन भारतीय विवाह पद्धति है।

भारतीय विवाह पद्धति में भावी वैवाहिक जीवन की सारी रूप-रेखा एक योजनाबद्ध ढंग से समझाई जाती है। तभी तो वहां सबसे पहले स्वागतविधि में सम्मान के साथ बैठने के लिए आसन, फिर पैर, मुख धोने और पीने के लिए जल दिया जाता है। इसके बाद मधुपर्क की विधि होती है। इसके द्वारा सन्देश दिया जाता है कि हमारा खान-पान, रोग निवारक और पुष्ट करनेवाला हो तथा हम आपस में शहद की तरह मिठास भरे और दही जैसे स्वच्छ, पवित्र हों।

यज्ञ के बाद हथलेवा के समय जो मन्त्र बोले जाते हैं, वे बताते हैं कि जैसे दूसरे साझे के कार्यों की कुछ शर्तें होती हैं, वैसे ही इस साझे जीवन की भी कुछ शर्तें हैं। इसीलिए पति पत्नी को जीवन साथी कहते हैं। इसी प्रकार सप्तपदी आदि द्वारा नवदम्पती को भावना दी जाती है कि हम सदा मिलकर एक दूसरे की इच्छाओं की पूर्ति, अन्न के सदुपयोग से शक्ति, उनकी सम्भाल से सुख प्राप्त करते हुए गृहस्थ के नियमित जीवन से अपने परिवार की परम्परा की वृद्धि और आपस में मित्रता-पूर्वक रहें। इस तरह विवाह पद्धति में जहां विवाहित जीवन का सारा नक्शा स्पष्ट किया जाता है, वहां इसके साथ ही साथ सभी प्रभु से प्रार्थना करते हैं—

हों युगल के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख-सम्पदा॥



आर्य सभ्यता व संस्कृति पर विशेष बल

डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान मन्दिर मार्ग के सत्रावसान पर आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के संगठन सचिव श्री दरबारीलाल ने कहा कि डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओं का मुख्य उद्देश्य आर्यसमाज के सिद्धांतों का प्रचार करना है। यदि ये संस्थायें आर्य सभ्यता व संस्कृति के प्रचार व प्रसार में सफल नहीं हो पाती तो हमारे लिये इनकी कोई उपयोगिता नहीं है। स्कूल के अन्य अध्यापकों की अपेक्षा धर्म-शिक्षकों का कार्य अधिक कठिन है। उनका कार्य केवल बच्चों को कक्षा भवन में पढ़ाना मात्र नहीं है, वरन् स्कूल के सारे वातावरण को वैदिक विचारधारा में ओतप्रोत करना है। जिन स्कूलों के प्रिंसिपल आर्यसमाजी नहीं हैं, वहां धर्म-शिक्षकों के मार्ग में कुछ बाधायें भी आ सकती हैं, परन्तु साहस के साथ सभी बाधाओं और असुविधाओं को सहन करते हुए धर्म-शिक्षकों के वैदिक मिशन को निरन्तर बढ़ाते रहना चाहिये।

आर्य विद्या सभा के मन्त्री प्रिंसिपल तिलकराज गुप्त ने कहा कि धर्म-शिक्षकों को निर्भीकता के साथ स्कूल और स्कूल के बाहर आर्यसमाज के प्रचार-कार्य में लगे रहना चाहिये।

आर्यसमाज वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री माता पुष्पावती मौगा, मन्त्री—गुलशनराय (सौम्यमुनि), कोषाध्यक्ष—माता शांति शर्मा, पुस्तकाध्यक्ष—सेवकमुनि।

आर्यसमाज के उत्सवों का कार्यक्रम

आर्यसमाज फरल जि० कुरुक्षेत्र	२७ से २९ मई
,, भादस जि० गुडगांव	२८ से ३० ,,
श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर यमुनानगर जि० अम्बाला	२८-२९ ,,
आर्यसमाज रोहणा जि० सोनीपत	२८ से ३० ,,
,, सांडवा जि० भिवानी	२८ से ३० ,,
,, केहड़ी मदनपुर जि. रोहतक (शिक्षण शिविर)	३१ से ५ जून
,, नाहरी जि० सोनीपत	३ से ५ ,,
,, खेड़ी सुलतान जि० रोहतक	३ से ५ ,,
वैदिक आश्रम फतेहपुर जि० अम्बाला	३ से ५ ,,

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

मंजुला शर्मा को पी-एच० डी०



रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर में मंजुला शर्मा को उनके शोध प्रबंध भारत (विशेषकर मध्यप्रदेश) में आर्यसमाज की शैक्षणिक गतिविधियों का समालोचनात्मक अध्ययन पर पी-एच० डी० की उपाधि प्रदान की है। आप आर्यसमाज जी० सी० एफ० क्वाटर्स जबलपुर के स्तम्भ व कर्मठ कार्यकर्ता स्वर्गीय डा. श्रीराम शर्मा भूतपूर्व प्रधान आर्यसमाज जी० सी० एफ० क्वाटर्स, जबलपुर की पौत्री व डा० रवीन्द्रनाथ शर्मा, भूतपूर्व मन्त्री आर्यसमाज जी० सी० एफ० क्वाटर्स जबलपुर की पुत्री है। यह शोध प्रबन्ध उन्होंने डा० सुश्री सुशीला वैद्य, भूतपूर्व प्रोफेसर शिक्षा विभाग शासकीय शिक्षा महाविद्यालय जबलपुर के निर्देशन में सम्पन्न किया।

कौन चलेगा साथ हमारे ?

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

कौन चलेगा साथ हमारे कठिनाइयों का साथी बनकर ?
कौन चलेगा साथ हमारे इन राहों पर राही बनकर ?

साथी हो ऐसा कश्ती को मझधारों में ले जायें हम,
साथी हो ऐसा तूफानी लहरों से भी टकरायें हम,
साथी हो ऐसा चहुं दिशाओं में पैर फैलायें हम,
कौन चलेगा साथ हमारे इन राहों पर राही बनकर ?

साथी हो ऐसा ऊंचे-ऊंचे पर्वत चढ़ जाय हम;
साथी हो ऐसा चांद सितारों से आगे बढ़ जायें हम,
साथी हो ऐसा आकाशों में झण्डे फहराये हम,
साथी हो ऐसा शेष नाग पर चढ़कर गाना गायें हम,
कौन चलेगा साथ हमारे इन राहों पर राही बनकर ?

साथी हो ऐसा हर मुश्किल में हंसते मुस्काते जायें,
साथी हो ऐसा हर उलझन आसानी से सुलझाते जायें,
साथी हो ऐसा भटके लोगों को राह दिखलाते जायें,
कौन चलेगा साथ हमारे इन राहों पर राही बनकर ?

साथी हो ऐसा मानव में मानवता ही भरते जायें,
साथी हो ऐसा विष के प्याले भी हंसते पीते जायें,
साथी हो ऐसा सूली पर भी रागे सदाकत गाते जायें,
साथी हो ऐसा सीनों पर अंगार के पत्थर खाते जायें,
कौन चलेगा साथ हमारे इन राहों पर राही बनकर ?

साथी हो ऐसा जो सारे अंधियारे ये मिट जायेंगे,
साथी हो ऐसा तो सारे आलम को चमका जायेंगे,
साथी हो ऐसा तो सुख-चैन की दुनियां बसा के जायेंगे,
साथी हो ऐसा तो अपनी मंजिल को हम पा जायेंगे,
कौन चलेगा साथ हमारे इन राहों पर राही बनकर ?

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

ठेका हटवाने की कीमत हाथ कटाकर चुकाई

(जनसत्ता संवाददाता)

रोहतक, १२ मई। महम चौबीसी के तहत गांव निदाना की २८ साला महिला सुमित्रा को अपने ही गांव की महिलाओं द्वारा चलाये गये शराब विरोधी आंदोलन में भाग लेने की बड़ी भारी कीमत चुकानी पड़ी है। शराब विरोधी आंदोलन महिलाओं ने आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर चलाया था। यह आंदोलन एक महीने तक चला था। आखिरकार जिला प्रशासन को गांव निदाना का शराब ठेका बन्द करना पड़ा था।

सुमित्रा का पति राजकुमार शराबी था। गांव का ठेका बन्द हो जाने के कारण उसके मनमें काफी गुस्सा था। वह अपनी पत्नी को ठेका हटवाने के आंदोलन में भाग लेने के लिए सबक सिखाना चाहता था। उसने अपनी पत्नी को सजा देने के लिए एक योजना बनाई। एक दिन वह बहाने से सुमित्रा को खेत में ले गया। वहां जाकर उसने उसके दोनों हाथ बांध दिये और तेजधारवाली कुल्हाड़ी से उसके दोनों हाथ काट दिये। अब सुमित्रा को इलाज के लिए यहां के मेडीकल कालेज और अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सुमित्रा के तीन छोटे-छोटे लड़के हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने बताया कि वे जल्दी ही राजकुमार के खिलाफ पुलिस में मामला दर्ज करवायंगे।

प्रो० शेरसिंह ने बताया आर्यसमाज ने पिछले तीन सालों में प्रदेश भर में ७० शराब की दुकानों को बन्द कराया है। उन्होंने बताया कि आर्यसमाज ने इस साल भी निदाना, कथूरा और मदीना गांवों के शराब के ठेके बन्द करवाये हैं। सिरसा जिला के गांव चौड़ा रास्ता में शराब का ठेका हटवाने के लिए धरना चल रहा है।

पता परिवर्तन

सभी परिचित सज्जनों को सूचना दी जाती है कि मेरे निवास स्थान का पता बदल गया है। अब कृपया निम्नलिखित पते पर ही पत्र व्यवहार करें—

—*सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक*
सी-१२७ अवन्तिका (रोहिणी) सेक्टर-१ दिल्ली-११००८३

आर्यसमाज गोरखपुर जबलपुर का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री विजयसिंह गायकवाड़, मन्त्री—डा० केशवप्रसाद पाठक, कोषाध्यक्ष—रमेसकुमार खत्री, उपप्रधान—प्रफुल्ल डावर, सुशील आर्य, उपमन्त्री—राजकुमार महता, बलदेवप्रसाद, आडिटर—कुलदीपसिंह, पुस्तकाध्यक्ष—सुधीर महता।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४)
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 पंजि० नं० P/RTK [illegible]



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री १७ ज्येष्ठ २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्क २७ ७ जून, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

व्यष्टि और समष्टि के निर्माण में पुरोहित एवं संस्कारों का महत्त्व

(आचार्य वेदभूषण अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान मन्दिर, हैदराबाद)

आज तेजी से समाज में पुरोहितों का अभाव हो रहा है। यहां तक कि मरणोपरांत अन्त्येष्टि के लिए भी अब समय पर पुरोहित उपलब्ध नहीं होते। विद्वान् लेखक ने प्रस्तुत लेख में इसी समस्या की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट करने का प्रयत्न किया है व वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर की रचनात्मक योजना प्रस्तुत की है।

——[illegible]

ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र के प्रथम वाक्य में ही "पुरोहितम्" शब्द पढ़ा गया है। नाम शब्दों के क्रम में ऋग्वेद का प्रथम शब्द "अग्नि" है और दूसरा शब्द है पुरोहित।

अग्नि और पुरोहित जीवन की ये दो प्रमुख आवश्यकतायें हैं—अग्नि ज्ञान का प्रतीक है और पुरोहित कर्म का।

ब्रह्मचर्य आश्रम में जिस प्रकार ज्ञान अर्जित करने के लिए ब्रह्मचारी आचार्य का या गुरु का वरण करता है, वैसे ही गृहस्थाश्रम में कर्म को कुशलतापूर्वक करने के लिए गृहस्थ यजमान पुरोहित का वरण करता है।

वैदिक समाज व्यवस्था जीवन की स्वाभाविक आवश्यकताओं के आधार पर अत्यन्त व्यावहारिक रूप में प्रस्थापित की गई है। यह व्यवस्था अत्यन्त विवेकपूर्ण और विज्ञान सम्मत है। इसीलिए यह व्यवस्था सार्वभौम व सर्वमान्य व्यवस्था है।

जैसे भारत में बालक गुरु का वरण करता है, वैसे ही धरती के किसी भी कोने पर चले जाइये तो वहां भी गुरु और शिष्य की व्यवस्था आपको दृष्टिगोचर होगी। इसी प्रकार संसार के किसी भी कोने में आप चले जायें, वहां आपको यजमान और पुरोहित की व्यवस्था भी स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होगी।

इसीलिए वैदिक व्यवस्था सार्वभौम, सार्वकालिक एवं विज्ञान सम्मत मानी जाती है।

जैसे ज्ञान दो प्रकार का होता है—एक सैद्धांतिक व दूसरा व्यावहारिक। इसे अंग्रेजी भाषा में थ्योरी (Theory) व प्रेक्टिकल (Practical) कहते हैं। इसमें कर्म के दो भेद हैं—एक बाह्य और दूसरा आभ्यन्तर कर्म। शास्त्रों में बाह्य कर्म को कर्म और आभ्यन्तर कर्म को उपासना कहा जाता है। इसी आधार पर तीन विषय माने जाते हैं, जिन्हें हम ज्ञान, कर्म और उपासना कहते हैं। वैसे मूलरूप में विषय दो ही हैं—ज्ञान और कर्म।

ज्ञान का प्रतीक अग्नि है। इसीलिए उपनयन संस्कार में अग्नि को आचार्य कहा गया—"अग्नि आचार्यस्तव" तेरा आचार्य अग्नि है। गुरुओं की परम्परा में आदि आचार्य अग्नि ही थे, जिन्हें सृष्टि के आदि में परमात्मा ने ऋग्वेद का ज्ञान दिया था।

ऋग्वेद ज्ञान का वेद है। ज्ञान में मुख्य रूप से जानने योग्य तत्व अग्नि ही है। जैसे भौतिक अग्नि भौतिक अन्धकार को दूर कर प्रकाश फैला देती है, वैसे ही ज्ञान, अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश कर बुद्धि में प्रकाश फैला देता है। इसीलिए अग्नि और ज्ञान एक दूसरे के पर्यायवाची शब्द हैं।

इसी प्रकार वायु और कर्म भी पर्यायवाची शब्द हैं। यजुर्वेद यजन का वेद है। यजन अथवा यज्ञ, कर्म के ही नाम हैं। यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में ही वायवस्थ देवः और श्रेष्ठतमाय कर्मणे कहकर वायु और कर्म की संगति बिठलाई गई है। सृष्टि के आदि में जिस ऋषि को यजुर्वेद का ज्ञान प्राप्त हुआ, उसे वायु इस उपाधि नाम से सम्बोधित किया जाता है।

वेद अर्थात् ज्ञान और मानव जीवन का चोली दामन का सा साथ है। इसीलिए मनुष्य का परम धर्म वेद का पढ़ना-पढ़ाना सुनना-सुनाना दर्शाया गया है। वेद अर्थात् ज्ञान ग्रहण करने की दो ही विधा हैं। पढ़कर अथवा सुनकर।

इस ऊहापोह से एक बात उभरती है कि—ऋग्वेद ब्रह्मचर्य आश्रम का प्रतीक है, क्योंकि वह ज्ञान का वेद है। दूसरा यजुर्वेद गृहस्थाश्रम का प्रतीक है। वास्तव में गृहस्थाश्रम कर्माश्रम है।

ब्रह्मचर्याश्रम में ज्ञान को अर्जित कर गृहस्थाश्रम में प्राप्त ज्ञान के अनुकूल आचरण कर सुख प्राप्त करना ही तो मानव जीवन की योजना है।

ब्रह्मचारी को ज्ञान प्राप्त कराने के लिए जो सहयोगी दिया जाता है, वही आचार्य या गुरु कहाता है। गृहस्थाश्रम में कर्म करने के लिए गृहस्थी को जो सहायक दिया जाता है, उसी का नाम है "पुरोहित"। व्यवहार विद्या में जो निपुण होता है, जो कर्म करने की दक्षता प्राप्त कर लेता है, वह कर्म शास्त्री गृहस्थी का आचार्य अथवा पुरोहित कहाता है, पथ-प्रदर्शक कहाता है। (क्रमशः)

हरयाणा में आर्यसमाज का प्रचार

लेखक—यशपाल आर्यबन्धु, आर्योपदेशक, आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद

आर्यसमाज की स्थापना यद्यपि बम्बई में हुई थी तथापि इसका प्रचार-प्रसार जितना पंजाब में हुआ, उतना अन्य स्थानों पर नहीं हुआ। यही तक कि वर्तमान दस नियम भी लाहौर में ही बनाये गये। आर्यसमाज को पंजाब ने मुनिवर गुरुदत्त विद्यार्थी, लाला साईंदास, पण्डित लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द तथा अन्य अनेकों नेता और कार्यकर्त्ता प्रदान किये। डी० ए० वी० आंदोलन और गुरुकुल आंदोलन का सूत्रपात भी पंजाब से ही हुआ। संगठन की दृष्टि से आर्य प्रतिनिधि सभा के गठन का विचार भी पंजाब की ही देन है। तात्पर्य यह कि आर्यसमाज की स्थापना से ही अविभाजित पंजाब आर्यसमाज की गतिविधियों का एक केन्द्र और आर्यसमाज का गढ़ रहा है।

देश के विभाजन के पश्चात् पंजाब का एक विशाल भूभाग पाकिस्तान में चला गया। इसके साथ आर्यसमाज की विपुल अचल सम्पत्ति भी पाकिस्तान में रह गई। विशाल पुस्तकालय एवं अन्य साहित्य भी नष्ट होगया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद पंजाब के उद्यमी भाइयों ने आर्यसमाज की शक्ति को फिर से संजोया। उस समय हरयाणा हिमाचल आदि सभी पंजाब के ही अंग थे। कालांतर में पंजाब से हरयाणा और हिमाचल अलग कर दिये गये और इस प्रकार पंजाब तीन भागों में बट गया। प्रतिस्पर्धात्मक होड़ के कारण तीनों राज्यों में आर्यसमाज का कार्य द्रुतगत से बढ़ने लगा। किन्तु दुर्भाग्य से पंजाब में आतंकवाद का ऐसा दौर चला कि सम्पूर्ण पंजाब लड़खड़ा कर रह गया। इसका प्रभाव आर्यसमाज पर स्वाभाविक रूप से पड़ना था और वह पड़ा भी। परिणामस्वरूप आर्यसमाज के जलसे-जलूस आदि जो कि आर्यसमाज की शक्ति प्रदर्शन का साधन माने जाते हैं, पंजाब में सर्वथा बन्द होगये।

हरयाणा पर भी पंजाब का कुछ असर अवश्य हुआ और वहां भी कभी-कभार आतंकवाद की घटनायें होने लगी हैं तथापि वहां आर्यसमाज के कार्यक्रम अबोध गति से चल रहे हैं। हमारा यह दुर्भाग्य रहा कि हरयाणा के किसी आर्यसमाज में जाने का अब तक अवसर नहीं मिला था। इसलिए हरयाणा में आर्यसमाज की गतिविधियों को निकट से देखने का सुअवसर भी नहीं मिल पाया था। यद्यपि आर्य पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से विशेषतया सर्वहितकारी से हरयाणा में आर्यसमाज की गतिविधियों का पता चलता रहता था तथापि प्रत्यक्ष देखने का सुअवसर तब मिला, जब आर्यसमाज नगर, सोनीपत के वार्षिकोत्सव तथा कथा पर आमन्त्रित किया गया। २ से ५ मई तक वेदकथा तथा ६ से ८ तक वार्षिकोत्सव पर जहां सेवा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ, वहां हरयाणा में आर्यसमाज की गतिविधियों से परिचित होने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ। उत्सव में ब्रह्मचारी अखिलेश्वर जी व्याकरणाचार्य सहित कई विद्वान् आमन्त्रित थे। भजनोपदेशकों में सभा के पं० विद्याभूषण जी तथा स्वतन्त्र कई ख्याति प्राप्त भजनोपदेशक शोभायमान थे। इन सब महानुभावों से हरयाणा आर्यसमाज की गतिविधियों की पर्याप्त जानकारी मिली और बड़ा सन्तोष हुआ। विशेष रूप से हरयाणा में शराबबन्दी के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक ने जो अभियान चला रखा है, वह अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है। सभा के समस्त अधिकारी विशेष रूप से सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी आर्यजगत् के बधाई के पात्र हैं। उनके नेतृत्व ने हरयाणा के आर्यसमाजों में प्राण फूंक दिये हैं।

सोनीपत में आर्यसमाज का अच्छा प्रचार है। नगर आर्यसमाज के अतिरिक्त वहां माडल टाउन, ऋषिनगर, आर्यनगर तथा सेक्टर १४ में अच्छे आर्यसमाज हैं और खूब कार्य कर रहे हैं। नगर आर्यसमाज सोनीपत के वार्षिकोत्सव आदि प्रतिवर्ष किसी खुले स्थान पर हुआ करते थे। किन्तु इस बार उन्होंने एक नया प्रयोग किया और उत्सव आर्यसमाज मन्दिर में ही किया। आर्यसमाज ने मन्दिर के साथ लगे मकान को खरीद कर आर्यसमाज का प्रांगण बढ़ा दिया है और अब उसमें पर्याप्त स्थान होगया है। अतः उत्सव का आयोजन वहीं पर किया गया। नया स्थान होते भी जहां तक उपस्थिति का प्रश्न है, वह प्रारम्भ से ही अच्छी रही और दिनोंदिन बढ़ती गई। कथा में अपने स्वभाव के अनुरूप मैं प्रातः आध्यात्मिक चर्चा किया करता हूं एवं रात्रि को सैद्धांतिक चर्चा। मध्याह्न की सभाओं में सुधारात्मक चर्चायें छेड़ा करता हूं। प्रायः आर्यसमाजों में जाने का अवसर मिलता है तो वहां एक बात देखने में मिलती है। वह यह कि श्रोताओं में आध्यात्मिक चर्चाओं को तो सुनने की रुचि रहती है पर सैद्धांतिक चर्चायें उन्हें उतनी रुचिकर नहीं लगती। किन्तु सोनीपत में आर्यजनता ने सैद्धांतिक चर्चाओं को जिस रुचि और उत्साह के साथ सुना, वह वस्तुतः प्रशंसनीय है। सोनीपत में ही अन्य अनेकों सज्जनों के साथ-साथ श्रीयुत देवप्रिय आर्य जी के दर्शनों का सुअवसर भी हमें मिला। अपने पूज्य पिता निडर जी की भांति ही वे सिद्धांतों के प्रेमी और पारखी हैं। वहीं पर आर्य कवि श्रीयुत नाज सोनीपती से भी परिचय हुआ। यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है।

सोनीपत नगर आर्यसमाज का संगठन एवं परस्पर प्रेम-प्रीति दर्शनीय है। अन्तिम दिन ऋषिलंगर का दृश्य तो आर्यों के मेले के सदृश लग रहा था। हरयाणा में आर्यजनों के अभूतपूर्व उत्साह और उमंग को देखकर हरयाणा आर्यसमाज की सेवा करने की इच्छा जागृत हुई है। अतः अपनी सेवायें समर्पित करने में मुझे प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

राष्ट्रीय चेतना हेतु युवक निर्माण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली युवकों में राष्ट्रीय चेतना; चरित्र निर्माण, भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था तथा शारीरिक व आत्मिक उन्नति के लिए आगामी १८ जून से २६ जून, ८८ तक गुरुकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार जि० पौड़ी गढ़वाल (उ०प्र०) में "ग्रीष्मकालीन युवक निर्माण शिविर" का आयोजन कर रहा है। इसके साथ योग साधना शिविर भी चलेगा।

परिषद् अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने बताया कि दिल्ली से शिविर में २०० आर्ययुवक भाग लेंगे तथा आर्य विद्वान् स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती शिविराध्यक्ष होंगे। स्वामी जीवनानन्द जी भी बौद्धिक प्रदान करेंगे। देश की वर्तमान परिस्थितियों में ऐसे शिविरों की नितांत आवश्यकता है। आधुनिक भीम ब्र० विश्वपाल जयन्त व धर्मवीर जी के निर्देशन में योग, आसन, दण्ड-बैठक, लाठी, बाक्सिंग, फ्रीस्टाइल कुश्ती, जुडो-कराटे आदि का शिक्षण दिया जायेगा।

श्री आर्य ने कहा कि यह शिविर स्थान हिमालय की रमणीक घाटियों के बीच मालिनी नदी के तट पर है तथा वीरभरत की जन्म भूमि व महर्षि कण्व की तपःस्थली के रूप में ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। न्यूनतम १५ वर्ष की आयु के युवक भाग ले सकते हैं। इच्छुक युवक कार्यालय आर्यसमाज कबीर बस्ती, दिल्ली-७ के पते पर सम्पर्क करें।

२६ जून को प्रातः समापन समारोह में सुन्दर व्यायाम प्रदर्शन होगा तथा दीक्षित शिविरार्थी आडम्बर, पाखण्ड, भ्रष्टाचार, जातपात; छुआछूत, मांसाहार, शराब नशा, धूम्रपान छोड़ने व इनके विरुद्ध संघर्ष करने की प्रतिज्ञा लेंगे।

—चन्द्रमोह आर्य, प्रेस सचिव

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज मेन बाजार बल्लबगढ़ (फरीदाबाद) को एक पुरोहित की आवश्यकता है। योग्य व्यक्ति शीघ्र सम्पर्क करे।

—सुरेश भड़ाना मन्त्री

पंजाब की कोई समस्या नहीं ताकत हासिल करने के लिये लड़ाई है

—प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

पंजाब में जो बवंडर पिछले पांच-छ: वर्षों से चल रहा है, उसका कोई ठोस आधार नहीं है, केवल घोशेबाजी पर सारा झमेला खड़ा किया हुआ है। न तो पंजाब प्रदेश और उसके नागरिकों के साथ कभी कोई भेदभाव बरता गया और न सिखों के साथ। वास्तविकता इससे बिल्कुल उलटी है, मैं आगे चलकर उस पर प्रकाश डालूंगा। पंजाब का सारा बवंडर राजनैतिक सत्ता हथियाने के लिए आरम्भ किया गया था। व्यर्थ में ही बात का बतंगड़ बन गया और वह बनाया राजनैतिक दलों ने और समाचारपत्रों ने। यह भूत जो इन दोनों ने बनाकर खड़ा कर दिया, वह अब राष्ट्र की प्रभुसत्ता और एकता के लिए खतरा बन बैठा है।

१९८० में अकाली सरकार तोड़ दी गई। केन्द्र में सत्ता बदलने से प्रदेशों की सरकारें तोड़कर नये चुनाव करवाने की जो गलत प्रथा जनता सरकार ने डाली थी, कांग्रेस सरकार ने भी उस पर फूल चढ़ा दिये। यदि चुनाव में अकाली सरकार बनाने में सफल हो जाते तो पंजाब में यह बवंडर नहीं खड़ा होता। अकाली यह बर्दाशत नहीं कर सके कि पंजाबी सूबा बनने के बाद कांग्रेस की सरकार बने। उन्होंने आंदोलन शुरु कर दिया और सतलुज यमुना लिंक नहर का काम शुरु करने पर तथाकथित धर्मयुद्ध (जो वास्तव में पापयुद्ध ही कहलाना चाहिए था, क्योंकि भाई का हक भाई दबाये यह महापाप है) आरम्भ कर दिया गया। अकाली सत्ता हासिल करने के लिए अनुचित मांगें मनवाने के लिए हर पांच वर्षों में एक आंदोलन करते रहे और उसका कुछ अंश मनवाकर जनता पर अपना प्रभाव जमाते रहे हैं। अगले पांच वर्षों में फिर फैसलों से मुकर कर, बढ़-चढ़कर मांग करते रहे। कुछ हाथ लग गया और जनता में जाने लायक होगये तो अकाली बने रहे और निराशा हाथ लगी तो बकरी का कान पकड़ कर कांग्रेस में शामिल होगये और सत्ता में हिस्सेदारी करली। अकालियों की इस राजनीति के कारण जो आज कांग्रेसी दिखाई दे रहे हैं, वे अधिकतर अकाली रह चुके हैं और जो अकाली दिखाई देते हैं, वे कांग्रेसी रह चुके हैं। कोई बिरला ही माई का लाल है जो लगातार कांग्रेसी रहा हो या लगातार अकाली।

लोंगोवाल ने तथाकथित पंजाब समझौते के द्वारा पुराने फैसले खुलवा लिए और इसी उपलब्धि के कारण अकाली दल पंजाब में १९८५ में जीत गया। कांग्रेस ने भी परोक्ष रूप से समर्थन ही दिया, ताकि पंजाब में शांति व्यवस्था कायम हो सके। उस समझौते में तीन वायदे अकालियों ने किये थे—१. अगस्त १९८६ तक लिंक नहर बनाना, २. चण्डीगढ़ के बदले में आयोग द्वारा पहिचान किये हुए हिन्दी भाषी गांव हरयाणा को देना और ३. उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के नेतृत्व में बने पंचाट से रावी व्यास के पानी का निर्णय लेना। जैसी अकालियों की आदत है, वे तीनों वायदों से ही भाग खड़े हुए और 'धींगाधींगी और बल्लू का राज' की बातें करने लगे। परन्तु इस बार अकाली (दोनों धड़े) मार खा गये। वे सोचते तो यह थे कि आतंकवादी मारकाट करेंगे और उसकी आड़ में वे अपनी अनुचित मांगें मनवाकर फिर राजनीति पर हावी हो जायेंगे। परन्तु इस बार बादल, बरनाला लड़े तो आतंकवादी इनके हथियार नहीं बने, इनको ही उन्होंने हथियार बना लिया। बादल ने तो अपनी साख जमाने के लिए तथाकथित मरजीवड़ो के चोगों में शामिल होना शुरु कर दिया और बरनाला ने उनके हुकमनामे पर जूते साफ किये और मन्त्री मण्डल भी नहीं चला पाये। आतंकवादियों ने तोहड़ा बादल से गुरुद्वारे भी छीन लिए और उनका वर्चस्व सिख राजनीति से समाप्त कर दिया। सिखों में सत्ता का तीसरा केन्द्र बन गया और वह दोनों को पछाड़ गया। दोनों धड़ों के अकाली नेताओं को अपनी जान बचाने के लाले पड़े हुए हैं।

पंजाब की वस्तु स्थिति

'पंजाब समस्या, पंजाब समस्या' का नाम रोज पढ़ते और सुनते लोगों के मनों पर यह प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है कि शायद पंजाब प्रदेश इसके नागरिकों या कम से कम सिखों के साथ भेदभाव जरूर किया जारहा होगा। सभी जानते हैं कि पंजाब देश का सबसे समृद्ध प्रदेश है। भारत देश का ही नहीं, धरती का कोई कोना ऐसा नहीं, जहां पंजाब के हिन्दू और सिख न पहुंचे हों और वहां रहकर मालामाल न होगये हों। उद्योग धन्धे हों, चाहे देश और विदेश का व्यापार हो, वे सबसे आगे हैं। बड़े से बड़े पदों पर वे सभी विभागों, मन्त्रालयों आदि में हैं और अधिकतर मन्त्रालयों पर ही नहीं, मन्त्रियों पर भी हावी हैं। कारण वे अत्यन्त 'चतुर' भी हैं और परिश्रमी भी। पंजाब की उपजाऊ धरती को नहरों और नलकूपों के द्वारा देश के सभी प्रांतों से अधिक पानी उपलब्ध है। किसान भी यहां का प्रगतिशील और परिश्रमी है। पंजाब में मजदूर तो मिलता ही नहीं। लाखों मजदूर बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश और उड़ीसा से आकर यहां मजदूरी करते हैं। सिख खेती, व्यापार, सरकारी सेवा आदि में सभी वर्गों से आगे हैं। राष्ट्रपति, राज्यपाल, मन्त्री, राजदूत, न्यायाधीश कौन-सा पद ऐसा है, जहां वह नहीं रहा या आज नहीं है। इस तथ्य के रहते क्या कोई यह कहने का दुस्साहस कर सकता है कि पंजाब प्रदेश उसके नागरिकों या सिखों के साथ भेदभाव बरता जाता है। यह दुस्साहस अकाली में ही है। वह निधड़क होकर झूठ बोलता है और समाचारपत्र उसे प्रमुख समाचार बनाकर छापते हैं। अधिकतर राजनैतिक दल भी उनको बढ़ावा देते हैं और उनको अनुचित मांगों को मानकर समझौता करने के लिए दबाव देते हैं और निधड़क होकर देशहित का वास्ता देते हैं। हरयाणा की भाषा में कहा जा सकता है कि पंजाब के अकाली और उनकी हां में हां मिलानेवाले दूसरे अधिकतर पंजाबी 'ऊध कर रहे हैं।'

अकालियों की नीयत खराब है

यह स्पष्ट है कि पंजाब को या सिखों को कोई समस्या नहीं है। वास्तविकता यह है कि उनकी नीयत खराब है। १९६० में मा तारासिंह ने दास कमीशन की नियुक्ति पर सरकार को मजबूर किया, सिखों के साथ होनेवाले भेदभाव की जांच करने के लिये। दास आयोग ने उन्हें बुलाया तो वे भाग गये, आयोग का बहिष्कार कर दिया। दूसरे दर्जे के नेता आये और मैंने हरयाणा के साथ होनेवाले भेदभाव की व्यथा कथा सुनाई तो वे एक बात का भी जवाब नहीं दे सके। मैथ्यू आयोग ने अकाली दल को अलग से समय दिया और हरयाणा रक्षावाहिनी को भी। अकाली पं० जवाहरलाल के तथाकथित वायदे के राग के सिवा कुछ भी नहीं कह सके और मेरी किसी बात का जवाब नहीं दे सके। केवल कन्दूखेड़ा पंजाबी भाषी है, इसलिए कोई गांव हरयाणा को न मिले, यह कहकर चले गये। सरकारी दस्तावेज और अकालियों के हस्ताक्षरित दस्तावेजों के बारे में भी चुप होगये। तर्क और दस्तावेजों के आधार पर वे सब अकेले में मान भी लेते हैं, परन्तु उनकी नीयत खराब है।

जब हरयाणा पंजाबी सूबा बने, तब पंजाब के पास हरयाणा से दो गुणा नहरों का पानी था और दो गुणा से अधिक नलकूपों के लिए जमीन के नीचे मीठा पानी। इसलिए रावी व्यास का कम से कम दो तिहाई पानी हरयाणा को मिलना चाहिए था, परन्तु उनकी नीयत यह है कि हरयाणा को एक घूंट पानी भी न मिले। लिंक नहर के मजदूरों को अभी-अभी मारकर भगाया है और इतने दिनों से नहर के बनने में लगातार रुकावटें डालते रहे हैं। पंजाब की २० प्रतिशत से अधिक जमीन सेम की लपेट में आ चुकी है और हर वर्ष और अधिक आती आरही है। मुक्तसर तहसील जहां सबसे अधिक कपास बोई जाती थी, वहां अधिक पानी के कारण कपास की खेती लगभग समाप्त होगई है। मुक्तसर कस्बे में घरों के नीचे पानी बह रहा है। अकालियों को पंजाब

की जमीन और मकान खराब होने की परवाह नहीं। उनकी नीयत यह है कि चाहे पंजाब डूब जाये, हरयाणा को पानी नहीं मिलना चाहिए।

शाह आयोग ने हिन्दी भाषी होने के नाते चण्डीगढ़ हरयाणा को दिया। फाजिल्का अबोहर को लिखित रूप में तथा अकाल तख्त पर बैठकर हिन्दी भाषी माना और हरयाणा को देने की बात मानी और १९७० में फिर सन्त फतहसिंह ने उसकी पेशकश करके जनवरी, १९७० का श्रीमती इन्दिरा गांधी का फैसला करवाया। पंजाब समझौते के तहत मैथ्यू आयोग ने हिन्दी भाषी ग्रामों की पहिचान करदी। सन्त लोंगोवाल ने भी १४ अगस्त, १९८५ को फिरोजपुर में यही बात मानी। परन्तु अब चण्डीगढ़ और फाजिल्का अबोहर आतंकवादियों की मारकाट की आड़ में लेने के लिए जोर डालने में कोई शर्म महसूस नहीं करते। इस बार उन पर हरयाणा की यह कहावत चरितार्थ हो रही है कि "नीयत के बिना बरकत नहीं होती।" तथाकथित 'धर्मयुद्ध' में लाखों आदमी जेल में भिजवाकर तथा हजारों हिन्दू और सिक्खों को मरवाकर भी अकाली इस बार 'सौदा' नहीं कर पाये। वे अपनी विश्वसनीयता ही नहीं खो बैठे, बल्कि अपनी जान बचाते फिर रहे हैं। बादल तो कोई धोखा उठाकर अपनी जान बचाने के लिए जेल में जाने का बहाना ढूँढते रहते हैं। अकालियों की गतिविधियों के कारण पंजाब की अर्थव्यवस्था और विकास कार्य पिछड़ते जा रहे हैं।

सिख युवकों की कहानी

सिख युवकों ने अकाली नेताओं को तो नंगा कर दिया और उनसे नाक रगड़वा लिया, परन्तु वे स्वयं भटक गये। आदर्शों के लिए मरने मिटनेवाले वीर सुशिक्षित नवयुवक भारत के शत्रुओं के फेर में पड़ गये। वह दूसरे प्रदेशों की तरह ही पंजाब को सत्ता हाथ में लेने तक अपने आपको सीमित रखते और अपनी सरकार बनाकर शराबखोरी, मांसाहार, भ्रष्टाचार आदि से पंजाब की जनता को मुक्त करवाकर स्वच्छ शासन देने की बात करते तो सारा देश उनको बधाई देता और उनका आदर करता। परन्तु वे तो अमरीका पाकिस्तान के बहकावे में आकर देश की प्रभुसत्ता और एकता को ही चुनौती देने लगे और इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए बेगुनाहों की हत्या करने के घृणित काम में फंस गये। उनको समझ लेना चाहिए कि देश न तो अपनी प्रभुसत्ता (Sourcity) पर आंच आने देगा और न ही एकता को भंग होने देगा। निरवैरसिंह की पत्र प्रतिनिधि से जो बातें हुईं, उससे तो ऐसा पता लगता है कि बहुत से नवयुवक कुछ देशद्रोहियों की चालों में फंस गये हैं, वे न तो किसी बेगुनाह हिन्दू या सिख को मारना चाहते हैं और न देश को तोड़ना चाहते हैं, वे तो कुछ देशद्रोहियों के चक्कर में आकर उनका ही खेल खेल रहे हैं, वे हृदय से आज भी अपने देश से और हिन्दू सिख दोनों से प्यार करते हैं। निरवैरसिंह ने कहा है "हम हिन्दुस्तानी हैं, हिन्दुस्तान हमारा है, हमें विदेशी साजिश को समझकर अपने देश को बचाना है।"

मेरी मनोकामना है और मुझे विश्वास यह देश के करोड़ों लोगों की मनोकामना है कि निरवैरसिंह जैसे सैंकड़ों हजारों नवयुवक विदेशी साजिश के शिकार होने से बचें, हमारे सुरक्षा दल उनको देशद्रोहियों के चुंगल से निकालें और वे सब नवयुवक देश की प्रभुसत्ता और एकता को चुनौती देनेवालों को बेनकाब करें। नेकनीयती से विमुख अकाली नेता तो बेनकाब हो चुके हैं। मेरी यह भी मनोकामना है कि गुरुओं के ऊंचे आदर्शों से प्रेरित ये नवयुवक पंजाब को साफ-सुथरा शासन दें और नेकनीयती से काम करते हुए आगे बढ़ें।

आर्यसमाज सालवन जि० करनाल का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री ओमप्रकाश आर्य, उपप्रधान—अमरसिंह आर्य, मन्त्री—राजवीरसिंह आर्य, उपमन्त्री—वेदव्रत आर्य, कोषाध्यक्ष—ब्रह्मप्रकाश आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—राजवीरसिंह आर्य।

शराब पीना सामाजिक अभिशाप है।

दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर का उत्सव सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर यमुनानगर जि० अम्बाला का वार्षिक उत्सव २७ से २९ मई को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। उत्सव से पूर्व महाविद्यालय के प्रबन्धक ब्र० महेन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। इन दिनों में श्री जवाहरलाल शास्त्री एवं ब्र० राजकिशोर द्वारा योगासन तथा व्यायाम प्रदर्शन भी किया गया।

उत्सव के अवसर पर सर्वश्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, ईश्वरचन्द्र शास्त्री, चन्द्रपाल शास्त्री, आचार्य देवव्रत, पं० यज्ञप्रिय, ब्र० सत्यप्रिय तिजारा आदि विद्वानों के व्याख्यान तथा वानप्रस्थी हरलाल, पं० ईश्वरसिंह तूफान, जयपाल एवं पं० विद्याभूषण, स्वामी सेवकानन्द आदि के भजन हुए और सभी वक्ताओं ने शराब जैसी सामाजिक बुराइयों का खण्डन करके वैदिकधर्म की विशेषताओं की चर्चा की। आचार्य विजयपाल जी ने शक्ति प्रदर्शन करके सभी को चकित कर दिया। उत्सव पर सभा को एक हजार रुपये वेदप्रचारार्थ दिया गया। इस विद्यालय में दसवीं पास छात्रों का प्रवेश एक जुलाई से आरम्भ होगा। शिक्षा, भोजन तथा आवास निःशुल्क है। उपदेशक बनने के इच्छुक प्रत्याशी शीघ्र आवेदन करें।

—जयपाल आर्य प्रधान

सोनीपत में जगराते के नाम पर ठगी

सोनीपत, १ जून (निस)। आजकल इस नगर में माता वैष्णों देवी के नाम पर जगराता करनेवाले कई लोग छा गये हैं तथा वह लोगों से हजारों रुपये बटोर कर चले जाते हैं। नगर के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा करने पर पता चला है कि कई बाजारों एवं मुहल्लों में जगराता करने वाले लोग एक मकान अथवा दुकान या खाली पड़ी भूमि पर माता वैष्णों देवी की मूर्ति लगा देते हैं और उस जगह को बिजली के बल्बों एवं ट्यूबों से जगमगा देते हैं। इसके पश्चात् दो सप्ताह तक वहां माता वैष्णों देवी की स्तुति के रिकार्ड चलाये जाते हैं और प्रातःकाल व सायंकाल वहां कीर्तन करते हैं। वहां से गुजरनेवाले लोग विशेषकर महिलायें व बच्चे वहां पड़े हुए दानपात्र में दान डाल जाते हैं और जगराता करनेवालों के दिन में हजारों रुपये एकत्र हो जाते हैं। फिर एक दिन यह लोग माता का प्रसाद बांटकर चम्पत हो जाते हैं और फिर किसी अन्य स्थान पर यह क्रम शुरु कर देते हैं।

नगर की कई संस्थाओं की मांग है कि धोखेबाजों के विरुद्ध जिला प्रशासन कार्यवाही करे और उनको मुख्य मार्गों को रोकने की स्वीकृति न दे।

समाजवादी गीत (गृहस्थाश्रम)

गृहस्थो करो भलाई रे, यदि तुम्हें गृहस्थ चलाना है।
लेके ओ३म् नाम का सहारा, घर में यज्ञ हवन नित करना।
पहले पांच देव हित करना, फिर तुम अपने पेट को भरना।
कमाके नेक कमाई से, यदि तुम्हें—…१॥
पेट चाहे कितना ही दुःख सहना, सत को छोड़ असत नहीं कहना।
चाचो, ताई, माता, बहना, मिलजुल प्रेमभाव से रहना।
लड़ो मत भाई-भाई से, यदि तुम्हें…२॥
सोखो बच्चो सन्तान बनाना, बलो और बुद्धिमान् बनाना।
चाहिए देश महान् बनाना, पढ़कर आत्म-ज्ञान बढ़ाना।
इन्हीं वेदों की पढ़ाई से, यदि तुम्हें……३॥
पाप और झूठ कपट छल त्यागो, नशे विषय से दूर ही भागो।
दिल से ओ३म् भजन में लागो, जागो 'दशाल' गृहस्थो जागो।
भागो लोभ लुगाई रे, यदि तुम्हें……४॥

—अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

आर्यसमाज पर सुधार की जिम्मेदारी : जाखड़

निज संवाददाता

सीकर, ७ मई। लोकसभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ ने कहा कि जो लोग अपने देश के प्राचीन गौरव तथा अपनी संस्कृति को भुला देते हैं, उनका भविष्य कभी भी गौरवशाली नहीं हो सकता। वे आज यहां रामलीला मैदान में आयोजित आर्य महासम्मेलन का उद्घाटन कर रहे थे।

श्री जाखड़ ने कहा कि आर्यसमाज के प्रणेता व संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने राष्ट्र की परिस्थितियों को देखते हुए हमारी प्राचीन गौरवमयी वेद संस्कृति को नये सिरे से समाज के सामने आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया। स्वामी दयानन्द ने राष्ट्र में नई चेतना, स्वभाषा व स्वराज का मन्त्र फूंक कर राष्ट्रीय जागृति को नई ज्योति प्रज्ज्वलित की थी।

स्वामी दयानन्द ने हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में उस समय मान्यता देकर इस देश को भाषाई माध्यम से जोड़ने का एक महत्त्वपूर्ण कार्य किया था।

श्री जाखड़ ने कहा कि किसी युग में इस देश में गंगा के किनारे वेदों की अमृतवाणी गूंजा करती थी। विदेशों से लोग आकर इस देश की पवित्र भूमि से प्रेरणा व ज्ञान की अमृत धारा लेकर विश्व के हर भाग में पहुंचाया करते थे, तब हमारा देश जगद्गुरु का वास्तविक अधिकारी था। उन्होंने कहा कि आज इसी देश में मानव के अधिकारों का हनन मानव द्वारा किया जाने लगा है। समाज में जागृति के नाम पर पुरानी पोंगापंथी तथा विकृतियां फिर से पनपने लगी हैं। ऐसे समय में आर्यसमाज पर देश के निर्माण व समाज-सुधार की विशेष जिम्मेदारी आती है। उन्होंने कहा कि मनुष्य के कामों का प्रतिबिम्ब समाज व राष्ट्र पर पड़ता है। अतः हमें धर्मान्धता, अन्धविश्वास व शोषण के सिद्धांतों को तिलांजलि देनी होगी।

शोक समाचार

यह खेद की बात है कि मा० रामकिशन आर्य के धर्मात्मा चाचा श्री मनसाराम आर्य रानी खेड़ा निवासी (दिल्ली) का रविवार १-५-८८ पूर्णमासी को देहांत होगया। आपका सारा जीवन आर्यसमाज के वैदिक सिद्धांतों और महर्षि दयानन्द के प्रचार तथा व्यवहार में व्यतीत हुआ है। आप भारत की स्वतन्त्रता के लिए क्रांतिकारियों से प्रभावित होकर हथियार चलाने तथा बम बनाने की चेष्टा से १९३९ से १९४४ तक सेना में इरान-इराक में भी रहे। सेना में ही रहते आपने सत्यार्थप्रकाश और महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र पढ़कर आजीवन दृढ़ आर्यसमाजी रहे। घर आकर आप सतत गोपालक, ईमानदार, सच्चे प्रभावशाली कृषक रहे।

आपका सामूहिक परिवार सारे ग्राम में प्रतिष्ठित है। आप ७८ वर्ष की आयु में अपने तीन पुत्र, दो भतीजे, एक पुत्री और ११ पौत्र छोड़कर स्वर्गवासी होगये। आपके घर पर १३-५-८८ शुक्रवार को मैंने ही शुद्धि यज्ञ कराया था। नांगलोई आर्यसमाज के भी कई सज्जन उपस्थित थे। यज्ञोपरांत दिवंगत आत्मा की शांति और परिजनों के धर्य के लिए परमात्मा से प्रार्थना की गई। इनके बड़े सुपुत्र सुमेरसिंह और रामकिशन ने मुझे आर्य धर्मार्थ (१०१) दिये हैं। मैं भी इनमें (१००) मिलाकर ये दो सौ एक रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भोजन भण्डार रोहतक में भेज रहा हूं। इसी प्रकार २०१) एक अन्य शुद्धि यज्ञ के गुरुकुल भैंसवाल में भेजे हैं।

—निहालसिंह आर्य, नांगलोई

पूर्णिमा यज्ञ सम्पन्न

दिनांक ३१-५-८८ को गतमास की भांति आर्यसमाज मन्दिर नलवा में पूर्णिमा के उपलक्ष्य में हवन किया गया। इस अवसर पर स्वामी परमानन्द जी व स्वामी मस्तानानन्द जी ने सत्संग के लाभ तथा महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर भजनों द्वारा प्रकाश डाला। सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने शराब व जूआ आदि भयानक बुराइयों से सदा दूर रहने पर बल दिया।

—पं० रामेश्वर आर्य, उपमन्त्री आर्यसमाज नलवा

स्वामी वेदबोध

अजमेर, १५ मई। 'आर्यमित्र' 'श्रेष्ठ मानवधर्म' के भूतपूर्व सम्पादक और वर्तमान में 'वेद-सविता' के एक सम्पादक श्री विक्रमादित्य वसन्त ने रविवार १५ मई को महर्षि दयानन्द की निर्वाण नगरी अजमेर में 'स्वामी वेदबोध' नाम से संन्यासाश्रम में प्रवेश किया है। अब आप सर्वात्मना वेदप्रचार में अपनी शक्ति का सदुपयोग करेंगे। आपके साथ पत्राचार का पता निम्नलिखित रहेगा—

द्वारा—वेद संस्थान, सी २२, राजौरी गार्डन
नई दिल्ली-११००२७ (दूरभाष : ५०२३१६)

आर्यसमाज के उत्सवों का कार्यक्रम

आर्यसमाज अमीन जि० करनाल	१० से १२ जून
,, खालन जि० अम्बाला	१० से १२ ,,
,, बाजीदपुर सबोली जि० सोनीपत	११-१२ ,,
,, आहूलाना जि० सोनीपत	१४-१५ ,,
,, नजफगढ़ (दिल्ली)	१६ से १८ ,,
,, लुखी जि० महेन्द्रगढ	१७ से १९ ,,
,, बेगा जि० सोनीपत	१७ से १९ ,,
,, गांधी नगर गन्नौर जि० सोनीपत	२४ से २६ ,,

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्यसमाज गिवाना जि. सोनीपत का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री पर्वतसिंह, उपप्रधान—जयदेवसिंह, मन्त्री—पं० जयनारायण, कोषाध्यक्ष—मा० दयानन्द, पुस्तकाध्यक्ष—बलराजसिंह, प्रचारमन्त्री—ओमप्रकाशसिंह, उपमन्त्री—वेदपालसिंह।

स्वर्गीय पं. तालेराम आर्य की ७वीं स्मृति सम्पन्न

दिनांक २८ से ३० मई, ८८ को आर्यसमाज कंवारी (हिसार) की ओर से पं० तालेराम आर्य की ७वीं स्मृति मनाई गई। प्रतिदिन चौपाड़ में हवन किया गया। स्वामी परमानन्द जी व महाशय दीपचन्द जी की भजनमण्डली ने समाज-सुधार के भजनों के अतिरिक्त वीर हकीकतराय और नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का इतिहास रखकर नवयुवकों में जान डाल दी। प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने पं० तालेराम के जीवन व कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। विशेषकर नवयुवकों को शराब से होनेवाले नुकसान से अवगत कराकर शराब न पीने की प्रेरणा की। स्वेच्छा से सत्यपाल जी ने शराब एवं मा० जयपाल जी ने बीड़ी सिगरेट न पीने की प्रतिज्ञा की। भीषण गर्मी के बावजूद भी वेदप्रचार में काफी सख्या में नर-नारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम प्रेरणा-प्रद एवं सराहनीय रहा।

—इन्द्रसिंह आर्य उपमन्त्री आर्यसमाज कंवारी, हिसार

आर्यसमाज का राष्ट्रीयस्वरूप फिर उभरा

—ब्रह्मदत्त स्नातक, सी-४ बी-३३२, जनकपुरी, दिल्ली

आर्थिक, राजनैतिक और अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर हमारे देश में राजनैतिक पार्टियां व्यापक राष्ट्रीय हित में नहीं, अपितु संकीर्ण दलगत दृष्टि से विचार निर्णय और कार्यवाही करती रही है।

आर्यसमाज सदैव संकीर्ण दृष्टि से नहीं, अपितु व्यापक दृष्टि से अपने विचार, निर्णय और कार्यवाही करता है। आर्यसमाज में भिन्न-भिन्न राजनैतिक दलों के सदस्य अवश्य हैं, परन्तु वे सदैव संकीर्ण दलगत भावनाओं से ऊपर उठकर कार्य करते हैं।

इसी भावना का एक बार फिर प्रदर्शन १५ मई, ८८ को भारत की राजधानी में देखने को मिला। जब कि हजारों आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने पड़ोसी परन्तु शत्रु देश पाकिस्तान के विरुद्ध भारत में अलगाववादियों और आतंकवादियों को समर्थन देने की कार्यवाही पर अपना रोष प्रकट किया। पिछले ५ वर्षों से देश और पंजाब में जो नृशंस कांड हो रहे हैं और जिसकी चरम परिणति स्वर्ण मन्दिर में हाल की पुलिस कार्यवाही के रूप में हुई। उसका वास्तविक समाधान पंजाब के आतंकवादियों के समर्थक पाकिस्तान के प्रति अपना आक्रोश प्रकट करने के सिवाय कुछ नहीं बचा था।

हमारे देश के नेता और राजनैतिक दल इस सच्चाई को कभी भी नहीं पहचान सके, या यूं कहिए कि देश के पाकिस्तान समर्थक भारतीय नागरिकों के वोटों को बटोरने के ख्याल से पाकिस्तान के विरुद्ध कोई विरोध प्रदर्शन नहीं किया। अन्य किसी हिन्दू, सिख और सम्प्रदाय के संगठन ने बौद्धिक व्यक्तियों के छात्र और महिला संगठनों ने भी इस दिशा में कोई साहस नहीं दिखाया। पाक दूतावास पर उस दिन जो प्रचण्ड प्रदर्शन आर्यसमाज की ओर से हुआ उसकी सराहना और समर्थन देश के सभी वर्गों ने किया। सामयिक विषयों पर जनमत को जगाना केवल आर्यसमाज के कार्यक्षेत्र में आता है। यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि शासक या विरोधी दलों के राजनैतिक आर्यसमाज कार्यकर्त्ताओं ने इस ज्वलन्त प्रयत्न पर अपने संगठन और व्यापक राष्ट्रीयता का पूरा प्रदर्शन किया।

उत्तरांचल में राष्ट्र व धर्म-रक्षा अभियान यात्रा

गत लगभग पांच वर्षों से वैदिक संस्थान नजीबाबाद ने भारतीय उत्तरांचल के गढ़वाल मण्डल में अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार विरोध तथा आर्यसमाजों की स्थापना के लिये राष्ट्र व धर्म-रक्षा अभियान चला रखा है।

इस अभियान द्वारा सर्वाधिक कार्य साहित्य वितरण का किया जारहा है। समय-समय पर इसके लिए उत्तरांचल में वैदिक संस्थान नजीबाबाद के अध्यक्ष स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक स्वयं प्रचार यात्रायें करते हैं। उनकी इन यात्राओं में कभी-कभी भजनोपदेशक भी साथ होते हैं।

इस बार प्रथम यात्रा १ मई को प्रारम्भ होकर २० मई को समाप्त हुई। इस यात्रा के मुख्य कार्य सार्वजनिक सभाओं तथा कालिजों में भाषण, साहित्य वितरण तथा दीवारों पर प्रचार पोस्टरों का लगाया जाना रहा। अभियान यात्रा के मुख्य पड़ाव ग्रामणीवाल, हिंडोलावाल, रोडधार, टिहरी, उत्तरकाशी तथा भटवाड़ी नगर रहे।

दूसरी यात्रा ६ जून को कोटद्वार से प्रारम्भ होकर दुगड्डा, डाडामण्डी, लैंसडोन, सतपुली, पौड़ी, श्रीनगर तथा रुद्रप्रयाग की रहेगी और तीसरी यात्रा ऋषिकेश, नरेन्द्रनगर, चम्बा, टिहरी, देवप्रयाग होकर हरिद्वार में समाप्त होगी।

—मनोजकुमार
व्यवस्थापक वैदिक संस्थान नजीबाबाद

आर्यसमाज खेड़ी सुलतान जि. रोहतक का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री चन्द्रपाल आर्य, उप-प्रधान—मा० हेमराज, मन्त्री—राजेन्द्रसिंह चौहान, प्रचारमन्त्री—धार्यसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—नानक आर्य।

आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर नरवाना

गतवर्षों की भांति इस वर्ष भी २४ जून से ३ जुलाई, ८८ तक आर्यसमाज नरवाना (जींद) में सार्वदेशिक आर्य वीरदल के उपप्रधान संचालक डा० देवव्रत आचार्य के निर्देशन में आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर लगाया जायेगा। शिविर में भारतीय व्यायाम, राइफल ट्रेनिंग, फर्स्ट एड तथा धार्मिक शिक्षा दी जायेंगी। प्रवेश शुल्क मात्र २०) होगा। विशेष ट्रेनिंग के लिए सरकारी शुल्क अलग होगा। भोजन, आवास निःशुल्क।

२४ जून को सायं ५ बजे उद्घाटन तथा ३ जुलाई को सायं ५ बजे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी की अध्यक्षता में दीक्षांत समारोह होगा। इस अवसर पर १ से ३ जुलाई को आर्य वीरदल हरयाणा के समस्त अधिकारियों व अन्तरंग सदस्यों की विचार गोष्ठियां व कार्यशाला भी होगी। जिसमें आगामी वर्ष की रूप-रेखा बनाई जायेगी। अपना नाम भेजकर स्थान सुरक्षित करायें।

—रामकुमार आर्य शिविर संयोजक

अंग्रेजी हटाओ देश बचाओ

अंग्रेज गये अंग्रेजी जाये।

अंग्रेजी का पलटो पासा। चले देश में देसी भाषा ॥२
अंग्रेजी में काम न होगा। फिर से देश गुलाम न होगा ॥३
अंग्रेजी की क्या पहचान। भारत मां की कटी जुबान ॥४
अंग्रेजी को मत अपनाओ। भारत मां की शान बढ़ाओ ॥५
काम करे ना गिट-पिट बोलें। चिकना पहनें नखरे तोलें ॥६
अंग्रेजी की क्या पहचान। शेखी नफरत और अपमान ॥७
अंग्रेजी का बोले बोल। लोकतन्त्र की खोले पोल ॥८
अंग्रेजी की साजिश गहरी। संसद और अदालत बहरी ॥९

—डा० वेदप्रताप वैदिक

प्रवेश सूचना

(सत्र १९८८-८९)

डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान

(अन्तर्गत आर्य विद्या सभा, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली)

पद धर्म शिक्षक

प्रवेश योग्यता : एम० ए० (संस्कृत) अथवा आचार्य। हिन्दी, अंग्रेजी भाषा तथा वैदिक सिद्धांतों का ज्ञान आवश्यक।

पाठ्यक्रम अवधि : एक वर्ष

सुविधायें : शिक्षा, आवास, पानी व बिजली सर्वथा नि:शुल्क, योग्य छात्रों को २००) मासिक छात्रवृत्ति।

पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद सफल अभ्यर्थियों को डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओं में "धर्म शिक्षक" पद पर टी० जी० टी० वेतनक्रम में नियुक्ति की गारण्टी।

केवल निष्ठावान् आर्यसमाजी ही पूर्ण विवरण (आयु, शैक्षिक योग्यता, अनुभव आदि) सहित आवेदन-पत्र २० जून, ८८ तक निम्न पते पर भेजें—

—प्रो० रत्नसिंह आचार्य
डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान
आर्यसमाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

नशे की लत

क्यों दे रहा पैर विघ्न में, क्यों दे रहा पैर विघ्न में।
हो जाएगी तन की ढेरी, क्यों दे रहा पैर विघ्न में॥

दे छोड़ नशे की लत ने, जो नष्ट करे तेरी मत नें।
गत ने बुरी बनावे तेरी, हो हानि तन, मन, धन में।
पी दारु मोल राड़ ले, लड़-भिड़ के घर को उजाड़ ले।
फाड़ दे कोई खोपड़ी तेरी, नशे के पागलपन में।
मद्य, गांजा, भांग, चरस ने और अफीम जैसे इस विष नें।
जिसने की छोड़ने में देरी, मिट जाएगा कुछ दिन में।
जो चाहे तू गृहस्थ चलाना, अपना ले सादा खाना।
बनाना चाहे जिन्दगी तेरी, लग जाओ 'दलाल' भजन में॥

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मेसर्ज परमानन्द साईंदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक
२. " फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार
३. " सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत
४. " हरीश एजेन्सीज ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत
५. " भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल
६. " घनश्यामदास सीताराम बिचला बाजार, भिवानी
७. " कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा
८. " कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद
९. " चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/५ जैकमपुरा, गुड़गांव

प्रवेश सूचना

१-अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा राजकोट-३६३६५० में नये विद्यार्थियों का प्रवेश आरम्भ। प्रवेश की अन्तिम तिथि १ जुलाई ८८ है। आवेदन १५ जून तक स्थानीय आर्यसमाज द्वारा अपना परिचय पत्र साथ लगाकर भेजें।

२—इस विद्यालय का उद्देश्य योग्य, चरित्रवान्, समर्पित उपदेशक उपलब्ध कराना है।

३—विद्यालय का पाठ्यक्रम चार वर्ष का है। विद्यार्थियों को इस काल में ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ संस्कृत, दर्शन, उपनिषद्, वेदादि साहित्य में अधिक से अधिक योग्य बनाने का प्रयत्न किया जाता है।

४—प्रवेश के लिए कम से कम दशम श्रेणी संस्कृत के साथ उत्तीर्ण होना आवश्यक है। आयु १७ से २२ वर्ष तक और अविवाहित।

५—विद्यार्थियों के आवास भोजन, शिक्षा आदि का सम्पूर्ण व्यय टंकारा ट्रस्ट व्यय करेगा।

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, उपप्रधान—इंजीनियर प्रियव्रतदास, मन्त्री—विशिकेसन शास्त्री, उपमन्त्री—व्रजबन्धु पण्डा, कोषाध्यक्ष—गोपालदास रावल। —विशिकेसन शास्त्री मन्त्री

शोक समाचार

लाला रामचन्द्र जी ग्राम हसनपुर, तहसील झज्जर का अकस्मात् लम्बी बीमारी के बाद वृन्दावन में देहांत होगया। लाला जी बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे। उन्होंने झज्जर तहसील में अनेक धर्मशाला, स्कूल व प्याऊ बनवाये। अनेक गांवों में मन्दिरों का निर्माण भी करवाया। झज्जर का प्रसिद्ध कन्याओं का उच्चतर माध्यमिक स्कूल। हसनपुर में लड़कों का हाई स्कूल। सुरेहती और फतेहपुरी के धर्मशाला व प्याऊ प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अपने जीवनकाल में अनेकों गांवों में बढ़िया नसल के सांड खरीद कर छोड़े।

गुरुकुल झज्जर की आदर्श गोशाला में भी उन्होंने एक सांड छोड़ा और उसके व्यय के लिए झज्जर में कन्या स्कूल के पास एक दुकान दान में दी। जिसका किराया २००) रु० प्रतिमास सांड के खर्च के लिए मिलता रहता है। इस प्रकार के धार्मिक व्यक्ति के निधन से इस क्षेत्र में बहुत ही शोक व्याप्त है। उनके प्रिय गुरुकुल झज्जर में भी शोकसभा मनाई गई और उनके पीछे सम्पन्न परिवार को भगवान् सुख और शांति प्रदान करे।

—फतेहसिंह भण्डारी

सर्वहितकारी में विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४) रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 2320

दूरभाष ७२६०४,७३,०८६

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

२४ ज्येष्ठ २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्क २८ १४ जून, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

व्यष्टि और समष्टि के निर्माण में पुरोहित एवं संस्कारों का महत्त्व

(आचार्य वेदभूषण अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान मन्दिर, हैदराबाद)

गतांक से आगे—

वैदिक सामाजिक व्यवस्था कितनी स्वाभाविक एवं व्यावहारिक व अनिवार्य है। भारत में इसे पुरोहित कहते हैं तो उर्दू में मौलवी और अंग्रेजी में पोप या पादरी कहते हैं। नाम कुछ भी रखिए, पर सर्वत्र व्यवस्था का स्वरूप एक ही है। इसीलिए हम वैदिक व्यवस्था को सार्वभौम व अनिवार्य शाश्वत व्यवस्था कहते हैं।

जिस प्रकार बिना गुरु के शिष्य की उन्नति सम्भव नहीं, वैसे ही बिना पुरोहित के गृहस्थ जीवन सफल नहीं हो सकता। गृहस्थ जीवन की सफलता में ही सामाजिक उन्नति अन्तर्निहित होती है। व्यष्टि से परिवार और परिवार से समाज का निर्माण होता है।

अतः यह बात स्पष्ट रूप से कही जा सकती है कि पुरोहित समाज का निर्माता होता है।

समाज शास्त्र की चरमिति ही राजनीति शास्त्र या शासन व्यवस्था है। यदि एक परिवार के पथप्रदर्शक को पुरोहित कहते हैं तो समाज के पथप्रदर्शक को नेता और शासन के पथप्रदर्शक को सचेतक (ह्विप) या राजपुरोहित कहते हैं। पुरोहित, नेता या सचेतक ये तीनों भी एक ही शब्द पुरोहित के पर्यायवाची नाम हैं।

इससे स्पष्ट है कि—सामाजिक व्यवस्था में पुरोहित का स्थान प्रमुख व सर्वोपरि होता है।

इसीलिए यजुर्वेद के नवम अध्याय के चौबीसवे मन्त्र में बहुत स्पष्ट आदेश दिया गया है कि—"वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः स्वाहा।" वेद में जहां कहीं 'स्वाहा' शब्द का प्रयोग होता है तो जान लेना चाहिए कि वहां कोई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात कही जारही है। इसीलिए बात कहकर स्वाहा अर्थात् सु+आह=अच्छा कहा, अच्छा कहा कह दिया जाता है। जैसे आजकल वाह-वाह कहा जाता है, वैसे ही वैदिक प्रशंसा की भाषा में स्वाहा-स्वाहा कहा जाता था।

"राष्ट्र को जागृत करने के लिए पुरोहितों को जागृत करो" यह वेद का आदेश है। पुरोहित राष्ट्र के समाज का प्रतीक होता है। पुरोहित जागता है तो राष्ट्र जागता है, समाज जागता है। पुरोहित सोता है तो राष्ट्र और समाज भी प्रसुप्त हो जाते हैं। पुरोहित बिगड़ता है तो राष्ट्र और समाज बिगड़ जाता है।

आर्यसमाज की उन्नति के लिए आज सब चिन्तित हैं। आर्यसमाज के पुनर्गठन की चर्चा चल रही है। आर्यसमाज की शोचनीय स्थिति का कारण खोजा जारहा है।

यदि वेद को पढ़ लें तो बात स्पष्ट हो जाती है कि जब आज पुरोहित की स्थिति शोचनीय है तो समाज और राष्ट्र की स्थिति शोचनीय होगी ही।

समाज पुरोहित की प्रतिलिपि होता है। मूल प्रति अच्छी होगी तो प्रतिलिपि भी अच्छी होगी।

आवश्यकता है पुरोहितों के निर्माण की। आदर्श पथप्रदर्शकों की। जैसा पुरोहित होगा, वैसा ही परिवार होगा। इसीलिए वेदमाता कह रही है कि—वयं पुरोहिताः राष्ट्रे जागृयाम। पुरोहित को सदा जागरूक रहना चाहिए। समाज से ही व्यक्ति या व्यष्टि का निर्माण होता है और व्यष्टि से ही समष्टि का। इस बात को ठीक-ठीक समझ लेना चाहिए।

महर्षि दयानन्द जैसा एक पुरोहित आया तो सारा राष्ट्र अगड़ाई लेकर खड़ा होगया। राष्ट्र के जागने, खड़े होने से अंग्रेज भाग गया। अब पुरोहित चला गया तो राष्ट्र खड़ा का खड़ा है। वह भूल गया कि उसे चलना भी है। मंजिल अभी बहुत दूर है। पर बिना पुरोहित के, बिना कमांडर के सेना चल नहीं सकती। बिना ड्राईवर के गाड़ी और बिना मशीन मैन के मशीन चल नही सकती।

मशीन को सुचारु ढंग से चलाना है तो कुशल मशीन मैन की आवश्यकता होती है। इसलिए आज समाज के उन्नयन के लिए आदर्श कर्मकुशल विद्वान् पुरोहितों के निर्माण की आवश्यकता है। समाज में सर्वाधिक महत्त्व पुरोहित का होता है। देखिये यजुर्वेद के तेतीसवें अध्याय का चालीसवां मन्त्र—

बट सूर्यः श्रवसा महाँ असि सत्रा देवः महाँ असि।
महा देवानामसुर्यः पुरोहितो विभुर्ज्योतिरदाभ्यम्॥

इस मन्त्र का देवता विद्वान् है। ऋषि प्रस्कण्व है। इन मन्त्रों में महत्त्वपूर्ण जड़ देवताओं व चेतन देवताओं को गिनाया जारहा है। इस मन्त्र में पुरोहित को महान् दर्शाया गया है। इस मन्त्र में पुरोहित को देवताओं का भी प्राण कहा गया है।

इस प्रकार निर्विवाद रूप से पुरोहित की महानता व उसका महत्त्व स्वयं सिद्ध है। प्रत्येक आर्यसमाज में एक-एक पुरोहित प्रशिक्षण केन्द्र खोला जाना चाहिए। जहां संस्कारों का महत्त्व दर्शाते हुए कर्मकांड का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। स्कूलों के अध्यापकों और कालेज के लैक्चरारों को प्रशिक्षण देकर पौरोहित्य के कार्य में लगाना चाहिए। जिससे व्यक्ति, परिवार व समाजों की उन्नति के लिए सबल आधार तैयार हो सके।

(क्रमशः)

महिलाओं में धूम्रपान की प्रवृत्ति कितनी घातक ?

महिलाओं में धूम्रपान की प्रवृत्ति आज की देन नहीं है, बल्कि ग्रामीण स्त्रियां तो न जाने कब से धूम्रपान करती आई हैं, भारत में राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बिहार, उड़ीसा, हरयाणा आदि अनेक ऐसे राज्य हैं जहां की निम्न वर्गीय स्त्रियां बीड़ी या हुक्का पीती हैं। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में स्त्रियों का धूम्रपान करना उनकी अनेक निजी धारणाओं पर आधारित है। जैसे खाना खाने के बाद धूम्रपान करने से भोजन आसानी से पच जाता है। उसे खाना खाने के बाद धूम्रपान करने से कुछ राहत मिलती है। उन्होंने बतौर किसी फैशन के इसे नहीं अपनाया है। दूसरी बात यह है कि अज्ञानवश उन्हें धूम्रपान के घातक परिणामों का पता नहीं चल पाता।

वैसे ग्रामीण क्षेत्रों में भी अब धीरे-धीरे जागरूकता आती जारही है और वहां भी अब केवल बड़ी-बूढ़ी स्त्रियां ही धूम्रपान करती दिखाई देती हैं, नवयुवतियां नहीं।

लेकिन पाश्चात्य देशों में तो स्त्रियों का धूम्रपान करना एक आम बात है। भारत में भी बड़े-बड़े शहरों में पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित अनेक स्त्रियां धूम्रपान करती हैं।

शहरी स्त्रियों के धूम्रपान का चलन अति उच्च वर्ग या तथाकथित अति आधुनिक वर्ग में ही पाया जाता है। मध्यम और निम्न मध्यम वर्ग की महिलायें अभी इस फैशनपरस्ती की चपेट में नहीं आई हैं।

शहरों में महिलाओं में धूम्रपान का शौक फैशन के तौर पर फैला हुआ है। यद्यपि ये महिलाये धूम्रपान के घातक परिणामो से अनभिज्ञ नही हैं, किन्तु वे जिस समाज में उठती-बैठती हैं, वहां महिलाओं का धूम्रपान करना सम्भवत: आधुनिकता का प्रतीक बन गया है।

धूम्रपान महिलाओं द्वारा किया जाये या पुरुषों द्वारा, स्वास्थ्य की दृष्टि से दोनों के लिए ही हानिकारक है। किन्तु महिलाओं का धूम्रपान करना न सिर्फ उनके लिए हानिकारक है, बल्कि गर्भावस्था के दौरान गर्भस्थ शिशु पर भी इसका घातक प्रभाव पड़ता है और दिक्कत यह है कि जब एक बार इसकी आदत पड़ जाती है तो बड़ी मुश्किल से ही छूट पाती है।

तम्बाकू में पाया जानेवाला निकोटीन तत्त्व बहुत ही हानिकारक है। धूम्रपान करनेवालों का ऐसा ख्याल है कि धूम्रपान करने से मनुष्य को कुछ राहत मिलती है। जबकि यह धारणा पूर्णत: भ्रामक है, क्योंकि निकोटीन का बहुत खराब प्रभाव हृदय व फेफड़े के साथ ही मस्तिष्क पर भी पड़ता है। कहना न होगा कि निकोटीन से शरीर के लगभग प्रत्येक भाग पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

खून में पाया जानेवाला हिमोग्लोबिन आक्सीजन की अपेक्षा कार्बन मोनोक्साइड को कहीं अधिक शीघ्रता से ग्रहण कर लेता है। इस प्रकार रक्त नलियों में आक्सीजन की जगह कार्बनमोनोक्साइड के प्रवेश से व्यक्ति को मिलनेवाली आक्सीजन में कमी आ जाती है।

धूम्रपान का गर्भस्थ शिशु पर निश्चित रूप से असर पड़ता है। गर्भावस्था के दौरान धूम्रपान करनेवाली महिलाय एक तरह से गर्भस्थ शिशु के लिए खतरा मोल लेती हैं।

सर्वेक्षण में पाया गया है कि गर्भावस्था के दौरान धूम्रपान करने वाली महिलाओं के बच्चों का वजन धूम्रपान न करनेवाली महिलाओं के बच्चो से लगभग सात औंस कम होता है। वजन कम होने पर निश्चय ही बच्चा कमजोर होगा और इससे वह बहुत जल्दी ही रोग का शिकार हो जायेगा।

गर्भावस्था के दौरान कोई स्त्री यदि एक दिन में दस सिगरेट पीती है तो उसके बच्चे के मरने की सम्भावना बीस प्रतिशत है। यही नहीं इस दौरान धूम्रपान करने से उसका बच्चा जिन्दगीभर के लिए धूम्रपायी बन जाता है। सर्वेक्षण से पता चला है कि मृत बच्चों के पैदा होने या कमजोरी के कारण जन्म लेते ही बच्चे के मर जाने की घटनायें धूम्रपान करनेवाली महिलाओं में अधिक दिखाई देती है। धूम्रपान के प्रभाव से बच्चे के अक्षम या अपंग होने की सम्भावना भी रहती है।

सन् १९६९ में ब्रिटेन के "राष्ट्रीय बाल विकास अध्ययन" नामक संगठन द्वारा किये गये एक सर्वेक्षण के अनुसार गर्भावस्था के दौरान धूम्रपान करनेवाली महिलाओं के सात साल तक के बच्चे की लम्बाई अपेक्षाकृत कम पाई गई। साथ ही वे बच्चे कम उम्र में ही धूम्रपान करना शुरु कर देते हैं।

जब महिलायें धूम्रपान करती हैं तो कार्बनमोनोक्साइड निकोटीन के रूप में कई अन्य पदार्थों के साथ शरीर में प्रवेश करता है। इनका सीधा असर महिलाओं के भ्रूण में भी आक्सीजन की कमी होने के साथ ही अनेक विकृतियां भी आजाती हैं।

यही नहीं गर्भावस्था के दौरान धूम्रपान करनेवाली महिलाओं के बच्चों के गुर्दे, जिगर, हृदय पर भी हानिकारक असर पड़ता है। फेफड़ों पर पड़नेवाले असर से तो बच्चे को ब्रोकाइटिस जैसी घातक बीमारियां हो जाती हैं।

अत: धूम्रपान करनेवाली महिलाओं का बच्चा न केवल स्वास्थ्य की दृष्टि से कमजोर होता है, बल्कि मानसिक विकास और सामाजिक दृष्टि से भी वह अक्षम और असमर्थ रह जाता है। (कला परिक्रमा)

श्रीमती सत्यवती शालवाले अपने गुणों से सदैव स्मरण की जाती रहेंगी

आदरणीया बहिन श्रीमती सत्यवती शालवाले के दिवंगत होने के समाचार से आघात पहुंचा। आर्यसमाज, नारी जागरण, लोकसेवा तथा आर्य संस्कृति के प्रचार-प्रसार में सतत प्रवृत्त वह दिव्य महिला अपने गुणों से सदैव स्मरण की जाती रहेंगी। १९६७ के गोरक्षा आंदोलन में वह सोत्साह जेल गई। बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए उन्होंने पुष्कल धनराशि एकत्रित की और लालाजी को वितरणार्थ समर्पित की। लाला जी के सक्रिय जीवन की वह अदम्य ऊर्जा रही। आर्यसमाज गोहाटी में आर्य स्पेशल ट्रेन के यात्रियों के स्वागतार्थ जो सभा आयोजित हुई थी, उसमें सत्यवती जी की भूमिका भुलाये नहीं भूलती। स्वाभिमान और त्याग उनकी नसों में कूट-कूटकर भरा था। दयालुता, उदारता तथा निर्भीकता की वह जीती जागती मूर्ति थी। बहिन सत्यवती जी के निधन से अपूरणीय क्षति हुई है। इस शोकपूर्ण अवसर पर मैं स्वयं की ओर से और कुलवासियों की ओर से हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं तथा परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

—आर० सी० शर्मा कुलपति
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

सम्पूर्ण निरस्त्रीकरण का विकास और सुरक्षा से गहरा नाता

—प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

इस शताब्दी में जो बड़े और छोटे युद्ध होते रहे हैं, उसमें १० करोड़ के करीब लोग मरे हुए हैं और इससे अधिक घायल हुए हैं। राष्ट्रों में हथियारों की होड़ लगी रही और दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही चली गई। नित नये हथियार बने, टैंक तोपें, हवाई जहाज, रोकेट, मिसाइल, पानी के जहाज, पनडुबियां। इन सब के नये से नये डिजाइन बनते चले गये। जिनके द्वारा ठीक निशाने पर जल्दी से जल्दी मार करके शत्रु को पराजित किया जा सके। जितने नये हथियार और उनके नये से नये डिजाइन बनें, उन पर व्यय भी बढ़ता चला गया और विध्वंस करने की शक्ति और क्षमता भी बढ़ती चली गई। रासायनिक हथियार भी एक से एक खतरनाक बने। जिनके द्वारा जहरीले कीटाणु छोड़कर अधिक से अधिक संख्या में सैनिक और साधारण नागरिक बीमार करके मारे जा सकें। परमाणु हथियार भी पिछले महायुद्ध के दौरान बने और अमरीका ने जापान पर दो जगह परमाणु बम छोड़े। उन बमों ने सैंकड़ों वर्गमील भूमि को उथल-पुथल कर दिया, मकान तहस-नहस कर दिये और हजारों लोगों को मारा और लाखों को घायल व बीमार कर दिया, पेट में जो बच्चे उस समय थे उन तक को बीमार, अंगहीन और अपंग बना दिया। अभी उन बमों ने जो राख छोड़ी उसके कारण बच्चों और नर-नारियों के स्वास्थ्य पर कुप्रभाव समाप्त नहीं हुआ। अब तो इतने परमाणु बम बन चुके हैं कि १२ बार पृथ्वीभर को उलट-पुलट और तहस नहस किया जा सकता है। उसके कारण जो पर्यावरण बिगड़ेगा, उसमें कोई भी जीव बचना मुश्किल हो जायेगा।

जहां एक तरफ हथियारों की होड़ चल रही है, वहां दूरदर्शी बुद्धिमान् लोग इन भयानक हथियारों को समाप्त करने के लिए आंदोलन खड़ा करते आरहे हैं। ससारभर के बुद्धिजीवी, वैज्ञानिक और चिन्तक आज एक स्वर से बोलने लगे हैं कि युद्ध की विभीषिका से यदि मानव समाज को सचेत नहीं किया और इन खतरनाक हथियारों को समाप्त नही किया तो मानव का ही नहीं, पृथ्वी पर बसनेवाले सभी जीवों और वनस्पतियों का अस्तित्व ही नहीं रहेगा। आज हथियारों और सेवाओं पर एक हजार अरब डालर (१२५०० अरब रुपये) प्रतिवर्ष खर्च किये जारहे हैं। अकेला अमरीका २९३ अरब डालर हथियारों और सेना पर खर्च कर रहा है और भारत दस अरब डालर (१३५०० करोड़ रुपये) खर्च कर रहा है। अमरीका भारत से ३० गुणा अधिक हथियारों और सेना पर खर्च कर रहा है। इन खतरनाक हथियारों को जमीन के नीचे या समुद्र के नीचे दफनाना पड़ेगा। जमीन पर इनको बर्बाद करने से भी बहुत बड़ी बर्बादी हो सकती है।। अरबों डालर ही इन हथियारों को बर्बाद करने में लगेंगे।

दुःख की बात यह है कि सभी राष्ट्रों का धन और अच्छे से अच्छे वैज्ञानिक पृथ्वी, मानव और सभी पृथ्वी पर रहनेवाले जीव-जन्तु और उगनेवाले पेड़-पौधे, वनस्पति आदि को बर्बाद करने में लगे हैं। मानव समाज में फैली भूख, नंग, निरक्षरता, बीमारी, विषमता, शोषण आदि को समाप्त करने के लिये न ध्यान है, न साधन उपलब्ध हैं।

इन तथ्यों के प्रति चेतना जगाकर संसारभर के बुद्धिजीवी सभी राष्ट्रों के कर्णधारों तथा विशेष रूप से दो महाबलियों अमरीका और रूस की शस्त्रों की होड़ को बन्द करने और परमाणु तथा दूसरे हथियारों को घटाने के लिए, समझौते करने के लिए प्रेरित करने में सफल हुए हैं। जहां अमरीका और रूस उच्चस्तरीय बैठकों के द्वारा परमाणु हथियारों को घटाने के लिए समझौते कर रहे हैं, वहां राष्ट्रसंघ ने इन्हीं दिनों (३१ मई से २४ जून तक) अपना विशेष अधिवेशन इसी काम के लिए न्यूयार्क में बुला रखा है। इसमें १५१ राष्ट्रों के प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति तथा विदेशमन्त्री और उनके प्रतिनिधि शामिल हो रहे हैं तथा राष्ट्रसंघ के द्वारा मान्यता प्राप्त गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि भी शामिल हो रहे हैं। इसी विशेष अधिवेशन में विश्वधर्म शांति सम्मेलन के प्रतिनिधि के रूप में श्रीमती प्रभातशोभा भी शामिल हुई है।

राष्ट्रों का बहुमत और पिछड़े हुए गरीब देश तो पूरी शक्ति से शस्त्रों की होड़, उनके फैलाव और उपयोग पर प्रतिबन्ध लगाने में जुटे हुए हैं। इन्हीं देशों के करोड़ों लोग भूख, बीमारी, निरक्षरता, बेरोजगारी और जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं के लिए साधनों की कमी के शिकार हैं। शक्तिशाली राष्ट्र अपनी साम्राज्यवादी मनोवृत्ति से प्रेरित, एक तरफ तो इन राष्ट्रों के कच्चे माल को कौड़ियों के मोल ले लेते हैं और दूसरी ओर अपने उद्योगों द्वारा पैदा हुए सामान को महंगे भाव पर बेचते हैं और दूसरी ओर इन छोटे राष्ट्रों को आपस में लड़ाकर इनमें भी हथियारों की होड़ को बढ़ावा देते हैं तथा अपने शस्त्रास्त्रों की मुंह मांगी कीमत वसूल करते हैं। पिछड़े और विकासशील गरीब देशों का कल्याण इसी में है कि उनका शोषण बन्द हो और वे एक दूसरे से लड़ने की बजाये सहयोग और प्रेम से अपनी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करें। जब हथियारों की होड़ खत्म होगी और गरीब देश शांतिपूर्वक रहना और एक दूसरे को सहयोग लेना-देना आरम्भ कर देंगे, तब उनके नागरिकों की मानवोचित कम से कम आवश्यकताओं की पूर्ति का रास्ता निकल पायेगा। एक तरफ गरीब देश अपना पैसा आपसी युद्धों पर खर्च होने से बचायेंगे और दूसरी तरफ अमीर देशों का जो पैसा हथियारों और सेना पर खर्च होता है, उसका एक भाग गरीब देशों के विकास के लिए मिलेगा, तब इन देशों की सुरक्षा तो निश्चित हो ही जायेगी, इनके विकास की गति भी तेज होगी। ऐसा होने पर गरीब देशों के करोड़ों लोग जो जीवन की न्यूनतम सुविधाओं और आवश्यकताओं से वंचित हैं, उनको सुख सुविधाओ के लिए साधन मिलेंगे, शोषण समाप्त होगा, आपसी प्यार बढ़ेगा। वैज्ञानिको की प्रतिभा का लाभ भी मानव समाज को अपने विकास और सुख के लिए मिलेगा।

यह होने पर ही मनुष्य सही मायनों में इन्सान बनेगा और एक दूसरे का शोषण करने की बजाये वह एक दूसरे का सहयोगी होगा। इसी सहयोग में से वह संस्कृति और जीवन-शैली अपने नये रूप में प्रकट होगी। सम्पूर्ण मानव समाज सबके हित में ही अपना हित समझने लगेगा और तब सारा मानव समाज एक कुटुम्ब के रूप में रहकर इस पृथ्वी का और उस पर रहनेवाले सबका अस्तित्व ही नहीं बचायेगा, बल्कि इस पृथ्वी पर स्वर्ग लाने में सफलता प्राप्त कर सकेगा। मानवता प्रेमियों का यह स्वप्न साकार हो।

महात्मा बुद्ध की अमर वाणी

मनुष्यो !

तुम सिंह के सामने जाते समय भयभीत न होना,
वह पराक्रम की परीक्षा है।
तुम तलवार के नीचे सर रखने से भयभीत न होना,
वह बलिदान की कसौटी है।
तुम पर्वत शिखर से पाताल में कूद पड़ना,
वह तप की साधना है।
तुम बढ़ती हुई ज्वालाओं से विचलित न होना,
वह स्वर्ण परीक्षा है।
पर शराब से सदा भयभीत रहना, क्योंकि
यह पाप और अनाचार की जननी है।

पैदा होने से पहिले ही बच्चों की हत्या एकदम बन्द हो

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

विज्ञान की प्रगति मानव समाज के लिए एक बहुत बड़ा वरदान है, परन्तु मानव उस ज्ञान का उपयोग अपनी भलाई में करने की बजाये, समाज-विरोधी और घृणित कामों के लिए करने लगता है। इससे विज्ञान और वैज्ञानिक तो लोगों की नजरों से गिरने लगते ही हैं, मनुष्य समाज का बड़ा भारी अहित भी होने लगता है।

कुछ समय पहिले वैज्ञानिकों और डाक्टरों ने यह क्षमता प्राप्त करली है कि महिला के पेट में कुछ महीनों का बच्चा होने पर वे परीक्षण करके यह बता सकते हैं कि पैदा होनेवाला बच्चा लड़का होगा या लड़की। लोगों ने इन परीक्षणों का लाभ उठाना शुरु किया और डाक्टरों ने अपने चिकित्सालयों में ये परीक्षण शुरु कर दिये। यह पता लगने पर कि लड़की पैदा होगी, लोगों ने गर्भपात करवाना शुरु कर दिया। लड़के की चाह लोगों में ज्यादा होती है, लड़की की कम। इसलिए ऐसे गर्भपातों की संख्या बढने लगी और यदि रोका नहीं गया तो और भी बढती जायेगी। यदि सब लोग ही ऐसा करना शुरु करदें तो कुछ वर्षों के बाद यदि लडके ही लड़के पैदा हुए तो आगे चलकर लड़कियां ही नहीं रहेंगी तो लड़के कैसे पैदा होंगे। यह तो वही होगया कि एक छोटे से तालाब में राजा ने सबको दूध के लोटे भरकर डालने का आदेश दिया। अलग-अलग लोगों ने एक ही बात सोची कि और सब तो दूध डालेंगे ही, यदि तुम एक लोटा पानी डाल दो तो क्या पता लगेगा, वह भी दूध में मिलकर दूध हो जायेगा। सबने यही सोच लिया और दूध की बजाये सबने पानी के लोटे भर-भर के डाल दिये। सवेरे देखा तो तालाब में दूध की जगह पानी ही पानी था। यही बात यहां भी हो सकती है। यदि यह बीमारी रुकी नहीं तो मानव का अस्तित्व ही खतरे में होगा। वैसे भी लड़के-लड़की में भेदभाव करना अमानवीय भी है और पाप भी। दोनों एक ही पेट से पैदा होते हैं, फिर यह भेद क्यों ?

महाराष्ट्र सरकार ने इस प्रकार के परीक्षणों पर कानून के द्वारा प्रतिबन्ध लगा दिया है। अब भारत सरकार भी अगले संसद के सत्र में ऐसा ही कानून पास करने जारही है। क्योंकि बीमारी सारे देश में ही फैल रही है। भारत सरकार को अगले सत्र में यह कानून अवश्य पास करना चाहिये। अच्छा तो यह हो कि इस प्रकार का अध्यादेश (Ordinance) जारी कर देना चाहिये।

कानून अलमारियों में रखा रह जाता है। यदि जनता उसका साथ न दे और सरकार उसको मजबूती से लागू न करे। इस घृणित प्रवृत्ति को रोकने के लिये भारत के जनमानस में चेतना जगानी चाहिये और पैदा होने से पहिले ही बच्चों को मार डालने का घोर पाप और घृणित प्रवृत्ति को रोकना चाहिए।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में प्रवेश सूचना

प्राचीन भारतीय शिक्षा-पद्धति के अनुसार आश्रम प्रणाली के आधार पर सचालित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में ६ से ११ वर्ष की आयु के छात्रों के प्रवेश के लिए आवेदन-पत्र आमन्त्रित हैं। विद्यालय में संस्कृत, व्याकरण तथा धर्म-शिक्षा आदि प्राच्य विषयों के साथ ही अंग्रेजी, विज्ञान आदि आधुनिक विषयों के स्तरीय अध्यापन का प्रबन्ध है। भोजन, चिकित्सा, आवास, क्रीड़ा आदि पर होनेवाला व्यय ही छात्रों से लिया जाता है। शिक्षा का प्रबन्ध सर्वथा निःशुल्क है।

पांच रुपये मनीआर्डर भेजकर नियमावली एवं प्रवेश-पत्र प्राप्त करें। प्रवेश नये शिक्षासत्र १ जुलाई, ८८ से प्रारम्भ है तथा विद्यालय ८ जुलाई, ८८ से नियमित रूप से खुलेगा।

— आचार्य एवं मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

सभा के ऋषिलंगर हेतु अन्न तथा धन प्राप्त सूची

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ रोहतक में ऋषिलंगर कई वर्षों से निरन्तर चालू है। इसमें आर्यसमाज के प्रचारकों, कार्यकर्त्ताओं तथा अन्य अतिथियों के लिये भोजन तथा आवास की व्यवस्था रहती है।



श्री जयपाल आर्य भजनोपदेशक

इस वर्ष सभा के भजनोपदेशक श्री जयपाल आर्य तथा इनके सहायक श्री कृष्णलाल एवं श्री राजवीर द्वारा भिन्न-भिन्न ग्रामों से ऋषिलंगर के लिये दान निम्न प्रकार प्राप्त हुआ है—

श्री रामकुमार महताबसिह आदि ग्राम मिलकपुर जि. रोहतक २ क्विंटल
,, महेन्द्रसिंह उमेदसिंह आदि माजरा जहाजगढ ,, ,, १ ,,
,, दयाराम सरपंच बस्तीराम आदि इमलोटा जि० भिवानी १ ,,
,, मुख्त्यारसिंह भरतसिंह आदि दूबलधन जि० रोहतक ३ ,,
मा० चन्द्रभानु आर्य आदि जहाजगढ़ ,, १ ,,
ठा० प्रतापसिंह महावीरसिंह आदि बराणी ,, १ ,,
जमादार जागेराम भालेराम आदि मदाना कलां ,, १ ,,
श्री सत्यवीरसिंह आर्य सूबेदार प्रह्लादसिंह आदि मदाना
जि० रोहतक १ ,,
,, हजारीलाल रिसालदार बालसिंह महराणा ,, १ ,,
स्वतन्त्रता सेनानी दयाचन्द सज्जनसिंह राजसिंह आर्य
खरावड़ ,, ३ ,,
श्री हरकिशन शास्त्री रामसिंह आर्य आदि बापड़ौदा ,, १ ,,
,, सत्यवीरसिंह आर्य उमेदसिंह आर्य आदि नया बांस
,, १ ,,
,, जयपालसिंह आर्य भजनोपदेशक आदि आसन ,, १ ,,
,, सुरेन्द्रसिंह आर्य मेम्बर पंचायत सुपुत्र मांगेराम
सांघी ,, १ ,,
,, समरसिंह राजेन्द्रसिंह दरयावसिंह आदि घामड़ ,, १-२५ किलो
,, बलवन्तसिंह आर्य मकड़ौली कलां ,, ०-६० ,,
,, वेदपाल ढालेराम आदि आसौधा ,, ०-५५ ,,
मा० बलवीरसिंह राजेराम भरतसिंह आदि
ग्राम कुण्डल जि० सोनीपत १,४५ ,,
श्री बलराज आर्य गढ़ी कुण्डल ,, ०-४० ,,
,, सूरजमल सूबेसिंह रघुवीरसिंह स्वरूपलाल जयदेव धारे
आसन जि० रोहतक १-८५ ,,
,, सूरतसिंह मा० लालचन्द चन्दन भलेराम आदि खुर्मपुर
जि० सोनीपत १ क्विंटल
,, बलवीरसिंह सरपंच रिसालसिंह अजीतसिंह आदि
सोहटी जि० सोनीपत २ ,,
,, प्रतापसिंह वेदपाल रणसिंह जयसिंह आदि कंसरेटी
जि० रोहतक १ ,,

(क्रमशः)

लाखनमाजरा में योगासन शिविर

चौबीसी वेदप्रचार मण्डल की ओर से ग्राम लाखनमाजरा जि० रोहतक में १ से ६ जून तक योगासन शिविर का आयोजन किया गया। इसमें ६० के लगभग युवकों ने योगासनों का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

४ जून की सायं को ग्राम खरक जाटान में भी योगासनों का प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शन किया गया। इसी प्रकार ५ जून को लाखनमाजरा में युवकों ने प्रभात फेरी करते हुए वैदिकधर्म, महर्षि दयानन्द तथा शराब विरोधी नारे लगाकर ग्राम की जनता को अपनी ओर आकर्षित किया और योगासन दिखाकर शक्ति का प्रदर्शन किया। योग शिक्षक श्री सूर्यदेव जी तथा उनके इस कार्य में श्री सत्यवीरसिंह आर्य सरपंच सामखोकलां एवं ब्र० बलवीर आर्य सहायक रहे।

—रणधीरसिंह आर्य प्रधान

ग्राम निंदाणा में पूर्णमासी यज्ञ कार्यक्रम

ग्राम निंदाणा जि० रोहतक में चौबीसी वेदप्रचार मण्डल के प्रधान कप्तान रणधीरसिंह के सहयोग से प्रत्येक पूर्णमासी पर श्री उग्रसेन जी के घर पर यज्ञ होता है। जिसमें ग्राम के नर-नारी बड़ी श्रद्धापूर्वक भाग लेते हैं। स्मरण रहे इस ग्राम में शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए ग्राम की महिलाओं ने धरणा देकर ठेका बन्द करवा दिया था।

छोटूराम जैसा लीडर यहां सदियों तक न आवेगा

टेक—देश का बच्चा-बच्चा आगे चलकर यह बतलावेगा।
सर छोटूराम जैसा लीडर यहां सदियों तक ना आवेगा॥

अपनी सारी कमाई जाति तेरे ऊपर लुटा गया।
कंगालों की पाई-पाई सारा कर्जा चुका गया।
गहणे की सारी भूमि बिन पैसे के छुटा गया।
कानो डण्डी बाट तराजू मण्डी में से उठा गया।
तोड़—अब बनियों का सच्चा नेता यहां कौन बतावेगा॥१

खेती करनेवालों जाति एक जगह सब मेल गया।
जिसके आगे मिस्टर जिन्हा कई बार हो फेल गया।
उसी जिन्हा की करके खुशामद गांधी व पटेल गया।
सारा राष्ट्र भारत को एक इन्च ना धकेल सका।
तोड़—अब जिन्हा के मुंह के ऊपर थप्पड़ कौन लगावेगा॥२

न हिन्दू था, न मुस्लिम था, ना जैनी सिख ईसाई था।
सेवा करनेवाला एक वह हिन्दुस्तानी सिपाही था।
जहां कहीं भी किसी के अन्दर देखे कोई बुराई था।
उसकी पोल खोलता था वह भाई का भाई था।
तोड़—कंगाल और मजदूरों को अब रास्ता कौन बतावेगा॥३

बीस बीसे थी जमीन घर की जो के दादालाई थी।
एक महीने की तनखाह में भी बचती ना एक पाई थी।
कालिज और स्कूल खोल गया उसकी यही कमाई थी।
गिरी हुई खड़े में जाति उसी वीर ने उठाई थी।
तोड़—पृथ्वीसिंह बेधड़क बता अब किसके भजन बनावेगा॥४

संग्रहकर्ता—श्री जयपालसिंह आर्य भजनोपदेशक

वर चाहिए

एक आर्य लड़की आयु २७॥ वर्ष डबल एम० ए० (संस्कृत-हिन्दी) एम.फिल लैक्चरार नियुक्त हरयाणा राज्य के लिए आर्य विचारोंवाला म से कम एम० ए० पजाबी वर चाहिए।

—पं० खुशीराम आर्य
निकट सब्जी मण्डी, रेलवे रोड, जींद (हर०)

गढ़ी बीरबल के आर्यवीरों द्वारा गोरक्षा का सराहनीय कार्य

ग्राम गढ़ी बीरबल जि० करनाल के आर्य वीरदल के कार्यकर्त्ता निकट के ग्रामों में गोरक्षा का सराहनीय कार्य कर रहे हैं। पैसे के लालच में कुछ व्यापारी गाय यमुना पार करके गोहत्यारों को बेच देते हैं। अतः इस प्रकार दो-तीन बार यमुना की ओर ट्रकों में भरी गउवों तथा बलों को रोक लिया और उन्हें स्थानीय किसानों में बांट दिया। परन्तु राजनैतिक दबाव के कारण उन्हें छोड़ना पड़ा।

आर्य वीरदल के कार्यकर्त्ता हर समय चौकस रहते हैं। जब भी कोई व्यापारी अथवा कसाई अवैध रूप से गउवों को यमुना पार करने का यत्न करते हैं तो वे उस ट्रक को रोक लेते हैं और कसाइयों को भगा देते हैं।

—मन्त्री आर्यसमाज गढ़ी बीरबल

शुद्धि समारोह

आर्यसमाज आर्यनगर ज्वालापुर हरिद्वार के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के सौजन्य से आर्यसमाज के प्रांगण में २४-५-८८ को श्री अनवर हुसैन सुपुत्र युसुफ कौम गाड़ा, सुन्नत जमात निवासी बूढ़ाखेड़ा सहारनपुर पूर्व महाराणा प्रताप वंशीय को इस्लाम से पुनः वैदिकधर्म में दीक्षित किया गया।

इनका नवीन नाम श्री अमरलाल आर्य रखा गया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री पं० रामप्रसाद वेदालंकार आचार्य एवं उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार थे। इस अवसर पर अनेक विद्वान्, विदुषियों तथा अन्य नर-नारियों ने पुष्पवर्षा करके हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की तथा श्री अमरलाल आर्य जी को विभिन्न रूपों में आशीर्वाद दिया।

—रामेश्वर दयाल शर्मा
मन्त्री आर्यसमाज मन्दिर, आर्यनगर, ज्वालापुर

गुरुकुल कालवा द्वारा शराबबन्दी अभियान

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय के आचार्य बलदेव जी द्वारा चलाये गये शराबबन्दी आंदोलन के अन्तर्गत दिनांक ३१-५-८८ को गांव मोरखी तहसील सफीदों जि० जींद हरयाणा में ब्रह्मचारी ब्रजेशार्य की अध्यक्षता में प्रातः दस बजे यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञवेदी पर लगभग सौ नवयुवकों ने यज्ञोपवीत धारण किया। 'आर्य युवा संगठन' के नाम से दल का गठन किया। सभी नवयुवकों ने समाज के अन्दर बढ़ती हुई शराब, भ्रष्टाचार, व्यभिचार तथा दहेज आदि बुराइयों को समूल नष्ट करने का संकल्प लिया। गुरुकुल की ओर से यह कार्यक्रम आस-पास के सभी गांवों में चल रहा है। सैंकड़ों मनुष्यों ने शराब छोड़कर इस कार्य में सहयोग प्रदान किया है। इस दल का चुनाव निम्न प्रकार से हुआ है—

प्रधान—सर्वश्री कृष्ण आर्य, मन्त्री—सत्ता आर्य, कोषाध्यक्ष-राजेश आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—कृष्ण आर्य, प्रचारमन्त्री—सुरेश आर्य।

—ब्र० ब्रजेशार्य आर्ष गुरुकुल कालवा जींद (हर०)

अकेहड़ी मदनपुर में व्यायाम एवं सदाचार प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

दिनांक ३० मई से ५ जून तक ग्राम अकेहड़ी मदनपुर, रोहतक में श्री मदनलाल शास्त्री के प्रयास से सात दिवसीय व्यायाम एवं सदाचार प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें अकेहड़ी तथा समीपस्थ गांवों के ८५ नवयुवकों ने भाग लिया। नवयुवकों में आर्यसमाज की शिक्षाओं से अवगत कराया गया तथा उन्हें यज्ञोपवीत देकर आर्यसमाज में दीक्षित किया गया। स्वामी ओमानन्द जी के प्रभावशाली व्याख्यान हुए तथा प्रतिदिन यज्ञ सत्संग एवं श्री ईश्वरसिंह जी तूफान का प्रचार कार्यक्रम हुआ। श्री शेरसिंह जी एवं श्री दयानन्द शास्त्री ने भारतीय व्यायामों का प्रशिक्षण दिया। अन्तिम दिन शिविर युवकों तथा ब्र० विजयपाल जी का शक्ति प्रदर्शन हुआ। जिसका जनता पर भारी असर हुआ।

—प्रो० राजपालसिंह शास्त्री संयोजक

सर्वखाप पंचायत ने जो दहेज विरोधी निर्णय तथा सामाजिक फैसले लिए वे निम्न प्रकार हैं

दहेज विरोधी निर्णय—

१. सर्वखाप पंचायत के निर्णय अनुसार सगाई तथा विवाह आदि के शुभ अवसरों पर सभी मान्यतायें एक रुपये से लेकर एक सौ एक रुपये तक हो सकेंगी।

२. बारातियों की संख्या पांच से पचास तक होगी और शादी में बाजे के आगे-पीछे नाचना, कूदना व शराब पीना बन्द है। बारात के वाहनों का खर्च लड़के वाला ही वहन करेगा और शादी के पश्चात् वस्त्र स्वागत के नाम पर धन बटोरने की कुप्रथा बन्द करदी गई है।

३. शादी, दूसर (गोना) आदि के समय पर प्रत्येक प्रकार का दहेज व दिखावा बन्द होगा। इसके अतिरिक्त लड़केवाला लड़कीवाले से किसी प्रकार के दहेज अथवा धन की मांग नहीं करेगा। मांग करनेवाले का सामाजिक बहिष्कार व भारी आर्थिक जुर्माना भी किया जायेगा।

४. लड़की के पिता तथा परिवार द्वारा लड़की को दिया गया धन लड़की का ही होगा।

५. सर्वखाप पंचायत के उपरोक्त निर्णयों को तोड़नेवाले पर उस का परिवार, पाना (पट्टी) गांव, तपा (थाम्बा) अथवा खाप ग्यारह हजार रुपये तक जुर्माना कर सकेगी।

सामाजिक फैसले—

१. प्रत्येक लड़की के माता-पिता के लिए यह अनिवार्य होगा कि वह अपनी लड़की को पढ़ाए-लिखाए व अन्य घरेलू कामकाज सम्बन्धी योग्यता प्रदान कराये।

२. मृत्यु काज (देशावरी काज) पूर्णतया बन्द कर दिया गया है।

३. आपसी मुकदमेबाजी तथा झगड़ों को जहां तक सम्भव हो पंचायती तौर तरीकों द्वारा ही मिल बैठकर निपटाया जाये।

४. प्रत्येक गांव तथा बारहा, थाम्बा, खाप (पाल) अपने-अपने क्षेत्रों में शराब को यथोचित उपायों द्वारा बन्द करवायें।

५. किसी लड़के या लड़की को या उनके परिवारों को यह अधिकार नहीं है कि वे सगाई या विवाह के बाद एक दूसरे को छोड़ दें। छोड़नेवाले पर ग्यारह हजार रुपये जुर्माना व उसका सामाजिक बहिष्कार किया जायेगा। इसके अतिरिक्त लड़की को छोड़नेवाले लड़के का दूसरा विवाह नहीं हो सकेगा और पंचायत के निर्णय के विरुद्ध उसका विवाह करनेवाले पर भी ग्यारह हजार रुपये जुर्माना और उसका सामाजिक बहिष्कार किया जायेगा।

६. विवाहित लड़की को उसकी ससुराल में उसे तंग करना, मारपीट करना या मरने पर विवश करना अथवा मार देने पर लड़के या उसके परिवार पर दोषानुसार एक लाख रुपये तक जुर्माना, पूरी आयु दूसरे विवाह पर प्रतिबन्ध और उस लड़के या परिवार का सामाजिक बहिष्कार किया जायेगा। इसके अतिरिक्त ऐसे दोषी लड़के की दोबारा शादी करनेवाला भी उपरोक्त दण्डों से दण्डित किया जायेगा।

७. प्रत्येक बिरादरी की विवाहित छोड़ी हुई लड़कियों को लड़को के परिवार, गांव, तपा, बारहा (थाम्बा) खाप (पाल) की यह जिम्मेदारी होगी कि वे यथा सम्भव पंचायती तरीकों से उसे उसकी ससुराल भिजवायें।

— स्वामी कर्मपाल अध्यक्ष सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत

मुख्य कार्यालय	उप-कार्यालय
गोमठ मन्दिर, मदान गढ़ी	बलिदान स्मारक, गुलकनी
नई दिल्ली-३०	(जींद) हरयाणा

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

महाशय हीरालाल गुरुकुल किशनगढ़ घासेड़ा का उत्सव सम्पन्न

महाशय हीरालाल गुरुकुल किशनगढ़ घासेड़ा जि० महेन्द्रगढ़ का वार्षिक उत्सव २८ से ३१ मई तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा अन्य आर्य नेताओं के गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली के प्रचार एवं प्रसार पर व्याख्यान एवं सभा की पं० जयपालसिंह आर्य की मण्डली, श्री रामनारायण आर्य के प्रभावशाली भजन हुए। गुरुकुल के प्रधान सर्वश्री प्रभातीलाल मन्त्री, सूरतसिंह एवं धर्मसिंह आदि ने उत्सव को सफल करने के लिए बहुत परिश्रम किया। गुरुकुल की ओर से सभा को ५००) वेदप्रचारार्थ दिये गये।

—आचार्य गुरुकुल

ग्राम नाहरी में आर्यसमाज मन्दिर की आधारशिला समारोह

ग्राम नाहरी जि० सोनीपत का वार्षिक उत्सव ३ से ५ जून तक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शुभावसर पर आर्यसमाज मन्दिर की आधारशिला श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के करकमलों द्वारा रखी गई। सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह ने ग्रामवासियों को आर्यसमाज के कार्यों में भाग लेने तथा शराब एवं दहेज आदि सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने की प्रेरणा की। श्री जयपाल आर्य की भजनमण्डली ने भी अपने मनोहर भजन सुनाये। सर्वश्री उमरावसिंह, रामस्वरूप, होशियारसिंह आदि आर्य कार्यकर्ता आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण को पूरा करने का यत्न कर रहे हैं।

गिवाना जि० सोनीपत में वेदप्रचार

ग्राम गिवाना (गुमाना) जि० सोनीपत में ६ से ८ जून को वार्षिक वेदप्रचार का आयोजन किया गया। जिसमें सभा के उपदेशक पं० अर्जुनदेव आर्य के प्रवचन तथा पं० ईश्वरसिंह तूफान एवं श्री रणवीरसिंह बेधड़क के भजन हुए। तीनों दिन किसी न किसी परिवार में यज्ञ तथा सत्संग कार्यक्रम भी रखा गया। इस अवसर पर अनेक युवकों ने धूम्रपान अथवा शराब आदि के सेवन न करने की प्रतिज्ञा करते हुए यज्ञोपवीत धारण किये।

—पर्वतसिंह आर्य

भैंसवान खुर्द जि० सोनीपत में नशाबन्दी पंचायत

ग्राम भैंसवान खुर्द तहसील गोहाना जि० सोनीपत में ५ जून को पंचायत का आयोजन किया गया। जिसमें ग्राम में शराब आदि का नशा करने पर पाबन्दी लगाने तथा नशा करनेवालों पर जुर्माना करने का निश्चय किया गया।

—गुलाबसिंह आर्य

आर्यसमाज के उत्सवों का कार्यक्रम

आर्यसमाज नजफगढ़ (दिल्ली)	१६ से १८ जून
,, लूखी जि० महेन्द्रगढ़	१७ से १९ ,,
,, बेगा जि० सोनीपत	१७ से १९ ,,
,, बरहाणा जि० रोहतक	१७ से १९ ,,
,, गोन्दर जि० करनाल	१७ से १९ ,,
,, गांधी नगर गन्नौर जि० सोनीपत	२४ से २६ ,,
,, पाथरी जि० करनाल	२७-२८ ,,

आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने उत्सव अथवा प्रचार कार्यक्रम जून के अन्तिम सप्ताह अथवा जुलाई मास में रखकर अपनी तिथियां सुरक्षित करवा लेवें, ताकि सभा को उपदेशक एवं भजन मण्डलियों के प्रबन्ध करने में सुविधा रहे।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

तुम क्रांति वीर बन आओ रे

टेक—शिवरात्रि आज फिर आई है, नूतन संदेशा लाई है।

पाखण्डी शोर मचाते हैं माता की जय बुलवाते हैं।
वह जगदीश्वर ही माता है वैदिक संदेशा लाई है॥ शिव…

अब भी शिव पिण्डो पर चूहे ये उछल-कूद करते रहते।
नहीं मिटा सके जड़-पूजा हम यह बोध कराने आई है॥ शिव…

क्यों वेदप्रचार यह बन्द हुआ लेखन भी क्यों यह मन्द हुआ।
उस लेखराम बलिदानी का फिर स्मरण कराने आई है॥ शिव…

निज धन बल के बलबूते पर मतवाले फिर आ धमके हैं।
श्रद्धानन्द के अनुयायी हो यह बिगुल बजाने आई है॥ शिव…

इसी दिवराला की घटना से विधवा नारी का रुदन हुआ।
ऋषि दयानन्द संन्यासी का सन्देशा लेकर आई है॥ शिव…

कैसे ये सनातन धर्मी हैं जो इस घटना पर मौन रहे।
आओ मैदान में आओ तुम्हें शास्त्रार्थ कराने आई है॥ शिव…

झूठे ये तान्त्रिक आये हैं जो नर-बलियां करवाते हैं।
बहिष्कार करो इन लोगों का यह भाव जगाने आई है॥ शिव…

अंग्रेजी रीति-रिवाजों का घर-घर में मान बढ़ा जाता है।
हिन्दी संस्कृत अपनाओ तुम जो देववाणी कहलाई है॥ शिव…

सूखे में मची त्राहि-त्राहि पर होश तुम्हें क्यों नहीं आई।
घर-घर में यज्ञ हवन करलो गीता सन्देश लाई है॥ शिव…

तुम पड़े हुए किस चिन्ता में चिन्तन से शीघ्र करो निर्णय।
यह जग विनाश के पथ पर है सावधान करने आई है॥ शिव…

मानवता के पथ में फिर यह दानवता क्यों बिखर गई।
तुम क्रांति वीर बन जाओ रे यह पाठ पढ़ाने आई है॥ शिव…

रचयिता—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति
शास्त्री सदन, पश्चिम आजाद नगर, दिल्ली-११००५१

कुण्डली में शहीदी स्मारक बनाया जाये

१८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम की पहली लड़ाई में सोनीपत जिले के गांव कुण्डली का योगदान नहीं भुलाया जा सकता। इस गांव के शहीदों ने और उनके साथियों ने महान् बलिदान किया था। सन् १८५७ में जी० टी० रोड पर जाती एक अंग्रेज की सवारी को और उस यूरोपीयन को जो उसमें सवार था, को लापता कर दिया था। इसका बदला लेने हेतु अंग्रेज सरकार ने गांव कुण्डली के शहीदों को काले पानी की सजा देकर अण्डेमान निकोबार भेज दिया था। उस समय के नम्बरदार ग्राम कुण्डली के सूरतराम और उसके सगे सुपुत्र जवाहरमल भी इन शहीदों में शामिल थे।

कुण्डली गांव की सारी सम्पत्ति, पशुधन, जेवरात को अंग्रेज सरकार ने नीलाम कर दिया। गांव के लोगों पर बड़े-बड़े अत्याचार, झूठे मुकदमे बनाने की अपनी कोशिश अंग्रेज सरकार ने सन् १९४६ तक लगातार कायम रखी। जवाहरमल व सूरतराम के वारिशों को भी विशेष तौर पर झूठे मुकदमों में फंसाये रखा। पर ये लोग अंग्रेजों से लोहा लेते रहे।

लेकिन इस गांव में केवल एक आदमी श्री रतनदेव जो शहीद सूरतराम व जवाहरमल के वारिशों में से एक है, हरयाणा सरकार द्वारा ताम्रपत्र और पेंशन दी गई है। बाकी शहीदों के वारिशों की सुनवाई सरकार ने नहीं की है।

चौ० नफेसिंह दहिया एडवोकेट ने केन्द्र व हरयाणा सरकार से मांग की है कि ग्राम कुण्डली के शहीदों की पूरी जानकारी इकट्ठी करने के लिए एक कमेटी बनाई जाये। सरकार की ओर से सूरतराम व जवाहरमल की याद में एक शहीद भवन बनाया जाये।

(दैनिक राजनीति से साभार)

आर्यसमाज गोन्दर जि० करनाल का चुनाव

प्रधान—सवश्री बारुराम, उपप्रधान—रामसिंह मन्त्री—मासराम, उपमन्त्री—जगदीशचन्द, कोषाध्यक्ष—वेदप्रकाश, पुस्तकाध्यक्ष—ओमप्रकाश, प्रचारमन्त्री—हिसमसिंह।

वयोवृद्ध साहित्यकार सन्तराम बी. ए. नहीं रहे

नयी दिल्ली, १ जून (वार्ता) हिन्दी के वयोवृद्ध साहित्यकार और कर्मठ सुधारक सन्तराम बी० ए० का कल रात यहां निधन होगया।

वह एक सौ एक वर्ष के थे और पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ थे।

आज सुबह लोधी रोड श्मशान में उनका अन्तिम संस्कार किया गया। अन्त्येष्टि में अनेक प्रमुख साहित्यकार और समाजसेवी भी उपस्थित थे। शोक सतप्त परिवार में उनकी एकमात्र पुत्री श्रीमती गार्गी चड्ढा हैं।

श्री सन्तराम का जन्म १४ फरवरी, १८८७ को पंजाब के होशियारपुर नगर के समीप पुरानी बस्ती नाम के एक छोटे गांव में हुआ था। उन्होंने १९०९ में उर्दू और फारसी विषयों के साथ बी० ए० किया। बाद में आर्यसमाज के प्रभाव और राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर उन्होंने हिन्दी सीखी।

उस जमाने में बी० ए० पास लोग कम थे। इसलिए बी० ए० उन के नाम के साथ जुड़ गया।

श्री सन्तराम ने सौ से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। इनकी कुछ पुस्तकों का अंग्रेजी, मराठी और गुजराती में अनुवाद हुआ। कई पुस्तकें पुरस्कृत भी हुईं।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा ने उन्हें १९५८ में महात्मा गांधी पुरस्कार प्रदान किया। पंजाब सरकार ने उन्हें हिन्दी के श्रेष्ठ विद्वान् अलंकरण से सम्मानित किया।

इनकी एक कृति "हमारा समाज" की पं० जवाहरलाल नेहरू और डाक्टर भीमराव अम्बेडकर ने भी सराहना की थी।

वह जातपात और छुआछूत के विरुद्ध जीवनभर संघर्षरत रहे। उन्होंने भाई परमानन्द के सहयोग से १९२२ में लाहौर में जातपात तोड़क मण्डल की स्थापना की।

श्री सन्तराम ने १९२९ में पहली पत्नी के निधन के बाद महाराष्ट्र की एक विधवा सुन्दरबाई से विवाह कर सामाजिक सुधार का आदर्श प्रस्तुत किया।

जातपात तोड़क मण्डल के लिए उन्होंने "क्रांति" (उर्दू) और युगांतर (हिन्दी) पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया।

भारतीय संविधान, धारा ४७

"राज्य अपनी जनता के पोषक भोजन और जीवन निर्वाह के स्तर को ऊंचा करने और सार्वजनिक स्वास्थ्य के सुधार को अपने प्रारम्भिक कर्त्तव्यों में मुख्य समझेगा और विशेषतया, राज्य यह प्रयत्न करेगा कि नशीले पेयों और नशीली दवाइयों के, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, प्रयोग का निषेध हो, सिवाय उनके जो चिकित्सा के काम की हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४) रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 ४० ४० । ४०१२ सृष्टि संवत १,९६,०८,५३,०८९



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री   २१ ज्येष्ठ २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्क २६ २१ जून, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

व्यवहारभानु के प्रश्नोत्तर

—पं० धर्मदेव "मनीषी" व्याकरणाचार्य, गुरुकुल कालवा

प्रश्न—शिक्षा किसको कहते हैं ?

उत्तर—जिससे मनुष्य विद्या आदि शुभ गुणों की प्राप्ति और अविद्यादि दोषों को छोड़के सदा आनन्दित हो सके, वह शिक्षा कहाती है ।

प्रश्न—विद्या और अविद्या किसको कहते हैं ?

उत्तर—जिससे पदार्थ का स्वरूप यथावत् जानकर उससे उपकार लेके अपने और दूसरों के लिए सब सुखों को सिद्ध कर सकें वह विद्या और जिससे पदार्थों के स्वरूप को उलटा जानकर अपना और पराया अनुपकार कर देवें, वह अविद्या कहाती है।

प्रश्न—मनुष्यों को विद्या की प्राप्ति और अविद्या के नाश के लिए क्या-क्या कर्म करना चाहिए ?

उत्तर—वर्णोच्चारण से लेकर वेदार्थज्ञान के लिए ब्रह्मचर्य आदि कर्म करना योग्य है।

प्रश्न—ब्रह्मचारी किसको कहते हैं ?

उत्तर—जो जितेन्द्रिय होके ब्रह्म अर्थात् वेद विद्या के लिए तथा आचार्यकुल में जाकर विद्या ग्रहण के लिए प्रयत्न करे; वह ब्रह्मचारी कहाता है।

प्रश्न—आचार्य किसको कहते हैं ?

उत्तर—जो विद्यार्थियों को अत्यन्त प्रेम से धर्मयुक्त व्यवहार की शिक्षापूर्वक विद्या होने के लिये तन, मन और धन से प्रयत्न करे, उसको 'आचार्य' कहते हैं।

प्रश्न—अपनी सन्तानों के लिए माता, पिता और आचार्य क्या-क्या शिक्षा करें ?

उत्तर—मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद । शतपथ ब्राह्मण ॥

बड़ोभाग्य उस मनुष्य का है कि जिसका जन्म धार्मिक विद्वान् माता, पिता और आचार्य के सम्बन्ध में हो। क्योंकि इन तीनों ही की शिक्षा से मनुष्य उत्तम होता है। वे अपनी सन्तान और विद्यार्थियों को अच्छी भाषा बोलने, खाने, पीने, बैठने, उठने, वस्त्रधारण करने, माता-पिता आदि के मान्य करने, उनके सामने यथेष्टाचारी न होने, विरुद्ध चेष्टा न करने आदि के प्रयत्नों से नित्य-प्रति उपदेश किया करें और जैसा-जैसा उसका सामर्थ्य बढ़ता जाये, वैसी-वैसी उत्तम बातें सिखलाते जायें। इसी प्रकार लड़के और लड़कियों की पांच वा आठ वर्ष की अवस्था पर्यन्त माता-पिता और इनके उपरांत आचार्य की शिक्षा होनी चाहिए।

प्रश्न—विद्या किस-किस प्रकार और किन कर्मों से होती है ?

उत्तर—चतुर्भिः प्रकारैर्विद्योपयुक्ता भवति । आगमकालेन स्वाध्यायकालेन प्रवचनकालेन व्यवहारकालेनेति ॥ महा० अ० १।१।१, आ० १

विद्या चार प्रकार से आती है—आगम, स्वाध्याय, प्रवचन और व्यवहार काल। आगमनकाल उसको कहते हैं कि जिससे मनुष्य पढ़ाने वाले से सावधान होकर ध्यान देके विद्यादि पदार्थ ग्रहण कर सकें। स्वाध्याय उसको कहते हैं कि जो पठन समय में आचार्य के मुख से शब्द अर्थ और सम्बन्धों की बातें प्रकाशित हों, उनको एकांत में स्वस्थ चित्त होकर पूर्वापर विचार के ठीक-ठीक हृदय में दृढ़ कर सके। प्रवचनकाल उसको कहते हैं कि जिससे दूसरे को प्रीति से विद्यार्थी को पढ़ा सकना। व्यवहारकाल उसको कहते हैं कि जब अपनी आत्मा में सत्यविद्या होती है, तब यह तय करना, यह न करना, वह ठीक-ठीक सिद्ध होके वैसा ही आचरण करना हो सके। ये चार प्रयोजन हैं तथा अन्य भी चार कर्म विद्या प्राप्ति के लिए हैं—श्रवण, मनन, निदिध्यासन और साक्षात्कार। श्रवण उसको कहते हैं कि आत्मा मनके और मन श्रोत्र इन्द्रिय के साथ यथावत् युक्त करके अध्यापक के मुख से जो-जो अर्थ और सम्बन्ध के प्रकाश करने हारे शब्द निकलें, उसको श्रोत्र से मन और मन से आत्मा में एकत्र करते जाना। 'मनन' उसको कहते हैं कि जो-जो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध आत्मा में एकत्र हुए हैं उनका एकांत में स्वस्थचित्त होकर विचार करना कि कौन शब्द किस अर्थ के साथ और कौन अर्थ किस शब्द के साथ सम्बन्ध अर्थात् मेल रखता और इनके मेल में किस प्रयोजन की सिद्धि और उलटे होने में क्या-क्या हानि होती है इत्यादि। 'निदिध्यासन' उसको कहते हैं कि जो-जो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध सुने, विचारे हैं, वे ठीक-ठीक हैं वा नहीं ? इस बात को विशेष परीक्षा करके दृढ़ निश्चय करना और 'साक्षात्कार' उसको कहते हैं कि जिन अर्थों के शब्द और सम्बन्ध सुने-विचारे और निश्चय किये हैं उनको यथावत् ज्ञान और क्रिया से प्रत्यक्ष करके व्यवहारों की सिद्धि से अपना और पराया उपकार करना आदि विद्या की प्राप्ति के साधन हैं।

प्रश्न—आचार्य के साथ विद्यार्थी कैसा-कैसा वर्ताव करें और कैसा कैसा न करें ?

उत्तर—मिथ्या को छोड़के सत्य बोलें, सरल रहें, अभिमान न करें, आज्ञा पालन करें, स्तुति करें, निन्दा न करें, नीचे आसन पर बैठें, ऊंचे न बैठें, शांत रहें, चपलता न करें, आचार्य की ताड़ना पर प्रसन्न रहें, क्रोध कभी न करें। जब कुछ पूछे तो हाथ जोड़ के नम्र होकर उत्तर देवें, घमण्ड से न बोलें। जब वे शिक्षा करें, चित्त देकर सुनें, ठट्ठे में न उड़ावें। शरीर और वस्त्र शुद्ध रखें, मैले कभी न रखें। जो कुछ प्रतिज्ञा करें, उसको पूरी करें। जितेन्द्रिय होवें। लम्पटपन व्यभिचार कभी न करें। उत्तमों का सदा मान करें, अपमान कभी न करें। उपकार मान के कृतज्ञ होवें, किसी के अनुपकारी होकर कृतघ्न न होवें। पुरुषार्थी रहें, आलसी कभी न हों। जिस-जिस कर्म से विद्या प्राप्ति हो, उस-उसको करते जायें। जो-जो बुरे काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक आदि विद्या विरोधी हों, उनको छोड़कर सदा उत्तम गुणों की कामना करें। बुरे कामों पर क्रोध, विद्या ग्रहण में लोभ, सज्जनों में मोह, बुरे कामों से भय, अच्छे काम न होने में शोक करके विद्यादि शुभ गुणों से आत्मा और वीर्य आदि धातुओं की रक्षा से जितेन्द्रिय हो, शरीर का बल सदा बढ़ाते जायें।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

धूम्रपान छोड़ने के लिए मन को तैयार करें

—जोगेन्द्र राजपूत

धूम्रपान न केवल इसके आदी हुए व्यक्तियों के लिए हानिकारक है, अपितु यह वातावरण को भी दूषित करके दूसरों के लिए भी हानिप्रद बन गया है। धूम्रपान से व्यक्तिगत एवं पर्यावरण की शुद्धता प्रभावित होती है। इसी के कारण मुंह से दुर्गन्ध आने लगती है। दांतों का रंग खराब हो जाता है। जली हुई सिगरेट, बीड़ी के टुकड़ों और राख से गन्दगी फैलती है और कभी-कभी आकस्मिक आग भी लग जाती है।

धूम्रपान करने की आदत के पीछे विभिन्न तरह की सनक काम करती है। मसलन कुछ लोग केवल दिखावा मात्र और दूसरों का ध्यान आकर्षित करने के लिये ही धूम्रपान करते हैं, जबकि कुछ को धूम्रपान की तलब (तीव्र इच्छा) होती है। कुछ लोग धूम्रपान तब करते हैं, जब वे अपने आप में हल्कापन और आरामदेय अनुभव करते हैं, जबकि कुछ लोग तनाव में धूम्रपान करते हैं, साधारण धूम्रपान के अतिरिक्त देश के कई भागों में विपरीत धूम्रपान भी प्रचलित है। जैसे कि बीड़ी के जले हुए टुकड़ों का मुंह में रखा जाना इससे जीभ में कैंसर हो सकता है।

चूंकि धूम्रपान व्यक्ति की निजी आदत है और यह आदत उसने स्वयं पाली है, इसलिए इस पर नियन्त्रण पाया जा सकता है और निश्चित ही इससे बचा जा सकता है। इसके लिए जरूरी है तो बस··· व्यक्ति की दृढ़ इच्छा, मजबूत इच्छा शक्ति से व्यक्ति इसे छोड़ सकता है। ज्यों-ज्यों धूम्रपानकर्त्ता को उसके गम्भीर परिणामों का आभास होगा और वह समझने लगेगा कि यह कितना खतरनाक है तो सम्भवतः वह धूम्रपान नहीं करेगा। इच्छा शक्ति और दृढ़ निश्चय इसमें बहुत सहायक होते हैं।

धूम्रपान को धीरे-धीरे छोड़ना भी एक सफल तरीका कहा जा सकता है। इस प्रकार धूम्रपानकर्त्ता इस आदत को निम्नलिखित तरीके से छोड़ सकते हैं। पहले वह प्रतिदिन जितनी बीड़ी सिगरेट पीता है, इसमें कमी लायें। फिर धीरे-धीरे पूरी तरह धूम्रपान त्यागने का प्रयास करें।

अमेरिका के नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट ने धूम्रपान छोड़नेवालों के लिए सम्भाव्य तरीका बताया है। प्रथम, यह विचार कदापि न लायें कि मैं सिगरेट कभी नहीं पीऊंगा। केवल यह सोचें कि मुझे आज सिगरेट नहीं पीना है। दूसरे, प्रतिदिन पहला सिगरेट में जलाने एक-एक घण्टे का विलम्ब करें या दो-दो तीन-तीन घण्टे बाद धूम्रपान करने का निश्चय करें। फिर, अधिक से अधिक समय वहां गुजारें, जहां धूम्रपान निषेध हो। जैसे कि संग्रहालय, रंगशाला या सिनेमाघर आदि। शराब या अन्य ऐसी चीजों से परहेज करें। जिनका सिगरेट से सम्बन्ध हो। केवल जल या फलों के रस का प्रयोग करें, जिन्हें दिल का दौरा पड़ता है, उन्हें सावधानी के तौर पर धूम्रपान तुरन्त बन्द कर देना चाहिए। यदि रोगी निरन्तर धूम्रपान करता रहेगा तो दिल का दौरा पड़ने की सम्भावनायें अधिक हो जायेंगी।

धूम्रपान की आदत जब पड़ जाती है तो बड़ी मुश्किल से छूट पाती है। इस आदत को छोड़ने के लिए धूम्रपानकर्त्ता को चाहिए कि वह हर समय अपने मुंह में सौंफ, इलायची या लौंग रखे। धूम्रपान की इच्छा होने पर चाय पी लें और कुछ नहीं तो एक गिलास पानी लिया जा सकता है। अपने आपको हमेशा संगीत, चित्रकारी, उद्यान कार्य और खेलों आदि में व्यस्त रखें। इसके अलावा और कोई दूसरा रास्ता ऐसा अपनायें जिससे सिगरेट-बीड़ी का ध्यान न आये।

परिवार में धूम्रपान निषेधी माहौल बनाने के लिए माता-पिता को स्वयं सबसे पहले धूम्रपान नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से छोटे बच्चे धूम्रपान की नकल नहीं करेंगे। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में बुजुर्ग लोग छोटे बच्चों को 'चिलम' और 'हुक्का' भरने के लिए कहते हैं। बच्चों से इस प्रकार के कार्य नहीं कराने चाहिए। क्योंकि यहीं से उनके बच्चों पर मनोमस्तिष्क पर बुरी आदतों के संस्कार पड़ते हैं।

(दैनिक विश्व मानव)

ईश्वर स्तुति

ये प्रार्थना परमात्मा मेरी स्वीकार हो।
हर एक शुद्ध हो आत्मा हर दिल में प्यार हो॥
ये प्रार्थना······१

माता-पिता आचार्य वेदों का ज्ञान दें।
बल बुद्धि ब्रह्मचर्य चरित्र पे ध्यान दें।
सात्विक बुद्धि हो सबकी ना दोष विकार हो।
ये प्रार्थना······२

फल फूल अन्न से हो लदी हर बेल हर डाली।
कोई ना भूखा-प्यासा हो ऐ बाग के माली।
हर जीव प्रभु तेरी सृष्टि का प्रभु शाकाहार हो।
ये प्रार्थना······३

मोह माया भय क्रोध ईर्ष्या-द्वेष ना रहे।
छल कपट पाप अन्याय कहीं भी शेष ना रहे।
कोई ना रेखा हो भूमण्डल ही परिवार हो।
ये प्रार्थना······४

सर्वत्र हो आनन्द मंगल खार ना रहे।
'दलाल' कहीं भी पाप की तलवार ना रहे।
तुरन्त दुष्ट को दण्ड देना तेरे अख्त्यार हो।
ये प्रार्थना······५

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, प्रधान आर्यसमाज कंवारी

व्यष्टि और समष्टि के निर्माण में पुरोहित एवं संस्कारों का महत्त्व

(आचार्य वेदभूषण अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान मन्दिर, हैदराबाद)

गतांक से आगे—

पुरोहित केवल पुरोहित संज्ञक होने से ही महान् नहीं होता। पुरोहित को ज्ञान व कर्म से श्रेष्ठ बनना होगा, तभी वह समाज को प्रेरणा दे सकेगा। पुरोहित को संस्कारों का महत्त्व व प्रत्येक क्रिया विधान का सूक्ष्म रहस्य जानना चाहिए। साथ ही उसका अपना आचरण व व्यवहार श्रेष्ठ होना चाहिए।

हमें स्मरण है कि आर्यजगत् के एक नेता ने अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान के लगभग तीस हजार रुपये अनुचित ढंग से हथिया लिए। जब हमने धन की मांग की तो उस नेता ने व्यंग्य करते हुए कहा कि—हमारे विद्वान् बड़े लोभी होगये हैं।

हमारा उत्तर था कि—जो विद्वान् है व लोभी कभी नहीं हो सकता, क्योंकि वह धन को साधन मानता है। धन कमाना उसका उद्देश्य नहीं होता। अविद्वान् नेता अवश्य लोभी होता है।

हमने तीस हजार रुपये का अधिकार उस अविद्वान् नेता के लिए त्याग दिया और आज हमें सन्तोष है कि हमने क्रियात्मक रूप से सिद्ध कर दिया है कि उस नेता का कथन झूठा था।

पुरोहित धन के लिए नहीं अपने आदर्शों व सिद्धांतों के लिए जीता है। आज पुरोहितों के तेजी से होनेवाले अभाव को देखकर अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद ने निश्चय किया है कि हम यथा सामर्थ्य कम समय में प्रभावी प्रशिक्षण देकर पुरोहितों को तैयार करेंगे। साथ ही जो वर्तमान में पुरोहित हैं उन्हें कर्मकांड के रहस्यों से अवगत करायेंगे व शुद्ध विधि और मन्त्र पाठ का प्रशिक्षण देंगे।

आर्यसमाज सिवानी जि० भिवानी का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री हरिश्चन्द्र आर्य, मन्त्री—डा० राजकुमार धींगड़ा, कोषाध्यक्ष—जनकराज आर्य।

आर्यसमाज के विकास की एक योजना

—प्रा० भद्रसेन, डाक० साधु आश्रम, होशियारपुर-१४६०२१

जैसे एक किसान अच्छी फसल को चाहता है, उसी तरह हम भी आर्यसमाज की सफलता चाहते हैं। जैसे वहां अतीत से प्राप्त धरती पर भविष्य को ध्यान में रखकर वर्तमान में योजनाबद्ध कार्य होता है। ऐसे ही आर्यसमाज के अतीत के आधार पर सुन्दर भविष्य की आशा से हमें आज प्रयास करना चाहिये। प्रयास जितने योजनाबद्ध रूप से होगा तो सफलता भी उतनी ही सरल, स्पष्ट और सुनिश्चित होगी।

आज आर्यसमाज के पास पहले की अपेक्षा अधिक साधन और सुविधायें हैं। सैंकड़ों ऐसे आर्यसमाज हैं, जिनको एक हजार से ऊपर मासिक आय के सुनिश्चित स्रोत हैं। पुनरपि अधिकतर यही अनुभव करते हैं कि आर्यसमाज आगे नहीं बढ़ रहा है।

अतः सुन्दर भविष्य की योजना या रूपरेखा सामने लाने से पहले मैं पाठकों का ध्यान इस ओर ले जाना चाहता हूं कि आज हम किन परिस्थिति में यह विचार कर रहे हैं। जैसे कहीं जाने के लिये सबसे पहले यह पता होना चाहिये कि हम कहां खड़े हैं और यहां से अमुक स्थान पर जाने के लिये क्या स्थिति, सुविधा, मार्ग है ?

इस प्रसंग में सर्वप्रथम विचारणीय बात यह है कि आज सामाजिक भावना, (दूसरों के लिए दर्द, तड़फ) कम हो रही है। आश्चर्य तो यह है कि सभी दूसरों से सहयोग चाहते हैं, पर दूसरों के लिये तड़फ की भावना रखनेवालों को प्रोत्साहन नहीं देते। अधिकतर व्यक्ति आज अपने तक सीमित होते जारहे हैं और आर्यसमाज के अतीत का स्वरूप तथा विकास का आधार सामाजिक भावना (तड़फ, दर्द) ही है।

दूसरी भावना यह बद्धमूल हो रही है कि व्यक्ति को निरपेक्ष होना चाहिए। जिसका प्रभाव है—दूसरे के जीवन में धर्म, राजनीति आदि की दृष्टि से स्वतः दखल न देना। अपने विचार इस ढंग से रखो, बात करो जो किसी पर थोपे हुए न लगें। इसी को आज की हवा की दृष्टि से 'धर्म-निरपेक्ष' कहा जा सकता है। धर्म-निरपेक्ष शब्द में मेरी दृष्टि से कोई आपत्ति की बात नहीं, अपितु उदारता से इसको समझने की जरूरत है। विस्तार के लिए देखिये—'सरल-सुखी जीवन' का धर्म अनिवार्य है या निरपेक्ष प्रकरण। इसी दूसरी भावना को हम दूसरे शब्दों में इस प्रकार से कह सकते हैं कि पहले वाली अपनेपन की कटरता अब आज का समाज नहीं चाहता। सूर्य, वायु, विवादवाले दृष्टांत की तरह सूर्य जैसी प्रेरणा ही ठीक है।

आज की तीसरी समस्या यह है कि आज की बदलती परिस्थितियों में अधिकतम व्यक्तियों को धन कमाने के लिये बहुत अधिक समय देना पड़ता है। जिससे वे दूसरों के लिये श्रम, विद्या, वित्त, समय आदि का कम त्याग कर सकते हैं। पुनरपि जो व्यक्ति कार्यकर्त्ता बनकर (न कि नेता) आर्यसमाज का जितना-जितना कार्य करते हैं या करना चाहते हैं, उनको उतना-उतना प्रोत्साहन और अवसर देना चाहिए। यह ठीक है कि किसी की पहले जांच होनी चाहिये, पर परीक्षा की भी कोई सीमा होनी चाहिये ? एक सामान्य परीक्षा के पश्चात् जचने पर विश्वास करके एक बार किसी को अवसर, प्रोत्साहन दिया जाये। वस्तुतः विश्वास के बाद यदि कोई योग्य ईमानदार सिद्ध नहीं होता, तब उसको आगे अवसर न दिया। इसी स्थिति में ही पूरी तरह से परीक्षा करना कहा जा सकता है, अवसर दिये बिना नहीं।

किसी संगठन की सफलता का आधार उसके कार्यकर्त्ता ही होते हैं। वे ही उस संगठन के नये रक्त हैं जो उसको जीवित रखते हैं। जैसे वही वृक्ष हरा-भरा होता है, जिसके फल, फूल, पत्ते, टहनी, शाखा आदि का रसवाहिनी नाड़ियों के द्वारा मूल से सम्बन्ध जुड़ा रहता है। अन्यथा वे सूखकर वि-रस हो जाते हैं, तभी तो कहा जाता है—छिन्ने मूले नैव पत्रं न पुष्पम्, या लतायां पूर्वलूनायां-प्रसूनस्योद्गमः कुतः ? ठीक इसी प्रकार कार्यकर्त्ता ही किसी संगठन के सिद्धांतों के बाद दूसरे स्तर पर मूल-आधार कहे जा सकते हैं। अतः आर्यसमाज का विकास चाहनेवालों को हर तरह से कर्मनिष्ठ कार्यकर्त्ताओं को प्रोत्साहन तथा अवसर देना चाहिए।

युवकों को शराब ने अपने शिकंजे में कस लिया है

—दीपचंद

रोज-रोज मौखिक तथा पत्रों में पढ़ते हैं—जहरीली शराब पीने से ८ मरे, कुछ की हालत चिन्ताजनक। परनाला में प्रातः एक शराबी शराब अधिक पीने के कारण मरा हुआ मिला। सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। प्रायः सभी मादक पदार्थ विष हैं, चेतावनी दी जाती है, पर युवक दूने-दूने फंसते जाते हैं। इसके कारण क्या हैं—

१. हकूमत को आय होती है। साथ ही ठेकेदारों को शराब से कई गुनी आय हो जाती है। यह आय पुलिस तथा बड़े राजकीय कर्मचारियों और मन्त्रियों तक पहुंचती है। इस प्रकार यह नाजायज धन मादक पदार्थों का अवैध व्यापार करनेवालों को नहीं पकड़ता।

२. गांव में समाज व्यवस्था बड़ी खराब होगई है। गांव के चौधरी प्रायः फौजी पेंशनर होते हैं जो सभी प्रायः पीते हैं। वे सामाजिक शिकंजा कसने नहीं देते। बिना सामाजिक शिकंजे के कुछ नही होने का।

३. विवाह आदि उत्सवों पर इसका प्रयोग एक-दूसरे होड़ लगाकर पीते-पिलाते हैं। इस प्रकार यह सामाजिक पेय बन गया है।

४. राजनैतिक पार्टियां चुनाव में शराब पिलाकर फंसाते हैं। गांव की पंचायत में यह खुलकर पिलाई जाती है।

५. नशीले पदार्थ पीते-पीते इस हद तक शिकार होगये हैं कि जब तक यह पदार्थ नहीं मिलते, वह काफी बेचैन एवं छटपटाहट महसूस करता है।

६. घरों में पहले खानपान पर औरतों का कण्ट्रोल होता था, अब भी है। औरतें प्रायः बीड़ी सिगरेट पीने लगी हैं।

मादक पदार्थों के कारण बच्चे कमजोर होने लगे हैं। बच्चे प्रायः अंगहीन पैदा होते हैं या बाद में पोलियो के शिकार हो जाते हैं। जहां स्त्री-पुरुष दोनों तम्बाकू का सेवन करते हैं, उनकी सन्तानों के चेहरे सदा मुरझाये होते हैं। घरों में कलह रहती है, सब घर के विकास कार्य ठप्प हो जाते हैं। स्कूलों के अध्यापक भी इसके चुंगल में फंसे हुए हैं। भ्रष्टाचार छोटे स्तर पर तो शराब के कारण ही होता है। छोटे-छोटे अधिकारी तथा पंच, सरपंच और उनके साथी टोलियों में बिना किसी झिझक के शराब की मांग करते हैं।

हमारा नैतिक दायित्व एवं प्रथम कर्त्तव्य है कि देश की भावी पीढ़ी को नशीली वस्तुओं से बचावें। इनके बर्बाद करनेवाली बैठकों को समाप्त करें। सावधान रहें, नशेबाज भटका हुआ व्यक्ति है, उसे उपदेश की जगह सहानुभूति की भी आवश्यकता है। माध्यमों का भी प्रथम दायित्व है कि वे भी नशीली वस्तुओं के घातक परिणामों के प्रति जनता को जागरूक बनाये। सिगरेट, बीड़ी, तम्बाकू आदि किसी प्रकार के नशीले पदार्थों का विज्ञापन न छापें।

लेकिन क्या हमारी प्रजातांत्रिक सरकार जिसका मुख्य उद्देश्य विकास करना है, वह संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व नहीं निभायेगी ? नागरिकों का बेहतर स्वास्थ्य और बेहतर रहन-सहन शराबादि मादक पदार्थों के होते कभी नहीं कर सकते। अतः सरकार के कर्णधारों वा सब प्रकार की दलीलों और पूंजीपतियों के विरोध का सामना कर एकदम शराब को खत्म कर देना चाहिये। साथ ही पुलिस का रोब-दाब जो भ्रष्टता के कारण खत्म होगया है, उसे जीवित करें। गांव में पंचायत अपना दायित्व समझे कि युवकों को बचाना है। गांववालों को चाहिए कि शराबी तथा शराब का हिमायती कोई पंच, सरपंच न बनने पावे। यह जड़ काटने का अब अवसर है। गांव में जो पुलिस को हफ्ता आदि देकर व्यापार करते हैं, उनका पर्दाफाश गांव के अधिकारियों को करना चाहिये। अतः यह हिम्मत करनी होगी, बुरे को बुरा कहने को।

भिवानी में आर्य प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य वीरदल भिवानी के तत्वावधान में गांव नीमड़ीवाली में दिनांक १६-५-८८ से २२-५-८८ तक आर्य प्रशिक्षण शिविर चलाया गया। इस शिविर में ८५ प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। शिविर का संचालन डा० राजपाल शास्त्री ने किया। सर्वश्री रामानन्द, मदनलाल व रामफल शिक्षकों ने विभिन्न विषयों जैसे व्यायाम, आसन, दण्ड बैठक, लाठी, कराटे में प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया। शिविर के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को होमगार्ड भिवानी के माध्यम से राइफल प्रशिक्षण भी दिया गया। शिविर के दौरान गांव में सुबह शाम भजनमण्डलियों के माध्यम से प्रचार किया गया। दिनांक २२-५-८८ को शिविर के समापन समारोह पर उपायुक्त भिवानी श्री के०के० जालान को मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया गया। आर्य वीरदल जींद के सैनिकों ने लाठी व तलवार के बहुत ही रोमांचक खेल दिखाये। गुरुकुल झज्जर के प्रधानाचार्य ब्रह्मचारी विजयपालसिंह ने शक्ति प्रदर्शन कर, दो कारों को अपने हाथों से रोका, लोहे की जंजीर को तोड़ा, छाती पर पत्थर तुड़वाया, मोटे-मोटे सरियों को गर्दन से मोड़कर तथा हाथों से कांच पीसकर दर्शकों को चकित कर दिया। उपायुक्त महोदय प्रदर्शन देखकर बहुत प्रभावित हुए। मुख्य अतिथि ने प्रशिक्षणार्थियों को पुरस्कार वितरित किये। मण्डलपति आर्य वीरदल द्वारा मुख्य अतिथि को सत्यार्थ-प्रकाश भेंट किया गया।

मुख्य अतिथि ने अपने सन्देश में इच्छा व्यक्त की कि आर्य वीरदल द्वारा ऐसे ही अन्य शिविरों का आयोजन भी किया जाये। जिससे अधिक से अधिक नवयुवक लाभान्वित हो सके। उन्होंने भिवानी बाल भवन में योगा संस्थान खोलने की भी इच्छा व्यक्त की। मुख्य अतिथि ने गांव नीमड़ीवाली में पुस्तकालय खोलने के लिए ५१००) की राशि देने की भी घोषणा की।

—रामलाल आर्य मण्डलपति आर्य वीरदल, भिवानी

शुद्धि समाचार

१४ जून को ग्राम-डडार जि० करनाल में शुद्धि संस्कार समारोह यज्ञ के अवसर पर सम्पन्न हुआ। जिसमें स्वामी सेवानन्द जी मन्त्री शुद्धि सभा, ब्र० महासिंह आर्य आदि ने शुद्ध हुए यवन गूजरों को यज्ञोपवीत दिये और उनके बच्चों को गुरुकुल में पढ़ाने की सुविधा देने का निर्णय किया गया।

—जयसिंह आर्य

वेदों का अंग्रेजी अनुवाद

शिमला, ११ जून (वार्ता)। डा. स्वामी सत्यप्रकाश चार वेदों का अंग्रेजी में अनुवाद कर रहे हैं।

उन्होंने आज यहां संवाददाताओं से कहा कि अनुवादित वेद २७ खण्डों में होंगे।

स्वामी सत्यप्रकाश जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रसायन विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष हैं, ने कहा कि उन्होंने ऋग्वेद का १३ खण्डों में और यजुर्वेद का तीन खण्डों में अनुवाद कर भी दिया है। उन्होंने कहा कि इस समय वह सामवेद का अनुवाद कर रहे हैं, जो तीन खण्डों में पूरा हो जायेगा।

उन्होंने कहा कि अथर्ववेद का अनुवाद आठ खण्डों में तैयार होने की सम्भावना है। (दैनिक ट्रिब्यून)

स्त्री आर्यसमाज दयानन्द भवन हिसार का चुनाव

प्रधाना—सर्वश्रीमती राजकुमारी आर्या, उपप्रधाना—कौशल्या नारंग, मन्त्राणी—विमलारानी आर्या, उपमन्त्राणी—कांता मित्तल, कोषाध्यक्ष—सुशीलाकुमारी आर्या, लेखानिरीक्षक—शांति कथूरिया, प्रचारमन्त्री—शांतिविद्या छाबड़ा।

आर्यसमाज अकालगढ़ में वेदप्रचार की धूम

आर्यसमाज अकालगढ़ जि० जींद में १२ से १५ जून तक वार्षिक वेदप्रचार का आयोजन किया गया। इस शुभावसर पर सभा के भजनोपदेशक पं० तेजपाल आर्य की भजनमण्डली के चार दिन प्रभावशाली भजन हुए और समाज में फैले पाखण्ड, शराब एवं दहेज आदि बुराइयों का जमकर खण्डन किया। इस बीच कुछ शराबी तथा सामाजिक व्यक्तियों ने वेदप्रचार में बाधायें डालने का यत्न किया, परन्तु आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं जिनमें सर्वश्री बलवानसिंह, जगदीशसिंह, अजीतसिंह आदि ने प्रचार में शरारत करनेवालों को वहां से भगा दिया। इस प्रकार आर्यसमाज के संगठन को बल मिला।

इसी अवसर पर श्री जगदीशसिंह के सुपुत्र का नामकरण संस्कार भी सम्पन्न हुआ। जिसमें स्वामी सत्यवेश, पं० पुष्करदत्त तथा पं० तेजपाल आर्य सम्मिलित हुए। श्री जगदीशसिंह ने आर्यसमाज के पुस्तकालय के लिये 'देशभक्तों का बलिदान' नामक पुस्तक दान दी। सभा को वेदप्रचारादि के लिये २०१) दिया गया।

—ओरासिंह आर्य मन्त्री

दुःख निवारण संस्था सिवानी मण्डी

गतवर्ष २ अक्तूबर, ८७ को सिवानी मण्डी व गांव के कुछ सज्जन पुरुषों ने मिलकर एक दुःख निवारण संस्था का गठन किया। इस समय अकाल व सूखे की भयानक स्थिति को दृष्टि में रखते हुए अनेक जनहित के कार्य विधिवत् चला रखे हैं। १० मई, ८८ से पुरानी मेला कोठी ७५ रुपये मासिक किराये पर लेकर धर्मार्थ भोजनालय चला रखा है। ६०-७० गरीब पुरुष व बच्चे एक समय दोपहर प्रतिदिन भोजन करते हैं। धर्मार्थ हस्पताल पशुओं व मनुष्यों के लिये चला रखा है। एक लघु पुस्तकालय गरीब बच्चों के लिए। एक डी० एन० एस० पब्लिक स्कूल चला रखा है। शुल्क केवल ५ रुपये है। उपरोक्त संस्था के कार्य में सिवानी के सभी लोगों का पूर्ण योगदान मिल रहा है। सेठ लोग दिल खोलकर दान दे रहे हैं। श्री जनकराज के नेतृत्व में कुछ नवयुवकों के अतिरिक्त आर्यसमाज सिवानी के कार्यकर्त्ताओं का भी विशेष सहयोग मिल रहा है। वर्तमान संकट के समय यह संस्था बहुत ही उत्तम व सराहनीय कार्य कर रही है।

—अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

आर्यसमाज मन्दिर नाहरी जि० सोनीपत हेतु दान प्राप्त सूची

१०१) देनेवाले दानी

सर्वश्री पृथ्वीसिंह, उमरावसिंह, रामस्वरूप आर्य, नीतिदेव, भगवानसिंह, दयाकिशनसिंह, धर्मवीरसिंह, ओम्प्रकाश, मामचन्द, रामस्वरूप, नन्दकिशोर, जगदीशचन्द्र, चन्दनसिंह, रघुवीरसिंह, श्रीकृष्ण, रणधीरसिंह, आजादसिंह, रघुनाथसिंह, लखीराम, विजयसिंह, श्रीमती किताबकौर, डा० जगदीशचन्द्र, रामचन्द, सत्यवीरसिंह, अभयराम, रणजीतसिंह, जिलेसिंह, मांगेराम बाकनेर, महासिंह कतलूपुर, बी० एम० बाबू, नेतराम नाहरा, आर्यसमाज नरेला २५१)।

—रामस्वरूप आर्य, मन्त्री आर्यसमाज नाहरी, सोनीपत

शराब पीना सामाजिक अभिशाप है।

(पृष्ठ १ का शेष)

प्रश्न—आचार्य विद्यार्थियों के साथ कैसे वर्तें ?

उत्तर—जिस प्रकार से विद्यार्थी, विद्वान्, सुशील, निरभिमान, सत्यवादी, धर्मात्मा, आस्तिक, निरालस्य, उद्योगी, परोपकारी, वीर, धीर, गम्भीर, पवित्राचरण, शांतियुक्त, दमनशील, जितेन्द्रिय, ऋजु, प्रसन्नवदन होकर माता, पिता, आचार्य, अतिथि, बन्धु, मित्र, राजा, प्रजा आदि के प्रियकारी हों। जब किसी से बातचीत करें, तब जो-जो उसके मुख से अक्षर, पद, वाक्य निकलें, उनको शांत होकर सुनके प्रत्युत्तर देवें। जब कभी कोई बुरी चेष्टा, मलिनता, मैले वस्त्र धारण, बैठने उठने में विपरीताचरण, निन्दा ईर्ष्या, द्रोह, विवाद, लड़ाई, बखेड़ा, चुगली, किसी पर मिथ्या दोष लगाना, चोरी, जारी, अनाभ्यास, आलस्य अतिनिद्रा, अति भोजन, अति जागरण, व्यर्थ खेलना, इधर-उधर अंट-संट मारना, विषय सेवन, बुरे व्यवहारों की कथा करना वा सुनना, दुष्टों के संग बैठना आदि दुष्ट व्यवहार करे तो उसको यथापराध कठिन दण्ड देवें। इसमें प्रमाण—

सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः।
लालनाश्रयिणो दोषास्ताडनाश्रयिणो गुणाः॥
(महाभाष्य अ० ८; पा० १, सू० ८, आ० १)

आचार्य लोग अपने विद्यार्थियों को विद्या और सुशिक्षा होवे के लिये प्रेमभाव से अपने हाथों से ताड़ना करते हैं। क्योंकि सन्तान और विद्यार्थियों का जितना लाड़न करना है, उतना ही उनके लिए बिगाड़ और जितनी ताड़ना करनी है, उतना ही उनके लिये सुधार है, परन्तु ऐसी ताड़ना न करें कि जिससे अंग भंग वा मर्म में लगने से विद्यार्थी वा लड़के-लड़की लोग व्यथा को प्राप्त हो जायें।

प्रश्न—कन्याओं के पढ़ने में वैदिक प्रमाण कहां है ?

उत्तर—सुनो प्रमाण—

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।
(अथर्ववेद कां० ११, अ० ३, सू० ५, मं० १८)

अर्थ—जैसे लड़के लोग ब्रह्मचर्य करते हैं, वैसे कन्या लोग ब्रह्मचर्य करके वर्णोच्चारण से लेकर वेदपर्यन्त शास्त्रों को पढ़कर, प्रसन्न करके स्वेच्छा से पूर्ण युवावस्थावाले पति को वेदोक्त रीति से ग्रहण करें।

क्या अधर्मी से भिन्न कोई ऐसा भी मनुष्य होगा जो किसी पुरुष वा स्त्री को विद्या के पढ़ने से रोक कर मूर्ख रखना चाहे और वेदोक्त प्रमाण का अपमान करके अपना कल्याण किया चाहे ?

प्रश्न—विद्या को किस-किस क्रम से प्राप्त हो सकता है ?

उत्तर—वर्णोच्चारण, व्यवहार की शुद्धि, पुरुषार्थ, धार्मिक विद्वानों का संग, विषयकथा प्रसंग का त्याग, सुविचार से व्याकरण आदि शब्द अर्थ और सम्बन्धों को यथावत् जानकर, उत्तम क्रिया करके सर्वथा साक्षात् करता जाये। जिस-जिस विद्या के लिये जो-जो साधन रूप सत्य ग्रन्थ हैं, उन-उनको पढ़कर वेदादि पढ़ने के योग्य ग्रन्थों के अर्थों को जानना आदि कर्म शीघ्र विद्वान् होने के साधन हैं।

महर्षि दयानन्द जी महाराज 'व्यवहारभानु' ग्रन्थ के अन्त में लिखते हैं—

जो मनुष्य विद्या कम भी जानता हो, परन्तु पूर्वोक्त दुष्ट व्यवहारों को छोड़कर धार्मिक होके खाने, पीने, बोलने, बैठने, उठने, लेने, देने आदि व्यवहार सत्य से युक्त यथायोग्य करता है, वह कहीं कभी दुःख को नहीं प्राप्त होता और सम्पूर्ण विद्या पढ़के पूर्वोक्त उत्तम व्यवहारों को छोड़के दुष्ट कर्म करता है, वह कहीं कभी सुख को प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिये सब मनुष्यों को उचित है कि आप अपने लड़के, लड़की, इष्ट मित्र, अड़ोसी-पड़ोसी और स्वामी भृत्य आदि को विद्या और सुशिक्षा से युक्त करके सर्वदा आनन्द करते रहें।

वैदिक आश्रम भादस का उत्सव सम्पन्न

२८-२९ मई, ८८ को स्वामी अमरानन्द मेवात केसरी द्वारा मेवात के मध्य ५ वर्ष पूर्व स्थापित वैदिक आश्रम भादस जि० गुडगांव का वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। जिसमें गुडगांव एवं फरीदाबाद जिले के प्रमुख व्यक्तियों सहित हजारों व्यक्तियों ने सम्मिलित होकर धर्म लाभ उठाया। गोरक्षा, धर्मरक्षा, शराब, दहेज आदि कुरीतियों को समाज से दूर करने का आह्वान किया गया। उत्सव में स्वामी सुमेधानन्द, स्वामी सिंहमुनि, श्री सत्यप्रिय, भूदेव शास्त्री, जगवीरसिंह, महाशय खेमसिंह, हरिश्चन्द्र शास्त्री, पं० मंगलदेव, म० रूपचन्द, मा० हेतराम आर्य आदि विद्वान् उपदेशकों ने दोनों दिन अन्य कुरीतियों के अतिरिक्त संगठित होकर काम करने पर बल दिया।

—हरिश्चन्द्र शास्त्री

सभा के ऋषिलंगर हेतु अन्न तथा धन प्राप्त सूची

गतांक से आगे—

श्री कंवरसिंह सूरजमल नन्दा छोटूराम किताबकौर देवव्रत प्रियदेव आदि पाकस्मा जि० रोहतक	१-५० किलो
,, ओम्प्रकाश रामचन्द्र रतिराम हरके चन्दासिंह आदि रुड़की जि० रोहतक	१-५० ,,
,, रघुनाथ स्वरूपलाल सूबे आदि कलोई हुड्डा जि. रोहतक	०-५० ,,
,, कबूल कृष्ण उमेद दरयावसिंह चन्द्रसिंह आदि रोहणा जि० सोनीपत	३-०० ,,
,, दरया शमशेर सुपुत्र श्री हरकृष्ण आदि कटवाड़ा जि० रोहतक	५-०० ,,
श्रीमती सुरक्षादेवी आर्या गोहाना मार्ग ,,	०-४० ,,
कुल	४१ क्विंटल

श्री वेदपाल सुपुत्र श्री धनश्याम आर्य ग्राम गांवरा रोहतक	१००)
,, महेन्द्रसिंह आर्य ग्राम डोभल जि० ,,	५१
,, फूलसिंह ग्राम दुबलधन ,,	५०
,, रतिराम आर्य ३०) सूबेदार रिसालसिंह आर्य २०) भालोट ,,	५०
,, सत्यवीरसिंह सुपुत्र श्री भरतसिंह कुण्डल जि० सोनीपत	१०
,, छीशराम आर्य २०) श्री ओम्प्रकाश गढ़ी कुण्डल ,,	४०
,, जयसिंह सुपुत्र श्री धर्मसिंह कलोई हुड्डा जि० रोहतक	२०
श्रीमती सुरक्षादेवी आर्या कृष्णा कालोनी ,,	११
कुल राशि	३३२

सभी दानदाताओं का सभा की ओर से हार्दिक धन्यवाद।

—सभामन्त्री

आर्यसमाज के उत्सवों का कार्यक्रम

आर्यसमाज सबोलपुर जाटान जि० अम्बाला	२३ से २५ जून
,, गांधी नगर गन्नौर जि० सोनीपत	२४ से २६ ,,
,, पाथरी जि० करनाल	२७-२८ ,,

आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने उत्सव अथवा प्रचार कार्यक्रम जून के अन्तिम सप्ताह अथवा जुलाई मास में रखकर अपनी तिथियां सुरक्षित करवा लेव, ताकि सभा को उपदेशक एवं भजन मण्डलियों के प्रबन्ध करने में सुविधा रहे।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

संस्कृत को जन-जन तक पहुंचाने का बीड़ा

हैदराबाद, २७ मई (जनसत्ता)। संस्कृत को जन-जन तक पहुंचाने के लिए 'हिन्दू सेवा प्रतिष्ठान' के सस्कृत विभाग ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है। इसे यहां केवल शिविरों में ही नहीं सिखाया जाता, संस्कृत में नुक्कड़ नाटकों और हरिकथाओं के जरिये लोकप्रिय बनाया जा रहा है।

इतना ही नहीं बंगलूर की सिटी बसों में तो प्रशिक्षित शिक्षक सहवासियों से बातचीत तक संस्कृत में करते हैं। ताकि बाकी यात्रियों का ध्यान सहज ही संस्कृत की ओर आकर्षित हो और उनमें अपनी इस प्राचीन भाषा के प्रति ललक पैदा हो।

अपने इसी उद्देश्य को पाने के लिए हिंदू सेवा प्रतिष्ठान के सस्कृत विभाग ने सबसे पहले दस दिन का एक कोर्स शुरु किया। जिसमें 'संस्कृत बोलना सीखिये' कार्यक्रम के तहत एक शिविर लगाया जाता है। यह शिविर सी० एम० कृष्ण शास्त्री चलाते हैं।

इस शिविर में संस्कृत सीखने आये युवकों को देखकर यह नहीं लगता कि संस्कृत मोटी-मोटी पोथियों में दफन हो गई है। अब यह लगने लगा है कि यहां यह भाषा घरों, स्कूलों और गलियों तक में जीवत हो उठी है।

३२ वर्षीय कृष्ण शास्त्री संस्कृत भाषा प्रचार समिति के आमन्त्रण पर इन दिनों यहां आये हैं। यह समिति २१ मई से संस्कृत अध्यापकों के लिए दस दिन का यह कोर्स चला रही है।

श्री शास्त्री को इस बात का जरा भी गुमान नहीं है कि वे बहुत से शिष्यों को संस्कृत सिखा रहे हैं। संस्कृत सीखने आये छात्रों के साथ उनका मधुर संवाद बना हुआ है। वे इन छात्रों के साथ केवल संस्कृत साहित्य पर ही नहीं, आधुनिक विषयों मारुति कारों की तेज गति या सोवन वाबू के अभिनय पर भी बतियाते हैं।

हिंदू सेवा प्रतिष्ठान के संस्कृत विभाग ने पिछले सात सालों में विभिन्न राज्यों में तीन हजार से भी ज्यादा दस दिनों का संस्कृत सीखने के लिए कार्यक्रम चलाया है। इससे १५ हजार से भी ज्यादा लोगों में यह विश्वास जागा कि वे बिना किसी कठिनाई के इस प्राचीन भाषा को सीख सकते हैं।

सस्कृत विभाग ने इसके अलावा ऐसे ५०० घरों में संस्कृत विद्यादान दिया है, जिनमें परिवार का हर सदस्य केवल संस्कृत भाषा ही बोलता है। संस्कृत विभाग स्कूलों में प्रदर्शन के लिए ऐसे पोस्टर भी छपवाता है जिनमें कम से कम १५ वाक्य संस्कृत में होते हैं। ये पोस्टर एक हफ्ते बाद दूसरी जगह (स्कूलों) में प्रदर्शन के लिये रखे जाते हैं। संस्कृत विभाग ने संस्कृत को लोकप्रिय बनाने के लिये कोई कसर नहीं छोड़ी है।

संस्कृत विभाग ने संस्कृत को लोकप्रिय बनाने की दिशा में कर्नाटक राज्य के मटूर गांव को चुना। यह गांव शिमोगा के नजदीक है। इस गांव की आबादी में से ३० फीसदी लोग अब संस्कृत में ही वार्तालाप करते हैं।

संस्कृत को लोकप्रिय बनाने के कार्यक्रमों के तहत ही इस भाषा को अब सिटी बसों में यात्रियों के बीच बोलचाल की भाषा बनाने का अभियान भी छिड़ा हुआ है।

इस काम में संस्कृत अध्यापकों को लगाया गया है। दो प्रशिक्षित संस्कृत शिक्षक किसी एक तयशुदा दिन बंगलूर की सिटी बसों में सवार होकर आपस में ही जोर-जोर से संस्कृत में बातचीत शुरु कर देते हैं। इनमें से एक शिक्षक ठसाठस भरी बस के बारे में अपनी प्रतिक्रिया संस्कृत में इस तरह देता है—'महायान: समृद्ध:' (बस लबालब भरी है।) इस पर दूसरा शिक्षक आगे बढ़ने के लिए कहता है—'अग्रे गच्छतु।' इन दोनों के बीच संवाद जारी रहता है। जैसे एक शिक्षक पूछता है—'कदा वा निर्गच्छति ?' (यह बस कितने बजे चलती है ?) इन दोनों शिक्षकों के संवाद के बस के बाकी यात्रियों में से एक उत्सुकता जागती है। इस तरह कुछेक घण्टे के सफर में ही ये शिक्षक संस्कृत भाषा को जन-जन तक पहुंचाने का अभियान चलाते हैं।

संस्कृत विभाग ने आम लोगों में इस भाषा के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए सरल संस्कृत में नुक्कड़ नाटकों, ड्रामों और हरिकथाओं का भी आयोजन किया है। (दैनिक जनसत्ता से साभार)

—केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् सरोजिनी नगर, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

१. दी वेदाज (अंग्रेजीभाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२. दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज – पं० चमूपति एम०ए०	१-५०
३. जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)—पं० चमूपति एम०ए०	३-००
४. निहारिकावाद और उपनिषद्—पं० चमूपति एम०ए०	०-५०
५. आर्यसमाज की विचारमाला—पं० क्षितीशकुमार वेदालंकार	१-००
६. निजाम की जेल में—लेखक पं० क्षितीशकुमार ,,	२०-००
७. स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
८. आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह स्मारिका	२०-००
९. आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण-पं. ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
१०. बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय)	४-५०
११. ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
१२. हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१३. धर्म-प्रवेशिका —डा० रणजीतसिंह	३-००
१४. धर्म-भूषण ,,	५-००
१५. पंजाब का आर्यसमाज —प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१६. आदर्श धातु रूपावली —महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१७. वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१८. मूर्तिपूजा —सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१९. वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
२०. वेदाविर्भाव ,,	१-००
२१. वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
२२. ईसाई पादरियों की आर्यसमाज को चुनौती—स्वा० दर्शनानन्द	०-१०
२३. गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४. सत्यार्थप्रकाश ,,	१०-००
२५. महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२६. हमारा फाजिल्का —योगेन्द्रपाल	१-००
२७. बड़ —स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती।	१-५०
२८. वीर हेमू ,,	००-७५
२९. पीपल ,,	१-५०
३०. मिर्च ,,	१-५०
३१. श्लीपद या हाथीपांव की चिकित्सा ,,	०-२०
३२. बिच्छू विष चिकित्सा ,,	०-५०
३३. लवण ,,	१-२५
३४. विदेशों में मैंने क्या देखा ,,	२-५०
३५. नैरोबी यात्रा ,,	१-५०
३६. ब्रह्मचर्य साधन १-११ ,,	१०-००
३७. ,, १-२ ,,	१-००
३८. ,, ३ ,,	१-००
३९. ,, ४ ,,	२-५०
४०. ,, ५ ,,	२-००
४१. ,, ६ ,,	३-००
४२. ,, ७-८ ,,	२-००
४३. ,, ९ ,,	३-००
४४. ,, १० ,,	१-५०
४५. ,, ११ ,,	२-००
४६. हल्दी ,,	१-५०
४७. नीम ,,	१-२५
४८. कर्त्तव्य दर्पण—म० नारायण स्वामी	४-००
४९. विद्यार्थी जीवन रहस्य—म० नारायण स्वामी	२-५०
५०. योग रहस्य ,, ,, ,,	४-५०
५१. आर्यसमाज क्या है ? ,, ,, ,,	२-००
५२. कथा माला ,, ,, ,,	१-२५
५३. संस्कारविधि	६-००
५४. वैदिकधर्म परिचय—पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	३-२०
५५. वैदिक यज्ञ-पद्धति—सार्वदेशिक सभा प्रकाशन	००-६०
५६. मृत्यु के पश्चात जीव की गति—श्री जगदेवसिंह सिद्धांती	१-५०

प्राप्ति स्थान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दयानन्दमठ, सिद्धांती भवन, रोहतक।

प्रवेश सूचना

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून, अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलनेवाली अखिल भारतीय शिक्षण संस्था है। उच्च प्रशिक्षित शिक्षिका वर्ग, बृहत् पुस्तकालय, नैतिक शिक्षा, चित्रकला, साइंस, संगीत, गृह-विज्ञान, सांस्कृतिक, गतिविधि संस्था की आधारभूत विशेषतायें हैं। विस्तृत खेल के मैदान, आधुनिक सुविधाओं सहित बड़े छात्रावास तीसरी कक्षा से संस्कृत एवं अंग्रेजी प्रारम्भ। निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। संस्कृत एवं अंग्रेजी सहित मैट्रिक उत्तीर्ण छात्रायें ११वीं कक्षा में दाखिल हो सकती हैं। ट्यूशन फीस नहीं ली जाती।

१५ जुलाई से नवीन कन्याओं का दाखिला प्रारम्भ है। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव १०) भेजकर नियमावली मंगा सकते हैं।

—दमयन्ती कपूर प्रिंसिपल कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक
२. " फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार
३. " सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत
४. " हरीश एजेन्सीज ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत
५. " भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल
६. " घनश्यामदास सीताराम बिचला बाजार, भिवानी
७. " कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा
८. " कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद
९. " चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/५ जेकमपुरा, गुड़गांव

भजन गोमाता

लेखक—चौ० पृथ्वीसिंह बेधड़क

बिन गौ देश का ऊंट-मटीला होगा।

कोई भी गौ से अच्छा दुनियां का सामान नहीं।
गेहूं चावल मूंग मोठ बाजरा जो धान नहीं।
मखमल रतन जीत लंका शायरवाला थान नहीं।
टोकनी गिलास थाली बन्टे इमरतबान नहीं।
चीनी खांड बूरा गुड़ का कोई भी पकवान नहीं।
ब्राह्मणों की विद्या नहीं क्षत्री की कृपान नहीं।
वैश्य का व्यापार नहीं शूद्र का अज्ञान नहीं।
ऊंट गधा घोड़ा खच्चर बन्दर बिल्ली श्वान नहीं।
तोड़—सेवा करना भीख मांगना तेरा वसीला होगा ॥१

गौ के गोबर से भाई जहां पर लिपाई रहे।
देखने में बैठने में अति सुन्दरताई रहे।
ताये घी से हवन करो घर में खुशबू छाई रहे।
खाने और पीने में भाई मोटा और बलदाई रहे।
खुश्की को मिटावे दूध ऊपर जो मलाई रहे।
छाछ दही सेवन करो पेट की सफाई रहे।
बहुत से मरजों की गोमूत्र की दवाई रहे।
जिसके घर में गौ होगी कोई ना बुराई रहे।
आठ पहर चौसठ घड़ी सब आनन्दी भाई रहे।
बिना गौ के कायर तेरा कुटुम्ब कबीला होगा ॥२

कहते हैं सोराज देकर भारत से अंग्रेज गये।
कोठी बंगले रेलगाड़ी छोड़ कुर्सी मेज गये।
हावड़ा दिल्ली वगैरा बना करके बरेज गये।
करने को बर्बाद भारत बुलबुले भगत भेज गये।
बहुत अच्छा बना करके टाइटिल पेज गये।
कसाई की खंजर छूरी इतनी करके तेज गये।
जिसको देख भारतवासी हैरत अंगेज गये।
जिनके कारण भारत का गौरव बल ढीला होगा ॥३

आर्य जवानो उठो मारकर कड़कते चलो।
नरमी से ना चले काम होकर सब तेज चलो।
राष्ट्रपति की कोठी ऊपर हो करके खत्ते चलो।
जहां गौ मारी जावे तोड़ वे हत्थे चलो।
जितने हैं कसाई उनके काटकर के पत्ते चलो।
घसीटा खचेड़ू चलो घोटी मारो नत्थे चलो।
चन्द्र चलो मन्दर चलो झण्डू जैमल फत्ते चलो।
प्रसन्नी प्रकाशी सत्तो तुम भी लेकर जत्थे चलो।
पृथ्वीसिंह बेधड़क कहे कानपुर कलकत्ते चलो।
उसको करवा इकट्ठा जिनका बिखर कसीला होगा ॥४

प्रस्तुतकर्ता—जयपालसिंह आर्य सभा भजनोपदेशक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४)
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री ७ आषाढ़ २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्क ३० २८ जून, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क [illegible] विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

आत्मा को क्यों जानें ?

ले०—यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद-२४४०३२

वेदादि सत्य शास्त्र हमें इस बात के लिए प्रेरित करते हैं कि हम अपनी आत्मा को जानें। किन्तु आत्मा को जाना है बड़ा कठिन। क्योंकि—

दूसरों से मिलना बड़ा आसान है साकी।
अपनी हस्ती से मुलाकात बड़ी मुश्किल है ॥

ऐसी स्थिति को देखकर कार्यालय जैसा व्यक्ति कह उठता है कि—'सृष्टि से आज तक व्यर्थ ही 'मैं क्या हूं' की जटिल समस्या को सुलझाने में लगे हैं। इसमें समय बर्बाद करने की अपेक्षा यह जानना श्रेयस्कर है कि 'हमारा कर्त्तव्य क्या है ?' यहां यह बात विचारणीय है कि जब तक यह ज्ञात न हो कि मैं कौन हूं एवं मेरा स्वरूप और सामर्थ्य क्या है, मेरे कर्त्तव्यों का निर्धारण कैसे हो सकता है ? जब तक यह ज्ञात न हो कि मैं स्वामी हूं या सेवक, राजा हूं या प्रजा, रक्षक हूं या रक्षित, पोषक हूं या पोषित, तब तक मेरे कर्त्तव्यों का निर्णय कैसे हो सकता है ? क्योंकि राजा के रूप में मेरे कर्त्तव्य और हैं, प्रजा के रूप में और। स्वामी के रूप में मेरे कर्त्तव्य और हैं, सेवक के रूप में और। अतः यह कहना कि मैं क्या हूं, इस झमेले में न पड़कर अपने कर्त्तव्यों के बारे में सोचना चाहिए, यथार्थ एवं युक्तियुक्त नहीं। जिसने अपने स्वरूप को नहीं जाना, वह अपने हानि-लाभ को नहीं जान सकता और जिसने अपने हानि-लाभ को नहीं जाना, वह अपने कर्त्तव्य को क्या जानेगा ? और फिर जिसे अपने सामर्थ्य और लक्ष्य का ही पता नहीं, वह अपने कर्त्तव्यों निर्धारण और निर्वाह कैसे कर सकता है। इसलिए अपने कर्त्तव्यों को जानने से पहले अपने आपको जान लेना आवश्यक है।

हम अपने को क्यों जानें ? इसका यथार्थ उत्तर हमें छांदोग्य उपनिषद् में मिलता है। वहां इस बात का सुस्पष्ट उल्लेख है कि आत्मा को जाननेवाला शोक सागर से तर जाता है। एक बार नारद जी सनत्कुमार ऋषि के पास गये और कहा कि 'भगवन् ! मैंने दुनियां का सब कुछ पढ़ लिया है। चारों वेद, विज्ञान, नक्षत्र-विद्या, मन्त्र-विद्या कुछ नहीं छोड़ी। परन्तु फिर भी मेरी आत्मा को शांति नहीं मिली। मैं मंत्रवित् तो होगया हूं, किन्तु आत्मवित् नहीं हुआ। मैंने सुना है कि 'तरति शोकं आत्मवित्।' अर्थात् आत्मज्ञानी शोकसागर से तर जाता है। अतः मुझे आत्मा का उपदेश कीजिये। वस्तुतः संसार की समस्त विद्यायें जान लेने पर भी जब तक आत्मविद्या नहीं जानी जाती, व्यक्ति को शांति प्राप्त नहीं हो सकती और वह शोक सागर से नहीं तर सकता। अतः वह प्रभु के भी दर्शन नहीं कर सकता। कहा भी है कि—

जो खुद को न पहचान सके, नादान खुदा को क्या जाने ?

इसीलिए केनोपनिषद् में कहा गया है कि—इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः। अर्थात् इसी जन्म में आत्मा को नहीं जाना तो बहुत बड़े विनाश की सम्भावना है। आत्मबोध हुए बिना ही यदि व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त हो जाता है तो ऐसा हो सकता है कि फिर उसे मानव का चोला न मिले। फिर पशु-पक्षी आदि योनियों में तो आत्मा का ज्ञान सम्भव ही नहीं।

आत्मा को जानने से अविद्या आदि दोष छूट जाते हैं और इन दोषों तथा क्लेशों के छूट जाने से साधक बन्धनों से भी छूट जाता है। बन्धनों से छूट जाने से वह जीवनमुक्त हो जाता है। महर्षि का कथन है कि—'जैसे मनुष्य विद्या वा लक्ष्मी तथा मित्रों को प्राप्त होकर, सुखों को प्राप्त होते हैं, वैसे ही जीव के स्वरूप को जाननेवाले विद्वान् लोग अत्यन्त सुखों को प्राप्त होते हैं।' (ऋग्वेद भाष्य १।५८।६) उपनिषद् में आया है कि—'आत्मानं चेद्विजानीयादयमस्मीति पुरुषः। किमिच्छन् कस्य कामाय शरीरमनुसंज्वरेत् ॥ अर्थात् जो व्यक्ति 'मैं आत्मा हूं' ऐसा जान ले, फिर किस इच्छा से अपने शरीर को तपाये, किस फल की कामना से अपने आपको कष्ट दे।

संसार में तीन अनादि तत्त्व हैं—ईश्वर, जीव और प्रकृति। इसमें प्रकृति का ज्ञान प्राप्त करना अच्छी अर्थात् उत् बात है। जीव का ज्ञान प्राप्त करना उत्तर बात है और परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करना उत्तम बात है। मनुष्य आत्मा को जाने बिना, ईश्वर को कदापि नही जान सकता। इसलिए मोक्ष के अभिलाषी मुमुक्षुजन प्रथम आत्मा का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

मैं कौन हूं, इस विषय में बहुत भ्रांतियां फैली हुई हैं। कोई कहता है मैं ब्रह्म हूं, कोई कहता है कि ईश्वर का अंश हूं, कोई कहता है कि माटी का पुतला अथवा माया मात्र हूं, कोई कहता है कि—

मिट्टी का मन, मिट्टी का तन। पलभर जीवन मेरा परिचय ॥

फिर मैं क्या हूं, यह जानना आवश्यक क्यों नहीं ? वेद कहता है कि—'अहमिन्द्रो न पराजिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽवतस्थे कदाचन।' (ऋ० १०।४८।५) अर्थात् मैं इन्द्र हूं, मैं शक्तिशाली हूं, ऐश्वर्यशाली हूं, मैं अपनी धन्यता को कभी हार नहीं सकता। मेरे धन को, धन्यता को कोई मुझ से छीन नहीं सकता। मैं तो मृत्यु के पंजे के नीचे भी अपने को हारा हुआ नहीं समझता। अथर्ववेद के एक मन्त्र में आता है कि—इयं कल्याण्यजरा मर्त्यस्यामृता गृहे। यस्मै कृता शये स यश्चकार जजार सः। (अथर्व १०।८।२६) अर्थात् कल्याण करनेवाला यह आत्म देवता अमर है और मर्त्य प्राणी के घर अर्थात् शरीर में रहता है। जिसे आत्मबोध हो जाता है, वह सुख प्राप्त करता है और जो पुरुषार्थ करता है, वही स्तुति करने योग्य बनता है। कठोपनिषद् में यमाचार्य कहते हैं कि—'न जायते म्रियते वा विपश्चिन् नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्। अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ अर्थात् यह चेतन जीव न उत्पन्न होता है, न मरता है, न कभी पहले हुआ था और न होगा। यह अजन्मा, नित्य, निरन्तर और पुरातन है। शरीर के मरने पर भी यह नहीं मरता। यह आत्मा शरीर रूपी रथ का रथी है। इस आत्मा के लिए गीता में आया है कि—नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥ (२।२३) अर्थात् इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग जला नहीं सकती, जल इसको गला नहीं सकता और वायु इसे सुखा नही सकती। ऐसे आत्मा को यथार्थ रूप में जान लेने से व्यक्ति शोक सागर से तर जाता है और दुःखों से निवृत्ति पाता हुआ परमानन्द की प्राप्ति करता है। यही आत्मा को जानने के लाभ हैं।

दहेज एक अभिशाप

—कु० दर्शनाचार्या

दो हृदयों का मिलन तो है विवाह, फिर क्या जरूरत है आडम्बर की।
समझा जाता है अभिशाप कन्या को, क्योंकि वह डिग्री है कई हजार की॥

दहेज का अर्थ है विवाह के समय कन्या को माता-पिता, भाई, बहनों द्वारा दिया गया उपहार। यह उपहार माता-पिता के प्यार और शुभ आशीर्वाद का चिह्न होता है। माता-पिता का ये भरसक प्रयास होता है कि कन्या की विदाई के साथ अपना सर्वस्व अर्पित करदें, परन्तु अब दहेजप्रथा हिन्दू समाज पर एक अभिशाप बन गई है। आजकल ये बुराई इतनी बढ़कर आगे आरही है कि कन्या को जन्म देते ही माता-पिता की कमर टूट जाती है। अब इस दहेज को लोभ की इच्छा में बदल दिया गया है।

यह समाज की अस्वस्थ परम्परा है। इससे समाज के आपसी सम्बन्ध टूट जाते हैं। दहेजप्रथा वास्तव में समाज को खोखला करने वाली ऐसी बुराई है जो हमारी आर्थिक दशा को घुन की तरह खाये जारही है। प्रायः देखा जाता है कि लोग अपनी हस्ती से ज्यादा ऋण लेकर विवाह में खर्च कर देते हैं। इससे आनेवाली सन्तान का भविष्य मिट्टी में मिल जाता है। अनमेल विवाह इस प्रथा का ही दुष्परिणाम है।

दहेज के कलंक से लोग परेशान हैं। हर माता-पिता को अपनी लड़की की शादी में कपड़े, घड़ी, रेडियो, कार आदि न जाने कितनी मांगों का सामना करना पड़ता है। बेचारा गरीब आदमी इन सबको कैसे पूरी कर सकता है। प्रतिदिन पढ़ने में, सुनने में, देखने में आता है कि अमुक कन्या माता-पिता के दुःख को सहन न कर सकी और उसने आत्म-हत्या करली है। बहुत-सी लड़कियों को कम दहेज ले आने पर जलाकर मार दिया है। यह कितना बड़ा अभिशाप है भारतीय समाज पर।

सुनो-सुनो री माताओ तुम्हीं लगाती घर में आग।
कहती हो या तो धन ला नहीं तो घर से जा भाग॥

विकट परिस्थितियों में पनपी दहेजप्रथा अब भारतीय नारी के लिए एक अभिशाप बन गई है। इस कुप्रथा के कारण माता-पिता के लिए कन्या का विवाह एक जटिल समस्या बनकर रह गई है। बहुत से लोगों ने तो दहेज लेना एक धन्धा ही बना लिया है। समाज में कुछ लोभी प्रवृत्ति के लोग होते हैं जो अपने लड़कों को कुछ पैसों में बेच देते हैं।

दहेजप्रथा के विकास में स्वयं नारी का भी हाथ है। देखा जाता है कि यदि दहेज कम दिया जाता है तो परिवार का पुरुषवर्ग तो कोई ध्यान नहीं देता, किन्तु स्त्रियां जरा-जरा-सी बात पर वधू पर व्यंग कसती रहती हैं। तरह-तरह की बातें कह लड़की को तंग कर देती हैं। लड़की बेचारी को अपने मनमें ऊंच-नीच की बात सोचने को मजबूर होना पड़ता है। आजकल समाज में बाहरी दिखावा ज्यादा हो रहा है। अपने को लोग ऊंचा दिखाने के लिए ज्यादा धन देते हैं। फिर आपस की देखा-देखी में लोगों में होड़ लग जाती है। जिसके कारण दहेज की कीमत भी ज्यादा होगई है।

मेरी समझ में नहीं आता कि ये बहू ही ऐसे क्यों मरती हैं। ननद और सास क्यों नहीं जलकर, कटकर, फांसी लेकर, डूबकर मरती हैं। केवल इसके पीछे एक ही रोग होता है कि दहेज। दिन-रात इतनी हत्यायें हो रही हैं। जगह-जगह पर प्रचार किये जारहे हैं। लेकिन Wolves may lose their teath but not their nature, रस्सी जली पर बल न गया। सब कुछ भस्मसात् होनेवाला है, लेकिन यह दहेज फिर भी बन्द होता दिखाई नही देता है।

ज्यों-ज्यों दवा की त्यों-त्यों मर्ज बढ़ता ही गया।
इस देश को आग लगी इस देश के ही चिराग से।

इस दहेज का सबसे बड़ा कारण स्वयं स्त्री समाज है। यदि किसी लड़के का पिता एक रुपये का रिश्ता लेना चाहे तो लड़के की माता नहीं लेने देगी, गालियों से ही लड़के के पिता का पेट भर देगी। मेरी माताओ! याद रखो यदि आप ही अपने आपको कुचल डालेंगी तो आपको उभारनेवाला कोई ही गुदड़ी में छिपा मां का लाल होगा। ये दहेज की आग लगाई भी आपने है और मिटायेंगी भी आप ही—

जरा होश सम्भालो हे दहेज लेने-देने वालो।
हस्ती से ज्यादा देकर पीछे से पछताने वालो।
समय जारहा है अपनी आदत को सम्भालो।

बहनों अपने आपको पहचानों, अपनी कीमत को जानों, इस अबलापन को छोड़ो, सबला बनकर रहो। यदि आपके पिता की हस्ती नहीं है कि वो मुंह मांगा धन दे सके तो क्यों तेल छिड़क कर मरती हो, तुम उन्हीं को मारकर पानी पीनेवाली बनों तुम। आपने यदि अपने आपको सुखी बनाना है और इस कलंक को मिटाना है तो दहेज लेने-देनेवालों की गर्दन पर पैर रखना सीख जाओ, आखिर विजय आपकी ही होगी।

दहेज को एक प्रकार से अग्नि की चिंगारी समझो। जिस प्रकार आप आग की तेज लपटों से बचने के लिए दूर भागते हो, उसी प्रकार दहेज रूपी आग की चिंगारी से बचकर दूर भागो अन्यथा एक समय वो आयेगा कि आप इस चिंगारी के अन्दर ही झुलस कर रह जाओगे अर्थात् इस दहेज के लेने-देने में ही बर्बाद हो जाओगे।

इस दहेज के अन्दर ऐसा कौन-सा आनन्द छिपा हुआ है कि ये समाज के कोने-कोने में एक अमरबेल की तरह से बढ़ती जारही है। इसकी जड़ें इतनी गहरी चली गई हैं कि उखाड़ने पर भी नहीं उखड़ती। जिस तरह मेलों में बैलों का मोल-तोल होता है, एक खरीददार के बाद दूसरा आता है, जो उस पर अच्छे दाम लगा देता है, वह बैल उसी का हो जाता है। चाहे बैल चलने में सुस्त और मारने में चुस्त हो। उसी तरह से आज शादी के बाजारों में लड़के बिक रहे हैं। चाहे लड़कीवाला मकान बेचे या भूखा मरे। क्योंकि लड़केवालों ने कन्या के गुण, कर्म, स्वभाव आदि से कोई मतलब नहीं होता। उन्हें तो अपनी टूटी झोंपड़ियों को बनाने के लिए उस कन्या के साथ दूसरे की कमाई का धन जरूर चाहिए। इस प्रकार की बुराइयों ने स्त्रियों को कितना जर्जर कर दिया है। धिक्कार है, लानत है, उसकी जननी को कर्महीन है, वो जो आज समाज के अन्दर एक सुशील कन्या के साथ दहेज लेने के लिए मुंह खोले ही खड़ा रहता होगा।

स्त्री जाति के महत्त्व को समाज में कितना नीचे गिरा दिया है इस दहेजप्रथा ने। वास्तव में दहेजप्रथा सबसे ज्यादा भयंकर समस्या है।

इस प्रथा को रोकने के लिए कड़ा कानून सरकार के द्वारा किया जाना चाहिए। नहीं तो यह समाज इस बुराई से पतन की ओर चला जायेगा। ये दहेजप्रथा भारत भूमि से सदा के लिए मिट जानी चाहिए।

हे पढ़ने-लिखने वालों दहेज से करो आखिरी नमस्कार।
मैं कहती हूं सबको हो पूरी करो मेरी पुकार॥

राजनेता आत्मविश्लेषण करें ?

—प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

राष्ट्र का इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा कि जिन राजनेताओं ने देश के शासन को चलाना है, उसका सर्वतोमुखी विकास करना है और प्रत्येक नागरिक को जीवन की न्यूनतम सुविधायें ही नहीं देनी, बल्कि हर क्षेत्र में न्याय देना है, उनकी विश्वसनीयता जनता की नजरों में इतनी गिर जाये कि अपने निर्वाचन के लिए भी उन्हें नौटंकी का सहारा लेना पड़े। साधारण उम्मीदवार ही नहीं, बल्कि जिसके महान् पिता का सुयश सारे राष्ट्र में जन-जन की जुबान पर हो और जिस उम्मीदवार को अपनी जन-सभाओं में हजारों लाखों की उपस्थिति मिलती हो, वे भी अभिनेताओं की नौटंकी का सहारा लेने की होड़ लगा बैठें तो समझ लेना चाहिए कि भारत का राजनेता, फिर चाहे वह किसी भी दल का हो, आत्मविश्वास खो चुका है। समय आगया है जब दलों की राजनीति से ऊपर उठकर भारत के राजनेता आत्मविश्लेषण तो करें ही, सारी स्थिति का जायजा भी लें, अपने तथा राष्ट्र दोनों के भविष्य पर चिंतन करें, दोनों का भविष्य एक दूसरे से जुड़ा है।

जन निराशा

निःस्वार्थ सेवा, संयम, कर्त्तव्यों तथा मर्यादाओं का पालन, न्याय, गुणों के आधार पर चयन आदि दिन-प्रतिदिन दुर्लभ होते जारहे हैं। रोजमर्रा के जीवन में जब इन सद्गुणों के दर्शन दुर्लभ होने लगते हैं, तब जिनसे इन सद्गुणों के प्रसार और विकास की आशा की जाती है, उनके प्रति अविश्वास फैलता है और साधारण नागरिक निराशा का शिकार होता है। इस अविश्वास और निराशा के वातावरण में काफी लोग तो इसे जीवन का सत्य मानकर उसी तरंग में बहने लगते हैं और अवसर मिलने पर खूब हाथ रंगते हैं। जिनकी मायूसी बहुत बढ़ जाती है, वे आत्महत्या तक कर लेते हैं और जिनके मन में सच्चा और गहरा रोष पैदा होता है तथा जो भीरू, पलायनवादी या लहर में बहनेवाले नहीं होते, वे विद्रोह का मार्ग अपना लेते हैं। यही थोड़े से विद्रोही, जमाने और व्यवस्था को बदल देते हैं, परन्तु वे बदल तभी सकते हैं जब उनके अन्दर पारदर्शी सच्चाई, ईमानदारी, स्वार्थहीनता और संयम हो।

इस प्रदूषित वातावरण का प्रभाव जनमानस की मानसिकता पर भी जरूर पड़ता है। जो इच्छायें मनुष्य जीवन में पूरी नहीं कर पाता, उन्हें वह स्वप्न में पूरी करता है। वास्तविक जीवन में जिन सद्गुणों के दर्शन जब दुर्लभ होने लगते हैं, तब चित्रपट या दूरदर्शन पर अभिनय में ही सही। उनके दर्शन मात्र से साधारण नागरिक भावविभोर होने लगता है। अभिनेता स्वयं क्या है ? इसको वह गौण समझकर अभिनेता में ही सद्गुणी महापुरुष के दर्शन करके प्रफुल्लित हो जाता है। निराशा से ग्रस्त व्यक्ति या तो कामुक दृश्यों को देखकर क्षणिक राहत पा लेना चाहते हैं या किसी न्याय, मर्यादा, संयम, धर्म-सेवा आदि भावनाओं से परिपूर्ण महापुरुष के ऊंचे आचरण को देखकर कुछ सकून महसूस करता है। जो अभिनेता उसको इस प्रकार की राहत या सकून देता है, वह लोकप्रिय हो जाता है। कुछ लोग उनके शैदाई भी हो जाते हैं। यह एक मनोवैज्ञानिक सूत्र है कि नेता जैसे-जैसे पथभ्रष्ट होकर लोगों की नजरों से गिरने लगेगा, वैसे-वैसे अभिनेता उनकी नजरों में चढ़ने लगेगा, परंतु इसका विपरीत सत्य नहीं है, अभिनेताओं के लोगों की नजरों में गिरने से, नेता उनकी नजरों में चढ़ जायें, यह जरूरी नहीं है। वे तो अपने आचरण से ही जनता का विश्वास पुनः प्राप्त कर पायेंगे। दक्षिण के लोग ज्यादा भावुक हैं, इसलिए अभिनेता उनकी नजरों में जरूरत से ज्यादा जल्दी चढ़ गये। अब उनका उतराव शुरु होने लगा है, परन्तु राजनेताओं का चढ़ना तो तभी शुरु होगा, जब उनका आचरण सुधरेगा। उत्तर में अभिनेताओं के चढ़ने की प्रक्रिया शुरु होने लगी है। दुःख की बात है कि जनता उतनी नहीं, राजनेता स्वयं ही उनकी चढ़त में बिना सोचे-समझे लग गये हैं। कहीं 'राम' का, कहीं 'अर्जुन' का तो कहीं 'हनुमान' का अभिनय करनेवाला वोट मांग रहा है। उनके नाम पर भीड़ जुटाई जाती है और उम्मीदवार इस भ्रम में है कि जुटाई गई भीड़ अभिनेताओं की याचना पर वोट दे जायेगी। शायद इन उपचुनावों के नतीजे इस भ्रम को तोड़ने में सहायक हों।

राजनेताओं में विश्वसनीयता और आत्मविश्वास की कमी

यह स्पष्ट है कि राजनेताओं पर लोगों का विश्वास घटता जारहा है और विश्वसनीयता कम होने के कारण राजनेताओं का आत्मविश्वास डगमगा रहा है। इस वातावरण में जनता का विचार और मत भी झूलने लगता है। जिसको आजमाया नहीं और जो अधिक से अधिक बढ़ चढ़कर न पूरे हो सकनेवाले वायदे कर देता है, मत उधर झुक जाता है। कुछ समय के पश्चात् नये लोगों के पुराने लोगों जैसे ही या कहीं उससे थोड़ा अच्छा, कहीं उससे खराब काम देखकर फिर निराशा में डूबने लगते हैं और पहिलेवाले को भी काफी लोग अच्छा बताने लगते हैं। वास्तविकता यह है कि वही गुण दोष दोनों में है। बेहतर, बदतर का फैसला करना कठिन है। कुनबापरस्ती, भाई-भतीजावाद, भ्रष्टाचार, अन्याय, मर्यादाहीनता, कर्त्तव्यविमुखता में कोई किसी से कम नहीं। इन आरोपों से बचा हुआ न कोई दल रहा और न ही उनके अधिकतर नेता। सभी दलों में कुछ लोग अपेक्षाकृत पवित्र, मर्यादापालक तथा कर्त्तव्यपरायण हैं, परन्तु उनका अपने दलों में प्रभाव समाप्त होता जारहा है। उनको तथाकथित अति आधुनिक, चतुर तथा 'व्यवहार कुशल' जमाने की रविश पहिचाननेवाले लोग, दकियानूस प्रतिगामी, रूढ़ीवादी और व्यवहारशून्य कहकर पुकारते हैं, परन्तु इन चतुर लोगों को ही अपनी विश्वसनीयता और आत्मविश्वास को खोकर नौटंकी पूंजी तथा शराब, मतदान केन्द्रों पर कब्जा, झूठे सच्चे लालच और झूठे सच्चे वायदों का सहारा लेना पड़ता है। इन सब का प्रभाव होता है, क्योंकि जनता को भी इन लोगों ने पथभ्रष्ट कर लिया है, परंतु वह प्रभाव सीमित ही रहता है। ये सब जतन जनता की लहर के सामने नहीं टिक पाते।

वस्तु स्थिति

संविधान निर्माताओं ने भारत को लोकतन्त्र की संसदीय प्रणाली पर आधारित संविधान दिया। संविधान लागू होने के पश्चात् देश में आठ साधारण निर्वाचन हो चुके हैं। दो बार लोकसभा भंग करके मध्यावधि चुनाव कराये गये और एक बार लोकसभा की एक वर्ष की अवधि बढ़ाकर चुनाव करवाया गया। संविधान के सफल कार्यान्वियन की स्पष्ट अभिव्यक्ति इन आठ चुनावों में हुई। सत्ता का हस्तांतरण भी बड़ी सहजता से होता रहा। इन बातों से भारतीयों की लोकतन्त्र में निष्ठा प्रमाणित होती है, परन्तु संसदीय प्रणाली के अमल में आने के बाद के लगभग ४० वर्षों के कार्यकलापों का मूल्यांकन करना बहुत आवश्यक है। यदि हम थोड़ा गहराई से नजर डालें तो पता लगेगा कि इन चालीस वर्षों में बहुत-सी विकृतियां आगई हैं, जिससे संसदीय प्रणाली का चेहरा इतना विकृत होगया है कि इसे लोकतन्त्र कहना भी सम्भव नहीं हो पारहा है। विश्लेषण करने पर पता लगेगा कि मुख्य रूप से पांच बड़ी विकृतियां उत्पन्न हो गई हैं—

१. मन्त्रिमण्डलों का मनमाना विस्तार तथा लाभ के पदों में छूट।

जब देश स्वतन्त्र हुआ और लोकतन्त्र लागू हुआ, तब मन्त्रिमण्डल छोटे होते थे। योग्य, अनुभवी तथा परखे हुए लोगों को ही मन्त्रिमण्डल में सम्मिलित किया जाता था। जैसे-जैसे शासक दल और विरोधी दलों के सदस्यों की संख्या का अन्तर कम होता गया। विधायकों को दल में बनाये रखने के लिए उनकी महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए मन्त्रिमण्डलों के सदस्यों की संख्या बढ़ने लगी। दल-बदल की बीमारी भी बढ़ने लगी। इसलिए विधायकों को सन्तुष्ट रखने के लिए दूसरे लाभ के पद जो विधायकों के लिए वर्जित थे, कानून बनाकर उन सब पदों को विधायकों द्वारा सम्भालने की छूट दी जाने लगी। आज यह अवस्था है कि नागालैंड और मेघालय जैसे छोटे-छोटे प्रदेशों में भी मन्त्रियों की

संख्या २० तक चली गई। बड़े प्रदेशों में यह संख्या ६० से भी ऊपर चली गई। सरकार किसी दल की हो, सबको अपने विधायकों को खुश करने के लिए मन्त्री बनाना पड़ता है या निगमों आदि का चेयरमेन बनाना पड़ता है। मन्त्रियों में अच्छे कमाऊ विभागों के लिए होड़ और चेयरमेनों में बड़े और कमाईवाले निगमों की होड़। दलबदल की यह हालत होगई थी कि जिस व्यक्ति को एक सप्ताह पूर्व ६ वर्ष के लिए पार्टी से निकाला, उसी को एक सप्ताह के बाद मन्त्रिमण्डल में शामिल कर लिया, ताकि पार्टी की सरकार बन सके और चल सके। दलबदल का तो अब कानून बना दिया, परन्तु उसमें भी एक तिहाई सदस्य पार्टी तोड़ सकते हैं और छोड़ सकते हैं, उन पर दलबदल का कानून नहीं लगता। जिन दलों के दो-चार ही सदस्य हैं, वहां तो एक सदस्य ही जो चाहे करले। लोकतन्त्र की मर्यादा तो रही ही नही।

२. क्षेत्रीय असन्तुलन

राजनेताओं का आत्मविश्वास कम होते-होते नौबत यहां तक पहुंच गई कि चुनाव जीतने के लिए अपने निर्वाचन क्षेत्र में दूसरे क्षेत्रों की अवहेलना करके भी विकास कार्य और शिक्षितों को रोजगार देने में सारी शक्ति लगानी पड़ रही है। मान्यता यह है कि स्वयं चुनकर आगये तो लोगों को पैसे से पद के लालच से साथ लगाया जा सकता है। यदि स्वयं ही नहीं चुने गये तो पता नहीं क्या क्या उघाड़ उघड़ेंगे। इस कारण विकास में असन्तुलन अब प्रदेश या पिछड़े क्षेत्रों से मुखिया के क्षेत्र से लगती हुई अपनी तहसील और अपने जिले तक आगया।

३. सरकारी कर्मचारी

सरकारी कर्मचारी जो ईमानदार हो और कर्त्तव्यपरायण हो, वह किसी काम का नहीं रह गया है। शासक की आंखों में अच्छा सरकारी अधिकारी वह है जो उनके लिए भीड़ जुटाये, पैसा जुटाये और विरोधी चाहे वह अपने ही दल का हो, उसे उभरने न दे, तंग रखे। ऐसे कर्मचारियों की पुरानी रिपोर्टों में से प्रतिकूल टिप्पणी निकाल दी जाती है और नई रिपोर्ट उत्कृष्ट होती है।

४. विधायकों का कर्त्तव्य

विधायकों का वार्षिक बजट पास करने के अलावा मुख्य कर्त्तव्य है कानून बनाना। आजादी के बाद पहिले दशकों में विधानसभाओं के लोकसभा की तरह ही तीन या चार अधिवेशन होते थे। बिलों पर लम्बी बहस चलती थी। अब स्थिति यह आगई है कि बजट अधिवेशन तो दो सप्ताह के आस-पास चल जाता है, बीच में एक अधिवेशन और होता है। वह भी इसलिए कि ६ महीने के भीतर विधानसभा की बैठक अनिवार्य है, परन्तु यह अधिवेशन तो दो दिन से पांच-सात दिन ही चलता है। सदस्यों की बिलों में कोई रुचि नहीं। यही हाल बहुत से मन्त्रियों का है। आजकल तो मन्त्री की कोई योग्यता आवश्यक नही रह गई। इसलिए सरकारी अधिकारी न्यायालयों के निर्णयों के कारण या कोई और समस्या आजाये, उनके कारण बिल बनवा लेते हैं और वे बहुत सारी विधानसभाओं में एक दिन में ५ से १० तक पास हो जाते हैं। जब सदन में बिल पेश होते हैं तो आमतौर पर कोरम ही नही रहता है।

५. खर्चीले चुनाव

१९६७ के पश्चात् धीरे-धीरे यह अवस्था होगई है कि विधायक चुने जाने के बाद और शासक दल में हो तो कहना ही क्या। कमाने के बहुत खुले अवसर मिलने लगे हैं, इसलिए विधायक चुने जाने के लिए लोग अधिक से अधिक खर्च करने से नहीं हिचकते। विधानसभाओं के चुनावों का खर्च अब लाखों में होने लगा है और लोकसभा का उससे ५ गुणा से लेकर १० गुणा तक। धनी लोग तो करोड़ तक पहुंच जाते हैं। जाहिर है कि यह धन 'रंगीन' है। जहां यह रंगीन धन आयेगा, शासन के वास्तविक मालिक तो वही रहेंगे। यदि यही नमूना प्रजातन्त्र का जनता के सामने हो तो प्रजातन्त्र को पूंजीवाद का ही पर्याय कहा जायेगा। समाजवाद का नारा तो भुलावा मात्र ही होगा। साधारण नागरिक की ऐसे राज में हिस्सेदारी पांच वर्ष में एक बार वोट देने से बढ़कर नहीं हो सकती।

राष्ट्रहित

इन विकृतियों के रहते राजनेताओं की विश्वसनीयता कैसे बनी रह सकती है और उनमें आत्मविश्वास कहां से आयेगा। वे या तो ज्योतिषियों का सहारा लेंगे या फिर पैसा, शराब आदि का और या अभिनेताओं की नौटंकियों का। आत्मविश्वास न होने के कारण राजनेता राष्ट्र के हित में सही और कठोर कदम कभी नहीं उठा सकेंगे। हर किसी की जुबान बन्द करने के लिए गलत समझौते होंगे। साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, हरामखोरी, बेईमानी पनपेगी और राष्ट्र उस बुलन्दी पर नहीं पहुंच सकेगा, जहां उसे पहुंचना चाहिए और जहां आसानी से वह पहुंच सकता है।

मैंने संक्षेप में तथ्यों और स्थिति का विश्लेषण किया है। इस विषय पर और अधिक गहराई से सोचना पड़ेगा और अपने अन्दर भी कमजोरियों को पहचानना होगा। जो विकृतियां हमारे अपने व्यक्तित्वों में आगई हैं और जो व्यवस्था और तन्त्र में आगई हैं, उनको ढूंढ-ढूंढकर निकालना होगा। जिनको देश चलाने की जिम्मेदारी निभानी है, उनको अपनी विश्वसनीयता को पुनः लोगों की नजरों में स्थापित करना होगा, उसी में से आत्मविश्वास जागेगा। उसी आत्मविश्वास के सहारे जो कदम उठेंगे, वे राष्ट्र को शक्तिशाली, समृद्ध और महान् बनायेंगे। क्या जनता का विश्वास प्राप्त किये बिना और आत्मविश्वास अर्जित किये बिना देश की अन्धाधुन्ध बढ़ती हुई जनसंख्या पर रोक लगाने के लिए ठोस और कड़े कदम उठाने सम्भव हैं? क्या आत्मविश्वास के बिना विधायकों की मनमानी तथा प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार समाप्त किया जा सकेगा? क्या साम्प्रदायिक शक्तियों से गलत समझौते न करके उनको दबाया जा सकेगा? क्या आत्मविश्वास के बिना काले धन की समानांतर व्यवस्था को देश निकाला दिया जा सकेगा? क्या आत्मविश्वास के बिना विघटनकारी शक्तियों को कुचला जा सकेगा या तस्करों की कमर तोड़ी जा सकेगी। क्या आत्मविश्वास के बिना स्वदेशी की भावना फिर पुनर्जीवित की जा सकेगी और क्या देश के नागरिकों और विशेष रूप से नवयुवकों को शराब, स्मैक, हीरोइन आदि नशों, अश्लील साहित्य, एड्ज की बीमारी आदि से बचाया जा सकेगा। जो इस देश के लोग विदेशियों से ही ग्रहण कर रहे हैं? क्या आत्मविश्वास के बिना देश को उस रास्ते पर ले जाया जा सकेगा, जिस रास्ते पर देश के अनेक चिन्तक मनीषी और सन्त तथा महात्मा गांधी ले जाना चाहते थे?

ये सब काम उनको करने पड़ेंगे जो देश को चलाने की जिम्मेदारी सम्भालने का दावा करते हैं। इस बात के कहने से काम नहीं चलेगा कि ये विकृतियां तो सार्वभौम हैं, केवल भारत की ही नहीं हैं। भारत की एक निराली संस्कृति और जीवनशैली रही है, उसकी मशाल लेकर भारत को ही आगे बढ़ना है। मानवीय विकृतियां सार्वभौम होती हैं यह ठीक है, परन्तु यह कहकर क्या हम उन विकृतियों से मुक्ति पाने का प्रयास छोड़ दें और उनके दास बन जायें? यह कहने से भी काम नहीं चलनेवाला है कि 'इस हमाम में सब नंगे हैं'। इस नंगे तन को ढकने के लिए मर्यादाओं और सदाचार का वस्त्र पहिनना होगा। यह काम एक दल का नहीं, एक राजनेता का नहीं, सबका है और यदि उनमें राष्ट्र का प्रेम है तो यह काम सबको मिलकर करना होगा। व्यक्ति से और दल से राष्ट्र बड़ा है, यही मानकर सबको चलना पड़ेगा। ऐसा नहीं किया तो राजनेता न अपना खोया हुआ स्थान पा सकेगा और न राष्ट्र का ही कुछ बना सकेगा।

शराब मानवसमाज का

एक शत्रु है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक चुनाव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का १८-१९ जून, ८८ को आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली में त्रैवार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से निम्न-लिखित प्रतिनिधियों ने भाग लिया—

सर्वश्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, प्रो० शेरसिंह, म० भरत-सिंह, डा० रणजीतसिंह, प्रि० लाभसिंह, प्रो० योगानन्द शास्त्री, चन्द्र-पालसिंह राणा, डा० सोमवीरसिंह, बलदेवकृष्ण आर्य, प्रो० सत्यवीर शास्त्री, भरतसिंह शास्त्री, डा० उदमीराम एडवोकेट।

गतवर्ष की कार्यवाही तथा आय-व्यय का विवरण सम्पुष्ट होने के पश्चात् प्रतिष्ठित सदस्यों के चुनाव में सर्वश्री स्वामी सर्वानन्द, स्वामी रामेश्वरानन्द, महात्मा आर्य भिक्षु तथा ऋषिपालसिंह एडवोकेट को सर्वसम्मति से चुना गया।

१९ जून के साधारण अधिवेशन में आगामी तीन वर्ष के लिए सभा के अधिकारियों का चुनाव निम्न प्रकार सर्वसम्मति से किया गया—

प्रधान—सर्वश्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, उपप्रधान—वन्देमातरम रामचन्द्रराव, प्रो० शेरसिंह, सत्यानन्द मुंजाल, वासुदेव शर्मा, पं० राजगुरु शर्मा, छोटूसिंह एडवोकेट, म० धर्मपाल, महात्मा आर्यभिक्षु, मन्त्री—सच्चिदानन्द शास्त्री, उपमन्त्री—पृथ्वीराज शास्त्री, डा० धर्मपाल आर्य, मनमोहन तिवारी, कैप्टन देवरत्न आर्य, ऋषिपाल-सिंह एडवोकेट, कोषाध्यक्ष—ओम्प्रकाश गोयल, पुस्तकाध्यक्ष—जय-नारायण अरुण, अन्तरंग सदस्य—स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, कृष्ण-लाल, भूपनारायण शास्त्री, दौलतराम, रमेशचन्द्र, श्रीवास्तव, इन्द्र-प्रकाश, मंगलसेन, पं० इन्द्राज, डा० महेश विद्यालंकार, अश्विनीकुमार, रामचन्द्रराव कल्याणी, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, बटुकृष्ण वर्मन, डा० योगेन्द्रकुमार शास्त्री, जगदीशप्रसाद वैदिक, राजा मधुसूदनलाल पत्ती, सूर्यदेव, योगेन्द्रनारायण, धर्मार्थ सभा में डा० रणजीतसिंह को सदस्य तथा विद्यार्य सभा संयोजक पद पर हरयाणा सभा के प्रति-निधि डा० रणजीतसिंह को भी चुना गया।

इस अधिवेशन में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रतिनिधियों ने पंजाब सभा के त्रिशासन तथा सम्बन्धी श्री वन्देमातरम् के एवार्ड को अभी तक लागू न करने पर रोष प्रकट किया। श्री स्वामी आनन्दबोध जी के आदेश पर पंजाब सभा की ओर से श्री अश्विनीकुमार एडवोकेट ने साधारण सभा को विश्वास दिलाया कि जुलाई के प्रथम सप्ताह तक त्रिशासन के फलस्वरूप तीनों सभाओं के लेन-देन का ब्योरा तैयार करके सार्वदेशिक सभा को भेज दिया जावेगा।

एक प्रस्ताव द्वारा अंग्रेजी हटाओ, संस्कृत बचाओ, गोवंश की रक्षा तथा दहेज विरोधी अभियान चालू करने का निर्णय किया गया।

—केदारसिंह आर्य

अन्तरंग सभा की बैठक की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक १० जुलाई रविवार को प्रातः १० बजे सभा कार्यालय सिद्धांती भवन दयानंद मठ, रोहतक में होनी निश्चित हुई है। इससे पूर्व आर्य विद्या परिषद् की कार्य समिति की बैठक प्रातः ९ बजे होगी।

—सभामन्त्री

शराब पीना सामाजिक अभिशाप है।

आर्यसमाज रोहणा जि. सोनीपत का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज रोहणा में २३ मई से २९ मई तक वैदिक प्रवक्ता आदरणीय ब्र० अखिलेश्वर जी गुरुकुल कालवा का वेदोपदेश हुआ। प्रधान, उपप्रधान, मन्त्री आदि सज्जनों ने यज्ञ करवाया। यज्ञोपरांत आदरणीय ब्रह्मचारी जी के वेदोपदेश तथा सायंकाल भाषण होते रहे। यज्ञ में श्रोताओं की उपस्थिति ५० से ६० तथा भाषण में १०० से १२५ तक थी।

२८ मई को प्रातःकाल शोभायात्रा निकाली गई। जिसमें पं० चिरंजीलाल, ब्रह्मचारिणी सुमेधा, सुकामा तथा किरणमई विद्यावारिधि (पी-एच० डी०) के भजन तथा आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द के जयघोष आकर्षण का मुख्य केन्द्र बन गये तथा गांव में एक लहर-सी दौड़ गई। हजारों की संख्या में भाई-बहिनों ने मन्दिर में पधारकर वेदोपदेश सुना तथा धर्म लाभ उठाया।

२९ मई को प्रातःकाल नवनिर्मित आर्यसमाज मन्दिर में ब्र० अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ। जिसमें मन्दिर निर्माणार्थ भूमि दाता अध्यापक ओम्प्रकाश एम. ए. तथा उसके माता-पिता यजमान बनाये गये तथा उन्होंने ५००) दक्षिणा प्रदान की। मध्याह्नोत्तर पं० चिरंजीलाल जी के भजन, स्वामी ओमानन्द जी का 'आर्यसमाज का महत्त्व' तथा प्रो० शेरसिंह जी का 'मद्यनिषेध तथा सदाचार' पर सप्रमाण विस्तृत भाषण हुआ तथा प्रधान, उपप्रधान, मन्त्री, प्रतिनि-धियों तथा सभी अन्तरंग सदस्यों ने पूर्ण श्रद्धा, उत्साह और उल्लास से इस कार्य को सम्पन्न किया। इस शुभ अवसर पर चौ० ओम्प्रकाश जी तल्याण जसौर खेड़ी ने २१०००) मन्दिर निर्माणार्थ दान दिये।

समाज की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को ५५५) तथा पं. चिरंजीलाल जी की प्रार्थना पर ३ क्विटल अन्न भोजनालय के लिए दिया।

—दरयावसिंह आर्य

आज मिलके गायें सब

—प्रो० धर्मचन्द्र विद्यालंकार, सनातन धर्म कालिज, पलवल

आज मिलके गायें सब प्यारे ऋषि का गान।
जिसने दिया आर्यजाति को अपना जीवन दान॥

हर सुख की इच्छा भी त्यागी, वासना की प्यास भागी।
देश धर्म के काम में जो बन गया देखो विरागी।
कामना से रहित भी जो होगया सकाम॥

सत्य की ज्योति जगी थी मनमें, सुलगाया जिसको जन-जन में।
सच्चे शिव की हां तलाश में, रहा भटकता जो वन-वन में।
बज रही थी स्व-हृदय में ही है जिसकी तान॥

गत गौरव था याद दिलाया, सोता भारत देश जगाया।
मानवता से कटे-छुटे जो, दीन-दुःखियों को अपनाया।
किया जिसने मनुज को देखो एक समान॥

ईंट और पत्थर भी खाये, विष के प्याले खूब पचाये।
पर बोलो क्या अरे ऋषिवर, कहीं सत्य से डिगने पाये।
सदा सत्य की ही जय बोली देकर भी निज प्राण॥

अबलाओं के परम सहारे, खोल दिये मुक्ति के द्वारे।
पड़ी-पड़ी यहां पर रोती थी, देखो भारत की ललना रे।
स्वतन्त्रता का सूरज निकला हुआ नवल विहान॥

थानेसर में निर्धन लड़कियों के विवाह में सहायता

आर्यसमाज थानेसर के तत्वावधान में खेड़ी रामनगर गांव में विवाह सम्पन्न हुआ। इसमें श्री कमतूल वाल्मीकि की दो पुत्रियों बाला देवी तथा महिन्द्रो देवी का विवाह वैदिक रीति से करवाया गया। पं० मोतीराम व देवदत्त शास्त्री ने विवाह संस्कार दक्षिणा रहित करवाया।

इस शुभ अवसर पर आर्यसमाज थानेसर की ओर से म० सत्यदेव श्री शेरसिंह एडवोकेट तथा श्री रामकृष्ण सेठी भी उपस्थित थे। इस विवाह का स्थानीय लोगों पर विशेष प्रभाव देखा गया। नवदम्पतियों को निम्न उपहार दिये गये—

१—लायन्स क्लब कुरुक्षेत्र की ओर से ११००) के ८ सूट।
२—श्री नौराताराम की ओर से दो सिलाई मशीन।
३—श्री शेरसिंह एडवोकेट की ओर से एकत्रित धन से ८० बर्तन।

आर्यसमाज थानेसर इन दानी महानुभावों का धन्यवाद करती है और आशा करती है कि इस प्रकार के पवित्र कार्यों में जन सहयोग सदा मिलता रहेगा।

—देवदत्त भारती, मन्त्री आर्यसमाज थानेसर, कुरुक्षेत्र

झज्जर में आदर्श विवाह संस्कार

श्री ओमप्रकाश जी बेरी पूर्व विधायक आर्यनगर झज्जर निवासी की सुपुत्री पूनम का विवाह संस्कार चिरंजीव हर्ष सुपुत्र श्री भद्रसेन जी शास्त्री रामनगर सोनीपत निवासी के साथ १९ जून को आचार्य सुदर्शनदेव, स्वामी योगानन्द तथा पं० सुखदेव शास्त्री द्वारा वैदिक रीति के अनुसार सम्पन्न हुआ। बारात में २५ से अधिक बाराती नहीं थे। लेन देन की सारी रस्में केवल १) की हुई। नवदम्पति को श्री अजीतसिंह प्रधान जनता पार्टी तथा प्रो० शेरसिंह ने आशीर्वाद दिया। दोनों ओर से गुरुकुल झज्जर तथा कन्या गुरुकुल खानपुर को १०१, १०१) दान दिया गया।

—केदारसिंह आर्य

श्रीमद्दयानन्दोपदेशक महाविद्यालय में प्रवेश

सभी सज्जनों को यह जानकर अति हर्ष होगा कि स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती की पुण्य भूमि 'वैदिक साधन आश्रम' यमुनानगर में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रयत्नों से पुन. त्यागी, तपस्वी, सदाचारी, कर्मनिष्ठ प्रचारक, प्रबुद्ध शिक्षा शास्त्री तैयार करने के लिए सिद्धांत शिरोमणि तथा शास्त्री की मान्यता प्राप्त उपाधि का प्रवेश १५ जुलाई तक किया जारहा है। प्रवेशार्थी निकट भविष्य में शीघ्र प्रचार एवं साक्षात्कार से प्रवेश प्राप्त करें। यहां पठन-पाठन के साथ भोजन व आवास व्यवस्था सर्वथा निःशुल्क रहेगी। प्रारम्भ में केवल मात्र २००) प्रवेश शुल्क होगा। १६ वर्ष से अधिक, अविवाहित और दसवीं पास छात्रों को ही प्रवेश दिया जायेगा। ऋतु अनुकूल वस्त्र एवं बर्तन भी साथ लायें।

प्रबन्धक—श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री
श्रीमद्दयानन्दोपदेशक महाविद्यालय शादीपुर, यमुनानगर, हर०

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज पानीपत की साधारण सभा यमुनानगर के प्रसिद्ध आर्यसमाजी श्री कृष्णचन्द्र आर्य पूर्व प्रध्यक्ष आर्यसमाज यमुनानगर के सुयोग्य पुत्र श्री अनुप xen का दिनांक ११-६-८८ को दुर्घटनाग्रस्त होकर निधन पर गहरा शोक प्रकट करती है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान तथा परिवारजनों को ये महादुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—रामानन्द सिंगला

आर्यसमाज खाखण ज़ि० अम्बाला का ४०वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज खाखण जि० अम्बाला का ४०वां वार्षिकोत्सव दिनांक १० से १२ जून, ८८ को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इसमें जिला अम्बाला के जनप्रिय आर्य भजनोपदेशक म० हरलाल जी वानप्रस्थी की हृदय को स्पर्श करनेवाली शराबबन्दी पर कथा हुई। इसमें म० ज्योतिस्वरूप के मनोहारी भजन हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की श्री ईश्वरसिंह तूफान की भजनमण्डली ने मार्मिक वेदप्रचार के माध्यम से जनता को जागृत किया। श्री अर्जुनदेव आर्य ने जोशीले भजनों के द्वारा लोगों पर बड़ा प्रभाव डाला। सर्वश्री वचनपाल शास्त्री, सत्य सनातन आर्य पुरोहित दामला तथा अजीतसिंह आर्य शास्त्री जिला भिवानी का इसमें योगदान रहा।

—राजेश्वरराव मन्त्री

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जि० जालन्धर (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थाई मान्यता प्राप्त) में नये छात्रों का प्रवेश एक जुलाई, ८८ से आरम्भ हो रहा है। सरकारी स्कूलों में पढ़ाये जानेवाले हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, समाज, शास्त्र आदि सभी विषयों के साथ संस्कृत तथा धर्म-शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है।

निःशुल्क शिक्षा, हिन्दी माध्यम, योग्य परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण, सात्विक भोजन, दूध व आवास की बिना किसी मासिक शुल्क के समुचित व्यवस्था। शुद्ध दूध की उपलब्धि के लिए गुरुकुल की अपनी गोशाला, इस गुरुकुल की अपनी विशेषतायें हैं।

प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कक्षा पांच पास होना जरूरी है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखनेवाले सज्जन मिलें अथवा पत्राचार करें।

—आचार्य श्री गुरु विरजानन्द
वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर, जि० जालन्धर, पंजाब

ग्राम लेघां हेतवान (भिवानी) में पनघट पर शराब का ठेका हटाने के लिए संघर्ष

ग्राम लेघा में इस वर्ष शराब का ठेका नया खुला है। यह ठेका बस अड्डे पर पनघट के रास्ते एवं पानी की टुटियों के निकट है। जहां से लगभग सारे गांव की महिलायें पानी भरती हैं। वहां शराबियों का जमघट रहता है। वैसे ग्राम रास्ते में पनघट के पास गैर कानूनी है। इसका बहुत बुरा असर पड़ता है। श्री कृष्णकुमार आर्य मन्त्री आर्यसमाज लेघा इसको यहां से आगे पीछे हटाने के लिए संघर्षरत है। गांव में पंचायत आदि से मिलकर जनमत तैयार कर रहे हैं।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

आर्यसमाज सांताक्रुज (पश्चिम) बम्बई का वार्षिक निर्वाचन

प्रधान—सर्वश्री ओंकारनाथ आर्य, उपप्रधान—कैप्टिन देवरत्न आर्य, चन्द्रभान मल्होत्रा, महामन्त्री—विमलस्वरूप सूद, मन्त्री—विश्वभूषण आर्य, लालचन्द आर्य, कोषाध्यक्ष—कस्तूरीलाल मवान।

शोक समाचार

श्री सूरतसिंह आर्य भजनोपदेशक जूआं जि० सोनीपत निवासी की धर्मपत्नी का ५८ वर्ष की आयु में १ जून, ८८ को निधन होगया। वे कुछ समय से कैंसर रोग से पीड़ित थीं। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—केदारसिंह आर्य

ईसाई मत की समीक्षा

—सोहनलाल अग्रवाल, अधिवक्ता, जबलपुर

ईसाई मत की प्रसिद्ध पुस्तक बाईबिल है। उसका हिन्दी का संस्करण 'धर्मशास्त्र' के नाम से प्रकाशित है। हिन्दी संस्करण का नाम 'धर्मशास्त्र' अबोधजनों को भ्रमित करने की कूट चाल है। इस शास्त्र में धर्म-कर्म की कोई व्याख्या नहीं है।

बाईबिल को महर्षि दयानन्द ने पढ़ा और इसको आपत्तिजनक जानकर अपने विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश के तेहरवें समुल्लास में सत्यासत्य निर्णय के लिए, न कि किसी को दुःख देने व हानि करने अथवा मिथ्या दोष लगाने के लिए अपनी समीक्षा लिखी है। महर्षि द्वारा प्रस्तुत समीक्षा पर पादरियों ने बाईबिल में अनेक स्थानों पर संशोधन किये हैं, परन्तु वे लोग बाईबिल के मूल लिख में परिवर्तन नहीं कर सके।

बाईबिल की उत्पत्ति पुस्तक पर्व ३ आयत ९ से १३ में लिखा है—परमेश्वर (योहिवा) ने पुकार कर आदम से पूछा 'तू कहां है ?' उसने कहा 'मैं तेरा शब्द सुनकर, डरकर बाड़ी में छिप गया। क्योंकि मैं नंगा था।' परमेश्वर ने पूछा 'किसने तुझे बताया कि तू नंगा है ?' जिस वृक्ष का फल खाने को मैंने तुझे बरजा था, क्या तूने उसका फल खाया है ? आदम ने कहा जिस स्त्री को तूने मेरे संग रहने को दिया है, उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया और मैंने खाया। तब परमेश्वर ने स्त्री से पूछा कि तूने यह क्या किया है ? स्त्री ने कहा कि सर्प ने मुझे बहका दिया और मैंने उसे आदम को खाने के लिए दिया। जब आदम को प्रथमतः तमीज का फल खाने से मना किया तो आदम को सन्तान ईसाई पादरी और ईसाई जनता में धार्मिक मामलों में तमीज नाम की कोई प्रवृत्ति देखने में नहीं आती।

भारतीय संस्कृति में तो स्थान-स्थान पर मेधा के लिए, बुद्धि के लिए प्रार्थनायें हैं—यथा

ओम् यां मेधा देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधया अग्ने मेधाविनं कुरु ॥१

अर्थ—हे रक्षक ! ज्ञानप्रकाशस्वरूप प्रभो ! जिस मेधा बुद्धि को प्रार्थना, देवगण और पितरजन करते हैं, उसी मेधा बुद्धि से मुझे भी आज मेधावी करो।

ओम् तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ गायत्री ॥

अर्थ—हे रक्षक। देव उत्पादक सवितः। आपका प्रकाश अन्धकार का नाशक है। आपका भर्ग हमारी पाप वासनाओं का नाशक है। हम आपके भर्ग स्वरूप का नित्य प्रति ध्यान करें। देव हमारी बुद्धियों को सुप्रेरणा दे।

इसी कारण से भारत की संस्कृति अध्यात्म और शांति की रही है। यहां ही ऋषि और मुनि हुए। ईसाई सभ्यता के प्रभाव से पश्चिम के देशों की सभ्यता भौतिकी और मारकाट की रही है।

आर्यसमाज लूखी जि. महेन्द्रगढ़ का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज लूखी जि० महेन्द्रगढ़ का वार्षिक उत्सव १७ से १९ जून तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा की म० जयपाल आर्य की भजनमण्डली के अतिरिक्त पं० विश्वमित्र के शराब तथा अन्य सामाजिक बुराइयों के खण्डन में प्रभावशाली भजन तथा श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के वैदिक सिद्धांतों पर व्याख्यान हुए। सभा को ३००) वेदप्रचारार्थ दिये गये।

आर्यसमाज खेड़ी सुलतान जि. रोहतक का उत्सव

आर्यसमाज खेड़ी सुलतान जि० रोहतक का वार्षिक उत्सव ३ से ५ जून तक सम्पन्न हुआ। उत्सव पर श्री धर्मी कलौंदा निवासी तथा श्री जगवीरसिंह, श्री सत्यपाल आदि के व्याख्यान तथा कन्या गुरुकुल जसात की छात्राओं के मनोहर भजन हुए। ब्र० विजयेन्द्र व धर्मसिंह आर्य ने व्यायाम प्रदर्शन करके जनता को प्रभावित किया।

—लाभसिंह प्रचारमन्त्री

समाजवादी गीत (किसान और राजनेता)

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, प्रधान आर्यसमाज कंवारी

नारों से नहीं भरा करता है इक भूखे का पेट रे नारे बन्द करदो।
इक पानी ज्यों द्रव बहाता इक चढ़े भूख की भेंट सरकारें बन्द करदो ॥

समता और समाजवाद का है सिर्फ एक बहाना,
नारे सिर्फ छलावा है, पेशा है लूटकर खाना,
एक किसान की छीन के धरती दूजे को दे जाना,
भूमि का नहीं बटवारा हुआ आपस में सिर फुड़वाना,
इक को नहीं मिलती नौकरी इक बन बैठा सेठ रे बटवारे बन्द करदो।
नारों से ···—

एक किलो दाने से जो २५ मन पैदा करता है,
हाय यह कैसी बिडम्बना वो फिर भी भूखा मरता है,
मिलता नहीं भर पेट कहीं इक धन से कोठे भरता है,
ऐ शासक कर ध्यान जरा यह न्याय नहीं बर्बरता है,
अन्नदाता के बच्चों का क्यों काट रहे हो पेट रे।
नारों से —···

बोल-बोल ओ गूगें बोल क्यों बन्द है आज जुबान तेरी,
इससे खस्ता क्या होगी और हालत बुरी किसान तेरी,
फिर किस मुह से बोलेगा जब लुट ही लेगी शान तेरी,
शादी के खर्च बिन बैठी बेटी घर जवान तेरी,
गरीब बेटियों की इज्जत का आंका जाता है रेट रे।
चोर बजारी बन्द करदो······

पेट तो ये भी नहीं भरेगा मैं भी इक नारा देता हूं,
पर समझदार बन में इसमें तुम्हें एक इशारा देता हूं,
संगठन कर सब एक बनो फिर उठो सहारा देता हूं,
भ्रष्टाचार को आग लगादो लो अंगारा देता हूं,
फिर सोना बन जायेगा तेरा खेतों का रेत रे।
बेगारें बन्द करदो······

श्री सेठ हरद्वारीलाल जी नहीं रहे

श्री हरद्वारीलाल पुण्य आत्मा का स्वर्गवास दिनांक २-६-८८ को होगया। वे ७० वर्ष के थे। श्री सेठ बड़े परिश्रमी और उदार थे। इन्होंने बहुत परिश्रम से कमाया तथा खुले हाथ दान दिया। गांव में मन्दिर का निर्माण कराया। भण्डारा लगाने का बड़ा चाव था। उन्होंने हरिद्वार में जाकर भण्डारा किया। गांव में वृष्टि यज्ञ कराते थे और वहीं पर भण्डारा करते थे। गांव में स्कूल भवन में बड़ी मदद की। गांव में आर्यसमाज के उत्सव मकर संक्रांति पर खुले हाथ से दान देते थे। हम उस पुण्य आत्मा के कल्याण हेतु प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शांति दे।

—दीपचन्द आर्य, ग्राम कासनी, जि० रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४)
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० नं० ।

अंक ४



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

१९ आषाढ़ २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्कु ३१ ७ जुलाई, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

आओ ! सत्संग में चलें

— प्रा० भद्रसेन, डाक० साधु आश्रम, होशियारपुर-१४६०२१

विश्वविद्यालय की वार्षिक परीक्षायें हो चुकी हैं। परिणाम की प्रतीक्षा में विद्यार्थी अपने-अपने ढंग से इन दिनों का आनन्द ले रहे हैं। अनेक साथियों ने निश्चय किया कि प्रतिदिन प्रातः, सायं उद्यान में एकत्रित हों और यहीं मिलकर भ्रमण, व्यायाम तथा वार्तालाप करें। यह क्रम जब कई दिन से चल रहा था, तब एक दिन सौरभ ने सभी साथियों से कहा—अब एक नया अनुभव क्यों न लिया जाये ? सभी ने एकदम जिज्ञासा प्रकट करते हुए पूछा—क्या भाई ! क्या ? तब सौरभ ने कहा—प्रति सप्ताह रविवार को एक धार्मिक स्थल पर चलें, वहां के कार्यक्रम को समझें और उस-उस धर्म का स्वयं अनुभव लें।

इसी क्रम में वर्णानुक्रम के अनुसार प्रथम रविवार को सारे साथी आर्यसमाज मन्दिर पहुंचे। निश्चित समय पर कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। जब यज्ञ की कार्यवाही पूर्ण होगई और प्रसाद वितरण हो रहा था तो गौरव ने अपने साथियों से कहा—ये कितने देवताओं को मानते हैं ? देखो ! प्रार्थना मन्त्रों में और फिर यज्ञ में, कहीं सविता, कहीं हिरण्यगर्भ, कहीं अग्नि, सोम, इन्द्र आदि का नाम लिया है, उनमें से अनेक प्रार्थनायें की हैं। उनके नाम से आहुतियां दी गईं और वह भी अलग-अलग दिशा में ?

अभिनव भाई ! आर्यसमाज तो एक परमेश्वर को ही उपास्य देव मानता है, फिर आपकी बात का उससे तालमेल कैसे होगा ? अभिषेक—अभी सूचना दी गई है कि अब हाल में भजन और उपदेश आदि का कार्यक्रम होगा। पहले वहां की कार्यवाही भी देख लें, फिर यह चर्चा करेंगे।

पहले एक प्रभु भक्ति का भजन हुआ। इसके बाद एक विद्वान् ने ५ मिनट तक एक वेदमन्त्र की व्याख्या की। फिर एक सामूहिक भजन हुआ।

उस दिन एक प्राध्यापक का भाषण था। वे इन विद्यार्थियों के पास ही बैठे हुए थे। मंच पर विराज कर प्राध्यापक जी ने एक मन्त्र का मधुर स्वर से उच्चारण किया। फिर प्रवचन प्रारम्भ करते हुए कहा—मैं अब तक जहां बैठा हुआ था, वहीं मेरे पास कुछ युवक भी बैठे हुए थे। वे नये आगन्तुक प्रतीत होते हैं। वे बड़ी श्रद्धा और जिज्ञासा भावना से सारे कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं। यज्ञ के पश्चात् उन्होंने आपस में कुछ प्रश्न उभारे थे।

आर्यसमाज की यह स्पष्ट मान्यता है कि इस संसार का बनाने और चलानेवाला एकमात्र ईश्वर ही है। यही बात वेदांत दर्शन के 'जन्माद्यस्य यतः १।१।३' आदि सूत्रों में आती है। इस रचना से संसार के स्रष्टा, नियन्ता ईश्वर का जैसा स्वरूप स्पष्ट होता है, उसका सुन्दर संकेत आर्यसमाज के द्वितीय नियम में मिलता है। इतना स्पष्ट हो जाने पर भी यज्ञ के इन मन्त्रों को सुनने से मनमें एक विचार उभरता है कि इन मन्त्रों में अलग-अलग अग्नि, इन्द्र आदि नाम क्यों हैं ? वस्तुतः एक जिज्ञासु की ऐसी प्रवृत्ति को सामने रखकर ही महर्षि दयानन्द ने 'वेदार्थ की कुञ्जी' के रूप में सत्यार्थप्रकाश का प्रथम समुल्लास लिखा है।

अतः आइये ! इस पर कुछ गहराई से विचार करें। यह तो हम सब जानते हैं कि महर्षि सबसे अधिक वेदों पर ही विश्वास रखते थे और सत्यार्थप्रकाश में इसीलिए ही स्थान-स्थान पर उन्होंने वेदों का श्रद्धापूर्वक स्मरण किया है। वेदों के आधार पर ही महर्षि ने अपने सिद्धांत स्थापित किये हैं। महर्षि का यह दृढ़ विश्वास था कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है'। महर्षि की दृष्टि से वेद हमारे सर्वस्व हैं सभी भारतीय साहित्य, धर्म, इतिहास और परम्परा भी वेदों को अपना आधार मानती है।

जब हम वेदों का अध्ययन करते हैं तो हमारे सामने अग्नि, इन्द्र आदि को लेकर समस्या उत्पन्न होती है। इतिहास तथा याज्ञिक पद्धति वाले कहते हैं कि वेदों में अग्नि, वायु आदि देवताओं की स्तुति की गई है तथा उनसे प्रार्थनायें हैं। आज यज्ञ के अवसर पर जितने मन्त्र आये हैं, उनमें भी अग्नि आदि को आधार बनाकर वर्णन किया गया है। वेदों में अग्नि, इन्द्र आदि को देवता कहा गया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में बताया है कि ये अग्नि आदि शब्द वेदों में प्रकरण के अनुसार अनेक अर्थों की ओर संकेत करते हैं। जैसे कि जहां-जहां संसार को बनाने चलानेवाले की बात है और उसी के ही गुणों, कर्मों की चर्चा है या उसकी स्तुति, प्रार्थना, उपासना है, वहां-वहां वेदमन्त्रों में आये अग्नि आदि शब्द परमेश्वर के वाचक हैं। जहां किसी के पैदा होने की बात है, वहां विराट् आदि [देव] शब्द प्रकृति के तत्त्वों, परिणामों की ओर संकेत करते हैं और जहां सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, ज्ञान अर्जन तथा इच्छाओं की पूर्ति की बात है या उसके लिए किये जानेवाले कर्मों का प्रसंग है, वहां जीव की ओर ही इन शब्दों से संकेत किया गया है।

यह ठीक है कि अग्नि, वायु, सूर्य, जल आदि शब्द भौतिक पदार्थों के भी नाम हैं और लोक में वे उसी रूप में ही समझे जाते हैं। इस प्रत्यक्ष वर्णन के आधार पर संसार और जीवों के तत्सम्बन्धी व्यवहार का भी इन से बोध होता है। पर वेद में ये अग्नि आदि शब्द अधिकतर परमात्मा के वाचक हैं। जब ये परमात्मा के लिए आते हैं, तब निरुक्त और व्याकरण प्रक्रिया के अनुसार इनका जिस प्रकार तदनुरूप अर्थ होता है, वही प्रथम समुल्लास में १०८ नामों के उदाहरण के रूप में निर्दिष्ट है। अतः यह प्रथम समुल्लास वेदार्थ की कुञ्जी के रूप में हमें वेद पढ़ना सिखाता है। जब हम इसके अनुरूप वेद को पढ़ना सीख लेते हैं तो हमारे लिए वेद में प्रवेश करना सरल हो जाता है। जैसे मुख्य द्वार से प्रदर्शनी के स्थल पर प्रवेश कर लेने पर वहां की वस्तुयें क्रमशः स्पष्ट होती जाती हैं। ऐसे ही वेद की यह कुञ्जी हाथ में आजाने पर हम वेद के विषयों का ताला खोलकर विविध विषयों के भावों को सरलता से समझ सकते हैं।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

वैशेषिक-दर्शन शिक्षण शिविर

"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" आजकल आर्यसमाजों में वेदों के पठन-पाठन का ह्रास दिखाई दे रहा है। वेदों के अध्ययन-आत्मक परम धर्म की वृद्धि के लिए संस्कृत सेवा संस्थान आर्यसमाज हरिसिंह कालोनी (सुनारियां मोड़) रोहतक के तत्त्वावधान में ३० मई से २५ जून, ८८ तक महर्षि कणाद प्रणीत वैशेषिक दर्शन के शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें २५ छात्रों ने भाग लिया। दिनांक १९-६-८८ को वैशेषिक दर्शन की परीक्षा में निम्नलिखित छात्र सफल हुए—

छात्र का नाम	प्राप्ताङ्क	श्रेणी
१. श्री स्वामी योगानन्द	५५	द्वितीय
२. ,, सुखदेव शास्त्री	७२	प्रथम
३. ,, मि० दरयावसिंह	६८	,,
४. ,, सुरेशकुमार	५६	द्वितीय
५. ,, मामचन्द	६६	प्रथम
६. ,, दयानन्द शास्त्री	७७	विशेष योग्यता
७. ,, गुरुदत्त	३८	तृतीय
८. ,, वेदमुनि	८२	विशेष योग्यता
९. ,, ब्र० कृष्णदेव	३४	तृतीय
१०. ,, नरदेव	४८	द्वितीय
११. ,, रामपाल	६८	प्रथम
१२. ,, मा० रामप्रकाश	८२	विशेष योग्यता
१३. ,, हर्षवर्धन	६५	प्रथम
१४. ,, माधवराम	६२	,,
१५. ,, स्वरूपानन्द	६५	,,
१६. ,, मा० वेदप्रकाश	६३	,,

२५-६-८८ ई० को इस शिविर का समापन समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि डा० रामभगत लांगायन एस० डी० एम० जींद का आर्यसमाज के प्रतिष्ठित सदस्यों ने माल्यार्पण से सम्मान किया तथा उन्होंने प्राचीन दर्शन-विद्या और अग्निहोत्र की महिमा पर प्रभावशाली व्याख्यान दिया। वैशेषिक दर्शन के शिक्षार्थी छात्रों को प्रमाण-पत्र तथा संस्कृत साहित्य भी वितरित किया। इस समारोह के अध्यक्ष श्री महाशय भरतसिंह जी ने मुख्य अतिथि डा० लांगायन साहेब को वैशेषिक दर्शन भेंट करके उनका अभिनन्दन किया और आर्यजनता को वेद का स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर स्वामी जगतमुनि जी तथा श्री रामचन्द्र जी आर्य के प्रभावशाली भजन भी हुए।

इस शिविर में वैशेषिक दर्शन की शिक्षा के साथ-साथ पं. सुदर्शनदेव आचार्य ने शिक्षार्थियों को वैदिक संध्या तथा दैनिक अग्निहोत्र के मन्त्रों की सारगर्भित व्याख्या समझाई। शिक्षार्थी छात्रों ने १५००) की राशि से अपने आचार्य का अभिनन्दन किया। श्री मि० दरयावसिंह जी आर्य तथा श्री रामपाल आर्य ने सम्पूर्ण वैशेषिक दर्शन के आचार्य मुख से पढ़ाये गये पाठ को तथा वैदिक संध्या व अग्निहोत्र की व्याख्या को भी टेपरिकार्ड कर लिया है। जिससे अन्य जिज्ञासु भी लाभ उठा सकें।

आर्य सिद्धांत, वैदिक कर्मकांड, षोडश संस्कार, वेदपाठ आदि के शिक्षण शिविरों की आवश्यकता अनुभव की जारही है। आगामी जून, १९८९ में न्याय दर्शन शिक्षण शिविर का आयोजन किया जायेगा।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

पानी नहीं शराब की नदियां बहती है हरयाणा में

हरयाणा जहां कभी दूध-दही और घी की नदियां बहती थीं, आज शराब के गन्दे नाले में डूबता जारहा है। सूखे के कारण पीने के पानी का अभाव है, वहां शराब की कोई कमी नजर नहीं आती।

हरयाणा के जिला महेन्द्रगढ़, ब्लाक खोल का गांधी गांव एक ऐसा गांव है, जहां के कुओं में पानी तक नहीं रहा, लेकिन शराब की वहां भरमार है। इस गांव की कहानी सभी गांवों की कहानी है। इस गांव में धड़ल्ले से शराब की बिक्री होती है, वह भी ऊंचे दामों पर। गांव के अवकाश प्राप्त सैनिकों को हर महीने सी० एस० डी० कैंटीन से जो शराब मिलती है, वह तिगुने-चौगुने दामों पर गांव में बेच दी जाती है। देशी शराब का सरकारी ठेका गांव से लगभग चार कि०मी० पर है, जिसका ठेकेदार गांव के असामाजिक व्यक्तियों के पास चोरी-छिपे बोतलें भिजवाता है और इससे गांव में हर समय शराब उपलब्ध रहती है।

शराब के इस खुले दौर के कारण इस गांव का वातावरण बुरी तरह बिगड़ गया है। इससे होनेवाली हानियां छिपी नहीं हैं।

समाजसेवी संस्थाओं से मेरा अनुरोध है कि शराब के खिलाफ इस गांव से संघर्ष की शुरुआत की जाये। जो भाई या संस्थायें इस संघर्ष में हमारा साथ देना चाहती हैं, वे कृपया मुझे लिखें या मिलें।

—मंगलसिंह यादव, पो० बलवाड़ी, तह० रेवाड़ी
जि० महेन्द्रगढ़ (हर०)
(दैनिक वीर अर्जुन)

सभा के ऋषिलंगर हेतु दान प्राप्त सूची

महाशय बलवन्तसिंह आर्य मकड़ौली कलां जि. रोहतक	६० किलो अन्न
सुलतानसिंह, माल्हे, कन्हैया, हरकिशन, सुलतान, सूरजा, पृथी, रिसालसिंह ग्राम भालौट जि० रोहतक	एक बोरी
श्री रामकिशन सुपुत्र श्री मनशाराम ग्राम रानीखेड़ा, दिल्ली	१०१)
मा० निहालसिंह आर्य ग्राम दिसावर खेड़ी जि० रोहतक	१००)
श्री अतुलकुमार आर्य कृष्णा कालोनी गोहाना मार्ग रोहतक	११)

सभी दानदाताओं का धन्यवाद।

—सभामन्त्री

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

वर्षा आरम्भ हो चुकी है। इन दिनों वेदप्रचार करवाने के लिए शुभावसर है। अतः आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन है कि वे जुलाई से सितम्बर मास तक वेदप्रचार सप्ताह मनाने के लिए सभा से पत्र-व्यवहार करके अपनी तिथियां सुरक्षित करवा लेवें, ताकि सभा को उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों का प्रबन्ध करने में सुविधा रहे।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

आकाशवाणी रोहतक केन्द्र से

सभा के महोपदेशक सुखदेव शास्त्री का भाषण २१ जुलाई, ८८ को सायं ७ बजे। विषय—'चन्द्रशेखर आजाद जयन्ती'।

सर्वहितकारी में विज्ञापन देकर-लाभ उठायें।

शराब पीना सामाजिक अभिशाप है।

अबोहर फाजिल्का को हरयाणा में मिलाने के लिए प्रो० शेरसिंह द्वारा प्रधानमन्त्री को ज्ञापन

हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह जी के नेतृत्व में २८ जून को ७ सदस्यों पर आधारित एक शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से समय मांगकर मिला था। फाजिल्का पुर्नमिलन समिति के संयोजक मा० तेगराम पूर्व विधायक अबोहर ने अबोहर फाजिल्का की जनता की ओर से अपनी कठिनाइयों से प्रधानमन्त्री को अवगत करवाया।

इस अवसर पर दिये गये ज्ञापन की प्रति पाठकों की जानकारी के लिए अविकल रूप में प्रकाशित की जारही है।

—सम्पादक

प्रधानमन्त्री को दिये गये ज्ञापन की प्रति

मान्य महोदय

श्रीमती इन्दिरा गांधी के २९ जनवरी सन् १९७० के अवार्ड के निर्णय के अनुसार फाजिल्का तहसील के लगभग १०५ गांव हरयाणा में मिलने थे। यह निर्णय सन्त फतहसिंह द्वारा दिसम्बर, १९६९ में प्रो० शेरसिंह को दिये गये वचन के आधार पर था, जिसकी सूचना तत्कालीन प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी को दे दी गई थी। क्षेत्रीय फार्मूला लागू होने से पूर्व तत्कालीन गृह मन्त्री पन्त ने पांच व्यक्तियों की, जिसमें सरदार प्रतापसिंह कैरों, प्रो० शेरसिंह, चौ० देवीलाल, ज्ञानी करतारसिंह तथा वीरेन्द्र थे, एक समिति बनाई थी। इस समिति ने सिफारिश की थी कि ये गांव हिन्दी भाषी हैं और इन्हें हिन्दी भाषी क्षेत्र का अंग होना चाहिए। दिनांक २१ अक्तूबर, १९५६ को इस सिफारिश की प्रति गृह-मन्त्रालय के पास है। इस समिति ने यह भी सिफारिश की थी कि कन्दूखेड़ा हिन्दी क्षेत्र में जायेगा। सीमा परिसीमन आयोग ने भी इस सिफारिश को ध्यान में रखा और १९५७ के आरम्भ में दो हिन्दी भाषी विधानसभा क्षेत्र बनाते समय कन्दूखेड़ा सहित इन गांवों को भी इनमें रखा गया। सन् १९६६ में शाह आयोग ने अपनी रिपोर्ट में यह माना है कि जनगणना १९६१ के आंकड़ों के आधार पर यह क्षेत्र प्रधानता से हिन्दी भाषी है।

पंजाब के तथाकथित समझौते की धारा ७.(२) के अनुसार आपकी सरकार ने चण्डीगढ़ के बदले फाजिल्का के हिन्दी भाषी गांव हरयाणा को मिलने हैं, उनकी पहचान के लिए मैथ्यू कमीशन की नियुक्ति की। जनगणना १९६१ तथा जनगणना १९८१ के में बड़ा भारी अन्तर था। अतः कमीशन ने भाषाई सर्वेक्षण का आदेश दिया और कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि सर्वेक्षण के परिणाम से सिद्ध होता है कि सन् १९६१ के आंकड़े प्रायः ठीक हैं और घोषणा की कि इस क्षेत्र के ८५ गांव प्रधानता से हिन्दी भाषी हैं। पंजाब सरकार तथा अकाली दल की अपनी सम्पूर्ण शक्ति इन गांववासियों को भयभीत करने में लगी और कन्दूखेड़ा को तो विशेष रूप से भयभीत किया गया। इस प्रकार वे यह सिद्ध करने में सफल होगये कि कन्दूखेड़ा पंजाबी भाषी है।

यह दुर्भाग्य की बात है कि अकाली दल तथा उनकी सरकार ने आयोग को इतना विचलित कर दिया कि वह धारा ७(२) के अन्तिम वाक्य उनके ध्यान से ओझल होगया। अतः आयोग ने स्पष्ट रूप से यह कहने में अपनी असमर्थता प्रकट की कि हिन्दी भाषी रूप में चिन्हित ये गांव चण्डीगढ़ के बदले हरयाणा को देने चाहिएं और इसने निर्णय लेने का कार्य केन्द्रीय सरकार पर छोड़ दिया। जैसे-तैसे धारा ७(२) का अन्तिम वाक्य आपकी सरकार के ध्यान से भी उतर गया। प्रो० शेरसिंह ने इस वाक्य पर आपका ध्यान आकर्षित किया कि धारा ७(२) के आधीन नियुक्त आयोग द्वारा चिन्हित हिन्दी भाषी गांव तथाकथित पंजाब समझौतों की धारा ७ (४) के आधीन नियुक्त होने वाले सीमा पुनःसीमन आयोग द्वारा चिन्हित हिन्दी भाषी गांवों से बिल्कुल अलग होंगे। उन्होंने बलपूर्वक कहा कि कन्दूखेड़ा पंजाबी भाषी होने के कारण मैथ्यू आयोग द्वारा चिन्हित गांवों को उन गांवों से अलग करता है जो कि पुनः परिसीमन के कारण हरयाणा को मिलने हैं। यदि कन्दूखेड़ा हिन्दी भाषी था तो ये गांव हरयाणा को स्वतः ही धारा ७(४) के आधार पर मिल जाते। हम समझते हैं कि पंजाब समझौते के विषय में तर्कपूर्ण बातों से आप भी प्रभावित हुए।

हमें यह भी कहना है कि सन् १९७० के बाद आनेवाली प्रत्येक सरकार ने अनेक प्रकार से क्षेत्र के निवासियों को परेशान करना आरम्भ किया। विकास कार्य प्रायः रोक दिये गये और पंजाबी को बलात् थोंपा गया। हमारी शिकायत पर राष्ट्रपति ने संविधान के अनुच्छेद ३५० के अन्तर्गत एक विशेष अधिकारी को भेजा। इसने हमारी शिकायत की पड़ताल की और राष्ट्रपति को तीन बार लिखा कि संविधान के अनुच्छेद ३५० (ए) का उल्लंघन पंजाब सरकार द्वारा किया जारहा है। परन्तु अनुच्छेद ३५० (बी) के अनुसार कोई भी कार्यवाही नहीं की गई। इसका कारण राष्ट्रपति को ही पता होगा। इस क्षेत्र में हिन्दी माध्यम से शिक्षा देने का कोई प्रबन्ध सरकारी स्कूलों में नहीं है। अतः हमारे बच्चों को हिन्दी माध्यम में से शिक्षा प्राप्ति के लिए पड़ोसी प्रदेश हरयाणा तथा राजस्थान में जाना पड़ता है। आपकी सरकार का अखिल भारतीय स्तर पर यह घोषित नीति है कि जिस स्कूल में एक कक्षा में दस तथा सारे स्कूल में ४० छात्र किसी विशेष भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करना चाहते हैं तो उस प्रांत के शिक्षा विभाग को इस का प्रबन्ध करना पड़ेगा। परन्तु पंजाब सरकार १० और ४० की बात नहीं, सैंकड़ों छात्र होने पर भी इस मांग को एकदम अस्वीकृत करती रही है।

इस क्षेत्र के लोग १८ वर्ष से संकटों को झेल रहे हैं। वे आशा और निराशा के मध्य झूल रहे हैं। इस विषय पर पहले तो कोई निर्णय नहीं लिया जाता, यदि लिया भी जाता है तो उस पर अमल नहीं होता। आशान्वित होने पर हमारे भाग्य में झगडे ही पड़े हैं। कुछ समय से इस क्षेत्र के हिन्दुओं का राजस्थान में भूमि परिवर्तन चल रहा है। हमारी दिलाशा का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और यह प्रक्रिया तेजी पकड़ रही है।

अतः हमारी आपसे प्रार्थना है कि यह हालात रोकने के लिए तुरंत कार्यवाही की जाये और इस क्षेत्र को हरयाणा में मिलाया जाये। धन्यवाद।

ग्राम पंचायतों के चुनाव ३० सितम्बर तक पूर्ण करने के निर्देश

चण्डीगढ़, ५ जुलाई (संवा) : हरयाणा सरकार ने एक अधिसूचना जारी करके राज्य में सभी ग्राम पंचायतों के पंचों के ७वें आम चुनाव तथा पंचों को कोआप्ट किये जाने का काम ३० सितम्बर तक पूर्ण कर लिए जाने के निर्देश जारी कर दिये हैं। ग्राम पंचायतों के आम चुनाव हरयाणा मन्त्रिमण्डल की २८ जून को हुई बैठक में १ से ८ अगस्त के बीच करवाने का फैसला किया गया था। कई ग्राम पंचायतों का कार्यकाल समाप्त हो चुका है, जबकि शेष ग्राम पंचायतों की अवधि इस मास के प्रथम सप्ताह में समाप्त हो रही है। (दैनिक पंजाब केसरी)

आतंकवादियों की बढ़ती हिंसा और आत्म-समर्पण की पेशकश

—प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

हरयाणा में पिछले नौ-दस महीनों में दरियापुर, अम्बाला, शाहबाद, पानीपत कांड तो हो ही चुके थे, आप्रेशन ब्लंक थंडर के बाद दो खतरनाक बम विस्फोट कुरुक्षेत्र और पेहवा में हुए। इन घटनाओं से जो चिन्ता और मुस्तैदी हरयाणा के प्रशासन में आनी चाहिए थी, यह मानना पड़ेगा कि वह अभी तक भी नहीं आई है। चौ० देवीलाल जब तक बादल से पल्ला नहीं छाड़ेंगे, तब तक आतंकवाद से निपटने के लिए जो इच्छा शक्ति, मुस्तैदी और मजबूती चाहिए, उसके दर्शन कठिन हैं। यह मानना पड़ेगा कि हरयाणा में ये निर्मम हत्याकांड होने का एक कारण यह भी है कि आतंकवादियों के दिलों में हरयाणा प्रशासन का दबदबा और दहशत कम होगई है। गन्दे हिंसक और समाज-विरोधी तत्त्व उसी दहशत और दबदबे से ही काबू में रहते हैं। वह दबदबा कम हो जाये तो शांति और व्यवस्था डगमगा जाती है। एक तथ्य और है जिसे आंखों से ओझल नहीं करना चाहिए और वह यह कि हरयाणा में ऐसे लोग मौजूद हैं जो आतंकवादियों को सूचना और शरण देनेवाले हैं। ऐसे तत्त्वों को खोजकर, उनको मजबूत हाथों से कुचलना होगा।

स्वर्ण मन्दिर के घेरे के बाद आतंकवादियों के आत्म-समर्पण की घटना से परिस्थितियों में परिवर्तन ही नहीं, एक नया मोड़ भी आया है। आतंकवादियों ने जहां एक ओर हिंसात्मक कार्यवाहियों को बढ़ाया है, हरयाणा, पंजाब और दिल्ली में खतरनाक बम विस्फोट हुए हैं, वहां पंजाब के पुलिस अधिकारियों के पास आत्म-समर्पण के लिए दुर्दांत माने जानेवाले आतंकवादियों तक के पत्र भी आने लगे हैं। जान बख्शने पर वे आत्म-समर्पण को तयार हैं। इनमें कितना धोखा है और कितनी सच्चाई है, इसका निर्णय तो खुफिया एजेन्सियां ही लगा सकेंगी। यह भी हो सकता है कि हिंसात्मक घटनाओं को अधिक जानलेवा बनाकर, आतंकवादी अपनी शर्तों पर आत्म-समर्पण के लिए तैयारी कर रहे हों। ऐसी अवस्था में सरकार को भी आतंकवादियों के दमन की अपनी गतिविधियों को और अधिक प्रभावशाली बनाना चाहिए, ताकि आत्म-समर्पण के अलावा और कोई चारा आतंकवादियों के लिए न रहे और जो भी हो, वह उनकी शर्तों पर होने की बजाये सरकार की शर्तों पर हो।

पुरी के शंकराचार्य को पागलखाने में भेजना चाहिए

पिछले कुछ दिनों के समाचार-पत्र पुरी के शंकराचार्य के विचारों और उन पर भिन्न-भिन्न प्रतिक्रियाओं और टिप्पणियों से भरे हुए हैं। पता नहीं क्यों समाचारपत्रों ने निरंजनदेव जैसे अस्वस्थ विचारोंवाले व्यक्ति को इतना महत्त्व दिया है। कुछ व्यक्तियों ने उसको शास्त्रार्थ के लिए चुनौती देकर और भी महत्ता प्रदान करदी है। इससे मैं यह समझता हूं कि हिन्दुओं में अब भी धर्म की प्रमुसत्ता है। वस्तुतः निरंजनदेव का वक्तव्य अवैज्ञानिक होने के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं और मूल्यों से रहित है। आज के युग में इसका कोई महत्त्व नहीं है। इसे मैं एक पागल व्यक्ति के प्रलाप की भांति मानता हूं। यदि हम गहराई से चिन्तन करें तो स्पष्ट पता चल जायेगा कि आज के नवजागरण युग में धार्मिक ग्रन्थों की मतान्धता से भरपूर मनमानी व्याख्या को कोई भी बुद्धिजीवी चाहे वह ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखता हो अथवा न रखता हो, नहीं मान सकता। आज ब्राह्मणत्व का वह युग बीत गया, जब पण्डितों की वाणी अमरवाणी मानी जाती थी। अब तो प्रत्येक व्यक्ति में ब्रह्मत्व खोजना है, मूर्ति और मन्दिर में नहीं।

अब तो नये मानव के साथ नई और सही व्याख्याओं का समय आगया है। अत एव कामकोटिपीठ के शंकराचार्य जोशी मठ के स्वामी स्वरूपानन्द नेपाल में जाकर और भारत में भी अपनी जनसभाओं में तथाकथित सतीप्रथा, छुआछूत और जन्म के आधार पर जाति-पाति को पाप कहते हैं और वेद तथा शास्त्रों की शिक्षा के विरुद्ध मानते हैं। आज के वातावरण में सती और छुआछूत को धर्म का अंग मानना तो दूर रहा, कोई बुद्धिमान् आदमी ऐसी अटपटी बात को सुनने को भी तैयार नहीं, तब इन्हीं पागलपन की बातों के द्वारा जो रामराज्य लाने की घोषणा करता हो, तब कोई मान सकेगा कि उस आदमी का दिमाग सही सलामत है। ऐसी अवस्था में ऐसे सनकी और पागल के अनर्गल प्रलाप को जो व्यक्ति महत्त्व देता है और उसे दो-दो हाथ करने के लिए चुनौती देता है तो मान लेना चाहिए कि वह अत्यन्त कीमती समय बर्बाद करने पर तुला है, या फिर वह इन पागलपन की बातों से जन-मानस पर हुई प्रतिक्रिया का लाभ उठाकर सस्ती वाह-वाही लेना चाहता है। जनता, समाचारपत्रों और सरकार तीनों को ही ऐसे मूर्ख और पागल को महत्त्व न देकर उसे पागलखाने भिजवा देना चाहिए। उस के रहने का उपयुक्त स्थान पुरी का मन्दिर नहीं, पागलखाना ही हो सकता है।

—शेरसिंह

(पृष्ठ १ का शेष)

वेद में ईश्वर को अनेक नामों से स्मरण किया गया है। इसका पहला अभिप्राय यही है कि प्रकरणानुसार ईश्वर के अनेक गुण, कर्म हमारे सामने आ सकें और इसके साथ अग्नि, वायु, सूर्य जैसे भौतिक पदार्थों के नामों से और इन पदार्थों के प्रत्यक्ष स्वरूप से संसार के स्रष्टा के कर्मों और स्वरूप को पहचाना जा सके।

हां, इन अनेक नामों से हमें अनेक देवताओं की स्वतन्त्र सत्ता का भ्रम नहीं होना चाहिए। सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में एक गुरु के दो चेलों द्वारा गुरु के चरणों की सेवावाला एक दृष्टांत आता है। जैसे उन चेलों ने अपने गुरु के चरणों को अपना-अपना स्वतन्त्र पग मानकर झगड़ा किया था। वैसे ही अनेक नामों को देखकर लोग अनेक देवी-देवताओं की स्वतन्त्र कल्पना और अर्चना में पड़ जाते हैं।

वस्तुतः जैसे किसी एक व्यक्ति को कोई पिता, कोई चाचा, कोई भाई या बेटा कहता है। ऐसे ही ईश्वर के अनेक नाम हैं, ये अनेक नाम उसके अनेक गुणों और कर्मों को ही स्पष्ट करते हैं। जैसे सम्बन्ध के भेद से अनेक सम्बन्ध बोधक नाम होने पर भी व्यक्ति एक ही रहता या होता है। वैसे ही अनेक गुण-कर्मवाचक नाम होने पर भी ईश्वर एक ही है।

छठे समुल्लास के शुरु में मनुस्मृति के श्लोक हैं, जिनमें इन्द्र, अग्नि आदि शब्द आते हैं। महर्षि ने प्रकरण के अनुसार उन सबका राजा (प्रशासक) के रूप में चित्रण किया है। अतः प्रकरण के अनुरूप इन्द्र आदि शब्द अनेक अर्थों के वाचक हैं। इसी विषय का विविध पक्षों के साथ 'वेद की कुञ्जी' प्रथम समुल्लास में विवेचन किया गया है।

यह पुस्तक कब प्रकाशित होगी, यह तो कोई प्रकाशक या आर्यसमाज ही आगे आकर बता सकता है। अतः प्रिय पाठको! अभी इस की प्रतीक्षा कीजिए।

नीम के पेड़ पर अनुसंधान

यह जानने के बाद कि नीम १२३ किस्म के कीड़ों से बचाव कर सकता है, दुनियाभर में नीम पर बड़े पैमाने पर अनुसंधान शुरु होगये हैं। कई शताब्दियों से भारतीय महाद्वीप में किसान अपनी फसलों को कीड़ों से बचाने के लिए नीम की छाल, पत्तियों और उसके फल निबोली का इस्तेमाल करते रहे हैं।

भारत के ग्रामीण इलाकों में सालों से नीम का इस्तेमाल घरों में किया जाता है। ऊनी कपड़ों को कीड़ों से बचाने के लिए नीम की पत्तियों को सुखाकर इस्तेमाल किया जाता है।

पाकिस्तान में नीम की सूखी पत्तियों को अनाज के साथ मिलाकर टाट के बोरों में भरा जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान-संस्थान भारत, फिलीपींस, पश्चिम जर्मनी और ब्रिटेन के अलावा अमरीका के वैज्ञानिकों को भी नीम पर अनुसंधान करने में मदद कर रहा है। —(जनसत्ता से साभार)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की विद्या परिषद् द्वारा आयोजित धार्मिक परीक्षाओं का परिणाम

धर्म-प्रवेशिका

सर्वप्रथम—राजेशकुमार, रो० नं० 1590, प्राप्तांक 90, आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत

सर्वद्वितीय—रेखारानी रो० नं० 1627, प्राप्तांक 77, दयानन्द मिडिल स्कूल नारायणगढ़ (अम्बाला)

विभा, रो० नं० 1542, प्राप्तांक 77, आर्य कन्या महाविद्यालय नरवाना, जींद

सर्वतृतीय—1) गीतारानी, रो० नं० 1626, प्राप्तांक 75, 2) राजेशकुमार, रो० नं० 1630, प्राप्तांक 75, 3) मनोज, रो० नं० 1648, प्राप्तांक 75 दयानन्द मिडिल स्कूल नारायणगढ़, अम्बाला।

राजेशकुमार, रो० नं० 1483, प्राप्तांक 75, आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत।

धर्म-भूषण

सर्वप्रथम—दलवीरसिंह, रो० नं० 1165, प्राप्तांक 81, आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत।

सर्वद्वितीय—सहस्रपाल आर्य, रो० नं० 999, प्राप्तांक 79, विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र।

सर्वतृतीय—राजेन्द्रपाल, रो० नं० 993, प्राप्तांक 75, ,, ,, ,, ,,

अनुराधा, रो० नं० 1001, प्राप्तांक 75, रेशमा, रो० नं० 1005, प्राप्तांक 75, आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल कालका, अम्बाला।

भारतभूषण, रो० नं० 1166, प्राप्तांक 75, आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत।

धर्माधिकारी

सर्वप्रथम—हेमलता, रो० नं० 619, प्राप्तांक 80

सर्वद्वितीय—अनिल, रो० नं० 801, प्राप्तांक 76, आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत।

सर्वतृतीय—राजकुमार, रो० नं० 666, प्राप्तांक 72, आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा।

गुरचरणसिंह, रो० नं० 783, प्राप्तांक 72, ,, ,, ,, ,, पानीपत।

धर्म-प्रवेशिका

तृतीय श्रेणी

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल शाहबाद—42

विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र—1428, 1430, 1433, 1434 से 1439, 1441 से 1446, 1451 से 1453, 1457, 1461, 1462, 1465, 1467, 1468, 1471, 1473.

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल कालका—1474, 1475, 1477, 1478, 1480, 1481, 1483, 1485, 1486, 1489 से 1498, 1501 से 1503

कन्या गुरुकुल पंचगांव, भिवानी—1504 से 1506, 1509 से 1511

आर्य कन्या माध्यमिक विद्यालय जगाधरी—1519, 1520, 1527 से 1530

आर्य कन्या महाविद्यालय नरवाना—1534, 1540, 1541, 1545, 1548

मुसद्दीलाल आर्य हाई स्कूल अम्बाला—1551, 1556, 1558, 1559, 1561, 1562, 1564, 1565, 1570, 1572 से 1580

आर० डी० आर्य कन्या हाई स्कूल करनाल—1581, 1584, 1589, 1591, 1592, 1594, 1596, 1600, 1605, 1617, 1620, 1622

दयानन्द मिडिल स्कूल नारायणगढ़—1652

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा—1655, 1666, 1668, 1675, 1677 से 1680, 1683, 1687, 1688, 1693, 1697, 1699, 1701, 1708, 1710 से 1712, 1714, 1716 से 1719, 1721 से 1723, 1725, 1727, 1728, 1733, 1736, 1737, 1739, 1741, 1743

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत—1449, 1453, 1454, 1457, 1459, 1463 से 1466, 1469, 1482, 1484 से 1486, 1488, 1491, 1493, 1495, 1497, 1498, 1501, 1503, 1506 से 1512, 1515 से 1519, 1521 से 1523, 1526, 1529, 1530, 1534, 1539, 1540, 1543, 1546 से 1551, 1553, 1555, 1559, 1561 से 1564, 1567 से 1573, 1575 से 1577, 1579, 1582, 1583, 1587, 1589, 1596 से 1599, 1601, 1603 से 1607, 1609, 1613, 1616, 1618, 1620, 1621, 1623 से 1625, 1627, 1628, 1631, 1633, 1634, 1638, 1639

आर्य कन्या माध्यमिक विद्यालय जगाधरी—1516, 1518, 1523, 1524, 1526

आर्य कन्या महाविद्यालय नरवाना, जींद—1535, 1536, 1539, 1544, 1547, 1549, 1550

मुसद्दीलाल आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल अम्बाला छावनी—1553, 1555, 1557, 1560, 1566, 1571

आर० डी० आर्य कन्या हाई स्कूल—1586, 1590, 1599, 1602, 1608 से 1611, 1613 से 1615, 1623, 1624

दयानन्द मिडिल स्कूल नारायणगढ़—1633, 1639, 1653

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा—1629 से 1631

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत—1450, 1451, 1456, 1458, 1462, 1467, 1468, 1476, 1478, 1479, 1481, 1489, 1496, 1500, 1502, 1505, 1532, 1544, 1566, 1594, 1595, 1600, 1602, 1608, 1614, 1636

(क्रमशः)

ग्राम चांग (भिवानी) के शराब के ठेकेदार का उत्पात

हरयाणा में सरकार की शराब बढ़ावा नीति से शराब के ठेकेदार पूरी तरह हावी हैं। गांव-गांव गली-गली में शराब के ठेकेदार अवैध तरीके से शराब बेच रहे हैं, कोई पूछनेवाला नहीं। सरेआम गरीब किसानों का खून चूस रहे हैं। प्रायः हर जगह शराब व शराबियों का बोलबाला है। सज्जन पुरुषों का जीना दूभर हो रहा है। इस समय नारी जाति सबसे ज्यादा दुःखी एवं असुरक्षित है।

प्रत्यक्ष प्रमाण के लिए मैं चांग गांव के शराब के ठेकेदार के काले कारनामों पर प्रकाश डाल रहा हूं। कृपया सोचें और विचारें कि शराब एवं ठेकेदार क्या क्या गुल खिला रहे हैं। गत ३० मई, ८८ को दिन में चांग गांव के शराब के ठेकेदार की जीप भिवानी से चांग की तरफ आ रही थी। जीप में सवार ठेकेदार के चेहते एवं पार्टनर शराब में धुत थे। रास्ते में खेतों के कुयें पर पं. जयकिशन शर्मा मित्ताथल निवासी की लड़की पानी भर रही थी। ठेकेदार के गुण्डों ने जीप रोककर उस लड़की को बुरा-भला कहा और जबरन इज्जत लुटने की कोशिश की। लेकिन लड़की द्वारा शोर मचाने पर उसका पिता भाग कर आगया। जिससे लड़की तो सुरक्षित रही और इन गुण्डों ने पं० जी को पीटा व जीप में डालकर चांग ठेके पर ले आये। बाद में उनका लड़का भी आ गया। उन दोनों को बुरी तरह पीटा और शोर मचा दिया कि यह चोर है। वह बुरी तरह चिल्ला रहे थे कि हमें बचाओ। बस अड्डे पर काफी लोग गांव के इकट्ठे होगये और ठेकेदार से ठेका खोलने को कहा। लेकिन ठेकेदार ने धमकी दी कि भाग जाओ, वरना गोली मार दूंगा। कुछ समय के बाद मित्ताथल गांव से ६-७ ट्रैक्टर आदमियों के भरकर आये, तब तक पुलिस भी वहां आ चुकी थी। अगर उस समय पुलिस नहीं होती तो वहां बहुत बड़ा हादसा हो सकता था। लोगों में अपार क्रोध था। पुलिस ने ठेका खुलवाकर पिता पुत्र को बाहर निकलवाया, दोनों का पीट-पीटकर बुरा हाल कर रखा था। बाद में उन्हें भिवानी हस्पताल में इलाज के लिए दाखिल करवाया और चांग गांव की पंचायत ने अपने गांव व निकट के गांव में मुनादी करवादी कि इस ठेके से कोई शराब न खरीदे और ठेके के चारों ओर गांव की तरफ से पहरा चालू कर दिया है।

लगभग २० दिन तक एक भी बोतल नहीं बिकने दी। बीच में ठेकेदार ने चांग में कई गांवों की पंचायत की, लेकिन पंचों ने स्पष्ट कहा कि उन दोषियों को पंचायत में पेश करो और पंचायत मित्ताथल गांव में की जावे। जब तक फैसला नहीं होता, तब तक एक भी बोतल नहीं बिकने देंगे। पुनः १९-६-८८ को मित्ताथल गांव में लगभग १५ गांवों की पंचायत हुई और पंचायत में उन दोषी ठेकेदारों ने अपने मुंह में खोंसड़ा (जूता) लेकर पं० जयकिशन से क्षमा मांगी और पंचायत ने उन पर एक कोड़ी का जुर्माना किया। उसके बाद ठेके से पहरा उठाया गया और साथ में यह भी फैसला लिया गया कि १ जुलाई तक यह ठेका बस अड्डे से हटाकर दो सौ गज दूर रखा जायेगा। चांग की पंचायत की जिम्मेवारी लगाई कि अगर एक तारीख तक ठेका नहीं हटाया जावे तो पंचायत को सूचित करें। ज्ञातव्य है कि यह ठेका ७॥ लाख का उठा है। ठेके में ग्राम भाटला, खांडा, झोझूकलां आदि गांव के लोग हिस्सेदार हैं। शराब सब पापों की जड़ है, शराब से करलो किनारा, वरना जीवन है अंधियारा। हम सभी ग्रामवासियों का नैतिक कर्त्तव्य है कि अपने गांव में शराब की अवैध बिक्री को रोकें और स्वयं शराब न पीयें। सरकार की भी नैतिक जिम्मेवारी है कि अवैध शराब की बिक्री पर तुरन्त रोक लगाये। ठेकेदारों का उत्पात रोकने के लिए सरकार अंकुश लगाये, तभी भ्रष्टाचार पापाचार रुक सकता है।

ग्राम भगाना (हिसार) में शराबबन्दी अभियान तेज

ग्राम भगाना जि. हिसार में अवैध शराब की बिक्री जोरों पर थी। वहां दो खुंखार शराबियों ने शराब पीकर उधम मचाया। उपर्युक्त कारणों से परेशान होकर सारे गांव की १ जून को पंचायत हुई। जिसमें एक नियम बनाया। गांव में कोई भी शराब की बिक्री नहीं करेगा। इसका उल्लंघन करने पर सौ रुपये दण्ड किया जावेगा। अब तक ५ शराबी गलियों में बकवास करते पाये गये। दण्ड द्वारा ७००) की प्राप्ति हुई।

—अतरसिंह आर्य

श्रीमद्दयानन्दोपदेशक महाविद्यालय में प्रवेश

सभी सज्जनों को यह जानकर अति हर्ष होगा कि स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती की पुण्य भूमि 'वैदिक साधन आश्रम' यमुनानगर में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रयत्नों से पुन. त्यागी, तपस्वी, सदाचारी, कर्मनिष्ठ प्रचारक, प्रबुद्ध शिक्षा शास्त्री तैयार करने के लिए सिद्धांत शिरोमणि तथा शास्त्री की मान्यता प्राप्त उपाधि का प्रवेश १५ जुलाई तक किया जा रहा है। प्रवेशार्थी निकट भविष्य में शीघ्र प्रचार एवं साक्षात्कार से प्रवेश प्राप्त करें। यहां पठन-पाठन के साथ भोजन व आवास व्यवस्था सर्वथा निःशुल्क रहेगी। प्रारम्भ में केवल मात्र २००) प्रवेश शुल्क होगा। १६ वर्ष से अधिक, अविवाहित और दसवीं पास छात्रों को ही प्रवेश दिया जायेगा। ऋतु अनुकूल वस्त्र एवं बर्तन भी साथ लायें।

प्रबन्धक—श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री
श्रीमद्दयानन्दोपदेशक महाविद्यालय शादीपुर, यमुनानगर, हर०

दयानन्द-दिग्दर्शन

दयानन्द दिवाकर से दीखे,
भारत भू के नभ-मण्डल में।
अज्ञान तिमिर कर दिया छिन्न,
हुआ वेदप्रकाश भूमण्डल में ॥१

लेकर कर में वह तर्क तुला,
तोला था सत्य और भ्रम को।
पानी का पानी दिया बता,
बिलगाया दूध जल के भ्रम को।
पाखण्डों को कर खण्ड-खण्ड,
किया दमित दुष्ट दल के दम को।
तड़का तड़ित-सा मेघ-मण्डलों के बीच,
प्रकाश में खड़ा किया आज लाये हमको। २

बन्धन में जकड़ी-सी अकड़ी-सी, पड़ी थी बेचारी नारी,
करुणा कलित ऋषि तन मन भाई थी।
विधवा बिलखती थी गली-गली घर-घर,
देखो तो हां जबरन आग पे चढ़ाई थी।
तारो कोई हमें आप जैसे बछड़े को धाय,
त्राहि-त्राहि की तो यहां लगती दुहाई थी।
विधवा विवाह का जिसने फिर से चलन किया,
डोली अबलाओं की हां फिर से सजाई थी ॥३

जन्म-जात ऊंच-नीच माना था हमी नें देखो,
ऋषि ने ही आन वर्ण-व्यवस्था सिखाई थी।
जाति से न बनता है कोई भी महान् यहां,
कर्म से महानता को रीत हां सिखाई थी।
दलित पतित थे जो अन्त्यज कहाते थे,
उनके भी लिए हां प्रीत ऋषि ने जगाई थी।
देखो खोल दिया था हां शुद्धि का वह बन्द द्वार,
बिछुड़ों के लिए कीनी घर में समाई थी ॥४

—प्रो० धर्मचन्द्र विद्यालंकार 'समन्वित'
सनातन धर्म कालेज पलवल, फरीदाबाद

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

शुभ कार्य आरम्भ करने से पहले हवन करो

हमारे ऋषि-मुनि महात्माओं ने हम सब गृहस्थियों के लिए एक परम्परा बांधी थी कि कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ करने से पहले हवन अवश्य करो। इसी उद्देश्य को मध्य नजर रखते हुए सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने वर्षा होने के बाद दिनांक २६-६-८८ को प्रातः ७ बजे ढाणी में हवन करके बिजाई शुरु करवाई तथा ६ बजे ग्राम कंवारी में नव गृह-प्रवेश के उपलक्ष्य में श्री लक्ष्मीनारायण के हवन किया। इस अवसर पर क्रांतिकारी जी ने हवन के लाभों पर प्रकाश डाला। साथ में बच्चों को माता-पिता व बुजुर्गों को नमस्ते करने की प्रेरणा दी।

—इन्द्रसिंह आर्य उपमन्त्री आर्यसमाज, कंवारी

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर को हरयाणा सरकार का ग्यारह सहस्र रुपये का अनुदान

यमुनानगर : विगत दिनों यहां श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर के वार्षिकोत्सव पर बहन डा० कमला वर्मा, स्वास्थ्य मन्त्री हरयाणा सरकार को भी आमन्त्रित किया गया था; परन्तु वे अपनी राजनैतिक व्यस्तता के कारण स्वयं उत्सव में नहीं पहुंच सकीं और उन्होंने अपने निजी सहायक श्री गुप्त व यमुनानगर मण्डल भाजपा के अध्यक्ष श्री रोशनलाल को अपनी प्रतिनिधि के रूप में भेज दिया। उत्सव में श्री रोशनलाल ने बहन डा० कमला वर्मा की ओर से हरयाणा सरकार द्वारा ग्यारह सहस्र रुपयों के अनुदान देने की घोषणा की।

—इन्द्रजीतदेव उपमन्त्री

भांडवा में ब्रह्मचर्य, व्यायाम एवं सदाचार प्रशिक्षण शिविर तथा आर्य सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न

ग्राम भांडवा (भिवानी) में दिनांक २३ से २९ मई तक व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। आर्य वीरदल के शिक्षक श्री रामफल आर्य के द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। इसमें २७ छात्र सम्मिलित हुए। दिनांक २९ व ३० मई को आर्यसमाज का चौथा जलसा प्रभावशाली प्रचार के साथ सम्पन्न किया गया। लगभग चालीस ग्रामों से शताधिक आर्यों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। आर्यसमाज के गणमान्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, आर्य भजनोपदेशक पं. ताराचन्द वैदिक तोप, वानप्रस्थी देवकरण, श्री राजपाल आर्य एम. ए. संस्कृत प्रवक्ता महाविद्यालय दूबलधन, पं. भरतसिंह शास्त्री, नानकचंद गुरु आदि उपदेशकों ने वैदिकधर्म का नाद बजाया। ब्र. विश्वमित्र एवं ब्र. अजयकुमार जी के भव्य व्यायाम प्रदर्शन किया। चालीस जनेऊ दिये गये। कार्यक्रम का प्रभाव बहुत अच्छा रहा। व्यय लगभग ३१००) पूरा होगया।

—धर्मपाल आर्य 'वीर' शास्त्री मन्त्री

ग्राम लेघा की गोशाला में गउवों की सेवा का सराहनीय कार्य

गत तीन वर्ष पहले सेठ शिवचन्दराय आर्य (जालन्धर) ने गांव से एक किलोमीटर दूर ग्राम जीतवानवास के निकट अपनी दस एकड़ जमीन गोशाला के लिए देकर विधिवत् गोशाला की स्थापना की। इस गोशाला में दो सौ स्थायी गउवें हैं। आठ सेवक मासिक वेतन पर कार्यरत हैं। लगभग २०-२५ हजार रुपये मासिक खर्च पड़ता है। सारा खर्च स्वेच्छा से सेठ जी ही अपनी नेक कमाई में से करते हैं। इस खुश्क एवं मरुस्थल इलाके में गोशाला खोलकर सेठ जी ने बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। गौ बचेगी देश बचेगा। इस समय ऐसे गौ-भक्तों व दानियों की अत्यन्त आवश्यकता है। सेठ जी ने लगभग २।। मास का वानप्रस्थ ले लिया है।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४) रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजी० नं० 23207/73



ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख्य पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री,

२३ आषाढ़ २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्क ३२ १४ जुलाई, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

यज्ञ-विधि को महर्षि दयानन्द के अनुरूप करें

—आचार्य वेदभूषण अधिष्ठाता, अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद-२७

वास्तव में महर्षि दयानन्द शास्त्रों के अद्भुत मर्मज्ञ थे। अग्निहोत्र विधि के संयोजन में महर्षि ने जिस सूझ-बूझ का परिचय दिया है, उस से पता चलता है कि महर्षि परम वैज्ञानिक व कर्मकांड के ज्ञाता थे।

महर्षि दयानन्द के समय अग्निहोत्र विधि में वैसे ही अनर्थ चल रहा था, जैसे आज आर्यसमाज के क्षेत्र में चल रहा है।

एक दर्जन से भी अधिक गृह्य सूत्र प्रचलित थे, जिनमें परस्पर यज्ञ विधि भेद दृष्टिगोचर होता था।

तब महर्षि ने कुछ चुने हुए आचार्यों के गृह्य सूत्रों का गहन अध्ययन कर, सबका वैज्ञानिक आधार पर सामंजस्य कर संस्कार विधि का प्रणयन किया। किन्तु आज विद्वानों एवं पुरोहितों के आलस्य व स्वाध्यायहीनता के कारण यज्ञ व संस्कारों की विधि में मनमाने दिल चाहे उलटफेर हो रहे हैं।

प्राय: पुरोहितों में असन्तोष रहता है कि उन्हें दक्षिणा बहुत ही कम मिलती है। इसीलिए अनेक पुरोहित अपने बच्चों में भी वैश्यवृत्ति भर रहे हैं। परम्परागत पौरोहित्य के कार्य को वे तिलांजलि दे रहे हैं। इसमें जहां यजमानों की प्रवृत्ति का दोष है कि विद्वानों का सम्मान न करना तथा २१ अथवा ३१ रुपये को दक्षिणा मात्र देकर विद्वान् को विदा करना, जिसका परिणाम यह हो रहा है कि यजमान की मृत्यु हो जाने पर अन्त्येष्टि क्रिया के लिए भी समय पर पुरोहित तक नहीं मिल रहे। इस पर यजमानों को गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

किन्तु हमारे पुरोहितों को भी सोचना चाहिए कि वे विधिहीन यज्ञ व संस्कार न कराया करें। महर्षि की संस्कार विधि को ध्यान से पढ़ा करें और उसी प्रकार से विधिपूर्वक यज्ञ व संस्कार कराया करें। यज्ञ व संस्कारों में मनचाहे परिवर्तन परिवर्द्धन व संशोधन से यज्ञ भी एक पारम्परिक तमाशा मात्र बनकर रह जायेगा।

यज्ञ में किसी भी मन्त्र को कहीं पर भी विनियुक्त कर देने की दुष्प्रवृत्ति को हमें रोकना होगा।

यज्ञ और संस्कारों में जो विधि विधान हैं, उनके पीछे वैज्ञानिक रहस्य छिपे हैं। मन्त्रों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी होता है। जिस सन्दर्भ में यज्ञ किया जाता है, उस सन्दर्भ का पृथक्-पृथक् विनियोजन महर्षि ने कर रखा है। उसे समझकर ठीक विधि सहित यज्ञ कराना पुरोहितों का दायित्व है। यदि केवलमात्र एक ही प्रचलित पद्धति से ही संस्कार अथवा विशिष्ट यज्ञ करते हैं तो फिर पुरोहित की आवश्यकता ही क्या है?

वास्तव में आर्यजगत् में प्रचलित यज्ञ को तमोगुणी यज्ञ ही कहा जायेगा। योगेश्वर कृष्ण ने गीता में सत्व, रज और तमोगुणी भेद यज्ञ के किये हैं। उस आधार पर हमारा यज्ञ तामसिक कोटि में ही गिना जायेगा।

क्योंकि हम यज्ञ में कुछ भयंकर भूलें अनजाने में कर रहे हैं। यज्ञ के प्रति हमारी उपेक्षा का ही फल है कि यजमान पुरोहितों की उपेक्षा करने लगता है। क्योंकि कर्म जैसा होगा, फल भी वैसा ही होगा।

देखिए हमारे यज्ञ में जो भीषण दोष हैं, उनकी ओर ध्यान आकृष्ट करना ही हमारे लेख का उद्देश्य है।

ध्यान दीजिए कहीं आप भी तामसिक यज्ञ तो नहीं कराते? यदि आप कपास अथवा रूई की बत्ती बनाकर यज्ञ-कुण्ड में अग्नि का आधान करते हैं तो यह निश्चय ही भयंकर दोष है।

कपास या कपड़े को जलाने से वायुमण्डल में दुर्गन्ध फैलता है। अत: यज्ञ-कुण्ड में कपास का प्रयोग यज्ञ को भ्रष्ट करना मात्र है। कपास का प्रयोग केवल दीप में ही किया जाना चाहिए, न कि यज्ञ-कुण्ड में। देखिये संस्कार विधि में महर्षि लिखते हैं कि—

ओम् भूर्भुव: स्व:। इन तीन महाव्याहृतियों से घृत दीप प्रज्वलित कर फिर उससे कपूर आदि प्रज्वलित कर अग्न्याधान करें।

इससे स्पष्ट हो जाता है यज्ञ-कुण्ड में कपास या रूई का प्रयोग बिल्कुल नहीं होगा। दूसरे प्रत्येक यज्ञ के अवसर पर घृत दीप अवश्य रखा जाना चाहिए।

दीपक में कपास तो नाममात्र की जलती है, केवल बत्ती के सामने की नोकभर। दीपक में कपास केवल घी पहुंचाने मात्र का काम करती है। पर यज्ञ में तो पूरी की पूरी कपास जल जाती है।

यदि दस हजार घरों में भी मान लीजिए कि कपास की बत्ती जलाई जाये तो प्रतिदिन हम वातावरण में कितना प्रदूषण बढ़ा रहे हैं? यह गम्भीरता से विचारने की बात है। इस प्रथा को दृढ़ता से रोका जाना चाहिए।

दूसरा यज्ञ में गाय के घृत का ही प्रयोग किया जाना चाहिये। भैंस का घृत तमोगुणी होता है।

आप विचारिये कि महर्षि ने तमोगुण के दो लक्षण बताये हैं—प्रथम आलस्य, दूसरा जाड्यता। भैंस में ये दोनों गुण स्पष्ट देखे जा सकते हैं। इससे स्पष्ट है कि भैंस के घी में भैंस के ही गुण होते होंगे। जो भैंस के घी से यज्ञ करता है, वह यज्ञ तामसिक ही हो जायेगा।

पुरोहितों को चाहिए कि वे यजमान को बतला दें कि गाय का घी यज्ञ के लिए अनिवार्य है। अन्यथा तुम यज्ञ के पुण्य से वंचित ही रह

(शेष पृष्ठ ६ पर)

देनी हो जान तो करें मद्यपान

—दिलीप तिवारी

मिल्टन ने कहा था कि संसार की सारी सेनायें मिलकर इतने लोगों एवं सम्पत्ति को नष्ट नहीं कर सकती, जितनी शराब कर देती है।

मृत्यु दर की दृष्टि से देखा जाये तो शराब का नशा सबसे घातक नशा है। भारतवर्ष में प्रतिवर्ष लगभग तीन हजार लोग शराब पीने के कारण आकस्मिक रूप से मर जाते हैं और इतने ही लोग जहरीली शराब पीने के कारण अपनी नेत्र दृष्टि खो बैठते हैं। यदि आप कभी कानपुर से झाँसी अथवा चित्रकूट के लिए गये होंगे, तो आपने देखा होगा कि ट्रेन पर कुछ अन्धे युवक मूंगफली, बिस्कुट या कुछ ऐसे ही खाद्यपदार्थ बेचते नजर आयेंगे। पूछने पर पता चला कि यह सभी युवक जहरीली शराब पीने के कारण अपनी नेत्र-ज्योति गंवा बैठे। भारत जैसे गरीब देश में जहाँ के लोगों को ठीक से दो वक्त की रोटी नसीब न हो रही हो, समस्त जनता को पीने के लिए जल तक न उपलब्ध हो रहा हो, वहां के लोग प्रतिवर्ष सोलह अरब रुपये की शराब पी जाते हैं। यह अत्यन्त दुखद एवं शमनाक स्थिति है।

शराब एवं भांग को छोड़कर अन्य सभी मादक द्रव्यों पर सरकार ने मादक द्रव्य अधिनियम (नारकोटिक्स एक्ट) के अन्तर्गत प्रतिबन्ध लगा दिया है। इस अधिनियम के अनुसार यदि कोई व्यक्ति मादक पदार्थों का उपयोग अथवा इस कार्य में किसी तरह संलग्न पाया जाता है तो उसे कम से कम दस वर्ष की कैद और पाँच लाख रुपये तक का जुर्माना होगा।

सरकार ने शराब को मादक द्रव्य अधिनियम से इसलिये मुक्त रखा है कि सरकार का तर्क है कि शराब के कारण उसे करोड़ों रुपये का राजस्व प्राप्त हो रहा है। इस व्यवसाय में लाखों लोग अपनी रोजी-रोटी कमा रहे हैं। शराबबन्दी करके इन लाखों लोगों को रोजगार दे पाना सरकार के बस का काम नहीं है। सरकार को मिलनेवाले राजस्व से अधिक महत्त्वपूर्ण है 'जनता का स्वास्थ्य एवं चरित्र।' यहाँ पर इस का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि जनता पार्टी ने राजस्व की चिन्ता न करते हुए शराबबन्दी लागू करदी थी।

आज से लगभग दस वर्ष पूर्व दिसम्बर १९७८ में कोयला खादान मजदूर क्षेत्र धनबाद में विषैली शराब से हुई दुर्घटना अब तक की सबसे बड़ी शराब दुर्घटना है। इसमें लगभग ३०० लोगों की मृत्यु होगई थी और ४०० लोग लकवे एवं अन्धेपन का शिकार होगये। कुछ अन्य प्रमुख घटनायें इस प्रकार हैं—

सन् १९६९ में मद्रास में १२०, सन् १९७१ में दिल्ली में १०८, जुलाई १९७६ में मद्रास में १५०, अक्तूबर ७६ में इन्दौर में १२७, फरवरी १९७७ में अहमदाबाद में १२० लोग विषाक्त शराब के कारण आकस्मिक एवं सामूहिक रूप से मरे। २१ जून, १९८७ को उत्तर प्रदेश का जहानाबाद शराब कांड हुआ। जिसमें ३८ व्यक्तियों की मृत्यु होगई और लगभग इतने ही लोगों ने अपनी प्यारी आंखें खो दी। कितना ही पुराना शराबी क्यों न हो, शराब को चखकर वह कभी भी यह नहीं समझ पाता कि शराब जहरीली है अथवा सामान्य? शराब असली है अथवा नकली? विज्ञान अब बहुत प्रगति कर चुका है। अतः सरकार को चाहिए कि वो किसी ऐसी सर्वसुलभ विधि का आविष्कार करे, जिससे कि शराबियों को यह ज्ञात हो सके कि वे जिस शराब को पीने जारहे हैं, वह कहीं हानिकारक एवं विषैली तो नहीं?

शराब एक नशीला विषपान है। इसमें इथाइल अल्कोहल के साथ मिथाइल व पोपाइल अल्कोहल तथा कोटोन आदि तत्व मिले रहते हैं। उत्तम प्रकार की शराबों में इन्हें पूरी तरह से दूर कर दिया जाता है। लेकिन औसत मात्रा की शराबों में ये यथेष्ट मात्रा में पाया जाता है। साथ ही इसमें रैक्टीफाइड स्प्रिट की जगह मिनेथड स्प्रिट का उपयोग किया जाता है। देशी भट्टियों में गुड़, महुआ, चावल, सौंफ, सन्तरा, चकन्दर आदि से देश के हर भाग में अवैध शराब बनाई जाती है। ऐसा अनुमान है कि इस तरह की शराबों में पचास करोड़ रुपये की पूंजी एवं बीस लाख लोग रोजगार में लगे हैं। यह शराब अनेक बार कच्ची रहने व अनेक अशुद्धियों के कारण बहुत घातक व विषैली बन जाती है। इसी के फलस्वरूप जाने अनजाने बहुत बड़ी दुर्घटना हो जाती है।

विगत १४ दिसम्बर, १९८७ को हमारे भाई अपने परिवार के साथ रायबरेली से लखनऊ आरहे थे। जिस टैंपों पर वे सवार थे, उस पर एक बसवाले ने अपनी बस चढ़ादी। परिणामस्वरूप उनके दो बच्चे, टैंपों ड्राइवर एवं अन्य तीन लोग काल कवलित होगये और हमारे बड़े भाई और भाभी सदा के लिए अपाहिज। शराब के नशे में आज अनेक दुर्घटनायें होती हैं, अनेक लोग इन दुर्घटनाओं में काल कवलित हो जाते हैं। अनेक लोग सारे जीवन के लिए अपाहिज हो जाते हैं।

शराब पीनेवाले लोगों की मान्यता है कि शराब से चिंता, पीड़ाओं और तनाव से मुक्ति मिलती है एवं शरीर में स्फूर्ति आती है। किंतु स्वास्थ्य वैज्ञानिकों एवं चिकित्सकों का कथन इस मत के विरुद्ध है। चिकित्सकों का कथन है कि शराब रक्त में उत्तेजना पैदा करती है। जिससे उसको पीनेवाला काल्पनिक संसार में पहुंच जाता है। जिसको एक बार शराब का आनन्द मिल जाता है, वह व्यक्ति बार-बार इस आनन्द को प्राप्त करने के लिए शराब को पीने लगता है। नशा उतर जाने पर नशेड़ी व्यक्ति को यह दुनियां नीरस एवं शून्य लगती है। उसकी वास्तविकता उसे कष्ट और पीड़ा पहुंचाती है। शराब का नशा चढ़ने पर व्यक्ति पुनः एक काल्पनिक लोक में पहुंच जाता है। इस तरह शराबी व्यक्ति को यह अनुभव होता है कि इस शराब से उसे अत्यन्त आनन्द की प्राप्ति हो रही है। वास्तव में यह आनन्द एक धोखा होता है और इसका परिणाम भी अत्यन्त घातक निकलता है। वास्तव में शराब से शरीर को जो ऊर्जा प्राप्त होती है, वो शराब के द्वारा रक्त में उत्पन्न उत्तेजना के कारण होती है। इसका परिणाम घातक होता है, क्योंकि शराब शरीर की अन्दरुनी गर्मी को निकालकर ऊपर ला देती है। लेकिन वास्तविक गर्मी निकल जाने के कारण शराबी का शरीर शिथिल पड़ जाता है। चिकित्सकों का कथन है कि शराब भोजन का अंग नहीं है, क्योंकि शराब न तो शरीर में पोषण तत्वों का निर्माण करती है और न ही किसी प्रकार की ऊर्जा ही शरीर को प्रदान करती है। वास्तव में शराब पीने से कोई लाभ नहीं है, उल्टे शराब पीनेवाले अनेक रोगों का शिकार हो जाते हैं। आदमी शराब को पीता और शराब आदमी को पी जाती है। शराब के विषय में महात्मा गांधी का कथन था कि "शराब शराबियों से सिर्फ उनका धन ही नहीं हरती, बल्कि उनकी बुद्धि का भी विनाश कर डालती है।" शराब के नशे में व्यक्ति उचित, अनुचित, लाभ-हानि, पुण्य-पाप, यश-अपयश और यहां तक कि मां, पत्नी और बहन का भेद भी भूल जाता है।"

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की जनता से अपील

शराबबन्दी समर्थकों को ही ग्राम पंचायत चुनाव में सफल करें

(केदारसिंह आर्य कार्यालयाधीक्षक द्वारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक १० जुलाई, ८८ रविवार को सभा कार्यालय सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ रोहतक में सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इसमें सारे हरयाणाभर के प्रमुख आर्यनेता सम्मिलित हुए।

बैठक में हरयाणा में दिन-प्रतिदिन शराब जैसी सामाजिक बुराइयों की वृद्धि होने पर गहरी चिन्ता प्रकट की गई। इसके सेवन से किसान तथा मजदूरों की खून-पसीने की कमाई बर्बाद हो रही है। विवाह आदि के अवसरों पर नवयुवक शराब की मस्ती में बेहोश होकर नाचते-कूदते हैं और अनुचित गतिविधियां करके ग्रामीण शांत वातावरण को दूषित करते हैं। बहू-बेटियों को अपनी इज्जत बचानी कठिन हो रही है।

गत ४-५ वर्ष से सभा की ओर से इस बुराई को समाप्त करने हेतु शराबबन्दी अभियान चालू है। जिसके अन्तर्गत सभा के प्रचारकों द्वारा ग्रामों में शराब आदि की बुराइयों से अवगत कराकर ग्राम पंचायतों को प्रेरणा करके शराबबन्दी प्रस्ताव करवाये जाते हैं और सरकार द्वारा इन प्रस्तावों की अवहेलना करके जिन ग्रामों में शराब के ठेके खोल दिये जाते हैं, वहां सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से शराब के ठेकों पर धरणों का आयोजन किया जाता है। इस प्रकार ६० के लगभग शराब के ठेके बन्द करवाये गये हैं, परन्तु हरयाणा सरकार ने इस वर्ष ६० के लगभग और अधिक ठेके खोल दिये हैं और शराब पिलाने के लिए ठेकों के साथ अहाते खोल दिये हैं। जिन ग्रामों में शराब के ठेके बन्द होगये हैं, वहां के ग्रामों में सैनिक सरकारी कोटे से शराब लेकर तीन गुणा मूल्य पर बेचकर पंचायत के प्रस्ताव को असफल कर देते हैं।

सभा की ओर से रक्षामन्त्रालय को सुझाव दिया गया है कि भूतपूर्व सैनिकों को शराब के स्थान पर अन्य घरेलू सामग्री सस्ते मूल्य पर दी जावे और यदि सरकार शराब ही देना आवश्यक समझती है तो सैनिकों को शराब की बोतल ढक्कन खोलकर दी जावे, ताकि वे वहीं पी सकें और बेचने के लिए ग्रामों में न ले जा सकें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने हरयाणा सरकार से यह भी मांग की है कि कम से कम जिला रोहतक में पूर्व की भांति पूर्ण नशाबन्दी लागू की जावे, ताकि आसानी से शराब न मिलने पर यह बुराई बन्द हो सके। इसके बाद अन्य जिलों में भी क्रमशः पाबन्दी लगाकर हरयाणा में पूर्ण नशाबन्दी लागू हो सके। शराबबन्दी से हरयाणा सरकार को जो आर्थिक घाटा हो, वे उसका ५० प्रतिशत घाटा केन्द्रीय सरकार पूरा करे।

सभा ने हरयाणा की जनता से भी अपील करते हुए कहा है कि अगस्त मास में पंचायतों के चुनाव में उन सरपंचों तथा पंचों को सफल करें जो कि ग्राम में शराबबन्दी प्रस्ताव कराके, शराब पीने पर पूर्ण पाबन्दी लगाने का लिखित वचन देवें। ऐसे किसी भी उम्मीदवार को वोट न देवें जो शराब पीते हों। इस प्रकार शराबबन्दी प्रस्ताव पास करवाने में सुविधा हो सकेगी। यदि शराबी सरपंच बन गये तो ग्राम में शराब जैसी बुराइयां बढ़ सकती हैं।

हरयाणा सरकार का नियम है कि जिन ग्रामों की पंचायतें सितम्बर तक शराबबन्दी का प्रस्ताव भेज देंगी, उन ग्रामों में अप्रैल मास में शराब के ठेकों की नीलामी नहीं होगी। अतः सभा ने हरयाणा के सभी आर्यसमाजों तथा अन्य धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के अधिकारियों से अनुरोध किया है कि वे हरयाणा सरकार के इस नियम के अनुसार अपने-अपने निकट की पंचायतों को प्रेरणा करके शराबबन्दी प्रस्ताव पास करवाकर सितम्बर मास तक सरकार को रजिस्ट्री द्वारा भिजवा देवें। इस प्रस्ताव को पंचायत सचिव द्वारा पंचायत की कार्यवाही में अंकित करवावें। सुविधा के लिए शराबबन्दी प्रस्ताव का प्रारूप प्रकाशित किया जारहा है।

शराबबन्दी प्रस्ताव का प्रारूप

सेवा में

मानतीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा
चण्डीगढ़

हमारे ग्राम ——·····जिला ——·——···पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक···——·····में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है।

यह ग्राम सभा (पंचायत) शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत ही घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की शराबबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द की जावे और भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाये, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दूकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

दिनांक··········

सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

इस प्रस्ताव की प्रतिलिपियां रजिस्ट्री द्वारा निम्न पते पर भेजें—

१. प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान हरयाणा चण्डीगढ़
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जि०······
५. जिलाधीश ·······
६. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

सभा ने इस सामाजिक सुधार कार्य में सभी से सहयोग देने का अनुरोध किया है।

प्रवेश प्रारम्भ

कन्या गुरुकुल गणियार, त० नारनौल, जि० महेन्द्रगढ़ में प्रथम श्रेणी से नवम श्रेणी तक की कन्याओं के लिए प्रवेश प्रारम्भ है। यहां प्राचीन वैदिक वाङ्मय के साथ-साथ आधुनिक विषय जैसे अंग्रेजी, विज्ञान, चित्रकला आदि विषय भी पढ़ाये जाते हैं। कन्याओं में सुसंस्कार जागृत करने के लिए नैतिक धर्म-शिक्षा, वेद शास्त्र, दर्शन, रामायण, गीता आदि धर्म-शास्त्रों का अध्ययन कराया जाता है। वक्तृत्व कला जागृत करने के लिए श्लोकोच्चारण, वादविवाद, भाषण, सम्भाषण एवं संगीत सिखाया जाता है। शारीरिक उन्नति के लिए दौड़, कबड्डी, पी. टी., लाठी, तलवार, भाले, करांटे, योगासन आदि कराये जाते हैं।

यदि आप अपनी लड़की का बहुमुखी विकास करना चाहते हैं तो शीघ्र सम्पर्क करें। स्थान सीमित हैं, शिक्षा निःशुल्क है, केवल भोजन शुल्क लिया जाता है।

—ब्र० कलावती एम० ए० आचार्या एवं संचालिका

शादियों में फिजूलखर्ची रोकने के लिए युवकों का आह्वान

नारनौल, १० जुलाई (शीला)। बेरोजगार सेना के राष्ट्रीय संयोजक रघु यादव ने यहां से सत्रह किलोमीटर दूर मण्डी अटेली में एक बयान में कहा कि बारातों में सार्वजनिक खटकने और अटकनेवाली जो परम्परा बनती जारही है, वह है शराब की। बीयर व अन्य शराब पूरी की पूरी पेटियां डिक्की में डाले बिना बाराती रवाना नही होते। हजारों रुपये बहाने के बाद दुल्हे के आगे नाचने के नाम पर गिरते-पड़ते हैं। बैंडबाजेवाले न्यौछावर के चक्कर में धुन पर धुन बजाये जाते हैं और खाना फेरे सब लेट हो जाते हैं। हमारे लोगों की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि हम शादी विवाह के मौके पर सोना-चांदी खरीद सकें, लेकिन "पीली धातु" से लोगों को विचित्र प्यार है। इसके लेन-देन के बिना विवाह सम्पन्न हो ही नहीं सकता। पैतृक आभूषण नवीनीकरण के लिए सुनार के यहां ले जाते हैं। 'कटौती' के साथ-साथ रकम भी गंवाते हैं।

श्री यादव ने आगे कहा कि दुल्हन के वास्ते इतनी भारी साड़ी खरीदी जाती है कि बेचारी उसे एक बार पहनकर सन्दूक में बन्द कर देती है। ऐसी साड़ी न सिर्फ मंहगी होती है, बल्कि पहनने में भी असुविधाजनक होती है। दूसरी ओर ननद-भावजों को जो साड़ियां जाती हैं, वे उतनी घटिया व छोटी होती हैं कि उन्हें केवल लेन-देन में ही इस्तेमाल किया जा सकता है। इस प्रक्रिया में वे वर्षों चक्कर काटती रहती हैं और कई बार तो अपने मूल स्थान पर ही लौट आती है। दहेज में ज्यादा से ज्यादा आईटम देने की होड़-सी लगी रहती है। साधारण ग्रामीण परिवार में सोफासेट की कोई उपयोगिता नहीं है, लेकिन दहेज में सोफा अवश्य देंगे। चाहे फिर उसे तूड़ेवाले कोठे में ही क्यों न धरना पड़े।

श्री यादव ने युवाओं को आह्वान किया कि वे इस झूठी शान-शौकत को छोड़कर इन समारोहों को सादगी और सरलता से सम्पन्न करने का निश्चय करें। इससे फिजूलखर्ची रुकेगी और इनकी गरिमा भी बढ़ेगी। इसके लिए महंगे कार्ड न छपवाये जायें। बारातियों की संख्या कम से कम रखी जाये। महंगे किराये के वाहनों से बचा जाये। लोक गीतों के गायन को महत्त्व दिया जाये। इस प्रकार एक आम विवाह के आयोजन में १५ से २० हजार रुपये तक आसानी से बचाये जा सकते हैं। इस राशि का उपयोग नव-दम्पत्ति के लिए नया उद्योग धन्धा शुरु करने के लिए किया जा सकता है। फिजूलखर्ची को लेकर हमें अपने बच्चों की स्वरोजगार के लिए सहायता करनी चाहिए।

उपदेशकों तथा भजनमण्डलियों की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को वेदप्रचार कार्य के विस्तार के लिए योग्य, विद्वान् उपदेशकों तथा प्रभावशाली भजनमण्डलियों की आवश्यकता है।

इच्छुक महानुभाव अपनी शैक्षणिक योग्यता एवं प्रचार कार्य के अनुभवों के प्रमाणपत्रों सहित स्वलिखित आवेदन-पत्र शीघ्र भेजें। वेतन योग्यता के अनुसार दिया जायेगा। —सभाप्रधान

सेवा-निवृत्त ओवरसीयर की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्माणाधीन भवन बनाने तथा अन्य मुरम्मत आदि के कार्य करवाने हेतु एक सेवा-निवृत्त ओवरसीयर की तुरन्त आवश्यकता है। सेवाभाव रखनेवाले महानुभाव आवेदन करें। वेतन योग्यता अनुसार दिया जायेगा। —सभाप्रधान

मद्यनिषेध पर प्रशिक्षण शिविर व हस्ताक्षर अभियान

भिवानी, १० जुलाई (निस)। नेहरु युवा केन्द्र भिवानी द्वारा इसी महीने में मद्यनिषेध पर युवा नेतृत्व प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जायेगा। इस शिविर में नशा सेवन क्या है? नशा सेवन के स्रोत, नशा सेवन से हानियां, नशा सेवन करनेवाले युवाओं के वर्ग, नशाबन्दी की सरकारी नीति, शराब के ठेके खोलने की सरकारी नीति व नशा सेवन के उपचार आदि विषयों पर चर्चा की जाएगी। इन प्रशिक्षण शिविरों में सामाजिक कार्यकर्ता, चिकित्सक, मनोरोग चिकित्सक, नशाबन्दी समिति के अधिकारी, राज्य सरकार के एक्साइज विभाग के अधिकारी आदि सन्दर्भ व्यक्तियों के रूप में आमन्त्रित किये जायेंगे। इस कार्यक्रम में वीडियो फिल्म मद्यनिषेध सम्बन्धी साहित्य आदि का भी दृश्य श्रव्य सामग्री के रूप में प्रयोग किया जायेगा।

भिवानी जिले से १५ सितम्बर, ८८ तक १०००० व्यक्तियों के नशा सेवन के खिलाफ अपील पर हस्ताक्षर करवाये जायेंगे। अपील २ अक्तूबर, ८८ को युवाओं द्वारा माननीय मुख्यमन्त्री हरयाणा को समर्पित की जायेगी।

२ अक्तूबर, ८८ से ३१ दिसम्बर, ८८ तक इस पुनीत कार्य के द्वितीय चरण में नशा सेवन से बचाव के उपायों पर बल दिया जायेगा। रैलियां आयोजित की जायेंगी, ग्राम पंचायतों से शराब के ठेके बन्द करवाने के लिए प्रस्ताव पारित करवाये जायेंगे, जिला अधिकारियों को ज्ञापन दिये जायेंगे और साथ-साथ नशा सेवन के खिलाफ सांस्कृतिक कार्यक्रम, फिल्म प्रदर्शन, विभिन्न प्रतियोगितायें व प्रदर्शनियां आयोजित की जायेंगी। इस चरण में नशा सेवन करनेवाले युवाओं व अन्य व्यक्तियों का उपचार भी करवाया जायेगा। इस कार्यक्रम का तृतीय चरण १ जनवरी, ८९ से ३१ मार्च, ८९ तक आयोजित किया जायेगा। जिसमें शराब के ठेके बन्द करवाने के लिए धरने, गैर कानूनी तरीके से शराब बेचनेवालों का घेराव, नशा सेवन करनेवालों का उपचार आदि कार्य किये जायेंगे।

अपनी रक्षा आप करो

कोई नहीं है रक्षक यहां, रक्षक बने भक्षक यहां।
अपनी रक्षा आप करो।

जो तुमने रक्षक चुने वो सब विश्वासघाती हैं।
खून चूसनेवाले ये अंग्रेजों के गोती-नाती हैं।
ये हैं सेकिण्डहैंड अंग्रेज समझो ये हैं छुरी तेज।
इनसे किनारा साफ करो ॥ १

कर्मचारी अधिकतर रिश्वतखोर बेईमान हैं।
इनकी दुष्टता के कारण मचा यहां घमासान है।
ये बने दुष्टों के साथी दीन के नहीं हिमायती हैं।
मत इन आगे विश्राम करो ॥ २

कब तक देखते सहते रहोगे ये अत्याचार यहां।
अपनी रक्षा हेतु हों खड़े करदो ललकार यहां।
जहां भी मिले कोई अन्यायी एकदम करदो उसकी सफाई।
अब ना इनको माफ करो ॥ ३

मरने से क्या डरना जब सबको एक दिन मर जाना।
देश धर्म पर सिर कटाकर नाम अमर कर जाना।
धार लो अपनी बाहों में कांटे पड़े हैं राहों में।
'बलवन्त' रास्ता साफ करो ॥ ४

—बलवन्तसिंह आर्य, ठसका

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की विद्या परिषद् द्वारा आयोजित धार्मिक परीक्षाओं का परिणाम

गतांक से आगे—

धर्म-प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल शाहबाद—1417 से 1421, 1423, 1425
विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र—1427, 1432, 1447 से 1449, 1454, 1455
कन्या गुरुकुल पंचगांव, भिवानी—1507
आर्य कन्या माध्यमिक विद्यालय जगाधरी—1514, 1516, 1518, 1521, 1522, 1531
आर्य कन्या महाविद्यालय नरवाना, जींद—1532, 1537, 1542, 1543
मुसद्दीलाल आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल अम्बाला छावनी—1552, 1567, 1568
आर० डी० आर्य कन्या हाई स्कूल करनाल—1582, 1583, 1587, 1593, 1597, 1598, 1601, 1603, 1604, 1606, 1607, 1612, 1616, 1618, 1619, 1625
दयानन्द मिडिल स्कूल नारायणगढ़—1626 से 1632, 1634 से 1638, 1640 से 1651
आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत—1447, 1448, 1455, 1460, 1461, 1470 से 1475, 1477, 1480, 1483, 1490, 1492, 1499, 1504, 1541, 1542, 1590

द्वितीय श्रेणी

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल शाहबाद—1424, 1426

विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र—1429, 1431, 1435, 1450, 1458 से 1460, 1464, 1469

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल कालका—1476, 1479, 1482, 1484, 1487, 1488, 1499, 1500

धर्म-भूषण

प्रथम श्रेणी

विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र—974, 977, 978, 981 से 984, 989 से 994, 998 से 1000

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल कालका अम्बाला—1001 से 1007, 1009, 1010, 1012 से 1014, 1016, 1021, 1028, 1031, 1033, 1034

आर्य कन्या माध्यमिक विद्यालय जगाधरी—1040 से 1042, 1044, 1045

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा—1125, 1146

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत—1161, 1162, 1165 से 1167, 1169, 1177, 1180, 1184, 1189, 1190, 1195 से 1197; 1200, 1214, 1286, 1289, 1298, 1300

द्वितीय श्रेणी

विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र—980, 985, 987, 988, 995 से 997

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल कालका, अम्बाला—1011, 1015, 1017 से 1019, 1022, 1023, 1026, 1030

गुरुकुल पंचगांव भिवानी—1036

आर्य कन्या माध्यमिक विद्यालय जगाधरी—1043, 1048, 1049, 1052, 1054

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा—1060, 1065, 1075, 1079, 1093, 1099, 1107, 1118, 1127, 1135, 1142, 1144; 1148; 1149

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत—1159, 1164, 1172, 1173, 1179, 1181, 1183, 1185, 1188, 1199, 2201, 1202, 1212, 1227 से 1230, 1232, 1285, 1287, 1290 से 1292, 1302, 1309, 1311, 1313, 1330, 1335, 1342, 1345, 1353

तृतीय श्रेणी

विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र—975, 976

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल कालका—1008, 1020, 1024, 1027

गुरुकुल पंचगांव भिवानी—1037 से 1039

आर्य कन्या माध्यमिक विद्यालय जगाधरी—1046, 1047, 1050; 1051, 1053

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा—1055, 1057, 1061, 1064, 1068, 1072, 1073, 1076, 1078, 1080, 1081, 1083; 1085 से 1088, 1091, 1092, 1094 से 1098, 1102, 1104 से 1106, 1108, 1111 से 1117, 1120, 1123, 1124, 1126, 1128, 1130 से 1134, 1136, 1137, 1139, 1140, 1143, 1145, 1151 से 1153, 1157

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत—1160, 1163, 1168, 1175, 1176, 1178, 1186, 1187, 1191 से 1194, 1205, 1207, 1208, 1211, 1213, 1215, 1216, 1220, 1221, 1225, 1226, 1231, 1234, 1236, 1239, 1242, 1243, 1246 से 1249, 1253, 1255; 1262, 1263, 1268, 1270, 1273, 1274, 1276, 1280, 1281, 1284, 1288, 1293, 1295 से 1297, 1299, 1301, 1303 से 1308, 1310, 1314, 1317 से 1320, 1322, 1323, 1326, 1328, 1329, 1333, 1336, 1338 से 1340, 1343, 1347, 1349 से 1352, 1354, 1356 से 1361

धर्माधिकारी

प्रथम श्रेणी

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल (बन्नू) कालका—619 से 622
आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा—666
आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत—781 से 784, 794, 796, 798, 801, 802, 807, 810

द्वितीय श्रेणी

वैदिक कन्या गुरुकुल विद्यापीठ पंचगांव, भिवानी—623
आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा—635, 636, 639
आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत— 764 से 767, 770 से 772, 775 से 779, 785, 788, 792, 797, 799, 804, 808, 809, 815, 816, 819

तृतीय श्रेणी

वैदिक कन्या गुरुकुल विद्यापीठ पंचगांव भिवानी—624 से 627, 630
आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा—631, 633, 637, 638, 640, 642, 645 से 654, 658 से 662, 664, 665, 669, 670, 673 से 676, 679, 680, 694; 701, 703 से 705, 707, 710, 714, 717 से 719, 723, 724, 727 से 729, 735, 737, 751, 753, 761 से 763
आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत—769, 773, 780, 786' 787, 790, 791, 793, 803, 805, 806, 812 से 814, 817, 818, 820 से 825

—प्रस्तोता

(पृष्ठ १ का शेष)

जाओगे। आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। गोपालन नारों से नहीं होगा, जब गाय के दूध और घी के सेवन की जनता में प्रवृत्ति बढ़ेगी, तभी गोपालन में वृद्धि होगी।

हमने इस वर्ष लगभग एक हजार किलो गाय का घी यज्ञ में जलवाया है। प्रत्येक यजमान को प्रेरणा देना व उन्हें संस्कारित करने का ही तो दायित्व पुरोहित का है।

जब यजमान ही नियमों का, धर्म का पालन नहीं कराता, तब "धर्म एव हतो हन्ति" ही होगा। इसीलिए पुरोहित मारा जारहा है।

सरकार ने चन्दन की लकड़ी की बिक्री पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। महर्षि ने यज्ञ में चन्दन की लकड़ी जलाने का विधान किया है। कम से कम समिदाधान तो चन्दन से ही करना चाहिए। देखिए संस्कार विधि में समिदाधान प्रकरण को।

हमें सरकार से मांग करनी चाहिए कि आर्यसमाजों को चन्दन की लकड़ी के लिए लायसंस दिये जाने चाहियें। पर हम तो अपने शास्त्रों को माने, तभी तो यह बात उठेगी।

घृत में केसर या कस्तूरी मिलाने का आदेश है। हमें कस्तूरी न मिले तो केसर तो मिलवानी ही चाहिए। बौद्धिक, मानसिक और भौतिक तथा आध्यात्मिक प्रदूषण नष्ट करना ही तो मुख्य रूप से ब्राह्मणों का, विद्वानों का, पुरोहितों का दायित्व है।

आज संसार में प्रदूषण ही सर्वाधिक ज्वलन्त समस्या के रूप में उभर रहा है। कारण स्पष्ट है कि—ब्राह्मण, विद्वान् प्रमादी होगया है। हमें अपने दायित्व के प्रति जागरूक होना चाहिए।

यह दोष तो कुछ आहुवनीय द्रव्यों के होगये। अब विधि पर भी ध्यान दीजिए—

आचमन का सम्बन्ध यज्ञ से है। स्तुति प्रार्थना से नहीं है। अतः आचमन यज्ञ के ठीक प्रारम्भ में ही होना चाहिए। देखिए संस्कार विधि को।

यदि संस्कार विधि को ध्यानपूर्वक पढ़ें तो पता चलेगा कि—स्वस्ति वाचन और शांतिकरण सब संस्कारों में यज्ञ से पूर्व ही नहीं है। कहीं आदि में, कहीं मध्य में, कहीं अन्त में पढ़ा जाना चाहिए। जहां जैसा विधान महर्षि ने किया है। कहीं इन मन्त्रों के स्वाहाकार का भी विधान है।

अयंत इध्म आत्मा से पांच घृताहुतियां केवल गृहस्थी के लिए ही हैं। वह भी विशेष संस्कारों, में यह तब पता चलेगा, जब ध्यान से संस्कार विधि को पढ़ने का कष्ट किया जायेगा।

आघारावाज्य भागाहुति से जलसिंचन के बाद व यज्ञ के अन्त में भी चार घृताहुति दी जानी चाहिएं।

एक ही समय में दोनों कालों की आहुति में, दूसरी बार दूसरे काल की आहुति देते समय भी सर्वप्रथम इन्हीं चार मन्त्रों से घृताहुति दी जानी चाहिए।

सायंकाल के यज्ञ में दोनों समय की आहुति देनी हों तो प्रथम सायंकालीन, बाद में प्रातःकालीन मन्त्रों से आहुति होनी चाहिए। जब तीन बार सर्वं वै पूर्णं स्वाहा हो जाये तो उसके बाद फिर शतधारं सहस्रधारं का मन्त्र पढ़ना और घी डालना सर्वं वै पूर्णं का उपहास मात्र लगता है।

सामान्य प्रकरण के यज्ञ में प्रथम विशेष मन्त्रों से आहुति देकर फिर दैनिक मन्त्रों को आहुति देना भी अव्यावहारिक है। नित्य यज्ञ की आहुति प्रथम दी जानी चाहिएं, फिर विशेष मन्त्रों की।

पं० जयपाल आर्य की भजनमण्डली द्वारा वेदप्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की पं० जयपाल आर्य की भजन मण्डली ने गुरुकुल भैंसवाल जि० सोनीपत के सहयोग से २१ से २६ जून तक ग्राम आंवली, रेवाड़ा तथा कटवाल में वेदप्रचार द्वारा शराब, दहेज आदि बुराइयों का खण्डन किया। गुरुकुल की ओर से २५०) सभा को वेदप्रचारार्थ दान दिया गया।

२९ तथा ३० जून को श्री धर्मचन्द शास्त्री तथा मा० सूरजसिंह के सहयोग से ग्राम पाथरी जि० जींद में पं० जयपाल की मण्डली ने प्रभावशाली प्रचार किया तथा आर्यसमाज की स्थापना की। यज्ञ पर कई नवयुवकों ने यज्ञोपवीत धारण करके शराब आदि सेवन न करने की प्रतिज्ञा की। सभा को ११५) का दान प्राप्त हुआ।

ग्राम ऐंचरा जि० जींद में भी १ से ३ जुलाई तक पं० जयपाल जी द्वारा वेदप्रचार किया गया। ग्रामीण नर-नारियों ने प्रचार ध्यानपूर्वक सुना तथा सभा को १९५) वेदप्रचारार्थ के लिए दान दिया।

सम्पादक के नाम पत्र

हमारे नेता व मन्त्री विदेशों में जाकर या विदेशियों के भारत आगमन पर उनके देशों के साथ शताब्दियों पूर्व सम्बन्ध होने की घोषणा करते हैं। इसी सम्बन्ध में प्रधानमन्त्री की हाल की सीरिया यात्रा का प्रमाण पर्याप्त है, जहां उन्होंने कहा कि भारत व सीरिया के शताब्दियों पुराने सम्बन्ध हैं। क्योंकि मुहम्मद बिन कासिम सीरिया से ही इस्लाम का सन्देश लेकर भारत गया था। यह सत्य है कि कासिम एक लुटेरा था और धन-दौलत के लोभ में ही भारत पर उसने आक्रमण किया था। राजा दाहर ने अपने पराक्रम का परिचय दिया, परन्तु कासिक को परास्त करने में वे शहीद होगये। राजा दाहर की बेटियों को लेकर जब कासिम वापस स्वदेश को चला था तो उन आर्य वीरांगनाओं ने कासिम को मजा चखाने की मार्ग में ही योजना बनाई थी। उसी योजना के अधीन उन्होंने कासिम के स्वामी खलीफा को झूठ-मूठ कह दिया कि कासिम ने हमें आपको पेश करने से पूर्व ही भ्रष्ट कर दिया है। खलीफा ने इस कथन को सत्य मानकर कासिम की हत्या करवादी थी। इस घटना में कासिम व इस्लाम का कौन-सा उज्ज्वल व प्रेरणादायक पक्ष प्रस्तुत हुआ है? क्या इस्लाम का यही सन्देश है कि दूसरे देशों पर अकारण आक्रमण करके उसे लूटा जाये, हत्यायें की जायें व कन्याओं को उठाकर स्वदेश में अपने सम्राटों को पेश किया जाये?

थोड़े बहुत अन्तर के साथ अलाउद्दीन खिल्जी, मुहम्मद गोरी, महमूद गजनवी, बाबर व अहमद शाह अब्दाली की भी ऐसी कहानियां ही हैं। इनको मनुष्य मानते हुए भी संकोच होता है। वे ही इस्लाम के प्रतिनिधि हैं तो इस्लाम कैसा होगा, यह कल्पना की जा सकती है। इसके विपरीत भारत के इतिहास में ऐसी घटनायें भी हैं, जिन पर भारत को गर्व है। महारानी गांधारी वर्तमान अफगानिस्तान के कंधार नगर के महाराजा की बेटी थी। जिसे वहां के राजा ने धृतराष्ट्र के साथ ब्याहा था। धृतराष्ट्र के अग्रज पांडु की दूसरी पत्नी माद्री ईरान के राजा की कन्या थी। वीर अर्जुन का एक विवाह पाताल में वहां के राजा की बेटी उलोपी के साथ हुआ था। इसी पाताल को आज अमरीका कहते हैं। श्रीकृष्ण और अर्जुन पाताल में 'अश्वतरी' अर्थात् अग्नियान नौका में बैठकर महाराजा युधिष्ठिर के यज्ञ में उद्दालक ऋषि को लेकर आये थे। भारत के प्रधानमन्त्री कब अफगानिस्तान, ईरान व अमरीका की यात्रा पर जाकर उक्त देशों में कहेंगे कि आपके देशों के साथ हमारे खून का रिश्ता है।

—इन्द्रजीतदेव उपमन्त्री श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर, हरयाणा

शराबी रिश्तेदार को भोजन नहीं मिलेगा

पूंडरी, १० जुलाई (एस)। गांव साकरा की पंचायत ने निर्णय किया है कि भविष्य में गांव में शराब पीकर आनेवाले किसी के रिश्तेदारों को खाना नहीं दिया जायेगा। इस फैसले का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति का सार्वजनिक बहिष्कार शुरु कर दिया जायेगा।

उल्लेखनीय है कि पहले इस गांव के लगभग ९० प्रतिशत लोग शराब पीते थे। गांव के सरपंच श्री भरतुराम ने बताया कि हमने एक सर्वजातीय समिति गठित की है, जिसमें हर मोहल्ले में एक-एक मुखिया जो बनाया गया है, जिसमें महिलायें भी शामिल हैं। अब शराब पीने वालों तथा बेचनेवालों और पिलानेवालों पर समिति ५०० रुपये जुर्माना करेगी। जिसमें से ४०० रुपये गांव के सार्वजनिक कार्यों में लगाये जायेंगे। १०० रुपये सूचना देनेवालों को दिये जायेंगे।

आर्यसमाज सोनीपत नगर का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री पंजूराम आर्य, उपप्रधान—वेदप्रकाश अग्रवाल एडवोकेट, पंजूराम अरोड़ा, मन्त्री—देवदत्त आर्य, उपमन्त्री—महासिंह शास्त्री, कोषाध्यक्ष—कंवरभानु, सुदर्शनकुमार, लेखानिरीक्षक—टेकचन्द गुप्त।

शराब पीना सामाजिक अभिशाप है।

दान की महिमा

लि०—चौ० पृथ्वीसिंह बेधड़क

टेक—दसवीं कमाई समाज विद्या में जो दान देता है।
बदले में उसको चौगुना भगवान् देता है॥

देखो तो रोज आप घाट नहर कुयें पर,
पनघट लगा रहता है आठ पहर कुये पर,
रहटों से पानी खींचकर किसान देता है,
घटती ना बूंद कुआं यह प्रमाण देता है। १

दुनियां में जिसकी पूजा होती आज भाइयो,
जिसने किया था दान सारा राज भाइयो,
पुत्र पत्नी बेच यह ऐलान देता है,
जिसकी गवाही काशी का श्मशान देता है। २

मृत्यु की चारपाई पर कर्ण पड़े थे,
लेने को दान वहां अर्जुन कृष्ण खड़े थे,
जड़े थे दांत सोने से बलवान् देता है,
भगवान् कृष्ण अर्जुन को वहां ज्ञान देता है। ३

यह तो कहानी है पुरानी मुर्दाघाट की,
दान मांगने गई एक दिन छोरी भाट की,
ऊठ करके दानवीर यह व्याख्यान देता है,
सिर काटकर जगदेव पवार ज्यान देता है। ४

कलकत्ते में छाजूराम कलयुग का कर्ण था,
दान देकर खाना खिलाऊं उसका पर्ण था,
बर्ण छत्री जाट जो जबान देता है,
पूरा करने को बेचकर सामान देता है। ५

यह तो कहानी आर्यों के दान की भाई,
कहानी सुनिये एक मुसलमान की भाई,
कविताई पृथ्वीसिंह की जो ध्यान देता है,
देता है रहीम जो कुछ भी बेज्यान देता है। ६

प्रस्तुतकर्ता—जयपालसिंह आर्य, सभा भजनोपदेशक

अध्यापिकाओं की आवश्यकता

कन्या गुरुकुल गणियार, तह० नारनौल, जि० महेन्द्रगढ़ (हर०) को हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान आदि विषय पढ़ाने के लिए महिला अध्यापिकाओं की आवश्यकता है। सेवा-निवृत्त पुरुष भी आवेदन कर सकते हैं। वेतन योग्यतानुसार दिया जायेगा। अपनी योग्यता जन्मतिथि तथा अनुभव सहित आवेदन-पत्र प्रस्तुत करें।

—ब्र० कलावती एम० ए० आचार्या

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४)
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री,

३० आषाढ़ २०४५ वि॰

वर्ष १५, अङ्क ३३, २१ जुलाई, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

पुरी के शंकराचार्य और अग्निवेश जी अपना खेल बन्द करें

—प्रो॰ शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

एक बड़ी प्रसिद्ध कहावत है कि यदि कुत्ता आदमी को काट ले तो यह कोई खबर नहीं बनती, परन्तु यदि आदमी कुत्ते को काट ले तो समाचारपत्रों के लिए खबर बन जाती है। शायद इसीलिये कामकोटि पीठ और जोशी मठ के शंकराचार्यों के वक्तव्यों को महत्त्व नहीं दिया। क्योंकि वे तथाकथित अछूतों और हरिजनों को गले लगाने की बात कह रहे थे। जब पुरी के शंकराचार्य ने हरिजनों के मन्दिर प्रवेश को रोकने की बात कही तो इस खबर को इतना उछाला कि अब वह एक चर्चा का बड़ा मुद्दा बन गया। कुछ तो समाचारपत्रों ने इस खबर को उछाला और कुछ स्वामी अग्निवेश ने।

यह सर्वविदित है कि भारत विरोधी शक्तियां भारत की जनता को फिर से सम्प्रदायों के नाम पर बांटने में लगी हुई हैं। धन, शस्त्र और प्रशिक्षण देकर पाकिस्तान पंजाब में गुरिला लड़ाई लड़वा रहा है और कुछ पश्चिमी देश उसकी पीठ पर हैं। प्रचार यही किया जारहा है कि सिख हिन्दुओं का अंग नहीं रहे, इसलिये उनको खालिस्तान मिलना चाहिये। हिन्दू मुसलमान को लड़ाने के लिए जो भी मुद्दा मिले, उसे उछालकर साम्प्रदायिक लोग एक न एक झगड़ा सदा खड़ा रखते हैं। अब नया खेल है हिन्दू को हिन्दू से लड़ाने का। तथाकथित ऊंची जातियों और हरिजनों को अलग-अलग करने का। स्वामी दयानन्द ने तो आर्यसमाज के द्वारा जन्मना, जातपात और अस्पृश्यता के विरुद्ध आंदोलन छेड़ा था और जो सम्प्रदाय उनको हिन्दुओं से अलग करना चाहते थे, उनसे लोहा लिया था। महात्मा गांधी ने तो हरिजनों को हिन्दुओं से अलग करने की अंग्रेजों की चाल को समाप्त करने के लिये भूख हड़ताल करके अपने प्राणों की बाजी लगाई थी और वे सफल हुए। आजादी के ४० वर्ष बाद अब वही खेल भारतविरोधी शक्तियां खिलवाना चाहती हैं। पुरी के शंकराचार्य के बयान और उसको लेकर चुनौती देकर स्वामी अग्निवेश ने जो अभियान छेड़ा है, उससे ऐसा लगता है कि दोनों हिन्दुओं को आपस में लड़ाने के लिए तुले हुए हैं। इन्हीं चर्चाओं के चलते कुछ शरारती तत्वों ने हरिजनों को हिन्दुओं से अलग होने की राय देनी शुरु करदी है।

यह खेल हिन्दुओं को आपस में लड़ाने और भारत की छवि अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर बिगाड़ने के लिए रचा गया लगता है। यह भारत को फिर से तोड़ने तथा अस्थिर करने के उद्देश्य से खेले जारहे बड़े खेल का ही हिस्सा है।

मेरे पिता जी ने तो १९२९ में अपने कुयें पर हरिजनों को चढ़ाया था और सब जातियों के लोग वहां से पानी बराबरी की हैसियत से भरते थे। डेढ़ वर्ष तक हमारे परिवार और उनके दो समर्थक परिवारों का हुक्का पानी भी बन्द रहा। जन्म के आधार पर जातपात तथा ऊंच नीच का मैं बचपन से ही विरोधी रहा हूं और हिन्दू समाज से सामाजिक विषमता को मिटाने में अग्रसर रहा हूं और आज भी उतना ही सक्रिय हूं। यह ठीक है कि आर्यसमाज, गांधीवादी संस्थाओं और सभी मानवतावादी संगठनों को भारत के समाज में से इस बीमारी को निकालने के लिए सक्रिय हो जाना चाहिये, परन्तु मैं नहीं समझ पाया कि स्वामी अग्निवेश जी का इस मुद्दे को जनता में राष्ट्रसंघ की मानव अधिकार समिति के पास पेश करने का क्या उद्देश्य है। आज मन्दिर प्रवेश के लिये कानून बना हुआ है और पुरी के शंकराचार्य की सजा हो सकती है। इसीलिये उन्होंने अपने वक्तव्य को बदल लिया है। अब वे कह रहे हैं कि भगवान् तो हरिजनों के घर में स्वयं ही दर्शन देने आजाते हैं, उनको मन्दिर में जाने की क्या जरूरत है, परन्तु अब वे राजनीति में कूदने की बात कर रहे हैं। उसके बहाने हिन्दुओं को आपस में लड़ाने का काम चलते रहना चाहते हैं।

जातपात की बीमारी से हिन्दू समाज ग्रस्त है और भारत के ईसाई और मुसलमान भी जो हिन्दुओं में से गये हैं, वे उसी तरह इस बीमारी का शिकार हैं। यह बीमारी सभी सम्प्रदायों में खत्म होनी चाहिये। लाहौर जालन्धर से जाकर बसे हुए श्री रहमान ने मुझे बताया कि सफाई कर्मचारियों से पाकिस्तान में भी छुआछूत है और वे उसके विरुद्ध प्रचार करने में लगे हैं। छुआछूत और जातपात की बीमारी जहां भी है, समाप्त होनी चाहिये, परन्तु भारत को और भारत में हिन्दुओं को अलग निकालकर अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर देश की छवि बिगाड़ना क्या उचित ठहराया जा सकता है? जो व्यक्ति इस बात पर तुला हुआ हो तो क्या इस परिणाम पर पहुंचना गलत होगा कि वह सज्जन चाहे कोई भी हो, भारत विरोधी शक्तियों का खेल खेल रहा है और क्या उसके इस कार्य को देशद्रोह की संज्ञा देना गलत होगा?

जो लोग दोनों प्रकार की भोली जनता को गुमराह करके देश की छवि को बिगाड़ने में लगे हैं, उनसे सतर्क रहना होगा और उनकी ऐसी गतिविधियों को एकदम बन्द करना होगा।

शराब पीना सामाजिक अभिशाप है।

नाथद्वारा मन्दिर में हरिजनों का प्रवेश क्यों ?

जैसा कि आपको ज्ञात है नाथद्वारा मन्दिर में हरिजनों के प्रवेश पर पक्ष-विपक्ष में गहरे मतभेद तथा टकराव की जो चिंताजनक अवस्था बन गई है, वह गम्भीरतापूर्वक विचारणीय है—

१—जबकि मन्दिर के प्रबन्धकों तथा सरकार द्वारा दिये गये वक्तव्यों के अनुसार मन्दिर में हरिजनों के प्रवेश पर कोई रोक नहीं है तथा वे दर्शन करने जाते रहते हैं, फिर स्वामी अग्निवेश आदि तथा हरिजनों का यह आंदोलन क्यों ?

२—सामूहिक रूप से इस प्रकार मन्दिर में प्रवेश की क्या आवश्यकता पड़ गई और यदि वे इस प्रकार भी प्रवेश करते हैं तो उसका विरोध क्यों ? जबकि समाचारों के अनुसार सनातन धर्म सभा, हिन्दू महासभा आदि संस्थाओं की ओर से धूमधाम से बिरला मन्दिर देहली में ४ जुलाई को हरिजनों का प्रवेश कराया गया तथा पुजारियों की ओर से तिलक लगाकर उनका हार्दिक स्वागत किया गया।

३—जबकि आर्यसमाज छुआछूत व जातपात का प्रबल विरोधी है तथा हरिजन आर्यसमाज मन्दिरों में ईश्वर प्रार्थना, हवन, सत्संग तथा प्रीतिभोज में भी सम्मिलित होते हैं। वे उसके सभासद्, अधिकारी, पुरोहित तक हैं, फिर हरिजनों का यह कहना कि वे ईसाई व मुसलमान बन जायेंगे, क्या विवेकसंगत व उचित है ? क्या वहां उनको मूर्ति के दर्शन मिल सकेंगे ?

४—वैदिक सिद्धांत व आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द की मान्यता के अनुसार जबकि आर्यसमाज सर्वव्यापी, निराकार परमात्मा के स्थान पर मूर्तिपूजा का अनेक कारणों से प्रबल विरोधी है, फिर स्वामी अग्निवेश या कोई भी आर्यसमाजी इसके विपरीत आचरण करता है तो वह आर्यसमाजी नहीं। यदि आर्यसमाज भी इस प्रकार किन्हीं कारणों से अपने सिद्धांतों को त्यागता गया तो क्या वह आर्यसमाज रह पायेगा ? फिर इस आंदोलन में भाग लेने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली की कार्यकारिणी व धर्मार्थ सभा का कोई निर्णय नहीं।

५—कतिपय व्यक्तियों द्वारा यह कहना पूर्णतः सत्य नहीं कि हैदराबाद में हिन्दू मन्दिर व मूर्तियों की रक्षा के लिए ही आर्यसमाज ने सत्याग्रह व बलिदान किये, वहां तो आर्यसमाज के धर्म-प्रचार आदि कार्यों पर भी प्रतिबन्ध लगाये जाते, पर सत्याग्रह किया गया था तथा देहली में शिव मन्दिर में पूजा के लिए आर्यसमाज के पण्डित व्यासदेव शास्त्री व उनके कुछ साथियों के जाने को आर्यसमाज का सत्याग्रह कहना भी उचित नहीं, वह उनका व्यक्तिगत कार्य था। आर्यसमाज के सार्वदेशिक संगठन उसकी धर्मार्थ सभा का निश्चय तथा आर्यसमाज के अनुकूल नहीं था।

६—जबकि छुआछूत व सतीप्रथा सामाजिक, धार्मिक एवं कानूनन अपराध है तो इसके विपरीत शंकराचार्य की ओर से वक्तव्य दिये जाने पर जिसके कारण यह विवाद उग्र रूप धारण कर रहा है, सरकार स्वामी शंकराचार्य के विरुद्ध कठोर कार्यवाही क्यों नहीं करती ?

७—उक्त प्रश्नों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने पर पक्ष-विपक्ष द्वारा यह आंदोलन युक्तिसंगत, आवश्यक व महत्त्वपूर्ण प्रतीत नहीं होता तथा देश की एकता व शांति के लिए भी यह हितकर नहीं, फिर भी किन्हीं व्यक्तियों व संस्थाओं द्वारा इसके चलाये जाने में उनकी नेतागिरी व प्रसिद्धि बनाये रखने तथा आगामी निर्वाचन में एक वर्ग विशेष की सहानुभूति व वोट प्राप्त करने की राजनीति का आभास प्रतीत होता है।

—भगवतीप्रसाद सिद्धांत भास्कर
प्रधान नगर आर्यसमाज पं० शिवदीन मार्ग, कृष्णपोल, जयपुर

हिन्दूघाती षड्यन्त्र से सावधान

हरिजनों के मन्दिर प्रवेश के सम्बन्ध में शंकराचार्य निरंजनदेव तीर्थ के द्वारा दिये गये एक बयान पर चारों ओर से खूब निंदा हो रही है। इसी संदर्भ में ३ जुलाई को नई दिल्ली के सप्रू हाउस में एक सम्मेलन हुआ। जिसमें आर्यसमाज व सनातन धर्म के मूर्धन्य नेताओं ने शंकराचार्य को खूब पेट भरकर भर्त्सना की। आश्चर्य, किसी नेता को यह नहीं सूझा कि शंकराचार्य के पास जाकर उनसे मिल लें और पूछें कि आपने ऐसा बयान क्यों दिया है ? स्व-प्रेरणा से दिया या सत्ता के किसी महानायक, नायक या किसी अन्य ने ऐसा करने के लिए आपको प्रोत्साहित किया ? जहां किसी नेता को यह नहीं सूझा, वहां समाचार-पत्रों ने इस मामले को इतना व इस रूप में उछाला है, जैसे कि देश में कोई विस्फोट होगया हो।

लगभग एक वर्ष पूर्व राष्ट्रपति भवन के सामने खड़े होकर जामा-मस्जिद के इमाम ने साम्प्रदायिक उत्तेजना व पृथक्ता की भावनायें फैलानेवाली तकरीर की थी, लेकिन तब किसी के कान पर जूं तक नहीं रेंगी। क्यों ?

यह भी तो सम्भव है सत्ता के किसी पहरुए ने शंकराचार्य को उकसा कर हिन्दुओं को लड़ाने की कोशिश की हो। मुझे तो यही आभास हो रहा है। ऐसे षड्यन्त्रों से सतत सावधान रहने की जरूरत है। मेरी जानकारी के अनुसार सरकार में बैठे लोगों ने हिन्दुओं को आपस में भिड़ाने के उद्देश्य से कई संस्थाओं व संगठनों को शुरु करा रखा है। इसी तरह की एक संस्था दिल्ली के कृष्णनगर में भी काम कर रही है, जो कथित रूप में हिन्दू संगठन के नाम पर हिन्दुओं को त्रिशूल धारण कराती है। शंकराचार्य का मामला तो विशेष रूप से इसी उद्देश्य से प्रेरित साफ दिख रहा है कि अनुसूचित जातियां पूरी तरह से हिन्दू समाज से कट जायें। हिन्दु समाज आपसी नफरत के बोझ से छिन्न-भिन्न हो जाये। अतः जरूरी है कि हिन्दुओं में बिखराव पैदा करने के कामों में लगे 'हाथ' को हम समय रहते ठीक से पहचान लें।

दूरदर्शन जिनके हाथ में है, उनके इरादों को पहचानने की सख्त जरूरत है। दूरदर्शन पर तमस व अमीर खुसरो जैसे कार्यक्रमो के माध्यम से हिन्दुओं को विदेशी व देशद्रोही तक जताया जारहा है। कुछ ऐसा विश्वास कराने का प्रयास किया जारहा है। जैसे कि देश में मौजूद सभी बुराइयों व समस्याओं का कारण हिन्दू ही हैं। हिन्दुओं को अपनी आंखें खोलनी चाहियें। आपस में लड़ने-भिड़ने से बाज आना चाहिए। अपनी एकता और शक्ति से हिन्दूघाती साजिशें करनेवालों का हाथ मरोड़ना चाहिए। देखिये, समय तेजी से निकला जारहा है। उठिये, कहीं ऐसा न हो समय हाथ से निकल ही जाये और हिन्दू विरोधी शक्तियां अपने षड्यन्त्र में कामयाब हो जायें। कहीं ऐसा न हो हिन्दू बाद में हाथ ही मलते रह जायें।

—बिशनस्वरूप गोयल

गांव बाघपुर में वेदप्रचार

दिनांक ११-१२ जुलाई को गांव बाघपुर जिला रोहतक में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक के कार्यक्रमानुसार म० जयपालसिंह आर्य की भजनमण्डली ने श्री मा० सुखलाल जी के द्वार पर ग्राम में वेदप्रचार किया और शराब, दहेज एवं राधा स्वामी मत की बढ़ती हुई कुरीतियों के बारे में प्रमाण सहित खण्डन किया। पुरुषों एवं महिलाओं ने प्रचार सुनने में आदर्श दिखाया और सभा के लिये २६९) दान दिये।

—मन्त्री आर्यसमाज

पंजाब समस्या पर नये समझौते की चर्चा

— प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

यह तो देश के लिए अच्छा संकेत है कि आतंकवादियों का खेल खत्म होने की तरफ चल पड़ा है। इसीलिये जो अकाली नेता बिलों में घुस गये थे, वे अब बाहर आने लगे हैं। अपना खोया हुआ वर्चस्व फिर से बहाल करने के लिए अब वे एकता की बात कर रहे हैं। जूते साफ करने के बावजूद सिक्खों में फिर से प्रवेश पाने के लिए श्री बरनाला मुख्य ग्रंथियों से क्षमायाचना करने गये और शायद फिर जायें। उनको क्षमा मिलने के बाद अकाली एकता की बात आगे बढ़ेगी। अकाली चाहते हैं कि कोई नया समझौता करने की बात चले तो वे ही पंजाब के एकमात्र प्रतिनिधि बनकर उभरें। पंजाब के राज्यपाल ने भी समझौता वार्ता की बातें कहनी शुरु करदी हैं। वे अपनी ताकत से बाहर की बातें भी करने लग गये हैं।

अकालियों ने तो बहुत दिनों से कहना शुरु कर रखा है कि वे चण्डीगढ़ लेंगे और फाजिल्का अबोहर भी हरयाणा को बदले में नहीं देंगे। पानी के बारे में भी उनके तथाकथित संयुक्त अकाली दल के शीर्षस्थ नेता प्रकाशसिंह बादल कहते रहे हैं कि हरयाणा को रावी व्यास का पानी नहीं देंगे। लोंगोवाल समझौते से भी बरनाला समेत सब अकाली भाग चुके हैं। उस समझौते में से जो लेने की बात है, वह तो करते रहते हैं, देने की बात से इन्कार कर रहे हैं। इसीलिये न तो वे धारा ७.२ के तहत कमीशनों के परिणाम को मानते हैं और न इराडी पंचाट की बात मानते हैं, जबकि उस फैसले में यह बात स्पष्ट लिखी हुई है कि आयोगों और पंचाट के फैसलों को मानने के लिए दोनों पक्ष बाध्य होंगे। याद रहे कि हरयाणा उस समझौते में पक्ष नहीं था। इसलिये जो भी फैसले उस समझौते के तहत हुए, उनको मानने के लिए हरयाणा बाध्य नहीं है, परन्तु अकाली और उनका पंजाब तो बाध्य है ही। कैसी विडम्बना है कि देश में सभी राजनैतिक दलों के लोग जो बाध्य है, उसको तो बाध्य करते नहीं। जो नहीं है, उसको बाध्य करने में ही लगे रहते हैं।

यह नहीं भूलना चाहिये कि जैसे सारे देश में भाषा के आधार पर प्रांत बने, उसी प्रकार पंजाब का पुनर्गठन भी भाषा के आधार पर ही हुआ था। १९६६ में प्रांतों की सीमाओं का अन्तिम निर्णय करने के लिए शाह कमीशन नियुक्त किया गया। भाषा को आधार मानकर ही उस आयोग ने अपनी सिफारिश की। सब सम्बन्धित बातों और आंकड़ों के आधार पर शाह कमीशन ने चण्डीगढ़ समेत खरड़ तहसील हिन्दी भाषी होने के नाते हरयाणा को दी। शाह आयोग ने अपने प्रतिवेदन में यह भी माना कि २१-८-१९५६ के फैसले में फाजिल्का अबोहर का जो इलाका हिन्दी भाषी माना गया, वह वास्तव में हिन्दी भाषी है। अकालियों ने इसे अक्तूबर, १९५६ में, फिर अकाल तख्त पर बैठकर दिसम्बर १९६५ में और दिसम्बर १९६९ में सन्त फतहसिंह ने अपनी पेशकश में इस इलाके को हिन्दी भाषी माना। इन तथ्यों के रहते चण्डीगढ़ और फाजिल्का अबोहर पंजाब में लेने और रखने की बात करने की कोई तुक नहीं है। लेकिन जबरदस्ती हो रही है और भारत देश के न्याय की दुहाई देनेवाले सभी दलों के शीर्षस्थ नेता मिलकर हरयाणा का गला दबोचने में लगे हुए हैं। दुःख की बात यह है कि इतना बड़ा अन्याय करते हुए वे लज्जा की रेखा तक भी अपने चेहरों पर नहीं आने देते।

मैं इस समय ये सब तथ्य इसलिये दोहरा रहा हूं, क्योंकि थोड़े दिनों में कोई न कोई वार्ता आरम्भ होने की सम्भावना है। अकाली जब यह मांग करते हैं कि चण्डीगढ़ उनको मिले और फाजिल्का अबोहर के हिन्दी भाषी क्षेत्र हरयाणा को न मिलें तो उसके लिए न तो उनके पास कोई तर्क है और न औचित्य, बल्कि बार-बार मानी हुई अपनी ही बात से भागना मात्र है। हरयाणा जब यह मांग करे कि हिन्दी भाषी होने के नाते चण्डीगढ़ हरयाणा को मिले तो कोई न्यायप्रिय व्यक्ति उनको टोक नहीं सकता। चण्डीगढ़ बनने के बाद १९६१, १९७१ और १९८१ की तीन जनगणनायें हुई हैं और तीनों जनगणनाओं के आधार पर चण्डीगढ़ हिन्दी भाषी है। जहां तक फाजिल्का का प्रश्न है, वहां के १०५ से अधिक गांव १९६१ की जनगणना के आधार पर हिन्दी भाषी हैं। १९८१ की जनगणना में पंजाब सरकार के गणकों ने धांधली की। १९६१ और १९८१ की जनगणनाओं में कई ग्रामों के आंकड़ों में बहुत अन्तर था। इसलिये नये सिरे से वहां भाषाई सर्वेक्षण किया गया और न्यायमूर्ति मैथ्यू ने अपनी रिपोर्ट में यह माना कि १९६१ की जनगणना ही सही थी। अकालियों की तो आदत है अपनी बातों से मुकरने की, वरना वे भी १९७० तक यही मानते रहे हैं। हरयाणा यदि इन हिन्दी भाषी ग्रामों को वहां की जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप हरयाणा में मिलाने के लिए कहे तो कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति आनाकानी नही कर सकता। इसीलिये हरयाणा मांग करता है कि चण्डीगढ़ और फाजिल्का अबोहर का हिन्दी भाषी इलाका तुरन्त हरयाणा के साथ मिला दिया जाये।

यदि भारत के राजनेता हरयाणा को न्याय देने से कतराते हैं और अन्याय करनेवालों की बात मानता है तो वह भी अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने का अधिकार नही रहता।

शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं से निवेदन

अगस्त मास के प्रथम सप्ताह में हरयाणा की पंचायतों के चुनाव हो रहे हैं।

यदि आप चाहते हैं कि हरयाणा में शराब जैसी भयंकर बुराई पर रोक लगे, भ्रष्टाचार बन्द हो, बहू-बेटियों की इज्जत सुरक्षित रहे और किसान मजदूर खून-पसीने की कमाई बर्बाद न करें, शराब के ठेकेदार मालामाल न हों, तो दृढ़ निश्चय करें कि पंचायत के चुनाव में किसी भी मूल्य पर, किसी भी दबाव पर, किसी भी लालच में, किसी के भी मोह में फंसे बिना शराबी सरपंच, पंच को अपना अमूल्य मत (वोट) न देवें। आप यह सन्देश अपने परिवार, मित्रों तथा ग्रामवासियों को सुना दीजिए और इस पर आचरण करें तथा करावें।

इस प्रकार आप शराब पर पाबन्दी लगाने में सफल हो सकेंगे। इस शुभावसर को हाथ से न जाने देवें। स्मरण रहे शराब हटेगी तो देश बचेगा।

—आपका शुभचिन्तक

प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सराहनीय प्रचार कार्य

सभा के भजनोपदेशक श्री तेजपाल ने आर्यसमाज मन्दिर सिरसा में भजनोपदेश किया। जिसका बहुत अच्छा प्रभाव देखकर मैंने अपने गांव बोदीवाली में १० की शाम को गांव की चौपाल में प्रचार करवाया। भारी संख्या में लोग आये तथा सभी ने आग्रह किया कि ३-४ दिनों तक इनका प्रचार करवाओ। वैसे तो पहले भी काफी आर्य प्रचारक आयें, परन्तु इनके प्रोग्राम का कुछ अधिक ही प्रभाव पड़ा। मैंने ५०) सिरसा समाज से तथा ७६) बोदीवाली ग्राम की तरफ से वेदप्रचार हेतु सभा को दान दिये।

—मनीराम आर्य

ग्राम बोदीवाली, पो० डोगमण्डी, जि० हिसार

हमारी केरल कर्नाटक यात्रा—

दक्षिण भारत में वैदिकधर्म का प्रचार-प्रसार

ले०—प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु, वेद सदन अबोहर-१५२११६

आचार्य नरेन्द्रभूषण जी की सत्प्रेरणा से हम कई जन २३ मई को देहली से केरल की वेदप्रचार यात्रा पर निकले। मैं तो इससे पूर्व भी कई बार केरल की प्रचार यात्रायें कर चुका हूं, परन्तु श्रीयुत स्वामी विद्यानन्द, महात्मा प्रेमप्रकाश वानप्रस्थी, मेरी धर्मपत्नी श्रीमती वेदकुमारी, श्री पं० कर्मवीर हिसार का पूरा परिवार, पं० प्रेमचन्द शास्त्री देहली तथा पं० धर्मेन्द्र जी गुरुकुल गौतमनगर देहली प्रथम बार ही केरल गये। कुछ समय पूर्व मैंने ऋषि दयानन्द जी के मिशन के लिए समर्पित श्री ब्र० ब्रह्मदेव जी कर्नाटक से प्रार्थना की थी कि वह भी केरल पहुंचें। वह हम से भी पहले वहां पहुंच चुके थे। उनके साथ ऋषि का एक दीवाना युवक शशि (इन्जीनियर है) भी मैसूर से वहां पहुंचे।

केरल के एक ग्राम में तीन दिन के लिए अथर्ववेद का यज्ञ रखा गया। केरल में प्रथम बार ही अथर्ववेद का यज्ञ आयोजित हुआ। इस यज्ञ में केरल के एक तपस्वी महात्मा श्रीधर स्वामी जी के ट्रस्ट ने पूरा सहयोग किया। स्वामी जी के आश्रम के पास ही एक स्कूल में सारा समारोह हुआ। कुर्सियों, पिंडाल, भोजन व्यवस्था तथा शौचालय के निर्माण तथा आवास पर पर्याप्त व्यय हुआ। इसका अधिक भार श्रीधर स्वामी जी के ट्रस्ट ने ही वहन किया।

हमारे जाने से पूर्व केरल में ऋषि मिशन के सूत्रधार दूरदर्शी तथा अत्यन्त सुयोग्य नेता आचार्य नरेन्द्रभूषण जी ने दक्षिण के सब प्रमुख दैनिक-पत्रों में अच्छी प्रकार से हमारे आगमन व यज्ञ के आयोजन का प्रचार कर रखा है। इण्डियन एक्स-प्रेस, मातृभूमि आदि पत्रों ने इस कार्यक्रम के जैसे समाचार दिये, उस पर हमें बड़ा गर्व है। कार्यक्रम के आरम्भ होते ही 'इण्डियन एक्स-प्रेस' की एक सुयोग्य महिला प्रतिनिधि ने एक घण्टा आचार्य नरेन्द्रभूषण जी का Inter Niew साक्षात्कार लिया। जाते-जाते स्वामी विद्यानन्द जी से भी कुछ प्रश्न पूछे। यह सब कुछ उक्त पत्रिका में सविस्तार छपा। दूरदर्शन व अन्य पत्रों के प्रतिनिधि व कैमरामैन भी आये। दूरदर्शन आकाशवाणी से भी चित्र व समाचार प्रसारित किये गये।

केरल के सब भागों से वैदिकधर्म के माननेवाले स्त्री-पुरुष इस समारोह में आये। स्वामी श्रीधर जी के भक्त भी आये। हर्ष की बात है कि ऋषि मिशन का प्रचार युवकों में वहां अधिक है। सब दैनिक-पत्रों में छपा कि केरल में प्रथम बार सब बिरादरियों के लोगों ने यज्ञ में भाग लिया। सब बिरादरियों के लोगों ने यज्ञोपवीत लिया। एक विदेशी ने भी यज्ञोपवीत लिया। केरल में प्रथम बार स्त्रियों ने सार्वजनिक स्थान पर यज्ञोपवीत लिया। सबने मांसाहार आदि छोड़ने, गायत्री जप व स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञायें कीं।

यज्ञ के पश्चात् मलयालम भाषा में आचार्य नरेन्द्रभूषण रचित यज्ञरूप गीता का अनुवाद सब जन गाते थे। आचार्य नरेन्द्रभूषण जी की पत्नी श्रीमती कमलम अम्मा तथा उनकी सुपुत्री कुमारी वेदरश्मि आर्या आगे-आगे गाती थीं। मां-बेटी के स्वर पर सब मुग्ध थे। आचार्य नरेन्द्रभूषण जी कवि भी हैं—यह तथ्य सम्भवतः हमारे पाठकों के लिए नया हो। उनके रचे और भी भजन हमने सुने। अब केरल में अनेक आर्यों को संध्या हवन आदि के मन्त्र कण्ठ हैं। श्री राधाकृष्ण जी का तो वेदपाठ भी बहुत सुन्दर है। आचार्य नरेन्द्रभूषण जी के सस्वर वेदपाठ का एक अपना ही प्रभाव है।

आचार्य नरेन्द्रभूषण जी ने साहित्य सृजन व साहित्य प्रकाशन में तो ऐसा कमाल किया है कि उनके ऐतिहासिक कार्य को देखकर सिर झुक जाता है। घरफूंकतमाशा कोई दर्शनानन्द ही देख सकता है। आचार्य जी ने सारा परिवार ऋषि की भेंट कर रखा है। अपने शरीर का हवन कर दिया है। हमने उन्हें रोका-टोका है कि वह स्वास्थ्य को ऋषि की धरोहर मानकर चलें। प्रभु की इस देन का ध्यान रखें।

धरती में जहां-जहां भी मलयाली है, वहां-वहां उनका साहित्य व हमारा मासिक पत्र आर्षनादम जारहा है। आंध्र से भी लोग यज्ञ में भाग लेने आये। ऐसा तपस्वी, ऐसा विद्वान् और ऐसा सूझ बूझवाला नेता कोई और नहीं है। आकाशवाणीवालों ने त्रिवेन्द्रम में वेदपाठियों को भेजने की विनती की। आचार्यप्रवर ने इन्कार कर दिया और कहा "वेद के विद्वान् वहां नहीं आयेंगे। आप यहां आकर रिकार्डिंग करें।" ऐसा दूसरा स्वाभिमानी माई का लाल कोई है, आर्यसमाज के पास क्या ?

आज तक केरल में हमारे पत्र में आचार्य जी का चित्र कभी नहीं छपा। क्या आर्यसमाज में ऐसा कोई दूसरा उदाहरण है ? संकटों को चीरकर आचार्य नरेन्द्रभूषण वेदप्रचार कर रहे हैं। केरल उनकी वाणी व लेखनी पर मुग्ध है।

यज्ञ में स्वामी विद्यानन्द जी के एक व्याख्यान 'अथर्ववेद में क्या है और क्या नहीं है' का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। ब्र० ब्रह्मदेव जी ने यज्ञ के विषय में वैदिक सिद्धांत बड़ी योग्यता से रखे। महात्मा प्रेमप्रकाश जी ने यज्ञ हवन पर बहुत सुन्दर प्रवचन किया। मेरे इतिहास गोष्ठी में तीन व्याख्यान हुए। इनमें आर्यों का आदिदेश, वर्णव्यवस्था, उत्तर दक्षिण के भेद, भाषा का आविर्भाव तथा ईश्वरीय ज्ञान तथा धर्म का आदिस्रोत आदि विषयों पर भी प्रकाश डाला। इतिहास विषय में बोलते हुए मैं केरल के इतिहास पर नित्य प्रति कुछ प्रकाश डालता रहा। ऋषि दयानन्द जी महाराज के जीवनकाल में श्री शंकर शास्त्री केरलीय आर्य बने थे। तब से लेकर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज तक केरल में ऋषि मिशन के लिए किये गये कार्य व सेवाओं की भी चर्चा करता रहा।

स्वामी विद्यानन्द जी के करकमलों से वहां स्वामी गोपालदास वेद वेदांत शोध संस्थान की आधारशिला रखी गई। स्वामी विद्यानन्द जी के वेदांत पर हुए प्रवचनों की बड़ी धूम मची। पं० कर्मवीर जी शास्त्री तथा श्री प्रेमचन्द जी शास्त्री के प्रवचन प्रेरणाप्रद व ज्ञानवर्द्धक थे। ब्र. धर्मेन्द्र जी ने संस्कृत में दो व्याख्यान दिये। एक व्याख्यान एक ग्राम में दिया। भाषा ऐसी सरल सुबोध थी कि बिना अनुवाद के सब श्रोता उनको समझ लेते थे। वैसे भी मलयालम में ८० प्रतिशत शब्द संस्कृत के हैं।

सारे केरल में वैदिकधर्म का प्रचार आचार्य जी ने सफलता से किया है व कर रहे हैं। अब संगठन भी सुदृढ़ व सुन्दर बन जावेगा। ऋषि मिशन की रक्षा व प्रसार के लिए इसे पंजाबीवाद, जातिवाद व प्रांतीयता से बचाने की आवश्यकता है। उत्तर भारत के विवादों व नेताओं से केरल आदि प्रांत अप्रभावित रहेंगे तो ऋषि मिशन फूले फलेगा। आर्यसमाज के लोग केरल से प्रेरणा ले सकते हैं, यदि वे चाहें तो। (क्रमशः)

दहेज-प्रथा

दहेज-प्रथा इस देश में पनप रही है आज।
दोनों हाथों लुट रहा मध्यम वर्ग समाज॥
जाने कितनी लाडली बलि की हुई शिकार।
बिदो भेवी न हुई छूट गया संसार॥
आई लेने प्यार को मिली फांसी की डोर।
आंख मूंदकर आरहे मूढ़ नाश की ओर॥

बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

१.	दी वेदाज (अंग्रेजीभाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२.	दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज—पं० चमूपति एम०ए०	१-५०
३.	जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)—पं० चमूपति एम०ए०	३-००
४.	निहारिकावाद और उपनिषद्—पं० चमूपति एम०ए०	०-५०
५.	आर्यसमाज की विचारमाला—पं० क्षितीशकुमार वेदालंकार	१-००
६.	निजाम की जेल में—लेखक पं० क्षितीशकुमार ,,	२०-००
७.	स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
८.	आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह स्मारिका	२०-००
९.	आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण—पं. ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
१०.	बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय)	४-५०
११.	ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
१२.	हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१३.	धर्म-प्रवेशिका—डा० रणजीतसिंह	३-००
१४.	धर्म-भूषण ,,	५-००
१५.	पंजाब का आर्यसमाज—प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१६.	आदर्श धातु रूपावली—महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१७.	वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१८.	मूर्तिपूजा—सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१९.	वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
२०.	वेदाविर्भाव ,,	१-००
२१.	वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
२२.	ईसाई पादरियों की आर्यसमाज को चुनौती—स्वा० दर्शनानन्द	०-१०
२३.	गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४.	सत्यार्थप्रकाश ,,	१०-००
२५.	महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२६.	हमारा फाजिल्का—योगेन्द्रपाल	१-००
२७.	बड़—स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती	१-५०
२८.	वीर हेमू ,,	००-७५
२९.	पीपल ,,	१-५०
३०.	मिर्च ,,	१-५०
३१	श्लीपद या हाथीपांव की चिकित्सा ,,	०-२०
३२.	बिच्छू विष चिकित्सा ,,	०-५०
३३.	लवण ,,	१-२५
३४.	विदेशों में मैंने क्या देखा ,,	२-५०
३५.	नैरोबी यात्रा ,,	१-५०
३६.	ब्रह्मचर्य साधन ९-११ ,,	१०-००
३७.	,, १-२ ,,	१-००
३८.	,, ३ ,,	१-००
३९.	,, ४ ,,	२-५०
४०.	,, ५ ,,	२-००
४१.	,, ६ ,,	३-००
४२.	,, ७-८ ,,	२-००
४३.	,, ९ ,,	३-००
४४.	,, १० ,,	१-५०
४५.	,, ११ ,,	२-००
४६.	हल्दी ,,	१-५०
४७.	नीम ,,	१-२५
४८.	कर्त्तव्य दर्पण—म० नारायण स्वामी	४-००
४९.	विद्यार्थी जीवन रहस्य—म० नारायण स्वामी	२-५०
५०.	योग रहस्य ,, ,, ,,	४-५०
५१.	आर्यसमाज क्या है ? ,, ,, ,,	२-००
५२.	कथा माला ,, ,, ,,	१-२५
५३.	संस्कारविधि	६-००
५४.	वैदिकधर्म परिचय—पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	३-५०
५५.	वैदिक यज्ञ-पद्धति—सार्वदेशिक सभा प्रकाशन	००-६०
५६.	मृत्यु के पश्चात् जीव की गति—श्री जगदेवसिंह सिद्धांती	१-५०

प्राप्ति स्थान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दयानन्दमठ, सिद्धांती भवन, रोहतक।

जींद में आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर संपंन

हरयाणा प्रांतीय आर्य वीरदल के निर्देशानुसार आर्य वीरदल की जींद इकाई ने ९ जून से १५ जून, ८८ तक स्थानीय राजकीय प्राइमरी पाठशाला में शिविर का आयोजन किया। इसमें लगभग एक सौ आर्य-वीरों ने भाग लिया। शिविर का उद्घाटन ६ जून को माननीय डा० रामभगत जी लांगायन एच० सी० एस० उपमण्डल अधिकारी (ना) जींद ने किया तथा समापन समारोह की अध्यक्षता चौ० अभयसिंह जी आर्य प्रधान नगर पालिका जींद ने की। जिसमें आर्यसमाज जींद शहर के प्रधान वैद्य श्रीराम जी मुख्य अतिथि थे।

नगर के अन्य दानवीरों का जहां हार्दिक सहयोग मिला, वहीं आदरणीय मा० बद्रीप्रसाद जी आर्य कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने उदारतापूर्वक ११००) की धनराशि देकर शिविर की सफलता में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आस-पास के गांव से गेहूं भी दान में प्राप्त हुआ। आर्यसमाज जींद शहर के पदाधिकारियों ने भी भरपूर आर्थिक सहायता दी। स्थानीय अन्य आर्यसमाज गोहाना, सफीदों, जुलाना आदि की आर्यसमाजों ने भी पूरी मदद की। आर्यवीरों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। जींद में आयोजित आर्य वीरदल के इस प्रथम शिविर ने एक अभूतपूर्व छाप नागरिकों पर छोड़ी है।

—ओमकुमार आर्य, उपसंचालक आर्य वीरदल हरयाणा

ये कौन शंकराचार्य है

लि०—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

पाखण्डों में सना हुआ है, जगतगुरु क्यों बना हुआ है।
जगतगुरु है ईश्वर सबका, ये तो धूर्त अनार्य है।
ये कौन शंकराचार्य है ॥ १

मानवजाति एक कहावें, ये क्यों ऊंच-नीच फैलावें।
बिना बात क्यों गाल बजावें, ये कहां का द्रोणाचार्य है।
ये कौन शंकराचार्य है ॥ २

कान पकड़कर बाहर लाओ, पागलखाने में बन्द कराओ।
काला मुंह कर गधा चढ़ाओ, दण्ड यही अनिवार्य है।
ये कौन शंकराचार्य है ॥ ३

या तो क्षमायाचना करले, निज गलती की हामी भरले।
नहीं तो ढोंगी देशद्रोही, ये पाखण्डाचार्य है।
ये कौन शंकराचार्य है ॥ ४

मत इतनी घोर बेशर्मी, अब भी बन जा वैदिकधर्मी।
सत्य मार्ग अपनाले, कर कुछ जीवन में शुभ कार्य है।
ये कौन शंकराचार्य है ॥ ५

आवश्यकता

गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां, जिला सोनीपत में एक सुयोग्य संस्कृत विद्वान् की आवश्यकता है। जो शास्त्री कक्षाओं तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय से सम्बन्धित कक्षाओं को वैदिक साहित्य योग्यतापूर्वक पढ़ा सके। वेतन योग्यतानुसार दिया जावेगा। आचार्य गुरुकुल भैंसवाल से सम्पर्क स्थापित करें।

—प्रताप मलिक, आचार्य गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा
भैंसवाल कलां, जिला सोनीपत (हरि०)

आर्यसमाज काठमण्डी सोनीपत का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री महाशय चन्द्रसिंह आर्य, उपप्रधान—रामनिवास, हुकमचन्द, मन्त्री-सत्यवीरसिंह शास्त्री, उपमन्त्री-धूपसिंह, कोषाध्यक्ष-किशनचन्द, लेखानिरीक्षक-प्रो. धर्मवीरसिंह, पुस्तकाध्यक्ष-जयभगवान्।

सत्यार्थप्रकाश महाभाष्य

अन्यान्य आर्ष ग्रन्थों की तरह महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों के भी भाष्य होने चाहिएं थे, परन्तु इस दिशा में जैसा प्रयत्न अपेक्षित था, वैसा हमने नहीं किया। ऋषि निर्वाण शताब्दी के अवसर पर किये अपने संकल्प के अनुसार मैंने निरन्तर तीन वर्षों तक परिश्रम करके 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' का भाष्य लिखा। बड़े आकार २०×३० (८) के ६०० पृष्ठों का उसका प्रथम भाग प्रकाशित हो चुका है और लगभग उतना ही बड़ा दूसरा भाग छप रहा है। इंटरनेशनल आर्यन फाउंडेशन बम्बई द्वारा प्रकाशित 'भूमिका भास्कर' नाम से प्रकाशित इस ग्रन्थ के प्रकाशन पर एक लाख रुपये से अधिक व्यय हुआ है।

आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा प्रशंसित इस महान् कार्य में मिली सफलता से प्रोत्साहित होकर अब मैं ऋषि दयानन्द के दूसरे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की विस्तृत व्याख्या करने जारहा हूं। ऋषि दयानन्द के ग्रंथों में सत्यार्थप्रकाश पर भाष्य लिखना सबसे कठिन कार्य है। वैदिक विद्वानों की सहायता तथा आर्य पुरुषों के सहयोग के बिना यह अत्यन्त दुष्कर है।

इन पंक्तियों के द्वारा मैं सम्पूर्ण आर्यजगत् से अनुरोध करता हूं कि सभी अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार इस पुण्य कार्य में सहयोग देने की कृपा करें। मैं चाहता हूं कि—

१—सत्यार्थप्रकाश से सम्बन्धित जो भी शंकायें किसी को हों, तत्काल लिख भेजें।

२—जिन्हें व्याख्यानों, शास्त्रार्थों, लेखों आदि के माध्यम से समय-समय पर उठी शंकाओं और उनके समाधान की जानकारी हो, मुझ तक पहुँचाने की कृपा करें।

३—इस कार्य में सहायक पुस्तकों, ट्रैक्टों, पत्र-पत्रिकायें आदि की जानकारी दें तथा जिनके पास इस प्रकार की सामग्री हो, उसे देकर अनुगृहीत करें। कार्य सम्पन्न होने पर सुरक्षित लौटादी जायेगी।

४—यथासमय मैं पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा जो शंकायें प्रस्तुत करूंगा, यथामति उनका समाधान करने की चेष्टा करें।

—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती
दयानन्दमठ दीनानगर, पंजाब

शराब के दौर चल रहे हैं पंचायत चुनावों के लिए

बहादुरगढ़, १५ जुलाई (निस)। हरयाणा में होनेवाले पंचायत चुनावों में धीरे-धीरे चुनावी माहौल गर्म होना शुरु होगया है। अधिकतर उम्मीदवार वही घिसे-पिटे मोहरे ही हैं। प्रत्येक गांव में पांच से लेकर २५ उम्मीदवार तक सरपंचो के चुनाव के लिए लंगर कसे हुए हैं। मेम्बर बनने के इच्छुक उम्मीदवारों की गिनती लगभग प्रत्येक गांव में अनगिनत है।

प्रत्येक गांव में चुनाव प्रचार की शुरुआत बोतलों के ढक्कन टूटने से हो रही है। अभी चुनाव शुरु होने में १५ दिन बाकी हैं, लेकिन शराब का जोर अभी से इतना ज्यादा होगया है कि आज से पहले कभी पंचायतों के चुनाव में देखने को नहीं मिला। जो ज्यादा शराब बांटेगा, वही कामयाब होगा, ऐसा प्रतीत हो रहा है। चुनावी माहौल में चारों ओर शराब ही शराब नजर आरही है। लगभग ८० प्रतिशत उम्मीदवार शराब पिला रहे हैं। कुछ ज्यादा तो कुछ कम। कई गांवों में सरे-आम जाम लड़ रहे हैं तो कुछ गांवों में पर्दे पीछे चल रही है।

कुछ गांवों में ऐसे भी उम्मीदवारों के विषय में सुनने को मिल रहा है, जिन्होंने चुनाव जीतने के लिए कई-कई लाख रुपये रख रखे हैं। लोकदल राज की चकाचौंध में ज्यादातर उम्मीदवार बिल्कुल युवा हैं।

(दैनिक नवभारत टाइम्स)

आर्यसमाज कैथल शहर का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री हरिराम बजाज, उपप्रधान इकबालचन्द, मन्त्री—मदनमोहन सर्राफ, उपमन्त्री—जुगलाल, कोषाध्यक्ष—पूर्णचन्द बजाज, पुस्तकाध्यक्ष—सुशीलकुमार चौधरी, प्रबन्धक—डा० नरेन्द्रकुमार चौधरी।

शराबबन्दी प्रस्ताव का प्रारूप

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा
चण्डीगढ़

हमारे ग्राम——·······—······ जिला——·——————·····पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक···——·········में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है।

यह ग्राम सभा (पंचायत) शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत ही घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की शराबबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द की जावे और भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाये, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

दिनांक·········——·:

सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

इस प्रस्ताव की प्रतिलिपियां रजिस्ट्री द्वारा निम्न पते पर भेजें—

१. प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान हरयाणा चण्डीगढ़
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जि० ·····
५. जिलाधीश········
६. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

सभा ने इस सामाजिक सुधार कार्य में सभी से सहयोग देने का अनुरोध किया है।

उपदेशकों तथा भजनमण्डलियों की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को वेदप्रचार कार्य के विस्तार के लिए योग्य, विद्वान् उपदेशकों तथा प्रभावशाली भजनमण्डलियों की आवश्यकता है।

इच्छुक महानुभाव अपनी शैक्षणिक योग्यता एवं प्रचार कार्य के अनुभवों के प्रमाणपत्रों सहित स्वलिखित आवेदन-पत्र शीघ्र भेजें। वेतन योग्यता के अनुसार दिया जायेगा। —सभाप्रधान

सेवा-निवृत्त ओवरसीयर की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्माणाधीन भवन बनाने तथा अन्य मुरम्मत आदि के कार्य करवाने हेतु एक सेवा-निवृत्त ओवरसीयर की तुरन्त आवश्यकता है। सेवाभाव रखनेवाले महानुभाव आवेदन करें। वेतन योग्यता अनुसार दिया जायेगा। —सभाप्रधान

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून में प्रवेश

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून, अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलनेवाली अखिल भारतीय शिक्षण संस्था है।

उच्च प्रशिक्षित शिक्षिका वर्ग, बृहत् पुस्तकालय, नैतिक शिक्षा; चित्रकला, साईंस, संगीत, गृह-विज्ञान, सांस्कृतिक, गतिविधि संस्था की आधारभूत विशेषतायें हैं। विस्तृत खेल के मैदान, आधुनिक सुविधाओं सहित बड़े छात्रावास, तीसरी कक्षा से संस्कृत एवं अंग्रेजी प्रारम्भ। निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। संस्कृत एवं अंग्रेजी सहित मैट्रिक उत्तीर्ण छात्रायें ११वीं कक्षा में दाखिल हो सकती हैं। ट्यूशन फीस नहीं ली जाती।

१५ जुलाई से नवीन कन्याओं का दाखिला प्रारम्भ है। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव १०) भेजकर नियमावली मंगा सकते हैं।

—दमयन्ती कपूर
प्रिंसिपल कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक
२. " फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार
३. " सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत
४. " हरीश एजेन्सीज ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत
५. " भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल
६. " घनश्यामदास सीताराम बिचला बाजार, भिवानी
७. " कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा
८. " कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद
९. " चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/५ जेकमपुरा, गुड़गांव

आर्यसमाज–सरल परिचय

आर्यसमाज मत, मजहब, सम्प्रदाय नहीं है, अपितु सत्य सनातन वैदिकधर्म का प्रचारक है। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा उन्नीसवीं शताब्दी में संस्थापित 'आर्यसमाज' मानव निर्माण का आंदोलन है। निष्पाप चिकित्सक को भांति आध्यात्म रोगों का चिकित्सक, असहायों, पीड़ितों, अबलाओं और विधवाओं का सहायक, हिन्दुत्व तथा राष्ट्रवादी भावनाओं का रक्षक है। अज्ञान, अभाव और अन्याय को मानवता के महाशत्रु मानकर वेद, नारी और निर्धन उद्धार का मार्ग प्रशस्त करता है।

स्वामी दयानन्द की महत्त्वपूर्ण भूमिका वैदिकधर्म के पुनरुद्धार का भगीरथ प्रयास था। उन्होंने स्पष्ट घोषित किया कि वे कोई नये धर्म की स्थापना नहीं कर रहे हैं। वरन् ब्रह्मा से लेकर जेमिनि ऋषि तक जिस धर्म का परिपालन इस महान् देश में हुआ था, उसी के पुनरुद्धार का प्रयास कर रहे हैं।

वैदिकधर्म चारों वेदों पर आधारित है तथा त्रैतवाद का प्रतिपादन करता है। ईश्वर, जीव और प्रकृति (भोग, भोक्ता और नियन्ता) को जानना मानव का उद्देश्य है। वेद निर्भ्रांत और पूर्ण वैज्ञानिक है।

आर्यसमाज के १० सार्वभौम नियम मानव धर्म के सूत्र दर्शक हैं, जिनमें वैदिक सिद्धांतों का समन्वय है और इनके हृदयंगम एवं परिपालन से मनुष्य का चरमोत्कर्ष निश्चित रूप से संभाव्य है। इन नियमों में ईश्वर का स्वरूप, एकेश्वरवाद का प्रतिपादन, वेदों के पढ़ने पढ़ाने, सदा सत्य के ग्रहण करने, असत्य के त्यागने, संसार का उपकार करने, अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति समझने का प्रतिपादन है।

आर्य वीरदल कैथल की नियुक्तियां

मन्त्री—सर्वश्री युद्धेन्द्रकुमार, कोषाध्यक्ष—अमरनाथ आर्य, नगर नायक—बृजमोहन आर्य, शाखानायक—जगदीशचन्द्र आर्य, लक्ष्मणदास आर्य, शिक्षक—शंकरलाल, देवेन्द्रकुमार, चन्द्रभान, संरक्षक—अमरसिंह शोरेवाले, बाबूराम गुप्त, मदनगोपाल वर्मा, इकबालचन्द, आचार्य देवव्रत कुरुक्षेत्र, बालशाखा शिक्षक—धीरजकुमार आर्य। —मन्त्री

ला० रूपचन्द जी का निधन

आर्यसमाज काठमण्डी आर्यनगर सोनीपत के संस्थापक एवं आजीवन प्रधान ला० रूपचन्द जी का २८ जून को लम्बी बीमारी के पश्चात् निधन होगया। उनकी आयु ८० वर्ष के लगभग थी। उन्होंने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह तथा हिन्दी आंदोलन में भी भाग लिया था।

१० जुलाई को उनकी स्मृति में शोकसभा का आयोजन किया गया। जिसमें उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।

—सत्यवीरसिंह शास्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४) रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० ३३६ | १० न० P R | ४८९२ | पुस्तक संख्या १ । ६, ८४ । ८२



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, ५ श्रावण २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्क ३४, २८ जुलाई, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

मैं कौन हूं ?

ले०—यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद-२४४०२३

आत्मा के अस्तित्व के बारे में पाश्चात्य दार्शनिक डेकार्ट ने कहा था—I think, there fore I am. अर्थात् मैं सोचता हूं, अत: मैं हूं। इस से आत्मा के अस्तित्व की सिद्धि तो हो सकती है, किन्तु मैं क्या हूं, यह ज्ञात नहीं होता। एक अन्य पाश्चात्य विद्वान् कालायिल कुछ और ही कहता है। उसका कथन है कि—"सृष्टि से आज तक व्यर्थ ही 'मैं क्या हूं' की जटिल समस्या को सुलझाने में लगे हैं। इसमें समय बर्बाद करने की अपेक्षा यह जानना श्रेयस्कर है कि 'हमारा कर्त्तव्य क्या है ?' तो फिर 'मैं क्या हूं ?' यह जानना व्यर्थ-सा है। हमारा विनम्र निवेदन है कि नहीं, यह व्यर्थ समय खोना नहीं, अपितु नितांत आवश्यक है। जब तक हम यह नहीं जान लेते कि हम कौन हैं, हमारा स्वरूप और सामर्थ्य क्या है, तब तक हमारे कर्त्तव्यों का निर्धारण कैसे हो सकता है ? जब तक हमें इस बात का पता न चले कि हम स्वामी हैं या सेवक, राजा हैं या प्रजा, रक्षक हैं या रक्षित, पोषक हैं या पोषित, पालक हैं या पालित, तब तक हमारे कर्त्तव्यों का निर्णय कैसे हो सकता है ? इस बात से तो कोई इन्कार नहीं कर सकता कि राजा, प्रजा, स्वामी, सेवक, रक्षक, रक्षित, पालक, पालित आदि के कर्त्तव्य कभी भी एक से नहीं हो सकते। वे अनिवार्यतः भिन्न-भिन्न ही होंगे। ऐसी स्थिति में बिना अपने को जाने, अपने कर्त्तव्यों का बोध कैसे हो सकता है ? अतः कार्लायल का यह कहना यथार्थ नहीं कि 'मैं क्या हूं ?' के झमेले में न पड़कर अपने कर्त्तव्यों के बारे में विचारना चाहिए।

मैं क्या हूं अथवा मैं कौन हूं ? इस प्रश्न का उत्तर यदि विकास-वादियों से पूछा जाये तो वे कहेंगे कि यह 'मैं' एक कोरी कल्पना के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं। जिसे संसार की प्राय: समस्त जातियों को उनके जंगली तथा असभ्य बाप-दादाओं से विरसे में मिली है। भौतिकवादी इसे भौतिक संमिश्रणों का समूह कहेंगे। ऐसे लोग 'मैं' को इस शरीर के रूप में देखते हैं। जैसे कि विरोचन ने देखा था और फिर इस शरीर के ही भरण-पोषण में ही अपना सारा जीवन खपा देते हैं। किन्तु कतिपय इन्द्र सरीखे तत्त्वान्वेषी जन इससे सन्तुष्ट नहीं होते। यह शरीर तो परिवर्तनशील एवं नाशवान् है, तो फिर क्या मैं भी परिवर्तन-शील और नाशवान् हूं। क्या मेरा इतना ही परिचय है कि—

मिट्टी का मन, मिट्टी का तन। पलभर जीवन, मेरा परिचय।

नहीं ! वेद कहता है कि 'इयं कल्याण्यजरा मर्त्यस्यामृता गृहे। यस्मै कृतार्थये स यश्चकार जजार॥' अर्थात् कल्याण करनेवाला यह आत्म-देवता अमर है और मर्त्य प्राणी के घर अर्थात् शरीर में रहता है। जिसे आत्मबोध हो जाता है, वही आनन्द की प्राप्ति करता है, वही स्तुति करने योग्य बनता है।

अंग्रेजी काव्य में भी आत्मा की अमरता की बात इन शब्दों में स्वीकारी गई है—

Dust thou art, to dust returnest,
war not spken of the soul.

'भस्मान्तं शरीरं' इस वेद वचन के अनुसार शरीर का अन्त भस्म होने में है। शरीर को देह भी कहते हैं। इसे देह इसीलिए कहा गया है कि यह दग्ध होनेवाला है। 'दह' धातु से देह शब्द की उत्पत्ति हुई है। इससे यह सिद्ध होता है कि अन्ततः यह दग्ध होनेवाला है और अन्त में सूख जानेवाला होने से इसे शरीर कहा गया है। यथा—'शीर्यते इति शरीरः' किन्तु चाहे तो यह भस्म हो जावे या सूख जावे; यह सब परि-वर्तन शरीर के ही होते हैं, आत्मा के नहीं। आत्मा तो अजर, अमर और अविनाशी है। हां ! कर्मानुसार वह विभिन्न शरीरों को अवश्य धारण करता है। आत्मा के संयोग से ही शरीर में चेतना आती है। यह शरीर ही बच्चा होता है, फिर युवा और बाद में बूढ़ा होता है, किन्तु आत्मा में यह सब परिवर्तन नहीं होते। यही आत्मा ही कर्त्ता और भोक्ता है। शरीर भोगायतन है, भोक्ता नहीं। अतः मुख्य वस्तु तो आत्मा ही है, जिसे हम प्रायः भूले हो रहते हैं। यही जानने योग्य वस्तु है।

आत्मा के सम्बन्ध में आज जितनी भ्रांतियां हैं, उतनी स्यात् किसी अन्य के विषय में नहीं होंगी। कोई इसे प्रकृति से उत्पन्न मानता है, तो कोई ईश्वर का अंश। यहां तक कि लोग स्वयं को ब्रह्म तक कहने से भी नहीं हिचकचाते। तात्पर्य यह कि हमने 'मैं' की कल्पना एक कल्पना से लेकर ब्रह्म तक कर डाली है, पर समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है।

'मैं कौन हूं ?' इसका उत्तर वेदभगवान् इन शब्दों में देते हैं—'अहमिन्द्रो' अर्थात् मैं इन्द्रियों का स्वामी इन्द्र हूं। अथर्ववेद में इन्द्रियों और उनके स्वामी इन्द्र का बड़ा सुन्दर निरूपण किया गया है। जिसका वर्णन हम ऊपर कर चुके हैं। उसमें स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि आत्मा अमर है और मर्त्य प्राणी के घर अर्थात् शरीर में रहता है। इसी आत्मा से ही आत्मा को जानना है। तभी इकबाल ने कहा था कि—

ढूंढता फिरता हूं मैं इकबाल अपने आपको।
आप ही गोया मुसाफिर आप ही मंजिल हूं मैं॥

केनोपनिषद् में आया है कि—'इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिन-हावेदीन्महती विनष्टिः। अर्थात् इसी जन्म में यदि आत्मा को जान लिया तो जन्म सफल है, नहीं जाना तो जीवन निष्फल हुआ और बड़ी हानि हुई। इसलिए हम सबका यही प्रयत्न होना चाहिए कि स्वयं को जानें, इसी में हम सबका कल्याण है।

शराब पीना सामाजिक अभिशाप है।

मैक्समूलर पर महर्षि दयानन्द की छाप थी

— डा० शांतिस्वरूप शर्मा

जब भारत में पश्चिमी सभ्यता की आंधी जोरों से चल रही थी। यूरोप और अमेरिका से ईसाई पादरियों की भारी संख्या भारतीयों को ईसाई बनाने के लिए भारत में पहुंच गई थी, जो लालच देकर व प्रो० मैक्समूलर के वेदों के त्रुटिपूर्ण भाष्य के आधार पर वैदिकधर्म के प्रति घृणा उत्पन्न कराकर लोगों को धड़ाधड़ ईसाई बना रहे थे। अंग्रेज भली भांति जानते थे कि यदि भारत की संस्कृति को वे समाप्त करने में सफल होगये तो बड़ी देर तक भारत को गुलाम बनाकर रख सकता है। इसलिए अंग्रेजों ने प्रो० मैक्समूलर को, जो उस समय संस्कृत के विद्वान् कहे जाते थे, भारी रिश्वत देकर एक निकृष्ट कार्य के लिए उकसाया। जिसके परिणामस्वरूप प्रो० मैक्समूलर ने आर्य धर्मग्रन्थों और आर्य संस्कृति की निन्दा करने के लिए एक कुत्सित षड्यन्त्र रचाकर वेदों का ऐसा अशुद्ध अनुवाद किया, जिसको पढ़कर वैदिकधर्म से घृणा हो जाना आवश्यक था। मैक्समूलर ने भारत देश व वैदिक साहित्य का अपमान करने का पूरा प्रयत्न किया।

प्रो० साहब ने भारतीय संस्कृति के आदिस्रोत वेद के विषय में लिखा था कि वैदिक सूत्र काफी संख्या में मूर्खतापूर्ण निम्न व साधारण हैं। उस समय हमारे देश में विशुद्ध अनुवाद करके जनता के सामने पेश करनेवाला कोई नजर नही आता था। क्योंकि सारे देश में अज्ञानता का अन्धकार व्याप्त था।

१६ दिसम्बर, १९३८ को प्रो० मैक्समूलर ने भारतीय सचिव को एक पत्र में लिखा था कि भारत के धर्म को नष्ट करने का उसने पूरा प्रयत्न किया था और वह नष्ट हो भी रहा था। अब तो उसका स्थान ईसाइयों को लेना चाहिये था। यदि ऐसा नहीं हो सका तो यह दोष सरकार का ही होगा। इस पत्र से प्रो० साहब व अंग्रेजों की मिलीभगत साफ तौर पर जानी जा सकती है।

उनके एक पत्र जो उन्होंने अपनी पत्नी को लिखा था, से साफ प्रतीत होता है कि उन्होंने वेदों का भाष्य त्रुटिपूर्ण करने का षड्यन्त्र किया था। सन् १८६६ में आपने अपनी पत्नी को लिखा था कि "वेद के अनुवाद का मेरा यह संस्करण उत्तरकाल में भारत के भाग्य पर पर्याप्त प्रभाव डालेगा। यह उनके धर्म का मूल है। मैं निश्चयपूर्वक अनुभव करता हूं कि वेदों का उन्मूलन इस भाष्य से हो जावेगा।

आपको भारत से कितनी घृणा थी तथा वे भारतीय संस्कृति के कितने विरुद्ध थे, का संकेत इस बात से मिलता है कि जब फ्रांस के प्रसिद्ध विद्वान् लुइस जेकालियर ने भारत की प्रशंसा करते हुए लिखा था कि 'भ्रम प्राचीन भारत भूमि मानवता की जन्मादात्री है' आपने भारत भूमि को नमस्कार करते हुए लिखा था कि 'श्रद्धा और प्रेम, काव्य और विज्ञान की पितृभूमि तेरा अभिनन्दन, जिसको शताब्दियों के होनेवाले आक्रमण भी नीचे नहीं दबा सके। प्रो० मैक्समूलर ईर्ष्या में अंधा होकर जलभुन उठा और उसने उस फ्रांसिसी विद्वान् की आलोचना करते हुए लिखा था 'मालूम पड़ता है कि लेखक भारतीय ब्राह्मणों के चक्कर में आगया है।'

इस अन्धकार में जब धड़ाधड़ ईसाई बनाये जारहे थे, उस समय महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने गुरु स्वामी विरजानन्द जी की आज्ञानुसार वेदों के ज्ञान का प्रकाश लेकर बाहर निकले और उन्होंने अन्धकार में भटके लोगों को अपनी योग्यता तथा विद्वत्ता से चकाचौंध कर दिया। उन्होंने बतलाया कि मैक्समूलर का भाष्य निरा झूठ का पुलिंदा है, जिसने भारत और वेदों को बदनाम करने के लिए ही लोगों को ऐसे गलत भाष्य से गुमराह किया।

महर्षि जी ने अपने भाषणों और अपनी लेखनी द्वारा सिद्ध किया कि वेद पुराना और सच्चा ज्ञान है और यही संसार के सब ज्ञानों का स्रोत है। स्वामी जी को इसको सिद्ध करने के लिए बड़े-बड़े तूफानों से टकराना पड़ा। उसने बड़े-बड़े पादरियों, मौलवियों और पण्डितों से शास्त्रार्थ करने के पश्चात् सिद्ध किया कि वेद का ज्ञान ही एकमात्र सच्चा ज्ञान है। आपने ऋग्वेद आदि भाष्यभूमिका एक बड़ी पुस्तक लिखी। जिसको पढ़कर मैक्समूलर को कहना पड़ा, 'संस्कृत साहित्य ऋग्वेद से प्रारम्भ होता है और महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका पर समाप्त होता है। महर्षि दयानन्द जी ने आधुनिक वैज्ञानिक रूप देकर वेदों को अधिक समुज्ज्वल बना दिया। वैदिक मंत्रों की मूर्खतापूर्ण बतानेवाले प्रो० साहब को कहना पड़ा, वेद नित्य है।

महर्षि दयानन्द का जादू तो वास्तव में प्रो० साहब के सिर चढ़कर बोला और उसने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के बोर्ड आफ हिस्टारिकल स्टडीज की ओर से आयोजित किये गये भाषण जो आई० सी० एस० के विद्यार्थियों के समक्ष दिया, की पुस्तक 'इण्डिया व्हाट केन टीच अस' में लिखा है' भारत केवल ऐसा देश है जो प्रकृति के सब साधनों से सम्पन्न है। भारत ही एक देश है जो मानव इतिहास की बहुत कीमती और शिक्षाप्रद सामग्री को अपने कोष में सुरक्षित रखता है।'

वैदिक साहित्य की प्रशंसा करते हुए प्रो० साहब को लिखना पड़ा ज्ञान की कोई ऐसी शाखा नहीं, जिस पर वैदिक साहित्य ने नया प्रकाश नहीं डाला हो। धर्म और पौराणिकता के सम्बन्ध में उसने जो प्रकाश दिया है, उसके महत्त्व, उसकी नवीनता और इसकी समृद्धि की तो उपमा ही नहीं।

प्रो० साहब को यह भी लिखना पड़ा था कि जो लोग संगीत, व्याकरण शब्द रचना विज्ञान इत्यादि विषयों का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, दार्शनिक विचारों को जानना चाहते हैं, जो इस पृथ्वी पर पारिवारिक जीवन सर्वप्रथम किस रूप में प्रारम्भ हुआ तथा किस प्रकार ग्रामीण जीवन या राजनैतिक जीवन विकसित हुए, उसे चाहिये वह वैदिक साहित्य का अध्ययन करे।

महर्षि दयानन्द की असीम कृपा से ही यह देश अज्ञानता की दलदल से बाहर निकला और उन्होंने वेदों के सूत्रों का मजाक उड़ानेवाले प्रो० मैक्समूलर जैसे लोगों को सीधे रास्ते पर लगाकर इस देश की संस्कृति व स्वतन्त्रता की रक्षा की। जिसका यह देश सदैव ऋणी रहेगा।

जग को ज्योतिर्मय करदो

इस जग को ज्योतिर्मय करदो।

अन्धकार है गलियारों में, लगी कालिमा दीवारों में।
तमस नाग फुफकार रहा है, बैठा उज्ज्वल मीनारों में ॥

अमा निशा के इस पहरे में,
आज मुक्त आभा को करदो।

राग-द्वेष के विषधर काले, हर आंगन में पले हुए।
अमरबेल बन गई ईर्ष्या, विष के प्याले ठले हुए ॥

मानवता के अमर पुत्र को,
प्रेम प्रलाप का वह सुस्वर दो।

हर आंगन और हर कुटिया में, होवे उज्ज्वल उजियारा।
पुते कालिमा तम के मुख पर, जगमग होवे जग सारा ॥

तमस तोम के नभ-मण्डल में,
आभा अमित अमर भरदो।

मृदु मुस्कान हो हर आंगन में, फूल खिले हों ज्यों उपवन में।
खले न दैन्य अभाव किसी को, ज्योतिर्दीप जले प्रांगण में ॥

दीपमालिका सकल दिवस हों,
ज्योति का वह दान अमर हो।

—धर्मचन्द विद्यालंकार 'समन्वित'
सनातन धर्म कालिज पलवल, जि० फरीदाबाद

स्कूल खोलनें में सरकार को दस साल लग जाते हैं लेकिन शराब की दूकान चुटकी में

नई दिल्ली, २१ जुलाई (वार्ता) : "मेरा पति पीकर घर लौटता है—सखी, वह मुझे रोज मारता है—मैं पूरा दिन मेहनत करती हूँ—सखी, मैं पिटना नहीं सह सकती।"

स्वतन्त्रता के चालीस वर्ष बाद भी महिलाओं को यह सब झेलना पड़ता है। राजस्थान के एक गांव में महिलाओं द्वारा गाया जानेवाला यह गीत इस बात का सबूत है कि मर्दों का नशा अपनी पत्नियों को पीटकर ही उतरता है।

असंगठित क्षेत्र में महिला स्व-रोजगार सम्बन्धी राष्ट्रीय आयोग ने हाल ही में राजस्थान के एक गांव का दौरा किया। इस गांव की महिलाओं का कहना है कि उनके पति शराब पीकर घर लौटते हैं और फिर उन्हें मारते-पीटते हैं। महिलाओं द्वारा गाया जानेवाला उपरोक्त गीत इस बात का जीता-जागता सबूत है।

आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि स्वतन्त्रता के चालीस साल बाद भी महिलाओं की यह स्थिति है। जिसकी जिम्मेदार शराब है। गांव की अनेक महिलाओं ने अपना दुखड़ा सुनाते हुए कहा कि 'शराब' के कारण ही आज तुम्हें गरीबी का बोझ ढोना पड़ रहा है। यहाँ की महिलायें अपने क्षेत्र में शराब बनाने पर पूरी तरह प्रतिबन्ध लगाने की मांग कर रही हैं।

आजादी के ४० साल बाद भी महिलाओं की इस दुर्दशा का सबसे बड़ा कारण है 'शराब'। सोलन की एक महिला का यह कहना सरकारी नीतियों पर कितनी बड़ी चोट है कि स्कूल खोलने की मांग की जाए तो सरकार उसे खोलने में दस साल लगा देती है, जबकि शराब की दूकान चुटकी बजाते...

हिमाचल प्रदेश में सोलन की महिलाओं का कहना है कि जब सरकार से स्कूल खोलने की मांग की जाती है तो उसे पूरा करने में दस साल लग जाते हैं। लेकिन शराब की दूकानें चुटकी बजाते खुल जाती हैं। उनका कहना है कि हमारे विरोध के बावजूद ये दूकानें कुकुरमुत्तों की तरह फैलती जारही हैं।

महिलाओं में इस बात पर भी बहुत रोष है कि सरकार राजस्व के लालच में शराब की दूकानें खोलती है। महिलाओं का कहना है कि क्षेत्र के लोगों की दो तिहाई सहमति के बिना कहीं भी शराब की दूकान नहीं खोली जानी चाहिए।

शिमला में महिलाओं का कहना है कि यदि सरकार सचमुच महिलाओं का कल्याण चाहती है तो उसे ये ठेके नहीं खोलने चाहियें। यहां भी महिलायें अपनी गरीबी के लिए सरकारी नीतियों को ही जिम्मेदार ठहराती हैं। उनका कहना है कि शराब के ठेके खोलने से सरकार की आय तो बढ़ती है, लेकिन हम दिन-प्रतिदिन गरीब होती जाती हैं।

यहां की महिलायें शराब की खुली बिक्री से बहुत क्षुब्ध दिखाई दीं। उनका कहना है कि जब चावल, गेहूं, चीनी और साबुन जैसी चीजें राशन में बिकती हैं तो फिर हजारों मुसीबतों की जड़ इस शराब को क्यों खुलेआम बेचा जाता है।

आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि ज्यादातर महिलाओं के विचार में 'शराब' और 'गरीबी' का सम्बन्ध सीधा और स्पष्ट है।

उड़ीसा में ज्यादातर पुरुषों को यह गलतफहमी है कि वे शराब पिये बगैर कठोर परिश्रम कर ही नहीं सकते।

यहां आदिवासियों को अपनी खपत के लिहाज से शराब बनाने का लाइसेंस दिया जाता है। इसके अन्तर्गत वे अपनी जरूरत के लिए तथा तीज त्यौहार के लिए भी शराब बना सकते हैं।

आयोग ने एक सामाजिक कार्यकर्ता का हवाला देते हुए कहा कि आदिवासियों में शराब की लत कुछ ज्यादा ही है। कार्यकर्ता ने कहा कि साथ ही शराब लोगों के उत्साह पर भी विपरीत प्रभाव डालती है और इन क्षेत्रों में विकास की गति धीमी है तो इसकी जिम्मेदारी शराब पर ही है।

यहां के मछुआरों से बातचीत करने पर पता चला कि ज्यादातर की यही राय है कि हम चूंकि पानी में रहकर काम करते हैं। दूर तक फैले समुद्र के कारण वहां मौसम ठण्डा होता है। इसलिए हमें शराब पीनी पड़ती है।

मछुआरों का मानना है कि वे पुरुष हैं, इसलिए शराब से खुद को गर्म रख सकते हैं। यह पूछे जाने पर कि इस धन्धे में लगी महिलायें शराब पिये बगैर किस प्रकार कड़ी मेहनत कर पाती हैं, मछुआरों का कहना था कि 'औरत आखिरकार औरत ही है।'

हैदराबाद की झोपड़पट्टियों में रहनेवाली महिलायें शराब को अपने जीवन का सबसे बड़ा 'दुश्मन' मानती हैं। उनका कहना है कि उन्हें दरिद्रता की स्थिति और नारकीय जीवन जीने के लिए मजबूर करने अथवा वैधव्य की स्थिति में पहुँचाने के लिए केवल जिम्मेदार यह शराब ही है।

रिपोर्ट के अनुसार ये महिलायें चाहती हैं कि उनके शहर से 'शराब की गंध' हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाये।

जम्मू में पिछड़े वर्गों में भी महिलाओं की पहली 'दुश्मन' यह शराब ही है। उनका भी यही मानना है कि उनकी परेशानियों की मुख्य जड़ शराब ही है।

एक सफाई कर्मचारी से बातचीत करने पर उसने बहुत लाचारी के आलम में कहा कि 'भाई, हम पीते तो हैं, पर हमें यह यह बर्बाद कर रही है। हमारी खून-पसीने की कमाई शराब की बलि चढ़ जाती है।'

रिपोर्ट में कहा गया कि पति के शराब पीने से तंग आकर तनाव में पत्नी द्वारा आत्महत्या का प्रयास करने की घटनायें बढ़ रही हैं।

कांचीपुरम में महिलाओं का कहना है कि 'शराब की दूकानें हमारे इर्द-गिर्द कहीं नहीं हैं। फिर भी हमारे मर्द शराब पीते दिखाई देंगे।' उनका कहना है कि दूर-दूर तक शराब की कोई दूकान नहीं है, लेकिन पीनेवाले कुछ न कुछ इंतजाम कर ही लेते हैं। उनका इशारा गैरकानूनी रूप से बननेवाली शराब की बिक्री की तरफ था। उत्तराखण्ड कौसानी की महिलायें भी 'शराब' से परेशान नजर आईं। उनका कहना है कि 'संगठित प्रयास के बावजूद हम इस समस्या को हल नहीं कर सकी हैं। हमने इस समस्या पर काफी हद तक काबू पा लिया था, लेकिन सरकारी मदद नहीं मिलने के कारण समस्या धीरे-धीरे फिर वहीं की वहीं पहुँच गई।

पंजाब में महिलाओं ने बताया कि उनके यहां के ६० प्रतिशत पुरुष शराब पीते हैं और ऐसे पीते हैं, जैसे शराब के बिना जी ही नहीं सकते। उनका कहना है कि बड़ी उम्र के लोगों की तुलना में युवा वर्ग अधिक शराब पीता है। कई महिलाओं ने बताया कि हमारे बेटे अपने बाप से ज्यादा शराब पीते हैं और अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं। कुछ महिलायें तो यहां तक कह बैठीं कि 'यह शराब, शराब नहीं, हमारी सौतन है।' उन्होंने कहा कि यहां हर गांव में कम से कम एक शराब की दूकान

(शेष पृष्ठ ४ पर)

वेदप्रचार सप्ताह आदि के कार्यक्रम

आर्यसमाज दयालपुर जि० फरीदाबाद		५ से ११ अगस्त
,,	भक्त फूलसिंह बलिदान दिवस कन्या गुरुकुल खानपुर कलां	१४ ,,
,,	मुआना जि० जींद	२२ से २८ ,,
,,	जगाधरी जि० अम्बाला	२२ से २८ ,,
,,	नरवाना जि० जींद	२७ से २ सितम्बर
,,	महर्षि दयानन्द मार्ग अम्बाला छावनी	२७ से २ ,,
,,	सालवन जि० करनाल	२७ से ३ ,,
,,	लाडवा जि० कुरुक्षेत्र	२८ से ३ ,,
वैदिक पारिवारिक सत्संग सभा हिसार		२९ से ४ ,,
आर्यसमाज सिरसा		७ से ९ ,,
,,	सेवासदन बल्लबगढ़ जि० फरीदाबाद	१०-११ ,,
,,	बीकानेर गंगायचा अहीर जि० महेन्द्रगढ़	१७-१८ ,,
,,	शेखपुरा जि० करनाल	२३ से २५ ,,

जो आर्यसमाज वेद सप्ताह रखना चाहें, वे कृपया २७ अगस्त से ३ सितम्बर की तिथियां छोड़कर रखें, ताकि उपदेशक तथा भजनोपदेशकों का प्रबन्ध करने में सुविधा रहे।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

चुनाव में शराबियों को वोट न देवें

—स्व० चौ० पृथ्वीसिंह बेधड़क का ग्रामवासियों को सन्देश

टेक—आज के चुनाव में शराबियों की नाव में बैठियो ना भाई

जो इस नाव में बैठोगे तो डूब जाओगे,
पांच साल तक रोओगे और गोते खाओगे,
घर-घर शराब पी जायेगी कहीं ना ढूंढी पायेगी,
घी दूध और मलाई—आज के चुनाव में—। १

एक वैद्य ने दवा पिलाई पांच साल तक,
पेट की हड्डी टूटी अच्छी होगई साल तक,
जिसने नाड़ी नहीं परखी ऐसे मूर्ख डाक्टर की,
मतना लियो दवाई—आज के चुनाव में—। २

भारत के मजदूर किसानो देश बिगाड़ो ना,
झोटे तले बाल्टी रखकर दूध निकालो ना,
जैसी मांई वैसी मरेगी बच्चा पैदा नहीं करेगी,
कभी भी बांझ लुगाई—आज के चुनाव में—। ३

चांदी सोना चीज कीमती नोट ना लेना,
कह पृथ्वीसिंह शराबी को वोट ना देना,
जिसने सारे देश की भाषा और भेष की
सभ्यता सभी मिटाई—आज के चुनाव में…। ४

प्रस्तुतकर्ता—श्री जयपालसिंह बेधड़क, सभा भजनोपदेशक

(पृष्ठ ३ का शेष)

जरूर है, जो हमारी मेहनत की कमाई हम से छीन लेती है और हम देखते रह जाते हैं।'

बम्बई में झोपड़पट्टी में रहनेवाली महिलाओं ने अपने शराबी पतियों को सबक सिखाने के लिए एक दिलचस्प सुझाव दिया है। उन का कहना है कि 'शराबियों की तनख्वाह सीधे ही उनकी बीवियों को दी जानी चाहिए।'

रिपोर्ट में कहा गया है कि असम में यह समस्या काफी हद तक लड़कियों की शिक्षा को प्रभावित करती है। चाय के बागानों में काम करनेवाली महिलाओं पर 'शराब' का बहुत बुरा असर पड़ता है। इस धन्धे में लगी महिलायें अपनी बेटियों को स्कूलों में भेजने से डरती हैं। क्योंकि उनके मनमें यह डर बैठा है कि स्कूल से लौटते वक्त उनकी बेटियां शराबियों के कारण मुसीबत में फंस सकती हैं।

(पंजाब केसरी से साभार)

सही इतिहास बताइये

—देवदुलारचन्द, नंबल टाउनशिप

कुरुक्षेत्र रात्रि में जो कुछ दूरदर्शन पर दिखाया जाता है वह धारावाहिक अमीर खुसरो की कड़ी में बाबा के मुंह से आर्यों को यवन हूण की तरह हमलावर व यूरोप से यहीं पर बस गये बताया गया है। यह बात हकीकत नहीं है। इसको जानने के लिए प्राचीन साहित्य का गहन अध्ययन करना पड़ेगा। प्राचीन साहित्य में भारत को गुरु कहा गया है। जब विदेशवासी हां या ना भी नहीं करना जानते थे, तब हमारे आदि मानव ने संसार को आवाज लगाते हुए कहा था—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

इससे पता चलता है कि हम यहीं के निवासी हैं, क्योंकि इस भारत ने ही संसार को ज्ञानामृत दिया है। ऋग्वेद विश्व की सबसे पुरानी पुस्तक है। उसमें भी बहुत बार आर्य शब्द आये हैं। हम कहीं बाहर से नहीं आये, हम यहीं के मूल निवासी हैं। हमारे देश को पश्चिमी शिक्षा ने खोखला कर दिया है। हमारी संस्कृति को भ्रष्ट करने वाले विदेशी विद्वान् लार्ड मैकाले आदि हैं। जो जाति, जो परिवार व राष्ट्र अपने इतिहास को भूल जाते हैं, वे हमेशा के लिए मिट जाया करते हैं, पर जो इतिहास को नष्ट-भ्रष्ट करते हैं, वे भारी गुनाह करते हैं, क्योंकि इससे जाति, परिवार व राष्ट्र का पतन हो जाता है। तिलक कहते हैं कि आर्य लोग उत्तरी ध्रुव से ईरान और ईरान से भारत पहुंचे। लेकिन ईरान के स्कूलों में पढ़ाया जाता है कि आर्य भारत से आकर ईरान में बस गये हैं।

ईरान के बादशाह सदा अपने साथ 'आर्यमेहर' की उपाधि लगाते आये हैं। फारसी में 'मेहर' सूर्य को कहते हैं। ईरान के लोग अपने आपको सूर्यवंशी आर्य मानते रहे हैं। धार्मिक मतांधता के कारण अब यह स्थिति बदलती जारही है। इसीलिए मैं लेखक व दूरदर्शनवालों से निवेदन करना चाहता हूं कि जब भी लेखनी उठायें, सही इतिहास का पता लगाकर फिर इतिहास को लिखें। इसी प्रकार दूरदर्शनवाले भी गहन अध्ययन कर इतिहास के पन्ने को दूरदर्शन पर दिखायें, जिससे भारत के सपूतों को सही इतिहास का पता लगे। नहीं तो हम अपने आदर्श, अपने इतिहास, राम, कृष्ण आदि को भूल जायेंगे, जिससे भारत मां हमें कभी भी क्षमा नहीं करेगी।

(दैनिक जनसत्ता से साभार)

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के स्नातकों को सूचना

गत अढाई वर्ष पूर्व कुछ स्थिरमतिजनों ने एक समारोह के अवसर पर मेरी अनुपस्थिति में विद्यालय के स्नातकों के मण्डल का गठन किया था। तत्पश्चात् उनकी ओर से स्नातक परिचायक स्मारिका के प्रकाशनार्थ सौ-सौ रुपये भेजने का परिपत्र जारी किया गया था। जिस पर कुछ स्नातकों ने उक्त राशि उन्हें भेज दी है। अब उन स्नातकों के पत्र मेरे नाम आते हैं। उस राशि का क्या बना तथा स्मारिका कब छप रही है इत्यादि सभी स्नातकों के जानार्थ पृथक्-पृथक् उत्तर न देकर निम्न पंक्तियों द्वारा सूचित कर रहा हूं कि मैं उस मीटिंग में सम्मिलित नहीं था और न ही मेरे नाम से परिपत्र लिखना और न ही मुझे किसी की राशि प्राप्त हुई। मेरे ज्ञान के अनुसार यह सब निम्न दो सज्जनों ने लिखा है। वेद सुमन जी डी. ए. वी. कालेज करनाल व श्री पं. जगदीशचन्द जी वसु, ५५ देशराज कालोनी पानीपत, जिला करनाल। अतः ये ही बता सकते हैं कि भेजी गई राशि किस बैंक में है तथा कितनी है। स्मारिका कब छपेगी, सभी स्नातक इनको लिखित पते पर पत्र लिखकर सारा विवरण मंगा सकते हैं। मुझे कोई पत्र लिखने का कष्ट न करें।

निवेदक—सत्यप्रिय शास्त्री एम० ए०
आचार्य दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार, हरि.

क्रांतदर्शी—दयानन्द

श्री पं. वीरसेन वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य, वेदसदन, महारानी पथ, इंदौर

१—महर्षि दयानन्द का दिव्य सन्देश

महर्षि दयानन्द ने आर्यजाति, आर्यावर्त्त तथा मानवजाति के अधःपतन के कारण को अपनी दिव्य योगजन्य दृष्टि से सम्यक् जानकर आर्यजाति को उद्बोधित करने का प्रयत्न किया। आर्यजाति का पूर्वकाल में अखिल भूमण्डल पर चक्रवर्ती साम्राज्य रहा। अतः उसको उसी आर्य नाम से पूर्व संस्कारों को जागृत कराने के लिए और पुनः भूमण्डल का चक्रवर्ती साम्राज्य प्राप्त करने के प्रयत्न के लिए महर्षि दयानन्द ने आर्यजाति को वेदों का दिव्य सन्देश दिया तथा वेदों को अपनाने का सन्देश दिया। वेदों को पढ़ने-पढ़ाने का परम धर्मरूपी परमावश्यक कर्म घोषित किया और यह बताया कि—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद ही धर्म, कर्म, उपासना, मोक्ष का मूल है।

२—वेदों का भूमण्डल में प्रचार

वेदों का भूमण्डल में प्रचार महर्षि दयानन्द का प्रधान लक्ष्य था। इसके लिए प्राथमिक कार्य यह महर्षि ने घोषित किया था कि—वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म है। इसको ध्यान में रखकर प्रयत्न करने चाहियें। जब वेदों को पढ़ेंगे पढ़ावेंगे, तभी उनके अर्थों के प्रति प्रीति होगी और वेद की विविध विद्याओं का ज्ञान होगा। वेद की विद्याओं के ज्ञान से उनके उपयोग की विधियों का अनुसंधान प्रारम्भ होगा। विधियों के अनुसंधान के आधार पर विद्या और शिल्प सब यन्त्रों का निर्माण होगा और मानवजाति की आवश्यकताओं की पूर्ति वेद के पढ़ने से होगी, तभी वेदों का पठन-पाठन प्रचलित हो सकेगा।

३—वेदों का भूमण्डल में प्रचार यज्ञ विज्ञान से सम्भव

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। अतः इस बात की भी नितांत आवश्यकता है कि वेद में से उन सब सत्य विद्याओं को या उन में से कतिपय सत्य विद्याओं को संसार के सम्मुख प्रस्तुत किया जाये। उन विद्याओं से संसार को लाभान्वित किया जाये और उन विद्याओं को व्यवहारोपयोगी बनाकर विश्व के जीवन के इतने निकट स्थापित कर दिया जाये कि मानवमात्र को वेद एवं वैदिक यज्ञ-विज्ञान बलात् अपनाना ही पड़े। ऐसी स्थिति में मानवजाति को अपने ज्ञान एवं प्रेरणा के स्रोत के लिए वेद को ही अंगीकार करना होगा और अपने समस्त व्यवहारों के लिए वैदिक यज्ञ-विज्ञान पर ही आश्रित होना होगा। 'सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है'—अतः वेद की विद्या और उसको व्यवहारोपयोगी बनाकर मानवमात्र को आदिमूल परमेश्वर के निकट लाने का जो भी प्रयत्न हम करेंगे तो वह निःसन्देह चतुर्विधफल धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सिद्ध करने-करानेवाला ही होगा। अन्य सब योजनाओं एवं कार्यों को प्राथमिकता न देकर वेद के यज्ञ-विज्ञान के अनुसन्धान को ही पूर्ण महत्त्व देते हुए इसके लिए प्रयत्न करना चाहिए। संसार का उपकार करने का यही सर्वोत्कृष्ट मार्ग है। इसके लिए उदासीनता या उपेक्षाभाव आत्मघात के तुल्य है।

४—वैदिक विज्ञान की उपयोगिता का प्रतिपादन हो

क्या वर्तमान वैज्ञानिक युग में वेद की विद्या और उसका यज्ञ-विज्ञान उपयोगी हो सकेगे? क्या यज्ञ के विज्ञान द्वारा कुछ ऐसे भी कार्य किये जा सकते हैं, जिससे उनका प्रभाव आज के विश्व के मस्तिष्क एवं हृदय पटल पर पड़ सके? क्या वेद के विज्ञान के उपयोग से ऐसे भी कार्य हो सकते हैं, जिनको वर्तमान विज्ञान अभी तक नहीं कर सका है? यदि इसका उत्तर हां में दिया जा सकता है तो उसके लिए हमें अवश्य प्रयत्न करना चाहिए और उसके लिए सर्व प्रकार से सहयोग भी देना चाहिए।

५—अनुसंधान कार्य के लिए उत्कट साधना

वेद के विज्ञान के अनुसंधान कार्य के लिए हमें जीवन को अर्पण करना होगा और अपने बल एवं धन को भी वेदों के लिए अर्पण करना होगा। वेद को शब्द-ब्रह्म कहा गया है। यही वेद की मन्त्र राशि, ब्रह्म का परम पवित्र, श्रेष्ठतम, सत्य, पूर्ण निर्भ्रांत ज्ञान मानव जाति का परम आश्रय रूप सार्वकालिक पथ-प्रदर्शक है। वेद शाश्वत परम ज्योति है। वेद का पठन-पाठन, श्रवण-श्रावण तथा उसमें ज्ञान एवं कर्म की प्रवृत्ति मानव जाति के लिए परम धर्म है। इस परम धर्म की साधना से हमें अनेक विद्या एवं विज्ञानों की प्राप्ति हो सकेगी और उससे विश्व को लाभान्वित किया जा सकता है।

६—यज्ञ-विज्ञान के प्रयोग प्रत्येक क्षेत्र में हों

वेदों के स्वाध्याय के तथा अब तक के अपने प्रयोग एवं प्रयत्नों के आधार पर अनेक कार्यों को हम अपने अनुसंधान का क्षेत्र बनाकर विश्व को आश्चर्यजनक सफलता के क्षेत्र में प्रवेश करा सकते हैं। वैदिक यज्ञ-विज्ञान की सफलता से विश्व के लाभान्वित होने पर शिक्षा, विज्ञान; समाज, राजनीति आदि क्षेत्रों में भी वेद को महत्त्वपूर्ण स्थान विश्व में स्वतः ही प्राप्त हो सकेगा। 'अग्निहोत्र-फला वेदाः' यह निष्कर्ष प्राचीन ऋषियों ने वेद की सफलता एवं यज्ञ के विज्ञान को सत्य सिद्ध करने तथा व्यवहारोपयोगी बनाने के लिए घोषित किया था। अतः हमें भी वेदों के यज्ञ-विज्ञान के द्वारा वर्तमान समय की समस्याओं का समाधान करने प्रयत्न करना ही चाहिए।

७—प्रयोगशाला यज्ञवेदी ही है

वेद विद्याओं एवं विज्ञान से पूर्ण हैं—और उन विद्याओं एवं विज्ञान की सबसे उत्कृष्ट प्रयोगशाला यज्ञवेदी—यह मानव देह ही है। जब इस देहरूपी प्रयोगशाला से विश्व में प्रयोग किये जाते हैं तो उसका प्रभाव विश्व पर भी पड़ता है। जब तक ये प्रयोग पंच तन्मात्राओं से ऊपर की शक्तियों द्वारा किये जाते हैं, तब तक संकल्प शक्ति के आधार पर सफलता को प्राप्त करते हैं। यह वैदिक विज्ञान की सूक्ष्म एवं उच्च स्थिति है, परन्तु जब वैदिक विज्ञान का स्थूल रूप, स्थूल जगत् के पदार्थ एवं उनकी शक्तियों के आश्रय से सम्पन्न किया जाता है तो उसकी प्रयोगशाला बाह्य यज्ञवेदी को ही बनाना पड़ता है। उसमें सर्व प्रकार के क्रियाकलापों की सिद्धि के लिए अग्नि स्थापन करके द्रव्यों की आहुतियों द्वारा उनको सूक्ष्म करके संयोग, वियोग एवं विभाग क्रियाओं द्वारा विश्व में यथास्थान, यथाशक्ति तत्त्वों की वृद्धि एवं ह्रास द्वारा इच्छित क्रिया की जाती है, जो कि इष्ट प्राप्ति कराती है। यदि इसके साथ मानसिक शक्तियों का भी प्रयोग किया जाता है तो और भी शीघ्र सफलता प्राप्त होती है।

८—समस्त कामनाओं की पूर्ति—यज्ञ से

वैदिक विज्ञान की इस प्रक्रिया को यज्ञ कहते है। इसीलिए वेद ने यज्ञ को 'कामधुक्' कहा। गीता में भी यज्ञ को 'कामधुक्' कहा गया है अर्थात् सर्वकामनाओं की प्राप्ति, दोहन कार्यवत् यज्ञ से हो सकती है। कामनानुकूल इष्ट प्राप्ति के लिए जो विविध प्रकार के प्रयत्न एवं क्रिया समूह है, वे ही पृथक्-पृथक् यज्ञों के रूप में विविध नाम व रूप से कहे जाते हैं। इस प्रक्रिया को समझकर यज्ञ द्वारा अनुसंधान कार्य बड़ी सफलता से सम्पन्न हो जाता है। इसी यज्ञ-विज्ञान के आधार पर—

१—यज्ञों द्वारा असमय में अन्तरिक्ष में सोम भरा जा सकता है और उससे मेघों का निर्माण इच्छित समय पर हो सकता है। यज्ञ निर्मित इन मेघों को यथेच्छ स्थानों पर बरसाया भी जा सकता। आज बड़े-बड़े बांध बने हुए हैं, यदि वर्षा न हो तो वे शीघ्र ही निष्फल हो सकते हैं। अतः इच्छित रूप से वर्षा कराने के सुलभ यज्ञ-विज्ञान द्वारा संसार को लाभान्वित किया जा सकता है, जिससे कृषि एवं उद्योग विकसित बने रह सकते हैं।

(क्रमशः)

बहू को जला मारनेवाले गिरफ्तार

रेवाड़ी, २१ जुलाई (एस)। दहेज की बलिवेदी पर विगत सोमवार को चौधरीवाड़ा मोहल्ला की एक पुत्रवधू को मिट्टी का तेल छिड़क कर अग्नि के हवाले करनेवाले अपराधियों को नगर के लोगों द्वारा भारी रोष प्रकट करने व प्रदर्शन के पश्चात् गिरफ्तार कर लिया गया।

संगीता जैन की कथित हत्या के आरोप में संगीता के पति सुरेन्द्र जैन, ससुर परमानन्द जैन व सास मिश्रीदेवी को पुलिस के जबरदस्त पहरे में उस समय गिरफ्तार किया गया, जब संगीता के मायकेवालों ने और नगर के जागरूक लोगों ने काफी जोर डाला।

रेवाड़ी की बहू और पलवल की बेटी संगीता जैन का विवाह वर्ष १९८२ में रेवाड़ी के श्री परमानन्द जैन के पुत्र श्री सुरेन्द्र जैन के साथ सम्पन्न हुआ था।

संगीता की मृत्यु का समाचार जब टैलीफोन से पलवल पहुंचा तो मायकेवाले दलबल सहित रेवाड़ी पहुंच गये। हालातों का जायजा लेने पर उन्हें सन्देह हुआ कि संगीता की मौत स्वाभाविक नहीं, बल्कि हत्या की गई है। उन्होंने फौरन १९ जुलाई को थाना शहर रेवाड़ी में एक एफ० आई० आर० दर्ज कराई।

लोगों के गुस्से का कारण यह भी है कि लड़की संगीता की मौत १८ जुलाई को दिन-दहाड़े हुई थी, लेकिन पुलिस ने अपराधियों को अगले दिन तक गिरफ्तार नहीं किया था।

थाने में दर्ज रिपोर्ट में संगीता के भाई श्री विनोद जैन ने स्पष्ट आरोप लगाया है कि संगीता की पहले हत्या की गई और फिर मिट्टी का तेल डालकर जला दिया गया।

श्री विनोद जैन ने अपनी बहन की हत्या का कारण मांगे गये २५००० रुपये नहीं देना बताया है। लड़केवालों की ओर से बार-बार रुपयों की मांग होती रही थी। एक बार जब मकान बनवाने के लिए १० हजार रुपयों की गुहार ससुरालवालों ने की तो उसे रुपयों की जगह सोने की तगड़ी देकर पूरा किया गया था। लेकिन पुनः २५ हजार की फरमाइश लड़के के पिता ने जब रखी तो उसे पूरा करने में मायकेवालों ने असमर्थता प्रगट की। जिसके प्रत्युत्तर में संगीता की सास मिश्रीदेवी ने धमकीभरे लहजे में भयंकर परिणाम की चेतावनी दी।

लिखाई गई रिपोर्ट के अनुसार मांग पूरी होते न देख पति, सास, ससुर और ननद चारों ने मिलकर पहले उसकी हत्या करदी और फिर तेल डालकर जला दिया।

हत्या के समय संगीता गर्भवती थी। उसके पहले भी दो लड़कियां थीं। यह आशंका लोगों की जबान पर है कि तीसरी लड़की के डर के कारण भी संगीता को मारा गया है। क्योंकि सुरेन्द्र अपने पिता की इकलौती (पुत्र) सन्तान है।

संगीता की हत्या के अपराधियों को पकड़ने में विलम्ब होते देख मायकेवालों की ओर से पलवल और फरीदाबाद से सैंकड़ों लोग रेवाड़ी में संगीता की ससुराल के घर आगे इकट्ठे होते चले गये। नगर के सैंकड़ों लोग भी इस भीड़ में शामिल होते चले गये। नारेबाजी और पुलिस हाय-हाय के नारे लगने लगे।

नगर के बिगड़ते माहौल को देख डी. एस. पी. श्री केहरसिंह और एस. एच. ओ. श्री ओ. पी. शर्मा अपनी फोर्स के साथ घटनास्थल पर पहुंचे तो उन्हें जनता के जहर से बुझे शब्दों को सुनना पड़ा। श्री शर्मा पर उत्तेजित भीड़ को श्री केहरसिंह ने शांत करते हुए श्री शर्मा को घटनास्थल से फौरन वापस भेज दिया।

तत्पश्चात् उमड़ी भीड़ ने अपराधियों को फौरन गिरफ्तार करने की मांग की। श्री केहरसिंह ने समझदारी और बुद्धि से काम लेते हुए स्थिति को भांपा और अपराधियों को घर से निकाल हथकड़ी डाली गई और थाने ले जाया गया।

केस जेर धारा ३०४ बी/४९८-ए आई पीसी के अन्तर्गत दर्ज कर लिया गया है। पूछताछ जारी है। अभी तक किसी को भी जमानत नहीं हुई है। (नवभारत टाइम्स से)

निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

दिनांक २६ सितम्बर सोमवार से २ अक्तूबर रविवार १९८८ तक आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में आयोजित होगा। इस अवसर पर—

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ	दिनांक २६ सितम्बर से २ अक्तूबर
भजन, उपदेश, आशीर्वाद	समय प्रातः ७ से १०, सायं ३ से ६ बजे
आर्य युवा महासम्मेलन	२८ सितम्बर गुरुवार सायं ४ बजे
योग सम्मेलन	३० सितम्बर शुक्रवार प्रातः ८ बजे
आर्य महिला सम्मेलन	३० सितम्बर शुक्रवार सायं ४ बजे
आर्य महासम्मेलन	१ अक्तूबर शनिवार प्रातः ८ बजे
भ्रष्टाचार निरोध व चरित्र निर्माण सम्मेलन	१ अक्तूबर शनिवार सायं ४ बजे तत्पश्चात् निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर उद्घाटन

२ अक्तूबर रविवार प्रातः ८ बजे वानप्रस्थ दीक्षा, ९ बजे यज्ञ पूर्णाहुति, तत्पश्चात् मानव निर्माण सम्मेलन, ११ बजे निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर, मध्य नेत्र निरीक्षण एवं आप्रेशन का भी कार्यक्रम रखा गया है।

निवेदक—स्वामी धर्ममुनि (मुख्यधिष्ठाता)

सिरसा शहर में वेदप्रचार

दिनांक ९-७-८८ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से सिरसा में नोहरिया गेट के निकट वेदप्रचार किया गया। जिसमें सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी एवं श्री मनुदेव शास्त्री जी ने इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाली बुराई पर प्रकाश डाला। शास्त्री जी ने एक वेदमन्त्र की व्याख्या की तथा पं० तेजपाल आर्य की भजनमण्डली के समाज सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए। प्रातः-काल आर्यसमाज मन्दिर सिरसा में साप्ताहिक हवन किया गया। इस अवसर पर क्रांतिकारी जी ने आर्यों को सुझाव दिया कि अपना आत्म निरीक्षण करके महर्षि दयानन्द जी के बताये अधूरे कार्यों को पूरा करने में जुट जावें। पं० जी के ईश्वर-भक्ति के भजन हुए। वानप्रस्थी श्री सूर्यदेव जी के प्रयास से दो युवकों ने जनेऊ धारण किये और बीड़ी न पीने की प्रतिज्ञा की।

इसी दिन श्री आत्माराम सैनी के पौत्र श्री विशाल का जन्म दिन भी मनाया गया। इस अवसर पर ५१) सभा को दान प्राप्त हुआ।

—बलदेवसिंह आर्य

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री बाबूराम मित्तल, उपप्रधान—योगेश्वरचन्द, मंत्री—राममोहनराय एडवोकेट, उपमन्त्री—ठाकुरदास बत्रा, कोषाध्यक्ष—राजकुमार लोहेवाले, पुस्तकाध्यक्ष—दीपचन्द निर्मोही, लेखापरीक्षक—गुरुवचन।

शराबबन्दी प्रस्ताव का प्रारूप

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा
चण्डीगढ़

हमारे ग्राम—————— ...... जिला—————— ··· पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक···———·········में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है।

यह ग्राम सभा (पंचायत) शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत ही घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की शराबबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द की जावे और भविष्य में कदापि यहाँ शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाये, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दूकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

दिनांक·······———···

सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

इस प्रस्ताव की प्रतिलिपियां रजिस्ट्री द्वारा निम्न पते पर भेजें—

१. प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान हरयाणा चण्डीगढ़
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जि०······
५. जिलाधीश···——···
६. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

सभा ने इस सामाजिक सुधार कार्य में सभी से सहयोग देने का अनुरोध किया है।

उपदेशकों तथा भजनमण्डलियों की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को वेदप्रचार कार्य के विस्तार के लिए योग्य, विद्वान् उपदेशकों तथा प्रभावशाली भजनमण्डलियों की आवश्यकता है।

इच्छुक महानुभाव अपनी शैक्षणिक योग्यता एवं प्रचार कार्य के अनुभवों के प्रमाणपत्रों सहित स्वलिखित आवेदन-पत्र शीघ्र भेजें। वेतन योग्यता के अनुसार दिया जायेगा। —सभाप्रधान

सेवा-निवृत्त ओवरसीयर की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्माणाधीन भवन बनाने तथा अन्य मुरम्मत आदि के कार्य करवाने हेतु एक सेवा-निवृत्त ओवरसीयर की तुरन्त आवश्यकता है। सेवाभाव रखनेवाले महानुभाव आवेदन करें। वेतन योग्यता अनुसार दिया जायेगा। —सभाप्रधान

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं से निवेदन

अगस्त मास के प्रथम सप्ताह में हरयाणा की पंचायतों के चुनाव हो रहे हैं।

यदि आप चाहते हैं कि हरयाणा में शराब जैसी भयंकर बुराई पर रोक लगे, भ्रष्टाचार बन्द हो, बहू-बेटियों की इज्जत सुरक्षित रहे और किसान मजदूर खून-पसीने की कमाई बर्बाद न करें, शराब के ठेकेदार मालामाल न हों, तो दृढ़ निश्चय करें कि पंचायत के चुनाव में किसी भी मूल्य पर, किसी भी दबाव पर, किसी भी लालच में, किसी के भी मोह में फंसे बिना शराबी सरपंच, पंच को अपना अमूल्य मत (वोट) न देवें। आप यह सन्देश अपने परिवार, मित्रों तथा ग्रामवासियों को सुना दीजिए और इस पर आचरण करें तथा करावें।

इस प्रकार आप शराब पर पाबन्दी लगाने में सफल हो सकेंगे। इस शुभावसर को हाथ से न जाने देवें। स्मरण रहे शराब हटेगी तो देश बचेगा।

—आपका शुभचिन्तक
प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

वेदप्रचार कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की स्वामी देवानन्द तथा मुरारीलाल की भजनमण्डली का वेदप्रचार ग्राम खातोली, मुकन्दपुरा, तोताहेड़ी, सिलारपुर, मूंगारका जि० महेन्द्रगढ़ में प्रभावशाली प्रचार-कार्य हो रहा है। ग्रामवासियों ने दान भी दिया।

आर्यसमाज नारनौल के पुरोहित पं० महावीर आर्य के आग्रह पर आर्यसमाज में आनेवाले अतिथियों के भोजन के लिए दो क्विंटल २६ किलो गेहूं और २०८) खतौली ग्राम ने दान दिये। इस भजनमण्डली का प्रोग्राम १०-८-८८ तक नारनौल से बनता रहेगा। प्रचार के इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें—

—नाराचन्द आर्य, सब्जी मण्डी नारनौल

आजादी के बाद भी

इंस्टीट्यूशन ऑफ इञ्जिनियर्स द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी का अपमान—

ए० एम० आई० ई० की परीक्षाओं में अंग्रेजी माध्यम की बाध्यता—

स्वतन्त्रता के ४० वर्षों बाद भी इंस्टीट्यूशन ऑफ इञ्जिनियर्स द्वारा ए० एम० आई० ई० की परीक्षायें अंग्रेजी माध्यम से ही ली जाती हैं। जबकि इस परीक्षा में बैठनेवाले छात्र हिन्दी माध्यम में शिक्षित होते हैं। ये छात्र इण्टर बी० एस० सी० एवं डिप्लोमा स्तर तक हिन्दी माध्यम में पढ़ते हैं और जब ए० एम० आई० ई० को परीक्षाओं में बैठने के योग्य होते हैं तो संस्थान अंग्रेजी माध्यम में ही परीक्षायें देने के लिए बाध्य करता है। क्या यह हिन्दी प्रेमी छात्रों के साथ भेदभाव और राष्ट्र भाषा हिन्दी का अपमान नहीं है ? आज हिन्दी प्रेमी छात्रों को भी हिंदी माध्यम से ए० एम० आई० ई० की परीक्षायें देने की अनुमति क्यों नहीं दी जारही है ?

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा कराये अब तक अन्तिम अखिल भारतीय सर्वेक्षण के अनुसार देश में केवल ७.५% छात्र ही अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा पारहे हैं और हिन्दी माध्यम में पढ़ने वाले छात्र ९९% हैं। इसका अर्थ है कि ए०एम० आई० ई० की परीक्षायें केवल अंग्रेजी पढ़े वर्ग के लिए, संविधान की भावना के विपरीत आरक्षित है अर्थात् देश की ९९% प्रतिभा अंग्रेजी न जानने के कारण बर्बाद हो रही है, उसे ए०एम० आई० ई० की परीक्षाओं में बैठने का अधिकार नहीं है।

जब सबसे महत्त्वपूर्ण सिविल सेवा परीक्षा हिन्दी माध्यम से हो सकती है। आई० आई० टी० में एम० टेक० की परीक्षा हिन्दी में हो सकती है, रुड़की विश्वविद्यालय में इंजिनियरिंग की परीक्षायें हिन्दी माध्यम से दी जा सकती है, एम० ई० व एम० डी० के शोध ग्रन्थ हिन्दी में लिखे जा सकते हैं, फिर ए० एम० आई० ई० की परीक्षा में ऐसी क्या विशेषता है ?

संस्थान द्वारा अंग्रेजी जैसी अवैज्ञानिक, भेदमूलक, दमनकारी, गुलामी की प्रतीक विदेशी भाषा को हम छात्रों पर जबरदस्ती लादना··· ऐसा करने का साहस तो विदेशी शासन भी न कर सका···यह २% अंग्रेजीदां लोगों का हम पर अपनी विशिष्टता लादने का षड्यन्त्र है।

आइये एकजुट होकर संस्थान के अधिकारियों को बतायें और पत्र लिखें कि अंग्रेजी उन अंग्रेजों की भाषा है, जिन्होंने हमारी आजादी के दीवानों को फांसी पर लटकाया था और मांग करें कि—

ए० एम० आई० ई० की परीक्षाओं में तत्काल हिन्दी माध्यम की भी व्यवस्था की जाये।

निवेदक—विनोदकुमार गौतम (ए. एम. आई. ई. छात्र)
कस्बा—पहासू, बुलन्दशहर-२०२३९६

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४)
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49 [illegible]१,९९,०८,२३,०८६

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री ५ श्रावण २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्क ३५, ७ अगस्त, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

शोक महाशोक

हरयाणा के आर्यनेता श्री दलीपसिंह आर्य, उनके नवयुवक सुपुत्र श्री सुरेन्द्रकुमार आर्य तथा उनके रिश्तेदार राकेशकुमार का कार दुर्घटना में निधन

(केदारसिंह आर्य कार्यालयअधीक्षक द्वारा)



रोहतक, १ अगस्त आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पूर्व प्रधान, आर्यसमाज पानीपत एवं आर्य संस्थाओं के संचालक दानवीर आर्य सेठ श्री दलीपसिंह आर्य, उनके इकलौते सुपुत्र श्री सुरेन्द्रकुमार तथा उनके रिश्तेदार श्री राकेशकुमार और कार चालक का जी० टी० रोड पर पट्टी कल्याणा ग्राम के निकट २९ जुलाई की सायंकाल को एक भयंकर कार दुर्घटना में निधन होगया। श्री दलीपसिंह आर्य की आयु ७६ वर्ष, श्री सुरेन्द्र आर्य की आयु ३५ वर्ष के लगभग थी। उनके श्री सुरेन्द्र की विधवा, एक [illegible] वर्षीय पुत्र तथा ६ वर्षीया एक पुत्री बेसहारा बनकर रह गये हैं।

श्री आर्य जी २९ जुलाई को अपने सुपुत्र के साथ दिल्ली में सम्पन्न एक बैठक में भाग लेकर सायंकाल ६ बजे दिल्ली से पानीपत लौट रहे थे। ग्राम पट्टी कल्याणा के निकट उनकी मारुति कार एक ट्रक से टकरा गई। कार चालक तथा श्री सुरेन्द्रकुमार के साले श्री राकेशकुमार की मृत्यु उसी समय होगई तथा श्री दलीपसिंह जी व श्री सुरेन्द्रकुमार को गम्भीर घायल अवस्था में किसी अन्य कार से पानीपत सिविल हस्पताल में उपचार हेतु लाया गया परन्तु चिकित्सकों द्वारा लाख प्रयत्न करने पर भी उन्हें बचाया नहीं जा सका। ज्यों ही यह हृदय विदारक अशुभ सूचना नगर में फली, त्यों ही नगरवासी स्तब्ध रह गये तथा शोक सागर में डूब गये।

३० जुलाई को उनकी शव-यात्रा में सारा शहर उमड पड़ा। प्रत्येक नर-नारी की आंखों में आंसू बह रही थीं। तीन शव जब एक साथ एक ही घर से निकले तो अनेक नर-नारी फूट-फूटकर रोने लग गये। ला० दलीपसिंह आर्य के शव को ओ३म्ध्वज में लपेटा गया था। शव-यात्रा में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह, सभा के पूर्व प्रधान स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी धर्मानन्द, श्री रामानन्द सिंगला, आर्य वरिष्ठ विद्यालय पानीपत के प्राचार्य एवं हरयाणा आर्य विद्या परिषद् के प्रस्तोता श्री लाभसिंह तथा पानीपत के समस्त आर्यसमाजों के अधिकारी एवं आर्य संस्थाओं के कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त पानीपत की अन्य धार्मिक सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित थे। भीड़ के कारण जी० टी० रोड पर ट्रैफिक बन्द होगया था। अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिकरीति के अनुसार आर्यसमाज के विद्वानों ने वेदमन्त्रों से सम्पन्न करवाई।

उनकी मृत्यु का समाचार सुनते ही पानीपत का सारा बाजार तथा कम्बल उद्योग बन्द होगया। आर्य शिक्षण संस्थाओं में अवकाश कर दिया गया। उनके निधन पर अनेक नेताओं ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए हरयाणा के आर्यसमाज की महान् क्षति बताई। उनके शून्य को भरा नहीं जा सकता और उन द्वारा किये गये महान् कार्यों को आर्य जनता सदा स्मरण रखेगी। उनके निधन से आर्यसमाज का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ ढह गया है। उनके लिए शोक प्रस्ताव पास करने तथा उनकी आत्मा की सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने के लिए आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं आदि में प्रतिदिन शोक सभाओं का आयोजन किया जारहा है तथा प्रतिदिन सैकडों की संख्या में शोक संवेदना प्रकट करने हेतु पत्र, टेलिफोन तथा तार प्राप्त हो रहे हैं।

दिनांक एक अगस्त को रोहतक से सभा के वरिष्ठ उपप्रधान म० भरतसिंह जी, सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री, वेदप्रचार विभाग के अधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह जी तथा सभा के भजनोपदेशक प० चिरंजीलाल जी पानीपत गये तथा श्री आर्य के निवास स्थान आर्य भवन पर जाकर उनके परिवारजनों तथा दुःखी रिश्तेदारों के प्रति शोक संवेदना प्रकट की। प्रिंसिपल लाभसिंह जी तथा श्री रामानन्द सिंगला से सम्पर्क करके ७ अगस्त रविवार को सभा कार्यालय रोहतक में की जानेवाली शोकसभा के आयोजन के सम्बन्ध में विचार-विमर्श किया।

श्री दलीपसिंह जी आर्य की स्मृति में सभा के साप्ताहिक-पत्र सर्वहितकारी का १४ अगस्त का स्मृति अंक प्रकाशित किया जावेगा। अतः उनके जीवन तथा कार्यों के सम्बन्ध में जानकारी रखनेवाले विद्वानों से निवेदन है कि अपने विचार साफ-साफ शब्दों में लिखकर १० अगस्त तक सभा कार्यालय रोहतक में भेजने का कष्ट करें।

मानव शरीर में जीवात्मा का स्थान

—सोहनलाल अग्रवाल अधिवक्ता 'जिज्ञासु' वेद सदन ८०३, धमापुर, जबलपुर

उपरोक्त विषय पर सर्वप्रथम हमें वेदवाणी वर्ष ६, अंक १ में श्री युधिष्ठिर जी मीमांसक का लेख 'अथर्व वेद प्रतिपादित आत्मा का शरीरान्तर्गत स्थान' पढ़ने को मिला था। यह आज से ३४ वर्ष पूर्व की बात है। सम्वत् २०२४ में श्री मीमासक जी ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का भारतभूषण स्मृति सस्करण प्रकाशित किया। उस मूल्यवान संस्करण में उपासना विषय में छान्दोग्योपनिषद् के प्रपाठक ८, खण्ड १, मन्त्र ३।

अथ यदिदमस्मिन् ब्रह्मपुरे दहर पुण्डरीकं वेश्म दहरोऽस्मिन्नन्तरा काशस्तस्मिन् यदन्तस्तदन्वेष्टव्य यद्वाव विजिज्ञासितव्यमिति।

अनुवाद जो निम्न प्रकार से पण्डित लोगो ने लिखा है—

जिस समय इन सब साधनो से परमेश्वर की उपासना करके उसमे प्रवेश किया चाहे, उस समय इस रीति मे कर कि—

अथ—यदिद० कण्ठ के नीचे दोनो स्तनो के बीच मे और उदर के ऊपर जो हृदय देश है जिसको ब्रह्मपुर अर्थात् परमेश्वर का नगर कहते हैं उसके बीच में जो गत है, उसमें कमल के आकार वेश्म अर्थात् अवकाश रूप एक स्थान है और उसके बीच में जो सर्वशक्तिमान् परमात्मा बाहर-भीतर एकरस होकर भर रहा है। वह आनन्दरूप परमेश्वर उसी प्रकाशित स्थान के बीच में खोज करने से मिल जाता है, दूसरा उसको मिलने का कोई उत्तम स्थान व मार्ग नही है। इस पर मीमांसक जी ने निम्न टिप्पणी दर्ज की है' यहा हृदय देश का जो लक्षण लिखा है वह संस्कृत मे नही है तथा यह लोक-प्रसिद्ध स्थान को लक्ष्य में रखकर अनुवादक पण्डितो द्वारा किया गया लक्षण प्रतीत होता है। अथर्व १०।२।३० में 'पुर यो ब्रह्मणो वेद' कहकर अगले ३१।३२।३३ मन्त्रों में जिस हिरण्य कोशातगत ब्रह्मपुर में आत्मारूपी यक्ष और ब्रह्म की प्रतिष्ठा बताई है वह मस्तिष्कातगत आज्ञाचक्र समीपवर्ती स्थान है। इस विषय पर हमने वेदवाणी वर्ष ६, अक १ में छपे अथर्ववेद प्रतिपादित आत्मा का शरीरान्तर्गत स्थान लेख में विस्तार से लिखा है। मस्तिष्क का भी हृदय नाम है, यह भी प्राचीन ग्रन्थों से प्रतिपादित है।

इससे स्पष्ट हुआ कि अनुवादक पण्डितो ने उपनिषद् मन्त्र का गलत अर्थ लिख करके घोर अपराध किया है और वेदपाठियो को भ्रम मे डाला है। अपने स्वाध्याय में मैंने पण्डित उदयवीर शास्त्री का योग शास्त्र भाष्य तथा राजवीर जी शास्त्री का भी योग शास्त्र पढा। इन दोनो भाष्यों में विभूतिपाद के सूत्र ३२ एव ३४ पर दोनो महानुभावो का बहुत भेद है। राजवीर जी दोनो सूत्रो के भाष्य में शरीर में हृदय का स्थान छांदोग्यो० के मन्त्र के अनुवादको द्वारा अशुद्ध अनुवाद को ही प्रमाणित मानकर रक्त की मशीन से पृथक् गले के नीचे हृदय को ही आत्मा का निवास स्थान मानते हैं, परन्तु पण्डित उदयवीर जी शास्त्री शरीर में आत्मा का स्थान नीचे प्रकार से बताते हैं।

सिर के दोनों कपालो के बीच एक छोटा-सा ऐसा स्थान है जहा खाल के नीचे कपालास्थिर (कपाल की हड्डी) नहीं है। दोनो कपालो के नीचे मस्तिष्क के दोनो भाग ऐसे ही जुडे होते हैं, जैसे ऊपर को कपालास्थि, ऊपर की कपालास्थि रहित स्थान के ठीक नीचे की ओर मस्तिष्क के जोड के मध्य में बादाम की आकृति का रिक्त स्थान है, जिसमें हल्के पीले रग का गाढा तरल पदार्थ भरा रहता है। इसी प्रदेश का नाम मूर्धा है। यहा एक ज्योति का निवास है। वह ज्योति बिजली के बल्ब अथवा प्रदीप प्रकाश के समान चमकती वस्तु नहीं है। यह चेतन आत्मतत्त्व है, जो देह का अधिष्ठाता है। परमात्मा सर्वत्र व्याप्त है। वह यहा भी है। यह देह में रहते जीवात्मा के घर में परमात्मा का अस्तित्व है। सूत्र में मूर्धा स्थित ज्योति से देह के अधिष्ठाता चेतन आत्म-तत्त्व का निर्देश है।'

श्री उदयवीर जी ने योगदर्शन के ३।३४ के भाष्य में लिखा है—

'सूत्र में 'हृदय' पद से मस्तिष्क गर्त इस हृदय देश का ग्रहण करना अभिप्रेत है, जहाँ आत्मा के साथ चित्त अन्तःकरण रहता है।'

छांदोग्यो० के प्रपाठक ८ क० १ श्लोक १ का भाष्य स्वामी शंकर का तथा विद्यामार्तण्ड डा० सत्यव्रत सिद्धांतालकार का उनके ११ उपनिषदो के भाष्यो मे मिलता है। उन दोनो के अनुसार ऋग्वेदभाष्यभूमिका के उपासना खण्ड में दिया इस मन्त्र का अनुवाद गलत है, जो अभी तक एक धोखा चल रहा है। विद्वद्वर मस्तिष्क के ज्योतिकाश तथा छाती में रक्त स्रावक हृदय को जो मानते हैं, पर गलत भाष्य में हृदय स्थान उदर के ऊपर, कण्ठकूप से नीचे पण्डित राजवीर जी शास्त्री मानते हैं और योगसूत्र के भाष्य मे भी अपना मत बिना वैदिक प्रमाणो के बताते हैं और श्री राजवीर जी ने मस्तिष्क के भीतर हृदय को नहीं माना। इसी विषय को लेकर पण्डित उदयवीर जी ने एक लेख ५ जुलाई १९८७ को सार्वदेशिक पत्रिका में प्रकाशित कराया। उसका प्रतिकार श्री राजवीर शास्त्री ने 'दयानन्द सन्देश' पत्रिका के सितम्बर, १९८७ के अक में छापा। इसके उत्तर में पण्डित उदयवीर के पक्ष में श्री राजेन्द्रसिंह जवाहर नगर, दिल्ली ने लेख वेदवाणी के वर्ष ४० के अक में प्रकाशित किया।

सिद्धांतो के इस विवाद पर हमने एक पत्र श्री राजवीर शास्त्री को लिखा। उसका उत्तर फिर उपनिषद् के मन्त्र के गलत भाष्य के आधार पर दिया गया। आश्चर्य यह है कि वह अभी भी सदर्भित उपनिषद् मन्त्र के गलत भाष्यो को ऋषिवचन कहकर पहरा दे रहे हैं। विद्वानो को चाहिये कि जब दूसरा विद्वान् सच-सच बात कहे तो अपना दुराग्रह छोड दवे।

अथर्ववेद ब्रह्मवेद भी है और आयुर्वेद भी। इसके दसवें कांड में मानवदेह की पूरी रचना और उसके कर्ता पर पूर्णरूप से अद्भुत विज्ञान उपस्थित है। वेद सभी सत्य विद्याओं का स्रोत है। उसके आगे अन्यथामति टिकने का प्रश्न ही नही है।

इसको विवादी मूर्धन्य पण्डित भी नही समझ रहे। वेद इस रहस्य को रहस्य नही रखता।

अब देखें अथर्ववेद काड १०, सू० २ को।

इसकी प्रथम ऋचा मानव शरीर की दोनो एडियो का वर्णन करती है। इस सूक्त में आगे सभी अंगो का चित्रण किया है, उसमें ब्रह्मधाम का वर्णन है। यह चित्रण अत्यन्त अद्भुत है। मानवी शरीर को अष्टाचक्रा नवद्वारा देवाना पूरयोध्या (म० ३) अपराजिता (मन्त्र ३३) कहा है। शरीर में चक्र निम्न प्रकार से बताये जाते हैं—

१ मूलाधार चक्र—गुदामूल से दो अगुल ऊपर, उपस्थ मूल से दो अगुल नीचे।

२ स्वाधिष्ठान—मूलाधार चक्र से दो अगुल ऊपर पेडू के पास।

३ मणिपूरक—स्थान नाभिमूल।

४ अनाहत चक्र—हृदय देश के पास।

५ विशुद्ध चक्र—कण्ठ देश।

६ आज्ञा चक्र—दोनो भुवों के मध्य भृकुटी के बीच भीतर यह आज्ञाचक्र शिवनेत्र दिव्य दृष्टि का यन्त्र है।

७ सहस्रार वा शून्य चक्र—तालु के ऊपर, मस्तिष्क में, ब्रह्म रध्र के ऊपर सब शक्तियों के केंद्र हैं। इसकी आकृति सहस्र पखुडियोवाले कमल जैसी है। (पातंजल योग प्रदीप स्वामी ओमानन्द) अथर्व १०।२, मन्त्र २७ में सिरको अथर्वा प्रभु द्वारा निर्मित देवकोश बताया है।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

यज्ञ और वृष्टि

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी का एक लेख समाचारपत्रों में छपा है। उन्होंने यज्ञ और वृष्टि के सम्बन्ध में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उपस्थित किया है। मैं अजमेर में गया तो वहां आर्यसमाजी क्षेत्रों में इस की चर्चा जोरों पर है। "निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु" के रहते अनेक आर्यसमाजियों का यह विचार है कि इच्छानुसार वर्षा कराई जा सकती है। प्रश्न यह उठता है कि क्या यज्ञ के द्वारा यह सम्भव है? यज्ञ सम्बन्धी जो मन्तव्य महर्षि ने 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' में व्यक्त किया है उसमें यज्ञ के द्वारा वर्षा की बात नहीं कही, केवल प्रदूषण-रहित पवित्रता मात्र वर्षा की बात कही है। यज्ञ के द्वारा वायु का प्रदूषण दूर होता है और प्रदूषण रहित वायु के सम्पर्क में आने से जल के कण भी प्रदूषण से सुरक्षित रहते हैं, इसलिये वृष्टि की पवित्रता भी बनी रहती है। यज्ञ की यह उपयोगिता तो निर्विवाद है। यज्ञ के द्वारा वृष्टि सम्भव है कि नहीं यह विचारणीय है। यदि विराट् यज्ञ से सम्भव है तो कितने क्षेत्र में वर्षा करवाने के लिये, कितना विराट् यज्ञ करना चाहिये, यह भी विचारणीय है।

आजकल कृत्रिम वर्षा की चर्चा विज्ञान जगत् में खूब चल रही है। कुछ लोगों का यह मत है कि अमरीका ने वियतनाम के साथ हुए युद्ध में कृत्रिम वर्षा के द्वारा बाढ़ लाकर नहर के बांधों और नहरों को तोड़ दिया था, जिसके कारण उत्तरी वियतनाम का काफी बड़ा क्षेत्र जलमग्न हुआ, फसल और गांव बह गये और युद्ध में भी बड़ी कठिनाइयों का सामना वियतनाम को करना पड़ा। थाईलैंड में भी इसके कई परीक्षण हुए और कुछ दूसरे देशों में भी प्रयोग किये गये।

कृत्रिम वर्षा के लिए दो आवश्यकतायें हैं। पहली आवश्यकता तो बादल बनाने की है और दूसरी आवश्यकता घनीभूत करके उनको गिराने और वर्षा कराने की है। बादलों के विकास पर खोज चल रही है। अभी तक ठोस और असंदिग्ध परिणाम निकले हों, ऐसी जानकारी हमारी नहीं है। जहां तक बादलों को घनीभूत करके गिराने और वर्षा करवाने का प्रश्न है, उसके सम्बन्ध में सिल्वर आयोडाइड का बादलों में हवाई जहाज के जरिये वपन करके वर्षा करवाने के प्रयोग हुए हैं। यज्ञ की समिधाओं के रूप में करीर की लकड़ी को अच्छा माना गया है। मैंने उसके सम्बन्ध में वैज्ञानिकों से परीक्षण करवाया। करीर की लकड़ी जलाकर जो राख बनाई गई, यदि उसका वपन करवाया जाये तो वर्षा हो सकती है, यह वैज्ञानिकों की राय थी। यह सिल्वर आयोडाइड से सस्ती भी पड़ेगी। वैसे तो सीमेंट के वपन से भी काम चल सकता है, ऐसी कुछ वैज्ञानिकों की राय है। बादलों को घनीभूत करके गिराना तो सम्भव हुआ है, परन्तु बादल बनाने के लिए भी परीक्षण जरूरी है।

मैंने यह सोचा था कि वृष्टि यज्ञ में कौन-सी सामग्री का उपयोग किया जाता है। यदि उन वस्तुओं की पूरी जानकारी मिल जाये तो देखा जाना चाहिये कि क्या उनके जलाने से बादल बनाने में सहायता मिल सकती है। यज्ञ करानेवाले पण्डितों से अभी पूरी जानकारी इसकी नहीं मिल पाई है, इसलिए प्रयोग भी सम्भव नहीं हो सका। मथुरा में गई मास में श्री हरिप्रसाद जी ने प्रयोग किये और उनका विश्लेषण विज्ञान तथा प्राद्योगिकी विभाग के वैज्ञानिकों ने किया। वे इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि यज्ञ के धूम से बादल नहीं बन पाये। श्री हरिप्रसाद जी ने यज्ञ में कौन-सी सामग्री का उपयोग किया था, यह पता नहीं चल पाया और उन्होंने जिस सामग्री का उपयोग किया, क्या उससे अधिक कारगर सामग्री वृष्टि यज्ञ के लिए उपलब्ध की जा सकती है क्या? क्या किसी विद्वान् के पास उन वस्तुओं की सूचि है, जिनसे वृष्टि यज्ञ की सामग्री तैयार की जानी चाहिये।

डा० वीतराग सोनी जो भौतिक विज्ञान के विद्वान् भी थे और जिन्होंने वैदिक मन्त्रों की वैज्ञानिक व्याख्या की है, उनका यह दावा था कि यदि बांधों के जलाशयों के चारों ओर अतिरिक्त के समय (आधी रात के बाद) रेडियो द्वारा ध्वनियों का प्रसारण किया जाये तो जोरदार वर्षा उस जलाशय के ऊपर करवाई जा सकती है। उनकी यह मान्यता थी कि कृत्रिम वर्षा के दो खतरे हैं, एक तो यह कि थोड़े से क्षेत्र में भारी वर्षा हो जाये और कुछ क्षेत्र इसी कारण वर्षा से वंचित रह जाय। यह खतरा कृत्रिम वर्षा के प्रयोग करनेवाले दूसरे वैज्ञानिक भी मानते हैं। इसलिये डा० सोनी की यह धारणा थी कि कृत्रिम वर्षा बांधों के जलाशयों में ही करवानी चाहिये, ताकि न तो कुछ क्षेत्र में भारी वर्षा के कारण बाढ़ का खतरा हो सके और न कम वर्षा के कारण दूसरे क्षेत्रों में सूखे का खतरा हो। जो क्षेत्र वर्षा से वंचित रह जाये, उन क्षेत्रों में बांधों के जलाशयों का कृत्रिम वर्षा से बढ़ा हुआ पानी नहरों के द्वारा भेजा जा सकता है। कृत्रिम वर्षा की इस प्रक्रिया के सम्बन्ध में वे वेद-मन्त्रों के उद्धरण देते थे।

स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती वैज्ञानिक भी हैं और वैदिक साहित्य का भी उन्होंने गहरा अध्ययन किया है। कृत्रिम वर्षा के क्षेत्र में वैदिक साहित्य तथा आधुनिक विज्ञान के तथ्यों के आधार पर और गहराई से स्वामी जी विचार कर सकें तो अच्छा होगा और मानव-समाज के कल्याण के लिए अभाव के शत्रु पर किसी हद तक विजय प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

छुआछूत और सती अपराध

आजकल पुरी के शंकराचार्य के छुआछूत और सती जैसे अपराधों को वेदानुकूल घोषित करने और उनके इस अनर्गल प्रलाप के विरोध में आंदोलन चलाने की स्वामी अग्निवेश की गतिविधियों की आर्यसमाज के क्षेत्र में चर्चा होना स्वाभाविक है। मैंने इस सम्बन्ध में पिछले महीने अपने विचार दिये थे, उस सम्बन्ध में एक पत्र मेरे पास आया है और किसी सज्जन ने एक समाचारपत्र में भी कुछ लिखा है। मैं ३१ जुलाई १९८८ को अजमेर परोपकारिणी सभा की अन्तरंग की बैठक में गया तो वहां भी यह चर्चा चली, जिसमें राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री भी थे।

सती के बारे में एक बात समझ लेनी चाहिये कि चाहे पति के जीवित रहते, पति और उसके परिवार के लोगों के द्वारा बहू को जलाया जाये या पति के मरने के बाद सती का नाम लेकर जलाया जाये, दोनों के पीछे पैसे का लालच ही एकमात्र कारण है। पति के मरने के बाद, सती के बहाने से जलानेवाले लोग धन सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए यह अपराध करते हैं और इनमें अधिक चतुर लोग सती मन्दिर बनाकर कई पीढ़ियों तक जनता को ठगते रहने का कार्यक्रम बनाते हैं। 'सतीप्रथा' नाम की कोई चीज न वदिक काल में थी और न आज है। यह एक जघन्य अपराध है और चाहे पति के रहते या उसके बाद यदि किसी महिला को जलाया जाता है तो अपराधियों को मृत्यु दण्ड अवश्य मिलना चाहिए।

छुआछूत

जहां तक छुआछूत का सवाल है, वह कभी धर्म का अंग नहीं हो सकता, वह भी मानवता के प्रति अपराध है और प्रत्येक सभ्य कहलाने वाले देश में भी वह कानूनी अपराध है और होना चाहिये। सभी मनीषियों और सन्तों ने इसे 'पाप' की संज्ञा दी है। जन्म से सभी मनुष्य बराबर हैं, वे अच्छे बुरे, उत्तम, निकृष्ट अपने कर्मों से हो बनते हैं। जन्म के आधार पर किसी को छोटा-बड़ा मानना 'पाप' भी है और अपराध भी, यह धर्म का अंग नहीं हो सकता। जो इसे धर्म का अंग मानते हैं और वेदानुकूल बताते हैं, वे धर्म और वेद दोनों का अपमान करते हैं। ऐसे व्यक्ति को या तो पागल कहा जा सकता है या अपराधी। उसकी जगह या तो पागलखाने में है या जेलखाने में। वैसे तो ऐसे आदमी की कही हुई घटिया बात का प्रचार करना भी मूर्खता ही कही जानी चाहिये। आज तो कामकोटि पीठ के शंकराचार्य विजयेन्द्र स्वामी और जोशी मठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द छुआछूत को यही

नहीं कि हिन्दूधर्म का अंग नहीं मानते, बल्कि सब प्रकार से अनुचित मानते हैं।

मन्दिर प्रवेश

मन्दिर प्रवेश के दो पहलू हैं। एक पहलू तो है किसी भी इन्सान को किसी जाति विशेष में पैदा होने के कारण मन्दिर में प्रवेश करने से वंचित करना, वह तो पाप है और अपराध भी है। दूसरा पहलू है मन्दिर में जाकर पूजा करने का। उसके लिये तो आर्यसमाज किसी को प्रेरणा नहीं देगा, बल्कि मूर्ति-पूजा से रोकेगा ही। हां, छुआछूत मानने वाले मन्दिर प्रवेश से किसी को रोके, उसका आर्यसमाज विरोध करेगा। आज तो कानूनीतौर पर भी कोई भी किसी को मन्दिर प्रवेश से नहीं रोक सकता। यदि रोकेगा तो उसे इस अपराध को कानूनीतौर पर सजा मिलेगी। इसीलिए पुरी के शंकराचार्य अब कह रहे हैं कि उन्होंने हरिजनों को मन्दिर प्रवेश से नहीं रोका, उन्होंने तो यही कहा था कि हरिजन के घर में तो भगवान् स्वयं दर्शन देने आयेंगे, उनको जाने की जरूरत नहीं।

आर्यसमाजी छुआछूत को, किसी को मन्दिर में या किसी भी सार्वजनिक स्थान में प्रवेश करने से रोकने को पाप और अपराध मानते हैं, परन्तु वे मन्दिर में जाकर मूर्ति-पूजा करने को भी गलत मानते हैं। इसी दृष्टि से राजस्थान के आर्यसमाजी भाइयों ने स्वामी अग्निवेश को हरिजनों को मन्दिर में ले जाने के आग्रह को गलत कहा। विशेष रूप से तब, जब नाथद्वारे में हरिजनों के प्रवेश पर कोई पाबन्दी नहीं है। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की भी यही राय है।

यह ठीक है कि संविधान और कानून के स्पष्ट प्रावधान होने पर भी समाज में हरिजनों को वह स्थान नहीं मिला है जो उनको मिलना चाहिये। उसके लिए आर्यसमाज तथा गांधीवादी और अन्य मानवतावादी संगठनों को मिलकर या अपने ढंग से कानूनों को लागू करवाने और सामाजिक विषमता को मिटाने के लिए मजबूत आंदोलन करना चाहिए, परन्तु यह एक तथ्य है कि हरिजन भाइयों को शिक्षा, सरकारी सेवा, पंचायतों, विधानसभाओं मन्त्रिमण्डलों में आरक्षण दिया हुआ है और उस पर पूरी तरह अमल हो रहा है। हिन्दुओं में ही नहीं, बल्कि जो हिन्दुओं में से मुसलमान और ईसाई बने हैं, उनमें जन्म के आधार पर जातपात कायम है। अनुसूचित जातियों में आपस में भी ऊंच-नीच की भावना है। यह एक सामाजिक बीमारी है और इसके विरुद्ध आर्यसमाज सबसे आगे होकर लड़ा है और इस लड़ाई को और भी तेज करने की जरूरत है। इस काम में तो स्वामी अग्निवेश का कोई भी आर्यसमाजी विरोध न कर रहा है और न करना चाहिए। परन्तु उन्होंने इस मामले को लेकर, जिनेवा जाकर राष्ट्रसंघ की मानव अधिकार समिति में मामला उठाने को कहा है। इसका विरोध प्रत्येक देशप्रेमी को करना चाहिए। समाचारपत्रों में वह अब होने भी लगा है। इसके पीछे देश की और हिन्दू समाज की छवि बिगाड़ने की भावना है और भारत विरोधी तत्त्व इसका लाभ उठायेंगे। इसीलिये इसमें से देशप्रेम की सुगन्ध नहीं आरही है। भारत विरोधी तत्त्व सिख हिन्दू और हिंदू-हिंदू को आपस में लड़ाना चाहते हैं और देश को कमजोर और अस्थिर करना चाहते हैं। पुरी के शंकराचार्य हिन्दुओं को ऊंच-नीच में बांटकर उनका खेल खेल रहे हैं और देशद्रोह कर रहे हैं। उनकी बातों को उछालने से देश के शत्रुओं को बल मिलता है। यह खेल बन्द होना चाहियें।

ऋषिलंगर हेतु दान सूची

श्रीमती सुरक्षादेवी कृष्णा कालोनी रोहतक	२१)
श्री विजय, शलेन्द्र, दीपक छात्र विश्वविद्यालय परिसर कुरुक्षेत्र	२१)
श्री सुरेन्द्रकुमार सुपुत्र श्री बलदेवसिंह पाना भूराण आहुलाना, त० गोहाना, जि० सोनीपत	२५)
श्रीमती कांतादेवी अध्यापिका प्रेमनगर रोहतक	११)

सभा की ओर से दानदाताओं का धन्यवाद।

—सभा कोषाध्यक्ष

आदर्श विवाह संस्कार

सभा के प्रतिष्ठित सदस्य डा० सोमवीरसिंह जी ग्राम रिटौली जि० रोहतक की सुपुत्री अंजु बी० ए० एस० एस० स्नातिका कन्या गुरुकुल खानपुर एवं कन्या गुरुकुल देहरादून का शुभ विवाह संस्कार श्री विश्वजीतसिंह बी० ए० एस० एस० (अस्थल बोहर) सुपुत्र श्री कटारसिंह पानीपत निवासी के साथ २४ जुलाई को भरत कालोनी रोहतक में वैदिकरीति से सम्पन्न हुआ। बारात में कुल ११ बाराती आये। लेन देन की सभी रस्में १) की हुईं।

इस शुभावसर पर दोनों पक्षों की ओर से गुरुकुल झज्जर को १०१) तथा सभा को २५) दान दिया। नवदम्पति को शहर के गणमान्य व्यक्तियों ने आशीर्वाद दिया।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

जिला सोनीपत के ग्रामों में वेदप्रचार

सभा की ओर से महाशय जयपालसिंह बेधड़क की भजनमण्डली ने २५ से ३० जुलाई तक जिला सोनीपत के ग्राम जूआं, करेवड़ी, तिहाड़, बाघडू तथा भटगांव में वेदप्रचार किया और ग्रामीण नर-नारियों को परामर्श दिया कि वे पंचायत के चुनाव में शराब पीने तथा पिलानेवाले प्रत्याशियों को अपना मत न देवें, क्योंकि शराब के कारण ग्रामीण वातावरण दूषित हो रहा है और खून-पसीने की कमाई नष्ट हो रही है। शराबी सरपंच ग्राम में भ्रष्टाचार को बढ़ावा देंगे।

आर्य सरपंचों के नाम भेजें

हरयाणा के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि उन सरपंचों के नाम तथा २०) ब्लाक बनवाने के लिए उनके चित्र सहित भेजें जो आर्यसमाज के सभासद् हैं और शराब आदि का सेवन नहीं करते।

सभा के निश्चयानुसार इस प्रकार के आर्य सरपंचों का सभा की ओर से सम्मान किया जावेगा तथा ग्राम में शराबबन्दी प्रस्ताव करवाने में उनसे सहयोग प्राप्त किया जावेगा।

—प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक के लिए एक योग्य पुरोहित की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति एक मास के अन्दर आवेदन करें। वेतन योग्यता के अनुसार होगा। रहने की व्यवस्था मुफ्त होगी।

—बलराज चुघ, मन्त्री आर्यसमाज झज्जर रोड, रोहतक

आर्यों के लिए शुभ सूचना

"आचार्यकुल विरजानन्द कुटीर वनस्थली" पत्रालय खड़खड़ा जिला रोहतक में छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ होगया है। प्रवेशार्थी आचार्य से सम्पर्क करें। इस संस्था में अष्टाध्यायी की शैली से शिक्षा दी जाती है।

विशेष—यहां वानप्रस्थियों और संन्यासियों को भी अष्टाध्यायी पढ़ाई जाती है। पठनार्थी आचार्य से मिलकर पूर्ण विवरण प्राप्त करें। ध्यान रहे अष्टाध्यायी वेदों की कुञ्जी है।

—मानाचार्य सरस्वती

पानीपत में शोकसभा

श्री दलीपसिंह आर्य के निधन पर आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत (निकट बस स्टैंड) में दिनांक १० जुलाई, ८८ की दोपहर बाद ३ से ४ बजे तक शोकसभा (स्मृति दिवस) का आयोजन किया गया है।

—जयभगवानदास

नशे के विरुद्ध जेहाद

भिवानी, २२ जुलाई : निकटवर्ती गांव सांगा में आजाद युवा क्लब सांगा के सौजन्य से स्थानीय नेहरू युवा केन्द्र द्वारा एक तीन दिवसीय आवासीय युवा नेतृत्व प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया। केन्द्र के युवा समन्वयक श्री अमीरचन्द गौड़ ने एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि इस शिविर में २० युवा क्लबों के ६५ युवाओं ने भाग लिया। युवाओं ने शराब व अन्य नशीली दवाओं के सेवन के विरुद्ध जेहाद छेड़ने का निर्णय लिया। इस शिविर में चिकित्सकों, मनोरोगविशेषज्ञों, मनोवैज्ञानिकों, समाज-सुधारकों व जिला लोक सम्पर्क विभाग ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया। शिविर में भाग लेनेवाले युवाओं ने भाषणों, लोकगीतों, प्रहसनों व ड्रामा आदि के प्रदर्शन द्वारा आस-पास के ग्रामीणों को शराब व अन्य नशीली दवाओं के सेवन के कुप्रभावों के विषय में जन-चेतना जागृत की। २० जुलाई की रात को श्री गौड़ ने लगभग ६००० लोगों को शराब न पीने की शपथ दिलाई। शिविर में भिवानी जिले की सभी युवा क्लबों के लिए जनशिक्षण पर आधारित शराबबन्दी की दिशा में प्रयास करने के लिए एक कार्य योजना भी तैयार की है, जिसके क्रियान्वयन का शुभारम्भ १५ अगस्त को आयोजित स्वतन्त्रता दिवस समाराहों के आयोजनों के साथ-साथ सुनियोजित ढंग से सभी युवा क्लबों द्वारा होगा।

—नेहरू युवा केन्द्र भिवानी

(पृष्ठ २ का शेष)

मन्त्र ३१ में इस देवकोश को हिरण्ययः स्वर्गः ज्योतिषावृतः बताया है। यही शिर, प्रकाश और शक्ति का स्रोत ब्रह्मरन्ध्र, मूर्धा, ज्योतिष्म हृदय, आत्मा तथा परमात्मा का निवास स्थान है। छाती में जो हृदय है, वह आत्मा का निवास नहीं है और छाती के ऊपर, कण्ठ के नीचे कोई हृदय स्थान नहीं है, जहां आत्मा रहती हो। योग शास्त्र तृतीय पाद सूत्र ३२ पर महर्षि व्यास और राजर्षि भोज के भाष्य निम्न प्रकार से है—

१. महर्षि व्यास—शिरःकपालेऽन्तश्छिद्रं प्रभास्वरं ज्योतिस्तत्र संयमं कृत्वा सिद्धानां द्यावापृथिव्योरन्तरालचारिणां दर्शनम् ॥

यह पाठ सरल है।

भोजवृत्ति है—शिरःकपाले ब्रह्मरन्ध्राख्यं छिद्रं प्रकाशाधारत्वाज्ज्योतिः। यथा गृहाभ्यन्तरस्थस्य मणेः प्रसरन्ती प्रभा कुंचिताकरेव सर्वदेशे संघटते तथा हृदयस्थः सात्त्विकः प्रकाशः प्रसृतस्तत्र संपिण्डितत्वं भजते। तत्र कृतसंयमस्य ये द्यावापृथिव्योरन्तरालवर्तिनः सिद्धा दिव्याः पुरुषास्तेषामितरप्राणिभिरदृश्यानां तस्य दर्शनं भवति। तान्पश्यति तैश्च स संभाषत इत्यर्थः।

भाष्य—सिर के कपाल में ब्रह्मरंध्र नामक एक छिद्र है। प्रकाश का आधार रूप होवे से ज्योति रूप है। जैसे घर के अन्दर रखी हुई मणी का प्रकाश गृह में फैलता है, वह ब्रह्मरन्ध्र में इकट्ठा रहता हुआ सर्व शरीर में फैलता है। वैसे ही हृदय में रहता हुआ सात्विक प्रकाश उस इकट्ठे हुए प्रकाश को पाकर फैलता है। उसमें किया हुआ संयम जिस योगी ने उसको द्युलोक, पृथ्वीलोक के बीच में विचरनेवाले जो सिद्ध दिव्य पुरुष हैं, जो दूसरे प्राणियों से नहीं देखे जाते, उनका दर्शन होता है। उनको देखता है और उनसे भाषण करता है।

इन भाष्यों से भी स्पष्ट है कि मानवी छाती के ऊपर, गले के नीचे कोई हृदय नहीं। जो कहीं भूल हो चुकी है, उसको अपनाकर साहित्य में भ्रम न फैलावें। सिर में ही सात इन्द्रियां हैं। दो कान, दो आंख, दो घ्राणेन्द्रियां तथा एक रसना है। त्वचा तो शरीर पर व्याप्त है। यह ज्ञानेन्द्रियां स्वयं ज्ञान को मस्तिष्क में बुद्धि को देते हैं। वहां पास ही अन्तरात्मा इनके दिये ज्ञान को ग्रहण करता है। शरीर के भिन्न-भिन्न भागों में आत्मा, ज्ञानेन्द्रियां और अन्तःकरण होते तो मानवीशरीर कार्यसाधक न हो सकता। मानव सिर ब्रह्मांड का द्योतक है।

इस विषय पर अधिक जानकारी विज्ञमहानुभाव देने की कृपा करें।

१५ अगस्त मुबारक हो

भजन—चौ० पृथ्वीसिंह जी बेधड़क

(मुद्दत में यह दिन आया—हुई दिल्ली दिलवालों की)

पौने दो सौ साल से भाई गोरे दिल्ली रहते थे,
मेरे देश के निवासियों को काले-काले कहते थे,
ले गये लूटकर माया, बेईमान हजारों लाखों की। १

बेशक हम ऊपर से काले पर भीतर से गोरे थे,
वह अन्दर से काले-काले ऊपर गोरे होरे थे,
गोरों का हुआ सफाया, सब हुई हकूमत कालों की। २

पन्द्रह अगस्त से अच्छा कोई भारत में तिहवार नहीं,
यह न समझना होली दिवाली रक्षा-बंधन से प्यार नहीं,
उसका भी बहुत उम्हाया, हुई जहां लूट निवालों की। ३

सारी दुनियां जानती है जब नई बहू कहीं आती है,
आस-पास की बहन कई दिन उसे देखने जाती हैं;
नहीं उसे देखना चाहा, जो बैठी सफेद बालों की। ४

मुंह से भी रहे छीनते रूखी-सूखी रोटी ने,
उन्हें देश से बाहर किया गांधी की एक लंगोटी ने,
भारत आजाद कराया, अब कमी रही ना मालों की। ५

फांसी खाई जेल गये कूदे अनशन की आग में,
वीर भगतसिंह सुभाष उधमसिंह जलियांवाले बाग में,
जिस-जिसने खून बहाया, यह यादगार उन लालों की। ६

देश की हर बहना-भाई देश का मुबारक हो,
पृथ्वीसिंह बेधड़क कहता पन्द्रह अगस्त मुबारक हो,
जिसने यह भजन बनाया, अब जरूरत है गवालों की। ७

प्रस्तुतकर्ता—श्री जयपालसिंह बेधड़क, सभा भजनोपदेशक

वेदप्रचार सप्ताह आदि के कार्यक्रम

भक्त फूलसिंह बलिदान दिवस कन्या गुरुकुल खानपुर कलां	१४ अगस्त
आर्यसमाज मुआना जि० जींद	२२ से २८ ,,
,, जगाधरी जि० अम्बाला	२२ से २८ ,,
,, नरवाना जि० जींद	२७ से २ सितम्बर
,, महर्षि दयानन्द मार्ग अम्बाला छावनी	२७ से २ ,,
,, सालवन जि० करनाल	२७ से ३ ,,
,, लाडवा जि० कुरुक्षेत्र	२८ से ३ ,,
वैदिक पारिवारिक सत्संग सभा हिसार	२९ से ४ ,,
आर्यसमाज सिरसा	७ से ९ ,,
,, सेवासदन बल्लबगढ़ जि० फरीदाबाद	१०-११ ,,
,, बीकानेर गंगायचा अहीर जि० महेन्द्रगढ़	१७-१८ ,,
,, शेखपुरा जि० करनाल	२३ से २५ ,,

जो आर्यसमाज वेद सप्ताह रखना चाहें, वे कृपया २७ अगस्त से ३ सितम्बर की तिथियां छोड़कर रखें, ताकि उपदेशक तथा भजनोपदेशकों का प्रबन्ध करने में सुविधा रहे।

—रघुबीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्यसमाज बादशाहपुर जि० गुडगांव का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री महाशय हंसराज, उपप्रधान—ला० मथुराप्रसाद, मन्त्री—हरिसिंह, उपमन्त्री—नत्थूराम, कोषाध्यक्ष—नत्थूराम तायल।

क्रांतदर्शी—दयानन्द

श्री पं. वीरसेन वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य, वेदसदन, महारानी पथ, इंदौर

गतांक से आगे—

२—अतिवृष्टि को रोकने के प्रयत्न वर्तमान विज्ञान नहीं कर सका, परन्तु अवर्षण की स्थिति निर्माण करने या अतिवृष्टि को रोकने की क्रिया भी यज्ञ द्वारा सम्पन्न होती है और उसमें सफलता भी दृष्टिगोचर हुई है। इस क्रिया द्वारा वर्षा पर सन्तुलन एवं नियन्त्रण स्थापित होने से नदियों की बाढ़ समस्या को नियन्त्रित किया जा सकता है और देश को जन, धन अन्नादि की हानि से मुक्त किया जा सकता है।

३—यज्ञ द्वारा वर्षा कराने एवं वर्षा रोकने की यज्ञ प्रक्रिया तथा विज्ञान के आधार पर ही ऋतु विज्ञान पर भी इच्छित नियन्त्रण स्थापित हो सकता है। अर्थात् यज्ञ द्वारा ऋतुओं के तापमान में न्यूनता एवं वृद्धि की जा सकती है। शीत ऋतु में यदि आवश्यकता से अधिक शीत लहरें वातावरण को अति शीतल बना दें अथवा ग्रीष्म ऋतु में ग्रीष्म की प्रचण्डता से जन-हानि की सम्भावना हो तो दोनों अवस्थाओं में अपने अनुकूल वातावरण में परिवर्तन यज्ञ के द्वारा सम्भव है अथवा ऋतुओं की स्थिति क्षीण, प्रभावहीन एवं असमर्थ हो तो उसको समर्थ एवं प्रभावयुक्त भी यज्ञ के द्वारा किया जा सकता है।

४—यज्ञ द्वारा मरुभूमि को उर्वराभूमि में परिवर्तित करने की क्रिया भी की जा सकती है। आज मरुभूमि को रोकने के उपायों में बबूल के वनों को लगाने का उपाय व्यवहार में लाया जारहा है। कांटों को बोने का फल कांटों के रूप में ही भोगना पड़ता है। मरुपन पृथिवी का क्षयरोग है। इस क्षय की चिकित्सा यज्ञ द्वारा हो सकती है। यदि नियम क्षेत्र में ५ वर्ष परीक्षण का अवसर प्राप्त हो तो इसमें सफलता प्राप्त हो सकती है। पृथिवी के तत्त्वों में जो विपरीत क्रिया विघटनात्मक प्रारम्भ होगई है। उस क्रिया के प्रति विपरीत रूप में क्रिया करने से मरुभूमि में अनुकूल परिवर्तन होने लगेंगे।

५—यज्ञ द्वारा राष्ट्र की खनिज सम्पदा की भी वृद्धि हो सकती है। पृथिवी में खनिज पदार्थों का संग्रह पृथ्वी के अतिरिक्त अन्तरिक्ष व द्युलोक में स्थित इनकी सूक्ष्म स्थितियों के कारण भी होता है। पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक के पदार्थों का सूक्ष्म एवं बीजात्मक अंश विविध प्रकार की वनस्पतियों में भी केन्द्रित होता रहता है। इस प्रकार विविध तत्त्वों से, प्रधान रूप से युक्त औषधि वनस्पतियों के यज्ञ के द्वारा उनके धूम के अन्तरिक्ष एवं पृथ्वी में प्रसारित होने से उन-उन प्रकार की खानों में उसी प्रकार के खनिज द्रव्यों के सूक्ष्म अंश को स्थूल रूप में अपने केन्द्र के साथ संगृहीत होने में सहायता होती है और खनिज द्रव्यों में उन्हीं-उन्हीं पदार्थों की वृद्धि हो सकती है। यदि प्रत्येक धातु अभी द्रव रूप में और गैस रूप में भी परिणत की जा सकती है तो कभी वह द्रव्य द्रव एवं गैस रूप में भी था और अब भी वह इन रूपों में न्यूनाधिक मात्रा में पृथ्वी, अन्तरिक्ष एवं द्युलोक में विद्यमान है। कभी उसकी अधिकता पृथ्वी में होती है तो कभी उनकी अधिकता अन्तरिक्ष तथा द्युलोक में हो जाती है। यज्ञ प्रक्रिया द्वारा उसका आकर्षण पृथ्वी में सम्भव होने से यज्ञ से खनिज पदार्थों की वृद्धि सम्भव है।

यज्ञ-विज्ञान के उपयोग द्वारा उपरोक्त प्रकार से जहां स्थूल जगत् में परिवर्तन किये जा सकते हैं, वहां विश्व के मानसिक एवं बौद्धिक क्षेत्र में भी परिवर्तन किये जा सकते हैं।

६—यज्ञ द्वारा विश्व के मानस क्षेत्र में शांति, प्रेम, आस्तिकता, अभ्युदय, अनुशासन आदि की भावनाओं को जगरित किया जा सकता है और सुबुद्धि तथा सत्कर्मों की वृद्धि की जा सकती है।

इसी प्रकार के अनेक कार्य यज्ञ-विज्ञान से सम्पन्न हो सकते हैं, तभी भूमण्डल में वेदप्रचार हो सकेगा। हमने यज्ञ द्वारा वृष्टि कराने, वृष्टि रोकने, रोग दूर करने, आरोग्यता प्रदान करने, बुद्धि की वृद्धि सम्पादन करने, सम्पदा वृद्धि, वाक्शक्ति के विकास आदि में लाभ होते देखा है। यदि और भी अधिक परीक्षण करने का अवसर और एतदर्थ सहयोग प्राप्त हुआ तो यज्ञ-विज्ञान के अनेक कार्यों में सफलता से विज्ञान का विकास करने में हम समर्थ हो सकेंगे।

३ सितम्बर, ८८ को देशभर में समान अधिकार दिवस श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर आर्य मन्दिरों में हरिजनों के साथ यज्ञ तथा यज्ञोपवीत देने का कार्यक्रम

दिल्ली १८ जुलाई : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देशभर के आर्यसमाजों को आदेश दिया है कि आगामी ३ सितम्बर, ८८ को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पर्व पर देश के प्रत्येक नगर, कस्बों और गांवों में आर्यसमाज मन्दिरों में बृहद् यज्ञों का आयोजन किया जावे। इस अवसर पर विशेष रूप से हरिजन भाइयों को भारी संख्या में आमन्त्रित कर उन्हें यज्ञवेदी पर यजमान बनाकर आहुतियां देने की प्रेरणा की जाये और सामूहिक यज्ञोपवीत दिये जायें, देश में चल रहे मन्दिर प्रवेश के विवाद का यही असली समाधान है।

स्वामी जी ने कहा—आर्यसमाज ने ही सर्वप्रथम ऊंच-नीच के भेद-भाव और जन्मगत जातपात तथा वर्ण-व्यवस्था को गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर मानकर छूतछात की दीवारों को तोड़ने का प्रयत्न किया था। आर्यसमाज को ही यह गौरव प्राप्त है कि हिन्दू समाज में एकता और समता स्थापित करने के लिए अनेक हरिजन युवकों को अपने गुरुकुलों में पढ़ाकर वेदशास्त्रों का विद्वान् बनाया और आर्यसमाजों में पुरोहित पद पर सुशोभित किया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देशभर की सभी आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों तथा हिन्दू सगठनों को विशेष परिपत्र भेजकर अपील की है कि हरिजन भाइयों को समाज में बराबरी का दर्जा देने के लिए धार्मिक आंदोलन का सूत्रपात करें और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व को समान अधिकार दिवस के रूप में सोत्साह मनावें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री

गांव ढाकला जिला रोहतक में वेदप्रचार की धूम

दिनांक १८-७-८८ से २१-७-८८ तक गांव ढाकला जि० रोहतक में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से जयपालसिंह आर्य की भजन मण्डली ने गांव में चार दिन तक वेद का प्रचार किया। शराब, दहेज, पाखण्ड व अन्धविश्वास के बारे में पुरजोर खण्डन किया और आज तक गांव में पंचायतों के इलैक्शन के बारे में बताया कि शराबी कण्डीडेट से गांव का कभी भी भला नहीं हो सकेगा। जब कि एक खुंखार शराबी श्री रणवीरसिंह ने पंचायत में खड़ा होकर प्रण किया और एक छोटे से बच्चे के सिर पर हाथ रखा कि मैं शराब का सेवन बिल्कुल नहीं करूंगा। जिससे भजन उपदेशक का प्रचार सफल हुआ और सभा के लिए १८३) दान दिया। श्री परशराम व श्री मुखत्यारसिंह सर्वहितकारी के ग्राहक बने।

आर्यसमाज रामपुरा, कोटा का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री कृष्ण जी साधक, उपप्रधान—बिरधीचन्द वाहेती, प्रह्लादकृष्ण भार्गव, गोपीबल्लभ गुप्ता, श्रीमती रुकमणीदेवी आर्या, मंत्री—भगवतीप्रसाद श्याम, उपमन्त्री—रामदयाल मेहरा, शांतिस्वरूप सक्सेना, कोषाध्यक्ष—कल्याणमल मित्तल, पुस्तकालयध्यक्ष—ब्रजनन्दन मठसिला।

आर्यसमाज मन्दिर कोसली का वार्षिक चुनाव

संरक्षक एवं प्रबन्धक—सर्वश्री अशोककुमार आर्य, प्रधान—ज्योतराजसिंह आर्य, उपप्रधान—दलीपसिंह आर्य, मन्त्री—ओम्प्रकाश आर्य, प्रचारमन्त्री—विश्वमित्र लूखीवाले, उपमन्त्री—रामजीवनसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—महीपालसिंह आर्य, लेखानिरीक्षक—भूपसिंह आर्य।

शराबबन्दी प्रस्ताव का प्रारूप

सेवा में

मानवीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा
चण्डीगढ़

हमारे ग्राम———·······जिला——————·····पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक·····—··········में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है।

यह ग्राम सभा (पंचायत) शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत ही घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की शराबबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दूकान तुरन्त बन्द की जावे और भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाये, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दूकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

दिनांक·······—·····

सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

इस प्रस्ताव को प्रतिलिपियां रजिस्ट्री द्वारा निम्न पते पर भेजें—

१. प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान हरयाणा चण्डीगढ़
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जि०······
५. जिलाधीश···—···
६. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

सभा ने इस सामाजिक सुधार कार्य में सभी से सहयोग देने का अनुरोध किया है।

जिला हिसार में वेदप्रचार एवं शराबबन्दी का धूआंधार प्रचार

वर्तमान समय में बढ़ते हुए पाखण्ड, भ्रष्टाचार एवं शराबखोरी को दृष्टि में रखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा दिनांक १०-७-८८ से २२-७-८८ तक निम्न गांवों में प्रचार किया गया। १० तारीख को ग्राम बोदीवाली में प्रातः मनीराम आर्य का पारावारिक यज्ञ। ११ को ढींगसरा में प्रातः श्री हेतराम आर्य का हवन। १२ को नलवा, १३ को खेतो की ढाणी में प्रातःकाल हवन, १४-१५ को कंवारी में प्रातः दोनों दिन चौपाड़ में हवन, १६-१७ को भगाना में श्री रामसिंह आर्य का हवन, १८-१९ को डाबड़ा में श्री धजेराम आर्य का हवन, २० को लाडवा, २१-२२ को भगाना में श्री सहदेव आर्य एवं श्री बलदेव आर्य के पारावारिक हवन किया गया। उपरोक्त सभी गांवों में मैंने अच्छे ढंग से इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से अवगत कराया तथा सरकार की शराब बढ़ावा नीति की कटु आलोचना की। पं० तेजपाल जी के समाज-सुधार के प्रभावशाली भजन हुए। प्रचार का कार्य काफी प्रभावशाली एवं सराहनीय रहा। वर्षा के बावजूद लोगों ने बड़ी श्रद्धा से प्रचार में भाग लिया। हवन पर नवयुवकों को शराब व धूम्रपान न करने की प्रेरणा दी। ज्ञातव्य है कि ग्राम भगाणा में ३०-४० वर्ष बाद आर्यसमाज का प्रचार हुआ है। गांव में शराबबन्दी कार्यक्रम विधिवत् जारी है। अब तक दण्ड के रूप में ४२००) इकट्ठे हो चुके हैं।

—अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी, सभा उपदेशक

आर्यसमाज २२ सैक्टर चण्डीगढ़ का वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज २२ सैक्टर चण्डीगढ़ के वार्षिक चुनाव में सर्वसम्मति से डा० इन्द्रराज शर्मा को प्रधान निर्वाचित किया गया और उन्हीं को सर्वसम्मति से अन्तरंग कार्यकारिणी के गठन का अधिकार दिया गया।

संरक्षक—सर्वश्री चौ० रूपचन्द्र, सन्तराम अग्रवाल, प्रधान—डा० इन्द्रराज शर्मा, उपप्रधान—रामरतन महाजन, नरेन्द्रनाथ तहसीलदार, ओम्प्रकाश सेठी, मन्त्री—प्रेमचन्द मनचन्दा, उपमन्त्री—बुधराम आर्य, ढालबीरसिंह चौहान, कृष्णलाल सचदेवा, कोषाध्यक्ष—वेदप्रकाश महाजन, आडिटर—विश्वामित्र महाजन।

आर्यसमाज भगाना (हिसार) का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री बलदेव आर्य, उपप्रधान—गणपतराम आर्य, मंत्री—मा० जगदीशराय आर्य, कोषाध्यक्ष—सहदेव आर्य, प्रचारमन्त्री—किशनलाल आर्य।

स्वाधीनता दिवस पर—

सारे जग से न्यारा

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

फैला जहाँ हिमालय गिरिवर मनको हरनेवाला।
कण्ठ सुशोभित करती जिसका पावन सरिता-माला।
महिमण्डल में सबसे सुन्दर पावनतम जिसका उत्कर्ष।
ऋषि-मुनियों की पुण्य धरा जो वही हमारा भारतवर्ष।
भ्रष्ट पथों पर चलते जग को देता ज्ञान सहारा।
सुन्दरतम इसका स्वरूप है, सारे जग से न्यारा॥

उत्तर में है खड़ा हिमालय मुकुट सदृश सुहाता।
उन्नत शिखरों से नभ छूकर निज गौरव बतलाता।
दक्षिण में प्रक्षालन करतीं पद का सिंधु तरंगें।
भीषण गर्जन से उद्बोधित होती मृदुल उमंगें।
सिंधु अचल के मध्य दुर्ग-सा विस्तृत देश हमारा।
सुन्दरतम इसका स्वरूप है सारे जग से न्यारा॥

हरी-भरी फसलों से पूरित, हरा-भरा है पावन देश।
गिरि-वन-निर्झर नदी घाटियों से शोभित इसका परिवेश।
अलंकृत करती सह्याद्रि-सतपुड़ा विन्ध्यगिरि-मालायें।
अन्तस्तल पर बहती कलगर सरयू की जल धारायें।
दुग्ध सदृश माँ के वक्षस्थल पर बहती गंगा की धारा।
सुन्दरतम इसका स्वरूप है, सारे जग से न्यारा॥

राम, कृष्ण, गौतम, गांधी ने इसका मान बढ़ाया।
धर्म विजय के लिए पार्थ ने धर गांडीव चढ़ाया।
ऋषि-मुनियों की कर्मभूमि यह यहाँ धर्म का नर्तन।
धर्म अर्थ औ काम-मोक्ष की होती खोज चिरन्तन।
यहीं-यहीं पर उदित हुआ था, वैदिकधर्म हमारा।
सुन्दरतम इसका स्वरूप है, सारे जग से न्यारा॥

आदिकाल में वेद-ऋचायें प्रस्फुटित हुई यहाँ सस्वर।
संस्कृति सुषमा से परिशोभित रहते आये आर्यप्रवर।
मानवता की ज्योति जल रही आदिकाल से चिर अविरल।
महिमण्डल आलोकित करती वेदभानु से रश्मि निकल।
आसेतु हिमाचल गूँजा था, ऋषि दयानन्द का नारा।
सुन्दरतम इसका स्वरूप है, सारे जग से न्यारा॥

सत्य शिवम् सुन्दरता पूरित, भारतभूमि-ललाम।
वसुधैव कुटुम्बकम् के भावों से अन्तस् रहा सदा उद्दाम।
सदा बिखरते इसी देश में जीवन के प्रतिमान।
नहीं कहीं पर महिमण्डल में भारत का उपमान।
भारत-भूमि का कण-कण है हमको प्राणों से प्यारा।
सुन्दरतम इसका स्वरूप है, सारे जग से न्यारा॥

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४)
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73   रजि० नं P/RTK 49   सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८९



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक:—वेदव्रत शास्त्री   श्रावण २०४५ वि०

वर्ष १५   अंक ३६   १४ अगस्त, १९८८   वार्षिक शुल्क २५)   एक प्रति १-००

वह सितारा कहां छुप गया ?

—उत्तमचन्द शरर



जो हरयाणा के आकाश पर चमकता था, टिमटिमाता था और अन्धेरी रातों में आलोक प्रदान कर मार्गदर्शन करता था ! आर्यसमाज पानीपत को यह गौरव प्राप्त है कि उसने ला० दलीपसिंह जैसे सूझ के धनी व्यक्ति को हरयाणा को प्रदान किया। जो कठिन से कठिन समस्याओं को चुटकी में सुलझा सकता था और मजा यह कि कोई कठिनाई उसके माथे पर शिकन नहीं लाती थी, वह मुस्कराता था, बात करता था और बात बन जाती थी।

पानीपत में श्री देशबन्धु के समान व्यक्तित्व तो बहुत देर बाद मिलेगा, परन्तु ला० दलीपसिंह उनके अभाव को पूरा अवश्य कर रहे थे। लाला जी मितभाषी थे, वक्ता के अहं से दूर और कभी भी क्रोध न करनेवाले, सदा मीठीवाणी से गम्भीरतापूर्वक सभाओं का संचालन उनका विशेष गुण था। उनके होते किसी सभा में तनातनी नहीं हो सकती थी, कोई कार्य असम्भव नहीं बन पड़ता था। पानीपत में होनेवाले उत्सव उनके व्यक्तित्व से गौरवशाली बन पाते थे। कुछ लोग समाज से ख्याति प्राप्त कर उठते हैं, कुछ अपने गौरव से समाज को ख्याति प्रदान कर उठाते हैं। ला० दलीपसिंह दूसरी कतार के व्यक्तित्व के स्वामी थे।

धन का कमाना कठिन नहीं, धन का उपयुक्त व्यय करना कठिन है। ला० दलीपसिंह सचमुच वेद के वचनानुसार सौ हाथों से कमाते थे और हजार हाथ से लुटाते थे। आर्य संस्थायें उनके दान से पुष्पित और पल्लवित हुईं। आर्य हाई स्कूल, आर्य कालेज, बाल भारती, दयानन्द हस्पताल यह सब लाला जी की दानशीलता के उज्ज्वल उदाहरण हैं। मैंने नहीं देखा कि कोई सवाली उनके हां से

खाली हाथ लौटा हो। उनकी माता जी ने अपने समय में समाज मन्दिर की धरती तीन हजार रुपये में समाज को दी। लाला जी के बाल्यकाल में वह चल बसीं, परन्तु लाला जी ने सशक्त होकर वह तीन हजार रुपया समाज को लौटाकर अपनी माता जी के यश को बढ़ा दिया।

उनका सुपुत्र सुरेन्द्र भी अपने पिता के चरण-चिह्नों पर चल रहा था। वही मधुर स्वभाव, दान की प्रवृत्ति, आर्यसमाज से प्रेम जैसे उसे विरासत में मिला था। मैंने सुरेन्द्र को उन दिनों से देखा, जब वह कालेज में पढ़ता था और आर्य वीरदल की शाखा में आता था। लाला जी की तमन्ना थी कि उनका इकलौता पुत्र आर्यत्व के गुणों से मंडित हो और उनके प्रयास सफल रहे। लाला जी थोड़े समय में प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने, कहने की आवश्यकता नहीं कि उनका व्यक्तित्व केवल पानीपत तक सीमित न होकर, पूरे हरयाणा का सौभाग्य था।

ऐसा दानी, मधुर भाषी, ऋषि भक्त हमसे छिन गया है। आर्यसमाज का तो स्तम्भ ही टूट गया और सुरेन्द्र ने तो अभी दुनियां देखनी थी, न जाने विधाता की व्यवस्था कैसी है? अश्रुपूरित नैत्रों से हम यही कह सकते हैं—

हाय गुलचीने अजल से कैसी नादानी हुई।
फूल वह तोड़ा कि गुलशनभर की वीरानी हुई।।



एक सुयोग्य पिता के सुयोग्य सुपुत्र

श्री सुरेन्द्रकुमार आर्य

प्रबन्धक : आर्य बाल भारती विद्यालय पानीपत, जि० करनाल। जिन्हें अपने पिता जी के साथ एक दुर्घटना ने हम से छीन लिया। इस होनहार सुपुत्र से आर्यसमाज को बहुत आशायें थीं।

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत का शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज पानीपत के आधार स्तम्भ श्री लाला दलीपसिंह जी आर्य के निधन ने समस्त आर्य जगत् में रिक्तता पैदा करदी है। विधि की विडम्बना ही है कि २९ जुलाई, ८८ की कालरात्री को पट्टी कल्याण के पास कार दुर्घटना श्री लाला जी, उनके सुपुत्र श्री सुरेन्द्रकुमार जी, निकटस्थ सम्बन्धी श्री रमेशकुमार जी तथा कार ड्राइवर को लील गई। उनकी मृत्यु से आज पूरा नगर स्तब्ध है।

लाला जी पक्के वैदिकधर्मी तथा नैतिक आर्यसमाजी थे। उनका पूरा जीवन आर्य विद्वानों तथा समाज को समर्पित था। जिस पर वे अपने जीवन के अन्त समय तक अडिग रहे। वे महर्षि दयानन्द के विनम्र तथा सच्चे अनुयायी थे।

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत तथा वे आपस में एकाकार थे। १९३५ में आप पहली बार आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष बने। इसके बाद मृत्यु प्रयन्त तक इस समाज के किसी न किसी पद पर आसीन रहे। इस समाज के कई बार आप प्रधान तथा मन्त्री रहे तथा नगर की जनता में मन्त्री जी के नाम से जाने जाते रहे। १९५३ में आपके प्रयासों से ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का अधिवेशन पानीपत में हो सका, जिसमें आर्य कालेज की स्थापना का निर्णय लिया गया। लालाजी अविभक्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वर्षों तक कोषाध्यक्ष रहे तथा विभाजन के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सर्वप्रथम अध्यक्ष निर्वाचित हुए, आर्यसमाज पानीपत को गौरवान्वित किया।

मन्त्री जी शिक्षा को समर्पित एक महान् व्यक्ति थे। नगर की आर्य शिक्षण संस्थाओं के निर्माण में आपने अत्यन्त रुचि ली। वास्तव में इनके निर्माण में आपने तन, मन और धन का भरपूर सहयोग देकर अपना महान् योगदान दिया। स्वयं आपके स्वर्गीय सुपुत्र श्री सुरेन्द्रकुमार जी आर्य, आर्य बाल भारती के पिछले कई वर्षों से प्रबन्धक चले आरहे थे।

लाला जी गोरक्षा, हिन्दी भाषा तथा नशाबन्दी के प्रबल समर्थक थे। स्थानीय गोशाला कमेटी के आप वर्षों तक अध्यक्ष रहे। हिन्दी सत्याग्रह में आपने भारी योगदान दिया तथा पानीपत में हुए पहले हरयाणा प्रांतीय नशाबन्दी सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष बने।

लाला जी पूर्ण राष्ट्रभक्त थे तथा जातीयता जैसी कुरीतियों के प्रबल विरोधी थे। जिसका प्रभाव है कि आपने नाम के साथ कभी भी जातीय सूचक शब्द न लगाकर "आर्य" शब्द का ही प्रयोग करते थे।

आर्यसमाज पानीपत अपने इस महान् नायक की मृत्यु पर शोक व्यक्त करता है।

आर्यसमाज पानीपत श्री लाला जी के सुपुत्र तथा सुयोग्य प्रबन्धक श्री सुरेन्द्रकुमार जी तथा निकटस्थ रिश्तेदार श्री राकेशकुमार जी की अकाल मृत्यु पर शोक व्यक्त करता और ईश्वर से प्रार्थना करता है कि वह दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करे।

आर्यसमाज पानीपत शोकाकुल परिवारों के प्रति भी अपनी समस्त संवेदनाओं को व्यक्त करता है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह उन्हें यह असीम दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—राममोहनराय, मन्त्री आर्यसमाज पानीपत

स्व० श्री दलीपसिंह आर्य से भेंटवार्ता

भेंटकर्ता—डा० सहदेव वर्मा, पानीपत



प्र० १—आपका झुकाव आर्यसमाज की ओर कब और क्यों हुआ ?

उ०—सर्वप्रथम मैंने आर्यसमाज की ओर से स्वामी कर्मानन्द जी तथा श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी को जैनियों से शास्त्रार्थ करते देखा तो झुकाव हुआ। परन्तु इस प्रेरणा में मेरे बड़े भाई श्री जयभगवान्दास जी तथा मेरे मामा श्री केदारनाथ जी का हाथ रहा है।

प्र० २—आपने आर्यसमाज की सदस्यता कब ग्रहण की और पदाधिकारी कब बने ?

उ०—आर्यसमाज का सदस्य तो मैं सन् १९३० में ही बन गया था, किन्तु २३ दिसम्बर, १९३५ में स्थानीय आर्यसमाज का कोषाध्यक्ष चुना गया।

प्र० ३—उस समय आर्यसमाज के कोष में कितनी राशि जमा थी ? क्या आपने उसमें कुछ वृद्धि की ?

उ०—वैसे तो आर्यसमाज पानीपत की स्थापना सन् १८८६ में हो चुकी थी, किन्तु आपको यह जानकर शायद कुछ आश्चर्य हो कि जब मैं कोषाध्यक्ष बना तो समाज के कोष में ५) कुछ आने ही जमा थे। तब सर्वप्रथम मैंने ही कोरे कागजों की रसीद बुकें बनाई, चन्दे की रसीदों को एक निश्चित रूप दिया और धनसंग्रह की ओर भी ध्यान दिया।

प्र० ४—आज आपके स्थानीय आर्यसमाज की आर्थिक स्थिति कैसी है ?

उ०—आज यदि स्थानीय आर्यसमाज से सम्बन्धित सम्पत्ति का ब्यौरा आंकना चाहें तो अनुमानतः ५० लाख रुपये से कुछ अधिक ही होगा। इसका श्रेय पानीपत के दानी मानी सज्जनों, उदार जनता तथा धर्मप्रेमी बन्धुओं को ही है, जिन्होंने तन, मन, धन से आर्यसमाज को सहयोग दिया है।

प्र० ५—आपका सम्पर्क आर्यसमाज से सन् ३०-३१ में हुआ। उस समय सारा देश गांधी जी द्वारा चलाये जा रहे स्वतन्त्रता संग्राम की लहर में बह रहा था, तब कांग्रेस में न जाकर आपने आर्यसमाज को ही क्यों महत्त्व दिया ?

उ०—इसमें कोई सन्देह नहीं कि मेरा सम्पर्क आर्यसमाज से उसी समय हुआ, जब गांधी जी और कांग्रेस का आंदोलन अपने पूर्ण यौवन पर था। परन्तु मेरे विचार से स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में गांधी जी की मूल भावना वही थी जो आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द की। उदाहरण के लिए स्वदेशी वस्तुओं का व्यवहार, प्रचार, अछूतोद्धार, स्त्री-शिक्षा, हिन्दी प्रसार आदि। यही कारण है कि उस आंदोलन में भाग लेनेवाले ८० प्रतिशत से भी अधिक आर्यसमाजी ही थे। मैं आर्यसमाज को ही स्वतन्त्रता संग्राम का मूल आधार मानता हूं। हां, गांधी जी के प्रति सदा ही मेरी सम्मान भावना रही है।

प्र० ६—आप विशेष रूप से किन-किन आर्यनेताओं के सम्पर्क में आये और किसने आपको अधिक प्रभावित किया ?

उ०—सामान्यतया मेरा झुकाव व्यक्तिविशेष की ओर न रहकर आर्यसमाज के सिद्धांतों और कार्यक्रम की ओर ही रहा है। फिर भी मैं जिन आर्य महापुरुषों के सम्पर्क में आया उनमें श्री महात्मा नारायण स्वामी जी, श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, श्री म० कृष्ण जी तथा ला० देशबन्धु गुप्ता का नाम लिया जा सकता है।

प्र० ७—शुद्धि के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं ? क्या आप इसे आज भी व्यावहारिक मानते हैं ?

उ०—मैं इसे आज भी उचित तथा व्यावहारिक मानता हूं, किन्तु बलात् नहीं, प्रेम तथा सद्भावना से विचार परिवर्तन हो तथा अन्य मतावलम्बी वैदिकधर्म की शरण में आयेंगे। इसके लिए आर्यों का चरित्र पवित्र होना आवश्यक है। इसी कारण हम लोग "आचारः परमो धर्मः" को महत्त्व देते हैं।

प्र० ८—सदा इतिहासकार विद्वान् तथा विचारक यह मानते हैं कि भारत में १९वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ऋषि दयानन्द ने स्वतन्त्रता स्वदेशी तथा स्त्री शिक्षा जैसे कार्यों का शंखनाद किया, किंतु इस सन्दर्भ में आज आर्यसमाज का नाम अग्रणी न होकर कुछ पश्चाद्गामी-सा लगने लगा है। क्या आर्यसमाजी संगठन या उसके कार्यक्रम में कुछ दोष आगया है ?

उ०—वस्तुतः आपका यह प्रश्न ५वें प्रश्न से ही मिलता-जुलता है। जैसा मैंने संकेत किया समस्त मध्यम वर्ग, सुधारवादी वर्ग तथा आर्यसमाज के समस्त कार्यकर्त्ता स्वतन्त्रता आंदोलन को सर्वोपरि समझकर, कांग्रेस के मंच से उसी कार्य को करने में जुट गये। वस्तुतः आर्यसमाज की उसी ज्योति को श्याम जी कृष्ण वर्मा, म० तिलक, ला० लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति, ला० देशबन्धु गुप्ता तथा श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त जैसे त्यागी तपस्वी नेताओं ने अपनी आहुति देकर प्रज्वलित किया। आर्यसमाज का कार्यक्रम आज भी वैसा ही है।

प्र० ९—आजकल यह सुना जारहा है कि नवयुवक वर्ग आर्यसमाज से विमुख होता जारहा है, क्या आप इससे सहमत हैं ? आप इस सम्बन्ध में क्या करना चाहते हैं ?

उ०—मैं आपकी बात से पर्याप्त अंशों से सहमत हूं। परन्तु परतन्त्रता के समय विशेष कार्य विदेशियों के विरुद्ध संघर्ष करना था और संघर्ष के लिए नवयुवकों का खून खोल उठना स्वाभाविक

है। यही कारण था कि रामप्रसाद बिस्मिल आजाद तथा भगतसिंह जैसे नवयुवक आर्यसमाज की प्रेरणा से ही इस संघर्ष में कूद पड़े थे, किन्तु आज तो ठोस कार्य करने की आवश्यकता है। वैसे भी आर्यसमाज का मार्ग त्याग तथा बलिदान का है। पर आज का युवक आध्यात्मिकता के कठिन मार्ग को न अपनाकर भौतिकता की चमक-दमक की ओर आकर्षित है—विदेशियों की भद्दी नकल और विदेशी शिक्षा का कुप्रभाव उनको आकर्षित कर रहा है—निश्चय ही यह अर्थ की ओर आकर्षण प्रतीत होता है। अर्थ की अधिकता से अनर्थ की सम्भावना रहती ही है। मेरे विचार से आर्य शिक्षा संस्थाओं में आर्य कुमार सभाओं, आर्य वीरदलों के माध्यम से बचपन से ही नवचेतना तथा वैदिक संस्कृति का सन्देश आकर्षक रूप में दिया जाना चाहिये।

प्र० १०—आजकल आर्यसमाज द्वारा संचालित शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा चालू करने की चर्चा हो रही है, किन्तु अधिकांश आर्य शिक्षा संस्थाओं में सनातन धर्मी, जैनी, सिख, यहां तक कि ईसाई व मुसलमान छात्र भी शिक्षा प्राप्त करते हैं। क्या आप उन्हें धार्मिक शिक्षा दिये जाने के पक्ष में है ?

उ०—मैं इसके पक्ष में हूं। आप धार्मिक शिक्षा का अर्थ साम्प्रदायिक शिक्षा न समझें। इसका ज्वलन्त उदाहरण काश्मीर की वह घटना है, जब हाल ही में वहां के मुख्यमन्त्री श्री शेख अब्दुला ने सार्वजनिक रूप से घोषणा की थी कि आर्यसमाजी शिक्षा संस्थाओं में सच्ची धार्मिक शिक्षा दी जाती है। परोपकार दान, दया, सद्भाव, ऊंच-नीच का त्याग, गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार व्यवहार, माता-पिता, गुरु व बड़ों के प्रति भक्तिभाव, सदाचारी जीवन व्यतीत करना और सत्य का ग्रहण तथा असत्य का त्याग, एक ही सच्चिदानन्द ईश्वर की उपासना तथा विश्वबन्धुत्व—यही वैदिक मान्यता है। भला इसमें किसी को क्या आपत्ति है ? हिन्दू, मुसलमान, ईसाई तो बाद में हैं, पहले तो मानव है। मानवता का पाठ पढ़ाना ही आर्यसमाज की सच्ची शिक्षा है।

प्र० ११—सहशिक्षा के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं ? आप अपने अन्तर्गत आनेवाली शिक्षा संस्थाओं में इसे क्या रूप देना चाहते हैं ?

उ०—महर्षि दयानन्द ने तो इसका विरोध किया ही है। व्यक्तिगत रूप से मैं भी इसे उचित नहीं समझता। आर्य शिक्षा संस्थाओं में सहशिक्षा को प्रोत्साहन देने के मैं पक्ष में नहीं हूं।

प्र० १२—बहुत से आर्यसमाजी वेदप्रचार की योजना की बातें करते हैं, परन्तु गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की ओर उनका ध्यान नहीं है। जबकि गुरुकुल ही वेद की शिक्षा तथा अन्त में वेदप्रचार में सहायक हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त अधिकांश आर्यसमाजी अपने बालक-बालिकाओं को गुरुकुल में न भेजकर स्कूल, कालिजों तथा यूनिवर्सिटियों में ही भेजना पसन्द करते हैं—(क्या यह पर उपदेश कुशल बहुतेरे) वाली बात नहीं है ?

उ०—आपका यह आक्षेप पर्याप्त उचित है। कठिनाई यह है कि आर्यसमाजी भी अपने बालकों के सुधार की ओर उतना ध्यान नहीं देते, जितना देना चाहिए। (आर्यबन्धु क्षमा करें) वास्तव में वैदिक शिक्षा का मूलाधार गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही है, किन्तु आश्रम जीवन में आज आर्यसमाजी भी नहीं ढल रहे हैं। लगता है आर्थिक दृष्टिकोण आज की मुख्य समस्या बन गई है। इसलिये शायद

(धर्म-अर्थ) के स्थान पर (अर्थ-धर्म) मान लिया गया है। शुभ कर्म में संयम परिश्रम तथा त्याग की आवश्यकता होती है। फिर भी श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज तथा श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी जैसे संन्यासी इस दिशा में भी पूर्ण परिश्रम कर रहे हैं। श्री स्वामी ओमानन्द जी तो न केवल छात्रों के, अपितु बालिकाओं के लिए भी गुरुकुलों का संचालन कर रहे हैं।

प्र० १३—सुना है आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में एक ऐसी खाई भी है जिसे पाटना कठिन है। आपका क्या विचार है?

उ०—मेरे विचार से कोई खाई नहीं है। प्रजातन्त्र प्रणाली में विचार विभिन्नता हो सकती है, किंतु यह तो जीवन का लक्षण है।

प्र० १४—अन्त में आप कुछ और कहना चाहेंगे?

उ०—मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार आपके प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयत्न किया है। प्रभु से यही प्रार्थना है कि सब आर्यों को ऐसी बुद्धि और शक्ति दे कि पारस्परिक मतभेदों को भुलाकर मैत्रीभाव से रहें तथा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के लक्ष्य को प्राप्त करने की सतत चेष्टा करें, तभी (सर्वे भवन्तु सुखिन:) का स्वप्न साकार होगा।

मैं अपनी पूरी शक्ति और ईमानदारी के साथ सभा एवं आर्यसमाज की उन्नति में सचेष्ट रहूंगा। ❀

शराब पीना सामाजिक अभिशाप है

शराबबन्दी प्रस्ताव का प्रारूप

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा
चण्डीगढ़

हमारे ग्राम .... जिला .... पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक .... में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है। यह ग्राम सभा (पंचायत) शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत ही घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की शराबबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द की जावे और भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाये, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दूकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

दिनांक............

सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

इस प्रस्ताव की प्रतिलिपियां रजिस्ट्री द्वारा निम्न पते पर भेजें—

१. प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान हरयाणा चण्डीगढ़
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जि०......
५. जिलाधीश......
६. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

सभा ने इस सामाजिक सुधार कार्य में सभी से सहयोग देने का अनुरोध किया है।

७ अगस्त को रोहतक में आयोजित शोकसभा में श्री दलीपसिंह आर्य को श्रद्धांजलियां

(निज संवाददाता द्वारा)

रोहतक, ७ अगस्त : आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा दयानन्दमठ को यज्ञशाला में सभा के पूर्वप्रधान श्री दलीपसिंह जी आर्य की शोकसभा सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस अवसर पर हरयाणा के कोने-कोने से आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता उपस्थित हुए। सर्वप्रथम पं• विद्याव्रत जी शास्त्री ने शांति यज्ञ करवाया तथा दिवंगत आर्यनेता की आत्मा को सद्गति तथा उनके वियोग में उनके दुःखी परिवार तथा रिश्तेदारों को इस महान् दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिए ईश-प्रार्थना की। उसके पश्चात् सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री के संयोजन में शोकसभा आरम्भ हुई। जिसमें निम्नलिखित महानुभावों ने स्वर्गीय आर्यनेता को अपनी भावभीनो श्रद्धांजलियां अर्पित की तथा उनके गुणों का गान किया।

डा० रणजीतसिंह जी पूर्व सभामन्त्री नारनौंद जि० हिसार

स्व० लाला दलीपसिंह जी आर्य हरयाणा के आर्यसमाज के एक महान् नेता थे। इतिहास में उनका नाम सदा स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा। उन्होंने अपना जीवन एक साधारण घराने से आरम्भ किया और बचपन में ही ऋषि दयानन्द के सिद्धांतों से प्रभावित होकर उनके अनुसार अपने जीवन को ढालने का प्रयत्न किया। वे कठोर परिश्रम, लगन तथा ईमानदारी के सहारे पानीपत के एक उच्च श्रेणी के उद्योगपति बन गये और परमात्मा की कृपा से धनधान्य से सम्पन्न होगये, परन्तु उनके जीवन में सदा सादगी तथा पवित्रता बनी रही। वे सर्वहितकारी, मनोहारी, विनम्र तथा चरित्र के धनी थे। इन्हीं गुणों के कारण उन्होंने आर्यसमाज के इतिहास में अज्ञात शत्रु की उपाधि प्राप्त करने का श्रेय प्राप्त किया। उनका सभी वर्गों में सम्मान किया जाता था।

मुझे उनके प्रधानपद के काल में मन्त्री के रूप में कार्य करने का अवसर मिला है। उन्होंने सभा का संचालन बहुत ही कुशलतापूर्वक किया और जब भी कभी कोई समस्या उत्पन्न हो जाती थी तो उसे नियमानुसार तथा शांतिपूर्वक सुलझा देते थे। उनका सदा ही यह प्रयास रहा कि सभी आर्यजन सभा के हितों को सर्वोपरि रखकर तन, मन तथा धन से सहयोग करें।

ला० शम्भुदयाल जी आर्य, मन्त्री आर्यसमाज बहादुरगढ़ मण्डी जि० रोहतक

ला० दलीपसिंह जी आर्य दानवीर तथा शिक्षा-प्रेमी थे। हमने उन्हें अपनी आर्यपुत्री पाठशाला के वार्षिक उत्सव पर सभाप्रधान रूप में आमन्त्रित किया। वे बहुत ही प्रसन्नचित्त होकर बहादुरगढ़ पधारे और अपने भाषण में कन्याओं को वैदिक सिद्धांतों की शिक्षा देने का परामर्श देते हुए कहा था

कि चाहे कितना भी धन खर्च करना पड़े, कन्या पाठशाला में धार्मिक शिक्षा पढ़ाने की व्यवस्था की जावे। क्योंकि एक कन्या को वैदिकधर्म में दीक्षित करने से दो परिवारों में वैदिकधर्म का प्रचार तथा प्रसार हो सकता है। उन्होंने उस समय इस उद्देश्य के लिए निजी रूप में उदारतापूर्वक दान देकर एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया।

ला० रामानन्द जी सिंगल पूर्व सभा कोषाध्यक्ष पानीपत जि० करनाल

२६ जुलाई को हरयाणा के आर्यसमाज में एक बहुत दुःखदाई दुर्घटना घटी। इस आर्यसमाज की एक साथ दो पीढ़ी (पिता तथा पुत्र) हमसे छीन गई। इस महान् परिवार में केवल श्री दलीपसिंह आर्य के परिवार में एक नवयुवती पुत्रवधू विधवा, एक ११ वर्षीय पुत्र तथा ६ वर्षीय पुत्री ही शेष रह गई हैं। इस प्रकार उनके अनाथ परिवार का रक्षक भगवान् ही है। श्री दलीपसिंह जी आर्य एक आदर्श नेता थे। उनकी माता जी पौराणिक थी, परन्तु उनके मामा श्री केदारनाथ की प्रेरणा से पानीपत में आर्यसमाज मन्दिर के लिए अपना मकान तीन हजार रुपये में दे दिया था। जब उनके इकलौते सुपुत्र श्री सुरेन्द्र आर्य का विवाह हुआ तो उन्होंने आर्यसमाज को ३ हजार रुपया दान दिया। उनकी लोकप्रियता के कारण आर्यसमाज पानीपत के वार्षिक चुनाव सदा ही सर्वसम्मति से होते रहे। वे पानीपत आर्यसमाज तथा आर्य संस्थाओं के प्राण थे। उनके महत्त्वपूर्ण योगदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकेगा। उनके बड़े भाई ला० जयभगवान् जी पर एक बहुत बड़ा बोझ आ पड़ा है। परन्तु वे अपने छोटे भाई के अचानक वियोग से इतने विचलित होगये हैं कि वे समझ नहीं पारहे कि भाई के अनाथ परिवार को किस प्रकार आर्य परिवार के रूप में विकसित किया जाये।

मा० बद्रीप्रसाद आर्य सभा कोषाध्यक्ष जींद शहर

मेरा स्व० ला० दलीपसिंह आर्य से पुराना सम्बन्ध रहा है। वे सर्वप्रथम आर्यसमाजी तथा उस के बाद कुछ अन्य थे। उनकी रग-रग में आर्यसमाज था। आर्यसमाज के नियमानुसार अपनी कमाई का १००वां भाग आर्यसमाज के कार्यों में खर्च करते थे। पानीपत के आर्यसमाज तथा आर्य संस्थाओं की सम्पत्ति के निर्माण में तो उनका हाथ था ही, इसके साथ-साथ हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्माण में भी उनका योगदान किसी से कम नहीं है। उनके देहांत से आर्यसमाज का असहनीय क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति हो सकना सम्भव नहीं है। मुझे आशा है कि उनका होनहार पौता अपने परिवार की परम्परा के अनुसार आर्यसमाज की सेवा करेगा।

श्री राममोहनराय एडवोकेट, मन्त्री आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत जि० करनाल

ला० दलीपसिंह आर्य, उनके सुपुत्र श्री सुरेन्द्र आर्य तथा उनके साले श्री राकेश के अचानक स्वर्गवास की सूचना मिलने पर हम पानीपतवासी चकित रह गये। जिसने भी इस भयंकर दुर्घटना का समाचार सुना, उनकी आंखों में पानी आगया। वास्तव में श्री दलीपसिंह आर्य का परिवार आर्य-समाज के लिए एक ज्योति स्तम्भ था। वे १६३५ में आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष बने और उन्होंने अपने अन्तिम सांस तक आर्यसमाज तथा इसकी संस्थाओं से नाता जोड़े रखा। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विभाजन से पूर्व वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भी नेता रहे और १६५३ में पानीपत में पंजाब सभा का अधिवेशन भी उनकी देख-रेख में हुआ था। उसी वर्ष ही उनके प्रयत्नों से पानीपत में आर्य कालेज की स्थापना हुई। उन्होंने आर्य कालेज के प्रिंसिपल तथा प्राध्यापक पदों पर दृढ़ आर्य विचार

वाधि विद्वानों की सेवायें प्राप्त की जो कालिज कार्यों के अतिरिक्त आर्यसमाज के उत्सवों आदि पर भी पहुंचते थे। उन्होंने कालेज के बनवाने में सर्वप्रथम अपनी ओर से दान देकर, उसके बाद अन्य दानियों से दान संग्रह करके एक शानदार परम्परा स्थापित की। उन्होंने अपने पद-चिह्नों पर अपने सुपुत्र श्री सुरेन्द्र आर्य को भी चलने की प्रेरणा की और उन्हें भी आर्यसमाज के योगदान में लगा दिया था।

मा० जसवन्तसिंह आर्य, प्रधान आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल

आर्यसमाज तथा आर्य कन्या विद्यालय होली मोहल्ला करनाल की उलझी हुई समस्याओं को सुलझाने की सहायता के लिए मुझे तथा मेरे अन्य साथियों को २-३ बार ला० दलीपसिंह आर्य से सम्पर्क करने का अवसर मिला। हम उनकी कार्यशैली से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने हमारी समस्या को बहुत ही ध्यानपूर्वक सुना तथा हमें समझाया कि आर्यसमाज के कार्य के विस्तार हेतु निजी-स्वार्थ को त्यागकर मधुर तथा संयम की भाषा का प्रयोग करके सभी के साथ प्रेम का व्यवहार करना चाहिए। मतभेदों को न्यायालयों में न ले जाकर, परस्पर मिल-बैठकर सुलझाने में ही आर्यसमाज का हित हो सकता है।

इस प्रकार के उदारचित्त महान् नेता का स्मारक बनाना चाहिए और हम सभी को उनके गुणों को ग्रहण करके उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि देनी चाहिए।

चौ० निहालचन्द गुगनानी, उपप्रधान आर्य प्रादेशिक सभा हरयाणा रोहतक

मुझे उनके साथ कार्य करने का अवसर तो नहीं मिल सका, परन्तु मैं जहां भी हरयाणा में गया हूं, वहां के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से उनकी कीर्ति सुनी है। वे एक सच्चे आर्य थे। उन द्वारा स्थापित आर्य परम्परायें सदा हमारे लिए एक मार्गदर्शक का कार्य करेंगी। परमात्मा ने हम से एक ऐसा आर्य परिवार छीन लिया, जिसकी अभी बहुत आवश्यकता थी। मैं आर्य प्रादेशिक सभा की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि तथा उनके दुःखी परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूँ।

प्रिंसिपल लाभसिंह, प्रधानाचार्य आर्य विद्यालय पानीपत एवं प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा

स्वर्गीय ला० दलीपसिंह आर्य का सारा जीवन आर्यसमाज की सेवा में व्यतीत हुआ है। जब पानीपत में आर्य कालेज की स्थापना की गई तो मैं कालेज का प्रथम छात्र बना और उनके सम्पर्क में आने का अवसर मिलना आरम्भ हुआ और मृत्यु से एक दिन पूर्व भी उनसे विचार-विमर्श किया। मुझे पता नहीं था कि मैं उस आर्य महापुरुष के अन्तिम दर्शन कर रहा हूँ। २९ जुलाई को जब उनके परिवार की दुर्घटना की सूचना मिली तो मेरे चारों ओर अन्धेरा-सा छा गया। मैंने इस दुःखद समाचार की सूचना सभा अधिकारियों को रोहतक तथा दिल्ली फोन द्वारा देने का प्रयत्न किया। मेरे हाथ तथा मेरी वाणी मेरा साथ नहीं दे रही थी। चारों ओर निराशा का वातावरण था। वे मुझ से अपने पुत्र की भांति स्नेह करते थे तथा कहा करते थे कि अपनी संस्था के हित के लिए किसी के सामने न झुकें तथा जो सत्य हो उस पर आचरण करें। वे अग्रवाल सभा तथा मार्कीट सभा के भी प्रधान रहे हैं। उनके निधन से सभी धार्मिक संस्थाओं को बहुत भारी हानि हुई है।

पं० चिरंजीलाल जी आर्य भजनोपदेशक ग्राम खलीला रोडान जि० करनाल

ला० दलीपसिंह आर्य से मेरा ३० वर्ष से सम्पर्क रहा है। मेरा प्रचार-कार्य का केन्द्र आर्यसमाज पानीपत में होने के कारण उनसे मिलने का अवसर मिलता रहा। उनसे हमारी मण्डली को सभी प्रकार की आवास तथा भोजनादि की सुविधा मिलती रही है। उनकी वेदप्रचार तथा यज्ञ में अत्यधिक रुचि थी। उन्होंने अपने जीवनकाल में अनेक बार यज्ञ करवाये तथा भारत के बड़े-बड़े वैदिक विद्वानों को बुलाया और प्रतिवर्ष किसी न किसी विद्वान् को सम्मानित करके ऋषि-ऋण चुकाने का प्रयत्न किया। उन्होंने अपने घर पर यज्ञशाला बनवाई तथा उसमें चारों वेद स्थापित किये। वेद गायन के कैसेट बनवाये। जनता को वेदप्रचार सुनाने का अनेक बार अवसर प्रदान किया। वे सभा के सभी प्रचारकों का बहुत सम्मान करते थे। उन्होंने एक बार कुरुक्षेत्र में प्रचारकों का सम्मान करवाया था। उन्होंने मेरे सुपुत्र के निधन पर मेरे ग्राम में जाकर मुझ जैसे उपदेशक के प्रति जो सहानुभूति प्रकट की थी, उसे मैं कभी भी नहीं भुला सकता।

पं० सुखदेव शास्त्री महोपदेशक ग्राम आसन जि० रोहतक

वैसे तो प्रतिदिन हजारों व्यक्तियों के निधन होते हैं, परन्तु जब एक महापुरुष का निधन होता है जो उनके वियोग पर लाखों नरनारी विलाप करते हैं। उनको शोक सभायें आयोजित होती हैं; ताकि उनकी स्मृति बनी रहे। आज हम ऐसे ही आर्य महान् पुरुष की शोकसभा में विलाप कर रहे हैं। आर्यसमाज उनका परिवार है। उनके अचानक निधन से हम अपने आपको अनाथ अनुभव करते हैं। आर्यसमाज पानीपत तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्माण में उनका महान् योगदान था। वे आर्यसमाज के एक भामाशाह थे। उनके दिये गये दान से सभा भवन की नींव रखी गई। जब तक वे जीवित रहे, वे इसे सींचते रहे। उनका अपने जीवनकाल में ही एक भव्य स्मारक पानीपत में बस अड्डे पर पहुंचते ही दृष्टिगोचर होता है। जी० टी० रोड की दोनों ओर आर्य शिक्षण संस्थाओं के नामपट तथा ओ३म्ध्वज देखकर हमारा चेहरा खिल जाता है। जिन्होंने आर्यसमाज का नाम नहीं सुना, उन्हें भी ये आर्य संस्थायें दिखाई देने पर आर्यसमाज के बारे में पहली जानकारी अनायास ही मिल जाती है।

ला० दलीपसिंह जी आर्य को स्वामी श्रद्धानन्द, ला० लाजपतराय, भक्त फूलसिंह जी आदि आर्य नेताओं के साथ कार्य करने का अवसर मिला। इसी कारण उन्होंने उनके गुणों को अपने जीवन में ढालने का पूरा प्रयत्न किया। वे वास्तव में आर्यसमाज के दलीप सम्राट् थे। मैं सभा के सभी उपदेशकों की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि देता हूं।

श्री भूपेन्द्रसिंह मलिक एडवोकेट आर्यनगर रोहतक

मुझे अपने पिता जी चौ० मार्डूसिंह जी के साथ २-३ बार स्व० ला० दलीपसिंह आर्य से पानीपत मिलने का अवसर मिला है। मैंने अनुभव किया कि बहुत ही गम्भीर तथा शांतप्रिय स्वभाव के महान् आर्यपुरुष थे। वे जो भी बात अपने मुख से निकालते थे, उसे विचार कर नपे-तुले शब्दों में ही कहते थे। किसी विषय पर मतभेद होता था, उसे भी बहुत ही विनम्रतापूर्वक अपने विचार प्रस्तुत करते थे।

महाशय फतेहसिंह भण्डारी गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक

मैंने अन्तरंग सभा के सदस्य के नाते सभा की बैठकों में ला० दलीपसिंह आर्य के दर्शन किये हैं तथा उनके विचार सुनने का अवसर मिला है। वे पक्षपात रहित सभी विषयों पर सत्य पर आधारित अपनी बात कहते थे। वे आर्यसमाज के महान् नेता तथा विचारक थे। उन्होंने वैदिक सिद्धांतों के प्रचारार्थ अपनी ओर से अनेक बार उदारतापूर्वक दान दिया।

मा० रामलाल भाटिया वैदिक भक्ति आश्रम आर्यनगर रोहतक

ला० दलीपसिंह आर्य ने अपना सारा जीवन आर्यसमाज के कार्यों में अर्पित कर दिया। वे बहुत ही परोपकारी तथा धर्मात्मा थे। उनके परिवार की दुर्घटना की सूचना सुनकर हमें बहुत दुःख हुआ। परमात्मा ऐसी भयंकर दुर्घटना किसी के साथ न करे। मैं अपने आश्रम की ओर से उनके परिवार के प्रति संवेदना तथा दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि देता हूं।

श्री चन्द्रपालसिंह राणा ग्राम बुवाना (दिल्ली)

आज हमें सबसे अधिक चिंता यह है कि हमसे पहली पीढ़ी के नेता जो कि तपेतपाये थे और आर्यसमाज के कार्यों का उन्हें बहुत अनुभव था, धीरे-धीरे हमसे बिछुड़ रहे हैं। नई पीढ़ी आर्यसमाज से दूर जारही है। ला० दलीपसिंह आर्य एक महान् पुरुष थे। उनका अभाव आज हमें खटकता है। हमें इस समस्या पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना होगा। महापुरुषों के गुणों को अपने जीवन में धारणा करके उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि देनी चाहिए।

महाशय भरतसिंह जी सभा वरिष्ठ उपप्रधान एवं मन्त्री दयानन्दमठ रोहतक

मेरा उनसे बहुत पुराना परिचय रहा है। वे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पहले प्रधान तथा मैं पहला मन्त्री रहा हूं। उनके साथ कार्य करने का अवसर मिला है। वे आर्यसमाज की समस्याओं को शांतिपूर्वक सुलझाने के माहिर भी थे। वे सभी पक्षों से बहुत प्यार तथा शांतिपूर्वक बातें करते थे और सभी की बातें सुनकर समस्याओं को सुलझा देते थे। वे आर्यसमाज के महान् स्तम्भ थे, जो कि एक भयंकर दुर्घटना में हमसे विदा होगये। इनके निधन से जो सभा को हानि हुई है, उसकी पूर्ति नहीं हो सकती। वे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रमुख नेता थे। जब पंजाब सभा का बटवारा हुआ था तो हरयाणा सभा को सांझे की राशि नहीं मिली और हमारे लिए सभा का चलाना कठिन होगया। उस समय श्री दलीपसिंह आर्य ने १५ हजार रुपये की राशि सभा भूमि के खाते से भेजकर मूल्यवान् सहयोग दिया और सभा भवन निर्माण के लिए भी ५ हजार रुपये का दान देकर कार्य आरम्भ करवाया। जब भी कोई आर्थिक संकट सभा पर आया तो उन्होंने भामाशाह का कार्य निभाया। उनका अभाव हमें खटकता रहेगा।

प्रो० सत्यवीरसिंह विद्यालंकार सभा उपमन्त्री छाजूराम जाट कालेज हिसार

१९७५ में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का त्रिभाजन होने पर एक समस्या खड़ी होगई कि हरयाणा सभा का प्रधान किसे बनाया जावे। काफी विचार-विमर्श के पश्चात् ला० दलीपसिंह जी आर्य को सर्वसम्मति से प्रधान चुनकर उन्हें शेष अधिकारियों को चयन करने का भी अधिकार दिया गया।

उन्होंने जिस कुशलता से सभा का संचालन किया और उनके काल में सभा के अपने भवन का निर्माण कार्य आरम्भ हुआ। वे बहुत ही बुद्धिमान् तथा दानी थे। उनकी सूझबूझ तथा लगन के कारण आर्यसमाज पानीपत तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं का शानदार निर्माण हुआ। उनकी अचानक मृत्यु के बाद इनके रिक्त स्थान की पूर्ति हो सकना कठिन है।

श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती प्रधान परोपकारिणी सभा

मुझे ला० दलीपसिंह आर्य की मृत्यु का समाचार बहुत विलम्ब से मिल सका, क्योंकि मैं उन दिनों हरयाणा से बाहर था। मुझे हिसार आने पर आचार्य सत्यप्रिय जी द्वारा इस दुर्घटना का पता चला, परन्तु मुझे विश्वास न हो सका। मेरा उनके साथ बचपन से ही घनिष्ठ सम्बन्ध था। आर्यसमाज के आंदोलनों तथा अन्य सामाजिक कार्यों में उनका योगदान आर्यसमाज के इतिहास में सदा स्मरण किया जावेगा। जब हरयाणा सभा बनी तो उसके प्रधानपद का कार्यभार किसे सौंपा जावे, सरकारी दबाव के कारण हमारे लिए एक समस्या बन गई। इस समस्या को सुलझाने के लिए एक उप समिति का गठन किया गया। स्वामी रामेश्वरानन्द, प्रो० शेरसिंह तथा स्व० चौ० माड़ूसिंह जी पर आधारित उप समिति की बैठक १५ हनुमान मार्ग नई दिल्ली में रखी गई, ताकि राजनैतिक दबाव से बचा जा सके। उप समिति ने काफी विचार-विमर्श के पश्चात् ऐसे महापुरुष का नाम प्रस्तुत किया जिन पर आर्यसमाज तथा सरकारी क्षेत्र में भी किसी को आपत्ति करने की गुंजाइश नहीं थी। वे थे अजातशत्रु श्री दलीपसिंह जी आर्य। वास्तव में वे आर्यसमाज तथा सरकारी क्षेत्र में सबसे अधिक लोकप्रिय थे।

वे भामाशाह की भांति दानी थे। सभा के कार्यों में उन्होंने आर्थिक संकट को दूर किया। मैंने ताम्रपत्रों पर सत्यार्थप्रकाश छपवाने की योजना बनाई। आर्यसमाज के एक बहुत बड़े वकील तथा नेता ने अपनी टिप्पणी की थी कि एक-दो पृष्ठ हो छपवाकर कार्य बन्द हो जावेगा। मैं भी चिन्ता में था कि इस योजना को किस प्रकार पूरा किया जावे। इस पर कई लाख का खर्च आवेगा। मैं तब ला० दलीपसिंह आर्य के पास गया और अपनी योजना तथा चिन्ता उनके सम्मुख रखी। उन्होंने मुस्कराते हुए मुझे कहा कि मेरी तथा मेरे सुपुत्र की ओर से १० हजार राशि ले लीजिए और यह शुभ कार्य आरम्भ कर देवें। मेरी चिन्ता समाप्त हुई और उत्साह बढ़ गया। अन्य दानियों ने उनका अनुसरण किया और परमात्मा की कृपा से सत्यार्थप्रकाश पूरा ताम्रपत्रों पर छप गया। इसी प्रकार एक बार स्व० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की जीवनी के प्रकाशन में भी उन्होंने उदारतापूर्वक दान दिया था। वे जब हरयाणा सभा के प्रधान बने तो उस समय सभा के पास न कार्यालय, न कोष और न ही कोई उपदेशक था। उस समय इन्होंने सभा के आर्थिक संकट को दूर करके सभी को चिन्तामुक्त किया। उनका सम्बन्ध स्वामी कर्मानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, भक्त फूलसिंह तथा शामलीवासी चौ. मामराजसिंह जी से रहा है। पं० रामचन्द देहलवी जैसे उच्चकोटि के विद्वान् को पानीपत बुलाकर तथा सम्मान करके एक ऐसी परम्परा डाली, जो पानीपत आर्यसमाज में आज तक चालू है। वे रचनात्मक कार्यों में भाग लेते थे। तोड़-फोड़ की नीति में उनकी रुचि नहीं थी। आजकल आर्यसमाज के प्रायः अधिकारियों की सन्तान आर्य नहीं बन रही, परन्तु ला० दलीपसिंह आर्य ने अपने सुपुत्र श्री सुरेन्द्र जी को आर्य बनाया तथा उन पर आर्यसमाज के कार्यों का भार डाला। परमात्मा ने उन्हें भी हम से

छीन लिया। मेरी परमात्मा से यही प्रार्थना है कि उनका पोता भी अपने आर्यवंश की परम्परा चालू रखने की योग्यता प्राप्त करे।

गुरुकुल झज्जर में श्री दलीपसिंह आर्य के नाम से एक लाख रुपये की एक छात्रवृत्ति चालू की जावेगी। सभा अधिकारियों को भी मेरा सुझाव है कि सभा की ओर से भी उनकी स्मृति में स्मारक बनाया जावे।

प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान पूर्व केन्द्रीय मन्त्री भारत सरकार

मैं २६ जुलाई की रात्रि को रेलगाड़ी से परोपकारिणी सभा अजमेर की बैठक में सम्मिलित होने की तैयारी कर रहा था। अचानक पानीपत से प्रिंसिपल लाभसिंह जी ने फोन द्वारा श्री दलीपसिंह आर्य के परिवार की दुर्घटना की दुखद सूचना दी। मैं हताश रह गया और तुरन्त पानीपत पहुंचकर उनकी अन्त्येष्टि के कार्यक्रम में पहुँचा। यह दुर्घटना श्री दलीपसिंह आर्य के परिवार के साथ हरयाणा सभा की भी एक भयंकर दुर्घटना बन गई। वे सभा के निर्माता थे और ऐसे नेता थे जिन पर सभी का विश्वास था। वे संकट के समय हरयाणा सभा के प्रधान बने। हरयाणा के आर्यसमाज ने उनसे जो आशायें बांधी थीं, उन्होंने उसे पूरा किया। वे सभा की नींव तथा एक स्तम्भ थे। अभी हरयाणा सभा को उनके योगदान तथा मार्गदर्शन की बहुत आवश्यकता थी।

ला० रामानन्द जी सिंगल तथा वहां के अन्य आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन है कि वे श्री दलीपसिंह आर्य के पौते को पूर्ण प्यार तथा स्नेह देवें तथा उनके छोड़े गये अधूरे कार्यों को पूरा करें। सभा की आगामी अन्तरंग सभा की बैठक में उनके स्मारक बनाने पर विचार किया जावेगा।

इस शोकसभा में सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत जी शास्त्री तथा सभा कार्यालय के कर्मचारी सर्वश्री ओम्प्रकाश गणक, शेरसिंह व्यवस्थापक सर्वहितकारी, सत्यवानसिंह मकड़ौली, सभा उपदेशक पं० अर्जुनदेव आर्य, ब्र० महेन्द्र शास्त्री, पं० जयपाल आर्य आदि सम्मिलित थे।

❀

आवश्यक सूचना

वैदिक यतिमण्डल के समस्त आदरणीय सदस्यों की सेवा में सूचनार्थ निवेदन है कि वैदिक यतिमण्डल का सम्मेलन १७-१८ सितम्बर, ८८ शनिवार रविवार को वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्यनगर रोहतक में करने का निर्णय हुआ है।

प्रथम बैठक १७ सितम्बर को प्रातः १० बजे होगी। अतः निश्चित समय पर पधारने की कृपा कीजिये।

—सोमानन्द, मन्त्री वैदिक यति मण्डल

राष्ट्र की उन्नति के लिए सप्तपदी योजना

(राष्ट्रीय-प्रार्थना)

प्रजापतिः ऋषिः । लिङ्गोक्ताः (ब्राह्मणादयः) देवताः । स्वराड्उत्कृतिश्छन्दः । षड्जः स्वरः ॥
पुनर्मनुष्यैः किमेष्टव्यमित्याह ॥
सभी मनुष्यों को किसकी इच्छा करनी चाहिये, इस विषय का उपदेश किया जाता है ॥

ओ३म्– आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽ इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्ध्रिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्। (यजु॰ २२।२२)

पदार्थ – (आ) समन्तात् (ब्रह्मन्) विद्यादिना सर्वेभ्यो महत् परमात्मन् (ब्राह्मणः) वेदेश्वरवित् (ब्रह्मवर्चसी) वेदविद्याप्रदीप्तः (जायताम्) उत्पद्यताम् (आ) (राष्ट्रे) राज्ये (राजन्यः) राजपुत्रः (शूरः) निर्भयः (इषव्यः) इषुषु साधुः (अतिव्याधी) अतिशयेन व्यद्धुं=शत्रून्ताडयितुं शीलं यस्य सः (महारथः) महान्तो रथा वीरा वा यस्य सः (जायताम्) दोग्ध्री) प्रपूरिका (धेनुः) गौः (वोढा) वाहकः (अनड्वान्) वृषभः (आशुः) शीघ्रगामी (सप्तिः) अश्वः (पुरन्धिः) या पुरून्=बहून् दधाति सा (योषा) (जिष्णुः) जयशीलः (रथेष्ठाः) यो रथे तिष्ठति सः (सभेयः) सभायां साधुः (युवा) प्राप्तयौवनः (आ) (अस्य) यजमानस्य) यो यजते देवान्=विदुषः सत्करोति, संगच्छते, सुखानि ददाति वा तस्य (वीरः) विज्ञानवान्) शत्रूणां प्रक्षेप्ता (जायताम्) (निकामे निकामे) निश्चितं प्रत्येककामनायाम् (नः) अस्माकम् (पर्जन्यः) मेघः (वर्षतु) (फलवत्यः) बहूत्तमफलाः (नः) अस्मभ्यम् (ओषधयः) यवादयः (पच्यन्ताम्) परिपक्वा भवन्तु (योगक्षेमः) अप्राप्तस्य प्राप्तिलक्षणो योगस्तस्य रक्षणं क्षेमः (नः) अस्मभ्यम् (कल्पताम्) समर्थो भवतु ॥

सपदार्थान्वयः—हे (ब्रह्मन्) विद्यादिना सर्वेभ्यो महत् परमात्मन् ! यथा (नः) अस्माकं (राष्ट्रे) राज्ये (ब्रह्मवर्चसी) वेदविद्याप्रदीप्तः (ब्राह्मणः) वेदेश्वरवित् (आजायताम्) समन्ताद् उत्पद्यताम् (इषव्यः) इषुषु साधुः (अतिव्याधी) अतिशयेन व्यद्धुं=शत्रूंस्ताडयितुं शीलं यस्य सः (महारथः) महान्तो रथा वीरा वा यस्य सः (शूरः) निर्भयः (राजन्यः) राजपुत्रः (आजायताम्) समन्ताद् उत्पद्यताम् । (दोग्ध्री) प्रपूरिका (धेनुः) गौः (वोढा) वाहकः (अनड्वान्) वृषभः (आशुः) शीघ्रगामी (सप्तिः) अश्वः (पुरन्धिः) या पुरून्=बहून् दधाति सा (योषा) (रथेष्ठा) यो रथे तिष्ठति सः (जिष्णुः) (जयशीलः) (सभेयः) सभायां साधुः (युवा) प्राप्तयौवनः (आजायताम्) समन्तादुत्पद्यातम् ।

(अस्य यजमानस्य) यो यजते देवान्=विदुषः सत्करोति, सङ्गच्छते, सुखानि ददाति वा तस्य

(राष्ट्रे) राज्ये (वीरः) विज्ञानवान् शत्रूणां प्रक्षेप्ता (जायताम्) उत्पद्यताम्। (नः) अस्मभ्यं (निकामे निकामे) निश्चितं प्रत्येककामनायां (पर्जन्यः) मेघः (वर्षतु) (ओषधयः) यवादयः (फलवत्यः) बहूत्तम-फलाः (नः) अस्मभ्यं (पच्यन्ताम्) परिपक्वा भवन्तु, (नः) अस्मभ्यं (योगक्षेमः) अप्राप्तस्य प्राप्ति-लक्षणो योगस्तस्य रक्षणं क्षेमः (कल्पताम्) समर्थो भवतु, तथा विधेहि।

भावार्थ—अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। विद्वद्भिरीश्वरप्रार्थनया सहैवमनुष्ठेयं यतः पूर्णविद्याः शूरवीरा मनुष्याः स्त्रियश्च, सुखप्रदा पशवः, सभ्या मनुष्या, इष्टा वृष्टिः, मधुरफलयुक्ता अन्नौषधयो भवन्तु, कामश्च पूर्णः स्यादिति।

भाष्यसार—राष्ट्रिय सर्वतोमुखी उन्नति कब होती है? प्रस्तुत मन्त्र में इसके निम्नलिखित उपाय बताये हैं—

भावार्थ—हे (ब्रह्मन्) विद्या आदि के कारण सबसे महान् परमात्मन्! जैसे—(नः) हमारे (राष्ट्रे) राज्य में (ब्रह्मवर्चसी) वेदविद्या से प्रदीप्त (ब्राह्मणः) वेद और ईश्वर का ज्ञाता विद्वान् (आजायताम्) उत्पन्न हो, (इषव्यः) बाण चलाने में कुशल (अतिव्याधी) शत्रुओं का अत्यन्त ताड़न करनेवाला (महारथः) महान् रथ वा वीरोंवाला (शूरः) निर्भय (राजन्यः) राजपुत्र क्षत्रिय (आजायताम्) उत्पन्न हो, (दोग्ध्री) दूध से पूरण करनेवाली दुधारु (धेनुः) गाय (वोढा) भार वहन करनेवाला (अनड्वान्) बैल (आशुः) शीघ्रगामी (सप्तिः) घोड़ा (पुरन्धिः) बहुतों को धारण करनेवाली (योषा) स्त्री (रथेष्ठा) रथ में बैठनेवाला (जिष्णुः) विजयशील (सभेयः) सभ्य (युवा) यौवन को प्राप्त युवक (आजायताम्) उत्पन्न हो। (अस्य यजमानस्य) इस विद्वानों का सम्मान तथा सत्संग करनेवाले और उन्हें सुख देनेवाले पुरुष के (राष्ट्रे) राज्य में (वीरः) विज्ञानवान् तथा शत्रुओं को परास्त करने वाली वीर सन्तान (जायताम्) उत्पन्न हों। (नः) और हमारे लिए (निकामे निकामे) निश्चित रूप से प्रत्येक कामना होने पर (पर्जन्यः) बादल (वर्षतु) बरसे, (ओषधयः) यव जौ आदि औषधियां (फलवत्यः) बहुत फलवाली होकर (नः) हमारे लिए—(पच्यन्ताम्) पका करें, (नः) हमारे लिए (योगक्षेमः) योग=अप्राप्त पदार्थों की प्राप्ति तथा क्षेम=प्राप्त पदार्थों की रक्षा (कल्पताम्) सदा हो, वैसा करें।

भावार्थ—इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमा अलङ्कार है। विद्वान् ईश्वर प्रार्थना के साथ ऐसा अनुष्ठान करें कि जिससे पूर्ण विद्यावाले, शूरवीर मनुष्य और स्त्रियां, सुखदायक पशु, सभ्य मनुष्य, अभीष्ट वर्षा, मधुर फलों से युक्त अन्न और ओषधियां हों और कामना पूर्ण हो।

१—राज्य में जब अविद्यान्धकार को नष्ट करनेवाले वेदों के विद्वान् तथा ईश्वर के सत्य स्वरूप के ज्ञाता व उपासक ब्राह्मण हों।

२—शस्त्रास्त्र विद्या में पारंगत, निर्भीक, महारथी, शत्रुओं को परास्त करने में समर्थ जब क्षत्रिय हों।

३—जिस देश में दुधारु गायादि का सबल भारवाहक बैल आदि का तथा युद्धादि में काम आने वाले घोड़े आदि पशुओं का पालन-पोषण होता हो। इसीलिये महर्षि दयानन्द ने लिखा है; गायादि पशुओं के नाश होने से राजा व प्रजा का नाश हो जाता है।

४—जिस देश में मातृशक्ति रूप में पूज्या नारी-जाति का सम्मान तथा उनको समानता का अधिकार प्राप्त हो।

५—जिस देश की युवाशक्ति सभ्य, विजेता होकर उचित सम्मान प्राप्त करती हो।

६—जिस देश में विद्वानों को सत्कार तथा समस्त सुखद साधन प्राप्त हों और उनकी संगति से देश के भावी कर्णधार छात्र ज्ञान-विज्ञान-युक्त और वीर बनते हों।

७—जिस राष्ट्र में वृष्टि के कारणभूत यज्ञों का प्रचुर मात्रा में प्रचलन हो और प्रजा आतंकवादी दस्यु आदि से पीडित न हो तथा वनसम्पदा का संरक्षण किया जाता हो, वहां अतिवृष्टि व अनावृष्टि जैसी विपत्तियों का अभाव ही रहता है और समय-समय पर वृष्टि होने से अन्न व ओषधियों की सम्पन्नता व मधुरता बनी रहती है और प्रत्येक मनुष्य योग क्षेमवाला होकर रहता है।

('दयानन्द-यजुर्वेद-भाष्य-भास्कर' से उद्धृत, भाष्यकर्त्ता श्री आचार्य सुदर्शनदेव)

वेदों का स्वाध्याय क्यों करें ?

येन देवा: पवित्रेणात्मानं पुनते सदा। तेन सहस्रधारेण पावमानी: पुनन्तु न: ॥ (साम० ५-२-८५)

अर्थ—(देवा:) समस्त विद्वान् (येन पवित्रेण) जिस पवित्र व निर्भ्रांत वैदिक ज्ञान से (आत्मानं सदा पुनते) स्वयं को सदा पवित्र करते हैं (तेन सहस्रधारेण) उस अनेकविध ज्ञान-विज्ञानवाली धाराओं से सम्पन्न (पावमानी:) पवित्रता करनेवाली वैदिक ऋचायें (न पुनन्तु, हम सबको पवित्र करें।

आर्य सरपंचों के नाम भेजें

हरयाणा के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि उन सरपंचों के नाम तथा २०) ब्लाक बनवावें के लिए उनके चित्र सहित भेजें जो आर्यसमाज के सभासद् हैं और शराब आदि का सेवन नहीं करते।

सभा के निश्चयानुसार इस प्रकार के आर्य सरपंचों का सभा की ओर से सम्मान किया जावेगा तथा ग्राम में शराबबन्दी प्रस्ताव करवाने में उनसे सहयोग प्राप्त किया जावेगा।

—प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

स्व० ला० दलीपसिंह आर्य के परोपकारी कार्य

—श्री रामगोपाल एडवोकेट पानीपत

श्री दलीपसिंह आर्य ने अपना जीवन सादगी से आरम्भ किया। यह गौरव की बात है कि अन्तिम समय तक अपना जीवन सादगी से व्यतीत किया। सन् १९३५ से आर्यसमाज (जो अब बड़े बाजार के नाम से जानी जाती है) के सदस्य बने और उसके पश्चात् शीघ्र ही समाज के मन्त्री पद पर रहकर समाज का बहुत ही कार्य किया। समाज के अन्तरंग के सदस्य, उपप्रधान तथा प्रधान भी रहे। सन् १९५३ में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का अधिवेशन आर्य स्कूल पानीपत के आंगन में हुआ। उसके पश्चात् सभा के अन्तरंग सदस्य रहकर समाज सेवा की। हरयाणा प्रतिनिधि सभा का गठन होने पर सभा को स्थापित करने में उनका बहुत ही योगदान है। सभा के प्रधान के तौर पर भी समाज के कार्य को उच्चस्तर पर पहुंचाया।

आर्य शिक्षण संस्थायें

पानीपत आर्यसमाज की देश के विभाजन से पहले बहुत अच्छी कन्या पाठशाला थी, जो अब आर्य कन्या उच्च विद्यालय १९४८ से आर्य उच्च विद्यालय, उसके पश्चात् आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय और अब आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत। सन् १९५४ से आर्य महाविद्यालय, १९७२ से आर्य बाल भारती की स्थापना हुई। इन सब विद्यालयों में विशेषता से कोषाध्यक्ष के पद पर ही कार्य करते रहे और विद्यालयों की खुद भी सहायता करते रहे। औरों से भी धन इकट्ठा करवाते रहे। आर्य बाल भारती में लाखों रुपया लगाकर भवन बनवाया है। उनके स्व० सुयोग्य सुपुत्र श्री सुरेन्द्र आर्य इसके प्रबन्धक थे।

आयुर्वेदिक निःशुल्क चिकित्सालय

अपनी ओर से गत कई वर्षों तक आर्यसमाज के आधीन आयुर्वेदिक निशुल्क चिकित्सालय भी चलाते रहे। जिसमें बहुत ही रोगियों ने लाभ उठाया।

गो-सेवा

गोमाता की सेवा के लिए हर समय अग्रसर रहे। फरवरी १९५७ से स्थानीय गोशाला सोसाइटी के सदस्य बने और अप्रैल १९५७ से अन्तरंग के सदस्य रहे। उसके पश्चात् १९८३ से प्रधान के पद पर रहे। संकट के समय गोशाला की हर तरह से सहायता करते रहे और दूसरों से कराते रहे। बाहर भी गो-सेवा के लिए मासिक राशि देते रहे। बहुत दिनों से अपने घर पर गोमाता की सेवा करते थे।

अग्रवाल पंचायत

यही नहीं कि आर्यसमाज और गाय के क्षेत्र में ही कार्य किया हो। वे स्थानीय अग्रवाल पंचायत के स्थापित होते ही उसके उपप्रधान रहे और उसके कार्य को चलाने में पूरा योगदान देते रहे।

आर्य दानवीर

आर्यसमाज की सब तरह से और विशेषता से ही वैदिक साहित्य छपवाने में भी पूरी सहायता करते थे। हरिजन तथा पिछड़े वर्ग व दूसरी संस्थाओं की भी समय-समय पर पूरी सहायता करते थे।

शोक प्रस्ताव

गोशाला सोसाइटी पानीपत को यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि श्री दलीपसिंह आर्य प्रधान श्री गोशाला सोसाइटी तथा उनके इकलौते सुपुत्र श्री सुरेन्द्रकुमार सदस्य गोशाला सोसाइटी व श्री राकेशकुमार (साला श्री सुरेन्द्रकुमार) तथा ड्राईवर सहित उनकी अपनी मारुति कार में २६-७-८८ को रात्रि के लगभग ८ बजे सड़क पर ट्रक से टकराकर मृत्यु होगई। श्री दलीपसिंह आर्य २१-२-५७ से श्री गोशाला सोसाइटी के सदस्य थे। २१-४-५७ से प्रबन्ध समिति के सदस्य रहे और १३-३-८३ से २६-७ ८८ तक (मृत्यु के समय तक) प्रधानपद पर रहे। श्री सुरेन्द्रकुमार १६-२-८३ से २६-७-८८ तक सोसाइटी के सदस्य रहे।

श्री दलीपसिंह तथा उनका पुत्र सच्चे गोभक्त और देशभक्त थे। वह गोशाला पानीपत तथा गोधन की समय-समय पर हर तरह से सहायता करते रहे और गोशाला के लिए सांड भी कानपुर से खरीद कर दिया। श्री गोशाला सोसाइटी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि चारों दिवंगतों की आत्मा को शांति प्रदान करे और दुःखी परिवार को सहन-शक्ति दे।

—श्री गोशाला सोसाइटी पानीपत

२—हरियाणा राज्य गोशाला संघ को यह जानकर बड़ा दुःख हुआ कि श्री दलीपसिंह जी आर्य, उनके सुपुत्र श्री सुरेन्द्रकुमार जी आर्य, उनके लड़के का साला श्री राकेशकुमार व ड्राईवर की अपनी गाड़ी में दुर्घटना से मृत्यु होगई, अत्यन्त दुःख हुआ है। प्रभु से प्रार्थना है कि इन मृतकों की आत्मा को शांति प्रदान करे व दुःखी परिवार को सहन-शक्ति प्रदान करे।

—प्रधान हरियाणा राज्य गोशाला संघ पानीपत

३—हरियाणा प्राकृतिक चिकित्सा परिषद् को यह जानकर बड़ा दुःख हुआ कि श्री दलीपसिंह जी आर्य, उनके सुपुत्र श्री सुरेन्द्रकुमार व उनके साले श्री राकेशकुमार तथा उनके ड्राईवर की अपनी गाड़ी में दुर्घटना से मृत्यु होगई। प्रभु से प्रार्थना है कि इन मृतकों की आत्मा को शांति प्रदान करे और दुःखी परिवार को सहन-शक्ति दे।

—प्रधान हरियाणा प्रा० चि० परिषद्, आश्रम पट्टी कल्याणा

४—आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली की यह महती सभा हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान एवं आर्य संस्थाओं के संचालक श्री दलीपसिंह आर्य, उनके इकलौते पुत्र श्री सुरेन्द्रकुमार तथा उनके रिश्तेदार श्री राकेशकुमार के कार दुर्घटना से निधन होने पर हार्दिक शोक प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उनकी दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान कर, उनके शोक संतप्त परिवार को इस महान् वेदना को सहन करने की शक्ति दे।

मूलचन्द गुप्त, आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली-६

न्याय यात्रा का लक्ष्य अभी दूर है

—प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

करीब डेढ़ साल पहिले हरयाणा प्रदेश के लिये फाजिल्का अबोहर के हिन्दी भाषी इलाके हरयाणा में शामिल करवाने तथा रावी व्यास के पानी में हरयाणा का पूरा हिस्सा लेने के लिये "न्याय यात्रा" सम्पन्न हुई। हरयाणा रक्षावाहिनी ने उसमें खुलकर भाग लिया। मैं भी १५ किलोमीटर पैदल चलकर पदयात्रियों के साथ दिल्ली के रामलीला मैदान में पहुंचा। वह यात्रा किसी दलविशेष की नहीं थी, सब हरयाणावासियों की थी। उसमें कांग्रेसी भी शामिल थे और लोकदल जनता पार्टी, भारतीय जनता पार्टी भी शामिल थी। मैंने कहा था कि यह न्याय यात्रा देर से हुई। यदि डेढ़ साल पहिले हुई होती तो तथाकथित पंजाब समझौता ही नहीं होता, लेकिन देर से सही। यदि सभी दलों के लोग मिलकर काम करेंगे तो लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है। सभी दलों के लोगों को अपने-अपने दलों को हरयाणा के साथ न्याय करने लिए मजबूर करना चाहिये। देवीलाल जी इस बात पर बेकार में उखड़ गये और मुझे बिठाने का यत्न करने लगे। मैंने जो सही बात थी वह कह दी। उस सभा में यह बात स्पष्ट होगई थी कि उनका लक्ष्य हरयाणा को न्याय दिलाना कम और न्याय का नाम लेकर सत्ता हथियाना मुख्य था।

उनका वह लक्ष्य ६ महीने के भीतर ही पूरा होगया। यदि उनकी दृष्टि में "न्याय यात्रा" का यही लक्ष्य था तो उनको तो कुछ करना नहीं। यदि लक्ष्य हरयाणा के लिए न्याय प्राप्त करना था तो अभी सभी कुछ करना बाकी है, अभी तो कुछ हुआ ही नहीं। चौ० देवीलाल को सत्ता में आये १४ महीने हो रहे हैं, परन्तु अभी तक उन्होंने हरयाणा को न्याय दिलवाने की दिशा में कोई कदम नहीं उठाया है। वे तो चुप हैं, परन्तु जो अनेक विरोधी दलों का गठजोड़ बना है उन्होंने पंजाब के मामले को जल्दी हल करने की बात कही है और उसका सीधा-सा अर्थ है अकालियों की कुछ मांगों को जल्दी मानना। लोकदल को छोड़कर अभी तक सभी विरोधी दलों का रुख हरयाणा के विरुद्ध और अकालियों के हक में रहा है। नये गठजोड़ के बाद क्या होता है, यह आनेवाला समय बतायेगा।

जुलाई, १९८५ में जब राजीव लोंगोवाल समझौता हुआ, तब मैंने उसका विरोध दो कारणों से किया था। एक तो इसलिए कि उस समझौते में हरयाणा से न तो पूछा गया और न उसे पक्ष बनाया गया और दूसरे इसलिये कि जो फैसले अकाली पहिले कर चुके हैं उनको इस फैसले में उधेड़ लिया गया है।

जब हरयाणा विधानसभा ने इस फैसले को अपनी स्वीकृति दे दी और चण्डीगढ़; फाजिल्का, अबोहर के लिए मैथ्यू आयोग का गठन होगया, तब चुप बैठना मुझे हरयाणा के हितों के विरुद्ध लगा

और मैंने फैसले की भाषा और भावना की चीरफाड़ करनी शुरु की। मैंने यह पाया कि फैसले की धारा ७ और ६ के अन्तर्गत भी हम पूरा नहीं तो काफी हद तक न्याय प्राप्त कर सकते हैं। मैं मेथ्यू आयोग के सामने पेश हुआ और आयोग को मानना पड़ा कि १९६१ की जनगणना ठीक थी और फाजिल्का अबोहर का इलाका हिन्दी भाषी है। पानी के मामले पर भी मैंने धारा ६ के आधार पर लिखित रूप में हरयाणा का पक्ष इराडी पंचाट के सामने रखा और उनको हरयाणा को ३७ लाख एकड़ फुट से अधिक पानी देना पड़ा।

अकालियों ने आयोगों और पंचाट की सिफारिशों को अस्वीकार कर दिया और मामला अटक गया। रावी व्यास के पानी के बारे में पंजाब की अकाली सरकार और हरयाणा की देवीलाल सरकार ने इराडी पंचाट के सामने निगरानी दायर कर रखी हैं। उसे भी अब एक वर्ष होगया, फैसला तो तीन महीने के अन्दर हो जाना चाहिए था। पंजाब का तो हित इसमें है कि यह मामला जितना टले उतना अच्छा। क्योंकि रावी व्यास का सारा पानी उनके काम आरहा है। घाटा है तो हरयाणा को है और वह भी एक वर्ष में करीब २०० करोड़ का। हरयाणा की सरकार शराब की खुली छूट करके २० करोड़ रुपये शराब बेचकर अपने खजाने में डालने के लिए तो एडी से चोटी का जोर लगा रही है और इस प्रकार किसान और मजदूर की मेहनत की कमाई खींच लेना चाहती है, परन्तु पानी जल्दी दिलवाकर किसान को २०० करोड़ रुपये की फसल की उसे कोई परवाह नहीं है। क्या यह उनका कर्त्तव्य नहीं बनता कि वे इराडी पंचाट से एक साल से लटके हुए मामले का जल्दी फैसला करवाने के लिए आग्रह करें और उसको मजबूर करें?

यदि तथाकथित पंजाब समझौते की धारा ७ का अन्तिम वाक्य और मेथ्यू आयोग का फैसला एक साथ पढ़ें तो फाजिल्का अबोहर हरयाणा को देना पड़ेगा और यदि इराडी पंचाट के फैसले को माने तो कम से कम ३७ लाख एकड़ फुट पानी हरयाणा को देना पड़ेगा। इन दोनों फैसलों पर अमल करवाने के लिए हरयाणा सरकार को पूरी शक्ति लगानी चाहिए। उन पर अमल करवाकर ही दम लेना चाहिए। फाजिल्का अबोहर के लोगों की यह शिकायत है कि उन्हें हरयाणा में मिलाने के लिए जोर डालना तो दूर रहा, चौ० देवीलाल तो उनसे मिलने का समय भी नहीं देते। प्रधानमन्त्री ने कम से कम मिलने का समय तो दे दिया और ध्यान से हमारी बात सुनी।

हरयाणा सरकार को मुश्किल यह होगई कि वह पंजाब समझौते की धारा ७ और धारा ६ को एक सिरे से नामंजूर कर चुके हैं और आयोग और पंचाट के फैसले उन्हीं धाराओं के अन्तर्गत हैं। चौ० देवीलाल प्रधानमन्त्री को भी यह कहते हैं कि वे तो मुख्यमन्त्री इन्हीं धाराओं के नामंजूर करने के कारण बने हैं। चौ० देवीलाल जी अकालियों से बात करके, नया फैसला करने की बात करते हैं। वे भी जानते हैं और शायद मानते भी हैं कि अकाली किसी भी नये समझौते में हरयाणा को न तो फाजिल्का अबोहर देना चाहते हैं और न रावी व्यास का पानी। वे चाहे कितनी ही पगड़ी बदल लें, बादल उनको कुछ देने को तैयार नहीं। बरनाला तो फिर भी पंचाट और आयोगों की बातों को मानने के लिए समझौते के तहत मजबूर किये जा सकते हैं, परन्तु बादल तो किसी बात को मानने के लिए तैयार नहीं हो सकते। अब चौ० देवीलाल के सामने दो ही विकल्प हैं, या तो वे समझौते की धारा ७ और ६ को मानकर उनके अन्तर्गत जो फैसले आयोग और पंचाट के हुए हैं, उन पर अमल

करवायें, या अकालियों के साथ मिलकर सर्वमान्य फैसला करवायें। ऐसा फैसला जिसमें हरयाणा को पंजाब समझौते से अधिक इलाका और पानी मिल सके। अकालियों के साथ ऐसा समझौता करवाना उनके बस का नहीं और पंजाब समझौते की धारा ७ और ९ वे मानने को तैयार नहीं। उनके इस रवैये में पिस रहा है हरयाणा। मामला जितना लटके और पंजाब समझौते से कम जितना हरयाणा को मिले, उतना ही हरयाणा घाटे में।

देवीलाल जी विरोधी पार्टियों को चलाने के लिए सबकी तरफ से घोषणा करते रहते हैं क्या हरयाणा को न्याय देने के लिए वे सभी विरोधी दलों की ओर से घोषणा नहीं कर सकते? सब विरोधी दल ऐसी घोषणा करदें तो भारत सरकार को भी वह फैसला मानना पड़े। क्या चौ० देवीलाल जी हरयाणा को न्याय दिलाने के लिए इस प्रांत की सुध लेंगे और अपने घोषित लक्ष्य को पूरा करेंगे?

वेदप्रचार सप्ताह आदि के कार्यक्रम

आर्यसमाज मुआना जि० जींद	२२ से २८ ,,
,, जगाधरी जि० अम्बाला	२२ से २८ ,,
,, नरवाना जि० जींद	२७ से २ सितम्बर
,, महर्षि दयानन्द मार्ग अम्बाला छावनी	२७ से २ ,,
,, सालवन जि० करनाल	२७ से ३ ,,
,, उर्वरक कालोनी पानीपत	३ ,,
,, लाडवा जि० कुरुक्षेत्र	२८ से ३ ,,
वैदिक पारिवारिक सत्संग सभा हिसार	२९ से ४ ,,
आर्यसमाज डबवाली जि० सिरसा	४ से ६ ,,
आर्यसमाज सिरसा	७ से ९ ,,
,, औरंगाबाद मित्रोल जि० फरीदाबाद	७ से १० ,,
,, सेवासदन बल्लबगढ़ जि० फरीदाबाद	१०-११ ,,
,, बाजीदपुर साबोली जि० सोनीपत	१६ से १८ ,,
,, बीकानेर गंगायचा अहीर जि० महेन्द्रगढ़	१७-१८ ,,
,, शेखपुरा जि० करनाल	२३ से २५ ,,
आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ जि० रोहतक	२६ से २ अक्तूबर
आर्यसमाज रेवाड़ी जि० महेन्द्रगढ़	३० से २ ,,

जो आर्यसमाज वेद सप्ताह रखना चाहें, वे कृपया २७ अगस्त से ३ सितम्बर की तिथियां छोड़कर रखें, ताकि उपदेशक तथा भजनोपदेशकों का प्रबन्ध करने में सुविधा रहे।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

आतंकवादियों ने हरयाणा का पंजाब बना दिया

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

पिछले एक वर्ष में ६ (छ:) हत्याकांड हरयाणा में पंजाब के आतंकवादियों द्वारा किये जा चुके हैं। जो मुस्तैदी हरयाणा सरकार को अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए दिखानी चाहिए, वह दिखाई नहीं। इसीलिये हत्याकांड पंजाब की तरह से ही हरयाणा में होने लगे हैं। हरयाणा में वारदात करके आतंकवादी हाथ नहीं आते और उनको शरण मिल जाती है। यह इस बात का प्रमाण है कि हरयाणा में भी आतंकवादियों के शरणदाता बैठे हैं। ऐसे लोगों की इस एक वर्ष में खोज नहीं हो सकी और उनको गिरफ्तार नहीं किया गया, यह हरयाणा सरकार का ढीलापन है। अपने नागरिकों के जीवन की सुरक्षा सरकार का सवप्रथम कर्त्तव्य होता है, उसमें लापरवाही या ढीलापन हो तो हत्याओं का दोष दूसरे नम्बर पर सरकार का ही है। आतंकवादियों के हमदर्दों और अड्डों को मजबूत हाथों से दबाना और समाप्त करना हरयाणा सरकार का कर्त्तव्य है और सबसे पहिले इस कर्त्तव्य का पालन होना चाहिये।

आर्य वरिष्ठ उच्च विद्यालय पानीपत में शोकसभा

श्री दलीपसिंह आर्य, उनके सुपुत्र सुरेन्द्रकुमार तथा उनके रिश्तेदार श्री राकेशकुमार के निधन पर १० अगस्त को आर्य वरिष्ठ उच्च विद्यालय पानीपत के प्रांगण में शोकसभा के आयोजन पर यज्ञ किया गया तथा दिवंगत आत्माओं को सद्गति के लिए प्रार्थना की गई। इसके पश्चात् श्री सुखदेव शास्त्री सभा महोपदेशक, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती, डा० गणेशदास आर्य प्रादेशिक सभा करनाल आदि ने श्री दलीपसिंह आर्य, श्री सुरेन्द्रकुमार आर्य तथा श्री राकेशकुमार को भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

इस अवसर पर सभा के वरिष्ठ उपप्रधान म० भरतसिंह, सभा के कोषाध्यक्ष मा० बद्रीप्रसाद आर्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह, सभा के पूर्वमन्त्री डा० रणजीतसिंह, सभा के सम्पत्ति-निरीक्षक श्री भगवानसिंह आदि के अतिरिक्त हरयाणा के कोने-कोने से भारी संख्या में आर्य नरनारी उपस्थित थे। श्री दलीपसिंह आर्य के सुपुत्र श्री सुरेन्द्रकुमार के इकलौते पुत्र की रस्म पगड़ी भी की गई।

—केदारसिंह आर्य

पंचायत चुनाव में शराब की खुली छूट पर हरयाणा सरकार की आलोचना

रोहतक १३ अगस्त : आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने आज एक प्रैस वक्तव्य जारी करते हुए कहा है कि हरयाणा में इस बार पंचायत के चुनावों के अवसर पर शराब पीने तथा पिलाने की खुली छूट देने पर हरयाणा सरकार की आलोचना की है। कानून के अनुसार चुनाव के समय शराब के ठेके बन्द रहने चाहियें, परन्तु जिन ग्रामों में ठेके भी नहीं हैं, वहां भी शराब की बोतलों को पानी की भांति प्याऊ लगी हुई थी। उम्मीदवार वोट खरीदने के लिए खुल्लम-खुल्ला शराब बांट रहे थे और हरयाणा की पुलिस ने इस प्रकार कानून के उल्लंघन करने पर कोई कार्यवाही नहीं की। इस प्रकार अनेक ग्रामों में शराब पीने तथा पिलानेवाले उम्मीदवार धींगा-मस्ती करके चुनाव जीत गये हैं। शराबी सरपंच अपने ग्रामों में कितने कल्याणकारी कार्य कर सकेंगे, यह सर्वविदित है। अपने किये गये अनुचित खर्च को पूरा करने के लिए वे भ्रष्टाचार का सहारा लेंगे और शराब के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहन देंगे।

प्रो० शेरसिंह ने उन सरपंचों तथा पंचों को, जो कि शराब नहीं पीते और न किसी को पिलाते हैं कि विजय पर उन्हें बधाई देते हुए कहा है कि वे ग्राम की भलाई के लिए अपने काल में अपने-अपने ग्रामों में शराब पर पूर्ण पाबन्दी लगाने का प्रयत्न करें। इस कार्य में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से उन्हें पूरा सहयोग किया जावेगा और इस प्रकार के सरपंचों को सम्मानित किया जावेगा।

दुल्हेड़ा ग्राम के युवकों ने चुनाव में शराब न बटने दी

बहादुरगढ़ : (निस)। गत दिनों सम्पन्न हुए पंचायत चुनावों में जहां छिटपुट हिंसा व शराब वितरण के अनेक मामले प्रकाश में आये हैं, वहीं निकटवर्ती ग्राम दुल्हेड़ा के युवकों ने चुनाव में एक नया आदर्श प्रस्तुत किया है। यहां न केवल चुनाव शांतिपूर्वक सम्पन्न हुआ, बल्कि चुनाव के दौरान उन लोगों ने भी शराब से परहेज रखा जो पहले नियमित या कभी-कभार इसका सेवन करते थे। चुनाव से एक सप्ताह पूर्व नवयुवक दल दुल्हेड़ा के प्रधान रणवीरसिंह देसवाल ने ग्रामवासियों से अपील की थी कि चुनावों के दौरान शराब का सेवन व वितरण बिल्कुल न किया जाये। इसको व्यापक प्रतिक्रिया हुई। चुनाव शांतिपूर्वक सम्पन्न हों, इसकी व्यवस्था के लिए गांव के ७०-८० युवकों की ड्यूटी लगाई गई, इससे बोगस मतदान की सम्भावना भी बिल्कुल समाप्त होगई।

(दैनिक ट्रिब्यून से साभार)

शराब के ठेके से लोग परेशान

हमारे नगर का ठेकेदार सरकारी नियमों की किस प्रकार धज्जियां उड़ा रहा है। हरयाणा सरकार ने धारा १४४ लगाकर शराब पर पूर्णतया प्रतिबन्ध लगा रखा है। लेकिन एक ठेकेदार ने स्थानीय अधिकारियों से सांठ-गांठ करके धड़ल्ले से शराब बेचने का मात्र कुछ रुपयों में ठेका ले रखा है। क्या हरयाणा सरकार के नियमों की इस प्रकार धज्जियां उड़ती रहेंगी। मैं इस ठेके का पड़ोसी हूं। अवैध रूप से दी जारही शराब में पूरी तरह पानी मिलाकर बेचा जारहा है। जब ग्राहक इसकी शिकायत करता है तो अपने गुण्डों का भय दिखाता है। कई बार तो यहां झगड़े होते-होते बचे हैं। इस प्रकार के झगड़े से लोगों में तनाव बढ़ रहा है। जिससे वहां पर रह रहे परिवारों को काफी मानसिक परेशानी उठानी पड़ती है।

—घनश्याम गोयल गहलब रोड हथीन

श्री नाज सोनीपती सेवा-निवृत्त

राजकीय माध्यमिक पाठशाला कामी (सोनपत) से श्री हरिश्चन्द्र 'नाज' सोनीपती जुलाई, ८८ में अपनी ४० वर्षीय सेवाओं के बाद रिटायर होगये हैं। आप राज्य शिक्षक पुरस्कार से पुरस्कृत हैं। आप निष्ठावान्, परिश्रमी, कर्त्तव्यपरायण, आदर्श अध्यापक रहे हैं। कवि होने के नाते आपकी रचनायें कई बार आकाशवाणी केन्द्र रोहतक से प्रसारित की जाती हैं। आपको स्टाफ स्कूल ने भावभीनी अलविदाई दी। हरयाणा प्रदबी संगम ने श्री मनोहर जैन प्रदबी एवार्ड से सम्मानित किया है।

—प्रचार मन्त्री

राजर्षि रणञ्जयसिंह दिवंगत

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री तथा नगर एवं प्रदेश की अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाओं के संचालक श्री मनमोहन तिवारी ने राजर्षि रणञ्जयसिंह के असामयिक निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करते हुए कहा कि राजर्षि के चले जाने से आर्यजगत् एवं शिक्षण संस्थाओं का एक उदीयमान नक्षत्र अस्त होगया। उनका सारा जीवन जनसेवा एवं परोपकार में ही व्यतीत हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वे कई वर्षों तक प्रधान रहे और इस वृद्धावस्था में भी अपने अमूल्य वैचारिक निर्देशन से आर्यसमाज की गतिविधियों को अनुप्राणित करते रहे। आर्यसमाज उन की सेवाओं के प्रति सदैव ऋणी रहेगा। वे आर्यजनता की विभूति थे। परमेश्वर हमें इस वियोग और उनकी इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

१.	दी वेदाज (अंग्रेजीभाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२.	दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज पं० चमूपति एम०ए०	१-५०
३.	जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)—पं० चमूपति एम०ए०	३-००
४.	निहारिकावाद और उपनिषद्—पं० चमूपति एम०ए०	०-५०
५.	आर्यसमाज की विचारमाला—पं० क्षितीशकुमार वेदालंकार	१-००
६.	निजाम की जेल में—लेखक पं० क्षितीशकुमार "	२०-००
७.	स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
८.	आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह स्मारिका	२०-००
९.	आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण—पं. ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
१०.	बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय)	४-५०
११.	ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
१२.	हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१३.	धर्म-प्रवेशिका —डा० रणजीतसिंह	३-००
१४.	धर्म-भूषण "	५-००
१५.	पंजाब का आर्यसमाज —प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१६.	आदर्श धातु रूपावली —महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१७.	वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१८.	मूर्तिपूजा —सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१९.	वेदस्वरूप निर्णय "	००-७५
२०.	वेदाविर्भाव "	१-००
२१.	वेदभाष्य पद्धति "	१-००
२२.	ईसाई पादरियों की आर्यसमाज को चुनौती—स्वा० दर्शनानन्द	०-१०
२३.	गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४.	सत्यार्थप्रकाश "	१०-००
२५.	महर्षि दयानन्द आत्मकथा "	०-५०
२६.	हमारा फाजिल्का —योगेन्द्रपाल	१-००
२७.	बड़ —स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती	१-५०
२८.	वीर हेमू "	००-७५
२९.	पीपल स्वामी ओमानन्द सरस्वती	१-५०
३०.	मिर्च "	१-५०
३१	श्लीपद वा हाथीपांव की चिकित्सा "	०-२०
३२.	बिच्छू विष चिकित्सा "	०-५०
३३.	लवण "	१-२५
३४.	विदेशों में मैंने क्या देखा "	२-५०
३५.	नैरोबी यात्रा "	१-५०
३६.	ब्रह्मचर्य साधन ६-११ "	१०-००
३७.	" १-२ "	१-००
३८.	" ३ "	१-००
३९.	" ४ "	२-५०
४०.	" ५ "	२-००
४१.	" ६ "	३-००
४२.	" ७-८ "	२-००
४३.	" ९ "	३-००
४४.	" १० "	१-५०
४५.	" ११ "	२-००
४६.	हल्दी "	१-५०
४७.	नीम "	१-२५
४८.	कर्त्तव्य दर्पण—म० नारायण स्वामी	४-००
४९.	विद्यार्थी जीवन रहस्य—म० नारायण स्वामी	२-५०
५०	योग रहस्य " " "	४-५०
५१.	आर्यसमाज क्या है ? " " "	२-००
५२.	कथा माला " " "	१-२५
५३.	संस्कारविधि	८-००
५४.	वैदिकधर्म परिचय—पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	३-५०
५५.	वैदिक यज्ञ-पद्धति—सार्वदेशिक सभा प्रकाशन	००-६०
५६.	मृत्यु के पश्चात् जीव की गति—श्री जगदेवसिंह सिद्धांती	१-५०

प्राप्ति स्थान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, सिद्धांती भवन, रोहतक।

भारत सरकार द्वारा रजि० सं० 23207/73 रजि० सं० [illegible] K 49

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री,

३० श्रावण २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्क ३७, २१ अगस्त, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २२१) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

सच्चे तीर्थ

—पं० धर्मदेव 'मनोषी' वेदतीर्थ, गुरुकुल कालवा

"तीर्थ" शब्द का अर्थ अन्यथा जान के अज्ञानियों ने जगत् के लूटने और अपने प्रयोजन की सिद्धि के लिए मिथ्याचार कर रखा है। सो ठीक नहीं, क्योंकि जो-जो सत्य तीर्थ हैं, वे सब लिखे जाते हैं—देखो 'तीर्थ' नाम उनका है कि जिनसे जीव दुःखरूप समुद्र को तरके सुख को प्राप्त हों, अर्थात् जो-जो वेदादिशास्त्र प्रतिपादित तीर्थ हैं तथा जिनका आर्यों ने अनुष्ठान किया है, जो कि जीवों को दुःखों से छुड़ाके उनके सुखों के साधन हैं, उन ही को 'तीर्थ' कहते हैं। वेदोक्त तीर्थ ये हैं—

तीर्थमेव प्रायणीयोऽतिरात्रस्तीर्थेन हि प्रस्नान्ति।
तीर्थमेवोदयनीयोऽतिरात्रस्तीर्थेन ह्युत्स्नान्ति ॥
(शतपथ कां० १२, अ० २, ब्रा० १ कं० १।५)

अग्निहोत्र से लेके अश्वमेध पर्यन्त किसी यज्ञ की समाप्ति करके जो स्नान किया जाता है, उस को 'तीर्थ' कहते हैं। क्योंकि उस कर्म में से वायु और वृष्टि जल की शुद्धि द्वारा सब मनुष्यों को सुख प्राप्त होता है। इस कारण उन कर्मों के करनेवाले मनुष्यों को भी सुख और शुद्धि प्राप्त होती है तथा

अहिंसन्सर्वभूतान्यन्यत्र तीर्थेभ्यः ॥ इति छांदोग्य प्र० ८, खं० १५।

सब मनुष्यों को इस 'तीर्थ' का सेवन करना उचित है कि अपने मन से वैरभाव को छोड़के सब के सुख करने में प्रवृत्त होना और किसी संसारी व्यवहार के वर्तावों में दुःख न देना, परन्तु (अन्यत्र तीर्थेभ्यः) जो-जो व्यवहार वेदादि शास्त्रों में निषिद्ध माने हैं, उनके करने में दण्ड का होना अवश्य है, अर्थात् जो-जो मनुष्य अपराधी, पाखण्डी अर्थात् वेदशास्त्रोक्त धर्मानुष्ठान के शत्रु अपने सुख में प्रवृत्त और परपीड़ा में प्रवर्तमान हैं, वे सदैव दण्ड पाने के योग्य हैं। इससे वेदादि सत्यशास्त्रों का नाम 'तीर्थ' है कि जिनके पढ़ने-पढ़ाने और उनमें कहे हुए मार्गों में चलने से मनुष्य लोग दुःखसागर को तरके सुखों को प्राप्त होते हैं।

समानतीर्थे वासी ॥ अष्टाध्यायी अ० ४, पा० ४, सूत्र १०७ ॥ सतीर्थ्यो ब्रह्मचारीत्युदाहरणम्। इस सूत्र का अभिप्राय यह है कि वेदादि शास्त्रों को पढ़ानेवाला जो आचार्य है उसका, वेदादिशास्त्रों तथा माता-पिता और अतिथि का भी नाम 'तीर्थ' है। क्योंकि उनकी सेवा करने से जीवात्मा शुद्ध होकर दुःखों से पार हो जाता है। इससे इनका भी तीर्थ नाम है।

त्रयः स्नातका भवन्ति। विद्यास्नातको व्रतस्नातको विद्याव्रत-स्नातकश्चेति। यो विद्यां समाप्य समावर्तते स व्रतस्नातकः ॥ इत्यादि पारस्करगृह्यसूत्रे कां० २, कं० ५, सू० ३२, ३४ ॥

इन तीर्थों में स्नान करने के योग्य तीन पुरुष होते हैं—एक तो वह कि जो उत्तम नियमों से वेद विद्या को पढ़के, ब्रह्मचर्य को बिना समाप्त करे भी विद्या का पढ़ना पूरा करके ज्ञानरूपी 'तीर्थ' में स्नान करके शुद्ध हो जाता है। दूसरा जो कि पच्चीस, तीस, छत्तीस, चवालीस, अड़तालीस वर्ष पर्यन्त नियम के साथ पूर्वोक्त ब्रह्मचर्य को समाप्त करके और विद्या को बिना समाप्त किये भी विवाह करता है, वह व्रतस्नातक अर्थात् उस ब्रह्मचर्य 'तीर्थ' में स्नान करके शुद्ध हो जाता है और तीसरा यह है कि नियम से ब्रह्मचर्याश्रम और वेदादिशास्त्रविद्या को समाप्त करके, समावर्तन अर्थात् उसी के फलरूपी उत्तम 'तीर्थ' में भले प्रकार स्नान करके यथायोग्य पवित्रदेह, शुद्ध अन्तःकरण, श्रेष्ठविद्या, बल और परोपकार को प्राप्त होता है।

नमस्तीर्थ्याय च ॥ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ॥
(इति शुक्ल यजुर्वेदसंहितायाम् अ० १६, म० ४२, ६१)

उक्त तीर्थों से प्राप्त होनेवाला परमेश्वर भी 'तीर्थ' ही है, उस तीर्थ को हमारा नमस्कार है। जो विद्वान् लोग वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सत्यकथनरूप तीर्थों का प्रचार करते हैं तथा जो चवालीस वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्याश्रम सेवन करते हैं, वे बड़े बलवाले होकर 'रुद्र' कहाते हैं। (सृकाहस्ता०) जिनके सृका अर्थात् विज्ञानरूप हस्त तथा निषङ्ग= संयम की काटनेवाली उपदेशरूप तलवार है, वे सत्य के उपदेशक भी 'रुद्र' कहाते हैं तथा उपनिषदों से प्रतिपादन किया हुआ, उपदेश करने योग्य जो परमेश्वर है, उसको 'परमतीर्थ' कहते हैं। क्योंकि उसी की कृपा और प्राप्ति से जीव सब दुःखों से तर जाते हैं।

प्रश्न—जिनसे मनुष्य लोग तर जाते हैं, अर्थात् जल और स्थान विशेष, वे क्या तीर्थ नहीं हो सकते ?

उत्तर—नहीं, क्योंकि उनमें तारने का सामर्थ्य ही नहीं और तीर्थ शब्द करणकारकयुक्त लिया जाता है। जो जल वा स्थान विशेष अधि-करण वा कर्मकारक होते हैं, उनमें नाव आदि अथवा हाथ और पग से तरते हैं। इससे जल वा स्थल तारनेवाले कभी नहीं हो सकते। किस लिए कि जल में हाथ वा पग न चलावें वा नौका आदि पर न बैठें तो कभी नहीं तर सकते। इस युक्ति से भी काशी, प्रयाग, गंगा, यमुना आदि तीर्थ सिद्ध नहीं हो सकते। इस कारण से सत्यशास्त्रोक्त जो तीर्थ हैं, उन्हीं को मानना चाहिए, जल और स्थानविशेष को नहीं।

प्रश्न—'इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वतीति' ॥ ऋ० १०।७१।५ ॥

यह मन्त्र गंगा आदि नदियों को तीर्थ विधान करनेवाला है, फिर इनको तीर्थ क्यों नहीं मानते ?

उत्तर—हम लोग उनको नदी मानते हैं और उनके जल में जो-जो गुण हैं, उनको भी मानते हैं, परन्तु पाप छुड़ाना और दुःखों से तारना, यह उनका सामर्थ्य नहीं, किन्तु यह सामर्थ्य तो केवल पूर्वोक्त तीर्थों में ही है तथा इस मन्त्र में 'गङ्गा' आदि नाम इडा, पिंगला, सुषुम्णा, कूर्म और जाठराग्नि की नाड़ियों के नाम हैं। उनमें योगाभ्यास से परमेश्वर की उपासना करने से मनुष्य लोग सब दुःखों से तर जाते हैं। क्योंकि उपासना नाड़ियों ही के द्वारा धारण करनी होती है। इस हेतु से इस

(शेष पृष्ठ ७ पर)

वेदप्रचार सप्ताह

श्रावण शुक्ल १५ शनिवार से भाद्रपद कृष्ण ८ शनिवार २७ अगस्त से ३ सितम्बर, १९८८ तक

श्रावणी पर्व, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, बलिदान स्मृति समारोहपूर्वक मनाकर वैदिकधर्म का सन्देश जन-जन तक पहुंचाइये।

इस वर्ष 'वेदप्रचार सप्ताह' दिनांक २७ अगस्त से ३ सितम्बर, ८८ शनिवार से शनिवार तक मनाया जावेगा। सप्ताह का कार्यक्रम निम्न प्रकार है—

आर्यसमाजों को चाहिये कि वे अभी से इस सप्ताह को सफल बनाने के भरसक प्रयत्न करें। इस कार्य में स्थानीय महिला आर्यसमाज आर्य कुमार सभा, आर्य वीरदल तथा आर्य शिक्षा संस्थाओं आदि का पूर्ण सहयोग प्राप्त करना चाहिये। जहां आर्यकुमार सभायें तथा आर्य वीरदल न हों, वहां वह स्थापित किये जाने चाहिए। वेदप्रचार सप्ताह पूरे श्रावण मास चलाये जाये, जिससे विद्वानों का अधिक लाभ उठाया जा सके।

श्रावणी का महत्त्व

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक, वैदिक विज्ञान के अद्वितीय विद्वान् वैदिक धर्म के महान् प्रचारक, मानवता को मतान्धता एवं अन्धविश्वासों के अन्धकूप से निकालकर बुद्धिवाद एवं मानववाद के शुद्ध वातावरण में श्वास लेने की पुनीत प्रेरणा के प्रज्ञाता, आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक स्वतन्त्रता के महान् व्यक्तित्व को समझने और श्रद्धा समन्वित हो, ऋषि के चरणचिह्नों पर चलने की चेतना देना इस पर्व का महान् उद्देश्य है।

वेदप्रचार-निधि

हरयाणा प्रदेश में आर्यसमाज के प्रचार-कार्य को व्यवस्थित करने के लिए दो लाख रुपया प्रति वर्ष चाहिये। प्रांत में लगभग ६०० आर्य-समाज हैं। यदि इनका प्रत्येक सदस्य एक-एक रुपया वेदप्रचार के लिए इस श्रावणी पर्व पर सभा को दान करना अपना कर्त्तव्य समझे तो वेद-प्रचार की समस्या बहुत कुछ हल हो सकती है। वेदप्रचार के लिए जो धन-संगृहीत किया जाये, उसे सभा कार्यालय सिद्धांती भवन दयानन्दमठ रोहतक में भेजने की कृपा करें।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

३ सितम्बर, ८८ भाद्रपद कृष्णाष्टमी आर्य राजनीति के धुरन्धर विद्वान्, योग विद्या के प्रबल ज्ञाता, पतनोन्मुख भारत के महान् त्राता तथा भारत के निर्माता आचार्य अंगिरस घोर के शिष्य महात्मा कृष्ण का शुभ जन्मदिवस है। इस महापुरुष के नाम पर आज भी जो पाखण्ड लीला हो रही है, उसके समूलनाश का दायित्व आर्यसमाज पर ही विशेष रूप से है। श्रीकृष्ण की महत्ता के लिए उनकी वैदिक शिक्षाओं का प्रसार किया जाना चाहिये।

प्रातः ७॥ बजे से आर्य मन्दिरों में 'आर्य पर्व-पद्धति' के अनुसार विशेष यज्ञ किया जाये। रात्रि को आर्यसमाज मन्दिरों में अथवा सार्व-जनिक स्थानों में योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन पर व्याख्यान तथा उनके गीता-ज्ञान और कर्मयोग का विवेचन किया जाये।

कार्यक्रम २७ अगस्त से ३ सितम्बर, १९८८ तक

प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय वेला में दैनिक सत्संग का आयोजन किया जाये और इस सत्संग को यथासम्भव प्रतिदिन निरन्तर चालू रखने की प्रतिज्ञा भी करनी चाहिये।

मध्याह्न—वैदिक साहित्य विक्रय तथा आर्यसमाज के नवीन सभा-सद् बनाने का विशेष रूप से प्रयत्न किया जाये।

रात्रि को आर्य मन्दिरों में वेदकथा का विशेष आयोजन हो, वेदों के आधार पर विश्वबन्धुत्व, मानववाद, साम्यवाद, समाजवाद एवं राष्ट्रवाद आदि विषयों पर विशेष व्याख्यानों का आयोजन किया जाये।

शारीरिक व्यायाम, प्रदर्शन एवं वाक् संघर्ष—इस सप्ताह में आर्य वीरदल एवं आर्यकुमार सभाओं को शारीरिक व्यायाम के प्रदर्शन तथा वक्तृत्वकला विकसित करने की दृष्टि से भी विशेष आयोजन करने चाहिए।

श्रावणी कार्यक्रम

पारिवारिक यज्ञ-श्रावणी (रक्षा-बन्धन) के दिन प्रत्येक आर्य परि-वार में प्रातः पारिवारिक यज्ञ करें। प्रातः ७॥ बजे से समस्त आर्य नर-नारी, युवक तथा बालक-बालिकायें आर्य मन्दिर में उपस्थित होकर पुनीत पर्व मनायें, वेद की पावन-ऋचाओं का पाठ किया जावे।

रात्रि को आर्यसमाज मन्दिरों में वेदकथा का भी विशेष आयोजन होना चाहिये।

हैदराबाद सत्याग्रह धर्मयुद्ध एवं वैदिकधर्म के समस्त बलिदानियों की पुण्य स्मृति मनाकर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की जावे।

टिप्पणी : १—इस सप्ताह के आरम्भ में आर्य मन्दिरों पर नया ओ३म्ध्वज लगाना चाहिए।

२—इस सप्ताह को अधिक महत्त्वपूर्ण व सार्थक बनाने के लिए हमारा आग्रह है कि प्रत्येक आर्यसमाज एक सूची उन महानुभावों की तैयार करे, जिनका आर्यसमाज से अथवा उसके अधीनस्थ संस्थाओं से शिक्षणालय आदि से सम्बन्ध रहा हो और इस समय आर्यसमाज के सभासद् नहीं हैं, ऐसी सूची की एक प्रतिलिपि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय को भेजी जावे।

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धांती भवन दयानन्दमठ, रोहतक

आर्य सरपंचों के नाम भेजें

हरयाणा के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि उन सरपंचों के नाम तथा २०) ब्लाक बनवाने के लिए उनके चित्र सहित भेजें जो आर्यसमाज के सभासद् हैं और शराब आदि का सेवन नहीं करते।

सभा के निश्चयानुसार इस प्रकार के आर्य सरपंचों का सभा की ओर से सम्मान किया जावेगा तथा ग्राम में शराबबन्दी प्रस्ताव करवाने में उनसे सहयोग प्राप्त किया जावेगा।

—प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

हरयाणवी संस्कृति का अपमान

—डा० आर्यव्रत शास्त्री, झज्जर

हरयाणवी संस्कृति की पहचान की तड़प में श्री देवीशंकर प्रभाकर का लेख आपके रविवारीय में पढ़ा। मैं हरयाणवी फिल्मों के बारे में यह कहना चाहूंगा कि यह फिल्में हरयाणा सरकार की आर्थिक सहायता व टैक्स माफी की बिल्कुल हकदार नहीं है। मैंने टी० वी० पर आई दो हरयाणवी फिल्में ही देखीं—लाडो बसन्ती और छैल गाभरू। इन दोनों में गांवों के लड़के-लड़कियों का प्रेम और विवाह अपने ही गांव में दिखाया गया है तथा एक जगह स्वीमिंग पूल का भद्दा व कामुक दृश्य अनावश्यक रूप से दिखाया गया है।

हरयाणवी संस्कृति के अनुसार गांव की ३६ जात की लड़की अपनी बहनें-बेटी होती हैं। इस प्रकार गांव की सीमा से लगनेवाले दूसरे गांव की भी और इसी मान्यता के आधार पर गांव का चरित्र और ढांचा तथा हरयाणवी संस्कृति टिकी हुई है। ये फिल्में हरयाणवी संस्कृति को विकृत ही नहीं, तहस-नहस करनेवाली हैं। यह उस संस्कृति का अपमान भी है। अतः प्रोत्साहन देने की बजाये इन्हें दण्डित किया जाना चाहिए।

(दैनिक ट्रिब्यून १३-८-८८)

शराब और भांग मादक द्रव्य अधिनियम से मुक्त क्यों ?

—प्रो० शेरसिंह

सरकार ने मादक द्रव्य (नारकोटिक्स) अधिनियम के अनुसार शराब और भांग को छोड़कर सभी मादक द्रव्यों पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। यदि कोई व्यक्ति मादक पदार्थों का उपयोग या इनसे सम्बन्धित कार्य में किसी तरह संलग्न पाया जाये तो उसे १० वर्ष की कैद और ५ लाख रुपये तक जुर्माना होगा।

प्रश्न उठता है "क्या शराब और भांग मादक द्रव्य नहीं हैं ?" शराब मादक द्रव्य है, जो अत्यन्त हानिकारक है।

प्रमाण

अमरीका के कैलिफोर्निया राज्य के मशहूर दिमाग का इलाज करनेवाले डा० बेनट ने शराब पीनेवालों के ५०० मृतक शरीरों की जांच के बाद यह नतीजा निकाला है कि शराब दिमाग में हानि पहुंचाती है, दिमाग सिकुड़ने लगता है और उसकी विवेक शक्ति नष्ट होने लगती है।

लन्दन के हृदयरोग के माहिर डा० वेलेन क्रिगडेन कहते हैं कि अधिक मात्रा में शराब पीना हृदय के लिए हानिकारक है। इस कारण अधिकांश शराबी हृदयरोगी होते हैं। हृदयरोग से मरनेवाले अधिकांश व्यक्ति शराबी पाये जाते हैं।

भारत के मशहूर डा० गुलेरिया ने कहा है कि भारत में मानसिक रोगियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है और इसका मुख्य कारण शराब और नशीली दवाओं का सेवन है।

शराब पीने से पैदा होनेवाले दूसरे रोग

अल्सर

अधिक शराब पीने से अमाशय की अन्दरूनी खाल जलकर सिकुड़ जाती है। इससे पैनक्रिया ग्रन्थी प्रभावित होती है। इसमें सूजन आने से पेट में निरन्तर पीड़ा बनी रहती है। वह पेट के अल्सर का भी शिकार हो जाता है।

एड्स

शराब के विषैले प्रभाव से प्रोटीन नष्ट हो जाते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत आवश्यक हैं। इससे रोग का मुकाबला करने की क्षमता कम हो जाती है। इस प्रकार एड्स के भयानक रोग को बढ़ाने में शराब मददगार होती है। यह बीमारी अमरीका, अफ्रीका, योरुप आदि में बढ़ती जा रही है। भारत अभी तक इस रोग से बचा हुआ था, परन्तु अब कई दर्जन केस विशेष रूप से दक्षिण भारत में प्रकाश में आये हैं और उसका कारण मध्य एशिया और अफ्रीका आदि माने जाते हैं। इस रोग से ग्रस्त व्यक्ति बच नहीं पाता है। वैसे तो यह रोग छूत से लगता है, स्त्री से पुरुष को और पुरुष से स्त्री को। इसलिए चिकित्सा विज्ञान अनुसंधान संस्थान के अध्यक्ष श्री पेंटल ने सुझाव दिया है कि भारतवंशियों की विदेशी स्त्री-पुरुषों के साथ शादी करने पर प्रतिबन्ध लगाया जाये, ताकि यह रोग भारतवर्ष में न फैलने पाये। शराब पीने वाले लोग तो इसके बहुत जल्दी शिकार हो सकते हैं और शराब भारत में बढ़ती जा रही है। इसलिए इस घातक रोग से बचने के लिए कानून का सहारा लेना पड़े तो लेना चाहिए।

टी० बी०

अधिक शराब पीने से फेफड़े जल जाते हैं और टी० बी० हो जाती है। भारत सरकार के स्वास्थ्य विभाग के महानिदेशक डा० देशबन्धु ने कहा है कि दिल्ली के टी० बी० के रोगियों में से ६०% लोग पहाड़ों के होते हैं। इसके कारण पौष्टिक भोजन दूध घी आदि की कमी और शराब हैं। इसका बड़ा कारण कच्ची शराब है, जो पहाड़ों में बहुत चलती है। इसलिए पहाड़ी प्रदेशों में आज यह कहावत लोगों की जुबान पर है—"जिसका परिवार उजाड़ना हो, उसको शराब पीनी सिखादो" (जेकी मवासी घाम लागणी हवे तंकू शराब प्याण सिखाई दयाऊं)।

नेत्र दृष्टि की समाप्ति

जहरीली शराब के कारण मद्रास, दिल्ली, इन्दौर, डबवाली (हरयाणा), अहमदाबाद, जहानाबाद आदि स्थानों पर हजारों आदमी मरे और हजारों लोगों ने अपनी आंखें खो दीं। एक अनुमान के अनुसार ३००० व्यक्ति जहरीली शराब के कारण भारत में प्रतिवर्ष अपनी आंखें खो देते हैं।

शराब के कारण ही विटामिन ए०, बी १, बी ३, बी ६ और सी की कमी हो जाती है, जिससे अनेक रोग जन्म लेते हैं।

शराब के कारण शारीरिक और मानसिक रोग तो उत्पन्न होते ही हैं। आर्थिक नाश ही नहीं, उसका नैतिक ह्रास भी होता है। महात्मा गांधी ने कहा था—"शराब शराबियों से उनका धन ही नहीं हरती, बल्कि उनकी बुद्धि का भी विनाश कर डालती है। शराब के नशे में व्यक्ति उचित-अनुचित, लाभ-हानि, पुण्य-पाप, यश-अपयश और यहां तक कि मां, पत्नी और बहन का भेद भी भूल जाता है।"

यह अत्यन्त खेद का विषय है कि यह सब कुछ होते हुए भी शराब को मादक द्रव्यों के अधिनियम से छूट दे दी गई। इसलिए क्योंकि इससे सरकारों को राजस्व मिलता है। इस पाप के धन से आर्थिक विकास में थोड़ी बहुत सहायता चाहे मिलती हो, परन्तु इसके कारण जो नैतिक ह्रास राष्ट्र का पिछली चार दशाब्दियों में हुआ है, उसे समय रहते रोका नहीं गया तो वह इस महान् राष्ट्र को ले डूबेगा।

भांग

हाशिश, चरस आदि भांग से ही बनते हैं। अरब के लोग इसे 'हाशिश' कहते हैं। ताजा और सुखाया भांग नशे के काम आता है। इसके फूल और पत्ते सुखाये जाते हैं। वैसे तो हमारे देश के लोग भांग को बहुत समय से जानते हैं, परन्तु हाशिश, चरस, गांजे आदि का प्रचार हमारे देश में हिप्पियों के द्वारा हुआ है। हिप्पियों का उदय दूसरे महायुद्ध के बाद नैतिक और मानवीय मूल्यों में गिरावट आने के कारण हो हुआ। चीन में इनको नहीं घुसने दिया। हमारे देश में इनको घूमने की पूरी छूट रही। इन गन्दे और गिरे हुए लोगों के सम्पर्क में भारत का नवयुवक भी आया और कुप्रभावित हुआ। मादक द्रव्यों का सेवन हमारे देश के पढ़े-लिखे नवयुवकों ने हिप्पियों से ही सीखा।

आज दिल्ली में ही नहीं, सभी महानगरों, नगरों, उपनगरों और उनके आस पास के ग्रामों में भी मादक द्रव्यों का सेवन बढ़ रहा है। दिल्ली विश्वविद्यालय के एक सर्वेक्षण से पता लगा कि वहां के १०% विद्यार्थी किसी न किसी नशे स्मैक आदि के आदी बन चुके हैं। गरीब घरों के बच्चे भी इन दुर्व्यसनों में फंसते जा रहे हैं और उनका जीवन नरक होगया है। शिशु अपराधों का एक बड़ा कारण मादक द्रव्यों का नशा है।

फिर भी यह समझ से बाहर है कि भांग को भी मादक द्रव्यों के अधिनियम की परिधि से बाहर कैसे रखा।

इस अधिनियम को कारगर बनाने के लिए इसमें तुरन्त संशोधन होना चाहिए और इसको परिधि में शराब और भांग दोनों को लाना चाहिए। इस अधिनियम का वर्तमान स्वरूप तो अधूरा है और उससे भारत नशों और दुर्व्यसनों से नहीं बच सकेगा। सर्वनाश से बचने के लिए तथा अपनी और अपने देश की अस्मिता को सुरक्षित करने के लिए भारत के जन-जन को नशाबन्दी अभियान में जुट जाना पड़ेगा।

मोरारजी देसाई 'शाने पाकिस्तान' से सम्मानित
जिया संसार में नहीं रहे
पाकिस्तान भारत से ईर्ष्या नहीं स्पर्धा करे

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान हरयाणा रक्षा वाहिनी

पाकिस्तान बनने के बाद से लेकर आज तक अंग्रेज अमरीका चीन आदि के इशारों पर ही चलता रहा। भारत को तोड़ने के बाद जो काम अंग्रेज पाकिस्तान से लेना चाहता था, पाकिस्तान वही सब करता रहा। भारत से पाकिस्तान के युद्ध तो करवाये ही, उसे हथियार देकर दक्षिण एशिया में हथियारों की होड बनाये, जिससे भारत अपने विकास कार्यक्रमों में तेजी न ला सके। अमरीका फौजी शासकों के द्वारा भारत को परेशान करवाता रहा और जिया के जाने के बाद भी पहिली बात उन्होंने यही कही है कि वह पाकिस्तान को हथियार और मदद उसी प्रकार देता रहेगा। फौजी शासको ने पाकिस्तान को तोड़ भी दिया, परन्तु बंगला देश के देशभक्तों की हत्या करवाकर अमरीका ने पाकिस्तान और बंगलादेश दोनों में इस्लाम का नारा लगवा दिया। विदेशी शक्तियाँ भारत के विरुद्ध नफरत और ईर्ष्या को ही बढ़ावा देती रही। पाकिस्तान यदि नफरत और ईर्ष्या की जगह अपने लोगों की हालत सुधारने और कृषि उद्योगों के विकास के कामों को स्पर्धा करता तो दोनों देशों का भला होता, परन्तु दुःख की बात है कि पाकिस्तान कभी अपने पैरों पर नही खड़ा हुआ और दूसरो का खेल ही खेलता रहा। देखे अब जिया के उत्तराधिकारी क्या करते हैं ?

भारत और पाकिस्तान के लोगों की रगों में एक ही खून बह रहा है। अमरीका और अंग्रेजों ने भारत के ही टुकड़े नही किये, वियतनाम और कोरिया को भी बांट दिया। वियतनाम के दोनों भाग तो इकट्ठे होगये। कोरिया के लोग एक होने के लिए तड़प रहे हैं। किसी दिन भारत पाकिस्तान के लोग भी एक होने को सोच सकते हैं। यदि साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा फलाई जारही नफरत और ईर्ष्या से पाकिस्तान के लोग उभर पाय।

जिया ने चाहे किसी नीयत से श्री मोरारजी देसाई को शाने पाकिस्तान का सम्मान देने का फैसला किया हो, परन्तु उसके हाथों से एक बात ऐसी होगई जो जिन्नाह और साम्राज्यवादियों की मान्यताओं से भिन्न है। महात्मा गांधी ने साम्प्रदायिक मारकाट को रोकने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाई, उससे पाकिस्तान के लोग प्रभावित थे और यदि वे जीवित रहते और पाकिस्तान में पदयात्रा करते तो शायद नक्शा दूसरा ही होता, परन्तु वह भगवान् को मन्जूर नही था। पाकिस्तान की जनता की भावनाओं के विरुद्ध जिन्नाह ने उनकी शहादत पर बयान देते समय उन्हें केवल हिन्दुओं का बड़ा नेता बताया। लोगों के ऐतराज करने पर उन्होंने कहा—'मैं अपनी बात पर अडिग हूँ।' भारत में एक राष्ट्रीय नेता और वह भी हिन्दु नेता को सम्मानित करने की बात सोचना और करना, जिन्नाह की तंगदिली और जिद्द को एक चुनौती कही जा सकती है। क्या ऐसा करके जिया ने यह नही मान लिया कि अविभाजित भारत के नेताओं का सम्मान विभाजित भारत के दोनों हिस्सों में होना चाहिये। भारत के लिए खान अब्दुल गफ्फार खां जैसे स्वतन्त्रता सेनानी और महामानव का सम्मान करना एक सहज बात है। भारत का जनमानस तो ऐसी बातों से गदगद हो जाता है, परन्तु पाकिस्तान के लिए एक हिन्दु भारतीय का सम्मान करना अनहोनी घटना है। यदि ऐसी बात पाकिस्तान 'नहले पर दहला मारने' जैसी बचकानी हरकत और ईर्ष्या से न करके, स्पर्धा की भावना से करे तो युग बदल जाये।

जिया की भावना और नीयत चाहे खराब रही हो, लेकिन कुफ्र तो टूटा। साम्राज्यवादी षड्यन्त्रों के कारण, चाहे भौगोलिक दृष्टि से दो देश बन गये। यदि दोनों तरफ एक दूसरे के राष्ट्रीय नेताओं और मानवीय मूल्यों में विश्वास रखनेवाले व्यक्तियों का सम्मान करने लगें और अच्छी नीयत से करने लगें तो एक नये अध्याय का श्रीगणेश हो सकता है। इस भावना से इस अनहोनी घटना को लेकर देश के अन्दर इस सम्बन्ध में जो विवाद छिड़ा है, वह बन्द होना चाहिए। पाकिस्तान की नीयत देखते हुए मुरार जी भाई स्वयं फैसला करे कि वे इस सम्मान को स्वीकार कर या अस्वीकार।

श्रावणी पर्व (रक्षा-बन्धन)

सब सज्जनों को यह सूचना देते हुए प्रसन्नता है कि आपका प्रिय रक्षा-बन्धन (श्रावणी) पूर्णिमा के दिन २७ अगस्त शनिवार को प्रातः ६ बजे से १२ बजे तक अत्यन्त रोचक ढंग से गुरुकुल झज्जर में प्रतिवर्ष की भांति मनाया जारहा है।

वर्षभर मे एक बार आनेवाले इस पर्व पर इष्ट-मित्रों सहित भारी संख्या मे पहुंचकर अपनी प्राचीन भारतीयता का परिचय दीजिये।

इस अवसर पर आप ब्रह्मचारियों की दीक्षायें देखिये और देखिये संसार का उपकार करनेवाले अपने साथियों की वानप्रस्थ और संन्यास मे दीक्षा।

आप अपने कल्याण के लिए भी इस दिन हवन-कुण्ड मे स्वयं अपने हाथ से आहुति डालिये और ऐसी प्रतिज्ञायें कीजिये, जिनका पालन आपको, आपके बच्चों को और आपके आस-पास, पडोस को सुखी रख सके, कलह से बचा सके।

प्रिय मित्रो ! इस अवसर पर पुराने यज्ञोपवीत बदलकर नवीन धारण किये जाते है और जिनके पास जनेऊ नहीं है, उन्हें दिये भी जाते है। जनेऊ लेने का अधिकार मनुष्य मात्र को है। इसलिए सभी बहन-भाई, छोटे-बडे नर-नारी अवश्य ही इस पुण्य कर्म के भागी बनिये।

दूर के सज्जन २६ अगस्त शुक्रवार को ही सायंकाल तक गुरुकुल मे पहुंचने की कृपा करें।

२६ अगस्त को सायं ८ बजे विद्यार्य सभा गुरुकुल झज्जर का विशेष अधिवेशन होना है। अतः सभी सदस्य समय पर पहुंचने की कृपा करें।

—स्वामी ओमानन्द सरस्वती आचार्य

अध्यापकों की आवश्यकता

गुरुकुल आर्यनगर हिसार (हरयाणा) में एक ऐसे संस्कृत अध्यापक की आवश्यकता है कि जो विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी के पाठ्यक्रमानुसार नौवीं तथा दसवीं कक्षाओं को एवं शास्त्री कक्षाओं को पढ़ाने में समर्थ हो।

एक ऐसे विज्ञानाध्यापक की भी आवश्यकता है कि जो नौवीं तथा दसवीं कक्षाओं को विज्ञान एवं गणित दक्षतापूर्वक पढ़ा सके।

वेतनादि का निर्णय गुरुकुल नियमानुसार साक्षात्कार के समय ही किया जायेगा। प्रार्थी महानुभाव निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करे अथवा मिलें। गुरुकुल हिसार शहर से ५ किलोमीटर की दूरी पर बाल समन्द रोड के निकट एक नहर के किनारे स्थित है।

—आचार्य, गुरुकुल आर्यनगर, पो० आर्यनगर
जिला हिसार (हरयाणा)-१२५००१

सटपटाहट नहीं सत्य का प्रकाश

४ और ५ अगस्त, १९८८ के वीर अर्जुन व प्रताप में श्री वीरेन्द्र ने यह सट-पटाहट क्यों ? शीर्षक से २३ और २४ जुलाई के प्रताप व वीर अर्जुन में प्रकाशित मिथ्या समाचार के विषय में सफाई दी है। क्योंकि समाचार बार-बार उन्हीं के कहने पर सम्पादक द्वारा प्रकाशित किया गया था। उसकी जिम्मेदारी से बचना उनके लिए सम्भव नहीं था। क्योंकि ४ अगस्त के 'सट-पटाहट' वाले वक्तव्य में भी उन्होंने स्वीकार किया है।

उत्तर प्रदेश सरकार के सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग के प्रमुख अधिकारी श्री नन्दलाल श्रीवास्तव ने अपने ४ अगस्त के पत्र में प्रताप व वीर अर्जुन के सम्पादक के नाम प्रकाशित समाचार की ओर ध्यान खींचा है।

उनका कहना है कि आपके दैनिक २४ जुलाई, ८८ के अंक में प्रकाशित समाचार में गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार से सम्बन्धित जांच में गये हुए आर्थिक अपराध संगठन उत्तर प्रदेश के कुछ अधिकारियों का उल्लेख किया गया है। इस समाचार में कुछ भ्रामक तथ्य प्रकाशित हुए हैं। जैसे—आर्थिक अपराध, संगठन पुलिस महानिदेशक का जांच के सम्बन्ध में दिल्ली जाना :

जो सर्वथा तथ्य रहित है, क्योंकि—

१—आर्थिक अपराध संगठन उत्तर प्रदेश में पुलिस महानिदेशक का कोई पद नहीं है।

२—इसी प्रकार कहा गया है कि आर्थिक अपराध अनुसंधान विभाग उत्तर प्रदेश के अधिकारी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती से पूछताछ करने के लिए सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में गये और वहां लगभग दो घण्टे तक स्वामी जी से पूछताछ करते रहे।

यह भी सर्वथा तथ्यों से परे है।

क्योंकि—

१—आर्थिक अपराध संगठन उत्तर प्रदेश के अधिकारी जांच के सम्बन्ध में दिल्ली गये थे। सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में वे गये ही नहीं।

श्री वीरेन्द्र जी आपने स्वीकार किया है कि पुलिस आपके पास आई थी और पूछताछ करती रही।

मैं आपको याद कराना चाहता हूं कि सन् १९७८ में जब श्री विजयपालसिंह वर्मा ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय पर बलात् कब्जा कर लिया था, उस समय आपने एक विशेष पत्र डा० हरिप्रकाश को भेजकर कहा था—

"विश्वविद्यालय व गुरुकुल कांगड़ी हमारे हाथ से निकल गये हैं, अगर फार्मेसी भी निकल गई तो हम कहीं के नहीं रहेंगे। इसलिए आप जो भी सम्भव है करें, आपको पूरे अधिकार दिये जाते हैं।"

उन्हीं दिनों गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के तथाकथित कुलपति श्री विजयपालसिंह वर्मा ने ज्वालापुर थाने में नं० ३६६ एफ० आई० आर नं० ३२० दर्ज कराई थी। उसी एफ० आई० आर० में ४ महानुभावों पर फार्मेसी में गबन करने का कथित आरोप लगाया गया था। उनके नाम निम्न प्रकार हैं—

१—डा० हरिप्रकाश, २—आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद, ३—श्री वीरेन्द्र, ४—श्री वेदप्रकाश आदि।

उपरोक्त श्री विजयपालसिंह वर्मा की शिकायत पर ही पुलिस पूछताछ कर रही है। मैं उस समय फार्मेसी के किसी पद पर नहीं था। इसलिए इस मामले में मेरा चर्चा करना सर्वथा सत्य से परे है।

उत्तर प्रदेश के सूचना एवं जन सम्पर्क अधिकारी ने उस सूचना को तथ्य रहित कहा है, जिसमें सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में २ घण्टे तक स्वामी आनन्दबोध से पूछताछ की चर्चा आपने की है। इसलिए आप इस झूठी खबर के घड़ने और सटपटाहट क्यों ? लेख लिखने के जिम्मेदार हैं। आप उससे बच नहीं सकते। आपने २० जुलाई को कानपुर से मुझे तार प्राप्त होने की बात दावे से प्रकाशित कराई थी। मैं यह भी स्पष्ट कर देता हूं कि श्री विजयपालसिंह वर्मा ने १९७८ में जो एफ० आई० आर० दर्ज कराई थी, उसमें २७ आरोप लगाये थे, जिनमें से २३ आरोपों को अपराध संगठन ने गलत पाया था। शेष ४ आरोपों की जांच के सिलसिले में ही वे दिल्ली आये थे। इसीलिए आपसे पूछताछ की गई थी।

मेरी आपको नेक सलाह है कि इस प्रकार की तोड़-फोड़ की राजनीति को छोड़कर आप अपनी योग्यता व क्षमता को गुरुकुल कांगड़ी तथा आर्यसमाज के निर्माण में लगायें। यदि आप ऐसा कर सके तो आर्यसमाज व परमात्मा का आशीर्वाद आपके साथ रहेगा।

—आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

दिल्ली में शराब के ठेकों पर तालेबन्दी

(निज संवाददाता द्वारा)

दिल्ली में शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं ने अब शराब के ठेकों को बन्द करवाने के लिए तालाबन्दी का एक नया अभियान आरम्भ किया है।

शराबबन्दी कार्यकर्त्ता शराब के ठेकों पर अपना ताला लगा देते हैं और शराब के ठेकेदार को उन द्वारा लगाये गये ताले को तोड़ने नहीं देते। कोई ग्राहक ठेके पर बोतल लेने आता है तो उसे शराब से होने वाली बुराइयां प्रेम से समझाकर वापस भेज देते हैं। इस प्रकार बिक्री बन्द होने पर ठेकेदार ठेका बन्द करने पर विवश हो जाता है।

हरयाणा के कार्यकर्त्ता भी इसी प्रकार ठेकों पर तालाबन्दी तथा धरणा देने की तैयारी कर रहे हैं। पंचायत के चुनाव में कई स्थानों पर शराब न पीनेवाले सरपंच तथा पंच चुने गये हैं। अतः उनके सहयोग से इस अभियान में पूरा सहयोग मिल सकेगा। अब काफी लोग अनुभव करने लग गये हैं कि यदि शराब की बीमारी न हटी तो राष्ट्र नहीं बच सकेगा।

महात्मा बुद्ध की अमर वाणी

मनुष्यो !

तुम सिंह के सामने जाते समय भयभीत न होना,
वह पराक्रम की परीक्षा है।
तुम तलवार के नीचे सर रखने से भयभीत न होना,
वह बलिदान की कसौटी है।
तुम पर्वत शिखर से पाताल में कूद पड़ना,
वह तप की साधना है।
तुम बढ़ती हुई ज्वालाओं से विचलित न होना,
वह स्वर्ण परीक्षा है।

पर शराब से सदा भयभीत रहना, क्योंकि
यह पाप और अनाचार की जननी है।

कसाइयों के शिकंजे से सत्तर गाय छुड़ाई

१ जुलाई, ८८ : आज तड़के गुरुकुल कालवा के आचार्य श्री बलदेव जी ने यहां से चार कि०मी० दूर बिटाणी गांव में कसाइयों के द्वारा हत्या के लिए लेजाई जारही ७० गायों को बड़े साहस के साथ छुड़ाया।

प्रातःकालीन दिनचर्या में तल्लीन पूरे गुरुकुल में उस समय खलबली मची, जब उक्त गांव का एक आदमी यह सूचना लेकर हांफता हुआ आया कि गायें वे जानेवाले कसाई पूरे दलबल के साथ हैं और गांववाले गाय छुड़ाने में असफल होगये हैं।

श्री आचार्य ने यह सुनते ही गुरुकुल के सभी ब्रह्मचारियों को साथ लेकर घटनास्थल की ओर दौड़ लगाई। कठोर संघर्ष के बाद कसाई सहित गायों को घेरकर कालवा लाया गया। कसाइयों को न्यायोचित दण्ड के लिए थाने में ले जाकर पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया। वस्तु स्थिति को समझकर गोभक्त थानेदार श्री बलरसिंह जी ने पिल्लूखेड़ा में कसाइयों की खूब मुरम्मत की। अनाथ गायों की सुरक्षा का भार श्री आचार्य जी ने खुद लिया।

जब तक जिम्मेदार व्यक्ति तथा समाज के कर्णधार गोमाता की रक्षा के लिए इस प्रकार साहसिक कदम नहीं उठाते, तब तक गोपाल कृष्ण की भारतभूमि से गोहत्या का कलंक दूर नहीं होगा।

—अखिलेश्वर (वैदिक प्रवक्ता) उपाचार्य गुरुकुल कालवा, जींद

इशारे

—नाज सोनीपती

कौन है? सूरते हालात समझनेवाले।
वक्त पर वक्त की हर बात समझनेवाले।
खून के आंसू तो हर वक्त बहा सकते हैं।
हम उसे खून की बरसात समझनेवाले।
आपको विश्व में मिल जायेंगे ऐसे लाखों।
रात को दिन, दिन को सियाह रात समझनेवाले।
बेसमझ वे हैं जो समझेंगे न समझने से।
बासमझ वे हैं, इशारात समझनेवाले।
लाजमन 'नाज़' वे मंजिल पे पहुंच जायेंगे।
जो हैं मंजिल के निशानात समझनेवाले॥ १

गरज उठते हैं बादल भी कड़कती बिजलियां भी हैं।
मगर हैरत यह है वक्त बरसातें नहीं होती।
बदलते रहते हैं अक्सर उजाले भी अंधेरों में।
महीने में हमेशा चांदनी रातें नहीं होती॥ २

वक्त आखिर खराब आता है।
आके ऐसे चला भी जाता है।
लोग कहते हैं इन्तजार करो।
वक्त सब कुछ ही कर दिखाता है॥ ३

काम इन्सा के जो आये वह बसर काम का है।
आदमी काहे को है काम न आनेवाला।
मुश्किलें राह की आसानी से आसां करके।
अपनी मंजिल पे पहुंच जाता है जानेवाला॥ ४

शराब पीना सामाजिक अभिशाप है।

महात्मा भक्त फूलसिंह बलिदान दिवस सम्पन्न

गुरुकुल भैंसवाल कलां तथा कन्या गुरुकुल खानपुर कलां जिला सोनीपत के संस्थापक तथा आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता महात्मा भक्त फूलसिंह का ४६वां बलिदान दिवस १४ अगस्त को कन्या गुरुकुल खानपुर कलां में श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर हरयाणा योजना बोर्ड के उपाध्यक्ष श्री मूलचन्द जैन ने भक्त फूलसिंह को श्रद्धांजलि देते हुए बताया कि उनका जन्म स्थान गोहाना के निकट होने के कारण भक्त जी तथा उन द्वारा स्थापित गुरुकुलों से सम्पर्क रहा है। मेरी वैदिकधर्म में श्रद्धा है और मैं यथासम्भव गुरुकुलों की सहायता करने का प्रयत्न करता हूं। आपने वर्तमान राजनेताओं की आलोचना करते हुए कहा कि महात्मा गांधी तथा ऋषि दयानन्द भारत में रामराज्य लाना चाहते थे, परन्तु इन सत्ताधारियों ने शैतान राज्य स्थापित कर दिया है। आपने गुरुकुल को २१ हजार का अनुदान देते हुए छात्राओं को परामर्श दिया कि वे भक्त फूलसिंह के बताये गये मार्ग पर चलें।

हरयाणा के गृहमन्त्री प्रो० सम्पतसिंह ने भी इस अवसर पर गुरुकुल को ११ हजार का अनुदान दिया और भक्त फूलसिंह को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि कन्याओं का गुरुकुल खोलकर उन्होंने महान् परोपकार किया है, क्योंकि सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए महिलायें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

श्री कपिलदेव शास्त्री ने हरयाणा सरकार के दोनों प्रतिनिधियों से हरयाणा में शराब पर पाबन्दी लगाने की मांग की, परन्तु उनकी इस मांग पर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया। सभा के उपदेशक सर्वश्री सुखदेव शास्त्री, पं० चिरंजीलाल, स्वामी रुद्रवेश, धर्मवीर मलिक, जगजीतसिंह, महेश्वर शास्त्री, प्रकाशवीर विद्यालंकार, शेरसिंह, रिसालसिंह, धर्मचन्द शास्त्री, निशानसिंह विधायक आदि नेताओं ने भी भक्त जी को श्रद्धांजलि दी। भक्त जी की सुपुत्री बहन सुभाषिणीदेवी जिन्होंने इस संस्था को अपना जीवन दान दे रखा है, की ७५ वर्ष की आयु होने पर उनके दीर्घजीवी होने की प्रार्थना की गई।

—केदारसिंह आर्य

हरयाणा ग्राम पंचायत चुनाव में विजयी शराबबन्दी समर्थक सरपंचों की सूची

१. श्री वेदप्रकाश आर्य पंचायत गुरुकुल झज्जर, खानपुर तथा नया गांव जि० रोहतक
२. मा० कांशीराम पंचायत बेड़ी मवालिसन जि० रोहतक
३. कप्तान प्रह्लादसिंह पंचायत मदाना खुर्द ,,
४. श्री दयासिंह पंचायत मदाना कलां ,,
५. डा० जयसिंह आर्य पंचायत छतेहरा तह० गोहाना जि० रोहतक
६. श्री होशियारसिंह पंचायत खानपुर कलां ,, ,,
७. ,, रघुवीरसिंह पंचायत ग्राम नीमड़ी जि० भिवानी
८. ,, भरतसिंह पोहरू पंचायत दूबलधन जि० रोहतक
९. ,, कर्णसिंह पंचायत फिरोजपुर बांगर जि० सोनीपत
१०. ,, किशोरीसिंह पंचायत मित्रोल औरंगाबाद जि० फरीदाबाद
११. ,, सूबेसिंह आर्य पंचायत मुकलान जि० हिसार
१२. ,, इन्द्रसिंह आर्य पंचायत बालसमन्द ,,

(क्रमशः)

आर्यसमाज तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने निकट के ग्रामों के उन सरपंचों के नाम जो शराब का सेवन नहीं करते हैं, लिखकर शीघ्र भेजने का कष्ट करें, ताकि उनके नाम इस सूची में प्रकाशित हो सकें।

—सम्पादक

(पृष्ठ १ का शेष)

मन्त्र में उनकी गणना की है। इसलिये उक्त नामों से नाड़ियों का ही ग्रहण करना योग्य है।

"सितासिते यत्र संगथे तत्राप्लुतासो दिवमुत्पतन्ति" ॥

सित इडा और असित पिंगला, ये दोनों जहां मिली हैं, उसको 'सुषुम्णा' कहते हैं। उसमें योगाभ्यास से स्नान करके जीव शुद्ध हो जाते हैं। फिर शुद्ध रूप परमेश्वर को प्राप्त होके सदा आनन्द में रहते हैं। इसमें निरुक्तकार का भी प्रमाण है कि—सितासितमिति वर्णनाम तत्प्रतिषेधोऽसितम् ॥ निरुक्त अ० ६, ख० २६ ॥ 'सित और असित शब्द शुक्ल और कृष्ण अर्थ के वाची हैं।' इस अभिप्राय से विरुद्ध मिथ्या अर्थ करके लोगों ने नदी आदियों का तीर्थ नाम से ग्रहण कर लिया है।



हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक
२. " फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार
३. " सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत
४. " हरीश एजेन्सीज ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत
५. " भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल
६. " घनश्यामदास सीताराम बिचला बाजार, भिवानी
७. " कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा
८. " कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद
९. " चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/५ जेकमपुरा, गुड़गांव

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

शराबबन्दी प्रस्ताव का प्रारूप

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा
चण्डीगढ़

हमारे ग्राम......... जिला .... पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक......... में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है। यह ग्राम सभा (पंचायत) शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत ही घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में अनाचार, अशांति, और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की शराबबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द की जावे और भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाये, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

दिनांक.........

सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

इस प्रस्ताव की प्रतिलिपियां रजिस्ट्री द्वारा निम्न पते पर भेजें—

१. प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान हरयाणा चण्डीगढ़
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जि०......
५. जिलाधीश.........
६. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ; रोहतक

सभा ने इस सामाजिक सुधार कार्य में सभी से सहयोग देने का अनुरोध किया है।

वेदप्रचार सप्ताह आदि के कार्यक्रम

आर्यसमाज मुआना जि० जींद	२२ से २८ अगस्त
,, जगाधरी जि० अम्बाला	२२ से २८ ,,
,, नरवाना जि० जींद	२७ से २ सितम्बर
,, महर्षि दयानन्द मार्ग अम्बाला छावनी	२७ से २ ,,
,, सालवन जि० करनाल	२७ से ३ ,,
,, उर्वरक कालोनी पानीपत	३ ,,
,, लाडवा जि० कुरुक्षेत्र	२८ से ३ ,,
वैदिक पारिवारिक सत्संग सभा हिसार	२९ से ४ ,,
आर्यसमाज डबवाली जि० सिरसा	४ से ६ ,,
आर्यसमाज सिरसा	७ से ९ ,,
,, औरंगाबाद मित्रोल जि० फरीदाबाद	७ से १० ,,
,, सेवासदन बल्लबगढ़ जि० फरीदाबाद	१०-११ ,,
,, बाजीदपुर साबोली जि० सोनीपत	१६ से १८ ,,
,, बीकानेर गंगायचा अहीर जि० महेन्द्रगढ़	१७-१८ ,,
,, शेखपुरा जि० करनाल	२३ से २५ ,,
आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ जि० रोहतक	२६ से २ अक्तूबर
आर्यसमाज रेवाड़ी जि० महेन्द्रगढ़	३० से २ ,,
,, अर्बन स्टेट सैक्टर ४ व ९ गुडगांव	२७ से ३ ,,

जो आर्यसमाज वेद सप्ताह रखना चाहें, वे कृपया २७ अगस्त से ३ सितम्बर की तिथियां छोड़कर रखें, ताकि उपदेशक तथा भजनोपदेशकों का प्रबन्ध करने में सुविधा रहे।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

आचार्यकुल लोवाकलां का सप्तविंशतितमः जन्ममहोत्सव

आचार्यकुल कन्या महाविद्यालय लोवाकलां का सत्ताईसवां जन्म-महोत्सव २७ अगस्त, १९८८ शनिवार श्रावणी-पर्व पर बड़ी धूमधाम से मनाया जावेगा। उत्सव में बड़े-बड़े संन्यासी, महात्मा, विद्वान् तथा भजनोपदेशक पधारेंगे। इस अवसर पर आप यहां ब्रह्मचर्य पूर्वक शिक्षा दिलाने के लिए प्रविष्ट करायें, ताकि स्त्री-शिक्षा का उद्धार हो। ध्यान रहे कन्याओं के ब्रह्मचर्यव्रतपूर्वक शिक्षा का यह सर्वश्रेष्ठ केन्द्र है।

संस्था का परिचय

१—यह संस्था आर्यसमाज के दृष्टिकोण से आर्ष-ग्रंथों के माध्यम से प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री, आचार्य तथा संस्कृत एम०ए० की परीक्षायें कराती है।

२—८ वर्ष से ऊपर आयुवाली कन्याय प्रविष्ट की जाती हैं।

३—हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण कन्याये भी ११वी कक्षा में प्रवेश पा सकती हैं।

४—छात्राओं से २०१) प्रवेश शुल्क तथा ९००) वार्षिक भोजन व्यय लिया जाता है। शिक्षा, आवास तथा प्रकाश (लाईट) आदि का कोई शुल्क छात्राओं से नहीं लिया जाता है।

—मानाचार्य सरस्वती
संस्थापक एवं संचालक आचार्यकुल लोवाकलां

वैदिक विद्वान् पं० काशीनाथ शास्त्री का निधन

हमें यह सूचित करते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है कि प्रदेश के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, सार्वदेशिक धर्मार्य सभा दिल्ली के सदस्य, आर्य सेवक के सम्पादक, प्रदेश के वेदप्रचार अधिष्ठाता, वैदिक कालीन भारत के लेखक पं० काशीनाथ शास्त्री गोंदिया का अल्प बीमारी के पश्चात् गुरुवार दिनांक ४ अगस्त को पाढर अस्पताल में सायंकाल ४॥ बजे निधन होगया।

आप पिछले मास १७ जुलाई को ही गोंदिया से अपनी सम्पूर्ण अचल सम्पत्ति विक्रय कर धर्मपत्नी के साथ अपनी एकमात्र पुत्री जो होशंगाबाद में रहती है, स्थायी निवास हेतु चले गये थे।

श्री शास्त्री जी लेखनी और वाणी के धनी थे। असत्य के खण्डन के लिए उनकी लेखनी सतत चलती रहती थी। इस सम्बन्ध में वे किसी को भी नहीं छोड़ते थे, चाहे वह व्यक्ति कितने ही महत्त्वपूर्ण पद पर हो। उनमें एक तड़प थी। वेद विरुद्ध तथा भारतीय संस्कृति इतिहास को तोड़-फोड़कर प्रस्तुत करनेवालों के खिलाफ उन्होंने सदा ही कटु आलोचना की। वे धुन के धनी व लगन के पक्के थे तथा सिद्धांत पर कभी समझौता नहीं करते थे। अवैदिक सिद्धांत के विरुद्ध उनकी लेखनी पाखण्ड खण्डनी पताका थी।

उनके निधन से आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज और आर्यजगत् की महान् क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४)
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

ड़ा॰ रा॰ संख्या नं॰ 2320/73   पंजि॰ सं॰



सर्वहितकारी
साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि ... अमरीका ... का साप्ताहिक मुख पत्र

... भाद्रपद कृष्ण वि॰

उपसम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

... वर्ष ..., अंक १८, २८ अगस्त, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २२५) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

...वार अंक

प्रभु ने वेद-ज्ञान क्यों दिया ?

लेखक—...नाथ ... आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद-२४४०...

वेद ईश्वरीय ज्ञान है। यह ज्ञान सृष्टि के आदि में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नाम के चार ऋषियों के अन्तरात्मा में प्रकाशित किया गया। प्रश्न उठता है कि इस ज्ञान की क्या आवश्यकता थी? क्या इसके बिना मानव का काम नहीं चल सकता था? परमेश्वर ने यह ज्ञान क्यों दिया? आइये! इस बात पर विचार करें कि ईश्वर ने वेद का ज्ञान क्यों दिया?

परमपिता परमात्मा ने सृष्टि की रचना की तो उसके उपयोग की विधि बतानी भी आवश्यक थी। संसार में हम प्रायः देखते हैं कि कोई व्यक्ति यदि कोई मशीन बनाता है तो उसके प्रयोग की विधि बताने के लिए साथ में एक पुस्तिका आदि भी प्रकाशित करता है, जिसमें उसके चलाने या प्रयोग में लाने की विधि लिखी होती है। परमपिता परमात्मा ने सृष्टि-रूपी मशीन बनाई तो उसके साथ उसके उपयोग की विधि बतानी भी आवश्यक थी। वेद-ज्ञान के द्वारा परमात्मा ने सृष्टि के उपभोग की विधि बताई है। यदि उस विधि के अनुसार हम सृष्टि का उपभोग करेंगे तो हमारा कल्याण होगा अन्यथा नहीं।

मनुष्य कर्मशील प्राणी है। कर्म करने के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है। जब तक मानव को विधि और निषेध, धर्म और अधर्म, कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का बोध नहीं करा दिया जाता, उस पर कर्म का उत्तरदायित्व थोंपना अन्याय कहलाता है, किन्तु विधि-निषेध, धर्माधर्म, कर्त्तव्याकर्त्तव्य का बोध करा देने पर बुरे कर्मों के लिए दण्डित करना अन्याय नहीं कहलाता। परमपिता परमात्मा ने वेद का ज्ञान इसीलिए दिया कि मानव समुदाय को पाप और पुण्य, धर्म और अधर्म का बोध हो जावे।

परमात्मा ने वेद का ज्ञान इसलिए भी दिया है कि मनुष्य उसे पाकर ज्ञानी बन सके। यदि परमात्मा यह ज्ञान मानव को न देता तो मानव कभी भी ज्ञानी और विद्यावान् नहीं हो सकता था। हम बिना निमित्त के ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते। जैसे हमारे चर्मचक्षु बिना सूर्य के प्रकाश के नहीं देख सकते। इसी प्रकार वेद सूर्य के बिना हमारे ज्ञान-चक्षु भी नहीं देख सकते। वेदज्ञान को पाकर ही मानव अपनी बुद्धि का सदुपयोग कर सकता है। महर्षि दयानन्द का कथन है कि—"अनन्त ज्ञान सम्पन्न परमेश्वर मनुष्य की योग्यता बढ़ाने के लिए और उसे ऊंचे दरजे को पहुंचाने के लिए सदा प्रवृत्त है और इसी हेतु को सफल करने के लिए विद्या का प्रकाश करता है, सो वही प्रकाश वेद है।" (पूना का पाँचवां प्रवचन) वेद में सभी विद्यायें हैं, किन्तु बीजरूप में हैं। इसी से पता चलता है कि ईश्वर चाहता है कि मनुष्य अपने ज्ञान को बढ़ावें, उसका विस्तार करें। इसमें महर्षि का कथन है कि—"... यदि कोई पूछे कि ईश्वर ने सब विद्याओं के मूल तत्त्व ही क्यों प्रकाशित किये और साद्यन्त विद्या का और कला का क्यों विवरण नहीं किया? तो उससे मेरा यह कहना है कि जैसे ईश्वर ने मनुष्य मात्र के बुद्धि व्यापार का उसी तरह बुद्धयुन्नति का भी अवकाश रखा।"

ईश्वर ने वेद का ज्ञान मानव को भाषा प्रदान करने के लिए भी दिया। मनुष्य भाषा बिना सीखे प्राप्त नहीं कर सकता। ईश्वर ने वेद का ज्ञान ही नहीं दिया, अपितु ज्ञान के माध्यम से मानव को भाषा भी प्रदान की। भाषा भावों का वाहन है। बिना भाषा के भावाभिव्यक्ति हो ही नहीं सकती। यदि परमेश्वर वेद का ज्ञान न देता तो मानव भाषा भी नहीं सीख पाता। इस सम्बन्ध में महर्षि का कथन है कि—"जैसे किसी मनुष्य के बालक को जन्म से एकांत में रख के उसको अन्न और जल युक्ति से देवे, उसके साथ भाषणादि व्यवहार लेशमात्र भी कोई मनुष्य न करे कि जब तक उसका मरण न हो, तब तक उसको इसी प्रकार से रखे तो उसे मनुष्यपन का भी ज्ञान नहीं हो सकता तथा जैसे बड़े वन में मनुष्यों को बिना उपदेश के यथार्थ ज्ञान नहीं होता, किन्तु पशु की नाईं उनकी प्रवृत्ति देखने में आती है, वैसे ही वेदों के उपदेश के बिना भी सब मनुष्यों की प्रवृत्ति हो जाती।" तात्पर्य यह कि मनुष्य ज्ञान और भाषा दोनों ही निमित्त से प्राप्त करता है। अतः वेद का ज्ञान केवल ज्ञान देने के लिए ही नहीं था, अपितु भाषा प्रदान करने का भी माध्यम था।

वेदज्ञान देने का एक अन्य कारण भी है। ईश्वर ने वेद का ज्ञान इसलिए भी प्रकाशित किया कि जिससे उसका ज्ञान सामर्थ्य भी प्रकट होकर सफल हो सके। सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में सृष्टि रचना के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए महर्षि लिखते हैं कि—"जो तुमसे कोई पूछे कि आंख के होने में क्या प्रयोजन है? तुम यही कहोगे देखना। तो जो ईश्वर में जगत् की रचना करने का विज्ञान, बल और क्रिया है, उसका क्या प्रयोजन, बिना जगत् की उत्पत्ति करने के? दूसरा कुछ भी न कह सकोगे और परमात्मा के न्याय, धारण, दया आदि गुण भी तभी सार्थक हो सकते हैं, जब जगत् को बनावे। उसका अनन्त सामर्थ्य जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय और व्यवस्था करने ही से सफल है। जैसे नेत्र का स्वाभाविक गुण देखना है, वैसे परमेश्वर का स्वाभाविक गुण जगत् की उत्पत्ति करके सब जीवों को असंख्य पदार्थ देकर परोपकार करना है।" हमने वेदोत्पत्ति के प्रसंग में सृष्टि उत्पत्ति की चर्चा क्यों की? इसलिए कि जैसे सृष्टि की रचना ईश्वर इसलिए करता है कि उससे उसके सामर्थ्य का प्रकाश हो सके। इसी प्रकार ईश्वर वेदज्ञान भी इसीलिए देता है कि उससे उसके ज्ञान-सामर्थ्य का प्रकाश हो सके। यदि ईश्वर वेदज्ञान का प्रकाश न करे तो फिर उसके ज्ञान-सामर्थ्य का क्या प्रयोजन? अतः वेद का ज्ञान अपनी ज्ञान-सामर्थ्य का साफल्य प्रकट करने के लिए भी आवश्यक है।

(शेष पृष्ठ १० पर)

क्या ब्राह्मणग्रंथ वेद हैं ?

—पं० धर्मदेव 'मनोषो' वेदतीर्थ, गुरुकुल कालवा

प्रश्न—हम यह पूछते हैं कि ब्राह्मणग्रंथों का भी वेदों के समान प्रमाण करना उचित है वा नहीं ?

उत्तर—ब्राह्मणग्रंथों का प्रमाण वेदों के तुल्य नहीं हो सकता, क्योंकि वे ईश्वरोक्त नहीं हैं, परन्तु वेदों के अनुकूल होने से प्रमाण के योग्य तो हैं। इसमें इतना भेद है कि जो ब्राह्मणग्रन्थों में कहीं वेद से विरुद्ध हो, उसका प्रमाण करना किसी को न चाहिये और ब्राह्मणग्रन्थों से विरोध आवे तो भी वेदों का प्रमाण होता है। ब्राह्मणग्रन्थों की इतिहासादि संज्ञा होने में प्रमाण—

वाक्यविभागस्य चार्थग्रहणात् ॥ न्यायदर्शन अ० २, आ० १, सू० ६०

वात्स्यायनभाष्यम्—प्रमाणं शब्दो यथा लोके, विभागश्च ब्राह्मणवाक्यानां त्रिविधः। विध्यर्थवादानुवादवचनविनियोगात् ।। न्याय० अ २ आ० १, सू० ६१

वात्स्यायनभाष्यम्—त्रिधा खलु ब्राह्मणवाक्यानि विनियुक्तानि, विधिवचनान्यर्थवादवचनान्यनुवादवचनानि इति ।

विधिर्विधायकः ॥ न्याय० अ० २, आ० १, सू० ६२

स्तुतिनिन्दापरकृतिः पुराकल्प इत्यर्थवादः ।
न्याय० अ० २, आ० १, सू० ६३

विधिविहितस्यानुवचनमनुवादः ॥ न्या० अ० २, आ० २, सू० १

न चतुष्ट्वमैतिह्यार्थापत्तिसम्भवाभावप्रामाण्यात् ॥
न्या० २, अ० २, सू० १

जैसे लोक में तीन प्रकार के वचन होते हैं, वैसे ब्राह्मणग्रन्थों में भी हैं। उनमें से एक—विधिवाक्य है—जैसे 'देवदत्तो ग्रामं गच्छेत्सुखार्थम्' सुख के लिए देवदत्त ग्राम को जाये, इसी प्रकार ब्राह्मणग्रन्थों में भी है 'अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः' जिसको सुख की इच्छा हो, वह अग्निहोत्रादि यज्ञों को करे। दूसरा—अर्थवाद है, जो कि चार प्रकार होता है—एक (स्तुति) अर्थात् पदार्थों के गुणों का प्रकाश करना, जिस से मनुष्यों की श्रद्धा उत्तम काम करने और गुणों के ग्रहण में ही हो। दूसरी—(निन्दा) अर्थात् बुरे काम करने में दोषों का दिखलाना, जिससे उनको कोई न करे। तीसरा—(परकृतिः) जैसे इस चोर ने बुरा काम किया, इससे उसको दण्ड मिला और साहूकार ने अच्छा काम किया, इससे उसकी प्रतिष्ठा और उन्नति हुई। चौथा—(पुराकल्प) अर्थात् जो बात पहिले हो चुकी हो, जैसे जनक की सभा में याज्ञवल्क्य, गार्गी, शाकल्य आदि ने इकट्ठे होके, आपस में प्रश्नोत्तर रीति से संवाद किया था, इत्यादि इतिहासों को पुराकल्प कहते हैं। इसका तीसरा भाग अनुवाद है अर्थात् जिसका पूर्वविधान करके उसी का स्मरण और कथन करना। सो भी दो प्रकार का है—एक शब्द का और दूसरा अर्थ का। जैसे—'वह विद्या को पढ़े' यह 'शब्दानुवाद' है। 'विद्या पढ़ने से ही ज्ञान होता है' इसको 'अर्थानुवाद' कहते हैं। जिसकी प्रतिज्ञा उसी में हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन को घटाना हो। जैसे परमेश्वर नित्य है, यह 'प्रतिज्ञा' है। विनाश रहित होने से यह 'हेतु है। आकाश के समान है, इसको उदाहरण कहते हैं। जैसा आकाश नित्य है, वैसा परमेश्वर भी है, इसको उपनय कहते हैं और इन चारों का क्रम से उच्चारण करके पक्ष में यथावत् योजना करने को 'निगमन' कहते हैं। जैसे—परमेश्वर नित्य है, विनाश रहित होने से, आकाश के समान, जैसा आकाश नित्य है, वैसा परमेश्वर भी। इससे इसमें समझ लेना चाहिए कि जिस शब्द और अर्थ का दूसरी बार उच्चारण और विचार हो, इस को अनुवाद कहते हैं। सो ब्राह्मण पुस्तकों में यथावत् लिखा है। इस हेतु से भी ब्राह्मण पुस्तकों का नाम इतिहास आदि जानना चाहिये। क्योंकि इनमें इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा और नाराशंसी ये पांच प्रकार की कथा सब ठीक-ठीक लिखी हैं और भागवतादि को इतिहासादि नहीं जानना चाहिये। क्योंकि उनमें मिथ्या कथा बहुत-सी लिखी हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों की वेदों में गणना नहीं हो सकती। क्योंकि 'इषे त्वोर्जे त्वेति०' इस प्रकार से उनमें मन्त्रों को प्रतीक धर-धर के वेदों का व्याख्यान किया है और मन्त्रभाग संहिताओं में ब्राह्मणग्रन्थों की एक भी प्रतीक कहीं [illegible] में आती। इससे जो ईश्वरोक्त मूलमन्त्र अर्थात् चार संहिता [illegible] वे ही वेद हैं, ब्राह्मणग्रन्थ नहीं। ब्राह्मणग्रथों की वेद संज्ञा नहीं [illegible] व्याकरण महाभाष्य का भी प्रमाण है, जिसमें लोक और वेदों के [illegible] उदाहरण दिये हैं—

"केषां [illegible] ? लौकिकानां वैदिकानां च। तत्र लौकिकास्तावत्—गौरश्वः पुरुषो हस्ती शकुनिर्मृगो ब्राह्मण इति। वैदिकाः खल्वपि शन्नो देवीरभिष्टये। इषे त्वोर्जे त्वा। अग्निमीळे पुरोहितम्। अग्न आ याहि वीतये इति।" अ० १, पा० १, आ० १

यहां 'गौरश्वः' इत्यादि लोक के और 'शन्नो देवीरभिष्टय' इत्यादि वेदों के हैं, किन्तु वैदिक उदाहरणों में ब्राह्मणों का एक भी उदाहरण नहीं दिया और 'गौरश्वः' इत्यादि जो लोक के उदाहरण दिये हैं, वे सब ब्राह्मण पुस्तकों के हैं। क्योंकि उनमें ऐसा ही पाठ है। इसी कारण से ब्राह्मण पुस्तकों की वेद संज्ञा नहीं हो सकती और कात्यायन के नाम [illegible] जो दोनों की वेद संज्ञा होने में वचन है, सो सहचार उपाधि लक्षणा से किया हो, तो भी नहीं बन सकता। क्योंकि जैसे किसी ने किसी से कहा कि 'उस लकड़ी को भोजन करादो' और दूसरे ने इतने ही कहने से तुरंत जान लिया कि लकड़ी जड़ पदार्थ होने से भोजन नहीं कर सकती, किन्तु जिस मनुष्य के हाथ में लकड़ी है, उसको भोजन कराना चाहिये। इस प्रकार से कहा हो तो भी मानने के योग्य नहीं हो सकता। क्योंकि इसमें आप्त ऋषियों की एक भी साक्षी नहीं है। इससे यह सिद्ध हुआ कि 'ब्रह्म' नाम ब्राह्मण का है, सो ब्रह्मादि जो वेदों के जाननेवाले महर्षि लोग थे, उन्हीं के बनाये हुए ऐतरेय शतपथ आदि वेदों के व्याख्यान हैं। इसी कारण से उनके किये ग्रंथों का नाम ब्राह्मण हुआ है। इससे निश्चय हुआ कि मन्त्र भाग को ही वेद संज्ञा है, ब्राह्मणग्रन्थों की नहीं।

(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पर आधारित)

दयानन्दमठ रोहतक में समता दिवस श्रावणी पर्व एवं रक्षा बन्धन का आयोजन

27 अगस्त से 3 सितम्बर, 1988 तक

सभी धर्मप्रेमी नर-नारियों को सूचित करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार दयानन्दमठ रोहतक की यज्ञशाला में 27 अगस्त से 3 सितम्बर, 1988 तक समता दिवस, श्रावणी पर्व एव रक्षाबन्धन दिवस का आयोजन किया गया है।

इस शुभावसर पर विख्यात वैदिक विद्वान् आचार्य सुदर्शनदेव शास्त्री उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं अन्य विद्वानों के वेदप्रवचन तथा पं० जयपाल बेधड़क की भजनमण्डली के मनोहर भजन होंगे।

कार्य-क्रम

समता दिवस 27 अगस्त	...यज्ञ, भजन प्रवचन तथा यज्ञशेष वितरण प्रातः 7 से 8.30 बजे तक
श्रावणी पर्व	...प्रतिदिन प्रातः यज्ञ, भजन तथा प्रवचन प्रातः 6.30 से 7.45 तक प्रतिरात्रि भजन तथा प्रवचन 8 से 9 बजे तक

अतः सभी सज्जनों से निवेदन है कि इस शुभावसर पर अपने इष्टमित्रों तथा परिवारजनों सहित भारी संख्या में पहुँचकर वेदप्रचार का लाभ उठाएं और अपने हाथों से पुराने यज्ञोपवीत बदलकर नये यज्ञोपवीत धारण करें। यज्ञोपवीत लेने का अधिकार मनुष्यमात्र को है। इस अवसर पर अनेक नवयुवकों को यज्ञोपवीत धारण कराये जावेंगे।

निवेदकः—

महाशय [illegible]सिंह
मन्त्री
दयानन्दमठ, रोहतक

वेदव्रत शास्त्री
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

पाकिस्तान जिया के बाद

—प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

जिया, उनके ५ जनरल तथा ५ ब्रिगेडियर और अमरीका के राजदूत फौजी विमान की दुर्घटना में मारे गये। कुछ लोगों ने इस दुघटना के लिए अफगानिस्तान का खुफिया बल, रूसी सरकार और भारत आदि की साजिश का नतीजा बताया। कुछ अमरीका की सी० आई० ए० का नाम ले रहे हैं तो बेनजीर भुट्टो पाकिस्तान के कुछ फौजी लोगों के षड्यन्त्र की सम्भावना बता रही है। इस मामले की छानबीन पाकिस्तान अमरीका की मदद से कर रहा है। भारत, रूस और अफगानिस्तान की बात तो बेबुनियाद लगती है, इसलिए कोई कहने को कहता रहे, वह बात न चली और न चल सकती है। अमरीका की खुफिया एजेंसी सी० आई० ए० की बात चलने पर जांच करनेवाले अमरीकनों को यह बात आने लगी है कि यह तो साजिश का नतीजा नहीं, विमान की किसी टेक्नीकल कमी के कारण ही दुर्घटना हुई है।

जानकार लोगों का अनुमान है कि अमरीका भी जिया की गिरती हुई साख से डरा हुआ था कि यह बहुत दिन चल नहीं पायेगा और पाकिस्तान की जनता कहीं अमरीका से धीरे-धीरे मुह न मोड़ ले। अमरीका पाकिस्तान को खाड़ी देशों और रूस से लगते हुए क्षेत्रों में अपना दबदबा जमाये रखने के लिए इस्तेमाल करना चाहता है। जिया को ११ (ग्यारह) साल तक इस्तेमाल किया, अब वह अपना प्रभाव जनता में खो चुका था। अमरीका जुनेजो को ऊपर लाना चाहता था, परन्तु जिया ने उसे चलता कर दिया। चुनाव में बेनजीर भुट्टो यदि बहुमत प्राप्त करले तो उसे भी इस्तेमाल करने पर विचार चला, परन्तु अभी अमरीका का मन किसी पर जमा नहीं है। पाकिस्तान की सीनेट के अध्यक्ष जो कामचलाऊ राष्ट्रपति बने हैं, वे भी उनका काम ठीक से चलाने के लिए उपयुक्त नहीं लग रहे। हो सकता है अमरीका की इच्छा फिर से मार्शल ला लगवाकर फौजी शासन करने की हो।

एक बात बहुत रहस्यपूर्ण है कि जनरल असलम बेग जो अब पाकिस्तान के सेना अध्यक्ष बने हैं, उसी विमान में जानेवाले थे, जिसकी दुर्घटना हुई है, परन्तु तीन-चार मिनट पहिले वे दूसरे विमान में चले गये। इसी प्रकार और भी दो व्यक्ति उस विमान में नहीं गये। इसका अर्थ लोग यह लगाने लगे हैं कि शायद उनको साजिश का पता लग गया या वे उसमें शामिल थे। इस मामले को दबाने के लिए ही शायद अमरीकनों ने यह कहना शुरु किया हो कि विमान की दुर्घटना के पीछे कोई षड्यन्त्र नहीं लग रहा है, विमान में ही गड़बड़ी होने के कारण ही यह दुर्घटना हुई है। अब तो एक शिया (जो विमान चालकों के सहायकों में एक था) को जिम्मेदार ठहराकर मामले को रफा-दफा करने की बात शायद अमरीका सोच रहा है। वह आदमी तो मर चुका है और उसके सब साथी भी। अमरीका की कूटनीति इस समय बहुत क्रियाशील है और पाकिस्तान में वह होगा, जो अमरीका चाहेगा।

जनरल असलम बेग अफगानिस्तान के मुजाहिदों की मदद करके वहां खुमैनी जैसे कट्टरपंथी मुस्लिम नेता का राज बनाने के हक में नहीं थे और अमरीका भी यह नहीं चाहता, क्योंकि वह खुमैनी को भुगत चुका है। जिया तो अपनी शक्ति और वर्चस्व बनाये रखने के लिए इस्लाम का नारा दे ही रहा था और कट्टरपंथी मुजाहिदों को ही अफगानिस्तान में अपना शासन जमाने में मदद कर रहा था। साधन सब अमरीका दे रहा था, हथियार और पैसा दोनों और जिया चला अपनी रहा था। पाकिस्तान की राजनैतिक पार्टियां जो लोकतन्त्र लाने के लिए ऐडी-चोटी का जोर लगा रहे हैं, वे कुछ कर पायेंगे या अमरीका फिर से फौजी शासन करवा देगा और पाकिस्तान की जनता क्या बर्मा की जनता की तरह लोकतन्त्र के लिए हिम्मत से जुट सकेगी, यह भविष्य ही बतायेगा। आतंकवादियों और मुजाहिदों के कारण पैदा हुई समस्याओं को सुलझाने में भारत और अफगानिस्तान पाकिस्तान की परिस्थितियों से कितना लाभ उठा सकेगा, यह भी कैसा शासन पाकिस्तान में बनता है, इस पर निर्भर करेगा।

भूकम्प से बिहार और नेपाल में तबाही

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान आ० प्र० सभा हरयाणा

१६३४ में बिहार में बड़ा खतरनाक भूकम्प आया था और उसके कारण १० हजार के करीब लोग मरे थे और बड़ी संख्या में लोग घायल हुए थे। कोयटा में भी ऐसा ही भूकम्प आया था और उसमें भी जान-माल की बड़ी भारी तबाही हुई थी। आज भी पुराने लोगों को उन दोनों भूकम्पों की याद है। उनके बाद यह तीसरा खतरनाक भूकम्प आया है, जिसकी लपेट में नेपाल के कुछ क्षेत्र और बिहार के चार-पांच जिले आये हैं। कम ज्यादा तो हो सकती है, परन्तु जिस प्रकार मकान गिरे हैं, उसमें दरारें आगई हैं और जिस प्रकार हजारों लोग मलबे के नीचे दबकर मरे और घायल हुए हैं, नजारा वही है जो ५४ वर्ष पहिले हुआ था।

इस विपत्ति के समय एक बात उजागर होकर आई है कि सभी राजनैतिक दलों के लोग राहत कार्यों में एक दूसरे से बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। दूसरे राज्यों की सरकारें, चाहे वे किसी दल की हों राहत कार्यों के लिए सहायता दे रही है। चाहे चुनाव नजदीक आने के कारण भी होड़ लगी हो, परन्तु एक बात तो प्रशंसा के योग्य है कि देश के किसी भी कोने में विपत्ति का पहाड़ टूटे तो पूरे देश के लोग उस पीड़ा को महसूस करते हैं और अपना-अपना योगदान देकर पीड़ित जनता की पीड़ा को कम करने में क्रियाशील हो जाते हैं। राष्ट्रीय एकता की भावना को इससे बल मिलता है और देश को तोड़ने की साजिश करने वाले लोगों के हौंसले पस्त होते हैं।

युद्ध हो, महामारी हो या कोई दैवी विपत्ति आन पड़े, ऐसे अवसरों पर ही देशवासियों की परख होती है। ऐसी परीक्षा की घड़ियों में जो राष्ट्र एक बनकर खड़ा होता है, उसे कोई नहीं तोड़ सकता।

हमारी हार्दिक कामना है कि सभी राजनैतिक तथा सामाजिक और आर्थिक संस्थायें तालमेल से काम कर, ताकि पीड़ित जनता को सब प्रकार की सहायता शीघ्र मिल सके और कोई भी पीडित परिवार या व्यक्ति उपेक्षित न रह जाये।

शोक प्रस्ताव

सर्वहितकारी के माध्यम यह जानकर कि ला० दलीपसिंह तथा उनके पुत्र सुरेन्द्रकुमार और उनके साले राकेशकुमार व उनके ड्राईवर की उनकी अपनी गाड़ी से दुर्घटना से आत्मिक मृत्यु होगई है। इस पर आर्यसमाज नाहरी ने आपतकालीन सभा की बैठक श्री उमरावसिंह जी प्रधान की अध्यक्षता में बुलाई और लाला जी की इस दुर्घटना की जानकारी दी। सभी सदस्यों को लाला जी की मृत्यु का समाचार सुनकर गहरा सदमा पहुंचा तथा हार्दिक शोक प्रकट किया व अनुभव किया कि आर्यजगत् से एक महान् दानवीर एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता सदा-सदा के लिए हमसे दूर होगया है। जिसकी क्षति की पूर्ति नहीं हो सकती। इस दुःखद घड़ी में हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उन दिवंगत आत्माओं को सद्गति प्रदान करे। उनके शोक संतप्त परिवार को महान् वेदना को सहन करने की शक्ति दे।

—मन्त्री आर्यसमाज नाहरी, जि० सोनीपत

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

हैदराबाद स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन विषय सूचना

हैदराबाद सत्याग्रहियों के बहुत से भाइयों की ओर से पत्र आते रहते हैं कि हरयाणा सरकार ने हैदराबाद स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन बारे अभी तक क्या निर्णय किया है। ऐसे सब भाइयों की सेवा में निवेदन करना चाहता हूं कि चौ० साधुराम अध्यक्ष स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन समिति हरयाणा द्वारा जो पत्र मुझे २९-७-८८ को मिला है, उसके अनुसार आपको आवश्यक जानकारी दे रहा हूं, जो कि निम्न प्रकार है—

१—जिन हैदराबाद सत्याग्रहियों ने सरकार द्वारा निर्धारित सभी शर्तें पूरी करदी हैं। उनकी कुल सख्या अब तक हरयाणा में ५८ है।

२—उपरोक्त ५८ केसों में से ३६ केसों के सम्मान पेंशन आदेश जारी किये जा चुके हैं।

३—हरयाणा सरकार ने स्वतन्त्रता सेनानियों को निम्नलिखित आधार पर पेंशन जारी की है—

१-१-८१ से ३१-३-८३ तक ५० रु० प्रतिमास
१-४-८३ से १४-८-८५ तक १०० रु० प्रतिमास
१५-८-८५ से ८-८-८७ तक २०० रु० प्रतिमास
९-८-८७ से जीवन पर्यन्त २५० रु० प्रतिमास

४—स्वतन्त्रता सेनानियों/स्वतन्त्रता सेनानियों की विधवाओं को सम्मान पेंशन स्वीकृत करने के लिए जेल की सजा की अवधि दो मास निर्धारित है। इस अवधि को हरयाणा सरकार द्वारा कम नहीं किया गया है।

५—मुख्य सचिव, हरयाणा सरकार (प्रोटोकोल शाखा) सम्मान पेंशन स्वीकृत करती है तथा कोषपाल पुन्य अक्षयनिधि हरयाणा, कोठी नं० १५२ सेक्टर नं० १५, पचकुला सम्मान पेंशन की अदायगी करते है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर मैं ऐसे सब सत्याग्रहियों से निवेदन करता हूं कि जिनके जेल प्रमाण-पत्र अभी तक प्राप्त नहीं हुए हैं। ऐसे सब भाई सम्बन्धित जेलों के अधिकारियों को पुनः पत्र लिख अथवा वहां जाकर येनकेनप्रकारेण अपने जेल यात्रा के प्रमाण-पत्र प्राप्त करने का यत्न करें। यदि यह सम्भव न हो सके तो वह कृपया आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय में मुझ से सम्पर्क करें। मैं ऐसे पत्र-व्यवहार में प्रत्येक भाई की हर सम्भव सहायता करूंगा। जिन भाइयों के पास सभा का साप्ताहिक-पत्र सर्वहितकारी नहीं आता है, कृपया वे न्यून से न्यून एक साल के लिए तो इस साप्ताहिक-पत्र को अवश्य जारी करालें, ताकि उन्हें हर प्रकार की सूचना मिलती रहे।

—म० भरतसिंह, सभा वरिष्ठ उपप्रधान एवं संयोजक हैदराबाद स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन समिति

पंचायती चुनाव और शराब

गत सप्ताह हरयाणा पंचायतों के चुनाव होने से १५ दिन पहले ही शराब आदि का दौर चलना शुरु होगया। जो लोग शराब और पैसे से वोट खरीदते हैं या बेचते हैं, वे भविष्य में कभी कामयाब नहीं हो सकते। आज के जमाने में नेक और ईमानदार आदमी की कोई कदर नहीं करता। —रामविलास रोहिला, झोझूकलां (जींद)

शोक समाचार

आर्यसमाज मालकोष जि० भिवानी के मन्त्री श्री अमरसिंह आर्य का ५५ वर्ष की आयु में २३ अगस्त को देहांत होगया। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके दुःखी परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—कृष्णकुमार प्रधान

हिन्दी रक्षा-आन्दोलन के वीर शहीद सुमेरसिंह का बलिदान दिवस

हिन्दी रक्षा आंदोलन १९५७ के वीर शहीद श्री सुमेरसिंह आर्य का बलिदान दिवस २४ अगस्त को ग्राम नयाबांस जि० रोहतक में ग्रामवासियों ने श्रद्धापूर्वक मनाया। प्रातः यज्ञ हवन किया गया तथा उसके बाद आर्यसमाज के अधिकारियों ने उन्हें श्रद्धांजलि दी व उनके गुणों का गान किया। उनके बलिदानस्वरूप हिन्दी रक्षा आंदोलन सफल हुआ और कुछ समय पश्चात् हरयाणा बन गया और इस प्रकार हरयाणा से पंजाबी भाषा की जबरन पढ़ाई भी समाप्त होगई।

—लक्ष्मणसिंह आर्य
कोषाध्यक्ष आर्यसमाज नयाबांस, जि० रोहतक

शहीद सुमेरसिंह

स्वराज्य स्वभाषा स्वधर्म के क्षेत्र में जितना बलिदान आर्यसमाज के वीर पुत्रों ने किया है, उसका उदाहरण अन्य किसी से प्राप्त नहीं होता। भारत के ज्वलन्त समस्या के प्रति आर्यसमाज सदा जागृत रहा है। यही कारण है कि विपरीत स्थितियों में समाज ने निरन्तर प्रगति की है। बलिदान वीरों की तो आर्यसमाज में एक शृंखला ही है, ऐसे ही बलिदानी वीरों में हुतात्मा वीर सुमेरसिंह का नाम उल्लेखनीय है। निजाम शाही तो प्रसिद्ध थी ही। वह ब्रिटिश राज के युग की बात थी, किन्तु सुमेरसिंह का बलिदान स्वतन्त्र भारत के उन शासकों के शासन में हुआ, जिन्हें भारतीय जनमानस का, भारतीय जनता का निर्वाचित प्रतिनिधि माना जाता है।

जिस प्रकार निजाम शाही प्रसिद्ध थी, उसी प्रकार कैरोंशाही भी रही है। स्वतन्त्र भारत के पंजाब प्रदेश में हिन्दी को एवं हिन्दी-भाषियों को उनका उचित स्थान भी देने में आनाकानी की। आर्यसमाज ने इसके लिए आंदोलन किया और अनेक वीर पुरुष आहत एवं क्षत विक्षत हुए।

हिन्दी रक्षार्थ जो सत्याग्रही बन्दी बनाये गये थे, उन्हीं में से एक आर्यवीर सुमेरसिंह हरयाणा के निवासी थे।

इस कारागार में हुए अत्याचार के सम्बन्ध में जस्टिस कपूर ने अपने प्रतिवेदन में जो लिखा, उसका तात्पर्य था—

"न भूतो न भविष्यति।"

(वैदिक रवि अगस्त ८८ से साभार)

श्री पूनमचन्द आर्य उपप्रधान परोपकारिणी सभा का निधन

श्री पूनमचन्द आर्य उपप्रधान परोपकारिणी सभा अजमेर का एक अगस्त को कैंसर की बीमारी के कारण बम्बई में निधन होगया। आप का जन्म २१ जुलाई, १९२१ को हरयाणा प्रदेश के भिवानी शहर में हुआ था। आपका बचपन से ही आर्यसमाज से अटूट सम्बन्ध था। प्रारम्भ में उनका कार्यक्षेत्र कलकत्ता में ही था, परन्तु बाद में उनकी प्रतिष्ठा अधिकारी और कार्यकर्त्ता के रूप में, अखिल भारतीय रूप में स्वीकारी गई। १९४० में कलकत्ता आर्यसमाज के सम्पर्क में आये, तब से अब तक वे सदस्य के रूप में चलते आरहे थे। वे कई बार वहां पर प्रधान एवं मन्त्री पदों पर निर्विरोध निर्वाचित होते रहे। उन्होंने हिन्दी तथा गोरक्षा आंदोलनों में भी भाग लिया। कुछ सालों से वे अपना व्यापार छोड़कर पूर्ण रूप से समाज सेवा में लग गये थे। आजकल आप परोपकारिणी सभा के उपप्रधान थे। आपके सुपुत्र कलकत्ता भावनगर तथा बम्बई में रहते हैं।

—गजानन्द आर्य मन्त्री परोपकारिणी सभा

देश के नागरिकों से प्रार्थना देश को बचाने के लिए—

भजन

टेक—कुछ करो यत्न, हो रहा पतन, सब भारत के नर-नार।
देश को स्वर्ग बनाना है।।

राम कृष्ण के बेटे-पोते मर्यादा सब तोड़ रहे,
भाई-भाई में प्यार रहा ना धर्म से मुखड़ा मोड़ रहे,
तमसो मा ज्योतिर्गमय से अन्धकूप में दौड़ रहे,
चरित्रहीनता निशदिन बढ़ रही ना आपस में होड़ रहे,
कहीं भ्रष्टाचार, कहीं बलात्कार विषय से भरा संसार।
सुरा में हुआ दिवाना है।।१

कहीं टी० वी०, कहीं कम्पोटिशन, लड़की कहीं नचाते हैं,
मात, पिता, भाई, बन्धु सब डांस देखने जाते हैं,
ब्राह्मण घर जनाना बाणा नित नये सांग रचाते हैं,
शुद्ध कविता ना करते अश्लील रागनी गाते हैं,
हुए पथ से भ्रष्ट, किया धर्म नष्ट और मनमें भय विकार।
कहैं कि बुरा ये जमाना है।।२

नरनारी खुद जुल्म करें हैं पर बदनाम जमाना रे,
दया धर्म और न्याय का जग में ना है ठोड़ ठिकाना रे,
दूध, दही, घी, मक्खन तज हुआ शराब मांस का खाना रे,
फैशन में मतवाला हो दिया छोड़ खद्दर का बाणा रे,
तज बुरे काम, भज ओ३म् नाम, कर मातृभूमि से प्यार।
पाप का खोज मिटाना है।।३

काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह और अहंकार का नाश करो,
असत्य से सत्य और तम से प्रकाश करो,
नित्य प्रति नियम से सब योग का अभ्यास करो,
अण्ड, बण्ड, पाखण्ड त्याग एक ईश्वर में विश्वास करो,
कहे चन्दगीराम नित प्रातः शाम रोहताश करे प्रचार।
मोक्ष मार्ग अपनाना है।।

—रोहताशकुमार आर्य, मन्त्री आर्यसमाज लोहारू

योगी गुणों की खान थे

वेद मर्यादा के रक्षक श्रीकृष्ण भगवान् थे।
ज्ञान के भण्डार थे योगी, गुणों की खान थे।।

जेल में जन्मे थे अरु; जीवन में झेले कष्ट थे,
गायें थीं उनके सखा थे, गोपियों के प्राण थे।।१

अत्याचारी कंस के जुल्मों से प्रजा थी दुःखी।
मार डाला था कुकर्मी, वे बड़े बलवान् थे।।२

छियासी राजाओं को डाला, जरासंध ने जेल में।
भीम पर मरवा दिया था, नीति में प्रधान थे।।३

गालियां शिशुपाल ने; निन्यानवें दीं सब सहीं।
सौ हुई सिर को उड़ाया, देख सब हैरान थे।।४

विश्व का ना नाश हो, बन दूत हस्तिनापुर गये;
दुर्योधन को खूब समझाया, दिये व्याख्यान थे।।५

समझाने से जब न माने, शकुनी दुर्योधन कर्ण।
युद्ध महाभारत हुआ, मारे गये शैतान थे।।६

बात उनकी मानते, रहते सभी निर्भय सुखी।
धर्म के थे देवता थे, सत्य के वरदान थे।।७

—नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक, ग्राम पो० बहीन, फरीदाबाद

भारत के भगवान्

योगिराज हे कृष्ण! तुम्हीं ने, धर्म ध्वजा फहराया।
सारे जग को वेदों का, पावनतम पथ दिखलाया।

कंस तथा शिशुपाल जरासंध से असुरों को मारा।
आगे बढ़कर दुनियां की दानवता को ललकारा।

नारी की रक्षा में प्रतिपल रहे बीरवर दृढ़ कटिबद्ध।
दुर्योधन को, दुःशासन को ललकारा होकर प्रतिबद्ध।

युद्ध महाभारत में तुमने, सत्य पक्ष का साथ दिया।
विजयश्री पांडव को तुमने, रण कौशल से दिला दिया।

वैदिक-पथ के थे अनुयायी, वैदिक-पथ विस्तार किया।
वेदों की गरिमा से तुमने, प्रश्नों को निस्तार दिया।

अनुपम योद्धा, अनुपम योगी, अनुपम थे वीरत्व प्रतीक।
'भारत के भगवान्' बने तुम कर्म किये निष्काम सटीक।

तुम युग मानव! रहे प्रणेता सत्य धर्म-मानवता के।
स्वीकारा तुमने निर्भय हो वेग सभी दानवता के।

महामनुज तुम संहारक थे, असुर वृत्तियों, असुरों के।
प्रतिपालक थे रक्षक थे तुम, मुनिमानव के पुण्य सुरों के।

जन्मदिवस पर आज तुम्हारा वन्दन है, अभिनन्दन है।
भारत के भगवान् तुम्हारा कोटि-कोटि अभिवन्दन है।।

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

आकाशवाणी रोहतक से

३-९-८८ को सायं ७.४५ पर "जन्माष्टमी का महत्त्व" विषय पर आचार्य दयानन्द शास्त्री, प्राध्यापक दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार की हिन्दी वार्ता प्रसारित होगी।

शोक समाचार

सारे रोहतक मण्डल तथा पहलवान जगत् को यह दुःखद समाचार जानकर मानसिक खेद होगा कि गत जुलाई मास के प्रथम सप्ताह में ग्राम जसौर खेड़ी रोहतक के तगड़े पहलवान सुलतानसिंह का एक मोटर साईकल के बिगड़ जाने से कलावड़ चुलाणा ग्राम के पास दुर्घटना में शरीरांत होगया। उनके दाह संस्कार में आस-पास के ७-८ ग्रामों के कई हजार आदमी शोकातुर सम्मिलित हुए।

सुलतानसिंह बड़े सदाचारी शिष्ट नम्र-स्वभाव तथा अनुमान तीन मन के लम्बे, तगड़े, सुन्दरस्वरूप कसीले मल्ल थे। आपके दो अन्य साथी नामी पहलवान चांदसिंह माजरा डबास के तथा दूसरे पहलवान देसा ग्राम कसार के और भी प्रसिद्ध बलवान् रहे हैं। ये तीनों जमना अखाड़ा दिल्ली में पूज्य गुरु चिरंजी के प्यारे शिष्य थे। इस यशस्वी प्रसिद्ध लाठी चालक गुरु के अन्तिम विख्यात भारत तथा एशिया प्रमुख पहलवान मा० चन्दगीराम हैं। कसारवासी सदाचार मूर्ति देसा पहलवान का गतवर्ष देहांत होगया था। अब इन तीन साथियों में शिष्टात्मा चांदसिंह ही रह गये हैं। इन तीनों की अवस्था ७३-७४ वर्ष की हुई है। सुलतानसिंह अपने तीन पुत्रों सहित सम्पन्न परिवार को छोड़ गये हैं। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति दे तथा शोकातुर परिवार को धैर्य देवे।

—निहालसिंह आर्य, जसौर खेड़ी, रोहतक

जन्म दिन मनाइये

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता वेदप्रचार

बृज के कन्हैया का, गीता के रचैया का गुणगान गाइये।
भादों वदी अष्टमी को, पर्व जन्माष्टमी को जन्म दिन मनाइये॥

मुरली बजैया से, दाऊजी के भैया से शिक्षा शुभ पाइये।
योगी महान् से, वेदों के विद्वान् से जीवन बनाइये।
रुक्मणि के पति को, योगिराज यति को इतना न लजाइये॥
वृषभान की दुलारी को, राधासुकुमारी को पत्नी ना बनाइये।

गोकुल के गोपाल को, यशोदा के लाल को दोष न लगाइये।
कंसासुर को मारने को अविद्या असुर को, तीर ज्ञान के चलाइये॥
परस्पर द्वेष दूर करदो क्लेश, बन्शी प्रेम की बजाइये।
ज्योति ज्ञान की जगाओ, सत्य रास्ता अपनाओ, रूढ़िवाद को मिटाइये॥

ऐसा मिला स्वरताल, आये रक्त में उबाल, गीत क्रांति के गाइये।
आलस को त्याग, लगा पाखण्डों में आग, मिल राष्ट्र को बचाइये॥
बनो सदाचारी भक्त कृष्ण के पुजारी, शुद्ध आचरण बनाइये।
मोहन मुरारी का, सुदर्शन चक्रधारी का जन्म दिन मनाइये॥

सोने की चिड़िया

भारतवर्ष देश हमारे ने सभी सराहया करते।
गैर मुल्क सोने की चिड़िया इसे बताया करते।

सब देशों में बड़ा देश यही देश था म्हारा,
अस्त्र शस्त्र वैद्यक जोतिष इलम यही था सारा,
इस मौके पर और देशों नें लगता था बड़ा प्यारा,
बलबुद्धि और धनमाया का खुल रहा था भंडारा,
ऋषि महात्मा नहा-धोकर हरि के गुण गाया करते। १

संस्कृत विद्या का भारी आदरमान करे थे,
बुरे काम की चर्चा में ना हरगिज ध्यान धरें थे,
नित्य नियम संध्या आदि का हम जालपान करे थे,
ऋषि महात्मा जिस विद्या से हर का मान करे थे,
वेद कि मन्त्र बोल-बोलकर हवन रचाया करते।२

आज अपने हाथों काट रहे बाग लखोना माली,
नहर दूध की बहया करें थी सारे के हरियाली,
फूट कुहाड़ी जड़ में मारी सूखी डाली-डाली,
कृष्ण जैसे रहा करें थे खुद गउवों के पाली,
दही दूध सभी आदमी पीया-खाया करते। ३

अंग्रेजी उर्दू का यहां पर बिल्कुल काम नहीं था,
गोमाता का कटकर यहां बिकता चाम नही था,
सांगी भांगी लुंगाड़ों से पड़ता काम नहीं था,
शीशराम कह भारत कभी ऐसा बदनाम नहीं था,
२५ वर्ष से पहले ना शादी करवाया करते। ४

प्रस्तुतकर्ता—जयपालसिंह आर्य, भजनोपदेशक

(पृष्ठ १ का शेष)

इस प्रकार यही सिद्ध होता है कि ईश्वर ने वेद का ज्ञान जीवों के कल्याण और उन्नति के लिए दिया है। वेद में मानव के अभ्युदय एवं निःश्रेयस की पूरी योजना एवं विधि निहित है। वेद का मुख्य प्रतिपाद्य विषय हो परमात्मा है। अतः परमात्मा तक पहुंचने के लिए वेद का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। वेद हमें जीने का सही ढंग बताते हैं। यदि वेद का ज्ञान न दिया होता तो मानव जीने का ढंग ही न जान पाता। वेद मानव को मानवता का पाठ पढ़ाता है। वह ही धर्म के तत्त्व का दर्शन कराता है। अतः मानव को सच्चा मानव बनाने के लिए वेद का ज्ञान दिया जाना अत्यन्त आवश्यक था, इसीलिए वेद का ज्ञान परमात्मा ने दिया।

आर्य कन्या गुरुकुल नरेला का अत्युत्तम परीक्षा फल

सम्पूर्ण भारत में नारी जाति के लिए आर्ष प्रणाली से उच्च शिक्षा की व्यवस्था करनेवाली एकमात्र संस्था यह कन्या गुरुकुल है। यहां पहली कक्षा से आचार्या पर्यन्त प्राचीन एवं आधुनिक विषयों की शिक्षा दी जाती है। शिक्षा निःशुल्क है। भोजन के लिए स्वल्प व्यय लिया जाता है। भारत के लगभग सभी राज्यों की कन्यायें यहां शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक परीक्षा की व्यवस्था करता है।

शिक्षक-वर्ग पूर्णतः शिक्षित एवं अनुभवी है। इससे पहले भी यहां की कन्यायें विश्वविद्यालय की मेरिट लिस्ट में स्थान पा चुकी हैं। निम्नलिखित इस वर्ष का शास्त्री परीक्षा (तृतीय खण्ड) का परिणाम भी आपकी प्रिय संस्था को चार चांद लगा देता है। सभी कन्यायें शास्त्री परीक्षा तृतीय वर्ष में उच्च प्रथम श्रेणी में विशिष्टता से उत्तीर्ण है। अंक स्वयं बोल रहे हैं—

कन्या का नाम	पिता का नाम	अंक	प्रतिशत
संगीता आर्या	रामभजन	४७९	७९.५%
सुशीला आर्या	जयपालसिंह	४७४	७९%
सुमित्रा आर्या	रामफूलसिंह	४७०	७८%
राजबाला आर्या	ईश्वरसिंह	४४४	७४%
मुनेश आर्या	होशियारसिंह	४३६	७२.४%
अनिता आर्या	परमेश्वरदयाल	४३४	७२.२%
सुनीता आर्या	पूर्णसिंह	४२८	७१.२%
वेदवती आर्या	जिलेसिंह	४२७	७१.१%
संगीता आर्या	रमेशचन्द्र	४१७	६९%

—सुशीला आचार्या

ग्राम पंचायत चुनाव में शराबबन्दी प्रचार

ग्राम नाहरी (सोनीपत) में पंचायत चुनाव के दौरान मैंने चुनाव में खड़े हुए प्रत्येक २० पंचों से कुछ प्रश्न पूछे थे कि चुनाव में जीतने के बाद आप ग्राम विकास किस प्रकार से करोगे?

वोट देनेवाले स्त्री-पुरुषों से प्रश्न पूछे थे कि आप पंचायत से क्या-क्या कार्य ग्राम विकास के कराना चाहोगे और कैसे कराओगे।

दसवीं के छात्र-छात्राओं से एक प्रस्ताव लिखवाया था कि 'ग्राम विकास में पंचायत को भूमिका क्या है?'

सर्वहितकारी में छपे शराबबन्दी आदेश को हजारों स्त्री-पुरुषों को सुनाया था कि शराब पीने पिलानेवाले उम्मीदवार को वोट मत देना अन्यथा यह बुराई खत्म नही होगी।

इस प्रकार के प्रचार-कार्य से ग्राम नाहरी में पंचायत के बारे में लोगों की काफी रुचि बढ़ी है और पंचायत ने अपनी शक्ति को पहचाना है, उसमें नई उमंग पैदा हुई है। इसी प्रकार अन्य ग्रामवासी व पंचायत भी जागें, ताकि ग्रामों का विकास वास्तविक तौर पर भी हो सके।

—होशियारसिंह 'सत्यप्रिय' विश्वसेवक
ग्राम व डा० नाहरी, जि० सोनीपत

आर्यसमाज चरखी दादरी जि० भिवानी का चुनाव

प्रधान-सर्वश्री सत्यनारायण शर्मा, उपप्रधान-श्यामसुन्दर, मंत्री-हुकमचन्द आर्य, प्रचारमन्त्री—हरिश्चन्द्र खम्बा, कोषाध्यक्ष—राजेन्द्र-कुमार, संरक्षक—डा० रामनारायण चावला।

यज्ञ और वृष्टि यज्ञ एक शुद्ध वैदिक विज्ञान

—आचार्य वेदभूषण, अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद-२७

मेरे पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज ने १३ जुलाई, ८८ के आर्यजगत् के सातवें पृष्ठ पर छपे लेख में सिद्ध करने का यत्न किया है कि—यज्ञ से वर्षा सम्भव नहीं है।

पूज्य स्वामी जी मुझ से आयु में, आधुनिक विज्ञान में और संन्यासी होने से भी मुझ से बड़े व महान् हैं। इस नाते मैं लेख लिखने से पूर्व उन्हें विनम्रतापूर्वक इस लेख में नमस्कार करता हूं और धृष्टता के लिए क्षमा चाहता हूं।

इस लेख के लिखने में मैं स्वामी जी महाराज का रंचमात्र भी दोष नहीं मानता। मनुष्य जो कुछ खाता है तो जब वमन करता है तो वही कुछ निकलता है कि—जो कुछ उसने खाया था।

स्वामी जी महाराज ने आधुनिक विज्ञान पढ़ा है और उस पर ग्रंथ भी लिखे हैं। मेरा विरोध स्वामी जी महाराज से रत्तीभर नहीं है, मैं उनका स्नेह भाजन हूं। वे मेरे लिए अनेक क्षेत्र में आदरणीय हैं हमारी लड़ाई आधुनिक विज्ञान के सिद्धांतों से है।

इस विज्ञान ने अभी ज्ञान की एक तिहाई मंजिल भी तय नहीं की है। क्योंकि ज्ञान के तीन भाग हैं—एक स्थूल जिसे हम आधिभौतिक कहते हैं—दूसरा सूक्ष्म जिसे आधिदैविक कहते हैं—तीसरा कारण जिसे हम आध्यात्मिक कहते हैं। इस प्रकार आज का वैज्ञानिक तो अभी आधिभौतिक मंजिल पर भी पूर्णरूप से नहीं पहुंच पाया है। यह स्पष्ट है अभी यह बच्चा प्रयोगकालीन छात्र जीवन से गुजर रहा है। डार्विन की बन्दर की थियरी से यह अब कहीं जेनेटिक साइंस में 'जीन्स' तक पहुंचा है। इनकी मान्यतायें सदा परिवर्तनशील हैं। मोम की नाक की तरह उनकी शेष आकृति बदली जा सकती है। पर वेदों का ज्ञान पूर्ण स्थिर व अपरिवर्तनशील है। वेदों में ये तीनों विद्यायें उस मात्रा में अन्तर्निहित हैं। जितना एक स्वस्थ तथा मेधावी मानव मस्तिष्क समझ सकता है। पर वेदों का सम्पूर्ण ज्ञान पूर्णरूप से एक ही मानव मस्तिष्क में समा जाये, यह कठिन है। क्योंकि—'अनन्तपारं किल शब्द शास्त्रं'

वैदिक विज्ञान वास्तव में अद्भुत है। यह अपरिवर्तनशील है। क्योंकि यह सत्य ज्ञान है। जो ज्ञान परिवर्तनशील है, वह असत्य है। जैसे खुराना के मुकाबले डार्विन असत्य होगया। वेदों पर दृष्टिपात करते हुए हमें हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि—वेद का ज्ञान तीन स्तर पर चलता है। इसे ही त्रिविध प्रक्रिया कहते हैं।

यह विज्ञान वास्तव में तीन स्तर पर जाना जा सकता है। प्राचीन ऋषियों ने यज्ञ के आधिदैविक रूप को अधिक महत्त्व दिया है। एक यज्ञ भौतिक स्तर पर चलता है। जितने भी लोकोपकारक कार्य हैं, वे सब भौतिक यज्ञ की श्रेणी में गिने जाते हैं। इन्हें पितृयज्ञ अथवा अतिथि यज्ञ कहा जाता है। मानव की शारीरिक सेवा ही भौतिक यज्ञ है। कुयें बनाना, धर्मशाला बनाना आदि। दवाखाने खोलना भी इसी यज्ञ का अंग है।

दूसरी श्रेणी का यज्ञ है देवयज्ञ और बलिवैश्वदेवयज्ञ। देवयज्ञ आधिदैविक श्रेणी का यज्ञ है। बलिवैश्व देव आधि भौतिक आधि दैविक है। मनुष्य समाज अपना कुछ भाग मानवेतर प्राणियों के लिए छोड़ता है, त्यागता है, इसीलिये इसे बलि कहा गया। बलिदान का अर्थ है उत्सर्ग और इसमें हमने कुछ तो पशु, पक्षियों, कीट पतंगों आदि के लिये दिया और कुछ चूल्हे की अग्नि में जला दिया। जो जला दिया वह वैश्व देव होगा। इस प्रकार यह बलिवैश्व देव कहाया। देवयज्ञ तो शुद्ध आधिदैविक है, जो भौतिक से सूक्ष्म है। भौतिक विज्ञान की दौड़ भौतिक तक ही होगी। जैसे मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक।

जब आज का विज्ञान पंचतत्त्वों को प्रत्यक्ष कर लेगा और यह जान लेगा कि—प्रत्यक्ष के परे कुछ अप्रत्यक्ष भी है और प्रत्यक्ष से कहीं अधिक शक्तिशाली व बलवत्तर है। जहां भौतिक उपकरण की अपेक्षा सूक्ष्म मानसिक शक्ति ही या बुद्धि मन्त्र से ही काम लेना होता है। दैवी शक्ति की मानसिक जगत् को यन्त्र से देखा नहीं जा सकता, क्योंकि वह भौतिक से सूक्ष्म है, वह भौतिक चिमटे की पकड़ में आ नहीं सकती। जहां तक वह स्थूल है, उतनाभर ही जाना जायेगा।

यज्ञ विज्ञान को समझने के लिये केवल मन, बुद्धि और वेद की आवश्यकता है। यह दैविक विज्ञान भौतिक विज्ञान से ऊपर इसे समझने के लिए पहले भौतिक विज्ञान को समझना भी आवश्यक है।

आधुनिक वैज्ञानिक कहता है कि—यज्ञ में डाला गया द्रव्य अधिक से अधिक सौ-दो सौ फुट ऊपर तक जायेगा। बादल तो एक मील ऊपर होते हैं।

जिस प्रकार एक विशाल काय तालाब में कोई एक तोला नमक डालकर वैज्ञानिक से पूछे कि—कृपया आप बतलाइये कि यह नमक पानी में किस सीमा तक गया है? इस प्रश्न का उत्तर वह देगा कि यह पूरे पानी में घुल गया। क्या उस एक तोले नमक, जो भाग विशाल तालाब में घुल गया है, उसे किसी यन्त्र में आंका जा सकता है? इसके लिए बुद्धि यन्त्र ही काम देगा, भौतिक यन्त्र नहीं। क्योंकि वह अति सूक्ष्म होगया। पूरे तालाब को सुखाकर फिर उस क्षेत्र की पूरी मिट्टी से कहीं एक तोला नमक लौटाया जा सकेगा, जो मानव की शक्ति से परे है। पर चूंकि हमने एक तोला नमक घोला है। हम कह सकते हैं कि वह तालाब में मौजूद है, क्योंकि डाला गया है, पर हमारी पकड़ से बाहर है। यही बात वायु मण्डल के लिए भी है। जो द्रव्य इस विराट् वायु मण्डल में घुलेगा, वह भी नमक के समान नहीं, बल्कि अग्नि में जलाकर, उसे अत्यन्त सूक्ष्म बनाकर वायु के वातावरण में घोल दिया गया है। उसे यन्त्रों से नापना कठिन है। हां, पर्वतीय क्षेत्र में जहां मेघ का धुवां हो उसे घेरकर यज्ञ द्वारा परीक्षण किये जायें तो कुछ निष्कर्ष निकल सकते हैं। पर उनकी सूक्ष्म स्थिति का सही मूल्यांकन परिणाम द्वारा ही निकाला जा सकता है।

जैसे कोई अबोध बालक कहे कि—मेरे सिर में दर्द है। आप गोली डाल रहे हैं पेट में। पेट की गोली का प्रभाव सिर पर कैसे होगा? पर प्रभाव होता है।

जैसे मानवदेह है, वैसे ही विश्वदेह भी एक देह के समान ही है। यो भूत च भव्यं च आदि जो मन्त्र स्वामी महर्षि दयानन्द जी महाराज ने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के प्रारम्भिक प्रकरण में ही दिये हैं। वहां विराट् या विश्व को ब्रह्मांड का देह ही बतलाया है।

शास्त्रों में मानवदेह को पिण्ड और विश्वदेह को ब्रह्मांड कहा है। वैदिक विज्ञान का यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सूत्र है कि—यथा पिण्डे तथा ब्रह्मांडे। चिकित्सा विज्ञानवाले इस तथ्य को जान सकते हैं कि—किसी सूक्ष्म व तीव्र प्रभाववाले तत्त्व को सूई के नोक बराबर जिह्वा पर डाल कर, पूरे शरीर पर उसका प्रत्यक्ष प्रभाव देखा जा सकता है। जैसे पिंड का ताना-बाना है, वैसे ही ब्रह्मांड में सूक्ष्म तरंगे नस-नाड़ियों के समान ही निरन्तर तरंगायित हो रही हैं।

अतः वैज्ञानिकों का यह तर्क कि—यज्ञ का सूक्ष्म बांध पेट के ही भीतर रह जायेगा सर्वथा भ्रांत व अवैज्ञानिक है। सर्वथा तर्कसंगत नहीं है।

वृष्टि यज्ञ का मौलिक आधार यही है कि—जिन द्रव्यों को आप मानवदेह में डालकर जल संचय कर सकते हैं, उन्हें ही आप यज्ञ द्वारा वायुमण्डल में घोलकर, ब्रह्मांड देह में फैलाकर वैसा ही फल प्राप्त कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए जलग्राही 'गोखरू' को ही लीजिये। छोटे गोखरू का क्वाथ लेने से वह देह के जल को खींचकर मूत्र की मात्रा को बढ़ा देता है। इसी गोखरू को घृत के साथ आप जलाकर ब्रह्मांड देह से भी जल संचित कर सकते हैं।

यह विज्ञान अत्यन्त सूक्ष्म और अद्भुत विज्ञान है। जैसे जठराग्नि में डाला हुआ अन्न रस पूरे देह में फैलता है, वैसे ही भौतिक अग्नि में डाला अन्न वनस्पति वनौषधियां कम से कम एक सौरमण्डल में अपना सूक्ष्म प्रभाव डाल सकती हैं। जैसे एक देह के लिए औषधि की एक मात्रा निश्चित है, वैसे ही ब्रह्मांड देह के पर्यावरण के अनुकूल मात्रा में उक्त द्रव्यों का उपयोग कर ब्रह्माड देह की अनियमितताओं को नियमित स्वस्थ किया जा सकता है।

वर्षा कराई जा सकती है। वर्षा रोकी जा सकती है और क्या-क्या किया जा सकता है। लीजिए एक अत्यन्त दिव्य महान् स्वामी महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वेदमन्त्र के स्पष्ट अर्थ को पढ़कर विनम्र विवेकीजन हमारे कथन को स्वीकार करेंगे।

यजुर्वेद के बाइसवें अध्याय का छब्बीसवां मन्त्र है—

वाताय स्वाहा, धूमाय स्वाहा, अभ्राय स्वाहा, मेघाय स्वाहा, विद्योतमानाय स्वाहा, स्तनयते स्वाहा, अवस्फूर्जते स्वाहा, वर्षते स्वाहा अववर्षते स्वाहा, उग्रं वर्षते स्वाहा, शीघ्रं वर्षते स्वाहा, उद्गृह्णते स्वाहा, उद्गृहीताय स्वाहा, पृष्णते स्वाहा, शीकायते स्वाहा, प्रुष्वाभ्यः स्वाहा, ह्रादुनीभ्यः स्वाहा, नीहाराय स्वाहा।

मन्त्र कितना सरल है, स्पष्ट है और इसमें वरुण लोक से सम्बन्धित सभी विकृतियों को विविध यज्ञों द्वारा नियन्त्रित करने का स्पष्ट उल्लेख है।

इस मन्त्र का अर्थ भी महर्षि दयानन्द के ही शब्दों में देखिये—

अर्थ—जिन मनुष्यों ने जो बहता है, उस पवन के लिए उसको शुद्ध करनेवाली यज्ञ क्रिया, धूप के लिए (कोहरे) यज्ञ क्रिया, मेघ के कारण के लिए यज्ञ क्रिया (ध्यान दीजिये) मेघ के लिए यज्ञ क्रिया बिजुली से प्रवृत्त हुए सघन बद्दल के लिए यज्ञ क्रिया (जहां बिजुली गिरने का भय हो जाये) उत्तम शब्द करती हुई बिजुली के लिए यज्ञ क्रिया। एक दूसरे के घिसने से वज्र के समान नीचे को चोट करते हुए विद्युत् के लिए शुद्ध करनेहारी यज्ञ क्रिया। जो बहुत वर्षता है, उसके लिए यज्ञ क्रिया (अति वृष्टि को रोकने के लिए) शीघ्र लपट-झपट से वर्षते हुए बद्दल के लिए उत्तम क्रिया (बादल के फटने की स्थिति में उसे रोकने के लिए) जिसने ऊपर से ऊपर जल ग्रहण किया, उस बद्दल के लिए शुद्धि करनेवाली यज्ञ क्रिया, पुष्टि करते हुए मेघ के लिए यज्ञ क्रिया, जो सींचता अर्थात् ठहर-ठहर के वर्षता उस मेघ के लिए यज्ञ क्रिया, जो पूर्ण घनघोर वर्षा करते हैं, उन मेघों के अवयवों के लिए यज्ञ क्रिया। अव्यक्त गड़बड़ शब्द करते हुए बद्दलों के लिए शुद्धि करनेवाली यज्ञ क्रिया और कुहरे के लिए उसकी शुद्धि करनेवाली यज्ञ क्रिया की है, वे संसार के प्राण प्यारे होते हैं।

इस मन्त्र के भावार्थ में महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि—

जो मनुष्य यथाविधि अग्निहोत्र आदि यज्ञों को करते हैं, वे पवन आदि पदार्थों के शोधनेहारे होकर सबका हित करनेवाले होते हैं।

शुद्धि शब्द का अभिप्राय है, दोषों का निवारण हर प्रकार के दोषों का निवारण ही शुद्धि है, केवल पानी का प्रदूषण मात्र नष्ट करना मात्र शुद्धि नहीं है। क्रिया दोष को नष्ट करना व पदार्थ के दोष को नष्ट करना दोनों भी उपाय यज्ञक्रिया से सम्पन्न होते हैं। मैं बड़ी विनम्रता से पूछना चाहूंगा—क्या इस मन्त्र के अर्थ को पढ़ लेने पर भी सन्देह शेष रह सकता है?

माननीय स्वामी जी यजुर्वेद के २२वें अध्याय के २२वें मन्त्र में 'निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम्' का स्पष्ट अर्थ है कि—हमारी इच्छा के अनुसार वर्षा हो। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती महाराज ने इसका अर्थ कितना स्पष्ट किया है कि—निश्चययुक्त काम में अर्थात् जिस-जिस काम के लिए प्रयत्न करें, उस उस काम में मेघ (बादल) वर्षे।

देखिये ऋग्वेद मण्डल ५, सूक्त ८३ मन्त्र के भावार्थ में महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखते हैं कि—

मनुष्य लोगों को चाहिए कि—जिस मेघ से सबका पालन होता है, उसकी वृद्धि वृक्षों के लगाने, वनों की रक्षा करने और होम करने से सिद्ध करें, जिससे सबका पालन सुख से होवे।

महर्षि ने यहां होम शब्द का प्रयोग किया है, यज्ञ शब्द का नहीं। क्योंकि कुछ लोग यज्ञ का अर्थ विराट् यज्ञ से ले रहे हैं।

यहां तो स्पष्ट लिखा है कि होम से मेघ की वृद्धि करें।

महर्षि के निम्न उद्धरण भी कितने स्पष्ट हैं देखिये—

वर्षा का हेतु जो यज्ञ है, उसका अनुष्ठान करके नाना प्रकार के सुखों को प्राप्त करो। यजुर्वेद १।१४

अच्छी प्रकार पदार्थों को इकट्ठा करके यज्ञ का अनुष्ठान करना चाहिए, जो वृष्टि व बुद्धि का बढ़ानेवाला है। यजु० १।१६

अग्नि में जो हवन किया जाता है तथा जिसको सूर्य अपनी किरणों से खींचकर वायु के वेग से ऊपर मेघ मण्डल में स्थापन करता है और फिर वह उसको वहां से मेघ द्वारा गिरा देता है। यजु० २।८

इस अन्तिम उदाहरण में यज्ञ का सूक्ष्म विज्ञान कितना स्पष्ट है। यह कहना कि यज्ञ का वाष्प सौ दो सौ फोट ही ऊपर जाता है, काल्पनिक भ्रांत धारणा है।

वैज्ञानिकों का यह तर्क कि—'गर्भाधान संस्कार और विवाह मात्र से सन्तानोत्पत्ति नहीं होती, जब तक को मैथुन न किया जाये। पुत्रेष्टि यज्ञ करने मात्र से पुत्र नहीं उत्पन्न होता, जब तक नियोग न किया जाये। संस्कारविधि में संवत्सरेष्टि और शस्येष्टि का उल्लेख है, अच्छी फसल होने पर शस्येष्टि की जाती है, फसल तैयार करने के लिए नहीं।'

शस्येष्टि या संवत्सरेष्टि संस्कार नहीं है। यह यज्ञ तो पहले सब को या दूसरों को खिलाकर, फिर खाने के उद्देश्य से **शस्येष्टि और संवत्सरेष्टि वर्षारंभ व शुभ कार्य से आरम्भ हो, इस उद्देश्य से होते हैं।**

फसल को जो उत्तम करने के उद्देश्य से किया जानेवाला यज्ञ फसल के लगने से पहले ही करना होगा, बाद में नहीं। पूना के अनुसंधान केन्द्र में फसल को उत्तम उगाने के उद्देश्य से गोमय को जलाकर परीक्षण किया गया।

एक स्थान पर खेत में बीज वपन कर उसमें गाय के गोबर की भरपूर खाद डाली गई और एक दूसरे स्थान पर खेत में बीज डालकर उन्हें बिना खाद के ही अंकुरित होने दिया गया। अंकुरित हो जाने पर खेत के मध्य में एक स्थान पर गाय के गोबर को जलाया जाता रहा। जिस खेत में खाद डाली गई, वहां के पौधों को विकसित होने में अधिक समय लगा, जबकि—जहां गोबर जलाया गया, वहां के पौधे कम समय में अधिक विकसित होगये।

कारण स्पष्ट है कि—पेड़ पौधे वायु के माध्यम से भी शक्ति संचय करते हैं। जलाये गये गोबर को उन्होंने वायुमण्डल के सूक्ष्म रूप में खींच लिया।

अग्नि में डाला गया द्रव्य सूक्ष्म होकर अधिक शक्तिशाली हो जाता है और पेड़ पौधे वायु से उसे शीघ्र ही खींच लेते हैं। इसी प्रकार आप किसी व्यक्ति को कोई दवा खिलादें और दूसरे व्यक्ति को वही दवा इन्जेक्शन द्वारा सीधे रक्त में डाल दें तो इन्जेक्शन का प्रभाव अविलम्ब होता है। इस वैज्ञानिक तथ्य को हमें स्वीकार करना होगा।

यज्ञ की प्रक्रिया भी इन्जेक्शन के समान ही है। जो द्रव्य वनस्पति आप यज्ञ में जलाते हैं, वह सूक्ष्म रूप में श्वास द्वारा फेफड़ों में जा रक्त से टकराकर उसमें घुल जाती है और उसका प्रभाव याज्ञिक पर पड़ता है। क्या कोई बुद्धिमान् वैज्ञानिक इस तथ्य से इन्कार कर सकता है? कदापि नहीं।

जिस प्रकार वायुमण्डल में फेंके गये डी० डी० टी० पाउडर का अंश श्वास द्वारा मानवदेह को भी प्रभावित करता है और वातावरण को भी। ठीक वैसे ही अग्नि में डाली गई वनौषधियों का व गाय के घृत का प्रभाव बाह्य वातावरण और प्राणियों के देह पर और अधिक गहरा पड़ता है, क्योंकि अग्नि उसे सूक्ष्म कर सहस्र गुणा अधिक शक्ति-

शाली बना देती है।

पुत्रेष्टि यज्ञ में श्रेष्ठ वनौषधियों से बनाये गये गोघृत को पति पत्नी को खिलाया भी जाता है और यज्ञ द्वारा सूक्ष्म रूप में उन्हीं औषधियों को श्वसन प्रक्रिया द्वारा रक्त में भी पहुंचा दिया जाता है। इस प्रकार का यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है।

आधुनिक विज्ञान अभी उन सूक्ष्मताओं को जान नहीं पाया है, जिन्हें हमारे प्राचीन महर्षियों ने जाना व समझा था।

जहां तक अन्धविश्वास और अज्ञानभरी मान्यतायें हैं, उनसे बचना आवश्यक है। ऐसे अन्धविश्वासों और पाखण्डों का निश्चय से विरोध किया जाना चाहिए, जो केवल जनता को ठगने या अन्य दुरुद्देश्यों से किये जाते हैं।

स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज का यह कथन है कि—यज्ञ में डाली गई आहुति केवल १०-२० फीट ऊपर जाती है, यह धारणा सर्वथा मिथ्या है। साधारण से स्थूल धूम्रकण अन्तरिक्ष में वायु के माध्यम से दूर-दूर तक चले जाते हैं। जबकि—गोघृत अग्नि के संयोग से द्युलोक तक अपने प्रभाव को फैलता है। बत्तीस जड़ देवताओं का पवित्रीकरण करनेवाला यह यज्ञ हव्य यज्ञ नहीं, देवयज्ञ कहाता है। यज्ञ शब्द यज् धातु से बना है, यज् धातु का अर्थ है—देवपूजा, संगतिकरण और दान।

वैज्ञानिक की दौड़ तो केवल दृश्य पदार्थों तक ही है, पर दृश्य संसार से अदृश्य संसार कहीं अधिक विराट् है। फिर मन, आत्मा, परमात्मा तो उनकी स्थूल बुद्धि से बहुत परे की बात है।

यज्ञ उतना ही अनिवार्य कर्म है, जितना घर में नित्य झाड़ू लगाना। वास्तव में हमारे मान्य स्वामी सत्यप्रकाश जी ने इस यज्ञ के प्रभाव को जितना क्षुद्र या प्राचीन आविष्कारों की स्मृति माना है। यह यज्ञ विज्ञान की सूक्ष्मता को न समझनेवाली बात है।

स्वामी जी ने अपने लेख में यज्ञ के गौण लाभों में 'मूर्तिपूजा से बचे रहना' यह लाभ भी गिनाया है। वास्तव में यज्ञ तो मूर्तिपूजा ही है। मूर्त की पूजा का शुद्ध वैज्ञानिक प्रकार ही अग्निहोत्र या देवयज्ञ है। वास्तव में 'यज्ञ' करनेवाला हर व्यक्ति मूर्तिपूजक है। मूर्तिपूजा का सही विधान ही यज्ञ है।

यह बात ठीक है कि—मैथुन और नियोग के बिना सन्तान नहीं होती। पर यह धारणा भी उतनी ही भ्रांत है कि—सन्तान प्राप्ति के लिए केवल मैथुन या नियोग ही पर्याप्त है।

कितने ही गृहस्थ मैथुन करते हैं, पर सन्तानहीन ही रह जाते हैं। सन्तान मैथुन की क्रिया मात्र से नहीं होती। वीर्य और आर्तव की पवित्रता या यूं कहें कि-वीर्य और आर्तव का निर्दोष होना भी अनिवार्य है।

'वीर्य और आर्तव' को शुद्ध करनेवाली, इन्हें पुष्टि प्रदान करने वाली औषधियों के सेवन करने और उन्हीं के द्वारा यज्ञ करने से वीर्य और आर्तव पुष्ट व निर्दोष हो जाते हैं।

यहां यह प्रश्न भी उठाया जा सकता है कि—केवल खिलाकर ही कार्य कर लिया जाये, फिर यज्ञ किस लिये ?

पुत्रेष्टि यज्ञ के लिए जो औषधि बनती है, वह गाय के घृत में बनती है। निश्चय ही जिन पति-पत्नी को सन्तान नहीं होती, उसका कारण वीर्य अथवा आर्तव का पुष्ट न होना ही मुख्य है। पुष्टि आहार से व उसके ठीक-ठीक पचन से ही होती है। अतः इसमें मुख्यतः पचन दोष ही कारण होता है। पाचन यन्त्र खाये हुए पदार्थ को पूर्णतः ग्रहण नहीं कर पाता। ऐसी स्थिति में उन औषधियों से युक्त घृत को अग्नि में भस्म कर, उस सूक्ष्म गैस को श्वास द्वारा रक्त में पहुँचाया जाता है। इस प्रकार यज्ञ से सन्तान की प्राप्ति होती है।

यदि सन्तान न होने का कारण गर्भाशय का अविकसित रह जाना है तो जब तक उसका विकास न हो सकेगा, तब तक लाख यज्ञ करने पर भी लाभ नहीं होगा।

आज के चिकित्सा विज्ञान में इन्जेक्शन या सूचिका भेद का जो प्रचलन है, वह एक प्रकार से यज्ञ की ही अनुकृति मात्र है। पर इन्जेक्शन द्वारा जो औषधि रक्त में डाली जाती है, वह उतनी प्रभावशाली नहीं होती, जितनी भी अग्नि में गाय के घृत के साथ जलाकर सूक्ष्म बना फेफड़ों के माध्यम से रक्त में घोली जानेवाली औषधि।

जैसे मानव का यह लघुदेह है, वैसे ही परमात्मा का यह ब्रह्मांड एक विराट् देह है। जैसे देह के विकारों को हम इन्जेक्शन द्वारा उत्तम अनुकूल औषधियों को रक्त में घोल देते हैं, वैसे ही यह अग्निहोत्र ब्रह्मांड में इन्जेक्शन की तरह ही कार्य करता है।

आधुनिक विज्ञान लघु पिण्ड पर ही प्रभाव डाल पाता है। अतः वह लघु विज्ञान है और यज्ञ अपने आप में विराट् है। विराट् शब्द यज्ञ का विशेषण है। महाशब्द भी विराट् का पर्यायवाची है। 'पंचमहायज्ञ' इसमें प्रयुक्त महाशब्द विराट् का ही बोधक है।

काश आज के भौतिक विज्ञानी यज्ञ के सूक्ष्म, किन्तु महान् प्रभाव को समझ लें।

आज विश्व की सर्वाधिक ज्वलन्त व प्रमुख समस्या प्रदूषण हो ता है। यह समस्या इतना प्रचण्ड रूप ग्रहण करने जा रहा है कि-कुछ वर्षों बाद तो इस प्रदूषित वातावरण में मानव का जिंदा रहना क्या प्राणि-मात्र का जीवित रह पाना दूभर हो जायेगा।

ऐसे समय में हमें यज्ञ के प्रचार के लिए पूर्ण यत्न करना चाहिए। क्योंकि—यज्ञ विद्या उन समस्त वैज्ञानिक आविष्कारों में सर्वश्रेष्ठ आविष्कार है, जिसका मुकाबला किसी भी आविष्कार से करना भी हास्यास्पद-सा लगता है। आज के सब आविष्कार 'गांगू' तेली जैसे क्षुद्र हैं और यज्ञ राजाभोज के समान विराट् व सूक्ष्म है। हमारे इस लेख का उद्देश्य स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज का विरोध नहीं, अपितु आधुनिक विज्ञान के आधार पर उठाये गये प्रश्नों का निराकरण करना मात्र है, जिससे यज्ञ का सत्य सत्य प्रकाश हो सके।

सौभाग्य से हमारे स्वामी सत्यप्रकाश जी प्रयाग में ही जन्मे हैं। प्रयाग शब्द ही हमारे यज्ञ के प्राचीनकालीन महत्त्व का स्मारक है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती हमारे लिए व समस्त वैदिक विद्वानों के लिए व संन्यासियों के लिए मान्य व्यक्ति हैं।

यदि महर्षि के यजुर्वेदभाष्य व ऋग्वेदभाष्य के अनेक स्थलों को ध्यानपूर्वक पढ़ें तो यह बात इतनी स्पष्ट और पुष्ट हो जाती है कि—यज्ञ से वर्षा की प्राप्ति अवश्य होती, किन्तु उसे विधि विधान व विभाग के अनुरूप ही किया जाये।

स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज व पं० सत्यकाम जी ने मिलकर अंग्रेजी में वेदभाष्य किये हैं। मैं समझ रहा था कि वे भाष्य महर्षि के वेदभाष्य के अनुरूप ही उन्हीं के आधार पर किये जा रहे हैं। यदि ऐसा नहीं हुआ है तो वेदों के वास्तविक रहस्य पश्चिमी देशों में पहुंच नहीं पायेंगे। मेरा आग्रह है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के सारपूर्ण वेद-भाष्यों का अंग्रेजी में अनुवाद ही वेदों के सूक्ष्म विज्ञान व रहस्य को खोल पायेगा।

महर्षि दयानन्द और वैदिक विज्ञान के आधार पर हमारा यह दृढ़ मत है कि—यज्ञ द्वारा ज्वलन्त समस्या प्रदूषण का निवारण, ऋतु-चक्र की अनुकूलता व जड़ देवों की पवित्रता तथा मनुष्य के दैहिक मानसिक रोगों की निवृत्ति के फल निश्चयपूर्वक प्राप्त किये जा सकते हैं। यज्ञ से वर्षा, सन्तान प्राप्ति निश्चय से सम्भव है। अनेक प्रकार दैवी बाधाओं और विनाश से भी मनुष्य बच सकता है। महामारियों को नष्ट कर सकता है।

यज्ञ अत्यन्त सूक्ष्म विज्ञानसम्पन्न प्रक्रिया है। अतः यज्ञ को निर्भ्रांत होकर स्वीकार करना अत्यन्त उपयोगी। ढोंग, पाखण्ड, ठगी तो आधुनिक विज्ञान द्वारा भी हो सकता है। इसका विरोध पृथक् बात है और आवश्यक व उपयोगी भी है।

यदि स्वामी जी महाराज गृहस्थाश्रम में नित्य यज्ञ करते रहे हैं ना

(शेष पृष्ठ ८ पर)

वेदप्रचार सप्ताह आदि के कार्यक्रम

आर्यसमाज अर्बन स्टेट सेक्टर ४ व ६ गुडगांव	२७ से ३ सितम्बर	
,, महर्षि दयानन्द मार्ग अम्बाला छावनी	२७ से ३	,,
,, मुआना जि० जींद	२८ से ३	,,
,, नरवाना जि० जींद	२८ से ३	,,
,, सालवन जि० करनाल	२८ से ३	,,
,, लाडवा जि० कुरुक्षेत्र	२८ से ३	,,
,; उर्वरक कालोनी पानीपत	२-३	,,
,, चरखीदादरी जि० भिवानी	२-३	,,
,, वैदिक सत्संग सभा आर्य बाजार हिसार	३-४	,,
,, डबवाली जि० सिरसा	४ से ६	,,
आर्यसमाज सिरसा	७ से ९	,,
,, औरंगाबाद मित्रोल जि० फरीदाबाद	४ से १०	,,
सूर्य ग्रहण मेला कुरुक्षेत्र वेदप्रचार	९ से ११	;,
आर्यसमाज सेवासदन बल्लबगढ़ जि० फरीदाबाद	१०-११	,,
,, बाजीदपुर साबोली जि० सोनीपत	१६ से १८	,,
;; बीकानेर गंगायचा अहीर जि० महेन्द्रगढ़	१६ से १८	,,
;, झज्जर रोड रोहतक	१९ से २५	,,
;, शेखपुरा जि० करनाल	२३ से २५	,,
आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ जि० रोहतक	२६ से २ अक्तुबर	
आर्यसमाज रेवाड़ी जि० महेन्द्रगढ़	३० से २	,,
,, मेन बाजार बल्लबगढ़ जि० फरीदाबाद	८-९	,,
,, गन्नौर शहर जि० सोनीपत	१२ से १६	,,
कन्या गुरुकुल पचगांव जि० भिवानी	२१ से २३	,,

जो आर्यसमाज वेद सप्ताह रखना चाहें, वे कृपया २७ अगस्त से ३ सितम्बर की तिथियां छोड़कर रखें, ताकि उपदेशक तथा भजनोपदेशकों का प्रबन्ध करने में सुविधा रहे।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

(पृष्ठ ७ का शेष)

फिर यज्ञ के वर्षा जैसे साधारण परिणामों के प्रति अनास्था क्यों जगी, हम समझ नहीं पारहे।

यज्ञ को विज्ञान का आधार कहा जाना चाहिए। प्राचीन ऋषियों के इस आविष्कार का मुकाबला किसी भी बड़े से बड़े आविष्कार से सम्भव नहीं है।

इस यज्ञ की महत्ता पर जहां पर जब चाहे विचार विनिमय के लिए हम समुद्यत हैं। महबूबनगर की विचार गोष्ठी में यज्ञ से वर्षा न होने की मान्यता को सहमति न मिलना वैदिक विद्वानों की दुर्बलता का परिचायक है।

भारत सरकार के पर्यावरण विभाग के अध्यक्ष मिस्टर अजय चौधरी ने दिल्ली के वैज्ञानिकों से समक्ष यज्ञ-विज्ञान पर भाषण के लिए हमसे प्रस्ताव किया था और तीन दिन में भाषण की व्यवस्था के लिए समय मांगा था। पर उन्हीं दिनों में हमारा अन्य कहीं कार्यक्रम होने से मैंने अमान्य किया था। उन्होंने बाद में भाषण कराने की बात कही थी, पर मैं फिर एक वर्ष के लिए मोरिशस चला गया था। आने के बाद वह बात उन्हें विस्मृत होगई होगी।

ऐसी किसी भी विचार गोष्ठी में यज्ञ विज्ञान पर हम विचार के लिए प्रस्तुत रहेंगे।

लेख में रंचमात्र भी हमारा उद्देश्य किसी के सम्मान को ठेस पहुंचाना नहीं है। केवल दृढ़तापूर्वक यज्ञ-विज्ञान को प्रस्तुत करनामात्र है। अतः कोई दोष इसमें अनजाने में आगया हो तो क्षमा की प्रार्थना है।

। ओमशम्।

शराब विरोधी सरपंच चुना गया

रोहतक २५ अगस्त (निस)। गांव भैंसवाल कलां मिठान पाना के मतदाताओं ने गत दिवस सम्पन्न हुए पंचायत के उप चुनाव में एक अनोखा आदर्श स्थापित करके एक ऐसे व्यक्ति को सरपंच पद के लिए निर्वाचित किया, जिसने गांव के लोगों के बीच खड़े होकर मतदाताओं को शराब न पिलाने और भविष्य में स्वय भी शराब सेवन न करने की शपथ ली थी।

सतपाल नाम के निर्वाचित इस सरपंच को गांव की युवा पीढ़ी और प्रमुख लोगों का समर्थन प्राप्त था। सतपाल समर्थकों ने दूसरा उदाहरण यह स्थापित किया कि सारे चुनाव अभियान में उसके जमानत राशि के केवल ५० रुपये खर्च हुए, जबकि उसके मुकाबले खड़े उम्मीदवारों ने लाखों रुपये प्रचार में उड़ा दिये। सतपाल ने अपने चुनाव के बाद घोषणा की कि वह गांव में शराब के सेवन को बन्द करने का अभियान चलायेंगे।

(दैनिक ट्रिब्यून २६-८-८८

हरयाणा ग्राम पंचायत चुनाव में विजयी शराबबन्दी समर्थक सरपंचों की सूची

गतांक से आगे--

१३. श्री प्रेमसिंह आर्य सरपंच ग्राम बमंगढ़ जि० करनाल
१४. ,, रामदिया सरपंच ग्राम आटा ,,
१५. ,, डैनी सरपच ग्राम चुलकाना ,,
१६ ,, सोमदत्त सरपंच ग्राम हथवाला ,,
१७. मा० रतिराम ,, ,, कालखा ,,
१८. श्री जिलेसिंह ,, ,, पट्टी कल्याण ,,
१९. ,, रामफलसिंह ,, ,, दोदुआ जि० सोनीपत
२०. ,, खजानसिंह एडवोकेट सरपंच ग्राम झाड़सा जि० गुडगांव
२१. ,, रघुवीरसिंह सरपंच ग्राम लाढौत जि० रोहतक
२२. ,, सतपाल सरपंच ग्राम भैंसवाल कलां मिठान पाना जि. सोनीपत

(क्रमशः)

आर्यसमाज तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने निकट के ग्रामों के उन सरपंचों के नाम जो शराब का सेवन नहीं करते हैं, लिखकर शीघ्र भेजने का कष्ट करें, ताकि उनके नाम इस सूची में प्रकाशित हो सके।

-- सम्पादक

आर्य वीरदल हरयाणा का वार्षिक सम्मेलन

आर्य वीरदल हरयाणा का वार्षिक सम्मेलन १-२ अक्तूबर, १९८८ को डी० ए० वी० स्कूल हिसार में होना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर हरयाणाभर के आर्य वीरदल के स्वयं-सेवक हजारों की संख्या में पहुंचकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करेंगे। कई सम्मेलनों का भी आयोजन होगा। जिनमें आर्यसमाज के नेता सम्बोधित करेंगे।

—वेदप्रकाश आर्य मन्त्री

आर्यसमाज नारायणगढ़ जि० अम्बाला का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री डा० बेणीप्रसाद, उपप्रधान—चौधरीराम, विद्यालय प्रबन्धक—चमनलाल गुप्त, मन्त्री—रामनिरजन, प्रचारमन्त्री—चन्द्रपाल शास्त्री, कोषाध्यक्ष—वेदप्रकाश।

शराब पीना सामाजिक अभिशाप है।

शराबबन्दी प्रस्ताव का प्रारूप

सेवा में

मान‍नीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा
चण्डीगढ़

हमारे ग्राम—— ········ जिला ····· ········· पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक··· ··········· में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है। यह ग्राम सभा (पंचायत) शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत ही घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार को शराबबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दूकान तुरन्त बन्द की जावे और भविष्य में कदापि यहाँ शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाये, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दूकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

दिनांक··· ·· ······ ···

सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

इस प्रस्ताव की प्रतिलिपियां रजिस्ट्री द्वारा निम्न पते पर भेजे—

१. प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान हरयाणा चण्डीगढ़
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जि०······
५. जिलाधीश·········
६. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

सभा ने इस सामाजिक सुधार कार्य में सभी से सहयोग देने का अनुरोध किया है।

आर्य सरपंचों के नाम भेजें

हरयाणा के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि उन सरपंचों के नाम तथा २०) ब्लाक बनवाने के लिए उनके चित्र सहित भेजें जो आर्यसमाज के सभासद् हैं और शराब आदि का सेवन नहीं करते।

सभा के निश्चयानुसार इस प्रकार के आर्य सरपंचों का सभा की ओर से सम्मान किया जावेगा तथा ग्राम में शराबबन्दी प्रस्ताव करवाने में उनसे सहयोग प्राप्त किया जावेगा।

—प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

अपील

सब सज्जनों से निवेदन है कि जो आदमी धर्म से भ्रष्ट होगया, उसको दोबारा वापस शुद्ध करके वैदिकधर्म में दीक्षित हेतु धन और कपड़े की आवश्यकता है। जो लोग मध्यप्रदेश में आदिवासी ईसाई बन गये हैं, उनको दोबारा हिन्दू (आर्य) बनाने के लिए काफी धन की जरूरत है। इसके अतिरिक्त कपड़ा भी चाहिए। जो महानुभाव दान देना चाहें, वे नीचे लिखे पते पर भेजने की कृपा करें—

—सेवानन्द सरस्वती
हिन्दू शुद्धि संरक्षिणी समिति हरयाणा
आर्यसमाज मन्दिर समालखा, जिला करनाल

श्रावणी (रक्षा-बन्धन)

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

राखी का त्योहार है, भाई-बहिन का प्यार है।
चारों तरफ हरियाली छाई, आरही अजब बहार है॥

रंग-बिरंगी राखी सुन्दर, शोभा लगे कलाई में।
रक्षा-बन्धन स्वर्ग सलौना, हर्ष बहिन व भाई में॥
बहे प्रेम की धार है, खुशियों की बौछार है,
सखी-सहेली झूले झूला, गाती गीत मल्हार हैं॥ १

दादुर, मोर, पपीहा, कोयल, मीठा गान सुनाते हैं,
नभ घन की घनघोर, सभी पक्षीगण मन हर्षाते हैं,
मनमें खुशी अपार है, करें परस्पर प्यार है,
नन्हीं-नन्हीं बूंद पड़े और ठण्डी चले बहार है॥ २

यह ब्राह्मण त्योहार श्रावणी, सबके मनको भाया है,
वेद प्रवचन भजन कीर्तन, जग में नाद बजाया है,
तबला और सितार है, वीणा और गिटार है,
यज्ञादि शुभ श्रेष्ठ कर्म, ये वेदों के अनुसार है॥ ३

वेद ईश्वरी ज्ञान, वेद का पढना और पढ़ाना है,
वैदिक विचार व्यवहार नेक, छल घृणा द्वेष मिटाना है,
शुद्ध पवित्र विचार है, ऋषि की जय-जयकार है,
कहें स्वरूपानन्द, वेद ही विद्या का भण्डार है॥ ४

राखी का त्योहार है, भाई-बहिन का प्यार है।
चारों तरफ हरियाली छाई, आरही अजब बहार है॥

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज करोलबाग नई दिल्ली के सदस्य दानवीर व धर्मात्मा श्री दलीपसिंह आर्य व उनके परिवारजन श्री राकेशकुमार और सुरेन्द्र-कुमार के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर स्तब्ध रह गये हैं।

पारिवारिक क्षति के अलावा यह इतनी बड़ी सामाजिक क्षति है, जिसको पूरा करना बड़ा कठिन होगा।

इस दारुण दुःख में हम सब सहभागी हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि परिवारजन को यह दारुण कष्ट सहन करने का सामर्थ्य दे और दिवंगत जन को कर्मानुसार सद्गति दे।

—मन्त्री

वेदध्वजा लहरायें

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर, उ०प्र०

घनीभूत होगया धरणी पर, अज्ञान-अविद्या गूढ़-तिमिर।
लुप्त बसन्त हुआ धरती पर, आया है दुःखभरा शिशिर।
सत्यधर्म का लोप हो रहा, विकसित है अन्याय-अनय।
मानवता के शुभ तत्वों का, होता आज निरन्तर क्षय।
अनाचार व्यभिचारों का है, छाया जगती पर साम्राज्य।
दानवता का बढ़ता जाता, आज धरित्री पर है राज्य।
बढ़ा आ रहा है जन-जन का, सतत निरन्तर दारुण दुःख।
नहीं दिखाई देता भू पर, पहले जैसा स्वर्गिक सुख।
वेदमार्ग हमने है त्यागा, इसका एक यही कारण।
वेदपथों पर बढ़ें सभी हम, हो पायेगा तभी निवारण।
स्वाध्याय वेदों का करके, अपना हम कल्याण करें।
सर्वनाश के मुख में जाती जगती का हम त्राण करें।
वेदमार्ग का अनुयायी हो, सारा आज समाज हमारा।
सुख-समृद्धि-सफलता पूरित आह्लादित हो यह जग सारा।
धरती के अज्ञान तिमिर को, ज्ञान रश्मि से दूर भगायें।
मानवता उत्थान हेतु हम, भू पर वेदध्वजा लहरायें॥

A COMPREHENSIVE
HISTORY OF ARYASAMAJ
(In two vulumes)

सात भागों में आर्यसमाज का विस्तृत इतिहास सम्पादित व प्रकाशित करने का जो संकल्प हमने किया था, वह अब पूरा होगया है। इतिहास के सातों भाग प्रकाशित होगये हैं। अब हमारी योजना है कि अंग्रेजी भाषा में आर्यसमाज के इतिहास को प्रकाशित किया जाये, ताकि हिन्दी न जाननेवाले देश-विदेश के लोग भी इस महान् जन-आंदोलन के सम्बन्ध में समुचित जानकारी प्राप्त कर सकें। जिसने भारत में नवयुग का सूत्रपात किया और जो समस्त संसार को उन्नति तथा शांति का सच्चा मार्ग प्रदर्शित कर सकता है। 'आर्यसमाज का इतिहास' के अंग्रेजी संस्करण के लिए हम आर्य नरनारियों के सुझाव आमन्त्रित करते हैं, ताकि इस 'इतिहास' को हम पाठकों के लिये अधिक उपयोगी बना सकें।

हिन्दी में आर्यसमाज का जो इतिहास हमने प्रकाशित किया है, उसमें बड़े आकार के ५००० पृष्ठ हैं। आर्ट पेपर पर छपे चित्रों की पृष्ठ संख्या इसके अतिरिक्त है। सातों भागों के पूरे सेट का मूल्य केवल पांच सौ रुपये है। जो लागत से भी कम है। शुरु में प्रकाशित दो भाग अब समाप्ति पर हैं। अतः बाद में पूरे सेट को प्राप्त कर सकना कठिन हो जायेगा। सानुरोध निवेदन है कि इस 'इतिहास' के सातों भागों के पूरे सेट का आर्डर शीघ्र भिजवाने की कृपा करें। सभी आर्यसमाजों तथा शिक्षण-संस्थाओं के पुस्तकालयों में यह इतिहास अवश्य होना ही चाहिए। यह आर्यसमाज के विश्वकोष के समान है।

—सत्यकेतु विद्यालंकार, आर्य स्वाध्याय केन्द्र
ए-१/३२ सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली-११००२९

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४)
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73   पंजि० [illegible] DTK

पृष्ठ संख्या १,६६,०४,२३,०८



सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

१३ भाद्रपद २०४५ वि०

वर्ष १५, अंक ३२, ५ सितम्बर, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५०) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

हरयाणा की नव-निर्वाचित पंचायतों से अपील

शराब के ठेकों को बन्द करवाने के लिए ३० सितम्बर तक पंचायतों की ओर से प्रस्ताव हरयाणा सरकार के आबकारी विभाग को पहुंचने चाहियें।

मुझे ये सूचनायें मिल रही हैं कि जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं हैं, वहां पर भी पड़ोस के गांवों में खुले ठेकों के ठेकेदार ऊंटों, मोटर साइकिलों तथा अन्य वाहनों के द्वारा शराब की बोतलें अपने एजेण्टों के पास भेजते हैं और वे घर-घर पहुँचकर शराब बेचते हैं। जहां तक मेरी जानकारी है, यह कानून का उल्लंघन है, क्योंकि ठेकेदार अपने स्थान पर ही शराब बेच सकता है। आस-पास के गांवों में घर-घर जाकर उनके एजेण्ट नहीं बेच सकते हैं। सरकार को ऐसे कानून तोड़ने वाले ठेकेदारों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करनी चाहिए। इस बुराई से ग्रामीण लोग तभी बच पायेंगे, जब वे जागरूक हो जायें और इन कानून शिकनी के विरोध में भी आंदोलन करें। यही कारण है कि हम सभी ग्रामों में जहां ठेके हैं या नहीं हैं, प्रस्ताव पास करके राज्य के आबकारी विभाग के आयुक्त को भेजने के लिए अपील कर रहे हैं।

जिन ग्रामों में ठेके नहीं हैं, उनको सरकार का ध्यान उन ठेकेदारों के खिलाफ दिलाना चाहिए, जो अपने एजेण्टों के द्वारा उनके ग्रामों में शराब भिजवाते और बिकवाते हैं। ऐसे ग्रामों के लिये प्रस्ताव का प्रारूप दूसरा होगा। वह भी हम इस अंक में छाप रहे हैं।

मेरी सभी ग्रामों की पंचायतों से अपील है कि वे शीघ्र से शीघ्र अपने प्रस्ताव सरकार को भेजकर कमाऊ जनता की गाढ़े पसीने की कमाई को गन्दे पानी के लिए बहाने से रोकें। इस प्रकार वे अपने परिवारों और बच्चों महिलाओं आदि का जीवन सुखी बना सकेंगे। यह हम सबका परम कर्त्तव्य है। हम सबको यही मानकर चलना चाहिये।

दिल्ली प्रदेश के नशाबन्दी कार्यकर्त्ताओं ने वहां नशे के पदार्थ बेचनेवाली दुकानों पर अपने ताले लगा दिये, ताकि नशे की वस्तुओं की बिक्री बन्द हो सके। उन्होंने फिर अपने ताले की रखवाली भी की। उन का कार्यक्रम बहुत सफल रहा। धरने की सफलता में इससे बड़ी सहायता मिली।

जिन ग्रामों में प्रस्तावों के बावजूद यदि ठेका बन्द न हो तो अदालत में भी जा सकते हैं, कानून बहुत स्पष्ट है, दूकान बन्द करनी पड़ेगी। दूसरा रास्ता धरना और तालाबन्दी का है। इनकी तैयारी भी जनता को अभी से कर लेनी चाहिये।

निवेदक

प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं है तथापि वहां गैर-कानूनी ढंग से शराब बिकती है, निम्नलिखित प्रस्ताव ग्राम पंचायतें पास करके सरकार को भेजें।

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय

हरयाणा चण्डीगढ़

हमारे ग्राम..............जि०..............में शराब का ठेका नहीं है, परन्तु निकट के ग्रामों के ठेकों से शराब के ठेकेदारों के एजेण्ट गैर-कानूनी ढंग से ग्राम में खुल्लम-खुल्ला शराब बेचते हैं। इस प्रकार ग्राम में शराब पीनेवाले वातावरण को दूषित करते हैं। किसान मजदूरों की कमाई बर्बाद हो रही है। छात्रों पर भी इसका कुप्रभाव पड़ रहा है।

अतः हमारे ग्राम की पंचायत आपसे निवेदन करती है कि आगामी वर्ष में शराब का ठेका न खोला जाये और जो गैर-कानूनी ढंग से ग्राम में शराब बेचकर कानून का उल्लंघन करते हैं, उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करें तथा उन्हें कड़ी सजा देकर नाजायज शराब की बिक्री बन्द करने की कृपा करें।

दिनांक ....

ह० सरपंच तथा पंच

ग्राम पंचायत

आर्य सरपंचों के नाम भेजें

हरयाणा के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि उन सरपंचों के नाम तथा २०) ब्लाक बनवाने के लिए उनके चित्र सहित भेजें जो आर्यसमाज के सभासद् हैं और शराब आदि का सेवन नहीं करते।

सभा के निश्चयानुसार इस प्रकार के आर्य सरपंचों का सभा की ओर से सम्मान किया जावेगा तथा ग्राम में शराबबन्दी प्रस्ताव करवाने में उनसे सहयोग प्राप्त किया जावेगा।

—प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

शराब पीना सामाजिक अभिशाप है।

जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, आगामी वर्ष से ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा
चण्डीगढ़

हमारे ग्राम——·······जिला——·——·पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक···——·········में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है। यह ग्राम सभा (पंचायत) शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत ही घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की शराबबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब को दुकान तुरन्त बन्द की जावे और भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जायें, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

दिनांक··· ······ ···

सरपच तथा पंचों के हस्ताक्षर

इस प्रस्ताव की प्रतिलिपियां रजिस्ट्री द्वारा निम्न पते पर भेजें—

१. प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान हरयाणा चण्डीगढ़
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जि०······
५. जिलाधीश······
६. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

वेदप्रचार सप्ताह आदि के कार्यक्रम

आर्यसमाज सिरसा	७ से ६	,,
,, औरंगाबाद मित्रोल जि० फरीदाबाद	४ से १०	,,
सूर्य ग्रहण मेला कुरुक्षेत्र वेदप्रचार	९ से ११	,,
आर्यसमाज सेवासदन बल्लबगढ जि० फरीदाबाद	१०-११	,,
,, आजीदपुर साबोखो जि० सोनीपत	१६ से १८	,,
,, बीकानेर गंगायचा अहीर जि० महेन्द्रगढ़	१६ से १८	,,
,, झज्जर रोड रोहतक	१९ से २५	,,
,, शेखपुरा जि० करनाल	२३ से २५	,,
,, कोथकलां जि० हिसार	२३ से २५	,,
,, मतलोढ़ा मण्डी जि० जींद	२६ से २८	,,
आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ जि० रोहतक	२६ से २ अक्तूबर	
आर्यसमाज रेवाड़ी जि० महेन्द्रगढ़	३० से २	,,
,, कालवा जि० अम्बाला	२ से ६	,,
,, मैन बाजार बल्लबगढ जि० फरीदाबाद	८-९	,,
,, गन्नौर शहर जि० सोनीपत	१२ से १६	,,
कन्या गुरुकुल पंचगांव जि० भिवानी	२१ से २३	,,

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

यज्ञ और वृष्टि

—विवेकानन्द सरस्वती

आर्यजगत् के सुपरिचित सन्यासी श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज विज्ञान के एक योग्य विद्यार्थी के साथ-साथ योग्य अध्यापक भी रह चुके हैं।

८० वर्ष की आयु में भी आप अहर्निश आर्य सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार में लगे रहते हैं। विज्ञान के विद्यार्थी होने के कारण आप प्रत्येक वस्तु को स्थूल रूप से अर्थात् भौतिक दृष्टि से देखने के अभ्यासी हैं। अनेक विषयों पर कुछ नये चिन्तन देने के विचार से आप कहीं-कहीं ऋषि दयानन्द की मान्यताओं से भी बहुत दूर निकल जाते हैं, किन्तु जनता के समक्ष यह रखने का प्रयास करते हैं कि मैंने ही ऋषि दयानन्द को ठीक प्रकार समझा है। अस्तु।

अनेक बार बहुत से मित्रों ने मुझे स्वामी जी के मन्तव्य के बारे में बताया तथा उत्तर देने के लिए कहा, किन्तु मैंने इस ओर कुछ ध्यान नहीं दिया। अभी आर्यसमाज की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में 'यज्ञ और वृष्टि' शीर्षक से स्वामी जी का एक लेख प्रकाशित हुआ है। जिसमें स्वामी जी ने 'यज्ञ से वृष्टि नहीं होती है' यह सिद्ध करने का असफल प्रयास किया है। वैसे तो यह विषय वृहत् है और अब भी अनेक परीक्षणों की अपेक्षा रखता है, किन्तु स्वामी जी ने ऋषि दयानन्द को परम प्रमाण मानकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि यज्ञ से वृष्टि नहीं होती है और भी भौतिक विज्ञान से सम्बन्धित अनेक प्रमाण दिये हैं। उनकी प्रामाणिकता के बारे में तो स्वयं स्वामी जी महाराज साक्षी हैं। मैं तो लोगों को भ्रांति न हो जाये अतः भ्रांति निवारणार्थ केवल ऋषि दयानन्द जी के ही प्रमाण दूंगा। जहां उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि यज्ञ से वृष्टि होती है।

जिससे सर्वसामान्य जनता भ्रम में न पड़ जाये और श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी की भांति यज्ञ से वृष्टि होने को अन्धविश्वास या पाखण्ड न समझ ले। वे प्रमाण यजुर्वेद भाष्य के निम्नलिखित हैं—

१—स्त्री-पुरुषौ स्वयंवर विधायातिप्रेम्णा परस्परं प्राणप्रियाचरणं शास्त्रश्रवणमोषध्यादिसेवन कृत्वा 'यज्ञाद्वृष्टिञ्च कारयेताम्।

स्त्री पुरुषों को चाहिए कि स्वयंवर विवाह करके अति प्रेम के साथ आपस में प्राण के समान प्रियाचरण शास्त्रों का सुनना औषधि आदि का सेवन और यज्ञ के अनुष्ठान से वर्षा करावें। (यजुर्वेद भाष्य अध्याय १४, मन्त्र ८ में भावार्थ)

२—यथा सुसेविता गावो दुग्धादिदानेन सर्वान् सन्तोषयन्ति तथैव वेद्यां सञ्चिता इष्टका वृष्टिहेतुका भूत्वा वृष्ट्यादिद्वारा सर्वानानन्दयन्ति······।

जैसे अच्छे प्रकार सेवन की हुई गौ दुग्ध आदि के दान से सबको प्रसन्न करती है, वैसे ही वेदी में चयन की हुई ईंटें वर्षा की हेतु होके वर्षादि के द्वारा सब को सुखी करती हैं। (यजुर्वेद भाष्य अ० १७, मन्त्र २ में भावार्थ)

इन दोनों प्रमाणों से सिद्ध होता है कि ऋषि दयानन्द जी यज्ञ से वृष्टि होवें को मानते थे और उनको 'यज्ञ से वृष्टि होती है' इसमें आस्था भी थी।

हां, स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज की नहीं है, जैसा कि वे स्वयं लिखते हैं —'मेरी वृष्टि-यज्ञ में आस्था नहीं है,' यह उनका विचारस्वातन्त्र्य है। अनेकों लोग संसार में ऐसे हैं, जिनकी ईश्वर एवं धर्म तथा में आस्था में भी नहीं है, किन्तु उन्हें अपने विचारों को अन्य के ऊपर लपेटकर उसकी अशुद्ध व्याख्या करने का अधिकार नहीं है। कम से कम ऋषि दयानन्द जी महाराज को लपेटकर आर्य लोगों को भ्रांत करने का प्रयास तो स्वामी जी जैसे भद्र को शोभा नहीं देता। मैं आशा करता हूं कि स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज इन प्रमाणों को ध्यान देंगे और आर्यजनता को भ्रांत करने की सहज कृपा नहीं करेंगे।

ईसाई मत समीक्षा

—सोहनलाल अग्रवाल अधिवक्ता, जबलपुर

विगत अंक में हमने ईसाई मत की मूलाधार पुस्तक बाईबिल की उत्पत्ति पुस्तक पर्व तीन आयत नौ से तेरह के आधार पर यह दर्शाया था कि बाईबल की शिक्षाओं में प्रथम शिक्षा तमीज अर्थात् बुद्धि के वृक्ष के फल को न खाने की है।

ईसाई पादरी बाईबल को ईश्वरी सन्देश कहते नहीं थकते। दूसरे धर्मों के ग्रन्थों को वे ईश्वरी सन्देश नहीं मानते, परन्तु बाईबिल क्या है? यह देखें। अनुचित साहित्य अनाचार निरोध समितियां बाईबिल को पढे। जिन बातों के लिए स्त्री-पुरुषों को जेल की सजा दी गई है, बाईबिल में उनकी अपेक्षा कहीं अधिक घृणित बातें लिखी हैं। उत्पत्ति पुस्तक (जीनेसिस बुक) के १९वे से ३८वें अध्यायों में तो बहुत ही भद्दी बातें लिखी हैं। उन्हें आप स्वयं पढ़िये। 'पर्व १९ आयत नम्बर ३० से ३८ निम्न प्रकार है—(बाईबिल का पाठ)

३०—और लूत ने सोअर को छोड़ दिया और पहाड़ पर अपनी दोनों बेटियों समेत रहने लगा, क्योंकि वह सोअर में रहने से डरता था, इसलिये वह और उसकी दोनों बेटियां एक गुफा में रहने लगे। ३१—तब बड़ी बेटी ने छोटी से कहा हमारा पिता बूढा है और पृथ्वीभर में कोई ऐसा पुरुष नहीं जो संसार की रीति के अनुसार हमारे पास आये। ३२–सोआ हम अपने पिता को दाखमधु पिलाकर उसके साथ सोयें, जिस से कि हम अपने पिता के वंश को चलाये रखे। ३३—सो उन्होंने उसी दिन रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया, तब बड़ी बेटी जाकर अपने पिता के पास लेट गई, पर उसने न जाना कि वह कब लेटी और कब उठ गई। ३४—और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन बड़ी ने छोटी से कहा—देख कल रात को मैं अपने पिता के साथ सोई, सो आज भी रात को हम उसको दाखमधु पिलायें, तब तू जाकर उसके साथ सोना कि हम अपने पिता के द्वारा वंश उत्पन्न करें। ३५—सो उन्होंने उस दिन भी रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया और छोटी बेटी जाकर उसके पास लेट गई, पर उसको उसके भी सोने और उठने के समय का ज्ञान न था। ३६—इस प्रकार से लूत की दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भवती हुई। ३७—और बड़ी एक पुत्र जनी और उसका नाम मोआब रखा। वह मोआब नाम जाति का जो आज तक है, मूल पिता हुआ। ३८—और छोटी भी एक पुत्र जनी और उसका नाम बेनम्मी रखा, वह अम्मोन् वंशियों का जो आज तक है, मूल पिता हुआ।

इस पाठ को पादरी न स्वयं पढ़ना चाहते हैं और न अपने परिवारों में पढ़ सकते हैं। वह चाहते हैं कि विश्व के मानव भी इस कथा को न पढें। चूंकि हम बाईबिल की समीक्षा में कुछ सामग्री बाईबिल के शब्दों में प्रस्तुत करना चाहते हैं सो इस कथा को न चाहते हुए भी प्रस्तुत करते हैं—

यदि आप इस अनैतिक पुस्तक में इसी प्रकार की और घटनायें पढ़ना चाहते हैं तो इसी उत्पत्ति पुस्तक के १६, २६, २९, ३०, ३४ और ३९वें अध्याय। शमूएल २५, २ शमूएल, ११ और १३ और न्यायियों का वृत्तांत १९ अध्याय भी पढ़े। रुत और एस्तेर पुस्तकें तथा सोलोमन के भजन नैतिक होने की अपेक्षा अधिक मनोरंजक हैं। यदि ये पुस्तकें और अध्याय बाईबिल में न होते तो ईसाई इनकी निन्दा करते। आप लैव्य व्यवस्था १५, १६ से ३३ यशायाह ३६ : १२ और यहेजकेल ४, १२-१५ भी पढ़ जाइये। हमनें स्थानीय बाईबिल समिति के अधिकारियों से कहा कि जब पूर्व पश्चिम में बाईबिल के ऐसे पाठों की निन्दा होती है तो इन अंशों को बाईबिल से निकाल क्यों नहीं देते। उत्तर था कि यह कैसे सम्भव है! महर्षि दयानन्द ने भी सत्यार्थप्रकाश के तेरहवें समुल्लास के पैरा २२ में लिखा है 'कि पिता पुत्री भी इस मद्यपान के नशे में कुकर्म करने से न बच सके। ऐसे दुष्ट मद्य को जो ईसाई आदि पीते हैं, उनकी बुराई का क्या पारावार है? इसलिए सज्जन लोगों को मद्य के पीने का नाम भी नहीं लेना चाहिए।' इसी लूत को पैगम्बर भी माना गया है। यदि इनके पैगम्बर ऐसे दुराचारी हैं तो इनके समाज में क्या नहीं होता होगा। उत्पत्ति पुस्तक पर्व २१ 'सो यहोवा (परमेश्वर) ने जैसा कहा था, वैसा ही सारा की सुधि लेके उसके साथ अपने वचन के अनुसार किया। सो सारा को इब्राहीम से गर्भवती होकर उसके बुढ़ापे में उसी नियुक्त समय पर जो परमेश्वर ने उससे ठहराया था, एक पुत्र उत्पन्न हुआ।'

इसमें विशेष बात यह है कि सारा और इब्राहीम दोनों सौ-सौ वर्ष के थे और प्रजनन क्रिया में असमर्थ थे। ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि 'अब विचार कीजिये कि सारा से भेंटकर गर्भवती किया, यह काम कैसे हुआ। क्या बिना परमेश्वर और सारा के कोई गर्भस्थापन का कारण दीखता है? ऐसा विदित होता है कि सारा परमेश्वर की कृपा से गर्भवती हुई। बाईबल का ईश्वर यही करता है। हजरत ईसामसीह भी परमेश्वर से ही माता मरियम के पेट से पैदा हुआ। यही उनका प्रथम सिद्धांत है जो अत्यन्त महत्त्व का है। ईसाई लोग चाहते हैं कि पूरा मानवसमाज ईसामसीह को सभी पापों से मुक्तिदाता स्वीकार करे। अतः उसी की शरण में पहुँचे, ये एक बड़ा भारी कपट है। कपटों से कुछ लोगों को तो सब समय के लिए बेवकूफ बनाया जा सकता है। सभी लोगों को कुछ समय के लिए, परन्तु सभी लोगों को सभी समय के लिए नहीं बनाया जा सकता। ईसाई पादरियो के पापों का घड़ा भर गया है और अन्ततः फूटेगा ही। ईसाई धर्म के घर माने जानेवाले देशों के नागरिक ईसाई धर्म को छोड़कर भारतीय सभ्यता को ग्रहण करते जारहे हैं।

श्री जी॰ एस॰ हिरण्यप्पा ने एक पुस्तक हिन्दू डस्टिनी इन नोस्टाडामस लिखी है। नोस्टाडामस एक फ्रांसीसी भविष्यवक्ता की १५५५ ए॰ डी॰ की लिखी पुस्तक में ईसाई धर्म इसके पोपों तथा ईसाई पादरियों के चरित्र पर काफी प्रकाश डाला है। श्री हिरण्यप्पा ने ईसाइयत को धोखे तथा अंधविश्वास पर खड़ा किया हुआ मत बताया है। जिसका अन्त १९९९ ई॰ में हो जावेगा। उसनें लिखा है कि बहुत से पोप चरित्रहीन थे और बलात्कार के दोषी थे। पोप लिओ-७ (९६३-९६५ ए॰ डी॰) एक विवाहिता स्त्री के साथ सम्भोग करते हुए ही एक आघात से मर गये। पोप अलेक्जेन्डर (१४३१-१५०३) भी जनाहकार थे और वेश्याओं की महफिलें लगाते थे। खूब शराब उडती थी और सभी कुछ होता था। लिखते हुए शर्म आती है। श्री हिरण्यप्पा लिखते हैं कि अमेरिकन उपन्यासकार नैथिनल हाथोरन अपने विश्वविख्यात उपन्यास द॰ स्कारलट लैटर में ईसाई पादरियों के जीवन का वर्णन करते हुए लिखते हैं—

पादरी महोदय अपने गिरजे के सदस्य की पत्नी को बहकाकर उस के साथ भोग करते रहते हैं। बेचारी स्त्री उस पादरी से गर्भवती हो जाती है तो पादरी महोदय अपना अपराध स्वीकार करने की बजाये स्वयं को अत्यन्त विस्मित दर्शाते हैं। बेचारी स्त्री को ही अपराधी ठहरा करके उसको अपनी गुनाहगारी दर्शाने का लाल चिह्न (स्कार्लेट) अपनी छाती पर पहनने के वास्ते बाध्य करते हैं। श्री हिरण्यप्पा लिखते हैं कि सम्भव है ईसामसीह भी इसी प्रकार उत्पन्न हुए थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने जीवन-चरित्र 'कल्याण मार्ग का पथिक' पृष्ठ ३४-३५ पर प्रत्यक्ष दृष्टांत ईसाई पादरी फादर लिफोंग तथा एक ननका बताया है। अंग्रेजी की प्रसिद्ध पत्रिका टाइम्स आफ इंडिया के २५-७-८८ के अंक में केरला प्रदेश के क्विलोन सत्र न्यायाधीश द्वारा ४९ वर्षीय फादर एन्टोनी को फांसी का दण्ड दिया है। उसका अपराध कुमारी मर्यकुट्टी से अवैध प्यार का सम्बन्ध जमाकर उससे विवाह कर लेने का झांसा देते हुए उससे भोग करता रहा। पादरी लड़की को तथा उसके माता-पिता को रुपया भी देता रहा। यह भी विश्वास उसने दिया कि वह पादरी का धन्धा छोड़ देगा, परन्तु उसने न पादरी-शिप छोड़ी, न उस लड़की के साथ भोग। दिनांक १४-८-८५ को लड़की की शादी लजर मिरण्ड से होगई। अब पादरी महोदय लड़की से रुपया मांगने लगा। जज महोदय ने निर्णय में लिखा है कि पादरी विषधारी सर्प बन गया। लड़की से रुपया न मिलने पर पादरी ने आठ गुण्डों द्वारा लड़की को उसके घर में मरवा डाला। यह प्रकरण न्यायालय में तीन माह चला। जज महोदय ने ऐसे धोखेबाजों की कड़ी निन्दा

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य भारत के मूल निवासी थे

'आर्य कालासागर से आये थे' इस शीर्षक से एक समाचार नव भारत टाइम्स में २६ अप्रैल के अंक में छपा था। इस समाचार का सप्रमाण खण्डन करता हुआ यह आचार्य ब्रह्मानन्द द्विवेदी का लेख पढ़िये।

वेद में आये आर्य और दस्यु शब्द जातिवाचक नहीं, बल्कि गुण-वाचक है। इनके मूलार्थ को न जानकर या जान-बूझकर पाश्चात्य विद्वानों ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि आर्य लोग भारत के मूल निवासी नहीं हैं। कुछ तर्क व साक्ष्य ऐसे हैं, जो सिद्ध करते हैं कि आर्य भारत के मूल निवासी रहे।

१) वैदिक साहित्य प्राचीनतम साहित्य है। यदि आर्य भारत के अतिरिक्त कहीं से भी आये तो वहां उनका साहित्य क्यों नहीं प्राप्त है।

२) ऋग्वेद में प्राप्त भौगोलिक संकेत यह बताते हैं कि आर्य मूलतः पंजाब के आसपास के रहनेवाले थे।

३) एक देश का परित्याग कर अन्यत्र जाने पर भी शताब्दियों तक मूल स्थान की स्मृति रहती है, परन्तु वैदिक आर्यों की अपने मूल स्थान की स्मृति नहीं है। सदा से ही इसी देश को अपना समझते आये हैं।

४) यूरोप की किसी भी भाषा में आर्य शब्द का कोई विकृत रूप देखने में नहीं आया. यदि भारत के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं स्थान आर्यों का होता तो आर्य से मिलता-जुलता कोई शब्द अवश्य होता।

५) संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी कही गई है। दक्षिण भारत की भाषाओं में ७५ से ८५% शब्द संस्कृत के हैं। यदि संस्कृत बाहर से आकर यहां बसानेवाले आर्यों की भाषा होती तो उनके आने से बहुत पहले बसे हुए यहां के मूल निवासियों की भाषा में उपर्युक्त प्रतिशत शब्द कहां से आगये?

६) कुछ वर्ष पूर्व यूनेस्को के तत्वावधान में होनेवाली गोष्ठी में भारत सरकार का प्रतिनिधित्व करनेवाले सात सदस्यीय दल ने एक मत से आर्यों के ईरान से आकर भारत में बसने की मान्यता का प्रतिवाद किया था।

७) सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ने इस भ्रमात्मक विषय के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होंने घोषणा की किसी भी संस्कृत ग्रन्थ या इतिहास में नहीं लिखा है कि आर्य लोग ईरान से आये और यहां के मूलवासियों से लड़कर स्थापित हुए। पुनः विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है?

८) पाश्चात्य विद्वान् म्यूर ने कहा है—यह निश्चित है कि किसी भी संस्कृत ग्रन्थ में चाहे वह कितना ही पुराना क्यों न हो, आर्यों के विदेश मूलक होने का उल्लेख नहीं मिलता। ऋग्वेद में जिन दास दस्यु एवं असुर जैसे नामों का उल्लेख है, वे अनार्यमूलक अर्थात् आदिम जातियों के लिए प्रयुक्त किये गये हैं। इस प्रकार कोई प्रमाण तथा संकेत उपलब्ध नहीं है। देखें (ओरिजिनल संस्कृत टेक्स्ट वाल्यूम द्वितीय म्यूर)

९) विश्वविद्यालय इतिहासविद एल्फिन्सटन के कथनानुसार मनु स्मृति, न वेदों में या अन्य प्राचीन किसी ग्रन्थ में (भारत आने से पूर्व) आर्यों के भारत से बाहर अन्य किसी देश में रहने का उल्लेख नहीं है। (देखें हिस्ट्री आफ इण्डिया वाल्यूम प्रथम—एल्फिस्टन)

१०) डी० ब्यूलो जैसे पुरातत्ववेत्ता जो विश्वविख्यात हैं उन्होंने लिखा है कि आर्यों के भारत पर आक्रमण की मान्यता का न कोई प्रमाण है और न इसे पुरातत्व की सहायता से सिद्ध किया जा सकता है। (देखें—'द अर्ली आर्यन्स' कल्चरल हिस्ट्री आफ इण्डिया में प्रकाशित सम्पादक ए० एल० बशम प्रकाशक—क्लारन्डन प्रेस आक्सफर्ड १९७५)

आश्चर्य की बात यह है कि कुछ भारतीय विद्वानों का मत है कि आर्य उत्तरी ध्रुव से ईरान से भारत पहुंचे, परन्तु ईरान के स्कूलों में पढ़ाया जाता है कि आर्य भारत से आकर ईरान में बस गये।

उपर्युक्त तर्क में तथ्यों के अनुसार इतिहास का सत्य रूप स्पष्ट होना चाहिए। अन्यथा भारत क्या था, क्या है, कैसा होगा, यह एक प्रश्न बनता रहेगा।

(नवभारत टाइम्स २३-५-८८)

मांस निर्यात को प्रोत्साहन की नीति घातक

स्टेट बैंक आफ इंडिया, बम्बई के महाप्रबंधक सुलेमान राज के नाम पत्र

प्रिय श्री राज जी,

फाइनेंस एक्सप्रेस के २३ जुलाई के प्रकाशन में एक समाचार पढ़कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि भारतीय स्टेट बैंक इस बात के लिए बढ़ावा देगी कि देश से मांस का निर्यात ७५ करोड़ रु० से बढ़ाकर एक हजार करोड़ रु० सालाना कर दिया जाये।

आप जानते हैं कि मांस का निर्यात अधिकतर अरब देशों को किया जाता है। जिन्हें गाय का मांस ही अधिक पसन्द है। मुझे पता नहीं कि एक हजार करोड के मूल्य के मांस के लिए कितनी गाय, भैंसे व बछड़े काटे जायगे, लेकिन यह संख्या करोड़ों नहीं तो कम से कम लाखों में तो होगी ही।

आपने एक सरल-सी बात सोच ली कि देश को विदेशी मुद्रा की आवश्यकता है, इसलिए मांस के निर्यात को बढ़ावा मिलना चाहिए, लेकिन क्या आपने सोचा कि यह किसका मांस होगा और क्या उस पशु धन से देश को कई गुना अधिक आमदनी नहीं मिल सकती है। कुछ समय से मेरा सम्पर्क श्री एन० डी० पांढरीपाडे, कुमारप्पा गो गोबरधन केन्द्र, पुसद (महाराष्ट्र) से हुआ है, जो कि पिछले २५ वर्षों से गाय के गोबर पर अनुसंधान कर रहे हैं और उन्होंने हिसाब लगाया है कि जितना गोधन हमारे पास में है और केवल रात्रि का गोबर यदि इकट्ठा करे तो इसकी मात्रा ४० करोड़ टन होगी।

'नेडेप विधि' से यदि खाद बनाते हैं तो एक किलो गाय के गोबर से ४० किलो खाद मिलती है और इस विधि के लिए यदि हम १० करोड़ टन गोबर का व्यवहार करें तो साढ़े तीन सौ चार सौ करोड़ टन कैम्पोस्ट खाद मिलेगी। इस खाद की कीमत यदि २५-३० पैसे प्रति किलो भी जोड़ी जाये तो इससे गांववालों को करीब एक लाख करोड़ रु० की खाद उपलब्ध होगी। वैसे तो इस खाद के बनाने में कोई बाहर का सामान नहीं चाहिये, पर यदि अपनी मजदूरी, कूड़ा-करकट आदि का भी दाम छोड़ें तो भी ५०-६० हजार करोड़ का लाभ ग्रामवासियों को होगा। जो मजदूरी आदि के पैसे निकालें वे अलग। नेफेप काका ने गोबर का फ्लुराज प्लास्टर, धूपबत्ती, अगरबत्ती, अंगराग (साबुन) आदि भी बनाये हैं और इन विधियों से देश को करीब २ लाख करोड़ का उत्पादन मिल सकता है।

गाय के और कितने लाभ हैं इसका आर्थिक मूल्यांकन करना बहुत कठिन है, लेकिन एक छोटा-सा उदाहरण मैंने केवल गोबर के व्यवहार का दिया है और इसके पश्चात् भी करीब १० करोड़ टन गोबर बचा रहेगा, जो उपले तथा अन्य व्यवहार के लिए होगा। अतः आपसे अनुरोध है कि इस विषय को संकीर्ण दृष्टि से न देखें, बल्कि एक व्यापक रूप से विचार करें, ताकि देश की आर्थिक दशा सुधरे, गांव की उन्नति हो न कि बिगड़े। मुझे आशा है कि इस विषय पर पूरी जानकारी लेने के पश्चात् ही आप कोई आगे कार्य करेंगे, अन्यथा यह देश के लिए बहुत बड़ा दुर्भाग्य होगा और जिसके जिम्मेदार आप और आपके बैंक होंगे।

—लक्ष्मीनारायण मोदी

राष्ट्र-निर्माण विचार समिति डी-३८, पम्पोस ऐनक्लेव,

नई दिल्ली-११००४८

(गोधन से साभार)

हरयाणा में श्रावणी-पर्व (रक्षा बन्धन तथा समता दिवस सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार २७ अगस्त से ३ सितम्बर तक श्रावणी पर्व (रक्षा-बन्धन) तथा समता दिवस हरयाणा-भर में उत्साहपूर्वक मनाया गया।

१—दयानन्दमठ रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा दयानन्दमठ रोहतक की ओर से २७ अगस्त से ३ सितम्बर तक प्रतिदिन प्रातः यज्ञ, भजन तथा वेद प्रवचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री जयपाल आर्य बेघड़क की मण्डली के गीत तथा श्री वेदप्रकाश साधक, श्री अर्जुनदेव आर्य तथा म० भरतसिंह वानप्रस्थी ने श्रावणी पर्व (रक्षा-बन्धन) पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

३ सितम्बर को प्रातः समता दिवस हवन यज्ञ के साथ आरम्भ हुआ। श्री रोहताशकुमार आर्य तथा उनके साथी हरिजन नवयुवकों को यज्ञोपवीत दिये गये। इसके पश्चात् श्री जतपालसिंह बेघड़क की मंडली ने योगिराज कृष्ण तथा समता दिवस पर प्रभावशाली गीत सुनाये। इस अवसर पर यजमान सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुवीरादेवी आर्या थी। दो दिन पूर्व सभा के कोषाध्यक्ष श्री बद्रीप्रसाद आर्य भी यजमान बने थे। श्री वेदप्रकाश साधक तथा श्री भरतसिंह वैद्य ने उपस्थित नर-नारियों को योगिराज श्रीकृष्ण के गुणों को धारण करने की अपील की तथा अपने पिछड़े हुए हरिजन भाइयों को अपने बराबर समझते हुए उन्हें समान अधिकार देवें। जात-पात तथा छुआछूत समाप्त होनी चाहिए। आर्यसमाज ने आरम्भकाल से ही सभी के साथ समान व्यवहार किया है। हरिजन भाइयों को आर्यसमाज में उच्च पदों पर आसीन किया है। कभी किसी से भेदभाव नहीं किया। योग्यता के अनुसार सभी का सम्मान करना हमारा कर्तव्य है। कार्यवाही समाप्त होने से पूर्व श्री रोहताशकुमार आर्य ने सभी उपस्थित नर-नारियों को यज्ञशेष रूप में लड्डू वितरित किये।

इस कार्यक्रम को आकाशवाणी केन्द्र से ३ सितम्बर की रात्रि को हरयाणा दर्शन में प्रसारित किया गया।

समता दिवस पर सुनाया गया भजन

ले०—पृथ्वीसिंह बेधड़क

टेक—जब जनता के बीच कहो, कोई भी सपीच कहो।
किसी को मतना नीच कहो, यह दयानन्द ने बतलाई॥

हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई और आर्य भाई,
सभी ईश्वर के बेटे पोते बहन बेटियां भाई,
किसी ने चोटी कटवाई, किसी-किसी न कटवाई,
मुर्दे कोई जलाता है, कोई भूमि में दफनाता है,
और जल में कोई बहाता है, यह काम तुम्हारा है भाई।१

हमने ही हिन्दू, हमने ही जात बनाई हैं,
हमने ही ब्राह्मण भंगी बनिया, हमने जाट बनाये हैं,
हमने सब ठाठ बनाये हैं, हमने ही सब घाट बनाये हैं,
छोटा मोटा बनाया धोबी का, जो ड्राईवर तांगा बुग्गी का,
शोभाराम जोगी का, सुखपाल करोंदे का नाई।२

हमने ही मन्दिर, हमने ही मस्जिद मक्का खुदा का बनवाया,
यह पागलपन सभी हमारा, नहीं खुदा ने बतलाया,
वह सर्वव्यापक कहलाया है कण-कण में उसकी माया,
मुल्ला पुजारी और पण्डे, यह सब झगड़ों के हथकण्डे,
आपस में बजवाते डण्डे, यह कितनी है मूर्खताई।३

लुहार बने पांचाल ब्राह्मण और खाती धीमान बने,
[illegible] को कौन कमाई यह कितने नादान बने,
जो कभी देश की शान बने, जिनके घर रोज विमान बने,
शुद्ध भाव से मेरा सन्देशा, जाति बनगी जो था पेशा,
याद रखिये भाई हमेशा, पृथ्वीसिंह की कविताई।४

प्रस्तुतकर्ता—श्री जयपाल आर्य, सभा भजनोपदेशक

जन्माष्टमी पर आर्यसमाज ने 'समान अधिकार दिवस' मनाया

—विनोद पांचाल

पानीपत ४ सितम्बर : आज यहां आर्यसमाज बड़ा बाजार में जन्माष्टमी के पर्व पर 'समान अधिकार दिवस' मनाया गया। जिसमें नगर के लगभग ६५ हरिजन पुरुष एवं महिलाओं को यज्ञोपवीत दिया गया। इसमें नगर के सभी समुदायों के लोगों ने भारी संख्या में भाग लिया। यज्ञोपवीत श्री धर्मपाल शास्त्री ने दिये।

आर्यसमाज के मन्त्री श्री राममोहनराय एडवोकेट ने समारोह में उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए कहा कि आर्यसमाज एक आंदोलन है। जो हरिजनों के उद्धार का सबसे बड़ा पक्षधर है। ऐसा इसलिए है कि इसके दो सिद्धांत हैं—पहला कि परमात्मा की सभी एक समान सन्तान हैं—दूसरे किसी भी व्यक्ति का परिचय उसके जन्म से नहीं, बल्कि उसके गुण, कर्म एवं स्वभाव से होता है।

उन्होंने पुरी के शंकराचार्य की आलोचना करते हुए कहा कि चाहे वह किसी भी बड़ी गद्दी पर बैठा हो, अगर वह आर्यजाति को तोड़ने का प्रयास करेगा तो आर्यजाति उसका डटकर मुकाबला करेगी।

जो आंदोलन स्वामी दयानन्द जी ने शुरु किया और जिसके चलते स्वामी श्रद्धानन्द, भक्त फूलसिंह ने अपने प्राणों का बलिदान दिया। उसी दलित उद्धार के आंदोलन को जारी रखा जायेगा।

श्री राय ने कहा कि आर्यसमाज किन्ही कर्मकांडों की संस्था नहीं है, अपितु पाखण्ड, ऊंच-नीच और छुआछूत के विरुद्ध महर्षि दयानन्द द्वारा चलाया गया एक मिशन है। इस अवसर पर स्थानीय आई० बी० कालेज के प्रवक्ता डा० ओमपाल ने भी भाषण दिया।

केन्द्रीय हरिजन सेवक संघ के नेता श्री प्रकाश भाई ने कहा कि आज भारत गुटनिरपेक्ष आंदोलन का अगुवा है तथा दक्षिण अफ्रीका में वहां के रंगभेदवादी नीति का सख्त आलोचक है। यदि इसी प्रकार की भेदभाव की नीति भारत में होती है तो वह भारत की प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचाना होगा।

श्री प्रकाश भाई ने इतिहास के अनेकों उदाहरण देकर बताया कि किस प्रकार शूद्र महाब्राह्मण कहलाये, मतंग पराशर चांडाल पुत्र होकर महर्षि कहलाये, महर्षि वेदव्यास मल्लाह के पुत्र थे।

इस अवसर पर स्थानीय खादी आश्रम के मन्त्री श्री सोमदत्त वेदालंकार ने कहा कि हरिजनों को ऊपर उठाने का एकमात्र साधन यह है कि हम उनके कार्यों से स्वयं को जोड़ लें, ताकि आर्थिक दृष्टि से वह सुदृढ़ होकर स्वाभिमान से जी सकें। स्थानीय पालिका के प्रधान चौ० नीतिसेन भाटिया ने आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा दलितों के उद्धार के समस्त कार्यों में अपना पूरा सहयोग देने का आर्यसमाज को आश्वासन दिया।

चौ० सतवीरसिंह कादियान विधायक ने इस अवसर पर कहा कि मात्र आर्यसमाज ही देश में फैली कुरीतियों को दूर कर सकता है। आज यदि कोई कुरीतियां सिर उठा रही हैं तो उसकी समाप्ति के लिए आर्यसमाजियों को मिटाने का संकल्प लेना चाहिए।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सतीधर्म हिन्दूधर्म की रीढ़ है, को जब्त किया जाये

—इन्द्रजीतदेव, यमुनानगर

सन् ८७ में ७३ दिन की भूख हड़ताल के बाद गोहत्या पर प्रतिबंध लगवाये बिना जिस प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ने फलों का रस पीकर गोमाता की पीठ तोड़ दी थी, उसी प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ने सतीधर्म की रीढ़ तोड़ने का बीड़ा उठाते हुए एक पुस्तक लिखी है—'सतीधर्म हिन्दूधर्म की रीढ़ है।' इस पुस्तक में प्रभुदत्त ने पुराणों, श्रीमद्भागवत व निर्णय सिन्धु जैसे अवैदिक ग्रंथों के आधार पर सिद्ध करने की कुचेष्टा की है कि पति की मृत्यु के पश्चात् उसकी विधवा को चिता में जल जाना हिन्दू धर्म है। सुलोचना, माद्री आदि कुछ उदाहरण भी दिये गये हैं।

सुलोचना के द्वारा अपने पति मेघनाथ की चिता में जल मरने का वर्णन न वाल्मीकि रामायण में है और न तुलसीदास कृत 'राम चरित मानस' में है। रामलीलाओं के माध्यम से यह घटना समाज के गले में मढ़ी गई प्रतीत होता है अन्यथा इतिहास से इसका तनिक भी सम्बन्ध नहीं है। पांडु पत्नी माद्री अवश्य जल मरी थी, परन्तु पांडु की पहली पत्नी कुन्ती क्यों नहीं जली थी? दशरथ की मृत्यु पर कौशल्या, सुमित्रा कैकेयी में से एक भी रानी अपने पति के शव के साथ चिता में नहीं जली। मन्दोदरी, तारा, रुक्मणी, उत्तरा कौरवों की एक भी पत्नी क्यों अपने पतियों क्रमशः रावण, बाली, कृष्ण, अभिमन्यु की मृत्यु पर उनके साथ सती न हुई थीं। माद्री जैसा कोई उदाहरण अपवाद रूप में है भी तो उसे सिद्धांत नहीं माना जा सकता। मुस्लिम काल में राजपूत रानियां अवश्य जौहर में कूद गई थीं, परन्तु वह भी पुरुषों की अकर्मण्यता, चरित्रहीनता व वीरता पर नारी के अविश्वास का द्योतक है, न कि धर्म का अंग है। उस काल की ऐसी विवश घटनाओं को अपना आदर्श मानना किसी भी समाज के लिए श्रेयस्कर नहीं है।

प्रभुदत्त ब्रह्मचारी यह भी लिखते हैं कि पुराण तो वेदों से भी पूर्व के हैं। वेद संसार की सबसे पुरानी पुस्तक है। इस तथ्य को देश-विदेश के सभी विद्वानों ने स्वीकार किया है। पुराणों में वेदों की चर्चा यत्र-तत्र हुई है, इसे प्रभुदत्त झुठला नहीं सकते। इसके विपरीत वेदों में पुराण तो क्या, किसी अन्य पुस्तक का भी वर्णन नहीं है। केवलमात्र इसी तथ्य के आधार पर सिद्ध होता है कि सभी पुस्तकों से पूर्व में यदि कोई ज्ञान था तो वह वेद ही था। बाद में रचित पुस्तकों में ही पूर्व रचित पुस्तकों का वर्णन हो सकता है, न कि पूर्व रचित पुस्तकों के बाद में लिखी पुस्तकों का वर्णन हो सकता है।

प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ने यह पुस्तक लिखकर सती निरोधक कानून १९८७ का खुल्ला मजाक ही नहीं उड़ाया, सतीप्रथा को महिमा मण्डित करने के प्रयास में उक्त कानून की अवमानना भी की है। जो सरकार निरंजनदेव तीर्थ के विरुद्ध आज तक कोई कार्यवाही नहीं कर सकी, वह सरकार प्रभुदत्त ब्रह्मचारी व उनकी उक्त पुस्तक के प्रकाशक को गिरफ्तार करेगी, यह दुराशा ही समझनी चाहिए, परन्तु उक्त पुस्तक को जब्त तो किया ही जाना चाहिए।

आर्यसमाज लोहारु जि. भिवानी का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री मा० अमरसिंह, उपप्रधान—म० शिवलाल, मा० गुगनसिंह आर्य, मांगेराम आर्य, मन्त्री—रोहताशकुमार आर्य, उपमन्त्री—सूरतसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—भरतसिंह शास्त्री, पुस्तकाध्यक्ष—सत्यदेव आर्य, हवासिंह आर्य, लेखानिरीक्षक—मा० चन्दनसिंह।

आर्यसमाज सरस्वती विहार दिल्ली-३४ का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री दयानन्द वर्मा, उपप्रधान—ओम्प्रकाश आनन्द, वेदप्रकाश बंसल, मन्त्री—श्यामलाल, प्रचारमन्त्री—चन्द्रभानु गुप्त, पुस्तकाध्यक्ष—बी० एल० सेठी, सम्पत्ति प्रबन्धक—ईश्वरदासकुमार।

(पृष्ठ ३ का शेष)

की है और दूसरे ऐसे कर्म न करें। इसलिए कड़ी से कड़ी सजा दी है। इस निर्णय को प्रकाशित करते हुए इस समाचारपत्र ने दो अन्य ऐसे अपराधों का भी वर्णन किया है। १९६६ में फादर बेनिडिक्ट को भी क्विलोन के सत्र न्यायाधीश ने मरियाकुट्टी ४३ वर्षीया के साथ भोग का सम्बन्ध स्थापित करते हुए उसे मार देने पर फांसी का दण्ड दिया था। उस प्रकरण में अपराधी उच्च न्यायालय से दोषमुक्त होगया था।

सन् १९८४ में फादर जार्ज चेरियन उपनाम रवि ने १७ वर्षीया श्रीमती जोली के साथ उसके होस्टल के कमरे में बलात्कार की चेष्टा की। तदुपरांत फादर ने जोली का खून कर दिया। क्विलोन सत्र न्यायाधीश ने रवि को उमर कैद का दण्ड दिया था। प्रकरण में अब उच्च न्यायालय के समक्ष है।

प्यारे पाठकवृन्द! बाईबिल में लिखी ऐसी घृणित करतूतों तथा ऐसे अनन्त सम्भव प्रकरणों से ईसाई पादरियों की भोग लिप्सा की कितनी अविवाहित विवाहित स्त्रियां शिकार हुई होंगी, इसका तो अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

ईसाई भाइयों को चाहिये कि अपने पादरियों से होशियार रहें। इसी सद्भावना से चन्द शब्द उन्हीं के हिताय प्रकाशित किये जाते हैं।

(पृष्ठ ५ का शेष)

समारोह की अध्यक्षता कर रहे विधायक एवं हरयाणा अर्पेक्स के अध्यक्ष श्री मनफूलसिंह वाल्मीकि ने कहा कि प्रभु ने ऊंच-नीच छुआछूत का भेदभाव नहीं बनाया है, परमात्मा की ओर से सभी जन समान हैं।

उन्होंने कहा कि यदि महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज न होता तो आज हरिजन जो सिर उठाये खड़े हैं, वह सिर न उठा पाते।

उन्होंने आगे बताया कि यह आर्यसमाज के ही कार्यों का परिणाम है कि आज प्रशासनिक सेवाओं में कई उच्च पदों पर अधिकांश हरिजन भाई हैं।

इस अवसर पर हरयाणा साहित्य अकादमी के अध्यक्ष एवं भाजपा नेता पं० अमरनाथ शास्त्री हरयाणा आयुर्वेदिक बोर्ड के चेयरमैन डा० महिन्द्रकुमार रंजन, पूर्व भाजपा विधायक श्री फतेहचन्द विज, स्वामी धर्मानन्द जी, ब्रह्मचारी रामस्वरूप एवं नागरिक मंच के अध्यक्ष श्री महेशदत्त शर्मा उपस्थित थे।

(शेष समाचार आगामी अंक में)

(विश्व मानव से साभार)

श्री दलीपसिंह आर्य के निधन पर शोक प्रस्ताव

श्री डा० दलीपसिंह जी आर्य पानीपत पूर्वप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वर्गवास पर श्री धर्मवीर शास्त्री ने शोक प्रस्ताव रखा तथा बतलाया कि लालाजी आर्यसमाज के सुदृढ़ स्तम्भ ऋषि के अनन्य भक्त, कर्मठ विद्याप्रेमी तथा दानी महानुभाव थे। उनके निधन से आर्यसमाज को अपूरणीय क्षति हुई है। अतः हम सभी उनके सम्मान में दिवंगत आत्मा की शांति के लिए उठकर दो मिनट का मौन रखेंगे, ऐसा ही किया गया। सभी आर्य सभासदों ने खड़े होकर मौन धारण किया तथा मन ही मन परमपिता परमात्मा से विनती की कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे तथा उनके परिवार व सभी आर्यों को सहन शक्ति प्रदान करे तथा गायत्री मन्त्र से मौन समाप्ति की गई।

—रोहताशकुमार आर्य, मन्त्री आर्यसमाज लोहारु

दानदाताओं से निवेदन

आयुक्त महोदय आयकर विभाग हरयाणा, रोहतक ने अपने पत्र दिनांक 30 3-88/4-4 क्रमांक F. No., 228 (21-A) 78, 79/PRO 61 to 90 द्वारा 80-G आयकर एक्ट 1961 के अनुसार 31-3-1989 तक दानदाताओं द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक को दान देने पर आयकर में छूट प्रदान की है।

अतः सभी दानदाताओं से निवेदन है कि अपनी कमाई से सभा को अधिक से अधिक दान देकर अनुगृहीत करें। स्मरण रहे सभा वेद प्रचार, शराबबन्दी, दहेजप्रथा का विरोध तथा रोहतक में स्वामी श्रद्धानन्द वैदिक पुस्तकालय भवन निर्माण आदि कर रही है।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, रोहतक

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक
२. " फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार
३. " सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत
४. " हरीश एजेन्सीज ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत
५. " भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल
६. " घनश्यामदास सीताराम बिचला बाजार, भिवानी
७. " कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा
८. " कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद
९. " चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/५ जेकमपुरा, गुड़गांव

शराब का ठेका खुलने पर रोष

फरीदाबाद, ३१ अगस्त (निस) सैक्टर दो के नागरिकों में शराब का ठेका खोले जाने से तीव्र रोष व्याप्त होगया है। यह ठेका एक धार्मिक स्थल तथा लड़कियों के स्कूल के निकट खोला गया है।

बाईया सेवक समाज की ओर से इस ठेके के विरुद्ध उपायुक्त को ज्ञापन दिया गया है और इसे वहां से तत्काल हटाने की मांग की है। देश हरयाणा पार्टी के प्रधान आदित्यवेश ने सात सितम्बर से संघर्ष शुरु करने की घोषणा की है।

आर्य विद्वान् का जन्मभूमि में स्वागत

आर्य विद्वान् पं० ब्रह्मप्रकाश जी शास्त्री विद्यावाचस्पति का आर्य समाज छपरौली में आर्यसमाज के प्रधान श्री धर्मपाल जी आर्य एवं श्री महकसिंह जी आर्य तथा सभी सदस्यों की ओर से भव्य स्वागत किया गया। प्रधान जी द्वारा स्वागत करते हुए कहा गया कि हमें गर्व का अनुभव होता है कि शास्त्री जी की जन्मभूमि छपरौली है।

शास्त्री जी ने अपने हृदय के उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि वेद प्रचार का कार्य पूरे क्षेत्र तथा देश में फैलाते हुए महिलाओं तथा हरिजनों के उत्थान तथा उद्धार में आर्यसमाज को पूरे वेग से क्रियात्मक रूप देना होगा।

—महासिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज छपरौली, मेरठ

हरयाणा ग्राम पंचायत चुनाव में विजयी शराबबन्दी समर्थक सरपंचों की सूची

गतांक से आगे—

२३ श्री ऋषिपाल आर्य पत्रकार सरपच ग्राम शाहपुर (इन्द्री) जि० करनाल
२४ ,, शिवनारायण सरपंच ग्राम गुढान जि० गुडगांव
२५ ,, दलीपसिंह ,, ,, कादीपुर ,,
२६ ,, राजसिंह ,, ,, घनवापुर ,,
२७ कप्तान दयाकिशन ,, ,, दौलताबाद ,,
२८. श्री मांगेराम ,, ,, बजघेड़ा ,,
२९. ,, जयसिंह ,, ,, सुखराली ,,
३०. राव हसराम ,, ,, टीकरी ,,
३१. ,, महावीरसिंह ,, ,, गाडोली ,,
३२. ,, रमेशचन्द जैन ,, ,, खूलकोट ,,
३३ ,, लालचन्द ,, ,, माकड़ोला ,,
३४. राव जयभगवानसिंह सरपंच ग्राम वजीराबाद जि० गुडगांव
३५. श्री जयप्रकाश ,, ,, सलोखरा ,,
३६. ,, सत्यवीर ,, ,, भराणा जि० रोहतक
३७. ,, हरज्ञान ,, ,, मदीना कोरसान ,,
३८. ,, प्रताप ,, ,, ,, गिबराणा ,,
३९. ,, रामचन्द्र ,, ,, ब्राह्मणवास जि० रोहतक
४०. ,, चत्तरसिंह ,, ,, तिगड़ाना जि० भिवानी

(क्रमशः)

आर्यसमाज तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने निकट के ग्रामों के उन सरपंचों के नाम जो शराब का सेवन नहीं करते हैं, लिखकर शीघ्र भेजने का कष्ट करें, ताकि उनके नाम इस सूची में प्रकाशित हो सकें।

—सम्पादक

आर्य केन्द्रीय सभा करनाल का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री नरदेव शास्त्री, मन्त्री—ओमप्रकाशकुमार एम.ए., कोषाध्यक्ष—लक्ष्मीनारायण काठवालिया, लेखानिरीक्षक—रणजीतकुमार

विश्व के वैदिक विद्वानों उपदेशकों और प्रचारकों की सेवा में आवश्यक सूचना

१—समस्त वैदिक विद्वानों, उपदेशकों, पुरोहितों और प्रचारकों की सेवा में विनम्र निवेदन और आवश्यक सुझाव है कि सभी खादी की धोती और कुर्ता का परिधान करें।

२—समस्त धर्मोपदेशकजन नित्य यज्ञ, प्रार्थना, स्वाध्याय और सत्संग की वैदिक परिपाटी को चलाने का प्रबल प्रयास करें।

३—विवाह आदि संस्कारों में खड़े होकर भोजन न करके, बैठकर भोजन किया करें।

४—शिखा सूत्र को धारण करें।

५—भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए भारतीय रहन-सहन को अपनायें।

६—राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रयोग करें।

७—अपने गले में पीला दुपट्टा धारण करें।

८—महात्मा बुद्ध और महाराजा अशोक के अनुचरों के समान आज वैदिकधर्म के प्रबल प्रचार के लिए लाखों वैदिक मिशनरी उपदेशकों की आवश्यकता आर्यसमाज को है।

९—सभी उपदेशकों, वैदिक विद्वानों तथा प्रचारकों के करों में ओ३म् नाम की पावन पताका होनी चाहिए।

१०—विश्वव्यापी वेदप्रचार के लिए विश्व की समस्त आर्यसमाज तथा आर्य प्रतिनिधि सभायें, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के कोष में २५ करोड़ रुपया एकत्र करने के लिए धनसंग्रह समितियों का तत्काल गठन करें।

११—विश्व की समस्त प्रमुख राष्ट्र-भाषाओं में वेदों का, शास्त्रों का तथा महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थों का अनुवाद और प्रकाशन का कार्य सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रारम्भ किया जाये.

१२—राजधानी दिल्ली नगर में २५ करोड़ रुपये की लागत से महर्षि दयानन्द वेद विश्व विद्यालय का संचालन सार्वदेशिक सभा के तत्त्वाधान में किया जाये।

अनुरोध

विश्व की समस्त वेदभक्त जनता धर्मवीर ग्रन्थमाला के ग्रन्थों को खरीदकर १ करोड़ रुपये का दान प्रदान करने में सभी सहायक बनें।

बैठक

उपरोक्त सुझावों पर विचार करने के लिए एक बैठक सार्वदेशिक सभा की ओर से बुलाई जाये।

निवेदक—वेद पथिक धर्मवीर आर्य झण्डाधारी
९८५७ अहाता ठाकुरदास सराय रुहेला, नई दिल्ली-११०००२

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४)
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23307/73   संख्या नं० P/1....   दाम ४८९६   पृष्ठ ४४४



सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   २२ भाद्रपद कृष्ण वि०

वर्ष १५, अङ्क ४०, १४ सितम्बर, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

महर्षि दयानन्द के वैदिक सिद्धांत

—पं० धर्मदेव 'मर्तण्डी' व्याकरणाचार्य, गुरुकुल कालवा

१—प्रथम 'ईश्वर' कि जिसके ब्रह्म परमात्मादि नाम हैं, जो सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त है, जिसके गुण कर्म स्वभाव पवित्र हैं, जो सर्वज्ञ निराकार सर्वव्यापक अजन्मा अनन्त सर्वशक्तिमान् दयालु न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता, सब जीवों को कर्मानुसार सत्य-न्याय से फलदाता आदि लक्षणयुक्त है, उसी को परमेश्वर मानता हूं।

२—'चारों वेदों (विद्या-धर्मयुक्त ईश्वर-प्रणीत संहिता मन्त्रभाग) को निर्भ्रान्त स्वतः प्रमाण मानता हूं। वे स्वयं प्रमाणरूप हैं कि जिनका प्रमाण होने में किसी अन्य ग्रन्थ की अपेक्षा नहीं। जैसे सूर्य वा प्रदीप अपने स्वरूप के स्वतः प्रकाशक और पृथिव्यादि के भी प्रकाशक होते हैं, वैसे चारों वेद हैं और चारों वेदों के ब्राह्मण, छः अंग, छः उपांग, चार उपवेद और ११२७ वेदों की शाखा जो कि वेदों के व्याख्यान रूप ब्रह्मादि महर्षियों के बनाये ग्रन्थ हैं, उनको परतः प्रमाण अर्थात् वेदों के अनुकूल होने से प्रमाण और जो इनमें वेदविरुद्ध वचन हैं उनका अप्रमाण करता हूं।

३—जो पक्षपात रहित न्यायाचरण सत्यभाषणादियुक्त ईश्वराज्ञा वेदों से अविरुद्ध है, उसको 'धर्म' और जो पक्षपात सहित अन्यायाचरण मिथ्याभाषणादि ईश्वराज्ञाभंग वेदविरुद्ध है, उसको 'अधर्म' मानता हूं।

४—जो इच्छा द्वेष सुख दुःख और ज्ञानादि गुणयुक्त, अल्पज्ञ नित्य है, उसी को जीव मानता हूं।

५—'जीव और ईश्वर' स्वरूप और वैधर्म्य से भिन्न और व्याप्य-व्यापक और साधर्म्य से अभिन्न हैं अर्थात् जैसे आकाश से मूर्तिमान् द्रव्य कभी भिन्न न था, न है, न होगा और न कभी एक था, न है, न होगा। इसी प्रकार परमेश्वर और जीव को व्याप्य-व्यापक, उपास्य-उपासक और पिता-पुत्र आदि सम्बन्धयुक्त मानता हूं।

६—'अनादि पदार्थ' तीन हैं—एक ईश्वर, द्वितीय जीव, तीसरा प्रकृति अर्थात् जगत् का कारण। इन्हीं को नित्य भी कहते हैं। जो नित्य पदार्थ हैं, उनके गुण कर्म स्वभाव भी नित्य हैं।

७—'प्रवाह से अनादि' जो संयोग से द्रव्य गुण कर्म उत्पन्न होते हैं, वे वियोग के पश्चात् नहीं रहते, परन्तु जिससे प्रथम संयोग होता है, वह सामर्थ्य उनमें अनादि है और उनसे पुनरपि संयोग होगा तथा वियोग भी। इन तीनों को प्रवाह से अनादि मानता हूं।

८—'सृष्टि' उसको कहते हैं जो पृथक् द्रव्यों का ज्ञान युक्तिपूर्वक मेल होकर नानारूप बनना।

९—'सृष्टि का प्रयोजन' यही है कि जिसमें ईश्वर के सृष्टि निमित्त गुण कर्म स्वभाव का साफल्य होना। जैसे किसी ने किसी से पूछा कि—नेत्र किस लिए हैं? उसने कहा—देखने के लिए। वैसे ही सृष्टि करने के ईश्वर के सामर्थ्य की सफलता सृष्टि करने में है और जीवों के कर्मों का यथावत् भोग कराना आदि भी।

१०—'सृष्टि सकर्तृक' है, इसका कर्त्ता पूर्वोक्त ईश्वर है। क्योंकि सृष्टि की रचना देखने और जड़ पदार्थ में अपने आप यथायोग्य बीजादि स्वरूप बनने का सामर्थ्य न होने से सृष्टि का कर्त्ता अवश्य है।

११—'बन्ध' सनिमित्तक अर्थात् अविद्या निमित्त से है। जो-जो पापकर्म ईश्वर भिन्नोपासना अज्ञानादि सब दुःखफल करनेवाले हैं। इसीलिए यह बन्ध है कि जिसकी इच्छा नहीं और भोगना पड़ता है।

१२—'मुक्ति' अर्थात् सर्व दुःखों से छूटकर बन्धनरहित सर्वव्यापक ईश्वर और उसकी सृष्टि में स्वेच्छा से विचरना, नियत समय पर्यन्त मुक्ति के आनन्द को भोग के पुनः संसार में आना।

१३—'मुक्ति के साधन' ईश्वरोपासना अर्थात् योगाभ्यास धर्मानुष्ठान, ब्रह्मचर्य से विद्या प्राप्ति, आप्त विद्वानों का संग, सत्यविद्या सुविचार और पुरुषार्थ आदि हैं।

१४—'अर्थ' वह है कि जो धर्म से प्राप्त किया जाये और जो अधर्म से सिद्ध होता है उसको 'अनर्थ' कहते हैं।

१५—'काम' वह है कि जो धर्म और अर्थ से प्राप्त किया जाये।

१६—'वर्णाश्रम' गुण कर्मों की योग्यता से मानता हूं।

१७—'राजा' उसी को कहते हैं जो शुभ गुण कर्म स्वभाव से प्रकाशमान, पक्षपात रहित न्यायधर्म का सेवी, प्रजाओं में पितृवत् वर्ते और उनको पुत्रवत् मानके उनकी उन्नति और सुख बढ़ाने में सदा यत्न किया करे।

१८—'प्रजा' उसको कहते हैं कि जो पवित्र गुण कर्म स्वभाव को धारण करके पक्षपात रहित न्यायधर्म के सेवन से राजा और प्रजा की उन्नति चाहती हुई राजविद्रोह रहित राजा के साथ पुत्रवत् वर्ते।

१९—जो सदा विचार कर असत्य को छोड़ सत्य का ग्रहण करे, अन्यायकारियों को हटावे और न्यायकारियों को बढ़ावें, अपनी आत्मा के समान सबका सुख चाहे, सो न्यायकारी है। उसको मैं भी ठीक मानता हूं।

२०—'देव' विद्वानों को और अविद्वानों को असुर, पापियों को राक्षस, अनाचारियों को पिशाच मानता हूं।

२१—उन्हीं विद्वानों माता पिता आचार्य अतिथि न्यायकारी राजा और धर्मात्मा जन, पतिव्रता स्त्री और स्त्रीव्रत पति का सत्कार करना 'देवपूजा' कहाती है। इससे विपरीत अदेवपूजा। इनकी मूर्तियों को पूज्य और इतर पाषाणादि जड़मूर्तियों को सर्वथा अपूज्य समझता हूं।

(क्रमशः)

एक रात में पूरी नशाबन्दी

लेखक—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

कल्याणकारी राज्य (Welfare State) में

Necessities should be free luxuries should be texed and vices should be prohibited.

आवश्यकता की वस्तुयें मुफ्त मिलनी चाहियें, विलासिता की वस्तुओं पर टैक्स लगना चाहिये, बुराइयों पर रोक लगनी चाहिये।

महात्मा गांधी ने कहा है—

शराब की समस्या कोई ऐसी समस्या नहीं है कि जिसका सामान्य प्रयास से समाधान हो सके। किसी उदार नीति से इस प्रचण्ड व्याधि का इलाज नहीं हो सकेगा। सामाजिक कार्यकर्ताओं के प्रयास सफल नहीं हो पायेंगे।

नशाबन्दी की बात भारत के लिए कोई नई बात नहीं है। राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी ने नशाबन्दी को स्वातन्त्र्य संग्राम का प्रतीक माना था, क्योंकि उनका विश्वास था कि इसके बिना देश सुखी नहीं होगा। सन् १९३१ में जब उन्होंने सत्याग्रह का बिगुल बजाया तो अपने अखबार Young India में लिखा—

"शराब की दूकाने समाज के लिए सबसे बड़ा अभिशाप हैं। यदि मुझे केवल एक घण्टे के लिए भारत का तानाशाह बना दिया जाये तो मैं बिना मुआवजा ये शराब की सभी दूकानें बन्द करदूं और ताड़ी के सब वृक्षों को जड़मूल से कटवाकर फेंक दूं।" (२५ जून १९३१) आबकारी टैक्स से प्राप्त धन मिलना बन्द हो जाये तो विकास योजनायें ठप्प हो जायेंगी, वर्तमान सरकार की इस दलील की कल्पना करके गांधी जी ने तभी लिखा था—"मैं अपने बीच हजारों (अब करोड़ों) शराबियों को देखने की बजाय पूरी तरह कंगाल देखना पसन्द करूंगा, अगर जरूरी हो तो नशाबन्दी के बदले मैं पूरे देश को अनपढ़ रखना पसन्द करूंगा।"

जिस प्रकार १९३० में स्वातन्त्र्य संग्राम नमक करके नाम पर लड़ा गया था, उसी प्रकार शराबबन्दी १९३१ के स्वाधीनता संग्राम का प्रतीक बन गई। शराब की दूकानों को बन्द कराने के लिए वहां पिकेटिंग किया जाता था। महिलाओं ने इस काय में प्रमुख भाग लिया। साधारण स्त्रियों से लेकर विजयलक्ष्मी पण्डित जैसी संभ्रांत घरानों तक की महिलायें मैदान में आगईं। हजारों स्त्री-पुरुष पुलिस की लाठियों गोलियों का शिकार हुए। उस समय हमारी यह लड़ाई विदेशी सरकार के विरुद्ध थी। उन दिनों कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि जब देश आजाद होगा तो जिस कांग्रेस के नेतृत्व में शराबबन्दी की लड़ाई लड़ी जारही है, उसी के राज्य में हमें वे दिन देखने पड़ेंगे। जब लोग पानी की एक-एक बूंद के लिए तरसेंगे, परन्तु शराब की नदियां बहेंगी।

स्वतन्त्रता मिलते ही हमने बापू को भुला दिया और तरह-तरह के बहाने बनाकर संविधान के निर्देशक सिद्धांतों को ताक पर रख दिया। अब तो गांधी जी का इतना ही उपयोग रह गया है कि उनका नाम कुछ वोट बटोरने में सहायक है।

१९५० में बम्बई में बालासाहब खेर मुख्यमन्त्री थे, मोरारजी देसाई भी मन्त्रिमण्डल के सदस्य थे। आबकारी मन्त्री डा० गिल्डर के नेतृत्व में वहां नशाबन्दी का काम चल रहा था। देश के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के हाथों ६ अप्रैल, १९५० से बम्बई प्रांत में पूरी तरह नशाबन्दी करदी गई। १९६० में बम्बई राज्य का गुजरात और महाराष्ट्र के रूप में बटवारा होगया। महाराष्ट्र में आहिस्ता-आहिस्ता परिवर्तन होता गया, परन्तु गुजरात में नशाबन्दी चालू रही। यह ठीक है कि आज भी वहां कई जगह चोरी से शराब बनाई जाती है और पड़ोसी राज्यों से जहां शराबबन्दी नहीं है, चोरी से शराब आती जाती है। इसलिये वहां भी नशाबन्दी का काम पूरी तरह सफल नहीं हुआ है। इस पर कहा जाता है कि जिस बात में कानून से सफलता नहीं मिलती उसके लिए कानून क्यों बनाया जाये? मैं पूछता हूं कि क्या सब लोग अपनी आमदनी पर पूरी तरह टैक्स देते हैं? जब इसमें चोरी होती है तो इन्कम टैक्स का कानून क्यों नहीं हटा दिया जाता? इंडियन पीनल कोड में चोरी, डकैती, रिश्वत बेईमानी, हत्या तस्करी, चोरबाजारी आदि अपराधों के लिए दण्ड का विधान है। लेकिन हम जानते हैं कि दिनोंदिन ये अपराध बढ़ते जारहे हैं। फिर, क्यों नहीं इण्डियन पीनल कोड रद्द कर दिया जाता। हम मानते हैं कि कहीं भी किसी कानून का पूरी तरह पालन नहीं होता। लेकिन फिर भी समाज की भलाई के लिए कानून बनाया जाना जरूरी है। असफलता का कारण कानून नहीं, बल्कि कानून का ठीक तरह से लागू न किया जाना है।

तमिलनाडू के प्रथम मुख्यमन्त्री राजगोपालाचार्य ने पूर्ण नशाबन्दी करके उससे होनेवाली राजस्व की कमी को अन्य स्रोतों से पूरा करके सिद्ध कर दिया कि आबकारी राजस्व के बिना भी विकास कार्यों में बाधा नहीं आती। १९६०-६१ में गुजरात सरकार को बिक्रीकर से होने वाली आमदनी १० करोड़ रुपये थी जो कुछ ही वर्षों से बढ़कर २५० करोड़ होगई। यही स्थिति मनोरंजन कर की है। नशाबन्दी के होते हुए भी विकास कार्यों की दृष्टि से गुजरात किसी राज्य से पीछे नहीं है।

प्रधानमन्त्री के रूप में जवाहरलाल नेहरू ने पंजाब हाईकोर्ट के जस्टिस टेकचन्द की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाई थी। उसकी रिपोर्ट के अनुसार "करसमाहर्त्ता के रूप में सरकार शराब के कारण होनेवाली लूट में केवल २५ प्रतिशत की अधिकारी हैं। बाकी का ७५ प्रतिशत दलाल, ठेकेदार, शराब बनानेवाले आदि रख लेते हैं। एक रुपया राजस्व प्राप्त करने के लिए सरकार शराबी से चार गुना वसूलती है।" नवभारत टाइम्स के ७ जनवरी, १९७८ के अंक में प्रकाशित समाचार के अनुसार १९७६-७७ के वर्ष में पंजाब सरकार को शराब से ३८ करोड़ ८८ लाख ५३ हजार रुपये की आय हुई। यह आय तब हुई जब पंजाब के लोगों ने ४८ करोड़ बोतल शराब पी और इस प्रकार १४ रुपये ५० पैसे की बोतल के हिसाब से लगभग ७ अरब रुपये शराब पीकर बर्बाद किये, ३८ करोड़ रुपये की आय के बदले पंजाब सरकार को अतिरिक्त व्यय कितना करना पड़ा होगा। इसका अनुमान इस आधार पर लगाया जा सकता है कि कैलिफोर्निया में राज्य को शराब पर लगे कर से एक साल में १ अरब ७५ करोड़ रुपये की आमदनी हुई और उसी अवधि में शराब के कारण होनेवाले मुकदमों, जेलों, हस्पतालों, पागलखानों आदि पर १८ अरब ९० करोड़ रुपये अर्थात् आमदनी से लगभग २० गुना व्यय हुआ। यदि पंजाब के लोगों ने ७ अरब रुपये की शराब न पी होती और उसके बदले १ खरब ४० अरब रुपये सरकार ने व्यय न किये होते तो एक वर्ष में पंजाब की काया पलट जाती।

आमदनी से अधिक खर्च करना कहां की बुद्धिमत्ता है? पहले शराब पिलाकर रोगी बनाना और फिर विकास के नाम पर हस्पताल खोलना, पहले शराब पिलाकर चोरी, डाके, हत्या, बलात्कार आदि को बढ़ावा देना और फिर न्याय, शांति और व्यवस्था के लिए थाने और कचहरियां बनाना, पहले शराब पिलाकर गरीबों की जेबें खाली करके उन्हें और गरीब बनाना और फिर गरीबी दूर करना पागलपन नहीं तो क्या है?

वास्तव में कुकर्म की बिक्री करके कोई राज्य सम्पन्न नहीं हो सकता। पाप कोई ऐसी सम्पत्ति नहीं है जिस पर कर लगाया जाये, उसका तो दमन ही करना होगा। जैसे कर लगाकर चोरी, व्यभिचार, रिश्वत, तस्करी, चोर बाजारी, हत्या आदि के लिए लाइसेंस नहीं दिया जा सकता, कमीशन लेकर औरतों की बिक्री का परमिट नहीं दिया जा सकता। इसी प्रकार अनेक-अनेक प्रकार के रोगों और अपराधों को बढ़ावा देनेवाली, मनुष्य को पशु बना देनेवाली, बच्चों को अनाथ कर देनेवाली, पारिवारिक सुख-शांति को नष्ट करनेवाली शराब को पीने-पिलाने, बनाने या बेचने के अधिकार को पैसों में नीलाम नहीं किया जा सकता।

(क्रमशः)

हरयाणा की नई पंचायतों से अपील

सभा के सर्वहितकारी साप्ताहिक-पत्र तथा सभा कार्यालय से डाक द्वारा हरयाणा की नई पंचायतों से अपील भेजकर निवेदन किया गया है कि वे हरयाणा से शराब जैसी भयंकर बुराई को समाप्त करने के लिए ३० सितम्बर तक निम्नलिखित प्रस्ताव पास करके सरकार को भेजें। सरकार के नियम के अनुसार जिनके प्रस्ताव ३० सितम्बर तक पहुंच जावेंगे, वहां शराब के ठेके बन्द हो सकते हैं।

जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, आगामी वर्ष से ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव

सेवा में

मानानीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा

चण्डीगढ़

हमारे ग्राम—.............. जिला.............. पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक.............. में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है। यह ग्राम सभा (पंचायत) शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत ही घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार को शराबबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द की जावे और भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाये, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठावें की कृपा करेंगे।

दिनांक..............

सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं है तथापि वहां गैर-कानूनी ढंग से शराब बिकती है, निम्नलिखित प्रस्ताव ग्राम पंचायतें पास करके सरकार को भेजें।

सेवा में

मानानीय मुख्यमन्त्री महोदय

हरयाणा चण्डीगढ़

हमारे ग्राम.............. जि०.............. में शराब का ठेका नहीं है, परन्तु निकट के ग्रामों के ठेकों से शराब के ठेकेदारों के एजेण्ट गैर-कानूनी ढंग से ग्राम में खुल्लम-खुल्ला शराब बेचते हैं। इस प्रकार ग्राम में शराब पीनेवाले वातावरण को दूषित करते हैं। किसान मजदूरों की कमाई बर्बाद हो रही है। छात्रों पर भी इसका कुप्रभाव पड़ रहा है।

अत: हमारे ग्राम की पंचायत आपसे निवेदन करती है कि आगामी वर्ष में शराब का ठेका न खोला जाये और जो गैर-कानूनी ढंग से ग्राम में शराब बेचकर कानून का उल्लंघन करते हैं, उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करें तथा उन्हें कड़ी सजा देकर नाजायज शराब की बिक्री बन्द करने की कृपा करें।

दिनांक..............

ह० सरपंच तथा पंच

ग्राम पंचायत

उपरोक्त दोनों प्रस्तावों की प्रतिलिपियां रजिस्ट्री द्वारा निम्न पतों पर भेजें—

१. प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान हरयाणा चण्डीगढ़
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जि..............
५. जिलाधीश..............
६. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा; दयानन्दमठ, रोहतक

हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रधानमन्त्री प्रभात शास्त्री का अनुरोध

आगामी १४ सितम्बर, ८८ को हम सब फिर प्रतिवर्ष की भांति 'हिन्दी दिवस' समारोह मनाने जारहे हैं। यह औपचारिकता निभाते हमें ४१ वर्ष होगये, किन्तु राष्ट्र-भाषा हिन्दी को संविधान प्रदत्त पद पर आज तक प्रतिष्ठित नहीं किया जा सका है। हम भारतवासियों के लिए यह अत्यन्त लज्जा और क्षोभ की बात है कि अभी तक हमारी राष्ट्र-वाणी अंग्रेजी के पाप से मुक्त नहीं हो पाई है। बिना वाणी के स्वतंत्रता का कोई मूल्य नहीं है। आज हम जिस स्वतन्त्रता का उपयोग कर रहे हैं, वह तब तक पूर्ण नहीं है, जब तक कि हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी भारत की वाणी के रूप में सार्वदेशिक स्तर पर प्रशासनिक एवं सार्वजनिक जीवन में प्रतिष्ठित नहीं हो जाती। अत एव देश के समस्त राष्ट्र भक्त नागरिकों से हमारा अनुरोध है कि सब लोग मिलकर राष्ट्रभाषा के गौरव को प्रतिष्ठित करने का दृढ़-संकल्प लें।

इस सन्दर्भ में हम हिन्दी भाषी राज्यों की जनता से विशेषकर निवेदन करना चाहते हैं कि वे इस वर्ष राज्य के सभी अंचलों में हिन्दी दिवस समारोह का प्रत्येक स्तर पर आयोजन करें। हिन्दी भाषी राज्यों के विविध क्षेत्रों में आज भी अंग्रेजी के प्रभाव को देखकर आश्चर्य और खेद होता है। हिन्दी भाषी राज्यों के व्यापार, शिक्षा तथा विधि के क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग में कोई कानूनी या व्यावहारिक बाधा नहीं है। यदि कोई बाधा है भी तो उसे दूर करने के लिए गम्भीर प्रयास सम्भव है। इसके लिए केवल निष्ठा और दृढ़-संकल्प की आवश्यकता है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आपसे अनुरोध है कि इस वर्ष हिन्दी दिवस के अवसर पर आप ऐसा वातावरण उत्पन्न करें कि जिससे हिन्दी को सभी क्षेत्रों में समुचित प्रोत्साहन प्राप्त हो। इस हेतु हिन्दी सेवी संस्थाओं, सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभागों को अपने साधनों से जनसभा, गोष्ठी, रैली तथा प्रभातफेरी आदि कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए। साथ ही केन्द्रीय और प्रादेशिक सरकारी कार्यालयों एवं सार्वजनिक प्रतिष्ठानों का भी यह आवश्यक कर्तव्य है कि हिन्दी दिवस पर प्रत्येक कर्मी के हृदय में राष्ट्र और राजभाषा के प्रति सहज अनुराग उत्पन्न करें।

—प्रभात शास्त्री प्रधानमन्त्री

दामला जि० अम्बाला में कृष्ण जन्माष्टमी पर्व

आर्यसमाज मन्दिर गांव दामला (काम्बोज माजरा) जि. अम्बाला में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर वेदप्रचार कार्यक्रम में आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक चौ० नत्थासिंह जी ने तथा पं० जवाहरलाल जी शास्त्री आदि ने अनेक विद्वानों के भजन तथा उपदेश हुए। इस अवसर पर गांव के लगभग १८ नौजवानों ने यज्ञोपवीत धारण किये और प्रतिज्ञा की कि आज से शराब, मांस, अण्डा, बीड़ी, सिगरेट आदि बुरे कुकर्मों को छोड़कर समाज की सेवा करने का व्रत लिया और अपने जीवन को वैदिक ढंग से जीने की प्रेरणा ली।

—ओम्प्रकाश आर्य

चण्डीगढ़ में वेदसप्ताह

आर्यसमाज २२ सेक्टर चण्डीगढ़ : श्रावणी उपाकर्म (रक्षा-बन्धन) के पुनीत पर्व पर दिनांक २२-८-८८ से २८-८-८८ तक वेदसप्ताह बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। जिसमें श्री निरंजनदेव जी वेदतीर्थ के बड़े ओजस्वी व्याख्यान व श्री दुर्गादास जी आर्य तूफान तथा श्रीराम जी भजनोपदेशक के सामयिक रसीले भजन हुए।

—नरेन्द्रनाथ तहसीलदार उपप्रधान

इतिहास-पुनर्लेखन की आवश्यकता

—गणपतसिंह आर्य

किसी भी देश के नवयुवकों के लिए उनका इतिहास और संस्कृति प्रेरणा के स्रोत होते हैं। फिर हमारे देश का इतिहास तो अध्यात्मिकता, वीरता, धीरता, चरित्र, नैतिकता, धार्मिकता, दानशीलता आदि की दृष्टि से उच्चता के शिखर का प्रतीक है। सत्यवादी हरिश्चन्द्र, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगिराज श्रीकृष्ण, बालब्रह्मचारी हनुमान, भीष्मपितामह, महर्षि दयानन्द सरस्वती आदि अनेकों युगदृष्टा आदर्श पुरुषों से हमारे देश का इतिहास भरा पड़ा है। उन्होंने कभी भी अपने प्राणों का मोह नहीं किया, अपितु देश की बलिवेदी पर हंसते-हंसते न्योछावर हो गये और देश के इतिहास का निर्माण किया, ताकि भारतवासी उनके पदचिह्नों पर चलकर देश को प्राचीन गौरव प्राप्त करा सकें।

हमारा देश १५ अगस्त, १९४७ को स्वतन्त्र हुआ। इन ४१ वर्षों में भारत का शुद्ध इतिहास लिखने की ओर ध्यान नहीं दिया गया। अंग्रेजों ने जो इतिहास स्कूल और कालेजों में लगाया, आज भी वही पढ़ाया जारहा है। आजकल दूरदर्शन पर धारावाहिक अमीर खुसरो दिखाया जारहा है, जो जनता को बरगलानेवाला है और तथ्यों को तोड़-मरोड़ एवं विकृत कर दिखाया गया है। आर्यों को विदेशी आक्रमणकारी बनाकर उन्हें महमूद गजनवी और नादिरशाह के समकक्ष रखना इतिहास के साथ क्रूर मजाक एवं खिलवाड़ है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सृष्टि उत्पत्ति विषय पर सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में वेदों के आधार पर प्रमाणित किया है कि आर्य भारत के मूल निवासी थे और उनके आने से पूर्व यहां कोई नहीं था। महर्षि द्वारा दिये गये कुछ प्रश्नों के उत्तर विद्वान् पाठकों के लिए यहां दिये गये हैं—

प्रश्न—मनुष्यों की आदि सृष्टि किस स्थल पर हुई ?

उत्तर—त्रिविष्टप अर्थात् जिसको तिब्बत कहते हैं।

प्रश्न—आदि सृष्टि में एक जाति थी वा अनेक ?

उत्तर—एक मनुष्य जाति थी। आर्य और दस्यु। आर्यों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार भेद हुए।

प्रश्न—फिर वे यहां कैसे आये ?

उत्तर—जब आर्यों और दस्युओं में बहुत उपद्रव होने लगा, तब आर्य लोग सब भूगोल में उत्तम इस भूमि के खण्ड को जानकर यहीं आकर बसे। इसी से इस देश का नाम 'आर्यावर्त्त' हुआ।

प्रश्न—कोई कहते हैं कि आर्य ईरान से आये। इसी से इन लोगों का नाम आर्य हुआ ?

उत्तर—यह बात सर्वथा झूठ है। क्योंकि—

विजानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्ध्या शासदव्रतान ॥
ऋ० म० १, सूत्र ५१, म० ८

आर्य नाम धार्मिक, विद्वान्, आप्त पुरुषों का और इसके विपरीत-जनों का नाम दस्यु। जब वेद ऐसा कहता है तो दूसरे विदेशियों के कपोल कल्पित को बुद्धिमान् लोग कभी नहीं मान सकते। किसी संस्कृत ग्रन्थ में वा इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आये और यहां के जंगलियों से लड़कर जय पाके, निकाल के इस देश के राजा हुए। पुन: विदेशियों का लेख कैसे माननीय हो सकता है ?

महर्षि के उपरोक्त लेखों से स्पष्ट है कि आर्य ही इस देश के मूल निवासी हैं। उनको 'बाहर से आये बताना' सत्य का गला घोटना है। इसमें सत्यान्वेषण के लिए खोज की आवश्यकता है, जो की जानी चाहिए। मुस्लिम शासकों के समय में तक्षशिला, नालन्दा आदि विश्व विद्यालयों की असंख्य पुस्तकों को गर्म पानी करने के लिए बतौर ईंधन जलाया गया। जिसका परिणाम यह हुआ कि प्राचीन भारत के इतिहास के बहुत से विश्वसनीय स्रोत समाप्त कर दिये गये। फिर भी गहन खोज के प्रयत्न एवं परिश्रम सच्चे, आदर्श, प्रेरणादायक इतिहास का सृजन करेंगे।

इस प्रकार के इतिहास को पढ़कर देश के भावी कर्णधार अपने पूर्वज ऋषियों, मुनियों, महापुरुषों राजे-महाराजाओं की शूरता, वीरता, न्याय, प्रजापालन आदि की मिली धरोहर की केवल रक्षा ही नहीं, अपितु मनुमहाराज के इस कथन को साकार रूप देकर भारत माता (इस देश) को फिर से जगत् गुरु के आसन पर विराजमान करेंगे।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन:।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा: ॥ मनु०

सर्वहितकारी के शराबबन्दी अंक की सराहना

सर्वहितकारी का २१ अगस्त का अंक पढ़ा। बहुत पसन्द आया तथा मैंने कुछ शराबियों को भी यह अंक पढ़ने को दिया। उन्होंने आजीवन शराब न पीने का वचन दिया। सम्पादक जी, भविष्य में भी आप शराबबन्दी व सभी प्रकार के मादक द्रव्यों पर बहुत कड़ा प्रहार करें, इसी से हमारे पतन की ओर बढ़ते हुए समाज की भलाई हो सकती है।

दुनियां के सबसे बुजुर्ग (बूढ़े) आदमी ने कहा है कि शराब व सिगरेट को कभी हाथ मत लगाओ। सेहतमन्द जिन्दगी के लिए सब्जियां व शहद जरूरी है। ईवास ने अभी अपना १११वां जन्म दिन मनाया है। उनका नाम गिनीस वर्ल्ड रिकार्ड पुस्तिका में है। देखें दैनिक ट्रिब्यून २१ अगस्त, ८८।

—रणधीरसिंह आर्य, नई दिल्ली

शराबी तत्त्वों ने राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी की प्रतिमा तोड़ी

गत ३१-७-८८ की नलवा गांव जि० हिसार में पंचायत चुनाव से एक दिन पहले योजनाबद्ध तरीके से बस अड्डे पर बने होटल में शराब पीकर व पिलाकर कुछ प्रभावशाली आदमियों द्वारा सार्वजनिक स्थान गांधी पार्क में बनी गांधी जी की प्रतिमा को बुरी तरह गले में फांसी डालकर तोड़ डाला। गांव के लोगों में भारी रोष हुआ। १-८-८८ को रपट दर्ज करवाई, लेकिन कोई कार्यवाही नहीं हुई। नलवा गांव का एक शिष्टमण्डल विधायक चौ० जगन्नाथ एवं मुख्यमन्त्री जी से मिला। प्रशासन ने कुछ हलचल आरम्भ की, लेकिन बड़े दु:ख के साथ लिखना पड़ रहा है कि एक उद्योगपति श्री ओम्प्रकाश जिंदल जो इसी गांव का रहनेवाला है, इस बात को दबाना चाहता है।

शेष सारा गांव इस कांड के दोषियों को गिरफ्तार करवाने की मांग कर रहा है। राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी जी की मूर्ति तोड़ना राष्ट्र का अपमान है। इस बात को सिरे चढ़ाने के लिए एक न्याय संघर्ष समिति गठित की गई है—

प्रधान—सर्वश्री पं० गंगाधर कौशिक, उपप्रधान—रामपत दहिया, अर्जुन पूर्वपंच, रामचन्द्र प्रजापत, सचिव—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, कोषाध्यक्ष—महेन्द्रसिंह कसमा।

आर्यसमाज अर्बन एस्टेट सैक्टर ४ व ७ गुड़गांव का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री धर्मदास सेवक, उपप्रधान—एल. डी. गुलियानी, मन्त्री—सोमदत्त आर्य, प्रचारमन्त्री—यशपाल मदान, कोषाध्यक्ष—वासुदेव गावा, पुस्तकाध्यक्ष—सुरेन्द्र डावर, लेखानिरीक्षक—सत्यपाल आर्य।

युगजज्वार

आया कैसा ये युगजज्वार।
ले प्रलय जलद-सी नीरधार॥

है द्वन्द्व पयोद का भीषणरव,
असूया चपला होती अभिनव,
हो रही अबाध उपलवृष्टि,
हैं चातक भी तो अब नीरव।

ले मन की मनमें ही मनुहार।
लख प्रलय जलद-सी नीर धार॥१

अब कोयल कागा एक हुए,
कागा के ग्राहक अनेक हुए,
वह बैठी निज में मौन साध,
कागा इसके व्यतिरेक हुए।

कह रहे हर्ष से महोच्चार।
या प्रलय जलद-सी नीर-धार॥२

अब डोल रहा जीवन तरुवर,
हो रहा वसन्त में भी पतझर,
फल-फूल झड़े जाते सारे,
करता क्रन्दन का स्वर मोर।

है अपना तन भी बना भार।
लख प्रलय जलद-सी नीर-धार॥३

रही परम्परा की मार टूट,
अब प्रेमडोर भी रही छूट,
है सुनय अनय भी एक नहीं,
अधिकारों की मच रही लूट,

गये भूल सगुण सब निराकार।
या प्रलय जलद-सी नीर-धार॥४

आया कैसा ये युगजज्वार।
ले प्रलय जलद-सी नीर-धार॥

—धर्मचन्द विद्यालंकार 'समन्वित'
प्रवक्ता हिन्दी विभाग, सनातन धर्म कालिज, पलवल

कार्यालय आर्यसमाज चित्रगुप्त गंज लश्कर ग्वालियर-१

ग्वालियर : विगत दिवस स्थानीय आर्यसमाज चित्रगुप्त गंज द्वारा योगिराज श्रीकृष्ण का जन्म दिन 'समान अधिकार दिवस' के रूप में मनाया गया। साथ ही विगत एक सप्ताह से चल रहा 'वेदप्रचार सप्ताह' भी सम्पन्न हुआ। समापन व्याख्यान में वेदों के सुयोग्य विद्वान् आचार्य श्री विजयपाल शास्त्री ने योगिराज श्रीकृष्ण के तेजस्वी जीवन की घटनाओं का वर्णन किया। मन्त्री श्री किशोरीलाल गौतम ने इससे पूर्व बताया कि श्रीकृष्ण एक आप्त पुरुष योगिराज थे। समान अधिकार पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि वैदिकधर्म में जन्म से कोई जाति नहीं है, अपितु गुण कर्म स्वभाव से वर्ण व्यवस्था है।

—मन्त्री

आज की तात्कालिक आवश्यकता अहिंसा

विश्व की आदि कृति ऋग्वेद के प्रथम मण्डलीय ५०वें सूक्त का अन्तिम आदेश है—मो अहं द्विषते रधम्। अर्थात् मैं द्वेष करनेवाले का कभी मत बुरा करूं। इस उपयोगी वचन को आज प्रत्येक क्षण हमें व्यवहार में लाने की जरूरत है।

महात्मा गांधी ने अपने दीर्घकालीन अनुभव के आधार पर इस महान् देश की सर्वक्षेत्री उन्नति एवं सुरक्षा हेतु अहिंसा को भारतीय संविधान में सम्मानित करने का अनुरोध किया था, किन्तु उनके दूरदर्शितापूर्ण सुझाव को कतिपय प्रभावी राजनेताओं द्वारा यह कहकर ठुकरा दिया गया था कि राजनीति में 'अहिंसा' व्यावहारिक नहीं है, जबकि भारत की बृटिश-सिंह पर विजय का मूलमन्त्र अहिंसात्मक असहयोग ही तो था कि जिसमें सत्य-नारायण पर अटूट विश्वास का ही तो बल था अभय अर्थात् आदि शक्ति के अभ्युदय पर अगाध श्रद्धा का होना और हमने बापू के अनुगमन पर आजादी हासिल की। इस अहिंसा का प्रयोग बापू के द्वारा राज्य, समाज, धर्म और परिवार के विविध क्षेत्रों में पूर्णोदय की गरिमा का संरक्षण करते हुए आश्चर्यजनक परिणामों सहित किया था, क्योंकि उन्हें सबसे ऊपर लोक मानसिक शाश्वत शक्ति पर मुकम्मिल यकीन था।

उपर्युक्त वेदमन्त्र में भी परमेश्वर के अखण्ड विश्वास के कारण ही बदला न लेने, रोष न प्रकट करने अथवा द्वेष न करने की बात कही गई है।

उदगामय आदित्यो विश्वेन सहसा सह।
द्विषन्तं मह्यं रंधयन् मो अहं द्विषते रधम्॥
ऋ० ५०।१३

अर्थात् द्वेषी शत्रुओं का ठीक प्रकार से नाश करनेवाला महाशक्तिशाली सर्वप्रकाशयुक्त प्रभु पूर्ण क्षमताओं सह-सुनिश्चयपूर्वक सर्वत्र उदित है। इसीलिये द्वेष करनेवाले से मैं अभय हूं। वैदिक वाङ्मय में यह सत्य अनेक स्थलों पर उपगम्य है। देखिये—योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः तं वो जम्भे दध्मः—अर्थात् जो हमसे द्वेष करता है अथवा हम जिससे द्वेष करते हों, इन सभी को फौजदारी करने के बजाये हम पूरे यकीन के साथ—हे पिता परमेश्वर! आपके न्याय हेतु संकल्पित करते हैं। ऐसा ही सुदृढ़ संकल्प अहिंसा के विषय में महात्मा जी का था कि मानो इस कलियुग में स्वतः वेद भगवान् ही उनके श्रीमुख से अभिव्यक्त हो रहे हों। इसी को मैंने ऊपर वेद के शब्दों में उदयादित्य कहा। आज जरा भी धीरज हमारे में बाकी नहीं रहा। जहां किसी ने कुछ विरोध प्रदर्शित किया—अपनी शैली में कि हम उसको अपना शत्रु मान बैठे। केवल इतना ही नही, अपितु उसकी राजनैतिक, सामाजिक और सम्भव हो तो भौतिक हत्या पर आमादा हो जाते हैं। मुझे आश्चर्य है कि कहीं हम सब पशुओं की जमात से भी बाहर तो नहीं होते जारहे।

गांधी महान् नें इतना ही तो कहा था कि भारतीय संविधान का मुख्य निर्णय अहिंसा की सम्मानित अर्थात् लोकमान्य गरिमा को बनाये रखते हुए सम्पन्न होवे। इसमें अव्यवहार्य क्या था। आप लोग कम से कम उस महापुरुष का शब्द गौरव रखते हुए पारिवारिक क्षेत्र में ही 'अहिंसा' को नीतिपूर्वक वैधानिकता प्रदान कर सकते थे। हमें अपने माननीय विधान निर्माताओं की अदूरदर्शिता पर ग्लानि अनुभव होती है। क्या उन्हें अपने पर भगवान् से नहीं तो क्या अपने अनुभवी महान् नेता पर भी, उसकी प्रखर बुद्धिमत्ता पर भी यकीन नहीं था।

अब इसी कारण आतंक, द्वेष, दलबन्दी, अनुत्पादकता और बार-बार गलत नीति निर्धारणजन्य अनगिनत अभिशाप सिर उठा रहे हैं।

आचार्य सर्वे, ब्लाक-७/११३ सफदरजंग विस्तार,
नई दिल्ली ११००२९

आर्यसमाज द्वारा बिहार में भूकम्प तथा बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ राहत कैम्प खोले गये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती अपना ५ दिन का बिहार का दौरा समाप्त करके गत ३१ अगस्त, ८८ को सायंकाल देहली वापिस आगये। अपनी यात्रा के अनुभवों पर बोलते हुए उन्होंने बताया कि उत्तरी बिहार में भूकम्प और बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों की स्थिति बहुत ही शोचनीय है। वहां जानमाल की बहुत क्षति हुई है। हजारों लोग बेघर होगये हैं। बहुत से लोग घायल अवस्था में अस्पतालों में पड़े हैं, जहां उनकी चिकित्सा का पर्याप्त प्रबन्ध नहीं है। स्वामी जी ने स्वयं दरभंगा, मुंगेर तथा अन्य शहरों के अस्पतालों का निरीक्षण किया। बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, मन्त्री तथा अन्य पदाधिकारी भी उनके साथ थे। जिन क्षेत्रों में पहले भूकम्प आया था, वे अब बाढ़ की चपेट में आगये हैं। ग्रामीण इलाकों में स्थिति और भी अधिक खराब है।

स्वामी जी ने बताया कि इस समय चलाये जारहे सहायता कार्य पर्याप्त नहीं हैं। अतः आर्यसमाज की ओर से पटना में 'भूकम्प तथा बाढ़ पीड़ित सहायता समिति' का गठन किया गया है तथा क्षतिग्रस्त क्षेत्रों में राहत कैम्प खोले गये हैं। स्वामी जी ने जनता से अपील करते हुए कहा कि वे इस कार्य के लिए दिल खोलकर सहायता करें और अपना धन सार्वदेशिक सभा के द्वारा भेजे।

—सच्चिदानन्द शास्त्री, प्रचार विभाग

हरयाणा के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि इस सहायता के लिए दानराशि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक के पते पर भेजें। दानदाताओं के नाम सर्वहितकारी में प्रकाशित किये जावेंगे।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

चुनाव सूचना

गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां एवं कन्या गुरुकुल खानपुर कलां जि० सोनीपत की महासभा के अधिकारियों का चुनाव २५ सितम्बर, ८८ को दोपहर बारह बजे होना निश्चित हुआ है।

महासभा की चुनाव बैठक गुरुकुल भैंसवाल में होगी। सदस्यों को कार्ड द्वारा तथा अखबार में प्रकाशित करके सूचना दी जारही है। मैंने अपनी सहायता के लिए श्री कपिलदेव शास्त्री मुख्याधिष्ठाता को चुनाव का व्यवस्थापक नियुक्त किया है।

—शेरसिंह मलिक कुलपति
महासभा गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां एवं
कन्या गुरुकुल खानपुर जि० सोनीपत

डबवाली मण्डी में वेदप्रचार सम्पन्न

कई वर्षों के पश्चात् आर्यसमाज डबवाली मण्डी जि० सिरसा में ४ से ६ सितम्बर तक वेदप्रचार कार्यक्रम उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस शुभावसर पर श्री ओम्प्रकाश जो वानप्रस्थी संचालक आर्य वानप्रस्थाश्रम भटिण्डा के वेद प्रवचन तथा सभा की म. खेमसिंह की मंडली के प्रभावशाली भजन हुए। सभा को २६४) वेदप्रचारार्थ दिये गये।

रक्षा बन्धन पर्व

दिनांक २७-८-८८ को आर्यसमाज नलवा की ओर से रक्षा बन्धन पर्व उत्साह से मनाया गया। प्रातःकाल मन्दिर में हवन किया गया। सभा उपदेशक अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने रक्षा बन्धन के महत्त्व पर प्रकाश डाला। —पं० रामेश्वर आर्य, उपमन्त्री नलवा

हरयाणा ग्राम पंचायत चुनाव में विजयी शराबबन्दी समर्थक सरपंचों की सूची

गतांक से आगे—

४१. श्री धर्मपाल सरपच ग्राम नयाबांस जि० सोनीपत
४२. ,, दीदारसिंह आर्य सरपंच ग्राम काजनपुर जि० कुरुक्षेत्र
४३ ,, रामनिवास आर्य ,, ,, धोलडा जि० महेन्द्र
४४. ,, रणवीरसिंह ,, ,, मन्धार जि० कुरुक्षेत्र
४५. ,, रामस्वरूप ,, ,, घोड़ी तह. पलवल जि. फरीदाबाद
४६. ,, दानाराम ,, ,, जांडवाला बागड़ जि० हिसार
४७. ,, अमरसिंह सरपंच पंचायत बावला पाना भैंसवाल जि सोनीपत
४८. ,, सत्यवीरसिंह ,, ,, आंवली जि० सोनीपत
४९. ,, ओम्प्रकाश ,, ग्राम दूबलधन माजरा जि० रोहतक
५०. ,, धर्मपाल आर्य सरपंच ग्राम खेड़ी सुलतान जि० रोहतक
५१. ,, राममेहरसिंह आर्य सरपंच ग्राम कारोला ,,
५२. ,, सत्यवीरसिंह ,, ,, गढ़ी कुण्डल (निजामपुर खुर्द) जि० सोनीपत
५३. ला० भूलनमल ,, ,, कासन जि० गुडगांव

(क्रमशः)

आर्यसमाज तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने निकट के ग्रामों के उन सरपंचों के नाम जो शराब का सेवन नहीं करते हैं, लिखकर शीघ्र भेजने का कष्ट करें, ताकि उनके नाम इस सूची में प्रकाशित हो सकें।

—सम्पादक

गुडगांव में समता दिवस समारोह

सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पुनीत पर्व पर आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वाधान में आर्यसमाज अर्जुननगर के सामनेवाले पार्क में समता दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता श्री वेदपाल जी आर्य (xen) हरयाणा बिजली बोर्ड ने की। समारोह का शुभारम्भ यज्ञ से किया गया। यजमान हरिजन भाइयों को बनाया गया। उन्हें यज्ञोपवीत धारण कराया गया। उन्हें महर्षि दयानन्द जी के जीवन चरित्र की एक-एक प्रति भेंट की गई। आर्यसमाज के विद्वानों ने समता दिवस तथा भगवान् श्रीकृष्ण के जन्म दिवस पर अपने विचार प्रकट किये। गुडगांव के सभी आर्य भाई बहिनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शांतिपाठ के पश्चात् यज्ञशेष वितरण किया गया।

—सोमनाथ महामन्त्री

देसराज कालोनी पानीपत में वेदप्रचार सप्ताह

आर्यसमाज देसराज कालोनी पानीपत के तत्वाधान में रक्षा बन्धन (श्रावणी-पर्व) से योगिराज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी दिनांक २७ अगस्त से ३ सितम्बर, ८८ तक वेदप्रचार सप्ताह भिन्न-भिन्न पारिवारिक सत्संग के रूप में बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। कालोनी के सभी स्त्री पुरुषों ने यज्ञ, भजन तथा वेदोपदेश श्रवण कर अपने जीवन को धन्य समझा। दैनिक प्रातः ८ से १० बजे तक सत्संग का आयोजन होता था।

—जगदीशचन्द्र बसु
मन्त्री आर्यसमाज देसराज कालोनी पानीपत

शोक सन्देश

२२-८-८८ को पं० रामेश्वर आर्य उपमन्त्री आर्यसमाज नलवा जि. हिसार की माता जी श्रीमती कस्तूरी का ८५ वर्ष की आयु में देहांत हो गया। वह एक धर्मात्मा स्त्री थी। आर्यसमाज नलवा की ओर से शोक प्रस्ताव पास किया गया तथा प्रभु से उसकी महान् आत्मा को शांति मिले प्रार्थना की गई। —अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

दानदाताओं से निवेदन

आयुक्त महोदय आयकर विभाग हरयाणा, रोहतक ने अपने पत्र दिनांक 30-3-88/4-4 क्रमांक F. No., 228 (21-A) 78, 79/PRO 61 to 90 द्वारा 80-G आयकर एक्ट 1961 के अनुसार 31-3-1989 तक दानदाताओं द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक को दान देने पर आयकर में छूट प्रदान की है।

अतः सभी दानदाताओं से निवेदन है कि अपनी कमाई से सभा को अधिक से अधिक दान देकर अनुगृहीत करें। स्मरण रहे सभा वेद प्रचार, शराबबन्दी, दहेजप्रथा का विरोध तथा रोहतक में स्वामी श्रद्धानन्द वैदिक पुस्तकालय भवन निर्माण आदि कर रही है।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, रोहतक

वेदप्रचार सप्ताह आदि के कार्यक्रम

आर्यसमाज कालका जि० करनाल	१५ से १८ सितम्बर
,, सोहना जि० फरीदाबाद	१५ से २१ ,,
,, पुराना फरीदाबाद	१६ से १८ ,,
,, बाजीदपुर सावोली जि० सोनीपत	१६ से १८ ,,
,, बीकानेर गंगायचा अहीर जि० महेन्द्रगढ़	१६ से १८ ,,
,, झज्जर रोड रोहतक	१९ से २५ ,,
,, शेखपुरा जि० करनाल	२३ से २५ ,,
,, कोथकलां जि० हिसार	२३ से २५ ,,
,, मतलोढ़ा मण्डी जि० जींद	२६ से २८ ,,
आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ जि० रोहतक	२६ से २ अक्तूबर
आर्यसमाज रेवाड़ी जि० महेन्द्रगढ़	३० से २ ,,
,, कालका जि० अम्बाला	२ से ९ ,,
शाहबाद मारकण्डा जि० कुरुक्षेत्र	२ से ९ ,,
गुरुकुल डिकाडला जि० करनाल (पदयात्रा द्वारा प्रचार)	४ से १५ ,,
आर्यसमाज मेन बाजार बल्लबगढ जि० फरीदाबाद	८-९ ,,
,, गन्नौर शहर जि० सोनीपत	१२ से १६ ,,
कन्या गुरुकुल पचगांव जि० भिवानी	२१ से २३ ,,
आर्यसमाज मीरपुर जि० महेन्द्रगढ	३१ से ६ नवम्बर
,, कृष्णनगर भिवानी	१८ से २० ,,

—रघुबीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

शराब पीना सामाजिक अभिशाप है।

धर्म में बल है

—विनोदकुमार, सोनीपत

धर्म में बल है—यह बिल्कुल सत्य है। ईश्वर-भक्त चने की रोटी खायेगा, पाप नहीं करेगा। हम दूध माखन खाकर भी दुर्बल होते जाते हैं। मनुष्यो! बल, दूध, माखन में नहीं, ईश्वर-भक्ति और कर्त्तव्य पालन में है। जो लोग अपने धर्मपालन में अडिग रहते हैं। मृत्यु यदि सम्मुख खड़ी हो तो भी वे आगे जाने से नहीं झिझकते। धर्म सहायता करता है, परन्तु केवल धर्म-धर्म पुकारने से नहीं। धर्म ने उस समय तुम्हारी सहायता करनी है, जब पुत्र, धन, राज्य और महलों से आपको धर्म अधिक प्रिय होगा। धर्म से हंसी मजाक न करो। मनुष्य कहलाते हुए मनमें गिरावट तथा चरित्र में व पग-पग पर बुराई। मित्रो छोड़ दो इन बातों को। अपने परिवार में बैठकर प्रतिदिन धर्म का चिन्तन करो।

एक बार एक महात्मा ने देखा कि एक पुरुष पागलों के पीछे जाता है। महात्मा ने उसे बुलाकर कहा—कि आप तो विद्वान् और बुद्धिमान् प्रतीत होते हैं, आप अपने मस्तिष्क का इलाज करालें। उसने कहा—मेरा मस्तिष्क ठीक है, मैं उनको चाल-ढाल देखता हूं, क्योंकि वह मुझे अच्छी लगती है। उसने कहा—मुझे ऐसा करते कई दिन होगये हैं। महात्मा ने उत्तर दिया—कुछ और दिनों के बाद तुम पूरे पागल हो जाओगे। जो जिसका विचार या चिंतन करेगा, वह वैसा ही बन जायेगा। मित्रो, इसीलिए प्रतिदिन एक आधा घण्टा ईश्वर का चिंतन किया करो। इससे आप स्वयं को व संसार को सुखी करोगे। तुम्हारी विद्या तुम्हें सीधे मार्ग पर ले जायेगी। जो व्यक्ति ऐसा करेगा, वह प्रभु का प्यारा बनेगा। नहीं तो पूछा जाता है—

कभी तू काम भी आया किसी दुःखिया दरिद्री के।
जगत् में आनकर तूने, किसी की क्या भलाई की।
भलाई कर कि वह तुमको, भले कामों का फल देगा।
तेरी झोली वही आशा के फल-फूलों से भर देगा॥

हरयाणा के मन्त्री का सराहनीय सुझाव

जिला रोहतक के सरपंचों तथा पंचों को शपथ दिलाते समय हरयाणा के एक वरिष्ठ मन्त्री श्री वीरेन्द्रसिंह ने नये चुने गये सरपंचों तथा पंचों को सुझाव दिया है कि वे अपने काल में अपने-अपने ग्रामों के शराब के ठेके तथा नाजायज शराब की बिक्री बन्द करें। यदि इस कार्य में पंचायतें सफल हो जाती हैं तो हरयाणा की जनता एक भयंकर बीमारी से मुक्त हो जायेगी। ऐसे सरपंचों के नाम हरयाणा के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखे जायेंगे।

आर्य सरपंचों के नाम भेजें

हरयाणा के आर्यसमाजों तथा पंचायतों के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि उन सरपंचों के नाम तथा २०) ब्लाक बनवाने के लिए उनके चित्र सहित भेजें जो आर्यसमाज के सभासद् हैं और शराब आदि का सेवन नहीं करते।

सभा के निश्चयानुसार इस प्रकार के आर्य सरपंचों का सभा की ओर से सम्मान किया जावेगा तथा ग्राम में शराबबन्दी प्रस्ताव करवाने में उनसे सहयोग प्राप्त किया जावेगा।

दिनांक ७ सितम्बर १९८८ —प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

जिला महेन्द्रगढ़ में वेदप्रचार

वेदप्रचार प्रसार व समाज-सुधार कार्यक्रम के अन्तर्गत स्वामी देवानन्द, श्री मुरारीलाल बेचैन तथा ढोलकवादक चन्द्रपाल सहित इस भजनमण्डली का कार्यक्रम बहुत ही प्रभावशाली एवं कीर्तिमय रहा तथा भविष्य में भी आने के लिए गांववालों ने बहुत आग्रह किया। निम्न-लिखित गांवों में वेदप्रचार किया—

ग्राम भोजावास, बनार, अमरपुरा, बीघोपुर, कुन्जपुरा, अटेली मण्डी, बोचड़िया, आर्यसमाज कनीना, आर्यसमाज लूखी, आर्यसमाज खेतड़ी नगर, छीलरो, कुन्जपुरा, बैढ़ी तथा माजरी आदि।

लूखी ग्राम में पारिवारिक यज्ञ किया तथा सपत्नीक यजमान को यज्ञोपवीत धारण कराया गया। सभी ग्रामवासियों ने श्रद्धावत् यथायोग्य दान दक्षिणा दी।

—पुरोहित महावीरार्य

आर्यकुमार सभा रादौर जि० कुरुक्षेत्र का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री सुमितकुमार आर्य, मन्त्री—सुनिलकुमार आर्य, खिलमन्त्री—अनुपकुमार आर्य, उपमन्त्री-राकेशकुमार आर्य, उपप्रधान-प्रवेशकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष—अमितकुमार आर्य।

ओ३म् गान

ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् गाना साथियो।
इससे अच्छा कौन-सा है तराना साथियो॥

कौन-सी जगह है जहां वो नहीं मौजूद,
कौन-सा है तत्व जिसमें उसका ना वजूद,
उससे बड़ा कौन है समझाना साथियो,
ओ३म्……।१

पूछते हैं लोग ईश्वर दीखता नहीं,
देखते हो और क्या-क्या ये सीखते नहीं,
हमने उसे वेद से पहचाना साथियो,
ओ३म्……।२

प्रेम जिसा स्वरूप है जिसका प्रकृति परिधान,
अटल सत्य-सी भाषा जिसकी परिवर्तन से प्राण,
सच्चिदानन्द सबने उसी को माना साथियो,
ओ३म्……।३

कहें दलाल करो शुभकर्म पवित्र करो आत्मा ज्ञान,
कर्मों का फल पड़े भोगना उसका ये विधान,
उसके घर में आये, उसी के जाना साथियो,
ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् गाना साथियो।४

—अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी, सभा उपदेशक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४) रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73



सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १५, अङ्क ४१, २१ सितम्बर, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

महर्षि दयानन्द के वैदिक सिद्धांत

—पं० धर्मदेव 'धर्मोपी' व्याकरणाचार्य, गुरुकुल कांगड़ा

गतांक से आगे—

२२—'शिक्षा' जिससे विद्या सभ्यता धर्मात्मता जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटे उसको शिक्षा कहते हैं।

२३—'पुराण' जो ब्रह्मादि के बनाये ऐतरेयादि ब्राह्मण पुस्तक हैं, उन्हीं को पुराण इतिहास, कल्प गाथा और नाराशंसी नाम से मानता हूं, अन्य भागवतादि को नहीं।

२४—'तीर्थ' जिससे दुःखसागर से पार उतरें कि जो सत्यभाषण विद्या सत्संग यमादि योगाभ्यास पुरुषार्थ विद्यादानादि शुभकर्म हैं, उसी को तीर्थ समझता हूं। इतर जलस्थलादि को नहीं।

२५—'पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा' इसलिए है कि जिससे संचित प्रारब्ध बनते, जिसके सुधरने से सब सुधरते और जिसके बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं। इसी से प्रारब्ध की अपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है।

२६—'मनुष्य' को सबसे यथायोग्य स्वात्मवत् सुख, दुःख, हानि, लाभ में वर्त्तना श्रेष्ठ अन्यथा वर्त्तना बुरा समझता हूं।

२७—'संस्कार' उसको कहते हैं कि जिससे शरीर, मन और आत्मा उत्तम होवे। वह निषेकादि श्मशानांत सोलह प्रकार का है। इसको कर्त्तव्य समझता हूं और दाह के पश्चात् मृतक के लिए कुछ भी नहीं करना चाहिए।

२८—'यज्ञ' उसको कहते हैं कि जिनमें विद्वानों का सत्कार, यथा-योग्य शिल्प अर्थात् रसायन जो कि पदार्थविद्या उससे उपयोग और विद्यादि शुभ गुणों का दान, अग्निहोत्रादि जिनसे वायु वृष्टि जल औषधि की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुँचाना है, उसको उत्तम समझता हूं।

२९—जैसे 'आर्य' श्रेष्ठ और दस्यु' दुष्ट मनुष्यों को कहते हैं, वैसे ही मैं भी मानता हूं।

३०—'आर्यावर्त्त' देश इस भूमि का नाम इसलिए है कि इसमें आदि सृष्टि से आर्य लोग निवास करते हैं। परन्तु इसकी अवधि उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पश्चिम में अटक और पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी है। इन चारों के बीच में जितना देश है, उसको आर्यावर्त्त कहते हैं और जो इसमें सदा रहते हैं, उनको भी 'आर्य' कहते हैं।

३१—जो साङ्गोपांग वेदविद्याओं का अध्यापक सत्याचार का ग्रहण और मिथ्याचार का त्याग करावे, वह 'आचार्य' कहाता है।

३२—'शिष्य' उसको कहते हैं कि जो सत्य-शिक्षा और विद्या को ग्रहण करने योग्य धर्मात्मा विद्या ग्रहण की इच्छा और आचार्य का प्रिय करनेवाला है।

३३—'गुरु' माता-पिता और जो सत्य का ग्रहण करावे और असत्य को छुड़ावे, वह भी गुरु कहाता है।

३४—'पुरोहित' जो यजमान का हितकारी सत्योपदेष्टा होवे।

३५—'उपाध्याय' जो वेदों का एकदेश वा अङ्गों को पढ़ाता हो।

३६—'शिष्टाचार' जो धर्माचरणपूर्वक ब्रह्मचर्य से विद्याग्रहण कर प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग करना है। यही शिष्टाचार और जो इसको करता है, वह शिष्ट कहाता है।

३७—'प्रत्यक्षादि' आठ प्रमाणों को भी मानता हूं।

३८—'आप्त' जो यथार्थवक्ता, धर्मात्मा सबके सुख के लिए प्रयत्न करता है, उसी को आप्त कहता हूं।

३९—'परीक्षा' पांच प्रकार की है। इसमें से प्रथम—जो ईश्वर उसके गुण, कर्म, स्वभाव और वेदविद्या। दूसरी—प्रत्यक्षादि आठ प्रमाण। तीसरी—सृष्टिक्रम। चौथी–आप्तों का व्यवहार और पांचवीं–अपने आत्मा की पवित्रता, विद्या। इन पांच परीक्षाओं से सत्याऽसत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग करना चाहिए।

४०—'परोपकार' जिससे सब मनुष्यों के दुराचार दुःख छूट, श्रेष्ठाचार और सुख बढ़े उसके करने को परोपकार कहता हूं।

४१—'स्वतन्त्र' परतन्त्र जीव अपने कामों में स्वतन्त्र और कर्मफल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र। वैसे ही ईश्वर अपने सत्याचार आदि काम करने में स्वतन्त्र है।

४२—'स्वर्ग' नाम सुख विशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ति का है।

४३—'नरक' जो दुःख विशेष भोग और उसकी सामग्री को प्राप्त होना है।

४४—'जन्म' जो शरीर धारण कर प्रकट होना। सो पूर्व पर और मध्य भेद से तीनों प्रकार का मानता हूं।

४५–शरीर के संयोग का नाम 'जन्म' और वियोग मात्र को 'मृत्यु' कहते हैं।

४६—'विवाह' जो नियमपूर्वक प्रसिद्धि से अपनी इच्छा करके पाणिग्रहण करना, वह विवाह कहाता है।

४७—'नियोग' विवाह के पश्चात् पति वा पत्नी के मर जाने आदि वियोग में अथवा नपुंसकत्वादि स्थिर रोगों में स्त्री वा पुरुष का आपत्काल में स्ववर्ण वा अपने से उत्तम वर्णस्थ स्त्री वा पुरुष के साथ सन्तानोत्पत्ति करना।

४८—'स्तुति' गुण-कीर्तन श्रवण और ज्ञान होना। इसका फल प्रीति आदि होते हैं।

४९—'प्रार्थना' अपने सामर्थ्य के उपरांत ईश्वर के सम्बन्ध से जो

(शेष पृष्ठ ६ पर)

एक रात में पूरी नशाबन्दी

लेखक—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

गतांक से आगे—

गांधी जी कहते थे—"मैं तो मद्यपान को चोरी ही नहीं वेश्यावृत्ति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूं—क्या मद्यपान इन दोनों की जननी नहीं है।" हम अपने देश को कल्याणकारी राज्य (Welfare State) कहते हैं। कोई भी कल्याणकारी राज्य न दुर्व्यसनों को मान्यता देता है, न उन्हें किसी प्रकार का सहयोग या प्रोत्साहन देता है। शराब के कारखानों को शराब बनाने का लाइसेंस देना और जगह-जगह शराब की दूकानें खोलकर पीनेवालों को सुविधा प्रदान करना ऐसा ही है जैसा चोरों को चोरी करने के उनके धन्धे की दृष्टि से सुविधायें प्रदान करना या वेश्यागामियों के लिए जगह-जगह वेश्यालय खोलना या जुआरियों के लिए जुआघर खोलना। जुए के सन्दभ में 'हिन्दुस्तान' के २ सितम्बर १६७२ के अक में प्रकाशित निम्न समाचार दुर्भाग्यपूर्ण तो है ही, आश्चर्यजनक तथा हास्यास्पद भी है—

"मध्यप्रदेश में यदि मुख्यमन्त्री श्री प्रकाशचन्द सेठी को केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल की स्वीकृति मिल गई तो राज्य में सरकार से लाइसेंस शुदा जुआघर होंगे, जहां सट्टा खेलनेवाले लोग सरकार की आंखों के सामने धन्धा चला सकेंगे। श्री सेठी ने दावा किया कि सट्टे को वंद करने से सरकार को अतिरिक्त आय की आशा नहीं है, क्योंकि इस विधि से प्राप्त धन जनता में सट्टा विरोधी प्रचार को प्रोत्साहन देने में किया जायेगा।"

हम प्रायः उन बुराइयों की चर्चा करते हैं जो मनुष्यमात्र को आक्रांत करती हैं। व्यवहार की सदाचार और प्रशासन में नैतिक मूल्यों की बात करते हैं, सत्य तथा अहिंसा का एक व्यवस्थित समाज की आधारशिला के रूप में उल्लेख करते हैं। किन्तु इन महान् उद्घोषणाओं के बावजूद इन सभी बातों का आचरण में उल्लंघन हो रहा है। हमारा संविधान तो कहता है कि "राज्य अपनी जनता के पोषक भोजन और जीवन-निर्वाह के स्तर को ऊंचा करने और सार्वजनिक स्वास्थ्य के सुधार को अपने प्रारम्भिक कर्त्तव्यों में मुख्य समझेगा और विशेषतया राज्य यह प्रयत्न करेगा कि नशीले पेयों और नशीली दवाइयों के प्रयोग का निषेध हो"। आश्चर्य है कि संविधान की इस धारा के अनुसार नशीली वस्तुओं के प्रयोग पर रोक लगने की बजाय, खाद्यान्न की भारी राशि भूखे लोगों के मुंह से छीनकर मद्यसार के रूप में परिवर्तित की जारही है। शराब की भट्ठियों और कारखानों के लिए कच्चे माल के रूप में मुख्यतः जौ, जई, शहतूत, चावल, गेहूं, सागू, चीनी, सोरा और फल भारी मात्रा में प्रयोग में आते हैं। राशन पर गुजारा करनेवाला गृहस्थी चुपचाप हसरतभरी निगाहों से देखता हुआ खून के आंसू पीकर रह जाता है। शराबियों को पलभर की मौज के लिए शराब के कारखाने और भट्ठियां हजारों एकड़ भूमि की उपज को अपने में खपा रही हैं।

एक ओर सरकार शराब के विरुद्ध प्रचार करती है और दूसरी ओर धड़ाधड़ शराब के कारखानों और ठेकों को बढ़ाती जाती है। इसे कहते हैं—'चोर से कहे चोरी कर और शाह से कहे जाग।'

शराब की लत के कारण मजदूरों की तो हानि होती है, उसके साथ उत्पादन में होनेवाली कमी की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। छुट्टी के दिन विशेष रूप से मदमस्त होने के फलस्वरूप सुस्ती का सोमवार तो बदनाम होगया है। मजदूरों के मालिक इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि वेतन मिलने के अगले दिन मजदूर अकसर गैर-हाजिर रहते हैं। कार्य करने की इच्छा और क्षमता को भी धक्का लगता है।

शराब पीना अब फैशन बन गया है–सामाजिक प्रतिष्ठा (Status Symbol) माना जाने लगा है। पंजाब, हरयाणा व दिल्ली के स्कूलों, कालिजों में अध्यापक और छात्र-छात्राय बुरी तरह शराब के चगुल में फंस गये हैं। 'हिन्दुस्तान' (१-२-७२) में प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार "दिल्ली विश्वविद्यालय में ६० प्रतिशत लड़कों और ३५ प्रतिशत लड़कियों ने कम से कम एक बार शराब अवश्य पी है। यदा-कदा पीते रहनेवालों में ७६ प्रतिशत लड़के और ७२ प्रतिशत लड़कियां हैं।" ये आंकड़े आज से १५ साल पहले के हैं। वर्तमान में यह प्रतिशत अनुमानत: ६० और ५० बताया जाता है। आनेवाले समय में यह पीढ़ी देश को कहां पहुँचायेगी, इसकी कल्पना मात्र से हृदय कांप उठता है।

४ मई, १८७७ के 'हिन्दुस्तान' के अनुसार भूतपूर्व केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री डा० सुशीला नैयर ने २-५-७२ को अपनी प्रेस कांफ्रेंस में रहस्योद्घाटन किया था कि "हरयाणा के छात्रों को कुछ निश्चित घण्टों में मुफ्त शराब बांटकर शराब का प्रचार किया जारहा है।" तब से आज १५ वर्ष बाद की स्थिति तो सबके सामने है। कभी मुफ्त पिलानेवाले आज लखपति, करोड़पति बने बैठे हैं।

स्कूलों के अधिकतर अध्यापक शराब पीने लगे हैं। परीक्षा के अवसरों पर तो निरीक्षकों को शराब पिलाकर नकल का धन्धा जोरों पर है। शराब के सहारे अंक भी बढ़वाये जा सकते हैं। पटवारी या पुलिस के सिपाही से लेकर बड़े-बड़े अफसरों तक से एक बोतल की मदद से बड़े से बड़े काम कराये जा सकते हैं। ग्राम पंचायत से लेकर संसद तक में शराब की पहुंच है। मन्त्री, विधायक, सांसद सभी इसमें लिप्त हैं। परीक्षाओं की तरह चुनावों में भी शराब की बोतल निर्णायक बन जाती है।

परिवार की रोटी जुटानेवाले के शराबी बन जाने पर सबसे अधिक मार बेचारी महिलाओं पर पड़ती है। उन्हें मारपीट झेलनी पड़ती है, भूखे बालकों की वेदना अनुभव करनी पड़ती है। आये दिन घर में कलह होती है। पड़ोसियों की दृष्टि में वे हेय बन जाती हैं। शराबी पति के साथ नारकीय जीवन बिताना जब असम्भव हो जाता है तो आत्महत्या करने को विवश हो जाती हैं।

कभी हम गर्व से कहते थे—

एतद्देशप्रसूतस्य 		सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

संसार के लोग अच्छी बातें सीखने के लिए हमारे पास आते थे। आज हमें प्रेरणा लेनी चाहिये रूस के महान् नेता गोर्बाच्योव से। जिसने हमारे मेहमान के रूप में अपने सम्मान में आयोजित समारोह में केवल फलों का रस ग्रहण किया। उन्होंने शराब का पूर्ण बहिष्कार करके अपने महान् व्यक्तित्व का परिचय दिया। अपने देश में शराब विरोधी प्रचार के लिए उन्होंने डेढ़ करोड़ कार्यकर्त्ता लगा रखे हैं और शराब पीनेवालों को पार्टी से निकाल रहे हैं।

भारत के प्राचीन गौरव की रक्षा करने, गरीबी को दूर करने, जनता के स्वास्थ्य को ठीक रखने, पारिवारिक सुख-शांति को बनाये रखने, स्त्रियों की इज्जत बचाने, बच्चों का भविष्य सुधारने, दुर्घटनाओं तथा दंगों की रोकथाम करने, चोरी, डाके, हत्या, बलात्कार आदि की घटनाओं को रोकने के लिए आवश्यक है कि शराब पर तत्काल प्रतिबंध लगाया जाये। परन्तु जैसा कि गांधी जी का कहना है कि समझाने बुझाने की उदार नीति से इस प्रचण्ड व्याधि का इलाज नहीं होगा। इसके लिए प्रचण्ड क्रांतिकारी कदम उठाने पड़ेंगे और कठोरता से उन्हें लागू करना होगा। यह काम युद्धस्तर पर करना होगा। इसलिये आवश्यक है—

१—नशाबन्दी के विषय को राज्यों की सूची से निकाल कर केन्द्रीय सूची में डाला जाये, जिससे देश में एक साथ शराबबन्दी हो सके।

२—बैंकों के राष्ट्रीयकरण आदि की तरह अध्यादेश (ऑर्डिनेंस) के द्वारा शराबबन्दी का आदेश जारी किया जाये। तदनुसार शराब के बनाने, बेचने, खरीदने, रखने, पीने-पिलाने, इसमें किसी में सहयोग देने को दण्डनीय अपराध घोषित किया जाये। इसका उल्लंघन करनेवाले को आजीवन (मृत्युपर्यन्त) कारावास का दण्ड दिया जाये।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सूर्य ग्रहण मेले पर कुरुक्षेत्र में वेदप्रचार शिविर

८ से ११ सितम्बर तक कुरुक्षेत्र में सूर्य ग्रहण मेले पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द वैदिकधाम मार्केट के प्रांगण में वेदप्रचार शिविर का आयोजन किया गया। वेदप्रचार विभाग के अधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह ने स्वयं वहां पहुंचकर शिविर के प्रबन्ध का निरीक्षण किया। सभा के सम्पत्ति निरीक्षक श्री भगवानसिंह ने प्रबन्ध व्यवस्था करने में दिन-रात परिश्रम किया।

इस अवसर पर प्रतिदिन यज्ञ, सत्संग तथा ऋषिलंगर की व्यवस्था की गई थी। सभा के उपदेशक श्री महेन्द्रसिंह ने सूर्य ग्रहण के अवसर पर यज्ञ करवाया तथा सभा की पं० चिरंजीलाल जी आर्य की भजन मण्डली एवं पं० विद्याभूषण जी के प्रतिदिन वेदप्रचारार्थ भजन होते रहे। सुननेवाले नर-नारियों पर वैदिकधर्म प्रचार का प्रभाव पड़ा। पं० चिरंजीलाल जी की मण्डली को मेले में अन्य शिविरों पर भी प्रचारार्थ आमन्त्रित किया गया। आचार्य सत्यप्रिय जी वेदप्रचाराधिष्ठाता प्रादेशिक सभा ने भी वेदप्रचार पर विचार रखे।

जबलपुर आर्यसमाज द्वारा समानाधिकार दिवस आयोजित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के निर्णयानुसार जन्माष्टमी उत्सव के अनुक्रम में आर्यसमाज एवं आर्य महिला समाज नेपियर टाउन, आर्यसमाज गोरखपुर, आर्यसमाज गंजीपुरा के सामूहिक तत्वावधान में दिनांक ४ सितम्बर, ८८ को समानाधिकार दिवस का आयोजन दयानन्द भवन नेपियर टाउन, जबलपुर में आयोजित किया गया।

सर्वप्रथम प्रातः ७ बजे वैदिक यज्ञ प्रारम्भ होने पर उपस्थित हरिजन भाइयों को यज्ञोपवीत धारण कराया गया एवं दो हरिजन कुटुम्ब के यजमान आसन पर रहते हुए यज्ञ सम्पन्न हुआ।

इसके बाद ८.३० बजे प्रातः डाक्टर श्री अजय ग्रोवर के करकमलों द्वारा वैदिक-ध्वज फहराया गया। तत्पश्चात् श्री भगवतीधर वाजपेयी भू०पू० सम्पादक दैनिक युगधर्म जबलपुर के मुख्य आतिथ्य में तथा श्री सोहनलाल अग्रवाल एडवोकेट की अध्यक्षता में सभा का आयोजन हुआ। इस अवसर पर श्रीमती स्नेह शर्मा, श्री हेमराज आर्य ने आकर्षक एवं शिक्षाप्रद भजनों से जनता का दिल मोह लिया तथा श्री सुन्दरदास बत्तरा, श्री गंगाप्रसाद विद्यार्थी, पं० गिरजानन्दन उपाध्याय, मुख्य अतिथि श्री भगवतीधर वाजपेयी एवं अध्यक्ष ने अपने शिक्षाप्रद सारगर्भित भाषणों में इस आयोजन की महत्ता एवं उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए इस कार्यक्रम से प्रत्येक जीवधारी को समान स्थिति, देश की एकता एवं अखण्डता निरन्तर स्थापित रखने के लिए तथा समाज व देश की उन्नति एवं प्रगति के लिए बहुत ही सार्थक व व्यावहारिक कदम निरूपित किया तथा हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी वर्ग का क्यों न हो, एक दूसरे के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने का आह्वान किया।

अन्त में लगभग २०० व्यक्तियों ने सामूहिक भोज में भाग लिया तथा इस प्रकार आयोजित समानाधिकार दिवस को सफल बनाने में सक्रिय सहयोग दिया।

नगर आर्यसमाज रामपुरा कोटा में वेदप्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज रामपुरा कोटा द्वारा दिनांक २८-७-८८ से ४-९-८८ तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया गया। जिसमें वेदकथा एवं उपदेश प्रतिदिन प्रातः व सायं मथुरा से पधारे पं० श्री प्रेमभिक्षुक, बून्दी के पिताम्बरलाल शर्मा, सुनेल के श्री कन्हैयालाल एवं मुरेना से चित्रोपदेशक रामनिवास जी का उपदेश व भजनोपदेश हुए।

—रामदयाल मेहरा उपमन्त्री

चुनाव सूचना

गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां व कन्या गुरुकुल खानपुर महासभा के पदाधिकारियों का निर्वाचन २५ सितम्बर, १९८८ रविवार को ११ बजे प्रातः गुरुकुल भैंसवाल में होगा। इसकी सूचना १४-८-८८ को श्री भक्त फूलसिंह बलिदान दिवस पर स्टेज पर दी गई थी और इसके बाद सभी सदस्यों को डाकद्वारा भी सूचना दे दी गई है। यदि किसी सदस्य को कार्ड न मिला हो और उसका नाम सदस्य सूची में है तो उसे मताधिकार और सम्मति देने का अधिकार होगा।

कुछ समाचारपत्रों में छपी सूचना पढ़कर आश्चर्य हुआ कि कुलपति जी ने व्यवस्था में परिवर्तन किया है। महासभा द्वारा निर्वाचित प्रधान और सेक्रेट्री ही व्यवस्था के जिम्मेदार हैं। विधान के अनुसार कुलपति को या किसी अन्य को चुनाव प्रक्रिया में दखल देने का अधिकार नहीं है।

स्मरण रहे कुलपति जी द्वारा निर्मित तदर्थ समिति को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय ने मान्यता प्रदान नहीं की है।

१७-९-८८ —धर्मचन्द शास्त्री, सचिव महासभा

सोनीपत में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी-पर्व सम्पन्न

आर्यसमाज सोनीपत नगर के प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार दिनांक २७-८-८८ को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी-पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। इसमें हरिजन भाइयों को आमन्त्रित किया गया। उन्हें यज्ञोपवीत धारण कराये गये और यज्ञ में उन्हें ही यजमान बनाया गया। अन्त में जलपान का भी आयोजन किया। सभा की अध्यक्षता चौ० फूलचन्द जी एडवोकेट (पूर्व मन्त्री हरयाणा सरकार) ने की।

मुख्यवक्ता आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल की छात्राओं के अतिरिक्त सर्वश्री महासिंह, रामचन्द्र आर्य, रामगोपाल आर्य, अमरेश्वर भूषण शर्मा, हरिश्चन्द्र स्नेही एवं वेदप्रकाश अग्रवाल रहे।

—मन्त्री

आर्यसमाज बीकानेर जि० महेन्द्रगढ़ का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज छोटी बीकानेर जि० महेन्द्रगढ़ का उत्सव १७-१८ सितम्बर को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा के भजनोपदेशक पं० चिरंजीलाल, नरदेव आर्य, कंवरपाल आर्य एवं बहन राजबाला आर्या के प्रभावशाली भजन हुए। स्वामी ओमानन्द सरस्वती, श्री आचार्य विश्वपाल, श्री भरतलाल शास्त्री आदि के वेद प्रवचन हुए। सभा को ४३५) वेदप्रचारार्थ प्राप्त हुए।

—मन्त्री

आर्यसमाज जींद शहर का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री सुरेन्द्रसिंह एडवोकेट, उपप्रधान—मा० रतनलाल, ला० तेलूराम, मन्त्री—कृष्णदेव शास्त्री, उपमन्त्री—कंवर महावीरसिंह एडवोकेट, बलवन्तराय आर्य, कोषाध्यक्ष—सत्यनारायण, पुस्तकाध्यक्ष—डा० ईश्वरदत्त।

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

अबोहर फाजिल्का के लोग राजीव से मिले

फाजिल्का, ६ सितम्बर (निस)। प्रधानमन्त्री राजीव गांधी ने विश्वास दिलाया है कि अबोहर व फाजिल्का के लोगों के साथ पूरा न्याय होगा और इन्हें संघीय क्षेत्र बनाने की मांग पर भी सहानुभूति से विचार किया जायेगा।

श्री गांधी ने यह आश्वासन फाजिल्का तहसील हरयाणा सम्मिलन समिति के एक शिष्टमण्डल को दिया, जो पूर्वमन्त्री प्रो० शेरसिंह के नेतृत्व में दिल्ली में उनसे मिला था।

शिष्टमण्डल में अबोहर फाजिल्का के हरयाणा समर्थक हिंदी भाषी गांवों के नेता तेगराम के मुताबिक प्रधानमन्त्री से आग्रह किया गया कि मैथ्यू आयोग की रपट के मुताबिक क्षेत्र के ८३ हिन्दी भाषी गांव हरयाणा में मिलाये जायें। श्री गांधी ने कहा कि क्षेत्रीय विवाद पंजाब में शांति स्थापित होने के बाद किया जायेगा।

(दैनिक वीर अर्जुन से साभार)

अखण्ड भारत अभिनिवेश

स्वधर्म का दमन हुआ, स्वदेश का पतन हुआ।

अखण्ड वीरता नसी, अखण्ड धीरता नसी।
अखण्ड सभ्यता नसी, अखण्ड संस्कृति नसी।
अखण्ड सिन्धुदेश का द्विखण्ड संगठन हुआ।
स्वधर्म का दमन हुआ, स्वदेश का पतन हुआ॥

कहीं न एकता रही विभाग ही विभाग है।
सभी तरफ बरस रही सहस्रधार आग है।
असीम रागद्वेष का करालकाल नाग है।
पवित्र मातृभूमि का उजड़ रहा सुहाग है।
बचो विरोधशूल से पुनः प्रसून-सा खिलो।
प्रबुद्ध आर्यवीर हो···अरे बढ़ो···गले मिलो।
महाप्रचण्ड ज्वाल से उजाड़ ये चमन हुआ।
स्वधर्म का दमन हुआ, स्वदेश का पतन हुआ॥

उठो कि देश कह रहा प्रमाद शत्रु से बचो।
हवित्र-यज्ञ धूम से चरित्र शृंखला रचो।
तुम्हीं महान् देश के अजेय युद्धवीर हो।
अभय-व्रती सदैव हो अजस्र कर्मवीर हो।
'कृतं स्मर क्रतो स्मर' अनादि स्वर पुकारता।
जगत् अशांति के लिए इसी तरफ निहारता।
ध्वजा प्रशस्त ले बढ़ो विनष्ट ये वतन हुआ।
स्वधर्म का दमन हुआ, स्वदेश का पतन हुआ॥

उठो कि तुम महान् हो सशक्त हो समान हो।
स्वतन्त्र हिन्द देश के स्वतन्त्र नौजवान हो।
दैन्य-भाव छोड़ दो सुसैन्य-साज को सजो।
अखण्ड ब्रह्मचर्य से अखण्ड ब्रह्म को भजो।
तुम्हीं जगत् पिता तुम्हीं, तुम्हीं प्रकाशमान हो।
तुम्हीं अखण्ड ज्योति से प्रदीप्त अंशुमान हो।
अरे! महाअनर्थ जो पड़ोस में यवन हुआ।
स्वधर्म का दमन हुआ, स्वदेश का पतन हुआ॥

प्रेषक—आचार्य सर्वे ब्लाक-७/११३, सफदरजंग विस्तार
नई दिल्ली-११००२६

शराब पीना सामाजिक अभिशाप है।

आंखों का २०वां मुफ्त आप्रेशन कैम्प

पलवल : श्री मूलचन्द सचदेवा प्रधान आर्य बालगृह पलवल द्वारा जनता के सहयोग से आंखों का मुफ्त आप्रेशन कैम्प १-१०-८८ से ६-१०-८८ तक आर्य बालगृह न्यू कालोनी, पलवल में लगाया जारहा है। आप्रेशन २ अक्तूबर को श्री मुलतान सेवा समिति सराफखाना दिल्ली के चीफ सर्जन डा० बी० एन० खन्ना करेंगे। भोजन, फल, दूधादि की व्यवस्था शिविर की ओर से निःशुल्क रहेगी।

—अजीतकुमार आर्य
मन्त्री आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर, पलवल

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत की फुटबाल टीम जिला करनाल में प्रथम

जिला करनाल की वर्षा एवं पतझड़ कालीन खेलकूद प्रतियोगिता में आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पानीपत की फुटबाल टीम जिला करनाल में प्रथम रही। इस जिले में खेल के दस जोन बनाये गये हैं। जिसमें २ जोन+२ प्रशाखी के भी सम्मिलित हैं।

विशेष बात यह है कि इस टीम को किसी भी जोन की कोई टीम एक भी गोल नहीं कर सकी। पिछले वर्ष भी यही टीम जिले में प्रथम रही थी।

केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रदत्त दस हजार का पुरस्कार भी पिछले दो वर्षों से यही टीम प्राप्त करती रही है।

—लाभसिंह प्रिंसिपल

पंजाब सभा के श्री कर्मसिंह का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर कार्यालय के बहुत पुराने लिपिक ठा० कर्मसिंह जी का ३१ अगस्त को अचानक हृदयगति बन्द होने से निधन होगया। वे पंजाब सभा के लाहौर कार्यालय में १७ वर्ष की आयु में सेवक नियुक्त हुए थे और भारत विभाजन होने पर जब कार्यालय जालन्धर में स्थापित हुआ तो उन्हें सेवक से लिपिक पदोन्नत किया गया। वे अपना कार्य बहुत परिश्रम तथा लगन से करते थे। इसी कारण सभा ने उन्हें सभा का मुख्यतारेआम बना दिया था। उन्होंने सभा में ५० वर्ष के लगभग सेवा की है। मुझे उनके साथ पंजाब सभा में कार्य करने का अवसर मिला है। उनका व्यवहार सभी के साथ स्नेह पूर्ण रहता था।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति तथा उनके वियोग में दुःखी परिवार को इस कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। —केदारसिंह आर्य कार्यालयाधीक्षक

शोक समाचार

१—श्री मुन्शीराम आर्य भ्राता शहीद अमरसिंह आर्य हिन्दी रक्षा आंदोलन ग्राम राजपुर जि० जींद का १६ अगस्त को ८३ वर्ष की आयु में स्वर्गवास होगया। आप बलिदान स्मारक गुलकनी के प्रमुख स्तम्भ थे। इन्होंने अपने जीवनकाल में आर्यसमाज का अथक कार्य किया है। अपनी कमाई से लाखों रुपया आर्यसमाज के कार्यों में उदारतापूर्वक दान दिया। हिन्दी रक्षा आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। इनके निधन से इनके परिवार तथा बलिदान स्मारक की जो क्षति हुई है, वह असहनीय है। उनकी स्मृति में २० अगस्त को शांति-यज्ञ का आयोजन किया गया।

—कर्मपाल संचालक बलिदान स्मारक

२—आर्यसमाज सिलारपुर तोताहेड़ी जि० महेन्द्रगढ़ के उपमन्त्री श्री जितेन्द्रकुमार आर्य जे०ई० की दादी श्रीमती चम्पादेवी का २३ अगस्त को निधन होगा। वे धार्मिक भावना की महिला थीं। आर्यसमाज की ओर से एक शोकसभा में उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।

—जयमालसिंह बेधड़क

हरयाणा ग्राम पंचायत चुनाव में विजयी शराबबन्दी समर्थक सरपंचों की सूची

गतांक से आगे—

५४ श्री हवासिंह सरपंच ग्राम अटायल जि० रोहतक
५५. ,, देवकराम आर्य सरपंच ग्राम दूबवा जि० भिवानी
५६. सूबेदार सुखदेवसिंह ,, ,, गुहना जि० सोनीपत
५७. श्री नैकीराम ,, ,, औरंगपुर डा० दादरी तोये जि० रोहतक
५८. ,, मेहरचन्द शर्मा ,, ,, बजोना जि० भिवानी
५९. ,, धर्मपाल ,, ,, खरावर ,,
६०. ,, ईश्वरसिंह ,, ,, भापड़ौदा ,,
६१. ,, रामप्रसाद ,, ,, गुलकनी जि० जींद
६२. ,, दिलबाग ,, ,, राजपुरा ,,
६३. डा० साधुराम ,, ,, हमीदपुर भैणी जि० हिसार
६४. श्री सज्जनसिंह ,, ,, पेटवाड़ ,,
६५. ,, मामराज आर्य ,, ,, बूबका जि० कुरुक्षेत्र
६६. ,, चन्दनसिंह ,, ,, खेड़की ,,
६७. ,, दयानन्द ,, ,, चमरोड़ी ,,
६८. ,, अरविन्द ,, ,, धौलरा ,,
६९. ,, किशोरीलाल ,, ,, काजनू ,,
७०. ,, भूलण आर्य ,, ,, गोयला कलां जि० करनाल
७१. ,, मुन्शीराम ,, ,, माढयड़ जि० हिसार
७२. ,, जलराम भक्त ,, ,, बनपारी जि० फरीदाबाद
७३. ,, रघुवीरसिंह आर्य सरपंच ग्राम तुमसरा ,,
७४. ,, शक्तिसिंह ,, ,, ,, दुर्गापुर ,,
७५. ,, जवाहरसिंह ,, ,, मीरा ,,
७६. ,, विजयेन्द्रसिंह ,, ,, ,, चांट ,,
७७. ,, महेन्द्रसिंह ,, ,, गहलब ,,
७८. ,, किशनसिंह तेवतिया ,, ,, कोंडल ,,
७९. ,, सुन्दरसिंह ,, ,, ममरोला ,,
८०. ,, रामसिंह ,, ,, भगूरी ,,
८१. ,, आरामसिंह ,, ,, दुधोला ,,
८२. ,, गंगालाल ,, ,, अल्लिका ,,
८३. ,, रघुवीरसिंह ,, ,, जनौली ,,
८४. ,, सुखवीरसिंह आर्य ,, ,, ताजूपुरा ,,
८५. ,, महासिंह ,, ,, शामलो कलां जि० जींद
८६. ,, राजमल ,, ,, खीमाखेड़ी ,,

(क्रमशः)

आर्यसमाज तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने निकट के ग्रामों के उन सरपंचों के नाम जो शराब का सेवन नहीं करते हैं, लिखकर शीघ्र भेजने का कष्ट करें, ताकि उनके नाम इस सूची में प्रकाशित हो सकें।

—सम्पादक

जाटवीरों का इतिहास

लेखक कैप्टन दलीपसिंह अहलावत ने अपनी पुस्तक "जाटवीरों का इतिहास" छपने के लिए प्रेस में दे दी है, जो शीघ्र ही छपकर तैयार हो रही है। इसका अग्रिम मूल्य १०० रुपये लेकर ग्राहक बनाये जारहे हैं। छपने के बाद इस एक हजार पृष्ठों के विशाल इतिहास ग्रंथ का मूल्य २०० रुपये होगा। जो महानुभाव ग्राहक बनना चाहें, वे नीचे लिखे पते पर सम्पर्क करें—

—कैप्टन दलीपसिंह अहलावत C/o बलवीरसिंह J.E.
कैनाल रेस्ट हाउस, रोहतक

आर्यसमाज बम्बई में भव्य वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन

बम्बई दिनांक ३ सितम्बर : संसार की सर्वप्राचीन आर्यसमाज काकड़वाड़ी बम्बई के तत्वावधान में वेदप्रचार सप्ताह का भव्य आयोजन दिनांक २७ अगस्त से २ सितम्बर तक सम्पन्न हुआ। प्रथम दिन श्रावणी उपाकर्म का पर्व पं० दयालशंकर जी धर्माध्यक्ष आर्यसमाज बम्बई के निर्देशन में सफलतापूर्वक हुआ। तत्पश्चात् नित्य प्रातः डा० भवानीलाल भारतीय जी के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ जन्माष्टमी तक चलता रहा। पं० विश्वदेव जी शर्मा तथा पं० रामदत्त जी शर्मा के नेतृत्व में गुरुकुल एटा के ब्रह्मचारियों ने वेदपाठ किया। पूरे सप्ताहभर डा० भारतीय तथा पं० विश्वदेव जी के वेदप्रवचन तथा एटा के छात्रों का वेदपाठ (प्रकृति एवं विकृति) होता रहा। इस समारोह को सफल बनाने में आर्यसमाज बम्बई के उपप्रधान श्री गणपतराय जी आर्य एवं श्री झाउलाल जी शर्मा मन्त्री, श्री करसनदास राणा तथा कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्रनाथ पांडेय का पूर्ण योगदान रहा। पं० दयाशंकर जी शर्मा का निर्देशन एवं मार्गदर्शन सदा प्राप्त रहा। पूरे सप्ताहभर समस्त आगत अतिथियों एवं श्रोताओं को प्रातः सायं आर्यसमाज की पाकशाला में सुस्वादु भोजन दोनों समय कराया जाता था। आर्यसमाज पिम्परी पूना में भी दिनांक ४ सितम्बर को डा० भवानीलाल भारतीय का ओजस्वी भाषण हुआ। समाज के प्रधान श्री जगतप्रसाद गौतम का सहयोग और संरक्षण सराहनीय रहा।

डा० भवानीलाल भारतीय दयानन्द पुरस्कार से सम्मानित

आर्यजगत् को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध शोध विद्वान् तथा प्रगल्भवक्ता डा० भवानीलाल जी भारतीय प्रो० दयानन्द शोधपीठ पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ को आर्यसमाज फुलेरा राजस्थान की ओर से दिनांक १३-११-८८ को ऋषि मेले के शुभ अवसर पर दयानन्द पुरस्कार से सम्मानित किया जारहा है। यह पुरस्कार डा० भारतीय की आर्यसमाज के साहित्य के प्रति की गई उनकी सेवाओं के उपलक्ष्य में दिया जारहा है। साथ ही उनकी षष्टिपूर्ति के अवसर पर एक स्मारिका का भी विमोचन इस अवसर पर स्वामी सत्यप्रकाश जी के द्वारा सम्पन्न होगा। जिसमें डा० भारतीय के व्यक्तित्व एवं लेखन के मूल्यांकन परक विशिष्ट लेख तथा उनकी साहित्यिक उपलब्धियों का विवेचन रहेगा। अतः आपसे निवेदन है कि इस अवसर पर आप अपनी शुभ कामनायें हमें भेजें।

—भंवरलाल शर्मा, मन्त्री आर्यसमाज फुलेरा, राजस्थान

भरतपुर में एक शोध गोष्ठी

वेद विज्ञान शोध संस्थान भरतपुर में एक शोध गोष्ठी दिनांक १०-११ सितम्बर को सम्पन्न हुई। इसका उद्घाटन जोधपुर विश्व विद्यालय के भूतपूर्व कुलपति प्रो० सतीशचन्द्र गोयल ने किया। गोष्ठी के चार सत्रों में डा. मनोहरलाल गुप्त ने वेद और विज्ञान के पारस्परिक सम्बन्ध का विश्लेषण किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता करते हुए डा० भवानीलाल भारतीय ने स्वामी दयानन्द को वेद में विज्ञान के अस्तित्व की घोषणा करनेवाला प्रथम वैदिक विद्वान् बताया। संगोष्ठी का सुचारु संचालन डा० ओम्प्रकाश वेदालंकार ने किया तथा इसमें दिल्ली, जयपुर, अजमेर, चण्डीगढ़ आदि के अनेक वेदज्ञों ने भाग लिया।

चण्डीगढ़ में ईसाई परिवार की शुद्धि

दिनांक ५-९-८८ को श्री डा० इन्द्रराज शर्मा प्रधान आर्यसमाज २२ सैक्टर चण्डीगढ़ की अध्यक्षता में ५ सज्जनों के ईसाई परिवार को शुद्ध करके आर्य हिन्दू परिवार में सम्मिलित किया गया।

—नरेन्द्रनाथ तहसीलदार उपप्रधान

हांसी क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं में नैतिक शिक्षा की धूम

९ अगस्त से २२ अगस्त तक राजकीय उच्च विद्यालय जमालपुर, सीसर, सोरखी, नारनौंद, डाटा गुराना जमावड़ी महम में श्री भरतलाल शास्त्री भूतपूर्व पुरोहित आर्यसमाज हांसी एवं पूज्य महात्मा कीर्तिदेव जी द्वारा विद्यार्थियों में नैतिक शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया गया। जिसमें पुरातन शिक्षा एवं गुरुकुल प्रणाली की विशेषता, देश की वर्तमान बिगड़ती सामाजिक स्थिति, विद्यार्थियों की पनपती कुप्रवृत्तियों की चर्चा एवं इसके स्थान पर चरित्र निर्माण शिक्षा से शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति तथा राष्ट्रीय उत्थान पर बल दिया। रोहतक में भी पाल भारतीय माडल स्कूल, नरुला माडल स्कूल व डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल में नैतिक शिक्षा पर प्रवचन दिया। जिसमें श्री गुरुदत्त मन्त्री प्रधाना मोहल्ला का विशेष योगदान रहा।

—भरतलाल शास्त्री सभा उपदेशक

(पृष्ठ १ का शेष)

विज्ञान आदि प्राप्त होते हैं, उनके लिए ईश्वर से याचना करना और इसका फल निरभिमान आदि होता है।

५०—'उपासना' जैसे ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव पवित्र हैं, वैसे अपने करना। ईश्वर को सर्वव्यापक, अपने को व्याप्य जान के ईश्वर के समीप हम और हमारे समीप ईश्वर है, ऐसा निश्चय योगाभ्यास से साक्षात् करना उपासना कहाती है। इसका फल ज्ञान की उन्नति आदि है।

५१—'सगुणनिर्गुण-स्तुति प्रार्थनोपासना' जो-जो गुण परमेश्वर में हैं, उनसे युक्त और जो-जो गुण नहीं हैं, उनसे पृथक् मानकर प्रशंसा करना 'सगुणनिर्गुण-स्तुति'। शुभ गुणों के ग्रहण की ईश्वर से इच्छा और दोष छुड़ाने के लिए परमात्मा का सहाय चाहना 'सगुणनिर्गुण प्रार्थना और सब गुणों से सहित, सब दोषों रहित परमेश्वर को मानकर अपने आत्मा को उसके और उसकी आज्ञा के अर्पण कर देना सगुण-निर्गुणोपासना कहाती है।

(पृष्ठ २ का शेष)

३—अध्यादेश को तत्काल लागू समझा जाये और सेना व पुलिस की सहायता से रातों-रात शराब बनानेवाले कारखानों और बेचनेवाली दुकानों, होटलों आदि को सरकार के अधिकार में ले लिया जाये। सारे स्टाक को तत्काल नष्ट कर दिया जाये।

४—२४ घण्टे के भीतर शराब छोड़ने की लिखित प्रतिज्ञा न करने वाले सांसदों, विधायकों, मन्त्रियों, अफसरों, अध्यापकों, कर्मचारियों आदि को तत्काल अपने-अपने पद या अधिकार से वंचित कर दिया जाये।

५—अपने सदस्यों के लिए मद्यपान को अपराध न माननेवाले राजनीतिक दलों को प्रतिबन्धित कर दिया जाये।

६—किसी प्रकार का भी चुनाव लड़नेवाले प्रत्याशी के लिए इस आशय का शपथ-पत्र (ऐफिडेविट) देना अनिवार्य होगा कि वह किसी भी प्रकार के नशीले पदार्थ का सेवन नहीं करता है।

७—हर घर, दफ्तर, कारखाने आदि पर सर्वत्र समय-समय पर छापे मारे जायें और वहां पाई गई शराब के लिए जिम्मेवार व्यक्ति को जेल में डाल दिया जाये।

८—यथासमय आर्डिनेंस को संसद द्वारा कानून के रूप दे दिया जाये।

९—व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के नाम पर यदि संविधान की कोई धारा इस कार्य में बाधक हो तो उसमें अपेक्षित संशोधन कर लिया जाये।

श्री सत्यानन्द आर्य की पुस्तक का विमोचन

दिल्ली के कार्यकारी पार्षद (शिक्षा) श्री कुलानन्द जी भारतीय द्वारा पुराने सचिवालय में आयोजित एक सादे समारोह में श्री सत्यानंद आर्य की पुस्तक "जीवन सौरभ" का विमोचन किया गया। इस अवसर पर श्री कुलानंद भारतीय ने कहा कि भारत में ऐसे अनेक महान् व्यक्ति, सन्त पैगम्बर और विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करनेवाले प्रतिभाशाली, दार्शनिक और विचारक हुए, जिनके विचारों और संदेशों से हमें प्रेरणा मिलती है। ऐसे महानुभावों के चिन्तन और मनन से जुड़े हुए प्रसंगों को जनसामान्य के लाभ के लिए पुस्तक का रूप देना आज की एक बहुत बड़ी आवश्यकता है।

श्री भारतीय ने लेखक को बधाई देते हुए उनके इस कार्य को सामयिक महत्व का बताया और कहा कि इस पुस्तक के संकलित महापुरुषों के सन्देश नई पीढ़ी के लिए और विशेषकर छात्र-छात्राओं के लिए बहुत उपयोगी हैं।

इस अवसर पर हिन्दी अकादमी के सचिव डा० नारायणदत्त पालीवाल ने श्री लेखक के प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि हर युग में महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग भावीपीढ़ी का मार्गदर्शन करते आये हैं। अतः ऐसे साहित्य को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

पंच, सरपंच ऐसे साहसी होने चाहिएं

सभा कार्यालय में ग्राम बजोना जि० भिवानी का एक पत्र प्राप्त हुआ है। पाठकों की जानकारी हेतु पत्र प्रकाशित किया जारहा है—

ग्राम बजोना (भिवानी) १०-९-८८—ग्राम पंचायत बजोना में न तो शराब पीने दूंगा और न ही कोई ठेका खोलने दूंगा। यह मेरा पक्का वचन है। हमारी सारी पंचायत इसका विरोध करती है और हम आपके साथ हैं और आप हमारे साथ हैं। दोनों मिलकर इस समस्या को हल करेंगे। सर्वश्री मेहरचन्द शर्मा सरपंच, रोहताश, भरतसिंह, बनवारीलाल, हरिसिंह, धर्मसिंह, श्रीमती केसरदेवी आदि।

वेदप्रचार सप्ताह आदि के कार्यक्रम

आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक	१९ से २५ सितम्बर
,, शेखपुरा जि० करनाल	२३ से २५ ,,
गुरुकुल आर्यनगर जि० हिसार	२३ से २५ ,,
आर्यसमाज मतलोढ़ा मण्डी जि० जींद	२६ से २८ ,,
आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ जि० रोहतक	२६ से २ अक्तूबर
आर्यसमाज रेवाड़ी जि० महेन्द्रगढ़	३० से २ ,,
,, शाहबाद मारकण्डा जि० कुरुक्षेत्र	२ से ९ ,,
,, कालका जि० अम्बाला	२ से ९ ,,
शाहबाद मारकण्डा जि० कुरुक्षेत्र	२ से ९ ,,
गुरुकुल डिकाडला जि० करनाल (पदयात्रा द्वारा प्रचार)	४ से १५ ,,
आर्यसमाज मेन बाजार बल्लबगढ़ जि० फरीदाबाद	८-९ ,,
,, सिरसा	७ से ९ ,,
,, नलवा जि० हिसार	९ से ११ ,,
,, गन्नौर शहर जि० सोनीपत	१२ से १६ ,,
कन्या गुरुकुल पंचगांव जि० भिवानी	२१ से २३ ,,
आर्यसमाज मीरपुर जि० महेन्द्रगढ़	३१ से ६ नवम्बर
,, पलवल शहर जि० फरीदाबाद	१४ से २० ,,
कुरुक्षेत्र गोशाला कैथल जि० कुरुक्षेत्र	१५ से १७ ,,
आर्यसमाज कृष्णनगर भिवानी	१८ से २० ,,
,, खेड़की डा० बैरावास जि० भिवानी	२६-२७ ,,

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

हरयाणा की नई पंचायतों से अपील

सभा के सर्वहितकारी साप्ताहिक-पत्र तथा सभा कार्यालय से डाक द्वारा हरयाणा की नई पंचायतों से अपील भेजकर निवेदन किया गया है कि वे हरयाणा से शराब जसी भयंकर बुराई को समाप्त करने के लिए ३० सितम्बर तक निम्नलिखित प्रस्ताव पास करके सरकार को भेजें। सरकार के नियम के अनुसार जिनके प्रस्ताव ३० सितम्बर तक पहुँच जावेंगे, वहां शराब के ठेके बन्द हो सकते हैं। –प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, आगामी वर्ष से ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा

चण्डीगढ़

हमारे ग्राम............जिला............पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक............में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है। यह ग्राम सभा (पंचायत) शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत ही घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की शराबबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द की जावे और भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाये, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

दिनांक............

सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं है तथापि वहां गैर-कानूनी ढंग से शराब बिकती है, निम्नलिखित प्रस्ताव ग्राम पंचायतें पास करके सरकार को भेजें।

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय

हरयाणा चण्डीगढ़

हमारे ग्राम............जि०............में शराब का ठेका नहीं है, परन्तु निकट के ग्रामों के ठेकों से शराब के ठेकेदारों के एजेण्ट गैर-कानूनी ढंग से ग्राम में खुल्लम-खुल्ला शराब बेचते हैं। इस प्रकार ग्राम में शराब पीनेवाले वातावरण को दूषित करते हैं। किसान मजदूरों की कमाई बर्बाद हो रही है। छात्रों पर भी इसका कुप्रभाव पड़ रहा है।

अतः हमारे ग्राम की पंचायत आपसे निवेदन करती है कि आगामी वर्ष में शराब का ठेका न खोला जाये और जो गैर-कानूनी ढंग से ग्राम में शराब बेचकर कानून का उल्लंघन करते हैं, उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करें तथा उन्हें कड़ी सजा देकर नाजायज शराब की बिक्री बन्द करने की कृपा करें।

दिनांक .... ह० सरपंच तथा पंच

ग्राम पंचायत

उपरोक्त दोनों प्रस्तावों की प्रतिलिपियां रजिस्ट्री द्वारा निम्न पतों पर भेजें—

१. प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान हरयाणा चण्डीगढ़
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जि............
५. जिलाधीश............
६. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा; दयानन्दमठ, रोहतक

तपोवन में वृहद् यज्ञ तथा साधना-शिविर १० अक्तूबर से

देहरादून १ सितम्बर : वैदिक साधन आश्रम तपोवन का आगामी वृहद् यज्ञ तथा योग साधना शिविर सोमवार दिनांक १० अक्तूबर से आरम्भ होगा और पूर्णाहुति रविवार दिनांक १६ अक्तूबर को होगी। पूज्य महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थ के अतिरिक्त दिल्ली से पं० पृथ्वीराज जी शास्त्री के पधारने की भी पूर्ण आशा है, जिनके प्रवचन सप्ताहभर चलेंगे।

साधना शिविर का निर्देशन करने के लिए योगधाम ज्वालापुर के संचालक पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज से प्रार्थना की गई है। उल्लेखनीय है कि तपोवन के अप्रैल तथा अक्तूबर में होनेवाले यज्ञों में भक्तजन दूर-दूर से बड़ी संख्या में आया करते हैं।

—देवदत्त बाली, मन्त्री वैदिक साधन आश्रम
तपोवन, देहरादून-२४८००८

शराबबन्दी की आवश्यकता भूतपूर्व सैनिकों के लिए

प्यारे भूतपूर्व सैनिको ! जय हिन्द ।

सब भूतपूर्व सैनिकों से प्यार से निवेदन है कि आप शराब को छोड़ने का प्रयत्न करें, क्योंकि इसके परिणाम घातक हैं। जब हम सेना में काम करते थे, उस समय यह इतने घातक नहीं थे, क्योंकि उस समय हमको बहुत-सी मुश्किलों से गुजरना होता था। जैसे लगातार सख्त सर्दी में अपनी प्रहरी की ड्यूटी देना और हमला करते समय वह हमेशा म्याद में होती थी और कन्ट्रोल से होती थी। परन्तु अब नागरिक की हालत में हम आजाद हैं और भोला-भाला जवान तो अपना सत्यानाश ही कर लेता है।

अब मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं, अब हमने सी-एस-डी काण्टीन से शराब लेना बन्द करना चाहिए और इसके बदले सरकार से और सामान की रियायतें लेनी चाहियें। जब तक वह रियायतें ना मिलें, तब तक पीते रहें और इससे आर्थिक लाभ उठायें, पीने में वह आर्थिक लाभ नहीं है। इसको जारी मैंने ही बहुत प्रयत्न करके करवाया था, वरना पहले सिर्फ एक हजार भूतपूर्व सैनिक खासकर आफिसर इससे लाभ उठाते थे। मैंने सम्बन्धित अधिकारियों को लिखना शुरु किया और भूतपूर्व सैनिक कल्याण संघ की सहायता से सब भूतपूर्व सैनिकों को यह सहायता दिलाई। उस समय जवान की पेंशन बहुत कम थी और उसका गुजारा होना बहुत मुश्किल था, तो इससे वह अपने बच्चों को इसकी बजाय घी में बदलकर पालने में सहायता मिलती थी। अब आपकी पेंशन दुगुनी होगई है और नये और पुराने की रैंकवार बराबर करने की कोशिश की जारही है। कृपया आप इसको छोड़ने की कोशिश करें और अपने संघ 'कल्याणकारी संघ' को तन, मन, धन देकर मजबूत करें। मैं आशा करता हूं इसको आप स्वीकार करेंगे। धन्यवाद

प्रार्थी—कैप्टन शेरसिंह आर्य
अध्यक्ष भूतपूर्व सैनिक कल्याण संघ ग्राम सुण्डाना, जि० रोहतक

आर्य सरपंचों के नाम भेजें

हरयाणा के आर्यसमाजों तथा पंचायतों के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि उन सरपंचों के नाम तथा २०) ब्लाक बनवाने के लिए उनके चित्र सहित भेजें जो आर्यसमाज के सभासद् हैं और शराब आदि का सेवन नहीं करते।

सभा के निश्चयानुसार इस प्रकार के आर्य सरपंचों का सभा की ओर से सम्मान किया जावेगा तथा ग्राम में शराबबन्दी प्रस्ताव करवाने में उनसे सहयोग प्राप्त किया जावेगा।

दिनांक ७ सितम्बर १९८८ —प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४)
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 पंजीकृत नं० P/RTK

आजक
६१,०८८

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

६ आश्विन [illegible] वि०

वर्ष १५, अङ्क ४२, २८ सितम्बर, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

माता का प्रभाव

—पं० मनदेव 'मनीषी' वेदतीर्थ, गुरुकुल कालवा

यह सुप्रसिद्ध बात है कि—अर्जुन की धर्मपत्नी सुभद्रा के उदर में गर्भ था और अर्जुन कहीं से एक युद्ध के चक्रव्यूह मोर्चे को जीतकर आये थे और उसकी कथा सोते समय सुभद्रा को सुना रहे थे। सुनते-सुनते सुभद्रा को नींद आगई। उसने उस चक्रव्यूह के बाहर से भीतर घुसने के मार्ग तथा भेदन प्रकार को तो ध्यानपूर्वक सुन लिया था, परन्तु भीतर से बाहर किस मार्ग से कैसे निकल सकते हैं? यह कथा वह न सुन सकी थी। इसका फल यह हुआ कि—गर्भस्थ बच्चे के मस्तिष्क पर उस श्रुत चक्रव्यूह का चित्र अंकित होगया और जन्म लेने पर महाभारत के युद्ध के समय कौरवों की ओर से गुरु द्रोणाचार्य जी के द्वारा युद्ध क्षेत्र में उस चक्रव्यूह की रचना, उसका भेदन करना और उसमें प्रवेश करके बाहर निकलने आदि का भेद अर्जुन को छोड़कर दूसरा कोई भी व्यक्ति नहीं जानता था। उस दिन अर्जुन किसी दूसरे युद्ध क्षेत्र के मोर्च पर पहुंचा हुआ था। अतः उस चक्रव्यूह के युद्ध क्षेत्र मोर्चे पर सफलता कैसे होगी? इसके लिए पाण्डवों में बड़ी चिन्ता हो रही थी। सबको चिन्तित देखकर अभिमन्यु ने कहा कि यदि युद्ध क्षेत्र का चित्र इस प्रस्तुत चक्रव्यूह के समान ही है, तो उसको छेदन-भेदन करके मैं उसके भीतर तक भी जा सकता हूं, परन्तु पुनः वहां से बाहर किस मार्ग से कैसे आना होगा? यह मैं नहीं जानता। उसकी बात सुनकर भीम आदि ने कहा कि—तुम चिन्ता न करो, हम सब तुम्हारे साथ ही होंगे और तुमको भी वहां से बाहर निकाल लायेंगे। तदनुसार ही उस चक्रव्यूह युद्ध क्षेत्र इस सप्त चक्रव्यूह में प्रवेश तथा भेदन की शिक्षा माता के उदर में ६-७ मास के अभिमन्यु ने प्राप्त की थी। तदनुसार हो उस चक्रव्यूह में वीर अभिमन्यु गया और माता केउदर में शयन करते हुए माता के द्वारा अपने मन मस्तिष्क में आरोपित चक्रव्यूह के चित्र के स्मरणानुसार ही वह उस चक्रव्यूह को तोड़कर उसके भीतर जा सका था। क्योंकि वह चक्रव्यूह भूल-भुलइयोंवाला था। उसके भीतर जाने-आने के मार्ग बड़े टेढे बांके, हेर-फेर के थे। अपरिचित मनुष्य न तो उसमें जा ही सकता था और न उसमें से बाहर ही निकल सकता था; किन्तु फिर भी अभिमन्यु ने उसके छेदन-भेदन तथा प्रवेश का ज्ञान माता के संकल्प द्वारा गर्भावस्था में ही प्राप्त कर लिया था। इस घटना से दो तथ्य सामने आते हैं—

प्रथम तो यह कि अभिमन्यु नामक शरीर विशिष्ट आत्मा का प्रारम्भिक सूक्ष्म शरीर अन्तःकरण (मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार) इतना अधिक परिशुद्ध, निर्मल, स्वच्छ और आकर्षक था कि उसके सामने आनेवाले प्रत्येक संस्कार अथवा प्रस्तुत चित्रों के आकार-चित्रों को अपने में अंकित करने में पूर्ण समर्थ था और—

दूसरा तथ्य यह प्रत्यक्ष है कि जननी-माता के मनोविद्युत् संकल्पों का उदरस्थ संतान के मस्तिष्क, मन; बुद्धि पर अनिवार्य रूप से ही प्रभाव पड़ता है और अवश्य ही पड़ता है, यह ध्रुव सत्य है।

सन्तान के गर्भ में आजाने पर तो माता-पिता के जीवन व्यवहार का प्रभाव प्रायः देखने में आता ही है और यह कोई छिपी हुई बात भी नहीं है। वीर अभिमन्यु ने चक्रव्यूह (युद्ध के मोर्चे) को तोड़ने का न केवल विश्वास ही दिलाया था प्रत्युत उसे तोड़कर गर्भाऽवस्था में माता के संकल्प संस्कारों द्वारा प्राप्त प्रभाव के चमत्कार को प्रत्यक्ष में भी दिखा दिया था। यह सब माता के संकल्प संस्कारों का ही प्रभाव था और जिन संस्कारों से जीवन उत्तम बनाया जा सकता है, वे कुछ तो माता पिता और आचार्य के मानसिक विचारों से जाग्रत होते हैं और कुछ उनके वाचिक तथा कायिक व्यवहार से भी प्रभावित किये जाते हैं। इनमें माता के जीवन का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। इसीलिए वैदिक ऋषियों ने कहा है कि—'मातृमान् पुरुषो वेद, अर्थात् उत्तम विदुषी माता की सन्तान ही उत्तम ज्ञानवान् एवं श्रेष्ठ होती है। जो शिक्षा या प्रभाव अथवा संस्कार माता के द्वारा सन्तान में आते हैं, वे अमिट होते हैं और उनकी तुलना संसार में दूसरा कोई व्यक्ति नहीं कर सकता। इसीलिये महर्षि मनु ने कहा है कि—

उपाध्यायान्दशाचार्यः आचार्याणां शतं पिता।
सहस्रं तु पितृन्माता गौरवेणाऽतिरिच्यते ॥ २।१४५

अर्थात् दस उपाध्यायों के बराबर एक आचार्य और एक सौ आचार्यों के बराबर एक पिता तथा एक हजार पिताओं के बराबर एक माता अपने गौरव को रखती है।

कोई ऐसा संस्कार सम्बन्धी कर्म नहीं है कि जिसमें माता के संकल्प संस्कारों का प्रभाव और निरीक्षण सन्तान के जीवन निर्माण में सहायक न होता हो। आरम्भ से नामकरण तक संस्कारों के करने में केवल माता-पिता का ही मुख्य कर्त्तव्य रहता है, किन्तु निष्क्रमण से लेकर आगे के प्रायः सब ही संस्कारों में बालक के निज पुरुषार्थ का भी सहयोग होता चला आता है।

अग्रवाल मत खण्डन—

शरीर में हृदय का स्थान

लेखक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, हरिसिंह कालोनी, रोहतक

दिनांक ७ अगस्त, ८८ की सर्वहितकारी साप्ताहिक पत्रिका में श्री मोहनलाल अग्रवाल अधिवक्ता 'जिज्ञासु' वेदसदन ८०३ धामपुर (जबलपुर) का मानव शरीर में 'जीवात्मा का स्थान' शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ है। श्री अग्रवाल जी ने इस लेख में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में लिखे हृदय के वर्णन का खण्डन किया है और पं० उदयवीर जी शास्त्री, स्वामी शंकर, पं० सत्यव्रत सिद्धांतलंकार, पं० युधिष्ठिर मीमांसक आदि के मत का समर्थन किया है। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में महर्षि का लेख निम्नलिखित है—

अथ यदिदमस्मिन् ब्रह्मपुरे दहरं पुण्डरीकं वेश्म दहरोऽस्मिन्नन्तराकाशस्तस्मिन् यदन्तस्तदन्वेष्टव्यं तद् वाव विजिज्ञासितव्यमिति ॥३

अस्य सर्वस्य भाषायामभिप्रायः प्रकाशयिष्यते ॥ ऋग्वेदादि० उपासनाविषयः ॥

भाषार्थ—जिस समय इन सब साधनों से परमेश्वर की उपासना करके उसमें प्रवेश किया चाहें, उस समय इस रीति से करें कि—(अथ यदिद०) कण्ठ के नीचे, दोनों स्तनों के बीच में और उदर के ऊपर जो हृदय देश है। जिसे ब्रह्म अर्थात् परमेश्वर का नगर कहते हैं। उसके बीच में जो गर्त है, उसमें कमल के आकार का वेश्म अर्थात् अवकाश रूप एक स्थान है और उसके बीच में जो सर्वशक्तिमान् परमात्मा बाहर-भीतर एकरस होकर भर रहा है; वह आनन्दस्वरूप परमेश्वर उसी प्रकाशित स्थान के बीच में खोज करने से मिल जाता है। दूसरा उसके मिलने का कोई उत्तम स्थान वा मार्ग नहीं है। ऋग्वेदादि० उपासनाविषयः ॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उपरिलिखित छान्दोग्य उपनिषद् के वचन की व्याख्या में लोकप्रसिद्ध हृदय में ही परमात्मा के दर्शन का विधान किया है और साथ में यह भी लिख दिया है कि परमेश्वर के मिलने का दूसरा कोई उत्तम स्थान नहीं है।

श्री अग्रवाल जी का मत है कि जहां आत्मा को परमात्मा के दर्शन होते हैं, वह महर्षि द्वारा प्रोक्त हृदय का स्थान नहीं है, अपितु वह हृदय मस्तिष्क में है। इस प्रकार श्री अग्रवाल जी शरीर में दो हृदय मानते हैं। हमारा कहना यह है कि जब आर्य लोग प्रातःकाल और सायंकाल इन्द्रिय स्पर्श तथा मार्जन मन्त्रों में 'ओं हृदयम् तथा ओं महः पुनातु हृदये' मन्त्र पढ़ते हैं, तब महर्षिप्रोक्त हृदय का ही स्पर्श तथा मार्जन करते हैं। श्री अग्रवालप्रोक्त हृदय का नहीं। क्या श्री अग्रवाल जी संध्या करते समय दोनों हृदयों का स्पर्श तथा मार्जन करते हैं अथवा एक का। यदि दोनो का तो दोनों की क्या आवश्यकता है? यदि एक का तो किस हृदय का? कृपया स्पष्ट करें।

श्री अग्रवाल जी द्वारा प्रोक्त हृदय को मानने से आर्यों की प्रातःकाल और सायंकाल की संध्या प्रक्रिया में हलचल मच जायेगी। श्री अग्रवाल जी के मत में मस्तिष्कवर्ती हृदय का ही स्पर्श तथा मार्जन करना चाहिए, क्योंकि परमात्मा के दर्शन का स्थान वही है। संध्या के इन्द्रिय-स्पर्श तथा मार्जन मन्त्रों में शिर के स्पर्श तथा मार्जन का भी विधान किया है, क्या शिर का दो बार स्पर्श किया जायेगा? श्री अग्रवाल जी! जैसी व्यवस्था हो, कृपया बतलाने का कष्ट करें।

२—जब महर्षि दयानन्द स्वयं लिखते हैं कि 'अस्याभिप्रायः प्राकृत भाषायां प्रकाशयिष्यते' अर्थात् इस उपनिषद् वचन का अभिप्राय भाषा में प्रकाशित किया जायेगा, तब श्री अग्रवाल जी का यह कथन कितना मिथ्या है कि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में उपनिषद् वचन का पण्डितों का किया अनुवाद गलत है। मैं श्री अग्रवाल जी से पूछना चाहता हूं कि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के संस्कृत भाग का भाषानुवाद किस पण्डित ने किया है? यदि अग्रवाल जी को पता न हो तो पं० युधिष्ठिर मीमांसक जिन्होंने महर्षि के ग्रन्थों का इतिहास लिखा है, कृपया उनसे पूछकर बतलाने का कष्ट करें। मेरा और भाई राजवीर जी शास्त्री का यह मत है कि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का भाषार्थ पण्डितों का किया हुआ नहीं है। जैसे सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में वेदादि शास्त्रों के प्रमाणों का अर्थ महर्षिकृत है, वैसे ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का भाषार्थ महर्षि का अपना है, क्योंकि ऐसा भाषार्थ करने का सामर्थ्य किसी पण्डित में नहीं हो सकता। कोई पण्डित केवल शब्दानुवाद कर सकता है। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के भाषार्थ में शब्दानुवाद नहीं है, अपितु भावानुवाद तथा विशेष कथन भी है।

३—श्री अग्रवाल जी ने अपने पक्ष के समर्थन में अथर्व वेद का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए महर्षि के मन्तव्य के खण्डन का दुःसाहस किया है। वे अथर्ववेद के मन्त्र ये हैं—

क) अष्टा चक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः॥
अथर्व० २०।२।३१

ख) प्रभ्राजमानां हरिणीं यशसा सम्परिवृताम्।
पुरं हिरण्ययीं ब्रह्मा विवेशापराजिताम्॥
अथर्व० २०।२।३३

इन मन्त्रों का अर्थ यह है—क) देवों=इन्द्रियों की एक अयोध्या नामक पुरी है। जिसमें आठ चक्र और नौ द्वार हैं। उस नगरी में एक हिरण्यमय कोश है और स्वर्ग स्वरूप और ज्योति से आवृत है। ख)—उस चमकीली मनोहारिणी यश से परिवृत और पराजित न होनेवाली हिरण्यमयी पुरी में ब्रह्म ने प्रवेश किया हुआ है।

इन मन्त्रों का सत्य अर्थ यह है कि मानव के शरीर में आत्मा रूपी एक हिरण्यकोश है तथा मन्त्रोक्त एक हिरण्यमयी पुरी है। उस आत्मा रूपी पुरी में ब्रह्म व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध से निवास करता है।

श्री अग्रवाल जी! यदि संस्कृत भाषा का एवं वेदार्थ का थोड़ा भी ज्ञान रखते, इन मन्त्रों को अपने पक्ष के समर्थन में कदापि प्रस्तुत नहीं करते। क्या अग्रवाल जी यह बतलाने का कष्ट करेंगे कि इन वेदमन्त्रों में कहां लिखा है कि मस्तिष्कवर्ती हृदय में आत्मा का स्थान है और वहीं उसे ब्रह्म के दर्शन होते हैं।

४—श्री अग्रवाल जी ने योगशास्त्र के तृतीय पाद के बत्तीसवें सूत्र पर किये व्यासभाष्य को भी अपने पक्ष में प्रमाण रूप में प्रस्तुत किया है कि 'शिरःकपालेऽन्तश्छिद्रं प्रभास्वरं ज्योतिस्तत्र संयमं कृत्वा सिद्धानां द्यावापृथिव्योरन्तरालचारिणां दर्शनम्॥ व्यास भाष्य ३।३२

श्री अग्रवाल अधिवक्ता (वकील) होते हुए क्या इतना भी नहीं जानते कि कोई भी प्रमाण अपनी प्रतिज्ञा की पुष्टि में दिया जाता है। अग्रवाल जी की प्रतिज्ञा है कि मस्तिष्कवर्ती हृदय में जीवात्मा का निवास है और वहीं पर उसे ब्रह्म के दर्शन होते हैं और इस व्यासभाष्य के प्रमाण में यह कहा जारहा है कि शिरःकपाल के छिद्र में जो ज्योति है, वहां संयम (धारणा, ध्यान, समाधि) करने से सिद्धजनों के दर्शन होते हैं। हम अग्रवाल जी से पूछना चाहते हैं कि यहां मस्तिष्कवर्ती हृदय का वर्णन कहां है? और जहां तक ब्रह्मदर्शन की बात है, वह भी यहां नहीं कहा गया है। यहां तो सिद्धजनों का दर्शन का वर्णन किया गया है।

श्री अग्रवाल जी के अधिवक्तृत्व (वकालत) पर मुझे दया आरही है कि प्रतिज्ञा कुछ है और प्रमाण कुछ दिया जारहा है। मेरा सुझाव यह है कि कृपया आप एक बार गौतममुनिकृत न्यायदर्शन का पारायण अवश्य करें, जिससे आपको अपना पक्ष ठीक प्रकार से रखने के लिए प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण आदि विषयों का सामान्य ज्ञान तो हो जाये।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

पंजाब समस्या के हल के लिये सर्वदलीय बैठक

—प्रो० शेरसिंह

प्रधान मन्त्री ने पंजाब की समस्या का समाधान निकालने के लिये सर्वदलीय बैठक बुलाने की घोषणा की है और यह आशा की जाती है कि ऐसी बैठक शीघ्र ही होगी।

पंजाब की समस्या का समाधान होना चाहिये, यह देश की एकता और स्थिरता के लिये आवश्यक है। पंजाब के लोग विकास के कामों में लगें, समृद्ध हों, यह उनके लिये और देश के लिये आवश्यक है। भारत सरकार इस दिशा में कदम उठाये, तो अच्छा ही है। ऐसे कदम भारत सरकार को देश में सभी प्रदेशों के विकास के लिये उठाने चाहियें, किसी भी प्रदेश के लोगों के मन में यह बात नहीं आनी चाहिये कि उनके साथ अन्याय हो रहा है।

तथाकथित पंजाब की समस्या के हल की जब बात चलती है, तब एकदम हरयाणा के अधिकारों की बात सामने आ जाती है। हरयाणा के साथ न्याय होना चाहिये, इस ओर देश के सभी दलों और नेताओं को ध्यान देना चाहिये। पंजाब को न्याय तो जरूर मिलना चाहिये परन्तु हरयाणा के अधिकारों को छीनने के उसके आग्रह को कभी भी स्वीकार नहीं करना चाहिये। इसके लिये जरूरी है कि सभी दलों से सम्बन्धित हरयाणा के नेताओं को चेतना चाहिये और अपने अपने नेताओं को हरयाणा के साथ अन्याय का व्यवहार करने से रोकना चाहिये।

एक बात का ध्यान सभी दलों के नेताओं को रखना चाहिये और वह यह कि जो स्वयं फसले करवाये, वह कल उनसे भाग न सके। अकालियों और उनके हिमायती तथाकथित पंजाब के अग्रगण्य (Eminento of Punjab) केवल लेने लेने की ही बात करते हैं और वह भी अपने अधिकार से कहीं बढ़ चढ़कर, और जहां अपने पड़ोसी का अधिकार दबाये बैठे हैं, उसके देने की बात कहते हो भाग खड़े होते हैं। अकाली नेताओं ने हो १९५६, १९६५ और १९६९-७० में फाजिल्का अबोहर हरयाणा को देने की बात लिखित में और अकाल तख्त पर बैठकर तथा स्वर्ग सन्त फतहसिंह द्वारा पेशकश में मानी, परन्तु चण्डीगढ़ लेने की बात तो वे हरदम करते हैं, फाजिल्का अबोहर हरयाणा को स्वयं बार बार मानकर भी देने को तैयार नहीं। पंजाब के हिन्दू और सिख तथाकथित इन्द्रकुमार गुजराल, एयर मार्शल अर्जुनसिंह जैसे अग्रगण्य नेता अकालियों की हाँ में हाँ मिलाकर चण्डीगढ़ पंजाब को देने की वकालत तो करते हैं, अकालियों के अपनी ही बार बार मानी हुई फाजिल्का अबोहर क्षेत्र हरियाणा को दिये जाने की बात के लिये एक शब्द भी मुंह से नहीं निकालते, उनकी अनुचित बात की हिमायत करते हैं।

जुलाई १९८५ के फैसले में दो फरीक थे, भारत सरकार और अकाली। फैसले में ही लिखा था कि दोनों फरीक आयोगों और पंचाट के फैसलों को मानने के लिये बाध्य होंगे। आकालियों ने न क्षेत्रीय मामले में आयोगों की बात मानी और न पानी के बारे में इराडी पंचाट की। उनसे नये फैसले की बात चलाना और सब दलों के लोगों की इस बात के लिये उत्सुकता मेरी समझ से तो बाहर है।

परन्तु जब सब कुछ होने हो जारहा है तो चेतना हरयाणा के नेताओं और जनता को भी चाहिये।

खुशी की बात है फाजिल्का अबोहर के इलाके को १०० ग्रामों की पंचायतें अपने प्रस्तावों के द्वारा प्रधान मन्त्री से मांग करेंगे। आजकल पंचायतों को विकास और दूसरे सभी मामलों में महत्त्व देने की बात सभी दल एक दूसरे से बढ़ चढ़कर कर रहे हैं। पंचायतों का मेरे साथ सम्पर्क है और हम वे प्रस्ताव सभी दलों के नेताओं को भिजवायेंगे। देखते हैं पंचायतों की बात की कितनी कदर देश के कर्णधारों के मन में है।

इराडी पंचाट ने रावी व्यास के पानी के बटवारे के बारे में अप्रैल १९८७ में दे दिया था। पंजाब और हरयाणा सरकारों ने एक वर्ष से अधिक हो गया निगरानी कर रखी है। पंचाट को तो तीन महीने में ही फैसला करना चाहिये था। हरयाणा की सरकार को ही पंचाट को शीघ्र फैसला देने के लिये मजबूर करना चाहिये। उस फैसले के बार में मैं अगले सप्ताह एक लेख लिखूंगा, जिसमें उस फैसले की चीरफाड़ होगी।

मेरी सभी हरयाणा वासियों से यह अपील है कि वे सब दलों से ऊपर उठकर हरयाणा के अधिकारों के लिये सजग और सचेत हो न हो बल्कि न्याय प्राप्त करने के लिए मिलकर अपनी पूरी शक्ति लगायें।

और कारवां बढ़ता ही रहा

—धर्मदेव विद्यार्थी अधिष्ठाता आर्य वीरदल हरयाणा

इस समय देश में जो अफरातफरी मची है उससे प्रत्येक जागरूक व्यक्ति का चिन्तित होना स्वाभाविक ही है। विशेषतः जिस प्रकार हमारी युवा पीढ़ी अपनी प्राचीन संस्कृति से विमुख होकर तीव्र गति से अपना नैतिक आधार खोती जारही है। वह वास्तव में दुर्भाग्यपूर्ण कहा जायेगा। क्योंकि राष्ट्र का भविष्य इसी युवा शक्ति के हाथों में है। जब आज राष्ट्र की यह दशा है तो बाद में कैसी होगी? यह विचारणीय है। धर्म के नाम पर जनता का शोषण राष्ट्र को तोड़ने की गन्दी चाल चली जा रही हैं और योजनाबद्ध ढंग से नशे विषयों के माध्यम से युवाशक्ति को कमजोर किया जारहा है। राष्ट्रभर में धर्म और जाति के नाम पर इन्हें बांटकर राष्ट्र की मुख्यधारा से अलग करने का भयानक षड्यन्त्र हो रहा है। ऐसी स्थिति में संस्कृति एवं धर्मप्रेमी युवाओं का एक राष्ट्रव्यापी संगठन नितान्त आवश्यक है। इसके लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य वीरदल नाम से युवा संगठन बनाया है। जो तीव्र गति से विकास की ओर बढ़ रहा है। थोड़े ही समय में इसकी शाखायें हरयाणा, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, बिहार, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र में फैलती जारही हैं। अगर इसको पक्षपात रहित होकर आर्यनेताओं ने पनपाया तो वह दिन दूर नहीं जब युवाओं का राष्ट्रव्यापी संगठन आर्य वीरदल ही होगा।

हरयाणा आर्यसमाज का गढ़ रहा है। जितनी आर्यसमाजें, आर्यशिक्षणसंस्थायें, गुरुकुल हरयाणा में हैं अन्यत्र नहीं और वास्तव में इन्हीं में युवाशक्ति बिखरी पड़ी है। इसे ही संगठित करना होगा इस वर्ष ग्रीष्मावकाश में समस्त भारत में ५० शिविरों का आयोजन एक रिकार्ड है, जिसमें अकेले हरियाणा में १५ शिविर लगाये गये जिनके माध्यम से लगभग ८ हजार युवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त कर आर्यसमाज की दीक्षा ली। पहली बार इन प्रशिक्षण शिविरों को विधिवत् करने की आवश्यकता अनुभव हुई। अब इन्हें तीन श्रेणियों में बांटा गया है। नये युवकों के लिए प्रथम श्रेणी, उप व्यायाम शिक्षक शिविर और व्यायाम शिक्षक शिविर इनका पाठ्यक्रम भी छप चुका है। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उपप्रधान संचालक डा. देवव्रत आचार्य का इस विषय में योगदान स्तुत्य रहा है। अब ऐसा प्रयास होगा कि दल के अधिकारी भी प्रशिक्षण प्राप्त आर्य वीर ही हों जो अपना निर्धारित गणवेश धारण करेंगे। पूज्य स्वामी ओमानन्द जी ने उदारता का परिचय देते हुए अखिल भारतीय शिविरों का आयोजन गुरुकुल झज्जर में करने का जिम्मा ले रखा है। उप व्यायाम शिक्षक शिविर आर्य वीर दल हरयाणा ले लिया ऐसी सम्भावना है। प्रथम श्रेणी शिविर स्थानीय स्तर पर जिले वार लगाने की योजना है। भारत भर के आर्य वीरों को जोड़ने के लिए आय वीर दल हरयाणा ने प्रा. धर्मदेव विद्यार्थी के संपादकत्व में आर्य वीर विजय मासिक पत्र भी चला रखा है जो केवल लागत मूल्य से भी कम पर भेजा जाता है परन्तु अभी बहुत कुछ करना शेष है। कई आर्यसमाजों में आर. एस.

(शेष पृष्ठ ५ पर)

किसान कच्चा माल न बेचकर तैयार माल बेचें

—प्रो॰ शेरसिंह

जनसंख्या की बाढ़ के कारण किसान के पास बंटते बंटते जमीन बिस्वों पर आ गई है। 50 प्रतिशत किसानों के पास दो एकड़ या उससे कम जमीन रह गई है और 75 प्रतिशत के पास पांच एकड़ या उससे कम जमीन है। छोटे और सीमान्त किसानों की हालत दिन प्रतिदिन दयनीय होती जा रही है। ऐसे किसानों को कर्ज और ब्याज की दरों में कमी की सुविधा तथा थोड़ा बहुत अनुदान देने मात्र से उसकी हालत में बहुत कम सुधार आ पायेगा। समस्या तो यह है कि इन सुविधाओं का लाभ उठाने के लिये उसके पास जोत के लिये जमीन बहुत कम है और वह घटती जा रही है। इन परिवारों के सदस्यों के लिये काम नहीं है, जिसमें लगकर वे अपना पेट पाल सकें। थोड़ी सी जमीन तो परिवार में एक दो सदस्यों को ही वे रूखी सूखी रोटी दे सकती है, पूरे परिवार को नहीं। इन परिवारों के सदस्यों को खेती के अलावा दूसरे रोजगार देने होंगे। घरेलू उद्योगों के विकास से यह सम्भव हो सकता था, परन्तु मशीनों के आ जाने से और पूंजीपतियों के बड़े कारखाने लगने से ग्रामीण कारीगरों के धन्धे चोपट हो गये हैं। मशीनों से पूंजीपतियों के सामने घरेलू उद्योग मुकाबले में नहीं ठहर सकते, इसलिये अपने धन्धों को छोड़कर ग्रामीण कारीगरों को रोजगार की तलाश में शहरों में जाना पड़ता है, वहां झुग्गी झोंपड़ियां बनाकर गन्दी बस्तियों में जीवन के दिन काटने होते हैं। शहर के लोग इनको घुसपैठिये मानते हैं, नागरिक नहीं, नागरिक तो उन्हें केवल वोटों के लिये माना जाता है। जब नागरिक का दर्जा उनको देने के लिये शहर के लोग तैयार नहीं तो ये बस्तियां तो कूड़े का ढेर ही रहेंगी, अपना कूड़ा और बाकी शहर का कूड़ा सब उन्हीं झुग्गियों के सिर पर जमा होगा और सड़ेगा। ये लोग चाहे हैजे से, आंतों की बीमारी से, पीलिया से या मोतीझारा से मरें, इसकी फिक्र कौन करता है। इस बार बहुत लोग हस्पतालों में भर गये और बहुत मरे, प्रधान मन्त्री का ध्यान उधर गया कुछ अधिकारियों के विरुद्ध कार्यवाही हुई, कुछ सफाई हुई, परन्तु कर्मचारियों और शहर के तथाकथित भद्रलोकों का दिल तो इनकी हालत सुधारने का नहीं है, न वे उसके लिये कुछ देना चाहते हैं। इन भद्रलोकों की सुविधाओं के लिये ही भारत सरकार को अरबों का घाटा पूरा करना पड़ता है, दिल्ली और दूसरे शहरों के लिये। बजटों के घाटे का सवाल गरीबों के लिये ही उठाया जाता है, भद्र लोकों के लिये नहीं।

बेरोजगारी के शिकार इन करोड़ों छोटे, सीमान्त किसानों और ग्रामीण कारीगरों को नारकीय जीवन से निकालने का एक ही रास्ता है, और वह है ग्रामों में ही रोजगार पैदा करने का।

कच्चा माल, फिर चाहे वह गेहूं, चावल, चना, बाजरा, ज्वार, आदि कोई भी खाद्यान्न हो, गांव में ही पैदा होता है। सरसों, मूंगफली, तिल आदि सब तेलहन, कपास, पटसन आदि भी गांव में पैदा होते हैं। सब्जियां, फल आदि भी वहीं पैदा होते हैं। परन्तु इस देश में कच्चे माल के दाम उत्पान करनेवाले को कितने मिलते हैं, बिचौलिये व्यापारी और उद्योगपति उससे कई गुना उसी कच्चे माल को सीधा बेचकर या माल तैयार करके उत्पादन करने वाले से कई गुना कमाते हैं और मालामाल हो जाते हैं। उत्पादक सदा कर्ज के नीचे ही दबा रहता है और जीवन की मौलिक आवश्यकताओं से वंचित। उनसे बुरी हालत पुराने धन्धे करने वाले ग्रामीण कारीगरों की है।

ग्रामीण बेरोजगारों, छोटे सीमान्त किसानों और पुराने धन्धों में लगे कारीगरों को मिलकर कच्चे माल से उपभोग्य वस्तुएं तैयार करने के लिये गांव में ही छोटे-छोटे उद्योग लगाने चाहियें। सरकार पुराने औजारों को आधुनिक बनाने और हाथ पांव या बिजली से चलने वाली छोटी, छोटी सीधी सादी और मजबूत मशीनें बनाने के लिये विज्ञान और तकनीकी विभाग तथा राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं को चुस्त करे, इस दिशा में उनकी प्रगति को ही सफलता का पैमाना (मापदण्ड) बनाये। कच्चे माल के संसाधन और माल तैयार करने के लिये ग्रामीण उद्योगों को केवल मौखिक प्रोत्साहन ही नहीं, बल्कि एक सूचि तैयार करे, ऐसी वस्तुओं की जो ग्रामीण उद्योगों के द्वारा ही तैयार की जासकें। केवल निर्यात के लिये ही बड़े पैमाने पर चलानेवाले उद्योगों का इस्तेमाल करे। ग्रामीण बैंकों के पास अधिक पैसा हो, और वह खुले हाथ से ग्रामीण उद्योगों को विशेषकर सहकारिता से चलने वाले उद्योगों को ऋण दे। इन उद्योगों के लगे लोगों को खादी का उत्पादन करने वालों की तरह ही अनुदान और सहायता दे।

उपभोज्य वस्तुओं को तैयार करने के लिये जब ग्रामीण उद्योगों का जाल बिछ जाये, तब किसानों और माल के उत्पादकों को यह निर्णय कर लेना चाहिये कि वे कच्चा माल नहीं बेचेंगे, गांव में ही सब प्रकार की उपभोज्य वस्तुएं तैयार करके ही बेचेंगे और बिचौलियों की लूट खत्म करके दम लेंगे। देश के करोड़ों लोगों की बेरोजगारी समाप्त करने का शहरों की गन्दी बस्तियों और झुग्गी झोंपड़ियों को रोकने का, भारत के जन जन को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर, सामाजिक रूप से बराबरी और समानता का गरिमापूर्ण जीवन जीने का सुअवसर प्राप्त हो सकेगा। यही रास्ता है स्वतन्त्रता के सूर्य का प्रकाश भारत के घर घर में पहुंचाने का। यही स्वप्न था दासता को समाप्त करके ही दम लेने वाले १८५७ से लेकर आजादी मिलने तक के सभी नेताओं और बलिदानियों का।

प्रधानमन्त्री ने एक महकमा ऐसे ही काम के लिये बनाया है। इतना बड़ा काम क्या एक छोटे से महकमे और उसके कनिष्ठ मन्त्री से सम्भव होगा। नाम लेने और नारे लगाने से ये समस्याएँ हल नहीं हो सकतीं। यदि कोई महकमा बनाना ही है तो वह सब महकमों के इस समस्या को सुलझाने के लिये किये जाने वाले कामों में तालमेल और सामंजस्य बनाने के लिये प्रधानमन्त्री की देखरेख में चले और सब महकमों की कार्यकुशलता का मापदण्ड इस काम के लिये दिये गये योगदान हो। उधर बिचौलियों और पूंजीपतियों के शोषण से मुक्ति पाने के लिये ग्रामीण लोग भी मिलकर ईमानदारी से सहकारिता जैसे रास्ते अपनाकर माल तैय्यार करने और कच्चे माल के संसाधन के लिये उद्योग लगाने में अपनी पूरी शक्ति और साधन लगायें। यदि भारत के ये बेरोजगार और गरीब लोग अपनी हालत बदलना चाहते हैं तो पहिले उनके दिल में तड़प और तमन्ना होनी चाहिये, नई से नई कार्यपद्धति और तकनीक सीखने की, अच्छी से अच्छी वस्तुएँ बनाने की और संगठित होकर अपने धन्धे चलाने की।

"खुदा ने आज तक उस क़ौम की हालत नहीं बदली,
न हो जिसमें तमन्ना खुद अपनी हालत बदलने की।"

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य का चुनाव

प्रधान—महाशय धर्मपाल

उप-प्रधान—1. श्री सूर्यदेव 2. श्री सरदारीलाल वर्मा 3. श्री सत्यानन्द आर्य 4. श्री बिशम्भरनाथ भाटिया

महामन्त्री—डा॰ शिवकुमार शास्त्री

मन्त्री—1. श्री रामशरणदास आर्य 2. श्री ओ३म्प्रकाश आर्य 3. डा॰ रघुवीर वेदालंकार 4. श्री बिमलकान्त शर्मा 5. श्री राजेन्द्रपाल गुप्त 6. श्रीमती कृष्णा चड्ढा

कोषाध्यक्ष—श्री ओम्प्रकाश कपूर

प्रतिष्ठित सदस्य—1. स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
2. डा॰ धर्मपाल
3. डा॰ सत्यकाम वर्मा
4. डा॰ महेश विद्यालंकार
5. लाला इन्द्रनारायण
6. लाला रतनचन्द सूद
7. श्री रामलाल मलिक
8. श्रीमती ईश्वर देवी धवन

महर्षि दयानन्द और नारी

—अरविन्दकुमार 'कमल' विद्यानिधि दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार हर०

दयानन्द ने करदी सारे जग में क्रांति।
सच्चा वेद-ज्ञान देकर मिटादी भ्रांति॥
मिटादी भ्रांति पाखण्डियों के आसन डोले।
जब निष्कपट सच्ची सिंह की बोली बोले॥
खत्म हुआ अन्धियारा 'कमल' छाया आनन्द।
समाज सुधारक पाखण्ड निवारक महर्षि दयानन्द॥

जिस समय पाखण्ड और पौराणिक अन्धकार के घनघोर घुमड़-घुमड़कर भारत के चारों ओर छा रहे थे। मूर्तिपूजा जोरों से प्रचलित थी और उनको ही ईश्वर मानकर पूजा जारहा था। नदियां सभी पापों के धोने का निमित्त मानी जारही थीं। नारियों और शूद्रों को जानवरों की तरह प्रताड़ित किया जारहा था। बाल-विवाह जोरों पर था। वर्णाश्रम की वैदिक मर्यादा लुप्तप्राय थी और जन्म को ही वर्ण का आधार मान लिया गया था। ईसाई और मुसलमान बलात् हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कर रहे थे। धर्म-शास्त्रों को नष्ट किया जारहा था और वेदों को गडरियों का गीत कहा जारहा था।

उस समय मानव-रूपी सूर्य महर्षि दयानन्द ने उदय होकर मृत्यु-लोकवासियों को सच्ची राह दिखाई थी। सूर्य की दिव्य-ज्योति के प्रकाश से वर्षों से ठोकर खाती और पराधीनता की बेड़ियों से जकड़ी आर्यजाति ने फिर से अगड़ाई ली तथा दासता की बेड़ियां कच्चे धागे की भांति टूट-टूटकर दूर जा गिरी। समस्त आर्यजाति पुनः स्वदेश, स्वराज्य, स्वधर्म, स्वावलम्बन और स्वतन्त्रता के लिए एकजुट होकर खड़ी होगई और इस कार्य से अखिल विश्व आश्चर्यचकित होगया।

महर्षि के आने से पूर्व नारी को घृणित व पैर की जूती समझकर प्रताड़ित किया व ठुकराया जारहा था। छोटी उम्र में विवाह कर दिया जाता था और पति की मृत्यु के बाद उसको जिंदा चिता में जला दिया जाता था। यदि वह जिन्दा रह गई अर्थात् सती न हुई तो उसे शृंगार व घूमने-फिरने की मनाही थी। पुनर्विवाह की प्रथा न थी। कुछ कवियों ने और साधु-सन्तों ने भी नारी को घृणित व पतित कहके इस प्रथा को बढ़ावा दिया है।

क—गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने 'राम चरित मानस' में लिखा है—

ढोर गंवार शूद्र पशु नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी॥
विधि हु न नारी हृदयगति जानी।
सकल कपट अघ अवगुण खानी॥

ख—आद्य शंकराचार्य जी ने नारियों के विषय में लिखा है—

द्वारं किमेकं नरकस्य नारी।

प्रश्न—नरक का एकमात्र द्वार कौन है?

उत्तर—नारी।

२. किं तद्विषं भाति सुधोपमम्-नारी।

प्रश्न—वह कौन-सा विष है जो अमृत-सा जान पड़ता है।

उत्तर—नारी।

इस्लाम में नारी का दर्जा—

मुहम्मद के मत ने तो नारी का अपमान करने की ठान रखी थी—

१. निस्साउकुम् हर्स सुल्लकु फातु हर्सकुम उन्नाशियतुम् अर्थात्—तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेतियां हैं। अपनी खेती में जिस प्रकार चाहो …

२. मुसलमान मर्द को इतना अख्त्यार है कि वह वजह अथवा बिना वजह अपनी मर्जी से सिर्फ तीन बार तलाक कह दे और औरत से छुटकारा हासिल करले।

ईसाइयत और नारी समाज—

१. Motherhood is sinful especially if the child is a girl.

अर्थात्—मातृयोनि पापयोनि ही है, यदि शिशु बालिका हो।

२. Women may be captured violated and then twoned out doors.

अर्थात्—नारी को पकड़ कर बलात्कार करने के पश्चात् दरवाजे से धकेला जा सकता है।

किन्तु महर्षि दयानन्द जी ने कहा कि नारी को समाज में पूर्ण स्थान मिलना चाहिए। बतलाया कि वेद भी कहता है—

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय॥

अर्थात्—जिस प्रकार मैं इस कल्याण करनेवाली वेदवाणी का उपदेश करता हूं, उसी प्रकार तुम भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अपने भृत्य, स्त्रियादि और अतिशूद्र के लिए भी वेद का उपदेश करो। मनु जी ने कहा—'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' जहां पर नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं।

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा॥

जिस कुल में स्त्री लोग शोकातुर रहती हैं, वह कुल शीघ्र नाश को प्राप्त हो जाता है और जहां स्त्रीजन प्रसन्न रहती हैं, वह कुल सर्वदा बढ़ता रहता है।

महर्षि दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में लिखा है कि जो स्त्री वेदादि शास्त्रों को न पढ़ी होवे तो यज्ञ में स्वरसहित मन्त्रों का उच्चारण और संस्कृत भाषण कैसे कह सके? भारतवर्ष की स्त्रियों में भूषणरूप गार्गी वेदादि शास्त्रों को पढ़कर ही विदुषी हुई थी।

नारीसमाज सदा दयानन्द जी का ऋणी रहेगा। क्योंकि वे नारी उत्थान-रूपी यज्ञ के ब्रह्मा थे। उन्होंने ही सतीप्रथा और बालविवाह का सर्वप्रथम विरोध किया और 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम्' के नारे को झूठा सिद्ध किया।

बीकानेर जि० महेन्द्रगढ़ में वेदप्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज बीकानेर में १-९-८८ से १२-९-८८ तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया गया। जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित गांवों में वेदप्रचार किया गया—

१ सितम्बर को गंगायचा अहीर (रेवाड़ी), २ सितम्बर को नया गांव, ३ सितम्बर को पुनसीका, ४ सितम्बर को खलीलपुर, ५ सितम्बर को ईशरोदा, ६ सितम्बर को गंगायचा जाट, ७ सितम्बर को काकोड़ीयां, ८ सितम्बर को धासेड़ा, ९ सितम्बर को मस्तापुर, १० सितम्बर को किशनगढ़, ११ सितम्बर को चांदनवास।

(पृष्ठ ३ का शेष)

एस. की शाखा लगती है। कई समाजें आर्य वीर दल का पूर्ण सहयोग नहीं करतीं सार्वदेशिक सभा को चाहिए कि राष्ट्र स्तर पर दल की समिति तथा पदाधिकारी बनाये। एक स्थाई कोष की स्थापना करें और प्रतिनिधि सभायें अपने वार्षिक बजट में आर्य वीर दल की राशि निर्धारित करें तथा अपने अन्तर्गत शिक्षण संस्थाओं में दल की शाखायें लगाने की व्यवस्था करें। अपने प्रदेश अधिष्ठाताओं की नियुक्ति कर उन्हें कुछ अधिकार भी दें। क्या आर्यसमाजें इस विषय में विचार करेंगी?

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक गुरुकुल करतारपुर का उत्सव

३ अक्तूबर, ८८ से ९ अक्तूबर, ८८ तक उत्सव के मुख्य आकर्षण—

यजुर्वेद पारायण यज्ञ—ब्रह्मा महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थी।

प्रतिदिन वैदिक गोष्ठियां—मध्याह्न १० से ११-३० बजे तक।

विषय—ईश्वर की भक्ति क्यों और कैसे, वैदिक वर्ण व्यवस्था का स्वरूप एवं उद्देश्य, संध्या क्या क्यों और कैसे, प्रतिदिन रात्रि ८ बजे से ९-३० बजे तक प्रवचन व संगीत—श्री पं० सत्यपाल पथिक अमृतसर।

ध्वजारोहण—८ अक्तूबर शनिवार प्रातः महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थी द्वारा।

शिक्षा सम्मेलन—दोपहर, अध्यक्ष डा० भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ़, मुख्य अतिथि प्रसिद्ध उद्योगपति श्री जगदीशलाल जी रहेजा लुधियाना।

महिला सम्मेलन—सायं, अध्यक्ष श्रीमती नरेन्द्र जी आर्या बब्बर।

अध्यात्म-सम्मेलन—रात्रि, अध्यक्ष श्री महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थी।

९ अक्तूबर रविवार पूर्णाहुति—प्रातः ९ बजे होगी।

गुरु विरजानन्द सम्मेलन—९-३० से १-३० बजे तक, अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा देहली।

अन्य उपस्थित होनेवाले आर्य विद्वान् व आर्यनेता—सर्वश्री महात्मा आर्यभिक्षु जी वानप्रस्थी ज्वालापुर, महात्मा प्रेमप्रकाश जी वानप्रस्थी धूरी, वीरेन्द्र जी एम.ए. जालन्धर, चौ. छोटूसिंह जी एडवोकेट अलवर, प्रो० शेरसिंह जी हरयाणा, रामचन्द्रराव वन्देमातरम् आन्ध्र प्रदेश, पं० राजगुरु शर्मा महू आदि होंगे।

—चतुर्भुज मित्तल मन्त्री

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार पुरस्कृत

हिण्डोन सिटी : स्थानीय नगर आर्यसमाज हाल में २७ अगस्त से ३ सितम्बर तक वेदप्रचार सप्ताह के अन्तर्गत यजुर्वेद पारायण यज्ञ का सफल आयोजन स्वामी ओमानन्द जी महाराज के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर केरलवासी आचार्य नरेन्द्रभूषण का दाक्षिणात्य शैली में वेदपाठ व प्रवचन हुए। कुंवर भूपेन्द्रसिंह के भजनोपदेश हुए।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन-पर्व पर श्री प्रह्लादकुमार आर्य द्वारा अपने पूज्य पिताजी की स्मृति में स्थापित श्री घूड़मल आर्य पुरस्कार आर्यजगत् के ख्यातिप्राप्त इतिहासज्ञ विद्वान् डा० सत्यकेतु विद्यालंकार को उनके द्वारा लिखित, सम्पादित व प्रकाशित 'आर्यसमाज के इतिहास' पर ससम्मान समारोहपूर्वक दिया गया। उन्हें अभिनन्दन पत्र, एक शाल एवं १५०१) की राशि समर्पित की गई।

इस समारोह में विख्यात शोधकर्ता विद्वान् प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु की ऐतिहासिक पुस्तक 'रक्तसाक्षी पं० लेखराम' का विमोचन आचार्य नरेन्द्रभूषण के करकमलों द्वारा हुआ।

आर्यसमाज सान्ताक्रूज में वेदप्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर सांताक्रूज में २७-८-८८ से ४-९-८८ तक वेद-प्रचार सप्ताह सोत्साह सम्पन्न हुआ। अथर्ववेद यज्ञ श्री पं० राजगुरु जी शर्मा के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। दिनांक २७-८-८८ को प्रातः ७ बजे से १० बजे तक अथर्ववेद यज्ञ के साथ ही श्रावणी उपाकर्म (यज्ञोपवीत परिवर्तन) रक्षा-बन्धन तथा हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस समारोह मनाया गया।

—विमलस्वरूप सूद महामन्त्री

ग्राम दौलतपुर (हिसार) में अवैध शराब की बिक्री जोरों पर

ग्राम दौलतपुर में अवैध शराब की बिक्री जोरों पर है। उकलाना मण्डी का ठेकेदार २० घरों में अन्धाधुन्ध शराब डाल रहा है। गांव में ९५% लोग शराब पीते हैं। आये दिन गांव में शराबियों द्वारा उत्पात होता है। महिलावर्ग एवं सज्जन आदमियों का जीना दूभर हो रहा है। दिनांक १४-९-८८ को श्री हरजीराम आर्य के नेतृत्व में एक शिष्टमण्डल एस० एस० पी० हिसार से मिला और लिखित में कई हस्ताक्षरों से युक्त प्रार्थना-पत्र दिया और पुरजोर मांग की कि गांव की भलाई व छोटे बच्चों के भविष्य को देखते हुए अपने गांव में अवैध शराब की बिक्री पर पाबन्दी की मांग की और साथ में शराब बेचनेवालों के नाम भी बताये। बाद में हरजीराम आर्य, सूबेदार रणवीरसिंह, रघुवीरसिंह लाम्बा, चत्तरसिंह आदि ने मेरे से भी सम्पर्क किया और इस शराबबन्दी अभियान में सहयोग देने तथा गांव में वेदप्रचार करवाने की मांग की। मैंने सभा की तरफ से पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, सभा उपदेशक

आर्यसमाज गोहाना मण्डी जि० सोनीपत का वेदप्रचार सप्ताह

वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन आर्यसमाज अनाज मण्डी गोहाना जि० सोनीपत में किया जारहा है।

आमन्त्रितवक्ता महानुभाव—सर्वश्री ब्र० अखिलेश्वर व्याकरणाचार्य गुरुकुल कालवा, ओमकुमार आर्य प्रो० छोटूराम किसान कालिज जींद, शोभाराम प्रेमी भारतवर्ष के प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक मेरठ।

कार्यक्रम—२८ सितम्बर रात्रि ८ बजे से ११ बजे तक वेदप्रवचन व भजनोपदेश। २९ सितम्बर से २ अक्तूबर तक प्रातः ८ से १० बजे तक यज्ञ व वेदप्रवचन। रात्रि ८ से ११ बजे तक वेदप्रवचन व भजनोपदेश।

फरीदाबाद शहर में आर्य कवि सम्मेलन

फरीदाबाद के सेक्टर-१९ में आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर डा० राणा गन्नौरी की अध्यक्षता में कवि सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। संचालन श्री बेदार सरस ने किया। कवितापाठ करनेवालों में सर्वश्री प्रो० प्रवासी, भजनलाल, नाज सोनीपती, प्रकाशवीर व्याकुल, बेदार, राणा गन्नौरी आदि थे। मुसायरा रात के १२ बजे के बाद तक चलता रहा। कवि सम्मेलन की सफलता का सेहरा लक्ष्मीचन्द तथा नकुलदेव चौधरी के सर रहा।

शोक-वृत्तांत

१—डा० मनोहरलाल जी पिलखुआ निवासी का स्वर्गवास १५-९-८८ को २९ ए, पटपड़ गंज दिल्ली में होगया। आप प्रसिद्ध आर्य उद्योगपति थे और आर्यसमाज के कार्यों में विशेष रुचि रखते थे। अपने पुत्र महेन्द्रकुमार को गुरुकुल में पढ़ाकर स्नातक बनाया। परमात्मा दिवंगत आत्मा को कर्मानुसार सद्गति एवं परिवारजनों को वियोगज दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

२—प्रसिद्ध आर्यसमाजी वैद्य भरतसिंह जी रोहतक निवासी के पौत्र एवं डा० सुधीर के पुत्र 'अटल' का निधन १९-९-८८ को अचानक ही होगया। वह अभी १० वसन्त भी नहीं देख पाया था। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे और वैद्य जी को तथा अन्य सभी परिवार, इष्ट मित्रों को यह दारुण दुःख सहन करने का धैर्य प्रदान करे।

—वेदव्रत शास्त्री

दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुना नगर में श्रावणी-पर्व समायोजन

इस वर्ष इस महाविद्यालय में श्रावणी-पर्व परम्परागत ढंग से मनाया गया। इस शुभावसर पर नये ब्रह्मचारियों के उपनयन व वेदारम्भ संस्कार आचार्य वागीश्वर जी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुए। यज्ञोपरांत यज्ञशाला में स्थानाभाव के कारण यज्ञशाला के बाहर प्रांगण में सभा का आयोजन किया गया, जिसमें स्वामी रुद्रवेश जी, वानप्रस्थी हरलाल जी व श्री महेन्द्रसिंह जी के मधुर भजनोपदेश हुए तथा संस्था के ब्रह्मचारियों व आचार्य जी के उपदेश भी हुए। मुख्य अतिथि के रूप में वैदिक सभ्यता में सुशोभित बहन डा० कमला वर्मा जी स्वास्थ्य मंत्री हरयाणा ने श्रावणी-पर्व के महत्त्व पर ऐतिहासिक भाषण दिया और अन्य लोगों से विद्यालय की सहायतार्थ अपील करते हुए स्वयं ग्यारह हजार रुपये राशि की सहायता की घोषणा की। ग्यारह हजार रुपये सेठ श्री हरिराम जी यमुनानगर निवासी तथा दस हजार रुपये अग्रवाल स्टील मिल्ज जगाधरीवालों ने व पच्चीस हजार रुपये श्री कृष्णलाल जी खट्टर कलकत्तावालों ने भी सहायतार्थ वचन दिये। साढ़े तीन हजार के लगभग नकद दान की राशि प्राप्त हुई और कुछ खाद्य-सामग्री भी दान में प्राप्त हुई।

इस पर्व पर समीपस्थ ग्रामों तथा शहर के हजारों लोगों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। अभ्यागतों में परस्पर यह चर्चा सुनी गई कि ऐसा विशाल एवं भव्य प्रोग्राम स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के समय में ही होता था। यह कार्यक्रम ८ बजे से १ बजे तक बड़े ही सुचारु रूप से चला। तदनन्तर विशाल ऋषि-लंगर में आगन्तुकों ने भोजन किया।

यह उत्सव श्री जयपाल आर्य, श्री रवीन्द्र आर्य तथा अन्य बन्धुओं के अतुलनीय सहयोग से सफलता व उल्लासता के साथ सम्पन्न हुआ।

—आचार्य रामवीर शास्त्री

आर्य महासम्मेलन सफीदों की सूचना

श्री स्वामी ब्रह्मानन्द आश्रम सफीदों, जिला जींद में १-२ अक्तूबर १९८८ को हरयाणा प्रांतीय स्तर पर आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जारहा है, जिसमें आर्यसमाज के उच्चकोटि के विद्वान् तथा राजनीतिक नेता तथा आर्यसमाज के उच्चकोटि के आय भजनोपदेशक भी पधार रहे हैं। सभी माता-बहनों तथा सज्जनों से निवेदन है कि सम्मेलन में पधार कर धर्म लाभ उठावें।

—सुखदेव शास्त्री, संयोजक आर्य महासम्मेलन
श्री ब्रह्मानन्द आश्रम सफीदों, जि० जीन्द

नमस्ते का गीत

नमस्ते जी, नमस्ते जी। बड़े प्रेम से मिलकर बोला करो नमस्ते जी॥

अभिवादन का शब्द यही है, बात हमारी सुनो सही है।
ज्ञान तुला पर इसको तोलो, करो नमस्ते जी……॥ १

चारों वेदों में है आया, ऋषि-मुनियों ने अपनाया।
अपने हृदय सभी टटोलो, करो नमस्ते जी॥ २

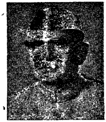
देखो गीता अरु रामायण, सभी शास्त्रों में है वर्णन।
उठो महाभारत को खोलो, करो नमस्ते जी॥ ३

पति-पत्नी जब मिलें परस्पर, करें नमस्ते हाथ जोड़कर।
बातों में मिश्री-सी घोलो, करो नमस्ते जी॥ ४

जीवन श्रेष्ठ बनाना है तो, स्वर्ग घरों में लाना है तो।
'निर्भय' इधर-उधर मत डोलो, करो नमस्ते जी॥ ५

—नन्दलाल 'निर्भय' भजनोपदेशक, ग्राम पो. बहीन (फरीदाबाद)

प्रो० शेरसिंह गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरद्वार के कुलाधिपति मनोनीत



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरद्वार का कुलाधिपति (चांसलर) मनोनीत किया गया है।

१७ सितम्बर को नई दिल्ली में तीनों आर्य प्रतिनिधि सभाओं (पंजाब, हरयाणा तथा दिल्ली) के प्रधानों आदि की एक बैठक संपन्न हुई थी, उसी में यह मनोनयन हुआ।

हरयाणा ग्राम पंचायत चुनाव में विजयी शराबबन्दी समर्थक सरपंचों की सूची

गतांक से आगे—

८७	श्री शमशेरसिंह	सरपंच ग्राम	खरकड़ा	जि० रोहतक
८८.	,, रघुवीरसिंह	,, ,,	राजलूगढ़ी	जि० सोनीपत
८९.	पं० चिरंजीलाल	,, ,,	,,	,,
९०.	श्री रामकिशन	,, ,,	बिलबिलान	,,
९१.	,, सोमदत्त	,, ,,	हथवाला	जि० करनाल
९२.	,, महावीरसिंह	,, ,,	मनाना	,,
९३.	,, शीशपाल	,, ,,	नांगल (बहल)	जि० भिवानी
९४.	,, सुलतानसिंह	,, ,,	सेहर	,,
९५.	मा० हरजीराम	,, ,,	बनासरी	,,
९६.	श्री लोकराम	,, ,,	हसासकलां	,,
९७.	मा० मांगेराम	,, ,,	चांदवास	,,
९८.	श्री शुभराम	,, ,,	किसकन्दा	,,
९९.	,, ईश्वरसिंह	,, ,,	चिरवाड़ी	जि० फरीदाबाद
१००.	,, रामजीलाल	,, ,,	सुजवाड़ी	,,
१०१.	,, धूपसिंह	,, ,,	अलावलपुर	,,

(क्रमशः)

आर्यसमाज तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने निकट के ग्रामों के उन सरपंचों के नाम जो शराब का सेवन नहीं करते हैं, लिखकर शीघ्र भेजने का कष्ट करें, ताकि उनके नाम इस सूची में प्रकाशित हो सकें।

—सम्पादक

आर्य सरपंचों के नाम भेजें

हरयाणा के आर्यसमाजों तथा पंचायतों के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि उन सरपंचों के नाम तथा २०) ब्लाक बनवाने के लिए उनके चित्र सहित भेजें जो आर्यसमाज के सभासद् हैं और शराब आदि का सेवन नहीं करते।

सभा के निश्चयानुसार इस प्रकार के आर्य सरपंचों का सभा की ओर से सम्मान किया जावेगा तथा ग्राम में शराबबन्दी प्रस्ताव करवाने में उनसे सहयोग प्राप्त किया जावेगा।

दिनांक ७ सितम्बर १९८८ —प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

दण्डी स्वामी छात्रवृत्ति योजना

मैंने अपने पतिदेव श्री पं० ब्रह्मप्रकाश जी शास्त्री विद्यावाचस्पति की सत्प्रेरणा से अपनी पेंशन का अधिकांश भाग ऐसे छात्र और छात्राओं को छात्रवृत्ति के रूप में देने का निश्चय किया है, जिन्होंने यह व्रत धारण किया हो कि हम विद्योपार्जन के पश्चात् स्नातक बनकर वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार में ही अपना जीवन समर्पित कर देंगे। सहायता के पात्र छात्र और छात्रायें अपने अभिभावक तथा आचार्य से प्रमाणित कराकर प्रार्थना-पत्र भेजें। ईसाई तथा मुस्लिम आक्रांत प्रदेशों के निवासियों का विशेषता दी जायेगी।

—सरलादेवी शर्मा

शास्त्री सदन ११/१२४, पश्चिम आजादनगर, दिल्ली-११००५१

आर्यवीर हरयाणा महासम्मेलन हिसार

आर्यसमाज का युवा वर्ग समाज में निरन्तर बढ़ रहे पाखण्ड और अन्धविश्वास तथा साम्प्रदायिक राष्ट्रतोड़क, राष्ट्रीय और सामाजिक बुराइयों को मिटाने के लिए संघर्षरत है। आपके सहयोग से धर्मप्रेमी संघर्षशील युवाओं का जुझारु संगठन आर्य वीरदल हरयाणा प्राणिमात्र के कल्याण हेतु वैदिकधर्म का शंखनाद कर रहा है। अतः देव दयानन्द की सेना में दीक्षित होकर युवाशक्ति को धर्म एवं राष्ट्रोन्मुख बनाने के लिए १-२ अक्तूबर, ८८ तदनुसार शनिवार, रविवार को ऐतिहासिक नगर हिसार में १२वें प्रांतीय आर्यवीर महासम्मेलन का आयोजन किया जारहा है। इस महासम्मेलन में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान्, साधु, संन्यासी और विचारक पधार कर अमृतवर्षा करेंगे। अतः आप तन, मन, धन से सहयोग करते हुए सपरिवार पधार कर धर्म लाभ उठावें।

(पृष्ठ २ का शेष)

५—योगिराज महर्षि दयानन्द सरस्वती जिन्हें ब्रह्म का साक्षात्कार था, उन्होंने अपने अनुभव से ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में यह लिखा कि ब्रह्म के दर्शन वक्षोवर्ती हृदय देश में होते हैं और पं० उदयवीर शास्त्री, पं० युधिष्ठिर मीमांसक, डा० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार तथा श्री शंकर स्वामी जिन्हें शब्द, अर्थ और सम्बन्ध का सामान्य ज्ञान है, उनका मत है कि मस्तिष्कवर्ती हृदय में आत्मा को ब्रह्म के दर्शन होते हैं।

मुझे इस बात का महान् आश्चर्य है कि श्री अग्रवाल जी ब्रह्म के प्रत्यक्षद्रष्टा महर्षि को प्रमाण न मानकर ऊपरिलिखित अनृषि विद्वानों को प्रमाण मान रहे हैं। 'आप्तोपदेश: शब्द:' आप्त अर्थात् विषय के साक्षात्द्रष्टा के उपदेश को शब्द प्रमाण माना जाता है। कितना घोर अन्धेर है कि श्री अग्रवाल जी को प्रमाण और अप्रमाण का भी ज्ञान नही है।

आशा है श्री अग्रवाल जी इस विषय पर फिर से विचार करके सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करेंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४)
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23807/73 [illegible] दयानन्दाब्द १६४ सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

१६ आश्विन २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्क ४३, ७ अक्तूबर, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

पर्वों का महत्त्व और आर्यसमाज का कर्त्तव्य

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उ०प्र०

पर्वों की उपयोगिता जितनी वैयक्तिक जीवन में होती है, उतनी ही सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन में भी होती है। पर्वों का उद्देश्य आत्म-निरीक्षण, आत्मालोचन तथा आत्मोत्थान होता है, वैयक्तिक जीवन में भी और सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन में भी। पर्व शब्द का अर्थ ही है पवित्रता और पूर्ति की ओर ले जानेवाला।

परन्तु पता नहीं कब और किस प्रकार पर्व का उद्देश्य रह गया है। कहिये या होगया है कह लीजिये—प्रत्येक पर्व कहलानेवाले दिवस पर एक विशेष प्रकार का भोजन पूड़ी, खीर, चावल; तिल अथवा चौलाई के लड्डू आदि बनाकर खा लेना तथा यथाशक्य बाजार से मिठाइयां आदि लाकर खा लेना, अपने मिलनेवालों के घर भेजना, नये वस्त्र धारण करना और कुछ खेल तमाशे आदि खेलना तथा देख लेना। पर्व की वास्तविक भावना लुप्त नहीं हुई तो लुप्तप्राय तो अवश्य ही होगई है।

अन्य क्षेत्रों की भांति प्रारम्भ में आर्यसमाज ने पर्वों के विषय में भी कुछ सुधारात्मक पग अवश्यमेव उठाये थे, किन्तु वह भी अब इस विषय में उदासीन होता जारहा है। लगता है हिन्दू समाज के विकृत ढांचे में आर्यसमाज उसी प्रकार विलीन होता जारहा है, जिस प्रकार नदियों में नाले तथा समुद्र में नदियां विलीन हो जाती हैं। आर्यसमाजों ने अपने प्रारम्भिक जीवन में पर्वों को उपयोगी प्रकार से मानना प्रारंभ किया था, यद्यपि वह प्रकार भी था अधूरा ही।

आर्य पर्व-पद्धति में पर्वों के मनाने की विधि इस प्रकार लिखी है कि प्रातःकाल घर का शोधन-लेपन स्नान आदि कर शुद्ध स्वदेशी वस्त्र परिधानपूर्वक प्रथम यज्ञ करें। कुछ पर्वों पर कुछ विशेष आहुतियां भी यज्ञ में देनी लिखी हैं—तत्पश्चात् उत्तमोत्तम भोजन पक्वान्न खीर, पूड़ी आदि बनाकर खाना लिखा है। यह वर्णन गृह-कृत्य का है।

पश्चात् मध्याह्नोत्तर किसी सार्वजनिक स्थान, किसी मैदान आदि अथवा आर्यसमाज मन्दिर में ही सभा करें। उस सभा में पर्व से सम्बद्ध भाषण, भजन, कविता, निबन्ध आदि का पाठ किया जाना चाहिये तथा तदनन्तर प्रसाद वितरण करें। अच्छा तो यह हो कि ऐसे अवसरों पर वैदिक तथा आर्यसामाजिक दृष्टिकोण का, राष्ट्रीय साहित्य वितरण का विशेष प्रबन्ध किया जाये।

इस कार्य में आर्यसमाजी बन्धुओं ने दो बड़ी भूलें की हैं। एक तो यह कि गृह-कृत्य भी आर्यसमाज मन्दिरों में ही किये, घरों में नहीं। इसके परिणामस्वरूप घरों से पौराणिक पर्वप्रथा दूर नहीं हो सकी और आर्य पर्व प्रथा प्रारम्भ नहीं हुई। आर्यसमाजी अधिकतर यह कहते हुए मिलते हैं कि इस कार्य में महिलायें साथ नहीं देतीं। यह नितांत मिथ्या आरोप है। अपवाद तो प्रत्येक विषय और प्रत्येक क्षेत्र में मिल जाते हैं, किन्तु जब घरों में कोई वैदिक कृत्य किया ही न जायेगा तो महिलायें उसे करना सीखेंगी किस प्रकार? और वह क्या जानेंगी कि कौन पर्व किस प्रकार मनाया जाना चाहिये? उन्हें जो कुछ आता है, वह तो वही करेंगी।

आप बच्चे के हाथ से चाकू लेना चाहते हैं तो उसे खिलौना दे दीजिये, नहीं तो वह बिफरेगा, रोयेगा। किसी की कोई आदत छुड़ानी हो तो उसके लिए उस आदत का विकल्प तैयार रखना चाहिए। महिलाओं से पौराणिक परम्परागत विधियां—जो उनका स्वभाव बन चुकी हैं-यदि छुड़ानी है तो उनके साथ भी उपर्युक्त प्रकार ही वर्त्तना होगा। उनसे पौराणिक परम्परा छुड़ाना चाहें, किन्तु उसका विकल्प देने का प्रयत्न न करें, यह नितांत नासमझी की अमनोवैज्ञानिक हठधर्मिता पूर्ण बात है। मनोवैज्ञानिक प्रकार यही है कि आप घर पर वैदिक पद्धति से पर्व-संस्कार आदि कराने प्रारम्भ कर दीजिये, महिलायें धीरे-धीरे आप ही के रंग में रंग जायेंगी। उनको आपके रंग में रंगने का एक कारण यह भी है कि पर्वों की वैदिक पद्धति पूर्णतया युक्तियुक्त है और पौराणिक पद्धति पूर्णतया अन्धविश्वास पर आधारित है। हां, यह भी ध्यान रखिये कि सामाजिक कृत्यमय में सार्वजनिक सभाओं में भी उन्हें साथ ले जाइये। वहां जाकर वह भाषणों, कविताओं आदि के द्वारा पर्वों के महत्त्व को भी सुन और समझ सकेंगी। यह भी दुर्भाग्य है कि आर्य-समाज के सार्वजनिक कार्यक्रमों में आर्यसमाजी लोग महिलाओं को प्रायः ही साथ नहीं ले जाते।

कुछ ऐसे कठमुल्ला ढंग के आर्यसमाजी हैं कि वह पर्वों के अवसर पर घरों में यज्ञ तो कर लेते हैं या करना चाहते हैं, किन्तु मिष्टान्न आदि कुछ पक्वान बनाने को पौराणिकता बताकर रोकना चाहते हैं। उन्हें यह समझ नहीं आती कि पौराणिकता पर्व मनाने के प्रकार में, उसकी पद्धति में होती है, उत्तमोत्तम स्वादिष्ट भोजन बनाकर खाने में नहीं होती। व्यवहारिक धरातल पर खड़े होकर ही सफलता प्राप्त हो सकती है, हवाई बातें करना तथा कठमुल्लापन अपनाने से सम्भव नहीं।

यदि कठमुल्लापन छोड़कर पर्व-पद्धति के अनुसार घरों में पर्वों के अवसर पर गृह-कृत्य होंगे तो महिलायें और बच्चे सभी प्रभावित होंगे और मुख्य--पारिवारिक सुधार की--नींव पड़ जायेगी।

दूसरा है सामाजिक कृत्य—जो सार्वजनिक स्थानों में सभा के रूप में होना चाहिए। यह तो कुछ ही समाजों ने मनाना प्रारम्भ किया था, वह अब भी लगभग समाप्त हो है। हां, कुछ समाजों में गृह-कृत्य का केवल एक अंश, वह भी सामान्य यज्ञ—उस पर्व की पूर्ण पद्धति नहीं—करके इतिश्री अर्थात् कर्त्तव्य की पूर्ति समझ ली जाती है। जिन समाजों

(शेष पृष्ठ ६ पर)

जुकाम का प्राकृतिक इलाज कैसे ?

—मनोजकुमार

आजकल ऋतु परिवर्तन हो रहा है और ऐसे समय में सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि इस समय कभी ठण्डी व कभी गर्म हवा चलती है। आरम्भ में सावधानी न बरतने से रोग के बिगड़ जाने का भय रहता है, इससे अनेकों भयंकर रोग जैसे हृदय तथा आमाशय में दर्द, पसलियों में सूजन, मृगी, आधी शीशी का दर्द, माली खेलिया सरसाम आदि रोग हो जाते हैं। इससे आंख, कान, नाक के अनेकों भयंकर रोग हो सकते हैं।

इससे सिर घूमने लगता है तथा आंखों के सामने सदैव अन्धेरा नजर आता है। इससे आंख, कान, नाक के अनेकों भयंकर रोग हो सकते हैं। तब मनुष्य बहरा व अन्धा हो सकता है। इससे खांसी भी हो जाती है जो बड़ी दुखदायी है और इस खांसी से अनेकों भयंकर रोग जैसे दमा, क्षय रोग और ब्रोंकाइटिस आदि रोग हो जाते हैं।

नि:सन्देह जुकाम एक साधारण रोग है, परन्तु यदि समय पर सावधानी न बरती जाये तथा इसका उचित उपचार न करवाया जाये तो यह रोग जान का जंजाल भी बन सकता है। इसलिए एक संस्कृत श्लोक के अनुसार "इलाज न करानेवालों के सभी जुकाम कालांतर में दुष्ट हो जाते हैं और फिर दुष्ट हो जाने से असाध्य हो जाते हैं।"

यह एक अत्यन्त छूत का रोग है और जुकाम से अधिक मस्तिष्क में जो कफ जमा हो जाता है, उसमें छोटे-छोटे सफेद और चिकने कीड़े होते हैं, जो रोग की संक्रामकता को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

नाक बन्द हो जाना, नाक से पतला पानी बहना, गला, तालु और होठों का सूख जाना तथा उसमें खुजली का अनुभव करना, कनपटियों में पीड़ा का आभास होना तथा गले का बैठ जाना आदि जुकाम के प्रमुख लक्षण हैं। ऐसे रोगी का शरीर सदैव गर्म रहता है।

ऐसे रोगी को प्यास अधिक लगती है। सिर भारी रहने लगता है, कभी नाक तर हो जाती है, तो कभी सूख जाती है, नाक की सूंघने की शक्ति प्राय: नष्ट हो जाती है। कभी नाक से खून भी निकलने लगता है। बारम्बार थूक तथा बलगम का आना भी रोग का एक लक्षण है। ऐसे रोगी को छींके भी आती हैं तथा आंखों पर सूजन भी आ जाती है तथा नाक लाल हो जाती है।

जुकाम क्यों होता है ?

मल-मूत्र आदि के वेग को रोकने, बदहजमी होने तथा नाक में धूल जाने से भी जुकाम हो जाता है। बहुत अधिक बोलने, क्रोध करने, ऋतु चर्या के विपरीत काम करने तथा रात को अधिक जागने से भी जुकाम हो जाता है। धुयें में बैठने से, अधिक देर जल में रहने या सेवन करने, सर्दी लगने, शोक रंज तथा अत्यधिक रोने से भी जुकाम हो जाता है। सर्द हवा लगने तथा गर्म खाना खाने के पश्चात् ठण्डा पानी पीने से भी रोग घेर लेता है। गर्म पानी से स्नान करके बिना वस्त्र धारण किये गुसलखाने से खुली जगह में आने से भी जुकाम हो जाता है।

जुकाम होने पर पहले दिन उपवास करें तथा बाद में भूख लगने पर ही हल्का तथा शीघ्र पचनेवाला भोजन करना चाहिए। पानी गर्म करके थोड़ा-थोड़ा पीना चाहिए और सर्दियों में उष्ण जल से स्नान करना चाहिए। बाहरी सर्दी से बचाव अवश्य करना चाहिए तथा सिर पर मोटा कपड़ा बांधे रहना चाहिए। सिर में अच्छी प्रकार कंघी करें, जिससे सिर के रोम छिद्र खुल जायें। ऐसे रोगी के सिर के नीचे तकिया नहीं रखना चाहिए, बल्कि मुह झुकाकर सोना चाहिए, जिससे मवाद नाक की तरफ से निकल आये और छाती पर न आये। यदि जुकाम गले में उतरता है तो अनार और मसूर का काढ़ा पीने से लाभ होगा।

तुलसी के पत्तों की चाय के सेवन से जुकाम ठीक हो जाता है। वायविडंग सेंधा नोन, हींग, बबूल तथा मैनसिल या दालचीनी, तेजपात, इलायची और नागकेसर को पीसकर सूंघने से रोग ठीक हो जाता है। भुने हुए गर्म चने सूंघने अथवा खाने से जुकाम नष्ट हो जाता है। सत्तू में घी, तेल मिलाकर उसे आग पर रखकर उसके धुयें से रोगी को लाभ होता है। दही में गुड़ तथा काली मिर्च मिलाकर खाने और गर्म दूध में १०-१२ काली मिर्च एवं मिश्री मिलाकर पीने से काफी लाभ पहुंचता है। इस प्रकार यदि उपर्लिखित देसी एवं घरेलू इलाज किया जाये और साथ ही केवल स्वयं को ही इस रोग से बच सकता है, बल्कि अपने निकटतम सम्पर्क में आनेवाले अनेकों व्यक्तियों को इस छूत के रोग से मुक्ति दिला सकता है।

(दैनिक विश्व मानव से साभार)

राम के गुण हम धारें

पुरुषोत्तम श्रीराम थे, सचमुच गुण की खान।
मानवता के पुंज थे, वे थे पुरुष महान्॥

वे थे पुरुष महान्, चरित्र उज्ज्वल के स्वामी।
वेदों के मर्मज्ञ, बहादुर, योद्धा नामी।

सदा जिन्होंने मात, पिता की आज्ञा पाली।
धर्म समझ कर नष्ट, किये थे दुष्ट कुचाली॥

श्रीराम ने देश, धर्म हित युद्ध मचाया।
बाली, रावण, कुम्भकरण को मार गिराया॥

पर नारी को सुनो, राम ने माता माना।
पर धन को था सदा, तुल्य मिट्टी के जाना॥

छुआछात अरु जाति-पाति का भेद मिटाया।
भीलनी और निषादराज को था अपनाया॥

कभी राम ने झूठ नहीं, जीवन में बोला।
परनिन्दा के लिए, कभी भी मुख ना खोला॥

श्रीराम से आज, नहीं दुनियां में नेता।
बने अनाड़ी व्यर्थ, हजारों वीर विजेता॥

भला इसी में सभी, राम के गुण हम धारें।
'निर्भय' जग में ढूंढ-ढूंढ दुष्टों को मारें॥

—नन्दलाल 'निर्भय' भजनोपदेशक
ग्राम पो० बहीन, जि० फरीदाबाद

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज मन्दिर लेघां हेतवान को एक विद्वान् पुरोहित की आवश्यकता है, जो हवनादि अच्छी तरह करा सके। खाने व रहने का पूरा प्रबन्ध, वेतन योग्यतानुसार तथा जो समाज के कार्य में रुचि रखता हो सम्पर्क करें।

—कृष्णकुमार आर्य
मन्त्री आर्यसमाज लेघां हेतवान; जि० भिवानी

आर्यसमाज काठमण्डी सोनीपत

आर्यसमाज काठ मण्डी सोनीपत का उत्सव २९-३० अक्तूबर, ८८ को बड़ी धूमधाम से मनाया जारहा है। सभी सज्जनों व इष्ट मित्रों से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर उत्सव की शोभा बढ़ायें।

—सत्यवीरसिंह शास्त्री मन्त्री

रावी व्यास के पानी के संबंध में इराडी पंचाट का निर्णय

—प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

अक्तूबर, १९६६ में पंजाब के पुनर्गठन के बारे में संसद ने कानून बनाया। रावी व्यास के पानी के बटवारे के बारे में उस कानून की तत्सम्बन्धी धारा में यह स्पष्ट किया गया था कि पंजाबी सूबा और हरयाणा आपस में बैठकर २ वर्ष के भीतर फैसला करलें, यदि यह सम्भव न हो तो कोई भी पक्ष इस मामले के बारे में भारत सरकार से निर्णय के लिए प्रार्थना कर सकेगा। २ वर्ष बीतने पर जब पंजाब के साथ पानी के बारे में समझौता नहीं हो सका तो हरयाणा सरकार ने १९६८ में भारत सरकार के पास अपनी प्रार्थना भेज दी। केन्द्रीय जल और बिजली आयोग ने डा० के० एल० राव सिंचाई मन्त्री भारत सरकार के आदेश पर आयोग की उप-समितियों ने सारे मामले की छान-बीन की, दोनों राज्यों ने अपना-अपना पक्ष रखा। किसी भी आयोग द्वारा इस सम्बन्ध में नियुक्त इंजीनियरों ने हरयाणा को ७० लाख एकड़ फुट में से ३८ लाख एकड़ फुट से अधिक पानी दिये जाने की सिफारिश की। पंजाब मामले को लटकाता रहा और हर बार नये सिरे से जांच के लिए कहता रहा। पंजाब ने उन सभी सिफारिशों को मानने से इंकार कर दिया। इस प्रकार मामला टलता रहा। मैंने भी कई बार डा० के० एल० राव से इस बारे में बात की और फैसला सुनाने पर जोर दिया, परन्तु प्रधानमन्त्री का आदेश न मिलने के कारण वे कोई निर्णय करके उसकी घोषणा नहीं कर पाये। जब सिंचाई विभाग बाबू जगजीवनराम जी के पास आया तो मैं उनसे भी मिलता रहा। अन्त में मार्च १९७६ में बाबू जगजीवनराम जी ने लोकसभा में भारत सरकार का निर्णय सुना दिया।

भारत सरकार के उस फैसले के अनुसार ३५ लाख एकड़ फुट पानी हरयाणा को मिला और ३५ लाख एकड़ फुट पंजाब को, परन्तु उस फैसले में यह स्पष्ट लिख दिया कि रावी व्यास नदियों से मिलने वाले पानी की मात्रा यदि बढ़ी और अतिरिक्त पानी मिला तो वह हरयाणा को मिलेगा, पंजाब को तो ३५ लाख एकड़ फुट से अधिक किसी अवस्था में नहीं मिलेगा। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि पानी ७० लाख एकड़ फुट से अधिक मिला तो पंजाब को ३५ लाख एकड़ फुट देकर बाकी सारा हरयाणा को मिलेगा और यदि किसी कारण पानी ७० लाख एकड़ फुट से कम मिले तो हरयाणा को तो ३५ लाख एकड़ मिलेगा ही, पंजाब का बचा हुआ कम पानी मिलेगा। जब लोकसभा में यह निर्णय सुनाया गया तो मैंने कहा कि किसी भी इन्जीनियरों की निष्पक्ष जांच के परिणामस्वरूप हरयाणा को ३८ लाख एकड़ फुट से कम नहीं दिया गया, फिर उसका पानी घटाकर ३५ लाख एकड़ फुट कैसे कर दिया। बाबू जगजीवनराम जी ने कहा कि पंजाब के लोग तो उसका विरोध कर ही रहे हैं, यदि हरयाणावालों ने भी विरोध किया तो उनको टालने का पक्का बहाना मिल जायेगा, ८ साल के बाद यह फैसला हुआ। हरयाणा का हित इसी में है कि यह मामला टले नहीं और पानी लेने के लिए नहर तैयार करदी जाये, ताकि व्यास के बांध पर दो साल के बाद काम पूरा होते ही हरयाणा को पानी मिल सके। यह बात मेरी भी समझ में आगई और मैंने अपने भाषण में जो कहा था उस पर जिद्द नहीं की।

हरयाणा सरकार ने तुरन्त पंजाब सरकार को नहर बनाने के लिए एक करोड़ रुपया भेज दिया और नहर के बनाने का काम शुरु करने के लिए कहा और नहर का अपने हिस्से का पूरा खर्च देने का आश्वासन दे दिया। भारत सरकार ने भी पंजाब सरकार को नहर बनाने के लिए कहा, क्योंकि १०२ किलोमीटर नहर तो पंजाब में से होकर आती थी। अपनी सीमा में नहर बनाने का काम हरयाणा में चल पड़ा। अपने राज्य में जितनी नहर बननी थी, वह हरयाणा सरकार ने तो बनादी, परन्तु पंजाब सरकार जमीन अधिग्रहण करने के काम को ही अपने किसानों से विरोध करवाकर टालती रही।

पंजाब हरयाणा और राजस्थान के मुख्यमन्त्रियों ने प्रधानमन्त्री के आदेश पर दिसम्बर १९८१ में एक फैसला किया। उस फैसले के अनुसार १९७६ के फैसले में जहां पंजाब खड़ा था, वहां हरयाणा आगया और हरयाणा खड़ा था वहां पंजाब। नदियों में जो भी अतिरिक्त (फालतू) पानी आयेगा, वह पंजाब का और हरयाणा को केवल ३५ लाख एकड़ फुट पानी मिलेगा। इसके अनुसार पंजाब का ४२ लाख एकड़ फुट होगया, क्योंकि नये अनुमान के अनुसार पंजाब और हरयाणा के लिए ७० लाख एकड़ फुट की जगह ७८ लाख एकड़ फुट पानी मिलने लगेगा। इस फैसले में पंजाब की एकाध और भी अनुचित बात मानी गई।

खैर, इस फैसले पर अमल करने के लिए प्रधानमन्त्री ने अप्रैल १९८२ में सतलुज यमुना लिंक नहर का काम शुरु कर दिया। उसी दिन से बादल के नेतृत्व में अकालियों ने आंदोलन शुरु कर दिया।

अकालियों ने न तो मार्च १९७६ के फैसले को माना और न ही दिसम्बर १९८१ के फैसले को। उन्होंने यह मांग रखदी कि पानी का बटवारा नये सिरे से सुप्रीमकोर्ट के जज की अध्यक्षता में बने पंचाट के द्वारा किया जाये। सन्त लोंगोवाल के साथ १९८५ में जो फैसला प्रधान मन्त्री का हुआ, उसमें अकालियों को यह बात मान ली गई। न्यायमूर्ति इराडी की अध्यक्षता में पंचाट बना। उसने अपना फैसला दिया जिसके अनुसार ५० लाख एकड़ फुट पानी पंजाब को और ३८ लाख २० हजार एकड़ फुट हरयाणा को। अभी वह फैसला दोनों सरकारों को तो मिल गया और उन दोनों (पंजाब और हरयाणा) ने निगरानी करदी। अब पंचाट उस पर विचार कर रहा है। एक बात स्पष्ट करवा लेना जरूरी है। पंचाट ने पानी का बंटवारा यह मानकर किया है कि ७० लाख एकड़ फुट की जगह ८८ लाख एकड़ फुट से कुछ अधिक पानी दोनों नदियों में बहेगा। १८ लाख एकड़ फुट से अधिक उस फालतू पानी में से १५ लाख एकड़ फुट पंजाब को और ३ लाख २० हजार एकड़ फुट हरयाणा को दिया है। इतना फालतू पानी वास्तव में उपलब्ध होगा कि नहीं, यह कोई नहीं जानता। आजकल जो सूचनायें आरही हैं, उन से तो ऐसा लगता है कि ग्लेसियरों के पिघलाने के कारण एक बार तो पानी अधिक मिलता है, परन्तु सर्दियों में बर्फ कम पड़ने लगी है। गर्मियों में तो नदियों में पहाड़ों की बर्फ पिघलने से ही पानी आता है; बरसात होने पर उसमें वह पानी भी मिल जाता है और सर्दियों में तो गोबिन्द सागर में बांध के ऊपर जो पानी जमा होता है, उसी में से बांटकर पानी दिया जाता है।

पंजाब की धरती में से क्योंकि पानी हरयाणा की नहरों में आयेगा और पानी के मामले में पंजाब के लोगों की नीयत खराब है। इसलिए डर है कि वे पंचाट के फैसले का नाम लेकर ५० लाख एकड़ फुट पानी अपना हक बताकर ले लेंगे और पानी यदि ७० लाख एकड़ फुट हुआ या ७५-८० के आस-पास भी हुआ तो ५० लाख एकड़ फुट काटने के बाद तो केवल २०-२५ या ३० लाख एकड़ फुट ही बचेगा। इसलिये यदि पंचाट ने स्पष्ट नहीं किया तो यह स्पष्ट करना चाहिये कि ७० लाख एकड़ फुट तक तो हरयाणा पंजाब को बराबर-बराबर पानी मिलेगा और इससे फालतू पानी होगा, वह उनके द्वारा निर्धारित अनुपात से मिलेगा। यह स्पष्टीकरण नहीं हुआ तो ३८ लाख २० हजार एकड़ फुट तो केवल कागज पर रहेगा और हरयाणा को ५० लाख एकड़ फुट से बचा हुआ पानी ही पंजाब के लोग देना चाहेंगे तो मिलेगा। इसके लिए हरयाणा की सरकार और जनता को मजबूती से अपना पक्ष रखकर पंचाट से स्पष्ट निर्णय लेना चाहिए।

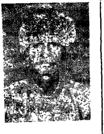
किला मौहल्ला सुधार सभा रोहतक (पंजीकृत) का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री डा० अर्जुनदास मिगलानी, उपप्रधान—भगवानदास, महासचिव—कृष्णकुमार अरोड़ा, सचिव—ईश्वरसिंह, संयुक्त सचिव—गुलशन कपूर, कोषाध्यक्ष—ओम्प्रकाश शर्मा।

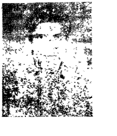
हरयाणा पंचायत चुनावों में शराबबन्दी समर्थक विजयी सरपंच



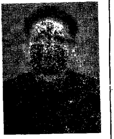
१. श्री दयाराम सरपंच
बलियाना जि० रोहतक



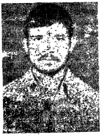
२. श्री हरिसिंह सरपंच
रिण्ढाणा जि० सोनीपत



३. श्री शिवनारायण सरपंच
गुडाना जि० महेन्द्रगढ़



४. श्री किशनसिंह तेवतिया सरपंच
कोण्डल जि० फरीदाबाद



५. श्री महेन्द्रसिंह रावत सरपंच
गहलन जि० फरीदाबाद



६. श्री ईश्वरसिंह सरपंच
शिमली जि० रोहतक

हरयाणा ग्राम पंचायत चुनाव में विजयी शराबबन्दी समर्थक सरपंचों की सूची

गतांक से आगे—

१०२. श्री दयाराम सरपंच बलियाना (प्रधान आर्यसमाज) रोहतक
१०३. ,, सुरेशकुमार राठी सरपंच ग्राम निदाना जि० रोहतक
१०४. ,, श्याम कौशिक ,, ,, सामान ,,
१०५. ,, दयाराम सरपंच ग्राम बीघोपुर डा. घोलेड़ा जि. महेन्द्रगढ़
१०६. श्री खिचैसिंह ,, ,, ऐंचरा कलाँ जि० जीन्द
१०७. ,, जयकिशन ,, ,, डिडवाड़ी जि० करनाल
१०८. ,, दुलीचन्द वैद्य प्रधान ग्राम पंचायत आर्यनगर जि० भिवानी
१०९. ,, नत्थुसिंह पहलवान सरपंच ग्राम मिर्जापुर जि० फरीदाबाद
११०. ,, ओम्प्रकाश ,, ,, ढाणावास पंचगांव जि. भिवानी
१११. ,, केहरीसिंह सरपंच ग्राम दूबलधन (चिकधान) जि० रोहतक
११२. ,, ओम्प्रकाश ,, ,, माजरा दूबलधन ,,
११३. ,, सत्यनारायण ,, ,, ,, ,, (घोमान मोषा) ,,
११४. ,, किशोरसिंह ,, ,, सिलारपुर जि० महेन्द्रगढ़
११५. ,, हरिसिंह ,, ,, रिण्ढाणा जि० सोनीपत
११६. ,, करमीरसिंह ,, ,, बिगोवा जि० भिवानी
११७. ,, जगराम यादव ,, ,, सेघा ,,
११८. ,, रामसिंह ,, ,, गथोली जि० अम्बाला
११९. ,, ईश्वरसिंह सरपंच ग्राम शिमली जि० रोहतक

(क्रमशः)

आर्यसमाज तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने निकट के ग्रामों के उन सरपंचों के नाम जो शराब का सेवन नहीं करते हैं, लिखकर शीघ्र भेजने का कष्ट करें, ताकि उनके नाम इस सूची में प्रकाशित हो सकें।

—सम्पादक

गांधी जयन्ती पर शराबबन्दी के लिए जिलाधीश रोहतक को ज्ञापन

आज राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी तथा भारत के एक आदर्श प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर जी शास्त्री का जन्म दिवस है। दोनों ही महा-पुरुष शराबबन्दी के पक्षधर थे। महात्मा गांधी जी ने तो कहा था कि "यदि एक दिन के लिए मुझे राज्य सत्ता मिल जावे तो उसी समय शराब पर पाबन्दी लगा दूंगा"। परन्तु आज महात्मा गांधी के नाम-लेवा प्रायः राजनैतिक नेता शराब के नशे में खुद भी मस्त रहते हैं तथा शराब पीने तथा पिलानेवालों को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

हरयाणा में इस वर्ष जो पंचायतों के चुनाव हुए हैं, उस अवसर पर शराब का जितना अधिक प्रयोग किया गया, उससे हरयाणा सर-कार के आबकारी नियमों की खुली उल्लंघना की गई है। चुनाववाले दिन शराब के ठेके बन्द रहने चाहिए थे, परन्तु सरकार ने शराब की बिक्री करनेवालों के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की गई। इस प्रकार हरयाणा में शराब पीने तथा पिलानेवाले अधिकतर सरपंच शराब के सहारे अनुचित कार्रवाई करके जीत गये हैं। शराब की बोतलों से वोट खरीदे गये हैं। शराब के बढ़ते हुए प्रचार तथा प्रसार से ग्रामों में अनेक प्रकार की सामाजिक बुराइयां फैल रही हैं। गरीब किसान तथा मजदूर शराब की लत में आकर अपनी खून-पसीने की कमाई को नष्ट करके बर्बाद हो रहे हैं और शराब के ठेकेदार शराब के कारण मालामाल हो रहे हैं। ग्रामों में किसी भले आदमी का जीना दूभर हो रहा है और शराबियों के उत्पात से बहू-बेटियों को अपनी इज्जत बचाना कठिन हो रहा है।

सरकार जितने भी विकास कार्य करे, परन्तु जब तक शराब पर पाबन्दी नहीं लगाई जावेगी, हरयाणा का कभी भी विकास नहीं हो सकेगा। अतः हम आज के पवित्र दिवस पर हरयाणा सरकार से अनुरोध करते हैं कि हरयाणा प्रदेश में पूर्ण शराबबन्दी लागू की जावे और कम से कम जिला रोहतक में वर्ष १९४८ से १९६६ तक की भांति शराबबन्दी करके क्रमशः अन्य जिलों में भी शराबबन्दी लागू करके हरयाणा को इस भयंकर बुराई से राहत दिलाई जावे।

इस ज्ञापन पर सभा के उपप्रधान महाशय भरतसिंह, मन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री, वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह, सभा कार्यालय के श्री केदारसिंह आर्य, श्री शेरसिंह, श्री सत्यवान, श्री अर्जुनदेव आर्य के अतिरिक्त युवक कला संगम रोहतक, युवा मंच महम चौबीसी के कार्य-कर्त्ताओं ने हस्ताक्षर किये हैं। ज्ञापन देने के लिए छोटूराम पार्क से जिलाधीश निवास तक जलूस निकाला गया।

संयुक्त राष्ट्र में फिर हिन्दी की गूँज

संयुक्त राष्ट्र, ५ अक्तूबर (प्रेट्र)। अपने गठन के ४३वें वर्ष में कल संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा बैठक में तीसरी बार हिन्दी की गूंज सुनी। भारतीय विदेशमन्त्री श्री पी० वी० नरसिंह राव ने कल सदन को हिन्दी में सम्बोधित किया।

श्री अटलबिहारी वाजपेयी, जिन्होंने वहां पहली बार हिन्दी का प्रयोग १९७७ में विदेशमन्त्री के रूप में किया था, कल भी सभा में उपस्थित थे। श्री वाजपेयी संयुक्त राज्य महासभा के वर्तमान सत्र में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य हैं।

श्री राव के भाषण के बाद श्री वाजपेयी ने उन्हें हिन्दी में भाषण करने के लिए बधाई दी।

एक भारतीय राजनयिक ने महासभा के सदस्यों के लिए श्री राव के हिन्दी भाषण का अंग्रेजी में अनुवाद किया।

संयुक्त राष्ट्र की छह अधिकृत भाषायें हैं—अंग्रेजी, स्पेनिश, अरबी, रूसी, फ्रेंच तथा चीनी। वहां इनमें से किसी भाषा में दिये गये भाषण के साथ-साथ अनुवाद की सुविधा है।

अहिन्दी भाषी श्री नरसिंह राव हिन्दी में लिखे भाषण को बहुत सुन्दर ढंग से पढ़ते चले गये। लेकिन संयुक्त राष्ट्र के अनुवादकों ने उनके अंग्रेजी भाषण से ही विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया।

इससे पहले बंगलादेशी प्रतिनिधि बंगला में और ईरानी प्रतिनिधि फारसी में भाषण दे चुके हैं। लेकिन आमतौर पर महासभा में अंग्रेजी तथा अन्य प्रमुख भाषाओं का ही बोलबाला रहता है।

श्री नरसिंह राव का भाषण शुरु होते ही प्रतिनिधि कुछ चौंक से गये, क्योंकि उन्हें तो विश्व संगठन में अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी, चीनी, अरबी तथा स्पेनिश में ही भाषण सुनने की आदत-सी पड़ गई थी।

(दैनिक ट्रिब्यून से साभार)

वेदप्रचार सप्ताह आदि के कार्यक्रम

आर्यसमाज मेन बाजार बल्लबगढ़ जि० फरीदाबाद	७-९ अक्तूबर
,, शाहबाद मारकण्डा जि० कुरुक्षेत्र	२ से ९ ,,
,, कालका जि० अम्बाला	२ से ९ ,,
,, समालका मण्डी जि० करनाल	७ से ९ ,,
गुरुकुल डिकाडला जि० करनाल (पदयात्रा द्वारा प्रचार)	४ से १५ ,,
आर्यसमाज नलवा जि० हिसार	९ से ११ ,,
,, सिरसा	७ से ९ ,,
,, बालधन कलां जि० महेन्द्रगढ़	८-९ ,,
,, गन्नौर शहर जि० सोनीपत	१२ से १६ ,,
,, माडल टाउन रोहतक	१२ से १६ ,,
,, होली मोहल्ला करनाल	१२ से १६ ,,
आर्य सम्मेलन पलवल जि० फरीदाबाद	१५-१६ ,,
आर्यसमाज बालसमन्द जि० हिसार	१८ ,,
कन्या गुरुकुल पंचगांव जि० भिवानी	२१ से २३ ,,
आर्यसमाज क्योडक गेट कैथल जि० कुरुक्षेत्र	२८ से ३० ,,
,, आर्यनगर काठमण्डी सोनीपत	२८ से ३० ,,
,, मीरपुर जि० महेन्द्रगढ़	३१ से ६ नवम्बर
,, भीमनगर गुड़गांव	४ से ६ ,,
कुरुक्षेत्र गोशाला कैथल जि० कुरुक्षेत्र	१५ से १७ ,,
आर्यसमाज कृष्ण कालोनी भिवानी	१८ से २० ,,
,, पलवल शहर जि० फरीदाबाद	१४ से २० ,,
,, बड़ा बाजार पानीपत जि० करनाल	१८ से २० ,,
,, खेड़की जि० महेन्द्रगढ़	२६-२७ ,,
,, सिलारपुर तोताहेड़ी जि० महेन्द्रगढ़	२५ से २७ ,,

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य वीरदल को बड़ी युवाशक्ति के रूप में उभारा जायेगा

पलवल, ५ अक्तूबर (निस)। हैदराबाद आंदोलन, हिन्दी आंदोलन तथा गोरक्षा आंदोलन की सफलता के बाद आर्यसमाज में आई शिथिलता को दूर करने तथा आर्यसमाज के क्रांतिकारी एवं रचनात्मक स्वरूप को पुनर्जीवित करने हेतु आंदोलन की भूमिका तैयार करने के लिए प्रदेश आर्य वीरदल ने अपनी हंगामी बैठक २२ अक्तूबर को रोहतक में बुलाई है। बैठक शिवाजी कालोनी स्थित आर्यसमाज मन्दिर में होगी, इसके पूरी रात चलने की सम्भावना है।

दल के प्रदेश अधिष्ठाता प्रो० धर्मदेव विद्यार्थी के अनुसार हिसार में सार्वदेशिक आर्य वीरदल के प्रधान उपसेनापति आचार्य देवव्रत की अध्यक्षता में रविवार को हुई बैठक काफी हंगामी रही। इससे एक दिन पूर्व सम्पन्न आर्यवीर सम्मेलन में प्रसिद्ध इतिहासकार व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द ने भी इस तरफ संकेत दिया था कि आर्यसमाज पुन: कोई आंदोलन करे तथा युवा संगठन आर्य वीरदल इसमें प्रमुख भूमिका निभाए। इस सम्मेलन में अधिसंख्य वक्ताओं ने इस बात पर बल दिया कि आंदोलन का श्रीगणेश हरयाणा से ही हो। इस सम्मेलन में दूरदर्शन की तीव्र निन्दा की गई कि वह विज्ञापनों के नाम दर्शकों पर अश्लीलता थोप रहा है। श्री विद्यार्थी के अनुसार दो दिनों तक चले इस महासम्मेलन में प्रदेश के सभी जिलों से दो हजार आर्य युवकों ने हिस्सा लिया।

दल द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि आर्य वीरदल वर्ष १९८८-८९ के दौरान अपनी संगठन शक्ति को बढ़ाकर हरयाणा प्रांत की सबसे बड़ी 'युवा शक्ति' के रूप में उभरेगा।

आगामी एक वर्ष के लिए दल के प्रांतीय संचालक उमेद शर्मा ने लक्ष्मणदास (बल्लबगढ़), सत्यदेव भारद्वाज (नरेली), उत्तमचन्द शरर (पानीपत), स्वामी रत्नदेव (जींद), स्वामी अमरानन्द (मेवात) व कन्हैयालाल मेहता (फरीदाबाद) को दल का प्रांतीय संरक्षक, मनोहरलाल आनन्द (रोहतक) को सहसंचालक, प्रो० ओमकुमार (जींद), सीताराम आर्य (हिसार), अजीतकुमार आर्य (पलवल) को उपसंचालक, वेदप्रकाश आर्य (रोहतक) को मन्त्री, वीरभान आर्य (पलवल) को प्रचारमन्त्री तथा महेन्द्र शास्त्री (गुडगांव), सत्येन्द्रकुमार शास्त्री (फिरोजपुर झिरका), देवव्रत आचार्य (कुरुक्षेत्र), कृष्णदेव शास्त्री (जींद), लाजपत आर्य (करनाल), स्वामी रुद्रवेश (कुरुक्षेत्र), स्वामी योगानन्द (जींद) व रामलाल आर्य (भिवानी) को बौद्धिकाध्यक्ष मनोनीत किया है। जयवीर ब्रह्मचारी (फरीदाबाद) को प्रधान शिक्षक बनाया गया है।

जगदीश मित्र को रोहतक, राजकुमार आर्य को हिसार, कर्णसिंह आर्य को जींद, जगदीश मलीक को करनाल, त्रिलोकचन्द को अम्बाला, सत्यपाल आर्य को फरीदाबाद, ओम्प्रकाश बधवा को महेन्द्रगढ़, ओम्प्रकाश कालड़ा को गुडगांव, विमलेश आर्य को भिवानी, हरिश्चन्द्र स्नेही को सोनीपत तथा हरिराम आर्य को कुरुक्षेत्र जिले का अध्यक्ष (मण्डलपति) मनोनीत किया है।

(नवभारत टाइम्स से साभार)

आर्यसमाज पिंजौर का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री ला० रामलाल, मन्त्री–प्रेमचन्द शर्मा, उपप्रधान–चौ० धर्मपाल, वेदपाल मलिक, उपमन्त्री–राजेशसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष–रामगोपाल गोयल, पुस्तकालयाध्यक्ष—सुशीलकुमार शर्मा।

स्मैक का मतलब

मौत है।

(पृष्ठ १ का शेष)

ने सामाजिक कृत्यस्वरूप सभायें करनी प्रारम्भ की थी या अब भी जो समाज सामाजिक कृत्य करती हैं, वह भी आर्यसमाज मन्दिरों से बाहर जाने को तैयार नहीं। सम्भवतः उन समाजों के अधिकारियों को यह भय रहता है कि लोग हमें मूर्ख समझ लेंगे।

जहां सार्वजनिक सभाओं के लिए स्थान उपलब्ध न हों, वहां की बात छोड़ दीजिये। जहां पार्क, नगर पालिका के सभा भवन आदि हैं, वहां तो आर्यसमाज भवन से बाहर निकल कर ही सभायें की जानी चाहियें। लोगों को पता तो चले कि आज का पर्व क्या है और उसका क्या महत्त्व है तथा हमारे लिए उसकी क्या उपयोगिता है?

वास्तविकता यह है कि लोग पर्व का अर्थ ही नहीं समझते। उन्हें तो इतना ही पता है कि अमुक पर्व पर अमुक-अमुक प्रकार का भोजन बनाना होता है और अमुक कृत्य करना होता है, फिर चाहे वह किसी मन्दिर में जाकर कोई क्रिया विशेष की जाती हो अथवा दीवार, भूमि आदि पर कुछ चित्रित करके उसके आगे सर भुकाना हो या उसे भोग लगाने के लिए कोई पदार्थ उससे लगा देना हो। ध्यान देने की बात यह है कि इन प्रक्रियाओं से न तो व्यक्ति को कोई प्रेरणा मिलती है और न समाज तथा राष्ट्र के हित में चिन्तन की ही कोई प्रेरणा प्राप्त होती है। हां, एक लकीर पीटनेवाली आदत बनकर स्वभाव का रूप धारण कर लेती है। लोग पीढ़ी दर पीढ़ी वैसा ही करते रहते हैं और पूछा तो कह देते हैं कि हमारे यहां तो पहले से ही इसी प्रकार होता आया है।

जब आत्म-निरीक्षण तथा समाज और राष्ट्र के विषय में सुनने और समझने को कुछ नहीं मिलेगा तो पर्व की मूल भावना पवित्रता और न्यूनताओं की पूर्ति का मार्ग प्रशस्त नहीं होगा।

आवश्यकता इस प्रकार इस पद्धति को बदलने की है। इसे तो पता नहीं आर्यजाति कितनी पीढ़ियों, कितनी शताब्दियों से मनाती आरही है, किन्तु इससे परिवार सुधार, समाज और राष्ट्र के उत्थान की कोई प्रेरणा आज तक नहीं मिली। प्रेरणा मिलने का कोई सूत्र भी इसमें नहीं है। यह आंखें बन्द करके भेड़ के पीछे भेड़ के चलने की अन्ध परम्परा मात्र है। इस अन्ध परम्परा में आंखें बन्द करके चलने के परिणामस्वरूप आर्यजाति का उत्तरोत्तर पतन ही हुआ है और अब भी स्वाधीनता प्राप्ति के ४१ वर्ष पश्चात् भी वही अन्धविश्वासात्मक अन्ध परम्परा चल रही है। परिणामस्वरूप व्यक्तित्व के निर्माण द्वारा परिवार, समाज तथा राष्ट्र-निर्माण वास्तविक रूप में नहीं हो पाया है। यदि कुछ हुआ है तो केवल चारित्रिक पतन ही हुआ है। स्मरण रखने की बात है कि यदि व्यक्ति का चरित्र नहीं बनेगा तो न परिवार में चरित्र की उज्ज्वलता पनपेगी और न समाज तथा राष्ट्र चरित्रवान् बन पायेगा। यह भी ध्यान रहे कि चाहे देश के पास असीमित सम्पत्ति हीरे-मोतियों, भवनों, कलकारखानों आदि के रूप में हो, चाहे उत्तमोत्तम सड़कें हों, बड़ी-बड़ी सेनायें जलयानों, वायुयानों तथा आणविकास्त्रों से युक्त हों, तब भी संसार की दौड़ में हम पिछड़े हो रहेंगे और विश्व में चल रहे शीत युद्ध में हम पीट जायेंगे।

इतिहास से शिक्षा लीजिये। महाभारतकाल में हमारे क्या नहीं था? सेनायें, भीषणतम आणविकास्त्र, महान् महारथी योद्धा तथा अपार सम्पदा थी। नहीं था तो चरित्र नहीं था—हमारा नैतिक पतन हो चुका था। इसी कारण महाभारत हुआ और तदुपरांत तभी से हम उत्तरोत्तर पतन की ओर चले जाते रहे। इतने लम्बे समय—पांच सहस्र एक सौ वर्ष—की पतनोन्मुख आर्यजाति को यदि इस समय के शीतयुद्ध की विभीषिका पूर्ण परिस्थितियों में बचाना है तो आर्यसमाज को आगे आना होगा। आर्यसमाज ने यदि पर्वों को ठीक रूप में मनाना प्रारम्भ किया। अपने सदस्यों को अपने-अपने घर पर्वों के अवसर पर गृह-कृत्य आर्य पूर्व पद्धति के अनुसार करने को समुद्यत किया तो परिवार का सुधार व उत्थान होगा, जो समाज व राष्ट्र की पवित्र और सुदृढ़ इकाई बनेगा तथा सामाजिक कृत्य को सार्वजनिक स्थानों, पार्कों आदि में मनाने से सामाजिक वातावरण बनकर राष्ट्रोत्थान का मार्ग प्रशस्त होगा। राष्ट्रीय चरित्र बनेगा, सर्वसाधारण में राष्ट्रीय भावनायें जागेंगी, अनैतिकता दूर होगी और नैतिकता बढ़ेगी। अल्पसंख्यक के नाम की ओट में देशद्रोही पन्थभांजीवनों की अराष्ट्रीय गतिविधियां अवरुद्ध हो जायेंगी। आनेवाले समय में अल्पावधि में ही राष्ट्र का नव-निर्माण हो जायेगा। अत एव 'उत्तिष्ठ: जाग्रत:' उठो, जागो—सावधान हो जाओ।

आर्य राष्ट्र-निर्माण सम्मेलन

पलवल (फ़ै० वि०) हरियाणा आर्य युवक परिषद् की ओर से १६ अक्तूबर, ८८ रविवार को प्रातः १० बजे एक जिलास्तरीय आर्य राष्ट्र निर्माण सम्मेलन का आयोजन मेवात क्षेत्र के प्रसिद्ध नगर हथीन में किया जारहा है। परिषद् के प्रांतीय महामन्त्री श्री शिवराम विद्यावाचस्पति ने बताया कि इस सम्मेलन में आर्य राष्ट्र की शिक्षा-नीति, धर्म-नीति, अर्थ-नीति, सामाजिक व्यवस्था व मद्य-निषेध आदि विषयों पर गम्भीरतापूर्वक देश की उभरती हुई युवाशक्ति के विचार सुनने को मिलेंगे।

श्री शिवराम ने कहा है कि आर्य युवक परिषद् का उद्देश्य वैदिक संस्कृति युक्त राष्ट्र का निर्माण करना है, जिसका भाव है कि जन-जन में आर्यत्व की भावना भरना, उनके अनुसार उक्त सम्मेलन को स्वामी विजयानन्द सरस्वती, स्वामी वेदानन्द सरस्वती, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, स्वामी अमरानन्द सरस्वती के अतिरिक्त श्री जगवीरसिंह एडवोकेट प्रधान आर्य युवक परिषद्, प्रो० रामनिवास आर्य, प्रांतीय अध्यक्ष श्री सुभाषचन्द कटयाल, डेरी व आवास मन्त्री हरयाणा सरकार, श्री रघु यादव विधायक संयोजक राष्ट्रीय बेरोजगार सेवा, प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेवसिंह बेधड़क, श्री हेमसिंह आर्य आदि को आमन्त्रित किया गया है।

—शिवराम विद्यावाचस्पति महासचिव

अन्तरंग सभा की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक १६ अक्तूबर, ८८ रविवार को प्रातः ११ बजे सभा कार्यालय सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक में होनी निश्चित हुई है। सदस्यों से निवेदन है कि समय पर पधारें।

—सभामन्त्री

श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी आमरण अनशन पर बैठे

गत ३१ जुलाई को नलवा गांव में गांधी पार्क में लगी राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी जी की प्रतिमा को गांव के कुछ स्वार्थी शराबी तत्त्वों ने तोड़ दिया था। लेकिन बार-बार मांग करने पर भी आज तक कोई दोषी गिरफ्तार नहीं किया गया है। दोषियों की गिरफ्तारी बारे आज २ अक्तूबर, ८८ को हिसार गांधी चौक से सैकड़ों साथियों के साथ पैदल जलूस निकाल कर लघु सचिवालय हिसार डी० सी० कार्यालय के सामने श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी आमरण अनशन पर बैठ गये हैं। कृष्णलाल बजाज हिसार तथा श्री हरलाल साहू बहुकलां भी एक दिन के अनशन पर बैठ गये हैं। जब तक राष्ट्रीय नेता का अपमान करनेवाले दोषी गिरफ्तार नहीं होते, तब तक संघर्ष जारी रहेगा।

शराब पीना सामाजिक

अभिशाप है।

शराब की दूकान के विरुद्ध आंदोलन होगा

सफीदों (एस)। यहां से १५ किलोमीटर दूर गांव सींक में चालू वित्त वर्ष के लिए खोले गये शराब के ठेके के विरुद्ध ग्रामवासियों ने आंदोलन छेड़ने का निर्णय लिया है। ग्रामीणों का आरोप है कि गांव में पड़ोसी गांवों के अनेक गुण्डे शराब पीकर गांव की गलियों में घूमते रहते हैं। शराब की दूकान उठवाने के लिए नागरिकों द्वारा उपायुक्त करनाल को लिखित शिकायत भेजने पर भी कोई कार्रवाई नहीं की गई है। आंदोलन के लिए युवा वर्ग ने गांव में ग्राम युवा सभा का गठन किया है।

(दैनिक ट्रिब्यून से साभार)

आर्य सम्मेलन गुडगांव

दिनांक ४-५-६ नवम्बर, ८८ को गुडगावां में आर्य सम्मेलन का आयोजन किया जारहा है। जिसकी अध्यक्षता सुप्रसिद्ध संन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज करेंगे। इस अवसर पर आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी, विद्वान् एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

इस समारोह में कई महत्त्वपूर्ण सम्मेलनों का आयोजन भी किया जारहा है। विशाल शोभा-यात्रा भी निकाली जायेगी। २३-१०-८८ को आर्यवीरों की एक विशेष बस 'मेवात क्षेत्र' में प्रचार हेतु जायेगी। पधारनेवाले महानुभाव सर्वश्री स्वामी आनन्दबोध जी प्रधान सार्वदेशिक सभा, प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, प्रो० उत्तमचन्द शरर, प्रो० रतनसिंह, डा० रामप्रकाश, रामनाथ जी सहगल महामन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा दिल्ली, जयप्रकाश आर्य पूर्व इमाम, श्रीमती शकुन्तला आर्या, श्याम राघव, मंगलसेन एवं मण्डली।

—रामचन्द्र आर्य, स्वागत मन्त्री

श्रीकृष्ण से द्रौपदी की अरदास

ले०—चौ० पृथ्वीसिंह जी बेधड़क

जिन बालों में तेल डालकर रोज महल में सींचा।
उन बालों को पकड़-पकड़ कर दुःशासन ने खींचा॥

कहां लिखा है पतिव्रता को कोई उत्पात लगाना,
कहां लिखा है किसी अबला को क्रोध से सराफ लगाना,
कहां लिखा है बुरे भाव से गात के गात लगाना,
कहां लिखा है किसी सती को कमर में लात लगाना,
तोड़—यही लिखा है दुःशासन ने गला हमारा भींचा। १

जूआ खिलाकर धोका देकर जिसने बाहर खेदे,
उन दुष्टों के रणभूमि में खून से कपड़े भेदे,
मेरे पति और देवर जेठ को ऐसी शिक्षा दे दे,
मेरे भइया कृष्ण कन्हैया बहन का बदला ले दे,
तोड़—हरा-भरा बर्बाद बना दुष्टों का बाग-बगीचा।२

बारह साल वनों में फिर कर विपत उठाई सिर पर,
एक साल तक दासी बनकर घड़े उठाये कर पर,
जिस पापी ने भरी सभा में मारी लात कमर पर,
राज मांगने चल दिये भइया उसी नीच के घर पर,
तोड़—याद करो शकुनि का वो चौपड़ दगा बगीचा।३

बूआ तुम्हारी सास हमारी मेरे पति की मइया,
तेरह साल से वनों में रोती ज्यूं बछड़े बिन गइया,
डगमग-डगमग डोल रही है नाव हमारी भइया,
जब जानूंगी तुम्हें कन्हैया पार लगादो नइया,
तोड़—पृथ्वीसिंह बेधड़क दिखादो दुष्टजनों को नीचा।४

प्रस्तुतकर्ता—जयपालसिंह आर्य, सभा भजनोपदेशक

प्रोत्साहन

गाय रक्षा के नारे लगाने चलो। हिन्द सोये हुए को जगाते चलो॥
गोकशी दूर हो, बेबशी दूर हो। जगो ! भ्रांति भय को भगाते चलो॥
मरेंगे मिटेंगे लड़ा जान देंगे। उठो ! प्राण गौ के बचाते चलो॥
नहीं हक किसी को है गौ काटने का। यही पाठ सबको पढ़ाते चलो॥
गिरे रक्त गौ का नहीं भूमि पर अब। धेनु माता प सर्वस्व लुटाते चलो।
पिया दूध जिसका है माता से ज्यादा। उसी मां के बन्धन छुड़ाते चलो॥
है भाग्यकर्त्री गाय भारत मही की। उसी मां पै जानें लड़ाते चलो॥
श्रीकृष्ण गोपाल की प्यारी गौ है। इन्हें भय से निर्भय बनाते चलो॥

—स्व० शोभाराम 'धेनुसेवक'

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

ग्राम खानक (भिवानी) में युवा समिति की बैठक एवं गांव से शराब का ठेका हटाने की मांग

गत २७-८-८८ को ग्राम खानक में युवा समिति का गठन किया गया। जिसकी दूसरी बैठक दिनांक १७-९-८८ को सायं ४ बजे बस अड्डे पर धर्मशाला में सभा उपदेशक एवं शराबबन्दी समिति के प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी की अध्यक्षता में हुई। जिसमें समिति प्रधान श्री वेदप्रकाश जी ने युवा समिति का उद्देश्य एवं गांव में फैले भ्रष्टाचार, चरित्रहीनता एवं बढ़ती शराबखोरी बारे प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि गांव में शराब का ठेका होने से ९५% मजदूर किसान लोग सायंकाल प्रतिदिन शराब के नशे में धुत्त रहते हैं। उनके बच्चों का बुरा हाल है। न पांव में जूता, न तन पर अच्छे कपड़े। कई-कई मजदूर शराब के इतने आदी हैं कि भोजन बगैर रह सकते हैं, शराब बगैर नहीं। शराब के कारण चरित्रहीनता भी जोरों पर है। यहां तीन-चार जगह सुअर मांस बकरा आदि काटकर बेचते हैं व खाते हैं। गांव में चारों तरफ तथा गलियों में गन्दगी के ढेर हैं, जिससे मच्छर फैलते हैं। गांव में पंचायत की भूमि से वृक्ष दबादब काटे जाते हैं, कोई पूछनेवाला नहीं। गांव के निकट पहाड़ होने से ४-५ क्रेशर हैं, जिनकी धूल से लोगों का स्वास्थ्य खराब होता है। हम चाहते हैं कि क्रेशरों के साथ फव्वारा सैट लगाये जावें, ताकि धूल न उठ सके। गांव में शराब का ठेका है उसे बन्द किया जावे या फिलहाल गांव से दूर किया जावे।

क्रांतिकारी जी ने पहले तो नवयुवकों को संगठन बनाने एवं शराबखोरी के खिलाफ आवाज बुलन्द करने पर बधाई दी। बाद में शराबबन्दी बारे अपने अनुभव व आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा चलाये जारहे शराबबन्दी अभियान पर प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त शराब से होनेवाले नुकसान बारे इतिहास के उदाहरण देकर विस्तार से विचार रखे तथा सरकार की शराब बढ़ावा नीति की कटु आलोचना की। नवयुवकों से शराब व मांस से दूर रहने का आग्रह किया तथा आर्यसमाज के सम्पर्क में आने का आह्वान किया। आर्य जी के प्रेरणाप्रद विचारों एवं सुझावों से समिति के सदस्य काफी प्रभावित हुए।

—कश्मीरसिंह, महामन्त्री युवा समिति खानक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४) रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73   पंजि० नं० P/RT   १२   पूर्व स्वीकृति २६,०८,४३,०८१



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   २३ आश्विन २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्क ४४, १४ अक्तूबर, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

ईश्वर क्या है ?

—अरविन्दकुमार 'कमल' विद्यानिधि दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्' आंख से दीखता है, इससे बड़ा कोई प्रमाण नहीं है। ऐसा कहकर प्रायः लोग उसी वस्तु की सत्ता पर विश्वास करते हैं जो उन्हें आंखों से दीखती है, किन्तु आंखें हर वस्तु को नहीं देख सकतीं। उन वस्तुओं के अस्तित्व को इन्कार करना होगा, जिन्हें हम स्वभावतः मानते हैं। जैसे—सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास, दुःख, सुख इत्यादि।

जिस प्रकार सर्दी, गर्मी, भूख और प्यास आदि दीखती नहीं, किंतु हैं। दूध में मक्खन है, किन्तु प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देता। उसी प्रकार ईश्वर है, किन्तु दिखाई नहीं देता। नियम के लिए नियामक की और कार्य के लिए कर्त्ता की आवश्यकता होती है, उसी तरह इस विशाल संसार का निर्माण वही कर सकता है जो सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ न्यायकारी और सर्वव्यापक हो। ऐसा केवल एक है, वह है ईश्वर। इस विशाल संसार को देखकर मानना पड़ेगा कि ईश्वर है।

लाल पीले नीले रंग किसने दिये गुलाब को,
किसने खिलाये पहुप पीले-पीले हैं।
कौन है वह जिसके नियन्त्रण में चलता जगत्,
किसने बनाये सूर्य चन्द्र सुन्दर सजीले हैं॥
किसने पैदा की चन्दन में सुगन्धी मृग में कस्तूरी,
किसने बनाये पशु-पक्षी और मनुष्य हठीले हैं।
'कमल' ऐसी शक्ति को कोटि-कोटि प्रणाम है,
जिसने बनाई प्रकृति योगी जिसके रंग में रंगीले हैं॥

ईश्वर सर्वव्यापक है तो दिखाई क्यों नहीं देता? अत्यन्त निकट होना भी दिखाई न देने का कारण है। विद्यमान होने पर भी कोई पदार्थ दिखाई न दे तो निम्न में से एक या अनेक कारण होंगे—

१—अत्यन्त निकट होना जैसे आंख का सुरमा या काजल।
२—अति दूर होना जहां आंख न पहुंच सके।
३—बड़ा होना अर्थात् अत्यन्त विशाल होना।
४—अति सूक्ष्म होना जैसे काठ के अन्दर आग।
५—व्यवधान या बीच में परदा होना जैसे दीवार के दूसरी तरफ की वस्तु।
६—आंख में विकार होना या मन का चंचल होना।

वेद कहता है कि 'अन्ति सन्तं न पश्यति' ईश्वर जीव के अत्यन्त निकट है, इसलिए दिखाई नहीं देता अर्थात् जीव उसे नहीं देख सकता। केनोपनिषद् में बतलाया गया है—

न तत्र चक्षुर्गच्छति न वाग्गच्छति नो मनो न विद्मो न विजानीमो यथा एतदनुशिष्यादन्यद् एव तद् विदितादथो अविदिता अधि। इति शुश्रुम पूर्वेषां ये नस्तद् व्याचचक्षिरे।

अर्थात् न वहां आंख पहुंचती है, न वाणी पहुंचती है और न मन (इसलिए उस ईश्वर को) न जानते हैं, न जान सकते हैं, जिससे उसका उपदेश किया जाये। वह ज्ञात वस्तुओं से पृथक् है और अज्ञात से भी भिन्न है। ऐसा पूर्व आचार्यों से सुनते हैं जो हमको उसका उपदेश करते आये हैं।

बहुत से लोग नाम की अनेकता से ईश्वर को अनेक मानते हैं, किंतु ईश्वर एक है। कैवल्य उपनिषद् के अनुसार—

स ब्रह्मा स विष्णुः स रुद्रः स शिवः सोऽक्षरः स परमः स्वराट् स इन्द्रः स कालाग्निः स चन्द्रमाः।

अर्थात् वह ईश्वर ही सब जगत् को बनाने के कारण ब्रह्मा, सर्वत्र व्यापक होने से विष्णु, दुष्टों को दण्ड देके रुलाने के कारण रुद्र, मंगलमय और कल्याणकारी होने के कारण शिव, अविनाशी होने के कारण अक्षर, स्वयं प्रकाशस्वरूप होने से स्वराट्, प्रलय में सबका काल और काल का भी काल है, इसलिए कालाग्नि है। नाम भेद से अनेकता सिद्ध नहीं हो सकती ईश्वर एक ही है। गौतम ऋषि कृत न्यायदर्शन में कहा गया है—

'इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्।

अर्थात् जो श्रोत्र, चक्षु, त्वचा, जिह्वा, घ्राण और मन का शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, सुख, दुःख और सत्यासत्य विषयों के साथ संबंध होने से ज्ञान उत्पन्न होता है, उसको प्रत्यक्ष कहते हैं, परन्तु वह निर्भ्रम हो।

जैसे हम किसी वस्तु को देखकर कहते हैं कि इसका बनानेवाला अच्छा कलाकार है, किन्तु प्रत्यक्ष तो उसके गुणों का करते हैं और उस गुणी का प्रत्यक्ष मन में। इस प्रकार इस विशाल संसार को देखकर गुणों का प्रत्यक्ष होने से ईश्वर का भी प्रत्यक्ष है।

जब हम चोरी करते हैं तो हमारे अन्दर से प्रेरणा होती है कि यह गलत कार्य है। हमें भय और लज्जा होती है, किन्तु इसके विपरीत अच्छे कर्म करने में आनन्द और अभय होता है। यह प्रेरणा ईश्वर की तरफ से है और जब जीवात्मा शुद्ध और पवित्र होकर परमात्मा का ध्यान करता है, तब उसे परमात्मा का प्रत्यक्ष होता है।

गांव डिडवाड़ी जि. करनाल में वेदप्रचार

२६-९-८८ से २९-९-८८ तक गांव डिडवाड़ी में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यक्रम के अनुसार जयपालसिंह आर्य की भजनमंडली ने सर्वश्री युधिष्ठिर शास्त्री, कृपालसिंह मन्त्री व राजबीरसिंह कोषाध्यक्ष के द्वारे पर गांव में चार दिन प्रचार किया। २१ सदस्य नवीन आर्यसमाज में शामिल हुए। चार सदस्य सर्वहितकारी के ग्राहक बने। जिन्होंने अपना शुल्क भी दे दिया। सभा को २३८) दान दिया। प्रचार से गांव के नर और नारियां बहुत ही प्रभावित हुए।

चेतावनी एवं खतरे की घण्टी

—स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

चेतावनी

सिंह के सामने जाने से न डरो—यह पराक्रम की निशानी है।
तलवार के नीचे सिर झुकाने से न डरो—यह बलिदान की कसौटी है।
पर्वत शिखर से कूद पड़ो—यह साहस का प्रमाण है।
धधकती हुई अग्नि में प्रवेश कर जाओ—यह स्वर्ण परीक्षा है।

पर शराब से सदा डरते रहो;
क्योंकि यह पाप की जननी है;
और मृत्यु का द्वार है।

जिस राजा के राज्य में सुरादेवी आदर पायेगी, वहां न वनस्पति उपजेगी और न अनाज होगा। उसका सर्वनाश हुए बिना न रहेगा।
—महात्मा बुद्ध

सब बुराइयों की जड़ अविवेक है और अविवेक की जड़ मद्यपान है।
—महावीर स्वामी

मदिरा मनुष्य को राक्षस बना देती है। जब से गौ आदि पशुओं के मारनेवाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए हैं, तब से देश में दुःख बढ़ते जाते हैं।
—स्वामी दयानन्द

शराब पीने पर उन्मत्त मनुष्य अपने शरीर की परवाह न करते हुए युद्ध करते हैं। मदिरा मनुष्य को पापी बना देती है।
—ऋग्वेद

खतरे की घण्टी

जिस प्रकार अन्न हमारी अन्तड़ियों में समा जाता है, उसी तरह शराब का मुख्य अंश अलकोहल जिस्म में जाकर मिल जाता है और जब यह पच नहीं पाता तो बड़ी तेजी से नाड़ियों और अन्तड़ियों में फैलने लगता है। शराब के नशे में एक बार तो आदमी अपने को बड़ा खुश महसूस करता है। उसे लगता है कि वह धरती से बहुत ऊपर उठ गया है। जल्दी ही वह अपने मन पर नियन्त्रण खोने लगता है और बिना सोचे समझे जो मन में आये करने लगता है। कुछ देर बाद उसके लिए माचिस की तीली जलाना मुश्किल हो जाता है। न वह चल सकता है और न स्थिर होकर खड़ा हो सकता है। नशे की दूसरी अवस्था में आदमी को चलने या कपड़े बदलने के लिए दूसरे आदमी की सहायता जरूरी हो जाती है। उसे बात-बात में गुस्सा आने लगता है और धीरे-धीरे चिड़चिड़ा स्वभाव का हो जाता है। नशे की तीसरी अवस्था में शराबी बेहोशी की सी हालत में रहने लगता है। उसकी सांस तेज हो जाती है और वह ठीक तरह से बोल नहीं पाता। जो आदमी उसकी मदद को पहुंचता है, उसी पर वह औंधा गिर पड़ता है। भीतर से शरीर खोखला हो जाता है और फिर अन्तिम स्थिति आती है। जब शराबी का सारा शरीर लुंज-पुंज हो जाता है और वह धीरे-धीरे मौत के मुंह में चला जाता है। इस प्रकार शराब पीनेवाले को शराब पी जाती है।

शराब के लगातार प्रयोग से आदमी के शरीर में अनेक रोग घर करने लगते हैं। आंखें जलने लगती हैं, भूख मन्द पड़ जाती है, मिचली आने लगती है और जिस्म में कपकपी शुरु हो जाती है। फिर उस स्थिति से उबरने और क्षणिक ताजगी व फुर्ति पाने के लिए शराब की मात्रा बढ़ाने लगता है।

शराब के लगातार प्रयोग से रक्त की नाड़ियां फैलने लगती हैं और त्वचा लाल व काली हो जाती है और झुर्रियां पड़ जाती हैं। रक्त-चाप बढ़ जाता है। शराब पिये हुए आदमी को सर्दी कम लगती है, किन्तु वास्तव में उसकी अपनी गर्मी कम होती जाती है। गुरदे पर शराब का खास असर होता है, इसलिए शराब का गुरदा जल्दी खराब हो जाता है।

शराब पीने के बाद आदमी को कुछ समय के लिए ऐसा लगता है कि वह चिन्ताओं से मुक्त होगया और इस प्रकार उसे एक खास किस्म की खुशी महसूस होती है। इस गलत फहमी के कारण दिनभर काम करके थका हुआ आदमी राहत पाने या झंझटों से छुटकारा पाने के लिए बेचैन हो उठता है, परन्तु यह खुशी देर तक नहीं रह पाती। कुछ देर के बाद कष्ट उसे दुगुनी शक्ति के साथ दबोच लेते हैं। व्यापार में घाटा उठाने पर उसका गम गलत करने के लिए एक व्यापारी ने शराब का सहारा लिया। उसने सोचा कि वह अपनी चिन्ताओं को शराब में डुबो देगा। परिणाम यह हुआ कि उसे पीलिया, गुरदे का दर्द, जोरदार उल्टियां, तिल्ली का बढ़ जाना और उल्टियों के कारण जलविहीनता आदि रोग होगये। किसी देश में शराब पीनेवाले और शराब न पीनेवाले इन दोनों के तुलनात्मक जिगर रोगों का अनुपात वहां के लोगों की पीने की आदत पर निर्भर करता है। इस प्रकार पता चलता है कि यूरोप और मद्रास में ९० प्रतिशत और अमरीका में ७५ प्रतिशत व ब्रिटेन में ३० प्रतिशत है। बम्बई में जिगर सम्बन्धी रोगियों में ३० प्रतिशत पीने वाले हैं। गुरदे पर मद्यपान के दुष्प्रभाव के कारण मूत्र-सम्बन्धी रोग होते हैं जो कालांतर में गठिया का कारण बन जाते हैं। जो लोग शराब पीते हैं, उनके नालिका तन्त्र में खराबी हो जाने से हृदय सम्बन्धी रोग होने का खतरा हो जाता है। इस प्रकार शराब वह विष है जो शरीर के महत्त्वपूर्ण अंगों को बेकार कर देता है शराब पीने से शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक पतन होकर समाज का सारा ढांचा बिगड़ जाता है। गुप्तचर अपने शत्रु देश के उच्चपदस्थ अधिकारियों से शराब के नशे की अवस्था में रहस्य जान लेने में सफल हो जाते हैं।

शराब आत्मा की आवाज को कुण्ठित कर देती है और वाहन नियन्त्रण के विरुद्ध बगावत। शराब के नशे में ग्रस्त होने पर व्यक्ति उस स्थिति की तुलना में जब वह नशे में नहीं होता, अधिक अपराध करता है। अमरीका में एकत्र आंकड़ों के अनुसार वहां जितने लोग बन्दी बनाये जाते हैं, उनमें ४० प्रतिशत शराबी होते हैं। इसलिए अमरीका की एकमात्र बड़ी समस्या मद्यपान है। बलात्कार, वेश्यावृत्ति, डकैती और हत्या आदि कुछ ऐसे अपराध हैं, जिन्हें शराब से बढ़ावा मिलता है। जो माता-पिता शराब पीते हैं, उनके बालकों के अपराधी बनने की अधिक सम्भावना रहती है। अमरीका की एक अदालत में प्रस्तुत १० हजार मामलों में ९३ प्रतिशत का कारण शराब को पाया गया। भारत में बसों-ट्रकों के कारण होनेवाली दुर्घटनाओं में बड़ा कारण ड्राइवरों का शराब में धुत्त होना पाया गया है। युवकों और युवतियों के चारित्रिक पतन का प्रारम्भ मद्यपान से होता है और पहली बार के अपराध के बाद उसके पतन की गति तेज होती जाती है। विश्वभर का अनुभव यह बताता है कि अपराधों की योजना शराब की बोतल के गिर्द एकत्रित लोगों द्वारा बनाई जाती है। (क्रमशः)

नशा नशा है, चाहे वह शराब का हो या स्मैक का

—प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

नशीली वस्तुओं की तस्करी तथा सभी देशों के नागरिकों द्वारा उनके सेवन ने संसारभर में एक बड़ी समस्या खड़ी करदी है। शराब की तस्करी तो नहीं होती, क्योंकि शराब को तो संसारभर की सरकारों ने पूरा-पूरा संरक्षण दे रखा है। एक समय था तब शराब के विरोध में भी संसार के बहुत से राष्ट्र चिन्तित थे। अमरीका, यूरोप आदि विकास के कार्यक्रमों में लगे हुए देश शराब की लत से भी अपने नागरिकों को बचाना चाहते थे। अमरीका में तो इस शताब्दी के तीसरे दशक में नशाबन्दी लागू करनेवाली पार्टी का शासन भी रहा। तब संसार के लगभग सभी देश शराब पीनेवालों को अच्छा नागरिक नहीं मानते थे और उनकी संख्या भी सीमित थी, परन्तु शराब के कारखाने चलानेवाले उद्योगपतियों ने शोधन करके तथा अल्कोहल की मात्रा कम करके पीने की खुली छूट के लिए राजी ही नहीं कर लिया, बल्कि राजस्व कमाने और कोष भरने का भी रास्ता दिखा दिया। उन्होंने सरकारों को इस प्रचार में अपने साथ शामिल कर लिया कि जो लोग स्वयं शराब बनाते हैं, उसमें अल्कोहल की मात्रा अधिक है और उसका शोधन न होने से वह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इसलिए शोध की हुई कारखानों की शराब पीने में कोई हर्ज नहीं है। फिर सरकार ने भी शराब बनाने के कारखाने खोलने शुरु कर दिये। इस प्रकार इस धन्धे में सरकारें भी पूरी तरह फंस गईं।

इस सारी दास्तान से एक बात लोगों के मन में स्वाभाविक रूप से आने लगी है कि जो सरकारें आज स्मैक, ब्राउन शूगर, हीरोइन, चरस आदि का विरोध कर रही हैं, कल यदि कुछ उद्योगपति इन नशीले पदार्थों का शोधन करके कम जहरीले नशे के पदार्थ तैयार करलें और सरकार को राजस्व मिलने लगे और सरकार भी ऐसे कारखाने लगा सके तो शायद शराब की तरह इन नशों की भी छूट हो नहीं, बल्कि सरकारों की ओर से प्रोत्साहन मिलने लगे। सरकार किसी देश की हो, प्रदेश की हो और किसी भी दल की हो, उन सबके प्रति यह अविश्वस-नीयता बढ़ती जारही है।

नशा चाहे उसमें विष २० प्रतिशत हो और चाहे ८० प्रतिशत, नशा तो नशा है। नशा चाहे जल्दी अपने विष का प्रभाव मनुष्य के शरीर, मन और व्यवहार पर डाले चाहे धीरे-धीरे, वह है मनुष्य का शत्रु। मारे जानेवाले पशु के लिए तो झटका हो या हलाल, कोई अन्तर नहीं है, दोनों ही जानलेवा हैं। नशा उसके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर तथा उसकी सामाजिकता और नैतिकता पर घातक प्रहार करता है। नशा कोई भी हो, वह मनुष्य के काम करने की क्षमता उस के स्वस्थ चिन्तन, उसके विवेक और नैतिकता पर गहरा प्रभाव डालता है। मनुष्य स्वयं तो किसी काम का रहता ही नहीं, उसकी कमाने की शक्ति क्षीण होने और जो थोड़ा बहुत कमाये उसको नशे में बर्बाद करने के कारण उसका सारा परिवार भूख और दरिद्रता का शिकार होकर बर्बाद हो जाता है। छोटे-छोटे मासूम बच्चे और उनकी ममतामयी मातायें सब जीते हुए भी मुर्दा हो जाते हैं और अपनी उदरपूर्ति के लिए पता नहीं उनको क्या-क्या करना पड़ता है। समाज में नित नये अपराध जन्म लेते हैं और नित नये अमानवीय धन्धे। कोई भी संवेदनशील मनुष्य समाज में ऐसे दृश्य देखकर शराब या किसी दूसरे नशे की वकालत नहीं कर सकता।

आज देश का गरीब किसान, मजदूर और छोटा-मोटा कारोबार करनेवाला अपनी और अपने परिवार की बर्बादी से बचने के लिए तड़-पने लगा है। महिलायें और प्रबुद्ध नवयुवक खुलकर बोलने लगे हैं, प्रतिकार की तैयारियों में जुटे हैं। मेरे पास नवयुवक आये, कुछ पोस्टर, पुस्तिकायें और सभा के कार्यालय से मोटो और तख्तियां लेकर गये। महम की चौबीसी से उन्होंने काम प्रारम्भ किया और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के साथ जाकर रोहतक के उपायुक्त को ज्ञापन देकर आये। मैं इसी वर्ष मार्च महीने में कहूता गया तो नवयुवक खुलकर मैदान में आये और उस गांव में शराब के नशे को समाप्त करने में अग्रसर लोगों को गांव का पंच सरपंच चुना। निदाना में महिलाओं ने अत्याचार सहकर भी धरना दिया। उन्हें सफलता मिली। इस मास में और भी कुछ ग्रामों में धरना देने की तैयारी हो रही है।

नशाबन्दी का प्रश्न आज न किसी प्रदेश का रह गया है, न देश का, यह विश्वव्यापी आंदोलन बनता जारहा है। रूस में गोरबाचोफ ने शराब और दूसरे नशों के विरुद्ध आंदोलन को अपने हाथ में लिया है। दूसरे नशों का आंदोलन तो दुनियांभर की सरकारें चला रही हैं, शराब के मामले में कहीं चला भी रही हैं तो ढीला-ढीला। वैसे भारत में अब नई चेतना जाग रही है, बंगाल में, पहाड़ी प्रदेशों में अब नवयुवक प्रदर्शन कर रहे हैं और शराब के विरुद्ध भी दूसरे नशों के साथ-साथ अभियान चल पड़ा है।

हम शीघ्र ही ऐसे पंचों-सरपंचों की बैठक बुलाना चाहते हैं जो शराबबन्दी के आंदोलन से जुड़ना चाहते हैं। एक बैठक नवयुवकों के क्लब चलानेवाले प्रबुद्ध युवाओं की भी बुलायेंगे। खेती के काम की गहमागहमी समाप्त होने पर अगले मास पदयात्रा का कार्यक्रम भी बना रहे हैं।

एक बात समझ लेनी चाहिए कि शराब का नशा स्मैक के नशे जितनी बुरी दुर्दशा चाहे न करता हो, परन्तु उसके द्वारा समाज और परिवारों की गिरावट और बर्बादी में कमी नहीं है। अभी स्मैक की बीमारी देहातों में पहुंचने लगी है, उसे भी साथ-साथ रोकना है, परन्तु व्यापक बीमारी तो हमारे देहात की शराब की बढ़ती हुई लत है। उस को समाप्त करना अत्यन्त आवश्यक है और दूसरे नशों को तो शुरू में ही समाप्त कर डालना चाहिए।

बैंक मैनेजर द्वारा आत्महत्या

(निज संवाददाता द्वारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सर्वहितकारी साप्ताहिक-पत्र के व्यवस्थापक श्री शेरसिंह के चाचा श्री ओम्प्रकाश कटारिया प्रबन्धक न्यू बैंक आफ इण्डिया की कलानौर शाखा ने बैंक कर्मचारियों तथा बैंक लाकर्ज नं० ६ जो कि श्री नरेन्द्रकुमार टेहरी बैंक कर्मचारी की माता श्रीमती रामप्यारी के नाम से था, के षड्यन्त्र तथा पुलिस के दुर्व्यवहार से तंग आकर ६ सितम्बर को प्रातःकाल किशनपुरा, रोहतक के कुयें में कूदकर आत्महत्या करली। उनकी आयु ४२ वर्ष थी। वे अपने पीछे विधवा धर्मपत्नी तथा ३ बच्चों को बेसहारा छोड़ गये हैं। उन्होंने आत्महत्या करने से पूर्व बैंक के कागज पर ४ पृष्ठों में आत्महत्या करने पर विवश होने का कारण लिखा है कि "जिन बैंक कर्मचारियों पर मैं विश्वास करता था। उन्होंने श्री नरेन्द्रकुमार टेहरी जो कि स्वयं बैंक कर्मचारी तथा बैंक लाकर्ज की मालिक श्रीमती रामप्यारी का पुत्र है के साथ मिलकर लाकर्ज से सोने के जेवर निकाल लिये और चोरी का आरोप मुझ पर लगा दिया। मेरे विरुद्ध कलानौर थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई और वहां मुझे प्रताडित तथा अपमानित किया गया। मैं निर्दोष हूं और इस षड्यन्त्र से बचाव करने के लिए मैं कहां से पुलिस को रिश्वत दूं, कहां से मंहगा वकील करूं। जब मैंने गुनाह नहीं किया तो ये सब किस लिए करूं।" सुनने में आया है कि थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाने तथा पुलिस से अपमानित करवाने में एक बड़े नेता का हाथ है। विधवा श्रीमती कांता कटारिया ने रोहतक के पुलिस अधीक्षक से अनु-रोध किया है कि अपराधियों को शीघ्र गिरफ्तार किया जावे।

परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके शोकाकुल परिवारजनों, रिश्तेदारों को इस दुःख को सहन करने का धैर्य प्रदान करे।

हां ! राजर्षि रणञ्जयसिंह

आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता स्वनामधन्य राजर्षि रणञ्जयसिंह जी का ४ अगस्त की अर्द्धरात्रि के उपरांत उनके अमेठी राजमहल में देहावसान होगया। वे इस समय ८७ वर्ष के थे। राजर्षि रणञ्जयसिंह जी मनुष्य रूप में देवता थे। ८७ वर्ष की इस आयु में भी राजा साहब में नवयुवकों से अधिक कार्यक्षमता थी और देश तथा समाज का कार्य करने की उद्दाम लालसा थी। मेरे द्वारा सम्पादित रश्मिरथी पत्रिका पर राजा साहब की सदैव से महान् कृपा रही है और उनका शुभाशीर्वाद सदैव इसे प्राप्त होता रहा है। राजा साहब अमेठी जैसी विशाल रियासत के जमींदार होते हुए भी अत्यधिक विनम्र, मृदुभाषी, क्षमाशील थे। उन जैसी विनम्रता तो आज के युग में अन्य किसी व्यक्ति में देखने को नहीं मिलती। वे १९२६ में केन्द्रीय धारा सभा के लिए चुने गये थे और तब से अनेकों बार लोकसभा व विधानसभा के सदस्य रहे, लेकिन आधुनिक नेताओं की कार्य व व्यवहार शैली से अलग। उन्होंने सदैव सत्य तथ्य व यथार्थ को प्राथमिकता दी। गोरक्षा, राष्ट्रभाषा आदि विषयों पर वे सत्तापक्ष में रहते हुए भी निर्भीक होकर बोलते थे और सदैव सत्य का ही पक्ष लेते थे। वे एक आदर्श राजनेता थे। उनका जीवन एक सन्त, तपस्वी, मनीषी, समर्पित कार्यकर्त्ता के ही रूप में बीता। वे आर्यसमाज जैसे राष्ट्रवादी आंदोलन के बचपन से ही कार्यकर्त्ता बन गये और अपने अनुज स्व० रणवीरसिंह जी के साथ बचपन से से समाज-सेवा में संलग्न होगये और अपने इस रूप को मृत्युपर्यन्त बनाये रखा। वे कहा करते थे कि पहले मैं आर्य हूं, उसके बाद और कुछ। उन्होंने समाज-सुधार के विभिन्न आंदोलन चलाये। वे दो बार आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान भी रहे। इस दौरान उन्होंने सारे प्रदेश का दौरा करके आर्यसमाज के आंदोलन को गति प्रदान की। इस आयु में अस्वस्थ रहते हुए भी वे निरन्तर आर्यसमाज के कार्यक्रमों में भाग लेते रहे।

अभी २१ जून, ८८ को एक वैदिक यज्ञ व सम्मेलन में सम्मिलित होने मेरे गांव पूरेदरियावलाल (वलीपुर) गये और अपनी ओजस्वी वाणी से हमें अन्तिम बार उद्बोधन किया। राजा साहब एक उच्चकोटि के कवि, लेखक, समाज-सुधारक व राजनेता थे। उन्हें देखकर लगता था कि यह महामानव प्रागैतिहासिक काल का ऋषि है। जिस की नैतिकता सच्चरित्रता, सेवा भावना, सदाशयता, स्पष्टवक्तृता धर्मनिष्ठा, सत्यप्रेम व मानवीयता असंदिग्ध है। शिक्षा के प्रसार में उनका योगदान कभी भी भुलाया नहीं जा सकेगा। प्राथमिक से लेकर स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना करने व उनके भवन-निर्माण तथा अन्य विकास के कार्यक्रमों में जिस सदाशयता से उन्होंने अपने खजाने का मुंह खोल दिया, वह अनुपमेय है। ऐसे महामानव की स्मृति को शत-शत प्रणाम। कोटिशः श्रद्धांजलि।

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

आर्यसमाज मैन बाजार, बल्लबगढ़ का उत्सव

आर्यसमाज मैन बाजार बल्लबगढ़ जि० फरीदाबाद का ४९वां वार्षिकोत्सव ८-९ अक्तूबर को समारोहपूर्वक अग्रवाल विद्यालय के प्रांगण में धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इससे पूर्व ३ अक्तूबर से पं. जैमिनि जी शास्त्री एम० ए० के वेदप्रवचन तथा म० बेधराज की मण्डली के प्रभावशाली भजन हुए।

उत्सव पर हरयाणा के विधायक श्री योगेश शर्मा तथा खेल एवं सांस्कृतिक मन्त्री, स्वामी अग्निवेश, प्रो० रत्नसिंह, प्रो० जयदेव आर्य, आचार्य सोनेराव, प्रो. चन्द्रप्रकाश सत्यार्थी, सुनील शास्त्री के व्याख्यान तथा सभा प्रचारक श्री भजनलाल आर्य के गायन हुए।

—सुरेशकुमार एडवोकेट मन्त्री

श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी का अनशन चालू

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने २ अक्तूबर से हिसार की नई कचहरी के सामने अनशन आरम्भ किया हुआ है। उनकी मांग है कि नलवा ग्राम में शराबियों तथा असामाजिक तत्वों द्वारा महात्मा गांधी की प्रतिमा तोड़नेवालों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जावे। वे इस सम्बन्ध में मुख्यमन्त्री तथा प्रधानमन्त्री आदि उच्च अधिकारियों को लिखित शिकायत कर चुके हैं, परन्तु अभी तक किसी की भी गिरफ्तारी नहीं की गई है।

श्री अत्तरसिंह जी का ११ अक्तूबर की सूचना के अनुसार १० किलो वजन कम हो चुका है। वे केवल फीके पानी का प्रयोग कर रहे हैं। उन्होंने कहा है कि जब तक अपराधियों को पकड़ा नहीं जाता, तब तक अनशन जारी रहेगा।

आर्यसमाज हांसी का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज हांसी का ३६वां वार्षिकोत्सव ७-८-९ अक्तूबर, ८८ को बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। २ से ६ अक्तूबर तक प्रो० रत्नसिंह जी गाजियाबादवालों द्वारा वेदप्रवचन हुए। उत्सव पर स्वा. जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती, ब्र० आर्यनरेश, आचार्य पं० सत्यप्रिय, पं० रविदत्त जी द्वारा ओजस्वी विचार वेद की शिक्षाओं पर रखे गये। देश, धर्म एवं समाज की उन्नति के लिए सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जन-चेतना जागृत की। शराब, दहेज, आपसी फूट, जाति-पाति के विरुद्ध एकजुट होकर संघर्ष करने पर बल दिया।

—राजेन्द्र आर्य उपमन्त्री

देवीदास आर्य का ज्ञानी जी द्वारा सम्मान

(वीर अर्जुन संवाददाता)

कानपुर, २२ सितम्बर (निस)। धर्मजाति की संकीर्णता को त्यागकर प्रत्येक हिन्दुस्तानी को चाहिए कि वह भारतीयता को अपनी पहचान बनाये। इन्सानी भाईचारा और मानवकल्याण ही सबसे बड़ा धर्म है। यही वेद, गीता, गुरु ग्रन्थ साहब और कुरान का सार है। हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सभी कौमें हिन्दुस्तान की औलाद हैं। इसलिए हमें अपने को भारतीय कहने में फख्र होना चाहिए। यह उद्गार देश के भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने वरिष्ठ पत्रकार समाज-सेवी और महिला उद्धारक श्री देवीदास आर्य के अभिनन्दन समारोह में उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये।

सिंधी धर्मशाला गोविन्द नगर में श्री आनन्दबोध जी सरस्वती (रामगोपाल शालवाले) की अध्यक्षता में आयोजित भव्य अभिनन्दन समारोह को सम्बोधित करते हुए ज्ञानी जी ने कहा कि आर्य जैसे समाज सेवी को पद्मश्री या पद्मभूषण जैसे अलंकारों से राज्य और देश की सरकारों को सम्मानित करना चाहिए, ताकि निर्भीक समाज-सेवा प्रोत्साहित होती रहे।

लगभग १० हजार नर-नारियों से भरे अभिनन्दन पण्डाल को सम्बोधित करते हुए भूतपूर्व राष्ट्रपति ने महिलाओं पर समाज द्वारा किये जारहे जुल्मों पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि सिर्फ दिल्ली में ही प्रतिवर्ष हजारों महिलायें दहेज की भेंट चढ़ जाती हैं। उन्होंने कहा कि महिलाओं पर जुल्म करनेवाले लोग यह भूल जाते हैं कि नारी मां, बहन और बेटी भी हैं।

तीन हजार से अधिक अपहृत कन्याओं और महिलाओं को गुण्डों के चंगुल से मुक्त करानेवाले देवीदास आर्य का शाल पहनाकर और महाभारत में गीता का अर्जुन को उपदेश दे रहे भगवान् श्रीकृष्ण के रथ का चिह्न भेंट करते हुए ज्ञानी जी ने कहा कि श्री आर्य ने समाज में उस वर्ग के उद्धार का काम किया है जो सदा से उपेक्षित रहा है।

भूतपूर्व राष्ट्रपति ने सरकारी अव्यवस्था पर चोट करते हुए कहा कि गंगा का प्रदूषण दूर करने के लिए तो हम करोड़ों रुपये खर्च करते चले जारहे हैं, लेकिन मानव समाज के प्रदूषण को दूर करने के लिए हम कोई भी प्रयास नहीं कर रहे हैं, बल्कि अश्लील साहित्य और फिल्मों के द्वारा हम समाज के चरित्र का हनन कर रहे हैं।

ज्ञानी जी ने राष्ट्रभाषा हिन्दी की चर्चा करते हुए कहा कि सरकार की कथनी और करनी इसी से बेनकाब हो जाती है कि हिन्दी के उत्थान के नाम पर हिन्दी सप्ताह मनाया जारहा है, लेकिन कितने मंत्री या अधिकारी हिन्दी में अपनी टिप्पणियां लिखते हैं। योगाभ्यास जो प्राचीन भारतीय संस्कृति की देन है का दूरदर्शन पर प्रदर्शन अंग्रेजी में किया जाता है।

वर्तमान व्यवस्था से भ्रमित ज्ञानी जी ने शायराना अंदाज में कहा कि "आसमान से गर फरिश्ते भी बुलाये जायेंगे, इस दौर में सच बोलेंगे तो वे भी मारे जायेंगे।"

देवीदास आर्य अभिनन्दन समारोह में देश के मूर्धन्य समाजसेवी उपस्थित थे।

इस अवसर पर अभिनन्दन स्मारिका के रूप में रचित "महान् महिला उद्धारक देवीदास आर्य" नामक पुस्तक का ज्ञानी जी ने विमोचन किया।

अभिनन्दन समारोह की ओर से ज्ञानी जी को स्वामी दयानन्द सरस्वती और गीता का उपदेश चित्र भेंट किया गया।

शराब पीना सामाजिक अभिशाप है।

यज्ञ एवं कन्या गुरुकुल नरेला की अपील

भाद्रपद पूर्णमासी रविवार को ग्राम समयपुर बादली में पं० गोवर्धन जी के यहां एक प्रीतियज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें कन्या गुरुकुल नरेला, गुरुकुल झज्जर, गुरुकुल गौतमनगर संस्थाओं के विद्यार्थी एवं कार्यकर्त्ताओं के अतिरिक्त अन्य बहुत से निमन्त्रित सज्जन जिनमें विशेष रूप से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री श्री वेदव्रत जी भी सम्मिलित थे।

आचार्या सुशीला, आचार्य विजयपाल जी एवं श्री वैद्य कर्मवीर जी मन्त्री कन्या गुरुकुल के प्रवचन हुए। श्री वैद्य जी ने अपने प्रवचन में कन्या गुरुकुल की कार्यकारिणी के रचनात्मक कार्यों की स्वीकृति की वर्षा करते हुए बताया कि गुरुकुल में १००×१०० फुट के एक विशाल तालाब का निर्माण किया जारहा है। जिसकी लागत ५ लाख रुपये आयेगी। यज्ञवेदी भी छोटी पड़ गई है, इसे ५०० ब्रह्मचारिणियों के बैठने योग्य विस्तृत किया जायेगा। गुरुकुल में एक छात्रावास का भी निर्माण किया जारहा है, जो २५ लाख रुपये में बनकर तैयार हो सकेगा। इस कार्य हेतु गुरुकुल की कन्याओं के अभिभावकों से भी प्रार्थना की गई है कि वे न्यून से न्यून ११००) स्वयं दे तथा दूसरों से भी सामर्थ्यानुसार अधिक से अधिक दिलवाये। इसी अपील पर मुख्ययजमान श्री पं० गोवर्धन जी ने तुरन्त १२०१) प्रदान किये और उसी समय वहां उपस्थित अन्य सज्जनों ने भी ५ से लेकर १०० रुपये तक दान दिया। जो लगभग ४००) हुआ। इसी आधार पर सबसे निवेदन है कि गुरुकुल को अधिक से अधिक दानराशि देकर सहायता करें।

—आचार्या सुशीला आर्या

मन का रावण आज जलाओ

असुर वृत्तियों का धरती पर, होता है ताण्डव नर्तन।
युग के रावण का होता है, वसुन्धरा पर अभिनन्दन॥

एक नहीं, लाखों सीताओं की लज्जा लुटती है आज।
प्रतिदिन भू पर मातृ-शक्ति की धूल मिलाई जाती लाज।

घोर अनाचारों का भू पर, फैला है विस्तृत साम्राज्य।
अत्याचारों को बल मिलता, अन्यायों का छाया राज्य॥

पाखण्डों का राक्षस दल है, निर्भय होकर बढ़ता जाता।
मानवता के पुण्य गेह में सीना ताने सेंध लगाता॥

आज राम के वंशज सारे, गहरी निद्रा में सोते हैं।
रावण के अनुयायी सारे, बीज अनय के बोते हैं॥

उठो आर्यो! निर्भय होकर, दानवता की वृत्ति भगाओ।
लेकर नवसंकल्प हृदय में, मन का रावण आज जलाओ॥

—राधेश्याम आर्य, विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

हरयाणा ग्राम पंचायत चुनाव में विजयी शराबबन्दी समर्थक सरपंचों की सूची

गतांक से आगे—

१२० श्री सत्यपाल आर्य सरपंच ग्राम डाहोला जि० जींद
१२१. „ विजयसिंह आर्य „ „ चूहड़पुर „
१२२. „ भक्तराम „ „ अमरहेड़ी „

(क्रमशः)

आर्यसमाज तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने निकट के ग्रामों के उन सरपंचों के नाम जो शराब का सेवन नहीं करते हैं, लिखकर शीघ्र भेजने का कष्ट करें, ताकि उनके नाम इस सूची में प्रकाशित हो सकें।

—सम्पादक

गाय के गोबर में रोगनाशक एवं विषनाशक शक्ति

गाय के गोबर में लक्ष्मी का निवास है। ऐसा हमारे शास्त्र बताते हैं, यह कीटनाशक, रोगनाशक व विषनाशक है यह हम लोग यानि बुजुर्ग लोग जानते हैं, पर आज के विज्ञान ने एक और नई खोज की है कि जो घर गाय के गोबर से लिपा होगा, जहां गाय के घी का दीपक जलता होगा, यज्ञ-हवन होता होगा, वहां पर आज के महाविनाशकारी बमों का असर यानि रेडियोधर्मिता एवं अणुकिरणों का असर नहीं होगा, यह सिद्ध हो चुका है। इसलिए पाश्चात्य देशों में मास्को से बने मकानों पर वहां के लोग मृत्यु के भय से गाय के गोबर का लेपन कर रहे हैं। याद रहे यह शक्ति भैंस के गोबर में नहीं है। जबकि दुनियां की ५० प्रतिशत भैंसें यानी ६॥ करोड़ भैंसें भारत में हैं।

गाय के गोबर में मेन्थोल, अमोनिया, फीनोल, इंडोल फार्मलीन, फास्फोरिक एसिड, चूना, मेगनेशियम, शिलिका, नाइट्रोजन आदि घटक पाये जाते हैं। गाय के गोबर में बेक्टीरिया फेजिज अर्थात् रोग के कीटाणुओं को नष्ट करने का एक प्रकार का तत्त्व है।

इटली के प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो० जी० ई० वीगेड ने गोबर पर कई बार प्रयोग करके सिद्ध किया है कि ताजे गोबर से तपेदिक (क्षय) और मलेरिया के जन्तु तुरन्त मर जाते हैं, क्षय रोग होते ही रोगी को गोबर के पास यानि गोशाला में सोना चाहिए। गाय के गोबर की गन्ध से ही जन्तु मर जाते हैं।

गोबर के इस अलौकिक गुण के कारण इटली के अधिकांश सेनिटोरियो में गाय के गोबर का ही उपयोग किया जाता है। हैजा या अतिसार के रोगी को ताजे पानी में ताजा गोबर घोलकर पिलाते हैं, फोड़े फुन्सी पर गोबर का लेप करने से ठीक हो जाते हैं, जहां तक वैज्ञानिकों का कहना है कि गोबर से बढ़कर जीवाणुनाशक कोई दूसरा उपयुक्त द्रव्य नहीं है, पर इतना अवश्य ध्यान में रहे कि गोबर उस गाय का हो जो निरोग है और उत्तम आहार विहार करती हो। जर्सी गायों के गोबर में यह शक्ति नहीं है, क्योंकि भारत में स्थित जर्सी गायों को यहां का हवामान अनुकूल नहीं आता, इसलिए वह गाय रोगी रहती हैं। भारतीय गायों के गोबर में यह शक्ति मौजूद है।

१८९७ में लाहौर (पाकिस्तान) में प्लेग फैला तो डाक्टरों ने जांच की रिपोर्ट में बताया कि ग्वालों के मकानों मुथा मुहल्लों में प्लेग नहीं फैल पाया। अनुसंधान करने पर पता चला गाय के गोबर की गन्ध प्लेग के कीटाणुओं का सर्वनाश करती है। गाय की त्वचा के छिद्रों से भी ऐसी वायु निकलती है जो रोगों के कीटाणुओं को तथा जीर्ण रोगों को नष्ट करती है।

दांत की दुर्गन्ध जन्तु और मसूड़े के दर्द पर गाय के गोबर की राख का मंजन करने से ठीक हो जाता है। इसके गोबर को जलायें, जब धुआं निकल जाये, फिर पानी डालकर बुझा दें, फिर किसी बर्तन से ढक दें, उसके बाद कपड़े से छानकर पाउडर तैयार हो जाता है। इस पाउडर से मंजन करने पर दांतों के सब रोग दूर हो जाते हैं। इस पाउडर को अनाज में रखने से अनाज पर कीड़ा नहीं लगता। यह पाउडर कृमि नाशक और शीत निवारक होता है।

मृत गर्भ बाहर निकालने के लिए गोबर का रस ७ तोला गाय के दूध में मिलाकर महिला को पिलाना चाहिए। खुजली के लिए गाय का गोबर शरीर पर लगाकर गर्म जल से स्नान करें। ताजा गोबर जले हुए अंग पर लगाने से जलन व पीड़ा शांत होती है। चाकू-ब्लेड से कटने पर गोबर लगादे, रक्त प्रवाह बन्द हो जायेगा।

गाय कितना उपयोगी पशु है, फिर भी आज उसकी हत्या हो रही हैं। हम सब मिलकर उसे बचाने का प्रयत्न करें। उसके दूध, घी, गोबर, मूत्र का उपयोग करके रोगमुक्त हो सकते हैं।

—प्रकाशचन्द्र जोशी
संयोजक अ० भा० गोरक्षा प्रचार पदयात्रा

स्वामी ब्रह्मानन्द आश्रम सफीदों का उत्सव

दिनांक १-२ अक्तूबर को स्वामी ब्रह्मानन्द आश्रम सफीदों जि० जींद में जिसके संचालक हरयाणा के आधुनिक भीम के नाम से प्रसिद्ध ब्र० रामस्वरूप हैं, बड़े धूमधाम से मनाया गया। जिसकी शोभा-यात्रा में आसपास के कई हजार किसान नरनारियों व कई सौ ट्रेक्टरों ने भाग लिया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रिंसिपल लालसिंह, श्री रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता, श्री कपिलदेव शास्त्री तथा श्री सुखदेव शास्त्री, पं० चिरंजीलाल, श्री मुरारीलाल बेचैन भजनोपदेशक, मूलचन्द जैन, प्रो० सम्पतसिंह गृहमन्त्री हरयाणा एवं महाशय बेगराज जी महामन्त्री लोकदल हरयाणा इत्यादि नेताओं ने भाग लिया। ब्रह्मचारी जी की कार्यकुशलता एवं पवित्र जीवन को देखते हुए इलाके की जनता तथा आर्यजगत् के कार्यकर्त्ताओं ने ब्र० श्री रामस्वरूप जी को ३१ मार्च को १॥ लाख की जीप भेंट करने का निश्चय किया। यह जानकारी आश्रम के कोषाध्यक्ष श्री बचनसिंह आर्य ने दी।

ग्राम सुखराली गुडगावां में शराब के ठेके पर १६ अक्तूबर को धरना शुरु

आपको सूचित किया जाता है कि ग्राम सुखराली नये बाईपास पर इफ्को के सामने शराब ठेके पर १६ अक्तूबर रविवार को प्रातः ९ बजे धरना दिया जारहा है। जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह व आर्य वीरदल हरयाणा के कर्मठ कार्यकर्त्ता भाषण व सहयोग हेतु पधार रहे हैं। स्वामी ओमानन्द जी महाराज भी धरने पर पधार रहे हैं।

संयोजक—महेन्द्र शास्त्री
शराबबन्दी संघर्ष समिति हरयाणा

हिसार दादा गणेशीलाल मार्ग से शराब के ठेके हटाने की मांग

दिनांक २ अक्तूबर, ८८ को गांधी जन्म पर हिसार में गांधी अध्ययन केन्द्र से प्रातः ५ बजे प्रभातफेरी निकाली। भारत माता की जय, महात्मा गांधी अमर रहे, शराब के ठेके बन्द करो, गोमाता की जय, हिन्दू एकता जिन्दाबाद आदि नारे लगाये तथा बाद में सर्वोदय भवन में एक सभा हुई। जिसमें गांधी जी के कार्यों पर प्रकाश डाला गया।

गत दिसम्बर, ८७ को बालसमन्द रोड को दादा गणेशीलाल मार्ग घोषित कर पट्टी लगाई थी। इस मार्ग में चार शराब के ठेके हैं, उन्हें बन्द करवाने बारे सर्वोदय नेता श्री नारायण वर्मा ने मुख्यमन्त्री को पत्र लिखकर इस मार्ग से शराब के ठेके हटाने की मांग की है। अब इस मार्ग पर यह ठेके हटाने बारे गांधीवादी, सर्वोदय तथा अन्य प्रतिष्ठित आदमियों में काफी रोष है।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, सभा उपदेशक

शोक समाचार

श्री दयाचन्द सुपुत्र गोपीराम किसरेंटी (रोहतक) का ४-१०-८८ को अचानक हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास होगया है। वे कर्मठ आर्यसमाज सेवक थे। इनके असामयिक निधन से परिवारजनों एवं इष्ट बन्धुजनों को गहरा आघात हुआ है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह शोक संतप्त परिवार को इस असह्य दुःख को सहने का सामर्थ्य प्रदान करे एव दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

—रामकुमार शास्त्री

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ की गोष्ठी

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ की द्वितीय गोष्ठी दिनांक १-२ अक्तूबर को आर्यसमाज सेक्टर १६ के सभा भवन में सम्पन्न हुई। इस की अध्यक्षता प्रो० शेरसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को तथा डा० भवानीलाल भारतीय ने गोष्ठी का संचालन किया। वेद के सार्वभौम स्वरूप पर हिन्दी अंग्रेजी तथा संस्कृत में ११ निबन्ध पढ़े गये। प्रथम गोष्ठी में डा० भवानीलाल भारतीय के अतिरिक्त गुरुकुल कांगड़ी के वेद विभाग के प्रवाचक डा० सत्यव्रत राजेश, दयानन्द पीठ पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ की डा० वसुन्धरा रिहानी, गुरुकुल कांगड़ी के संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० निगम शर्मा तथा दिल्ली विश्व विद्यालय के प्रो० कृष्णलाल ने निबन्धवाचन किया।

गोष्ठी के द्वितीय सत्र में सर्वश्री नरसिंह पण्डा (पंजाब विश्व विद्यालय), क्षितीश वेदालंकार (सम्पादक आर्यजगत्), डा० प्रशस्यमित्र शास्त्री (रायबरेली), डा० ब्रह्ममित्र अवस्थी (इलाहाबाद), डा० बी० धवन (चण्डीगढ़) तथा स्वामी सत्यप्रकाश जी ने अपने निबन्धों का वाचन किया। गोष्ठी में आगन्तुक महानुभावों के निवासादि की सुव्यवस्था डी० ए० वी० कालेज के प्राचार्य कृष्णसिंह जी आर्य तथा आर्यसमाज सेक्टर १६ के मन्त्री वीरेन्द्र कपूर ने अत्यन्त मनोयोगपूर्वक की। श्रीमती शोभा आर्या ने स्वागताध्यक्ष के रूप में स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। अगली गोष्ठी ऋषि-मेले के अवसर पर अजमेर में होगी।

—भवानीलाल भारतीय

ईश्वर एक है, परन्तु नाम अनेकों हैं

—हरिश्चन्द्र लाम्बा, चरखी दादरी

प्रिय पाठको! ईश्वर एक है, अनेक नहीं। परन्तु ईश्वर के गुण, कर्म एवं स्वभाव इतने अधिक हैं कि हम उनके आधार पर उसे अनेकों नामों से पुकारते हैं। लेकिन वास्तव में यह सब नाम एक ईश्वर के हैं। गुण, कर्म, स्वभाव, सम्बन्ध तथा पद अनुसार कई नाम हो जाते हैं। जैसे कि एक ही व्यक्ति सम्बन्धों अनुसार पिता जी, चाचा जी, ताऊ जी, मामा जी, नाना जी आदि नाते से जाना जाता है और वही व्यक्ति व्यवसाय अनुसार वकील, डाक्टर, अध्यापक, लाला जी आदि सम्बन्धों से जाना जाता है, लेकिन उसका मुख्य नाम तो एक ही होता है। ठीक इसी प्रकार संसार की रचना करनेवाला होने से उस ईश्वर को 'ब्रह्मा', सब में व्यापक होने और सबकी पालना करनेवाला होने से उसी को 'विष्णु', सबका कल्याण करनेवाला होने से उसे 'शिव', दुष्ट पापियों को दण्ड देनेवाला होने के कारण, जो रुलानेवाला होता है उसे 'रुद्र'। माता पिता आदि देवों का भी देव होने के कारण अर्थात् होने से 'महादेव' कहलाते हैं।

उपरोक्त के अनुसार गुण कर्म तथा स्वभाव सम्बन्ध आदि होने से अनेक नाम होते हैं, लेकिन आदमी एक है। इसी प्रकार ईश्वर एक है और उसका मुख्य नाम 'ओ३म्' है। इसे वेदों में भी लिखा है 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' अर्थात् उस एक ही परमात्मा ओ३म् को विद्वज्जन प्रकरण और गुण कर्म स्वभाव के अनुसार अनेक नामों से पुकारा जाता है।

आवश्यकता है

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा में उपदेशक विद्यालय के लिए एक व्याकरणाचार्य एवं साहित्याचार्य की विद्यार्थियों को पढ़ाने हेतु आवश्यकता है। प्रार्थना-पत्र निम्न पते पर भिजवाने की कृपा करें-

—रामनाथ सहगल, मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा
मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

फिजी की नई सरकार द्वारा हिन्दुओं को ईसाई बनाने का कुचक्र

दिल्ली ३ अक्तूबर: कर्नल राबुका ने फिजी में सैनिक आधार पर नई सरकार का गठन करके संविधान में साम्प्रदायिक आधार पर अनेक परिवर्तन किये हैं, जिनमें भारतीय मूल के बहुसंख्यक जनसमुदाय को ईसाई बनाने का कुचक्र चलाया गया है।

उक्त घटना पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने बताया कि फिजी में भारतीय मूल के ६ लाख ५० हजार लोग रहते हैं जो फिजी की जनसंख्या के अनुपात से बहुसंख्यक हैं। किन्तु कर्नल राबुका ने नये संविधान में साम्प्रदायिक विष घोलकर यह घोषणा की है कि फिजी में यदि भारतीयों का रहना है तो ईसाई बनकर ही रहना होगा।

स्वामी जी ने कहा कि आज के युग में तानाशाही नहीं चल सकती है, क्योंकि भारतीय लोगों से ही फिजी का विकास हुआ है। उन्होंने अपना खून-पसीना बहाकर वहां भूमि सुधार, खेतीबाड़ी, व्यापार तथा उद्योग धन्धों आदि सब पर अपनी कड़ी मेहनत की जबरदस्त छाप छोड़ी है।

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने फिजी के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सर्वप्रथम १५ मई, १८७९ को लियोनीदास नामक पानी के जहाज से अंग्रेजी सरकार ने ४६३ भारतीय मजदूरों को फिजी में उतारा था। उस समय वहां किसी प्रकार का विकास नहीं था और न सड़कें व खेतीबाड़ी का ही प्रबन्ध था। उद्योग धन्धों की तो चर्चा करना भी व्यर्थ है। इसके बाद भारी संख्या में लोग वहां गये और उस छोटे से देश को समृद्धि की ऊंचाइयों तक पहुंचा दिया।

आर्यसमाज ने फिजी में हिन्दी और भारतीय भाषाओं का जोरदार प्रचार किया। कई समाज मन्दिर व स्कूल खोले गये। हिन्दू जनता ने भी अपने अनेक मन्दिर व धर्म-स्थानों की स्थापना की। कर्नल राबुका के सत्ता सम्भालने से पूर्व भी पिछली सरकार ने भारतीय लोगों को उनकी जनसंख्या के आधार पर पूर्ण अधिकार दे रखे थे, किन्तु राबुका की सैनिक सरकार ने पदभार सम्भालने के पश्चात् संविधान में आमूलचूल परिवर्तन करके भारतीय मूल के लोगों को सब प्रकार की सुविधाओं से वंचित करने का षड्यन्त्र रचा और बहुसंख्यक भारतीय समुदाय को ईसाई बनने का आदेश दिया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने यह रहस्योद्घाटन किया कि फिजी की पूर्व सरकार में ३ हजार फौजी जवान थे, जो अब बढ़ाकर ५ हजार कर दिये गये हैं। उन्होंने यह भी बताया कि पिछले दिनों कुछ हिन्दू युवकों को लेकर वह प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी के निजी सलाहकार श्री आनन्द शर्मा से मिले थे।

स्वामी जी ने भारत सरकार से मांग की है कि—

१—भारतीय मूल के निवासियों के धर्म की रक्षा के लिए फिजी सरकार पर तुरन्त दबाव डाला जावे तथा—

२—फिजी के इस साम्प्रदायिक षड्यन्त्र के मामले को सुरक्षा परिषद् में उठाया जावे।

श्री स्वामी जी ने प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी और गृहमन्त्री श्री बूटासिंह को भी विशेष पत्र लिखकर भारतीय मूल के लोगों के धर्म की रक्षा के लिए तुरन्त उचित कार्रवाई करने का अनुरोध किया है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

शराब मानवसमाज का

एक शत्रु है।

वैदिक संस्थान नजीबाबाद द्वारा उत्तरांचल में राष्ट्र और धर्म-रक्षा अभियान

वैदिक संस्थान नजीबाबाद द्वारा संचालित राष्ट्र और धर्म-रक्षा अभियान के अन्तर्गत आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध संन्यासी श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद गत मई मास में टिहरी तथा उत्तरकाशी जनपदों में प्रचार-यात्रा पर गये थे और अब जनपद पौड़ी (गढ़वाल) की यात्रा पर जारहे हैं।

स्वामी जी की इस यात्रा के पड़ाव निम्न प्रकार रहेंगे। ३-४ अक्तूबर सतपुली, ५-६ अक्तूबर पौड़ी, ७-८ अक्तूबर रुद्रप्रयाग, रुद्रप्रयाग से वापसी में पुनः ९ अक्तूबर को पौड़ी, १०-११ अक्तूबर को लैंसडोन, १२-१३ अक्तूबर को दुगड्डा, १४-१५ अक्तूबर को डाडामण्डी, १६ अक्तूबर को द्वार, १७ अक्तूबर को देवरामपुर, १८ को वापिस नजीबाबाद लौटेंगे।

इस यात्रा में बिना मूल्य वितरण के लिए सत्यार्थप्रकाश, वर्ण जन्म से नहीं अपितु गुण कर्म से, हिन्दू नहीं आर्य, आर्यसमाज क्या है? शराबबन्दी क्यों आवश्यक है आदि पुस्तकों के अतिरिक्त दीवारों पर लगाये जाने के लिए महर्षि मनु, महर्षि दयानन्द, महात्मा बुद्ध तथा महात्मा गांधी के विचारोंवाले जन्म जातीयता तथा छुआछूत विरोधी बड़े-बड़े प्रचार-पोस्टर भी स्वामी जी के साथ होंगे।

कालिजों में भाषण, विचार गोष्ठियां तथा साहित्य वितरण द्वारा आर्यसमाज की विचारधारा को सर्वसाधारण तक पहुंचा कर सत्य सनातन वैदिकधर्म तथा अराष्ट्रीय ईसाई षड्यन्त्र से राष्ट्र की रक्षा करना इन राष्ट्र तथा धर्म-रक्षा अभियान यात्राओं का उद्देश्य है।

—मेघराज आर्य, मन्त्री वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उत्तरप्रदेश

शोक सन्देश

श्री पूनमचन्द जी आर्य उपप्रधान परोपकारिणी सभा का असामयिक निधन आर्यसमाज को एक अपूरणीय क्षति है। वे अत्यन्त कर्मठ, सिद्धांतनिष्ठ तथा लगनशील व्यक्ति थे। स्वामी दयानन्द की निर्वाण शताब्दी तथा आर्यसमाज कलकत्ता की स्थापना शताब्दी के आयोजनों को सफल बनाने में उन्होंने महान् पुरुषार्थ किया था। उनके दिवंगत होने से आर्यजगत् में जो रिक्तता उत्पन्न हुई है, उसका पूरा किया जाना कठिन है।

—भवानीलाल भारतीय, संयुक्तमन्त्री परोपकारिणी सभा

स्मैक का मतलब

मौत है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४) रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 2325 रजि० नं० P/RTK
पुष्टि संख्या १,९६,०८,५३,०८९



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री
३० आश्विन २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्क ४५, २१ अक्तूबर, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश मे ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

क्या इतिहास पुराणादि वेद हैं ?

—पं० धर्मदेव "मनीषी" वेदतीर्थ, गुरुकुल कालवा

प्रश्न—वेद किन का नाम है ?

उत्तर—मन्त्र संहिताओं का।

प्रश्न—जो कात्यायन ऋषि ने कहा है कि "मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्" मन्त्र और ब्राह्मण ग्रन्थों का नाम वेद है, फिर ब्राह्मण भाग का भी वेदों में ग्रहण आप लोग क्यों नहीं करते हैं ?

उत्तर—ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं हो सकते, क्योंकि उन्हीं का नाम इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा और नाराशंसी भी है। वे ईश्वरोक्त नहीं हैं, किन्तु महर्षि लोगों के किये वेदों के व्याख्यान हैं। एक कात्यायन को छोड़के किसी अन्य ऋषि ने उनके वेद होने में साक्षी नहीं दी है और वे देहधारी पुरुषों के बनाये हैं। इन हेतुओं से ब्राह्मण ग्रंथों की वेद संज्ञा नहीं हो सकती और मन्त्र संहिताओं का वेद नाम इसलिए है कि ईश्वर रचित और सब विद्याओं का मूल हैं।

प्रश्न—जैसे ऐतरेय आदि ब्राह्मण ग्रन्थों में याज्ञवल्क्य, मैत्रेयी, गार्गी और जनक आदि के इतिहास लिखे हैं वैसे ही—

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्॥
यजु० अ० ३, मं० ६२

इत्यादि वेदों में भी पाये जाते हैं। इससे मन्त्र और ब्राह्मण भाग ये दोनों बराबर होते हैं। फिर ब्राह्मण ग्रंथों को वेदों में क्यों नहीं मानते हो ?

उत्तर—ऐसा भ्रम मत करो, क्योंकि जमदग्नि और कश्यप ये नाम देहधारी मनुष्यों के नहीं हैं। इसका प्रमाण शतपथ ब्राह्मण में लिखा है—

"चक्षुर्वै जमदग्निर्ऋषिर्यदेनेन जगत्पश्यत्यथो मनुते तस्माच्चक्षुर्जमदग्निर्ऋषिः॥" शतपथ कांड ८, अ० १

'कश्यपो वै कूर्मः प्राणो वै कूर्मः।' श० का० ७, अ० ५

चक्षु का नाम जमदग्नि और प्राण का नाम कश्यप है। इस कारण से यहां प्राण से अन्तःकरण और आंख से सब इन्द्रियों का ग्रहण करना चाहिये। अर्थात् जिनसे जगत् के सब जीव बाहर और भीतर देखते हैं।

(त्र्यायुषं जमदग्नेः) सो इस मन्त्र से ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिए कि—हे जगदीश्वर ! आपके अनुग्रह से हमारे प्राण आदि अन्तःकरण और आंख आदि सब इन्द्रियों की (३००) तीन सौ वर्ष तक उमर बनी रहे। (यद्देवेषु०) सो जैसी विद्वानों के बीच में विद्यादि शुभ गुण और आनन्दयुक्त उमर होती है, (तन्नो अस्तु) वैसी हो हम लोगों की भी हो तथा 'त्र्यायुषं जमदग्ने' इत्यादि उपदेश से यह भी जाना जाता है कि मनुष्य ब्रह्मचर्यादि उत्तम नियमों से त्रिगुण चतुर्गुण आयु कर सकता है, अर्थात् (४००) चार सौ वर्ष तक भी सुखपूर्वक जी सकता है।

इससे यह सिद्ध हुआ कि वेदों में सत्य अर्थ के वाचक शब्दों से सत्यविद्याओं का प्रकाश किया है, लौकिक इतिहासों का नहीं। इससे जो सायणाचार्यादि लोगों ने अपनी-अपनी टीकाओं में, वेदों में जहां-तहां इतिहास वर्णन किये हैं, वे सब मिथ्या हैं।

प्रश्न—जहां-जहां ब्राह्मण और सूत्र ग्रन्थों में—यद् ब्राह्मणानीतिहासान्पुराणानि कल्पान् गाथा नाराशंसीः' इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा, नाराशंसी इत्यादि वचन देखने में आते हैं तथा अथर्ववेद में भी इतिहास पुराणादि नामों का लेख है। इस हेतु से ब्राह्मण ग्रन्थों से भिन्न ब्रह्मवैवर्त, श्रीमद्भागवत, महाभारतादि का ग्रहण इतिहास, पुराणादि नामों से क्यों नहीं करते हो ?

उत्तर—इनके ग्रहण में कोई भी प्रमाण नहीं है। क्योंकि उनमें मतों के परस्पर विरोध और लड़ाई आदि की असम्भव मिथ्या कथा अपने-अपने मत के अनुसार लोगों ने लिख रखी है। इससे इतिहास और पुराणादि नामों से इनका ग्रहण करना किसी मनुष्य को उचित नहीं। जो ब्राह्मण ग्रन्थों में 'देवासुराः संयत्ता आसन्'। तैत्तिरीय सं १।५।१।१ अर्थात् देव विद्वान् और असुर मूर्ख ये दोनों युद्ध करने को तत्पर हुए थे इत्यादि कथाओं का नाम इतिहास है। "सदेव सोम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम्'। छांदोग्योपनिषद् प्रपा. ६, ख० २, मं० १ इत्यादि अर्थात् जिसमें जगत् की उत्पत्ति आदि का वर्णन है, उस ब्राह्मण भाग का नाम पुराण है। इषे त्वोर्जे त्वेति ......'। श० का० १, अ० ७। जो वेदमन्त्रों के अर्थ ... के सामर्थ्य का कथन किया है, उसका नाम 'कल्प' है। इसी प्रकार जैसे शतपथ ब्राह्मण में याज्ञवल्क्य, जनक, गार्गी, मैत्रेयी आदि की कथाओं का नाम 'गाथा' है और 'नराशंसो यज्ञ इति कवयो नरा अस्मिन्नासीनाः शंसन्त्यग्निरिति शाकपूणिर्नरैः प्रशस्यो भवति'। निरुक्त अ० ८, ख० ६। जिनमें नर अर्थात् मनुष्य लोगों ने ईश्वर, धर्म आदि पदार्थविद्याओं और मनुष्यों की प्रशंसा की है उनको 'नाराशंसी' कहते हैं।

(ब्राह्मणानीतिहासान्०) इस वचन में 'ब्राह्मणादि संज्ञी और इतिहासादि संज्ञा हैं अर्थात् ब्राह्मण ग्रन्थों का नाम इतिहास, पुराण, कल्प गाथा और नाराशंसी है। सो ब्राह्मण और निरुक्तादि ग्रंथो में जो जो जैसी-जैसी कथा लिखी हैं, उन्हीं का इतिहासादि से ग्रहण करना चाहिये, अन्य का नहीं।

(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पर आधारित)

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

चेतावनी एवं खतरे की घण्टी

—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

गतांक से आगे—

इंग्लैंड के जगद्विख्यात प्रधानमन्त्री ग्लेडस्टोन का कहना है—'शराब कितनी ही थोडी मात्रा में क्यों न पी जाये, वह मानसिक सन्तुलन को खराब कर देती है, क्योंकि वह दिमाग के स्नायु-केन्द्रों को शून्य कर देती है, जिससे बुद्धि की भले-बुरे के बोध की शक्ति जाती रहती है। शराब की लानत युद्ध, महामारी तथा दुर्भिक्ष—इन तीनों विपदाओं से अधिक भयंकर है, क्योंकि इसकी तबाही का क्रम नसलों तक जारी रहता है।

शराब के आते ही परिवार का धन-वैभव और उसकी सुख-शांति सदा के लिए विदा हो जाते हैं। शराबी की पत्नी को तो असह्य कष्ट झेलने पड़ते हैं। अत्यधिक अपमानित और प्रताड़ित होनेवाली ऐसी स्त्रियों को अपने बच्चों का पेट पालने के लिए अनैतिक कार्यों तक में प्रवृत्त होना पड़ जाता है और कभी-कभी आत्महत्या तक करने को विवश होना पड़ता है। शराबी पति प्राय: देर रात गये घर पहुँचते हैं और दिनभर की हारी-थकी पत्नियों के सामने अपनी मांगों की लिस्ट रख देते हैं। किसी भी बात के लिए इंकार होने पर घर में कलह और मारपीट होती है। फिर घर के बालक ही नहीं, पड़ोसी तक आतंकित हो उठते हैं। पत्नी बेचारी पड़ोसियों की दृष्टि में हेय बन जाती है। जब रोटी-रोजी कमाने और रक्षा करनेवाला ही पाशविक अत्याचार करे तो पत्नी और बच्चों को कहां आश्रय मिलेगा।

कैकेय देश के राजा अश्वपति ने बड़े गर्व के साथ घोषणा की थी कि क्योंकि मेरे राज्य में कोई शराबी नहीं है, इसलिए न यहां कोई चोर है, न कोई बेईमान है, न कोई वेश्या है और न कोई व्यभिचारी है। इसका मतलब है कि यदि हम अपने देश को भी वैसा बनाना चाहते हैं तो हमें शराब को धक्का देना होगा। इसीलिए महात्मा गांधी ने कहा था कि "मैं शराब को चोरी, यहां तक कि वेश्यावृत्ति से भी अधिक बुरा समझता हूं, क्योंकि इन दोनों बुराइयों की जननी शराब ही तो है। जो राष्ट्र शराब की आदत का शिकार है, उसका विनाश अवश्यंभावी है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस बुराई के कारण कितने ही साम्राज्य मिट्टी में मिल गये। जिस यादव जाति में श्रीकृष्ण जैसे योगी और पराक्रमी पुरुष ने जन्म लिया, इस बुराई के कारण उसका कृष्ण की आंखों के सामने ही सर्वनाश होगया। रोमन साम्राज्य के पतन का भी सबसे बड़ा कारण मद्यपान ही था।"

शराब की समस्या का समाधान सामान्य प्रयास से नहीं हो सकता। किसी भी उदार नीति से इस प्रचण्ड व्याधि को दूर नहीं किया जा सकता। पूर्ण नशाबन्दी के अतिरिक्त अन्य किसी भी उपाय से इससे छुटकारा नहीं पाया जा सकता। जब तक शराब के लाइसेंस शुदा अड्डे ठेके कायम रहेंगे, तब तक समाज-सेवी संस्थाओं द्वारा किये गये सभी प्रयास निष्फल सिद्ध होंगे। इसलिए गांधी जी ने कहा था—

"यदि मैं एक घण्टे के लिए सम्पूर्ण भारत का तानाशाह बन जाऊं तो मैं पहला काम यह करूंगा कि किसी प्रकार का मुआवजा दिये बिना सब दूकानों को बन्द कर दूंगा और ताड़ी के तमाम पेड़ों को जड़ से उखाड़कर नष्ट कर दूंगा।"

आबकारी से होनेवाली आय के पैसे से होनेवाले कल्याणकारी कार्यों पर टिप्पणी करते हुए गांधी जी ने कहा था—

"हजारों लोगों के शराबी बनने के स्थान पर मैं भारत को कंगाल देखना पसन्द करूंगा। यदि सुरापान से छुटकारा दिलाने के लिए भारत को अशिक्षित रखना पड़ेगा तो मुझे यह स्वीकार होगा।"

गांधी जी को विश्वास था कि जिस दिन भारत स्वतन्त्र होगा, उसी दिन—

१—गोहत्या सर्वथा बन्द हो जायेगी।

२—शराब सदा के लिए विदा हो जायेगी।

३—हिन्दी राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो जायेगी।

देश का दुर्भाग्य है कि ४० वर्ष से भी अधिक बीत जाने पर भी स्वतन्त्र भारत में इनमें से एक भी बात नहीं हो पाई।

मद्यनिषेध के प्रसंग में यह तर्क बे सिर पैर का है कि मद्यनिषेध से अवैध शराब को बढ़ावा मिलता है। कानून होने के बावजूद खाद्य पदार्थों में मिलावट होती है, नकली दवाइयां बनती हैं, चोरियां होती हैं, डाके पड़ते हैं, कतल होते हैं, आये दिन बलात्कार और आत्महत्या की घटनायें होती हैं, टैक्सों की चोरियां होती हैं, रिश्वत का बाजार गर्म है, बिना टिकट रेल में यात्रा होती है, भ्रष्टाचार नये-नये रूप धारण करके उभर रहा है। जब कानूनों के होने पर भी यह सब हो रहा है तो ये कानून रद्द क्यों न कर दिये जायें? मैं समझता हूं कि इस बात से कोई भी सहमत न होगा। कानून के होते हुए भी यदि उनका उल्लंघन होता है तो इसमें कानून का दोष नहीं है। दोष है कानून को ठीक तरह से लागू न होने में। उसे दूर करने की कोशिश होनी चाहिए।

आर्यवीरो बिल्कुल मत घबराना

ले०—पृथ्वीसिंह बेधड़क

आर्यवीरो बिल्कुल मत घबराना।
सत्यमेव जयते नानृतम् यह ऋषियों का फरमाना॥

हिरनाकुश बेटे प्रह्लाद को सताता रहा,
कर में लेके तलवार डर भय मौत का दिखाता रहा,
डण्डे बेंत मुक्के तो पल-पल में खगाता रहा,
पहाड़ पर से गेरे कभी आग में जलाता रहा,
हाथ पैर बांध कभी दरख्त से लटकाता रहा,
लेकिन वीर बालक "नैनं छिन्दन्ति" गाता रहा,
हंसता रहा दीवाना।१

घूंसे और जूते से और लातों से पिटता रहा,
बाप का सिपाही उसे ठा-ठा के पटकता रहा;
कोई तो हाथों को कोई पैरों को झटकता रहा,
पानी से पियासा और रोटी से भटकता रहा,
कभी-कभी सारी रात छत में लटकता रहा,
लेकिन वह प्रह्लाद एक ओ३म् नाम रटता रहा,
बहुत उम्र का याना।२

लेकिन उस प्रह्लाद ने न बाप की बुराई चाही,
पिता जी कह-कह के रोजाना आवाज लाई,
हंसते और खेलते हुए ने तकलीफ ठाई,
तभी तो बालक ने सारी दुनिया पै फतह पाई,
बाप का न नाम रहा बेटे की न आंच आई,
आया है प्रह्लाद बनके दोबारा यहां सत्याग्राही,
दयानन्द का चौथा नियम मनमें ग्रहण करके आई,
किया फकीरी बाना।३

बन करके प्रह्लाद गैर मुल्कों को दिखाते रहो,
बेदर्दी से अपना माल रोजाना लुटाते रहो,
अपनी पोथी खोल-खोल लिखों में दिखाते रहो,
आपको जो पीटे शीश उनको झुकाते रहो,

(शेष पृष्ठ ८ पर)

निर्जलिंगप्पा का पश्चात्ताप अन्य मुख्यमन्त्री कब करेंगे?

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

अविभाजित कांग्रेस के पूर्वप्रधान तथा कर्नाटक के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री स० निर्जलिंगप्पा ने बेंगलूर की जनसभा में पश्चात्ताप किया कि उन्होंने ३० वर्ष पहिले कर्नाटक में शराब खोलकर घोर पाप किया। उन्होंने बताया कि उनके इस गलत निर्णय का कारण कोलार जिले में नाजायज शराब पीकर १०० व्यक्तियों की मौत होना था। वे इस प्रचार के कारण भावविभोर होगये कि यदि इस जिले में कानूनीतौर पर शराब बन्द न होती तो वे लोग कारखाने में शोध करके बनी हुई कम जहरीली शराब पीते। वह शराब बन्द होने के कारण उन्होंने नाजायज निकाली हुई जहरीली शराब पी और इसलिए वे मर गये। तर्क यही दिया गया था जो आज भी सरकारें देती हैं कि यदि सरकार कम जहरीली शराब नहीं बिकवायेगी तो लोग नाजायज शराब पीयेंगे और उसे पीकर बीमार होंगे या मरेंगे। इसी प्रकार से प्रभावित होकर ३० वर्ष पहिले श्री निर्जलिंगप्पा ने कर्नाटक में शराब पर से पाबन्दी हटादी। आज वे कहते हैं कि उस समय उनके लिए यह अनुमान लगाना कठिन था कि शराब खोलने से ३० साल के भीतर इतनी ज्यादा बढ़ जायेगी। इन ३० वर्षों में शराब जितनी बढ़ गई है, उसे देखकर तो दिल दहल गया और मेरी आत्मा मुझे बुरी तरह कचोट रही है। मैं सोचता हूं कि यदि मैं ३० वर्ष पहिले शराब नहीं खोलता तो जनता की यह तबाही नहीं होती।

शराबबन्दी के लिए अब कर्नाटक में ५ सदस्यों की एक समिति बन गई है, जिसके अध्यक्ष श्री निर्जलिंगप्पा बने हैं और अब सब जिलों और तहसीलों में भी समितियां बनेंगी, जो शराबबन्दी के लिए पूरे कर्नाटक में आंदोलन आरम्भ करेंगी और जनता में चेतना जागृत करेंगी।

एक सर्वेक्षण के अनुसार १९६० में शराब पीनेवालों की संख्या एक करोड़ से कुछ अधिक थी और उनमें से जो इस आदत के गुलाम होगये थे उनकी संख्या एक लाख से भी कम थी। आज शराब पीनेवालों की संख्या १० करोड़ के लगभग आ पहुंची है और उनमें से ४० लाख से अधिक लोग शराब के गुलाम हो चुके हैं। वे शराब छोड़ना चाहें तो छोड़ नहीं पाते हैं। उनकी इच्छाशक्ति और मनोबल इतना कमजोर हो चुका है। उनकी अवस्था दयनीय है, वे बीमार हैं और नरक का जीवन जी रहे हैं।

भारत में तो अभी किसी ने हिसाब नहीं लगाया है, परन्तु अमरीका में जो हिसाब लगाया गया, उससे पता चला है कि शराब के कारण जो अपराध होते हैं, एक वर्ष में उनके कारण वहां की सरकार पर ७५० करोड़ डालर—१०५०० करोड़ रुपये के खर्च का भार पड़ा है। भारत के प्रदेशों की जो सरकारें शराब से होनेवाली आमदनी की वकालत करती हैं, इससे उनकी आंखें खुल जानी चाहियें।

अमरीका में ही एकत्रित सूचना के आधार पर यह बात सामने आई है कि १९३३ में शराबबन्दी की नीति छोड़ने के कारण अमरीका में अपराधों की संख्या थोड़े ही दिनों में १५२ प्रतिशत बढ़ गई। उसमें १८० प्रतिशत चोरी, १६३ प्रतिशत सेंधमार चोरी, ९२ प्रतिशत डकैती, १८ प्रतिशत बलात्कार, कारों तथा दूसरे वाहनों की चोरी ११० प्रतिशत और कत्लों की संख्या ८५ प्रतिशत बढ़ी। ड्राइवरों की गिरफ्तारियां २३० प्रतिशत बढ़ीं। यह बड़े दुःखभरे आश्चर्य की बात है कि भारत की केन्द्रीय तथा प्रदेशीय सरकारों का ध्यान इधर नहीं जारहा।

रूस के एक सर्वेक्षण से यह तथ्य सामने आया कि १५ वर्ष के कम आयु के बाल अपराधियों के ९० प्रतिशत अपराध शराब पीने के कारण होते हैं। इसलिए रूस ने २१ वर्ष से कम आयु के युवकों के लिए शराब और दूसरे मादक द्रव्यों का बेचना और खरीदना अपराध घोषित कर दिया गया है। विदेशों में किये गये एक और सर्वेक्षण के आधार पर आंखें खोलनेवाले तथ्य उजागर हुए हैं। कुछ अपराधों में से जो अपराध शराबखोरी के कारण होते हैं, उनका ब्योरा इस प्रकार है—

महिलाओं के साथ बलात्कार	६९%
डकैतियां	७४%
वाहनों की चोरी और सीना जोरी	६८%
हत्यायें (कत्ल)	७९%
साधारण चोरी	६५%
सेंध लगाकर चोरी	७०%
साधारण छेड़छाड़ और आक्रमण	८५%
असबाह (हथियार) सम्बन्धी	८५%

क्या अन्य मुख्यमन्त्री भी पश्चात्ताप करेंगे ?

भारत और अन्य देशों के अनुमानों और सर्वेक्षणों के आंकड़े मैंने इसीलिए प्रस्तुत किये हैं, जिससे हमारे प्रशासकों की आंखें और नींद ही न खुले उनके हृदय में संवेदना के अंकुर भी फूटें। पिछले ४० वर्षों में महात्मा गांधी को संसार के लोगों ने कुछ अधिक समझा है। अमरीका ने तो २ अक्तूबर को गांधी को बड़ी श्रद्धा से याद किया ही, कुछ दूसरे राष्ट्रों ने भी। आज भारत का भी प्रत्येक राजनैतिक दल अब गांधी जी का नाम लेने लगा है। जनसंघ तथा वामपंथी दल गांधी जी की बातों और नीतियों तथा उनके पीछे दर्शन का विरोध करते थे, अब वे भी गांधी जी को आदर से याद करने लगे हैं और उनका नाम भी अपनी नीतियों के औचित्य को प्रमाणित करने के लिए लेने लगे हैं, परन्तु दुःख की बात है कि सभी दल गांधी का नाम लेकर, गांधी जी का मजाक कर रहे हैं। वे सभी शराबबन्दी का औचित्य ठहराने से नहीं कतराते और विकास के कार्यों के बहाने से शराब कर वसूल करने की वकालत करते हैं, बिना इस बात की ओर ध्यान दिये कि शराब के कारण भारत की गरीब जनता को आर्थिक हानि तथा शारीरिक मानसिक और नैतिक गिरावट होती आरही है।

इसी कारण मैं अपने लेख के साथ गांधी का एक लेख भी प्रकाशित करवाना चाह रहा हूं। यह प्रसन्नता की बात है कि कर्नाटक के कार्यकर्त्ताओं ने महात्मा गांधी के अनुयायी होने के नाते शराबबन्दी का आंदोलन उठाया है। क्या भारत के अन्य प्रदेशों के मुख्यमन्त्री, वर्तमान या भूतपूर्व पश्चात्ताप करके वही घोषणा करेंगे, जो पुराने स्वतन्त्रता सेनानियों ने श्री निर्जलिंगप्पा के नेतृत्व में की है। वे मानते हैं कि शराबबन्दी आंदोलन भारत के स्वाधीनता आंदोलन का महत्त्वपूर्ण अंग रहा है और उसके लिए लाखों नरनारियों ने धरना देकर यातनायें सही हैं, बलिदान भी दिये हैं। उन्होंने घोषणा की है "यदि हम गांधी जी के अनुयायी कहलानेवाले लोग शराबबन्दी के महान् उद्देश्य के लिए आंदोलन नहीं करेंगे तो हम उस महान् आत्मा के साथ अन्याय करेंगे।"

जहां सरकारों की ओर से निराशाजनक उत्तर मिलते हैं, यह बड़े सन्तोष और प्रसन्नता का विषय है कि जनता की ओर से इस महान् आंदोलन के लिए उत्साहवर्धक समाचार प्राप्त हो रहे हैं। नागालैंड के ईसाइयों के सब चर्चों ने भी शराबबन्दी के लिए आंदोलन शुरु कर दिया है और वहां के पूर्व मुख्यमन्त्री को भी उनके सामने झुकना पड़ा है। वे कितना साथ ईसाई प्रचारकों का देंगे, यह देखना है। सिख आतंकवादियों ने तो अपने कारणों से शराब के खिलाफ छोटा-सा थोड़े दिन के लिए जहाद छेड़ा, परन्तु सिख नेताओं की आंखें नहीं खुली हैं। भारत का मुसलमान भी साम्प्रदायिक झगड़ों में तो अपने तथाकथित नेताओं के चक्कर में फंस जाता है, परन्तु उन्होंने अपने दीन और फर्ज को भुला रखा है।

शराब पीना सामाजिक अभिशाप है।

शराबबन्दी लागू नहीं हुई तो राष्ट्र का विनाश

—गांधी जी

मैं भारत का कंगाल हो जाना पसन्द करूंगा, लेकिन मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि हमारे हजारों लोग शराबी हों। अगर भारत में शराबबन्दी जारी करने के लिए लोगों को शिक्षा देना बन्द करना पड़े तो कोई परवाह नहीं, मैं यह भारी कीमत चुकाकर भी शराबखोरी बन्द करूंगा।

जो राष्ट्र शराब की आदत का शिकार है, कहना चाहिए कि उस के सामने विनाश मुंह बाये खड़ा है। इतिहास में इस बात के कितने ही प्रमाण हैं कि इस बुराई के कारण कई साम्राज्य मिट्टी में मिल गये हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास से हम जानते हैं कि वह पराक्रमी जाति, जिसमें श्रीकृष्ण ने जन्म लिया था, इसी बुराई के कारण नष्ट होगई। रोमन साम्राज्य के पतन का एक सहायक कारण निःसन्देह यह भयंकर बुराई ही थी।

मैं मानता हूं कि भूख से पीड़ित स्त्री-पुरुष जो छोटी-मोटी चोरियां करते हैं और जिनके कारण उन पर मुकदमे चलाये जाते हैं और उन्हें सजायें दी जाती हैं, उनके बनिस्पत भारत में मद्यपान ज्यादा बड़ा अपराध है। प्रेम के कानून की पूर्ण सिद्धि तक न पहुंचने के कारण मैं दण्ड विधान की प्रथा को उसके संयत रूप में—अनिच्छापूर्वक और लाचारी से—स्वीकार करता हूं और जब तक मैं उसे स्वीकार करता हूं, तब तक मैं इस बात की हिमायत करना अपना कर्त्तव्य मानता हूं कि जो लोग विनाशक शराब बनाते हैं और जो बार-बार चेतावनी देने पर भी उसका व्यसन छोड़ते नहीं हैं, उन्हें बिना लम्बी-चौड़ी कार्रवाई किये तड़ातड़ सजायें दी जायें। मैं अपने बच्चों को आग में या गहरे पानी में जाने से जबरन रोकने में कोई संकोच नहीं करता। शराब-रूपी लाल पानी में जा पड़ना धधकती भट्टी या बाढ़ में जा पड़ने से भी ज्यादा खतरनाक है। भट्टी या बाढ़ तो केवल शरीर का ही नाश करती है, लेकिन शराब शरीर और आत्मा दोनों का नाश कर डालती है।

शराब और दूसरी नशीली चीजें अपने व्यसनियों के नैतिक कल्याण को जड़ से खोद देती है।······जिनके पति शराबी हैं, वे स्त्रियां जानती हैं कि जो घर और परिवार पहले सुव्यवस्थित और शांतिदायक थे, उनको शराब के व्यसन ने कैसी भयंकर बर्बादी करदी है।

शराब के प्रश्न के साथ खिलवाड़ नहीं किया जाना चाहिए। कोई नरम और आसान नीति इस भयंकर बुराई का सामना नहीं कर सकेगी। पूर्ण शराबबन्दी ही लोगों को इस अभिशाप से बचा सकती है।

मेरे लिए तो शराब का सवाल एक बढ़ती हुई सामाजिक बुराई को रोकने का सवाल है और उसे हल करने के लिए सरकार को, अब जब कि उसे अवसर मिला है, कुछ न कुछ अवश्य करना चाहिए। हमारा उद्देश्य स्पष्ट है। हम मजदूरों को और हरिजनों को इस बुराई से बचाना चाहते हैं। यह एक बहुत बड़ी समस्या है। शराबखोरी बन्द करने के लिए हमें सारे समाज-सुधारकों की, खासकर स्त्रियों की तमाम शक्ति लगा देनी पड़ेगी। शराबबन्दी की जो रूपरेखा मैंने बताई है, वह तो इस सम्बन्ध में सुधार की सिर्फ एक शुरूआत है। (हालांकि है वह निस्सन्देह *अनिवार्य*) *शराब पीनेवाले को लुभाने के लिए उसके दरवाजे* के पास ही शराब की दुकान मिल जाये, तब तो हम उससे कुछ नहीं कह सकते। यह तो उसी तरह निष्फल होगा, जैसे कि किसी बीमार बच्चे के सामने—या फिर वह आदमी ही क्यों न हो—खुली हुई मिठाई रखी रहे और उससे कहा जाये कि इसे छूना मत।

आप लोग इस झूठे तर्क के धोखे में न आइये कि भारत को जबरन निर्व्यसनी नहीं बनाना चाहिए और जो शराब पीना चाहते हैं, उन्हें पीने की सुविधायें अवश्य मिलनी चाहिएं। राज्य अपनी प्रजा के दुर्व्यसनों के लिए इन्तजाम नहीं करता। हम वेश्यालयों का नियमन नहीं करते या उनके लिए परवाने नहीं देते। हम चोरों को चोरी की कुटेव जारी रखने के सहूलियतें मुहैया नहीं करते। मैं शराबखोरी को चोरी से और शायद व्यभिचार से भी अधिक निन्दनीय मानता हूं। क्या वह अक्सर इन दोनों की जननी नहीं होती? मेरा अनुरोध है कि आप शराब की आमदनी का अस्तित्व मिटा देने और शराबखानों को उठा देने के काम में देश का साथ दें।

यह याद रखने की बात है कि शराब और नशीली चीजों से पैदा होनेवाली आय एक अत्यन्त नीचे गिरानेवाला कर है। सच्चा कर तो वह है जो करदाता को आवश्यक सेवाओं के रूप में दस गुना बदला चुका दे, किन्तु यह आबकारी की आय क्या करती है? लोगों को अपने नैतिक, मानसिक और शारीरिक पतन और भ्रष्टता के लिए कर देने को मजबूर करती है। यह कर उन लोगों पर एक भारी बोझ-सा गिरता है, जो उसे सहने की सबसे कम ताकत रखते हैं।

यों तो चोरी कल्प के अन्त तक भी होती ही रहेगी। तो क्या इसलिए हम उसे कानून द्वारा मन्जूरी दे दें? और जड़ चीजों की चोरी की अपेक्षा क्या, मनकी सम्पत्ति की चोरी छोटा गुनाह है? बेशक, कुछ हद तक तो लोग छिपकर गैरकानूनी शराब बनाते ही रहेंगे। पर उसकी मात्रा से हम यह अन्दाज लगा सकेंगे कि सरकार किस हद तक इस दिशा में प्रयत्नशील है और शराबी तथा अफीमची से उसका नशा छुड़ाने में जाग्रत जनता किस हद तक लगातार प्रेम के साथ यत्न करके सरकार को सहयोग दे रही है। भौतिक या शारीरिक उन्नति के लिए जिस प्रकार कुछ कीमत देनी पड़ती है, उसी प्रकार नैतिक उत्थान के लिए भी हमें कीमत तो देनी ही पड़ेगी, पर मेरा निवेदन यह है कि अगर हम पहले कानून द्वारा पूरी शराबबन्दी नहीं कर देंगे तो यह विधायक प्रयत्न भी विफल होकर रहेगा।

बच्चों के भविष्य के लिए
न खुद शराब पीयें और न औरों को पिलायें।

शराब के नशे में हंगामा करते तीन युवक गिरफ्तार

सोनीपत, १४ अक्तूबर (सपरा): देर से प्राप्त सूचना के अनुसार पुलिस ने सोनीपत रोहतक रोड पर एक मारुति कार में सवार तीन युवकों को शराब के नशे में धुत्त होकर हंगामा करने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया, जबकि चौथा युवक पुलिस की हिरासत से भाग जाने में सफल होगया तथा लोकदल (ब) के एक विधायक की कोठी पर पहुंचा और अपने साथियों को पुलिस हिरासत से छुड़ाने के लिए मदद मांगी।

कहा जाता है कि ये तीनों युवक गांव बांकनेर (दिल्ली) के रहने वाले हैं और वे एक मारुति कार में बैठकर शराब पी रहे थे और हंगामा कर रहे थे। इस दौरान जिलाधीश अपनी कार से वहां से गुजरे और उन्होंने इस बारे में वायरलेस के द्वारा पुलिस को सूचना दी और उनके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई का आदेश दिया। थोड़ी देर के बाद पुलिस उसी स्थान पर पहुंची, जहां वे लोग हंगामा कर रहे थे।

गजल

अजब हस्ती पे नाजां है, के गाफिल महवें हस्ती है।
नहीं वाकिफ़ की हस्ती, खुद तेरी गफलत पे हंसती है।
मुसाफिर खाना ऐ दुनियां से, बेसक है सफर सबको,
कयाम इसमें किया, बस्ती, ये महमानों की बस्ती है।
दिलों जां बेजकर कुछ आखरित का तू भी सौदाकर,
ये जीन्स ऐ बे वहां गर यों भी हाथ आये तो सस्ती है।
जिन्हें नाजेपिरी व तख्तेताऊस-सी मुयस्सर थी,
उन्हीं की कब्र पर रोनक, तो क्या हसरत बरसती है।
नहीं कुछ फिकरें उकबा तुझको, ऐ गाफिल समझाती हूं,
ये क्या सब्बत क्या असरत क्या सहवत परस्ती है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा—

पंजाब सभा के प्रधान वीरेन्द्र की निन्दा का प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक १९ अक्तूबर, को सिद्धान्ती भवन रोहतक में सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में हुई। बैठक में हरयाणा में आर्यसमाज के प्रचार एवं प्रसार तथा संस्कृत हिन्दी रक्षा के लिए ठोस कार्यक्रम तैयार किये गये। परीक्षाओं में हिन्दी भाषा को माध्यम स्वीकार करवाने के लिए दिल्ली में भूख हड़ताल पर बैठे नवयुवकों का सभा ने समर्थन किया।

एक प्रस्ताव में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जो कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के त्रिशाखन के पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की सम्पत्ति है, उस पर पंजाब सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने अपनी स्वार्थपूर्ण भूमिका द्वारा गुरुकुल पर शक्तिवेश का कब्जा दिलाने की अनुचित कार्यवाही की घोर निन्दा की गई। प्रस्ताव में कहा गया है कि श्री वीरेन्द्र जी ने स्वयं अपनी पंजाब सभा का १९७५ में त्रिशाखन (पंजाब, हरयाणा तथा दिल्ली) करने का प्रस्ताव स्वीकार करके सार्वदेशिक सभा से उस पर आचरण करवाया और तीनों सभाओं के बंटवारे के प्रस्ताव में जिस सभा की सीमा में जो सम्पत्ति है, उसी सभा की सम्पत्ति होगी का निर्णय करवाया। इस निश्चय के अनुसार गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की सम्पत्ति है, जो कि जिला फरीदाबाद में स्थित है। आर्यसमाज की शिरोमणि सभा ने भी गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ हरयाणा सभा की सम्पत्ति तथा संस्था घोषित कर दिया था और स्वयं वीरेन्द्र ने भी अपने पत्र दिनांक ५-७-८२ द्वारा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के संचालन का अधिकार हरयाणा सभा का पुनः स्वीकार किया था। यह पत्र जिलाधीश फरीदाबाद को तथा इस पत्र की प्रतिलिपि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह को भेजी गई थी। पत्र निम्न प्रकार है—

आपके जिला फरीदाबाद की तहसील बल्लभगढ़ में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ नाम की एक शिक्षण संस्था है, इसकी रजिस्ट्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नाम है, परन्तु हरयाणा में होने के कारण इसके प्रबन्ध का अधिकार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को, जिसके प्रधान प्रो० शेरसिंह भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री है को दिया हुआ है। इस समय स्वामी आदित्यवेश, स्वामी शक्तिवेश आदि कुछ व्यक्तियों ने इस संस्था पर अनधिकार कब्जा कर रखा है। वह इसकी सम्पत्ति को नष्ट कर रहे हैं और बलात् इस पर कब्जा करके, इसको बेचने का प्रयास कर रहे हैं। हमारा या आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का कोई प्रतिनिधि वहां जाये तो उसकी मारपीट करते हैं।

आपसे प्रार्थना है कि इस विषय में इनके विरुद्ध उचित कार्यवाही की जाये और प्रो० शेरसिंह या उनका कोई प्रतिनिधि यदि वहां जाना चाहें तो उसे जाने से न रोका जावे। क्योंकि इस संस्था का अधिकार इस समय आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दिया हुआ है, इसलिए उनकी ओर से जो रिपोर्ट की जावे, उसके आधार पर उचित कार्यवाही करने का कष्ट करें।

भवदीय—वीरेन्द्र, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने पंजाब सभा के त्रिशाखन के निर्णय के अनुसार गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की सम्पत्ति को हरयाणा सभा के नाम करवाने के लिए कानूनी कार्यवाही आरम्भ की, परन्तु श्री वीरेन्द्र जी की पंजाब सभा ने इस कार्यवाही में हरयाणा सभा को सहयोग नहीं दिया और न्यायालय में उसके हैड क्लर्क ने त्रिशाखन विषयक रजिस्टर जिसमें विभाजन का प्रस्ताव अंकित है, प्रस्तुत नहीं किया, अपितु इसके विपरीत कुछ समय के बाद शक्तिवेश से अनुचित गुप्त सौदेबाजी करके उसे निम्नलिखित प्रस्ताव पास करके दे दिया, जो शक्तिवेश ने फरीदाबाद के न्यायालय में प्रस्तुत कर दिया।

प्रस्ताव संख्या ५ जो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा ने अपनी बैठक दिनांक २५-१०-८७ को पारित किया।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद तथा इसकी भूमि व भवन आर्य प्रतिनिधि पंजाब (रजि०) गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर की सम्पत्ति हैं। जिसके प्रबन्धनिदेशक स्वामी शक्तिवेश अनेक वर्षों से चल रहे हैं। इन्हीं की अध्यक्षता में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ प्रबन्ध समिति इसका संचालन करती है। श्री नारायणसिंह सुपुत्र श्री वासुदेव ग्राम व डाकघर अटाली (फरीदाबाद) को, जो कि पहले से ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मुख्तारे आम चले आरहे हैं, इसकी देखभाल पहले की ही भांति करते रहेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अब भी अविभाजित है।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्त प्रस्ताव प्रस्ताव संख्या ५ दिनांक २५-१०-८७ सही प्रतिलिपि है।

हस्ताक्षर—वीरेन्द्र, सभाप्रधान (सभा की मोहर)

स्मरण रहे श्री रामचन्द्र आर्य ने इन्द्रवेश को पंजाब सभा के नाम से अपने रिश्तेदार शक्तिवेश के नाम गुरुकुल का ९९ वर्ष का पट्टा लिखने से पूर्व नारायणसिंह को मुख्तारे आम बनाया था। इसी बोगस तथा अवैध कार्यवाही पर श्री वीरेन्द्र जी ने अपनी पंजाब सभा की मोहर लगादी। श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता में श्री वीरेन्द्र जी ने १४-९-१९७५ को अम्बाला छावनी में संयुक्त पंजाब सभा का विभाजन करवाया और सन् १९८२ में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का अधिकार हरयाणा सभा को पुनः लिखित रूप में दिया और फिर १९८७ में पैंतरेबाजी तथा गुप्त समझौता करके इसका प्रबन्ध स्वामी शक्तिवेश को कब्जा देने का षड्यन्त्र रचा। श्री वीरेन्द्र की इस पैंतरेबाजी से स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने शक्तिवेश से सौदेबाजी करके हरयाणा सभा की पीठ में छुरा घोंपा है और अपने स्वार्थवश अपने ही प्रस्तावों के विपरीत आचरण करके आर्यमर्यादा का उल्लंघन किया है। आर्यजनता निर्णय करे कि ऐसे अवसरवादी तथा स्वार्थी व्यक्ति को आर्यसमाज जैसी पवित्र संस्था का सदस्य रहने का क्या नैतिक अधिकार है? गत वर्षों में सार्वदेशिक सभा ने भी इनकी अनुशासनहीनता के कारण इन्हें पंजाब सभा के प्रधानपद से पृथक् किया और वहां तदर्थ समिति बना रखी है।

श्री वीरेन्द्र के असहयोग के कारण हाईकोर्ट में शक्तिवेश के पक्ष में स्टेविकेट हुआ। इन्द्रप्रस्थ की सम्पत्ति का मुख्य अभियोग अभी विचाराधीन है। आजकल आर्यजनता में आम चर्चा है कि शक्तिवेश से श्री वीरेन्द्र जी ने कोई गुप्त सौदेबाजी की है।

श्री वीरेन्द्र का आर्य मर्यादा में यह लिखना भ्रामक है कि शक्तिवेश गुरुकुल का संचालन कर रहा है। वास्तविकता यह है कि इस समय गुरुकुल में भ्रष्टाचारी तथा असामाजिक तत्वों का डेरा है, जो कि वहां गुरुकुल की सम्पत्ति के खर्च पर शराबखोरी तथा मौज मेला मना रहे हैं और नाजायज हथियारों की सहायता से सभा के किरायेदारों को डराकर धन बटोर रहे हैं। उन्होंने गुरुकुल के चारों ओर आतंक फैला रखा है।

श्री वीरेन्द्र जी ने अपने लेख में शक्तिवेश द्वारा चलाये जारहे इस प्रकार के गुरुकुल के संचालन में दिल्ली के आर्यसमाजों से सहयोग करने की अपील की है। सभी को पता है कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ हरयाणा की सीमा फरीदाबाद में स्थित है और हरयाणा के आर्यसमाजों तथा जनता के सहयोग से ही गुरुकुल सफलतापूर्वक चलाया जा सकता है। पता नहीं गुरुकुल के संचालन में सहयोग देने के लिए श्री वीरेन्द्र जी ने हरयाणा के आर्यसमाजों से अपील क्यों नहीं की, जब कि हरयाणा की जनता २० गुरुकुलों का संचालन कर रही है।

श्री वीरेन्द्र जी ने अपने लेख में यह लिखकर कि "स्वामी शक्तिवेश जी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सहयोग से इस गुरुकुल को फिर से खड़ा करने का प्रयास कर रहे हैं।" सिद्ध कर दिया है कि वे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यों में अपने स्वार्थ के कारण अनुचित हस्तक्षेप कर रहे हैं। श्री वीरेन्द्र जी ने आर्य मर्यादा में लिखे अपने लेख

(शेष पृष्ठ ६ पर)

हरयाणा ग्राम पंचायत चुनाव में विजयी शराबबन्दी समर्थक सरपंचों की सूची

पतांक से आगे—

१२३. श्री कदमसिंह सरपंच ग्राम बदरोला जि० फरीदाबाद
१२४. „ महासिंह „ पाना मेलवान ग्राम बोहर जि० रोहतक
१२५. „ बलवन्तसिंह „ ग्राम रानिला जि० भिवानी
१२६. „ अत्तरसिंह „ „ समसपुर „
१२७. „ बलदेव „ „ सुण्डाना जि० रोहतक
१२८. „ रामप्रकाश „ „ सलीमपुर टूराली जि० सोनीपत

(क्रमशः)

आर्यसमाज तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने निकट के ग्रामों के उन सरपंचों के नाम जो शराब का सेवन नहीं करते हैं, लिखकर शीघ्र भेजने का कष्ट करें, ताकि उनके नाम इस सूची में प्रकाशित हो सके।

—सम्पादक

हमारी स्थिति क्या है ?

जब से शिक्षा भूले वेद की तब से उल्ट सब काम हुआ।
धर्म कर्म से विहीन आज नगर और हर ग्राम हुआ॥ टेक

वेद की शिक्षा भूल गये सब नगर और ग्रामवासी।
खुशी को कहुंर ना दिखे सब पे छाई उदासी।
मूर्ख हमें बना गये हैं ईसाई सत्यानाशी।
लुट-पिटकर भी नहीं सम्भले अब तक भारतवासी।
पश्चिमी सभ्यता अपनाके निज संस्कृति का अपमान हुआ॥१

इधर शिक्षा का स्कूलों में ढंग बिगड़ गया सारा।
लड़के-लड़की साथ पढ़ हुआ नष्ट चरित्र सारा।
लड़कियाँ डांस करें फन्कशन में किया नष्ट धर्म सारा।
कालिजों के स्टुडेंट बिगड़ गये इनको लव ने मारा।
व्यभिचारी बदमाशों से भारत वर्ष बदनाम हुआ॥२

स्वांग सिनेमा से भारत में बढ़ अत्याचार रहे।
वृद्ध जवां और बालक बिगड़े बन डाकू चोर जारहे।
पता नहीं ये देश के कर्णधार क्या विचार रहे।
इन्हें देश से क्या मतलब धन के भर भण्डार रहे।
खून चूसना नोट कमाना काम ही जब आम हुआ॥३

गउओं का सम्मान नहीं करते आज नरनारी।
हिन्दुओं की निद्रा कारण गउवें जारही मारी।
दूध घी का खानपान छुटा आई डालडे की बीमारी।
चाय का तो बच्चा-बच्चा बना है आज पुजारी।
दाल नहीं मिलती घर में आलुओं का प्रोग्राम हुआ॥४

आज देख लो ग्राम-ग्राम में फैल रही बीमारी।
बीड़ी सिगरेट हुक्के से शायद बचा हो कोई नरनारी।
शराब पीना तो परम धर्म यूं अकल गई मारी।
गांव से शराब क्यों बन्द हो जब ऐसे हैं कर्णधारी।
पंच सरपंचों का पीणा-प्याणा काम हो जब आम हुआ॥५

यदि सुख शांति चाहते हो तो ये नियम अपनाओ।
बीड़ा सिगरेट हुक्के और शराब से पिण्ड छुड़ालो।
टी० वी० वीडियो ना हो गाँव में वेदप्रचार करालो।
आर्यसमाज मन्दिर बनाकर सध्या हवन रचालो।
वैदिकधर्मी हो जो ग्राम वो हो स्वर्गधाम हुआ॥६

—बलवन्तसिंह, ठसका

अजमेर में भव्य ऋषि-मेला

महर्षि दयानन्द सरस्वती के १०५वें निर्वाण दिवस के अवसर पर अजमेर में १२-१३ व १४ नवम्बर, ८८ कार्तिक शुक्ला तृतीया से पञ्चमी सं० २०४५ वि० शनि, रवि, सोमवार को विशाल समारोह का आयोजन किया जारहा है। इस अवसर पर आर्यजगत् के वीतराग संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज दयानन्दमठ दीनानगर, स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती, महात्मा आर्यभिक्षु जी महाराज ज्वालापुर, दर्शनाचार्य पं० उदयवीर जी शास्त्री, प्रो० शेरसिंह जी पूर्व राज्यमन्त्री भारत सरकार एवं प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, डा० भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ़, श्री पन्नालाल जी पीयूष आदि विद्वान्, महात्मा, आर्यनेता पधार रहे हैं। डा० भवानीलाल जी भारतीय का अभिनन्दन समारोह भी सम्पन्न होगा एवं देशभक्त कुंवर चांदकरण जी शारदा हिन्दी वादविवाद प्रतियोगिता भी आयोजित होगी।

ऋषि मेले के अवसर पर अजमेर में आनासागर—तट पर ऋषि उद्यान स्थित भव्य यज्ञशाला में सामवेद पारायण यज्ञ, भजनोपदेश एवं वेदोपदेश का आयोजन किया गया है। यज्ञ का प्रारम्भ समारोह से पूर्व १० नवम्बर से होगा तथा पूर्णाहुति समारोह के अन्तिम दिन १४ नवम्बर को प्रातः सम्पन्न होगी।

दिनांक १२ नवम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ, नई दिल्ली की ओर से वेद गोष्ठी का आयोजन किया गया है।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रधान — गजानन्द आर्य, मन्त्री
परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर

आर्य युवकों ने कसाइयों से बछड़े छुड़ाये

दिनांक १४-१०-८८ को सायं ८ बजे ब्र० रामस्वरूप आर्य एवं उनके साथी बचनसिंह आर्य भिवानी से मोटर साइकिल द्वारा कलानौर आरहे थे। कलानौर के साथ ही उनको १५-१६ कसाई एवं असंख्य गउवों के बछड़े मिले। उनको रोका गया और बछड़े वहीं बन्धवा दिये तथा कलानौर थाने में पहुंचकर पुलिस साथ ली, वहां से हवलदार श्री लेखराम शर्मा व उनके साथी सिपाही श्री सतवीरसिंह और सुखीराम ने बड़ी बहादुरी से कसाइयों को एक घण्टे की भाग-दौड़ के बाद दबोच लिया। उन कसाइयों ने स्वीकार किया कि हम इन बछड़ों को कटवाने के लिए उत्तरप्रदेश ले जाना चाहते हैं, जबकि कानूनन कोई भी गोवंश हरयाणा से बाहर ले जाना अपराध है। बछड़ों को छुड़वा दिया गया। ब्र० रामस्वरूप आर्य, तथा बचनसिंह आर्य के इस साहसिक कार्य की सराहना की जारही है।

—सत्यवानसिंह आर्य

(पृष्ठ ५ का शेष)

में भी पंजाब सभा का त्रिशासन स्वीकार किया है। त्रिशासन के बाद वह गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ हरयाणा सभा के क्षेत्र में आगया है। वर्तमान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की सीमा अम्बाला से आगे राजपुरा से आरम्भ होती है। हरयाणा सभा पंजाब सभा के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं कर रही, जब कि सार्वदेशिक सभा के आदेशों के बावजूद भी सभा के बटवारे से पूर्व सांझेकोष का १७ लाख रुपये में हरयाणा सभा का ६ लाख से अधिक रुपया १३ वर्ष व्यतीत होने पर भी अभी तक श्री वीरेन्द्र ने नहीं दिया। श्री वीरेन्द्र जी इस सम्बन्ध में भी आर्यजनता को भ्रमित कर रहे हैं। श्री वीरेन्द्र जी की इन हरयाणा सभा विरोधी गतिविधियों के कारण हरयाणा सभा की अन्तरंग सभा ने श्री वीरेन्द्र की सर्वसम्मति से निन्दा की है।

—म० भरतसिंह वानप्रस्थी, सभा वरिष्ठ उपप्रधान

जीवनोपयोगी छन्द

अगर पसीने से कभी, हो जाओ तुम तंग।
बदबू पैदा हो अधिक, मलिन होय यदि अंग।
मलिन होय यदि अंग, देर मत तनिक लगाओ।
मेंहदी के लो पात, पीस बारीक बनाओ।
तोले चार लो आप, करों में अपने श्रीमन्।
कांखों में फिर आप, कीजिए मेंहदी लेपन ॥१

अगर आपकी आंख में, जलन होय श्रीमान्।
घबराओ मत दीजिए, एक बात पर ध्यान।
एक बात पर ध्यान, गिरी बादाम लीजिए।
चाकू उनमें चुभा, आग पर जला दीजिए।
उसकी स्याही रोज, आंख में आप लगाओ।
आंखों के सब रोग, साथियो दूर भगाओ ॥२

स्तनों में यदि आपके, फोड़े की है पीर।
सुनखो बहिनो ध्यान से, बता रहा तकसीर।
बता रहा तकसीर, तेल सरसों अरु चूना।
दोनों को लो मिला, दवाई बने नमूना।
फोहे पर लो लगा, लगाओ फिर फोड़े पर।
होगा निश्चित लाभ, खर्च बहिनो थोड़े पर ॥३

अगर सख्त हैं आपके, किसी वजह से बाल।
बात हमारी मानिये, करो न आप मलाल।
करो न आप मलाल, सुहागा हाथ उठाओ।
गर्म नीर में उसे, आप मनमीत मिलाओ।
उस पानी से बाल, आप अपने धो डालो।
चमकदार मजबूत, मुलायम बाल बनालो ॥

—पं० नन्दलाल 'निर्भय' भजनोपदेशक
ग्राम पो० बहीन, जि० फरीदाबाद

नौजवां को सन्देश

अरे नौजवां तू होश में आना।
ये सोया है भारत इसको जगाना ॥

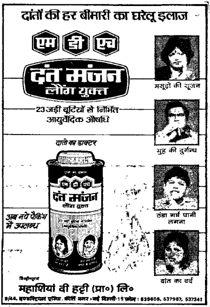
शदियों से सोई ये तेरी आर्य जाति।
वेदों का जग में डंका बजाना ॥१

ये भारत मां बलिदान मांगती है।
खून से अपने इसकी प्यास बुझाना ॥२

तेरे देशवासी ईसाई बन रहे हैं।
अपने बिछुड़े भाइयों को गले से लगाना ॥३

विषयों में ना खोना अनमोल जीवन।
'बलवन्त' जो लगाना तो परोपकार में लगाना ॥४

—बलवन्तसिंह आर्य, ठसका नारायणगढ़, अम्बाला



हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक
२. " फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार
३. " सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत
४. " हरीश एजेन्सीज ४९९/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत
५. " भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल
६. " घनश्यामदास सीताराम बिचला बाजार, भिवानी
७. " कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा
८. " कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद
९. " चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ११८/५ वेदपुरा, गुड़गांव

मरणव्रत पर बैठे आर्य गिरफ्तार

हिसार, १४ अक्तूबर (निस)। ग्राम नलवा में गांधी जी की प्रतिमा को खण्डित करनेवालों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर अमरण अनशन करनेवालों ग्राम नलवा की न्याय संघर्ष समिति के प्रधान श्री धत्तरसिंह आर्य की गिरफ्तारी से मामले ने नया मोड़ ले लिया है। उन्हें पुलिस ने परसों रात गिरफ्तार कर लिया। श्री आर्य को भारतीय दण्ड संहिता की धारा ३०९ के अन्तर्गत गिरफ्तार किया गया है।

श्री आर्य के समर्थकों ने आरोप लगाया है कि पुलिस व जिला प्रशासन ने उनके आंदोलन से बौखला कर ही श्री आर्य को गिरफ्तार किया है। गत दो अक्तूबर से दोषियों को गिरफ्तारी की मांग लेकर श्री आर्य ने आमरणव्रत शुरु कर रखा था।

बताया जाता है कि पुलिस श्री आर्य के विरुद्ध आमरण अनशन करनेवाले बाबा शीलनाथ को भी गिरफ्तार करना चाहती थी, लेकिन शीलनाथ द्वारा क्षमा मांगने पर उन्हें छोड़ दिया गया। श्री आर्य की गिरफ्तारी के बाद अब गांधी मूर्ति कांड ने नया मोड़ ले लिया है।

(दैनिक ट्रिब्यून १५-१०-८८)

स्मैक का मतलब

मौत है।

(पृष्ठ २ का शेष)

जान पर खेल जाओ कदम को बढ़ाते रहो,
वही प्रह्लाद का आया जमाना।४

प्रह्लाद की तरह से चाह आपकी न खाली रहे,
जिसका होवे बाग फिर उसका वही माली रहे,
नवकाली माखी भगे न मालन तेरातासी रहे,
पात-पात डाली-डाली बाग की हरियाली रहे,
राजाओं का राजा फिर भारत का ही हाली रहे,
भारत का व्यक्ति फिर कोई भी ना ठाली रहे,
ठाली न रहेंगे फिर क्यों देश में कङ्गाली रहे,
संस्कृत विद्या पढ़ फेर न कुचाली रहे,
व्यभिचारी मिटे क्योंकि रोज देखाभाली रहे,
यज्ञ से करेंगे बारिश कोई नहीं नाखी रहे,
गउवें नहीं मारी जायें क्योंकि उनका पाली रहे,
चोर डाकू नहीं होंगे फिर क्यों ताला-ताली रहे,
मुल्ला की ना बांग रहे पोप की ना टाली रहे,
बचपन में ना होगी शादी फिर क्यों बेवा बाली रहे,
मिटे हिरनाकुश तो क्यों प्रह्लाद सवाली रहे,
लेकिन खबरदार कोई कहीं भी ना खाली रहे,

पृथ्वीसिंह जेलखाना।५

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४) रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 संख्या न०

ल ४८१२

[illegible] १३,०८१



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

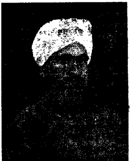
३० आश्विन २०४५ दि०

वर्ष १५, अंक ४६, २८ अक्तूबर, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

हरयाणा प्रदेश के निर्माता—

सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं० जगदेवसिंह सिद्धांती शास्त्री की ८८वीं जयन्ती सम्पन्न

(केदारसिंह आर्य कार्यालयाधीक्षक द्वारा)



प्रतिवर्ष की भांति आर्य-जगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं. जगदेवसिंह सिद्धांती शास्त्री की दशहरा (विजय दशवीं पर्व) पर २० अक्तूबर ८८ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मुख्य कार्यालय सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक में ८८वीं जयन्ती श्रद्धापूर्वक मनाई गई।

कार्यवाही प्रातः ९ बजे यज्ञ के साथ आरम्भ हुई। इसके बाद पं० तेजपाल, पं० जयपाल तथा ईश्वरसिंह तूफान सभा की भजनमण्डलियों ने वैदिक सिद्धांतों पर अपने मनोहर भजन सुनाये और सभा उपदेशक पं० अर्जुनदेव आर्य ने अपने साथी उपदेशकों की ओर से ईश्वर से प्रार्थना की कि उन्हें आयुभर श्री सिद्धांती जी द्वारा बताये गये वैदिक सिद्धांतों का प्रचार तथा प्रसार करने की शक्ति प्रदान करे। सभा के आदर्श महोपदेशक पं० सुखदेव शास्त्री ने इस अवसर पर श्री सिद्धांती जी की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उनका जन्म १९०० में एक साधारण किसान के घर में हुआ। जाट स्कूल रोहतक से मैट्रिक करके वे सेना में भर्ती होगये। उन पर जाट स्कूल में ही आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द का प्रभाव पड़ चुका था। अतः उन्होंने सैनिक सेवाकाल में शराब, मांस तथा अन्य सामाजिक बुराइयों का खण्डन तथा वैदिक सिद्धांतों का प्रचार किया। संस्कृत भाषा पढ़ने की इच्छा होते ही सेना की सेवा छोड़कर गुरुकुल मटिण्डू में आगये और वहां हिन्दी तथा गणित पढ़ाने के साथ संस्कृत पढ़ते रहे और पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर से शास्त्री की परीक्षा पास करके दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के चरणों में बैठक पर वैदिक सिद्धांत भूषण की परीक्षा दी। उसके बाद हरयाणा तथा उत्तरप्रदेश की सीमा पर गुरुकुल किरठल जि० मेरठ को अपना प्रचार केन्द्र बनाकर वैदिक सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के लिए उत्तरी भारत का भ्रमण किया। उन दिनों ग्रामों में जनता केवल भजन-मण्डलियों का ही प्रचार सुनने की अभ्यस्त थी। यदि कोई वेदों का विद्वान् व्याख्यान देने लगता तो जनता उठ जाया करती थी। श्री सिद्धांती जी ने ग्रामीण सरल भाषा में व्याख्यान देने की [illegible] करके वेदों का प्रचार उनमें आरम्भ किया। इनसे पूर्व ग्रामों में विवाह आदि संस्कार पौराणिक पण्डित ही करवाया करते थे। अतः वे गुरुकुल से अपना समय निकालकर वैदिक संस्कार करवाने ग्रामों में पैदल जाते थे और उन्हें जो दक्षिणा मिलती, उसे गुरुकुल में जमा करवा देते। उन्होंने पं० रघुवीरसिंह शास्त्री जैसे संस्कृत के विद्वान् तैयार किये, जो कि लोकसभा के सदस्य, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के उपकुलपति तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री के उच्च पद तक पहुंचे।

श्री सिद्धांती जी ने हरयाणा के आर्यसमाजों का सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से करवाकर उसका वार्षिक चुनाव भी जाट कालेज रोहतक आदि स्थानों पर करवाया [illegible] पंजाब सभा में हरयाणा के प्रतिनिधियों को सभा का अधिकारी बनवाया। इससे पूर्व केवल एक उपप्रधान पद ही हरयाणा को दिया जाता था। हरयाणा में आर्यसमाज के कार्य के विस्तार हेतु पंजाब सभा का उप-कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक में स्थापित करवाया।

श्री सुखदेव शास्त्री ने आर्यसमाज के आंदोलनों का उल्लेख करते हुए श्री सिद्धांती जी को इनका सूत्रधार बताया। श्री सिद्धांती ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह, शुद्धि आंदोलन, हिन्दी रक्षा आंदोलन; गोरक्षा आंदोलन तथा हरयाणा निर्माण आंदोलन में प्रमुख रूप में भाग लिया। श्री सिद्धांती जी ने अपने लोकसभा के चुनाव में ओ३म्-ध्वज का प्रयोग किया और आपत्ति करनेवालों को सुप्रीमकोर्ट में हराया। श्री सिद्धांती जी ने हरयाणा बनवाने के लिए अपने अन्य सहयोगियों सर्वश्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती, चौ० देवीलाल, प्रो० शेरसिंह, रघुवीरसिंह शास्त्री, म० भरतसिंह, कपिलदेव शास्त्री, मूलचन्द जैन आदि के साथ-साथ संघर्ष किया और १ नवम्बर, १९६६ को हरयाणा प्रदेश की लोकसभा में घोषणा होने पर 'जय हरयाणा' का सिंहनाद किया।

सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री ने श्री सिद्धांती जी की योग्यताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि पहले जाटों को शूद्र बताया जाता था। श्री सिद्धांती जी ने न्यायालय में उपस्थित होकर वेदशास्त्रों के प्रमाणों से सिद्ध किया कि जाट शूद्र नहीं, अपितु क्षत्रिय हैं।

इस अवसर पर वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह ने वैदिक सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के लिए सभा के उपदेशकों तथा कार्यकर्त्ताओं से सुझाव सुने और उन पर आचरण करने का आश्वासन दिया। यज्ञ शेष वितरण तथा शांतिपाठ के पश्चात् कार्यवाही समाप्त हुई।

तीसरी दुनिया में धूम्रपान से फेफड़े का कैंसर

वाशिंगटन डी० सी स्थित शोध संस्था 'वर्ल्ड वाच' के अनुसार तम्बाकू पीने से हर साल विश्व में कोई पच्चीस लाख लोगों की मौतें होती हैं। तम्बाकू पीनेवालों की मृत्यु ज्यादातर हृदय रोग, फेफड़े के कैंसर तथा वातस्फीति (एम्फीसेमा) से होती है। इन बीमारियों से मरनेवालों की संख्या एड्स (रोग प्रतिरोध शक्ति ह्रास), अकाल, युद्ध, आतंकवाद तथा मोटर दुर्घटनाओं से मरनेवालों से कहीं बहुत ज्यादा है, अकेले अमेरिका में ही, जहां तम्बाकू उद्योग में ३५ अरब डालर लगे हुए हैं, प्रतिवर्ष तम्बाकू सम्बन्धित बीमारियों से साढे तीन से पांच लाख लोगों की अकाल मृत्यु होती है। इसका मतलब है, प्रतिदिन १००० मौतें यानी तीन जम्बोजेट विमानों के गिरने से होनेवाली मौतों के बराबर।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सिगरेट को विश्वव्यापी महामारी घोषित किया है। इसके उपभोग में प्रतिवर्ष २.१ प्रतिशत की दर से वृद्धि हो रही है, जो कि विश्व की जनसंख्या वृद्धि दर से भी ज्यादा है। तम्बाकू पिछले ४५० वर्षों से दुनियां की संस्कृति और अर्थव्यवस्था का हिस्सा है। विश्व के कटिबन्धीय तथा समशीतोष्ण क्षेत्रों के १२० देशों में इसकी खेती होती है। विश्व की लगभग ४० प्रतिशत सिगरेटों का उत्पादन चार बहुराष्ट्रीय कम्पनियों फिलिप मारिस, आर० जे० रेनॉल्ड्स, ब्रिटिश-अमरीका टुबैको (बी० ए० टी०) तथा जर्मन संघीय गणराज्य की रूपर्ट रॉथमन्स द्वारा किया जाता है। शेष ६० प्रतिशत का उत्पादन चीन, जापान, रूस, फ्रांस, इटली तथा पूर्वी यूरोप की सरकारी कम्पनियों द्वारा किया जाता है।

विश्व में तम्बाकू से सम्बन्धित बीमारियों से हर वर्ष २५ लाख लोगों की मौतें होती हैं जो कि मृत्यु के अन्य कारणों में सबसे बड़ा है। तीसरी दुनियां के देशों में इन बीमारियों के बढ़ने का खतरा और भी ज्यादा बढ़ेगा, क्योंकि पश्चिमी देशों में सिगरेट कम्पनियों का धन्धा कम हो रहा है। वे इसकी भरपाई इन देशों में धूम्रपान के नये शौकीन ढूंढ कर करेंगी और इसके साथ ही फेफड़े के कैंसर जैसी बीमारियां बढेंगी।

तम्बाकू का धन्धा इतना घातक होने के बावजूद वह विश्व का सबसे ज्यादा मुनाफा कमानेवाला उद्योग है। अंकटाड (संयुक्त राष्ट्र व्यापार तथा विकास सम्मेलन) के मुताबिक दस वर्ष पहले ही चार खरब सिगरेटों के उत्पादन द्वारा यह उद्योग चालीस अरब डालर का धन्धा कर रहा था। अफसोस की बात यह है कि यह बीमारी बढ़ती ही जारही है। एक अरब से भी ज्यादा लोग इस समय पांच खरब से ज्यादा सिगरेटें एक या डेढ़ पैकेट प्रतिदिन के हिसाब से पी जाते हैं। बीस वर्ष पहले की अपेक्षा अब ७३ प्रतिशत ज्यादा सिगरेटों का उत्पादन हो रहा है। यदि धूम्रपान में अचानक किसी कारण से कमी नहीं आई तो इस सदी के अन्त तक सिर्फ फेफड़े के कैंसर से ही पचास प्रतिशत से ज्यादा लोग मरने लगेंगे। इन मौतों में से बहुत-सी ऐसे देशों में होंगी, जो इस समस्या से निपटने में बिल्कुल अक्षम हैं। सबसे ज्यादा नुकसान तीसरी दुनियां के देशों का होगा, जिनमें विश्व की ५४ प्रतिशत आबादी बसती है तथा जिनमे से अधिकांश न तो इसके बारे में कुछ कर सकने की स्थिति में हैं, न धूम्रपान के बारे में कोई सुविज्ञ निर्णय ले सकते हैं।

वर्तमान में तीसरी दुनियां के धूम्रपान करनेवाले विश्व की कुल तम्बाकू के पच्चीस प्रतिशत का उपभोग कर रहे हैं। पिछले दस वर्षों में विश्व में धूम्रपान में जो वृद्धि हुई है, उसके एक तिहाई की जिम्मेदारी इन्हीं देशों की है। इतना ही नहीं विकसित देशों में तो धूम्रपानविरोधी आंदोलन के बढ़ने तथा सख्त तम्बाकू नियन्त्रण नियमों के कारण वहां की कम्पनियां अन्य देशों, खासतौर से एशिया में नये बाजार तलाश करने को बाध्य हुई हैं। उनके प्रचार का निशाना युवा वर्ग तथा स्त्रियां हैं जो कि कई एशियाई देशों में परम्परागत रूप से पहले धूम्रपान नहीं करते थे।

विश्व-स्वास्थ्य संघ के सलाहकार ग्रगरी एन कोनोली कहते हैं—"सिगरेट उद्योग की योजना पूरब की स्त्रियों में सिगरेट की मांग पैदा करने की है। यदि उन्हें पूरब के देशों की एक करोड़ ऐसी स्त्रियों को धूम्रपान की ओर आकर्षित करने में सफलता मिल जाती है जो पहले ऐसा नहीं करती थीं, तो इससे पश्चिम यूरोप तथा उत्तर अमेरिका के सिगरेट छोड़नेवालों की कमी की भरपाई हो जाएगी।"

अमरीकी तम्बाकू कम्पनियां द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद तीसरी दुनियां के देशों को तम्बाकू का निर्यात पहले शांति के लिए खाद्य कार्यक्रम (पी० एल० ४८०) के अन्तर्गत करती थीं। इस कार्यक्रम के पहले पच्चीस वर्षों में अमेरिका ने कोई दस करोड़ डालर की तम्बाकू का निर्यात किया।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक हल्फदान मेहलर ने बतलाया कि उद्योगप्रधान देशों में तम्बाकू के उपभोग में १.१ प्रतिशत की कमी तथा विकासशील देशों में २.१ प्रतिशत की वृद्धि हो रही है। तम्बाकू के सौदागर इस बात पर कमर कसे हुए हैं कि वे विकासशील देशों को अपने सबसे बड़े सिगरेट बाजार में बदल दें। वे कहते हैं फेफड़े के कैंसर के महामारी के रूप में फैलने का खतरा तीसरी दुनियां के देशों में वास्तविक है, क्योंकि वहां धूम्रपान बढ़ रहा है। जिनेवा स्थित विश्व स्वास्थ्य संघ के धूम्रपान तथा स्वास्थ्य कार्यक्रम के समन्वयक डा० राबेर्तो मसीरोनी ने बतलाया "सारी दुनियां में हर साल फेफड़े के कैंसर के ६,००,००० नये प्रकरण दर्ज होते हैं और सन् २,००० तक यह संख्या बढ़कर बीस लाख तक पहुंच जायेगी।

(सप्रेस/थर्ड वर्ल्ड वर्क फीचर्स) लॉरिस बी अबुलेसिया

(विश्वमानव से साभार)

ऋषि-निर्वाण विशेषांक

प्रतिवर्ष की भांति सर्वहितकारी साप्ताहिक का दीपावली पर ऋषि-निर्वाण विशेषांक ७ नवम्बर को प्रकाशित होगा। इसमें ऋषि दयानन्द की जीवनी तथा उनके कार्यों पर विद्वानों के लेख तथा कवितायें प्रकाशित होंगी। आर्यसमाज के प्रचारार्थ उपयोगी होंगी।

—व्यवस्थापक

कपाल मोचन मेले पर वेदप्रचार का आयोजन

मेला कपालमोचन जि० अम्बाला में कार्तिक पूर्णिमा ७ से ९ नवम्बर तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से वेदप्रचार का शिविर लगाया जावेगा। सभा के भजनोपदेशक पं. विद्याभूषण जी आर्य इसके प्रबन्ध हेतु आर्यसमाजों का भ्रमण कर रहे हैं। आर्यसमाजों से निवेदन है कि उन्हें सहयोग देने की कृपा करें।

—रघुबीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

हिन्दी सत्याग्रह को टिकैत का समर्थन

—विशेष संवाददाता

नई दिल्ली, २६ अक्तूबर। किसान यूनियन के नेता महेन्द्रसिंह टिकैत ने हिन्दी सत्याग्रह का समर्थन किया है। केन्द्रीय लोक सेवा आयोग के शाहजहां मार्ग स्थित मुख्यालय पर सत्याग्रही पिछले सत्तर दिन से धरने पर बैठे हैं।

सत्याग्रह संयोजक पुष्पेंद्र चौहान ने कहा कि श्री टिकैत सत्याग्रह स्थल पर स्वयं आनेवाले थे, लेकिन उनके कार्यक्रम ने कल मोड़ ले लिया।

श्री टिकैत ने भारतीय किसान यूनियन का शिष्टमण्डल लोक सेवा आयोग मुख्यालय पर भेजकर सत्याग्रहियों के प्रति समर्थन व्यक्त करने का आश्वासन संगठन के सचिव घटोत्कच को दिया।

घटोत्कच ने कहा कि श्री टिकैत ने कहा—जाओ सबसे कह दो मैं उनके साथ हूं।

सत्याग्रह केन्द्रीय लोक सेवा आयोग की सिविल परीक्षाओं में जैसे आई० ए० एस० और आई० पी० एस० आदि में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करने के लिए किया जारहा है। यह अखिल भारतीय भाषा संरक्षण संगठन ने शुरु किया है।

संगठन का कहना है कि अंग्रेजी की अनिवार्यता के कारण चौसठ प्रतिशत से ज्यादा छात्र जो अन्यथा प्रतिभाशाली होते हैं और ज्यादातर गरीब किसान घरों के ग्रामीण लड़के हैं, इन परीक्षाओं में पिछड़ जाते हैं।

संगठन का कहना है कि अंग्रेजी की अनिवार्यता की कोई जरूरत नहीं है। इसके स्थान पर हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं का उपयोग होना चाहिए।

श्री टिकैत ने बताया कि वे सत्याग्रह को सक्रिय सहयोग देने की विधि पर विचार करेंगे। इस समस्या पर किसानों को जागृत करके किया जायेगा। यह जाहिर है कि अंग्रेजी की अनिवार्यता किसान को नापसन्द है और उसके कारण होनेवाली क्षति को दूर करना ही चाहिए।

श्री टिकैत ने इस बात की सराहना की और उसे काफी बहादुराना बताया कि सत्याग्रहियों ने अनिश्चितकाल तक, जब तक मांगें पूरी नहीं हों, धरना जारी रखने का मन बना रखा है।

(नवभारत टाइम्स से साभार)

हरयाणा में संस्कृत की उपेक्षा

—जयप्रकाश शास्त्री, कैथल

संस्कृत दिवस व अन्य अवसरों पर गणमान्य लोगों द्वारा संस्कृत के गौरव व महत्ता का बखान किया जाता है, लेकिन हालत इसके विपरीत है। स्कूल, कालेज में नयी शिक्षा-नीति में इसको नाम का स्थान दिया गया है। ऐसी ही दयनीय स्थिति संस्कृतशिक्षकों की है। सैकड़ों प्रशिक्षित-अप्रशिक्षित संस्कृत अध्यापक बेकार हैं। इसका मुख्य कारण सरकार द्वारा संस्कृत की उपेक्षा है।

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैथल में करीब दो हजार विद्यार्थी हैं। विद्यालय में छठी से बाहरवीं तक कक्षायें लगती हैं। प्रत्येक कक्षा में पांच-छह सेक्शन हैं, इतने बड़े विद्यालय में केवल एक ही संस्कृत अध्यापक है। जबकि संस्कृत कक्षा सातवीं से शुरु होती है। एक अध्यापक होने से अन्य विषय के अध्यापकों पर इसका अनावश्यक भार लादा जाता है, जिससे न तो संस्कृत और न ही विद्यार्थियों से न्याय हो पाता है। विद्यालय में संस्कृत प्राध्यापक का पद न होने से ११-१२ के विद्यार्थियों को तो इस विषय को बिना पढ़े रहना पड़ता है। पता चला है कि विद्यालय के ही मुखिया द्वारा कई बार संस्कृत शिक्षकों के अतिरिक्त पद देने के लिए विभाग को लिखा गया, लेकिन विभाग अभी गहरी नींद से सोया हुआ है। जिला कुरुक्षेत्र में कई ऐसे हाई स्कूल हैं, जिनको अपग्रेड हुए कई साल होगये हैं, पर संस्कृत शिक्षक नहीं मिला है।

(दैनिक ट्रिब्यून २७-१०-८८)

अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त की जाये

चरखी दादरी, २६ अक्तूबर (दयानन्द)। अंग्रेजी की अनिवार्यता हरयाणा के छात्रों को शिक्षा के उच्च स्तर पर पहुंचने के मार्ग में बहुत बड़ी बाधा है। अधिकांश विद्यार्थी अंग्रेजी विषय उत्तीर्ण न कर पाने के कारण पढ़ाई बीच में छोड़ जाते हैं। बाकी हिन्दी-भाषी राज्यों उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश किसी भी राज्य में अंग्रेजी अनिवार्य विषय नहीं है। इसे ऐच्छिक विषय के रूप में ही पढ़ाया जाता है। यहां तक कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में भी अंग्रेजी अनिवार्य विषय न होकर ऐच्छिक विषय है। चौ० देवीलाल ने भी हरयाणा दिवस पर अंग्रेजी को हरयाणा में ऐच्छिक विषय घोषित करना चाहिए, जिस से हरयाणा के छात्र अन्य प्रांतों की तरह बिना अंग्रेजी की बाधा के उच्च शिक्षा में जा सकें। चौ० चरणसिंह ने भी अपने प्रधानमन्त्रीकाल में संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम को बढ़ावा दिया। इस आशय की अपील छात्र पंचायत, छात्र आंदोलन समिति के संयोजक एवं विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय मन्त्री श्री ओमप्रकाश धनखड़ ने एक पत्र में मुख्यमन्त्री से की है।

श्री धनखड़ ने कहा कि सरकार ने समस्त प्रदेश के २ लाख छात्रों के सात हजार से अधिक प्रतिनिधियों के निर्णय पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। ज्ञातव्य है कि १३ अक्तूबर को हिसार में छात्र पंचायत ने समस्त प्रदेश के सात हजार छात्रों ने भाग लिया था, जिसमें अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करने छात्र संघ के चुनाव प्रत्यक्ष कराने, गाइडों के मूल्य नियन्त्रित करने, बाढ़पीड़ित छात्रों की फीस माफ करने, विशेष छात्र बसें चलाने के साथ-साथ आप्रेशन ब्लेक बोर्ड एवं व्यावसायिक शिक्षा को प्रभावी ढंग से लागू करने की मांग की गई थी।

(दैनिक विश्व मानव से साभार)

संस्कृत को उचित स्थान देने पर जोर

—कार्यालय प्रतिनिधि द्वारा

चण्डीगढ़ २५ अक्तूबर। उत्तर भारत संस्कृत विकास परिषद् ने सरकार से पंजाब, हरयाणा, हिमाचल प्रदेश और चण्डीगढ़ में संस्कृत को विभिन्न संस्थानों में उचित स्थान देने तथा इस भाषा से जुड़े लोगों की समस्यायें शीघ्र दूर करने की मांग की है।

स्थानीय अग्रसेन भवन में आज सम्पन्न हुए वार्षिक सम्मेलन में उक्त मांगों सहित कई मामले उठाये गये। सम्मेलन में तीनों राज्यों व संघीय क्षेत्र से अनेक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

परिषद् ने प्रस्ताव पारित करके मांग की है कि पंजाब, हरयाणा, हिमाचल प्रदेश और चण्डीगढ़ के सभी मिडल एवं हाई स्कूलों में संस्कृत अध्यापक व सीनियर सेकेंडरी स्कूलों में संस्कृत प्राध्यापकों के पद सृजित किये जायें। रिक्त पदों पर संस्कृत शिक्षकों की नियुक्तियां शीघ्र की जायें। परिषद् ने संस्कृत अध्यापकों को मुख्याध्यापक तथा प्राध्यापक के रूप में पदोन्नतियां दिये जाने के अवसर प्रदान करने की मांग भी की है।

एक अन्य प्रस्ताव में परिषद् ने तीनों राज्यों में संस्कृत अकादमियां स्थापित करने, चण्डीगढ़ में केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, आयुर्वेदिक कालेज तथा आयुर्वेदिक अस्पताल स्थापित करने की मांग की। चण्डीगढ़ में ज्योतिष के अनुसंधान के लिए शोधकेन्द्र स्थापित करने और देशभर की डिसपेंसरियों व अस्पतालों में आयुर्वेदिक चिकित्सकों की नियुक्तियां करने और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय का नाम बदलकर संस्कृत विश्व विद्यालय रखे जाने की मांग भी की गई।

(दैनिक ट्रिब्यून से साभार)

सरकार के साये में—

सुखराली गांव में ठेकेदार व पुलिस की मनमानी

— महेन्द्र शास्त्री, सभा उपदेशक एव संयोजक शराबबन्दी संघर्ष समिति

सुखराली गांव में नये बाईपास पर शराब के ठेके पर १६ अक्तूबर से धरना प्रारम्भ किया गया था। लेकिन ठेकेदारों द्वारा लाखों रुपया पुलिस को भेंट चढ़ा दिया गया। जिससे पुलिस ने २० अक्तूबर को शांति-प्रिय धरने पर बैठे लोगों को जबर्दस्ती धक्के मारकर वैन व मेटाडोर में ठोंसा और कुछ लोगों को लाठियों से मारकर भगा दिया। टेंट वा अन्य सामान आदि को तुरन्त तहस-नहस कर दिया और ऊपर से सभ्य व्यक्तियों पर अभद्र गालियों की बौछार कर डाली। थाने में जाकर धमकी मारी गई कि या तो धरना खत्म करें अन्यथा दूसरे मार-पीट आदि के केसों में आपको फंसा कर सीधा कर दिया जावेगा। इस के लिए ठेकेदार के एक रिश्तेदार को तैयार कर दिया गया कि इसको चोट मारी गई तथा इससे कहलावा गया कि १० व्यक्तियों ने मार-पिटाई की है।

अंग्रेज सरकार की तानाशाही को कांग्रेस ही नहीं, बल्कि लोकदल सरकार भी बड़ी बखूबी से निभा रही है। अब भी लोक व राष्ट्रहित में किये जानेवाले आंदोलनों को पैसे के बल पर पूंजीपति गुंडावाहिनी और पुलिस का उसी प्रकार प्रयोग किये जारहे हैं, लेकिन ध्यान रहे अन्याय से टकराकर एक दिन नष्ट हो जावेगा। श्री अजीतसिंह एडवोकेट तथा अन्य ठेकेदारों ने इलाके में जातिवाद का अपने निजी स्वार्थ के लिए जहर घोलने का भरसक प्रयत्न किया। अहीर बिरादरी के व्यक्तियों को जो हमें सहयोग दे रहे थे, उनको अपने स्वार्थ के लिए कहा गया कि यह तो जाटों ने अहीरों के ठेके पर धरना दिया है। इन तथाकथित एडवोकेट साहब को पता होना चाहिए कि अब तक हमने ९० प्रतिशत जाट ठेकेदारों के शराब के ठेके बन्द किये हैं। पर उन्होंने अपने निजी स्वार्थ के लिए इतने घटिया हथकण्डों का प्रयोग नहीं किया कि जाटों के ठेके क्यों बन्द करवाये जारहे हैं। क्या यह न्याय की दुहाई देनेवाले एडवोकेट साहब बतला सकेंगे कि इन शराब ठेकों से जो लाखों करोडों की लूट आप मचा रहे हैं, उसका कुछ हिस्सा शोषित पीड़ित गरीब आपके समर्थन में सर फुड़वानेवाले अहीर भाइयों को देंगे? हां इतना तो हमने इस धरनें के दौरान अवश्य देखा कि अहीर बिरादरी के सेकड़ों नौजवानों को सस्ती और मुफ्त शराब (जहर) पिलाकर बर्बादी के रास्ते की तरफ जरूर धकेल दिया गया। यह पूंजीपति व्यक्तियों का षड्यन्त्र होता है कि जाति सम्प्रदाय धर्म-प्रांतवाद के नाम से लोगों को लड़ाना और शोषण करके पूंजी का सग्रह करना। ऐसे जातिवादी व्यक्तियों से हमें सदैव सावधान रहना होगा।

मेरे अनेक सहयोगियों के माध्यम से मुझे भी यह धमकी दी गई कि हमारे वा हमारे रिश्तेदारों के पास नौ पिस्तौलें (रिवाल्वर) हैं। हम धरना दिलवाने पर उन्हें ठीक कर देंगे। लेकिन इस पढ़े-लिखे भाई अजीतसिंह एडवोकेट को यह पता नहीं कि संघर्ष क्या कभी तोपों और गोलियों से रोका जा सकता है। कितने दिन तक इस मरणासन्न पूंजीवादी व्यवस्था के साथ चिपके रहेंगे, आखिर सरेण्डर करना ही पड़ेगा। दूसरा ये न्यायवादी व्यक्ति एडवोकेट साहब सुखराली गांव में हर घर-घर में जाकर यह कहते हैं कि हम तुम तो पड़ोसी भाई हैं, आवा-जाई है, आप अपने लड़कों, महिलाओं को ना भेजें। आपको ध्यान रहे इस संघर्ष में नौजवान व महिलायें ही सक्रिय थे। हम यह समझ पाये कि सुखराली गांव की आपसी सत्ता भूख की राजनीति ने युवकों और महिलाओं को गहरे अन्धकार में धकेल दिया है, लेकिन कब तक। आखिर युवकों को अपने कर्तव्य के सही मार्ग को अपनाकर वैचारिक संघर्ष शुरु करना ही पड़ेगा।

धरने पर आचार्य सत्यप्रिय तिजारा, स्वामी प्रेमानन्द कन्हई केरलावा, चौ० बलजीतसिंह, रमेशकुमार, महताबसिंह, ज्ञानसिंह, लहनासिंह, सुरेशकुमार, नरेशकुमार, बहादुरसिंह, राजेशकुमार, कृष्णकुमार, राजकपूर, ब्रह्मानन्द, शमशेरसिंह, रामनाथ, कुलदीपसिंह, मुकेश, करनैलसिंह तथा भारतीय युवा जागृति परिषद् झाड़सी के प्रधान पर्वतसिंह के साथ नौजवानों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इलाके के सहयोग स्वरूप आर्यसमाज जैकमपुरा से वेदप्रकाश मन्त्री व जगदीश आर्य, सुरेन्द्रसिंह, जनौला से मा० सज्जनसिंह व दयानन्द, वजीराबाद से छत्तरसिंह बोहरा व गाडौली से वेदप्रकाश आदि लोगों ने भाग लिया। एस० यू० सी० आई० की युवक शाखा, डी० वाई० ओ० गुडगांव मण्डल के कार्यकर्त्ताओं का सहयोग निरन्तर जारी रहा। यह युवा संगठन सांस्कृतिक व सामाजिक बदलाव हेतु हरयाणा प्रांत में अहम् भूमिका अदा कर रहा है।

इतना ही नहीं कि यह शराब का ठेका बोर्डर का होने के बावजूद आबकारी विभाग व पुलिस की मिलीभगत के कारण सुखराली गांव की सीमा में खोला गया है, बल्कि जिस जमीन पर यह ठेका खोला हुआ है, उस जमीन पर भी इन ठेकेदारों ने अवैध कब्जा कर रखा है, जिसमें विभागीय व्यक्ति भी शामिल हैं। गांव के नौजवानों ने यह बतलाया कि हमारे यहां न तो लड़कियों का अलग स्कूल है और ना ही स्कूल खेलने का मैदान है। अतः हम यह चाहते हैं कि गांव की इस चार-पांच एकड़ अवैध कब्जेवाली जमीन पर से ठेका हटाकर शीघ्र ही कम से कम एक स्टेडियम अवश्य बनाया जावे, ताकि उसमें सुखराली वा अड़ोस-पड़ोस के गांववाले युवक वा युवती खेलकर स्वास्थ्य बना सकें। यदि सरकार व प्रशासन ने इस ओर शीघ्र ध्यान न दिया तो लोग पुनः शीघ्र भविष्य में संगठित होकर संघर्ष करेंगे।

वेदप्रचार सप्ताह आदि के कार्यक्रम

आर्यसमाज मीरपुर जि० महेन्द्रगढ़		३१ से अक्तूबर १ नवम्बर
आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद (ऋषि-निर्वाण दिवस)		६ ,,
,, ,, ,, रोहतक ,,	,,	६ ,,
,, ,, ,, गुडगांव (भीमनगर)	,,	४ से ६ ,,
,, ,, ,, दिल्ली प्रदेश	,,	६ ,,
आर्यसमाज चरखी दादरी जि० भिवानी	,,	६ ,,
कुरुक्षेत्र गोशाला कैथल जि० कुरुक्षेत्र		१५ से १७ ,,
आर्यसमाज कृष्ण कालोनी भिवानी		१८ से २० ,,
,, पलवल शहर जि० फरीदाबाद		१४ से २० ,,
,, बड़ा बाजार पानीपत जि० करनाल		१८ से २० ,,
,, कोसली जि० रोहतक		१९ से २१ ,,
मेला कपालमोचन जि० अम्बाला		२१ से २३ ,,
आर्यसमाज सेहकी जि० महेन्द्रगढ़		२६-२७ ,,
,, सिखावपुर तोताहेड़ी जि० महेन्द्रगढ़		२५ से २७ ,,

जो आर्यसमाज नवम्बर मास में अपना कार्यक्रम रखना चाहें, वे तुरन्त पत्र-व्यवहार करके अपनी तिथियां सुरक्षित करवा लेनी चाहिए, ताकि सभा को उपदेशक तथा भजनमण्डलियों का प्रबन्ध करने में सुविधा रहे।

—रघुबीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

शराब हटेगी तो

देश बचेगा।

नशाबन्दी के लिए युवकों का हस्ताक्षर अभियान : मुख्यमन्त्री को ज्ञापन देंगे

पंचकूला, १७ अक्तूबर (एस)। हरयाणा में नशाबन्दी के लिए हरयाणा युवा नशाबन्दी समिति द्वारा जो कार्यक्रम चलाया जारहा है, उसके अन्तर्गत अम्बाला जिले में भी पूरे जोर-शोर से यह कार्यक्रम चल रहा है।

अम्बाला जिला समिति के प्रधान श्री राजेश भारद्वाज ने यहां एक विशेष मुलाकात में बताया कि पूरे जिले में नशाबन्दी अभियान चल रहा है। जिले की नशाबन्दी समिति में सात सदस्य हैं और हर ब्लाक से एक सदस्य इसमें लिया गया है। अभियान के अन्तर्गत जिले के सभी स्कूल, कालेज और औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में युवकों को नशाबन्दी से प्रेरित करने का काम पूरा कर लिया गया है। अब व्यक्तिगत सम्पर्क का अभियान चल रहा है।

श्री भारद्वाज ने बताया कि तीसरे चरण में शराब के ठेकों पर धरना दिया जायेगा। इस अभियान के अन्तर्गत पंचकूला के निकटवर्ती कस्बे रामगढ़ में लगभग १५० युवकों ने नशे से दूर रहने की शपथ ली है। जिले के रायपुर रानी, यमुनानगर, नरायणगढ़ और मुस्तावाद में भी सेंकड़ों युवक नशे से दूर रहने का संकल्प कर चुके हैं। उन्होंने बताया कि रायपुर रानी के पास थराना गांव में एक नशाबन्दी शिविर भी लगाया गया था, जिसमें भारी संख्या में युवकों के साथ-साथ अम्बाला के उपायुक्त भी शामिल हुए।

श्री भारद्वाज के अनुसार पूरे हरयाणाभर में नशाबन्दी अभियान के अन्तर्गत लोगों से एक ज्ञापन पर हस्ताक्षर करवाये जारहे हैं। यह काम २३ अक्तूबर तक पूरा हो जायेगा और १ नवम्बर को यह ज्ञापन हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री देवीलाल को सौंप दिया जायेगा। ज्ञापन में नशाबन्दी को पूरा करने और शराब के ठेकों पर अंकुश लगाने पर जोर दिया गया है।

उनका कहना है कि इस काम में उन्हें जिले की सभी पंचायतों, स्वैच्छिक संस्थाओं, विकास अधिकारियों और तहसीलदारों से व्यापक सहयोग मिल रहा है।

ग्राम सिसाय बोलान के लोगों का शराबबन्दी हेतु साहसिक कदम

गतवर्षों की भांति इस वर्ष भी हरयाणा सरकार ने प्रांत के सबसे बड़े गांव सिसाय में शराब का ठेका ७ लाख का उठाया। ठेके की जगह पाना बोलान में श्री रघुवीर सुपुत्र श्री शेरसिंह के मकान में होती थी। ठेकेदार किराया ६ हजार रुपये वार्षिक देता था। लेकिन लोग गांव के बीच में ठेका होने से बुरी तरह से बर्बाद हो रहे थे। छोटे-छोटे बच्चे भी शराब पीने लग गये, आये दिन झगड़ा होता रहता था। इस वर्ष इसी पाने के साहसिक नवयुवकों तथा आर्यों ने इसका विरोध किया कि गांव के बीच में किसी भी मूल्य पर ठेका नहीं खुलने देंगे। मकान मालिक भी लालच में आकर मकान की जगह ठेके के लिए देने को तैयार हो गया। लेकिन भरतसिंह आर्य, बलराज, किशनलाल, चन्दगीराम आदि ने मकान मालिक को साफ कह दिया कि अगर इस बार ठेका यहां खुला तो मकान को आग लगा देंगे और लठ लेकर आगये। पूरे संघर्ष के बाद ठेका पाना बोलान से दो मील तथा सिसाय कालिरावन से एक मील दूर भाटला के रास्ते पर गांव से दूर चला गया। अब लोगों का कहना है कि हमें बहुत लाभ होगया। अब इतनी गुण्डागर्दी गांव में नहीं है। देर पर दुरुस्त सिसाय के लोग इस कार्य के लिए बधाई के पात्र हैं।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, सभा उपदेशक

आर्यसमाज गन्नौर शहर का उत्सव संपन्न

आर्यसमाज गन्नौर शहर का ३१वां वार्षिकोत्सव १२ अक्तूबर से १६ अक्तूबर, ८८ तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता पं० जयदेव जी अतोईवाले ने की। महात्मा रामकिशोर जी महाराज द्वारा वेदप्रवचन हुए। इस उत्सव पर वेदपाठी गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली के ब्रह्मचारी, स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज, महात्मा प्रेमभिक्षु जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज, श्री यशपाल, श्रीमती शांतिदेवी अग्निहोत्री, पं० लक्ष्मनसिंह, बेमोल, भजनमण्डली आदि ने ओजस्वी विचार वेद की शिक्षाओं पर रखे। देशधर्म एवं समाज की उन्नति के लिए सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जन-चेतना जागृत की। शराब, दहेज, आपसी फूट, जाति-पाति के विरुद्ध एकजुट होकर संघर्ष करने पर बल दिया।

—प्रेमनाथ आहूजा, प्रचारमन्त्री

नशाबन्दी के लिए शांति मार्च

भिवानी, २५ अक्तूबर (निस)। भिवानी जिले के ग्रामीण युवाओं ने पूरे प्रांत में पूर्ण नशाबन्दी लागू करने की मांग करते हुए यहां एक शांति मार्च का आयोजन किया। मार्च का नेतृत्व युवा नशाबन्दी समिति भिवानी ने किया था। शांति मार्च स्थानीय नेहरू युवा केन्द्र से आरम्भ होकर लघु सचिवालय तक शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुआ, जिसमें युवा नशा सेवन के विरुद्ध तख्तियों पर नारे लेकर चल रहे थे। प्रदर्शनकारियों ने उपायुक्त भिवानी को एक लिखित ज्ञापन भी दिया, जिसे नगराधीश भिवानी ने प्राप्त किया। जिला युवा नशाबन्दी समिति भिवानी के संयोजक श्री सत्येन्द्र आर्य ने बताया कि समिति इस बुराई को मिटाने के लिए राज्य स्तर पर प्रदर्शन की भी तैयारी करेगी।

(दैनिक नवभारत टाइम्स)

होली मोहल्ला करनाल में वेदसप्ताह संपन्न

आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल में १२ से १६ अक्तूबर तक वेदप्रचार सप्ताह धूमधाम तथा समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। स्थानीय रामेश्वरदास आर्य कन्या उच्च विद्यालय तथा आर्य नर्सरी स्कूल की छात्राओं ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया।

सभा की ओर से पं० चिरंजीलाल जी ने १२ से १४ अक्तूबर तक अपने प्रभावशाली भजनों द्वारा सभी को मुग्ध कर दिया। प्रातःकाल यज्ञ पर अनेक नरनारियों ने यज्ञोपवीत धारण किये और दुर्व्यसन परित्याग करने का संकल्प किया।

—जसवन्तसिंह प्रधान

ग्राम काकड़ोली हुकमी की पंचायत का सराहनीय पग

ग्राम काकड़ोली हुकमी जि० भिवानी की पंचायत ने अपनी एक बैठक में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास किया गया है कि जो व्यक्ति ग्राम में शराब पीयेगा, उस पर २५) तथा शराब बेचनेवाले पर ५१) जुर्माना तथा कानूनी कार्यवाही की जावेगी।

ग्राम में कन्याओं के लिए उच्च विद्यालय खुलवाने के लिए हरयाणा के मुख्यमन्त्री को ३ लाख रुपये संग्रह करके दिया गया है। सरकार इस राशि को तीन गुणा करके विद्यालय भवन बनवा देगी।

ग्राम की पांच गलियां भी पक्की करने का प्रस्ताव किया गया है।

—अजीतसिंह शास्त्री एम०ए०

हरयाणा ग्राम पंचायत चुनाव में विजयी शराबबन्दी समर्थक सरपंचों की सूची

पतांक से आगे—

१२६. श्री दुलीचन्द शर्मा सेवा-निवृत्त विकास अधिकारी सरपच ग्राम मुण्डिया खेड़ा जि० महेन्द्रगढ़
१३०. ,, सत्यवीर एडवोकेट सरपंच ग्राम चन्देनी तह० दादरी जि० भिवानी
१३१. ,, मांगेराम सरपच ग्राम काकडोली हुकमी ,,

(क्रमशः)

आर्यसमाज तथा अन्य सामाजक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने निकट के ग्रामों के उन सरपंचों के नाम जो शराब का सेवन नहीं करते हैं, लिखकर शीघ्र भेजने का कष्ट करे, ताकि उनके नाम इस सूची में प्रकाशित हो सके।

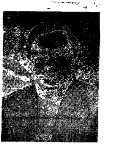
—सम्पादक



चौ० शेरसिंह
ग्राम बमाका, पलवल



चौ० आरामसिंह
ग्राम दघौला, पलवल



श्री सुरेन्द्रसिंह पूनिया, प्रधान आर्यसमाज जींद शहर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा मध्यप्रदेश में वेदप्रचार

आर्यसमाज चिचोली जिला बेतुल में १६ से २० अक्तूबर तक रामलीला मैदान में वेदप्रचारार्थ उत्सव किया गया, जिसमें स्वामी ओमानंद जी महाराज के ओजस्वी भाषण हुए और प. चिरंजीलाल के क्रांतिकारी भजनों द्वारा जनता को काफी उत्साह मिला। प. सत्यपाल सरल तथा श्री सुन्दरपाल जी के भी भजन हुए। स्वामी दिव्यानन्द जी द्वारा यज्ञ पर प्रकाश डाला गया। हरयाणा सभा को १००० रु० दान दिया।

संस्कृत भाषा पर सरकारी कुठाराघात

दिल्ली २२ अक्तूबर : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, पं० विमलदेव भारद्वाज और पं. रामरतन शास्त्री ने आज एक सयुक्त वक्तव्य में कहा कि सेंट्रल बोड आफ सेकेण्ड्री एजुकेशन १७वीं इन्द्रप्रस्थ एस्टेट नई दिल्ली-२ के चेयरमैन फादर कुन्नुकल ने दिनांक १६-६-८८ के आदेशानुसार संस्कृत भाषा को त्रिभाषा सूत्र से निकाल देने का आर्डर दिया है, जो कि सारे देश में लागू होगा।

संयुक्त वक्तव्य में कहा गया है कि देववाणी संस्कृत ही ऐसी भाषा है जो उत्तर से लेकर दक्षिण तथा पूर्व से लेकर पश्चिम तक समूचे देश में कर्मकांड और संस्कार के लिए बहुसंख्यकों की मान्य भाषा है, जो सांस्कृतिक व धार्मिक सूत्र में समूचे बहुसंख्यक समाज को पिरोये हुए है। इस अन्यायपूण आदेश के द्वारा देश की इस प्राचीनतम भाषा संस्कृत को पाठ्यक्रम से हटाना देश की बहुसंख्यक जनता पर कुठाराघात है।'

स्वामी जी ने कहा—आज से एक वर्ष पूर्व संस्कृत के विद्वानों का एक शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी और तत्कालीन मानव संसाधन विकासमन्त्री श्री नरसिंहराव से मिला था। उस समय श्री नरसिंहराव ने आश्वासन दिया था कि संस्कृत भाषा के विषय में देशभर के विद्वानों से विचार-विमर्श करने के पश्चात् अन्तिम निर्णय "आप लोगों की इच्छानुसार" ही किया जायेगा। अतः बिना किसी प्रकार का विचार-विमर्श किये केन्द्रीय बोर्ड के अध्यक्ष फादर कुन्नुकल ने अपने इस दुर्भाग्यपूर्ण आदेश को जारी करके देशभर के संस्कृत विद्वानों तथा भारत के बहुसंख्यक समाज को भारी ठेस पहुंचाई है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने चेतावनी देते हुए कहा कि संस्कृत भाषा के प्रति इस अपमानपूर्ण निर्णय के विरुद्ध आर्यसमाज देशव्यापी आंदोलन करेगा और बड़े से बड़ा बलिदान भी यदि देना पड़े तो वह तैयार है। उन्होंने देशभर की समस्त आर्यसमाजों, संस्कृत संगठनों तथा समस्त हिन्दू संगठनों से इस अन्याय के प्रतिकार के लिए हर प्रकार से तैयार रहने की अपील की।

वक्तव्य में कहा गया है कि एक तरफ तो हमारी सरकार संस्कृत के विकास पर लाखों रुपया खर्च कर रही है और दूसरी ओर इस प्रकार के दुर्भाग्यपूर्ण आदेश जारी करवाकर हमारी धार्मिक भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर रही है। केन्द्रीय सेकेण्ड्री बोर्ड के स्कूलों में छठी कक्षा से बारहवीं कक्षा तक के छात्रों को अंग्रेजी तथा हिन्दी के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में से किसी एक भाषा को पढ़ने का अधिकार दिया गया है, जिसमें संस्कृत भी सम्मिलित है। पन्द्रह भारतीय भाषाओं में संस्कृत का ११वां स्थान है। अतः संस्कृत का पाठ्यक्रम से हटाया जाना संविधान की सूची में दी गई सुविधा का भी स्पष्ट उल्लंघन तथा देश के संविधान का अपमान है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा—जल्दी ही संस्कृत रक्षा समिति की बैठक बुलाकर इस तानाशाही आदेश को रद्द कराने के लिए संगठित मोर्चा बनाया जायेगा। इससे पूर्व संस्कृत रक्षा समिति का एक शिष्टमण्डल जल्दी ही प्रधानमन्त्री तथा केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मन्त्री से मिलकर इस विषय में अन्तिम निर्णय करेगा।

शराब पीना सामाजिक अभिशाप है।

वेद वेदांग पुरस्कार एवं वेदोपदेशक पुरस्कार १९८९

आर्यसमाज सांताक्रुज द्वारा आगामी जनवरी मास १९८९ में निम्न पुरस्कारों से विद्वानों को सम्मानित किया जायेगा—

१—वेद वेदांग पुरस्कार

जिस विद्वान् ने जीवनपर्यन्त वेद वेदांगों का अनुसंधान एवं ग्रन्थ लिखे हों, उन्हें वेद वेदांग पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा। जिसकी पुरस्कार राशि २१०००) होगी।

२—वेदोपदेशक पुरस्कार

वेद वेदांगों के अनुसंधानकर्त्ताओं के अतिरिक्त जिस विद्वान् ने आर्यसमाज के उपदेशक, भजनोपदेशक अथवा कार्यकर्त्ता के रूप में हो जीवनपर्यन्त सेवा की हो। पुरस्कार की राशि ११०००) होगी।

उपरोक्त पुरस्कार राशि के अतिरिक्त पुरस्कृत किये जानेवाले विद्वान् को अभिनन्दन-पत्र, शाल एवं रजत ट्राफी से भी सम्मानित किया जायेगा।

उपरोक्त पुरस्कार हेतु आर्यसमाज सांताक्रुज बम्बई-५४ योग्य विद्वानों के प्रस्ताव को आमन्त्रित करती है। जो आर्य पुरुष किसी विद्वान् का नाम उपरोक्त पुरस्कार हेतु प्रस्तावित करना चाहते हैं, वे विद्वानों के जीवन परिचय, कार्य एवं लिखे गये ग्रंथों की सूची आदि सहित विस्तृत पत्र ३० नवम्बर, ८८ तक भेजने की कृपा करें। जो विद्वान् अपने नाम का स्वयं प्रस्ताव करेंगे, वे अयोग्य माने जायेंगे।

—विमलस्वरूप सूद, महामन्त्री आर्यसमाज सांताक्रुज बम्बई-५४

श्री जीतु व आर्यसमाज ग्राम कासण्डी ने महात्मा के प्राण बचाये

कई वर्ष से वानप्रस्थी महानन्द जी आर्यसमाज कासण्डी जि० सोनीपत में परोपकार रत हैं। ४ सितम्बर को प्रातःकाल अचानक वानप्रस्थी जी को मल व मूल का बन्धा पड़ गया। असह्य पीड़ा के कारण उन्होंने वृद्ध आर्य श्री जीतु को बुलाया। वानप्रस्थी जी ने कहा श्री टेकचन्द जी ग्राम कुराड़ भाग्यवान् आर्य हैं, मुझे शीघ्र उनके पास पहुंचा दो, वे मुझे ठीक करवा देंगे। भक्त फूलसिंह जी के चरणों में शिक्षित श्री जीतु ने उत्तर दिया—आपकी सेवा से ग्राम का आबालवृद्ध प्रभावित है, फिर तो हम भाग्यवान् नहीं रहेंगे। तुरन्त अपने दोनों सुपुत्रों को बुलाया। सुनते ही दोनों उदाहरणीय युवकों ने एक स्वर में कहा—हमारा कितना भी पैसा लग जाये, हम महात्मा जी की चिकित्सा करायेंगे।

तत्काल राज हस्पताल सोनीपत में प्रविष्ट कराया। ग्रामवासियों को पता लगते ही हस्पताल में आने-जाने का तांता लग गया। सभी ग्रामवासी वानप्रस्थी जी से मिलने पहुँचे और प्रत्येक ने अपने आपको तन, मन, धन से सेवा के लिए अर्पित किया। प्रत्येक ग्रामीण ने श्री रामदत्त शास्त्री व प्रधान जीतराम जी को आग्रह करके भेजा कि ग्राम का साधु है, गांव का ही व्यय होगा। रामदत्त शास्त्री व प्रधान जी ने बार-बार वानप्रस्थी जी को राज हस्पताल में सम्भाला तथा चिकित्सा पर होनेवाला सम्पूर्ण पांच हजार का व्यय आर्यसमाज की ओर से दिया। २० सितम्बर को महात्मा जी जब स्वस्थ होकर ग्राम में आये तो महात्मा जी से मिलने हेतु गांववालों का मेला-सा लग गया। प्रत्येक के हाथ में फल एवं भक्ष्य वस्तु थी। अब वानप्रस्थी जी सफल गुर्दे का आप्रेशन के पश्चात् पूर्ण स्वस्थ हैं। आर्यसमाज कासण्डी ने अपने कुटुम्बीजन से लाखों गुणा अधिक साधु की रोगावस्था में सेवा करके आर्यसमाज के साधु संन्यासियों को आपत्ति में न घबराने का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

आचार्य बलदेव, गुरुकुल कालवा

पुस्तक समीक्षा—

जाह्नवी (मासिक)

सम्पादक—भारतभूषण चड्ढा

प्राप्ति स्थान—१६ ए/१५ W.E.A. अजमलखां रोड,
नई दिल्ली-११०००५

मूल्य—५), वार्षिक—५६)।

जाह्नवी (मासिक) के अक्तूबर, ८८ के अंक में मुख्य चार विषय हैं—

१—भारतीय संस्कृति को नष्ट करने का दुष्चक्र परिवार व्यवस्था पर प्रहार।

२—रामायण क्यों रुकी, क्यों चली।

३—सिओल ओलम्पिक।

४—जिया के बाद पाकिस्तान की राजनीति।

श्रीशचन्द्र मिश्र ने अपने लेख 'जिया के बाद पाकिस्तान की राजनीति' में बहुत अच्छे ढंग से लिखा है कि 'भारत और पाकिस्तान में अगर सुलह हो जाये तो इसका सबसे ज्यादा नुकसान अमेरिका को ही है। उसके करोड़ों के हथियार कौन खरीदेगा।'

'फिलहाल भारत के पाकिस्तान से सम्बन्ध दो मुद्दों पर टिके हैं, एक पाकिस्तान का एटमी कार्यक्रम, दूसरे आतंकवादियों को पाक समर्थन।'

'जाह्नवी' पत्रिका एक स्वस्थ मनोरंजन है, जो राष्ट्रीय संस्कारों के साथ-साथ आपके पूरे परिवार का मनोरंजन भी करेगी। यह स्वस्थ साहित्य को रोचक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास करती है। इसमें कहानियां भी हैं और जीवन की समस्याओं का तर्कपूर्ण विवेचन भी, जो मनको झिंझोड़ता भी है और परोक्ष रूप से दिशा देता है। इसमें कुछ अश्लील विज्ञापन हैं, जिनका नवयुवकों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। मेरा सम्पादक से अनुरोध है कि विज्ञापन की आय के लालच में आकर भारतीय संस्कृति को नष्ट करने का प्रयत्न न करें।

हमारा सुझाव है कि प्रत्येक विचारशील बुद्धिजीवी इस पत्रिका को मंगायें और पढ़ें।

—शेरसिंह, व्यवस्थापक सर्वहितकारी

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

वेदप्रचार पदयात्रा

४ अक्तूबर से एक वेदप्रचार पदयात्रा स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में तहसील पानीपत के ग्रामीण अंचल में निकाली गई। जिसमें वानप्रस्थी सर्वश्री महावीर, चन्द्रमुनि, ब्र० ओमुस्वरूप, धर्मवीर आर्य धर्मी गाजियाबाद व पं० तेजपाल जी की भजनमण्डली, ब्र. जितेन्द्र ने भी भाग लिया। आटा, डिकाडला, जोरासी, समालखा, मनाना, करहंस, माछरोली, भाटीपुर, बिहोली तथा सदाना खांडा सोनीपत (बस द्वारा) पहुंचकर वेदप्रचार किया। चौ० मुन्शीराम बिझोल वेदप्रचार ट्रस्ट पानीपत व ला० परमानन्द रामनिवास आटा धर्मार्थ ट्रस्ट गुरुकुल डिकाडला की ओर से सैकड़ों रुपये का वैदिक साहित्य मुफ्त वितरित किया गया। सैकड़ों छात्रों ने यज्ञ पर यज्ञोपवीत धारण किये और बहुतों ने शराब, बीड़ी आदि छोड़ने का संकल्प किया। प्रत्येक गांव में दोनों समय यज्ञ किया गया और रात्रि को वेदप्रचार हुआ, जिसमें शराब, तम्बाकू, मांस, अण्डे, गोवध आदि का खण्डन किया गया। अनुभव हुआ कि प्रत्येक गांव में हर दो महीने बाद अवश्य ही प्रचार करवाया जाना चाहिए। लोगों ने खूब तन, मन और धन से सहयोग किया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को ८५०) का सहयोग दिया गया।

संयोजक—ब्र० ओमस्वरूप

स्मैक का मतलब

मौत है।

उद्‌बोधन

मानव बन तू बढ़ा चला चल रोना मत रो बाधाओं का।
तेरा अपना बन जायेगा ये संकट तेरी राहों का॥
पांव निरन्तर बढ़ा राह में चलने पर घबराना क्या?
अपने को गर ना पहचाना दुनिया को पहचाना भी क्या?
पग के कांटों में ही अपने हाथों को उलझाना भी क्या?
पड़ गये हाथ-पांव में छाले रोकर किया बहाना भी क्या?
रखना याद नहीं कुछ भी बन पायेगा तेरी आहों का।
तेरा अपना बन जायेगा……

ठोकर से ठुकरा दे पर्वत तू खुद को तूफान बनाकर।
जाना ही है तो जा इस दुनिया से कुछ पहचान बनाकर।
मत सुन रस शृंगार सुने तो इंकलाब की तान सुना कर।
जो खुद का होता है उसका होता है जगकर सुना कर।
वीर बोस को याद करे तो खुल खोल आये राहों का।
तेरा अपना बन जायेगा……

शेर बबर की गर्जन सुनकर जंगल सभी दहल जाता है।
देख दूर से कर्मवीर को संकट कहीं टहल जाता है।
भागें दूर सभी बाधायें जैसे टिड्डीदल जाता है।
देख लाल आंखों के डोरे दुष्टों का दल चल जाता है।
बुझा पाप दीपक को बनकर तीव्र वीर आंधी का झोंका।
तेरा अपना बन जायेगा ये संकट तेरी राहों का।

—सहदेव आर्य, आदर्शनगर जींद

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४) रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० नं P/RTK 49 मोष्ट मंबर १,६६,०८,५३, ८६



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक. – वेदव्रत शास्त्री १६ कार्तिक २०४५ वि०

वर्ष १५ अंक ४७ ७ नवम्बर, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) एक प्रति १-००

ऋषि-निर्वाण विशेषांक



युग-पुरुष श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती

लाखों बुझे चिराग जलाकर चल दिये

तुम ग़मजदों के ग़म को मिटाकर चल दिये।
खुद को मिटाके हमको बचा करके चल दिये ॥ टेक

जब हम भटक रहे थे जहालत की राह में।
हमको हमारी राह दिखा करके चल दिये ॥१

खुद ग़म उठाकर हमको मसर्रत करी अता।
रोते हुयों को आप हंसा करके चल दिये ॥२

कैदे क़फ़स में जब था परेशान कुल जहान।
आज़ाद आप उसको करा करके चल दिये ॥३

स्वागत किया था मौत का हंस करके आपने।
खुद हंस के आप सबको रुला करके चल दिये ॥४

इंसां हैं सबके सब ना हममें कोई ऊंच-नीच।
उल्फत का पाठ सबको पढ़ा करके चल दिये ॥५

दे करके जान अपनी बुझाकर चिरागे उम्र।
लाखों बुझे चिराग जला करके चल दिये ॥६

दौरे खिज़ां में सूख चला था चमन कि आप।
खूने जिगर से सींच हरा करके चल दिये ॥७

प्रस्तुतकर्ता—तेजपाल आर्य, भजनोपदेशक

कपाल मोचन मेले पर वेदप्रचारार्थ शिविर का आयोजन

प्रतिवर्ष की भांति कार्तिक की पूर्णमासी पर २१ से २३ नवम्बर तक हरयाणा के प्रसिद्ध तीर्थ स्थान कपाल मोचन जि० अम्बाला में मेला लग रहा है। लाखों नरनारी धार्मिक भावना से यहां आते हैं। अतः इन्हें वैदिक धर्म की ओर आकर्षित करने के लिए सभा की ओर से यज्ञ तथा वेदप्रचार का आयोजन किया जारहा है।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

महर्षि दयानन्द पर एक अपूर्व पुस्तक

पुस्तक का नाम—अपना जन्मचरित्र
सम्पादक—इ० आदित्यपालसिंह आर्य, डॉ० वेदव्रत 'आलोक'
प्रकाशक—अदिति प्रकाशन, १५६५, हरध्यानसिंह मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५
आकार—२३×३६/१६ पृष्ठ संख्या ४५४ (पक्की जिल्द)।
मूल्य—साठ रुपये, पुस्तकालय संस्करण सौ रुपये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा तीन बार में कहा और लिखाया गया अपना जन्मचरित्र इस पुस्तक में अत्यन्त पुरुषार्थपूर्वक विसंगतियां दूर करते हुए सम्पादित हुआ है। इस ग्रन्थ में पर्याप्त नई सामग्री पाठकों को मिलेगी, जो आज तक प्रकाशित महर्षि दयानन्द सरस्वती के किसी भी बड़े से बड़े जीवन-चरित्र में नहीं छपी है। महर्षि दयानन्द ने १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में जो भाग लिया है, उस पर भी अष्टम अध्याय में प्रकाश डाला गया है।

तृतीय अध्याय में "योग-विद्या-शिक्षा के छः वर्ष" सन् १८४८ से १८५४ ई० पर्यन्त महर्षि दयानन्द ने व्यासाश्रम, चाणोद, अहमदाबाद, आबू पर्वत आदि पर घूम-घूमकर योगियों से क्रियात्मक योगविद्या का अभ्यास किया है। इस १५५ पृष्ठों के अध्याय में क्रियात्मक योग के सम्बन्ध में जो उपदेश दिया गया है वह अत्यन्त सुन्दर और हृदयग्राही है तथा पातञ्जल योगदर्शन के गूढ़ रहस्यों की अत्युत्तम व्याख्या है।

मैंने योगदर्शन पर व्यासभाष्य तथा अन्य अनेक संस्कृत और हिन्दी की टीका-टिप्पणियां पढ़ी हैं और योगदर्शन पढ़ाया भी है, किन्तु इस अध्याय के पढ़ने में जो आनन्द आया और गूढ़-रहस्य समक्ष में आये वे अपूर्व हैं।

पुस्तक में ११ अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संवत् १८८१ वि० से १९०२ तक घर पर प्रारम्भिक २१ वर्ष। द्वितीय अध्याय में १९०२ से १९०५ तक गृहत्याग से संन्यास ग्रहण तक। तृतीय अध्याय में १९०५ से १९११ तक योग-विद्या-शिक्षा के छः वर्ष। चतुर्थ अध्याय में १९११-१९१२ तक हरिद्वार का कुम्भ-मेला। पञ्चम अध्याय में १९१२ में काश्मीर और लद्दाख की यात्रा। षष्ठ अध्याय में १९१३ में उत्तरा खण्ड भ्रमण। सप्तम अध्याय में १९१३-१४ में मानसरोवर, कैलास एवं तिब्बत यात्रा। अष्टम अध्याय में संवत् १९१४ (सन् १८५७) की क्रांति। नवम अध्याय में १९१४ से १९१७ तक गंगोत्री से लंका पर्यन्त यात्रा। दशम अध्याय में १९१७ से १९२१ तक गुरु विरजानन्द की शरण में। एकादश अध्याय में १९२१ से १९३२ तक कर्मक्षेत्र में किये कार्यों का वर्णन है।

यह पुस्तक मेरे पास गतवर्ष समालोचनार्थ आई थी, किन्तु इस ग्रन्थ के सम्पादक के निर्देशानुसार सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़कर ही लेखनी उठाने में विलम्ब होगया है। पुस्तक सभी प्रकार से अत्युत्तम है-लेखसामग्री, छपाई, कागज, जिल्द आदि।

मैं समझता हूं कोई भी जिज्ञासु इस पुस्तक को खरीदकर पूरी पढ़ेगा तो वह अपने ६० रुपयों का सदुपयोग ही समझेगा और सम्पादकों के परिश्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा किये बिना नहीं रहेगा।

—वेदव्रत शास्त्री

आया था ऋषि वेदोंवाला

जग का उपकार करने, दूर अन्धकार करने।
करने को जग में उजाला, आया था ऋषि वेदोंवाला॥

अन्धविश्वास हटाकर, सही मार्ग दिखलाया,
प्राणिमात्र का धर्म, वेद को ही बतलाया,
तोड़ा अज्ञानता का ताला।१

अछूतों का उद्धार करके, सबको गले से लगाया,
ईश्वर के बन्दे हैं सब, भेदभाव सभी मिटाया,
पिरोदी प्रेम की माला।२

सबको वेद पढ़ने का, उसने अधिकार दिलाया,
सतीप्रथा बन्द करके, विधवा का विवाह बताया,
बन करके सबका रखवाला।३

वृद्ध बालविवाह हटाया, जवानों का विवाह बताया,
अनाथों की रक्षा के लिए, अनाथालय बनवाया,
सबको सुख देनेवाला।४

देशभक्ति का उसने, हम सबको पाठ पढ़ाया,
'बलवन्त' दयानन्द का, हमने क्या ऋण चुकाया,
पिला दिया जहर का प्याला।५

—बलवन्तसिंह आर्य, ठसका नारायणगढ़, अम्बाला

शोक समाचार

श्रीमती राजकुमारी आर्या मन्त्राणी स्त्री आर्यसमाज दयानन्द भवन, हिसार के पति श्री मलकचन्द डेम्बला (अर्जीनवीस) का दिनांक २२-१०-८८ को स्वर्गवास होगया है। दिनांक ३-११-८८ वीरवार को मोहल्ला रामपुरा, गीता भवन के सामने पार्क, हिसार में दोपहर २ बजे से ४ बजे तक उनकी स्मृति में यज्ञ किया गया।

शराब मानवसमाज का एक शत्रु है।

महर्षि

होश बेहोशों को आया, आपके जाने के बाद।
आपका कुछ भेद पाया, आपके जाने के बाद ॥

वेद से मुनकिर था मानव, दुनियांवालों को मगर।
पाठ वेदों का पढ़ाया, आपके जाने के बाद ॥

नास्तिक भी आस्तिक बनते गये दीवानावार।
नाद वेदों का बजाया, आपके जाने के बाद ॥

दर-बदर की ठोकरें खाकर जिन्होंने बारहा।
नग़मा-एतौहीद गाया, आपके जाने के बाद ॥

आपके कट्टर विरोधी, झुक गये बे अख़्त्यार।
सर किसी ने न उठाया, आपके जाने के बाद ॥

महर्षि ! एहसां किये हैं, आपने सब पर मगर।
किसने है ! बदला चुकाया, आपके जाने के बाद ॥

"नाज़" भारत का चमन आबाद है, पर "नाज़" आह।
रक्त आखिर रंग लाया, आपके जाने के बाद ॥

—"नाज़ सोनीपती"

हरयाणा ग्राम पंचायत चुनाव में विजयी शराबबन्दी समर्थक सरपंचों की सूची

पत्रांक से आगे—

१३२. श्री रघुबीरसिंह मेहरा बी० ए० सरपंच ग्राम गढ़ीखेड़ी जि० रोहतक
१३३. „ मंगलसिंह यादव „ „ नाम्घा जि० महेन्द्रगढ़
१३४. „ बालकिशन „ „ मोहम्मदाबाद जि० सोनीपत

(क्रमशः)

आर्यसमाज तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने निकट के ग्रामों के उन सरपंचों के नाम जो शराब का सेवन नहीं करते हैं, लिखकर शीघ्र भेजने का कष्ट करें, ताकि उनके नाम इस सूची में प्रकाशित हो सकें।

—सम्पादक

संस्कृत विश्वविद्यालय कर रहा संस्कृत का सर्वनाश

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय जो कि प्रारम्भ में संस्कृत विश्वविद्यालय था, में संस्कृत को योजनाबद्ध तरीके से समाप्त करने के प्रयास किये जारहे हैं। पिछले आठ वर्षों से विश्वविद्यालय में कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के परस्पर विद्वेष व निहित स्वार्थों के कारण संस्कृत पर कुठाराघात किया जारहा है। विश्वविद्यालय में एक निश्चित भाषा नीति न होने के कारण इन तत्त्वों को खुलकर खेलने का पूर्ण अवसर प्राप्त हो जाता है। पहले तो हरयाणा सरकार ने १०+२ पद्धति से संस्कृत विषय को समाप्त करके, संस्कृत के विनाश का बीजारोपण कर दिया था तथा बाद में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने नई भाषा नीति बनाने के बहाने से बी० ए० स्तर पर संस्कृत अनिवार्य विषय लेने पर अनेक प्रतिबन्ध लगा दिये हैं। अब नई योजना के तहत बी० ए० स्तर पर जो विद्यार्थी संस्कृत अनिवार्य विषय लेगा, उसे अनिवार्य रूप से सौ-सौ अंक की तीन भाषायें लेनी पड़ेंगी, जिनमें एक सौ अंक की अंग्रेजी व १०० अंक की हिन्दी सम्मिलित हैं। ऐसी स्थिति में विद्यार्थी अन्य विषयों में से केवल एक विषय का ही चयन कर पायेगा, जो कि न तो विद्यार्थी के लिए सुविधाजनक है तथा न ही व्यावहारिक। ऐसी स्थिति में विद्यार्थी संस्कृत विषय को छोड़ने पर मजबूर हो जाता है।

कुरुक्षेत्र तथा रोहतक विश्वविद्यालय ने अनिवार्य विषयों के पाठ्यक्रम तो दुगुने कर दिये हैं तथा पेपर पचास अंक की बजाये एक सौ अंक कर दिया है, परन्तु इस पाठ्यक्रम को पढ़ाने के लिए ३+१ पीरियड का ही वर्कलोड दिया हुआ है। जबकि विश्वविद्यालय कार्यकारिणी की एक उपसमिति ने इस पाठ्यक्रम को पढ़ाने के लिए कम से कम छह पीरियड रखने की सिफारिश की थी, परन्तु कुलपति महोदय ने इस सिफारिश को बिना कारण बताये रद्द कर दिया है। आश्चर्य की बात तो यह है कि इसी १०० अंक के अंग्रेजी पेपर को पढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय ने १२ पीरियड दिये हुए हैं।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से संस्कृत भाषा को योजनाबद्ध तरीके से समाप्त करने के लिए विद्यार्थियों को हर स्तर पर हतोत्साहित किया जारहा है। पत्राचार पाठ्यक्रम निदेशालय तथा शिक्षण महाविद्यालय में संस्कृत विषय को पढ़ाने के लिए प्राध्यापकों की नियुक्ति नहीं की जारही है। वाणिज्य तथा विज्ञान संकायों में भी संस्कृत अनिवार्य विषय को समाप्त कर दिया गया है। इस भेद-भाव नीति से प्रदेश के संस्कृत प्राध्यापकों में भारी रोष व्याप्त है। इस नीति के दुष्प्रभाव के फलस्वरूप प्रत्येक महाविद्यालय में संस्कृत के एक प्राध्यापक की सेवा समाप्त हो जायेगी, क्योंकि पांच वर्षीय कोर्स में २४ पीरियड समाप्त हो जायेंगे।

भविष्य में किसी संस्कृत प्राध्यापक की नियुक्ति हो पायेगी यह असम्भव है।

—प्रो० रत्नाराम मलिक, महासचिव हरयाणा संस्कृत परिषद्, कैथल

(दैनिक विश्व मानव से साभार)

सरकार की नई भाषानीति में संस्कृत की उपेक्षा पर विरोध

नई दिल्ली, २ नवम्बर। संस्कृत रक्षा समिति की एक विशेष बैठक ३० अक्तूबर को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली में हुई, जिसमें सरकार की नई भाषा नीति में संस्कृत की उपेक्षा पर घोर विरोध किया गया। बैठक में कहा गया कि संस्कृत भाषा सदियों से हमारे देश को एकता के सूत्र में बांधे हुए है। अतः इसे सर्वोच्च पद से हटाने के सरकारी प्रयास गम्भीर चिन्ता का विषय है।

बैठक में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष द्वारा सम्बन्धित स्कूलों के प्राचार्यों के नाम १६ सितम्बर को जारी परिपत्र की निन्दा की गई। २४ अक्तूबर को जारी प्रेस विज्ञप्ति में सेंट्रल बोर्ड आफ सेकेण्डरी एजूकेशन के अध्यक्ष ने संस्कृत को भारतीय संस्कृति के स्रोत के रूप में स्वीकार किया है और सरकार ने भी इस बात की पुष्टि की है कि संस्कृत भाषा अधिकांश भारतीय भाषाओं का आधार है और इसके अध्ययन से विद्यार्थियों को भारतीय भाषाओं को अच्छी तरह समझने में सहायता मिलेगी।

बैठक में मौजूद वक्ताओं का कहना था कि संस्कृत ने भारतीय भाषाओं और संस्कृति को संवर्धित करने में प्रमुख भूमिका निभाई है। लेकिन सरकार नई शिक्षा पद्धति का हलाहल हमारे गले में उतारना चाहती है। इस पद्धति के अनुसार संस्कृत को अध्ययन क्षेत्र से निष्कासित कर दिया गया है। इसे एक तीसरी भाषा के रूप में भी स्थान नहीं दिया गया है। जबकि इसे एक अनिवार्य भाषा के रूप में बोर्ड की परीक्षा में सम्मिलित किया जाना चाहिए था। माध्यमिक विद्यालयों में संस्कृत को हिन्दी पाठ्यक्रम (क) का एक अनिवार्य अंग बना दिया गया है। इस प्रकार संस्कृत को जो पद उसे संविधान के द्वारा प्राप्त था, उसे छीना जारहा है। इसे सर्वथा विदेशी भाषाओं—फारसी, अरबी, रूसी इत्यादि के समकक्ष बना दिया गया है।

संस्कृत सुरक्षा समिति से मांग की है कि सरकार अपने सभी स्कूलों में नई शिक्षा पद्धति को लागू करना तुरन्त बन्द करे तथा संस्कृत भाषा को संविधान के आठवें अनुच्छेद में भारतीय भाषाओं की सूची में यथावत् रखा जाये। समिति ने कहा है कि प्रधानमन्त्री ने १६ सितम्बर, ८८ को स्व० श्री जवाहरलाल नेहरू की जन्मशताब्दी के अवसर पर सरकारी भाषा सम्मेलन में कहा था कि संविधान में दी गई पन्द्रह भारतीय भाषाओं को समान आदर और विकास के समान अवसर प्रदान किये जाने चाहियें। समिति की ओर से आज जारी प्रेस विज्ञप्ति में इस काले परिपत्र को वापस लिए जाने की मांग की गई है।

(दैनिक वीर अर्जुन से साभार)

जब भी कभी ऐसा हो ?

—सुखदेव शास्त्री, अवैतनिक महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

जिस क्षण देह में दुर्बलता प्रतीत हो,
उसी क्षण उस विशाल काय महापुरुष का-
स्मरण करो।

जिस क्षण तुम्हारे मनमें शिथिलता, या कायरता का प्रवेश हो,
उसी क्षण जीवन और उत्साह से ओत-प्रोत उस तेजस्वी देशभक्त का,
स्मरण करो।

जिस क्षण तुम्हारे हृदय में मोह और विलास का साम्राज्य प्रवर्त्तित हो,
उसी क्षण धन को ठोकर मारनेवाले, उस नैष्ठिक ब्रह्मचारी की ओर,
दृष्टि करो।

जिस क्षण तुम अपमान से आहत होकर नजर ऊंची न उठा सको,
उसी क्षण हिमालय के समान अडिग और उन्नत व्यक्ति के ओजस्वी-
मुखमण्डल को अपनी कल्पना में उपस्थित करो।

जिस क्षण देशधर्म के लिए मृत्यु का वरण करते डर लगे,
उसी क्षण उस निर्भयता की मूर्ति का-
ध्यान करो।

जिस क्षण द्वेषभाव उत्पन्न होने से जब तुम्हें अपने विरोधी को-
क्षमा करने में हिचकिचाहट हो-
उसी क्षण विष पिलानेवाले को आशीर्वाद देते हुए उस रागद्वेष हीन,
संन्यासी को याद करो।

यह गौरवशाली और कोई व्यक्ति नहीं हो सकता,
यह तो भारतीय महापुरुषों में विराजमान-
महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ही
हो सकते हैं॥

ऋषि दयानन्द, जय दयानन्द

होते न देव अद्वितीय आप तो कौन मिटाता पाप ताप ?
यों करता कौन कुमार्ग बन्द, जय जगद्वन्द्य ऋषि दयानन्द ।१

रचता सत्यार्थप्रकाश कौन, करता विमूढ़ता नाश कौन।
पड़ जाता वैदिकधर्म मन्दा, जय जगद्वन्द्य ऋषि दयानन्द ।२

बतलाता कौन यहां ओ३म् नाम, पाते कैसे हम मोक्ष धाम।
क्यों कर पाते हम चिदानन्द, जय दयानन्द जय दयानन्द ।।३

दे देकर हमको सद् उपदेश, हरता जीवन के कौन क्लेश।
कटते कैसे बन्धन के फन्द, जय दयानन्द जय दयानन्द ।४

आर्यसमाज से

क्यों न तेरे गीत गाऊं ?

मेरे जीवन में तेरी करुणा से सुन्दर प्रभात आया,
मेरा पथ तेरे ही पुण्यालोक से है जगमगाया,
तेरे जैसा कारुणिक मां मैं तो जगति में न पाऊं,
क्यों न तेरे……।१

ज्ञान का अमृत पिलाकर मृत्यु से मुझको उबारा,
पग थिरकते चल पड़े मां, जब दिया तूने सहारा,
तेरे चरणों से लिपट कर, क्यों न मनकी शांति पाऊं,
क्यों न तेरे……।२

मेरे उपवन में वसन्त आया तो तेरी ही कृपा से,
पुष्प ने यदि गन्ध को पाया तो तेरी ही दया से,
आज मैं सर्वस्व देकर भी कहां यह ऋण चुकाऊं,
क्यों न तेरे गीत गाऊं ।३

कवि से

जन-जन में नवजीवन भरदो, क्रांतदर्शी कवि निज प्रतिभा से।
नव-क्रांति का पाठ अमर दो ॥

कोमल कमल कवच बन जायें, खड्ग धार धर लें शाखायें।
दल-दल दलन करे शत्रु का, वाणी का वह तेज प्रखर दो ॥ जन-जन……

दयानन्द का तत्त्वज्ञान दो, तुम प्रताप का स्वाभिमान दो।
नस-नस में दो रक्त शिवा का, वैरागी की ज्वाला भरदो ॥ जन-जन·····

कवि आज उस स्वर में गाओ, वेदनाओं का लोक बसाओ।
सुप्त बवंडर जाग उठे फिर, आज विश्व को विह्वल करदो ॥ जन-जन ·····

कड़क उठे दामिनी गगन में, भड़क उठे वही कण-कण में।
पापपुंज पावन हो जाये, एक अंगार धधकता धरदो।
जन-जन में नवजीवन भरदो ॥

प्रेषक— उत्तमचन्द शरर

महर्षि दयानन्द निर्वाण महोत्सव पर

टेक—महा अविद्या के कारण था घोर अन्धेरा छाया।
लेकर वेदज्ञान भारत में देव दयानन्द आया ॥

मन्दिर तीर्थ अस्थानों पर संध्या हवन नहीं होते थे,
झूठे ब्राह्मण संन्यासी यहां कुमित बीज बोते थे,
देश निवासी पाखण्डों में नित झगड़े झोते थे,
सत्य असत्य विवेक नहीं था थी गुरुडम की छाया। लेकर···

अवतारवाद की काली घटा भारत पर छाई थी,
झूठे पंथ ग्रंथ की रचना यहां होती पाई थी,
छूआछात और जातिवाद की गहरी कठिनाई थी,
मानव और मानव के बीच में बहुत बड़ी खाई थी,
ब्रह्म वाक्य जनार्दन कह लोगों को बहकाया। लेकर·····

स्त्री और शूद्र को विद्या का अधिकार न था,
कन्याओं के साथ जुल्म का पारावार नहीं था,
विधवा और अनाथों का कोई शुम्मार नहीं था,
पाखण्ड अविद्या रहित यहां कोई परिवार नहीं था,
देव और ईश्वर के नाम पर पशुओं को कटवाया। लेकर······

जन्म से वर्ण मान यहां गुण का सम्मान नहीं था,
विद्याहीन बने पण्डित वेदों का ज्ञान नहीं था,
भजनलाल सच्चे वक्ता का आदर मान नहीं था,
भारत में भारतवालों का बना विधान नहीं था।
धूर्त स्वार्थी लोगों ने था यहां पर गदर मचाया ॥

भजनलाल आर्य, उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

राष्ट्र पुरुष–दयानन्द

ले०—यशपाल आर्यबन्धु, आर्यनिवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद

आर्यसमाज के यशस्वी संस्थापक तथा वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे महामानव थे, जिन्हें किसी भी राष्ट्र की संकुचित सीमाओं से बांधा नहीं जा सकता। इस दृष्टि से वे आर्यजाति एवं भारत के ही महामानव नहीं थे, अपितु वे विश्वमानव थे। तथापि भारतवर्ष से उन्हें विशेष लगाव था और उसके उत्थान के लिए उन्होंने विशेष प्रयत्न भी किये। उन्होंने स्वयं लिखा है कि—"यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूँ, तथापि जैसे इस देश के मतमतांतरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर याथातथ्य प्रकाश करता हूँ वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मतवालों के साथ भी वर्त्तता हूँ। जैसा स्वदेशवालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में वर्त्तता हूँ, वैसा विदेशियों के साथ भी तथा सब सज्जनों को भी वर्त्तना योग्य है। क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्ध करने में तत्पर होते हैं। वैसे मैं भी होता, परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर हैं।" (भूमिका सत्यार्थप्रकाश) इस पर भी महर्षि का कथन है कि—"हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें।" (सत्यार्थप्रकाश, एकादश समुल्लास)

पाठकवृन्द ! यही वह भावना है, जिससे प्रेरित होकर उस विश्वमानव ने आर्यावर्त्त के उत्थान एवं उद्धार का बीड़ा उठाया था और इसी के लिए ही उन्होंने आर्यसमाज की भी स्थापना की थी और भारतवासियों को आह्वान दिया था कि—"जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा॥" (वही) महर्षि ने यह इसलिए कहा—क्योंकि उनकी मान्यता थी कि—"जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता।" (वही) स्पष्ट है कि महर्षि आर्यावर्त्त देश की उन्नति के लिए विशेष प्रयत्नशील थे।

महर्षि दयानन्द के आगमन से पूर्व भारत में राष्ट्रीय भावनाओं का सर्वथा लोप-सा हुआ दिखाई देता था। महर्षि ने ही भारतवासियों में राष्ट्रीय नवजागरण के स्वर फूंके थे। यह और बात है कि उन्नीसवीं शती के भारतीय राष्ट्रीय पुनर्जागरण में उनकी जिस प्रकार की विशेष भूमिका रही है, उसके अनुरूप उसका आकलन न किया गया हो। पर वास्तविकता यह है कि महर्षि ही सही अर्थों में राष्ट्रवाद के अग्रदूत एवं स्वतन्त्रता तथा स्वदेशी आदि के मन्त्रदाता ऋषि थे। इसीलिए उन्हें राष्ट्र-पुरुष कहा गया है। भारतीयों में राष्ट्रीयता की भव्य भावना भरनेवाले वही प्रथम महामानव थे। उन्होंने ही प्रसुप्त राष्ट्रीयता की भावनाओं को उजागर करने का प्रयास किया था। स्वराज्य की

सर्वप्रथम कल्पना करनेवाले महामानव भी वे ही थे। स्वदेशी की भावना भी भारतीयों में भरनेवाले वही महामानव थे। अतः इस सन्दर्भ में उनकी भूमिका को देखते हुए उन्हें केवल एक धर्म-संस्थापक अथवा समाज-सुधारक मात्र ही समझ लेना बहुत बड़ी भूल होगी। सत्य तो यह है कि धर्म-संस्थापक तथा समाज-सुधारक होते हुए भी मूलतः वे राष्ट्र-पुरुष ही थे। उनका धर्म-संशोधन तथा समाज-सुधार आदि सभी कुछ राष्ट्रीयता की भावनाओं से ओतप्रोत था। अतः उन्हें राष्ट्रोद्धारक कहना अधिक समीचीन है।

राष्ट्र-पुरुष दयानन्द की राष्ट्रीयता हमें मातृभूमि के प्रति अगाध श्रद्धा की भावनाओं में दृष्टिगोचर होती है। भारत के गौरवमय अतीत की याद दिलाते हुए वे अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं कि—"यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है, जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसलिए इस भूमि का नाम स्वर्णभूमि है, क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है।" (एकादश समुल्लास) इतना ही नहीं, वे तो यहां तक लिखते हैं कि—"जितने भूगोल में देश हैं, वे इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है। वह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहेरूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही स्वर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं। (वही)

उस समय जब सदियों के विदेशी शासन से आक्रांत रहने के कारण भारतवासी सर्वथा निराश एवं हताश हो चुके थे एवं विदेशी लोग भारतवासियों तथा उनके पूर्वजों को मूर्ख सिद्ध करने में लगे थे और भारत को पददलित देश के रूप में चित्रित किया करते थे। महर्षि दयानन्द ने अपने देश की प्रशंसा में उक्त शब्द लिखे थे। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए वे लिखते हैं कि—"सृष्टि से लेके पांच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकछत्र राज्य था।" महर्षि के उपरोक्त शब्द राष्ट्रीय स्वाभिमान की मुंह बोलती तस्वीर हैं।

महर्षि दयानन्द का राष्ट्रवाद धार्मिकता की पुट लिए हुए था। ऐनीबीसेण्ट इसे धर्ममूलक राष्ट्रीयता की संज्ञा देती हुई लिखती हैं कि—"संसार में अनेक सभ्यतायें हुई, परन्तु समाप्त होगई। किन्तु भारत की आस्था धर्ममूलक राष्ट्रीयता में रही है। इसी ने इसे शक्तिशाली बनाये रखा और फिर से खोई हुई कार्यशक्ति को प्राप्त करने में सहायता दी।" आज राष्ट्रीयता का सम्बन्ध प्रायः राजनीति से जोड़ा जाता है, किन्तु महर्षि दयानन्द के चिन्तन की यह मौलिक विशेषता है कि वे राजनीति को भी राजनीति न कहकर राजधर्म कहते हैं। तभी उनकी राष्ट्रीयता भी धार्मिक राष्ट्रीयता के नाम से सुविख्यात हुई। इतिहास साक्षी है कि महर्षि ने अपनी आध्यात्मिक प्रार्थनाओं में भी राष्ट्रीयता के ओजस्वी स्वर भर दिये। आर्याभिविनय जैसी उच्चकोटि की आध्यात्मिक प्रार्थनाओं की पुस्तक में भी वे स्थान-स्थान पर आर्यों के अखण्ड, सार्वभौम, चक्रवर्ती साम्राज्य की कामना करना नहीं भूले। "अन्य देशवासी हम पर कभी शासन न करें" आर्याभिविनय की एक प्रार्थना के इन शब्दों के आधार पर पटियाला षड्यन्त्र अभियोग में विशेष ट्रिब्यूनल के सम्मुख अंग्रेज वकील एडवर्ड ग्रे ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह भड़काने का आरोप लगाया था। यह महर्षि दयानन्द की धार्मिक राष्ट्रीयता का अत्यन्त उज्ज्वल पक्ष है। विपिनचन्द्रपाल का यथार्थ कथन है कि—"वे दयानन्द ही थे जिन्होंने उस आंदोलन की आधारशिला रखी, जो बाद में धार्मिक राष्ट्रीयता के नाम से जाना गया।" स्पष्ट है कि भारत में धार्मिक राष्ट्रीयता के जन्मदाता राष्ट्र-पुरुष दयानन्द ही थे।

राष्ट्र-पुरुष दयानन्द में अपने देश के प्रति अगाध प्रेम को देखकर ही लोकमान्य तिलक ने उन्हें "स्वाधीनता का प्रथम संदेशवाहक" तथा ऐनीबीसेन्ट ने उन्हें "भारतवासियों के लिए स्वतन्त्रता का प्रथम उद्घोषक" कहा था, जबकि फ्रेंच लेखक रोम्यां रोलां ने उन्हें 'पुनर्जागरण का अग्रदूत' कहकर याद किया था। वे वस्तुतः भारतीय राष्ट्रीयता के अग्रदूत तथा स्वतन्त्रता, स्वदेशी आदि के मन्त्रदाता ऋषि थे। डा० पट्टाभि सीतारमैया के अनुसार—'स्वराज्य के जो स्वर १९०६ में कांग्रेस के मंच पर मुखरित हुए, उसकी सम्पूर्ण योजना और कार्यक्रम आर्यसमाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने १८७५ ई० में ही देशवासियों को दे दी थी।" (द्रष्टव्य अन्तर्राष्ट्रीय आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह की स्मारिका १९७५, पृष्ठ १६६)

सुप्रसिद्ध इतिहासकार यदुनाथ सरकार ने दयानन्द कोमेमोरेशन वाल्यूम में लिखा था कि—"जब भारत के उत्थान का इतिहास लिखा जायेगा तो इस नंगे फकीर दयानन्द सरस्वती को उच्च स्थान दिया जायेगा" और स्वामी सत्यानन्द ने लिखा है कि—'समय आयेगा जब भारत की भावी सन्तति, अपने जातीय मन्दिरों में स्वायत्त शासन की देवी का पूजन करने से पूर्व उसे पहले-पहल आहूत करने वाले देवस्वरूप दयानन्द का प्रथम अर्चन किया करेगी।' (श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृष्ठ ५१०)

हमारा विश्वास है कि जब कभी भी भारत की राष्ट्रीयता का स्वतन्त्रतापूर्वक सही इतिहास लिखा जायेगा तो निश्चय ही राष्ट्रीयता के इस अग्रदूत दयानन्द को राष्ट्र-पुरुष के रूप में ही चित्रित किया जायेगा।

अजमेर में वेदगोष्ठी

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ के तत्वावधान में चतुर्थ वेदगोष्ठी का आयोजन अजमेर में १२ नवम्बर को किया जारहा है। परोपकारिणी सभा के ऋषि-मेले के अवसर पर यह संगोष्ठी ऋषि उद्यान में दिन में होगी। "महर्षि दयानन्द और उनकी भाष्य शैली" इस संगोष्ठी का विषय रखा गया है। इसके संयोजक प्रो० धर्मवीर जी हैं। राजस्थान के उच्चकोटि के विद्वानों को तो इसमें आमन्त्रित किया ही गया है, साथ हो साथ भारतवर्ष के अन्य स्थानों से भी विद्वानों के इसमें भाग लेने की सम्भावना है। इससे पूर्व तीन वेदगोष्ठियां क्रमशः दिल्ली, बम्बई और चण्डीगढ़ में आयोजित की गई थीं, जो कि काफी सफल रहीं।

प्रो० शेरसिंह, प्रधान — सत्यानन्द आर्य, मन्त्री

उर्वरक आर्यसमाज एन. एफ. एल. टाउनशिप पानीपत का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री सदानन्द सुनेजा, मन्त्री—सुभाषचन्द्र सैनी, कोषाध्यक्ष—अर्जुनदेव मुखीजा, पुस्तकाध्यक्ष—राजकुमार।

दीपावली मनायेंगे

ले॰—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता वैदिकधर्म, दिल्ली

'दीपावली मनायेंगे'

घर-घर दीप जलायेंगे, दीपावली मनायेंगे।
दूर अन्धेरा किया दिलों का ऋषि की याद दिलायेंगे।
दीपावली मनायेंगे॥

जिसने विष पी करके अमृत बांटा था।
मिथ्या मत पन्थों में मारा चांटा था।
था वह दूत सच्चाई का, अपनी नहीं भलाई का।
परहित में जीवन दे डाला गीत यति के गायेंगे।
दीपावली मनायेंगे॥

सुना न कोई लखा न कोई आया देव निराला था।
जगंन्नाथ पापी ने उनको जहर दूध में डाला था।
दिल का ऋषि उदार था दुश्मनों से भी प्यार था।
ले करके सन्देश ऋषि का घर-घर में पहुंचायेंगे।
दीपावली मनायेंगे॥

जिसने रूढिवाद असुर की पकड़ के भुजा मरोड़ दई।
कर्णसिंह अभिमानी की थी, तेग बीच से तोड़ दई।
ऋषि शक्ति का कोष था, तन मन से निर्दोष था।
उस आदित्य ब्रह्मचारी का सत्य मार्ग अपनायेंगे।
दीपावली मनायेंगे॥

लाखों दीप जला करके निज जीवन दीप बुझा डाला।
घोर अविद्या तिमिर मिटाकर दिया सत्य का उजियाला।
आगे बढ़ते जायेंगे, जीवन आर्य बनायेंगे।
पावन वैदिक नैय्या को मिलकर पार लगायेंगे।
दीपावली मनायेंगे॥

दूर अन्धेरा किया दिलों का ऋषि की याद दिलायेंगे।
दीपावली मनायेंगे॥

महर्षि निर्वाण के उपलक्ष में श्रद्धा पुष्पांजलि

हे प्रभु जी ! मुक्ति में विश्राम दयानन्द का।
प्रलय तक उज्ज्वल रहेगा नाम दयानन्द का ॥१

धर्म के खातिर जिया ऋषि, धर्म के खातिर मरा।
जिस्म आया धर्म के ही काम दयानन्द का ॥२

तज दिया घर-बार स्नेही, वेद सेवा के लिए।
वेद के अर्पण था सर्वस्व, देह दयानन्द का ॥३

शिष्य विरजानन्द का, माँ भारती का लाल था।
मानवों के वास्ते, बलिदान दयानन्द का ॥४

बुझ गया दीपक मगर, लेकिन हमेशा है अमर।
नाम लेते हैं सुबह और शाम दयानन्द का ॥५

धर्म के हित में किया, विषपान ऋषिवर ने यहां।
होगया उज्ज्वल दिवाली में, नाम दयानन्द का ॥६

आर्य प्रतिवर्ष मनावें, निर्वाण ऋषिराज का।
हाय ! कश्यप एक भी न हुआ दयानन्द-सा ॥७

प्रेरक-स्मृति

ग्राम मसूदा धन्य है, ऋषिवर दयानन्द।
वेदामृत ऐसा दिया हर्ष बहादुरसिंह ॥१

रविनाथ नारायणसिंह, मन लि संकल्प।
दयानन्द की स्मृति में, गुरुकुल का हो विकल्प ॥२

रूपकंवर माता हुई कोठारी परिवार।
स्वर्गीय ससुर सुजानसिंह मोतीसिंह भरतार ॥३

यशोगान हम कर रहे, प्रातः सायं बार।
भमान भवन दे दिया दान में, धन्य-धन्य सौ बार ॥ ४

'केवल' की है कामना सुनो आर्यो चित्त लाये।
गुरुवर दयानन्द की साधनास्थली को पाये ॥

जीर्णोद्धार कार्य में, तन मन धन बलिदान।
वैदिकधर्म प्रचार का, जग में उत्थान ॥

—स्वामी केवलानन्द सरस्वती, आर्यसमाज मसूदा (अजमेर)

ओ३म्

विद्ययाऽमृतमश्नुते

—पं० धर्मदेव 'मनीषी' व्याकरणाचार्य, गुरुकुल कालवा

वेद में उपदेश है कि—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ यजु० ४०।२

"हे मनुष्य ! तू इस संसार में वेदोक्त विहित श्रेष्ठ कर्मों को ज्ञानपूर्वक करता हुआ ही दीर्घ जीवन को प्राप्त हो, क्योंकि ज्ञानपूर्वक श्रेष्ठ कर्त्तव्य, कर्मों को करने से वे कर्म तेरे बन्धनादि दुःख के कारण न होंगे और अज्ञानपूर्वक बिना सोचे समझे तथा विधिरहित किये कर्म इष्ट फलदायक भी नहीं होते, प्रत्युत नरक में ही पहुंचा देते हैं। ऐसा वेद में लिखा है—

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो ये उ विद्यायां रताः॥ यजु० ४०।१२

जो लोग (अविद्यामुपासते) अविद्या की उपासना करते हैं तो वे (अन्धन्तमः प्रविशन्ति) अन्धकार में गिरते हैं, किन्तु (ततः भूय) उनसे भी बढ़कर वे लोग घोर अन्धकार में पड़ते हैं। (ये उ) जो कि (विद्यायां रताः) विद्या में रत हैं। इससे अगले मन्त्र में कहा है कि—विद्या और अविद्या इन दोनों का भाव और पदार्थ भिन्न-भिन्न है, जिसे विद्वान् समझ सकते हैं। उससे अगले मन्त्र में कहा है—

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते॥

(जे) जो मनुष्य (विद्यां चाविद्यां च) विद्या और अविद्या इन दोनों को (उभयं सह) एक साथ-साथ ही (वेद) जानते हैं। वे अविद्या का यथार्थ स्वरूप जानने से शक्तिसम्पन्न होकर (मृत्यु) मौत को (तीर्त्वा) तरकर जीतकर तथा (विद्यया) विद्या को जानकर (अमृतम्) अमृतस्वरूप ईश्वर को प्राप्त करके (अश्नुते) मोक्ष आनन्द का भोग करते हैं।

संक्षेप में यहां पर 'अविद्या और विद्या' आये हुए दोनों पदों का अर्थ अविद्या से कर्म और विद्या से ज्ञान का अर्थ किया जाता है। जिससे अर्थ का भाव यह हुआ कि जो मनुष्य बिना ज्ञान के केवल अविद्या रूप कर्मकांड में ही लीन है। अर्थात् सोचना समझना कुछ नहीं और अन्धपरम्परागत बिना सोचे समझे कर्म करते हैं, वे लोग ज्ञानशून्य कर्म के फल से अज्ञानान्धकार के नरक में गिरते हैं, किन्तु उनसे भी बढ़कर घोर नरक में वे लोग गिरते हैं जो कि कर्म तो कुछ नहीं करते और केवल विद्या—ज्ञान में ही तत्पर रहते हैं, क्योंकि ज्ञान तो प्रकाश है। ज्ञान के द्वारा मनुष्य प्रत्येक पदार्थ के स्वरूप

को यथार्थ रूप से जान तो सकता है, परन्तु उस जानने मात्र से ही क्या लाभ हो सकता है, जो कि कर्म में परिणत न किया गया हो। अत एव मनुष्य को चाहिये कि वह प्रथम ज्ञान प्राप्त करे और तदनन्तर ज्ञानपूर्वक ही श्रेष्ठ कर्म करे। जो मनुष्य ज्ञानपूर्वक श्रेष्ठ कर्म करते हैं, वे कर्मवीर मनुष्य संसार में प्रत्येक प्रकार के कठिन से कठिन मार्ग को भी पार कर जाते हैं, उनके लिये मृत्यु भी कोई भयानक पदार्थ नहीं रहता। महातपस्वी भीष्म पितामह ने अविद्या पदवाच्य, किन्तु ज्ञानपूर्वक किये हुए वैदिक कर्मशीलता से ही शरशय्या पर पड़े हुए भी मृत्यु को फटकार दिया था। इसी प्रकार वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती आदि विवेकी कर्मशील नरशार्दूलों को मृत्यु का भय तनिक भी भयभीत न कर सका। बस! यही इनका मृत्यु का जीतना है या इससे पार होना है।

हम जो कुछ भी करें करावें, सब कार्य सोच-समझकर ज्ञानपूर्वक ही किया करें। ऐसा करने पर ही मनुष्य सांसारिक दुःखों से बचकर, लौकिक सुखों को भी पा सकता है और अन्त में 'विद्ययाऽमृतमश्नुते" ज्ञान के द्वारा परमात्मा को प्राप्त करके, मोक्षानन्द को भी प्राप्त कर सकते हैं। गीता में कहा है कि—

प्रयत्नाद् यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्विषः।
अनेकजन्मसंसिद्धः ततो याति परां गतिम्॥ गीता ६।४५

अर्थात् अनेकशः जन्म जन्मांतरों में किये शुभ पुण्यकर्मों के फल से निष्पाप होकर कोई विरला ही पवित्र आत्मा योगी महात्मा अपने सर्वोच्च लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति की सिद्धि कर पाता है। मुण्डकोपनिषद् में भी कहा है—

स यो ह वै तत्परमं ब्रह्म वेद। स ब्रह्मैव भवति।

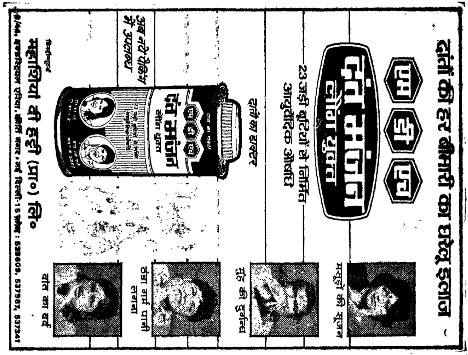
नाऽस्याऽब्रह्मवित् कुले भवति। तरति शोकं तरति पाप्मानं गुहा-ग्रन्थिभ्यो विमुक्तोऽमृतो भवति॥ ३।२।६

इस मन्त्र में भी कहा है कि—यह पुण्यात्मा जीव उस पर ब्रह्म परमेश्वर को प्राप्त होकर अन्य जीवों की अपेक्षा गौणिक रूप में कुछ अधिक बड़ा (ब्रह्म) और ज्ञानवान् बन जाता है।

ज्योतिर्मय हो वसुधा सारी

फैले वेदों का प्रकाश फिर, जगे धरा पर नवल आश पर,
ऋषियों के निर्देशन में नव हो भारत का शुचि विकास फिर।
वैदिकधर्म ध्वजा लहराये, भारत का नर देव कहाये,
पुनः पठन-पाठन वेदों का हो भू पर, नव स्वर गहराये।
'आर्य' बनें वसुधा के वासी, जाग्रत हों सब भूमिनिवासी,
सत्य-धर्म के लिए लड़ें हम निर्भय होकर भारतवासी।
दीप निरन्तर जले ज्ञान का, आह्वान हो नव विहान का,
धर्म समन्वित अन्वेषण हो वसुधा पर, नव विज्ञान का।
ज्योतिर्मय हो वसुधा सारी, नष्ट-विनष्ट रजनी हो कारी,
सत्यं शिवम् सुन्दरतापूरित जीवन पद्धति बने हमारी।

—राधेश्याम आर्य



हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मेसर्ज परमानन्द साईदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक

२. " फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार

३. " सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत

४. " हरीश एजेन्सीज ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत

५. " भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल

६. " घनश्यामदास सीताराम बिचला बाजार, भिवानी

७. " कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा

८. " कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद

९. " चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/५ जेकमपुरा, गुड़गांव

ऐसा था एक राजा

ले०—सोहनलाल शारदा, शाहपुरा भीलवाड़ा (राज०)

"वैदिकधर्म उपदेशक मण्डली में मेरी ओर से एक उपदेशक रहे। जिसके व्यय के वास्ते एक रुपया मुद्रा नित्य-प्रति अर्थात् मासिक ३० रुपये यहाँ से निरन्तर आज की तिथि से प्राप्त होते रहेंगे। सो वैदिकधर्म की महिमा सुनाकर पाखण्डादि का खण्डन करते रहें"

ये शब्द अंकित हैं, जब महर्षि शाहपुरा नरेश महाराजाधिराज सर नाहरसिंह वर्मा के० सी० आई० ई० को राजनीति के मर्म समझाने हेतु २॥ मास पर्यन्त शाहपुरा विराज कर, आगे जोधपुर नरेश को समझाने, सही वैदिक रास्ते पर लाने के लिए प्रस्थान करने लगे, तब बिदाई समारोह में कहा था—स्मरण रहे यह विदाई समारोह। सम्वत् १९४० मिती ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी को हुआ था शाहपुरा राजस्थान में।

इसी राजा को दिग्विजयार्क में भक्त शिरोमणि कहा गया है। क्योंकि इसने जब १८८७ को अजमेर में श्रीमती परोपकारिणी सभा का महत्त्वपूर्ण चतुर्थ अधिवेशन हुआ। महर्षि का स्मारक चिरस्थायी हो, वैदिक आश्रम की स्थापना हो, तब सम्पूर्ण भारत के गणमान्य सज्जन मनोनीत सभा के सदस्यगण, अन्य सभा के सदस्यों द्वारा चयन किये हुए प्रतिनिधियों का बहुत बड़ी संख्या में पधारना हुआ। प्रस्ताव पर खूब विचार-विमर्श लम्बे समय तक चलता रहा। अन्त में इसी राजा ने अपना सम्पूर्ण उद्यान, जो बहुत बड़े भू-भाग पर था, आनासागर अजमेर के तट पर सभी का स्मृति निर्माण हेतु भेंट चढ़ा दिया। जिसका शिलान्यास समारोह दूसरे दिन बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में हुआ।

यहीं पर प्रतिवर्ष ऋषि-निर्वाण के दिन लगभग कार्तिक शुक्ल पक्ष में मेला लगता है, जिसमें दूर-दूर से विद्वान् व श्रोतागण उपस्थित होते हैं। इस वर्ष भी १२ से १४ नवम्बर को यह आयोजन परोपकारिणी सभा द्वारा किया जारहा है। यह शाहपुरा नरेश १८९३ के छठे परोपकारिणी सभा के अधिवेशन में सभापति पद पर रहे तथा १९०६ में सर्वसम्मति से सभा के प्रधानमन्त्री पद पर नियुक्त हुए, जो आजीवन १९३२ तक स्वर्गारोहण तक बने रहे।

शाहपुरा को आर्य राज्य महर्षि के आदर्शानुसार बनाने में इस राजा ने भगीरथ प्रयत्न किया। शिक्षा के लिए जो प्रयत्न वहाँ हुए, वे तब हुए थे, जब कहीं पर भी भारत में ऐसी व्यवस्था नहीं हुई। विद्यार्थी को छात्रावास में सभी सुविधायें भोजन, वस्त्र, पुस्तकें आदि का सम्पूर्ण खर्च तो वहन होता ही था। साथ में योग्य विद्यार्थी जो बाहर विद्योपार्जन हेतु जाते थे, उनका भी सम्पूर्ण खर्च मार्ग व्यय तक राजाधिराज स्वयं वहन करते थे। जब १९०६ में परोपकारिणी सभा का अधिवेशन हो रहा था, पूर्व का नित्य का खर्चा २८००) हुआ था तो सम्पूर्ण खर्चा स्वयं ने ही दे डाला। आज के भावों से उस समय का एक रुपया वर्तमान में अनुपात से १००) जानना चाहिए।

१९२२ में क्षत्रिय महासभा मथुरा आगरा में आपके सभापतित्व में हुई थी। श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने मल्कानों को शुद्ध कर पुनः अपने पुरखाओं के धर्म में ले आने का महान् प्रयास किया था। तभी आप ही ने प्रथम प्रीतिभोज में उन सब के साथ बैठकर भोजन किया था। १९२५ में जब मथुराजन्म शताब्दी समारोह हुआ था, तब श्रीमानों ने आर्यकुमार संयोजन के सभापति पद से भाषण देते हुए कहा कि 'भावी पीढ़ी निर्माणकर्त्ताओ, आप अपना कार्य सम्पूर्ण देवनागरी लिपि में करें। आर्यो वीर बनो! धर्मात्मा, ब्रह्मचारी, परोपकारी, वैदिकधर्म का प्रचार करनेवाले और विश्वभर का उपकार करनेवाले हों।' आज भी ये शब्द हमें प्रेरणा देनेवाले हैं।

आप ही ने मथुरा में एक प्रस्ताव जन्म शताब्दी के अवसर पर रखा था कि ऐसा ही या इससे भी महान् कार्यक्रम महर्षि की निर्वाण अर्द्धशताब्दी के रूप में मनाया जाये। तदनुरूप ही कार्यक्रम बनाया, तभी सभी इतिहासकारों ने एक स्वर से कहा है कि जगद्गुरु शंकराचार्य को मिला था राजा सुधन्वा। तो महर्षि को मिला यही एक राजा नाहरसिंह। श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति जी के शब्दों में जो आर्यसमाज के इतिहास प्रथम भाग में, अंकित है। कहा गया है कि शाहपुरा नरेशों ने महर्षि और महाराणा सज्जनसिंह को मुजाने का जो कार्य आगे होकर किया, वह चिरस्मरणीय रहेगा। ऐसा था वह एक राजा।

दर्शन एवं योग विद्यालय द्वितीय सत्र की प्रवेशसूचना

वैदिक दर्शनों के अध्ययन एवं क्रियात्मक रूप से योग प्रशिक्षण प्राप्त करने के इच्छुक युवक प्रवेशार्थ आमन्त्रित हैं। व्याकरणाचार्यों के अतिरिक्त शास्त्री अथवा शास्त्री श्रेणी के समकक्ष योग्यता वालों को भी प्रवेश दिया जायेगा।

भोजन, घी, दूध, वस्त्र, पुस्तकादि समस्त आवश्यक साधनों की व्यवस्था विद्यालय की ओर से होगी। प्रवेशार्थी के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह पूर्ण समर्पित भावना से युक्त तथा अनुशासन का पालन करनेवाला हो। यम-नियमों के पालन में श्रद्धा रखनेवाला तथा निष्काम भाव से वैदिकधर्म का आजीवन प्रचार-प्रसार करने की दृढ़ इच्छा रखता हो।

तीन मास तक के बौद्धिक, आध्यात्मिक तथा व्यावहारिक परीक्षण में उत्तीर्ण होनेवाले ब्रह्मचारी को ही विद्यालय में स्थायी प्रवेश दिया जावेगा। इस सत्र में यथासम्भव योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय, वेदांत तथा मीमांसा दर्शनों के पढ़ाने का प्रयास किया जावेगा।

इच्छुक नवयुवक निम्न पते पर शीघ्र ही पत्र-व्यवहार करें। स्थान सीमित संख्या में है।

पता—स्वामी सत्यपति, दर्शन एवं योग विद्यालय
आर्यवन विकास क्षेत्र, रोजड, पो० सागपुर, जि० साबरकांठा, गुजरात-३८३३०७

आओ हम ऋषि-निर्वाण दिवस पर नया भारत बनाने में लग जायें

—डा० प्रशांत वेदालंकार, ७/२ रूपनगर, दिल्ली-११०००७

वह देश जिसकी सभ्यता और संस्कृति विश्व के प्रत्येक देश से पुरातन है, जो संसार का गुरु रहा है, जो शक्ति, दया, सहानुभूति, मित्रता और विश्वबन्धुत्व का सबको पाठ पढ़ाता रहा है। आज अपने उस पुरातन, किन्तु चिर नवीन स्वभाव को भूलकर किसी नयेपन की खोज में लग गया है। एक समय था जब मनु ने कहा था—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

संसारभर के लोग इस देश में आकर चरित्र की और व्यवहार की शिक्षा प्राप्त करते थे, पर आज वही देश संसार के दूसरे देशों के तौर तरीकों को अपनाने के लिए लालायित है। उसे संसार के दूसरे देश आकर्षक और चमकदार प्रतीत होते हैं। वह चाहता है कि वह भी वैसा ही बन जाये। कैसी विडम्बना है ?

हम अपनी भौतिक समृद्धि में भी किसी से कम नहीं थे। हमारा सुख वैभव प्रत्येक देश के राजा के लिए ईर्ष्या का विषय था। हमारे अन्तरिक्षगामी यातायात के साधनों से सारी पृथ्वी को नहीं, सारे ब्रह्मांड को एक कर दिया था। हमारा धनधान्य, शस्यश्यामला यहां की धरती, गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा और कावेरी का अमृतोपम जल, प्राकृतिक सम्पदा प्रत्येक देश के लिए आकर्षण का विषय थे। यहां का स्वर्ण, हीरक, मोती मणियों की चकाचौंध के सम्मुख दूसरे देश अपने को फीका और श्रीहीन अनुभव करते थे। यहां की शक्ति और मारक शस्त्रास्त्र विश्व में कहीं भी हो रहे अन्याय को दूर करने में समर्थ थे। यहां की कृषि और उद्योगों की सर्वोच्च स्थिति थी। यहां की सूक्ष्म कला और कारीगरी यहां की स्थापत्यकला सभ्यता के विविध रूप मानसिक विश्रांति प्रदान करते थे।

हम भौतिक दृष्टि से भी समृद्ध थे और आध्यात्मिक उन्नति का परस्पर कोई विरोध नहीं था। हमारे जीवन में एक संयम था। हमारे वेद, हमारे ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक उपनिषदें, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत का ज्ञान आज भी विश्व के किसी भी साहित्य से, किसी भी धर्म से, किसी भी संस्कृति से ऊंचा है। आज भी उसमें विश्व को ठीक दिशा निर्देश करने की शक्ति है। मनु, वाल्मीकि व्यास, महात्मा बुद्ध, महावीर, चाणक्य, तुलसी, कबीर और आधुनिक युग के महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, तिलक, गोखले, महात्मा गांधी और अरविन्द के सन्देश विश्व को उस की आपाधापी, उच्छृंखलता, अराजकता, अव्यवस्था, अशांति और क्रूरता से बचा सकते हैं। आज

हमें 'नया भारत' बनाने की नहीं, अपने उसी पुरातन स्वरूप को फिर से स्थापित करने की आवश्यकता है।

यह सच है कि आज हम संसार के अनेक राष्ट्रों से भौतिक व वैज्ञानिक प्रगति में पीछे हैं। इससे हमारी अर्थव्यवस्था, हमारे उद्योग, हमारी कृषि, हमारा व्यापार आधुनिक युग के समुन्नत राष्ट्रों की तुलना में पिछड़ा हुआ है। हमें अपने देश की सुरक्षा की चिन्ता भी सदा रहती है। हमारे देश में अशिक्षा, निर्धनता, भुखमरी, बीमारी निरन्तर बढ़ रही है और ये सब हमारी जड़ों को खोखला कर रही हैं। देश में व्याप्त अपराधवृत्ति के कारण सर्वत्र भय व्याप्त हो रहा है। आज हम स्वाभिमान खोकर दूसरे देशों का अनुकरण करने की सोच रहे हैं।

हमें इन सबका उपचार कम्प्यूटर दिखलाई देता है। कम्प्यूटर वैज्ञानिक यन्त्रीकरण की नवीनतम सर्वोत्कृष्ट कृति है, जो काम व्यक्ति को अपने हाथों और अपने मस्तिष्क से करना चाहिए, वही काम अब हम कम्प्यूटर से सम्पन्न करवाना चाहते हैं। पर क्या यह एक वैज्ञानिक सत्य नहीं है कि जब हम अपने किसी अवयव अथवा अपनी किसी शक्ति का उपयोग करना बन्द कर देते हैं, तब वह बेकार हो जाती है। वह शक्तिशून्य बन जाती है। क्या इस बात से इन्कार किया जा सकता है कि कम्प्यूटर का अधिक प्रयोग मनुष्य की शक्तियों को कुन्द कर देगा। हमारा मस्तिष्क हमारे हाथ लुंज-पुंज हो जायेंगे और तब हम कहीं के भी नहीं रहेंगे। अतः कम्प्यूटर का प्रयोग करने में हमें विशेष सावधानी बरतनी होगी। कम्प्यूटर अपनी सीमा में ही सीमित रहे। हम स्मरण रखें कि वह हमारा मस्तिष्क और हाथ नहीं है। केवल एक उपकरण है।

यह भी सच है कि हम बहुत तीव्रगति से इक्कीसवीं सदी की ओर बढ़ रहे हैं। पर क्या हम भविष्य की चिन्ता में वर्तमानकाल की अपनी स्थिति, अपना कर्त्तव्य भी भूल जायेंगे ? क्या बिना वर्तमानकाल की चिन्ता किये उसके निर्माण की उपेक्षा करके हम अपना भविष्य संवार पायेंगे ? और सच तो यह है कि इक्कीसवीं सदी भौतिक सुख-समृद्धि का एक प्रतीक है। हम कहीं इक्कीसवीं सदी के नाम पर अपने जीवन के यथार्थ को, जीवन की वास्तविक स्थिति को भूलकर किसी आकाश कुसुम को प्राप्त करने की झूठी आशा में तो नहीं बन्ध रहे ? दीनहीन, निराश्रित, निर्धन, अशिक्षित, पद-दलित लोगों की उपेक्षा करके, मुट्ठीभर लोगों को किसी स्वर्ग के आसन पर बिठाने का हमारा सपना कहीं हमें रसातल में तो नहीं पहुंचा देगा ? हम मन के सुख-चैन को छीनकर देह को सुखी बनाने के प्रयत्न में लगे हैं। हमारा यह प्रयत्न हमें ही समाप्त कर देगा ?

आज हमें नवभारत का निर्माण करते हुए न कम्प्यूटर की चिन्ता करनी है, न इक्कीसवीं सदी का सपना संजोना है, न विश्व के तथाकथित समृद्धिशाली देशों की नकल पर हमें कोरी भौतिक समृद्धि को प्राप्त करने की झूठी आशा जगानी है। नवभारत के निर्माण का अर्थ है—विस्मृति के गर्त में पड़ी अपनी समन्वयवादी संस्कृति को पुनरुज्जीवित करना। यह संस्कृति हमें भौतिक सुख-समृद्धि के साथ सन्तोष प्रदान कर हमारी मानसिक सुख-समृद्धि में भी सहायक होगी। नये भारत का अर्थ है अपने मेधावी क्रियाशील ऋषि-मुनियों के उपदेशों के आधार पर देश के विशाल जनसमुदाय में व्याप्त अशिक्षा और अकर्मण्यता को नष्ट कर उन्हें शिक्षित, प्रबुद्ध और सक्रिय बनाना। अब भाग्यवाद और

(शेष पृष्ठ २१ पर)

महर्षि दयानन्द की याद में

देश पर छाया हुआ बादल था इक जुल्मात का।
दिन के दिन पर गुमा होता था काली रात का॥
बाल विधवा को प्रथा थी शूद्र सब बेचैन थे।
वेद की तालीम पर कब्जा था ऊंची जात का॥
तेरे आने से जहां में रोशनी इक छागई।
तेरी हस्ती जुल्म के तूफान से टकरा गई॥
तू था वाकिफ कौमीयत और हुरियत के राज से।
जाग उठा था जमाना तेरी इक आवाज से॥
पाशबाने कौम था स्वामी निगहबाने वतन।
हिन्द का इक पेशवा था और था शाने वतन॥
जब खिजा से धर्म के असजार मुरझाने लगे।
तूने अपने खून से सींचा गुलिशताने वतन॥

प्रस्तुतकर्त्ता—सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक

आकाशवाणी केन्द्र रोहतक से

आकाशवाणी रोहतक केन्द्र से श्री सुखदेव शास्त्री का भाषण दिनांक ६ नवम्बर, ८८ को रात्रि ७-०० बजे सुनिये, विषय—दिवाली-पर्व पर महर्षि दयानन्द का बलिदान।

(पृष्ठ १६ का शेष)

हाथ पर हाथ धरे रहने से काम नहीं चलेगा। हमें श्रम के महत्त्व को फिर से समझकर अपने हाथ में कुदाल लेकर वहां पसीना बहाकर भारत की ऊसर पड़ी भूमि को उर्वरक बनाना होगा। भारत मां की आधे से अधिक सन्तान भूखी ही रात को सो जाती है—हमें कलंक को मिटाना होगा। कोटि-कोटि निरक्षरों को साक्षर बनाकर उनमें स्वाभिमान व आत्मिक बल की लौ को जलाना होगा।

इस युग के आरम्भ में महर्षि दयानन्द ने जिस प्राचीन की नींव पर नवीन का भव्य प्रासाद खड़ा करने का सन्देश दिया था वही नवभारत हो, उसी के निर्माण में हमें जुटना होगा। आइये हम उनके निर्वाण दिवस पर संकल्प करें उसी प्राचीन गौरवशाली भारत के पुनर्निर्माण का हम भगीरथ बनकर भारत की प्राचीन ज्ञान गंगा को फिर से प्रवाहित करने में जुट जायें। हमारा यह स्वरूप केवल नये भारत के निर्माण के लिए ही नहीं, आज के संत्रस्त दुःखी व परेशान विश्व को शांति प्रदान करेगा।

जातीय-जागरण

उठ जाग ग्राज फिर हिन्दू-जाति, तू क्यों गफलत में खोई है।
सदियों का ले इतिहास उठा, किस गहन नींद में सोई है।
मंडराते आज मेघ काले, जो प्रलय जलद बन छाये हैं।
यवन ग्रौर म्लेच्छ आज, तव घर में घात लगाये हैं।

मत कहो किसी को ऊंच-नीच, सब एक पिता के बेटे हैं।
दो जन्मजात तुम जाति छोड़, कर्मों से सब ही हेटे हैं।
है ग्रार्यवंश में जन्म लिया, भारत-भू का जो वासी है।
देता है मां का मान इसे, उससे क्यों तुम्हें उदासी है।

जो राम-कृष्ण का वंशज हैं, उनका जो परम पुजारी है।
तब काहे उसको पतित कहो, जो वेदमार्ग ग्राचारी है।
भूले भटके जो कभी पन्थ, उनको फिर से ग्रपनाओ तुम।
अब करदो मुक्त सभी बन्धन, शुद्धि का चक्र चलाग्रो तुम।

बस एक प्रेम का बन्धन हो, उसमें ही सबका ग्रंथन हो।
इस भारत मां की पुण्य धूल, सबके माथे का चन्दन हो।
जो माने इसको जन्मभूमि, कर्त्तव्यभूमि व पुण्य परा।
मानो उसको तुम हिन्दू ही, चाहे जो उसने जन्म धरा।

जो इस भूमि में जन्मा है, जो इस भूमि में खेला है।
जिसने यहां पिया-खाया है, उसका सब इसने झेला है।
सब भाई सगे सहोदर हैं, यहां एक रक्त का नाता है।
धर्म ग्रौर विश्वास जो हों, सबकी यह भारत माता है।

जो भी इसको निज देश कहे, इसको ही शेष महेश कहे।
इसके सुख में जो हो प्रसन्न, इसके दुःख में जो क्लेश गहे।
ऐसा हर कोई हिन्दू है, चाहे नाम अन्त में बिन्दू है।
घुल-मिल जायें इसमें सारे, यह भारत तो जन-सिन्धु है।

जो मिले न राष्ट्र की धारा में, वह बेरा बन बह जायेगा।
जो द्वीप-सीप बनना चाहे, वह कट-छटकर रह जायेगा।
जग उठा ग्राज यह जनज्वार, कर-कर हर-हर का महोच्चार।
गूंजा समता का शंखनाद, बह चली एकता की सुधार।

जो भी इसमें मिल जायेगा, हो, कमल-सा वह खिल जायेगा।
जो भी इससे टकरायेगा, वह चूर-चूर हो जायेगा।

—प्रो० धर्मचन्द्र विद्यालंकार 'समन्वित'
हिन्दी विभाग, सनातन धर्म कालेज पलवल, फरीदाबाद

हिन्दी के लिए भूखे बैठे हैं दो महीने से

—विशेष संवाददाता

नई दिल्ली, १४ अक्तूबर। उन्हें न आई० ए० एस० की परीक्षा देनी है, न आई०पी०एस० की। न उन्हें कालेज की अध्यापकी करनी है, न दूरदर्शन की प्रोड्यूसरी। मगर वे दो महीने से शाहजहां रोड पर संघ लोक सेवा आयोग के दफ्तर से बाहर डेरा डाले बैठे हैं। वे कहते हैं वे दो-चार छह महीने और बैठ सकते हैं। सड़क पर सोने, बरसात में खड़े-खड़े रात बिताने, कभी आधे दिन तो कभी पूरे दिन भूखे रहने की आदत उन्हें पड़ चुकी है।

वे तीन हैं—४० वर्ष के शिवचन्द्र निर्वाण, ३४ वर्ष के राजकरणसिंह और २६ वर्ष के पुष्पेन्द्र चौहान।

आखिरी नाम शायद आपने सुना हो, पुष्पेन्द्र चौहान वकील हैं। गाजियाबाद और दिल्ली में वकालत करते हैं। इन्होंने १९८५ में वकालत पास की थी। उसी साल नवम्बर में दिल्ली में वकालत करने के लिए आवेदन दिया था। चूंकि उन्होंने वकालत की परीक्षा हिन्दी में पास की थी, उनसे दिल्ली बार कौंसिल ने अंग्रेजी में विशेष परीक्षा देने को कहा। बार काउंसिल का तब यह नियम था। पुष्पेन्द्र ने कहा कि यह मेरी मातृभाषा का अपमान है। अगर अंग्रेजी माध्यम से विधि स्नातक बने लोगों को ऐसी परीक्षा नहीं देनी पड़ती तो हिन्दी या अन्य भारतीय भाषा माध्यमवाले ऐसी परीक्षा क्यों दें? बार काउंसिल दिल्ली ने उनका वकालत करने का आवेदन रद्द कर दिया। बार काउंसिल आफ इण्डिया ने भी इस कदम को ठीक ठहराया। बहरहाल दो वर्ष की लड़ाई के बाद, जिसमें २७ दिनों का अनशन शामिल है, पुष्पेन्द्र चौहान जीते। अब हिन्दी या किसी भारतीय भाषा के स्नातक को वकालत शुरु करने के लिए अंग्रेजी की परीक्षा नहीं देनी पड़ती।

यह बड़ी लड़ाई पुष्पेन्द्र ने जीत ली। वकालत शुरु भी करदी। कमाई भी होने लगी। लेकिन पुष्पेन्द्र को सन्तोष नहीं हुआ। अभी तो अंग्रेजी के कारण और भी रास्ते बन्द थे। लोक सेवा आयोग भी हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में पढ़े छात्रों के अंग्रेजी ज्ञान की परीक्षा लेता है। जो समस्या पुष्पेन्द्र के सामने आकर हल हो गई थी, वह अन्य छात्रों के सामने थी। उन्होंने आयोग से पत्र-व्यवहार किया। अवर सचिव रामअवतार का उत्तर मिला अंग्रेजी तो इसी तरह जारी रहेगी।

यह पत्र उन्हें इस वर्ष १६ अगस्त को मिला और उसी दिन वे गाजियाबाद से दिल्ली चल दिये। आयोग में आकर एक और ज्ञापन दिया। जानते थे कि नतीजा नहीं निकलेगा। सो उस दिन से वहीं धरने पर बैठ गये। उनके और भी साथी थे। कुछ उनके साथ बैठते, कुछ प्रेस विज्ञप्ति टाइप करवाते, कुछ फोटो कापी कराने जाते, कुछ इस आंदोलन को चलाने के लिए अपने परिचितों से धन लेने जाते। कुछ खाने का इंतजाम करने जाते। अब भी वे उनके साथ हैं।

इस बीच राखी आई और चली गई। पुष्पेन्द्र चौहान अपने घर गाजियाबाद राखी बन्धवाने नहीं गये। दशहरा आयेगा, चला जायेगा। दीवाली आयेगी और शायद तब भी पुष्पेन्द्र और उनके साथी लोक सेवा आयोग के दरवाजे पर धरना दिये बैठे होंगे। इस बीच भयानक बरसात आई तो कभी लोक सेवा आयोग के बरामदे में जाकर शरण ली तो कभी चौकीदार के केबिन में सिर छुपाया। कभी घुटनों पर सामान रखकर बरसात बन्द होने की प्रतीक्षा की। इस बीच बीमारी भी आई और सात दिन रहकर चली गई। गरीब साधारणजनों के साथ जो-जो होता है, सब उनके साथ हुआ। यही सोचकर वे यह सब सहते रहे हैं कि यह अकेले उनकी नियति नहीं है।

डेढ़ महीने तक पुष्पेन्द्र घर से खाना मंगवाते थे—अपने लिए और अपने साथियों के लिए। लेकिन एक दिन उन्हें लगा कि यह ठीक नहीं है। "जब जनता हित के लिए हम लड़ रहे हैं तो अपनी भूख की परवाह भी नहीं करनी चाहिए। कोई खिला देगा तो खा लेंगे। कोई नहीं खिलायेगा तो चुप बैठे रहेंगे। नतीजा यह है कि किसी-किसी दिन तो दो-दो, तीन-तीन घरों से खाना आ जाता है। किसी दिन कहीं से नहीं आता। ज्यादा आ जाता है तो आस-पास के भाइयों के साथ बांट लेते हैं। वैसे एक समय का खाना दो बार बांटकर खाने की आदत तो हमने बना ही ली है" पुष्पेन्द्र कहते हैं।

वह बताते हैं कि शुरु-शुरु में आयोग के कर्मचारी-अधिकारी व्यंग्य से मुस्कुराते थे। कहते थे, कुछ नहीं होगा, घर जाओ। वक्त क्यों बिगाड़ते हो। बसों में आने-जानेवाले भी कहते थे—'ओ हिन्दी वालो, कुछ हुआ ? कुछ बना तुम्हारा ?' लेकिन अब कोई हंसी नहीं उड़ाता। अलबत्ता उनकी उपेक्षा जरूर करता है। पिछले दो महीने में सिर्फ एक बार आयोग के एक अधिकारी उनके पास यह कहने आये कि कुछ नहीं होगा, घर जाओ। उन्होंने अपना परिचय नहीं दिया। उसके बाद से आज तक कोई नहीं आया।

पुष्पेन्द्र के दूसरे साथी शिवचन्द्र निर्वाण हैं, ४० वर्ष के हैं, कुंवारे हैं। कभी १५-२० वर्ष पहले अध्यापकी की थी। फिर खेती-बाड़ी की। पुष्पेन्द्र चौहान के साथ पहले अनशन पर बैठ चुके हैं। वे भी कोई डेढ़ माह से यहीं बैठे हैं। मनमौजी आदमी हैं। घर के लोग उनके किसी काम में दखल नहीं देते। "वे जानते हैं कि मैं कोई गलत काम नहीं करता।"

इसलिए उन्हें परिवार की ओर से कोई चिन्ता नहीं है। वह कहते हैं—वह बरसों तक हिन्दी के लिए यहां बैठे रह सकते हैं। दाना-पानी बन्द हो जायेगा तो भी बैठे रहेंगे। वह कहते हैं या तो सरकार हिन्दी को पूरी तरह राष्ट्रभाषा का दर्जा दे या खुलेआम-बेखटके अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा घोषित कर दे। "तब कम से कम नाटकबाजी तो खत्म हो जायेगी। लोगों को पता तो चल जायेगा कि उन्हें अपने बच्चों को अंग्रेजी में पारंगत करना है।"

तीसरे हैं राजकरणसिंह। पहले बम्बई में थे। बाराबंकी जिले के गांव रघुकुल बिसुनपुर में इन्होंने एक फिल्म इंस्टीट्यूट बनाया था, जिसमें वे जनता से जुड़ी समस्याओं पर फिल्में बनाना चाहते थे। उनका इरादा इसके सहारे उपेक्षित, प्रतिभावान कलाकारों को मंच देना था। फिर ८ अगस्त को बाराबंकी से दिल्ली की पदयात्रा पर चल दिये—जनता को समझाने और राजीव गांधी से मिलने। भटकते-भटकते इन लोगों के पास पहुंच गये। अब यहीं पर डेरा जमाये बैठे हैं—पिछले एक महीने से। अन्तिम समय तक हिन्दी और भारतीय भाषाओं के लिए लड़ने का इरादा है। वह भी परिवार की चिन्ता से मुक्त होकर आये हैं।

पुष्पेन्द्र चौहान के सामने कुछ कठिनाइयां जरूर थीं। एक तो वे घर के अकेले कमाऊ पूत हैं। दूसरे कमाऊ पूत होगये हैं तो मां-बाप को इनके विवाह की चिन्ता थी। पहले तो उन्हें समझाया गया कि वे झंझट में न फंसे। परिवार की जिम्मेदारी सम्भालें। मगर इनका आदर्श भगतसिंह है। उन्होंने जवाब दिया कि अगर भगतसिंह भी जिम्मेदारी की बात सोचते तो क्या वह आज याद करने के काबिल रहते ? बहरहाल अब उनके परिवार को उनसे शिकायत नहीं है। घर में ५०-५५ बीघे खेती है। सीमित खर्चे हैं। छोटे भाई ने पारिवारिक जिम्मेदारी सम्भाल ली है। इस धरने से फारिग होंगे तो फिर वकालत करने लगेंगे। 'हजार-डेढ़ हजार धरवालों को देता रहूँगा। मैं उनसे कहता हूँ यूँ समझो कि मैं वकील नहीं, क्लर्क हूँ।'

इनका साथ देने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय के कुछ छात्र आये। एक बार उन्होंने संघ लोक सेवा आयोग में प्रदर्शन भी किया। उन्होंने पुष्पेन्द्र चौहान से कहा कि वे उग्र आंदोलन करने को तैयार हैं। 'लेकिन मैंने उन्हें रोका। जरूरत हुई तो उनका सहयोग लेना होगा। वैसे नवम्बर तक कालेज भी खुल जायेंगे और संसद भी। तब तक कोई न कोई समाधान सामने आयेगा।'

पुष्पेन्द्र चौहान का आरोप है कि संघ लोक सेवा आयोग ने हिन्दी और भारतीय भाषाओं को पछाड़ने के लिए सरकारी आदेशों की अवहेलना की है। रेल मन्त्रालय ने रेलवे आप्रेन्टिस परीक्षा तथा अखिल भारतीय इंजीनियरी सेवा एवं पर्यावरण मंत्रालय ने भारतीय वनसेवा की परीक्षा में हिन्दी को पूर्ण विकल्प बनाने के बारे में आयोग को बार-बार लिखा है, लेकिन आयोग सुनता नहीं है।

इन तीनों को यहां से हटाने के लिए शुरु में कई तरीके अपनाये गये। आतंकवादियों का डर भी दिखाया गया, लेकिन ये डटे हैं। उनका कहना है कि हम कोई ऐसी जिद लेकर नहीं बैठे हैं कि आज से ही आयोग अंग्रेजी की अनिवार्यता खत्म कर दे। 'उसे इस काम में कोई कठिनाई हो तो हमें बताये। हमसे तर्कवितर्क करे। हमें विश्वास दिलाये कि सचमुच कोई बाधा है और यह बाधा कितने दिन में दूर हो सकती है, हमें समयबद्ध कार्यक्रम बतायें। अगर हमें आयोग की बात पर भरोसा आ गया तो हम कल ही धरने से उठ जायेंगे। लेकिन कोरा और खोखला आश्वासन हमें अपने निश्चय से डिगा नहीं पायेगा।'

(दैनिक नवभारत टाइम्स से साभार)

गुरुकुल शुक्रताल का वार्षिक महोत्सव

वैदिक योगाश्रम शुक्रताल का चौबीसवां वार्षिक महोत्सव आश्रम के विशाल प्रांगण में कार्तिक शुक्ला द्वादशी से पूर्णिमा तक तदनुसार २० से २३ नवम्बर, ८८ तक भारी धूमधाम के साथ मनाया जायेगा।

महोत्सव में अनेक विद्वानों, महात्माओं, भजनोपदेशकों, केन्द्रीय एवं प्रांतीय नेताओं तथा गणमान्य अधिकारियों को आमन्त्रित किया गया है।

—स्वामी आनन्दवेश प्रबन्धक

प्रो. शेरसिंह सभाप्रधान को सोनीपत में ११०१) वेदप्रचारार्थ भेंट

(केदारसिंह आर्य द्वारा)

सोनीपत २९ अक्तूबर : आज यहां दोपहर बाद आर्यसमाज आर्यनगर काठमण्डी के वार्षिक उत्सव पर सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह जी को आर्यसमाज की ओर से ११०१) वेदप्रचारार्थ भेंट किये गये। सभाप्रधान जी ने इस अवसर पर उपस्थित आर्य नरनारियों को आर्यसमाज के कार्यों में सहयोग देने की अपील करते हुए कहा कि आर्यसमाज कोई मतमतांतर नहीं, अपितु एक आंदोलन है। सभा ने प्रदेश में वेदप्रचार कार्य के साथ शराबबन्दी आंदोलन गतवर्षों से चला रखा है। अतः हम सभी को इस कार्य में तन, मन तथा धन से सहयोग देना चाहिए। आपने महिलाओं की प्रशंसा करते हुए कहा कि इनका योगदान पुरुषों से अधिक रहा है। यदि ये किसी समाज-सुधार के कार्य को अपने हाथ में ले लेवें तो सफलता अवश्य मिलती है। इन्होंने शराब के ठेकों पर जहां भी धरना दिया है, वहां शराब के ठेकेदारों ने हथियार डाले हैं। अतः इस महत्त्वपूर्ण कार्य में कदम आगे बढ़ाना चाहिए।

मुख्य अतिथिपद से बोलते हुए गुरुकुल देहरादून के सुयोग्य स्नातिका पं० प्रभातशोभा जी ने महिलाओं को अपनी शक्ति पहचानने तथा उसका सदुपयोग करने का अनुरोध किया। महिला नर-नारियों की जन्मदाता तथा उनका पालन-पोषण करनेवाली हैं और इनमें अच्छी सन्तान बनाने की क्षमता है। आपने गतमासों संसार का भ्रमण करने का अनुभव बताते हुए बताया कि महिलाओं ने प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों से अधिक प्रगति की है। आपने रामायण के रावण को चार वेद तथा वैदिक शास्त्रों का विद्वान् तथा शस्त्रों का योद्धा बताया, परन्तु उसने सीता जैसी महान् देवी का अपहरण करके महापाप किया था। उसके इस पाप का दण्ड आज तक उसका पुतला जलाकर दिया जाता है। परन्तु रावण को हरानेवाला राम जैसा महापुरुष बनने का यत्न नहीं किया। जबकि रावण को प्रति-वर्ष जलते देखकर सभी खुशी से कूदते हैं, परन्तु उनके गुण धारण करने का यत्न नहीं करते। आर्य-समाज की महिलायें इस कार्य को आसानी से कर सकती हैं। उत्सव पर सभा के पं० तेजपाल, पं० जयपाल जी के अतिरिक्त स्वामी धर्मानन्द, सहदेव जी बेधड़क के भजन तथा बहन उर्मिला तथा पं० वेदरत्न के व्याख्यान हुए।

आर्यसमाज स्वामी श्रद्धानगर बाजार लुधियाना का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री हरबंसलाल सेठी, मन्त्री—बोधराज सहगल, कोषाध्यक्ष – जगदीशचन्द्र आर्य।

आर्यसमाज सुरत का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री मंगलसेन चौपड़ा, मन्त्री—प्रीतमलाल, कोषाध्यक्ष—सुखलाल।

हरयाणा की धरती की सिंचाई और उसका भविष्य

—प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

हरयाणा की धरती की सिंचाई पश्चिमी यमुना नहर, भाकड़ा की नहरों तथा रावी व्यास के पानी से हो रही है और भविष्य में भी होनी है। नलकूपों के द्वारा भी सिंचाई होती है, परन्तु भूमि के नीचे मीठा पानी काफी मात्रा में हरयाणा के बहुत बड़े क्षेत्र में उपलब्ध नहीं है, इसलिए सिंचाई का मुख्य साधन नदियों का पानी है। नदियों में पानी पहाड़ों की बर्फ पिघलने से आता है या वर्षा से। यह सब जानते हैं कि न तो बर्फ बारहों महीने पिघलती है और न वर्षा रोज-रोज होती है, इसलिए यदि किसान को जरूरत के समय पानी देने के लिए पानी को झीलों और जल भण्डार बनाकर जमा करना पड़ता है। जल के भण्डार बने बनाये तो बहुत कम और बहुत छोटे हैं और वे मैदानों से जुड़े हुए नहीं हैं, जहां बड़े पैमाने पर खेती हो सके। इसलिये इन बड़े-बड़े मैदानी इलाकों की धरती की सिंचाई के लिए बड़े और छोटे बांध बनाने पड़ते हैं, जिनके द्वारा कृत्रिम झीलें और जल भण्डार बनते हैं। इन्हीं कृत्रिम झीलों और जल भण्डारों से नियन्त्रित नियमित और सुव्यवस्थित ढंग से किसानों को सिंचाई के लिए पानी दिया जाता है। भाखड़ा तथा व्यास के बांध इसीलिए बनाये गये हैं।

बांधों तथा झीलों और जल भण्डारों की आयु

फ्रांस अमरीका तथा अन्य कई देशों में बड़े-बड़े बांध बने हैं। हो सकता है उस समय दूसरे देशों में भी जल भण्डारों में मिट्टी बहकर न आ सके, उसका ध्यान नहीं किया। हमारे देश में तो यह तथ्य है कि बांध बनाते समय इधर ध्यान नहीं दिया गया। भाखड़ा बांध पर और उसकी नहरों पर २०० करोड़ से कुछ अधिक खर्च हुआ, परन्तु जिन पहाड़ों से बहकर पानी आता है, उनके पेड़ पौधों की सुरक्षा और नये पेड़ लगाने के लिए कोई प्रावधान नहीं किया गया। यदि २० करोड़ रुपये का प्रावधान इस काम के लिए कर देते और जंगलों की सुरक्षा और नये पेड़ लगाने का काम पहाड़ों में हो जाता तो बांध की आयु बढ़ सकती थी। इंजीनियरों का अनुमान था कि भाखड़ा बांध के द्वारा किसानों को १२५ वर्ष से १५० वर्ष तक पानी मिल सकेगा। मैंने १९७२-७३ में जिन नालों और पहाड़ों से सतलुज नदी में पानी आता है उनका निरीक्षण किया। वहां देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ कि वहां अन्धाधुन्ध जंगल कटे हैं, (पार्वती का चीरहरण बड़ी निर्दयता से किया गया है)। कुछ पहाड़ियों के सब पेड़ तो कट चुके थे, परन्तु घास था। उन घासनियों का घास काटकर बेच दिया गया और वहां पर भेड़ बकरियों को भी चराया; उससे सब पहाड़ियां नंगी होगईं। जब पेड़-पौधों और घास से पूरी तरह भरी

हुई पहाड़ियां नहीं होंगी तो वहां की मिट्टी ढीली होकर वर्षा होते ही बह जायेगी और बहते-बहते वह मिट्टी गोविन्द सागर नामी जल भण्डार में इकट्ठी होने लगेगी। पेड़-पौधे जमीन को अपनी जड़ों से जकड़ लेते हैं, ढीली नहीं होने देते। पानी आता है, वह बह जाता है, उसके साथ मिट्टी नहीं बहती। अब तो संसारभर में बांध बनानेवाले अधिकारी परियोजना में ही जंगलों की सुरक्षा और नये पेड़ लगाने के लिए काफी रुपये का प्रावधान बांध की परियोजना में ही करने की सिफारिश करते हैं। पिछली गलती और लापरवाही का परिणाम यह निकला कि भाखड़ा बांध की आयु १२५ से १५० वर्ष की बजाये ७५ से ९० वर्ष रह गई है। ४५ वर्ष से ऊपर तो बांध को बने हुए हो चुके हैं। अब भाखड़ा बांध की आयु ४५ वर्ष से भी कम बची है। २०३० के बाद जब गोविन्द सागर मिट्टी और रेती से भर जायेगा, तब हरयाणा की लाखों एकड़ भूमि फिर सिंचाई से वंचित होकर बारानी हो जायेगी।

नये बांध की तैयारी

गोविन्द सागर की मिट्टी और रेती तो निकालकर कहीं फेंको नहीं जा सकती, किसी दूसरी जगह एक नया बांध बनाने की तैयारी करनी होगी और उसके लिए अभी से विचार करना पड़ेगा।

चिन्ता का विषय

एक ओर तो बर्फ के ग्लेसियरों के पिघलने और नई बर्फ की कमी के कारण आगे चलकर नदियों में गर्मी के महीनों में कम पानी आने का डर है तो दूसरी तरफ जल भण्डारों का मिट्टी और रेती से भरने की प्रक्रिया के कारण इकट्ठे किये जानेवाले पानी में कमी होने का भी वास्तविक डर है। इन कारणों से ही मैंने रावी व्यास के पानी के बंटवारे के सम्बन्ध में लिखा था। यदि पानी बढ़ने की बजाये कम हुआ तो कागज पर ३८ लाख २० हजार मिला हुआ पानी हरयाणा के खेतों के लिए उपलब्ध नहीं हो पायेगा, वह कागजों में ही रह जायेगा और इससे बहुत कम पानी उपलब्ध हो सकेगा।

इन सब बातों को ध्यान में रखकर भारत सरकार और पंजाब तथा हरयाणा सरकारों को पानी के बंटवारे के फैसलों में ऐसे स्पष्ट प्रावधान करने पड़ेंगे, जिससे पानी अधिक मिलने की बजाये, जब कम मिलने लगे तो हरयाणा को न्याय मिल सके। सभी सम्बन्धित सरकारों तथा जनता का ध्यान इन तथ्यों की ओर आकर्षित करने की दृष्टि से ही मैंने आनेवाली स्थिति का विश्लेषण किया है। इन तथ्यों के प्रकाश में सभी फैसलों में आवश्यक संशोधन करने आन पड़ते हैं और इस दिशा में शीघ्र ही ठोस कदम उठने चाहियें।

●

चौ. पृथ्वीसिंह जी बेधड़क का दीवाली गीत

टेक—हर साल भारत देश में दीवाली आती है।
श्रीराम के जमाने से यह चली आती है।।

पहली दीवाली को अवध हनुमान आये थे,
चौदह साल के समाचार सारे सुनाये थे,
सुनकर भरत हर्षाए थे खुशी निराली आती है,
बजरंग को हर घर से फूल की डाली आती है।१

दूजी दीवाली को लक्ष्मण श्रीराम आ चुके,
सारे अवध के नरनारी थे दर्शन के भूखे,
सूखे अवध के महलों की हरियाली आती है,
बिन चांद सिया के आते ही उजियाली आती है।२

असली नसल की गौ बैल और गज घोड़े छांटे,
हर एक वैश्य ने घर-घर जाकर सारे पशु फांटे,
बांटे पताशे घर-घर खीर की थाली आती है,
घर-घर में हवन की खुशबू वहां पर आती है।३

जनता भक्त है राम के अब नाम-नाम की,
अनुयायी प्रजा है नहीं उसके प्रोग्राम की,
श्रीराम की अब तक भी जो प्रणाली आती है,
कहता है पृथ्वीसिंह वहां कंगाली आती है।४

प्रस्तुतकर्ता—जयपालसिंह आर्य, सभा भजनोपदेशक

दिवाली दिल में गई रजों व गम मलाल

तेरी जय ऋषि दयानन्द, हम कर दिये निहाल,
एक बात क्या कहें तेरी, हर बात बेमिसाल,

सानी नहीं है जग में, कोई मेरे देवता का;
गुजरात में जन्म ले, जो बन गया जहां का;
शिश दोस्त है या दुश्मन, नहीं दिल में था ख्याल।

सदियों से ग़मजदों को, ग़म से मिली रिहाई;
उजड़े हुए चमन में, फिर से बहारें आई,
हर गुल व गुलचा महका, महकी थी डाल।

अपनी मुसीबतों की, परवाह ना करो,
देखे जो जुल्म और पर आंखें तेरी भरी;
जुल्मों की तेग रोकी खुद को बना के ढाल।

बना मूल से दयानन्द, क्या रात थी निराली;
एक रात वह भी आई, जो लाई घटायें काली,
दीवाली दिल में दे गई, रंजों व गम मलाल।

कुछ लोग पूछते हैं, अजमेर है कहां पर,
अन्तिम विदाई कर्मठ गुरुवर ने ली जहां पर,
जिसने बुझाई आकर भारत की जलती ज्वाल।
तेरी जय ऋषि दयानन्द.....

प्रस्तुतकर्ता—मुरारीलाल बेचैन, फरीदाबाद आर्य भजनोपदेशक

वेदप्रचार सप्ताह आदि के कार्यक्रम

आर्यसमाज पलवल शहर जि० फरीदाबाद	१४ से २० नवम्बर
,, बड़ा बाजार पानीपत जि० करनाल	१८ से २० ,,
,, तिगांव जि० फरीदाबाद	१९-२० ,,
कुरुक्षेत्र गोशाला कैथल जि० कुरुक्षेत्र	१५ से १७ ,,
आर्यसमाज कृष्ण कालोनी भिवानी	१८ से २० ,,
,, कोसली जि० रोहतक	१९ से २१ ,,
,, फिरोजपुर झिरका जि० गुडगांव	१८ से २० ,,
मेला कपालमोचन जि० अम्बाला	२१ से २३ ,,
आर्यसमाज अचीणा जि० भिवानी	२५ से २७ ,,
,, जाजनपुर जि० कुरुक्षेत्र	२६ से २८ ,,
,, सिलारपुर तोताहेड़ी जि० महेन्द्रगढ़	२५ से २७ ,,
,, खेड़की जि० महेन्द्रगढ़	२६-२७ ,,
,, बहादुरगढ़ मण्डी जि० रोहतक	२६ से २८ ,,
,, आहूलाना तह० गोहाना जि० सोनीपत	११-१२ दिसम्बर
,, रायपुर रोडान जि० करनाल	१६ से १८ ,,

जो आर्यसमाज नवम्बर मास में अपना कार्यक्रम रखना चाहें, उन्हें तुरन्त पत्र-व्यवहार करके अपनी तिथियां सुरक्षित करवा लेनी चाहिएं, ताकि सभा को उपदेशक तथा भजनमण्डलियों का प्रबन्ध करने में सुविधा रहे।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

दयानन्द-निर्वाण

ले०—वैदिकधर्म विशारद, काव्यमनीषी श्रीसूर्यदेव शर्मा एम० ए० साहित्यलंकार

(शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्)

होती वृद्धि अधर्म की जब कहीं, अन्याय आचार में।
धर्माधार धुरीण धैर्य बहता, धर्मध्वजीधार में।
मुक्तात्मा तब जन्म ले उतरते, सम्पूज्य संसार में।
दे "आनन्द दया" ऽनुरूप बनके, जाते निराकार में ॥ १

"गूंजे गौरव-गीतिका जगत् में, भावे भली भारती।
मानें मानव मान ज्ञान गुरु का, हों मुक्त मेधाव्रती।
वाणी वैदिक दे विनोद बनके, आमोद आभावती"।
दे सन्देश विशेष विश्वपति का, निर्वाण पाया यती ॥२

छोड़ा था घरबार, भाग्य, धरणी, माता पिता जान के।
विद्याहेतु बिताय बालपन को, जिज्ञासु हो ज्ञान के।
योगी योग-निधान खोज करके वो, धरणा, ध्यान के।
सम्प्रज्ञातसमाधि सिद्ध करके, थे योग्य निर्वाण के ॥३

घूमे कानन-कुंज में, कुधर* में, वीथी गली ग्राम में।
मारा मान महान् दिग्गजन का, शास्त्रार्थ-संग्राम में।
कीने वेद विशुद्ध-बोधवित् जो, प्राणी धराधाम में।
पाया अन्तिम काल प्रेम प्रभु का, निर्वाण निष्काम में ॥४

राजा रंक सिखाय एक प्रभु को, आराधना साधना।
फैलाई श्रुतिसिद्ध सत्य सुख की; सम्भावना, भावना।
होवे वेदप्रचार चारु जग में, कैसी रही कामना।
पा निर्वाण गये महान् पर भी, थी आसना वासना ॥५

भाती है खल को न भूति यश वा, जो गौरवागार है।
जानें हैं कब मूढ़ मुक्ति मन क्या, सत्यार्थ क्या सार है।
पापी ने धन लोभ में विष दिया, हां दुष्ट ! भूभार है।
कीना घातक किन्तु मुक्त ऋषि ने ऐसा महोदार है ॥६

शय्यासीन हुए ऋषीश फिर भी, धैर्येण चेते रहे।
आर्यों को अनुकूल कर्म-कृति का, आदेश देते रहे।
प्रेमी भक्त महान् ज्ञान गुरु का, सामोद लेते रहे।
सेवा में सविशेष यत्न करते, थे शिष्य केते रहे ॥७

पाया था, "गुरुदत्त" ज्ञान प्रभु का, जीता जगज्जाल था।
था अत्यद्भुत दृश्य, कारुणिक था, तेजस्वी पै बाल था।
पीछे भक्त सभी खड़े कर लिए, मृत्युन्मुखी काल था।
"द्वारे दो सब खोल" वेदपथ के, आत्माध्वनीताल था ॥८

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/7



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

२३ कार्तिक २०४५ वि०

वर्ष १५, अङ्क ४८, २८ नवम्बर, १९८८ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

कृषिमित्कृषस्व (उत्तम खेती)

—प्रो० भद्रसेन, डाक० भाबु आश्रम, होशियारपुर-१४६०२१

विजयपुर ग्राम के पास नहर के किनारे-किनारे दो मित्र सायं भ्रमण के लिए चले जा रहे हैं। दोनों विश्वविद्यालय में पढ़ते हैं। सोमेश मनोविज्ञान और सर्वेश समाज-शास्त्र का विद्यार्थी है। दोनों द्वितीय सत्र की परीक्षा देकर अवकाश के दिनों में अपने ग्राम में आये हुए हैं। सोमेश ने सर्वेश को कहा—मैं तो चार वर्ष के पश्चात् अपने ग्राम में आया हूं। यहां और जगह तो सामान्य-सामान्य परिवर्तन आया है। जैसे कि ग्राम में दस के लगभग नये मकान बने हैं और कुछ गलियों में सुधार हुआ है। पर नहर के किनारे कुछ विशेष परिवर्तन आया है। यहां सारी जमीन तो भूपाल की थी, पर यहां तो अब एक बड़ा सुन्दर बाग उभरता दिखाई दे रहा है।

सर्वेश ने अपने साथी की बात सुनकर कहा—वैसे तो मैं भी दो वर्ष के बाद आया हूं। इससे पूर्व भी दो वर्ष तक एक-दो बार केवल एक एक दिन के लिए ही आया था। अतः यह देखने का अवसर ही नहीं लगा कि कहां क्या-क्या परिवर्तन आ रहा है? पहले तो केवल नहर के किनारे घूमने का ही आनन्द था, पर अब यह बाग बन जाने से भ्रमण का आनन्द 'सोने में सुहागे' वाली बात होगया है।

दोनों मित्र जब इस तरह बातें करते जा रहे थे तो सामने से कुछ युवक आते हुए दिखाई दिये। जब वे बिल्कुल पास में आये तो सोमेश ने कहा—क्यों दोस्त, तेरा नाम गोपाल तो नहीं है? गोपाल ने कहा—हां, बिल्कुल ठीक है, परन्तु इतने वर्ष कहां छिपा रहा? मैंने तो कई बार तेरे पिता जी से पूछा तो उन्होंने यही कहा—इस साल की परीक्षा देकर उसने आना तो था, पर कुछ विशेष बात होगई और वह अवकाश के दिनों में नहीं आ सका। हर वर्ष पूछने पर पता चलता रहा कि इस वर्ष देशभ्रमण, विशेष गोष्ठी आदि में गया है। तब सोमेश ने सर्वेश से पूछा कि तू इसे जानता है कि नहीं? यह हम से दो कक्षा पीछे पढ़ता था और जब हम दशम कक्षा की परीक्षा की तैयारी में थे तो उन दिनों के खेल समारोह में यही ८०० और ४०० मीटर की दौड़ में प्रथम आया था। हां, तू भी तो अपने साथियों से परिचित करा और तुम सब इधर भूपाल के खेतों की ओर से कहां से आरहे हो?

तब गोपाल ने सबका परिचय दिया और कहा—कि कल तुम दोनों प्रातः ९ बजे हम सबके निमन्त्रण पर यहां आओ, फिर मैं सबका पूरा परिचय दूंगा। गोपाल ने अपने साथियों से कहा—तुम सब अब अपने-अपने घर जाओ, मैं इनको अपना अड्डा बाहर से दिखाकर आता हूं और रास्ते में मेरे घर भी बताते जाना कि मैं थोड़ी देर बाद आऊंगा। गोपाल उन दोनों के साथ लौट पड़ा और उनको बताया कि तुम्हारे साथ ही एक भूपाल पढ़ता था, जो कि पढ़ाई तथा खेल में बहुत होशियार था। उनकी अपनी बहुत सारी जमीन थी तथा माता-पिता का अकेला ही बच्चा था। उसी का ही यह बाग है। उसको उसके पिता जी ने अपनी जमीन के कारण ही कृषि विश्वविद्यालय में भेजा था। इस बातचीत के बीच में ही सर्वेश ने पूछा—ये मकान कैसे हैं? तब गोपाल ने कहा—मैं तुमको वहीं ले जारहा हूं। देखो! यह गोशाला है, जिसको मैं चलाता हूं। इसमें मैंने पांच गाय और दो भैंसे रखी हुई हैं। यही मेरा कारोबार है और मैं इसमें हर तरह से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट हूं। यहीं ऊपर मेरा मकान बन रहा है। इसी के साथ ही बाग में हमारा गोबर गैस प्लांट है। इससे मेरे और भूपाल के भोजनालय की ईंधन की आवश्यकता पूर्ण होती है। बाग और जमीन के लिए खाद भी इसी से प्राप्त होती है। दूरवर्ती खेतों में ट्यूबवैल के जल के साथ फव्वारा से जल को मिलाकर भी उर्वरक का काम लिया जाता है। कल प्रातः तुम दोनों सायं भ्रमण के लिए भी यहीं आ जाओ तो मैं आपको भूपाल से मिला दूंगा और उसके साथ बाग तथा खेतों की देखभाल भी हो जायेगी। अब, तो वैसे भी अन्धेरा बढ़ता जारहा है, अतः अवलोकन सुविधापूर्वक न हो सकेगा।

हां, आइये आप दोनों को एक नजर अब कार्यशाला पर भी डलवा दूं। जिसको देखने के लिए आप दोनों को हम सब ने पहले ही आमन्त्रण दे दिया है। इस कार्यशाला के दो भाग हैं। इसके मुख्य प्रबन्धक कर्मवीर जी हैं, जो कि मानवेन्द्र जी की प्रेरणा और संरक्षकत्व में यह सारा कार्य चला रहे हैं।

इस कार्यशाला का एक भाग तो सिलाई केन्द्र है, जिसमें ग्रामों की कन्यायें तथा महिलायें ९ बजे से ११-३० बजे तक सिलाई-कढ़ाई आदि सीखने के लिए आती हैं। उनसे कोई शुल्क नहीं लिया जाता। हां, जो देना चाहे, दे सकता है। इनकी शिक्षिका का सारा व्यय अपने समीप के नगर की आर्यसमाज ही देती है। उतनी देर के लिए ही शिक्षिका आर्यसमाज की ओर से आती है। दोपहर के बाद इसी स्थान पर लड़के सीखने के लिए आते हैं और उनका शिक्षक अलग है। फीस की बात लड़कों के लिए लड़कियों जैसी ही है। जो शिक्षक उनको सिखाता है, वह नगर में अपनी दूकान करता है। वे अपने ही एक साथी के पिता जी हैं और अधिकतर उनका कार्य सेवारूप में ही होता है। कार्यशाला के दूसरे भाग में हस्तकला के पांच कक्ष हैं—एक साईकल स्कूटर का, दूसरा ट्रेक्टर ट्यूबवैल का, तीसरा घड़ीसाजी का, चौथा रेडियो का, पांचवां जिल्दसाजी कापी बनाने आदि का है।

सोमेश—सर्वेश अब पर्याप्त भ्रमण हो चुका है और अन्धकार भी हो रहा है। अतः अब लौटना चाहिए। हां, गोपाल यह सब एकदम कैसे होगया? लौटते हुए तो तूने हमारे साथ ही चलना है। अतः इस समय वापिस चलते हुए यह कहानी भी बताओ कि यह सब कैसे हुआ?

(शेष पृष्ठ ४ पर)

हरयाणा प्रांत से बड़े पैमाने पर बछड़ों की तस्करी

ले०—डा० रघुवीर गोप्रेमी, खरावड़, जिला रोहतक

दिनांक १३-१०-८८ के प्रात: ३ बजे बालोर गांव जो दिल्ली सीमा से लगता है, वहां बार्डर पार करते हुए हमने दस मुसलमान कसाइयों से ६७ सुन्दर-सुन्दर छोटे तथा बड़े बछड़ों को जिनमें एक राजस्थानी देवनी गौ-जाति का सांड भी शामिल था, मुक्त कराया। नाम पता पूछे जाने पर हमें ज्ञात हुआ कि उनमें एक सइद पुत्र भोलाबक्श कौम शेख (कसाई) आर/ओ दहगया थाना जरिफनगर। २) यासीन सुपुत्र रसीद कौम कुरेसी आर/ओ लजपुरा जि० बदायू। ३) सुके सुपुत्र अब्दुल मजीद कौम शेख आर/ओ किनोर थाना किनोर। ४) सबीर सुपुत्र बातून आर/ओ लजपुरा। ५) अजबर सुपुत्र गुफार शेख आर/ओ लजपुरा जिला बदायूं, यू०पी०। ६) अब्दुल सुपुत्र गुलामनबी शेख आर/ओ रसूलपुर थाना जरीफनगर। ७) अश्फाक सुपुत्र मुश्ताक शेख आर/ओ गन्नौर थाना जिला बदायूं। ८) आजन्द सुपुत्र शहआद शेख आर/ओ नेचुआ थाना बिलसी जिला बदायूं। ९) खलील सुपुत्र विलायत हुसैन शेख कसाई आर/ओ असहद थाना बिलसी जिला बदायूं। १०) इन्द्रीश सुपुत्र ननवा कुरेसी आर/ओ लजपुरा जिला बदायूं, उत्तरप्रदेश बतलाये। इनके साथ चार व्यापारी और थे, वह भागने में सफल हो गये। हरयाणा सरकार के गोवध निरोधक अधिनियम 3/4 AR CoW Staughten Act 1955 अथवा नं० 5075-AH-5-88/23640 दिनांक १९-८-१९८८ के अनुसार प्रदेश से गोवंश के निकास पर रोक लगा रखी है। केवल एक हजार रुपये से ऊपर की कीमत का बछड़ा और दो हजार रुपये से ऊपर के मूल्य की दुधारु गाय और बैल ही पशु पालन विभाग हरयाणा के उप-निदेशक की लिखित अनुमति (परमट) से प्रदेश से बाहर ले जाये जा सकते हैं। यही नहीं, उस व्यापारी ने अपने हलफिया बयान में यह भी लिखकर देना होता है कि मैं इस पशु (गाय बैल बछड़े) को अमुक उद्देश्य के लिए ले जारहा हूं, वध कराने के लिए नहीं।

इसके अतिरिक्त हरयाणा से बाहर पशु ले जाने पर सीमा पर टैक्स भी देना अनिवार्य होता है, किन्तु उपरोक्त व्यापारियों ने इन सभी नियमों का उल्लंघन कर अपराध किया। इन तीनों में से उनके पास कोई प्रमाण-पत्र नहीं था। केवल भिवानी पशु मेले की खरीद की साधारण रसीद मात्र थी, जिसका इन नियमों से कोई सम्बन्ध नहीं होता। यह बछड़े दिन के समय नहीं, बल्कि रात्रि के ३ बजे सीमा पार किये जारहे थे और वह भी कच्चे रास्ते से चोरी-चोरी। टैक्स की भी चोरी। सीमा करवाले तो सीमा कर की चोरी करनेवालों से ११ गुणा जुर्माना वसूल करते हैं। हरयाणा के प्रत्येक पशु मेले से इसी प्रकार गोवंश की तस्करी होती रहती है, कोई रोकनेवाला नहीं या फिर रोकने वालों को रिश्वत देकर निकल जाते हैं। मैं भारत गौ-सेवक समाज का आजीवन सदस्य हूं और गोरक्षार्थ कसाइयों से गोवंश छुड़वाने और बूचड़खानों में गोवंश जाने से रोकता है। मेरा इन मामलों में अनुभव है। मैंने जान लिया था कि इन बछड़ों को वध कराने के उद्देश्य से ले जाया जारहा है। कोई कहे बूढे बैल कटते नहीं, बछड़े नहीं कटते। यह सरासर भूल है। भगवान् कृष्ण की भूमि पर गाय भी कटती हैं और उसके वत्स भी। अकेले देवना बूचड़खाने में २५ से २७ जुलाई ढाई दिनों में ४११२ बैल कटे। इन बैलों में अधिकतर संख्या बछड़ों की थी।

हमने इस मामले को गम्भीर जान पुलिस की सहायता ली और सदर थाना बहादुरगढ़ के एस० एच० ओ० चौ० प्रतापसिंह इंस्पेक्टर महोदय को थाने जाकर सूचना दी। उन्होंने उचित कार्यवाही के लिए हमारे साथ चौ० टेकराम ठाकरान एस० आई० को थाना के कई जवान पुलिस कर्मचारियों सहित भेज दिया। पुलिस अधिकारी ने अपराध को सही जानकर अपराधियों को हिरासत में ले, उनके विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर न्यायालय में पेश किया। जमानत न होने के कारण जेल भिजवा दिया। मैं गौ-प्रेमी अपने साथ स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को लेकर जिला रोहतक के उपायुक्त महोदय चौ० बलवीरसिंह जी मलिक तथा एस० एस० पी० महोदय और Animal Husbandry के उप-निदेशक चौ. कुलदीपसिंह जी से मिला। उन्होंने हमें आश्वासन दिया कि बछड़ों के प्रति न्याय होगा। यह सभी सरकारी अफसर बधाई के पात्र हैं और नया गांव के वह सभी लोग धन्यवाद के पात्र हैं। मैं उनका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं, जिन्होंने इन मूक प्राणी बछड़ों को चारा पानी द्वारा सेवा की और इन बछड़ों को गोशाला में प्रवेश कराने हेतु कुछ धनराशि दान रूप में दी। जिनमें कप्तान सर्वश्री जागेराम आर्य, रणजीत सैनी, जीतराम (भूतपूर्व सरपंच), राज सुपुत्र चौ० रूपचन्द आदि शामिल थे।

मैं ट्रक यूनियन बहादुरगढ़वालों का भी आभारी हूं, जिन्होंने नि:शुल्क चार ट्रक देकर इन बछड़ों को डीघल गोशाला में प्रवेश कराने में हमें सहयोग दिया और इस प्रकार इन सभी बछड़ों को गोशाला की सुपरदारी में दे दिया है। एक बात बड़ी उल्लेखनीय तथा विचित्र है, जो न कभी देखी अथवा सुनी गई। इसका मुझे जब स्मरण आता है, तभी हृदय को कष्ट पहुंचता है। वह यह कि बहादुरगढ़ के मजिस्टेट पी० के० गोयल ने मुझ से कहा कि प्रत्येक तारीख (पेशी) पर इन सभी बछड़ों को यहां पेश करना होगा। मैंने कहा—श्रीमान् जी ! इन बछड़ों को डीघल गोशाला से यहां और यहां से फिर वापस गोशाला ले जाना कैसे सम्भव होगा। वह कहने लगे लाने होंगे ? मैंने कहा यह तो तंग करनेवाली बात है। इसका मतलब है कि मैं इन बछड़ों को कसाइयों को वापस दे दूं। वह कहने लगे जाओ ! हम बहस नहीं करना चाहते। मैंने इससे पहले कहा था कि श्रीमान् जी ! बछड़े भूखे मर रहे हैं। वह कहने लगे तुम बछड़ों की बात करते हो, आदमी भी मर रहे हैं। मैं मजिस्टेट के इस बेरुखे व्यवहार को देखकर खेद प्रगट करता हुआ चला आया और अपने मनमें इस बात को लेकर विचार किया कि जिसके हृदय में इन मूक प्राणियों के प्रति दया का भाव नहीं। वह इनके साथ क्या न्याय करेगा। मुझे इस बात से सन्देह होने लगा। न्यायाधीश के ऐसे व्यवहार को क्या प्रजा के लोग सहन कर पायेंगे। जो ऐसी अनहोनी असम्भव-सी वार्ता करते हैं कि इन बछड़ों को प्रत्येक तारीख पेशी पर लाकर दिखलाना होगा। क्या यह बछड़े अपराधी हैं या इनको वध के लिए ले जानेवाले कसाई लोग ? और फिर आज तक इस प्रकार इतनी अधिक संख्या में हमने पशुओं को न्यायालय में पेश करने-कराने की बात सुनी, न कभी ऐसा हुआ। प्रभु ऐसे न्यायाधीश को सुबुद्धि दे, ताकि वह ऐसी-ऐसी वार्ता न करे, प्रजा के लोगों को परेशान न करे। यदि यह न्यायाधीश अपनी जिद् को पूरा कराने की बात पर कायम रहे तो मुझे इस अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करना होगा और इसके लिए उपायुक्त व एस० एस० पी० महोदय को २४ घण्टे पहले नोटिस देकर आमरण अनशन पर बैठना होगा या फिर गोभक्तों का प्रदर्शन कराना होगा।

(क्रमशः)

फरीदाबाद में ऋषि निर्वाणोत्सव पर आर्यनेताओं के भाषण

(केदारसिंह आर्य कार्यालयाधीक्षक द्वारा)

आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद की ओर से ६ नवम्बर रविवार को दोपहर बाद दयानन्द विद्यालय सेक्टर-१६ फरीदाबाद में ऋषि-निर्वाणोत्सव आर्यजगत् के विख्यात संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाशानन्द जी की अध्यक्षता में धूमधाम तथा समारोहपूर्वक मनाया गया। इसमें जिला फरीदाबाद के आर्यसमाजों के अतिरिक्त स्थानीय आर्य विद्यालय के छात्र तथा छात्राओं ने भी भाग लिया।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने अपने भाषण में कहा कि ऋषि दयानन्द को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उन द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धांतों पर स्वयं आचरण करें तथा अपने प्रभाव से अन्यों से करावें। आपने ६ नवम्बर को आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु की सुपुत्री रश्मि आर्या के साथ आर्य वीरदल हरयाणा के अधिष्ठाता प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी के विवाह संस्कार की सराहना करते हुए बताया कि यह विवाह संस्कार जातपात को तोड़कर वैदिक सिद्धांतों के अनुसार गुण कर्म स्वभाव के आधार पर आर्यजगत् के विद्वान् आचार्य सुदर्शनदेव जी शास्त्री ने करवाया है। हमें इस आदर्श विवाह संस्कार का अनुकरण करके ऋषि दयानन्द के वैदिक सिद्धांतों का प्रचार करना चाहिए, ताकि दहेज आदि की समस्यायें भी समाप्त हो सकें।

सभाप्रधान जी ने शराबबन्दी का उल्लेख करते हुए आर्यजनता को इसमें सहयोग करने की अपील करते हुए कहा कि ऋषि दयानन्द ने सामाजिक बुराइयां दूर करने के लिए ही आर्यसमाज की स्थापना की थी। शराब हमारे ढांचे को चकनाचूर कर रही है। आज प्रायः विवाह शादियों तथा शोक अवसरों पर शराब का सेवन करना एक रिवाज बन गया है। कोई परिवार खाली नहीं रहा, जिसका कोई न कोई सदस्य शराब से प्रभावित न हो। अतः हमें इस बुराई को समाप्त करने के लिए तन, मन तथा धन से शराबबन्दी आंदोलन को सफल करके ऋषि दयानन्द को सच्ची श्रद्धांजलि देनी चाहिए।

समारोह के अध्यक्ष स्वामी सत्यप्रकाशानन्द जी ने अपने प्रभावशाली भाषण में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं द्वारा फूलमालाओं से अपने नेताओं के स्वागत करने की आदत को छोड़ने की प्रेरणा देते हुए कहा कि फूलमालाओं से स्वागत करना ऋषि दयानन्द के सिद्धांतों के प्रतिकूल है। ऋषि दयानन्द का कहीं भी कभी फूलमालाओं से स्वागत नहीं किया गया। उनका तो राजाओं, पण्डितों तथा पाखण्डी वर्ग ने ईंटों पत्थरों से सामना किया था। उनके सेवक ने भी विष देकर उन्हें सदा के लिए हमसे शारीरिक रूप से छीन लिया और हम उनके अनुयायी अपना स्वागत फूलमालाओं से करवाते हैं। आपने उपस्थित आर्य जनता से पूछा कि फूलमाला का उपयोग करने के बाद इनका क्या बनता है। सभी ने कहा कि फूल सड़कर प्रदूषण फैलाते हैं। स्वामी जी ने रहस्योद्घाटन करते हुए बताया कि राम कृष्ण के युग में भी फूलों से स्वागत करने की परम्परा नहीं थी। जब से भारत में मूर्तिपूजा आरम्भ हुई है, तभी से फूलमाला से स्वागत करने का रिवाज आरम्भ हुआ। अतः हमने ऋषि दयानन्द के सिद्धांतों का उल्लंघन नहीं करना चाहिए, इससे मूर्तिपूजा करनेवालों का पक्ष मजबूत बनता है। आपने ऋषि दयानन्द की महत्ता का उल्लेख करते हुए कहा कि आज तक संसार के किसी भी महापुरुष का बलिदान (निर्वाण) दिवस इतने विशाल स्तर पर नहीं मनाया गया, जितना १९८३ में अजमेर में प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया गया था। भारत की लाखों की जनता के अतिरिक्त प्रायः सभी देशों के प्रतिनिधि इसमें सम्मिलित हुए थे और असुविधाओं का हंसकर सामना करते हुए अपने प्यारे ऋषि को दिल से श्रद्धांजलि दे रहे थे। मैंने अपने जीवन में संसार के किसी कोने में इतना विशाल समारोह नहीं देखा।

आपने हरयाणा की आर्यजनता को अपना आशीर्वाद देते हुए प्रभु से कामना की कि हरयाणा जो कि ऋषियों की तपस्थली है, वहां पूर्व की भांति दूध दही की नदियां बहें। प्रत्येक नगर तथा ग्राम में वैदिक नाद गूंजे। शराबबन्दी अभियान में हरयाणा सभा को सहयोग देने की अपील करते हुए कहा कि इस पवित्र धरती से इस बुराई को समाप्त करने में सभी को सहयोग करना चाहिए। अन्त में आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री लक्ष्मणदास जी ने अपने नेताओं तथा आर्यजनता का धन्यवाद किया।

आर्य-राष्ट्रीयता

(सूर्य-ध्वज-संगीत)

आर्यराष्ट्र का प्यारा झण्डा ऊंचा सदा रहेगा,
ऊंचा सदा रहेगा, ऊंचा सदा रहेगा ॥
आंधी और तूफान बादलों से यह टक्कर लेगा,
नहीं झुकेगा नहीं झुकेगा झण्डा नहीं झुकेगा ॥
आर्यराष्ट्र का…

आसमान में यह फहराये, सागर में लहराये,
जहां-जहां जाये यह झण्डा यह सन्देश सुनाये।
'स्वस्ति' 'शांति' के परम लक्ष्य से जग स्वाधीन करेगा,
आर्यजाति का…

ऋषि-मुनियों की आस्तिकता का 'ॐ' नाम है प्यारा,
रक्त रंग में क्षात्र-धर्म की बहती आई धारा,
'सूर्य-चक्र' का चक्र हमारा जग आलोक करेगा,
आर्य देश का…
आर्य धर्म का…

सदा चाहते हम दुनियां में *राम-राज्य का लाना,
सदा चाहते हम दुःखियों के दुःख में हाथ बटाना,
'सत्य' 'न्याय' के लिए हमारा आगे कदम बढ़ेगा।
आर्य राज्य का…

---

*"रामः शस्त्रभृतामहम्"–गीता (कर्मयोग शास्त्रपरम्परा प्राप्तम्)

"स पूर्वेषामपि गुरुः" कालेनानवच्छेदात् (योगदर्शनम्)

रचना—पं० सत्यदेव वेदालंकार (लुधियाना)

*ॐउद्वयं तमसस्परिस्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्। वेद (संध्यामन्त्र)

"सूर्यं चक्षुर्गच्छतु वातमात्मा" (वेद)

आर्यसमाज शादी खामपुर (दिल्ली) का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री खेमचन्द चौहान, उपप्रधान—कलाराम, मन्त्री—श्यामसुन्दर पालीवाल, उपमन्त्री—खुशीराम शर्मा, कोषाध्यक्ष—गरीशकुमार कालिया।

विश्ववेदपरिषद् लखनऊ का निर्वाचन

अध्यक्ष—सर्वश्री स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, उपाध्यक्ष-आचार्य वीरेन्द्रमुनि शास्त्री, मन्त्री—सुधीन्द्रनाथ शास्त्री, कोषाध्यक्ष—विज्ञान शंकर।

शराब हटेगी तो देश बचेगा।

धरती फिर से रंगो खून से

कभी थी धरती रंगी खून से दुश्मन और गद्दारों के।
धरती फिर से रंगी खून से भारत मां के प्यारों के॥

मातृभूमि के खातिर प्रताप, वन-वन में डोला था।
इसके खिए ही वीर शिवाजी लाखों कष्ट झेला था।
पहाड़ी चूहे की संज्ञा पाई होश उड़े हत्यारों के।
धरती फिर से……॥

वीर फतेह और जोरावर ने वारी थी अपनी जवानियां।
सुभाष हकीकत भगतसिंह सावरकर ने दी कुर्बानियां।
देख के जौहर दुश्मन भागे मनु की तलवारों के।
धरती फिर से……॥

उन्हीं की सन्तति मातृभूमि के टुकड़े-टुकड़े चाहती है।
अपने वीर पूर्वजों का, मान मिटाना चाहती है।
आज है यह पैर पड़ रही देश विभाजक मक्कारों के।
धरती फिर से……॥

गुरु गोविन्द अर्जुन को भुलाया, भूला दिया है नानक को।
शांति का उपदेश भुलाया, भूला दिया है गौरव तक को।
निज स्वाभिमान तजकर झुके आगे गद्दारों के।
धरती फिर से——॥

मारे अपने बन्धु बान्धव, मार रहे नरनारी है।
वीर भगतसिंह के देश में, मची हुई हाहाकारी है।
दुधमुंहे बच्चे बस के मारे, मार दिये हैं कारों के।
धरती फिर से—……॥

'कमल' की लेखनी असमर्थ है, देश दशा को लिखने में।
वीरो यही शक्ति लगादो, देश को सुन्दर करने में।
शांति अमन का राज यहां टकराव न हो विचारों के।
धरती फिर से रंगी खून से भारत मां के प्यारों के।

कभी थी धरती रंगी खून से दुश्मन और गद्दारों के।
धरती फिर से रंगी खून से भारत मां के प्यारों के॥

—अरविन्दकुमार 'कमल' विद्यानिधि
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

(पृष्ठ १ का शेष)

गोपाल—मैं भी यही सोच रहा था, आप दोनों ने एक नजर तो इस सब पर डाल ही ली है और विशेष देखभाल कल हो जायेगी। अब इसके पीछे की कहानी भी सुन लो। हुआ यह कि भूपाल जब कृषि विश्वविद्यालय से प्रथम वर्ष की परीक्षा देकर अवकाश के दिनों में यहां आया। एक दिन सायंकाल हमारे कुछ साथियों से मिला। कुछ बातचीत हुई और फिर अगले दिन भी गांव के स्कूल के मैदान में चर्चा हुई। फिर वह अपने विश्वविद्यालय से एक प्राध्यापक को लेकर आया और उसको अपने खेतों में घुमाया। अगले दिन उसको वापिस छोड़ने के लिए साथ गया। इस तरह पांच दिन के बाद हम साथियों को उसने अपने खेत पर बुलाया। काफी देर तक इकट्ठी और एक-एक से खुलकर बातचीत हुई। तब मैंने उसके बाद यह पशुपालन का कार्य अपनाया। मेरे कुछ साथियों ने बाग का कार्य शुरु किया और साथ ही साथ अपनी पसन्द का कोई हाथ का काम भी शुरु किया। दो वर्ष बाद हम (भूपाल के परिचित) कर्मवीर जी के सम्पर्क में आये और उन्हीं की योजना के अनुसार यह कार्यशाला सामने आई। हां, पूरी कहानी तो भूपाल से ही पता चल सकती है। कल सायं भ्रमण के समय आप दोनों जब आयेंगे, तब मैं आपको भूपाल से मिलाऊंगा। वैसे हम सबके कारोबार को शुरु कराने के लिए भूपाल ने दिशा निर्देश, आर्थिक सहयोग और भूमि आदि उधार पर देकर हमारी बहुत ही सहायता की है। हमारे कार्य को जमाने के लिए कर्मवीर जी ने योगदान दिया। हां, आप दोनों कल प्रातः जब आओगे तो अपने साथियों के कारोबार से परिचित कराऊंगा। उस समय मैं खाली भी होता हूं। लो मेरा घर तो आगया, अच्छा नमस्ते। अब कल मिलेंगे।

दान उन संस्थाओं को दें, जिनसे आप हिसाब मांग सकें : सूर्यदेव

आर्यसमाज माडल टाउन दिल्ली के समारोह में ३० अक्तूबर को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी ने कहा कि आज चारों ओर नई-नई संस्थायें खोली जारही हैं तथा नये-नये ट्रस्टों का निर्माण किया जारहा है। यह संस्थायें व्यक्तिगत संस्थायें हैं। इन का हिसाब-किताब देखनेवाला भी कोई नहीं है। दिल्ली में कई ट्रस्टों की सम्पत्ति नष्ट होगई है। ये संस्थायें और ट्रस्ट साहित्य प्रकाशन के नाम पर, सूखे के नाम पर, बाढ़ के नाम पर अथवा भूकम्प के नाम पर और कभी-कभी नई आर्यसमाज शुरु करने के नाम पर दान मांगते रहते हैं। ये किसी भी धनराशि का हिसाब भी जनता को नहीं देते। आर्यसमाज माडल टाउन के भाइयों ने गतवर्ष सूखा पीड़ितों के लिए १३ हजार रुपये का गेहूं दिया था। उसका हिसाब आपके सामने है। सार्वदेशिक सभा की ओर से धर्मरक्षा महाभियान, साहित्य प्रकाशन तथा सामाजिक कुरीतियों के निवारण तथा भूकम्प बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ कार्यक्रम चलाये जारहे हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से अनेक कार्यक्रम चलाये जारहे हैं। इन कार्यक्रमों के लिए आर्यजनता से जो भी आर्थिक सहयोग मिलता है, उसका हिसाब रखा जाता है तथा प्रतिवर्ष चार्टड एकाउन्टेंट से लेखानिरीक्षण कराया जाता है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का हिसाब मांगने का, देखने का आप सभी को अधिकार है। श्री सूर्यदेव ने अन्त में पुनः अनुरोध किया कि आप अपना सात्विक दान केवल उन्हीं संस्थाओं के माध्यम से दें, जिनके ऊपर आपका नियन्त्रण हो। जिन पर आपको विश्वास हो कि इनके माध्यम से दिया हुआ दान सही उद्देश्यों के लिए व्यय किया जायेगा और जिनसे आप हिसाब मांग सकें।

—विमलकांत

अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त की जाये

चरखी दादरी, २६ अक्तूबर (दयानन्द)। अंग्रेजी की अनिवार्यता हरयाणा के छात्रों को शिक्षा के उच्च स्तर पर पहुंचने के मार्ग में बहुत बड़ी बाधा है। अधिकांश विद्यार्थी अंग्रेजी विषय उत्तीर्ण न कर पाने के कारण पढ़ाई बीच में छोड़ जाते हैं। बाकी हिन्दी-भाषा राज्यों उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश किसी भी राज्य में अंग्रेजी अनिवार्य विषय नहीं है। इसे ऐच्छिक विषय के रूप में ही पढ़ाया जाता है। यहां तक कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में भी अंग्रेजी अनिवार्य विषय न होकर ऐच्छिक विषय है। चौ० देवीलाल ने भी हरयाणा दिवस पर अंग्रेजी को हरयाणा में ऐच्छिक विषय घोषित करना चाहिए, जिस से हरयाणा के छात्र अन्य प्रांतों की तरह बिना अंग्रेजी की बाधा के उच्च शिक्षा में जा सकें। चौ० चरणसिंह ने भी अपने प्रधानमन्त्रीकाल में संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम को बढ़ावा दिया। इस आशय की अपील छात्र पंचायत, छात्र आंदोलन समिति के संयोजक एवं विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय मन्त्री श्री ओमप्रकाश धनखड़ ने एक पत्र में मुख्यमन्त्री से की है।

श्री धनखड़ ने कहा कि सरकार ने समस्त प्रदेश के २ लाख छात्रों के सात हजार से अधिक प्रतिनिधियों के निर्णय पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। ज्ञातव्य है कि १३ अक्तूबर को हिसार में छात्र पचायत ने समस्त प्रदेश के सात हजार छात्रों ने भाग लिया था, जिसमें अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करने, छात्र संघ के चुनाव प्रत्यक्ष कराने, गाइडों के मूल्य नियन्त्रित करने, बाढ़पीड़ित छात्रों की फीस माफ करने, विशेष छात्र बसें चलाने के साथ-साथ आप्रेशन ब्लेक बोर्ड एवं व्यावसायिक शिक्षा को प्रभावी ढंग से लागू करने की मांग की गई थी।

(दैनिक विश्व मानव से साभार)

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से प्रकाशित शोधग्रन्थ

ऋषि दयानन्द-कृत यजुर्वेद भाष्य में अग्नि का स्वरूप

ले०—डा० भवानीलाल भारतीय

उन्नीसवीं शताब्दी में दयानन्द सरस्वती ने वैदिक अध्ययन के महत्त्व से देशवासियों को एक बार पुनः परिचित कराया था। उन्होंने यह अनुभव किया था कि राष्ट्र के नवनिर्माण में अपने प्राचीन साहित्य तथा उसमें विवेचित मूल्यों का पुनः स्मरण आवश्यक होता है। यह बात नहीं कि दयानन्द से पहले वेदों के अध्ययन, अध्यापन, मनन चिन्तन या उनके अर्थ करने की ओर मनीषियों का ध्यान गया ही नहीं था। भारत में तो वेदार्थ चिन्तन को लेकर विभिन्न सम्प्रदायों का प्रवर्तन बहुत पहले ही हो चुका था, जिनका उल्लेख महर्षि यास्क रचित निरुक्त में हुआ। इधर यूरोप तथा पश्चिम के अन्य देशों में भी संस्कृत के अध्ययन की प्रवृत्ति जागृत हुई और उसके साथ-साथ वेदों के कथ्य एवं विवेचनीय विषयों की ओर पाश्चात्य वेदविदों का ध्यान गया।

दयानन्द सरस्वती का वैदिक अध्ययन को जो योगदान रहा, उस के अनेक आयाम हैं। इनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण था—वेदों का मानव जीवन के साथ जोड़ना। दयानन्द की धारणा थी कि वेदों में जो मन्त्र संगृहीत हैं, वे जटिल एवं दुरूह कर्मकांड के नियामक मात्र ही नहीं हैं, अपितु इन मन्त्रों में जिस अभिप्राय को व्यक्त किया गया है, वह लोकहित एवं विश्वमानव के मंगल का साधक है। उन्होंने वेदों में ज्ञान, कर्म, उपासना तथा विज्ञान का अस्तित्व माना तथा इनमें उपदिष्ट शिक्षाओं को मनुष्य के इहलौकिक तथा पारलौकिक उत्थान का हेतु स्वीकार किया। महर्षि अरविंद ने दयानन्द की वेदभाष्य पद्धति का स्तुतिपाठ करते हुए ठीक ही कहा था कि वेदमन्त्रों का अन्तिम और पूर्ण अर्थ चाहे कुछ भी क्यों न हो, यह तो निर्विवाद रूप से स्वीकार करना ही होगा कि वेद के अर्थ विषयक सही धारणाओं को प्रकट करने में दयानन्द का योगदान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।

दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वेदार्थ प्रणाली का ही अनुसरण करते हुए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की दयानन्दपीठ के निवर्तमान आचार्य डा० कपिलदेव शास्त्री ने ऋषि दयानन्दकृत यजुर्वेद भाष्य में अग्नि का स्वरूप एक परिशीलन शीर्षक अपने ग्रन्थ में वेदमन्त्रों में विवेचित अग्नि तत्त्व की सतर्क समीक्षा की है। सात अध्यायों और ९ परिशिष्टों में विभक्त इस शोधग्रन्थ में वेद और वेदार्थविषयक पारम्परिक तथा साम्प्रतीक धारणाओं की आलोचनात्मक समीक्षा करने के पश्चात् विद्वान् लेखक ने वैदिक साहित्य में यजुर्वेद की स्थिति, शुक्ल यजुर्वेद के भाष्यकारों का परिचय तथा दयानन्दीय याजुष भाष्य की कतिपय विशेषताओं की विवेचना की है। स्वामी दयानन्द वैदिक देवताओं को किसी रूढ अर्थ में स्वीकार नहीं करते। वे देवता को मन्त्र का प्रतिपाद्य तो मानते ही हैं। मन्त्रगत इन्द्र, अग्नि, वरुण, मित्र, पूषन्, सोम आदि को मात्र जड़ प्राकृतिक शक्तियों का प्रतीक ही नहीं मानते। प्राचीनों का अनुसरण करते हुए वे मन्त्रों के पारमार्थिक और व्यावहारिक अर्थ करते हैं। इस प्रकार दयानन्द की दृष्टि में अग्नि केवल जलानेवाली आग का ही सूचक नहीं है, अपितु वह उपासना के प्रसंग में परमात्मा का वाचक तथा अन्यत्र भिन्न अर्थों का ज्ञापक भी है। विद्वान् लेखक ने दयानन्द की वेदार्थ विषयक इसी द्विविध दृष्टि का अनुसरण करते हुए यजुर्वेद के अग्नि देवता विषयक मन्त्रों की विस्तृत समीक्षा की है। इस प्रकार अग्नि को अत्यन्त शुद्ध, सर्वशोधक, सर्वव्यापक, परमैश्वर्यवान् यज्ञरूप, सृष्टिकर्त्ता, सर्वरक्षक, दुष्ट विदारक, सर्वधारक परमसत्ता के प्रतीक रूप में देखना उचित प्रतीत होता है।

किन्तु व्यावहारिक दृष्टि से यही अग्नि, योगी, विद्वान्, आचार्य, उपदेशक, अध्यापक, गृहपति, राजा, सभापति, सेनापति आदि अर्थ भी देता है। स्वयं प्रकाशमान् तथा अन्यों को प्रकाशित करने के गुण हमें जिस-जिस व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ में मिलेंगे, वैदिक दृष्टि से उसे अग्नि नाम से सम्बोधित करना अनुपयुक्त नहीं है। इस प्रकार अपने प्रतिपाद्य विषय का विस्तृत ऊहापोह करने के पश्चात् विद्वान् लेखक ने अग्नि से सम्बन्धित कतिपय वैदिक उपाख्यानों तथा प्रसंगों को दयानन्दीय दृष्टि से समीक्षा की है।

ग्रन्थांत के परिशिष्ट इस विषय पर आगे शोध और अध्ययन करने वालों के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होंगे। उदाहरणार्थ—समग्रयजुर्वेद में दयानन्द निर्दिष्ट अग्नि देवता के मन्त्रों का विवरण दे दिया गया है तथा इसी भाष्य में दयानन्द प्रदत्त अग्नि पद के विभिन्न अर्थों को भी सूचीबद्ध कर दिया है। इसी प्रकार यजुर्वेद में अग्नि के साथ प्रयुक्त विशेषणों को भी उनके अभिप्राय सहित एकत्र किया गया है। निश्चय ही आलोच्य ग्रंथ लेखक के विशद अध्ययन, वर्षों के परिश्रम तथा अध्यवसाय का सूचक है। ग्रन्थ के आकार को देखते हुए मूल्य अधिक है, किन्तु हम यह भी जानते हैं कि ऐसे ग्रन्थ प्रायः कालेजों और विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में ही स्थान पाते हैं। सामान्य पाठक के लिए चाहे इस सुगूढ ग्रन्थ का अधिक उपयोग न हो, किन्तु वेदाध्ययन में रुचि रखनेवाले प्रबुद्ध पाठकों के लिए इसकी उपयोगिता निर्विवाद है।

ऋषि दयानन्दकृत यजुर्वेदभाष्य में अग्नि का स्वरूप : एक परिशीलन।

ले० —डा० कपिलदेव शास्त्री।

प्रकाशक—कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

मूल्य—२३२ रुपये, पृष्ठ संख्या ३८५

नियम तो सबके लिए है

घटना १९२२ की है। कलकत्ता में कांग्रेस की ओर से खादी के कपड़ों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। दो आने का टिकट था। प्रदर्शनी के मुख्य दरवाजे पर टिकट बेचने के लिए एक लड़की नियुक्त की गई। टिकट लिए बिना प्रवेश करना मना था। लड़की को यह अच्छी तरह समझा दिया गया था कि कोई भी बिना टिकट लिए अंदर न आये।

कई दिनों तक यह प्रदर्शनी चली। एक दिन कुछ नेताओं के साथ पण्डित जवाहरलाल नेहरू भी यह प्रदर्शनी देखने आये। लड़की ने उन से टिकट लेने को कहा। रोचक बात यह हुई कि नेहरू जी के पास उस समय पैसे नहीं थे। उन्होंने लड़की को अपनी समस्या बताई, पर लड़की ने कहा—'आप बिना टिकट लिये अन्दर प्रवेश नहीं कर सकते।'

इतना सुनकर नेहरू जी वापस जाने लगे। इस पर हैरान होते हुए इन नेताओं ने लड़की से कहा—'तुमने इन्हें पहचाना नहीं क्या? ये पण्डित जवाहरलाल नेहरू हैं।

लड़की बोली—जानती हूं, लेकिन आयोजन समिति के नियम सब के लिये हैं, मैं नियम का उल्लंघन नहीं कर सकती।

तब नेहरू जी ने किसी से दो आने उधार लेकर टिकट लिया और लड़की की पीठ ठोककर आशीर्वाद दिया।

यही कर्त्तव्यनिष्ठ लड़की आगे चलकर दुर्गाबाई देशमुख के नाम से विख्यात हुई।

—अयोध्याप्रसाद 'भारती'

स्मैक का मतलब

मौत है।

परमानन्द और मानव जीवन

लेखक—धर्मवीर आर्य कुंड़ाकारी

१. परमानन्द को प्राप्त करना मानव जीवन का परम लक्ष्य है।

२. परम आनन्द की प्राप्ति के लिए प्रतिपल ओ३म् नाम का जप करते रहो।

३. परम आनन्द को प्राप्त कर लेने पर मोक्ष अवस्था का परम आनन्द प्राप्त करो।

४. परम आनन्द और परम तत्त्व को प्राप्त कर लेने पर मृत्यु का भय नहीं रह जाता है।

५. परम आनन्द को प्राप्त कर लेने पर मानव अमर हो जाता है।

६. परम आनन्द की अनुपम अलौकिक अकल्पनीय अनुभूति प्रतिपल मानव के मनमन्दिर में होने लग जाती है।

७. परम आनन्द को प्राप्त कर लेने पर वसुधा को वेदसुधा का दान प्रदान करने की भव्य भावना महर्षियों के मनमन्दिर में जागृत हो जाती है।

८. परम आनन्द का दिव्य दर्शन कर लेने पर मानव का जीवन सूर्य और चन्द्र के समान चमक जाता है।

९. परम आनन्द को प्राप्त कर लेने पर भौतिकता के भयंकर भवर से मनुष्य पार अनायास हो जाता है।

१०. परम आनन्द का अनुपम दिव्य दर्शन मानव के हृदय आकाश के प्रकाश में होता है।

११. परम आनन्द की प्राप्ति के लिए अपना जीवन यज्ञमय बनाओ

१२. परम आनन्द की प्राप्ति के लिए सत्संगरूपी पारसमणि को प्राप्त करो।

१३. परम आनन्द को प्राप्त करने के लिए अपना आहार व्यवहार पवित्र बनाओ।

१४. परम आनन्द को प्राप्त करने के लिए अपनी पवित्र कमाई के अन्न को ग्रहण करो।

१५. परम आनन्द को प्राप्त करने के लिए अण्डा, मांस, शराब तथा अन्य मादक वस्तुओं का परित्याग करो।

१६. परम आनन्द को यदि प्राप्त करना चाहते हो तो असत्य का परित्याग करो।

१७. परम आनन्द की प्राप्ति के लिए अपनी वाणी को पवित्र बनाओ।

१८. परम आनन्द की प्राप्ति के लिए अपने मन मन्दिर को पवित्र बनाओ।

१९. परम आनन्द को प्राप्त करने के लिए भव्य भावनाओं से जग-जीवन को भरदो।

२०. परम आनन्द का रस प्राप्त करने के लिए निर्मल निर्लिप्त गंगा सम पावन अपना जीवन बनाओ।

२१. परम आनन्द का दिव्य दर्शन हृदय आकाश में करो।

२२. परम आनन्द को प्राप्त करने के लिए सन्तोषरूपी पारसमणि को प्राप्त करो।

२३. परम आनन्द को प्राप्त करने के लिए विश्वहित ही जीना और मरना सीखो।

२४. परम आनन्द का दिव्य दर्शन करने के लिए अपने जीवन में वैराग्य विवेक के सौन्दर्य को धारण करो।

२५. परम आनन्द को प्राप्त कर लेने पर मनुष्य जीवन और मरण के बन्धनों से मुक्त हो जाता है।

२६. परम आनन्द को प्राप्त करनेवाले महात्माओं और महर्षियों के दर्शन कर लेने से बड़े-बड़े पापी भी पवित्र आत्मा बन जाते हैं।

२७. परम आनन्द को प्राप्त कर लेने पर विश्व कल्याण की पावन गंगा का स्रोत मानव के रोम-रोम में प्रवाहित होने लग जाता है।

२८. परम आनन्द को प्राप्त करने के लिए प्रतिपल प्रबल प्रयास करते रहो।

२९. परम आनन्द को प्राप्त कर लेने पर यत्र तत्र सर्वत्र परमात्मा का दिव्य दर्शन महर्षि जन करने लग जाते हैं।

३०. परम आनन्द के बिना मानव जीवन बबूल के कांटे के समान है

३१. परम आनन्द को प्राप्त करने की साधना करते रहो।

३२. परम आनन्द को प्राप्त कर लेने पर यह संसार आनन्द रस में बदल जाता है।

३३. परमानन्द की प्राप्ति में कितना सुख मानव को प्राप्त होता है, यह वाणी और लेखनी से व्यक्त करना कठिन है।

३४. विश्व की रत्नमणियों के रत्नकोष को चक्रवर्ती साम्राज्य के वैभवों को त्यागकर प्राचीनकाल के चक्रवर्ती सम्राट् परम आनन्द को प्राप्त करते थे।

३५. विश्व के इतिहास का अवलोकन करने से यह ज्ञात होता है कि भारतवर्ष के पशु-पक्षी विषधर भुजंग भी परमात्मा की भक्ति में मस्त पाये जाते थे।

३६. परम आनन्द को प्राप्त कर लेने पर विश्वकल्याण की भव्य भावनायें मानव के हृदय आकाश में जागृत हो जाती हैं।

३७. परम आनन्द को प्राप्त कर लेने पर समाधि अवस्था का सुख साधकों को प्राप्त हो जाता है।

३८. परम आनन्द को प्राप्त करने के लिए विश्व की मानवता की सेवा में लग जाओ।

३९. परम आनन्द को प्राप्त करने के लिए विश्वबन्धुत्व की भव्य भावनाओं को जागृत करो।

४०. वसुधा कुटुम्ब समान है, जब यह भाव जगमग हो जाते हैं, जब परम आनन्द की अनुभूति होने लग जाती है।

४१. योग और हठ योग की सिद्धियों से समृद्ध होने के लिए प्रतिपल परमात्मा से वार्तालाप करने का अभ्यास करो।

४२. परम आनन्द की प्राप्ति के लिए श्रद्धा अमोघ शक्ति को प्राप्त करो।

४३. श्रद्धा ही मानव जीवन की उन्नति का मूल मन्त्र है।

४४. परम आनन्द का दिव्य दर्शन ब्रह्म सत्ता की महत्ता में देखो।

४५ परम आनन्द को प्राप्त करने के लिए मनोनिग्रह करो।

४६. परम आनन्द को प्राप्त कर लेने पर सृष्टि के आदिकाल के शाश्वत शब्द हृदय आकाश में सुनाई देने लग जाते हैं, यह लेखक का अपना अनुभव है।

४७. परम आनन्द को प्राप्त करने के लिए पंच महायज्ञों को नित्य करते रहो।

४८. परम तत्त्व और परम आनन्द को प्राप्त करने के लिए दानवीर और धर्मवीर, कर्मवीर बनो।

४९. परम आनन्द को प्राप्त करने के लिए विश्वकल्याण महायज्ञ को नित्य करते रहो।

५०. परम आनन्द को प्राप्त करने के लिए वेद ज्ञान को प्राप्त करो

५१. परम आनन्द को प्राप्त कर लेने पर मनुष्य का मन मनुष्य के वश में हो जाता है।

५२. परम आनन्द को प्राप्त करने के लिए परमात्मा के काव्य को देखो, सुनो और समझो।

५३. परम आनन्द का दिव्य दर्शन यत्र तत्र सर्वत्र करते रहो।

५४. परम आनन्द को प्राप्त कर लेने पर मनुष्य की प्रतिभा आकाश में चमक जाती है।

५५. परम आनन्द को प्राप्त कर लेने पर मनुष्य चिन्ताओं की चिता से बच जाता है।

५६. परमानन्द की प्राप्ति के बिना मनुष्य कौड़ी के तीन-तीन हैं।

आर्यसमाज बादली के उत्सव पर राष्ट्र-रक्षा तथा शराबबन्दी सम्मेलन

आर्यसमाज तथा जगन्नाथ आर्य सेवा आश्रम बादली जि. रोहतक का वार्षिक उत्सव १७ अक्तूबर को सम्पन्न हुआ। इसका उद्घाटन करते हुए सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह ने आर्यजनता का आह्वान करते हुए कहा कि वे राष्ट्र-रक्षा के लिए सभा द्वारा आरम्भ किये गये शराबबन्दी आंदोलन में कमर कस कर जुट जायें। यदि हमारे सैनिक जवान शराब के चक्कर में पड़ गये तो राष्ट्र की रक्षा को खतरा हो सकता है। शत्रु का आक्रमण होने पर यदि हमारे जवान तुरन्त जागरूक न होंगे तो शत्रु आधुनिक हथियारों से कुछ ही मिनट में हानि पहुंचा सकता है। अतः भारत सरकार को सेना में भी शराब पर पाबन्दी लगानी चाहिए। सेवा-निवृत्त सैनिकों को शराब के बदले अन्य सुविधायें दी जावें। आर्य-समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं को अपने निकट के ग्रामों में शराब के ठेके बन्द करवाकर ही दम लेना चाहिए। समाज-सुधार का काय केवल आर्यसमाज ही कर सकता है।

इस सम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने हरयाणा सभा के शराबबन्दी आंदोलन की सराहना करते हुए सभी को सहयोग देने की अपील की और दुःख प्रकट करते हुए कहा कि जहां पूर्व हरयाणा में घी दूध की नदियां बहती थी, वहां अब गली-गली में शराब की प्याऊ खुली हुई हैं। शराब युवाओं की सेहत को हानि पहुंचाती है। यही कारण है कि विश्व खेलों में भारत को एक भी स्वर्ण-पदक नहीं मिल सका। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल आर्य ने कहा कि कोई भी राष्ट्र ईंट गारे पर आधारित नहीं है। राष्ट्र मनुष्यों से मिलकर बनता है। मनुष्य बनाने का कार्य केवल आर्यसमाज कर सकता है। पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से हमारे राष्ट्र का ह्रास हो रहा है। दिल्ली सभा के मन्त्री श्री सूर्यदेव जी, आचार्य प्रेमभिक्षु के भी व्याख्यान तथा श्री लक्ष्मणसिंह बेमोल के भजन भी हुए।

अंग्रेजी शराब की अवैध सप्लाई हरयाणा से दिल्ली को

हरयाणा ब्यूरो

बहादुरगढ़, ६ नवम्बर। स्थानीय अंग्रेजी शराब के ठेकेदारों द्वारा आजकल हरयाणा से दिल्ली में अवैध रूप से शराब सप्लाई करने का धन्धा शुरु कर दिये जाने का समाचार प्रकाश में आया है।

पता चला है कि बहादुरगढ़ के कुछ अंग्रेजी शराब के ठेकेदार अपनी प्राइवेट कार व मारुति वैन गाड़ियां में शराब की पेटियां दिल्ली ले जाकर सप्लाई करते हैं। एक ठेकेदार तो इस धन्धे के काफी माहीर बताया जाता है।

उल्लेखनीय है कि यहां से लगभग दो किलोमीटर दूर टीकरी बार्डर दिल्ली हरयाणा की सीमा है। टीकरी बार्डर से आगे दिल्ली क्षेत्र शुरु हो जाता है। इसलिए ठेकेदारों को इस धन्धे में कोई विशेष परेशानी नहीं उठानी पड़ती।

बताया जाता है कि दिल्ली ले जाकर शराब सप्लाई करनेवाले लोग पुलिस व अन्य अधिकारियों से मिले हुए हैं। थोड़े ही अर्से पहले एक ठेकेदार इस मामले में पुलिस द्वारा पकड़ा भी गया था।

यद्यपि कुछ शराब के ठेकेदारों को राज्य सरकार द्वारा बार के लाईसेंस दिये जा चुके हैं, जिसके अन्तर्गत वहां आराम से लोग बैठकर मदिरा सेवन कर सकते हैं। लेकिन जिन ठेकेदारों के पास बार के लाई-सेंस नहीं है, वह भी अपनी दुकान पर बैठकर लोगों को शराब पिलाने में हिचकचाहट महसूस नहीं करते।

क्षेत्र के उपपुलिस अधीक्षक चौधरी जिलेसिंह ने ऐसे मामलों से निपटने के लिए कुछ पुलिस कर्मी नियुक्त कर रखे हैं। लेकिन यह पुलिस कर्मी भी नजारा देखने में ही मस्त रहते हैं।

(दैनिक वीर अर्जुन से साभार

वनवासी आर्य महासम्मेलन

हमारे पूर्वजों ने अपना सर्वस्व बलिदान कर, बड़े तप त्याग, कष्ट सहकर देश को आजाद कराया था। इस आजादी पर देश के प्रत्येक नरनारी को गर्व है, परन्तु विदेशी शक्ति फूट डालकर पुनः देश को खण्डित एवं पराधीन करना चाहती हैं। कहीं आर्य द्रविड, कहीं सवर्ण हरिजन, कहीं आदिवासी-अन आदिवासी का भूत खड़ा किया जारहा है। विशेषकर वनवासी एवं हरिजन बन्धुओं को हिन्दू धर्म से अलग करने की चेष्टा की जारही है। इससे सभी चिन्तनशील देशभक्त चिंतित हैं। जबकि हमारे सभी के अन्दर राम और कृष्ण शिवा-प्रताप का खून बह रहा है। इन सब बातों पर विचार करने तथा देश की एकता, अखण्डता एवं प्राचीन वैदिक (हिन्दू) धर्म की रक्षा के लिए आर्यसमाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देश पर इस सम्मेलन का आयोजन २६ से २८ नवम्बर, ८८ शनि, रवि, सोमवार को अत्यन्त समारोह के साथ सीतापुर (सरगुजा) म०प्र० में मध्यप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा एवं उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से किया जारहा है। इस समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी करेंगे। इस शुभ अवसर पर वैदिक यतिमण्डल के अध्यक्ष पू० स्वामी सर्वानन्द जी, परोपकारिणी सभा के अध्यक्ष पूज्य स्वामी ओमानन्द जी, श्री पू० महात्मा प्रेमप्रकाश जी, पू० महात्मा दयानन्द जी, श्री प० पृथ्वीराज शास्त्री एवं प० राजगुरु शर्मा उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा, प० रामदेव, प० बालकृष्ण आदि अनेक विद्वान्, साधु, सन्यासी पधारकर समारोह की शोभा बढ़ायेंगे।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

भगवान् की पवित्र वाणी यजुर्वेद से महायज्ञ का शुभारम्भ २४ नवम्बर से होगा। इसकी पूर्णाहुति २८ नवम्बर सोमवार प्रातः १० बजे होगी। जो पवित्र वेद के दर्शन करना चाहें और आहुति देकर पुण्य लाभ लेने के इच्छुक हों, इस अवसर पर पधारकर लाभ उठावें।

विशेष

जैसा आप जानते हैं इस अवसर पर विशाल शुद्धि समारोह भी २७ नवम्बर को होगा। अतः अधिक से अधिक संख्या में पधारकर बिछुड़े भाइयों को आशीर्वाद देकर उत्साहित करें।

मार्ग—रायगढ़ स्टेशन से अम्बिकापुर जानेवाली बसें सीतापुर होकर जाती हैं। रायगढ़ से १३० कि०मी० सीतापुर है, वहां हाई स्कूल के पास कार्यक्रम होगा।

निवेदक—धर्मानन्द सरस्वती संयोजक
प्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

शराब पीनेवालों का जीवन

ओछी संगत बैठकर पीने लगा शराब,
धर्म गया, इज्जत गई, होगई अकल खराब।
जो आये सो बक रहा, पड़ा कीच के बीच,
गाली दे मां-बाप को सो गया नीचों का नीच।
चढ़ा नशा दुर्गन्ध का बात-बात तकरार,
सदा शरारत सूझती, उलट-पुलट व्योहार।
शुद्ध-बुद्ध खोकर एक दिन करा उत्पात,
कत्ल किया इन्सान को रंगे खून से हाथ।
जुर्म किया कैदी बना होगई मस्ती दूर,
अब पछताये क्या बने आदत से मजबूर।
बर्तन भांडे बिक गये धरती और मकान,
बीबी बच्चे रो रहे घर है नरक समान।
शूली पर चढ़ना पड़ा करके मदिरा पान,
अन्त शराबी का यही देखे हर इन्सान।

—प्रेम आहुजा, प्रचारमन्त्री आर्यसमाज गन्नौर शहर, सोनीपत

ऋषि-ज्ञान

—वेदमित्र हापुड़वाले, सदस्य विद्या सभा, अम्बाला कैंट

ऋषि बुलाने के लिए रथ हाथी भिजवाये।
शय्या गाड़ी ऊंट भी, चार सिपाही आये।
फैजुल्खा उद्यान में, आसन ऋषि जमाये।
किया स्वागत धूम से, राजन प्रेम दिखाये।
एक दिन कहने पर ऋषि, राजमहल में आये।
देख अचानक वेश्या, नन्ही जान कहाये।
उस दिन अपने कथन में, राजन को फटकार।
कहा शेर कुत्ते बने, करते को व्यभिचार।
राजा पर उपदेश ने गहरा असर दिखाया।
खण्डन चक्कर से सभी, उठे बहुत घबराय।
जहर दूध में घोलकर, पापी दिया पिलाय।
रसोइये जगन्नाथ ने, नन्ही के भरमाये।
ऋषि रोग बढ़ता गया, जू-जू दवा खिलाय।
यह सुन बेचैनी बढ़ी, दुःख आतुर अकुलाय।
जेठमल अजमेर में, सुनकर दौड़े आये।
भारतभर में खबर यह, फैली सब घबराये।
घातक पर गुस्सा नहीं, नाहि उन्हें द्वेष।
न वह चाहते थे, उसे पहुंचे कोई क्लेश।
सेवक वह चिरकाल का बोले पास बुलाये।
काम अधूरा रह गया, फिर भी यूं समझाय।
होनी होकर ही रहे, टाले टाल न होय।
यह विधान है ईश का, दोष न तेरा कोय।
मार्ग व्यय देकर, कहा सीधा जा नेपाल।
रहकर अब मेवाड़ में, जीना बहुत मुहाल।
तन छालों से भर गया, निर्बल हुआ शरीर।
ल्यूटन साहिब देखने, आये उनको पीर।
रोम-रोम में विष रचा, फिर भी धैर्यवान्।
ओ३म्-ओ३म् जपते रहे, देख हुए हैरान।
शौच करके हाथ धो, खुद ही लेटे जाये।
कहा द्वार सब खोल दो, शीतल वायु आय।
दिया ऋषि आदेश फिर, सबको पास बुलाय।
गुरुदत्त सम्मुख रहे, पीछे अन्य हट जाय।
देखा सबको प्रेम से आंखें बन्द विचार।
संध्या ईश स्मरण विनय, देखा आंख उघार।
तेरी इच्छा है यही, कहा ईश भगवान्।
इच्छा पूरी हो तेरी, पूर्ण शक्तिमान्।
सीधे लेटे कह ऋषि, करवट लेकर श्वास।
रोका लीला खत्म की, केवल इक निश्वास।
सायं छः बजे चालीस में, कत्तक मंगलवार।
दिन दीपावली मच गया, भारत हाहाकार॥

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४)
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।